होमियोपैथिक

केण्ट मेटिरिया मेडिका

(KENT MATERIA MEDICA)

लेखक

जेम्स टेलर केण्ट, एम. ए., एम. डी.

प्रोफेसर आफ मेटिरिया-मेडिका, हेरिंग कालेज, शिकागो
लेखक—'रेपर्टरी आफ दि होमियोपैथिक
मेटिरिया-मेडिका" और
"होमियोपैथिक फिलासफी" और व्याख्यानदाता

प्रकाशक

एम. भट्टाचार्य एण्ड कं. प्रा:. लि:.

होमियोपैथिक केमिष्टस्, फार्मासिष्टस् एण्ड पाब्लिशार्स

७३ नेताजी सुभाष रोड

कलकत्ता-१

[मूल्य २४.००
[Price 24.00

द्वितीय खंडकी

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ

इयुपेटोरियम पर्फोलियेटम

(Eupatorium Perfoliatum—Boneset)

जितनी ही बार मैं इन घरेलू दवाओंमेंसे किसी एकको लेता हूँ, उतनी ही बार घरमें ये चिकित्साके सामान, व्यवहार होते हुए देखकर मैं आश्चर्यमें जा पड़ता हूँ। सभी पूर्वी जमीन्दारियोंमें, देहाती जिलोंमें तथा पहले पुराने अधिवासियोंमें, बोनसेट टी—सर्दीकी दवा थी। माथेको या नाक बहनेवाली सर्दीके साथ प्रत्येक हड्डीमें दर्द या ऊँचा बोखार या सर्दीके कारण सर-दर्दके लिये बुद्धिमती गृह-स्वामिनियाँ बोनसेट टी तैयार रखती थीं। इसमें सन्देह नहीं, कि इसने ऐसे काम किये हैं और परीक्षामें भी इसका व्यवहार प्रमाणित होता है। परीक्षासे प्रकट होता है, कि स्वस्थ मनुष्योंमें बोनसेट उस तरहकी सर्दीके लक्षण लाता है, जो पुराने कृषकोंको हो जाया करती थी।

पूर्वी जमीन्दारियाँ और उत्तरमें होनेवाली **शीतकालकी साधारण सर्दीमें** बहुत छींकें और नाकमें स्राव होता है, सरमें दर्द, मानो माथा फट जायगा, जो हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। खूब गर्माकर ओढ़ लेनेकी इच्छाके साथ शीतार्त्तता ; हड्डियोंमें दर्द होता है, मानो वे टूट जायँगी। बोखार, प्यास तथा हिलने डोलनेपर रोग-वृद्धिका लक्षण रहता है। ऐसी साधारण नित्यप्रतिकी सर्दियाँ कभी इयुपेटोरियम और कभी **ब्रायोनियासे** मेल खाती हैं। ये दोनों दवाएँ बहुत सदृश हैं ; पर इयुपेटोरियममें हड्डीमें दर्द बहुत स्पष्ट रहता है। यदि यही दशा कई दिनोंतक जारी रहती है, तो रोगी पीला हो जाता है, वक्षमें सर्दी बैठ जायगी, न्युमोनिया हो जा सकता है या यकृतका प्रदाह या एक प्रकारका आक्रमण हो सकता है, जिसे पित्तज ज्वर (Bilious fever) कहते हैं। ऐसे ज्वर अकसर **ब्रायोनिया** और इयुपेटोरियम मांगते हैं। अपने-अपने रोगीको हरेक फायदा करता है। ये दवाएँ खासकर न्यू इङ्गलैण्ड, न्यूयार्क, ओहियो, उत्तरी प्रदेश और कैनाडाके लिये उपयोगिनी हैं। गर्म आवहवामें वहाँके अधिवासियोंको बार-बार ऐसी सर्दी नहीं होती ; पर इयुपेटोरियम अकसर गर्म ऋतुमें ही ज्वर, पीत, ज्वर, पित्तज ज्वर, हड्डी-तोड़ बोखार (Break-bone fever) और सविराम ज्वरके लिये उपयोगी होता है। यह एक आवहवामें एक प्रकारके रोग तथा दूसरेमें दूसरे प्रकारके रोगके लिये उपयोगी होता है।

दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिममें तथा बड़ी बड़ी नदियोंकी उपत्यकामें इयुपेटोरियम उन रोगोंको आरोग्य करता है, जिनके आरम्भमें पीठमें इतना दर्द होता है, मानो टूट जायगी। सरसे पैरतक भयङ्कर कम्पन, जो पीठसे फैलता है, सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती। रक्त-सञ्चयी प्रकृतिका सर-दर्द, तमतमाया हुआ चेहरा, पीला चमड़ा और पीला आँखें, तलपेटमें दर्द तथा यकृत-प्रदेशमें दर्द, कोई भी खाद्य पेटमें रखनेकी शक्तिका न रहना, खानेकी चीजोंको देखने या गन्धसे मिचली, हड्डियोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो वे टूट जायँगी।

ज्वर खूब ऊँचा बढ़ता है, पेशाब महागोनी काठके रङ्गका होता है, जीभपर अकसर मोटी पीली तही चढ़ी रहती है तथा मिचली या पित्तका वमन होता है; **मिसिसिपि उपत्यका ओहिओ उपत्यका, फ्लोरिडा, पेलवामा** तथा सभी दक्षिणी प्रान्तोंमें इयुपेटोरियमकी यह तस्वीर है। इसका अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्षण है, पित्तका वमन, हड्डियोंका दर्द मानो वे टूट जायँगी, भोजनके बाद पेटमें दर्द तथा खाद्यकी गन्ध और विचारसे भी मिचली आने लगना। पाकाशय बहुत ही उपदाहशील हो जाता है; खाद्यका विचार भी उसका मुँह बन्द कर देता है, रोगी चुपचाप पड़े रहना चाहता है, पर दर्द इतना ज्यादा होता है, कि उसे इधर-उधर हटना ही पड़ता है। इसीलिये वह बेचैन मालूम होता है यह सब नये प्रदर्शनोंमें होता है और बहुत ही साधारण बातें हैं, जिन्हें हम ग्रहण और रोगियोंके लिये प्रयोग करना चाहिये।

सविराम ज्वर (Intermittent fever) की इयुपेटोरियम बहुत ही लाभदायक दवा है, जब यह उपत्यकाओंमें बहुव्यापक रूपसे फैलता है। आक्रमणके पहले सबसे पहला चिह्न मिचली है और कभी-कभी पित्तका वमन भी होता है। दोपहरके पहले ७ या ६ बजे उसे सिहरावन मालूम होने लगता है, पीठकी राहसे यह सिहरावन नीचे उतरता है तथा पीठसे हाथ-पैरोंमें फैल जाता है। उसे प्रचण्ड प्यास रहती है, पर पानी पीनेपर जाड़ा और भी बढ़ जाता है, इसीलिये वह ठण्डा पानी नहीं पीना चाहता। माथेके पीछले भागमें यन्त्रणा और धमक रहती है, जाड़ेके पहले और समय पश्चात् मस्तकमें और पीठमें प्रचण्ड दर्द होता है, जाड़ा लगनेके समय तो वह ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है और उसपर वस्त्रोंकी ढेर लगा देनी पड़ती है, सभी अवस्थाओंमें प्यास बढ़ती है, जाड़ेके बाद वमन होता है; यह अकसर तबतक नहीं होता, जबतक ताप नहीं हो जाता, पर पसीना भरपूर होनेके पहले उसे बहुत ज्यादा वमन होता है, पहले तो पाकाशयकी सामग्रियाँ और पीछे पित्त निकलता है। जब ताप चढ़ता है, तो उसका सारा शरीर जलता है, कभी-कभी तो मानो बिजलीकी चिनगाड़ियाँ पड़ी मालूम होती हैं। मस्तक शिखरमें असीम ज्वाला, उसके पैर और उसकी त्वचामें जलन होती है। गर्मी भी बनी रहती है, उसकी अपेक्षा जलन ज्यादा होती है। यह इस दवाका चरित्रगत लक्षण है, कि पसीना कम होता है। प्रचण्ड शीत तथा तेज बोखार जो धीरे-धीरे उतरता है, बहुत थोड़ा पसीना होता है। हड्डियोंमें ऐसा दर्द होता है, **मानो वे टूट जायँगी।** जाड़ा लगनेके समय उसके माथेमें लगातार दर्द होता है, मानो माथा फट जायगा, इसमें टपक होती है, यह फटता है, इसमें डङ्क मारता है; इसमें जलन होती है; वह प्रचण्डता-सूचक शब्दोंमें इसका वर्णन करता है, जैसा कि शायद रक्तसम्बंधी सर-दर्द, कोई भी सोच सकता है, कि ज्वर दब जानेके बाद और जब उसे थोड़ा भी पसीना होने लगता है, तो उसे आराम मिलेगा, यह सर-दर्दके सिवा सत्य है और कभी-कभी तो यह दिन-रात बना रहेगा, इसके बाद फिर उसे दिन-भर दर्द न होगा, पर तीसरे दिन सवेरे सात या नौ बजे, फिर वही तकलीफ आ जायगी और बढ़ी हुई प्रचण्डताके साथ आयगी। समय-समयपर इन आक्रमणोंका समय बढ़ जाया करता है, एक फैलकर दूसरेमें चला जाता है अर्थात् विना ज्वर उतरे अविराम प्रकृति धारण कर लेता है। जितना

ही ज्यादा यह चला करता है, उतना ही अधिक यकृत आक्रान्त होता जाता है और अन्तमें पेशाब पित्तसे भर जाता है, मल सफेदी लिये हो जाता है, बोखार बढ़ जाता है, मिचली बढ़ जाती है, जीभ नुकीली और लटकी हुई हो आती है, सूखी रहती है, सर दर्द बहुत ही कष्ट दायक होता है और गुप्त ज्वर (Masked fever) के लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

प्रचण्ड कम्पनके साथ जो सर-दर्द आरम्भ होते हैं और बिना पसीनेके ही सर-दर्द जारी रहता है, यदि पसीनेके साथ सर दर्द बदतर हो जाता है, तो सभी अवस्थाओंमें प्यास, तापके अन्तमें या तापके समय ही पित्तका वमन होता है, इसके साथ ही हड्डियोंमें तेज दर्द रहता है, पश्चिमके आदमी जो अपनी मेटीरिया-मेडिका अध्ययन करते हैं, जानते हैं, कि इयुपेटोरियमसे वे इसे अवश्य आरोग्य कर देंगे। दौराके अन्तमें यह दवा देनेका समय है। जब सर्वोत्तम प्रतिक्रिया जारी रहती है उस समय दवाका सर्वोत्तम प्रभाव होता है अर्थात् जब प्रतिक्रिया आरम्भ होती है, तो आवेश चला जाता है। यह सभी आवेशिक रोगोंके लिये सत्य है, जिससे कि अन्ततक अपेक्षा करनेका अवसर प्राप्त होता है, आक्रमणके समय आप इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते। अलबत्ता, यदि उस समय दवा दे दी जायगी, यह बहुत कुछ कठिनाइयोंको बढ़ा देती हैं, पर यदि आप आवेशके अन्ततक ठहर जायँगे, तो आपको दवाका पूरा-पूरा फायदा दिखाई देगा तथा दूसरी बारका दौरा न होगा या होगा भी तो बहुत हलका या यदि तुरन्त दूसरा आक्रमण हो भी गया हो तो आपको विश्वास हो जायगा, कि फिर न होगा। सविराम ज्वरमें यह कोई असाधारण बात नहीं है, जब कि दौराके अन्तमें दवा की गयी है, कि दूसरा दौरा दवा देनेके चौबीस घण्टेके भीतर हो जाता है, ये मिश्रित रोगी अकसर विशृङ्खल अवस्थामें रहते हैं। जो इसे नहीं जानता, वह तुरन्त घबड़ा जायगा, डर जायगा, डरेगा कि रोगी बदतर होता जाता है, पर आपको आक्रमण दबनेतक अपेक्षा करनी ही होगी और आप देखेंगे, कि आपने इसका चक्कर और सामयिकता तोड़ दी है।

जब सविराम ज्वरमें यह दवा स्पष्टतः निर्देशित रहती है और सविराम ज्वरको जड़से हटानेमें समर्थ नहीं होती, तो दो दवाएँ ऐसी हैं, जिनमें एक इसके बाद लाभ कर सकती है। ये **नेट्रम म्युरियेटिकम** और **सीपिया हैं।** इन दोनों दवाओंका इयुपेटोरियमसे बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है और जहाँ यह अपना काम छोड़ता है, वहींसे ये दो लक्षण मिलनेपर उठा लेती है।

इस दवामें एक पुरानी धातुगत दशा भी है अर्थात् इसकी **गठियाकी प्रकृति।** यह गठियाकी एक बहुत ही लाभदायक दवा है। इसमें गठियाकी यन्त्रणा तथा अंगुली-सन्धियोंकी, कोहनी-सन्धिकी प्रादाहित ग्रन्थियाँ हैं; अंगूठेका दर्द और गठियाकी सूजन, अंगूठेकी सन्धिकी लाल सूजन। जिन व्यक्तियोंमें खड़िया-पत्थर पैदा हो जाता है, उनमें अंगुलि-सन्धिके चारों तरफ तलछट उत्पन्न करता है। इन गठिया धातुवालोंको सर्दी लग जाती है, हड्डियोंमें दर्द होता है, सन्धियाँ प्रादाहित हो जाती हैं, रोगी कहेगा, कि वह सर्दीला

है, उसका चर्म पीला हो जाता है, पेशावमें पित्त निकलता है, मल सफेदी लिये हो जाता है और ये कमजोर पड़ता जाता है। बहुत अवसरोंपर ये रोगी गठिया-भरी सन्धियाँ और कमजोरीसे नजात पानेके लिये वर्षों तक बरगण्डी पिया करते हैं। हमारी होमियोपैथिक दवाओंमेंसे कुछ इस कष्टको आराम कर देगी ; पर वे गठियाके रोगी जो हमेशा शराब पिया करते हैं, उनसे आप तुरन्त शराब नहीं छुड़ा सकते। उनको जब आक्रमण होता रहता है, तब उनसे आप शराबको अलग नहीं कर सकते ; क्योंकि वे इसके इतने आदी हो गये हैं। बरगण्डी एक तरहकी शराब है, जिसे गठियावाले बहुत व्यवहार करते हैं ; पर स्काटलैण्डके रहनेवाले गठिया रहनेपर भी थोड़ी-सी स्काच ह्विस्की पीना चाहते हैं और आक्रमणके समय इसको उनसे छुड़ा लेना एकदम असम्भव है। उसकी आदत कुछ दिनोंतक जारी रहनी चाहिये, नहीं तो वह कमजोर हो जायगा ; पर यह उसे नुकसान पहुँचाती हैं और इसीलिये गठियाके उन रोगियोंको सन्तुष्ट करना कठिन है, जो ताकतकी दवा लिया करते हैं। होमियोपैथिका पूरा-पूरा फ़ायदा नहीं उठा सकते और आप उनकी ताकतकी दवा नहीं रोक सकते ; क्योंकि वे दुर्बल हो जायँगे। जो नियमित पेयके रूपमें शराब नहीं पीते, ऐसे व्यक्ति इसके बिना ही काम चला सकते हैं और चलाना चाहिये ; क्योंकि यह होमियोपैथिक दवाकी क्रियामें बाधा पहुँचाता है।

इन गठिया वात-ग्रस्त रोगियोंको भयानक **स-वमन सर-दर्द** होता है। मस्तिष्कके तलदेशमें और सरके पीछे दर्द, इसके साथ ही गठियाकी सन्धियाँ सम्मिलित रहती हैं ; इन्हें अकसर **सन्धित सर-दर्द** (Arthritic headache) कहते हैं अर्थात् गठियाका सर-दर्द, दर्दभरी सन्धियोंके साथ सर-दर्द या सन्धियोंके दर्दके साथ पर्यायक्रमसे सर-दर्द हो सकता है। रक्त-सञ्चयी दर्द। मस्तिष्कके तलदेशमें कुछ-न-कुछ टपकके साथ सर-दर्द होता है ; मस्तिष्कके भीतर होकर सर-दर्द फैलता है और सार्वाङ्गिक रक्तसञ्चयी आक्रमण उत्पन्न करता है। जब सन्धियाँ अच्छी मालूम होती हैं, तब कभी-कभी यह दर्द पैदा हो जाता है और जितना ही ज्यादा उसे सर-दर्द होता है, उतना ही कम दर्द उसे हाथ-पैरोंमें होता है और फिर जब गठियाका आक्रमण हाथ-पैरोंपर होता है, तो सर-दर्द घट जाता है। सर-दर्द, जिसका **तीसरे** या **सातवें** दिन दौरा होता है। यह कुछ-कुछ सामयिकता लेकर उत्पन्न होता है। सर-दर्दके साथ मिचली और पित्तका वमन होगा, खाद्यकी गन्ध या विचारसे भी मिचली होने लगना। इस गठियावाले व्यक्तिके सरमें चक्कर भी आ सकता है और ऐसा अनुभव होता है, कि वह बायीं ओर गिर पड़ेगा, यह खासकर सर-दर्दके साथ दिखाई देता है। सवेरेके वक्त सर-दर्द होता है, जब वह सोकर उठता है, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह बायीं ओर लोट जायगा तथा बायीं ओर पलटनेके समय उसे अपने ऊपर सावधान रहना पड़ता है। कभी-कभी सविराम ज्वरमें बायीं ओर गिर परनेका लक्षण मिलता है और मिचली और वमनमें अन्त होनेवाले सरके चक्कर, माथेके पिछले भागमें प्रचण्ड दर्द और हड्डियोंमें दर्द पहलेसे ही डराते रहते हैं।

इस दवामें दूसरे गठियाके प्रदर्शन भी प्राप्त होते हैं। कनपटियां भीतरसे आघात करनेकी तरह दर्द, माथेकी बायीं ओरसे दाहिनी ओर आघात करनेकी तरह दर्द, समूचे

माथेके भीतर धक्का देनेकी तरह दर्द। सुई गड़ने, फाड़नेकी तरह प्रत्यङ्गोंमें दर्द इसके साथ ही हड्डियोंमें यन्त्रणा। सर-दर्द इतना भयानक होता है, कि उसका पाकाशय बिगड़ जाता है। गठियाके सर-सर्दोंमें बहुत तेज तापके अन्तमें सविराम ज्वरमें, सामयिक—समय बाँधकर होनेवाले सर-दर्दमें, सबमें एक ही गति रहती है। दर्द इतना तेज होता है, कि तुरन्त मिचली पैदा हो जाती है और इसके बाद पित्तका वमन होता है। अकसर जैसा होना चाहता था, वैसा गठियाकी दशामें लक्षणोंपर इयुपेटोरियमका व्यवहार नहीं हुआ है। सविराम ज्वरमें तो यह बहुत विख्यात है। सर-दर्दमें यह केवल किसी-किसीपर अकसर व्यवहृत होता है। केवल शायद ही किसी अवसरपर मनुष्यको इसका लाभ सर-दर्द और अविराम ज्वरमें देखनेमें आता है। गठिया और वातके रोगोंमें यह लक्षणोंके अनुसार लाभ कर सकता है तथा साधारणतः जितना प्रकट है उससे कहीं ज्यादा फायदा कर सकता है। हमारा काम रोगका परिणाम बताना नहीं है। मैं तो गठियाको कोई रोग ही नहीं समझता; बल्कि मानव-परिवारमें होनेवाला वातज प्रकृतिका एक बहुत बड़ी श्रेणीका लक्षण, लक्षणोंका एक बहुत बड़ा समूह, जिसे गठिया कहा जाता है। सन्धियोंकी अभिवृद्धिकी और पेशाबमें गठियाका तलछट पड़नेकी एक प्रवणता। लिथिमिया (Lithæmia) जिसे कहा जाता है, वह भी गठियाकी धातु है। स्वास्थ्य विधानकी गठियावाली अवस्था तो एक बाहरी या अप्रकृत कारण है; वास्तविक कारण तो दूषित वाष्पमें है। इसलिये जब हम गठियाका नाम लेते हैं, तो मेरा मतलब रोगके नामसे नहीं है; बल्कि एक तरह के दिखावेसे, जो खासकर बड़े शहरोंमें देखनेको मिलता है और उन देशोंमें बहुत कम देखनेमें आता है, जहाँ लोग खेतोंपर जीवन बसर करते हैं, भरपूर व्यायाम करते हैं, स्वास्थ्यप्रद भोजन प्राप्त करते हैं और मकानोंमें बन्द नहीं रहते। यह शराब पीनेके कारण होना माना गया है। अकसर जब हम रोगीसे यह कहते हैं, कि उपसर्ग गठियाकी तरह मालूम होता है, तो वे कहते हैं,—"मुझे शराब पीनेकी आदत नहीं है, मेरा यकृत बढ़ा हुआ नहीं है। ऐसी अवस्थाएँ इसमें सन्देह नहीं, कि गठियाकी प्रवृत्ति उत्पन्न करती हैं।

ब्रायोनिया और **जेलसिमियम**की तरह आँखके गोलोंमें दर्द-भरे जखम, चक्षु-गोलक बड़े ही स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं और दबाने पर यन्त्रणा होती है। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो आँखमें किसीने भार दिया है; यन्त्रणा, कुचल जानेकी तरह, आँखोंमें दर्द। प्रत्येक हड्डीके दर्दके साथ नाककी सर्दी।

पित्तज आक्रमणोंका अन्त अकसर अतिसारमें हो सकता है। बहुत ज्यादा हरा दस्त, हरे पतले या अर्द्ध-तरल दस्त, यह आक्रमण ठहर जाने बाद जबतक कि आँतें बहुत साफ नहीं हो जातीं। इनके बाद यह लक्षण गायब हो जायगा और गौण अवस्था आ जायगी, जिसमें कब्ज रहेगी और फीके दस्त होंगे या पित्त-रहित मल निकलेगा।

बोन सेटे में सूखी खुसखुसी खाँसी रहती है, जो समूचे शरीरको हिला देती मालूम होती है, मानो यह उसे तोड़ डालेगी; इसमें इतनी अधिक यन्त्रणा होती है तथा हिलने-डोलनेपर वह इतना विचलित हो जाता है। श्वास-पथमें—श्वासोपनलियोंमें बहुत अधिक

कष्ट मालूम होता है। केशिकाओंकी ब्राङ्काइटिसमें (Capillary Bronchitis) एक तरहकी खाँसी आती है, जो समूचे शरीरको हिला देती है; यह **ब्रायोनिया** और **फास्फोरस**के सदृश है। रोगीको ठण्डी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती, जैसा कि **नक्स-वोमिका**का रोगी रहता है। **नक्स-वोमिका**में लगातार बना रहनेवाला दर्द हड्डियोंमें होता है, मानो वे टूट जायँगी; रोगी गर्म कमरेकी इच्छा करता है और खूब कपड़े ओढ़े रहना चाहता है, जिससे उसे आराम मिलता है। जरा भी कपड़ा उठाना जाड़ा बढ़ा देता है, ऐसा ही इयुपेटोरियममें भी होता है। इस तरह इन दोनोंमें भी सम्बन्ध है। **नक्स-वोमिका**के रोगीका मिजाज़ भयानक चिड़चिड़ा रहता है; इयुपेटोरियममें बहुत अधिक उदासी रहती है। **नक्स-वोमिका**का रोगी मरनेके विषयमें कुछ ज्यादा नहीं कह सकता है, वह इतना चिढ़ा रहता है, कि परलोकमें नहीं जाना चाहता; पर इयुपेटोरियममें ऐसा नहीं है, वह उदासीसे भरा रहता है।

उस दवाकी दूसरी दशाएँ भी हैं, जो गौणरूपसे जाती हैं, मैलेरियाका आक्रमण तथा गठियाके रोग प्रभृतिमें निम्न-प्रलङ्ग-फूल जाते हैं, शोथज, सूजन। उस मैलेरिया ज्वरके लिये यह कोई असाधारण बात नहीं है, जो बहुत दिनोंतक लँझड़ाता रहा है, कि उसमें निम्नांग शोथ-ग्रस्त हो जाये। ऐसे लँझड़ानेवाले मैलेरियामें **नेट्रम-म्युरियेटिकम, चायना** और **आर्सेनिकम**के बहुत कुछ सदृश होता है। जब लक्षण बहुत कुछ दब जाते हैं और केवल रक्तस्वल्पता तथा निम्न-अङ्गका शोथ रह जाता है, कुचिकित्सित होनेपर भी, तो उस समय ठीक दवा खोज निकालना मुश्किल हो जाता है, इस समय होमियोपैथिक चिकित्सा करनेवालेके लिये पीछे वापस जाकर, रोगीकी परीक्षा करना और सविराम-ज्वरके समय होनेवाले लक्षणोंको जो हस्तक्षेप होनेके पहले थे, उनको खोज निकालनेके सिवा और कोई पथ नहीं रह जाता। अब यदि हाथ-पैरोंमें सूजन है और आपको ऐसे लक्षण प्राप्त होते हैं जिनसे मालूम होता है, कि उसे आरम्भमें ही इयुपेटोरियमकी जरूरत था, तो अब भी इयुपेटोरियम उसके शोथको आरोग्य कर देगा। यह फिर जाड़ा पैदा कर दे सकता है, यह वह सुश्रृङ्खलित अवस्था ला सकता है, जिसके लिये आप इसका प्रयोग करते हैं। यदि आराम कालमें उसे **आर्सेनिकमकी** जरुरत थी, तो वह दवा फिर जाड़ा ला देगी, इसे ठीक ओर घुमा देगी और-और उपसर्गोंको आरोग्य कर देगी। तकलीफकी बात तो यह है, कि उपसर्ग केवल दवा दिये गये थे, आरोग्य नहीं किये गये थे, इसलिये जिस दवाकी उसे जरूरत थी, पर शीतके लिये काफी नहीं, वही दवा अब भी हो सकती है। अब पैर और घुट्ठीकी शोथज सूजन और गठियाकी सूजनके लिये भी इयुपेटोरियम सोचिये। सभी गठियाकी सूजनें प्रादाहिक प्रकृतिकी होती है, बहुतकर तो हलका सम्बन्ध अस्थि-सन्धिको सूजनसे रहता है और इयुपेटोरियमकी **आर्सेनिकम**से तुलना करनी चाहिये। घुटनेका गठिया-जनित प्रदाह। इस दवामें आपको सर्वत्र हड्डीमें दर्द और हड्डीमें यन्त्रणा ही मिलेगी।

यह आश्चर्यकी बात है, कि समयपर दवाएँ यथार्थके रूपमें सामने आती हैं। रोगी भी ऐसा ही करते हैं और हमें देखना चाहिये, कि वे निश्चित चक्रके आकारमें नियमित

समय बाँधकर आती है, यह भी अद्भुत बात है। हमें ऐसा सर-दर्द मिलता है, जो सातवें दिन होता है, ऐसा सर-दर्द जो पाक्षिक रूपसे होता है और दवाएँ भी ऐसी हैं, जिनमें सातवें दिन रोग-वृद्धि होती है, चौदहवें दिन रोग-वृद्धि होती है और तीसरे दिन रोग-वृद्धि, हैं, ऐसी दवाएँ हैं जो अपनी उपसर्ग ठीक इस रूपमें प्रकट करती हैं। यदि आपके रोगोंको ठीक इक्कीसवें दिन रोग वृद्धि होती है, यह जानकर आश्चर्य न करें कि आपका रोगी **औरम** (Aurum) के प्रभावमें है। ऐसी बहुत-सी दवाएँ हैं, जिनमें चौदहवें दिन रोग वृद्धि होती है अर्थात **चायना और आर्सेनिकम**। इसके अलावा हेमन्तमें रोग-वृद्धि, वसन्त ऋतुमें रोग-वृद्धि, शीत ऋतुमें रोग-वृद्धि, सर्द मौसममें रोग वृद्धि तथा गर्मीके दिनोंमें रोग-वृद्धि होती है। कितनी ही दवामें अन्तवाले दोनोंका ही लक्षण हैं।

इयुफ्रेशिया
(Euphrasia)

नये सर्दीके रोग, ज्वरके साथ हो या बिना ज्वरके ही, उसकी इयुफ्रेशिया लघु-क्रियात्मकपर एक उपयोगिनी दवा है। नाककी सर्दी तथा आँखके लक्षणके साथ सर-दर्द, शामको कुचल जानेकी तरह सर-दर्द, माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, ऐसा सर-दर्द मानो माथा फट जायगा, साथ ही सूर्यकी रोशनीसे आँखोंमें चकाचौंध। ये सब सर्दीके सर दर्द हैं, जिनके साथ सर्दीके आँख तथा नाकसे पानीकी तरह स्राव होता है। इयुफ्रेशियाके आँखके लक्षण इसका बहुत ही महत्वपूर्ण स्वरूप है। आँखकी श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहकी दशा, जिसके साथ बहुत ज्यादा कटु पानीकी तरह स्राव, नाककी सर्दी या बिना इस सर्दीके ही होता है। माथेतक फैल जानेवाला आँखोंमें काटनेकी तरह दर्द, आँखोंमें इस तरहका दबाव मानो बालू पड़ गयी है। सूखापन, जलनकी अनुभूति, आँखोंमें दाँतसे काटनेकी तरह दर्द। आँखमें धूल पड़ जानेकी तरह अनुभव होना। आँखोंमें भयानक खुजली, जिससे रगड़ना तथा मलना पड़ता है। साथ ही बहुत ज्यादा आँसू बहता है। पुतलियाँ बहुत सिकुड़ी तथा खाली और वर्द्धित रक्तवाहिनियाँ और खोंचा मारनेकी तरह दर्दके साथ बहुत अधिक खिंचाव। वातके कारण या वात-ग्रस्त सन्धियोंके सम्बन्धसे चक्षु-उपतारा प्रदाह (Iritis)। आँखसे बहुत ज्यादा पतला या गाढ़ा स्राव। आँखोंके समस्त तन्तुओंका साधारण प्रदाह। कनीनिका (Cornea) में जखम। इसने आँखमें मरहा (आँखकी कनीनिका लाल और मांसमय हो जाती है—Pannus) रोग आरोग्य किया है। फुन्सियाँ निकलनेके साथ प्रदाह। आँखमें चोट पहुँचनेपर कनीनिकाका गदलापन। यह बहुत ही जोरके चक्षु-प्रदाह (श्वेत-पटलका प्रदाह, आँख उठना—Conjunctivitis) में बहुत उप-योगी है। चक्षु-श्वेत-पटल और पलकोंके प्रदाहके साथ दृष्टिका धुँधलापन—धुन्ध रोग (Amblyopia)। बहुत ज्यादा आँसू बहना और जलन, पलक और चक्षु-गोलकको श्लैष्मिकझिल्लियाँ टूट जाती हैं, लाल और रक्तपूर्ण हो जाती हैं। सवेरे पलकोंका सट जाना।

वहुत ज्यादा, कटु ऋतु स्राव, इसके साथ ही नाककी सर्दीमें नाकसे वहुत ज्यादा पानी वहना। पलकोंका सूखापन और पलकोंके किनारे लाल, फुले और जलन-भरे। पलकें वहुत ही अनुभवाधिक्यपूर्ण और फूली रहती हैं, पलकोंके किनारे खुजलाते हैं और उनमें जलन होती है। पलकोंके किनारोंमें पीव होना, प्रदाहके साथ पलकोंकी वहुत अधिक सूजन। पलकोंके फुलनेके साथ आँखोंके चारों तरफ महीन दाने। धूमाकार दृष्टि। तृतीया नाड़ी का पक्षाघात।

नाकके सम्वन्धके भी वहुत महत्वपूर्ण लक्षण-समूह हैं। छींकें और पानीकी तरह नाककी सर्दी, स्राव ऋतुग्रस्त होता है और कटु अश्रु स्रावके साथ होता है। नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली फूली रहती है। वहुत ज्यादा, अनुग्र, पतली, नाककी सर्दीका स्राव। एक या दो दिन तक इस तरह नाककी सर्दी रहने वाद, यह कड़ी खाँसीके साथ स्वर यन्त्रमें चली जाती है। रातमें लेटनेके समय नाककी सर्दीका स्राव वढ़ा रहता है। दिनके समय खाँसी वदतर रहती हैं और **लेट जानेपर घट जाती है**। इस दवामें दोनोंकी तरह खसड़ा होता है और इसमें ज्वर-भाव भी है। इसलिये, जव इन लक्षणोंपर पूरी तरह विचार किया जाता है, तो यह मालूम होगा, कि खसड़ा (Measles) में होनेवाले उपसर्गोंके सदृश इयुफ्रेशिया है। यद्यपि इस वजहसे **पल्सेटिलाकी** तरह इसका खसड़ामें प्रयोग नहीं होता, कि लक्षणोंका यह सम्मिलन अकसर उत्पन्न नहीं होता, तथापि यह खसड़ा—छोटी माताकी वहुत ही उपयोगिनी दवा है। सवेरेके समय स्वर-भङ्ग। स्वर-यन्त्रमें उत्तेजना, जिससे वाध्य होकर रोगीको खाँसना पड़ता है। इसके वाद ही वक्षोस्थि (Sternum) के नीचे दवाव मालूम होता है। स्वरयन्त्रमें वहुत अधिक रस-स्राव होता है, जिससे कि ढीली खाँसी आने लगती है और साथ ही वक्षमें घरघराहट होती है। गहरी श्वास लेना कष्टकर होता है। स्वतः अनुभूत, खाँसी एक शीघ्र अप्राप्य लक्षण-समूह प्रकट करती है। नाककी सर्दीके साथ या वाद वहुत ज्यादा वलगम निगलनेके साथ खाँसी। कष्टकर श्वास-प्रश्वास, लेटनेपर, रातमें घट जाता है। सवेरे इधर-उधर करते रहनेपर वहुत ज्यादा वलगम निकलनेके साथ खाँसी वदतर हो जाती है। स्वर यन्त्रमें सुरसुरीके साथ प्रचण्ड खाँसी। **व्रायोनिया** और **मैंग** (Mang.) की तरह रातमें खाँसी किसी भी दूसरी दवामें नहीं है। **लेट जानेपर** श्वासकष्ट और खाँसी **घट जाती** है। नाककी सर्दीके लक्षण, इसके अलावा, रातमें और लेट जानेपर वदतर रहते हैं। जव ग्रिपि या इन्फ्लुएञ्जामें ये लक्षण वर्त्तमान रहते हैं, तो यह एक वहुत ही उपयोगिनी दवा वन जाती है। स्वरयन्त्र तथा टेंटुआसे निकलनेवाला वहुत ज्यादा वलगम अकसर वुरी सर्दीकी आखिरी अवस्थाकी तरह होता है। वलगम ढीला और करीव-करीव विना खाँसीके ही निकलनेवाला होता है। यह विना विशेष चेष्टाके ही निकल जाता है। वक्षोस्थिके नीचे दवावकी तरह दर्द, जिससे मालूम होता है कि टेंटुआ, खासकर श्लैष्मिक-झिल्लीमें प्रदाह हो गया है। आँखका दर्द खुली हवामें वदतर हो जाता है। नाककी सर्दी खुली हवामें वदतर हो जाती है, कभी-कभी खुली हवामें खाँसी आती है। खुला हवामें झोंककी हवावाली ऋतुके कारण नाकसे पतली सर्दीका स्राव होता है। ठण्डी हवा और झोंककी हवाके मौसममें आँखसे आँसुओंका स्राव होता

है। यह सर्दीला रोगी है और बिछावनमें गर्म नहीं हो पाता। इस दवामें शीत, ताप और पसीनेका लक्षण है। शीत ही सबसे ज्यादा होता है। ज्वर अकसर दिनके समय लाल चेहरा और हाथ ठण्डे होकर होता है। समूचे शरीरमें ताप रहता है। पसीना अकसर केवल शरीरके सम्मुख भागमें ही होता है, रातमें निद्राकालमें पसीना। कभी-कभी उसमें आश्चर्यजनक बहुत बदबू रहती है और छातीपर बहुत ज्यादा पसीना होता है। यह खासकर सर्दीका बोखार इन्फ्लुएञ्जा और छोटी माता (खसड़ा) में उपयोगी होता है, लक्षण मिलनेपर खसड़ाका भयङ्कर आक्रमण भी घटकर सरल हो जायगा, रोगीको अच्छा मालूम होने लगेगा, उद्भेद निकल आयँगे, ज्वर वशमें आ जायगा, खाँसी घट जायगी, नाककी सर्दी भी तथा अन्य श्लेष्मिक झिल्लीके प्रदाहके लक्षण घट जायँगे। दाने निकलनेके साथ, गर्म जलता हुआ आँसू बहना रोशनीका सहन न होना, नाकसे पानी टपकना, बहुत ही धमकवाला सर-दर्द, आँखोंमें लाली, ज्वरके कारण रोशनीका सहन न होना, छोटी माताके समय सूखी खाँसी।

फेरम मेटालिकम
(Ferrum Metallicum)

अब हम फेरम मेटालिकमका अध्ययन आरम्भ करेंगे। पुरानी प्रणालीवाले हमेशा रक्तहीनताके लिये आयरन (लोहा) का प्रयोग करते हैं। वे इसे बड़ी मात्रामें, क्लोराइडका टिञ्चर और कार्बोनेटके रूपमें देते हैं। जब कभी रोगी रक्त-स्वल्प, पीला, मोमकी तरह और कमजोर हो जाता, तो आयरन ही बलदायक था। यह सत्य है, कि आयरनसे रक्त-स्वल्पता उत्पन्न होती हैं और जिस किसीने फेरमकी परीक्षाका अध्ययन किया है, उसे यह देखकर आश्चर्य होगा, कि जिस मात्रामें ऐलोपैथिक चिकित्सक आयरनका प्रयोग करते हैं, उससे क्या वे रक्तस्वल्पता उत्पन्न नहीं करते? यह सत्य है, कि परीक्षामें और उन अवस्थाओंमें, जहाँ अधिक मात्रामें आयरन दिया गया है, रोगी हरापन लिये, मोमी, पीला और सफेद हो जाता है, उसका चेहरा रोगियल और रक्तस्वल्प हो जाता है। ओठ पीले हो जाते हैं; कानोंकी लाली चली जाती है; शरीरकी त्वचा मोमी हो जाती है। और रक्त स्रावकी प्रकृति उत्पन्न हो जाती है। कभी-कभी थक्केके रूपमें रक्त-स्राव होता है, पर साधारणतः बहुत ज्यादा, पतला तरल रक्त, बहुत काला निकलता है। थक्के अलग हो जायँगे और तरल भाग भूरा, मैला और पानीकी तरह दिखाई देने लगेगा। रोगी क्रमणः क्षीण होता जाता है। वह पीला और मोमकी तरह हो जाता है, उसकी पेशियाँ थुलथुली और ढीली हो जाती हैं; वह सहनशीलताके अयोग्य हो जाता है। सब मांसपेशिक तन्तु किसी तरहके परिश्रमसे क्लान्त हो पड़ते हैं। तेज व्यायाम या कोई गैरमामूली श्रम असम्भव होता है, कोई तेज परिश्रम या गति, कमजोरी श्वासकष्ट, क्लान्ति और मूर्च्छा उत्पन्न कर देती है।

फेरमकी धातुगत प्रकृतिमें सर्वत्र यह एक बड़ी बात है, कि **सभी दर्द और तकलीफें विश्रामके समय उत्पन्न होती हैं।** आराम करनेके समय ही कभी-कभी कलेजेमें धड़कनें होती है, श्वासकष्ट विश्रामकालमें ही होता है, यहाँतक कि कमजोरी भी इसी समय आती है। धीरे-धीरे चलनेपर रोगीके उपसर्ग उपशम होते हैं, पर किसी भी श्रमसे क्लान्ति और मूर्च्छा आ जाती है। कोई भी तीव्र गति उपसर्ग बढ़ा देती हैं। घरमें धीरे-धीरे चलनेपर दर्द घटता है, जिससे कि श्रम, उत्तेजना या थकावट न पैदा कर दे। बहुतसे रोगोंमें तो रोगी शीत ग्रस्त रहती है, चमड़ा दबानेपर गड़हा पड़ जाता है और पीला रहता है। इतनेपर भी चेहरा देखनेपर रक्त-पूर्ण (Plethora) की तरह मालूम होता है। जरा भी उत्तेजना मिलनेपर चेहरा तमतमा उठता है ; शीतके समय चेहरा लाल हो जाता है। शराब या स्फूर्तिदायक पदार्थ लेनेपर चेहरा तमतमा उठता है और थुलथुला रहनेपर भी रोगी शिथिल तथा क्लान्त हो जाता है ; बीमार रहनेकी वाहवाही नहीं प्राप्त करता। रोगिनीको अपनी संगिनियोंकी सहानुभूति नहीं प्राप्त होती, वह कमजोर रहती है, उसे हृत्स्पन्दन और श्वास-कष्ट होता है, उसमें बहुत कमजोरी रहती है और काम करनेकी शक्ति नहीं रहती, उसे पड़े रहनेकी इच्छा होती है—इतनेपर भी चेहरा तमतमाया रहता है। इसे कृत्रिम रक्ताधिक्य धातु (Pseudo Plethora) कहते हैं। रक्त-वाहिनियाँ तनी रहती हैं, शिराएँ फूली रहती है और उनके आवरण ढीले रहते हैं, इसी वजहसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है, कैशिकाओंसे स्राव, शरीरके सभी अंशोंसे रक्त स्राव ; नाक, फेफड़े तथा जरायुसे रक्त-स्राव। स्त्रियोंके जरायुसे बहुत अधिक रक्त-स्राव होता है, खासकर वयःसन्धि-कालके समय और बाद। इसमें फेरम बहुत उपयोगी होगा—लक्षण मिलनेपर—उस रक्त-हीन अवस्थामें भी जिसे "हरित रोग" (Green sickness) कहते हैं, जो लड़कियों को जवानी आनेके समय तथा उसके बादके वर्षोंमें होता है, उसमें बहुत फायदा करता है। प्रायः-रजः-स्राव नहीं होगा ; पर खाँसी आने लगेगी, बहुत पीलापन रहेगा। यह रोग लड़कियोंमें इतना फैला हुआ है, कि सभी माताएँ इसे जानती हैं और इससे भय खाती हैं। आपकी विस्तृत चिकित्सामें आपको हरित्पाण्डु (Chlorosis) रोगकी बहुत-सी रोगिनियाँ मिलेंगी।

कभी-कभी आरम्भिक रजः स्राव-कालमें बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव होता है, इसके बाद बहुत कमजोरी आ जाती है और यह लगातार कई बरसोंतक, इसके पहले, कि नियमित, मासिक रजः-स्राव हो, जारी रहेगा। ऐसी रोगिनियोंको ऐलोपैथिक चिकित्सक गहरी मात्रामें लोहा खिलाया करते हैं ; पर जितना ही लोहा खिलाया जाता है, रोगिनी भी उतनी ही बदतर होती जाती है।

रक्त सञ्चय, लाल चेहरेके साथ ऊपरकी ओर दबाव, माथा गर्म तथा हाथ-पैर ठण्डे ; पर माथे और चेहरेका ताप लाल चेहरेके अनुकूल बिलकूल ही नहीं रहता। यह मालूम होगा, कि फेरममें यह ऊपरकी ओर रक्त सञ्चय, जाड़ेका दौरा होनेके समय पूयज ज्वर (Septic fever) या दूसरी तरहके ज्वरोंमें ही होता है तथा सदा माथा गर्म नहीं रहता ; कभी-कभी ठण्डा भी रहता है ; चेहरा भी लाल और ठण्डा रह सकता है।

फेरमका दूसरा वृहत् स्वरूप **चायना**की तरह है। इसमें जैव-रसके क्षयके कारण उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं ; बहुत दिनोंतक रक्त स्राव होनेके कारण साथ ही कमजोरी भी बहुत समयतक बनी रहती है। इसका सुधार नहीं होता, समीकरण नहीं होता। हड्डियाँ कोमल रहती हैं और सहजमें ही झुक जाती हैं ; वे टेढ़ी पड़ जाती हैं। क्षीण कमजोर लड़के, सन्धियोंका सूखापन, जो चलनेपर कड़कड़ आवाजें देती हैं। नकली रक्त-पूर्णताके साथ एकाएक शरीर क्षीण हो जाना।

चेहरेकी लाली—देखनेमें स्वस्थ चेहरा—उसका, जो राहमें तेज नहीं चल सकता था सीधा खड़ा नहीं हो सकता। इतनेपर भी फेरमके कुछ उपसर्ग व्यवसायमें लगे रहते, कुछ करते रहते, थोड़ा-सा व्यायाम करते रहते, पर अच्छे रहते हैं ; क्योंकि इसकी बीमारियाँ आराम करनेके समय उत्पन्न होती हैं। स्नायुओंकी बहुत अधिक उत्तेजनशीलता और असहिष्णुता ; दर्दका बहुत अधिक अनुभव होना। फेरमकी जरूरत रहनेवाली असहिष्णु स्त्रीका चेहरा तमतमाया रहता है तथा वह हमेशा ही शिकायत किया करती है ; क्योंकि उसे सहानुभूति प्राप्त नहीं होती। वह बीमारी नहीं दिखाई देती, इतनेपर भी वह सीढ़ी चढ़नेपर हाँफती है, उसे कमजोरी मालूम होती है और लेट जाना चाहती है।

चुप रहनेपर बेचैन, अङ्गोंको बाध्य होकर चलाते रहना पड़ता है। प्रत्यङ्गोंमें छेदनेकी तरह दर्द, प्रत्यंगोंमें धीमा यन्त्रणाप्रद वेदना। **पल्सेटिला**की तरह शान्त भावसे, धीरे-धीरे चलनेपर यह चला जाता है ; पर फेरम एक बहुत ठण्डी दवा है तथा इसके रोग गर्मीसे घटते हैं ; पर गलेका, चेहरेका और दाँतोंका दर्द, ठण्डे प्रयोगसे घटता है ; पर अधिकांश दर्द तापसे घटते हैं। रोगी गर्म रहना चाहता है तथा ताजी हवा या हवाके झोंकेसे भय खाता है।

कमजोरी और सुस्ती, बोलनेपर भी कमजोरी मालूम होना। अनियमित नाड़ी और तीव्र नाड़ी या बहुत ही सुस्त नाड़ीके साथ सुस्ती, कलेजा धड़कना और इसके बाद पाक्षाघातिक दुर्बलता आती है ; अङ्ग अपना काम त्याग देते हैं। रक्त-स्वल्पता या रक्त स्रावके कारण पाक्षाघातिक दशा। रक्त स्रावके कारण मूर्च्छाका दौरा। पेशियोंमें झटका और ऐंठन ; नर्त्तन रोग ; निस्पन्द वायु।

मानसिक लक्षणोंकी प्रकृतिका अब आप सहज ही अनुमान लगा सकते हैं ; क्योंकि वे भी शारीरिक लक्षणोंकी तरह ही होते हैं। मन चञ्चल और रोगी आँसुओंसे भरा रहता है, हताश-भाव, मानसिक क्लान्ति और अवसाद। सर्वोच्च अवसाद और निराशा। थोड़े भी कारणसे, चिड़चिड़ापनसे घबड़ाहट। हलकी-सी आवाज, कागजकी खड़खड़ाहटकी तरह, रोगीको बेहोशी बना देती है। यह स्नायविक उत्तेजना और बेचैनी उत्पन्न करता है, उसे उठना और चलते-फिरते रहना पड़ता है। जरा भी रुकावट मिलनेपर उत्तेजना। कोई भी आकस्मिक या तीव्र गति या थोड़ी भी जल्दबाजीसे, आँखोंके सामने अन्धेरा छा जाता है, चकाचौंध आ जाता है, चीजें चक्कर खाने लगती हैं, उसे बैठ जाना पड़ता है और इन सबके साथ चेहरा लाल हो जाता है। जब रोगी अकेला औ विश्राम करता रहता है, तो चेहरा पीला और सर्द हो जाता है ; पर जरा भी उत्तेजना गालोंपर तमतमाहट ला देती है।

सर-दर्द रक्त-सञ्चयी प्रकृतिका होता है, साथ ही रक्त ऊपरकी ओर चढ़ता है। भरापन और तनावका भाव रहता है, साथ ही चेहरा लाल, आँखोंमें पूर्णता और तनाव। गर्दनकी पूर्णता। हृत्पिण्डका धड़कना। आँखका ढेला बाहर निकलनेवाला घेघा, दबावसे सर-दर्द घट जाता है। शिराओंको सहारा मिलनेके लिये फेरम दबाव चाहता है। हथौड़ी मारनेकी तरह सरमें धमक। प्रत्येक वेगकी गति सर-दर्दको बढ़ा देता है। खाँसनेपर सर-दर्द बढ़ता है। **खाँसनेपर पश्चात् मस्तक** और मस्तकमें दर्द। धीरे-धीरे टहलनेपर दर्द कभी-कभी उपशम हो जाता है। सीढ़ी चढ़ना, नीचे बैठना, अपनी जगहसे उठना—जबतक की खूब मनोयोगसे नहीं होता—फेरमकी सब बीमारियोंको बढ़ा देगा। कोई भी आकस्मिक गति हथौड़ी मारनेकी तरह दर्द और माथा फैलनेका भाव उत्पन्न कर देगी। इसके बाद कुछ-न-कुछ खोंचा मारने या फाड़नेकी तरह दर्द पैदा हो जायगा। उठनेपर या खाँसनेसे माथेके पिछले भागमें आघात; क्योंकि खाँसना एक आकस्मिक गति है। हथौड़ीकी चोटकी तरह सर-दर्दके साथ चित्त-विभ्रम। माथेमें खूनका दौरान हो जाना, उत्तेजनासे रक्त-सञ्चयी सर-दर्द; सर्दी लग जानेपर, हवा लगनेपर, जो तीन दिन, चार दिन, या एक सप्ताहतक रहता है। चेहरा तमतमाया रहता है और शायद ठण्डा रहता है, माथा कुछ गर्म रहता है; पर उतना गर्म नहीं जितनेकी आशा की जाती है।

आँखोंमें लाली—रक्तवाहिनियाँ रक्तसे भरी, बहुत कमजोरी, श्वास-कष्ट और कलेजा धड़कना। लिखना एक मानसिक कार्य है—इससे दुबारा सर-दर्द पैदा हो जाता है। मस्तक त्वचामें अनुभवाधिक्य। रोगीको अपने केश लटकाये रखने पड़ते हैं। रक्त-स्रावके साथ या बाद अथवा सूतिका-गृहकी स्त्रियोंको मानसिक विशृङ्खलता और सर-दर्द। आँखोंके चारों ओर फला-फुला। रक्तसञ्चयके कारण सब तरहका दृष्टि-विभ्रम, शिराओंका रुकना, पलकोंका फूलना, पीबकी तरह स्राव, आवाजका बहुत ज्यादा अनुभव होना, कानमें बाजा बजनेकी आवाज।

नाकके लक्षण भी बहुत ज्यादा हैं। सर्दी और श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके उपसर्ग, जिनका अन्त नाकसे रक्त-स्राव होकर होता है। जरा भी उत्तेजना मिलनेपर नाकसे रक्त-स्राव होता है, साथ ही ऋतु-स्रावके समय सर-दर्द, नाकसे पपड़ी निकलना। चेहरेका बहुत ज़्यादा पीलापन, थोड़े भी भावोद्रेकपर चेहरा लाल तथा तमतमाया हो जाता है। निम्न अङ्गोंके शोथके साथ तमतमाया चेहरा। शीतके साथ तमतमाया चेहरा। शीतके साथ प्यास फेरमका एक आश्चर्यजनक स्वरूप है। मासिक ऋतु-स्रावके समय प्रचण्ड दर्द होता है और ज्योंही दर्द आरम्भ होता है, त्योंही चेहरा तमतमा उठता है।

पाकाशयमें जो कुछ जाता है वह नहीं पचता और इतनेपर भी खास मिचली नहीं रहती। फेरममें मिचली प्राप्त होना तो एक अपवाद है। खाद्य पाकाशयमें जाता है तथा बगैर मिचलीके ही निकल आता है—केवल खाली कर देता है। कभी-कभी मुँहमें अन्न भर आनेके साथ **फास्फोरस**की तरह डकार आती है। मुँहभर अन्न आकर पेट खाली हो जानेकी पुराने चिकित्सकोंको **फास्फोरस** ही दवा थी। राक्षसी भूख। पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है—

"शामके वक्त साधारण आहारका दुगुना खा लेनेपर भी भूख नहीं मिटती।" सभी खाद्य तीते अनुभव होते हैं, कड़ा भोजन सूखा और बेस्वाद मालूम होता है; भोजनके बाद डकारें आती हैं। पाकाशयमें गर्मी मालूम होना; **खाद्य-पदार्थ मुँहमें चढ़ आना।** थोड़ा भी खाने-पीनेपर पाकाशयमें आक्षेपिक दबाव, खासकर मांस खानेके बाद। गोश्तसे, अण्डेसे और खट्टे फलोंसे घृणा; दूधसे घृणा तथा तम्बाकू और बियर नामक शराब प्रभृति अभ्यस्त पदार्थोंसे भी घृणा। मीठी शराब रुचिकर होती है; पर खट्टी शराब या सभी खट्टी चीजें अरुचिकर नहीं होती हैं। जीभ जली हुई-सी मालूम होती है। ज्योंही पाकाशय खाली हो जाता है, वमन रुक जाता है, जबतक कि वह फिर नहीं खा लेता। आधी रातके बाद तुरन्त ही खाद-पदार्थका वमन। वमन हुए पदार्थ खट्टे मालूम होते हैं।

फेरमका अकसर गर्भावस्थामें प्रयोग होता है। गर्भ रहनेके कुछ सप्ताह बाद स्त्री मुँह भर-भरकर वमन करने लगती है, मिचली नहीं रहती; पर चेहरा तमतमाया रहता है तथा स्त्री थुलथुली और कमजोर रहती है। वह बीमार हुए बीना ही वमन करती है। पाकाशयमें भरापन और दबाव; भोजनके बाद पकाशयमें दबाव। इस विचित्र पाकाशयके कारण फेरम एक असाधारण मजेदार दवा है। यह चमड़ेकी थैलीकी तरह रहता है; यह कोई भी चीज पचा नहीं सकता। इसे भर दीजिये और जैसा ही सरलतापूर्वक यह भरा जाता है, वैसे ही खाली भी हो जायगा।

फेरममें बड़ा ही कष्टदायक अतिसार होता है, इसके दस्त कटु, पानीकी तरह खाल उधेड़नेवाले होते हैं। सवेरेके वक्तका अतिसार। इसके बहुत-से भग्न-स्वास्थ्य पुराने पापी होते हैं, जिन्हें बहुत दिनोंसे कब्ज जारी है, वृथा ही पाखाना लगाना और कड़ा कष्टकर मलके साथ पुराना कब्ज।

इस दवामें सर्वत्र शिथिलता भी है। इसी शिथिलताके कारण मलान्त्र अपने स्थानसे हट जाता है, योनि और जरायु हट जाते हैं। शरीरके निम्न भागमें इस तरहका खिंचाव मानो सभी भीतरी यन्त्र बाहर निकल पड़ेंगे और कभी-कभी वे निकल भी आते हैं।

मूत्राशय भी शिथिल रहता है, इसकी मुखावरोधिनी-पेशी कमजोर रहती है और इसकी मांस-पैशिक क्रियामें समानता नहीं रहती। इसीलिये जरा भी हिलने-डोलनेपर, चलनेपर या खाँसनेपर आप से-आप पेशाब निकल जाता है। छोटे बच्चोंको तो दिन-रात पेशाब लगता रहता है, जबतक बच्चा खेलता है, पेशाब टपका करता है और कपड़ा भिगाये रखता है, पर एकदम शान्त रहनेपर यह अच्छा रहता है। मूत्राशय इतना शिथिल और क्लान्त रहता है, कि वह पेशाब धारण नहीं कर सकता और ज्योंही इसका कुछ अंश पेशाबसे भरता है, त्योंही उसके भीतरकी सामग्री निकलने लगती है। यह शिथिलता इस दवामें सर्वत्र है और यही इसका विशेष लक्षण है, ठीक आदमीकी तरह। आप जानते हैं, कि प्रत्येक अवसरपर, आपके मित्रमेंसे प्रत्येकको क्या करना चाहिये। ऐसा ही दवामें भी होता है। आपको यह जानना चाहिये कि यह क्या कर सकती है, यह जाननेके लिये कि **रोगीको** आरोग्य करनेमें यह क्या करेगी।

फेरममें जननेन्द्रियकी कमजोरी और शिथिलता तो एक साधारण वात है, इसीलिये मासिक रजः स्राव भी वैसा ही होता है। वहुत ज्यादा, पानीकी तरह स्राव ; रक्त-स्राव या स्राव ही रुक जाना - रजोरोध—विलकुल ही रजः स्राव न होना, सिर्फ श्वेत-प्रदरका स्राव होता है। अत्यधिक स्नायविक उत्तेजनाके साथ रजःस्रावका रुक जाना ; साथ ही चेहरा तमतमाया ; कमजोरी और कलेजेमें धड़कन। योनिकी स्थान-च्युति। सङ्गमके समय योनिमें चेतना राहित्य, अतिरजः। वहुत जल्दी जल्दी रजः-स्राव, वहुत ज्यादा और वहुत दिनोंतक बना रहता है।

कष्टकर श्वास-प्रश्वास, वक्षमें दर्द और गड़बड़ी। वक्षमें एक भारके साथ, श्वासमें कष्ट, रातके समय श्वास-रोधक दौरे ; श्वास-पथोंकी सर्दी या श्लेष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी अवस्था ; वक्षमें रक्त-सञ्चय, श्वासकष्ट, आक्षेपिक खाँसी, जैसा कि हूपिङ्ग खाँसीमें प्राप्त होता है, जो भयानक आवेशमें आती है। प्रत्येक वार भोजनके वाद खाँसीके साथ ओकाई और पेटके भीतरके पदार्थ के हो जाना। माथेमें खाँसीकी धमक मालूम होना। शराब, तम्वाकू या चायके अपव्यवहारके कारण खाँसीका वदतर हो जाना। तरलका स्राव, जैसे कि रक्त-स्रावके वाद, खाँसीका वदतर हो जाना। जरायुसे रक्त-स्राव तथा अन्य रक्त-स्रावोंके वाद वक्षकी तकलीफें, खाँसीके साथ खून, फेफड़ोंसे खून आना। गुप्त पापोंके कारण जो व्यक्ति कमजोड़ हो पड़े हैं, उनकी यक्ष्माकी ओर अग्रसर होनेकी प्रवृत्ति।

भय, उत्तेजना या श्रमके कारण कलेजा धड़कना, हृत्पिण्डकी गति कभी तेज, कभी धीमी। हृत्पिण्डमें चर्बी उत्पन्न हो जाना, **श्रमके** समय नाड़ीकी वर्द्धित गति, समूचे शरीरमें थकन, जैसे छोटी हथौड़ीसे चोट पहुँचती है।

हाथ-पैरोंमें वातज वेदना, ताप तथा धीमी गतिसे घटना ; सर्दीसे, परिश्रमसे या तीव्र गतिके कारण वढ़ना। अन्य भागोंके दर्दकी अपेक्षा त्रिकोण पेशीका दर्द ही ज्यादा प्राधान्य रखता है ; पर ये दर्द फेरमके दूसरे स्थानके दर्दोंकी अपेक्षा विशेष प्राधान्य नहीं रखते। अङ्गोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। **बाँह उठानेकी शक्ति नहीं रहती**, पाक्षाघातिक दर्द अर्थात वैसा दर्द, जो मानो सुन्न पड़ जाता है। दर्द जो उसे ऐसा अनुभव करा देता है, कि अङ्गोंको हटानेकी उसकी शक्ति नष्ट होती जा रही है। कन्धेके दर्दकी तरह ही उस सन्धिका तेज दर्द भी साधारण है। लिपि कहते हैं—वायें कन्धेमें वात", पर यह दाहिने कन्धेमें भी हुआ करता है। **दोनों ओरकी त्रिकोण पेशीमें वातज वेदना।** पेशियोंमें तथा स्नायु-पथोंमें प्रचण्ड दर्द, दाहिनी त्रिकोण पेशी (Deltoid) में चिकोटी काटनेकी तरह दर्द, दाहिने, कन्धेमें छेदनेकी तरह दर्द, हिलने-डोलने और विछावनके वस्त्रके भारसे बढ़ जाता है ; तापसे घटता है। फाड़ने और डंक मारनेकी तरह दर्द, फेरमका दर्द रातमें होता है ; क्योंकि रोगी विछावनमें शान्त पड़ा रहना चाहता है। **आराम करनेके समय ही फेरमका दर्द होता है।** दिनमें धीरे-धीरे चलते-फिरते रहनेपर इतना दर्द नहीं होता, अङ्गोंका ठण्डापन और फिर तलहत्थी और तलवेका ताप—वे वदला करते हैं। इन सव कमजोरियों और शुस्तियोंके साथ शोथकी दशा आती है, इस तरह हाथ और पैर फूल जाते हैं।

शामको जाड़ा या जाड़ेके साथ वोखार, हाथ-पैर ठंडे और लाल चेहरा; जाड़ेके साथ पैर बरफकी तरह ठंडे, खानेके वाद जाड़ा घट जाता है। जाड़ेके साथ प्यास। बहुत ज्यादा पसीना, जिसमें पीला दाग पड़ता है। पसीना होनेके समय सभी लक्षण बदतर हो जाते हैं, रातके पसीनेमें बड़ी कड़ी गन्ध रहती है। धीरे-धीरे टहलते रहनेपर सभी ज्वरके लक्षण अच्छे रहते हैं। किनाइनके अपव्यवहारके कारण सविराम ज्वरमें।

पाठ्य ग्रन्थोंमें हम देखते हैं, कि यक्ष्माकी अन्तिम अवस्थाके अतिसारमें फेरम उपयोगी हैं; हाँ कभी-कभी ऐसा होता है—यदि रोगी मरनेके लिये तैयार है। फेरम अतिसार बन्द कर देगा, पर इसके रुक जानेके बाद रोगी अधिक दिनोंतक जीवित न रहेगा; अतिसार अमूमन दर्द-भरा नहीं रहता। यह तंग करनेवाला होता है, पर इसमें दर्द नहीं होता और रातका पसीना भी विना दर्दका ही होता है। इन्हें मत रोकिये, उन्हें योंही छोड़ दीजिये। रोगीको शान्तिसे अन्त होने दीजिये। यक्ष्माकी अन्तिम अतिसारकी सर्वोत्तम दवा (Saccharum lactic) दूधकी चीनी मूल रूपमें है, इसे थोड़ी मात्रामें तथा जितनी ही बार रोगी तथा देखनेवाले देना चाहें देते जाइये।

फेरम फास्फोरिकम
(Ferrum Phosphoricum)

बहुत कमजोरी और लेटे रहनेकी इच्छा, रातमें स्नायविक, वातज दशा। यद्यपि सुसलरके पक्षपातियोंमें प्रादाहिक ज्वरोंकी पहली अवस्थामें प्रयोग किया है, फिर भी पुरानी वीमारियोंसे उच्च क्रमोंमें यह लाभदायक हुई है और एक गहराईतक काम करनेवाली सोरा-नाशक दवा हुई है; यह फेरम और फास्फोरिक एसिड, जिससे इसका निर्माण होता है, उससे कम नहीं हो सकता, बहुत वर्षोंतक मैं सुसलरके मतानुसार परिचालित होता रहा, पर परीक्षाओंके सहारे, होमियोपैथिक रोग-वृद्धि और रोगी पार्श्वके तजुर्वेसे लक्षणोंका वर्त्तमान प्रबन्ध इस बहुमूल्य होमियोपैथिक दवाका परिचालक हो रहा है।

कुछ उपसर्गोंके बढ़नेका समय सवेरा है, कुछ दोपहरमें बढ़ते हैं, दूसरे शामको और रातमें और आधी रातमें आते हैं। रोगीको खुली हवा सहन नहीं होती तथा खुली हवामें उपसर्ग बढ़ जाते हैं। इसका बहुत जबर्दस्त ध्यान देने योग्य स्वरूप रक्त-स्वल्पता और हरित्पाण्डु रोग (Chlorosis) है। (फेरमकी तरह) सार्वाङ्गिक, शारीरिक चिन्ता बहुत कुछ **फास-एसिड**की तरह रहती है। जब तापकी कमी तथा सर्द हवा और सर्द हो जानेपर रोग-वृद्धि। हमेशा सर्दी लग जाया करती है। सर तथा यन्त्रोंमें रक्त-सञ्चय साथ ही ज्वर और लाल चेहरा। यक्ष्माकी वंशगत-प्राप्तिकी तरह निम्न जीवनी-शक्तिकी तरह सार्वाङ्गिक दुर्बलता। शोथज दशाएँ। भोजन करने या शारीरिक श्रमसे उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। वेहोशीके दौरे। सर्द चीजें उपसर्ग उत्पन्न कर देती है। खट्टी चीजोंसे रोग-वृद्धि हो जाती है। रक्तवाहिनियाँकी पूर्णता तथा शिराओंका तन जाना;

फेरम, फास-एसिड तथा **फास्फोरस**की भाँति रस-स्रावी दशा, इसका एक जबर्दस्त स्वरूप है। इस दवामें हिस्टीरियाकी स्नायविकता और व्याधि-शंका प्राप्त होती हैं। समस्त शरीरमें घावकी तरह यन्त्रणा, खासकर उन अंशोंमें जहाँ रक्त-सञ्चय हुआ रहता है, झटका लगने और चलने-फिरनेपर रोग-वृद्धि। कोई चीज उठाने, पेशियोंपर जोर पड़ने तथा कुछ गड़ जानेके कारण रोग-वृद्धि। बहुत-से लक्षण बिछावनपर लेट जानेपर तथा विश्रामसे बदतर हो जाते हैं तथा धीरे-धीरे हिलते-डोलते रहनेपर घट जाते हैं (**फेरम**की तरह); पर घोर आलस्य उसे लेट जानेके लिये बाध्य करता है। हिलना-डोलना, जो एक वास्तविक श्रम होता है, उससे रोग-वृद्धि हो जाती हैं; पर धीमी गतिसे घटता है, शरीरांश तथा रोगवाले अंशोंका सुन्नपन। शरीर तथा मस्तकपर खूनका दौरान। सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। नीचेकी ओर फाड़नेकी तरह दर्द। झूठा रक्त सञ्चय। समूचे शरीर और माथेमें कड़ी धमक। दृढ़, पूर्ण और तीव्र नाड़ी। साधारणतः अनुभवाधिक्य, दर्दका सहन न होना, खड़े होना, बहुतसे रोगोंको बढ़ा देता है। काँपते हुए प्रत्यङ्ग। ये सब मिलकर इस दवाको विस्तृत और गहरायीतक क्रिया करनेवाली बना देते हैं।

इस दवामें अत्यधिक क्रोध, यहाँतक कि हिंसाका भी लक्षण है। यह कमजोरी, सर-सर्द, कम्पन, पसीना और दूसरे स्नायविक प्रदर्शन उत्पन्न करती है। रातमें घबड़ाहट, मानो उसने किसीको बहुत बड़ी हानि पहुँचायी है। भोजनके बाद, आशङ्काके साथ, ज्वर-कालमें, भविष्यके सम्बन्धमें, व्याधि-शङ्कापूर्ण। प्रसन्न, बकवादी और उल्लसित; अस्वाभाविक उत्तेजना उदासीसे मिली हुई। इस दवाका सकम्प प्रलापमें प्रयोग होता है। सङ्ग-साथसे घृणा और अकेला रहनेपर अच्छा मालूम होता है। मन-संयोगकी या किसी विषयकी विचारनेकी शक्ति नहीं रहती; अध्ययन नहीं कर सकता। सोचनेके समय, सवेरे, शामको और भोजनके बाद मन चञ्चल हो जाता है। ठण्डे पानीसे चेहरा धोनेपर घटना। पासकी हरेक चीज और अपने पारिपार्श्विकोंसे असन्तुष्ट रहता है। शामको अत्यन्त उत्तेजनशील रहता है। उसके सरके भरापनके कारण उसे संन्यास रोग हो जानेका भय होता है। भीड़में जानेसे भय, मृत्युका, कोई बुराई होनेका, दुर्घटना घटनेका, मनुष्योंका भय। भुलक्कड़। हिस्टीरिया-ग्रस्त लड़कियोंकी, अन्य लक्षण मिलनेपर यह बहुत ही उपयोगिनी दवा होती है।

उसके विचार बहुत ज्यादा रहते हैं और मनकी गैरमामूली स्वच्छता रहती है (काफिया)। इसके अलावा सभी आनन्द-पूर्ण और उत्तेजक घटनाओंके प्रति असीम उदासीनता। काम करनेसे अनिच्छा। इस उक्तिसे सूतिकोन्मादका बहुत कुछ पता लग सकता है—"सुअरियाँ अपने बच्चोंको खा जाती हैं।" इसमें बहुत ज्यादा मस्तिष्कमें रक्त चढ़ जानेका लक्षण है, तब पागलपन क्यों न होगा? उपदाहिता, परिवर्त्तनशील भावभङ्गी, उदास, जिद्दी, रातमें बिछावनपर बेचैन रहता है, ज्वर कालमें बहुत छटपटाया करता है। ऋतु स्रावके पहले शामको उदासी, आवाजका बहुत अधिक सहन न होना। बुद्धि-भ्रंश। बातचीतकी इच्छा न होना। सोचनेसे अनिच्छा, रोना। मानसिक परिश्रमसे अनिच्छा।

मस्तिष्कमें रक्त चढ़ जानेके कारण, जाड़ा लगनेके समय, आँखें बन्द करनेपर, तीसरे पहर सरमें चक्कर आना ; सामनेकी ओर गिर जानेकी प्रवृत्ति ; सर-दर्दके समय, मानो नशा पिये हो ; नीचेकी ओर देखनेसे ; रजः स्रावके समय, मिचलीके साथ, उठनेपर, बिछावनसे उठनेपर। दृष्टि गायब हो जानेके साथ चलनेके समय डगमगाना। चलनेके समय ऐसा अनुभव होना, मानो माथा सामनेकी ओर ढकेल दिया गया है।

माथा ठण्डा मालूम होता है और मस्तक-शिखरमें ठण्डी हवा सहन नहीं होती। मस्तिष्कमें रक्त जाना। शिरकी त्वचाका संकोचन। माथेमें खालीपनका भाव, रजःस्रावके समय। माथेमें पूर्णताकी अनुभूति। केश झड़ जाते हैं। माथा बहुत गर्म मालूम होता है। तापकी झलक और लाल चेहरा। माथेमें गरमी, मस्तक-शिखरमें ; रजःस्राव-कालमें। रजः-स्रावके कालमें माथा भारी मालूम होता है। ललाट और पश्चात् मस्तकमें भार। खोपड़ीकी त्वचामें खुजली, सवेरे बिछावनमें, तीसरे पहर, शामको सर-दर्द। साधारण सर-दर्दको ठण्डी हवा घटा देता है , सीढ़ी चढ़ना बढ़ा देता है, अन्धा कर देनेवाला सर-दर्द, प्रादाहिक सर दर्द, सर्दीके समय सर दर्द, आँखें बन्द करनेपर बढ़ जाता है ; ठण्डे प्रयोगसे घटता है ; नाककी सर्दीके साथ ; खाँसनेपर भोजनके बाद उत्तेजनासे बढ़ जाता है। ऋतु-कालके समय सर-दर्द, यह शोरगुल तथा रोशनीसे बदतर हो जाता है, हथौड़ीसे मारनेकी तरह सर-दर्द। हिलने-डोलनेसे बढ़नेवाला सर दर्द। उसे बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है। लेटनेपर उपशम होता है, ऋतु-स्रावके समय सर दर्द, हिलने डोलनेपर, सर हिलानेपर, शोरगुलसे, आवेशिक दर्द। दबाव दर्द घटा देता है। धमककी तरह, सर-दर्द। गाड़ीमें सवारी रोग-वृद्धि कर देता है। बैठना, झुकना, चलना रोग-वृद्धि करता है। सरको लपेट रखना या तो दर्द बढ़ा देता है या दर्द उत्पन्न कर देता है। सर और कनपटियोंमें टपक, दाहिनी ओर बदतर गर्म, लाल चेहरे और खाद्य-पदार्थके वमनके साथ सर-दर्द ; तेज सम्मुख कपालका नाकसे रक्त-स्रावके साथ सर-दर्द, नाकसे रक्त-स्राव होनेपर घटता है। कपालके दाहिनी ओर कष्टोंकी अधिकता, सवेरे जागनेपर बढ़ना या शामको ; खुली हवामें घट जाता है, खाँसनेपर बढ़ जाता है। आँखके ऊपर दर्द, पश्चात-मस्तकमें खाँसनेपर, हिलनेपर, ऋतु-स्राव कालमें दर्द, माथेके पार्श्व भागमें और कनपटीमें, खोपड़ीमें दर्द, बहुत ज्यादा रजःस्राव होनेपर खोपड़ीमें दर्द, कनपटीमें छेदनेकी तरह दर्द, माथेमें फटनेकी तरह दर्द समूचे माथेमें दबावका दर्द, बाहरकी ओर दबाव, पेशानीके सामनेवाले उभारमें, कनपटियोंमें। मस्तक-शिखर पत्थरकी तरह। मस्तक-त्वचामें यन्त्रणा, पश्चात् मस्तककी त्वचामें, मस्तक-शिखरमें। माथा, कपालमें, आँखोंके ऊपर, पश्चात् मस्तकसे ललाटतक फैला हुआ सुई गड़नेकी तरह दर्द ; झुकनेपर, मस्तक-पार्श्वमें कनपटीमें, मस्तक-शिखरमें दर्द। माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द। माथेमें सर्वत्र धमक, हिलने-डोलने और झुकनेपर बढ़ना, ललाटमें बहुत ज्यादा। खाँसनेपर, पश्चात् मस्तकमें, कनपटियोंमें, मस्तक-शिखरमें। माथेमें झटके।

आँखसे श्लेष्माका स्राव। आलोकातङ्कके साथ चक्षु-प्रदाह। झुकनेपर देख नहीं सकता। रक्तवाहिनियाँ फैली हुईं, आँसुओंका स्राव। अधखुली पलकें। आँखोंमें

दर्द, यन्त्रणा, जलन, वालू, सुई गड़नेकी तरह दर्द। आँखका ढेला वाहर निकले रहनेकी तरह अनुभूति। चक्षु-श्वेत-पटलकी, चक्षु गोलककी और पलकोंकी लाली। गड्ढेमें धँसी आँखें, फूली हुई पलकें, चक्षु-वाह्य-पटल पीला। मूर्च्छा आजानेकी तरह दृष्टिका गायव हो जाना।

कानसे पीवका स्राव। कानमें खुजली, कानमें आवाज, भनभनाहट, गुन-गुनाहट, घण्टी वजनेकी आवाज और गानेकी आवाज। कण्ठकर्णी नलीकी सर्दी, कानमें प्रादाहिक दर्द। मध्य-कर्णसे पीव-स्राव। कानमें गहराइपर दर्द। खींचन, सुई गड़ना, कर्णमूल-ग्रन्थिमें दर्द और सूजन। आवाजका सहन न होना। विचलित श्रवण-शक्ति।

नाककी सर्दी। नाककी सर्दी, स्राव खून-मिला। नाकमें पपड़ी जमती है। स्राव खाल उधेड़नेवाला और पीव-मिला। जव वायोकेमिक सिद्धान्तके अनुसार निम्न-क्रममें इस दवाका प्रयोग होता है, तो इसका व्यवहार केवल नयी सर्दीतक ही सीमित रहता है; पर जव होमियोपैथिक ढङ्गसे प्रयोग होता है, तो इस सीमावद्धताका कोई लाभ नहीं रहता। कोन सोच सकता है, कि **फेरम** या **फास-एसिड** या **फासका** केवल नयी वीमारीकी पहली अवस्थामें ही प्रयोग होगा?

नाककी सर्दीके साथ ज्वर-कालमें या सर गर्म और भरा रहनेवाला सर-सर्दके साथ, नाकसे रक्त-स्राव। सवेरेके वक्त नाकसे रक्त-स्राव या नाक छिड़कनेपर, खाँसीके साथ, छींकें।

हरित्पाण्डु रोगकी तरह चेहरा, आँखोंके चारों ओर नीला घेरा। मिट्टीकी तरह, पीला, पचका चेहरा। पीले ओंठ। लाल चेहरा पर्यायक्रमसे पीला हो जाता है। गालोंकी चकत्तेदार लाली। ज्वरके समय, सर-दर्दके समय लाल। पीला, यकृतके दाग। ओंठका सूखापन। चेहरेका ताप; तापका झलक, वैठनेके समय, दाँतोंका प्रदाह, स्नायु-शूलके कारण चेहरेमें दर्द, ठण्डे, प्रयोगसे घटना; हिलने-डोलनेपर वढ़ना। धमककी तरह दर्द, सुई गड़नेकी तरह। चेहरेमें पसीना। दवा हुआ चेहरा दाँतके दर्दके कारण शोथज सूजन। फूली हुई कर्णमूल ग्रन्थियाँ।

मुँह और मसूढ़ेसे रक्त-स्राव। जीभ गहरी लाल और फूली, जीभ सफेद। सूखा मुँह, मसूढ़े, गलकोष, जीभ और तालुमूलका प्रदाह। लाल, गर्म, फूले हुए मसूढ़ोंके साथ दाँतमें दर्द; मुँहमें ठण्डा पानी रखनेपर घटती है तथा गर्म चीजोंसे वढ़ती हैं। भोजनके वाद दाँतमें दर्द, जीभकी जलन, लार वहना, स्वाद वदजायके, सड़ा, मीठापन लिये।

कण्ठका सङ्कोचन। कण्ठ और तालु मूलमें लाली, फूले हुए तालुमूल। कण्ठमें ताप, कण्ठ तथा तालुमूलका प्रदाह। कण्ठमें ढेलेकी तरह मालूम होना; निगलनेपर दर्द, जलन, यन्त्रणा।

भूख घटी। खाद्यकी इच्छाके विना ही राक्षसी भूख; भूख विलकुल ही गायव। खाद्य, दूध और मांससे अनिच्छा। खट्टी चीजोंकी इच्छा करता है। भोजनके वाद पाकाशय तन जाना। भोजनके वाद तीती, खाली, खाद्यके, वदवूदार, खट्टी डकारें आना। मुँहमें पानी भर आना। भोजनके वाद पूर्णता, पाकाशयमें ताप, हिचकी, अनपच। पाकाशयका प्रदाह। भोजनके वाद और गर्भावस्थामें मिचली, एकाएक मिचलीका आक्रमण, किसी भी

समय मिचली हो सकती है ; कभी-कभी तो रोगिनीको नींदसे जगा देती है। बहुत थोड़ी देरतक होती है ; कण्ठमें मिचली मालूम होती है। टहलनेके समय मिचली। भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द, पाकाशयमें जलन, मरोड़। भोजनके बाद दबाव, यन्त्रणा, बहुत पानीकी तेज प्यास, वमन, सवेरे, सोकर उठनेपर, खाँसनेपर, पीनेके बाद, खानेके बाद, ज्वर-कालमें, सर-दर्द-कालमें, गर्भावस्थामें, गाड़ीमें सवारी करनेपर। प्रचण्ड वमन, रक्त, खाद्य, हरा खट्टा। पाकाशयमें दर्द और प्रदाहके साथ वमन।

तलपेट तना रहता है तथा यकृत और प्लीहा बढ़ी रहती है। बहुत आध्मान, भरापन, गुड़गुड़ाहट, गड़गड़ाहट। तलपेट कड़ा रहता है। तलपेटमें भार, अन्त्रावरक झिल्ली (Peritoneum) का प्रदाह। यकृतके बहुतसे उपसर्गोंकी यह आरोग्यदायक औषधि है। तलपेटमें दर्द, सवेरे, शामको, रातमें खाँसनेपर ; अतिसारके समय, भोजनके बाद, रजःस्रावके समय, मानो रजः-स्राव जारी होगा ; आवेशिक, पाखाना होनेके पहले, चलनेके समय, कुक्षि-देशमें दर्द यकृतमें दर्द मरोड़, शूलकी तरह दर्द, खिचाव, दबाव। यन्त्रणाप्रद कुचल जानेकी तरह दर्द, तनाव।

कब्ज, कष्टकर मल, मलद्वारका संकोचन, पतले दस्त, सवेरे, दोपहरको, रातमें, आधी रातके बाद, भोजनके बाद, दर्द-रहित। वायु छूटना। मलद्वारसे, बवासीरसे रक्त-स्राव बवासीरका मसा, बाहरी, आप-ही-आप मल निकल जाना। मलद्वारमें खुजली, मलद्वारके पास तर बना रहना। पाखानेके समय मलनालीमें दर्द, रक्तामाशय और ज्वरके साथ, पाखाना होते समय और होनेके बाद जलन। अकड़न। प्रदाहके कारण मलान्त्रमें दर्द, लगातार दर्द बना रहना, पाकाशयपर दबाव देनेपर बढ़ जाना, पाखाना होनेके समय मलद्वार की स्थान-च्युति। वृथा ही बार-बार पखाना लगना। मल खाल उधेड़नेवाला, खून-मिला, भूरा, बार-बार, कड़ा, खाद्य-पदार्थ मिला, चिकना, हरी आम, पतला, पानीकी तरह, हरा पानी जैसा होता है।

मूत्राशय या मूत्रनलीसे रक्त-स्राव। ज्वरके साथ मूत्राशयका प्रदाह। मूत्राशय और मूत्राशय-ग्रीवामें दर्द, टङ्कार पेशाब लगना, बार-बार, लगातार मूत्राशय-ग्रीवा और लिंगकी जड़में दर्दके साथ, तुरन्त ही पेशाब करना पड़ता है, जिससे दर्द घट जाता है। खड़े रहनेपर बढ़ता है, सिर्फ दिनके समय। एकाएक पेशाब लग आता है ; तुरन्त दौड़कर जाना पड़ता है, नहीं तो पेशाब निकल पड़ता है। बार-बार पेशाब। आप-ही-आप दिनके समय पेशाब होना, लेट जानेपर उपशम हो जाता है। रातमें सोनेके समय, खाँसनेपर जागनेके समय। ज्वरके साथ मूत्रपिण्डमें दर्द।

मूत्रनलीसे पुराने सूजाकका लसदार स्राव (Gleety discharge)। प्रादाहिक दशामें मूत्रनलीमें तापके साथ सूजाक, पेशाब थोड़ा पानीकी तरह या श्लेष्माका स्राव। मूत्रनलीसे रक्त-स्राव, पेशाब होनेके समय मूत्रनलीमें जलन।

पेशाब अण्डलाल-मिला, खून-मिला, जलन, खड़े रहनेपर धुआँ-सा, काला, लाल, सर-दर्दके साथ बहुत ज्यादा पेशाब, ऐमोनिया-मिला, बहुत थोड़ा ; बहुत ज्यादा तलछट श्लेष्मा, बहुत ज्यादा मूत्राम्ल (Uric acid), आपेक्षिक गुरुत्व बढ़ा।

कष्टकर रात्रिकालीन लिङ्गोत्तेजना और वीर्य-स्राव। लिङ्गोद्रेक दुर्वल या बिलकुल ही न होना। कामेच्छा बढ़ी हुई या एकदम ही नदारद। स्त्रियोंके लक्षण थोड़ेसे वदले रहते हैं ; गर्भ-स्रावकी सम्भावना, सङ्गमसे घृणा या कामेच्छा बहुत दवी हुई। श्वेत-प्रदर, खाल उधेड़नेवाला, ऋतु-स्रावके पहले, दूधकी तरह, पतला, सफेद। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त कन्याएँ। ऋतु-स्राव न होना। मासिक रजः-स्राव चमकीला लाल, थक्का-थक्का, वहुत ज्यादा, काला, बहुत जल्दी-जल्दी, रुक-रुककर, अनियमित, देरसे, दर्द-भरा, पीला, विलम्बसे, थोड़ा, रुका हुआ, पतला, पानीकी तरह। जरायुसे रक्त-स्राव, संगमके समय योनिमें दर्द, ज्वर और लाल चेहरेके साथ कष्टरजः। डिम्बप्रदेशमें धीमा दर्दके साथ श्रोणि-देशमें नीचेकी ओर खिंचाव। जरायुका अपने स्थानसे हट जाना, बन्ध्यत्व, स्पर्श-असहिष्णु योनि।

वायु पथोंकी नयी सर्दी, श्लेष्मा, खाल उधड़नेका भाव और वक्षमें घरघराहट, ज्वर तथा लाल चेहरेके साथ स्वर-यन्त्रका प्रदाह। स्वर यन्त्र और टेंटुआमें श्लेष्मा, स्वर-यन्त्रमें सूखापन, स्वर-यन्त्रमें जलन, स्वर-यन्त्रमें रूखापन। नाककी सर्दीके साथ स्वर-भङ्ग। आवाज न निकलना और कमजोरी।

श्वास-प्रश्वास दमाकी तरह। आक्षेपिक दमा, श्वास-कष्ट, शामको, रातमें, खाँसीके साथ, लेटनेके समय। घरघराहट, लघुश्वास, श्वास-रोधक श्वास-प्रश्वास। गहरी साँस लेनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

खाँसी—दिनके समय, सवेरे सोकर उठनेपर, शामको, रातमें ठण्डी हवा बढ़ा देता है। दमाकी तरह नयी, लघु, आक्षेपिक और जोरकी दर्द-भरी खाँसी ; गहरी साँस लेनेपर खाँसी बढ़ जाती है। नाककी सर्दीके साथ लगातार खाँसी। सूखी खाँसी, भोजनके बाद खाँसी, क्लान्त कर देनेवाली, ज्वरके साथ। खुसखुसी खाँसी। स्वर-यन्त्र और टेंटुआ उत्तेजनाके साथ खाँसी, ढीली खाँसी ; लेटना खाँसीको बढ़ा देता है। विस्तरमें रहनेपर खाँसी, आवेशिक खाँसी, घरघराहटके साथ खाँसी, आक्षेपिक। बातचीतसे खाँसी बढ़ने लगती है। चुनचुनी कष्टप्रद खाँसी, चलनेपर बढ़ना। हूपीङ्ग खाँसी। नीचे सिर झुकानेपर, स्वर-यन्त्र छूनेपर खाँसी। यक्ष्मा रोगमें सर्दी लग जानेपर बढ़ी हुई खाँसी।

दिनके समय बलगम निकलना, सवेरे, खून-मिला, चमकीला लाल, काला, वहुत ज्यादा, कष्टकर, फेनकी तरह, हरा, श्लेष्मा, बदबूदार ; पीव-मिला, थोड़ा, सड़ा, गाढ़ा, लसदार, सफेद, पीला।

वक्ष तथा हृत्पिण्ड-प्रदेशमें घबड़ाहट। वक्षकी सर्दी, वक्षमें रक्त-संचय। वक्ष तथा हृत्पिण्डका सङ्कोचन, भरापन मालूम होना। फेफड़ोंसे रक्त-स्राव। ताप। श्वास-पथोंका फेफड़े और फुस्फुसावरक झिल्लीका प्रदाह। वक्षमें दवाव। खाँसनेके समय, श्वास लेनेके समय, वक्षके पार्श्व भागमें खूब गहरी श्वास लेनेपर वक्षमें दर्द। खाँसनेपर वक्षमें यन्त्रणा। वक्षमें, वक्ष पार्श्वभागमें, खाँसनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द। दाहिनी ओरका फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह (Pleuritis)। खाँसने और श्वास लेनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द बढ़ जाता है। परिश्रम करने और हिलने-डोलनेपर बैठे रहनेके समय, तेज चलनेपर रातमें घबड़ाहटके साथ कलेजा धड़कना। यक्ष्मा रहनेपर अगर नयी सर्दी लग जाये, तो इससे बहुत

जल्द सामयिक लाभ होता है। नये यक्ष्मामें। श्वास-रोध, ज्वर और लाल चेहरेके साथ वक्षमें अकड़न। ऊपरी कण्ठमें वात।

पीठमें ठण्डक। गर्दन या पीठमें "क्रिक"। रातमें, ऋतु-स्रावके समय, हिलने-डोलनेपर अपनी जगहसे उठनेपर, बैठनेके समय, चलनेके समय, ग्रीवा प्रदेशमें, कन्धोंके बीचमें, कटि-प्रदेशमें ऋतुकालके समय पीठमें दर्द। दर्द पीठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। फाड़नेकी तरह। गर्दनके पीछेकी ओर कड़ापन।

शाखा अङ्ग ठण्डे। हाथ और पैर ठण्डे। शामको बिछावनमें ठण्डे पैर। सर दर्दके समय ठण्डे पैर। अंगुलियोंका सङ्कोचन, वातका परिणाम। जंघा, पैर, पैरकी पोटली, पञ्जा, इन सबमें मरोड़। अंगुलीके नाखूनोंका नीलापन। हाथ, तलहत्थी, तलवा गर्म। अङ्गोंमें, ऊपरी अङ्गोंमें, पैरोंमें भार। सन्धियोंका प्रदाह। हाथ और अङ्गुलियाँ, पैरोंका और पञ्जोंका सुन्नपन। दाहिना कन्धा और ऊपरी बाहुमें खींचन और फाड़नेकी प्रकृतिका वातज दर्द। हाथको बहुत वेगसे हिलानेपर रोग-वृद्धि; धीरे-धीरे हिलानेपर घटना। (फेरम), वह अंश स्पर्श-असहिष्णु रहता है। दाहिने हाथका सुन्नपन, हाथसे उठा नहीं सकता। दाहिनी स्कन्ध-सन्धिका नया वात, लाली, सूजन और यन्त्रणा। दाहिनी त्रिकोण पेशीका वात। कलाईका वात। ज्वरके साथ घुटनेकी सन्धिका वात। सन्धियोंका गठिया रोग। गृध्रसी वात। जंघामें दर्द। प्रत्यंगोंमें यन्त्रणादायक कुचल जानेकी तरह दर्द। प्रत्यंगोंमें, ऊपरी प्रत्यंग, कन्धा, कूल्हेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। कन्धोंमें, ऊपरी बाहुओंमें, कूल्होंमें फाड़नेकी तरह दर्द। ज्वरके साथ दोनों घुटनोंमें धक्का देनेकी तरह दर्द, जो नीचे पैरतक उतर आता है, बेचैन पैर, निम्न प्रत्यंगोंका, पैरके पञ्जोंका कड़ापन। फूली हुई सन्धियाँ, ऊपरी प्रत्यंग, अग्रबाहु, हाथ, पैर, शोथज और वातज सूजन। अंगोंकी, सन्धियोंकी, घुटने और पैरोंकी बहुत कमजोरी। एक सन्धिसे दूसरीपर वात घूमा करता है, जरा भी हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है।

बहुत तरहके स्वप्न दिखाई देते हैं, घबड़ाहट-भरे, घबरानेवाले, गिरने, गला दबानेके प्रबल स्वप्न। देरसे सोता है, बेचैन नींद। शामके वक्त औंघाईके साथ आधी राततक नींद न आना। एक बार जागनेपर फिर नींद नहीं आती।

तीसरे पहर शीत; नित्य १ बजेतक। रातमें बिछावनपर शीत। सर्दीलापन। हिला देनेवाला जाड़ा। ज्वरकी प्रधानता रहती है। यन्त्रोंके, सन्धियोंके और श्लैष्मिक-झिल्लियोंके प्रदाहके साथ किसी भी समय ज्वर। बिना शीतके ही ज्वर, प्यासके साथ शुष्क ताप। तापकी झलक, विलेपी ज्वर (Hectic fever) और रातके समय पसीना, भीतरी ताप। सविराम ज्वर, नींदके बाद ताप। दिनमें पसीना, सवेरे, चिपचिपा, बहुत कमजोरीके साथ, थोड़ा भी श्रम करनेपर, ज्वरके बाद, बहुत ज्यादा, निद्राके समय।

जलता हुआ चर्म। सर्दी, चर्मसे भूसी निकलना, पीला, लाल, चर्म सूखा चर्म। शरीरपर चींटी रेंगनेकी तरह मालूम होना। चर्मकी बहुत अधिक स्पर्श-असहिष्णुता। चर्म यन्त्रणा-पूर्ण मालूम होता है, जख्म निकलना। छोटे हरे मसे।

फ्लुयोरिक एसिड
(Fluoric acid)

परीक्षामें, इसके लक्षण प्रकट होनेमें इस दवामें बहुत देर लगते हैं। यह बहुत ही गहराईतक क्रिया करनेवाली दवा है तथा सोरा-दोष-नाशक, उपदंश-दोष-नाशक और प्रमेह विष-नाशक है; इसकी क्रिया गुप्त रूपसे होती है और इसके लक्षण धीरे-धीरे आते हैं; यह बद्धमूल, धीमी और अत्यन्त जटिल बीमारी, हानिकारक वाष्पकी तरह है और इसीलिये यह बहुत धीमी और निम्न-रूपकी बीमारीके लिये उपयोगी है; यद्यपि इसकी प्रकृतिमें कुछ ज्वरकी क्रिया भी है, पर इस कामके लिये इसका अकसर प्रयोग नहीं होता। इसकी एक खास रूपकी ज्वरकी क्रिया बहुत धीमी और छिपी हुई रहती है। यह शरीरके खूब उत्ताप भावसे रात्रि-ज्वरके पुराने रोगियोंसे जिन्हें कई सप्ताह या बरसोंतक ज्वर आता रहता है, उनसे बहुत मेल खाती हैं।

समय-समय गैर-मामूली रूपसे यह गर्म खूनवालोंकी दवा रहती है और फिर इसमें सर्दीकी भी दशा है। तापमान बिना बढ़े, शामको और रातमें शरीरमें बहुत ताप मालूम होता है। चमड़ा बहुत गर्म हो जाता है, रोगीकी तकलीफ अकसर गर्म चीजोंसे, गर्म ओढ़नेसे और हवाकी गर्मीसे बढ़ जाया करती है; बहुत कुछ **पल्सेटिला**की तरह गर्म कमरेमें उसका श्वासरोध होने लगता है। वह ठण्डे पानीसे चेहरा और माथा धोना चाहता है; ऐसे स्नानसे उसे आराम मिलता है। पैरके पंजेमें जलन होती है और रातमें इन्हें रोगी बिछावनसे बाहर निकाल रखता है; वह हाथ-पैरोंके लिये ठण्डी जगहकी खोजमें बिछावनमें इधर-से-उधर हटता है। तलवेमें पसीना होता है, तलहत्थीसे पसीना होता है और पसीना कटु होता है, जिससे वह स्थान घावकी तरह हो जाता है; अंगूठोंके बीचकी खाल पसीनेसे उधड़ जाती है। पसीना बदबूदार होता है, अंगूठोंके बीचमें बदबूदार, कटु पसीना, ज़लन, अस्वाभाविक ताप और कटुता—ये ही शब्द हैं, जो बहुतसे लक्षणोंको बता देते हैं; आँखोंसे कटु आँसू बहना या दूसरे स्राव होना; नाकसे कटु स्राव होना, कटु पसीना प्रभृति। अंशोंमें जलन और जलन करनेवाला दर्द; पुरानी दशाकी तरह शरीरसे ताप निकलता है। तापसे, बाहरी गर्मीसे तथा भीतरी गर्मीसे रोगका बढ़ना, इस दवाका लक्षण है; चाय और काफी पीनेपर रोगका बदतर हो जाना, इस दवाका एक सुदृढ़ स्वरुप है—गर्म पेयोंसे पतले दस्त आने लगते हैं या आध्मान होता या पाकाशयमें गड़बड़ी हो जाती है और बहुत तरहसे अपनेको प्रकट करनेके लिये अजीर्ण उत्पन्न कर देता है। खड़े होने और बैठनेपर लक्षण बदतर हो जाते हैं तथा खुली हवामें अच्छे रहते हैं।

यह बहुत गहरायीतक काम करनेवाली दवा है। यह सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाको इस तरह बिगाड़ देता है, कि नाखूनोंमें, केशोंमें तथा चर्ममें इसके विचित्र बाह्य दृश्य दिखाई देते हैं; उस सबका सम्पूर्ण विकास होता है। जब ऐसी बात रहती है, तो हम जानते हैं कि किसी दवाकी बहुत गहरी तथा बहुत दिनोंतक क्रिया होती है। यह चर्मपर यहाँ-वहाँ

बहुतसे पपड़ीभरे उद्भेद उत्पन्न करता है, जिनकी आरोग्य होनेकी प्रवृत्ति नहीं दिखाई देती। पपड़ी जमती है, पर पपड़ीके नीचेवाला जखम आरोग्य होता नहीं दिखाई देता। केशोंकी चमक चली जाती है; केश झड़ जाते हैं और यदि माइक्रोस्कोपसे उनकी परीक्षा की जाती है, तो अस्थि-क्षत होना मालूम होता है। छोटे छोटे फटे जखम केश-पथमें पाये जाते हैं। केशकी जड़ सूखी रहती है, केश सट जाते हैं, झड़ते हैं और टूटते हैं; झब्बे-का-झब्बा उड़ जाता है और चमक-रहित हो जाता है। नाखून खण्ड-खण्ड रहते, नाखूनोंमें आकुञ्चनकी तरह, नाखून बहुत तेजीसे बढ़ते हैं और टेढ़े-मेढ़े निकलते हैं अर्थात् वे कदाकार और कुञ्चित रहते हैं कितने ही स्थानोंपर बहुत मोटे तथा कितनी ही जगह बहुत पतले रहते हैं; आसानीसे टूट जाते हैं, भङ्ग-प्रवण नाखून। धीमी प्रकृतिकी टूट जानेकी प्रवृत्ति रहती है, जहाँ खूनका दौरान बहुत कमजोर रहता है तथा चर्म, हड्डी या उपास्थिके पास रहती है, जैसा, कि कानोंकी उपास्थियोंमें तथा सन्धियोंकी उपास्थियोंमें। जंघास्थिके जखम हो जाते हैं, हाथ और पैरोंका रक्तका दौरान कमजोर रहता है और वे ठण्डे हो जाते हैं। शामको हाथ-पैरमें जलन होती है और ज्वरकी तरह हो जाते हैं; क्योंकि ज्वरकी दशाका वही स्वरूप है; पर सवेरे और दिनके समय हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं। रोगी पीला और रोगियल रहता है और समय समयपर मोमकी तरह और शोथ-ग्रस्त हो पड़ता है। हाथ पैरोंका शोथ और खासकर निम्न-शाखाओंका; किसी-किसी अंशका शोथ, लिंगाग्रचर्मका शोथ। जब कोई कमजोर रोगी, अस्थि और उपास्थिकी बीमारीके किसी रोगीको सूजाक हो जाता है, तो इसके साथ ही उसके लिंगाग्र-चर्ममें बहुत ज्यादा सूजन रहती है और किसी चीजका भी उसपर प्रभाव होता नहीं दिखाई देता। ऐसे व्यक्तियोंका लिंगाग्र-चर्मका सूजाकके साथ शोथ फ्लुयोरिक एसिड आरोग्य कर देगा। **कैनाबिस सैटाइवा**में भी ये ही लक्षण रहते हैं। पर यह बलशाली रोगियोंके लिये खासकर उपयोगी है। प्रमेहविष-दूषित रोगियोंका प्रदर्शन फ्लुयोरिक एसिड रोक देगा; अञ्जीरकी तरह मसे होना रोक देगा। यह अञ्जीरकी तरह मसे आरोग्य करता है। यह कड़े, सूखे मसे और शरीरपर शल्क उत्पन्न करता है। ये शल्क (शल्किका—Rupia—एक प्रकारके बड़े-बड़े छाले) छालेकी तरह नहीं होते। यह गर्मी रोगके चकत्तोंमें लाभदायक है।

अस्थिके रोगोंकी ही प्रधानता रहती है। अस्थिका जखम, खासकर लम्बी अस्थियोंका; पर कानकी हड्डीका भी। इससे कानसे एक प्रकार का बदबूदार कटु स्राव उत्पन्न होता है। यह एक बदबूदार, स्राव उत्पन्न करता। एक-कटु-स्राव, साथ ही नाककी हड्डीका अस्थि क्षत। यह **सिलिका**के बहुत साम्य है और यह **सिलिका**का स्वाभाविक अनुगामी भी है, जहाँ कि **साइलिसिया**का बार-बार उस व्यक्ति द्वारा बहुत प्रयोग हुआ है, जो नहीं जानते, कि **साइलिसिया** एक ही खुराकमें सर्वोत्तम कार्य करता है और यह एक बहुत दिनोंतक कार्य करनेवाली और धीमी दवा है। यह **साइलिसिया**के अपव्यवहारका प्रतिविष ही नहीं है, वल्कि **सिलिका**के बाद यह उसकी क्रिया पूरी करता है। कुछ दिनोंतक चिकित्सा करनेके बाद, आपको इसकी बहुत-सी अनुपूरक दवाओंमें ताप और

शीतके बीच घड़ीके लङ्गड़की तरह क्रिया देखकर आश्चर्य होगा। इसका खुलासा करनेके लिये मैं यह क्रम बताऊँगा, जिनमें यह दवा ठीक बैठती है और स्वाभाविक रूपसे जिसकी यह दवा होती। आप कोई ऐसा रोगी ले लीजिये, जो गर्म खूनवाला है, जो हमेशा तापसे कष्ट पाता रहता है, बहुत कपड़े पहन लेनेसे और बहुत गर्म कमरेसे, खासकर शामको, कोई रोगी जो आँसुओंसे भरा तथा उदास है तथा एक सुन्दर पुरुष या स्त्री हो सकता है। क्या आप यह कहते हैं, कि मैं **पल्सेटिला**का रोगी वर्णन करनेकी चेष्टा करता हूँ? हाँ, कोई भी उसे देख सकता है। **पल्स**का रोगी गर्म खूनवाला होता है; पर उस दवाका प्रयोग करनेके बाद आप जब यह देखें, कि रोगी दूसरी सीमापर जा रहा है तथा सर्दीला होता जाता है और बहुत वस्त्र पहने रहना चाहता है। रोगीसे गर्मी निकाल ली गयी है: **पल्स**का स्वाभाविक अनुगामी **साइलिसिया** है और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि किस तरह अकसर रोगी **पल्स**को छोड़कर **साइलिसिया**की ओर पलट पड़ता है। **साइलिसिया** रोगीमें गहराईतक जा पहुँचता है, इससे अधिक रोगी आरोग्य होते हैं और यह **पल्सेटिला**का स्वाभाविक क्रानिक है अर्थात नयी बीमारीमें जब **पल्स**का प्रयोग होता है तो वैसी ही पुरानी बीमारीमें इसका प्रयोग होता है। इसमें सन्देह नहीं, कि और भी ऐसी दवाएँ हैं, जिनका "पल्स"के बाद उसकी क्रिया पुरी करनेके लिये प्रयोग होता है; पर अन्य दवाओंकी अपेक्षा **साइलिसिया**का अधिक बार-बार प्रयोग होता है। अब यह दूसरा कदम है; रोगी किसी गर्म अवस्थासे ठण्डेमें चला गया है; अति उत्तप्त अवस्था चली गयी है और वह **साइलिसिया**में चला गया है, पर जब **साइलिसिया**का प्रयोग हुआ तो कुछ देरके लिये यह ठण्डवाली दशा दूर कर देता है और रोगीका सर्दीलापन दूर हो जाता है (याद रखिये, कि कभी-कभी **साइलिसिया**में **पल्स**का भी कुछ रहता है; इसकी कुछ बिमारियोंमें यह है, अति उत्तप्त हो जानेसे रोग-वृद्धि) और **सिलिका**का रोगी फिर गर्म दशामें चला जाता है, गर्म खूनवाला बन जाता है, गर्म ओढ़ना उतार फेंकना चाहता है, हलका ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है, तब बात यह है, कि यह दवा इस क्रममें आती है। **साइलिसिया**के बाद **फ्लुयोरिक एसिड** ठीक उसी तरह बादमें उपयोगी होता है, जिस तरह **पल्सेटिला**के बाद **सिलिका**। वे तीनोंमें रहते हैं और भी दवाएँ हैं, जो तीनोंमें रहती हैं और आप सोचेंगे, **सल्फ, कैल्केरिया** और **लाइकोपोडियम, सल्फर, सार्सापैरिला** और **सिपिया** और **कोलोसिन्थ कास्टिकम** और **स्टैफिसेग्रिया,** जो अकसर एक दूसरेके बाद प्रयुक्त होती हैं और इसी तरह चक्करमें घूमती हैं। इन बातोंसे आप बँधी गतसे दवा न देने लगें, जबतक कि लक्षण न मिले। पर यह याद रखनेमें सहायता देता है, कि ये दवाएँ कुछ-न-कुछ सदृश हैं। यह सत्य है, कि अपने लक्षणके अनुसार **पल्सेटिला, सिलिका फ्लुयोरिक-एसिड** सब तरहसे सदृश है, **पल्सेटिला** नयी गड़बड़ियोंमें उपयोगी होता है या पुरानी बीमारियोंकी आरम्भावस्थामें, पुरानी बीमारियोंके अति क्रियाशील या प्रचण्ड क्रियाकालमें। यह रोगका सूत्र पकड़ लेगा और इसके बाद किसी ऐसी दवाका प्रयोग होगा, जो उसकी अनुपूरक होगी, जिसका चुनाव उत्पन्न हुए लक्षणोंके अनुसार होगा। ऐसे भी रोगी होते हैं, जिनको **साइलिसिया** जैसी गहरायीतक

काम करनेवाली दवासे हानि पहुँचती है, यदि आरम्भमें ही प्रयोग हो जाता है अर्थात् अनावश्यक कष्ट हो जाता है; पर यदि आप **पल्सेटिला**से आरम्भ करें, तो आप रोगको प्रशमित कर देंगे तथा **साइलिसिया** ग्रहण करने योग्य बना देंगे, यदि ये दोनों आपसमें सदृश्य दिखाई देंगे। बहुत जटिल रोगीको भी पहले **पल्सेटिला** देकर अच्छा बनाइये और इस तरह उससे जो पथ प्रशस्त होगा, तब उसके बाद **साइलिसिया**का प्रयोग कीजिये।

तब इस दवाको इन बीमारियोंमें सोचिये लँगड़ानेवाली हड्डियोंकी बीमारियाँ, अस्थि-क्षय, अस्थि-क्षत (Caries) नासूरकी बीमारियाँ, दाँतका नासूर, अश्रुनलीका नासूर, भगन्दर, चनाका क्षय ; नाखुन, केश तथा दाँतोंका कुरूप हो जाना ; जांघकी हड्डी तथा पैरकी हड्डियोंकी बीमारियाँ, इसके साथ ही पुराना नासूरका घाव, जिससे हड्डीसे पीब बहने लगता है और अपने चारों ओरके स्थानकी खाल उधेड़ देता है।

रोगी अत्यधिक असहिष्णु रहता है ; यदि पाखाना साफ नहीं होता, तो हालत बदतर हो जाती है ; यदि मासिक रजः-स्रावमें कुछ भी देर हुई तो तकलीफमें जा पड़ता है ; यदि तुरन्त ही पेशाब नहीं कर पाता तो बीमार हो जाता है, इसीलिये जैसा कि पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है—"पेशाब होनेपर सर-दर्दका घटना।" पाठ्य-ग्रन्थमें केवल यही लक्षण दिया हुआ है, पर कुछ ऐसी चीजें भी याद रखिये, जो इससे सम्बन्ध रखती है अर्थात् यदि पेशाब लगनेपर पेशाब नहीं किया गया, तो सर-दर्द तबतक बदतर होता ही जायगा, जबतक पेशाब न किया जायगा। यह एक विचित्र लक्षण है और यह कभी-कभी फ्लुयोरिक एसिडकी ओर परिचालित करता है। ताप तथा पूर्णताके साथ प्रचण्ड रक्त-सञ्चयी सर-दर्द। पश्चात् मस्तष्कका प्रचण्ड दर्द, हिलने डोलनेपर बदतर।

अब यदि इसकी क्रियाका गहरायीपर विचार करें, तो हम और भी देखेंगे, कि यह कितनी ही मस्तिष्ककी बीमारियोंमें भी उपयोगी है। जिन मनुष्योंने समायीसे बाहर काम किया है, कारबारको स्थायी बनानेके लिये या उसे चलानेके लिये दिन-रात परिश्रम किया है और लगातार मस्तिष्कसे काम लिया गया है, तो यह फायदा करता है। मानसिक अवसाद तथा उदासीनता, बहुत उदासीके साथ उन जवान मनुष्योंमें जिन्होंने दुराचारमें स्नायु-संस्थानको नष्ट कर डाला है। खासकर मानव स्वास्थ्य-विधानकी उस मिश्रङ्खलामें उपयोगी होता है, जहाँ पुरुष लगातार अपनी स्त्री बदला करते हैं। एक ऐसी दशा होती है, जिसमें मनुष्य एक स्त्रीमें कभी सन्तुष्ट नहीं रहता, लगातार बदला करता है और बदतर होता जाता है, यहाँतक कि वह व्यभिचारी हो जाता है ; एकके साथ हो रहे, तो वह इतना नहीं बिगड़ सकता, पर एकसे बहुतोंके पास जाता है, यहाँतक कि वह गलीकी मोड़पर खड़ा हो जाता है तथा अपनी वासनामें पवित्र स्त्रीयोंकी इच्छा किया करता है, जो उस रास्तेसे आती जाती है। उस अवस्थामें **पिकरिक एसिड** और **सिपिया**की तरह फ्लुयोरिक एसिड उपयोगी होता है और ये दवाएँ खासकर मनकी उस दुर्बलाभूत अवस्थामें उपयोगिनी होती हैं तथा मानव स्वास्थ्य-विधानकी उस विश्रङ्खलतामें कार्य करती हैं, जो मनुष्यको सुस्त बना देता है और जिसे हम "निम्न-मनत्व" (Low mindedness)

कहते हैं। यह एक प्रकारके व्यभिचारीका, अपनी इच्छाकी पूर्तिके लिये जो सब तरहकी चीजोंकी ओर दौड़ता है, रूप धारण करता है; पर यह अपनी स्त्रीके साथ रहनेवालोंके लिये एक दूसरा ही रूप धारण करती है। उसे अपने बच्चोंसे और प्रिय बन्धुओंसे तथा अपनी स्त्रीसे घृणा हो जाती है अर्थात् उससे वह सत्य तथा सुन्दर और सुशृङ्खलित प्रेम, दोस्ती, संग-साथ खो दिया है, जो जरूर बना रहना चाहिये और वह इसके विरुद्ध युद्ध किया करता है। एक सुशृङ्खलित मनुष्य अपनी स्त्रीको अपना सबसे बड़ा बन्धु समझता है और वह किसी दूसरी जगह जानेकी अपेक्षा उसके पास रहना ही पसन्द करता है, उसके लिये घरकी तरह कोई जगह ही नहीं रहती। अब जब मनुष्य उस अवस्थामें जा पहुँचता है, कि वह किसी दूसरी जगह जाना चाहता है वह घरसे बाहर जाना चाहता है वह घरसे विचलित रहता है, उसे घरकी सभी चीजें रञ्ज कर देती हैं, वह पहलेकी तरह अब अपने बच्चोंको प्यार नहीं करता, तो उसे फ्लुयोरिक एसीडकी जरूरत है। जिन्हें वह सबसे ज्यादा प्यार करता था, उनके प्रति ही उदासीनताका भाव। **सीपिया**की दशा भी इसी तरह है, पर सीपिया स्त्रियोंके लिये अधिक लाभदायक होती है। स्त्री कहेगी—"डाक्टर साहब! एक बातको मैं बहुत नापसन्द करती हूँ अर्थात् मुझे अपने बच्चोंसे, मेरे घरसे, मेरी संगिनियोंसे, अपने पति और दोस्तोंसे आनन्द नहीं मिलता। यह एक प्रकारका स्नेह-विच्छेद है।" **सीपिया**में उपयोगिनी होनेवाली दशा ऐसी ही बतायी गई है। पुरुषोंमें यह अधिकतर फ्लुयोरिक एसिड है, स्त्रियोंमें अधिकतर **सीपिया**, पर जरूर ही ऐसा होगा, ऐसा कुछ नहीं है। "सिपिया" जरायु और डिम्बाशयोंसे विशेष सम्बन्ध रखती है तथा ऐसी अवस्थाओंसे इसका सम्बन्ध है, जो स्त्रियोंको ही हो सकती है। (**कैल्केरिया**से तुलना कीजिये)।

इस दशाके साथ एक अति-वर्द्धित कामेच्छा है। लिङ्गोत्तेजनके कारण रोगी रातभर जागता रहता है, उसकी वासनाकी यह दशा, केवल विपरीत लिङ्गके साथ रहनेपर ही नहीं, बल्कि सभी समय बनी रहती है। समय-समय, सूजाकके आरम्भमें कष्टकर लिङ्गोद्रेकको यह दशा तथा अदम्य काम-वासना, लिङ्गाग्र-चर्मकी सूजनके साथ, फ्लुयोरिक एसिडसे आरोग्य कर दी जाती है। ऐसे भी अवसर हैं, जब लिंगोद्रेककी दवा **कैन्थरिश** होती है; पर उस दवाकी प्रकृति इससे बिलकुल ही भिन्न होती है।

मौन-भाव और चुप; बैठा रहता है और कुछ नहीं बोलता। यह मौन भाव **पल्स**के सदृश्य रहता है और अकसर पागलोंको होता है, जो एक कोनेमें बैठ जायँगे और दिनभर कुछ न बोलेंगे, एक भी शब्द कभी नहीं बोलते और जब उनसे कुछ कहा जाता है, तो मुश्किलसे उत्तर देते हैं। कोई रोगिणी कोनेमें बैठ जाती है और कुछ न बोलती, न कुछ करती है; जब भोजनके पदार्थ दिये जाते हैं, तो खा लेती है, जब समय आता है, तो उसके कमरेमें पहुँचा दी जाती है। किसीको मना भी नहीं करती, कुछ जवाब भी नहीं देती; ऐसी दशा **पल्सेटिला**में प्राप्त होती है और उसका इस दवासे निकटस्थ सम्बन्ध है। इसमें कुछ उन्माद भी है; पर खासकर क्लान्ति और थके हुए मस्तिष्कको कोमलता है। अत्यधिक काम करने या कुप्रवृत्तियोंके कारण मानसिक क्लान्ति।

सुषुम्नाके रोगोंमें, जिनके साथ पक्षाघात, कम्पन तथा पैरके तलवेमें सुन्नपन रहता है, उसमें **साइलिसिया**के बाद यह लाभदायक होता है। यह शरीर दण्डके स्नायविक रोगोंकी वृद्धि अकसर रोक देगा और रोगको बदतर होनेसे बचा रखेगा।

शिरा-स्फीति तथा शिराओंमें जखम पैदा करनेकी योग्यता, इस दवाका एक अति उत्तम और अति लाभदायक स्वरूप है। कहींकी भी शिराएँ फूल जा सकती है; पर खासकर निम्न-अंगोंकी, खासकर गर्भावस्थाके बाद। पाखाना होनेके बाद मसे निकल आते हैं; मलद्वार और मलान्त्र भी बाहर निकल आते हैं; कुछ रक्त-स्राव भी होता है, अर्शकी दशा रहनेके कारण। निम्न-शाखा अंगोंपर बहुत पुराने जखमके साथ शिरा-स्फीतिकी दशा; शिरा-स्फीति जखममें परिणत हो जाता है। अब आप समझ सकते हैं, कि किस तरहका जखम और किस प्रकारका किनारा फ्लुयोरिक एसिड पैदा कर देगा। आपको इसके रक्तका दौरान कमजोर दिखाई देता है, इसमें कड़ी पपड़ी जमनेकी प्रवृत्ति दिखाई देती है तथा कड़े सींगकी तरह चर्म और उद्भेद होनेकी प्रवृत्ति रहती है। हम अब सहज ही अनुमान लगा सकते हैं, कि किसी जखमके प्रादाहित किनारे कड़े पड़ जायँगे, सख्त और चमकीले हो जायँगे। जखमके किनारे कड़े पड़ गये हैं तथा जखम पुराना और असल प्रकृतिका है। एक बार जो अंश टूट गया, वह बन्द नहीं होगा। हड्डियोंके टूटे हुए सिरे आपसमें न जुड़ेंगे, सुधार मरम्मत होती ही नहीं। हड्डियों और जखमोंसे, बदबूदार, कट्ट, पतला, पानीकी तरह स्राव बहता है या समय-समयपर बहुत थोड़ा स्राव होता है; पर वह कट्ट रहता है। चारों ओरके स्थानोंमें जलन होती है, उठे हुए उद्भेद निकलते हैं और जखमके चारों तरफ भूँसी निकलती है।

रक्तके कमजोर दौरानके कारण कोई भी अनुमान लगा सकता है, कि सुन्नपन तो स्वाभाविक ही रहेगा और यह है भी सत्य। कान सुन्न हो जाते हैं; माथेकी त्वचा सुन्न पड़ जाती है। ऐसा अनुभव होता है, मानो माथेका पिछला भाग काठका बना है। माथेकी त्वचा अपनी अनुभूति त्याग देती है, केश झड़ जाते हैं और पपड़ी जमती है। शाखा अंग सुन्न पड़ जाते तथा पैर और कन्धोंपर ऊपरकी ओर बढ़नेवाला सुन्नपन रहता है; शोथके साथ या बिना शोथके ही सुन्नपन; मेरुदण्डके रोगमें सुन्नपन; मस्तिष्क रोगमें सुन्नपन। जो अंग लेटे नहीं रहते, उनमें सुन्नपन।

"दुधिया पपड़ी; सूखी भूँसी, बहुत खुजलाता है, खल्वाट जगहें। कनपटीकी हड्डी (शाखास्थि) का अस्थि-क्षत; समय बाँधकर बदबूदार स्राव जिसमें पीवकी गन्ध आती है।" "माथेके सम्पूर्ण वाम-पार्श्वकी अभिवृद्धि रुक जाती हैं, बायीं आँख छोटी मालूम होती है।" यह एक रोगी शय्या-पार्श्वकी दशा है; पर यह अर्थ-बोधक है।

उपदेशमें इसका प्रयोग भी ध्यान दिये बिना ही न छोड़ देना चाहिये। अस्वाभाविक अस्थि-वृद्धि, अस्थि-क्षत, अस्थि-क्षयके साथ पुराने रोगियोंमें तथा उन रोगियोंमें जिन्हें खूब पारा खिलाया गया है तथा दूसरी दवाओंसे यहाँतक इलाज किया गया है, कि जखम बढ़ गया है या नाकमें वे रोग पैदा हो गये हैं, और उपदंश की दशामें हमें अकसर दिखाई दिये

है। वह नाक झाड़-झाड़कर नाकसे छोटे-छोटे हड्डीके टुकड़े निकलता है। नाकमें बहुत दर्द, नाककी सभी अस्थियाँ नष्टकी हुई तथा नाक चौड़ी हो जाती है, मानो एक कोमल मांस-खण्ड कटकर गिर पड़ी है। वाह्य जननेन्द्रिय क्षय हो जाती है, तालुमूल उपदंशके जखमोंसे चलनीकी तरह बन जाते हैं। लँझड़ानेवाले निम्न प्रकारके जखम और उद्भेद। दाँत क्षय हो जाते हैं या टूट जाते हैं या जड़में ही जखम हो जाता है; दाँतकी जड़में नासूर पड़ जाना; जिनसे लगातार स्राव होता रहता है। इस दवाने कितनी ही बार दाँतकी जड़का यह जखम आरोग्य कर दिया है। इस नासूरके मुँहको बन्द कर दिया है, दर्द आरोग्य कर दिया है और दाँतकी रक्षा कर दी है।

"ठण्डा पानी मांगता है और बराबर भूखा ही रहता है।" अकसर वही "खालीपन" का भाव पाकाशयमें अनुभूति होता है। हमेशा खाता रहता है तथा खानेसे रोगीको आराम मिलता है; **आयोडिन**की तरह, यह ज्यादा समयतक नहीं ठहरती, वह जल्द ही फिर भूखा हो जाता है। ऐसी दवाएँ बहुत ही गहराईतक क्रिया करनेवाली होती हैं। हम देखते हैं, कि वे समीकरण और परिपोषणकी तहतक जा पहुँचती हैं।

कण्ठका पुराना जखम, यह जरूरी नहीं है, कि उपदंश हो; पर यह खासकर उपदंशके पुराने रूपमें उपयोगी होता है। आरम्भिक जखमोंमें उतना लाभदायक नहीं होता, जैसा कि तीसरी अवस्थाके रूपमें तथा कमजोर हुई दशा, मस्तिष्कके रोग, स्नायविक लक्षणके साथ जो बरसोंतक उस अवस्थामें भी जारी रहते हैं, जब कि रोगी आरोग्य हो गया हुआ मान लिया जाता है। बहुतकर तकलीफ कण्ठमें लौट आयगी और जखमोंमें छोटे छोटे गूमड़की तरह निकलते हैं। **साइलिसिया**, खासकर ऐसी ही दशाके सदृश रहती है तथा **साइलिसिया, मर्करी**का प्रभाव दूर करनेकी लाभदायक दवा है। शक्तिकृत रूपमें **साइलिसिया** और **मर्करी** शत्रुभावापन्न रहते हैं, इतनेपर भी **साइ-लिसिया**के उपक्रम **मर्करी**के प्रतिविषका काम करेगा।

रोगी कटु, मसालेदार, खूब गर्म मसालेदार चीजें खाना चाहता है। भूख अवश्य जगानी चाहिये, खानेके लिये कुछ प्रलोभन चाहिये, समय-समयपर भूख, बहुत अधिक भूखे रहनेपर भी परिवर्त्तित रहती है; वह खा नहीं सकता, इतनेपर भी उसके रोग-लक्षण पाकाशयमें खाद्य जानेपर उपशमित रहते हैं; भोजनके बाद उपशम।

इस निम्न स्वास्थ्यके साथ गुप्त छिपे हुए रोगोंमें एक बहुत ही बुरे ढङ्गका पुराना अतिसार। "सवेरेके वक्त होनेवाला अतिसार," **कभी-कभी मलद्वारमें बहुत अधिक खुजलाहट होती** है। मल त्यागके समय मलद्वारका निकल आना; पाखाना होनेके बाद बहुत ज्यादा रक्त-स्राव; बवासीरके साथ कब्ज; मलद्वारके चारों तरफ, मलद्वारमें, और जननेन्द्रियके बीचके स्थान प्रभृतिके चारों तरफ खुजलाहट।

शराब पीनेवालोंके शोथमें भी यह दवा उपयोगिनी है। उन्हें अकसर यकृतके कारण शोथ होते हैं। पुराने घावके चिह्न फिर किंनारोंपर लाल हो जाते हैं, उनके

चारों तरफ खुजलानेवाली फुन्सियाँ होती हैं ; बहुत जोरकी खुजली होती है। शरीरपर खरोंट जमनेवाले उद्भेद शरीरपर सूखे, चर्मोद्भेद, बहुत पपड़ी जमनेवाले।

"ऐसा अनुभव होता है, मानो जलती हुई भाफ शरीरके लोमकूपोंसे निकल रही है।" खासकर ओढ़ना ओढ़े रहनेपर बहुत ताप, भापकी तरह प्रचण्ड तापकी अनुभूति होती है। ज्वरमें ऐसा नहीं होता, उसे ज्वर नहीं रहता ; पर यह बिना प्यासके ही या बिना तापमान वृद्धिके ही ताप निकलनेकी पुरानी दशा है।

जेलसिमियम
(Gelsemium)

तेज आबोहवामें यदि आप मौसमकी अवस्थापर ध्यान दें, जैसे मिनेसोटा मासाशुसिट और कैनाडा प्रभृति है, तो आपको मालूम होगा, कि शीतकी लहरें बहुत ही तीव्र होती हैं और मनुष्योंको जब खुली हवा लग जाती है, तो बहुत तेजीसे और प्रचण्डतासे बीमारी पैदा हो जाती है। इसी तरह **बेलेडोना** और **ऐकोनाइट**के रोगी आते हैं, पर जेलसिमियमके उपसर्ग ऐसे कारणोंसे नहीं उत्पन्न होते, न इस ढङ्गसे ही आते हैं। इसके उपसर्ग बहुत ही गुप्त रहते हैं और बहुत धीरे-धीरे आते हैं। जेलसिमियमकी सर्दी हवा लग जानेके कई दिन बाद उत्पन्न होती है, पर **ऐकोनाइट**की सर्दी खुली हवा लगनेके कई घण्टोंके बाद ही आ जाती है। यदि कोई **ऐकोनाइट**का रोगी बच्चा दिनके समय, सूखी ठण्डी मौसममें खुली हवा खा ले तो आधी रातके पहले ही उसे काली खाँसी (क्रूप) का दौरा हो जायगा। पर दक्षिणमें बीमारियाँ बहुत धीमी गतिसे आती हैं, स्वतः मनुष्योंकी भाँति ही, उनके शरीर यन्त्र भी बहुत धीमें रहते हैं और उनकी प्रतिक्रिया भी धीमी रहती है। प्रचण्ड सर्दीसे उन्हें सर्दीकी बीमारी नहीं होती, पर बहुत उत्तप्त हो जानेपर। इसीलिये उन्हें सर्दी और ज्वर, निम्नश्रेणीका, मैलेरियाके ढङ्गका होता है, उन्हें रक्त-सञ्चयी सर-दर्द होता है और वे रक्तसंचयी प्रकृतिकी बीमारियाँ होती हैं, जो आकस्मिक रूपसे नहीं उत्पन्न होती। जब-हम जल वायुपर विचार करते हैं, तथा मनुष्योंपर ध्यान देते हैं और दवाकी गतिपर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, कि जेलसिमियम गर्म जलवायुकी दवा है, पर "ऐकोनाइट" सर्द आबोहवाकी दवा है। उत्तरकी कुछ नयी बीमारियाँ "ऐकोनाइट" की तरह होंगी, पर वैसे ही उपसर्गोंके गर्म ऋतुमें जेलसिमियमकी तरह लक्षण होंगे। हलके जाड़ेके दिनोंकी सर्दी और ज्वर बहुत कुछ इसी दवाके सदृश होंगे तथा प्रचण्ड शीतके दिनोंकी सर्दी और ज्वर **बेलेडोना** और **ऐकोनाइट**के होंगे। यह सच है, कि "ऐकोनाइटकी" बीमारियाँ गर्म मौसममें होती है, गर्मीके दिनोंका ज्वर और रक्तामाशय, पर वे जाड़ेके दिनोंकी बीमारियोंकी अपेक्षा भिन्न होते हैं।

जेलसिमियमका विशेषकर नयी बीमारियोंमें प्रयोग होता है। लँगड़ानेवाली नयी बीमारियोंमें तथा पुरानी बीमारियोंकी सदृश रहनेवाली बीमारियोंका यह बहुत लाभदायक

दवा है, पर पुरानी बीमारियोंकी यह दवा नहीं हैं। यह एक लघुक्रियात्मक दवा है। यद्यपि इसका आरम्भ धीमा होता है, पर इस अवस्थामें यह **ब्रायोनिया**के सदृश है। "ब्रायोनियाकी" बीमारियाँ धीरे-धीरे आती हैं और इसीलिये दक्षिणी जलवायुके ज्वरोंमें यह लाभदायक है। पर इसमें एकाएक होनेवाले प्रचण्ड उपसर्ग हैं, जैसा कि हमें **बेलेडोना**में प्राप्त होते हैं।

जेलसिमियमकी बीमारी, बहुत-कुछ रक्त-सञ्चयी प्रकृतिकी होती है। मस्तिष्कमें रक्ताधिक्य, मस्तिष्कमें तथा सुषुम्नामें रक्त-सञ्चय। शाखा अङ्ग ठण्डे हो जाते हैं तथा माथा और पीठ गर्म रहते हैं। मस्तिष्क तथा मेरुदण्डमें ही बहुत-से उपसर्ग होते हैं। मस्तिष्कके रोगोंके साथ हाथ-पैरोंमें अकड़न होती है। अंगुलियाँ, अंगूठोंमें तथा पीठकी पेशियोंमें ऐंठन होती हैं। अंगुलियाँ तथा अंगूठोंका ठण्डक ; कभी-कभी पैर घुटनेतक ठण्डे रहते हैं ; पर माथा गर्म और चेहरा नीला रहता है। रक्त-सञ्चयके कालमें चेहरा नीला और चित्ता-चित्ती हुआ करता है, आँखें फली-फली और पुतलियाँ फैलीं (कभी-कभी सिकुड़ी) रहती हैं, आँखें एक प्रकारकी रक्त-सञ्चयवाली अवस्थामें रहती है, साथ ही आँसू बहा करते हैं और ऐंठन होती हैं। रोगी चकाचौंधमें रहता है और इस तरह बातें करता है, मानो प्रलापग्रस्त हो। असंलग्न, जड़ और भुलक्कड़ रहता है। ऐसा उस सविराम ज्वरमें होता है, जो रक्त-सञ्चयी शीतकी और धीरे-धीरे अग्रसर होता जाता है। बहुत जाड़ा मेरुदण्डके नीचेवाले भागसे पीठके सहारे माथेतक चढ़ता है। कम्पन, मानो पीठमें बरफ रगड़ रहा है। दर्द भी पीठतक फैल जाता है। हाथ-पैरोंको ठण्डकके साथ, चेहरा गहरा लाल रहता है, मनकी चकचौंध लगी अवस्था रहती है आँखें चमकीली रहती है और आँखकी पुतलियाँ फैली रहती हैं, गर्दन पीछेकी ओर खिंची रहती है तथा पीठ और गर्दनकी पेशियाँ कड़ी रहती हैं, जिससे गर्दन सीधी नहीं की जा सकती तथा समूची पीठमें बहुत दर्द रहता है और मेरुदण्डमें ठण्डक रहती है। यह दशा मस्तिष्क मेरुमज्जा प्रदाहका स्मरण दिला देती है (Cerebro-spinal meningitis), मस्तिष्कके तलदेशमें दर्द तथा गर्दनके पिछले भागमें। सभी दशाओंके साथ त्वचा बहुत गर्म रहती हैं और तापमान चढ़ा रहता है, साथ ही शाखा-अङ्ग ठण्डे रहते हैं। कभी-कभी तो प्रचण्ड शीतके साथ रोग आरम्भ होता है। जब सविराम ज्वरमें ये लक्षण रहते हैं तो इस दवाका अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है और कुछ ही दिनोंमें जीभपर मैलकी तही जमनी आरम्भ हो जाती है, मिचली पैदा हो जाती है, जिसका अन्त पित्त वमन होकर होता है तथा ज्वर-विच्छेद होनेके बदले एक-दौरासे लेकर दूसरे दौरेतक लगातार बोखार बना रहता है, साथ ही तीसरे पहर बहुत ही ऊँचा तापमान रहता है। शीत तो एक तरहसे दब जाता है और एक ऐसी अवस्था छोड़ जाता है, जिसका रूप सान्निपातिक ज्वर (Typhoid) की तरह रहता है। इसके साथ ही जीभ सूखी रहती है, प्यास बहुत ज्यादा नहीं रहती तथा माथेके उपसर्ग स्पष्ट रहते हैं, मनका चकाचौंधपन। यदि यह बहुत दिनोंतक जारी रहता है, तो प्रलाप तथा सान्निपातिक ज्वरके अन्य उपसर्ग आ जायँगे और ज्वर, सविरामसे अविराम ज्वरमें अपना ढङ्ग बदल देगा।

तीसरे पहर आनेवाले ज्वरमें, उच्च तापमानके रक्त-सञ्चयी शीतमें, इसका शीतवाला अंश दब जाता है तथा ज्वर अविराम हो जाता है। इस अवस्थाकी जेलसिमियम एक बहुत ही लाभदायक दवा है। बच्चों और बालकोंको होनेवाले तीसरे पहरके बिना जाड़ेवाले बोखारकी भी यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दवा है। जिन जिलोंमें मैलेरिया ज्वर होता है, वहाँ बच्चोंको स्वल्प-विराम ज्वरके आक्रमण हुआ करते हैं और जवानोंका सविराम ज्वरके। यह तो सिर्फ शायद ही किसी अवसरपर बच्चा प्रत्यक्ष शीतसे काँपता हुआ देखनेमें आता है; पर उन्हें अकसर स्वल्प-विराम ज्वर हो जाया करता है, तीसरे पहर ज्वर आता है, जो सवेरे दब जाता है तथा तीसरे पहर फिर ज्वर हो आता है। जेलसिमियममें बच्चा **ब्रायोनिया**की तरह ही चुपचाप पड़ा रहता है; पर माथेमें बहुत अधिक रक्त सञ्चय होता है; गहरा लाल चेहरा और धुमैला "ब्रायोनिया" की तरह होता है।

मेरुदण्डको झिल्लीका प्रदाहकी (Spinal meningitis) सम्पूर्ण ज्वरावस्थामें, मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयमें, सविराम और स्वल्पविराम ज्वरोंमें जो अविराम ज्वरमें परिवर्त्तित हो जाते हैं, यहाँतक कि उस सर्दीमें भी जिसमें नाकसे पानी बहा करता है तथा चेहरा और आँखें लाल रहती हैं, एक बड़ा भारी लक्षण प्राप्त होता है अर्थात् समूचे शरीर और प्रत्यङ्गोंमें बहुत बड़ा भार और क्लान्ति दिखाई देती है। तकियेसे सर नहीं उठाया जा सकता; वह ज्यादा क्लान्त और भारी रहता है तथा प्रत्यङ्गोंमें भी बहुत ही ज्यादा भार रहता है। **ब्रायोनिया**का रोगी चुपचाप पड़ा रहता है; क्योंकि यदि वह इधर उधर हटता है, तो दर्द बढ़ जाता है, उसे हिलने-डोलनेसे अनिच्छा रहती है, क्योंकि उसको मालूम रहता है, कि इससे उसकी बीमारी बढ़ जायगी।

हृत्पिण्ड और नाड़ी कमजोर रहती है, कोमल अनियमित। ज्वरकी दशामें कलेजेमें धड़कन आती है। कमजोरी तथा नाड़ीकी गति अनियमित रहनेके साथ कलेजा धड़कना। हृत्पिण्ड प्रदेशमें कमजोरी और खालीपनका भाव रहता है। तथा यह कमजोरी और खालीपन अकसर पाकाशयतक फैल जाते हैं तथा समस्तवक्षके निम्न वाम भागको तथा पाकाशयको घेर लेते हैं। जिससे कि **इग्नेसिया** और **सीपिया**की तरह भूख लग आती है। जेलसिमियममें हर जगह हिस्टीरियाका ढङ्ग रहता है और इसमें स्नायविक भूख या चबाना रहता है।

इसमें **डिजिटेलिस, कैक्टस** और **सीपिया**की तरह हृत्पिण्डकी स्नायविक बीमारियाँ होती हैं। **कैक्टस**की तरह **सीपिया** हृद्रोगकी दवा नहीं मानी जाती; पर इसने बहुत-से हृद्-रोगके रोगी आरोग्य किये हैं। **सीपियाने** हृदअन्तरवेस्ट-प्रदाह (Endocarditis) को आरोग्य किया है तथा हृद्-अन्तरवेस्टर-प्रदाह (Fndocarditis) जैसे रोगको पकड़ने और जड़से आरोग्य करनेवाली दवा गहरायीतक काम करनेवाली होनी चाहिये। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि अगर वह हिले-डोलेगा, तो हृत्पिण्डकी गति रोध हो जायगी।

इसका सर-दर्द रक्त-सञ्चयी प्रकृतिका होता है, सबसे प्रचण्ड दर्द पश्चात् मस्तक (Occiput) में होता है और कभी-कभी यह हथौड़ीसे मारनेकी तरह मालूम होता है।

नाड़ीकी प्रत्येक धमक खोपड़ीके तलदेशमें हथौड़ीसे मारनेकी तरह अनुभूति होती है। यह सर-दर्द इतना प्रचण्ड होता है, कि रोगी खड़ा नहीं रह सकता, वल्कि एकदम क्लान्तकी तरह पड़ा रहता है मानो दर्दसे पक्षाघात हो आता है। इसमें ऐसा पश्चात् मस्तिष्कका सर-दर्द रहता है, जिससे चलना और सर हिलाना असम्भव हो जाता है। विछावनपर पड़े रहनेसे साधारणतः, आराम मिलेगा। तकियेपर पड़ा रहता है तथा माथा एकदम शान्त रखना चाहता है। चेहरा तमतमाया धुमैला रहता है और रोगी चकराया रहता है। थोड़ी देरतक सर-दर्द बढ़नेके वाद समूचा माथा, रक्त-सञ्चयकी दशामें चला गया हुआ मालूम होता है, एक तरहका वहुत अधिक दर्द होना, इतना कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता तथा रोगी अपना लक्षण कहनेमें असमर्थ हो जाता है और चकराया-सा मालूम होता है, विछावनपर गद्दी, तकियेके सहारे पड़ा रहता है; आँखें चमकीली रहती हैं, पुतलियाँ फैली रहती हैं, चेहरा दाग-दगीला रहता है और हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं। जेलसिमियममें कनपटीमें तथा आँखोंके ऊपर स्नायु-शूलकी प्रकृतिका दर्द होता है, साथ ही मिचली रहती है और वमन होनेपर रोग-वृद्धि होती है। वहुत ज्यादा मात्रामें पेशाव होनेपर सर-दर्दमें आराम पहुँचाता है अर्थात् पेशाव जो थोड़ा होता था, वह खुलासा होने लगता है और इसके वाद सर-दर्द दव जाता है।

वहुत ज्यादा स्नायविक उत्तेजना होती है। भय, दिक्कत तथा भयके कारण एकाएक आश्चर्यमें पड़ जानेके कारण, जिसके साथ भय मिला रहता है, जो आघात प्राप्त होता है, उससे उत्पन्न उपसर्ग। लड़ाईमें जानेके लिये तैयार किसी सिपाहीको आप-ही-आप दस्त आने लगते हैं, भय या भय-संयुक्त आश्चर्यसे अनैच्छिक स्राव। एकाएक किसी प्रकारका आश्चर्य आ जानेपर वह वेहोश, कमजोर और क्लान्त हो जाता है, उसके सभी अंग-प्रत्यंग क्लान्त हो जाते हैं तथा परिस्थितिका प्रभाव रोकनेमें असमर्थ रहते हैं। उसका कलेजा धड़का करता है। यह **आर्जेण्टम नाइट्रिक**के सदृश है। "आर्जेण्टम नाइट्रिकम" में एक विचित्र दशा है, कि जव किसी तमाशेमें जानेके लिये वह वस्त्र पहनती है, तो उसे अतिसार होने लगता है, जिससे कि कुछ-न-कुछ क्लान्ति आ जाती है और रोगिनीको वस्त्र पहनना समाप्त करते-करते कई वार पाखाना जाना पड़ता है। वे पुरुष जिन्हें जनताके सामने उपस्थित होना पड़ता है, एकाएक अतिसारके कारण उन्हें रुक जाना पड़ता है। कोई स्त्री जव अपने उस दोस्तसे मिलना चाहती है, जिससे मिलनेपर वह समझती है, कि वह उत्तेजित हो उठेगी, तो उसे पतले दस्त आने लगते हैं। ऐसी दशा "आर्जेण्टम नाइट्रिकम" की दशा है। ये दवा इस तरह आपसमें निकटस्थ सम्वन्ध रखती हैं, कि ऐसा समय आ जाता है, कि वे एक दूसरेका काम करती दिखाई देती हैं।

इसके अलावा मलद्वारावरोधिनी पेशीकी पाक्षाघातिक दशा रहती है और इस तरह ज्वरकी दशाके साथ पाखाना और पेशाव अनैच्छिक रूपसे होता रहता है तथा शाखा अङ्गोंकी और हाथोंकी पाक्षाघातिक दुर्वलता रहती है। पाक्षाघातिक दशाके साथ समूचे मेरुदण्ड और पीठकी पेशियोंमें दर्द होता है; खोंचन, पीठकी पेशियांमें मरोड़ और वायें कन्धेके नीचे दर्द।

दृष्टिकी भी बहुत-सी गड़बड़ियाँ रहती हैं। द्वित्व दृष्टि, धुँधला दिखाई देना, आँखके सामने एक जालीदार पर्दा रहनेकी तरह मालूम होना, चित्तविभ्रम और अन्धापन। ये लक्षण शीतके साथ सम्बन्ध रखकर रोगका आक्रमण होनेके पहले आती हैं, वमनके साथ सर-दर्द और रक्त-सञ्चयी सर-दर्द होनेके आरम्भमें।

सब तरहके पदार्थ दिखाई देते हैं, समूचा दृष्टि-क्षेत्र काले धब्बोंसे भरा दिखाई देता है, धूएँसे भरा अथवा बहुत तरहके रङ्गोंसे भरा रहता है। यह आँख तथा पलकोंके मांस तन्तुओंके सभी प्रदाहमें उपयोगी है। चक्षु-गोलकसे काम लेनेपर, पीछेकी ओर खिंच जाना। पलकोंका गिर जाना, इसका एक स्पष्ट लक्षण है और यह अपनी पाक्षाघातिक प्रकृतिके रूपमें होता है। मांस-पेशियाँ शिथिल रहती हैं, वे पलकोंको ऊपर उठाये नहीं रख सकतीं। दृढ़तासे देखनेपर पलकें बन्द हो जाती हैं, वे केवल आँखपर गिर जाती है।

साधारणतः रोगीको प्यास नहीं रहती और बहुत प्यास रहना, तो एक अपवाद है। इसमें बहुत ज्यादा, क्लान्त करनेवाला पसीना होता है तथा हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है या नहीं तो हिलना-डोलना ही असम्भव हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि उससे हिला-डोला नहीं जाता या वह इतना दुर्बल है, कि हट नहीं सकता ; यह भाव सभी बीमारियोंके साथ रहता है। कभी-कभी यह नाककी सर्दी, छींक, नाकसे पानी चूना और हाथ-पैर ठण्डेमें भी लाभ करता है और यह तकलीफ कण्ठमें चली जायगी तथा गलक्षत उत्पन्न कर देगी, जिसके साथ लाली, सूजन, तालुमूलका बढ़ जाना, माथा गर्म और रक्तपूर्ण मुखमण्डल रहता है। अन्य ज्वरकी दशाको तरह, इसके साथ ही शाखा-अङ्गोंमें भार रहता है। लाल चेहरा, हाथ-पैरोंका भारीपन और धीरे-धीरे पैदा होनेवाला गलक्षत दिन-ब दिन थोरा-थोरा खराब होता है, यहाँतक कि एक जटिल गलक्षत हो जाता है। ये सब आपको जेलसिमियमकी ओर परिचालित करेंगे, खासकर यदि समूचे शरीरमें पाक्षाघातिक दुर्बलता रहे और ज्यों-ज्यों कण्ठके उपसर्ग बढ़ते हैं, त्यों-त्यों खाद्य और पेय नाककी राहसे बाहर निकल आते हैं। यह निगलनेकी पेशीके पक्षाघातके कारण होता है। जीभ भी पक्षाघात्-ग्रस्त हो पड़ती है तथा नियमित-रूपसे अपनी क्रिया नहीं करती। ऐसा अवसर रहता है, जब पाक्षाघातिक दुर्बलता इतनी स्पष्ट नहीं रहती, कि देखी हुई चीजसे पता लगे ; पर उसकी पेशियोंमें असमता रहती हैं और वह कदाकार बना रहता है। वह किसी चीजको पकड़ना चाहता है ; पर दूसरी चीज पकड़ लेता है। जब वह किसी चीजको पकड़ता है, तो उसके हाथ कमजोर मालूम होते हैं। वह कदाकार और कुत्सित रहता है तथा पेशियाँ यह-वह किया करती हैं और कभी-कभी तो वह काम करती हैं, जिनके लिये आदेश नहीं दिया जाता। बहुत अधिक उत्तेजना और उसके बाद कम्पन, असमता और अर्द्ध-पक्षाघात, अकसर दिखाई देते हैं और ये दशाएँ ज्वर-भावके साथ आती हैं और कुछ देर बाद तक रहती हैं। ज्वरके साथ आरम्भ होनेवाले पाक्षाघातिक रोगियोंके लिये यह उपयोगी है। समूचे शरीरके स्नायुओंमें फाड़नेकी तरह दर्द होता है तथा प्रादाहिक दशाकी वजहसे होता हुआ मालूम होता है। इसने फाड़नेकी तरह दर्दके

साथ गृध्रसी वात (Sciatica) आरोग्य किया है, जिसमें प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी भी सम्मिलित थी। कभी-कभी अनुभव शक्तिका क्षय भी देखनेमें आता है, नाकका सिरा, कानका, जीभका, अंगुलियोंके तथा हाथ और पैरोंके अन्तिम भागमें सुन्नपन ; चर्मका इधर-उधरका सुन्नपन।

पुरुषोंमें, पुरुषेन्द्रियकी वैसी ही दशा रहती है, जैसी कि रोगीको सार्वाङ्गिक दशा रहती है। वीर्य चू पड़ता है, ध्वजभंग रहता है, काम-चरितार्थकी शक्ति नहीं रहती, कामेन्द्रिय शिथिल रहती है।

नींद भी बहुत गड़बड़ रहती है। वह सो नहीं सकता, प्रत्येक उत्तेजना उसे जगाये रहती है ; पर स्पष्ट ज्वरकी दशामें उसे गहरी नींद या तन्द्रा रहती है। जब वह इस अचेतन निद्रामें नहीं रहता, तो रक्त सञ्चयके समय वह एक स्नायविक उत्तेजनाके दशामें रहता है, जिसमें वह जागता सोचता पड़ा रहता है और इतनेपर भी किसी विशेष बातको नहीं सोचता ; क्योंकि उसका मन शृङ्खला रूपसे कार्य नहीं करता।

जरायु या डिम्बाशय, पाकाशय, फेफड़े और मलान्त्र, किसी भी यन्त्रके प्रदाहमें जेलसिमियमके लक्षण रह सकते हैं। इसमें यन्त्रोंमें रक्त-सञ्चय होता है ; पर इसमें बहुत ही ऊँचे दर्जेका प्रदाह भी रहता है। इसमें स्वतः प्रदाहके सम्बन्धमें ऐसा कुछ विचित्र नहीं रहता ; जिससे जेलसिमियमका निर्देश हो, साथ ही प्रदाह रहनेपर जबतक मानसिक लक्षण न रहे, प्रलाप, तमतमाया चेहरा, हाथ-पैर ठण्डेके साथ माथेमें रक्त-सञ्चय, **प्रत्यङ्गोंका अत्यधिक भार**, अनुभूतियोंकी गड़बड़ी, मल द्वारावरोधिनी पेशीका पक्षाघात जबतक न रहे, तबतक केवल प्रदाहके लिये जेलसिमियम का प्रयोग न करना चाहिये ; पर यदि यह सब रहे तो जेलसिमियम किसी भी प्रदाहमें उपयोगी होगा। एक अत्यन्त कष्टदायक और प्रचण्ड, तेजीसे बढ़नेवाला विसर्प, जिसमें कि कई दिनोंके भीतर ही मृत्यु आ जानेके लक्षण दिखाई देते हैं, सभी लक्षण जेल्सको बताते हैं और यद्यपि जेल्सने विसर्प नहीं उत्पन्न किया है ; पर यह कई घण्टोंमें ही रोग-वृद्धिको रोक देगा तथा रोगी जल्दीसे आरोग्य हो जायगा। बहुत बार, जब विसर्प चेहरा, माथे और सिरकी त्वचामें फैल गया है तथा अत्यन्त भयङ्कर ढंगसे धुमैला लाल चेहरा, जैसा जेल्समें है वैसा हो रहा है तथा जेलसिमियमके अन्य लक्षण मौजूद हैं, जो हमने साधारण ढंगसे बताये हैं ; तो जेलसिमियमने विसर्पका फैलना रोककर आरोग्य कर दिया है। यदि हम मेटिरियामेडिकाको अच्छी तरह अध्ययनकर आयत्त कर लें, तो हम यह नहीं देखते कि कोई दवा किसी निश्चित ढंगका प्रदाह उत्पन्न करती है या नहीं प्रभृति ; बल्कि हम रोगीकी दशापर विचार करते हैं।

ग्लोनोइनम
(Glonoinum)

इस दवाका अत्यन्त साधारण स्वरूप रक्तका माथे और हृत्पिण्डमें चढ़ जाना है। रोगी अकसर इस दशाको इस तरह बताता है, मानो शरीरका समस्त रक्त अवश्य ही हृत्पिण्डमें चला गया है, साथ ही तापका एक भाव या उबलनेकी अनुभूति हृद्-प्रदेशमें अनुभव होती है या वक्षके बायें पार्श्वमें मालूम होती है। इसके अलावा, वह माथेमें रक्त चढ़ जानेकी भी शिकायत करता है। माथेमें एक गर्म लहरकी तरह अनुभव होना या पाकाशयसे एक तेज तापका चढ़ना या वक्षसे माथेपर चढ़ना, इसके साथ ही कभी-कभी चैतन्यहीनता भी रहती है। इसके अलावा माथेमें तरङ्गोंकी तरह अनुभूति भी होती है, मानो माथेकी त्वचा उठाई और नीचे गिराई जा रही है या यह फैलायी और सिकोड़ी जा रही है। इसके साथ ही बहुत ही तेज दर्द होता है। कभी-कभी तो सर मानो फट जायगा, कभी सरमें भयङ्कर यन्त्रणा रहती है या मस्तक-त्वचामें एक तरहकी यन्त्रणाकी अनुभूति होती है। रक्त चढ़नेका दूसरा साथी है अत्यन्त धमकका दर्द, हृत्पिण्डमें तापके साथ समकालिक और जब माथेकी त्वचामें इस तरहकी यन्त्रणा रहती है, तो धमक हथौड़ीकी चोटकी तरह होती है और प्रत्येक नाड़ीकी गतिकी धमक कष्टदायक होती है। इस तरह कभी दर्द-भरा स्पन्दन होता है और कभी बिना दर्दका, भयङ्कर स्पन्दन होता है और जब माथेमें सबसे अधिक रहता है, तब वे हाथ-पैरोंमें भी मालूम होते हैं। अंगुली और अंगूठोंमें स्पन्दन होता है, समूची पीठमें स्पन्दन होता है और ऐसा मालूम होता है कि समूचे शरीरमें धमक होती है। यदि यह थोड़ी देरतक जारी रहे, तो सम्भव है, कि मस्तक-त्वचामें यन्त्रणा पैदा हो जाये और इसके साथ ही दर्द-भरा स्पन्दन हो जाये; प्रत्येक टपक एक दर्द है। इस दशामें चलनेके समय प्रत्येक कदमके झटकेसे और प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर ऐसा मालूम होता है, कि माथा चूर चूर हो जायगा। हिलने-डोलनेपर यह टपक और भी बदतर हो जाती है। इस दशामें साथ रहनेवाले वमनसे कुछ आराम पहुँचता है। सरकी तकलीफ खुली हवामें अच्छी तरह रहती है, गर्मीमें बदतर रहती है और अकसर सर्द प्रयोगसे आराम पहुँचता है। लेटनेपर यह बदतर हो जाती है या सर नीचा कर सोनेपर। शाखा अङ्गोंमें बहुत ठण्डक रहती है, हाथ-पैर ठण्डे, पीले और पसीना-भरे रहते हैं, माथा गर्म और चेहरा तमतमाया रहता है और बैंगनी या चमकीला लाल रहता है। आँखकी पुतलियाँ फैली रहती हैं और आँखें लाल। अब यदि यह कुछ और भी बढ़ जाये, तो जीभ सूख जाती है, लाल हो जाती है, फिर भूरी हो जाती है। बहुत ज्यादा प्यास नहीं रहती, पर मुँह बहुत सूखा रहता है। पलकें सूख जाती हैं और चक्षु-गोलकमें सट जाती हैं। कभी-कभी चमड़ा सूखा और गर्म हो जाता है और चेहरा लाल और चमकीला रहता है। मनकी चञ्चलताकी सभी श्रेणियाँ, यहाँतक कि अचैतन्य भी मौजूद रहेगा।

ठीक लू लगनेपर जैसा हो जाता है, क्या उसका मैंने बहुत कुछ वर्णन नहीं किया है ? यह भी ध्यान देने योग्य है, कि ग्लोनोइनकी तकलीफें गर्मीके तापमें बदतर रहती हैं और जाड़ेमें अच्छी। धीमा सर-दर्द और लगातार बना रहनेवाला सर-दर्द, गर्म मौसममें बदतर हो जाता है और सर्दीसे उपशम हो जाता है। ये धूपमें बदतर और छायेमें अच्छे रहते हैं। ग्लोनोइनके रोगी माथेसे सूर्यका ताप बचाये रखनेके लिये सब तरहकी चेष्टाएँ किया करते हैं। जिसे बरसोंतक ये सब तकलीफें बनी रहती हैं और पुरानी दशा हो जाती है, वह बिना छातेके कभी गर्मीमें घरसे बाहर नहीं निकलेगा।

एकाएक पैदा हो जानेवाले, खासकर गर्मीसे होनेवाले या गैसकी रोशनीसे या किसी चमकीली रोशनीसे हो जानेवाले रक्त-सञ्चयी सर दर्दमें ग्लोनोइन खूब काम करता है। खाता-पत्र लिखनेवालोंका सर-दर्द, खासकर जो डेस्कपर काम करते हैं या जिनके सरपर गर्म गैसकी रोशनी रहती हैं। माथेके इतना निकट ताप-संयुक्त चमकीली रोशनी, ऐसे व्यक्तियोंमें सर-दर्द उत्पन्न कर देगी। यह सर दर्द ठण्डी हवामें जानेपर घट जाता है। जब वह खाता लिखता रहता है, तो दिनभर सर-दर्द बना रहता है और रातमें जब घर जाता है और लेटता है, तो फिर सर-दर्द पैदा हो जाता है और उसे फिर बिस्तरपर पड़ जाना पड़ता है। वह सर ऊँचा कर रखना चाहता है और सरमें दर्द प्रयोग करना चाहता है, देरतक सोये रहनेपर सर-दर्द घट जाता है; पर साधारणतः मध्याह्न कालकी नींदसे आराम नहीं पहुँचता। लेट जाने और थोड़ी देरतक सोनेसे कभी कभी सर-दर्द बढ़ जाता है, पर देरतक अच्छी नींद सोनेपर, रातभरकी नींद सोनेपर वह तरोताजा हो जाता है। उसके हाथ-पैर गर्म हो जाते हैं, ज्वरकी एक दशा तथा समस्त शरीरकी धमक दब जाती है और वह सवेरे सुखप्रद अवस्थामें सोकर उठता है। पर यदि वह धूपमें बाहर निकलता है या गैसकी रोशनीमें जाता है, तो वह फिर सर-दर्दके साथ घर लौटता है। जबसे बिजलीकी रोशनी चल गई है, तबसे रोशनीमें इतनी गर्मी नहीं है, पर गैसकी रोशनीसे बहुत ज्यादा गर्मी बाहर निकला करती है।

बच्चा मस्तिष्क-मेरुमज्जा प्रदाह (Cerebro-spinal-meningitis) से बीमार होता है, गर्दन पीछे खिंच जाती है, चेहरा बेतरह गर्म, लाल और चमकीला रहता है, आँखें रक्त-सञ्चय-पूर्ण या शीशेकी तरह चमकीली रहती है, माथा तथा शरीरका ऊपरी भाग बहुत गर्म रहता है, हाथ-पैर तथा निम्नाङ्ग और शाखा अंग ठण्डे या ठण्डे पानीसे तर रहते हैं। या मस्तिष्क और मेरुदण्डका बहुत प्रचण्ड रक्त-सञ्चय है। अकड़न पैदा हो जाती हैं, सभी अंगोंमें अकड़न, गर्दन और समूचा शरीर पीछेकी ओर खिंचा रहता है, आँखका गोला बाहर निकला रहता है। ठण्डक माथेमें अच्छी मालूम होती है, शाखा अंगोंमें ताप अच्छा मालूम होता है। गर्म कमरा अकड़नको बढ़ा देता है। जब ठण्डे कमरेमें निम्न-अंग वस्त्रोंसे ढके रहते हैं और खिड़कियाँ खुली रहती हैं, तो अकड़न आराम हो जाती है और रोगी सरलता-पूर्वक श्वास लेता है। माथेके इस रक्त-सञ्चयके साथ श्वासमें कष्ट होता है और कलेजेमें ऐसी धड़कन होती है, जो सुन पड़ती है।

हिलाने या झटका लगनेसे, झुकनेसे, पीछेकी ओर सर झुकानेसे, लेट जानेपर, सीढ़ी चढ़नेके समय, सर-दर्द बदतर हो जाता है। शीतवाली ऋतुमें, धूपमें, गैसकी रोशनीके नीचे काम करनेपर तथा बहुत ज्यादा पसीनेके साथ उत्तप्त हो जानेपर तथा टोपीके स्पर्शसे इसकी रोग-वृद्धि हो जाती है। स्कूली लड़कोंका टोपीके भारसे सर-दर्दका बढ़ जाना भी एक साधारण बात है। छोटे बच्चे दिनभर गर्म बन्द कमरेमें काम किया करते हैं तथा खुली हवा उन्हें अच्छी मालूम होती है ; पर हैटका भार **नाइट्रिक-एसिड** और **कैल्केरिया-फास** की तरह एक बोझके जैसा उन्हें मालूम होता है।

शराब या अन्य स्फूर्तिदायक तथा मानसिक परिश्रमसे ग्लोनोइनका रोगी बदतर हो जाता है। सर-दर्द रहनेपर वह सोच नहीं सकता और न वह लिख सकता है। लिखनेमें एक सहायक बाधा यह भी रहती है, कि वह काँपता है, इसी लिये लिख नहीं सकता। अंगुलियोंका काँपना और फड़कना, जिससे कि वह अपना काम नहीं कर सकता या कोई महीन काम अंगुलियों या हाथोंसे नहीं कर सकता।

जैसा मैंने वर्णन किया है, वैसे ही दृश्यके साथ इसमें सूतिकाक्षेप भी है। रक्त सञ्चयी शीतमें या किसी तरहके मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयमें वही प्रचण्डता रह सकती है।

एक प्रकारकी हलकी बीमारीमें भी इसका प्रयोग होता है। एक वह दशा जो रोगकी पुरानी दशासे मिलती-जुलती है। जब रोगीको केवल मस्तिष्कमें रक्ताधिक्य रहता है, माथेमें रक्तका एक दौरान हो जाता है, जब करीब-करीब होने योग्य रहता है ; यही वह हलकी दशा रहती है। यह लहरोंके रूपमें आता है। जब जरा भी आशा नहीं रहती, तब क्षणभरमें आ जाता है ; राह चलते-चलते उसे मस्तिष्कमें तापकी झलककी तरह एक सुरसुरी मालूम होती है तथा चेहरेपर तापकी झलक आ जाती है, उसके हाथ काँपते हैं तथा हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं, उसे पसीना हो आता है ; वह अपने चारों ओर देखता है और समझ नहीं पाता, कि घर जानेकी कौन-सी राह है। वह यह भी नहीं जानता, कि उसका मकान कहाँ है? वह दोस्तोंके चेहरोंकी ओर देखता है और वे उसे अद्भुत मालूम होते हैं, वह घरके पास रहनेपर भी राह भूल जाता है। यह एक प्रकारका चित्त-विभ्रम है, जो जल्द ही चला जाता है और फिर उसे अच्छा मालूम होने लगता है; पर ये दौरे निकट-निकट होने लगते हैं और मस्तिष्ककी कोमलताको बीमारीकी पहली दशामें होते हैं। मस्तिष्कमें रक्त चढ़नेके साथ सरमें चक्कर आता है, वह लुढ़कता है और डगमगाता है, उसे बाध्य होकर चीजें पकड़ लेनी पड़ती हैं और खासकर गर्म दिनोंमें उसे ऐसा ही होता रहता है अथवा सूर्यका ताप और रोशनीसे होता है।

संन्यास रोगकी सम्भावना और संन्यास रोग हो जानेपर, यदि यह प्रचण्ड दबाव जारी रहे, तो इस दवापर ध्यान दीजिये। सम्भव है, कि रक्तके थक्के जीवन लेनेवाले न हों, यह जीवन-रेखाके बाहर ही हों ; पर यदि रक्त-सञ्चय जारी रहता है, तो रक्तके थक्के बढ़ते जायँगे। लक्षण मिलनेपर **ओपियम** और ग्लोनोइन रक्तके चापको दवा देते हैं, वे रक्तके दौरानको समतामें ला देते हैं और रोगी सम्भव है, कि न मरे। कुछ देरके लिये

एक बाहु या पैरमें पाक्षाघातिक दशा रह सकती है और कई सप्ताह या महीनोंके आखिरमें फिरसे उनमें गति आ जा सकती है और रोगी चंगा हो जा सकता है; पर यदि रक्तके चापको घटानेके लिये समुचित औषधिका प्रयोग न किया गया, तो यह लगातार बना रहनेवाला रक्त-सञ्चय, कुछ ही दिनोंमें अवश्य ही मृत्युमें अन्त होगा। घरघराहटका श्वास-प्रश्वास, तन्द्राका इतिहास तथा संन्यास रोग-ग्रस्त रोगीका सार्वाङ्गिक दृश्य इस दवामें प्राप्त होता है; पर चमकीला चमड़ा तथा शाखा अंगोंकी ठण्डकके साथ संन्यास रोगमें जो तीव्र ताप हो जाता है, वही इसका परिचालक लक्षण है। इसमें "ओपियम" का बहुत अधिक व्यवहार होता है; पर इसका बड़ी खुराकोंमें प्रयोग न होना चाहिये। सर्वोच्चक्रम सर्वोत्तम क्रिया करते हैं और एक ही खुराक काफी होती है।

लिखे हुए एक रोगी विवरणमें यह कहा है:—"खिड़कीसे कूद पड़नेको पागलोंकी तरह चेष्टा।" सर दर्द इतना प्रचण्ड था, कि रोगी भयङ्कर बन गया तथा उसने खिड़कीसे कूद पड़नेकी चेष्टा की। आपको पूरी तरह विश्वास करना चाहिये, कि सर-दर्दके साथ उसे माथेमें खूनका सञ्चय हो गया था। खोपड़ीके प्रत्येक खण्डपर हथौड़ीसे लगातार मारनेकी तरह दर्द किसीको पागल बना देनेके लिये काफी होता है। वह लेट नहीं सकता और न टहल सकता है; क्योंकि प्रत्येक कदमसे झटका बढ़ जाता है, इसीसे आप समझ सकते हैं, कि "पागल" शब्दका क्यों व्यवहार हुआ है। रोगी दर्दसे पागल हो जाता है। दूसरी उक्ति है—"अपने चारों ओर चलने-फिरनेसे अनिच्छा।" रोगी कमरा एकदम शान्त रखना चाहता है। यदि रोगी बिछावनपर बैठा है, तो आप अकसर ग्लोनोइनके रोगीको दोनों हाथोंसे खूब कसकर तबतक माथा दबाये बैठे देखेंगे, कि जबतक हाथ एकदम क्लान्त नहीं हो जाते हैं। वह चारों तरफसे सरको दबाये रखना चाहता है, उसे बांधे रहना या उसपर कसी टोपी पहने रहना चाहता है। पीछेकी ओर झुकने या सामनेकी ओर झुकनेपर सर-दर्द बदतर हो जाता है। ऐसे अवसर हैं, जब सर-दर्द इतना प्रचण्ड होता है, कि तकियेके सहारे पड़े रहना भी सहन नहीं होता। माथेमें एक बहुत बड़ा भार मालूम होता है, जैसा कि बताया गया है। इन रक्त-संचयी सर-दर्दोंको पढ़नेमें आपको मालूम होगा, कि प्रत्येक रोगी अपने सर-दर्दको अलग-अलग भावसे वर्णन करता है, इतनेपर भी सबोंको एक ही इतिहास कहना पड़ता है, कि सरमें प्रचण्ड रक्त संचय हो जाता है।

"कई महीने हुए गाड़ीसे गिर जानेके कारण पीठका ऊपरी भाग और गर्दनमें एक अनुभवाधिक्य आ गया।" इस आरोग्यमें ग्लोनोइनके दो सुदृढ़ विशेष लक्षण हैं। "शराबसे तथा लेटे रहनेपर रोग-वृद्धि।" दूसरे लक्षण अन्य दवाओंको निर्देश कर सकते हैं; पर ये लक्षण वहाँ अवश्य मौजूद रहते हैं। यदि आपमें मेटिरिया-मेडिकाका ज्ञान रहे तो किसी रोगीका अध्ययन करने और कौन-से लक्षण प्रमाणित होते हैं, सभी मिलान करनेमें बड़ा मजा आता है। यदि आपमें मेटिरिया-मेडिकाका ज्ञान नहीं है, तो वह रोगी मन विचलित कर देनेवाला होता है। अब ज्यों-ज्यों इस वर्णनपर ध्यान देते हैं, हम तुरन्त देखते हैं, कि ये दोनों चीजें प्रमाणित हो चुकी हैं और बाकी स्पष्ट देखनेमें आती हैं। बहुत साधारणतः तो दर्द पश्चात् मस्तकमें उत्पन्न होता है तथा ललाटमें चला जाता है, पर समूचा माथा धमककी

दशामें रहता है। परन्तु हम और भी विशेषकर देखते हैं, कि "हिलने-डोलनेपर और थोड़ी भी आवाजपर रोग-वृद्धि।" रोगी घण्टोंतक एकदम शान्त और चुपचाप बैठा रहेगा। आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि किस तरह इतनी देरतक ग्लोनोइनका रोगी अपनी एक भी पेशी हिलाये बिना बैठा रह सकता है; क्योंकि हिलने-डोलनेपर बहुत ज्यादा दर्द होता है। इसके अलावा "सर नीचाकर लेटने और सोनेके बाद रोग-वृद्धि।" इस सोनेका क्या मतलब है, यह जान लेना बहुत ही महत्व-पूर्ण है। जैसा कि मैंने पहले कहा है, रोगी अकसर थोड़ी-सी नींदके बाद बदतर हो जाता है; पर देरतक सोनेके बाद आराम मिलना एक साधारण अवस्था है। यदि वह देरतक सोया रहेगा, तो यह दब जायगा, जबतक कि यह रक्त-सञ्चयी निद्रा या बेहोशी बन्द न हो और इस अवस्थामें यह दूसरी ही चीज हो जाती है। "बाहरी दबाव और ठण्डसे रोग-ह्रास", "मस्तक-शिखर तापसे जलता है, पीठके ऊपरी भागकी तरह।" सम्पूर्ण मस्तत-शिखर ऐसा मालूम होता है, कि गर्म लोहेसे ढँका हुआ है, मानो पासमें ही एक चूल्हा है। गर्म खासकर गर्दनका पिछला भाग तथा दोनों कन्धोंका मध्य भाग। जलता हुआ ताप माथेके शिखर-देशमें होता मालूम होता है तथा नीचे कन्धोंके बीचतक उतरता है। एक तापकी अनुभूति मानो एक पट्टी बँधी है। "चेहरा नीलाभ, इसके साथ ही भारी, मूर्खकी तरह भाव।" चेहरा चमकीला, लाल रहता है, पर यदि अवस्था जटिल हो जाती है, तो चेहरेका रङ्ग धुमैला हो जाता है और जितनी ही ज्यादा देरतक यह अवस्था रहती है, उतना ही अधिक वह धुमैला हो जाता है। यह सत्य है, कि संन्यास रोग तथा लू लग जानेपर ऐसा होता है। पहले-पहल जब लू लगनेकी बीमारी होती है, तो चेहरा चमकीला लाल, बहुत असीम गर्म और चमकीला रहता है; पर ज्यों-ज्यों ताप बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों चेहरा धुमैला होता जाता है, यहाँतक कि नीला हो जाता है। इन सभी मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयोंमें, एक मूर्खकी तरह, भारी भाव रहता है, यहाँतक कि बेहोशी आ जाती है। "बार-बार गहरी श्वास-क्रिया।" मस्तकके इस रक्त-सञ्चयके साथ साधारणतः वमन, कलेजा धड़कना, पाकाशयमें दर्द, श्वास लेनेमें बहुत तकलीफ और अन्तमें अचैतन्य आ जाता है। एक दूसरे रोगी विवरणसे ऐसा प्राप्त होता है—"प्रत्येक नाड़ीकी गतिसे ऐसा मालूम होता है, कि माथा फट जायगा।" अब मान लीजिये, कि माथेकी हड्डियाँ पहलेसे ही बहुत असहिष्णु हो रही है और उनमें यन्त्रणा है तथा माथा जितना सम्भव है, रक्तसे उतना भर जाता है और तब अपने रक्तपर हथौड़ीसे मारना आरम्भ किया है, आप समझ सकते हैं, कि दर्द बहुत ही तीव्र होगा तथा तुरन्त ही मूर्च्छामें उसका अन्त होगा। "धँसी हुई आँखें, आँखके चारों ओर नीलाभ सूजन।" आलोकातंक (Photophobia) के साथ लाल आँखें, दृष्टि-विभ्रम। आँखोंके सामने काले दाग; अन्धापन।" "ऊँचा बोखार रहनेपर भी चेहरा पीला", इन सभी प्रचण्ड मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयोंमें नाड़ी फड़कती है, यहाँतक कि यह महीन तारकी तरह और कड़ी हो जाती है; कभी-कभी यह अनियमित और धीमी भी हो जाती है।

इन रक्त सञ्चयोंका दूसरा साधारण सङ्गी गलेके पास सूजन है। गर्दन भारी मालूम होती है; कालर खोल देना पड़ता है, क्योंकि इससे दम घुटने लगता है, मानो रोगीको

श्वास-रोध हो जायगा। यहाँतक कि पुरानी दशामें भी किसी व्यक्तिमें जो अपनी घरकी राहको जाने विना ही गलीकी मोड़पर खड़ा रहता है, माथेमें रक्त चढ़ जानेके कारण उस अवस्थाके साथ-ही-साथ दम घुटनेका भाव रहता है और कालरसे **लैकेसिस**की तरह ही गर्दनमें वेचैनी पैदा हो जाती है। उसका दम घुटता है और कानोंके नीचे फूल जाता है। केवल एक अनुभूति ही नहीं रहती, पर इस अनुभूतिके साथ वास्तविक सूजन रहती है। गर्दन और कण्ठके पास सूजन, हनुके नीचे सूजन और ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं।

पाठ्य-ग्रन्थका दूसारा उदाहरण जो इस दवाका सार्वाङ्गिक दृश्य सामने ला रखता है, वह ऋतुस्रावके सम्बन्धमें है। मासिक रजः-स्राव नहीं होता, यह देरसे होता है, इसके साथ ही माथेमें प्रचण्ड रक्त-सञ्चय रहता है, प्रचण्ड सर-दर्द और वे लक्षण रहते हैं, जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है। मासिक आर्त्तव-स्रावके समय भी ये रक्त-सञ्चय हो सकते हैं। इसके अलावा यदि जरायुसे रक्त-स्राव एकाएक रुक जाता है या किसी जगहसे होनेवाला अत्यधिक रजः-स्राव एकाएक रुक जाता है, तो रोगी बहुत तेजीसे वीमार हो जाता है और रक्त माथेपर चढ़ जाता है।

जीवनमें ऐसी वहुत सी दशायें और वीमारियाँ होती हैं, जिनमें माथेमें रक्त-चढ़ता है, जव कि यही जरूरी दवा होगी। जिन व्यक्तियोंको कलेजेकी धड़कनके साथ श्वास-कष्ट होता है, कोई उद्योग करनेपर, वे पहाड़ीपर नहीं चढ़ सकते, वे सहनपर विना धड़कन या श्वास-कष्ट हुए नहीं चल सकते हैं। कोई हल्का-सा भी परिश्रम या उत्तेजना, हृत्पिण्डमें खूनका दौरान वढ़ा देता है और मूर्च्छा आ जाती है, स्त्रियोंमें मूर्च्छाका दौरा जिनके मूर्च्छित होनेकी सम्भावना नहीं है। वहुत कमजोरी, कलेजा धड़कना, प्रत्यंगोंका काँपना, अर्द्ध-पक्षाघातकी तरह एक या दोनों हाथोंका काँपना। "हृत्पिण्डकी जोर लगाकर होनेवाली क्रिया" इस दवाका एक सुदृढ़ लक्षण हैं। समूचे शरीरमें स्पन्दन। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें फड़फड़ाहट। नाड़ी तेज, अनियमित, धीमी या तेज और तारकी तरह। ऐसे कुछ लोग हैं, जो देखनेमें रक्त-पूर्ण होते हैं, हल्के-से-हल्का परिश्रम भी जिनपर प्रभाव पहुँचाता है और जिनके समस्त शरीरमें स्पन्दन होता है; गर्म कमरेमें स्पन्दन। यदि ठण्डक रहती है, तो कभी-कभी उन्हें खिड़की खोल देनेपर आराम पहुँचता है, पंखेकी हवासे, ठण्डी हवासे और सरमें ठण्डे प्रयोगसे आराम पहुँचता है। इस दवाके सम्वन्धमें, यह एक रोगी शय्या-पार्श्वका प्रयोग है, "खुली आगके पास वैठने या वहाँ सो जानेके कारण वच्चे रातमें वीमार हो जाते हैं। सरके केश कटवानेका दुष्परिणाम।" सरके केश कटवानेके कारण माथेमें सर्दी लग जानेपर **वेलेडोना**पर ही ध्यान जाता है। "सूर्यकी किरण लग जानेका दुष्परिणाम" "लू लग जानेका दुष्परिणाम।"

ग्रैटियोला

(Gratiola)

स्नायविक अवसाद ; मानसिक और शारीरिक दुर्बलताके साथ बहुत ज्याद आलस्यकी यह एक बहुत बड़ी दवा है। **काफिया और नक्स-वोमिका**से इसका निकटस्थ अम्बन्ध है और यह खासकर इच्छा-शक्तिकी दुर्बलता तथा काफी पीनेवालोंके स्नायु-शूलमें उपयोगी होता है। व्याधि-शंका रोग तथा स्त्रियोंमें उदासी और कामोन्माद पाया जाता है। चेतना-राहित्यके विना ही अकड़नकी दशा। खुली हवामें उपसर्ग अच्छे रहते हैं ; पर गर्म कमरेमें वह सर्दीला रहता है (**पल्सेटिला**की तरह)। बायीं ओर ही प्रधानतः बीमारी होती है ; शरीरसे लगातार भाफकी तरह श्वास निकला करता है पाकाशय और आँतोंकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहवाली दशा, साथ ही आक्षेपिक उपसर्ग, इच्छा शक्तिका अभाव हो जाता है और काम-काजकी इच्छा नहीं होती। मानसिक अवसाद और आलचीपन ; वह बहुत ही चिड़चिड़ा और व्याधि-शंका पूर्ण रहता है ; भविष्यका भय। अहङ्कारके कारण रोग। काफी या शराबका दुष्परिणाम ; पाकाशय और आँतोंकी तकलीफके साथ स्नायविक उपसर्ग। खानेके समय और बाद सरमें चक्कर आना ; आँखें बन्द करनेपर, पढ़नेके समय, अपनी जगहसे उठनेपर, गतिशील रहनेपर, वृहत् मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके कारण सरमें चक्कर आना। माथेमें ताप और पूर्णता ; ऐसा अनुभव होना, मानो माथा छोटा होता जा रहा है। माथेमें धमक, कनपटीमें, झुकनेपर, सर उठानेपर, माथेमें रक्तका चढ़ जाना। खुली हवामें माथेके लक्षण अच्छे रहते हैं और गर्म कमरेमें या तो बदतर हो जाते हैं अथवा पैदा हो जाते है। सवेरे सोकर उठनेपर पश्चात् मस्तकमें दर्द, चेहरेके बल लेटने या उठनेपर अच्छा रहता है। सवमन सर-दर्द, मिचली, वमन या खाद्यसे घृणा, सरमें चक्करके साथ। खुली हवामें अच्छा रहता है।

छींकनेपर पश्चात् मस्तकमें दर्द, माथा ठण्डा मालूम होता है तथा ठण्डी हवा सहन नहीं होती। मस्तिक-शिखरमें ठण्डक अनुभव होना। सर दर्दके समय ललाटका संकुचित हो जाना, माथेकी त्वचामें खुजली, आँखें और कान खुजलाना। पढ़नेके समय आँखोंके सामने कुहरा और हरी चीजें सफेद दिखाई देती हैं।

आँखोंमें इस तरहका दर्द, मानो बालू पड़ी है ; नाकमें खुजलाहट ; चेहरेमें जलन करनेवाला ताप मालूम होता है ; पर हाथमें यह ठण्डा लगता है।

सवेरे ऊपरी ओंठमें सूजन। चेहरेमें एक तरहका तनावका भाव और चुनचुनी मालूम होती है और यह फूला हुआ मालूम होता है। चेहरा लाल रहता है, ठण्डी चीजें मुँहमें लेनेपर दाँतोंमें दर्द होता है। मस्तिष्कके रोगोंमें दाँत पीसना।

कण्ठमें दर्द, जिससे बाध्य होकर लगातार घूँट लेना पड़ता है ; कण्ठमें बहुत श्लेष्मा, जिसे वह निकाल नहीं सकता। तेज प्यास ; **भोजनके बाद पाकाशयमें खालीपनका भाव,** खालीपन, जब उसे खाद्यकी इच्छा या आवश्यकता नहीं रहती। रोटीके सिवा और कुछ भी खाना नहीं चाहता।

खा लेनेके बाद और डकार आनेपर मिचली अच्छी रहती है। तीता, खट्टा पानी और श्लेष्माका वमन। पाकाशयमें एक घबड़ाहटकी अनुभूति। भोजनके बाद पाकाशयमें मरोड़ और एक बोझ-सा पदार्थ, उसके करवट बदलनेपर इधर-से-उधर जाता है, उसके साथ ही मिचली और डकारें। भोजनके बाद तनाव। पाकाशयमें, भोजनके बाद दबाव; **पाकाशयमें स्पष्ट ठण्डक।** पाकाशयमें मरोड़ और कड़ी यन्त्रणा; दर्द तेजीसे बदतर होता जाता है तथा पीठ और मूत्रपिण्डतक फैलता मालूम होता है।

तलपेटमें ठण्डकका भाव। मिचलीके साथ शूलकी तरह मरोड़, तीसरे पहर और शामको तनावके साथ तलपेटमें गड़गड़ाहट। मध्यान्त्रत्वच्ग्रन्थि (Mesenteric gland) में सूजन; तलपेटमें चिकोटी काटनेकी तरह दर्द, याद निकलनेपर अच्छा, झांकके साथ पीले या पीली आभा लिये हरे, फेन-भरे, पानीकी तरह पतले दस्त। कड़े हैजेकी भाँति बहुत ज्यादा पानीकी तरह पतला वमन और दस्त। हरे पानीकी तरह पतले बहुत अधिक दस्त। तेज प्यासके कारण, बहुत ज्यादा मात्रामें पानी पीनेपर अतिसार होने लगता हैं। अतिसार-कालमें वह अकसर झोंकको और खुली हवामें असहिष्णु रहता है, जिससे उसे दस्त लग आते हैं। इसने पूर्ण विकसित, तीव्र एशियाटिक हैजा आरोग्य किया है। हरे दस्त और हरा वमन, अचैतन अवस्थामें दस्त होने लगना।

पाखाना होनेके पहले, मिचली, गड़गड़ाहट, काटनेकी तरह दर्द, कूथन। पाखाना होनेके समय मिचली, मलान्त्रमें जलन, जोर देना। दस्त हो जानेके बाद, मलान्त्रमें जलन, कथन, गुदास्थि (Coccyx) में दर्द, सुरसुरीकी तरह शीत, तलपेटमें दर्द, डङ्क मारनेकी तरह और जलनकी तरह दर्दके साथ बवासीरका मसा निकलना। मलद्वारमें फाड़ने और नोचनेकी तरह दर्द। मलद्वारमें सङ्कोचन, मलद्वारमें खुजली। महीन कृमि। पेशाब करनेके समय और बाद, मूत्रनलीमें जलन। पेशाब रखे रहनेपर यह गदला हो जाता है; पेशाब आप ही-आप निकलना। बायीं शुक्ररज्जुसे लेकर तलपेट और वक्षतक सुई गड़नेकी तरह दर्द।

यदि कामेन्द्रियमें स्पष्ट उपदाह हो, तो यह स्त्रियोंकी बहुत ही लाभदायक दवा हो जाती है; यदि कामेच्छा बहुत बढ़ी है। यह कामोन्मादकी सर्वश्रेष्ठ दवा है। जब काम-वासना बहुत प्रचण्ड रहती है, तो वह उसे गुप्त पापोंके लिये बाध्य करती है। उसकी ये दवाएँ हैं—**जेलसिमियम, ग्रेटियोला, ओरिगेनम, नक्स-वोमिका, फास्फोरस, प्लैटिना** और **जिङ्कम।**

ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा होता है। दाहिने स्तनमें खोंचा मारनेकी तरह झुकनेके समय और ऋतु-कालमें दर्द, उठनेपर बदतर हो जाता है, त्रिकास्थिमें दर्दके साथ श्वेत-प्रदर।

पाखाना होनेके बाद प्रचण्ड हृत्-स्पन्दन (**कोनियम**), इसके साथ ही वक्षमें दबाव। वक्षमें, सरमें, हाथोंमें ताप, साथ ही लाल चेहरा।

ऊपरी अङ्गोंमें वातका दर्द, निम्न-अङ्गोंमें यन्त्रणाप्रद कुचल जानेकी तरह दर्द, चलनेके बाद, बैठे रहनेपर जंघास्थिमें फाड़नेकी तरह दर्द, चलनेके समय अच्छा।

भोजनके बाद औंघाई ; गहरी नींद।

खुजलानेके बाद, चर्ममें खुजली और जलन।

ग्रैफाइटिस

(Graphitis)

ग्रैफाइटिसके उपसर्ग **सवेरे, शामको और रातके** समय, खासकर आधी रातके पहले बदतर हो जाते हैं। यह उन व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जो रोगके कारण मोटे हो गये हैं या जो मोटे-ताजे थे ; पर अब दुबले हो रहे हैं। साथ ही उन्हें इसमें अतिसारसे ज्यादा कब्ज ही रहता है। उन स्त्रियोंके लिये लाभदायक है, जिनका मासिक रजःस्राव पीला, देरसे, थोड़े समयतक और मात्रामें भी थोड़ा होता है। श्लैष्मिक-झिल्लीका स्राव जो अण्डलालकी तरह और लसदार होता है, रोगीकी कुछ विचित्र ही सार्वाङ्गिक दशा मनमें ला देते हैं, जिनका वर्णन नहीं हो सकता तथा जो रुग्न अवस्थामें तथा बहुत-सी दवाओंमें साधारणतः नहीं प्राप्त होते इसीलिये आश्चर्यजनक और कभी-कभी विचित्र है। चमड़ेकी जगह-जगह खाल उधड़ जाना ; ऐसे लसदार चिपकनेवाले स्रावोंसे अमूमन दिखाई देता है।

अन्य कार्बनोंकी भाँति यह एक अत्यन्त गहराईतक काम करनेवाली दवा है तथा इसमें जखमोंमें, प्रादाहित तन्तुओं तथा पुराने जखमोंके दागकी तलीमें कड़ापन और जलन रहती है, इसीलिये कर्कटके प्रवर्द्धन और जखमोंमें यह लाभ करता है। पुराने जखमोंमें कर्कट उत्पन्न हो जाना इस दवाका एक सुदृढ़ लक्षण है। कण्डराओंका संकोचन, खासकर घुटनेके पीछेकी कण्डराका। इसमें पीले रक्तका रक्त-स्रावी स्राव होता है। यदि और भी ऊँचा विकार किया जाये, तो रोगी रक्त-स्वल्प और हरित्पाण्डु-रोग-ग्रस्त रहता है। उद्भेदोंसे श्लैष्मिक-झिल्लीके स्रावोंसे मासिक रजःस्रावसे, जखमोंसे, श्वास पसीनेसे स्पष्ट बदबू आती है **(कार्बो-वेज, सोरिनम, कैलि-फास, कैलि-आर्स** की तरह)। जब किसी भी कारणसे उद्भेद या स्राव एकाएक रुक जाते हैं तथा जटिल पुरानी अवस्था आ जाती है, तो ग्रैफाइटिस भी एक दवा है, जिसका अध्ययन करना चाहिये। कण्ठमालाकी अवस्थाएँ और गांठोंकी सूजन ; **बार-बार भैंसिया दाद** होना, शरीरके सभी भागोंमें और खासकर मलद्वार और जननेन्द्रियके पास ; बहुत-से अङ्गोमें और खासकर पुराने क्षत चिह्नमें जलन ; सार्वाङ्गिक शोथ-प्रवणता ; पेशियोंमें और कण्डराओंमें, कुछ उठानेमें, उनपर जोर पड़नेके कारण कमजोरी।

रोगी अत्यन्त शीत-असहिष्णु रहता है और उसे गर्म वस्त्रोंकी जरूरत होती है ; जाड़ेके दिनोंमें उसे सर्दी सहन नहीं होती और गर्मियोंमें गर्मी नहीं सह सकता ; उसे गर्म

कमरा सहन नहीं होता और ठण्डी हवाकी इच्छा करता है, जिससे उसे आराम पहुँचता है। गर्म विछावनमें वदतर रहता है ; एकदम सर्द या गर्म हो जानेपर रोग उत्पन्न हो जाते हैं। गर्म कमरेमें सर-दर्द वदतर रहता है तथा खुली हवामें अच्छा रहता है। ग्रैफाइटिसने वद्धमूल मेरुदण्डके रोग आरोग्य किये हैं और ऐसे रोगोंमें रोगी खुली खिड़कीके सामने खूब ओढ़ना ओढ़कर सर्दीली हवामें पड़ा रहना चाहता है। इसमें **कार्बो वेज**का सादृश्य सहज ही दिखाई देता है, जो अकसर उस अवस्थामें आरोग्य कर देता है, जब रोगी पंखेकी हवा खाना चाहता है। **कार्वनोंमें हवाकी लालसा बहुत ज्यादा रहती है**, इतनेपर भी अकसर सहजमें ही ठण्डा हो जाता है और ठीक इसी तरह **सहजमें ही गर्मा भी जाता है** और अत्यधिक उत्तप्त हो जानेके कारण जो रोग होते हैं, उनका सम्बन्ध कार्वनोंसे है। इसका रोगी वहुत गर्म हो जानेपर वीमार हो जाता है ; परिश्रम सभी लक्षणोंको वदतर कर देता है। गति **सुन्नपनके** सिवा सभी लक्षणोंको वढ़ा देती है और आराम करनेके समय निष्फलताका एक साधारण भाव आ जाता है। वहुत ज्यादा कमजोरी। कमजोरी और लेटे रहनेकी इच्छा, किसी भी अंशमें पक्षाघात, खासकर निम्न-प्रत्यंगोंमें पक्षाघात या निश्चलताकी अनुभूति शरीर और प्रत्यंगोंपर चली जाती है। स्नान करनेसे वह वीमार हो जाता है तथा सर्दी, तर हवा सहन नहीं होती। उसके साधारण जीवनमें ऐसा क्या है ; जिससे उसकी संधियोंके गांसेमें उद्भेद निकलते हैं। यह वताना दूसरोंपर छोड़ दीजिये ; पर इस आश्चर्यजनक दवामें ऐसा ही होता है। उस प्रदेशमें खाल उघड़ जाना, ददोरे पड़ जानेके सम्बन्धमें भी यही कहा जा सकता है। निस्पन्द वायु (Cataleptic) रोग भी वहुत स्पष्ट रहता है, जिसमें रोगी होश-हवाशमें रहता है, पर उसमें हिलने-डोलने या वोलनेकी शक्ति नहीं रहती। समूचे शरीरमें कम्पनशील सनसनी होती है, एकाएक ताकत गायव होती मालूम होती हैं, एकाएक कमजोरी आ जाती है। वहुत-से अंशोंमें संकोचन। इसने वहुत तरहकी अकड़नें आरोग्य की हैं। यह अकड़नकी दवा नहीं है ; पर पुरानी वीमारीमें, जिसमें वहुत-से उपसर्गोंमें एक यह भी है ; यह भी उपयोग होती है। इसने मृगी तथा गुल्म-वायु-सम्मिलित मृगी (Hysterieopilepsy) और मृगीके ढंगके टंकार वहुत वार आरोग्य किये हैं, जव लक्षण-समूहने इस दवाको निर्देशित किया था। लक्षणोंका सावधानतापूर्वक तुलना करनेपर मालूम होता है कि यह दवा विशेषकर शरीरके वाम भागपर क्रिया करती है। रोगीको दर्द वहुत अधिक अनुभव होता है तथा वाह्य अंश वहुत ही स्पर्श-सहिष्णु रहते हैं।

दर्द **जलन करनेवाला**, खोंचन, दवावकी तरह ; घ वकी तरह यन्त्रणा। सुई वेधने और फाड़नेकी तरह ; दर्दकी अपेक्षा सुन्नपन विशेष चरित्रगत लक्षण है। सभी सन्धि स्थान तथा मलद्वारमें फटे घाव हो जाना, नश्तर पड़ना तथा वहुतसे अंशोंमें रक्त वहता हुआ चर्म, वहुत कड़ापनके साथ ; माथेकी त्वचामें तथा अन्य स्थानोंमें वसार्वुद (Wen) हो जानेकी प्रवणता इस दवाके स्वरूप हैं, जिन्हें विना ध्यान दिये न छोड़ देना चाहिये और जव ये मानसिक लक्षणोंसे मिले रहते हैं, तो परिवर्त्तित जीवन-क्रियाकी ऐसी सुदृढ़ और आश्चर्यजनक मूर्त्ति गढ़ते हैं, कि एक नवीन चिकित्सकको भी ग्रैफाइटिसपर ध्यान दिये विना न छोड़

देना चाहिये। यह **सल्फर**की तरह विस्तृत और गहराईतक क्रिया करनेवाली है तथा पुरानी बीमारीमें बृहत् औषधिसे बहुत साम्य प्रदर्शित करती है।

जब गम्भीर मानसिक परिश्रम करना चाहता है, तो रोगी बहुत ही बेचैन हो जाता है तथा मानसिक क्रियाका प्रत्यक्ष भय रहता है। असीम मानसिक अवसाद रहता है तथा सङ्गीतसे यह और बदतर हो जाता है। उसकी उदासी इतनी अधिक रहती है, कि रोगिनी केवल मृत्यु और मुक्तिके सम्बन्धमें सोचा करती है। रञ्ज और विरक्ति उसके सभी कष्टप्रद मानसिक लक्षणोंको बढ़ा देते हैं, उसकी भाव-भंगी हमेशा बदला करती है, जब कि वह अपनी जवानीकी सभी घटनायें याद कर सकती हैं; पर नयी हुई घटनाएँ भूल जाती है। धीमी विचार-धारा और मनकी दुर्बलता, सवेरेके वक्त बदतर हो जाती है, अकसर उत्तेजित, जल्दबाज और शामको प्रफुल्ल हो जाती है। अत्यन्त चिड़चिड़ी और असन्तोषी, बहुत ही नगण्य और अत्यन्त सङ्कटमयकालमें भी चिड़चिड़ी, अव्यवस्थित चिन्तना एक प्रत्यक्ष लक्षण है। वह अपना मन स्थिर नहीं कर सकती, कि इसे करे या न करे। रातके अर्द्ध-पूर्व भागमें तथा शामके समय मनकी असीम क्रियाशीलता, जिससे आधी राततक नींद नहीं आती, सवेरेके समय चिन्तातुर और कष्ट-पूर्ण और शामके वक्त उत्तेजित; असीम, चिन्ता, यहाँतक निराशा छा जाती है।

सवेरे जागनेपर सरमें चक्कर आ जाना; शामको; ऊपरकी ओर देखनेपर, झुकी हुई अवस्थासे उठनेपर, वाध्य होकर लेट जाना पड़ता है; आगेकी तरफ गिर जानेकी प्रवृत्तिके साथ।

जब किसी रोगमें ऊपर लिखे साधारण लक्षण अत्यन्त बढ़े रहते हैं, तो नीचे लिखे विशेष लक्षण भी इससे आरोग्य किये जायँगे।

शामको गर्म कमरेमें मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय; मूर्च्छाके भावके साथ कितनी ही बार माथेमें रक्त-सञ्चय होना; समूचे माथेमें सुन्नपन मालूम होना; मस्तकशिखरपर जलता हुआ स्थान, आँखके ऊपर ललाटमें खींचन, दबाव और फाड़नेकी तरह दर्द; कनपटियोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; कनपटियोंसे चेहरेके पार्श्व भागमें और कन्धेतक दर्द; सवेरे सोकर उठनेपर अधकपारीका दर्द; सरके एक पार्श्वमें फाड़नेकी तरह दर्द, यह दाँत तथा गर्दनके एक पार्श्वतक फैल जाता है; मस्तक शिखर और पश्चात् मस्तकमें दबावकी तरह दर्द, पश्चात् मस्तक तथा गर्दनके पश्चात् भागमें, काँपने और सङ्कोचनका दर्द; इस तरहका दर्द मानो माथा सुन्न हो रहा है। ऋतु-स्रावके समय प्रचण्ड दर्द, सर्द होने और चमकीली रोशनीकी तरफ देखनेपर सर-दर्द, पैदा हो जाता है, गर्म कमरेमें बदतर हो जाता है तथा खुली हवामें अच्छा रहता है। मस्तक-त्वचामें स्पष्ट यन्त्रणा रहती है; उद्भेदके साथ या बिना उद्भेदके साथ या बिना उद्भेदके भी मस्तक-त्वचामें खुजली; मस्तकका अकौता, जिससे लसदार तरलका स्राव होता है; कानके पीछे अकौता, कानके पीछे ददोरे, जिनसे खून बहता है; मस्तक-त्वचापर पपड़ी जमनेवाले उद्भेद; केशोंका झड़ जाना, खल्वाट, मस्तक-त्वचापर चमकीले दाग।

बहुत ज्यादा आँसू बहनेके साथ सूर्यकी रोशनीका असीम आलोकातङ्क ; ग्रैफाइटिससे बढ़कर और किसी भी दवामें इतना स्पष्ट आलोकातङ्क नहीं है। आँखमें और आँखोंके ऊपर, सूर्यकी रोशनी आनेवाली खिड़कीमें अधिक देरतक देखनेके कारण दर्द ; आँखोंपर जोर पड़नेके कारण उत्पन्न उपसर्ग, लिखनेके समय अक्षर दूने मालूम होते हैं, पढ़नेके समय अक्षर सब आपसे सट जाते हैं, शामके वक्त आगकी चिनगारियाँ तथा आगकी लहरों-सी दृष्टि-पथमें मालूम होना ; कुहरेके भीतरसे देखनेकी तरह दृष्टि, ऋतु-स्रावके समय दृष्टिका लोप हो जाना। जलन, दबाव, सुई गड़नेकी तरह आँखमें दर्द। इसने कनीनिकाका जखम आरोग्य किया है। कनीनिकाका बारम्बार होनेवाला फुन्सीका प्रदाह। बच्चोंके चक्षु-कोणमें (Canthi) फटे घावके साथ फुन्सीवाला कनीनिकाका प्रदाह, असीम आलोकातङ्क तथा चेहरेपर अकौता। स्पष्ट रक्त सञ्चय तथा चक्षु श्वेत-पटलकी रक्त-पूर्ण नसें। खुली हवामें पुराना अश्रु-स्राव, खाल उधेड़नेवाले। चक्षु-कोणके दर्दोरेसे सहज ही खून बहता है और भयंकर खुजली होती है। आँखसे पीब भरा स्राव ; रातमें पलकें सट जाती हैं, आँखें गर्म मालूम होती हैं ; पलकें बहुत फूली रहती है, किनारे लाल रहते हैं, खाल उधड़ी रहती है और इनसे सहजमें ही खून बहने लगता है—कभी-कभी कड़ी रहती है। पलकोंके किनारोंपर जखम ; पलकें पपड़ीसे भरी रहती हैं पलकों और आँखोंके पासका अकौता, बरुनियोंमें सूखा श्लेष्मा, पलकोंपर गुहौरी। इनमें खींचनका दर्द खासकर जब वे बार-बार होती हैं। पलकोंपर कोषार्बुद (Cystic tumors)।

लसदार, चिपकनेवाले पीबका कानसे स्राव, खून मिला, बदबूदार स्राव। कानोंमें आवाजें, पटाखा फटने, भनभनाहट, सीटीकी आवाज, घण्टी बजनेकी आवाज गरज, गुञ्जकी आवाज। रातमें प्रचण्ड गर्जन शब्द और कान बन्द हो गये-से मालूम होते हैं ; बिजलीकी कड़क, लुढ़कनेकी कानमें आवाजें। कितनी ही श्रेणियोंका बहरापन तथा रोगीको शोरगुलमें अच्छा सुन पड़ता है। रेलगाड़ीकी गर्जना या सवारी गाड़ीकी गड़गड़ाहटमें वह अच्छा सुन सकता है। कानके पीछे और ऊपर अकौताके उद्भेद निकलनेके कारण बहरापन। ठण्डी हवामें कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। कानकी स्पष्ट सूजन।

गन्ध बहुत ही तीव्र, वह फूलोंकी गन्ध सहन नहीं कर सकती ; नाकमें सूखापनके साथ घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना, नाककी सर्दीके साथ। नाकसे खून-मिला श्लेष्मा या पीब निकलना, बहुत बदबूदार, लसदार, गाढ़ा, कभी कभी पीला। नाककी पुरानी सर्दीकी यह बहुत ही उपयोगी दवा है। नाकमें बहुत ही कष्टदायक सूखापन। नाककी हड्डी और उपास्थियोंमें छूनेपर बहुत यन्त्रणा होती है। **कार्बो-वेजमें** दिखायी देनेवाली नाककी पतली सर्दी और छींकें। जाड़ेभर बार-बार सर्दीका आक्रमण, ठण्डी हवामें बदतर हो जाता है ; नाककी सर्दी स्वरयन्त्रतक फैल जाती है, "कार्बो-वेज"की तरह ; खाल उधड़े, घाव-पूर्ण फटे नथुने, खरोंट तथा कड़े श्लेष्मा बहुत ऊपर नाकतक भरे रहते हैं, नाकमें जखम। नाकमें फटे घाव, जो जलते और कड़े हो जाते हैं।

चेहरा पीला, मोमकी तरह और रोगियल रहता है। लसदार तरीकेके साथ चेहरेपर अकौता और भैंसिया दाद उद्भेदोंके साथ या बिना उद्भेदके ही खुजली। चेहरेपर एक

मकड़ीका जाल लगे रहनेका तरह अनुभूति। मुँहका कोना फटा रहता है और फटे घाव जखममें परिणत हो जाते हैं तथा किनाड़े कड़े पड़ जाते हैं और उनमें बहुत जलन होती है, चमड़ा खुजलाता है, फटता है और अकसर उसकी खाल उधड़ जाता है और खून बहता है। चेहरेका विसर्प, यह दाहिनी ओरसे वायीं ओर फैलता है। दाढ़ीके केश झड़ जाते हैं, ओठोंपर पपड़ी जमती है तथा हनु-स्थानपर अकौता हो जाता है। निम्न-हन्वस्थि फूली और कड़ी रहती है। दाँतसे मसूढ़े अलग हो जाते हैं ; दाँतोंमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है ; ठण्डी हवामें दाँतोंमें खींचनका दर्द ; दाँतोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, गर्मीसे वदतर हो जाना। मुँहका स्वाद तीता, नमकीन, खट्टा और नष्ट हुए अण्डोंकी तरह रहता है ; सवेरे मिचली पैदा करनेवाला स्वाद, भोजनके वाद खट्टा स्वाद, जीभ सफेद आवरणसे ढँकी रहती है। निचले ओंठपर जलन करनेवाले छाले और जीभकी नोकपर छाले, जीभके भीतरी पटलपर दर्द-भरे जखम, मसूढ़े और मुँहसे वदबू आना ; श्वाससे पेशावकी तरह गन्ध आती है। सवेरे सोकर उठनेपर मुँहमें सूखापन ; रातमें जागनेपर भी, रातमें मुँहसे लार चूती है। पुराना गल-क्षत, जखम और सूजनके साथ, फूले, हुए तालुमूल, रातके समय कण्ठमें दर्द ; बहुत ज्यादा, सफेद, लसदार श्लेष्मा, नासा तथा पश्चात् नासाकी सर्दीका बराबर लगे रहना। लगातार श्वास-रोधका भाव या कण्ठमें संकोचन जिससे निगलनेमें तकलीफ होती है। कण्ठमें लगातार ऐंठन, जिससे बराबर घूंट लेनेकी इच्छा होती रहती है।

राक्षसी भूख। सूखा और भीतरी ज्वरके साथ सवेरेके वक्त प्रचण्ड प्यास। गोश्त, पकाया हुआ खाद्य, मछली, नमक, मिठाइयाँ खानेकी इच्छाका न होना। श्वास-रोधका भाव तथा पाकाशयमें चवाने और जलनको दूर करनेके लिये उसे वाध्य होकर खाना पड़ता है। **पाकाशयका दर्द, भोजन करनेपर घटना।** डकार तीती, खट्टी, सड़ी, खाये हुए खाद्यकी, हरे पानीकी। भोजनके वाद बहुत बार कलेजेकी जलन ; ऋतुकालके समय बहुत मिचली और कम्पनके साथ ; जो कुछ वह खाती है, उसीकी कै हो जाती है, वमन, दस्त और ठण्डा पसीना। पाकाशय हमेशा बिगड़ी हुई अवस्थामें मालूम होता है या जैसे अनपच हो। **कार्बो-वेज**की तरह ही आध्मान रहता है। और डकार आनेपर बहुत कुछ आराम मिलता है ; जलन, संकोचन, स्पन्दन और मरोड़, वार-वार होनेवाले लक्षण हैं। पूर्णता, तनाव, दवाव, ग्रैफाइटिसके लगातार बने रहनेवाले स्वरूप हैं। खाद्य निगलनेपर ओकाई आना (**मर्क-कोर**की तरह)। भीतरी तापके साथ पाकाशयकी सर्दी खाने-पीनेके लिये वाध्य करता है। ठण्डे पेयोंसे वदतर हो जानेवाला पाकाशयका दर्द, गर्म दूधसे अच्छा रहता है। भोजनके वाद ही तुरन्त खाद्यका वमनके साथ सामायिक पाकाशय-शूल। पाकाशयके लक्षण मिलनेपर यह पुराना शराबियोंकी आश्चर्यजनक दवा हो जाती है (कार्वन वाई सल्फाइडकी तरह)।

कड़े, फूले, यन्त्रणा-भरे यकृत तथा यकृतमें कष्ट और भारकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है। दोनों ही कुक्षि-देश (Hypochondria) में सुई गड़नेकी तरह दर्द, वायें कुक्षि-देशमें उसके वल लेटनेपर जलन ; यकृत प्रदेशमें वस्त्रका सहन न होना।

आध्मानके कारण तलपेटमें बहुत तकलीफ; रुका हुआ वायु, मरोड़का दर्द, तनाव उत्पन्न करता है और बराबर ही एक प्रकारकी तकलीफ बनी रहती है। जो कुछ वह खाता है, वही गैस या वायुमें परिणत हो गयी मालूम होती है। तलपेटमें गड़गड़ाहट और हलचल मालूम होती है; बहुत जलन और पसीनेकी तरह दर्द होता है। खानेके बाद ही पाकाशयमें मरोड़ होने लगना; कपड़ेसे तलपेटमें तकलीफ होती है, जरा भी खानेमें गड़बड़ी हुई कि तलपेटमें वायु बढ़ जाता है, गड़गड़ाहट और अतिसार हो जाता है; शोथके साथ तलपेट तना रहता है। तलपेटके पार्श्वभागमें वर्तुलाकार विसर्पिका (Herpes zona); निम्न तलपेट और वंक्षण-देशमें विसर्पिका; वंक्षण ग्रन्थिकी कड़ी सूजन; उदर-प्राचीरोंका शोथ।

मलद्वारसे बहुत ज्यादा बदबूदार वायु दिन-रात निकलता है। यद्यपि कब्जियतकी तरह पतले दस्त उतने ज्यादे नहीं आते, इतनेपर भी कुछ रोगियोंमें यह अद्भुत लक्षण रहता है। वायु निकलनेके साथ, बिना दर्दके ही पतले दस्त आते हैं, दस्त पानीकी तरह भूरे, सड़े, खाद्य-पदार्थ मिले मल, खाल उधेड़नेवाला मल, मलद्वारमें बहुत अधिक यन्त्रणा; मलद्वारमें फटे घाव, बहुत जलन। पुराना अतिसार (संग्रहणी) जरा भी खानेमें गड़बड़ी होनेपर नया दौरा हो जाता है। ढीले मल और कब्जके मलके साथ अक्सर बहुत ज्यादा चाशनीकी तरह मल पाया जाता है। मलद्वारसे श्लेष्मा निकलना तथा मलद्वारका बाहरी भाग हमेशा तर बना रहना। बड़ा बवासीरका मसा, जिसमें कटे घावके साथ बहुत यन्त्रणा रहती है।

कब्ज, बड़ा, कड़ा, गाँठ-गाँठ मल, बहुत दर्द, कष्ट और यन्त्रणाके साथ निकलता है और मलद्वारमें फटा घाव (भगन्दर) हो जाता है। लम्बे संकरे मल (फास्फोरसकी तरह)। मलद्वारमें प्रचण्ड जलन, मलद्वारका बाहर निकल आना (काँच निकलना)। इसने बहुत पुराना खूनी बवासीर, जिसमें बहुत यन्त्रणा, भगन्दर और बहुत जलन थी, आरोग्य कर दिया है। पाखाना होनेके समय प्रचण्ड दर्द। कई दिनोंतक पाखाना ही न लगना। पाखाना होनेमें बहुत समय लगता है और बहुत ज्यादा काँखना पड़ता है। यह अकसर उन रोगियोंके लिये उपयोगी होता है, जिन्हें इञ्जेक्शन या जुलाब दिये बिना पाखाना ही नहीं होता। मलद्वारमें भयङ्कर खुजली; मलद्वारोंके पास अकौता तथा भैंसिया दाद या ये दोनों सम्पूर्ण मलद्वारको आक्रान्त किये रहते हैं। फीता-क्रिमि पैदा करनेवाली पाकाशय और उदरकी दशाकी दशा इसने आरोग्य कर दी है।

कमजोर धारमें पेशाब होता है, रखनेपर बहुत ही गदला हो जाता है और बहुत लाल या सफेद तली जमती है। रखे रहनेपर पेशाबपर इन्द्रधनुषके रङ्गकी तरह एक फूही जमती है। पेशाब हो जानेके बाद भी कुछ पेशाब चूता रहता है; मूत्र-पथ तथा मूत्राशय-ग्रीवामें पेशाब न करनेके समय भी सूजन; त्रिकास्थि और गुदास्थिमें पेशाब करते रहनेके समय दर्द।

प्रचण्ड कामोत्तेजन तथा रात्रि-कालीन स्वप्न-दोष; इतनी कड़ी लिङ्गोत्तेजना होती है, कि लिङ्ग-प्रवेशके बाद तुरन्त ही वीर्य-स्राव हो जाता है। इसके ठीक विपरीत दशा भी

प्राप्ति होती है, जिससे सङ्गमेच्छा नहीं होती और कड़ापन भी नहीं आता। गुप्त दुराचार और अतिरिक्त काम-तृप्तिके कारण उत्पन्न ध्वजभंगको इसने आरोग्य कर दिया है। कमजोर लिंगोद्रेकके साथ स्वप्न-दोष। लिंगाग्र-चर्म (Prepuce) पर भैंसिया दाद, लिंगमुण्ड-पर फटे घाव और खाल उधड़ जाना ; मुष्क तथा लिंगकी शोथज सूजन, छोटे बच्चे और शिशुओंकी अण्ड-वृद्धि। मुष्कपर खुजली और तर उद्भेद। इसने पुराने सूजाकका लसदार, चिपचिपा, मूत्रनलीसे होनेवाला स्राव आरोग्य कर दिया है। इसने फूले हुए अण्डकोष आरोग्य किये हैं।

स्त्रियोंमें यह संगम प्रवृत्तिसे घृणा पैदा कर देती है, बढ़े हुए और कड़े डिम्बकोष ; जरायु तथा डिम्बकोषमें बहुत स्पर्श-कातरता। इसने जरायुका अर्बुद आरोग्य किया है। हाथसे ऊँचेपर पकड़नेपर जरायुमें दर्द ; जरायु-प्रदेशमें नीचे ढकेलनेवाला दर्द। इसने जरायुका फूलगोबीकी तरह मसा आरोग्य कर दिया है। इसने जरायु-ग्रीवामें पैदा होनेवाला कर्कटका जखम (Cancerous growth) रोक दिया है, अब उसमें जलन और गदला खून-मिला स्राव होता था। इस सम्बन्धमें इसका **कार्बो-ऐनिमेलिस**से सादृश्य है। देरसे ऋतु-स्राव, अनियमित, थोड़ा पीला या थोड़ा काला मिला, छोटे-छोटे थक्के, थोड़ी देरतक रहता है। छः या आठ सप्ताहके अन्तरसे ऋतु-स्राव। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त लड़कियोंका ऋतु-स्राव रुका या बहुत देरसे होता है। पहला ही ऋतु-स्राव देरसे। ऋतु-स्रावके बदले श्वेत-प्रदर (**काकुलस**), भग या शोथ। दिन-रात झोंकसे श्वेत-प्रदरका स्राव हुआ करता है, योनि-पथमें सूखापन और ताप ; योनि-पथमें ठण्डक। ऋतु-कालमें बहुत अधिक आलस्य। बहुत-से उपसर्ग ऋतुकालमें उत्पन्न हो जाते हैं ; सूखी खाँसी, बहुत ज्यादा पसीना, पैरका शोथ, स्वरभंग, नाककी सर्दी, सर-दर्द, मिचली, सवेरेके वक्तकी मिचली। ऋतु-स्रावके पहले भागमें भयंकर खुजली ; जननेन्द्रियकी खाल उधड़ जाना तथा ऋतुकालमें दोनों जंघोंके बीचकी खाल उधड़ना ; ऋतु-स्रावके पहले खाल उधेड़ देनेवाला श्वेत-प्रदर। श्वेत-प्रदरका स्राव सफेद, पीलापन लिये सफेद, पतला, लसदार, बदबूदार, स्तनका दूध पिलाने-वाली स्त्रियोंको यन्त्रणाप्रद फटे स्तन-वृन्त। पुराने कर्कटके जखमके दागपर स्तनमें नया कर्कटका उत्पन्न हो जाना।

स्वर-यन्त्र स्पर्श-असहिष्णु रहता है। शामको स्वरभंग (**कार्बो-वेज**की तरह)। रातमें स्वर-यन्त्रमें सूखापन, बहुत ज्यादा लसदार श्लेष्मा दिनके समय निकलता है।

सो जानेपर उसका श्वास-रोध होने लगता है (**लैकेसिस**की तरह), अकसर श्वासके लिये हाँफता हुआ नींदसे जाग पड़ता है ; वक्षमें संकोचन।

हूपिंग खाँसी (कुक्कुर खाँसी) की तरह आवेशिक खाँसी, खासनेके बाद बहुत-सा सफेद लसदार श्लेष्मा निकलता है ; किसी भी समय खाँसीका दौरा हो सकता है। इसने हूपिंग खाँसी आरोग्य कर दी है। स्वर यन्त्र तथा टेंटुआमें सुरसुरी होनेके कारण खाँसी, रातको प्रचण्ड खाँसी, गहरी श्वास लेनेपर खाँसी आने लगती है, टेंटुआमें खाल उधड़नेका भाव (Rawness) वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। हृत्पिण्डका संकोचन ; हृत्पिण्डमें

बिजलीके झटके ; हिलने-डोलने या परिश्रम करनेपर समूचे शरीर और शाखा अंगोंमें जोरका स्पन्दन होनेके साथ कलेजेमें धड़कन होने लगना। नाड़ी पूर्ण और कड़ी, दिनमें सुस्त हो जाती है, पर सवेरेके वक्त तेज हो जाती है ; ज्वरके साथ, भोजन कर लेनेपर शामको नाड़ी तेज हो जाती है। वक्षमें खुजलानेवाले बिसर्पिकाके उद्भेद ; दर्दके साथ वक्षके वाम भागपर वर्त्तल विसर्पिका (Herpes zona)। यक्ष्माको दूर हटाये रखनेकी यह एक उपयोगी दवा है।

बढ़ी हुई, कड़ी और दर्द-भरी गलेकी गांठें। गलेकी दर्द-रहित फूली गाँठें। पलंगका हिलना मेरुदण्डमें बिलकुल ही सहन नहीं होता ; कटि प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो "मेरुदण्ड टूट गया है।" नीचे उतरनेवाले सुन्नपनके साथ त्रिकास्थिमें दर्द ; पेशाव करनेके समय त्रिकास्थि (Sacrum) और गुदास्थि (Coccyx) में दर्द, गुदास्थिपर खुजली और तरी। प्रत्यंगोंमें खींचनका दर्द ; सभी प्रत्यंग कमजोर ; प्रत्यंगोंमें पक्षाघातकी अनुभूति, प्रत्यंगोंपर भैंसिया दाद और अकौता, ऊर्द्ध प्रत्यंगोंमें स्पष्ट सुन्नपन, आराम करनेके समय और लेटे रहनेके समय, अंगुलियों और हाथोंमें सुन्नपन और ठण्डक। कन्धोंमें वातज और फाड़नेकी तरह दर्द, बायीं ओर बदतर, बगलके गड़हेमें और कोहनीके झुकावके स्थानपर भैंसिया दाद। तलहत्थीपर सींगकी तरह मसे, हाथका चमड़ा कड़ा, फटा, गर्म और खून बहता हुआ। हाथों और अंगुलियोंमें विचर्चिका (Psoriasis); अंगुलियोंके बीचमें खाल उधड़ी, तर जगहें ; अंगुलियोंके नाखून मोटे और टूटनेवाले, अंगुलीके नाखून काले हो जाते हैं और गिर जाते हैं। तलहत्थीमें बहुत ताप।

दो सन्धियोंके बीचमें झटका मारनेकी तरह दर्द और घावकी तरह यन्त्रणा, चलनेपर खाल उधड़ जाना। जंघापर बहुतसे उद्भेद, पर खासकर भैंसिया दाद और अकौता, ऐसे उद्भेद जिससे लसदार तरल बहता है। निम्नांगोंमें आराम करनेके समय सुन्नपन, पर कमजोर और इस तरह भारी रहते हैं, मानो पक्षाघात ग्रस्त हो पड़े हैं, पैर और तलवोंका शोथ। वंक्षण-देश तथा घुटनेके गड़हेमें भैंसिया दाद। शामको बिछावनमें रहनेपर पैर ठण्डे, बहुत ज्यादा बदबूदार पसीना पञ्जोंमें होना, पैरके पंजेमें और टांगोंमें जखम, जंघोंमें, पैरोंमें पंजोंमें और अंगूठोंमें फाड़नेकी तरह दर्द ; एँड़ी तथा तलवेमें जलनकी तरह ताप, अगूठेमें गठियाका फाड़नेकी तरह दर्द अंगूठोंपर फैलनेवाले छाले, जो जखममें परिणत हो जाते हैं। अंगूठेके नाखून काले हो जाते हैं ; मोटे और सिकुड़े अंगूठेके नाखून, नाखून दर्द-भरे रहते हैं ; भीतरकी ओर बढ़नेवाले अंगूठोंके नाखून।

अस्पष्ट स्वप्न, चिन्ता-भरे, भयंकर, तङ्ग करनेवाले, आधी रातके पहले नींद न आना, दिनके समय औंघायी। नींदमें रात्रि-कालिन वेदना। वार-वार नींद खुल जाना। सवेरे स्फुर्तिहीन।

वार-वार होनेवाले सविराम ज्वरमें ग्रैफाइटिसका और भी विशद प्रयोग होना चाहिये। अंगोंमें दर्दके साथ शामको जाड़ा, ज्वरके साथ मिला हुआ जाड़ा, सभी अवस्थाओंमें ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है ; भोजनके बाद जाड़ा बदतर हो जाता है ; पर

पीनेके बाद और खुली हवामें अच्छा रहता है। जाड़ेके साथ, पर बिना पसीनेके ही रातके समय बोखार। शामको और रातमें खासकर आधी रातके पहले सूखा ताप; ज्वरके समय घबड़ाहट और बेचैनी, हाथ और तलवा बहुत गर्म, यहाँतक कि जलता हुआ ताप। इसमें ज्वरके साथ ताप था, जिसके बाद पसीना हुआ, थोड़े भी परिश्रमसे पसीना; शरीरके सामने वाले भागमें पसीना; पसीना बदबूदार, ठण्डा रहता है और कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है। कमजोरीमें और यक्ष्माके समय रातमें बहुत ज्यादा पसीना, बहुत-सा पुरानी बीमारियोंमें पसीना होनेको बिलकुल ही शक्तिका न रहना।

समूचे शरीरके चर्ममें खुजली, उद्भेदके साथ या उद्भेदोंके बिना ही; गर्म बिछावनमें रातके समय खुजली बढ़ जाती है। उद्भेदोंके साथ खुजली और जलन, रातके समय शरीर बहुत गर्म हो जाता है; सन्धियोंके मोड़की जगहपरका चमड़ा उधड़ जाना। प्रत्येक चोट पक जाती है, अंगुलियोंके सिरे, चुचूक, मलद्वार और भगके जोड़के स्थान तथा अंगुलियोंके गासेमें फटे घाव। खुजलानेपर फुन्सियाँ निकल आती हैं, विसर्प चेहरेपर आरम्भ होता है और अन्य भागोंमें फैल जाता है; विसर्प चेहरेपर उत्पन्न होकर दाहिनेसे बायीं तरफ जाता है। शिरा-स्फीति रोगमें खुजली; खुजलानेवाली बवासीर। विसर्पिका और अकौतासे लसदार तरल चूता है। पपड़ी और फुही जमनेवाले जखम। कड़ा, दर्द-भरा घावोंका दाग; कड़ा मांस और जलनके साथ पुराने जखम, खुजलानेवाले और डंक मारनेवाले जखम, जिनकी तली और किनारे कड़े रहते हैं।

ग्वेएकम
(Guaiacum)

यह एक बहुत ही गहरायीतक काम करनेवाली दवा है। यहाँतक गहरी क्रिया करनेवाली कि उन लक्षणोंको आरोग्य कर देती है तथा **वात, गठिया वात** तथा उस धातु-प्रकृतिको भी परिवर्त्तितकर शृङ्खलामें ला देती है, जिसने **यक्ष्मा ग्रहण** कर लिया है। इन रोगियोंको अतिसार होता रहता है; कण्डराएँ बहुत छोटी रहती हैं या उनमें फोड़े हो जाते हैं, सर्दीकी बीमारियाँ, ब्रांकाइटिस, मांस-पेशिक तन्तुओंका खींचन, तनाव और सङ्कोचन। यन्त्रणापूर्ण फूली हुई सन्धियाँ, वात-ग्रस्त सन्धियाँ, गर्मीसे ज्यादा दर्द-भरी हो जाती हैं (**लैक-कैनाइनम, लीडम, पल्सेटिला**) और ठण्डे रहनेपर ज्यादा आराम मिलता है। सन्धियोंके गठियाके फोड़े, हड्डियाँ छेद-छेद हो जाती है या उनमें पीब होता है, खासकर पैर और घुठियोंकी हड्डियाँ आक्रान्त हो जाती हैं। स्पर्श-असहिष्णु अस्थि-आवरण। सुई गड़नेकी तरह इसका विशेश लक्षण हैं और **आर्सेनिकम**की तरह इसमें प्रत्यक्ष जलन रहती है। प्रत्यंग सिकुड़े और कड़े रहते हैं। सभी स्राव बदबूदार होते हैं। खींचन और फाड़नेकी तरह दर्द। उसकी सर्दी प्रत्यंगोंमें बैठ जाती है और सन्धियाँ

यन्त्रणापूर्ण तथा पेशियाँ खिंची रहती हैं। जरा भी **हिलने-डोलनेपर और परिश्रम करनेपर** उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं। क्रमशः बढ़ती हुई क्लान्ति, बढ़ती हुई क्षीणता। यक्ष्माकी पहला अवस्थामें यह आश्चर्यजनक कार्य करती है, जब लक्षण मिलता है। बीमारीकी बढ़ती हुई प्रकृति, शरीर और मनकी दुर्बलता तथा ऐसे लक्षण जैसे बद्धमूल धातुगत रोगोंमें रहते हैं; सोरा-ग्रस्त रोगियोंमें, जिनमें उपदंश और पारद तथा तीव्र द्रव्योंका सम्मिलन होकर जटिल रूप हो गया है, तो इस अति विस्तृत औषधिका प्रयोग लाभदायक होता है। **कास्टिकम, सलफर टियुबरक्युलिनम**से इसका निकटस्थ सम्बन्ध है।

सवेरे भुलक्कड़, जड़ और निराश, जिद्दी; भय-पूर्ण और भुलक्कड़।

उठनेपर सरमें चक्कर।

सरके एक पार्श्वमें वातका दर्द, चेहरेतक फैल जाता है; गठिया सर-दर्द। मस्तिष्कमें ढीलापनकी अनुभूति, माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। ललाटमें, पश्चात् मस्तकमें और मस्तिष्कमें गहरायीपर दर्द, माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द, ऐसा अनुभव होना, मानो रक्तवाहिनियाँ तन गयी हैं। चेहरा और माथेके बायें पार्श्वमें स्नायु शूल, धमकका दर्द, दबाने और चलनेपर घट जाता है। बैठने और खड़े होनेपर बढ़ता है। यह साधारण नियमका अपवाद है; क्योंकि अधिकांश लक्षण हिलने-डोलनेपर बढ़ जाते हैं। खुली हवामें टहलनेके समय चेहरा और माथेपर पसीना।

आँखें बाहर निकल आनेकी अनुभूति; आँखोंका फूलना; पुतलियाँ फैलीं।

बायीं कानमें फाड़नेकी तरह दर्द, कानमें आवेशिक दर्द।

नाककी हड्डीमें दर्द, नाक फूली। बहुत ज्यादा सर्दीका स्राव।

चेहरेकी हड्डी, नाक तथा दाँतोंमें दर्द। चेहरा लाल और फूला, दाग दगीला। शामको चेहरेमें ताप, दाहिनी चिबुकास्थि (Malar-pone) में तेज दर्द। चेहरा, माथा तथा गर्दनमें नित्य ६ बजे शामको आवेशिक दर्द। यह ६ बजे सवेरेतक रहता है। जबड़ेके बाम पार्श्वमें धीमा दर्द। दाँतमें फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द; दोनों जबड़ोंसे एक साथ काटनेके समय दाँतोंमें दर्द, तालुमूलक प्रदाह, गर्म पेयोंसे बढ़ जाता है और उनमें बहुत जलन होती है।

बदला हुआ स्वाद; जीभपर मोटे सफेद या भूरे मलकी तही।

कण्ठमें जलन। तालुमूल-प्रदाह; यह पीब होना रोकता है।

खाद्य और दूधसे अनिच्छा। तेज प्यास।

बहुत-सा जलीय श्लेष्मा वमन करता है, उसके बाद ही सुस्ती आ जाती है। कण्ठमें श्लेष्माकी अनुभूतिसे मिचली।

पाकाशय और उदरमें जलन।

पाकाशयमें संकोचनकी अनुभूति, इसके साथ ही आशङ्का और श्वासकष्ट।

तलपेटमें बहुत वायु।

सवेरेके समयका अतिसार (सलफर), पानीकी तरह दस्त। कड़े, टुकड़े, बदबूदार मलके साथ कब्ज।

पेशाब हो जानेपर भी पेशाब लगा ही रहना; बहुत ज्यादा और बदबूदार पेशाब होता है। पेशाब होते रहनेपर मूत्र-नलीमें काटनेकी तरह दर्द होता है।

वृथा ही पेशाबका वेग होनेपर मूत्राशय-ग्रीवामें सुई गड़नेकी तरह दर्द। बिना स्वप्नके ही वीर्य-स्राव। मूत्र नलीसे स्राव।

डिम्बकोषोंका पुराना प्रदाह। ऋतु-स्राव नहीं होता। झिल्ली-मिला अति रजःस्राव। रोमाञ्चके साथ स्तनमें कम्पन।

स्वर-यन्त्रमें ऐंठन; श्वास-कष्ट, कलेजा धड़कना।

ज्वरके साथ सूखी कड़ी खाँसी, अन्तमें बलगम निकलनेपर आराम मिलता है; बहुत ज्यादा, सड़ा बलगम, पीवकी तरह, खून-मिला बलगम।

हिलने-डोलनेपर बहुत दर्दके साथ पेशीका वात, हिलने-डोलने और श्वास लेनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। फुसफुसावरक-झिल्लीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पुरानी श्वास-पथकी सर्दी, साथ ही बदबूदार बलगम जब वातवक्षमें फैल जाता है। वात तथा गठिया रोगियोंका **यक्ष्मा रोग** (Phthisis pituitosa) खुली हवामें घुड़सवारी करनेपर वक्षमें दर्द होता है।

कलेजेमें धड़कन। हृत्पिण्डका वात, तेज कमजोर नाड़ी।

पीठ और गर्दनके पिछले भागका वातज कड़ापन। **पीठ और गर्दनमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।** दोनों हँसुलियोंके बीचमें पीठमें खींचनका दर्द। सभी दर्द **हिलने-डोलनेपर बढ़ जाते हैं** तथा आराम करनेके समय घट जाते हैं; **तापसे रोग-वृद्धि!**

ऊपरी अङ्गोंमें खींचने, फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द। ऊर्द्ध्व बाहु और कन्धेमें वातज दर्द। अंगुलियोंके जोड़ोंमें और फिर समूचे हाथमें दर्द। हाथ गर्म, दाहिने अंगूठेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। सभी दर्द हिलने-डोलनेसे बढ़ते हैं और तापसे घटते हैं।

जंघाकी सामनेवाली पेशी कण्डराका छोटा पड़ जाना। जंघामें दर्द, जो घुटनेतक फैल जाता है। पैरोंमें फाड़ने और खींचनेकी तरह दर्द। **जंघास्थिमें** दर्द। घुटनेमें गठियासे फोड़े, पैरोंमें, पंजेसे घुटनेतक खोंचा मारनेकी तरह दर्द, जंघास्थि और घुट्टीकी हड्डियोंका कोमल पड़ जाना। जंघाकी सामनेवाली पेशी कण्डराके संकोचनके कारण घुटना झुका हुआ रहता है। दाहिना पैर फूला और जंघाके पास खिंचा रहता है। सभी प्रत्यङ्गोंके दर्द, गति और तापसे बढ़ जाते हैं। बाहु और पैरोंमें कमजोरी। सन्धियोंका वात, ताप और गतिसे रोग-वृद्धि। सर्दी लगनेपर अङ्गोंमें दर्द।

बेचैन नींद। अनिद्रा। इस तरह नींदसे जागता है, मानो गिर गया हो। पीठके बल सोनेपर गला दबानेके सपने। अस्फुर्तिदायक निद्रा।

शामको जाड़ा लगकर बोखार आता है। जलता हुआ बोखार। **हाथ गर्म। रात्रि-कालीन पसीना।** बहुत ज्यादा पसीना।

परीक्षक ! जिसे पसीना हुआ था, उसमें पेशाबके कोई लक्षण न पैदा हुए।

हेलिबोरस नाइजर

(Helleborus Niger)

हेलिबोरसके रोगोंमें कम या ज्यादा अचैतन्य बना ही रहता है। कभी-कभी एकदम अचैतन्य, कभी अर्द्ध-चेतनावस्था रहती है; पर इसमें सदा बुद्धि-भ्रंश और जड़ता रहती है।

मस्तिष्क, सुषुम्ना, सार्वाङ्गिक स्नायु-संस्थान और मनकी बीमारियोंमें हेलिबोरस उपयोगी होता है; पर खासकर यह मस्तिष्ककी नयी प्रादाहिक बीमारी और सुषुम्ना और उनकी झिल्लियों तथा उन्मादकी और बढ़नेवाली बीमारियोंमें लाभदायक है। इसमें विचित्र प्रकारकी शरीर और मनकी जड़ता या बुद्धि-भ्रंश है। इसकी असीम दशा है अचैतन्य। मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय या प्रदाह जो मस्तिष्कोदकमें जा पहुँचा है, मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह या मस्तिष्कका प्रदाह, साथ ही चित्त-विभ्रमसे सम्बन्ध रखनेवाला सम्पूर्ण अचैतन्य। यहाँतक कि रोगके आरम्भ कालमें हेलिबोरसमें वह उद्दण्डता और नया प्रलाप नहीं रहता जो **स्ट्रैमोनियम** और **बेलेडोनामें** प्राप्त होता है। धीमा रहता है। इसके अलावा, यह प्रलापकी उद्दण्डताके चले जानेपर ठीक बैठता है और रोगी चित्त विभ्रमकी एक दशामें जा बैठता है। रोगी पीठके बल लेटा रहता है, आँखें आंशिक रूपसे खुलीं, माथा लुढ़का करता है, मुँह खुला रहता है, जीभ सूखी रहती है, आँखें ज्योति हीन रहती हैं, खुली जगहकी ओर देखता रहता है। जिस मनुष्यसे बातें करता है, उसकी ओर देखता है। बहुत देर ठहरकर जवाब देता है या बिलकुल ही नहीं देता।

मस्तिष्क रोगका प्रचण्ड आक्रमण एकाएक रुक जाता है, पर जो धीमी गतिसे लँझड़ाया करते हैं, वहीं हेलिबोरस कार्य करता है। हेलिबोरसका रोगी हफ्तों लँझड़ाता रहेगा और कभी-कभी महीनोंतक चित्त-विभ्रमकी इस अवस्थामें पड़ा रहेगा और क्रमशः दुबला होता जायगा। प्रत्यंग ऊपरकी ओर खींचकर वह पीठके बल पड़ा रहता है; यह पीला और रोगियल दिखायी देता है। कुछ पूछनेपर बहुत धीरे-धीरे जवाब देता है। पाठ्य-ग्रन्थमें कहा है:—"बुद्धि-भ्रंश जो पागलपनकी ओर बढ़ता जाता है।" दूसरी साधारण बात है—"शरीरपर मनकी घटी हुई शक्ति। पेशियाँ कार्य नहीं करेंगी; वे इच्छानुसार कार्य न करेंगी। वह एक पाक्षाघातिक दशा है, पर "चित्त-विभ्रम" इसे प्रकट कर देता

है। अपने विचारोंको प्रकट नहीं कर सकता; ध्यानको स्थिर नहीं कर सकता; मनको एकाग्र नहीं कर सकता। रोगी अर्द्ध जड़ीभूतकी तरह मालूम होता है।

साधारणतः प्रलाप नहीं रहता और यदि रहता भी है, तो बुदबुदानेकी तरह। प्रलापकी अपेक्षा अत्यधिक बुद्धि-भ्रंश रहता है, ज्यादा "मत करो" कुछ "मत कहो" वाली दशा रहती है। इतनेपर भी चित्त-विभ्रम बना ही रहता है; वह सोच नहीं सकता। बहुतसे अवसरोंपर, रोग अधिक दिनका हो जानेपर रोगी जगाया जा सकता है, वह ऐसी क्रिया करेगा, मानो वह सोचनेकी चेष्टा कर रहा है, मानो वह जवाव देनेकी कोशिश कर रहा है, हिलने-डोलनेकी कोशिश कर रहा है। पर वह केवल अधखुली आँखोंसे चिकित्सककी ओर देखा करता है; चेहरेपर चकरा जानेका भाव रहता है और अपनी अंगुलीका सिरा नोचा करता है।

पूछनेपर हेलिबोरसका रोगी आपको यह बताने योग्य नहीं रहता, कि उसके मनमें क्या है, जबतक कि पूरा तरह जगाया या उत्तेजित नहीं किया जाता। पर जब इस तरह जगाया जाता है, तो वह आत्माओंकी बातें करता है या कहता है, कि उसने भूत देखे हैं। वह अपने खयालोंमें उन मूर्त्तियोंको देखता है, जिनके बारेमें उसने पढ़ा है या जो तस्वीर देखी है, जैसे कि सींग, पूछके साथ भूत। किसी छोटे बच्चेमें, जिसने भूत या आत्माके विषयमें नहीं सुना है, प्रलापमें उस ढंगके खाम-खयाल न पैदा होंगे। जो विचार करनेके लिये उसे सिखाया गया, उसीके अनुसार वह भ्रम-पूर्ण चीजें देखता है।

हेलिबोरसमें एक विचित्र अर्द्ध-गुल्म वायुकी दशा—एक उन्मादका रूप रहता है। वह सोचती है, कि उसने अपने पुण्यके दिन पापमें विता दिये हैं। **आरम**की तरह, उसे विश्वास रहता है, कि वह भूल कर रही है, वह एक अक्षम्य अपराध कर रही है। यह उन्मादके उतना ही निकटस्थ है, जितनी कि यह दवा।

"एक वृद्धाको उसके निकट ही रहनेवाली स्त्रियोंने चोरीका अपराध लगा दिया; इसका उसके हृदयपर इतना प्रभाव हुआ कि उसने अपनेको फाँसी लगा ली। इस आत्मघातने उस गाँवकी स्त्रियोंपर ऐसा प्रभाव पहुँचाया, एकके बाद दूसरी उस वृद्धाकी मृत्युका कारण अपनेको ही बताकर कोसने लगी।"

हेलिबोरसका सबसे विचित्र ढङ्ग बीमार बच्चेमें प्राप्त होता है। यह खासकर दो-से-दस वर्षके बच्चोंको होता है। घूर-घूरकर देखना—पीठके बल लेटे रहकर अधखुली आँखोंसे टकटकी लगाकर देखना—इस दवाका एक विशेष लक्षण है। कभी-कभी तो बिना किसी आवाजके ही ओंठ हिला करते हैं। इस तरह ओंठ हिलते हैं, मानो बच्चा कुछ कहना चाहता है, पर फिर पूछनेपर वह जो कुछ कहना चाहता था, वह शब्द भूल जाता है।

मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (Hydrocephalus) रोगमें एक तेज चीख, मस्तिष्कको चिल्लाहट निकल पड़ती है, बच्चा नींदमें चीख उठेगा। वह सरपर हाथ ले जायगा और **एपिस**की तरह चीखेगा; पर "एपिसका" मस्तिष्कोदक रोग कहीं अधिक तीव्र और कार्यशील रहता है। "एपिसका" रोगी ओढ़ना उतार फेंकता है; वह ओढ़नेकी खबर

नहीं रखता ; यह किसी चीजपर ध्यान नहीं देता। वह सहजमें ही विचलित नहीं किया जा सकता। वह अङ्गोको खिंचे हुए पीठके वल पड़ा रहता है ; अकसर हाथ-पैरोंको आप-ही-आप हिलाया करता है। कभी-कभी एक पार्श्व पक्षाघात-ग्रस्त रहता है ; पर दूसरा पार्श्व स्वयं गतिशील वना रहता है।

"उदासीन सान्निपातिक ज्वर (Apathetic typhoid)" जैसी निम्न श्रेणीकी वीमारीमें हेलिवोरस लाभदायक है। ये वे लक्षण हैं, जो दवाको वताते हैं। सही वाह्य वातोंसे उदासीन ; छूनेपर या वहुत गर्म कपड़ा ओढ़ा देनेपर या विलकुल ही ओढ़ना न रहनेपर शायद ही कभी विचलित होता है। वह ताप, शीत, नोंचना, पकड़ना या चिकोटी काटना, इनसे शायद ही कभी विचलित होता है। अमनोयोगिता। पाठ्य-ग्रन्थोंमें जिसे "दृढ़चुप्पी" कहा है। यह वहुत-कुछ उदासीनताकी चुप्पी ही है, वोलनेकी शक्तिका न रहना, ऐसा मालूम होता है, मानो उसने जवाव देनेसे इनकार कर दिया ; पर वास्तवमें उसने इनकार नहीं किया। वह जवाव किस तरह दिया जाता है, यह नहीं जानता है ; वह सोच नहीं सकता है।

उन व्यक्तियोंके वँधे विचार ; जो अपनी "समता" से दृष्ट (रुष्ट हो जानेवाले), कुछ चिढ़ जानेवाले कहे जाते हैं और यह वँधा विचार स्थायी रहेगा ; इस सम्वन्धमें उससे तर्क वितर्क करनेसे कोई लाभ नहीं है। रोगिनीकी स्थिर धारणा हो जाती है, कि वह अमुक दिवस मर जायगी—और कोई भी उपाय इसे उसके माथेसे निकाल नहीं सकता। **ऐकोनाइट**की तरह नहीं है ; क्योंकि यहाँ मृत्यु-भय नहीं है। "ऐकोनाइट" में मृत्यु-भय रहता है और मृत्युका समय निश्चित कर देता है। निश्चित विचार, कि उसने कुछ पाप किया है, जो समय-समयपर नाम लेगी और वतायगी या शायद योंही कहेगी,—पर यह उसके लिये वास्तविक है।

जब कुछ करना चाहती है, तो रोगिनी उदास मालूम होने लगती है, क्योंकि वह वैठ जाती है और कुछ नहीं वोलती है तथा सन्तापजनक भावमें हुई मालूम होती है ; पर उसमें इतना परिताप नहीं होता, जो सहनपर टहलने और हाथ मलनेके साथ हम **आरम**में प्राप्त करते हैं। यह एक दासीनताकी अवस्था है। वह शोकार्त्त और उदासीन दिखाई देती है, जव कि शायद वह वहुत थोड़ा सोचती है। सान्त्वना प्रदान करनेकी कोई चेष्टा, जवतक कि रोगीमें सोचनेका शक्ति है, उसकी तकलीफको वढ़ा देता है। **नेट्रम-म्युरियेटिकम**की तरह सान्त्वना देनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है ; पर **नेट्रम-म्युरियेटिकम**के उपसर्ग इनके समान विलकुल ही नहीं होते। यदि हेलिवोरसके रोगी अपने लक्षणोंपर विचार करनेके योग्य होते, तो वे अच्छे होते दिखाई देते।

इस दवामें कभी-कभी अकड़नकी गति भी दिखाई देती है ; पर वे ज्यादाकर स्वतः होनेवाली होती है। ऐसी गतियाँ जिनका इच्छासे कोई भी सम्वन्ध नहीं दिखाई देता ; वह केवल हिलता-डोलता, ठीक उसी तरह जैसे कोई अमनोयोगी अवस्थामें हिलाया करता है।

हेलिबोरसके रोगीमें सर्वत्र सुन्नपन रहता है। सम्पूर्ण ज्ञान-केन्द्र सुन्न हुई दशामें, बुद्धि-भ्रंशकी, सार्वाङ्गिक अनुभूति रोधकी अवस्थामें रहता है। पाठ्य ग्रन्थमें कहा है—"दर्शन-शक्ति दुर्बलीभूत नहीं रहती ;" पर वह अस्पष्ट रूपसे देखता है ; जिसपर उसकी दृष्टि जमी रहती है, वह उस पदार्थको नहीं समझता अर्थात् उसकी दृष्टिका पथ ठीक ही दिखाई देता है, इतनेपर भी उससे यदि कुछ पूछा जाता है, कि उसने क्या देखा, तो उसे उसकी याद नहीं रहती। उसने उसकी स्मृति या मनपर कोई भी प्रभाव नहीं डाला है।

मिचली और वमनके साथ सरमें चक्कर, झुकनेपर सरमें चक्कर। साधारण अचैतन्यके साथ माथा लुढ़कता और हिलता है। बच्चा पीठके बल लेटा रहता है और एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक सर हिलाता है। आँखें आंशिक रूपसे खुली रहती हैं, वह तकियेमें सर घुसेड़ता रहता है। यह कुछ तो अचेतन अवस्थामें होता है और कुछ गर्दन और पीठकी पेशियोंकी खींचनमें आराम पहुँचानेके लिये होता है। ये पेशियाँ छोटी होती जाती हैं, ज्यों-ज्यों बीमारी बढ़ती जाती है, जैसा कि मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाहमें (Cerebro-spinal meningitis) वे करती हैं, जबतक कि सर उतना पीछे नहीं खिंच जाता, जितना कि किया जा सकता है।

माथेमें जलता हुआ ताप रहता है ; धक्का देनेकी तरह दर्द ; रक्त-सञ्चयके कारण दबावकी तरह दर्द। पश्चात्-मस्तकका प्रचण्ड दर्द। पश्चात्-मस्तकमें धीमी यन्त्रणा, पश्चात् मस्तकमें सुन्नपनका भाव। काठकी तरह एक अनुभूति, पूर्णता, रक्त-सञ्चय और दबाव। सर-दर्द, सरका हिलना और चेहरेका दृश्य सभी मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयकी तरह रहते हैं। मैंने साधारणतः नये ; पर धीमी रोगकी पहली अवस्था बीतते हुए बच्चोंको देखा है, वे इस जड़की तरह अवस्थामें पड़े रहते हैं, उन्हें हफ्तों पहले हेलिबोरसकी जरूरत थी, जब उसे दियागया। जब यह दिया गया, तो उसने सुधार आरम्भ कर दिया ; तुरन्त नहीं ; बल्कि धीरे-धीरे। इन धीमें, कड़े, जड़ीभूत मस्तिष्कके तथा सुषुम्नाके रोगोंमें यह दवा धीरे-धीरे काम करती है। कभी कभी तो दवा देनेके दूसरे दिन या यहाँतक कि दूसरी राततक कोई प्रत्यक्ष परिवर्त्तन नहीं मालूम होता, इसके बाद पसीना होता है। पतले दस्त आते हैं या वमन—प्रतिक्रियाके रूपमें होता है, उनमें हस्तक्षेप न करना चाहिये, कोई दूसरी दवा न देनी चाहिये। ये प्रतिक्रियाके चिह्न हैं। यदि बच्चेमें आरोग्य होनेकी जीवनी-शक्ति रहेगी, तो तब वह आराम हो जायगा। यदि कोई दवा देकर वमन रोक दिया गया, तो वह दवा इसकी क्रिया बन्द कर देगी ; हेलिबोरसका क्रियानाशक पड़ जायगा। वमन, पतले दस्त या पसीना होने दीजिये और वह दिनभरमें आरोग्य हो जायगा। बच्चा गर्म हो जायगा और कुछ ही दिनोंमें होशमें आ जायगा और तब फिर क्या होगा ? जरा उन सुन्न हुई अंगुलियाँ, हाथ और प्रत्यंगोंपर तथा सुन्न हुए चर्मपर ध्यान दीजिये। इस जड़ीभूत बच्चेको ठिकाने आ जानेके प्रमाण स्वरूप कौन सी स्वाभाविक बात होगी ? आपके लिये इसका जानना बहुत आवश्यक है। यह होमियोपैथिक मेटिरियाकी शिक्षाका एक अंश नहीं है ; पर आपको यह जानना चाहिये, कि इस दवाके देने बाद क्या होगा। यह रोगी पार्श्व दृश्य है, जो आप हेलिबोरस और **जिङ्कम**के रोगियोंमें देखेंगे। यदि सम्भव होता है, तो **जिङ्कम**

हेलिवोरसकी अपेक्षा बुद्धि-भ्रंशकी भयंकर दशा और भी गम्भीर-रूपसे प्रकट करता है। वालककी अंगुलियाँ हिलने लगेंगी, ज्योंही वह अपनी स्वाभाविक दशामें आता है, अंगुलियोंमें झुनझुनी होने लगती है, नाक और कानोंमें झुनझुनी होने लगती है तथा बच्चा चीखने और बिछावनमें इधर-उधर लोटने और छटपटाने लगता है। पड़ोसी आकर कहेंगे—"यदि वह चिकित्सक बच्चेको सहायता पहुँचानेके लिये कुछ नहीं देता, तो उसे भगा देना चाहिये।" पर यदि आप कुछ देंगे, तो निश्चय ही चौवीस घण्टोंमें वच्चा मरा मिलेगा। वह बच्चा अच्छा हो रहा है, उसे अकेला पड़ा रहने दीजिये। आप ऐसे रोगियोंमेंसे किसीका भी प्रवन्ध न कर सकेंगे; यदि आप उसके पिताको एकान्त कमरेमें ले जाकर पहलेसे ही न समझा देंगे, कि रोगीको क्या होगा? माताको न ले जाइये; इसके वारेमें उससे एक शब्द भी न कहिये, नहीं तो वह असाधारण उत्तम माता है; क्योंकि वह उसका वच्चा है, वह सहानुभूति-पूर्ण रहती है; वह वच्चेका चिल्लाना सुनकर आप भी चिल्लायगी; उसका माथा खराव हो जायगा और वह अपने पतिसे आपको भगा देनेके लिये कहेगी; पर आप पिताको पहले ही एक तरफ ले जाकर जो होनेवाला है, वता दीजिये। उसे इस तरह समझा दीजिये, कि आप ही उसे देखने लगे और उनसे कह दीजिये, कि यदि यह होने न दिया जायगा; वीचमें ही कोई दवा दे दी गयी, तो बच्चेसे हाथ धोना पड़ेगा।

यह इतना भयंकर दर्द नहीं है; वल्कि यह खुजली, झुनझुनी और सुरसुरी है, जिससे घोर आशंकाका दृश्य उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी एक सप्ताह पहले ही वच्चेके शरीरके सभी भागोंमें आप-से आप ये लक्षण उत्पन्न हो जायँगे; पर यदि उनपर ध्यान नहीं दिया गया, तो आप-ही-आप चले जायेंगे।

यह सव आपको स्नायविक कर देंगे, मत रुकिये और वहुत दिनोंतक राह देखिये; क्योंकि यदि आप देखेंगे, तो आप दवा वदल देंगे। मैंने ऐलोपैथिक चिकित्सक द्वारा कभी भी ऐसे रोगीको आरोग्य होते नहीं देखा है।

चेहरा वहुत ही रोगियल रहता है, धँसा, क्रमशः पतला पड़ता जाता है। इसका चेहरा मैला रहता है, मानो नाकके छेद और आँखके कानोंमें कालापन बैठ गया है। आप कहेंगे, कि रोगी मर जाना चाहता है, हो सकता है,—पर यदि हेलिवोरस न पड़े। यह दवा उन रोगियोंमें ठीक वैठती है, जिनके वारेमें ऐलोपैथ कुछ भी नहीं जानते और जिनकी उनके पास दवा नहीं है। उनका भावी-फल निर्णय-तत्व (Prognosis) सदैव असफल रहता है। इसमें सन्देह नहीं, कि चेहरा मानसिक लक्षण प्रकट करता है। झुर्रीभरा ललाट, ठण्डे पसीनेसे तर वना रहता है। चेहरेका पीलापन और माथेका ताप। चेहरेकी पेशियोंका ऐंठना। ठीक इस ढंगके मस्तिष्क-रोगोंमें ललाटमें सिकुड़ने तथा भावोंका सङ्कोचन दिखाई देता है। **लाइकोपोडियम**में भी इसी ढंगकी सिकुड़न मिलती है; पर वीमारी फेफड़ेमें रहती है। इस दवामें नसा-छिद्र फैले और काले रहते हैं। वहुत अधिक फड़फड़ाहट नहीं; पर वहुत ही ज्यादा फैला। चक्षु-गोलक चमकीले और पलकें सट जानेवाली रहती है।

इन ज्वरोंमें भयङ्कर प्यास रहती है तथा अस्वाभाविक राक्षसी भूख। मिचली और वमन तो अवर्णनीय है। परीक्षाके आरम्भिक अंशमें अतिसार और रक्तामाशय प्राप्त हुआ है, जिसमें बहुत ज्यादा लसदार पाखाना होता है : इसमें केवल पीला लसदार श्लेष्मा निकलता है और इसके बाद पाक्षाघातिक कब्जियत आती है और जैसा कि बताया गया है वैसे अवसन्न, क्षीणता-प्राप्त मस्तिष्कके रोगीको जो कोई दिनोंतक बिना पाखाना हुए ही या आँतोंकी कोई क्रियाके बिना ही पड़े रहेंगे। एक या दो दिनके बाद वे अन्न-प्रयोगपर कुछ बोलेंगे ही नहीं। छोटे, कड़े, सूखे मल। इसके अलावा, जब प्रतिक्रिया जारी होती है, तो यह बहुतकर अतिसार या पसीना या वमनके रूपमें ; शायद इन तीनों ही अवस्थाओंके साथ आयगी।

पेशाब रुका या दबा रहता है, कभी-कभी यह चू पड़ता है, अनजानमें ही निकल जाता है। कमजोर धारमें पेशाब ; खून-मिला पेशाब।

रोगी पीठके बल पड़ा रहता है, उसके अङ्ग ऊपर खिंचे रहते हैं। बिछावनपरसे नीचे सरक जाता है। बहुत कमजोरी ; बहुत शिथिलता ; पेशियाँ काम करना छोड़ देती है। शोषण-यन्त्रोंकी अकड़न। अचैतन्यके साथ मृगी। कम्पनशील अकड़न, लगातार नींदमें घूमना (Somnambulism) ; पूर्ण चेतनामें नहीं लाया जा सकता। गहरी-निद्रा।

हीपर सल्फर

(Hepar Sulphur)

हीपरका रोगी **सर्दीला** रहता है, उसे सर्दी सहन नहीं होती और ठण्डी हवामें रहनेपर गैरमामूली कपड़ोंसे अपनेको लाद लेना चाहता है। वह सोनेका कमरा बहुत गर्म चाहता है तथा कमरेकी बहुत अधिक गर्मी सहन कर सकता है, एक स्वस्थ पुरुष जितनी गर्मीकी साधारणतः इच्छा करता है, उससे कहीं ज्यादा गर्म। उसे सर्दी बर्दाश्त नहीं होती और उसके सारे उपसर्ग सर्दीसे बदतर हो जाते हैं। यदि वह नींदमें ठण्डा हो जाता है, तो उसको बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं या यदि वह सर्दीमें सूखी झोंककी हवामें घरसे बाहर निकल पड़ता है, तो बीमार हो जाता है ; प्रादाहिक और वातज रोग हो जाते हैं। बिछावनमें यदि रातके समय हाथ-पैर खुले रह जाते हैं, तो उपसर्ग आ जाते हैं, बिस्तरमें रहनेपर भी वह गर्दनतक ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है।

इसका रोगी मानो पारिपार्श्विक और दर्दोंसे भी **अत्यधिक असहिष्णु** रहता है। साधारण मनुष्यके लिये जो सामान्य यन्त्रणा या अरुचिकर अनुभूति रहती है, हीपरके लिये वह तीव्र कष्ट हो जाता है : पर हीपरका दर्द बहुत तीव्र, बहुत ही तेज हो सकता है। प्रादाहित स्थान, उद्भेद, फोड़े या पीब हो जाना—ये सभी तेज दर्दसे भरे रहते हैं। यह इतना तीव्र होता है कि, कभी-कभी जोरसे सीखें गड़ने और **तेजदार सींखें गोदने**की तरह **इसका वर्णन हुआ है।** अकसर जखमोंका दर्द सीखें गड़नेकी तरह मालूम होता है ; बहुत

ही तीव्र तथा तेज दर्द मानो जखमोंमें सीखें गोदी जा रही हैं, कण्ठमें घावके रोगी इस अनुभूतिका अकसर वर्णन करते हैं, उन्हें ऐसा अनुभव होता है, मानो उन्होंने मछलीका एक कांटा या सीख निगल ली है। यह उसकी सार्वाङ्गिक प्रकृतिके सदृश है; क्योंकि यह भाव सर्वत्र ही प्राप्त होता है, प्रदाहमें, जखममें फुन्सियोंमें, फोड़ोंमें और उद्भेदोंमें, सबमें सीखें गड़ती मालूम होती हैं या कुछ गोदा जा रहा है। उद्भेद **स्पर्श-असहिष्णु** रहते हैं। अन्य स्थानोंमें प्राप्त स्नायुओंका अनुभवाधिक्य इससे मिलता है। हीपरका रोगी **दर्दसे बेहोश** हो जाता है, या, यहाँतक कि थोड़े दर्दसे भी।

यह दवा उन रोगियोंके लिये है, जो कोमल प्रकृतिके हैं तथा भावोंका जिन्हें अत्यधिक अनुभव होता है। **मन** भी इस अनुभवाधिक्यमें सहयोग दे देता है, असीम उपदाहकी दशा प्रदर्शन करने लगता है। छोटी-से छोटी बात, जिससे रोगी विचलित हो जाता है, उसे क्रुद्ध कर देती है, गालियाँ देने लगता है और आवेग पूर्ण हो जाता है। यह आवेग उसपर इतना अधिकार जमा लेगा, कि अपने अन्तरङ्ग-से-अन्तरङ्ग मित्रको भी क्षणभरमें मार डालनेके लिये इच्छुक बना देगा। हीपरके रोगीमें बिना कारणके ही आवेश पैदा हो जाता है। किसी मनुष्यमें एकाएक अपने मित्रको छूरा मार देनेकी प्रवृत्ति पैदा हो जायगी। किसी हजामको हजामत बनाते हुए, बनवानेवालेका गला काट देनेकी इच्छा हो जायगी। मातामें अपने बच्चेको आगमें फेंक देनेका आवेग पैदा हो सकता है या स्वयं अपने ही शरीरमें आग लगा लेनेका भाव आ सकता है। हिंसा और नाश करनेका आवेग। ये लक्षण बढ़कर उन्मादमें जा पहुँचते हैं और इसके बाद इन आवेगोंके अनुसार क्रिया होती है। चीजोंमें आग लगा देनेका एक उन्माद हो जाता है।

रोगी **झगड़ालू रहता है, उसका साथ निबाहना मुश्किल होता है; कोई भी चीज उसे प्रसन्न नहीं करती; हरेक मनुष्य विरक्ति पैदा करता है; व्यक्तियोंका स्पर्श-द्वेष, मनुष्योंका और स्थानोंका।** वह बराबर मनुष्य और चीजें, पारिपार्श्विक बदलता रहना चाहता है और प्रत्येक पारिपार्श्विक या व्यक्ति या चीज फिर उसे अप्रसन्न और चिड़चिड़ा बनाने लगती हैं। अपने मिजाजके इस चिड़चिड़ापनके साथ तथा शारीरिक उपदाहके साथ, अङ्गोंमें पीव होनेकी प्रवणता रहती है। स्थानिक प्रदाह पकने लगते हैं, खासकर गांठें और कौषिक-तन्तुमें पीव और जखम होने लगता है। गला, बगल, वंक्षण तथा स्तन-ग्रन्थि फूल उठती हैं, कड़ी हो जाती हैं और उनमें पीव होने लगता है। पहले तो कड़ी सूजन और उनमें सीखें गोदनेका भाव रहता है, इसके बाद वह बहुत ज्यादा प्रादाहित हो जाती है और वह स्थान ऊपरसे लाल हो जाता है और अन्तमें उसमें पीव हो जाता है, पीवका स्राव होता है और धीरे-धीरे भरता है। यहाँतक कि हड्डियोंमें भी पीव होता है, तथा अस्थि-क्षत (Necrosis) या अस्थि क्षय (Caries) रोग हो जाता है। नाखूनकी जड़ तथा अंगुलियोंके सिरोंपर अंगुलबेढ़ा। नाखूनोंमें पीव होता है, वे ढीले पड़ जाते हैं और निकल जाते हैं। नाखूनोंके भीतर एक ढेलाकी तरह अनुभव होना, जब वे नहीं भी पकते हैं। नाखून कड़े हो जाते हैं और टूटने लगते हैं। मसे फट जाते हैं और उनसे खून बहता है, डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है, जलन होती है और उनमें पीव हो जाता है।

जैसा ऊपर बताया गया है, वैसी धातु-प्रकृतिवालोंके अंगुलबेढ़ेमें खासकर हीपर फायदेमन्द होता है; पर कभी-कभी आपको इसके सिवा और कुछ भी न मिलेगा, कि रोगी दुर्बल, सर्दीला रोगी है, जिसे हमेशा सर्दी लगा करती है और अंगुलबेढ़ा हो जाया करता है। इससे अधिक समाचार न मिलनेपर भी मुझे अकसर हीपर देना पड़ा है और मालूम हुआ है, कि इसने अंगुलबेढ़ा होनेकी प्रवृत्ति रोक दी है। यह **साइलिसियासे** भी प्रतियोगिता करता है।

रोगी अकसर दुबला रहता है और उसमें ग्रन्थियोंकी वृद्धिकी प्रवृत्ति रहती है। लसिका-ग्रन्थियाँ अकसर कड़ी और बढ़ी रहती हैं। बिना पीब हुए ही वे पुराने ढङ्गसे बढ़ी रहती हैं और किसी बार भी सर्दी लगनेपर किसी खास शोथमें पीब हो सकता है।

श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी सार्वाङ्गिक दशा रहती है। ऐसी कोई भी श्लैष्मिक झिल्ली बाकी नहीं रहती; पर खासकर नाक, कान, कण्ठ, स्वर-यन्त्र और वक्षकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह प्राप्त होता है। हीपरके रोगीको नाककी सर्दी हुआ करती है। कितने ही अवसरोंपर सर्दी नाकमें बैठती है और तब नाकसे बहुत ज्यादा स्राव होता है और प्रत्येक बार जब वह सर्द हवामें जायगा, उसे छींकें आने लगेंगी; ठण्डी हवासे छींकें आती हैं और नाक बहने लगती है। पहले तो पानीकी तरह सर्दी बहती है अन्तमें गाढ़ा, पीला, बदबूदार स्राव होता है। इन बदबूदार स्रावोंसे सड़े पानीकी तरह बू आती है और यही इस दवाका विशेष लक्षण है। शरीरके सभी अंशोंके स्रावसे पुरानी पनीरकी तरह बू आती है। जखमोंका मवाद भी बदबूदार होता है और बिगड़ी हुई पनीरकी गन्ध आती है। इसमें ऐसे भी स्राव होते हैं, जिनसे खट्टी गन्ध आती है और यह भी एक सार्वाङ्गिक लक्षण है; क्योंकि जो चीजें खट्टी रहती हैं, यह उन सबको सुधार देता है। बहुत नहलानेपर भी बच्चोंके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है अथवा उस परिवारके मनुष्योंमें यह देखनेमें आयगा, कि परिवारके किसी मनुष्यसे खट्टी गन्ध निकलती, उसे खट्टा पसीना भी आता है। जखमका मवाद खट्टा रहता है तथा ऐसा ही श्लैष्मिक-झिल्लियोंका स्राव भी होता है। नाकसे होने-वाला स्राव बहुत ज्यादा होता है और गड़होंके रूपमें जखम पैदा कर देता है। कण्ठकी भी सर्दीकी अवस्था रहती है। सम्पूर्ण गलकोष श्लैष्मिक-झिल्लोंके प्रदाहकी अवस्थामें रहता है, साथ ही बहुत ज्यादा स्राव होता है। कण्ठ अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णु रहता है; ऐसा दर्द होता है, **मानो खीले गड़ रही हैं**; निगलनेपर दर्द। स्वर-यन्त्रमें भी बोलनेपर दर्द होता है; खाद्यका ग्रास जिस समय नीचे उतरता है और स्वर-यन्त्रके पीछे जाता है, उस समय हाथसे छूनेपर दर्द। आवाज बन्द रहती है और अवस्था-प्राप्तोंमें एक सूखी, रूखी, कुत्ता भूँकने जैसी आवाज, खासकर सवेरे और शामको निकलती है। प्रत्येक बार जब वह सूखी, ठण्डी झोंककी हवामें निकलता है, उसे स्वर-भंग हो जाता है, आवाज रुक जाती है और खाँसी आने लगती है, यह एक सूखी, स्वर भंग करनेवाली; भूँकनेकी तरह खाँसी रहती है। श्वासके साथ ठण्डी हवा खींचना खाँसी बढ़ा देगा तथा बिछावनसे बाहर हाथ निकालनेसे ही स्वर-यन्त्रका दर्द और खाँसी बढ़ा देगा। **बिछावनके बाहर हाथ या पैर रहनेसे** ही हीपरकी सब बीमारियोंकी साधारण रोग-वृद्धि हो जाती है। नींदमें बिछावनके बाहर आकस्मिक-रूपसे हाथ निकल जानेपर खाँसी आने लगेगी और छींकें आयँगी। स्वर-

यन्त्रकी भी सर्दीकी अवस्था रहती है तथा अत्यन्त असहिष्णु बच्चेमें, यही सर्दीकी दशा क्रूप (Croup) हो जाती है, सहिष्णु बच्चे जिन्हें दिनमें सर्दिली शुष्क हवामें या ठण्डी हवामें ठण्ड लग जाती है, दूसरे दिन सवेरे काली खाँसी क्रूपके आवेग-पूर्ण दौरेसे बीमार हो जाता है। हीपरकी काली खाँसी (क्रूप) सवेरे, शामको बदतर हो जाती है; शामसे आधी राततक। कभी-कभी जिन रोगियोंको पहले **ऐकोनाइट**की जरूरत रहती है, वे पलटकर हीपरमें चले जाते हैं। **ऐकोनाइट**की काली खाँसी (क्रूप) बड़े प्रचण्ड वेगसे आती है और शामसे आधी रातके पहलेतक बदतर रहती है। बच्चा अपनी पहली नींदसे स्वर-भंग और कुक्कुर खाँसीके साथ जागता है। इसमें एक ही खुराक **ऐकोनाइट** काफी हो सकता है या यह केवल उपशामक ही हो सकता है। बच्चा सो जाता है और सवेरे या कम-से-कम आधी रातके बाद, इसका दूसरा दौरा होता है, जिससे मालूम होता है, कि **ऐकोनाइट** काफी नहीं हुआ। ऐसे रोगी हीपरसे वशमें लाये जा सकते हैं। जब क्रूपका दौरा आधी रातके बाद होता है तथा बच्चा डरा हुआ, श्वास-रुद्ध अवस्थामें जागकर सूखी, रूखी और घण्टीकी तरह आवाजवाली खाँसीके साथ बैठ जाता है, जो आवाज सूखी कुक्कुर खाँसीकी तरह होती है, तो **स्पञ्जिया** ही करीब-करीब उसकी दवा होगी और फिर अगर **स्पञ्जिया** केवल उसे उपशम कर देता है और यह पूरी तरह गहराईतक क्रिया नहीं करती तथा सवेरेके वक्त रोग-वृद्धि होती है, जिससे मालूम होता है, कि बीमारी लौट रही है, हीपर उसके बाद अच्छा काम करेगा। **ऐकोनाइट**, हीपर और **स्पञ्जियामें** आपसमें निकटस्थ सम्बन्ध है और ये वास्तवमें बहुत बड़ी क्रूपकी दशाएँ हैं।

सूखी आवेशिक खाँसी, शामसे आधी राततक और कभी-कभी रातभर रहती है, इसके साथ ही श्वास-रोध, मुँह बन्द होना और क्रूप खाँसी, दिनके समय कुछ ढीला बलगम; स्वरयन्त्रमें खाल उधड़ना और स्वरोंचकी तरह; ठण्डी हवामें या बिछावनमें हाथ-पैर खुले रहनेपर बदतर।

श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशा कभी-कभी उतरकर टेंटुआमें आ जाती है और बहुत खाँसनेके कारण टेंटुआ बहुत ही यन्त्रणा-पूर्ण हो जाता है। रोगी कितने ही दिन और सप्ताह खाँसता रहता है और सवेरे और शामको रोग बढ़ जाता है। घरघराहट, वक्षमें यन्त्रणाके साथ भूँकनेकी तरह आवाज, अत्यधिक असहिष्णु और सर्दीले रोगियोंमें। खाँसीके साथ श्वास-रोध, ओकाई, यहाँतक कि वमन भी हो जाता है। ठण्डी हवामें यह बदतर रहती है तथा बिछावनसे बाहर हाथ निकालनेपर। वह खाँसता और पसीना होता है। बिना आराम पहुँचे, रातभर बहुत ज्यादा पसीना होता रहता है। हीपरकी बहुत-सी बीमारियोंमें, बिना आराम पहुँचे ही रातभर पसीना हुआ करता है; उसे सहजमें ही पसीना होने लगता है, इस तरह खाँसीके साथ और थोड़ा भी परिश्रम करनेपर; वह सहजमें ही पसीनेसे तर हो जाता है।

इसमें कानकी झिल्लीके प्रदाहकी भी दशा है। एकाएक मध्य-कर्णमें प्रदाह हो जाता है, फोड़ा हो जाता है। कानका पटल फट जाता है और खून-मिला स्राव होता है तथा प्रादाहित कानमें सीखें गड़ने, फाड़नेकी तरह दर्द होता है। पहले एकाएक कान बन्द हो जानेकी तरह अनुभव होता है, फिर कानमें फूटनेकी तरह और दबाव मालूम होता है और

इसके बाद कर्ण-पटल फट जाता है। इसमें प्रादाहिक दशा भी रहती है, जिससे बदबूदार स्राव होता है या खून-मिला पीला, पीव भरा स्राव, गाढ़ा होता है, उसमें पनीरके टुकड़ेकी तरह मिले रहते हैं और पुराने पनीरकी तरह गन्ध आती है।

कभी-कभी यह चक्षु-चिकित्सकोंके लिये बहुत हानिकर होता है। जब यह निर्देशित रहता है, तो अति शीघ्र आँखकी बीमारीको आरोग्य कर देता है, इससे रोगी ज्यादा दिनतक चक्षु चिकित्सकके हाथमें नहीं रहते तथा चक्षु-विशेषज्ञोंके हाथों धावन उलवानेकी जरूरत नहीं रह जाती। आँखोंसे भी वही गाढ़ा, बदबूदार, पीवका स्राव होता है। छोटे छोटे जखमोंके साथ आँखोंका प्रदाह। कनीनिकाका जखम, दाने पड़ना, खून-मिला, बदबूदार, आँखोंसे मवाद आना। आँखें लाल दिखाई पड़ती है, पलकें फूलीं, किनारे बाहर निकले और पलकोंके किनारेपर जखम हो जाता है। सब तरहके कण्ठमाला सम्बन्धी रोगोंमें, आँखकी दशामें धातु प्रकृति वर्त्तमान रहनेपर आरोग्य हो सकती है। रोगीकी धातु-प्रकृतिकी दशा ही दवाकी परिचालक होती है। बहुत बार आँखके लक्षण अद्‌भुत अवर्णनीय रहते हैं। सर्दीका स्रावके साथ आपको केवल प्रदाहित आँखें दिखायी देंगी और इसके लिये आपको अनेक सोरानाशक दवाएँ मिलेंगे; पर जब आप रोगीकी दशाका अध्ययन करेंगे और ये सार्वाङ्गिक लक्षण प्राप्त होंगे, तब यह दवा आरोग्य कर देगी। **सार्वाङ्गिक लक्षण ही उस दवाके परिचालक होंगे, जो आँखोंको आरोग्य करेगी।** आप देखेंगे कि आँखका विशेषज्ञ अकसर तबतक सीमित रहता है, जबतक वह यह नहीं जानता, कि रोगीके सार्वाङ्गिक लक्षण किस तरह संग्रह किये जाते हैं तथा लक्षण-समूहोंके अनुसार दवाका चुनाव करता है।

श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी अन्य अवस्थाएँ भी हैं, पेशाबके साथ मिला स्राव और बहुत अधिक श्लेष्मा पीव-मिली तलीके साथ मूत्राशयकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। मूत्राशयका जखम, मूत्राशयकी दीवारें कड़ी शड़ जाती हैं, जिससे कि उसमें भीतरी सामग्री निकाल फेंकनेकी शक्ति नहीं रह जाती तथा पेशाब धीमी धारमें या बून्द-बून्द होता है या पुरुषोंको सीधी रेखामें धार गिरती है। जोरके साथ पेशाब निकाल देनेकी शक्तिका न रहना, यह एक अर्द्ध-पक्षाघात है। मूत्राशयमें जलन होती है और बार बार यहाँतक कि लगातार पेशाब लगा करता है। इसमें मूत्र-यन्त्रकी भी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा रहती है, जो सूजाकके सदृश होती है और बहुत दिनोंका पुराने सूजाकका लसदार स्राव जिसको होता है, उन सर्दीले रोगियोंके लिये यह बहुत लाभदायक हुई है। गाढ़ा सफेद पनीरके ढङ्गका मवाद। सम्पूर्ण मूत्र-पथमें जखम और छोटे-छोटे प्रादाहिक धब्बे, सम्पूर्ण मूत्र-पथमें यहाँ-वहाँ सट जानेकी अनुभूति होती है और पेशाब करनेके समय मूत्र-पथमें खीलकी तरह मालूम होता है। बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव और उसमें वही बदबू, पनीरकी तरह गन्ध। इतना ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव होता है कि रोगिनीको एक रूमाल लगाये रहना पड़ता है और मुझे हीपरसे आरोग्य होनेवाली स्त्रियोंने कहा है, कि रूमालोंमें इतनी बदबू हो जाती है, कि उन्हें तुरन्त निकालकर धो देना पड़ता है, नहीं तो कमरेभरमें बदबू छा जाती है। यह भयंकर

बदबू, जो इतनी वेधक होती है, अक्सर **कैलि-फास**से आरोग्य हो जाती है। इसमें वास्तवमें बहुत ही बेधक गन्ध रहती है, इतनी कि जब किसी स्त्रीको इस ढङ्गका श्वेत-प्रदर हो जाता है, तो उसके कमरेमें घुसते ही गन्ध पहचान ली जा सकती है।

पारा-सेवनके बाद हीपरका बड़ा ही बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य-क्षेत्र होता है। आजकल बहुतसे वृद्ध पुरुष सड़कोंमें घूमते दिखाई देते हैं, जो **कैमोमेल** (रस-कपूर) के शिकार हो चुके हैं, जिन्हें लार चूती थी, बार-बार होनेवाले पित्तके दौरोंके लिये, जिन्होंने नीली गोली खायी है, "यकृतकी दबानेके लिये" यहाँतक कि अन्तमें सर्दीलेपनकी उस अवस्थामें जा पहुँचते हैं, जो मानो हड्डियोंमें हो रही हैं। उन्हें माथेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है, उनकी हड्डियोंमें दर्द होता है और प्रत्येक मौसमका सर्दीमें बदलना और प्रत्येक सर्दी तर हवा उनको आक्रान्त करती है। वे बैरोमेटरकी तरह होते हैं, इस दशाकी हीपर ही दवा है। उन्हें सरलतापूर्वक हड्डीकी बीमारी हो जाती है और वे सिहरते रहते हैं। यद्यपि गर्मीसे उनकी रोग-वृद्धि होती है ; पर साधारण नियमानुसार वे सर्दीले मनुष्य रहते हैं और सहजमें ही इन्हें सर्दीका अनुभव होता है। **पारदकी** एकदम नयी बीमारीमें बिछावनकी गर्मीसे बीमारी बढ़ जाया करती है ; पर कई बरस पहलेसे इसका जहर फैलनेवाले पुराने रोगी करीब-करीब रक्त-हीन हो जाते हैं तथा वे सर्दीले हो जाया करते हैं, उन्हें अपनेको गरम रखनेके लिये भरपूर वस्त्र नहीं मिलते। वे कमजोर और कँपकँपी-भरे रहते हैं और उनकी सन्धियोंमें वातज रोग हो जाते हैं ; तब बात यह है, कि हीपरके लक्षण यदि मिलते हैं, तो पारद-सेवनके विषका यह पूरा प्रतिविष हो जाता है। शक्तिकृत **मर्करी**का हीपर अनुपूरक और प्रतिविष भी है। जब **मर्क्युरियस**का प्रयोग होता है और जो कुछ इसे आरोग्यदायक औषधिके रूपमें करना चाहिये, इसने किया, जब इसकी क्रिया गैरमुनासिब तरीकेकी हुई तथा रोगीमें कुछ मिल गया है, तब तो इसके स्वाभाविक अनुपूरककी जरूरत पड़ जाती है या दूसरी श्रेणी तैयार करनेके लिये प्रतिविषकी जरूरत रहती है, तो ऐसी अवस्थामें, इसकी बादके दवाके रूपमें हीपरपर ही ध्यान देना चाहिये ; क्योंकि **मर्करी**का स्वाभाविक अनुगामी यही है। यह अच्छी तरह प्रकट है, कि **मर्क्युरियस**के बाद **सिलिका** अच्छी तरह क्रिया नहीं करता। "सिलिका" उस समय लाभदायक नहीं होता, जब **मर्क्युरियस** काम कर रहा हो या कर चुका हो। यही वह समय है, जब हीपर मध्यवर्ती दवा हो जाता है। **सिलिका**की क्रिया हीपरके बाद उत्तम होती है और हीपर **मर्क्युरियस**के बाद उत्तम कार्य करता है और इस तरह इस श्रेणीमें हीपर मध्यवर्त्ती औषध हो जाता है।

पुराने उपदंशके रोगीयोंमें जब हीपरके लक्षण मिलते हैं, तब हीपर एक पूर्ण और सम्पूर्ण आरोग्यदायक औषध हो जाता है। इसमें उपदंश-पूर्ण लक्षणसमूह प्राप्त होते हैं। अब सिर्फ यह जरूरत रह जाती है, कि विशेष रोगी लक्षण इससे मिलें, जब वह उपदंश-ग्रस्त हो। इस तरह उपदंशके पुराने रोगियोंमें, जिन्हें पारद सेवन कराया गया है, जिनमें रोगके इस तरह दब जानेके लक्षण मिलते हों कि बीमारी अब भी छिपी पड़ी है और किसी भी समय उभड़ सकती है, तो हीपरका उपदंश और **मर्करी**पर निश्चित प्रभाव होगा। यह

विषयको प्रकट कर देगा और इस तरहकी उन्नति करेगा, कि स्पष्ट नुस्खा लिखनेमें सहारा प्राप्त होगा। इस तरह उपदंश और **मर्करी**के सम्बन्धमें हीपर, **स्टैफिसैग्रिया, ऐसाफिटिडा नाइट्रिक एसिड** और **साइलिसिया** प्रभृतिसे निकटस्थ सम्बन्ध रखता है; खासकर उन रोगियोंको तो हीपर ही दवा है, जहाँ अधिक मात्रामें पारद सेवन किया गया है, यहाँतक कि अब यह रोगके लक्षणोंको दबानेमें समर्थ न रह सका है। पुराने रोगियोंमें जब उपदंश-विष नाककी हड्डीको आक्रान्त करता है और वे भीतर दब जाती है या वहुत वड़ा जखम हो जाता है। ऐसे रोगी आपकी गलियोंमें घूमते दिखाई देते हैं, नाकके ऊपर एक वड़े गड़हेके साथ या नासा-गह्वरमें ले जानेवाले, मुँहके पास। जब नासास्थि-प्रदेशमें तेज दर्द होता है, तो नाकका पुल इतना असहिष्णु हो जाता है, कि इसे छुआ नहीं जा सकता और नाककी जड़में ऐसा अनुभव होता है, मानो एक खील गड़ रही है। नाकके बदबूदार स्रावके लिये तथा पुराने रोगियोंके बदबूदार नकसीरके लिये, जिन्हें पारद खिलाया गया है, जिनकी हरेक हड्डीमें सर्दीज्ञापन है, उनके लिये हीपरपर ध्यान दीजिये। इसने ऐसे वहुतसे रोगी आरोग्य कर दिये हैं, इसने जखम भर दिया है, इसने श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा आरोग्य कर दी है तथा इसने आक्रान्त हड्डीके अंशोंको जल्दीसे पीव पैदा कर आरोग्य करना आरम्भ कर दिया है तथा रोगीको सुधरी दशामें वहुत जल्द ले आया है।

कण्ठमें जा पहुँचनेवाले उपदंश रोगोंपर जब हम विचार करते हैं, तो कोमल तालुका जखम प्राप्त होता है, जो उपजिह्वा (शुण्डिका—Uvula) को खा जाता है। छोटे-छोटे जखम, जो अन्तमें एकत्र हो जाते हैं तथा कोमल तालुका नाश कर देते हैं और इसके वाद मुँहकी छतके अस्थिमय अंशको नष्ट करने लगते हैं। मुँहसे आनेवाली गन्ध, जब कण्ठ दिखानेके लिये मुँह खोला जाता है, तो भयानक दुर्गन्ध रहती है; बहुतकर यह सड़े पनीरकी तरह आती है। पुराने उपदंश रोगियोंके इस तरहके जखममें, जो दवाएँ उपयोगी और खासकर लाभदायक होती हैं, वे **कैलि बाइक्रोमिकम; लैकेसिस, मर्क्युरियस-कोर, मर्क्युरियस** और हीपर हैं; पर उपदंशके उन रोगियोंके लिये, जिन्होंने पारा खाया है, हीपर और **नाइट्रिक एसिड**पर ध्यान देना चाहिये। **नाइट्रिक एसिड**का हीपरसे वहुत ही निकटस्थ सम्बन्ध है। इसका रोगी भी वैसा ही सर्दीला होता है; इसमें भी प्रादाहित अंश तथा कण्ठमें वही सुई गड़नेकी तरह अनुभूति है। इसमें भी कण्ठमें तालुमूलपर तथा-स्वर-यन्त्रमें छोटे-छोटे जखम होते हैं। **नाइट्रिक एसिड** हीपरसे प्रतियोगिता करता है। आपको इन दोनोंपर एक साथ खयाल जायगा। दोनोंमें ही कण्ठमें मछलीकी हड्डी या सींखें गड़नेकी अनुभूति हैं।

उपदंश-जनित रोग तथा पुराने पारद-जनित रोगोंमें स्वर-यन्त्रकी उपास्थियाँ आक्रान्त हो जाती हैं। जब कि बीमारी उपदंश-सम्भूत नहीं होती; बल्कि प्रमेह-विष-सम्भूत (Sycotic origin), तो स्वर-यन्त्रमें वड़े या छोटे सफेद लसदार अर्बुदसे होते हैं, उनमें यन्त्रणा होती है, आवाज बिगड़ जाती है या फटी आवाज हो जाती है। जब उनसे श्वास-रोध या बेचैनी पैदा हो जाये, तो हीपर उसकी दवाओंमेंसे एक है। ऐसी दशाओंसे सम्बन्ध

रखनेवाली दवाएँ, हीपर, **कैल्केरिया**, **आर्जेण्टम-नाइट्रिकम** और **नाइट्रिक एसिड** और कभी-कभी **थूजा** भी होती है ।

इसके अलावा आरम्भिक उपदंश जनित प्रदर्शनोंमें, उपदंश-क्षत (Cancer) में भी सीखें गड़नेका भाव मालूम होता है, इसके बाद बाघी पैदा हो जाती है, जो न पकनेवाली (Non-suppurative) तथा पक जानेवाला (Suppurating gland) हो सकती है, साथ ही लिंगपर उपदंश-क्षत या हानि-रहित जखम हो जा सकता है। जब ये धातुगत दशाएँ मौजूद रहती हैं, तो ये लक्षण अकसर हीपरको निर्देश करते हैं। हीपरमें प्रमेह-विष-दूषित (Sycotic) मसे भी रहते हैं। यह पुराने सूजाकके रोगियोंके लिये भी उपयोगी है और जब मूत्र-पथमें खील गड़नेकी तरह अनुभूति होती है। प्रादाहिक प्रकृतिकी संवृत्तियाँ (संकरा पड़ जाना—Stricture) और संकोचनमें, प्रदाह कालमें जखम हो जानेकी सम्भावना रहती है और इसके साथ ही यही खीलें गड़नेकी अनुभूति भी वर्त्तमान रहती है। इस तरहके प्रदाहमें **आर्जेण्टम-नाइट्रिकम**, **नाइट्रिक एसिड** और हीपर सदृश हैं और सम्पूर्ण तथा चिरस्थायी तन्तुमय संवृत्ति (Fibrinous stricture) होनेके पहले ही प्रादाहित संवृत्तिको आरोग्य कर देंगे। चिरस्थायी हो जानेके बाद, बहुत वर्षोंका पुराना हो जानेपर, आप शायद ही कभी मुश्किलसे अपनी किसी दवासे संवृत्तिको आरोग्य कर सकेंगे, पर जबतक प्रदाह बना रहता है, तबतक आरोग्यकी आशा रहती है। मुझे याद है कि एक बहुत ही पुराना रोगी **सीपियासे** आरोग्य किया गया था। मैं पहले नहीं जानता था, कि इसे संवृत्तिकी बीमारी है ; पर रोगीके लक्षणोंपर मैंने "सीपिया" का प्रयोग किया और रोगी मूत्र-नलीमें तेज दर्दकी शिकायत करता हुआ मेरे पास आया और इसके बाद उसने स्वीकार किया, कि उसे सूजाक हुआ था तथा बरसोंसे उसे संवृत्तिकी तकलीफ बनी हुई है। यह प्रदाह नया बना दिया गया था और अपना समय पूराकर, इसने मूत्र-पथको साफ त्याग दिया और इसके बाद फिर कभी उसे संवृत्तिकी तकलीफ न हुई। यह एक गैरमामूली नतीजा था। मैंने बहुत बार बड़ी चेष्टासे यही परिणाम मालूम करनेके लिये दवा दी है तथा दूसरे उपसर्ग आरोग्य कर दिये हैं ; पर यह संवृत्ति रोग (Stricture) ज्यों-का-त्यों ही बना रहा। यह भी याद रखिये, कि हीपरमें अञ्जीरकी तरह मसे भी होते हैं, पुराना प्रमेह-विष-दूषित स्राव (Sycotic discharges) भी होता है या पुराना सूजाक, बदबूदार, पनीरकी तरह मवाद आता है, मूत्रनलीमें सीखें गड़नेकी अनुभूति होती हैं, प्रादाहित संवृत्ति रहती हैं, जिससे पेशाब करनेमें कष्ट होता है, यह यहाँतक कि मूत्राशयमें दुर्बलता रहती है और पेशाब खड़ी सीधी धारमें होता है।

बाहरी पदार्थोंके चारों तरफ पीव पैदा कर देनेमें हीपर बहुत ही उत्तम कार्य करता है। उदाहरणार्थ मान लीजिये, कि चर्मके भीतर या अनजान जगहपर कोई बाहरी चीज प्रवेश कर गई हो। शायद सीख गड़ गई हो और निकलनेपर भी उसकी नोक रह गई हो या नाखूनके नीचे कोई सीख पीव पैदा कर रही है। यह इतनी छोटी है, कि मुश्किलसे दिखाई दे सकती है और यह मान लिया जाता है, कि सीख बिलकुल ही निकल गई है ; पर एक प्रादाहिक अवस्था उत्पन्न हो जाती है। यदि **रोगीकी सार्वाङ्गिक दशाके अनुसार**

हीपर निर्देशित होता है, तो यह जल्दीसे पीव पैदा कर देता है तथा अंगुलियोंको आरोग्य कर देता है ; क्योंकि इसमें ऐसी सभी बातें हैं। **सिलिका** एक दूसरी दवा है, जो प्रदाह तथा पीवोत्पत्ति पैदा करती है तथा उन सूक्ष्म बाहरी चीजोंको भी निकाल देती है, जो रह नहीं सकतीं। इसमें सन्देह नहीं कि यह समझ लिया है, कि यदि चिकित्सक काँटा कहाँ गड़ा है, यह जानता है, तो वह उसे निकालनेका उचित उपाय करेगा तथा दवाकी क्रिया होनेकी राह न देखेगा, पर कभी-कभी किसी सिलाई करनेवालीकी अंगुलीकी हड्डीके पास सुई गड़कर नोक रह जाती है या सुईका एक छोटा टुकड़ा रह जाता है, जो बिना भरपूर इसे निकाला नहीं जा सकता, पर इससे रोगिनी इनकार करती है। हीपर या **सिलिका** इसे निकाल देंगे। एक छोटा सा फोड़ा बन जायगा तथा वह छोटी-सी चीज निकल जायगी। यह जाननेपर, कि कोई बाहरी चीज जहाँ रहती है, वहाँ ये दोनों दवाएँ पीव पैदा कर देती हैं और उसे निकाल देती हैं, तो यह भी ध्यानमें रखना आवश्यक है, कि अगर कोई गोली फेफड़ेमें घुस जाये, यदि लक्षण हीपर या **सिलिका**के आ जायँ, तो क्या पीव पैदा कर देनेवाली दवा देना हानिकर न होगा? इसपर भी विचार करना आवश्यक है। यह हो सकता है, कि गोली किसी मार्मिक स्थानमें हो, धमनीके जालमें फँसी हो और ऐसे स्थानमें पीव पैदा कर देना अच्छा न होगा। टियुबरक्युलर प्रकृतिके पदार्थ अकसर ऐसी ही जगहपर रहते हैं, जहाँसे पीव पैदाकर उन्हें सहज ही निकाल दिया जा सकता है तथा दवाकी उनपर भी वही क्रिया होगी, जो बाहरी पदार्थोंपर होती है। इसीलिये ऐसा होता है, कि प्रयोग करनेके बाद हीपर समस्त स्वास्थ्य-विधानपरके फोड़े अकसर दूर कर देता है ; क्योंकि चर्ममें छोटे छोटे लसदार पदार्थके थक्के रहते हैं और ये पकाकर हटा दिये जायँगे। **सलफर** भी यही करता है। इसीलिये सावधान रहना तथा **सलफर** और **सिलिका** या हीपर बार-बार या बहुत ऊँचे क्रममें, जिन रोगियोंको फेफड़ेका गुटिका दोषकी सम्भावना ही, उन्हें न देना ही अच्छा रहता है। अपने अनगिनती लाश चीरनेके काममें रोकिटैन्सको न रोगियोंके फेफड़ेमें कोषावृत्त पनीरकी तरह तलछट प्राप्त हुए हैं, जिन्हें कोषावृत्त टियुबर्कल (Encysted tubercle) था और इसीलिये वे जीवन धारण किये हुए थे। पर वे कोषावृत्त (Encysted) हो रहे थे और इसी वजहसे एकदम सुरक्षित थे तथा रोगी किसी दूसरी ही बीमारीसे मरे थे। ऐसी दवाओंका प्रयोग करना, जिनमें इस तरह पीव पैदा करनेको प्रवणता है, भयङ्कर है और आपको इनका प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिये। बहुत-से रोगी देखनेके बाद आपको यह मालूम होगा, कि आपने ही उनमेंसे कितनोंको जान ली है। यदि हमारी दवाओंमें मनुष्य मारनेकी शक्ति न होती, तो उनमें मनुष्य आरोग्य करनेकी भी शक्ति न रहती। इसीलिये आपको यह समझ रखना चाहिये, कि उच्च क्रमका प्रयोग तलवारसे खेलना है। मैं छुरा लिये दर्जनों हवशियोंसे घिरे कमरेमें रहना एक अनभिज्ञ उच्च क्रम व्यवहार करनेवाले चिकित्सकके हाथोंमें रहनेकी अपेक्षा उत्तम समझता हूँ। वे जिस तरह अत्यधिक लाभ करती हैं, उसी तरह महाभयङ्कर हानि भी पहुँचा देती हैं।

हीपरके मुकाबले (यद्यपि हीपर भी **कैल्केरिया**का ही एक रूप है) **कैल्केरिया-कार्ब**में ऐसी फाड़ डालनेवाली प्रकृति नहीं है। यह वाह्यपदार्थके चारों तरफ प्रदाह नहीं पैदा करती है और उन्हें पकाकर निकाल देना चाहती है, पर गोली तथा अन्य पदार्थोंके चारों तरफ एक तन्तुमय तलछट मांस पैदा कर देती है। यह टियुवरक्युलरके तलछटको कड़ा संकुचित और कोषावृत्त वना देती है।

वहुतसे उत्तम होमियोपैथिक चिकित्सकोंने मुझसे कहा—"मैं यक्ष्माके रोगियोंमें **सलफर** प्रयोगके आपके वताये खतरेमें सहमत नहीं हूँ, मैंने **सलफर**से यक्ष्माके रोगी आरोग्य किये हैं।" ऐसा ही मैंने भी वहुतोंको किया है, पर मैं आरोग्य होने योग्य रोगियोंके विषयमें नहीं कह रहा हूँ, वल्कि उन रोगियोंके लिये जिनकी वीमारी वढ़ती हुई है और जटिल लक्षण आ गये हैं। रोगीके सभी तत्व जान लेना अच्छा है, उसको यदि आपने दवा दी है और रोगीको मार डाला है, तो कम-से-कम आप यह जान तो जाते हैं, कि आपने क्या किया है। यह जान लेना अच्छा है, जो कुछ आपने किया है। यदि आपने रोगीकी जान ले ली है, तो अज्ञानमें रहने और उसी तरह कितने ही दूसरोंको मारते रहनेकी अपेक्षा कारण जान लेना कहीं अच्छा है।

हाइड्रैस्टिस कैनाडेन्सिस
(Hydrastis Canadensis)

हाइड्रैस्टिस एक धीमी, गहराईतक क्रिया करनेवाली दवा है। गर्म देशोंकी वहुत सी वीमारियोंमें इसको जरूरत पड़ती है, जव कि क्षीण होते जाना, सर्दीकी दशा और जखम निकलना, यहाँतक कि मारात्मक जखम भी रहते हैं। दोषावह समीकरण। जव यह दिखाई दे, कि वहुतसे दोषोंका केन्द्र पाकाशय ही है। वहुत-से जटिल लक्षण-समूहोंकी कुञ्जी इच्छा और अनिच्छाएँ वता देती हैं। इस दवामें खाद्यसे घृणाके साथ धँसती हुई खाली भूख, एक आश्चर्यजनक अद्भुत, शायद ही कभी होनेवाली और इसीलिये विचित्र वात है। यह प्रकृतिगत लक्षण है; क्योंकि यह इस दवामें सर्वत्र है और रोगी यही कहता है। सभी समय वहुत ज्यादा कमजोरी रहती है। सर्दीके लक्षण, जिसमें गाढ़ा, लसदार, डोरीकी तरह **पीला** श्लेष्मा, कभी-कभी सफेद भी; किसी भी श्लैष्मिक-झिल्लीसे जखमके साथ या विना जखमके ही निकलता है। चर्मपर या श्लैष्मिक-झिल्लीपर गाढ़ा, लसदार, पीला, पीव निकलनेके साथ गहरे क्षय करनेवाले तथा फैलनेवाले जखम। ग्रन्थियोंमें जखमोंकी नलियोंमें कड़ापन, कृत्रिम दाने भरना, जो जराभी छनेपर खन फेंकने लगते हैं। सांघातिक जखमोंकी चिकित्सामें यह दवा वहुत लाभदायक हुई है। उन जखमोंमें, यहाँतक कि यदि यह आरोग्य नहीं भी करती; पर रोगीको वहुत आराम पहुँचाती हैं; क्योंकि यह वदबू दूर कर देती है, दर्दको सुधार देती है तथा ध्वंस क्रियाको रोक देती है। ऐसे जखमोंमें साधारणतया प्राप्त होनेवाली जलन हाइड्रैस्टिसका एक सुदृढ़ लक्षण है। पुरानी पाकाशयकी वीमारीमें जव महीनों या वरसोंतक कमजोरी और क्षीणता वढ़ती जाती है, तो

मूर्च्छा आने लगती है और ये लक्षण भी हाइड्रैस्टिसके हैं। पुरानी बीमारियोंमें जब तन्तु आक्रान्त हो गये हैं ; पर मन नहीं। मानसिक लक्षणों का आश्चर्यजनक अभाव सिवा इसके कि बहुत दिनोंतक कष्ट भोगने और कमजोरीके कारण साधारण साहस-हीनता आश्चर्यप्रद-लक्षण है। यदि इसकी सावधानतापूर्वक परीक्षा होती, तो मानसिक प्रेम और घृणायें भी प्रकट हो जातीं। विश्रामके समय लक्षण अच्छे रहते हैं, छोटे-छोटे जखमोंसे भी रक्त-स्राव होता है और उनमें पीव हो जाता है।

सर-दर्द उसी ढंगका होता है, जैसा पाकाशयकी गड़बड़ी और बहुत दिनोंकी नाककी सर्दीमें होता है। सर-दर्द स्पष्ट नहीं होती। मोटी खरोंट जमनेवाला अकौता इसने आरोग्य किया है।

आँखें और चेहरा पीला हो जाता है। कनीनिकाका जखम। गाढ़ा पीला, लसदार श्लेष्माका स्राव। पलकोंका पुराना प्रदाह। पलकोंके किनारेका प्रदाह, मोटापन और कड़ापन।

कानसे गाढ़ा, लसदार, पीव-मिला स्राव। बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव। कानमें बहुत-सी आवाजें आनेके साथ कण्ठकर्णी-नली (Eustachian tubes) की सर्दी। कान लाल, फूला तथा पपड़ियोंसे ढँका ; जहाँ पीछेकी ओर सरसे मिला है वहाँ फटा घाव।

डोरीकी तरह, पीले या सफेद श्लेष्मासे नाक रुकी रहती है, नाकमें हवा ठण्डी मालूम होती है तथा झिल्लियाँ खाल उधड़ी और जखम-भरी रहती हैं। पश्चात् नासासे कण्ठमें डोरीकी तरह श्लेष्मा जाता है। लगातार नाक छिड़कनेकी इच्छाके साथ दोनों नासा-गह्वरोंकी खाल उधड़ जाना। स्रावके साथ नाककी सर्दी, कमरेके भीतर स्राव थोड़ा होता है ; पर खुली हवामें बहुत ज्यादा हो जाता है। नाकसे खून, पीव-मिला स्राव। गाढ़ा, सफेद या पीले श्लेष्माका स्राव। नाकसे बराबर बड़ी-बड़ी खरोंटें निकाला करती हैं।

चेहरा रोगियल, धँसा हुआ, पीला, मोमकी तरह, अस्वस्थ और कामलारोग-ग्रस्त जैसा रहता है। चेहरेके नाक या ओंठके कोषार्बुद (Epithelioma) में यह बहुत लाभदायक होता है।

जीभ पीली, बड़ी, सूखी और छेदियल (Spongy) रहती है। ऐसा मालूम होती है, मानो जल गयी है।

मुँह, मसूढ़े और जीभका जखम ; जखम फलता और जलन करता है। स्तनका दूध पिलानेवाली माता तथा बच्चोंके मुँहका छाला। डोरीकी तरह, सुनहरा, पीला श्लेष्माका बहुत ज्यादा स्राव। मुँहकी खाल उधड़ जाना, पुराने पारद-सेवित रोगियोंमें।

बहुत दिनोंका प्रतिश्यायी गल-क्षत (Catarrhal sore-throat), दानेदार और जखम-भरा, खाल उधड़ी और जलन। गाढ़ा, लसदार, पीला श्लेष्मा, जो डोरीकी तरह खींच लिया जा सकता है।

भूख, प्यास नदारद, खाद्यसे घृणा। करीब-करीब सभी खाद्य पाकाशयको गड़बड़ा देते हैं। ग्रासभर खाद्यका थूकना (**फास और फेरम**की तरह)। सभी खाद्य वमन कर देता है ; केवल पानी और दूध रह जाता है। डकारें खट्टी, सड़ी, खाये हुए पदार्थोंकी। **पाकाशयमें खालीपन, मूर्च्छाका भाव, साथ ही खाद्यसे घृणा तथा पखाना बिलकुल ही न लगनेके साथ गहरा कब्ज**—ये ऐसे सम्मिश्रण हैं, जो अमूमन हाइड्रेस्टिसमें ही होते हैं। पाकाशयमें फड़कन। जलनके साथ पाकाशयमें जखम। अन्तर्द्वारी (पाकाशयका नीचेकी ओरका मुँह—Pyloris) प्रदेशमें एक ढेलेके तरह हो जानेका संशय। भोजनके बाद पाकाशयमें भार। पाकाशय एक साधारण गह्वरकी तरह मालूम होता है ; पाचन धीमा और कठिन। भोजनके बाद भरापन, यह बहुत देरतक रहता है। खाली, धँसनेका भाव, भोजन करनेके बाद भी नहीं घटता। खट्टा वमन। पुराना पाकाशय-प्रदाह। धीमा पाचन।

यह एक बहुत ही लाभदायक यकृत रोगकी दवा, आगे लिखे कारणोंसे होनी चाहिये :—चमड़ा पीला पड़ जाता है, मल हल्के रङ्गका यहाँतक कि सफेद होता है, जिससे पित्तका अभाव प्रकट होता है तथा यकृत प्रदेशमें तकलीफ रहती है। यकृतकी पुरानी गड़बड़ियाँ, यकृत बढ़ा हुआ, कड़ा और गांठ-गांठ।

मरोड़का दर्द। शूलका दर्द, पेट फूलना और तना हुआ तलपेट। इसने अमूमन दुष्पाचन और अस्वस्थ यकृतसे उत्पन्न बहुतसे दुर्लक्षणवाली दशाको आरोग्य किया है। पाकाशयको श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह और जखम हो जाना। प्लीहा-प्रदेशमें तेज दर्द।

इसने दुरारोग्य बवासीर, जखम और भगन्दर आरोग्य किया है। मलद्वारकी स्थान-च्युति और शिथिलता ; पीले पतले मल, यहाँतक कि पानी-जैसा दस्तके साथ पुराना अतिसार। मलद्वारका प्रदाह। मल पित्त-रहित, सफेद, कोमल, कट्ठ, हरा, बहुत ही लसदार श्लेष्मा। कड़ा, गांठ-गांठ मल। बहुत ही कड़ी कब्ज, कई दिनोंतक पाखाना लगता ही नहीं। मल-द्वारका अर्द्ध पक्षाघात। पाकाशयके लक्षण मिलनेपर यह कब्जियतको आरोग्य कर देता है। पुराने रोगियोंमें जब बस्ति प्रयोग (Enemas) से कोई लाभ नहीं होता, जब मल बहुत ऊँचेपर रहता है तथा मलनालीमें नहीं आता, जिससे पाखाना लगे, तो उस अवस्थामें यह दवा बहुत फायदेमन्द है पाकाशयमें "खालीपन" के साथ कब्ज या अतिसार, पाकाशयमें कम्पन और धड़कन।

पेशाब थोड़ा या रुका हुआ। पेशाबमें बहुत लसदार श्लेष्मा रहनेके साथ मूत्राशयका पुराना श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह, जिससे पेशाब होनेमें तकलीफ होती है।

मूत्र-पथकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। पुराना सूजाक, जब समय परनेपर भी स्राव पीला रहता है बहुत ज्यादा, बिना दर्दके ही स्राव होना। मुष्क और अण्ड शिथिल। जनन्द्रियमें बदबूदार पसीना।

गाढ़ा, पीला, लसदार, श्वेत-प्रदर, कभी सफेद, कभी दुर्गन्धित। योनिपथकी खाल उधड़ जाना। सङ्गम-कालमें योनिमें यन्त्रणा। संगमके बाद रक्त-स्राव। जरायुसे

रक्त-स्राव। ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा। वस्ति-प्रदेशमें शिथिलता और खिंचाव अनुभव होना। भगमें बहुत खुजली। स्तन-ग्रन्थिका कोषार्वुद।

स्वरयन्त्र, टेंटुआ और श्वासोपनलियोंकी आरोग्य न होनेवाली सर्दी, जिसमें बहुत ज्यादा, गाढ़ा, डोरीकी तरह श्लेष्मा निकलता है और जखम हो जाता है। वायु-पथोंमें खाल उधड़ जानेका भाव। वृद्ध पुरुषोंके वक्षकी सर्दी।

खाँसी सूखी, कड़ा रहती है, स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी होनेके कारण। वक्षमें खाल उधड़नेका भाव। घरघराहटवाली खाँसी। पीला, गाढ़ा, लसदार, कभी-कभी सफेद वलगम वृद्ध पुरुषोंको निकलता है या जब बीमारी बहुत पुरानी हो जाती है।

धीरे-धीरे बढ़नेवाली कमजोरीके कारण धड़कन।

कटि-प्रदेशमें पीठमें कमजोरी और कड़ापन, पीठको सीधा करनेके पहले इधर-उधर घूमना पड़ता है। अपनी जगहसे उठनेके लिये बाहुओंका सहारा लेना ही पड़ता है।

ऊर्द्ध प्रत्यंगोंमें वातकी दर्द। निम्न-प्रत्यंगोंमें कमजोरी और वात-वेदना। पैरोंपर और गुल्फके पास डङ्क मारने और जलन करनेवाले दर्दके साथ जखम। ऊँचे, कड़े किनारे, बिछावरकी गर्मीसे रातमें दर्द होता है, स्पर्श सहन नहीं होता; पैरोंका शोथ।

गरमाहट और धोना दोनों ही जखम और उद्भेदोंको वढ़ा देते हैं। चमड़ेकी खाल सहजमें ही उधड़ जाती है। समूचे शरीरमें जुलपित्ती (Urticaria) यह रातमें बढ़ जाती है। मुँह और मलद्वारके पास फटे घाव। **जखम** हो जाना। **बिछावन यन्त्रणाप्रद** (Bed-sore) वृक-रोग :—(एक प्रकारका गुटिका-दोष-युक्त रोग, यह चेहरेमें होता है, जिसमें नाक, गाल, ललाट, पलक और ओठोमें फटे घाव हो जाते है और उन्हें नष्ट कर देते हैं—Lupus exedens)।

हायोसायमस
(Hyoscyamus)

हायोसायमस टङ्कार, सङ्कोचन, कम्पन, सिहरावन और पेशियोंको फड़कनेसे भरा है। सुदृढ़ व्यक्तियोंकी अकड़न जो बहुत वेगसे होता है। ऐसा टंकार जो समस्त स्वास्थ्य-विधानको आक्रन्त कर डालता है और जिसके साथ रातके समय बेचैनी पैदा हो जाती हैं। मासिक रजःस्रावके समय स्त्रियोंमें अकड़न और इसके एकक पेशियोंकी अकड़न और संकोचन। थोड़ा थोड़ा झटका और ऐंठन। निम्न-श्रेणीकी बीमारीमें, पिछले भागमें, पेशियोमें झटका और ऐंठन होने लगती है, निम्न टाइफायड दशामें जहाँ ऐंठनके साथ बहुत अवसाद रहता है; यदि उसमें समझनेकी चेतना रहती है, तो स्वयं इसे अनुभव करता है, लेकिन दूसरे इसे देखते हैं। यह स्नायु-संस्थानकी बहुत बड़ी सुस्तीका एक प्रमाण है। बिछावनमें नीचेकी ओर सरक जाना, पेशियोंकी ऐंठन। सभी पेशियाँ काँपती और सिहरती

है, सम्पूर्ण स्वास्थ्य विधानमें लगातार बनी रहनेवाली धातु-दोष-जनित उत्तेजना, एक उपदाहिता और उत्तेजनाशीलताकी दशा। प्रत्यंगोंका टंकार-जनित झटका, जिससे सब तरहकी कोना-कोनी गति, स्वतः होनेवाली गति होती है। नर्त्तन रोगकी तरह गति, बाहुकी कोना-कोनी गति तथा बिछावन नोचना, प्रलापमें कोई चीज उठाना। क्रमशः बढ़ती हुई कमजोरी, यह सविराम ज्वरमें हो, जिसमें प्रलाप या उत्तेजना हो या जिसमें स्नायु और मनकी धातु दोष-जनित उत्तेजनाके साथ उन्माद हो, उत्तेजनाशीलता और क्रमशः बढ़ती हुई कमजोरी। पूर्ण अवसाद, जिससे कि रोगी पातानेकी ओर सरक जाता है, यहाँतक कि दाँती लग जाती है। इस तरह झटका, सिहरावन, काँपना, कमजोरी तथा पेशियोंकी अकड़नकी क्रिया इसके आश्चर्यजनक लक्षण हैं। बच्चोंको टंकार हो जाता है। "चिल्लाकर और अकड़कर एकाएक जमीनमें गिर पड़ता है। बच्चोंका टंकार, खासकर भयके कारण, भोजनके बाद टंकार।" भोजनके बाद बच्चा बीमार हो जाता है, वमन होता है और अकड़न हो जाती है। "चीखता और बेहोश हो जाता है।" जैसा कि पुरानी पुस्तकें कहती हैं— क्रिमिकी वजहसे बेहोश हो जाता है, माताको सन्तान-प्रसव होते ही टंकार हो जाता है, जिसे सूतिकाक्षेप (Puerperal convulsions) कहते हैं। "नींदके समय टङ्कार। प्रसव-कालमें श्वास-रोधके दौरे और अकड़न। अंगूठे आक्षेपिक रूपसे अकड़ जाते हैं।"

मानसिक दशा हायोसायमसका सबसे वृहत् अङ्ग है। बातचीत करना, धीमा प्रलाप, खामखयाल, भ्रम, अवास्तव पदार्थोंकी कल्पना; बोलना, प्रलापके प्रदर्शनके साथ जाग उठना और बातें करने लगना और इसके बाद तन्द्रा, इनके उपसर्गोंमें पर्यायक्रमसे हुआ करते हैं। नींदमें बोलना, नींदमें चिल्ला उठना; पर बातचीत, बुदबुदाना और स्वतः आप-से-आप बातचीत करना (Soliloquizing)। इसके बाद जाग्रत काल आता है, जिसमें खाम-खयाल और अवास्तव पदार्थ देखना, सब सम्मिलित रहते हैं। कभी-कभी रोगी अवास्तव पदार्थको देखनेमें रहता है और दूसरे ही क्षण भ्रान्तिमें जा पड़ता है। जिसका मतलब यह कि रोगी जिस समय। अवास्तव पदार्थ देखता है, वह उसे वैसा ही समझता है और तब अवास्तव पदार्थ चित्त-विभ्रम हो जाता है; फिर जिस चीजको वह देखता है वैसा नहीं रहता और वे चीजें चित्त-विभ्रम रहती हैं; पर वह चित्त-विभ्रमसे भरा रहता है, वह सब तरहका चीजें देखता है, अपने चित्त-विभ्रममें अवर्णनीय अवास्तव पदार्थ देखता है। वह मनुष्योंके सम्बन्धकी सब तरहकी बातें सोचता है, अपने विषयमें सोचता है और सन्दिग्ध हो जाता है। सभी नयी बीमारियोंमें यह सन्देह बना रहता है, उन्मादके पागलपनमें भी यह बना रहता है। यह सन्देह कि उसकी स्त्री उसे जहर खिला देना चाहती है; उसकी स्त्री उसके प्रति सच्ची नहीं है। प्रत्येक मनुष्यके प्रति सन्देह। "जहर मिली रहनेके सन्देहके कारण दवा नहीं खाना चाहता।" "सोचता है, कि कोई उसका पीछा कर रहा है, सभी मनुष्य उसके विपक्षी हो रहे हैं, उसके मित्र अब उसके मित्र नहीं रहे। वह खयाली व्यक्तियोंसे बातें करता है।" इस तरह बातें करता है, मानो वे उससे बातें कर रहे हैं; पर वह वास्तवमें सोचता है, कि कोई उसकी बगलमें बैठा हुआ है, जिससे वह बातें कर रहा है। कभी-कभी वह मरे मनुष्योंसे बातें करता है; जो मर गये हैं, उनसे गत घटनाओं-

पर बातें करता है। मरी वहन या पत्नी अथवा पतिको बुलाती है और उनसे इस तरह बातें करने लगती है, मानो वह मनुष्य मौजूद हो।

इस विचित्र मानसिक दशाकी हायोसायमसकी एक दूसरी धारा भी है। सम्भव है, कि दीवारमें एक अपरूप कागजका टुकड़ा लगा हो, वह लेटा रहता है और उसकी ओर देखा करता है और यह यदि सम्भव होता, कि वह उस शकलको श्रेणीवद्ध भावमें ला सकता, तो वह दिन-रात उसमें व्यस्त रहता है। वह उसे कतारमें लानेके लिये रोशनी चाहता है, वह सो जाता है और उसके विषयमें स्वप्न देखता है तथा जागता और फिर उसीमें लग जाता है; यह वही विचार-धारा है; कभी वह ऐसा खयाल करेगा, कि सभी चीजें क्रिमि हैं, कीट हैं, चूहे, विल्ली, चुहिया हैं और जिस तरह बच्चे उन्हें अपने चारों ओर सजाकर खेलते हैं, ठीक उसी तरह खेलता है। उसका मन इसमें क्रिया करता है; दो समान नहीं; सम्भव है, आप इन वर्णित अभिन्न पदार्थोंको कभी नहीं देखेंगे, पर आप इनकी भाँति ही कोई चीज देखेंगे और मन उन्हीं अद्भुत और हास्यास्पद चीजोंको सामने ला रखता है। एक रोगीने खटमलोंकी एक श्रेणी दीवालपर चढ़ते देखी, उसने उन्हें डोरीसे बाँध दिया, पर आखिरीको नहीं बाँध सका, इसलिये उत्तेजित हो उठा। हायोसायमसने उसे वहुत फायदा पहुँचाया। आपको पाठ्य-ग्रन्थमें यह वात नहीं मिलेगी, पर मैं आपको इसके सम्बन्धमें उसी ढङ्गसे बताऊँगा, जो पाठ्य पुस्तकके सदृश है। वह पर्यायशील दशामें रहता है। क्षणभरतक वह पागलोंकी तरह प्रलाप बकता था और दूसरे ही क्षण वह प्रलापमें उत्तेजनामें चिक्कारने लगा; इसके वाद ही वह तन्द्रामें जा पड़ा। अन्तमें सान्निपातकी दशामें, कुछ समयतक उन्नत होनेके वाद, वह एकदम गहरी तन्द्रामें जा पड़ता है। रोगके आरम्भ कालमें वह जगाया जा सकता है। तथा वह सवालोंका ठीक-ठीक जवाब देता है और आपने उससे जो कुछ कहा है, वह जानता मालूम होता है। पर ज्योंही वह अन्तिम उत्तर पूरा करता है, वह गहरी नींदमें सो गया-सा मालूम होता है। इसके बाद आप उसे हिला दीजिये तथा दूसरा सवाल पूछिये, वह उसका भी जवाब देता है और फिर गहरी नींदमें जा पड़ता है। टाइफायडका प्रलाप गहरे-से-गहरा होता जाता है, ज्यादे-से-ज्यादा धीमा होता जाता है और अधिक से-अधिक बुदबुदा-भरा होता जाता है, यहाँतक कि सम्पूर्ण वेहोश हो जाता है, जिससे कि वह फिर जगाया नहीं जा सकता और जिसमें कि कभी-कभी कई दिनोंतक, कभी कई सप्ताहतक वह पड़ा रहेगा और क्रमशः क्षीण होता जायगा और तवतक गहरी तन्द्रामें पड़ा रहेगा, जबतक यह दवा दी जायगी। वहाँ पड़ा-पड़ा विछावनकी चादर नोचेगा और बुदबुदाया करेगा। यहाँतक कि वह तन्द्रामें भी रहता है और कुछ भी समझ नहीं पाता, कि क्या हो रहा है, वह धीमे भावसे हिला-डोला करता है, बुदबुदाता है। अपने-आप वातें करता है, बीच-बीचमें एक वार जोरसे चीख उठता है। अंगुली नोंचता है, मानो उसकी अंगुलीमें कुछ हो, जब कि अंगुलीमें कुछ नहीं रहता, वह उसी ढङ्गसे बिछावनकी चादर नोचता है। अपनी रातकी कमीज नोचता है और जो कुछ चीज उसकी अंगुलीमें लगती है, उसीको उठाता है या हवामें कोई चीज पकड़ना चाहता है, इस तरह पकड़ता है, मानो वह मक्खियाँ पकड़ रहा है। यह धीमा प्रलाप तवतक जारी रहता है, जवतक वह गहरी तन्द्रामें नहीं जा

पड़ता और एक मूढ़की तरह पड़ जाता है। अचैन्तय अवस्थामें वह कभी कुछ वहशतके काम करता है ; पर अकसर ऐसा नहीं होता। यह और भी ज्यादा धीमा रहता है, बोलना अनर्थक बोलना, एक कोनेमें चुपचाप बैठे रहना और कुछ कल्पना किया करना या लेट जाना या घूमते रहना। "सदाके काम सदाकी कर्त्तव्य करनेका बचन देना" अर्थात् गृहस्थी करना तथा घरके काम-काज करना चाहेंगी जो करती आयी हैं या पीपा बनानेवाले पीपा बनाना चाहेगा तथा उस कारबारके सम्बन्धकी गैर-मामूली चीजें करना चाहेगा। सदाका व्यवसाय मनमें रखना चाहता है, उसके विषयमें बात करता है, दिनके काम करना चाहता है और उसीमें लगा रहना चाहता है, इस तरह यह व्यस्त उन्माद है। इसके अलावा, प्रलाप-व्यस्त प्रलापका आकार भी धारण करता है।

उन्मादके इस साधारण ढङ्गकी श्रेणी करनेकी कुछ धारणा उत्पन्न करनेके लिये, इसकी **स्ट्रैमोनियम** और बेलसे तुलना करनी चाहिये। आपने **बेलेडोना**की वक्तृताके कालमें सुना है, कि यह प्रचण्ड होता है, इसका ज्वर बहुत तेज होता है, इसमें बहुत उत्तेजना रहती है। **स्ट्रैमोनियममें**, जब हम वहाँतक पहुँचते हैं, तो आप देखेंगे, कि उसका प्रलाप, उसका उन्माद, सभी बातें तीव्र प्रचण्ड रहती हैं। ये तीनों इस तरह एक साथ रहते हैं, कि उन्हें एक साथ मिलनेपर कुछ निकाला जा सकता है। जब हायोसायमसकी मानसिक दशाके सम्बन्धमें विचार किया जाता है, तो यह समझ रखना उत्तम रहता है, कि इसके उन्मादमें ज्यादा ज्वर नहीं रहता। इसमें धीमा बोखार रहता है ; पर जब ज्वरावस्थाके सम्बन्धमें हायोसायमसपर विचार किया जाता है, तो तापकी तेजी इस क्रममें होगी—बेल, **स्ट्रैमो**, हायोसायमस। अब **बेलेडोना** अपनी मानसिक दशामें बहुत गर्म रहता है। **स्ट्रैमोनियम** बहुत ही प्रचण्ड और तीव्र, प्राणघातक-रूपसे प्रचण्ड, नियमानुसार, ज्वरमें साधारण गर्मी रहती है। हायोसायमसमें धीमा ज्वर रहता है, बहुत ऊँचा नहीं ; इसके उन्मादके साथ कभी-कभी बिलकुल ही नहीं रहता। जब कोई प्रलापकी प्रचण्डतापर या पागलपनकी क्रियाओंपर ध्यान देता है, तो यह क्रम बदल जाता है, उस समय उसकी चाल-ढालकी प्रचण्डताका क्रम होगा—**स्ट्रैमो**, बेल, हायोसायमस। इससे आपको दिखाई देगा, कि इन दवाओंसे मिल रहनेपर भी जो बहुत कुछ इसके सदृश दिखाई देती हैं, यह एकदम सूचीके अन्तिम भागमें है। यह धीमी दवाके रूपमें जाता है, पर ऊपरवाली दोनों बहुत तीव्र क्रिया-शील हैं। हायोसायमसमें धीमा उन्माद रहता है, प्रचण्डतामें नहीं जाता अर्थात् कभी-कभी रोगी प्राणघातक बन जाता है ; पर इसमें अधिककर आत्मघाती भाव ही रहता है। कभी-कभी रोगी बात करेगा, हँसेगा, कभी बैठ जायगा और कुछ न बोलेगा। "जब सोया रहता है या जागता रहता है, तो खाम-खयालों और अवास्तव दर्शनोंसे भरा रहता है। मन धर्मकी ओर पलट जाना", न स्त्रियोंका जो स्वाभाविकरूपसे धार्मिक नहीं। उनकी यह धारणा हो जाती है, कि उन्होंने दयाके दिन पापमें बिता दिये हैं, उन्होंने कुछ भयानक बातें की है। "वह सोचती है कि उसने हत्या की है, उसने कुछ भयावने काम किया है, उसने ईश्वरके शब्दोंके रूपमें स्वतः जो बातें की थीं, उसे पूरा नहीं किया है।" वह कहेगी—उनका मुझसे मतलब नहीं है, वे मुझपर लागू नहीं होतीं, वे किसी दूसरेके लिये हैं।

सोचता है, कि वह दूसरे स्थानपर है। सोचता है, कि वह घरपर नहीं है। उन लोगोंको देखता है, जो नहीं है और जो मौजूद नहीं है। अकेले रहनेका भय। काटे जाने या जहर खिलाये जानेका भय करता है। ये वाक्य कभी भयके अर्थमें भय-सूचक मान लिये जाते हैं ; पर यह उस सन्देहसे पैदा होता है, जिसके विषयमें बताया जा चुका है ; उसे सन्देह होता है या भय होता है, कि ये बातें होंगी। वह सोचता है, कि ये बातें होनेवाली हैं और इसीलिये अपने सब मित्रोंपर सन्देह करता है।

उन्मादमें तथा ज्वरके प्रलापमें, दूसरी बात जो इस दवामें है, वह है—पानीका भय, बहते हुए पानीका भय। इसमें सन्देह नहीं, कि यह लक्षण एक निर्देशक-स्वरूप रहनेके कारण ही यह नाम पड़ा है। उसे पानीसे डर लगता है ; पर कुछ अन्य दवाएँ भी हैं, जिनमें पानीसे भयका लक्षण है। 'बहता हुआ पानी सुननेपर घबड़ाहट, पानीका भय।" यह **बेलेडोना**, हायोसायमस, **कैन्थरिस** तथा नोसोड **हाइड्रोफोबिनम**में भी हैं। **स्ट्रैमोनियम**में भी पानीसे भय है। "स्ट्रैमोनियम" में पानी जैसी किसी भी चिजसे, चमकीले पदार्थसे, आगसे और आइनेसे डर लगता है। कोई भी चीज जिसका पानी-जैसी किसी भी चीजसे सादृश्य हो, उसका भय और इसीलिये, कि तरल पदार्थोंकी आवाजसे भय होता है। **हाइड्रोफोबिनम** ने—"बहते पानीकी तरह आवाज सुनते ही आप-से-आप पेशाब होने लगना, बहता पानीकी आवाज सुननेपर दस्त आने लगना", आरोग्य कर दिया है। यह लक्षण मौजूद रहनेपर इसने पुराना अतिसार (संग्रहणी) की बीमारी आरोग्य कर दी है। हायोसायमसका रोगी—"खयाली सवालोंका छोटा और ऊटपटाङ्ग उत्तर दे देता है। वह सोचता है, कि किसीने कोई सवाल किया है और वह उसका उत्तर दे देता है। इसीलिये टाइफायड किसी रोगीसे आपने जो सवाल नहीं भी किया है, उसका उत्तर देते सुनेंगे। वह खयाल करता है, कि उसके कमरेमें कुछ मनुष्य हैं, जो उससे सवाल कर रहे हैं, आप उसके जवाबके सिवा और कुछ नहीं सुनते ; वह या तो प्रलापमें है या पागल हो रहा है। "अपने-आप ही ऊटपटाङ्ग बातें बड़बड़ाया करता है, एकाएक चिल्ला उठता है।"

उसके प्रलापका एक दूसरा आकार भी है और इसके दो स्वर होते हैं, वह नङ्गा हो जाना चाहता है, कपड़े उतार फेंकना चाहता है और इसका अवश्य विश्लेषण करना चाहिये। पहले तो आप इसे नहीं भी समझ सकते। हायोसायमसमें समूचे शरीरके चर्ममें ऐसे असहिष्णु स्नायु रहते हैं, कि से वस्त्रका चर्मसे स्पर्श सहन नहीं होता, इसीलिये वह वस्त्र उतार फेंकता है। यह उन्मादमें और कभी-कभी प्रलापमें होता है और उसे इसकी धारणा भी नहीं होती, कि वह अपने अङ्ग खोल रहा है। वह एकदम निर्लज्ज मालूम होता है ; पर उसमें निर्लज्जपनका खयाल भी नहीं रहता ; इसका विचार भी नहीं उठता कि वह गैरमामूली काम कर रहा है; पर वह चर्मकी स्पर्शअसहिष्णुताके कारण ऐसा करता है।

इसके उन्मादका एक दूसरा स्वर भी है, जो कामुकता है और यह कभी-कभी इतनी प्रचण्ड हो जाती है, कि वृद्ध डाक्टरोंके सिवा तथा उस कमरेमें रहनेवालोंके सिवा और कोई इसकी भयङ्करताका अनुमान नहीं कर सकता। किसी भी औरतमें, वह पत्नी हो या कन्या,

उसकी यह कामुकता इस तरह प्रकट होती है; वह उस कमरेमें आनेवाले हरेकके सामने अपनी जननेन्द्रिय खोल देती है। कामुकताके इस भयङ्कर आक्रमणमें ऐसे उदाहरण भी पाये गये हैं, जब किसी स्त्रीने कमरेमें डाक्टरको घुसते ही अपने जननेन्द्रिय दिखानेके उद्देश्यसे सब वस्त्र हाथोंमें बटोर लिया है।

"प्रचण्ड कामोत्तेजन और कामोन्माद। अश्लील चीजें। बातचीतमें मल-मूत्र, गोबरका जिक्र भरा रहता है।" इस तरहके उन्माद और प्रलापमें सब तरहकी चीजें आ जाती हैं और इतनेपर भी यह एक रोग-मात्र है।

"वह हिंसापूर्ण रहता है और लोगोंको पीटता है। छड़ीसे मारता है और दाँत काटता है, लगातार गाता रहता है और जल्दी-जल्दी बातें करता है। ईर्षा सम्मिलित कामोन्माद; कामुक उन्माद। प्रेमके गीत गाता है, पलङ्गपर नङ्गा पड़ा रहता है या ग्रीष्म-कालकी गर्मीमें एक चमड़ा लपेटे रहता है।" वह सर्द हो रहा है, इस कारणसे नहीं; पर खास खयालकी वजहसे। किसी दशामें भी मानसिक स्तर रोगीक्रान्त हो सकता है जो किसी युवतीका प्रेमसे निराश होनेपर हो सकता है, इस परिणामपर पहुँचनेपर कि जिस युवकपर उसने विश्वास किया था, वह उसके एकदम अयोग्य है। इस तरहकी मानसिक दशाकी बीमारियाँ उसे पगली बना देता है और उसमें इनमेंसे कोई भी एक अवस्था उत्पन्न हो जा सकती है।

अविराम ज्वर, टङ्कार या उन्मादसे आरोग्य होनेवाले व्यक्तियोंमें आँखोंको तथा आँखके पेशियोंकी पाक्षाघातिक दशा हो जाती है। "दृष्टि-शक्तिमें गड़बड़ी, दूर-दृष्टि कुछ पेशियोंमें तनावकी खींचन तथा दूसरोंमें पक्षाघात। डेरा देखना।" यह एक बहुत निर्देशित औषधि है। मस्तिष्ककी बिमारीकी वजहसे जो वक्र दृष्टि (Strabismus) उत्पन्न होती है; वह इस दवासे आरोग्य की जा सकती है।

हायोसायमसके ज्वरके साथ बहुत ज्यादा मस्तिष्ककी तकलीफ रहती है तथा उसके बाद आँखोंकी मांस-पेशिक कमजोरी, आँखोंकी गड़बड़ी, चक्षुचित्र-पत्रमें रक्त-सञ्चय, दोषावह दृष्टि प्रभृतिकी प्रवणता रहती है। दो देखना (Double sight) "दृष्टि-रोध (Obscuration of vision); रतौंधी (Night-blindness); आँखका कुरूप हो जाना। भीतरी च-चित्र-पत्रोंकी आक्षेपिक क्रिया।" "पुतलियाँ फैलीं और रोशनीका उनपर प्रभाव नहीं पहुँचता।" कभी-कभी सिकुड़ी; पर सान्निपातकी इन निम्न दशाओंमें यह फैली ही रह सकती है। इसके बाद, जब वह इन निम्न रोगोंसे आरोग्य होता है, तो पलकें काँपती हैं, पलकें फड़कती हैं, आँखकी पेशियाँ हिलती हैं, इसलिये चक्षु-गोलक स्थिर नहीं रहता यह चक्षु-गोलककी कितनी ही पेशियोंकी छोटी-छोटी अकड़नोंसे चल विचल हो जाता है। ये सभी लक्षण या तो ज्वरके साथ उत्पन्न होते हैं या उसके बाद। बच्चेको टङ्कार हो जाता है या टङ्कारका काल होता है, जिसमें कि सप्ताह या दस दिनोंके भीतर, उसे पन्द्रहसे लेकर पचास बारतक टङ्कारका दौरा हो जाता है और यह हो सकता है कि इन टङ्कारोंकी **बेलेडोना** या **क्यूप्रम** तथा अनेक दवाओंसे किसी एकसे चिकित्सा की गयी हो और उसके बाद ये आँखकी तकलीफें, वक्र-दृष्टि-तथा दृष्टि-दोष उत्पन्न हो गया हो। "कूदनेके समय कोई

चीज दिखाई दे गयी।" पढ़नेके समय अक्षर उछलने-कूदने लगते हैं। आक्षेपिक रोग, समय बाँधकर होनेवाले रोग, स्नायविक प्रकृतिके स्नायविक रोग, वहुतसे रोगोंके साथ इस दवामें हैं और खासकर इसकी खाँसी, इसके पाकाशयके रोग तथा उदर-सम्बन्धी रोगोंमें दिखाई देंगी।

मुँहसे भी कितने ही लक्षण प्रकट होते हैं। मुँह बहुत सूखा रहता है। "इतना सूखा मानो जला हुआ चमड़ा हो। जीभका स्वाद, इसके सूखेपनके कारण, तलेके चमड़ेकी तरह रहता है, कभी-कभी रोगी कहेगा—"मेरी जीभ इतनी सूखी है, कि मेरे मुँहमें लटपटाती है", मुँह, कण्ठ, नाक या जहाँ कहीं भी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ हैं, वहाँका बहुत अधिक सूखापन। सूखी, फटी, लाल जीभ निम्न-श्रेणीके टाइफायडमें, इससे खून बहता है। दूसरे सप्ताहके समय, तीसरा सप्ताह आरम्भ होनेके समय, दाँत काले रक्तसे ढक जाते हैं, ओठ फट जाते हैं और उनसे खून बहता है। "जीभ फटी और उससे खून बहना। रोगी सिवा इसके कि अचेतन रहता है, बहुत हिलाकर या बारबार पुकारकर उसे जगाया जाये।" बहुत धीरे-धीरे वह काँपती हुई जीभ निकलता है, जो रक्तसे भरी, फटी और सूखी रहती है। निम्न श्रेणीके ज्वरोंमे "दाँतोंपर मैल" "जीभ निकालनेकी चेष्टा करनेपर चेहरेकी पेशियोंकी ऐंठन।" यह **लैकेसिस**की तरह काँपती है, अत्यन्त सूखापनके कारण दाँतसे लिपट जाती है, जबड़े झूल पड़ते हैं शिथिल रहती हैं और मुँह बहुत खुला रहता है। सम्पूर्ण मुख-गह्वर सूखा और बदबू भरा रहता है। कभी-कभी ज्वर-कालमें जबड़े अटक जाते, मानो दाँती लग गई है और बहुत मुश्किलसे उसे हटाया जा सकता है। "दाँती लग जाती है, दाँत-पर-दाँत बैठ जाते हैं। दाँतोंमें टपकका दर्द, हिलना धमक तथा फाड़नेकी तरह दाँतोंका दर्द, दाँतपर मैल।" ज्वरकी इन निम्न-श्रेणियोंमें सोते समय वह दाँत पीसता रहता है। बच्चे या तो अकड़नमें या दो अकड़नोंके बीचमें रक्त-सञ्चयमें, रातमें दाँत पीसते हैं और इस अर्द्ध-चेतनाकी दशामें। पाठ्य ग्रन्थमें कहा है,—"जीभ लाल, भूरी, सूखी, फटी, कड़ी रहती है। जले हुए चमड़ेकी तरह दिखाई देती है, जीभ रोगीकी इच्छानुसार काम नहीं करती है। जीभकी गति कष्टकर; यह कड़ी रहती है और मुश्किलसे बाहर निकाली जा सकती है। बातचीतके समय जीभको दाँतसे काट लेता है।" जीभ पक्षाघात-ग्रस्त रहती है, "बोली बन्द हो जाना, अस्पष्ट आवाजमें बोलता है; बोली जकड़ी; मुश्किलसे बोल पाता है। कण्ठकी, जीभकी तथा निगलनेमें जो पेशियाँ काम देती हैं, कण्ठनलीकी पेशियाँ, गलकोषकी पेशियाँ कड़ी पड़ जाती हैं और इस तरह पक्षाघात ग्रस्त हो पड़ती हैं, कि निगलना मुश्किल होता है। कण्ठमें लिया हुआ खाद्य नाकमें चला आता है।" तरल नाकसे निकल पड़ता है या स्वर-यन्त्रमें चला जाता है। "पानीका दृश्य, जल बहनेका शब्द तथा पानी पीनेकी चेष्टा कण्ठनलीका आक्षेपिक सङ्कोचन पैदा कर देती है।"

इस दवाका दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण पाकाशय और उदरके लक्षण है। वमन, पानीसे भय, अदम्य पिपासा, पानी घृणा, मानो पाकाशयसे ही पानीकी अनिच्छा आ रही है; एक प्रकारका पानीका, मानसिक भय। पाकाशय तना रहता है, पाकाशयमें तेज, दर्द मुँहकी तरह ही पाकाशयमें सूखापन; क्योंकि यह इसके साथ ही होता है। पाकाशयमें जलन

और खींचा और प्रदाह न रहनेपर भी खूनका वमन होता है। सुई गड़नेकी तरह दर्द, शूलका दर्द, तनाव, समूचे तलपेटका तनाव। "पाकाशय आश्चर्य-रूपसे तना, मानो करीब-करीब फट जायगा।" ढोलकी तरह फूला मालूम होता है। "बहुत यन्त्रणा, यन्त्रणाके कारण तलपेट छुआ नहीं जा सकता, पकड़ा नहीं जा सकता, बहुत मुश्किलसे, बहुत धीरेसे और बहुत सावधानतासे पलटा जा सकता है। तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द।" निम्न टाइफायड ज्वरमें, बहुत तनावके साथ औदरिक यन्त्रोंका प्रदाह। तलपेटपर छोटी छोटी फुन्सियाँ, जैसी कि निम्न टाइफायडमें प्राप्त होती हैं।

इसके बाद अतिसार आता है, यह वैसा ही होता है, जैसा निम्न श्रेणीके अविराम ज्वरमें हुआ करता है। "आँतोंसे रक्त-स्राव, पायर-ग्रन्थिमें जखम" तथा पीला, भुट्टेके आँटेकी तरह पतला दस्त। हायोसायमसमें वही पीसे चनेकी तरह दस्त होते हैं, जैसा कि टाइफायड ज्वरमें टुकड़े-मिले होते हैं। इसके अलावा, पानीकी तरह, बहुत बदबूदार, खून-मिले पतले दस्त। ज्यादाकर दस्त तथा मल पथ दर्द-रहित रहते हैं। "आँतोंसे बिना दर्दके ही स्राव पानीकी तरह श्लेष्मा, कभी-कभी गन्ध-रहित; पर साधाणतः बहुत बदबूदार होते हैं।" अब इसका दूसरा अंश यह है, कि रोगीको दस्तोंका ज्ञान नहीं रहता, यह अनैच्छिक रूपसे होता है, मल, मूत्र दोनों ही अज्ञानावस्थामें होते रहते हैं। दस्त पानीकी तरह, खून-मिले या पानीमें सिझाये भुट्टेकी तरह। हिस्टिरिया-ग्रस्त स्त्रियाँ तथा छोटी लड़कियाँ, जिन्हें अतिसार और खून-मिले दस्त आया करते हैं। शिथिल जरायुके साथ आँतोंकी शिथिलावस्था। "गर्भावस्थामें अतिसार, टाइफायड ज्वरमें अतिसार, मलद्वारा-वरोधिनी पेशीका पक्षाघात। प्रसवके बाद मूत्राशयका पक्षाघात, जिससे कि पेशाब मूत्राशयमें रह जाता है और पेशाब करनेकी इच्छा ही नहीं होती।" प्रसवके बाद पेशाब रुकनेकी बँधी दवा **कास्टिकम** है। **रस-टक्स**की तरह **कास्टिकम** भी पेशियों और अङ्गोंपर दबावकी बहुत बड़ी दवा है तथा कितने ही अवसरोंपर स्त्रियोंको बच्चेके निकलनेमें जो प्रचण्ड चेष्टा करनी पड़ती है, उससे समस्त वस्ति-गह्वरको पेशियाँ, क्लान्त, शिथिल और पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ती हैं।

इसके बाद वही आता है, जिसका वर्णन हो चुका है और जो वास्तवमें स्थानिक दशाकी अपेक्षा सार्वाङ्गिक दशाकी चीज है, प्रचण्ड कामेच्छा। लड़कियोंमें प्रचण्ड कामेच्छा, जिनमें पहले कभी भी वह इच्छा न हुई थी। यह केवल मस्तिष्कके प्रदाहमें ही उत्पन्न होती है और अपना प्रदर्शन करती है।

"सर्दी लग जानेके कारण प्रसवकी तरह दर्द।" सर्दी जरायुमें बैठ जाती है, जिससे कष्टरजः (Painful menstruation) उत्पन्न हो जाता है। हायोसायमसमें बहुत तरहका मरोड़का दर्द होता है; अंगुलियों और अंगूठोंमें मरोड़ तथा यहाँ-वहाँकी पेशियोंमें ऐंठन; अस्थायी पक्षाघात प्रभृति। इसमें ऋतु-रोध (Supprssed menstruation) है। रजःस्राव, गर्भ-धारण और प्रसवकी ऐसी बहुत-सी दशाएँ हैं, जो हिस्टीरियाकी प्रकृतिकी होती हैं। हिस्टीरियाकी प्रकृतिकी ऐंठन, खाँसी, कब्ज और अतिसार।

"सूतिकाक्षेप (Puerperal convulsion) अकड़न आरम्भ होनेके समय प्रचण्ड झटका लगता है। गर्भ-स्रावके बाद, चमकीले लाल रक्तका रक्त-स्राव होता है। भीतरकी सामग्री निकलनेकी शक्तिका मूत्राशयमें न रहना।"

और इसके बाद आवाज, स्वर-यन्त्र, श्वास और खाँसी आती है। स्वर-यन्त्रका संकोचन। वायु-पथ तथा स्वर-यन्त्रमें बहुत श्लेष्मा रहना, जिससे बोली और आवाज रूखे हो जाती है। सूखे और प्रादाहित कण्ठके साथ स्वर-भङ्ग, कष्टकर बोली; गुल्म-वायु-ग्रस्त स्वर-भङ्ग। हायोसायमस और वेरेट्रम ऐसी दो दवाएँ हैं, जो स्नायविक हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रीको आरोग्य करती हैं और बहुत-कुछ ज्ञान सम्पन्न बना देती हैं।

"वक्षकी अकड़नके कारण कष्टकर अक्षेपिक श्वास। स्पष्ट श्वासका क्षय, वक्षमें घरघराहट।" हिस्टीरिया जनित खाँसी। असहिष्णु, हिस्टीरिया ग्रस्त लड़कियाँ या मेरु-दण्डका उपदाहवाली असहिष्णु स्त्रियाँ, उन्हें आवेशिक खाँसी आती है, जो सामयिक रूपसे आती है और उत्तेजना होनेपर आती है। "जब यह रोगी दिनके समय, रातके समय या किसी भी समय लेटता है, तो स्वर-यन्त्रमें संकोचन, स्वर-यन्त्रमें आक्षेप, श्वासरोध, घरघराहट और वमनके साथ आक्षेपिक खाँसी उत्पन्न हो जाती है, चेहरेकी लाली और श्वासरोध।" यह सूखी, खुसखुसी, श्वास-रोधकर खाँसी रहती है, जो मेरुदण्डके रोगोंमें समूचे शरीरको हिलाती है। स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी, सूखी, खुसखुसी और आक्षेपिक खाँसी, लेटनेपर बदतर, बैठनेपर अच्छी रहती है, रातमें खाने पीनेपर, बोलने और गानेपर बदतर। सूखी, आक्षेपिक और लगातार होनेवाली खाँसी।" पर इसकी चरित्रगत खाँसी, सूखी, दर्द पैदा करनेवाली, तङ्ग करनेवाली खाँसी होती है, जो लेटनेपर बदतर हो जाती है। वे स्त्रियाँ तथा लड़कियाँ, जिनके मेरुदण्डपर गुदास्थिसे मस्तिष्कतक यन्त्रणादायक दाग रहते हैं और यन्त्रणा-पूर्ण स्थान रहते हैं, जो तब प्रकट होते हैं, तब कुर्सीसे उठने लगती है। इन्हें स्वर-यन्त्रमें थोड़ी-सी सर्दी लग जाती है और कभी-कभी तो यह बिलकुल स्नायविक आक्रमणके कारण होता है। जिनका मेरुदण्ड टेढ़ा रहता है, उन्हें कभी-कभी मेरुदण्डका उपदाह या मेरुदण्डकी गड़बड़ीकी वजहसे खाँसी आने लगती है। "खाँसनेके समय स्वर यन्त्रमें अकड़न। आधी रातके बाद खाँसी बदतर हो जाती है; रोगीको नींदसे जगा देता है। ठण्डी हवामें और खानेपीनेसे खाँसी। खसड़ाकी बीमारीके बाद खाँसी। प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी।" खाँसी बहुत ही क्लान्त करनेवाला होती है। खाँसी कभी-कभी तबतक आती रहती है, जबतक रोगी पसीनेसे तर और क्लान्त नहीं हो जाता तथा कुछ आराम पानेके लिये आगेकी ओर झुक जाता है और वह तबतक खाँसता है, जबतक क्लान्त नहीं हो जाता। 'वक्षकी पेशियोंकी ऐंठन। गर्दनकी एक पार्श्वकी पेशियोंका सङ्कोचन। अकड़नके साथ मेरुदण्ड और मस्तिष्कका प्रदाह।

प्रत्यङ्गोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलता। पेशियोंकी अकड़न। ऐंठन। हाथपैरोंकी पेशियोंका बार-बार ऐंठना।

बहुत रोग नींदमें उत्पन्न हो जाते हैं। स्नायविक रोगियोंकी नींद बहुत गड़बड़ायी रहती है, ऐसा भी समय रहता है, कि नींद आती ही नहीं। फिर गहरी नींद। "अनिद्रा-

रहित या लगातार नींद।" या तो जागता या सोया रहता है, बुदबुदाना बना ही रहता है। बहुत देरतक अविराम भावसे नींदका न आना, कामोद्दीपक स्वप्न, पीठके बल लेटा-लेटा वह एकाएक बैठ जाता है और फिर लेट जाता है।" इसका मतलब यह है, कि रोगी नींदसे जागता है, अपने चारों ओर देखता है, आश्चर्य करता है, कि कैसी भीषण चीजें उसने स्वप्नमें देखी है; उसके स्वप्न सत्यकी तरह मालूम होते हैं। वह चारों ओर देखता है, पर स्वप्नकी कोई भी चीज नहीं देखता है, वह लेट जाता है और फिर नींदमें सो जाता है। वह रातभर ऐसा ही करता है। भयमें चौंक उठता है, नींदमें झटका खाता है और चिल्ला उठता है; दाँत पीसता है, नींदमें हँसता है। जितनी मस्तिष्ककी तकलीफें इस दवामें हैं, उतने ही स्वप्न, भय, गड़बड़ी, ऐंठन तथा नींदमें कम्पनकी आशा की जा सकती है।

इसका ज्वर निम्न श्रेणीका होता है, अविराम ज्वर, टाइफायड (सान्निपातिक) ज्वर।

हाइपेरिकम
(Hypericum)

जिसने हाइपेरिकमकी परीक्षाका अध्ययन किया है, उसे स्पर्श-चेतन आघातोंका पता लग सकता है और यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि ऐसे आघातोंके परिणाम-स्वरूप यह दवा व्यवहारमें आयी है। **आर्निका, स्टैफिसेग्रिया, कैल्केरिया रस-टक्स, लीडम** और हाइपेरिकमसे ही होमियोपैथिक अस्त्र चिकित्साका कार्य अधिकांश चलता है। जब चिकित्सक अर्द्ध-अस्त्र चिकित्साकी दशा या चोटोंके परिणामको देखता है, तो ये दवाएँ बँधे ढङ्गसे प्रयोग की जाती हैं। कुचल जानेकी चोट, "काले, नीले" घावके जैसा दिखायी देना और अनुभूतिमें **आर्निका**का प्रयोग होता है, यह खासकर नयी अवस्थामें जबतक कि आघातप्राप्त स्थान या समूचे शरीरसे यन्त्रणा और कुचल जानेकी दशा दुर नहीं हो गयी है, यह खासकर सदृश रहती है; पर पेशियों और कण्डराओंमें दबावके लिये **आर्निका** अपूर्ण प्रमाणित होता है और **रस-टक्स**के पूरे-पूरे अध्ययनसे मालूम होगा, कि यह दवा कण्डराओं और पेशियोंकी कमजोरी तथा कुचल जानेकी तरह दर्द, वातज भाव, जो प्रत्येक तूफानके समय आता है और अकसर हिलते-डोलते रहनेपर गायब हो जाता है, उसके लिये **रस-टक्स** उपयोगी है; पर **रस-टक्स**के बाद भी बाकी बची रहनेवाली अन्तिम कमजोरीके लिये **कैल्केरिया-कार्ब** उपयोगी है।

इन तीनों दवाओंमें हमें एक श्रेणी प्राप्त होती है; पर इनका हाइपेरिकमसे प्रभेद करना एक महत्व-पूर्ण चीज है। कुचली, दबाव पड़ी कण्डराओं और पेशियोंकी हाइपेरिकम एक क्षुद्र औषधि है। यह एक विभिन्न प्रकारके उपसर्गमें ही काम करती है। हाइपेरिकम और **लीडम**से निकटस्थ सम्बन्ध है और इनकी भी आपसमें तुलना करनी चाहिये। **लीडम**में **आर्निका**की तरह यन्त्रणाप्रद कुचल जानेका भाव है और वह अकसर इसका स्थान ग्रहण कर लेती है; पर जब किसी स्नायुकी चोट प्रादाहिक क्रिया करने लगती है,

तो हाइपेरिकम और लीडमपर एक साथ ही ध्यान देना पड़ता है। पेशियाँ अस्थियाँ और रक्तवाहिनियोंके बदले, जैसा कि **आर्निका, रस-टक्स** और **कैल्केरियामें** है, स्नायुकी इन दोनों दवाओंके प्रयोग-क्षेत्र हैं। जब अंगुली या अंगूठेके सिरे कुचल जाते हैं या बिंध जाते हैं या नाखून उखड़ जाता है या जब कोई स्नायु किसी हथौड़ीसे दब जाता है और चोट किसी हड्डीमें लग जाती है और वह स्नायु प्रादाहित हो जाता है तथा स्नायु-पथमें दर्दका पता लगता है और यह आघात-प्राप्त स्थानसे शरीरकी ओर फैलता है तथा इसमें सुई गड़ने, खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता और छटपटाता है, चोटवाली जगहसे शरीरकी ओर धक्का होता है, तो समझना चाहिये, कि एक खतरनाक दशा आ रही है। दशाकी दवा, सभी औषधियोंसे श्रेष्ठ हाइपेरिकम है और मुश्किलसे कोई दवा इसकी समता कर सकती है। यह तो कहना ही वृथा है, कि दाँती लग जानेकी सम्भावना हो रही है।

कभी-कभी कोई बदमाश कुत्ता किसी व्यक्तिके अंगूठे या हाथको या कलाईको मुँहसे पकड़ लेता है तथा प्रकोष्ठ-स्नायु (Radial nerve) या उसकी किसी शाखामें हाथमें अपना लम्बा दाँत गड़ा देता है, जिससे विंधनेका जखम पैदा हो जाता है। पहली दवामें आपको हाइपेरिकमके लक्षण न प्राप्त होंगे ; पर ये धीरे-धीरे उत्पन्न हो जायँगे और आपको उनका इलाज करना पड़ेगा। हाथको काट न डालिये, बल्कि उसका आरोग्य कीजिये, हमलोग दवाओंसे ही ये सब चोट, छेदन कटना, कुचलना, विंध जानेवाले जखम तथा दर्द-भरे जखम आरोग्य करते हैं।

कभी-कभी कोई जखमका मुँह चौड़ा खुल जायगा, फूलेगा, आरोग्यकी उसमें प्रवणता न रहेगी, उसके किनारे सूखे और चमकीले दिखाई देंगे, लाल, प्रादाहित, जलन डङ्क मारने, फाड़नेकी तरह दर्द ; आरोग्य होनेकी प्रणाली न दिखाई देगी, ऐसे जखमके लिये हाइपेरिकमकी जरूरत हैं। यह अकड़न—टङ्कार (Tetanus) को रोके रहता है, प्रत्येक चिकित्सक जानता है, कि स्पर्श-चेतन स्नायु (Sentient) में चोट आ जानेपर हनुस्तम्भ (Lackjaw) की बीमारी हो जा सकती है, चोट आ जानेके बाद, ऊपर बाँहतक होनेवाले इन चिलक मारनेकी तरह दर्दोंसे ऐलोपैथिक चिकित्सक डरा करते हैं ; किसी जूता बनानेवालेका नाहन उसके अंगूठेमें घुस जा सकता है या पीतलके छड़से बढ़ईकी अंगुलीमें चोट लग जा सकती है। पर वह इसपर कुछ ध्यान नहीं देता, पर दूसरी ही रातमें बाहुतक चिलक मारनेकी तरह दर्द प्रचण्ड वेगसे होने लगता है। ऐलोपैथिक चिकित्सक इसे जटिल बात समझ सकता है, क्योंकि वह इनसे हनुस्तम्भ या टङ्कार होता हुआ देखता है। यदि यह दर्द हो जाये तो हाइपेरिकम उन्हें रोक देगा और इस अवस्थासे लेकर बहिरायाम वक्रता (Opithotonus) के साथ टङ्कारकी बढ़ी हुई अवस्थासे लेकर हनुस्तम्भकी दवा हाइपेरिकम है, यह टंकारमें प्राप्त होनेवाले लक्षणोंकी तरह लक्षणोंसे भरी तथा ऐसे लक्षणोंसे जो टंकार उत्पन्न करते हैं, भरी है तथा बढ़ते हुए स्नायु-प्रदाहके लक्षणोंसे भी परिपूर्ण है।

इसके अलावा, आपको कहीं घावका पुराना दाग हो सकता है। इसको किसी कड़ी चीजसे धक्का लग जाता है और चोट आ जाती है, कुचल जाता है, भीतर फट जाता है,

छिल जाता है, और उस दागपर डंक मारता फाड़नेकी तरह दर्द होने लगता है। उसमें जलन होती है और डंक मारता है या किसी तरह आराम नहीं मिलता और स्नायु-पथकी राहसे दर्द धड़की ओर चढ़ता है। ऊपरकी ओर चिलकका दर्द, चढ़नेवाला दर्द-भरा क्षत-चिह्न, जिसका दर्द स्नायुओंकी राहसे शरीरके केन्द्रकी ओर चढ़ता है, उसकी दवा हाइपेरिकम है।

अब, दूसरी दवाएँ भी है,—सभी **आर्निका**के विषयमें जानते हैं; पर इसका विश्वास रखिये, कि आप इसकी जगहपर इसका प्रयोग कर रहे हैं। चोटकी पहली अवस्था, जहाँ बहुत कुचल गया है और इस तरहका कोई दर्द नहीं है, जैसा मैंने बताया है। कुचल जानेकी दशा और रक्त जमनेकी पहली अवस्थामें तथा झटका लगनेपर "आर्निका" बँधी दवा है; क्योंकि यह मानव शरीरमें कुचल जानेकी तरह ही दशा उत्पन्न करता है, पर आप देखेंगे, कि "आर्निका" केवल एक उसी जगहपर ठीक बैठता है। "आनिका" का प्रयोग घाव हो जानेपर कभी उस तरह न करना चाहिये, जिस तरह अनजान आदमी करते हैं, क्योंकि यदि पूरी ताकतमें इसका प्रयोग हो गया तो विसर्प पैदा हो जायगा।

इसके अलावा, हड्डी, उपास्थि, कण्डरा या कण्डरा-वन्धनके कुचल जानेपर, उपास्थि तथा सन्धियोंके पास, घृष्टवर्ण हो जानेपर, किसी भी दूसरी दवासे ज्यादा काम **रूटा** करता है और यदि हम "रूटाका" अध्ययन करें तो हमें आश्चर्य न होगा, क्योंकि यह वैसी ही दशाओंके अनुकूल लक्षण उत्पन्न करता है, हड्डियोंपरकी सन्धियोंमें और उपास्थियोंपरके लँझड़ानेवाले जखम, कुचले हुए घाव। पर अकसर **लीडम** रोधक औषधि (Preventive medicine) के रूपमें व्यवहृत होता है। जब अंगुलियोंके सिरोंपर कोई आघात हो जाता है तो यह रोधक औषध होता है। यदि कोई किसी कांटीपर रख देता है या अंगुलीके नाखूनके भीतर या पैरमें कांटा गड़ा लेता है। यदि किसी घोड़ेको कांटी गड़ जाती है, तो उसे निकाल लीजिये और एक खुराक "लीडम" खिला दीजिये, फिर उसे तकलीफ न होगी, उसे हनुस्तम्भकी बीमारी न होगी, ये छेदवाले घाव, चूहेसे काटे, बिल्लीसे काटे प्रभृति घाव "लीडमसे" अच्छे होते है अर्थात् "लीडम" चिलक मारनेकी तरह दर्दको रोक देता है, जो स्वाभाविक रूपसे उत्पन्न होते हैं और स्नायु कभी भी आक्रान्त न होंगे। यदि तुरन्त प्रयोग कर दिया जाय तो कोई तकलीफ ही न पैदा होगी। इसके अलावा यदि आघात प्राप्त स्थानमें धीमा-धीमा दर्द या घाव हो, तो भी "लीडम" लाभ करेगा; यदि घावसे लेकर स्नायु-पथकी राहसे ऊपर बाहुतक दर्द होता है, तो यह विशेषकर हाइपेरिकमकी भाँति है।

कोई असहिष्णु स्नायविक स्त्री दिनके समय किसी कांटीपर चढ़ जाती है, जहाँ कांटी भीतर घुसी है, वहाँ दिनभर उसे तकलीफ मालूम होती है, वह बिछावनपर लेटती है और इसमें जोरोंकी यन्त्रणा होने लगती है, कि वह शान्त नहीं रह सकती। "लीडम" का प्रयोग करनेपर फिर कोई तकलीफ न होगी, पर यदि यह सवेरेतक जारी रहता है, तो दर्द ऊपर पैरतक चिलक मारेगा और हाइपेरिकमकी मांग पैदा हो जायगी। मैंने ऊपर घोड़ेकी कांटी गड़ जानेपर हाइपेरिकमका प्रयोग बताया है; परन्तु यदि कांटी खुरके पतले अंशके भीतरसे

जाती है तथा खुरकी हड्डीमें चोट पहुँच जाती है, तो निश्चय है, कि घोड़ा टंकार होकर मर जायगा, पशु-चिकित्सक इस विषयमें कुछ भी नहीं जानते; यद्यपि वे पोल्टीस बँधवाते, मरहम लगवाते हैं, तो भी वह घोड़ा टंकार होकर मर जायगा; पर यदि टंकार होनेके पहले ही "लीडमकी" एक खुराक पड़ जाये, तो यह टंकार होनेसे घोड़ेको बचा देगा; झटका आ जानेपर लीडम कुछ न करेगा, हाइपेरिकमका प्रयोग करना चाहिये। छिल जानेवाले घाव तथा छोटे स्नायु-भरे स्थानोंके कट जानेपर स्पर्श-चेतन स्नायुके कटनेपर तुरन्त हाइपेरिकमका प्रयोग कीजिये, **आर्निका** देकर समयको न वर्बाद कीजिये, वहाँ घावकी तरह यन्त्रणा है, क्योंकि यन्त्रणा इतनी महत्वकी चीज नहीं है, जितनी कि वह विंधे हुए घावके स्नायुओंसे है। छिद जानेवाले घावोंके लिये तुरन्त **लिडम**का प्रयोग कीजिये। जो कुछ भी घटना हो, इसमें सन्देह नहीं कि रोगीके लक्षण और दशाके अनुसार ही उनका सामना करना चाहिये।

मेरुदण्डके आघातमें एक दूसरी तरहकी तकलीफ होती है, जिसके लिये हाइपेरिकमकी जरूरत होती है। मुझे एक रोगी याद है, जैसा कि अकसर मिला करता है और जिसके बारेमें हम पढ़ते और सुनते हैं, एक जिसकी जान न बची थी। एक आदमी, जो गाड़ीके आखिरी सिरेपर खड़ा था, गाड़ीके झटकेसे पीठके बल गिर पड़ा और गुदास्थि (Coccyx) में चोट आ गयी। उसने उसपर विशेष ध्यान न दिया, घर चला गया, उसके माथेमें और शरीरके विभिन्न भागोंमें दर्द होने लगा। कई चिकित्सक बुलाये गये; किसीको भी पता न लगा कि रोग क्या है और दस दिनोंके बाद वह मर गया। उन्होंने उसको पलट दिया, अब पता लगा कि उसकी गुदास्थि काली हो रही है तथा मांस-पेशिक प्रदेशमें एक फोड़ा होना चाहता है। यदि पहलेसे ही मालूम हो गया होता तो हाइपेरिकम उसकी जान बचा देता। बहुत बार मैंने हाइपेरिकमको ऐसी दशाको आरोग्य करते देखा। गुदास्थिका आघात सब आघातोंमें जटिल और कष्टदायक आघात है, जिसका चिकित्सकको सामना करना पड़ता है; इस तरहकी चोटें पीठके बल गिरना और पत्थरकी चोट लगना या और कुछ ऐसा हो जाना, जिससे गुदास्थि कुचल जाये। गुदास्थिमें तुरन्त बहुत कम कुछ पाया जाता है; गहरी परीक्षा करनेपर भी दबानेपर यन्त्रणाके सिवा और किसी बातका पता नहीं लगता, पर बहुत बार मेरुदण्डकी राहसे ऊपर चढ़ने या नीचे उतरनेवाले, चिलक मारनेकी तरह दर्दका वर्णन सुननेमें आता है, शरीरमें चिलक मारनेकी तरह दर्द और अकड़नकी गतियाँ। जब ऐसे लक्षण रहें तो हरेक चिकित्सकको चोटका पता लगा लेनेकी बुद्धिमानी करनी चाहिये, पर कितनी ही बार बहुत सावधान चिकित्सक भी गुदास्थिके आघातके सम्बन्धमें अन्धे ही बने रहते हैं। प्रसवके कालमें बहुत सी स्त्रियोंकी गुदास्थिमें आघात लग जाता है और यद्यपि चोट बहुत हलकी होती है, बरसों बादतक यन्त्रणा बनी रहती है, उसे हमेशा कोई-न-कोई तकलीफ लगी रहती है, इस गुदास्थि चोटके कारण सदैव हिस्टीरिया-ग्रस्त और स्नायविक रहती है। यदि आरम्भमें ही पता लग जाये, तो ऐसी दवाओंकी चिकित्सा हाइपेरिकमसे हो सकती है। यह इस दवामें है, सुषुम्नाके निम्न-भागका थोड़ा-सा भी प्रदाह या उपदाह। यह कट जानेकी तरह मालूम होती है और घाव तथा यन्त्रणाएँ तबतक दूर नहीं होतीं,

जबतक कि ठीक स्थानपरका चोटका परिणाम दूर नहीं कर दिया जाता। ये आघात बरसों बादतक **कार्बो-ऐनिमेलिस, सिलिका** और **थूजा** तथा अन्य निर्देशित औषधियोंसे आरोग्य किये है।

मेरुदण्डमें ऊँचेकी ओरकी चोटसे भी इसका सम्बन्ध है। यह किसी मनुष्यके लिये कोई असाधारण बात नहीं है, सीढ़ीसे उतारनेके समय, पीछेकी ओर गिर पड़ना, पैर फिसल जाना तथा सीढ़ीकी किसी धारपर पीठका धमसे चोट खा जाना और तेज चोट आ जाना सम्भव है। कोई तुरन्त **रस टक्स** दे देंगे; मुझे **आर्निका** देते भी मालूम हुआ है; पर ऐसी चोटोंसे उत्पन्न प्रदाहको रोकनेके लिये तुरन्त हाइपेरिकम देना चाहिये। इसके बाद वहाँ अन्य प्रवणतायें होंगी, जैसे कि खींचन तथा वातज लक्षण, जिससे **रस-टक्स**की और अन्तमे **कैल्केरिया**की जरूरत होगी। अपनी जगहसे उठनेपर दर्दके साथ पीठकी पुरानी कमजोरी अकसर **रस-टक्स**से आरोग्य हो जाती है, जिसके बादकी दवा **कैल्केरिया** होती है; पर सबके पहले सुषुम्ना और मस्तिष्कके तन्तुओंकी खबर अवश्य ही हाइपेरिकम लेता है। इस श्रेणीकी चोटोंमें पीठकी पेशियोंकी खींचनके साथ खिचाव और कसावटके भावके साथ, मस्तिष्ककी तकलीफें पीठमें, विभिन्न दिशाओंमें, सुई गड़ने और चिलक मारनेकी तरह दर्द, वे प्रत्यङ्गोंमें नीचेकी ओर चिलक मारती है। ज्ञान-स्नायुके आघातोंकी तरह पीठकी चोटोंसे टङ्कार नहीं हो सकता है; पर कभी-कभी उनसे बहुत ज्यादा तकलीफ होती है, क्योंकि वे बहुत दिनोंतक लँगड़ाती रहती हैं।

मेरुदण्डमें या गुदास्थिमें जिन मनुष्योंको चोट आ गयी है। बरसों ऐसे लक्षणोंके साथ लँगड़ाते रहते हैं, जिनमें बहुत-सी दवाओंकी ओर परिचालित करते हैं। परीक्षामें हमें ऐसे लक्षण प्राप्त हैं, जो इन आघातोंके बाद उत्पन्न होते हैं और इसमें सन्देह नहीं, कि यह दशा कोई भी बात, जो इसकी परीक्षामें प्रकट हुई है, इसकी क्रिया स्नायु-आवरण और मस्तिष्कावरण (Meninges) पर होती है। जहाँ चोटें आयी हैं, वहाँके स्नायुकी राहमें, सुई गड़ने, फाड़ने और छेदनेकी तरह दर्द होता है। अब एक दूसरी दवा भी है, जिसे हम जानना चाहते हैं। यदि किसी तेज शस्त्रसे साफ कटनेका घाव हो जाये या यदि आपने नश्तर देते समय ऐसा ही अपनी छुरीसे चीर दिया हो; यदि आपने उदर-गह्वरको खोल दिया हो और उदर-प्राचीरें अस्वस्थ मालूम होती हों तथा वहाँ डंक मारने या जलनकी तरह दर्द हो, तो **स्टैफिसैग्रिया**से तुरन्त अंगूर भरना (Granulation) आरम्भ हो जायगा। अवरोधिनी पेशियोंके प्रसारणकी **स्टैफिसैग्रिया** एक आश्चर्यजनक लाभदायक दवा है। **स्टैफिसैग्रिया** फैलते जानेका एक स्वाभाविक प्रतिविष है। पाकाशयमें पत्थर रहनेपर जब किसी स्त्रीकी मूत्रनली फैल जाती है, तो **स्टैफिसैग्रिया** लाभदायक होता है। मुझे-यन्त्रके फैल जानेका एक रोगी याद है; नश्तर पड़ने बाद रोगिनी बहुत तकलीफ में थी, चीखती और चिल्लाती थी, ठण्डे पसीनेसे तर रहती थी, माथा गर्म और शरीर ठण्डे पसीनेसे तर रहता था। उसे **स्टैफिसैग्रिया** दिया गया और चन्द मिनटोंमें ही वह सो गयी। बिना किसी आरामके छः घण्टोंतक वह इस तकलीफमें पड़ी रही। जहाँ ठण्डक, माथेमें रक्त-सञ्चय और बेधने, फाड़नेकी तरह दर्द अवरोधिनी पेशीके प्रसारणके कारण हो जाता है या नश्तरके लिये किसी

अंशको फाड़नेपर हो जाता है, वहाँ मृत्युकी ही सम्भावना रहती है और "स्टेफिसैग्रिया" का उन तन्तुओंके फाड़ने, काटने और प्रसारणसे निकटस्थ सम्बन्ध है, जिनसे ऐसी तकलीफें उत्पन्न होती हैं।

अस्त्र चिकित्साके नश्तरके बाद, जिसमें बहुत काटना पड़ता है, बहुत सुस्ती, ठण्डक, रक्त-चूना, करीब-करीब ठण्डी साँस रहती है। इसमें सन्देह नहीं, कि अगर कोई मेटिरिया-मेडिकाका जानकार रहेगा, तो कहेगा—"इसे **कार्बो-वेज** क्यों नहीं देते?" हाँ, आप देंगे; पर इससे उसको लाभ न होगा। यह आपको निराश कर सकता है। यदि आप किसी शस्त्र-चिकित्सकको जानते हैं, अपनी शस्त्र-चिकित्सा, उस मेटिरिया-मेडिकावाले आदमीसे अच्छी जानते हों, तो आप कहेंगे—"नहीं, मैं "स्ट्रॉण्टियम-कार्ब" चाहता हूँ। यह समूचे शरीरका रक्त-सञ्चय दूर कर देता है. वह गर्म हो जाता है और रात आरामसे बीती है। सर्जनोंका **कार्बो-वेज, स्ट्रॉण्टियम-कार्ब** है।

अन्तमें कभी-कभी हमलोगोंको क्लोरोफार्मके प्रतिविषका प्रयोग करना पड़ता है तथा दर्द और यन्त्रणा रहनेके कारण इन दवाओंसे कोई लाभ न होगा; पर एक खुराक **फास्फोरस** खिलाकर ही आप क्लोरोफार्मके प्रतिविषका काम तुरन्त ले सकते हैं; क्योंकि यही क्लोरोफार्मका स्वाभाविक प्रतिविष है। **फास्फोरस** वमन वन्द कर देगा। **फास्फोरसमें** क्लोरोफार्मकी तरह वमन है। **फास्फोरस** पाकाशयमें ठण्डी चीजें, ठण्डा पानी पसन्द करता है और ज्योंही पानी पाकाशयमें गर्म हो जाता है, वमन हो जाता है। क्लोरोफार्म भी ऐसा ही करता है। फिर ये दोनों आपसमें प्रतिविषका काम क्यों न करें?

इग्नेशिया
(Ignatia)

इग्नेशियाकी बारम्बार जरूरत पड़ा करती है और यह खासकर असहिष्णु, कोमल, हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रीयों और बच्चोंके लिये उपयोगी है। स्वाभाविक हिस्टीरिया-ग्रस्तोंको इग्नेशियासे आप आरोग्य न कर सकेंगे; पर आप उन शरीफ, असहिष्णु, सुगठित, सुघरी, उच्च शिक्षित, परिश्रान्त स्त्रियोंके स्नायविक रोग इग्नेशियासे आरोग्य कर सकेंगे, जब उन्हें ऐसी बीमाररियाँ हो जायँगी, जिनमें हिस्टीरियाके लक्षणों-जैसे लक्षण रहते हैं। हिस्टीरिया धातु-दोष ऐसा है, जो बड़ा विचित्र होता है और जिसकी धारणा करना मुश्किल होता है; पर कोई स्त्री, जब परिश्रान्त हो जाती है और उत्तेजित तथा भावप्रवण हो जाती है, तो वह ऐसे काम करती है, जिसका कोई कारण वह स्वयं ही नहीं जानती। वह ऐसे काम करेगी, मानो वह अपनी उत्तेजनामें पागल हो रही है। वे ही काम करेगी, जिसका अफसोस करती है, जब कि हिस्टीरिया-ग्रस्त इससे हमेशा प्रसन्न होंगे। इसमें चाहे कितनी भी बेवकूफी क्यों न हो, उसने केवल यही प्रदर्शित किया है, कि उसे इसका गर्व है; पर हमारी चेष्टा उनके लिये हैं, जो अनजानमें उनकी नकल करते हैं, जो अच्छा काम करनेकी इच्छा करते हैं।

किसी स्त्रीके घरमें कुछ बकवाद हो गयी है, वह विचलित रहती है, उत्तेजित रहती है और मरोड़ होने लगता है, काँपती और सिहराती है। सर-दर्दके साथ सोने जाती है, बीमार रहती है, इग्नेशिया उसकी दवा होगी। जब उसमें बहुत कष्ट रहता है; अपरिशोधित प्रेम रहता है। एक असहिष्णु, स्नायविक लड़कीको जब यह पता लगता है, कि उसने प्रेम जिससे लगाया है, उस नवयुवकने उसे निराश कर दिया है, तो उसे रुलाई आती है, सर-दर्द होता है, काँपती है, स्नायविक हो जाती है और नींद नहीं आती; इग्नेशिया उसे दार्शनिक और सचेतन बना देगा। किसी स्त्रीका बच्चा मर जाता है या पतिकी मृत्यु हो जाती है, एक असहिष्णु, कोमल प्रकृतिकी स्त्री है और वह अपने शोकमें ही पड़ी रहती है। उसे सर-दर्द होता है, काँपती है, उत्तेजित हो उठती है, रोती है, नींद नहीं आती, अपनेको वशमें नहीं रख सकती; बहुत-कुछ चेष्टा करनेपर भी उसके शोकने उसे खण्ड-खण्ड कर डाला है। वह अपने कामोंको और उत्तेजनाओंको अधिकारमें नहीं ला सकती इग्नेशिया उसे शान्त बना देगी और वर्त्तमान अवसरके उपयुक्त कर देगी। इन सभी उदाहरणोंमें, जहाँ ऐसी दशायें, इन तकलीफोंसे उसे पछाड़े रहती हैं; जहाँ आपका रोगी इनके विषयमें ही सोचा करता है, कारणोंको विचारा करता है और यह दशा लौट-लौटकर आती है; **नेट्रम-म्यूर** उस रोगिनीको अच्छा कर देगा। यह उसके स्नायुओंमें बल भर देगा और अपने कष्टोंको सहन करनेकी शक्ति देगा; खासकर यह उन धातु-प्रकृतिवालोंके लिये उपयोगी है, जो स्कूलसे परिश्रान्त हो पड़ी हैं, विज्ञानमें, सङ्गीतमें या कलामें। इसमें सन्देह नहीं, कि असहिष्णु लड़कियोंका सङ्गीत, चित्रकला प्रभृति कलाओंमें जाना स्वाभाविक है। सङ्गीतमें कई वरसोंतक संलग्न रहने बाद लड़की पेरिससे लौटकर आती है, वह कोई भी काम करने योग्य नहीं है, वह सबको टुकड़े टुकड़े कर डालती है। प्रत्येक शब्द इसे विचलित कर डालता है। वह रातमें सो नहीं पाती। उत्तेजनाशील, निद्रा-रहित, काँपती है झटके खाती है, पेशियोंमें मरोड़ होता है; उत्तेजनासे और प्रत्येक विचलित करनेवाले शब्दोंसे रोती है। इग्नेशिया आश्चर्यमय ढङ्गसे उसमें बल भर देगा; कभी-कभी तो यह सम्पूर्ण बीमारी आरोग्य कर देगा; पर खासकर पुरानी दशामें इन अत्यधिक असहिष्णु लड़कियोंकी दवा **नेट्रम-म्यूर** होती है। यह इग्नेशियाका स्वाभाविक क्रानिक है अर्थात् जिन लक्षणोंमें नयी बीमारीमें इग्नेशिया लाभ करता है, उन्हीं लक्षणोंवाली पुरानी बीमारीको **नेट्रम-म्यूर** आरोग्य करता है, जब कि बीमारी आती ही रहती है और इग्नेशिया एक ऐसे स्थानपर जा पहुँचती है, कि वह क्रिया नहीं कर पाती।

एक दूसरी भी जगह है, जिसमें **इग्नेशिया** और **नेट्रम म्यूर**से निकटस्थ सम्बन्ध रखते हैं। कोई असहिष्णु, अतिक्लान्त लड़की बहुत दिनोंतक संगीत और कलामें तथा स्कूलमें काम करने बाद, जब क्लान्त हो पड़ती है, वो अपने प्रेमको वशमें नहीं रख सकती। इसका प्रेम किसी ऐसेपर निर्भर करता है, जिससे वह नफरत करती थी, यह एक विचित्र बात हो सकती है, कोई इसे समझ नहीं सकता। कोई असहिष्णु बालिका, यद्यपि अपनी माताके सिवा और किसीको यह जानने न देगी, किसी विवाहित पुरुषके प्रेममें पड़ जाती है, वह रात-रातभर जागती और ठण्डी साँसें लेती है, वह कहती है—"माता मैंने ऐसा क्यों किया,

मैं उसको अपने चित्तसे हटा नहीं सकती।" दूसरे समयपर, एक व्यक्ति जो अपने स्थानके एकदम बाहर है, उसे इतना काम है, कि वह उससे किसी तरहका भी सम्बन्ध न रखेगी, पर वह उसीके विषयमें सोचती है, यदि यह एकदम नयी बात है, तो **इग्नेशिया** उस लड़कीका दिमाग ठीक कर देगी। यदि न कर सकी, तो बादकी दवाके रूपमें **नेट्रम-म्यूर** आता है। जितना हमलोग समझते हैं, कि हम जानते हैं, इसका आधा भी इनके सम्बन्धमें मानव हमलोग नहीं जानते। हमलोग केवल इसका प्रदर्शन जानते हैं। इस दवाके क्रिया क्षेत्रमें ये छोटी-छोटी बातें आ जाती हैं। जो मेटिरिया-मेडिकाको जानता है, वह इसे इधर-से-उधर प्रयोग करता है और इसमें वह सादृश्य देखता है।

इग्नेशियामें प्रत्यङ्गोंमें कम्पन होता है। स्नायविक कम्पनशील उत्तेजना, "एकाएक शरीरमें दुर्बलता आ जाना। हिस्टीरियाकी दुर्बलता और मूर्च्छाके दौरे। भीड़-भाड़में मूर्च्छा आ जाना।" यह खासकर आँसुओंसे भरी, स्नायविक, उदास, विनम्र तथा असहिष्णु मनके लिये उपयोगी है। "झटका और ऐंठन। आक्षेपिक ऐंठन।" सजा देनेके बाद नींदमें बच्चोंको अकड़न हो जाती है। "दाँत निकलनेकी पहली दशामें बच्चोंमें अकड़न। भयसे बच्चोंकी अकड़न।" बच्चा ठण्डा और पीला रहता है तथा **सिना**की तरह जमी और घूरती हुई दृष्टि रहती है। "बेहोशीके साथ टङ्कार। प्रचण्ड टङ्कार। धनुष्टङ्कारकी अकड़न। भयसे धनुष्टङ्कार। भावोद्रेकके कारण नर्त्तन रोग। भय या शोकके बाद।" नर्त्तन-रोग-ग्रस्त लड़कियोंकी भावोद्रेकके कारण मृगी या मृगीके ढङ्गके प्रदर्शन। पाक्षाघातिक दुर्बलता। "बहुत अधिक मानसिक भावोद्रेक।" स्तनसे दूध पिलाना, रातमें रोगीका निरीक्षण, सम्पूर्ण पक्षाघातकी तरह एक बाहुका नष्ट हो जाना, मानो यह मस्तिष्कसे रक्त स्रावके कारण हो गया है। कई घण्टोंमें यह भाव चला जाता है और बाहु पहलेकी तरह ही अच्छा हो जाता है। यह हिस्टीरिया-सम्बन्धी पक्षाघात है। "एक या दूसरे बाहुका सुन्नपन्न। बाहुमें सुरसुरी और काँटा आदि गड़नेकी तरह यन्त्रणा।"

इग्नेशिया आश्चर्योंसे भरी है। यदि आप बीमारीसे अच्छी तरह परिचित हैं, यदि रोग तत्वसे और उनके वाह्य प्रदर्शनोंसे पूर्ण परिचित हैं, तब आप कह सकेंगे, कि आपको आश्चर्य करना चाहिये कि नहीं और तभी आप यह भी कहनेमें समर्थ होंगे, कि क्या-क्या स्वाभाविक है और क्या बीमारीमें साधारण है। इग्नेशियामें आप देखते हैं, कि क्या असाधारण है और किस चीजकी आशा नहीं की जा सकती है। आप कोई प्रादाहित सन्धि देखते हैं या कोई प्रादाहित अंश देख पाते हैं, जहाँ ताप, लाली, टपक और कमजोरी है, आप बहुत सावधानतासे इसको पकड़ेंगे, क्योंकि यह दर्द-भरा हो जायगा। साधारणतः आपको यही सोचना होगा कि यह दर्द-भरा होगा, पर आप देखते हैं, कि यह दर्द-भरा नहीं है और कभी-कभी जोरसे दबानेपर आराम मिलता है। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है? आप कण्ठके भीतर देखिये, यह फूला प्रादाहित और लाल है, रोगी गल क्षत और दर्दकी शिकायत करता है। यह स्वाभाविक है, कि आप अपने जीभ दबानेवाले यन्त्रसे इस भयसे उसे न छुएँगे, कि इससे उसे तकलीफ होगी। सब तरहसे आपका यही अनुमान होगा, कि कठिन पदार्थोंके निगलनेसे तकलीफ होगी; पर जब दर्द हो, तो आप रोगीसे पूछें और रोगी कहेगा, कि—

"दर्द तभी होता है, जब हम कोई कड़ी चीज नहीं निगलते।" कोई भी कड़ी चीज निगलनेपर दवावसे दर्द घट जाता है ; पर अन्य समयोंमें दर्द होता रहता है।

मानसिक रूपसे रोगी बहुतसे अचिन्त्य और बेहिसाब काम किया करता है, ऐसा मालूम होता है, कि उसके कामका कोई नियम नहीं है, कोई सिद्धान्त नहीं है, मनकी कोई दृढ़ता नहीं है और न कुछ विचार ही है। जो आशा करते हैं ठीक उसके विपरीत प्राप्त होता है। रोगवाली करवट सोनेपर रोगी को आराम पहुँचता है, दर्द बढ़नेके बदले, इससे दर्द घट जाता है। "मानो माथेके पार्श्वमें एक काँटी गड़ रही है, इस तरहका दर्द।" उसके बल लेट जानेपर कुछ आराम मिलता है या उसपर दबाव देनेपर और इसीसे वह दर्द दूर हो जाता है।

पाकाशयको भी पाचनके सम्बन्धमें एक विचित्र अवस्था रहती है, किसी-न-किसी दिवस आपका एक ऐसा अद्भुत रोगिनी मिल जायगी, जो, जो कुछ भी खाती है वमन कर देती है, आप उसे कोमल खाना देनेकी चेष्टा करेंगे, रोगीका एक टुकड़ा ; साधारण चीज देनेकी चेष्टा करेंगे, क्योंकि वह कई दिनोंसे वमन कर रही है और लोग उसे इस वजहसे तङ्ग करते हैं, कि वह भूखी मर जायगी। आप उसकी परीक्षा करें, पर वह कुछ भी खा नहीं सकेगी। अन्तमें वह कहती है—"यदि मुझे थोड़ी-सी फूलगोबीकी तरकारी और थोड़ा-सा कुचला सिझाया प्याज मिलता, तो मैं समझती हूँ कि मैं अच्छी हो जाती।" यह गुल्म-वायु-ग्रस्त पाकाशय है और रोगिनी कुछ कच्ची कोबियाँ और सिझाया प्याज खा लेती है और उसी समयसे वह अच्छी रहती है। साधारण अवस्थामें जिन अद्भुत चीजोंका पचाना असम्भव रहता है, वे ही बढ़ानेके बदले मिचली घटा देती हैं, जब दूध, रोटी और दूसरी कोमल चीजें और गर्म चीजें, जैसी कि हमेशा खायी जाती हैं, पाकाशयको गड़बड़ा देती है तथा मिचली बढ़ा देती हैं। ठण्डे खाद्यकी इच्छा होती है और ठण्डा खाद्य ही पचता है, जब कि गर्म भोजन पाकाशयको गड़बड़ा देता है और मन्दाग्नि उत्पन्न कर देता है।

इसकी खाँसीकी भी ऐसी ही दशा है। कण्ठमें एक प्रकारका उपादाह उत्पन्न होगा, यही नियम है और इसी कारणसे लोग खाँसते हैं। उपदाहसे तथा सुरसुरीके कारण या पूर्णताकी अनुभूति, कुछ निकाल बाहर करनेकी इच्छासे स्वरयन्त्र और टेंटुआमें चिलक मारनेसे लोग खाँसते हैं और यह खाँसनेपर अच्छा हो जाता है। पर जब स्वरयन्त्र और टेंटुआमें उपदाह हो जाता है, तो इग्नेशियाके रोगीको अचिन्त्य रूपसे यह होगा ; क्योंकि जितना ही ज्यादा वह खाँसेगी उतना ही उसका उपदाह बढ़ता जायगा, यहाँतक कि अन्तमें यह उपदाह इतना ज्यादा बढ़ जायगा और इतनी ज्यादा खाँसी आयगी, कि उसे अकड़न हो जायगी। इग्नेशियाकी रोगिनीके सम्बन्धमें यह प्रकट है, कि जितना ही वह खाँसती है, उतनी ही ज्यादा खाँसीका उपदाह होता है और वह पसीनेसे तर हो जाती है, अपने रातके वस्त्रोंको पसीनेसे तर किये, बिछावनपर बैठी रहती है, मुँहभर बलगम निकलता है, खाँसती और ओकाई आती है, पसीनेसे भरी रहती है और क्लान्त हो जाती है। किसी ऐसी रोगिनीको देखनेके लिये जब आप बुलाये जायें, तो राह न देखिये ; आपको कुछ बतानेके

लिये वह अपनी खाँसी रोक नहीं सकती, आप केवल यही देखेंगे ; कि खाँसी प्रचण्ड ही होती जाती है ; इग्नेशिया इसे तुरन्त रोक देती है। बिना किसी उत्तेजक कारणके ही स्वरयन्त्रमें एक आक्षेपिक दशा उत्पन्न हो जायगी। कोई भी थोड़ी-सी गड़बड़ी, कोई मानसिक विश्रृङ्खलता, भय या कष्ट या शिकायत किसी युवतीको घर लाकर बिछावनपर लेटा देगी और वह स्वर-यन्त्रकी अकड़न भोगती रहेगी। या कण्ठनली द्वारकी अड़कन है (Laryngismus stridulus), जो सम्पूर्ण मकानमें सुनी जा सकती है। इग्नेशिया इसे तुरन्त रोक देती हैं (जेलसिमियम, मस्कस)।

मासिक रजःस्रावके समय सब तरहके स्नायविक रोग और तकलीफें पैदा हो जाती है ; मन हमेशा जल्दबाज रहता है, उत्तेजनाकी एक दशामें रहता है, उससे बढ़कर तेजीसे कोई काम नहीं कर सकता, उसकी स्मरण-शक्ति अविश्वसनीय रहती है। मन चारों तरफ उड़ा करता है। यह एक प्रकारका चित्त-विभ्रम है। मनके आगे श्रेणीवद्ध-भावसे जो चीजें रखी गई हैं, उनको श्रेणीवद्ध नहीं रख सकती। अपना गाना, अपने नियम और नियमभङ्ग प्रणालियाँ याद नहीं रख सकती ; वे सब गायब हो जाते हैं और वह एक चित्त-विभ्रमकी अवस्थामें रहती हैं। वह क्लान्त, स्नायविक व्यक्ति रहती है।

इसके बाद कल्पनाएँ आती हैं, स्पष्ट कल्पनाएँ, जो प्रलापकी तरह रहती हैं। बिना ज्वर, बिना शीतके। ठीक उत्तेजनाके बाद। वह अपने भावोंकी भयङ्कर गड़बड़ अवस्थामें घर लौटती है और एक ऐसी दशामें चली जाती है, जिसपर यदि ध्यान दिया जाये, तो प्रलापावस्था मालूम होगी, जैसी कि ज्वरमें उत्पन्न होती है ; पर अच्छी तरह परीक्षा करनेपर मालूम हो जाता है, कि यह प्रलाप नहीं है। यह एक क्षणिक मनकी गुल्म-वायु-ग्रस्त उत्तेजित अवस्था है, जिसमें समता नष्ट हो जाती है और वह प्रत्येक विषयकी बातें करती है। चीजोंके सभी ढङ्गको देखती है, यह एक हिस्टीरिया-जनित उन्माद है ; क्योंकि रोगिनीके विश्राम कर लेनेके बाद या दूसरे दिन सवेरे यह चला जाता है ; पर एक बार आरम्भ हो जानेके बाद ये दौरे बार-बार होने लगते हैं और रोगिनीके लिये ये सरल-से-सरलतर होते जाते हैं और यदि उनकी चिकित्सा नहीं की जाती, तो वह पगली हो जाती है, एक सुदृढ़ मस्तिष्क-भङ्ग, जिससे कि उत्तेजना, शोथ, उन्माद, सभी कारण और परिणाम-स्वरूपमें एकत्र रहते हैं। ये पहले मासिक ऋतु-स्राव-कालमें आते हैं और फिर ये अन्य समयमें आते हैं, फिर ये प्रत्येक गड़बड़ीसे पैदा होने लगते हैं। जब कभी उसकी बात नहीं मानी जाती या प्रतिवाद कर दिया जाता है। "वह अकेलेमें रहना चाहती है और अपने जीवन-कालीन असंलग्न बातोंपर विचार किया करती है। बैठी-बैठी ठण्डी साँसें लिया करती है ; समय-समयपर वह मौन हो जाया करती है। इसके बाद वह बड़बड़ाती और बकती है और स्वतः अपने-आप ही बातें करती है। वह क्षणभरमें एक ऐसी दशामें आ जाती हैं, जिसमें वह दौरा हो जानेपर और दूसरोंको भय-चकित कर देनेपर प्रसन्न होती हैं। स्वाभाविक हिस्टीरिया-ग्रस्त इसके साथ ही जन्म ग्रहण करती है और इग्नेशियासे उसे कोई लाभ न पहुँचेगा ; पर जब ऊपर बतायी अवस्थाओंके कारण यह उत्पन्न होगा, तो इग्नेशियासे बहुत बड़ा लाभ होगा, **हायोसायमस** इसके अगल-बगल

निकटस्थ सम्बन्धके रूपमें काम करता है। "लगातार भय या आशङ्काका भाव, कि कुछ अघटन घटना ही चाहता है।"

सब मानसिक दशाओंके साथ-ही-साथ उसमें **पाकाशयमें और उदरमें खालीपनका भाव** रहता है। खालीपन और कम्पन। "मेरुदण्डके उपसर्गोंके साथ निराश, प्रेमके बाद विषन्न चित्त। "नजदीकी व्यक्ति या पदार्थको खो जानेका वहुत शोक, लिखनेमें उसके हाथका काँपना उसे वहुत तकलीफ देता है, प्रत्येक छोटी-से-छोटी वातका भी भय।" वह एक ऐसी दशामें चली जाती है, जिसमें कि किसी भी चीजको ग्रहण करनेकी उसमें शक्ति नहीं रहती, यहाँतक कि अपने दोस्तको एक पत्र भी नहीं लिख सकती।

इग्नेशियाकी रोगिनी निर्बोध नहीं रहती या शिथिल मनवाली जड़ नहीं रहती; वल्कि जो क्लान्त हो पड़ी है तथा अत्यधिक कार्य और अत्यधिक उत्तेजनासे ऐसी दशामें आ पहुँची है। वहुत ज्यादा काम करनेके कारण, यदि उसका शरीर दुर्बल रहता है, तो यह भी वहुत अधिक सामाजिक उत्तेजनाके कारण होता है। हमारी सामाजिक स्थिति हिस्टीरिया-ग्रस्त दिमाग पैदा करनेमें काफी उन्नत हो गई है। ठीक ठीक सामाजिक मन तो वही है, जो हमेशा विभ्रमकी दशामें रहता है। सवाल करती है; पर उत्तरकी राह नहीं देखती। यह दशा वहुत-सी दवाओंमें है। मनस्थ न हो सकनेवाली दशा, यही वह चीज है; पर यह एक विचित्र ढङ्गका मनःसंयोगका अभाव है। भय, डर, चिन्ता, रोना, इस दवामें सर्वत्र है। "असहिष्णु प्रकृति, अत्यधिक तीव्र" अति क्लान्त, असीम कल्पना।

इग्नेशियामें एक दूसरी वात भी है,—सोचती है, कि उसने कुछ कर्त्तव्यका पालन नहीं किया है।" यह वहुत कुछ **पल्सेटिला, हेलिवोरस** और **हायोसायमस**की भाँति है; केवल **आरम**के रोगीको विश्वास रहता है, कि उसने वहुत वड़ी भूल की है। "सोचती है, कि उसने कुछ कर्त्तव्य पालन नहीं किया है।" उसीकी वहुत कुछ सोचा करती है।" "घोर शोकके वाद उदासीन।"

यह सर-दर्दसे भरी है और ये दर्द-सञ्चयी प्रकृतिके होते हैं, दबावकी तरह सर-दर्द या फाड़नेकी तरह दर्द या इस तरहका सर-दर्द, मानो मस्तक-पार्श्वमें या कनपटीमें काँटी घुसायी जा रही है; उसके वल लेट जानेपर घटना। सभी सर-दर्द तापसे उपशम होते हैं; रोगी साधारणतः गर्मीसे आराम पाता है और सर्दीसे तकलीफ वढ़ती है। पाकाशयमें ठण्डी चीजें लेना चाहता है; पर वाहर गर्म चीजें। रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, झटकेकी तरह सर-दर्द, टपकका सर-दर्द, स्नायविक और असहिष्णु प्रकृतिवालोंका सर-दर्द, जिनके स्नायु-संस्थानमें चिन्ता, शोक या मानसिक कार्य कर रहे हैं। "काफी, धूम्रपान, श्वासके साथ धुआँ जाना, तमाकू या अलकोहलका अपव्यवहारके कारण सर-दर्द; वहुत ध्यान लगानेके कारण सर-दर्द। "गर्मी और विश्रामसे घटनेवाला सर-दर्द; ठण्डी झोंकको हवा और एकाएक सर घुमानेपर वदतर; मलत्यागके समय दवाव डालने, हिलनेपर, जल्दवाजीसे या उत्तेजनासे वदतर।" ऊपरकी ओर देखना दर्दको वढ़ा देता है आँखोंको हिलाना दर्द वढ़ाता है;

शोर-गुल तथा रोशनीसे बदतर। "पश्चात् मस्तकमें सर-दर्द ; ठण्डकसे बदतर, बाहरी तापसे अच्छा रहता है। भोजन करते रहनेपर सर-दर्द अच्छा रहता है ; पर इसके बाद ही बदतर हो जाता है।"

"दृष्टिकी गड़बड़ी, टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देना, दृष्टिमें विभ्रम।" अत्यन्त स्नायविक आँखें ; "कटु आँसुओंका स्राव, रोना।

चेहरा विकृत, अकड़ा पीला और रोगियल। चेहरेमें दर्द। छेदने या फाड़नेकी तरह चेहरेमें "प्रचण्ड दर्द। मुझे इसे इस तरह बताने दीजिये :—पेरिससे लौटनेवाली इनमेंसे कुछ अति क्लान्त लड़कियोंने, जैसा कि मैंने बताया है, सङ्गीतमें जिन्होंने बहुत अधिक परिश्रम किया है, उन्हें चेहरेमें प्रचण्ड यन्त्रणा होगी, चेहरेमें दर्द होगा या कुछ अन्य हिस्टीरियाके प्रदर्शन होंगे। कुछ अन्य लड़कियाँ, प्रचण्ड सर-दर्द लेकर लौटेंगी ; कुछ मानसिक दशायें और चित्त-विभ्रम लेकर आयेंगी और कुछमें सभी हिस्टीरियाके प्रदर्शन होंगे। बहुत दिनोंकी उत्तेजना, सङ्गीतकी ज्यादतियाँ, कुछ अन्य लड़कियाँ कष्टरजः (Painful menstruation), डिम्बाशयके दर्द, हिस्टीरियाकी दशा, जरायुकी स्थान-च्युतिसे खूब तकलीफ पाती लौटेंगी या उन्हें योनि-पथकी और मलनालीकी स्थान-च्युतिकी बीमारी रहेगी। "मलद्वार और योनिसे ऊपरकी तरफ नाभीकी ओर फाड़ने तथा चिलक मारनेकी तरह दर्द।"

इस दशामें अद्भुत विपरीतताएँ हैं। किसी सामने आनेवाले मसलेपर ये स्नायविक स्त्रियाँ क्या सोचेंगी, इसका परिणाम निकालना आपके लिये सदैव ही असम्भव होगा। उसका समुचित और विचार-पूर्ण रहना तो आप विश्वास ही नहीं कर सकते। किसी विषयमें कम से कम कहना ही सर्वोत्तम होगा। कोई वादा न कीजिये, सुनिये बुद्धिमान बनिये, अपना सफरी बेग उठाकर नुस्खा लिखने बाद घर चले जाइये ; क्योंकि कोई भी बात जो आप कहेंगे वही विकृत रूप धारण करेगी। ऐसी कोई बात ही नहीं है, जो कहकर आप प्रसन्न कर सकें।

जिस समय आप आशा नहीं कर सकते, उसी समय प्यास। जाड़ा लगनेके समय प्यास ; पर ताप चढ़े रहनेपर कुछ नहीं, यदि उसे हरारतकी दशा है। यह सविराम ज्वरोंमें उपयोगी है। उत्तेजनशील, स्नायविक बच्चे और स्त्रियोंका सविराम ज्वर।

आयोडिन
(Iodine)

बीमारी नयी हो या पुरानी, इस दवाकी सभी बीमारियोंमें एक विचित्र प्रकारकी **घबड़ाहट** रहती है। जो शरीर, मन दोनोंमें ही अनुभूत होती है। यह भी मालूम होता है, कि घबड़ाहटकी इस दशाके साथ एक सिहरावन या कँपकँपी रहती है, जो उसके समूचे ढांचेमें चली जाती है और तबतक रहती है, जबतक वह इसे हिला डुलाकर या अपनी स्थिति

वदलकर नहीं हटा देता। जब वह शान्त चुप रहनेकी चेष्टा करता है, तो यह घवड़ाहट पैदा हो जाती है और जितना ही वह शान्त रहनेकी चेष्टा करता है, उतना ही अधिक घवड़ाहट-भरी अवस्था वढ़ जाती है। जव शान्त रहनेकी चेष्टा करता है, तो भावोद्रेकोंसे, चीजें फाड़नेके भावेद्रेकोंसे, अपनेको मार डालने, हत्या और हिंसा करनेके भावोंसे भर जाता है। वह शान्त नहीं रह सकता, इसलिये दिन-रात टहलता रहता है। **आयोडाइड पोटासियममें** यह दवा अपने साथ वही लक्षण ले जाती है, जिससे कि यह **आयोडाइड आफ पोटासियम**के रोगीको चलाता है, परन्तु इनमें प्रभेद यह है, कि **कैलि-आयोड**का रोगी विना थके वहुत दूरतक चल सकता है और चलना उसकी घवड़ाहटको हटाये रखे मालूम होता है ; पर आयोडिनमें बहुत क्लान्ति रहती है। वह चलनेपर अत्यधिक क्लान्त हो पड़ता है और थोड़ा भी परिश्रम करनेपर वहुत ज्यादा पसीना होने लगता है। आयोडिन उन रोगोंके सदृश है, जिसमें ऐसा मालूम होता है, कि कोई भयङ्कर चीज आ रही है, दिमाग बिगड़ जानेकी सम्भावना रहती है। उन्मादका भय रहता है या कोई जटिल रोग हो जानेकी सम्भावना रहती है, जैसा कि दवे हुए मैलेरियाकी रुकी हुई अवस्थामें होती है। सर्दीके पुराने रोगियोंमें, यक्ष्माकी सम्भावनामें खासकर औदरिक यक्ष्माकी सम्भावनापर होती है।

इस दवामें सर्वत्र **विवृद्धि** (Hipertrophy) का लक्षण है। यकृत, प्लीहा, डिम्वाशय, अण्ड लसिका ग्रन्थियाँ, ग्रैवेयी ग्रन्थियाँ (Cervical glands) स्तन-ग्रन्थिके सिवा सभी ग्रन्थियोंकी विवृद्धि हो जाती है। स्तन-ग्रन्थि क्षीण हो जाती है, पर दूसरी सभी ग्रन्थियाँ वढ़ जाती हैं, गठीली और कड़ी हो जाती हैं। ग्रन्थियोंकी यह स्फीति खासकर तलपेटकी लसिका-ग्रन्थियोंमें, मध्यान्त्रत्वक्-ग्रन्थियोंमें दिखाई देती है।

आयोडिनमें यह विचित्र दशा भी है अर्थात् जवकि शरीर क्षीण होता जाता है, तो ग्रन्थियाँ बढ़ती जाती है। यह विचित्र वात है और यह आपको आयोडिनपर विचार करनेके लिये वाध्य करेगी ; क्योंकि जिस परिश्रमसे शरीर सिकुड़ता है और प्रत्यङ्ग क्षीणतर होते है, उसी मात्रामें ग्रन्थियाँ वढ़ती हैं। यह दशा सुखण्डी रोगमें दिखाई देती है। समूचे शरीरमें झुरियाँ पड़ी रहती है, मांस-पेशियाँ सिकुड़ी रहती हैं, चर्म झुर्रीसे भर जाता है और वच्चोंका चेहरा वृद्ध पुरुषोंकी तरह दिखाई देता है ; पर बगलकी ग्रन्थियाँ, वक्षण-ग्रन्थि तथा उदरकी ग्रन्थियाँ वढ़ जाती हैं और कड़ी पड़ जाती हैं। मध्यान्त्रत्वक्-ग्रन्थि (Mesenteric glands) गांठकी तरह अनुभव की जा सकती है। ऐलोपैथीके हाथोंसे आनेवाले मैलेरियाके रोगोंमें जिसमें किनाइन और **आर्सेनिक**का अति मात्रामें प्रयोग हुआ है, यह प्रवणता दिखाई देती है और जाड़ा लगा करता है ; चेहरा तथा शरीरके ऊपरी भागमें झुर्री पड़ जाती है, चमड़ा सिकुड़ा और पीला दिखाई देता है, अतिसार जारी हो जाता है, यकृत और प्लीहा वढ़ जाती हैं और पेटकी लसिका ग्रन्थियाँ अनुभव की जा सकती हैं, यहाँतक कि आरम्भिक अवस्थामें भी जव कि ये दशायें केवल धमकानेवाली होती हैं, तो हम भविष्य देख सकते हैं और देख सकते हैं, कि रोगी आयोडिनकी दशाकी ओर वढ़ता जाता है।

अब कोई ऐसा रोगी लीजिये, जो सविराम ज्वर भोग रहा है, जो मैलेरिया या सीड़-भरी कोठरीके कारण उत्पन्न हुआ है। रोगी बेहद गर्म हो जाता है; यह हमेशा ज्वरका ताप नहीं रहता पर एक तापकी अनुभूति है। वह ठण्डे पानीसे नहाना चाहता है; उसका श्वास-रोध होता है और गर्म कमरेमें खाँसता है, तापसे भय खाता है, सहजमें ही पसीना होने लगता है और सहजमें ही क्लान्त हो पड़ता है। ऐसी ही प्रकृतिवालोंको नया बीमारियाँ होती हैं, जैसे कि श्लैष्मिक-झिल्लीकी नयी प्रावाहिक दशाएँ और पाकाशय-प्रदाह, यकृतका प्रदाह, प्लीहाका प्रदाह, अतिसार, क्रूप, कण्ठका प्रदाह, यहाँतक कि कण्ठपर सफेद छाले पड़ जाते हैं। कण्ठ फूला और लाल रहता है और यह दशा स्वर-यन्त्रतक फैल जाती है; इसपर डिफ्थीरियाकी तरह तलछट भी जम सकता है। आयोडिनने डिफ्थीरिया आरोग्य किया है, जब डिफ्थीरियाकी तरहका रस स्राव मलमें मौजूद था। ऐसी धातु-प्रकृतिवालोंको रस-स्रावके साथ क्रूप खाँसी हो सकती है और हम देख सकते हैं, कि यह आयोडिनकी ओर जा रहा है। शरीरके प्रत्येक प्रदेशमें विचित्र छोटी-छोटी बातें पैदा होती हैं। यदि दवाकी प्रकृतिको हमलोग अच्छी तरह न देखें, तो हम बुरी और बढ़ती हुई बीमारीकी प्रकृति भी नहीं पहचान सकते।

इसके रोगीकी **मानसिक दशा**, उत्तेजना, घबड़ाहट, मनोवेग तथा उदासीनतासे भरी रहती है। वह कुछ करना चाहता है, जल्दीसे करना चाहता है; उसे हत्या करनेका मनोवेग होता है। इस लक्षणमें इसका **आर्सेनिकम** और **हीपर**से बहुत ही निकटस्थ सम्बन्ध है। **आर्सेनिकम** और **हीपर**के रोगियोंको भी हत्या करनेका मनोवेग होता है, बिना तङ्ग किये या बिना कारणके ही। तापकी असहिष्णुता तुरन्त ही निर्णय कर देगी; क्योंकि आयोडिनका रोगी गर्म खूनवाला रहता है; पर **आर्सेनिकम** और **हीपर**का रोगी हमेशा सर्दीला रहता है। हिंसा करनेका मनोवेग एकाएक पैदा हो जाता है। ये सब ऐसी दवाएँ हैं, जिनमें विचित्र मनोवेग होता है, बिना कारणके ही मनोवेग होता है। मनोवेग-पूर्ण उन्मादमें ये मनोवेग दिखाई देते हैं; एक उन्माद जिसमें अद्भुत कार्य करने और हिंसा करनेका मनोवेग होता है और जब रोगीसे यह पूछा जाता है, कि तुम ऐसे काम क्यों करते हो? तब वह कहता है, कि मैं नहीं जानता। किसी दूसरे विषयमें उन्माद-ग्रस्त यह रोगी नहीं भी मालूम पड़ सकता है, वह एक अच्छा व्यापारी हो सकता है, दवाओंमें भी ऐसा है, ये चीजें भविष्यसूचक हैं। "हीपरमें" यह लिखा गया है, कि किसी हजाममें अपने हजामत बनानेवालेका, अपने छुरेसे, हजामत बनवाते समय गला काट देनेका मनोवेग हो सकता है। **नक्स-वोमिका**के रोगिनीको अपना बच्चा आगमें फेंक देनेका भावोद्रेक होता है या अपने अत्यन्त प्यारे पतिको मार डालनेकी इच्छा होती है। यह विचार रोगिनीके मनमें उत्पन्न होकर तबतक बढ़ता रहता है, जबतक कि वह वास्तवमें उन्मत्त और शासनके बाहर नहीं हो जाती है और ये मनोवेग कार्यमें परिणत किये जाते हैं। **नेट्रम-सल्फ**का रोगी कहेगा—"डाक्टर साहब! आप नहीं जानते कि मैं किस तरह अपनी ही हत्याकी इच्छाको रोके रहता हूँ; मेरे मनमें ऐसा ही करनेका मनोवेग होता है।" आयोडिनमें भी

हत्याका मनोवेग होता है, क्रोधसे नहीं, किसी न्यायके विचारसे नहीं ; पर बिना किसी कारणके ही। प्रचण्ड क्रोध कभी-कभी हिंसाका कारण होता है ; पर आयोडिनमें इस तरहका मनोवेग नहीं है। जो लगातार पढ़ने या सोचनेके समय, समय-समयपर, अपने प्रति ही हिंसा करनेका मनोवेग हो सकता है, और यहाँतक बढ़ता जाता है कि अन्तमें मनोवेगपूर्ण उन्माद हो जाता है।

आयोडिनके रोगीका मन तथा शरीर दुर्बल रहता है। वह भुलक्कड़ होता है, छोटी-छोटी बातें भी याद नहीं रख सकता, वे उसके मनसे चली जाती हैं ; वह क्या कहना या करना चाहता था, यही भूल जाता है ; बाहर जाता है और सौदा खरीदकर गठरी कहीं भूल आता है। यह भुलक्कड़पन बहुत ज्यादा रहता है ; पर इन सभी दशाओंके साथ एक बात न भूल जायें कि रोगीको अपनी घबड़ाहट और मनोवेग दूर करनेके लिये किसी-न-किसी काममें अपनेको उलझाये ही रखना पड़ता है। वह काममें नहीं लगा रहता, तो चिन्ता उसे तङ्ग करती और कष्ट देती रहती है। यद्यपि वह मानसिक अवसन्न रहता है, उसे बाध्य होकर काममें लगे रहना और काम जारी रखना पड़ता है, जिससे इसकी मानसिक क्लान्ति और भी बढ़ जाती है। बहुत काम करनेके कारण, बहुत चिन्ता तथा साहित्यिक किसी कोमल मस्तिष्कके रोगीको आप कोई बात कहें, "कि तुम्हें काम बन्द कर देना पड़ेगा, तुम्हें आराम लेना चाहिये।" वह कहेगा—"क्यों, यदि मैं ऐसा करूँगा, तो या तो मर जाऊँगा या पागल हो जाऊँगा।" आयोडिन और **आर्सेनिकम**में ऐसी दशा आती है ; पर इन दोनोंमें एक बहुत बड़ा अन्तर है, जिससे कि ये दोनों दवाएँ तुरन्त अलग हो जाती हैं। आयोडिनका रोगी गर्म रक्तवाला रहता है, चलने फिरने, बैठने, सोचने और काम करनेके लिये ठण्डी जगह चाहता है ; पर **आर्सेनिकम**का रोगी ताप, गर्म कमरा, गर्म कपड़े पहने रहना चाहता है और सर्दीसे उसे तकलीफ होती है। आयोडिनके रोगीको गर्मीसे तकलीफ होती है। इस तरह जब कि बेचैनी और घबड़ाहट, जो मानसिक और शारीरिक प्रत्येक दशामें दोनोंमें ही होती है ; एकके रूपमें मनके सामने आती हैं, तो यदि रोगी गर्म रक्तवाला है, तो हम कभी **आर्सेनिकम**पर विचार न करेंगे ; पर यदि ठण्डे रक्तवाला और सर्दीला रोगी है, तो कभी आयोडिनकी बात न सोचेंगे।

पहले ही बता चुके हैं, कि साधारण लक्षणोंमें ग्रन्थियोंके बढ़नेकी प्रवणता है। धातु-प्रकृतिमें पैदा होनेवाले आगे लिखे लक्षण-समूहको आयोडिनने आरोग्य कर दिया है। अर्थात् हृत्पिण्डकी विवृद्धि, चुल्लिका-ग्रन्थि (Thyroid) की विवृद्धि तथा चक्षु-गोलकका बाहर निकल आना। अब यदि इनमेंसे किसीका रोगी आपको मिले (मान लिजिये कि कोई ऐसा आदमी उसे आपके पास भेज दे, जो उसे चक्षु-बहिरागत गलगण्ड Exophthalmic goitre समझता है ; ये नीचे रोगके नामके लिये इतनी आवश्यक हैं, जैसा कि वे इसे कहते हैं, तो वह इस दवाका निर्देशित न होगा, बल्कि ; निदर्शन उस दशामें प्राप्त होगा, जिसको मैंने बताया है, कि आँखका ढेला बाहर निकल आना, चुल्लिका-ग्रन्थिका बढ़ जाना, हृत्पिण्डकी विवृद्धि तथा हृत्पिण्ड-सम्बन्धी अन्य तकलीफें। यदि रोगी क्षीण हो गया है, पीला हो रहा है, गर्मीसे तकलीफ होती है, ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई हैं तथा इनके अन्य लक्षण

मौजूद हैं, तो यह दवा देनेके बाद, उन लक्षण-समूहोंके गायब होनेकी आशा कर सकते हैं, जिनपर रोगका नामकरण हुआ है।

कभी-कभी नयी पुरानी, दोनों प्रकारकी मस्तिष्ककी बीमारियोंमें आयोडिनकी जरूरत पड़ती है। सरमें, शरीरमें धमक होती है, सभी जगह स्पन्दन होता है और यह धमक होना अंगुली और पंजोंके सिरोंतक फैल जाता है, पाकाशय-गह्वरमें फड़कन, बाहुओंमें बहुत गहरी फड़कन अनुभव होती है, पीठमें फड़कन तथा शंखास्थि (Temporal bone) में फड़कन होती है। प्रचण्ड दर्दके साथ रक्त सञ्चयी सर-दर्द होता है, हिलने-डोलनेपर सर-दद बढ़ जाता है; पर स्वतः **रोगी**को हिलने-डोलनेपर आराम मिलता है। रोगी इसलिये हिलता डोलता रहता है, कि इससे उसकी घबड़ाहट दबी रहती है; पर प्रत्येक गतिसे उसके माथेका दर्द और स्पन्दन बढ़ जाता है। इस तरह प्रभेद करना आवश्यक है। *मेटिरिया-मेडिकाका अध्ययन करते समय रोगीके लिये क्या कहा गया है और किसी* अंशके लिये क्या कहा गया है इसका प्रभेद करना आवश्यक है। रोगीके सम्बन्धमें जो बात कही गयी है, वह सार्वाङ्गिक है और प्रत्येक अंशके सम्बन्धमें जो कुछ कहा गया है, वह विशेष लक्षण है। ये दोनों विपरीत हो सकते हैं और इसीलिये, कभी-कभी मेटिरिया-मेडिकाका विद्यार्थी घबड़ा उठता है; क्योंकि वह एक ही दवामें हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि और हिलने-डोलनेपर आराम पहुँचना लिखा देखेगा। यह केवल मेटिरिया मेडिकाके उद्गम-स्थान अर्थात् परीक्षाओं तथा दवाओंके प्रयोगसे हमलोगोंको पता लगता है, कि एक अंशके लिये क्या सत्य है और सम्पूर्णके लिये क्या सत्य है? समय-समयपर हमें ऐसा रोगी प्राप्त होता है, कि रोगी सरको आराम पहुँचानेके लिये, खिड़कीसे सर निकाले; पर गर्म कमरेमें रहना चाहता है। इस अवस्थामें माथेको सर्दीसे, पर शरीरकी तापसे आराम पहुँचता है। यह **फास्फोरस**का विशेष बँधा लक्षण है, जिसमें कि सर और पाकाशयके लक्षणोंमें सर्दीसे आराम पहुँचता है, पर वक्ष और शरीरके लक्षण सर्दीसे बढ़ जाते हैं। इसलिये यदि **फास्फोरस**के रोगीको वमन होता है और सरके लक्षण रहते हैं, तो वह कहता है—"मैं खुली हवामें जाना चाहता हूँ तथा पाकाशयमें ठण्डी चीजें लेना चाहता हूँ, पर यदि उसमें छातीके उपसर्ग हैं तथा हाथ पैरोंमें दर्द है, तो वह कहता है—मैं घरमें जाना और गर्म होना चाहता हूँ" और ठीक जैसा कि हम यह रोगीमें देखते हैं, वैसा ही किसी दवाके अध्ययनमें भी है; हमें अवश्य प्रभेद करना चाहिये।

इस दुर्बल प्रकृतिमें, जैसी आँखकी तकलीफोंकी आप आशा करते हैं, वे सभी मौजूद रहती हैं। आँखका गण्डमाला-ग्रस्त प्रदाह, जिसके साथ कनीनिकामें जखम रहता है, श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी तकलीफें; आँखोंसे स्राव, पलकोंकी छोटी-छोटी ग्रन्थियोंका बढ़ जाना, इस वर्णित धातुमें क्षीणता और चेहरा पीला रहनेके साथ होते हैं। चमकीली रोशनीमें दृष्टि-भ्रम। आयोडिनमें शोथज अवस्था भी है, पलकोंकी शोथज सूजन होती है तथा आँखोंके नीचे चेहरेकी शोथज सूजन हो जाती है। आयोडिनमें हाथ-पैरोंका शोथ भी है और अपने साथ यह प्रवणता **आयोडाइड आफ पोटासियम**तक ले जाता है, जिसमें कि वृक्क-

रोग (Kidney troubles) की तरह शोथज सूजन है। आरम्भमें यह कोरण्ड घटित मूत्रग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease) को रोक दे सकती है।

आयोडिनकी बीमारियोंमें जो दूसरा जबर्दस्त लक्षण सर्वत्र दिखायी देता है, वह भूख है। इसका रोगी हमेशा **भूखा** रहता है। साधारण और अनियमित भोजन काफी नहीं होता। वह प्रधान भोजनोंके बीचमें भी खाता है और फिर भी भूखा ही रहता है। इससे भी बढ़कर तो यह है, कि बीमारी खानेसे बेहतर होती है। आयोडिनके सब प्रकारके भय, चिन्ता और तप्लीफें भूखे रहनेपर बढ़ जाती हैं। पाकाशय खाली रहनेपर उसमें दर्द होता है और उसे खाना पड़ता है। खानेके समय वह अपना रोग भूल जाता है ; क्योंकि खाना भी कुछ करनेकी तरह, कुछ हिलने-डोलनेकी तरह एक क्रिया है और उसका मन किसी दूसरी ही जगह उलझा रहता है, गतिशील रहने और खानेके समय उसे आराम मिलता है। अत्यन्त भूख और बहुत खानेपर ही वह **क्षीण—दुबला होता जाता है**। "खाना-पीना उत्तम, इतनेपर भी दुबलाते जाना।" यह हेरिङ्गकी आयोडिनकी एक कुञ्जी है, जैसा कि **नेट्रम म्यूर** और **पेट्रोलेनममें** है, कि भरपूर भूख रहनेपर भी रोगी दुबला ही होता जाता है। परिपोषण इतना गड़बड़ाया रहता है कि मांस बनता ही नहीं और इसी वजहसे वह क्षीणता रहती है।

नाककी **सर्दीका दशा** भी ध्यान देने योग्य है, आयोडिनके रोगीकी घ्राणेन्द्रियका क्षय हो जाता है। श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी पड़ जाती है, जरा-सी बातमें उसे सर्दी लग जाती है; हमेशा छींका करता है और नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव होता है। खून मिले खरोंटके साथ नाकका जखम, नाक छिड़कनेपर उससे खून निकलता, नाक इतनी कस जाती है, कि वह साँस नहीं ले सकता। यह कई बार सर्दी लगनेपर बढ़ जाता है और उसे लगातार सर्दी लगा करती है, इसीलिये वह सर्दीका एक निश्चित रोगी बन जाता है। मैंने यह सार्वाङ्गिक दशाका वर्णन किया है। सबसे पहले रोगीपर विचार करना चाहिये। पहले उसकी धातु-प्रकृति जाननी चाहिये अर्थात् सम्पूर्ण रोगीके विषयमें क्या सत्य है? उसके बाद हमें पता लगाना चाहिये, कि उसके प्रत्येक अंशके सम्बन्धमें क्या सत्य है। नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली हमेशा एक जखमकी दशामें बनी रहती है या उसमें जखमकी प्रवणता रहती है, कभी-कभी तो ये छोटे जखम गहरे होते हैं।

जीभपर तथा समूचे मुँहमें मुख-क्षत छाले होते हैं। समूचा गालका गड़हा ऐसे छालोंसे भरा रहता है। मैंने रस-स्रावकी प्रवणता पहले ही बतायी है, सफेद मखमली या सफेद खाकीपन लिये या पीला खाकी रङ्गका रस स्राव, गल-क्षतसे, नाककी समस्त श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे तथा गलकोषसे होता है। ऐसा मालूम होता है, कि गलकोषपर मखमली खाकी दिखाई देनेवाली लकीरें पड़ी हैं। कण्ठके ये लक्षण और जखम होनेकी प्रवणताके साथ, कण्ठकी तकलीफोंपर बहु-विस्तृत फायदा होता है। जो धातु-प्रकृति बतायी गयी है, उसमें तालुमूलकी विवृद्धि (Enlargement of tonsils) में बहुत लाभदायक है, यदि तालुमूल रस-स्रावसे ढका है। भूखे, झुर्री-भरे रोगियोंके तालुमूल। हमलोग तालुमूल-प्रदाहके

ऐसे रोगी अकसर देख पाते हैं, जो आयोडिनकी दशाकी ओर बढ़ते जा रहे हैं। **पल्सेटिला**के रोगीकी तरह वह हमेशा गर्मीसे कष्ट पाया करता है, कभी-कभी आरम्भिक दशामें, कोई यान्त्रिक परिवर्त्तन होनेके पहले आप **पल्सेटिला**के भ्रममें आयोडिन दे सकते हैं ; पर यदि आप रोगीको ध्यानसे देखें, तो आप क्षीणताकी प्रवणता देखेंगे और यह भी देखेंगे, कि इसीपर दोनों दवाओंका सङ्ग किस तरह छूट जाता है। ये दोनों ही गर्म हैं, ये दोनों ही उपदाहशील हैं, ये दोनों ही मनोभावों— धारणाओंसे भरी हैं। **पल्सेटिला**का रोगी कहीं अधिक खाम-खयाली होता है, कहीं अधिक रोना, कहीं ज्यादा उदास रहता है और हमेशा भूख नहीं लगा करती ; पर आयोडिनका रोगी बहुत खाना चाहता है। "पल्सेटिला" के रोगीका मांस अकसर बढ़ता जाता है ; यद्यपि उसकी स्नायविकता बढ़ती जाती है। आयोडिनका रोगी पतला पड़ता जाता है, राक्षसी भूख रहती है, तृप्त ही नहीं होता, भूखसे कष्ट पाता रहता है, उसे कुछ घण्टेपर जरूर खाना चाहिये और भोजनके बाद बेहतर मालूम होता है, उसे प्यास भी खूब ज्यादा रहती है। यदि बहुत देरतक उसे भूखा रहना पड़ता है, तो चाहे कोई भी बीमारी क्यों न हो, उसका रोग बढ़ जायगा। उपवाससे आयोडिनकी कोई भी बीमारी बढ़ जायगी।

आयोडिनमें अति भोजनसे होनेवाला अजीर्ण रोग भी है। खाद्य खट्टा हो जाता है, खट्टी डकार, बहुत आध्मान, बहुत डकारें, पतली दस्त, अनपचके दस्त, पानीकी तरह, पनीरकी तरह मल और पाचन कमती हो जाता है, पाचन ज्यादा-से-ज्यादा कमजोर होता जाता है, यहाँतक कि वह जो कुछ खाता है, कुछ भी पाचन नहीं होता और इतनेपर भी खानेकी लालसा बढ़ती है। उसे वमन होता है और पतले दस्त होने लगते हैं और इस तरह वह दुबला होता जाता है ; क्योंकि यह दुतर्फा आगकी (like burning the candle at both ends) तरह हो जाता है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि वह बहुत कमजोर हो रहा है ; क्योंकि वह जो कुछ खाता है, उसका बहुत थोड़ा अंश समीकरण होता है। बाह्य पदार्थोंकी भाँति खाद्य-पदार्थोंकी उसके पाकाशय और आँतोंपर क्रिया होती है। अब इन तकलीफोंके जारी रहनेपर, यकृत और प्लीहा कड़े और वर्द्धित हो जाती हैं और रोगी कामला-रोग-ग्रस्त हो पड़ता है। मल कड़ा होता है, ढेला ढेला और सफेद या वर्ण-हीन या मिट्टीके रङ्गका, कभी-कभी कोमल और घसघसा भी होता है। इसमें बहुत थोड़ा या बिलकुल ही पित्त न रहना मालूम होता है। यह अवस्था क्रमशः बढ़ती जाती है, यहाँतक कि यकृतकी विवृद्धि (Hypertrophy of the liver) उत्पन्न हो जाती है। अन्तमें तलपेट दब जाता है तथा यकृतकी विवृद्धि और लसिका-ग्रन्थियोंकी विवृद्धि प्रकट हो जाती है। ये बहुत ही गांठ-गठीले और ऐसे होते हैं, जैसे कि मध्य अन्त्रके क्षय-रोग (Tabes mesenterica) में हो जाता है। मध्यान्त्रत्वक-ग्रन्थि (Mesenteric gland की टियुबरक्युलर दशामें अतिसार, क्षीणता, बहुत भूख, बहुत प्यास, स्तन-ग्रन्थिका फटना, चर्मका गो-मांसकी तरह सिकुड़ा दिखाई देना तथा पीला चेहराके लक्षणके साथ निर्देशित होता है। यदि आरम्भमें ही दवा पड़ जाती है, यान्त्रिक परिवर्त्तन आरम्भ होनेके पहले तो यह रोग-वृद्धिको रोक देगा और आरोग्य कर देगा।

पुराना सवेरे होनेवाला अतिसारके लिये क्षीण, कण्ठमाला-ग्रस्त बच्चोंमें बहुत ही लाभदायक दवा है।

जब धातुगत दशा वर्त्तमान रहती है, तो रोगीको विभिन्न प्रकारके दस्त होना सम्भव ही है। इसलिये, यदि आयोडिनकी धातुगत-प्रकृति प्राप्त हो, ऐसा रोगी हो, जिसमें दवासे मिलान करनेवाले बहुतसे सर्वाङ्गिक लक्षण प्राप्त हों, तो छोटा-सा अतिसारका लक्षण कोई महत्वपूर्ण नहीं रह जाता। रोगीकी धातुगत-प्रकृतिकी दशा वह है, जो "अद्भुत, बहुत कम दिखाई देनेवाली और विचित्र रहती है।" यदि इस दवाकी धातुगत-प्रकृति मिलती, तो किसी भी तरहका अतिसारका दस्त इससे आरोग्य हो जायगा। जब यह नया अतिसार रहता है तथा बलवान स्वास्थ्यवालेको होता है तथा अतिसारके सिवा और कुछ नहीं होता, तो भीतरी सूक्ष्म बातें जानना आवश्यक हो जाता है और अतिसारका चरित्रगत लक्षण बहुत कम मिलनेवाला "विचित्र" और "अद्भुत" लक्षण हो जाता।

वृद्धोंको पेशाब आप-से-आप होते रहना। इन समस्त धातुगत लक्षणोंके साथ पुरुषोंको आयोडिन तब उपयोगी होता है, जब अण्डकोष क्रमशः क्षीण हो जाते हैं, जब ध्वजभङ्ग रहता है, जब स्वप्न-दोष हो जाता है, जब कामेच्छा या काम शक्ति नष्ट हो जाती है या उसकी उपदाहित दशा रहती है या काम-वासनाकी एक बहुत बढ़ी हुई दशा। इसके अलावा जब अण्डकोष बढ़े और कड़े रहते हैं, कड़े तथा अन्य ग्रन्थियोंकी तरह अति वर्द्धित रहते हैं या जब अण्डकोष-प्रदाह अर्थात् अण्डकोषका बढ़ना और प्रदाह रहता है।

गर्भाशय और डिम्बकोषकी सूजन और कड़ापन। जैसी धातुगत प्रकृति हमने बतायी है, वैसी प्रकृतिवालोंका डिम्बाशयका अर्बुद आयोडिनने आरोग्य कर दिया है। इसने स्तन-ग्रन्थिकी क्षीणता आरोग्य कर दी है तथा क्षीण होते हुए रोगीके शरीरपर मांस बढ़ाकर उनको भी थुलथुला बना दिया है।

यह जो श्वेत-प्रदर उत्पन्न करता है, उसमें श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशाकी प्रकृति प्रकट होती है। जरायु-ग्रीवाकी सूजन और कड़ापनके साथ जरायु श्वेत-प्रदर, जरायु बढ़ा हुआ, अतिरजःकी प्रवृत्ति। श्वेत-प्रदरसे जंघामें घाव हो जाता है। आयोडिनका स्राव कटु रहता है। नाकका स्राव ओठकी खाल उधेड़ देता है, आँखका स्राव गालकी खाल उधेड़ देता है और योनिका स्राव जंघाकी खाल उधेड़ देता है। श्वेत-प्रदरका स्राव गाढ़ा और चिकना होता है और कभी-कभी खून मिला रहता है। "पुराना श्वेत-प्रदर, ऋतु-स्रावके समय बहुत ज्यादा होता है, जिससे जांघमें जखम हो जाता है और मांस उघड़ जाता है।"

इस दवामें प्रचण्ड खाँसीका लक्षण है। इसमें श्वासमें बहुत तकलीफ होती है, वक्षके लक्षणोंके साथ श्वास-कष्ट,- क्रूपकी तरह, इस कोमल प्रकृतिमें श्वास-रोधक खाँसी। हम फिर कहते हैं, कि यदि आप रोगीकी धातुगत-प्रकृति इन अनेक श्वास-यन्त्रके लक्षणोंको अध्ययन करते समय ध्यानमें न रखेंगे, तो आप उनसे काम न ले सकेंगे; क्योंकि वे बहुत अधिक हैं और इस तरहके बहुतसे उपसर्ग सम्मिलित रहते हैं तथा उनके व्यक्तिगत रूपसे छाँटनेमें आपको तकलीफ देंगे।

अब एक और भी बीमारी है, जिसपर हम आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। पुराने गठियाकी धातुवालोंमें, जिनकी सन्धियाँ वर्द्धित रहती हैं, यह इतिहास प्राप्त होता है, कि रोगीके शरीरपर भरपूर मांस था ; पर अब वे दुबले हो गये हैं और यद्यपि उन्हें भूख लगती है, खाद्य उनका कुछ उपकार नहीं करता। सन्धियाँ वर्द्धित और कोमल रहती हैं। बहुतसे गठियाकी धातुवाले गर्म कमरेकी इच्छा करते हैं ; पर आयोडिनका रोगी एक ठण्डा कमरा चाहता है। उनकी सन्धियोंमें दर्द होता है तथा बिछावनकी गर्मीसे दर्द बढ़ जाता है। उसे ठण्डे कमरेमें आनन्द मिलता है तथा खुली हवामें रहना चाहता है। उसकी दुर्बलता धीरे-धीरे बढ़ती ही जाती है, उसकी बीमारी इधर-उधर हटने और खानेपर साधारणतः उपशम हो जाता है, उसे शरीर और मनकी चिन्ता रहती है। आयोडिन उसके गठियाके आक्रमणको रोक देगा और कुछ समयतक उसे आरामसे रखेगा।

इपिकाकुआन्हा
(Ipecacuanha)

नयी बीमारीमें इपिकाकका एक विस्तृत कार्य-क्षेत्र दिखाई देता है। इसकी बहुतसी नयी बीमारियाँ मिचली और **वमन**के साथ आरम्भ होता है। ज्वरावस्था पीठ और कन्धोंके बीचमें दर्दके साथ आरम्भ होती है, यह दर्द पीठमें नीचेकी ओर फैलता है, मानो पीठ टूट जायगी। सर्दीके साथ या बिना ठण्डकके ही बहुत ज्यादा बोखार, पित्तका वमन और शायद ही कभी किसी तरहकी प्यास रहती है। यह इपिकाकके ज्वर या पाकाशयिक कष्ट या सविराम ज्वरका जाड़ा या पित्तज आक्रमणोंका साधारण दृश्य है।

पाकाशय गड़बड़ाया रहता है। पाकाशयमें भरापनका भाव, पाकाशयमें और पाकाशयके नीचे, काटनेकी तरह दर्द, जो बायेंसे दाहिनी ओर जाता है। शूलका काटनेकी तरह दर्द बायेंसे दाहिनी ओर जाता है। रोगी तबतक हिल डोल नहीं सकता या तबतक सांस नहीं ले सकता, जबतक दर्द गायब नहीं हो जाता। यह उसे एक जगह, मानो अड़ा देता है और इस तरह पाकाशय प्रदेशमें पैदा होता है, मानो छुरी मारी जा रही है अथवा नाभीके ऊपर होता है, जो दाहिनी ओरसे बायीं ओर जाता है और इसके साथ ही सुस्ती और मिचली रहती है।

इपिकाककी सभी बीमारियोंमें कुछ-न-कुछ **मिचली** रहती है, थोड़ा-सा भी दर्द और तकलीफके साथ मिचली रहती है। रोग पाकाशयमें ही अपना केन्द्र बनाता दिखाई देता है, जिससे मिचली पैदा हो जाती है। लगातार मिचली और ओकाई रहती है। खाँसीसे भी मिचली और वमन होता है। यह खाँसी सूखी, सुरसुरी, तङ्ग करनेवाली और श्वास-रोधक रहती है, इसके साथ ही मिचली और वमन भी सम्मिलित रहता है। जबतक उसका चेहरा लाल नहीं हो जाता, तबतक खाँसता रहता है और इसके बाद उसका श्वास-रोध होता है और मुँह बन्द हो जाता है। किसी भी स्थानसे थोड़ा भी रक्त निकलनेपर

मिचली, मूर्च्छा और धसते जानेका भाव आ जाता है। इसीलिये जरायुसे रक्त-स्रावमें इसकी उपयोगिता है ; मिचलीके साथ चमकीला लाल रक्त निकलता है, थोड़ेसे भी रक्त-स्रावके साथ मूर्च्छा या बेहोशी रहती है ; पर इस दवाकी सभी बीमारियोंमें हमेशा बहुत ज्यादा मिचली बनी रहती है। यद्यपि कभी-कभी प्यास रहती है ; पर ज्यादाकर प्यास नहीं रहती। इपिकाक जब अपना सर्वोत्तम कार्य करता है, तो प्यास नहीं रहती। इपिकाकके ज्वरके साथ या जाड़ेके साथ माथेके पिछले भागमें दर्द हो सकता है ; एक कुचल जानेकी तरह दर्द, माथेके भीतर और गर्दनके पिछले भागमें और कभी-कभी पीठमें नीचेकी ओर रहता है और गर्दन, पीठकी पेशियोंमें खींचन रहती है। माथेमें रक्त-सञ्चयी भरापन, चूर-चूर हो जानेका भाव, माथेमें तथा माथेके पिछले भागमें रहता है, समूचे माथेमें यन्त्रणा रहती है और दर्दसे भरा रहता है।

इपिकाकमें कभी-कभी **आर्सेनिक**की तरह बेचैनी रहती है ; परन्तु इपिकाककी सुस्ती दौराके रूपमें आती है और **आर्सेनिक**की सुस्ती लगातार बनी रहती है। आप इपिकाकके रोगीको बिछावनपर छटपटाते देखते हैं, जैसा कि वे उस समय करते हैं, जब उन्हें **रस टक्स**की जरूरत रहती है, करवट बदलता है, छटपटाता है और बेचैनीसे अपने हाथ-पैर हिलाता है। यह खासकर उस समय होता है, जब मेरुदण्ड कुछ-न-कुछ आक्रान्त रहता है। इपिकाकमें वह लक्षण है जो टङ्कारकी तरह मालूम होता है ; इसमें बहिरायाम टङ्कार (Opisthotonos) है तथा वमनके साथ मस्तिष्क-मेरुमज्जा प्रदाहकी (Cerebro-spinal meningitis), यह एक लाभदायक दवा है। जिसमें माथा और गर्दनके पिछले भागमें दर्द होता है, पीठकी पेशियोंमें खींचन होती है, जिससे माथा खिंचा रहता है। जब मस्तिष्क-मेरुमज्जा प्रदाहकी बीमारी यहाँतक जारी रहती है, कि रोगी क्षीण हो जाता है, जब दवाएँ केवल कुछ क्षणके लिये उपशामक मालूम होती हैं, समूचा शरीर पीछेकी ओर तना रहता है सभी चीजोंकी कै हो जाती है, यहाँतक कि सरल-से-सरल चीज जो पेटमें जाती है, वह भी निकल जाती है ; जीभ लाल और खाल उधड़ी रहती है और लगातार मिचली और पित्तका वमन होता है, इपिकाक इसे आरोग्य कर देता। पाकाशय-प्रदाहका जटिल-से-जटिल रोगी, जिसमें एक बून्द भी पानी नहीं ठहरता, इसने आरोग्य किया है। पाकाशयमें जो चीज जाती है, उसीका वमन हो जाता है, लगातार मुँह भर आता है, पाकाशयमें तेज दर्द होता है, पीठमें दर्द, कन्धेके नीचे दर्द, मानो यह टूट जायगा। पित्तका वमन, लगातार मिचली और बहुत ज्यादा सुस्ती। उपदाहित पाकाशय, यह उसको भी आरोग्य करता है, जब तलपेट तना और असहिष्णु रहता है, एक आध्मानकी दशा, जब पित्तका वमन होता है। बहुव्यापक रक्तामाशयकी इपिकाक एक लाभदायक औषधि प्रमाणित हुई है, जब कि रोगीको लगातार पाखानेमें बैठे रहना पड़ता है और जरा-सा लसदार मल होता है या थोड़ा सा चमकीला लाल रक्त, आँतोंके निम्न अंश, मलान्त्र और वृहदन्त्रका प्रदाह। भयानक कूंथन होती है और जलन तथा लगातार पाखाना लगा रहता है, पर थोड़ा-सा रक्त या आम निकलती है। इसके साथ ही बराबर मिचली रहती है, पाखानेके समय काँखनेसे इतना दर्द होता है, कि मिचली होने लगती है और उसे पित्तका वमन होता

है। कभी-कभी तो सारा परिवार इससे आक्रान्त रहता है, यह सम्पूर्ण उपत्यकामें फैल जाता है और बहुव्यापक रूपमें हो जाता है, पर यह साधारणतः स्थानीय रोग रहता है। बच्चोंकी जब हैजाकी तरह अतिसार हो जाता है तथा उस रोगका अन्त रक्तामाशयकी दशामें होता है, जब लगातार कूथन रहती है और थोड़ी-सी खून मिली आम निकलती है, बच्चा जो कुछ खाता है उसीका कै हो जाती है, मिचली, वमन, सुस्ती और बहुत पीली रहता है तो यह निर्देशित होता है। यह उस दशाके लिये भी उपयोगी होता है, जब मल कुछ-न-कुछ ज्यादा और हरा रहता है और बच्चोंको बार-बार बहुत ज्यादा मात्रामें हरी कीचकी तरह मल निकलता है। पाखाना फिरते समय बहुत चिल्लाता है; बहुत जोर लगाता है और हरा क्लेद निकलता है या हरी क्लेदकी कै होती है तथा हरी दहीकी तरह वमन होता है, दूध हरा हो जाता है और वमन हो जाता है।

इपिकाककी वक्षकी बीमारियाँ भी मजेदार है। खासकर बच्चोंका तो इपिकाक दोस्त है तथा बचपनके फुसफुस-प्रदाह (Bronchitis) की बीमारीमें साधारणतः इसका प्रयोग होता है। अमूमन होनेवाली बुरी सर्दी जिसका अन्त बच्चोंमें वक्ष-रोगमें होता है, वह ब्राङ्काइटिस है। बच्चोंको असली न्युमोनिया तो बहुत ही कम होता है, मोटी घरघराहटके साथ ब्राङ्काइटिस ही होती है; बच्चा खाँसता है, ओकाई और श्वासरोध होता है और ऐसी मोटी घरघराहट रहती है, जो समूचे कमरेमें सुन पड़ती है और बीमारी कुछ तेजीसे आ पहुँचती है। बच्चा पीला हो रहा है, भयंकर रूपसे बीमार दिखायी देता है और कभी तो बहुत घबड़ाया मालूम होता है। नाक इस तरह भीतरकी ओर खिंच जाती है, मानो वह खतरनाक बीमारी है और श्वास-प्रश्वास भी खतरनाक बीमारीकी तरह ही मालूम होती है। कभी-कभी इपिकाक इसे सुधारकर बहुत सरल रोग बना देगा, सर्दीको तोड़ देना तथा बच्चेको आरोग्य कर देगा। पुरानी पुस्तकोंमें बच्चोंको न्युमोनियाका एक विस्तृत और अलग ही बयान है और वे लक्षण इपिकाकके ही थे। वक्षकी बीमारियोंमें जब आप इपिकाक और **एण्टिम-टार्ट**का एक साथ अध्ययन करेंगे तो आपको बहुत अधिक लक्षण सादृश्य दिखायी देंगे। यदि आप इन दोनोंका एक साथ अध्ययन करेंगे तो आप कहेंगे—"आप इनका कैसे प्रभेद करेंगे, इन दोनोंमें ही घरघराहटवाली खाँसी और श्वास है और दोनोंमें ही वमन है।" हाँ इपिकाकके लक्षण उपदाहवाले स्तरसे मिलते हैं, जब कि **टार्टर एमेटिक**के लक्षण शिथिलताकी दशामें आते हैं अर्थात् इपिकाकके लक्षण तेजीसे उत्पन्न होते हैं, नये लक्षणोंके रूपमें आते हैं, पर **टार्टर एमेटिक**के लक्षण धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं। चौबीस घण्टोंके भीतर पैदा होनेवाले लक्षणके लिये **टार्टर एमेटिक**का बीमारीके लिये तो शायद ही कभी प्रयोग होता है या कम-से-कम **टार्टर एमेटिक**के जो लक्षण चौबीस घण्टोंमें उत्पन्न होते हैं, वे इस श्रेणीके नहीं हैं। यह लक्षण-समूह कई दिन बाद आते हैं, ब्राङ्काइटिसके अन्तमें आते हैं, जब फेफड़ेको पक्षाघात होनेकी सम्भावना रहती है, उपदाहकी दशामें नहीं, उपदाहसे श्वास-कष्टमें नहीं, उस ढङ्गके श्वास-रोधमें नहीं, बल्कि बलगमके कारण श्वास-रोध और फेफड़ेकी पक्षाघातकी सम्भावनाके कारण। जब फेफड़े इतने कमजोर हो जाते हैं, कि बलगम निकल नहीं सकता, तभी सूखी घरघराहट होती है; इसके बाद बहुत क्लान्ति आती है, मृत्युकी

तरह चेहरा पीला हो जाता है और नथुने खिच जाते हैं। हम देखते हैं कि ये दोनों दवाएँ एक समान नहीं दिखाई देतीं। यदि इन दोनों दवाओंकी गतिपर हम विचार करें, तो मालूम हो जायगा, कि रोगमें प्रभेद है। ऐसी कोई बात नहीं है, कि ये स्वरोंकी दवाएँ हैं, यद्यपि वे करती हैं, पर बात यह है, कि इपिकाक अपने उपसर्ग तेजीसे उत्पन्न करता है और जल्दीसे सङ्कट-काल ला देता है और **ऐण्टिम-टार्ट** अपना लक्षण धीरे-धीरे उत्पन्न करता है और बहुत दिन बाद सङ्कट-काल लाता है।

आप हूपिङ्ग खाँसीमें इपिकाककी कीमत देख सकते हैं; क्योंकि इसमें भी आवेशिक प्रकृति है। लाल चेहरा, वमन और खाँसीके कारण मुँह बन्द हो जाना। लाल चेहरा, प्यासका न रहना, प्रचण्ड हूपिङ्ग खाँसी, अकड़नके साथ, मुँह भर आनेके साथ और जो कुछ वह खाता है, उन सबका वमन हो जाना—ये ही लक्षण हैं, जो आपको अमूमन मिलेंगे।

मैंने रक्त-स्रावकी ओर इशारा किया है और इनसे इपिकाकका एक विस्तृत क्षेत्र तैयार हो जाता है। मैं तो इपिकाकके बिना चिकित्सा नहीं कर सकता; क्योंकि इसका रक्त-स्रावमें इतना अधिक महत्व है। जब मैं रक्त-स्राव कहता हूँ, तो इसका मतलब नस कट जानेसे नहीं है, मेरा मतलब उस रक्त-स्रावसे नहीं है, जो अस्त्र-चिकित्साके कारण होता है; मेरा मतलब है, जैसे जरायुसे रक्त-स्राव, मूत्रपिण्डसे, आँतोंसे, पाकाशयसे, फेफड़ोंसे रक्त स्राव। आपको रक्त-स्रावकी अपनी दवाएँ जान रखनी चाहिये; यदि आप नहीं जानेंगे, तो आपको बाध्य होकर शस्त्रोंके उपयोगपर निर्भर करना पड़ेगा; पर अच्छी तरह जानकार होमियोपैथ उसके बिना ही काम कर सकता है। जटिल से-जटिल प्रकारके जरायुके रक्त-स्रावमें होमियोपैथ चिकित्सक बिना यन्त्रोंसे काम लिये ही काम कर सकता है, जब कि यन्त्रवाले उपायोंसे रक्त-स्राव जारी हो जाता है। इससे जरायुके अनियमित सङ्कोचनसे कोई सम्बन्ध नहीं है, प्रसवान्तिक स्राव रुक जानेवाली दशासे इसका सम्बन्ध नहीं है या जब जरायुमें कोई बाहरी पदार्थ रहता है; क्योंकि ऐसी दशाओंमें हाथसे चिकित्साकी आवश्यकता पड़ती है। इसका पार्थक्य निर्णय कर लेना चाहिये; पर जब हमें केवल शुद्ध गतिशील तत्वपर विचार करना पड़ता है। केवल और शुद्ध एक उस शिथिल पटलपर विचार करना पड़ता है, जिससे रक्त-स्राव हो रहा है, तो यही एक दवा है, जो ठीक-ठीक कार्य करेगी। जब जरायुसे लगातार रक्त चूता रहता है; पर रह-रहकर स्राव झोंकसे निकलने लगता है और प्रत्येक बार झोंकसे लाल रक्त निकलनेपर उस स्त्रीको ऐसा मालूम होता है, कि वह मूर्च्छित हो जायगी या वह हाँफने लगती है; पर जितनी मात्रामें रक्त निकलता है, उससे इतनी सुस्ती नहीं आ सकती। मिचली मूर्च्छा, पीलापन नहीं आ सकता तो इपिकाक ही उसकी दवा है। जब चमकीले लाल रक्तके निकलनेके साथ अत्यधिक मृत्यु-भाव रहता है, तो **ऐकोनाइट** दवा रहती है। यदि आपकी रोगिनीका प्रसवकालमें माथा गर्म है, बरफकी तरह ठण्डे पानीकी अदम्य प्यास है और प्रसवके बाद सभी बातें कायदेसे हुई हैं, फूल भी निकल आया है और यद्यपि आप किसी तरह भी ऐसे रक्त-स्रावकी आशङ्का नहीं कर सकते, न कोई करण ही रहता है, तथापि यह होने लगता है। करीब-करीब सदा ही **फास्फोरस** इसकी दवा होगी। इन स्वास्थ्य-भङ्ग, दुबली, कोमल

स्त्रियोंको, जो हमेशा तापका कष्ट उठाया करती हैं, जो अपना ओढ़ना उतार देना चाहती हैं तथा ठण्डी रहना चाहती हैं, जिनके जरायुसे रक्त-स्रावकी प्रवणता रहती है और अब आशङ्काप्रद रक्त-स्राव होने लगा है या तो थक्के निकलते हैं या सिर्फ काला पतला रक्त चूता रहता है, तो आप **सिकेलि**के बिना उसे आरोग्य नहीं कर सकते। इन दवाओंमेंसे किसी एककी भी एक खुराक जबानपर पड़ते ही जबर्दस्त दवाओंकी बड़ी-बड़ी खुराकोंसे कहीं जल्दी रक्त-स्राव आरोग्य कर देगा। इतना जल्दी रक्त-स्राव रुक जायगा, कि आरम्भिक अनुभवमें आप चकित हो जायँगे। यदि यह सम्भव नहीं है, तो आप आश्चर्य करेंगे, कि यह आप-से-आप रुक गया। जब किसी स्त्रीको सर्दी लग जाती है या किसी तरहके मानसिक आघात प्राप्त होकर, बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव होने लगता है, तो इपिकाक दवा है। ऐसी स्त्रियोंको, जिन्हें खासकर मासिक रजःस्रावके समय बहुत ज्यादा जरायुसे रक्त-स्राव नहीं होता, वह इसे देखकर डर उठती है; क्योंकि ऐसा कभी पहले उसे नहीं हुआ था और यह स्राव सम्भव है, कि कई दिनोंतक जारी रहे, साथ ही कमजोरी भी रहे। थोड़ा-सा भी रक्त निकलनेपर उसे ऐसा मालूम होता है, मानो सब शक्ति चली गयी। इपिकाक इसे आरोग्य कर देगा और मासिक स्रावको स्वाभाविक अवस्थामें ला देगा। सौभाग्यकी बात है, कि प्रकृतिमें रक्त-स्राव-रोध प्रवणता है, यह हमेशा ही लाभदायक है। ऐसी बहुत-सी दवाएँ हैं, जो रक्त-स्रावको रोकती हैं और इन्हें आपको हमेशा याद रखना चाहिये। ये जरूरतपर काम देती हैं। प्रचण्ड लक्षण और प्रचण्ड आक्रमणोंमें काम करनेवाली दवाओंको भी आपको जान रखना चाहिये। इपिकाक रक्त-स्रावसे भरा है। बड़े-बड़े रक्तके थक्कोंका वमन, जख्मके कारण लगातार रक्तका वमन। रक्त-स्रावका प्रचण्ड आक्रमण होनेवाले व्यक्तियोंमें, जिन्हें सहजमें ही रक्त-स्राव होता है, जिन्हें रक्त-स्रावकी 'प्रवणता रहती है, लक्षण मिलनेपर सामयिक रूपसे इपिक.क रक्त-स्राव रोक रखेगा।

मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें, पीठमें तेज दर्द, खोंचा मारनेकी तरह दर्द, बार-बार पेशाब लगना, पेशाबमें रक्त और छोटे-छोटे रक्तके थक्के रहते हैं। रक्तके कारण पेशाब बहुत लाल रहता है, जो बर्त्तनके पेंदेमें बैठ जाता है और समूचे पाखानेकी जगहपर रक्तकी तही जम जाती है, जिसकी मोटाई छुरीके फलकी तरह होती है। उस बर्त्तनके प्रत्येक पाइण्ट पेशाबमें, बर्त्तनमें रक्तका वही आवरण रहेगा। मूत्रपिण्डके दर्दके प्रत्येक आक्रमणके साथ पेशाबकी वही दशा बनी रहती है। इपिकाक इस रक्त-स्रावको रोक देगा। यह सच है कि जब रोगीको यहाँतक वमन होता है, कि वे रक्त-हीन हो जाते हैं और शोथ हो जाता है। इपिकाक इस अवस्थाकी दवा नहीं होती। इसका स्वाभाविक अनुगामी तब **चायना** होता है, जो रोगीको सोरानाशक दवाकी जरूरतवाली अवस्थामें ला देता है।

इसके बाद "सर्दी" है। बच्चोंको सहज, साधारण नाककी सर्दी। जब नाकमें सर्दी बैठ जाती है, रातमें नाक बन्द हो जाती है या जब अवस्था प्राप्तोंको नाक बहुत बन्द होनेके साथ सर्दी होती है, नाक छिड़कनेपर श्लेष्मा और रक्त निकलता है, बहुत छींकें आती हैं तथा सर्दी और भी नीचे उतर जाती है तथा स्वर-भङ्ग हो जाता है, जो टेंटुआमें खाल उधेड़नेके साथ फैल जाती है अन्तमें श्वास-रोधके साथ श्वासोपनलियोंमें चली जाती है और

वक्षमें बैठ जाती है, तो इस समय इपिकाकपर ध्यान दीजिये। इपिकाककी सर्दी अकसर नाकसे आरम्भ होती है और बहुत तेजीसे वक्षमें फैल जाती है। नाककी इन सर्दियोंके साथ चमकीले लाल रक्तका बहुत ज्यादा स्राव होता है, जितनी ही बार उसे नाकमें सर्दी लगती है, उसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है; सर्दीके साथ नाकसे रक्त-स्राव होनेकी एक प्रवणता। इपिकाकमें श्लैष्मिक-झिल्लियोंपर जो प्रदाह उत्पन्न हो जाता है, वह भी बहुत प्रचण्ड होता है। एकाएक उपदाह हो जाता है और इतनी जल्दी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रादाहित हो उठती है, कि वह स्थान बैंगनी हो जाता है, फूल जाता है और तब रक्त-स्राव ही आराम पहुँचानेका स्वाभाविक उपाय मालूम होता है। नाक रुकना और घ्राण-शक्तिका क्षय, नाक इतनी रुक जाती है, कि वह उससे साँस नहीं ले सकता।

माथेके उपसर्ग, सर्दी, हूपिङ्ग खाँसी, शीत और बहुतसे प्रादाहित रोगोंके साथ चेहरा तमतमा उठता है, चमकीला लाल हो जाता है या नीलापन लिये लाल हो जाता है तथा ओंठ नीले हो जाते हैं; जाड़ेके साथ ओंठ और नाखून नीले हो जाते हैं। शीत बहुत ही प्रचण्ड होता है कभी-कभी तो रक्तसञ्चयी प्रकृतिका होता है और अकसर कँपकँपी होती है। समूचा शरीर काँपता और दाँत कटकटाते हैं।

दमाके ऐसे पुराने दुरारोग्य रोगी भी होते हैं, जिन्हें इपिकाकसे उपशम होता है। वे इसकी शीशी अपने साथ रखते हैं, वे कहते हैं, कि इससे उन्हें बहुत आराम पहुँचाता है। तर, दमा, दमावाली ब्राङ्काइटिस (Asthmatic Bronchitis) में यह लाभ करता है, जब उन्हें तर मौसममें तथा एकाएक ऋतु-परिवर्त्तनसे कष्ट बढ़ता है, प्रत्येक सर्दी उनके इस ब्राङ्काइटिसको जगा देती है, खाँसनेके समय श्वास-रोध होता है, ओकाई आती है या थोड़ा-सा खून थूक देता है। श्वासके लिये उसे रात-रातभर बैठे रहना पड़ता है तथा इसका आक्रमण साधारण और बार-बार होता है। ये रोगी कहते हैं, कि इपिकाकसे उन्हें आराम पहुँचता है और इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, कि इपिकाक दमाकी तरह श्वासकी उस दशामें आराम पहुँचाता है, क्योंकि उसमें ऐसे लक्षण हैं। इनमेंसे कुछ रोगी दुरारोग्य रहते हैं, वे अपने जीवनमें बहुत आगे बढ़े रहते हैं। यदि अधिक बुद्धिमत्तासे इस दवाका प्रयोग किया जाय, तो यह ज्यादा आराम पहुँचायेगी। इपिकाकके चूर्णकी एक खुराक आक्रमणको तोड़ देगी, जिससे रोगीको आराम पहुँचेगा और फिर वह साधारण दमाके ढङ्गमें तब तक रहेगा, जबतक दूसरी बार सर्दी न लगेगी। खाँसी घरघराहट भरी और दमाकी तरह होती है।

अकड़नकी दवाके रूपमें इपिकाक भरपूर विख्यात नहीं है। गर्भावस्थामें अकड़न। हूपिङ्ग खाँसीके साथ अकड़न, डरावनी ऐंठन, जिससे सम्पूर्ण वाम भाग आक्रान्त हो जाता है और जिसके बाद पक्षाघात-ग्रस्त हो जाता है। बच्चे तथा हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रीयोंकी अकड़न। धनुष्टङ्कार, शरीरका कड़ा पड़ जाना, चेहरा लाल और तमतमाया। ये इपिकाकके सुदृढ़ स्वरूप हैं और इनपर अच्छी तरह विचार नहीं किया गया है और इस दवामें ये दशाएँ इतना प्रधान हैं, यह भी विख्यात नहीं है। ऐंठनमें **बेलेडोना**की तरहकी दवाओंका

ही पुस्तकोंमें अधिक जिक्र पाया जाता है, इतनेपर भी ऐंठनोंके लिये और मेरुदण्डपर इसकी क्रियाके लिये इपिकाकका अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है।

दबे हुए उद्भेदोंके लक्षण बहुत साधारणतया इपिकाककी बतायेंगे। जब उद्भेद बाहर नहीं निकलते या सर्दी लगकर उद्भेद दब जाते हैं, कभी-कभी पाकाशय और आँतोंकी नयी बीमारियाँ हो जाती हैं तथा दबे हुए उद्भेदोंसे सर्दी वक्षमें बैठ जाती है। इपिकाक विसर्पको भी आरोग्य कर देगा, जब वमन, शीत, पीठमें दर्द, पिपासाहीनता और बहुत ज्यादा मिचली रहेगी।

जब आरक्त ज्वर (Scarlet fever) के दाने बहुत धीरे-धीरे निकलते हैं, तो मिचली और वमनके लिये अकसर इपिकाक काफी होता है। दाने बाहर निकल आनेके बदले, जैसा कि होना चाहिये, इपिकाकके लक्षण पाकाशयमें मिचली और वमनके रूपमें आ जाते हैं। इपिकाक मिचली और वमनको रोक देगा, उद्भेद बाहर निकाल देगा और बीमारीकी गति मृदु हो जायगी।

कैलि बाइक्रोमिकम
(Kali Bichromicum)

बहुत ज्यादा डोरीकी तरह सब श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे श्लेष्मा निकलना ही बहुतसे चिकित्सक इस दवाकी पहचान मानते हैं, परन्तु यह सूजन, ताप और लालीके साथ सन्धियोंके वातज रोगोंकी एक महत्वपूर्ण दवा है, जब ये दशाएँ एक सन्धिसे दूसरी सन्धिपर चक्कर लगाया करती है। समूचे शरीरकी हड्डियाँ कुचली सी मालूम होती हैं और इसके उपसर्गोंमें एक अस्थिक्षत भी है। इस दवाका प्रत्यक्ष स्वरूप यह है, कि श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके लक्षण और वातज वेदनायें पर्यायक्रमसे हुआ करती हैं। श्लैश्मिक-झिल्लीसे रस-स्राव, बहुत कुछ क्रुपकी तरह, स्वरयन्त्र, टेंटुआ और मलनालीमें प्राप्त होता है। इसलिये यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि यह डिपथीरियाकी एक बहुत ही लाभदायक दवा हो गई है। यह भी अन्य **काली** लवणोंकी तरह दुबला करता है। समूची दवामें धातु-विकारकी दशा या जखमके साथ मारात्मक रोग प्राप्त होते हैं और खासकर इसका प्रयोग तब होता है जब जखमका समय मौजूद रहता है। जखम इस दवाका एक अजूबा स्वरूप है। इसके जखम गहरे होते हैं, कहा जाता है, मानो छेद दिया गया है और बहुत लाल रहते हैं। अन्य **कालियों** (Kalis) की तरह ही इस दवामें भी गठियाका दशाएँ हैं। सन्धियोंमें फाड़नेकी तरह इसका दर्द खासकर **कास्टिकम**की तरह है। उपदंशकी बहुत बढ़ी हुई दशाको इसने आरोग्य किया है। इसमें **कैलि-कार्ब**की तरह तेज सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। इसका एक खास रूप है—इतनी छोटी जगहोंपर कि अंगूठेकी नोक रख दी जा सके, बहुत तेज दर्द होता है। इसमें एक स्थानसे दूसरेमें भ्रमण करनेवाला दर्द तथा **एक सन्धिसे दूसरी सन्धिपर जानेवाला वात रोग होता है।** सभी हिस्सोंमें दर्द होता है। कभी-कभी तो

दर्द बहुत प्रचण्ड होता है ; कभी खोंचा मारनेकी तरह, कभी सुई गड़नेकी तरह, डङ्क मारनेकी तरह, फिर यन्त्रणा। इस दवाका एक बहुत ही स्पष्ट लक्षण है—जलन। दर्द एकाएक तेजीसे पैदा होता है और आकस्मिक रूपसे चला जाता है।

रोगीको सर्दी सहन नहीं होती। जीवनी-शक्तिमें तापका अभाव रहता है। वास्तवमें वह कपड़ा ओढ़े और गरमाये रहना चाहता है और उसके बहुतसे उपसर्ग जब वह पलङ्गपर गरमाये रहता है, तो बहुत अच्छे रहते हैं। उसके सभी दर्द और उसकी खाँसी बिछावनकी गरमीसे आराम होते हैं और इतनेपर भी दूसरे उपसर्ग, वातज दशाओंकी तरह हैं, जो गर्म ऋतुमें उत्पन्न होते हैं। खाँसी गर्म ऋतुमें अच्छी रहती है और जाड़ेमें बदतर। स्वर-यन्त्र और टेंटुआकी श्लैष्मिक झिल्ली-प्रदाहकी दशाएँ जाड़ेमें बदतर रहती हैं, खासकर सर्द, तर ऋतुमें, **कैल्के-फास**की तरह, जब कि बर्फ पिघलती है। सर्द हवा सहन नहीं होती। यह याद रखना होगा कि **कास्टिकम**के रोगीको भी सर्दी, सूखी हवा सहन नहीं होती। **कालियोंके** रोगीको सर्दी सूखी ऋतु सहन नहीं होती, पर कैलि-बाइक्रोमकी कण्ठकी तकलीफें जाड़ा, सर्दी और तर ऋतुमें बराबर जारी रहती हैं तथा तर और सीड़-भरी हवामें बदतर रहती है। यह सेप्टिक और रस-रक्त बिगड़नेवाली (Zymotic) ज्वरोंकी बहुत लाभदायक दवा है। **कैलि-कार्ब**की तरह २ या ३ बजे सवेरे इसके बहुतसे लक्षण बढ़ जाते हैं। इसके बहुत-से लक्षण सवेरे बदतर हो जाते हैं ; यद्यपि कुछ लक्षण रातमें पैदा होते हैं। कैलि-बाइक्रोमिकमका एक स्पष्ट लक्षण है, बहुत कमजोरी और क्लान्तिका एक भाव, जब दर्द चला जाता है। यदि यह प्रत्यङ्गोंमें रहता है, तो प्रत्यङ्ग बहुत ही क्लान्त मालूम होते हैं। बहुत सुखी और ठण्डा पसीना। इसमें ठीक बँधे समयपर नित्य स्नायुशूलका दर्द होता है, जिससे इसकी सामयिकता प्रकट होती है। अन्य **कालियों** (Kalis) की तरह इसने मृगी आरोग्य की है। अकड़नके समय मुँहमें डोरीकी तरह लार और श्लेष्माका स्रावके लक्षणपर मृगीमें इसका व्यवहार होता है। साधारणतः लक्षण, खासकर दर्द, हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाते हैं, पर गृध्रसी वात (Sciatica) और निम्न प्रत्यङ्गोंके कुछ अन्य दर्द हिलने-डोलनेसे अच्छे रहते हैं। रोगीके समूचे शरीरमें स्पन्दन होता है।

इस दवाकी मूल रूपमें परीक्षा हुई है, इसी वजहसे बहुत कम मानसिक लक्षण प्राप्त हुए हैं। मानसिक लक्षण प्रकट होनेके लिये इसकी शक्तिकृतकर्मोंमें परीक्षा होनी चाहिये।

इसमें प्रचण्ड सर-दर्द होता है और इसके सर-दर्दका बहुत कुछ सम्बन्ध श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहकी दशासे रहता है। कैलि-बाइक्रोमिकमके रोगीको कुछ-न-कुछ नाककी सर्दी हमेशा ही लगी रहती है और यदि उसे सर्द ऋतुकी हवा लग जाती है, तो सर्दीकी दशा सूखेपनमें बदल जाती है, तब प्रचण्ड सर-दर्द पैदा हो जाता है तथा नाककी सर्दीके समय भी सर-दर्द होता है। जब सर्दीका स्राव थोड़ा सा सूखता है, उस समय सर्दीके कालमें सर-दर्द। सर-दर्द अकसर धुँधला-दृष्टिके साथ उत्पन्न होता है, दर्द प्रचण्ड होता है।

गर्मीसे, खासकर गर्म पेयसे सर-दर्द अच्छा रहता है ; दवानेपर अच्छा रहता है ; झुकनेपर बदतर ; हिलने-डोलने या चलनेपर बदतर ; रातमें बदतर और उससे ज्यादा बदतर सवेरे। दर्द धमककी तरह, खोंचा मारने और जलनकी तरह होता है। सरमें चक्कर आनेके साथ सर-दर्द होता है, सर-दर्द अक्सर एक तरफ होता है। औपदंशिक सर-दर्दकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है। ललाटमें और आँखोंके ऊपर दर्द ; यदि ओकाई और वमनके साथ सर-दर्द हो तो यह और भी लाभ करता है ; दर्द जब किसी ऐसी जगहपर होता है, अंगूठेके सिरेसे ढँक रखी जा सकती है और बहुत तेज होता है, जब सर-दर्द समय बाँधकर सरमें चक्करके साथ होता है। यदि हवा बहुत सर्द नहीं होती तो खुली हवामें सर-दर्द कुछ घट जाता है।

इसने गाढ़ी, मोटी भारी पपड़ी जमनेवाला मस्तक-त्वचाका अकौता आरोग्य किया है, जिससे पीला गाढ़ा, गोंदकी तरह पदार्थ चूता है।

दिनकी रोशनीमें आलोकातङ्क पैदा हो जाता है। आँखोंके सामने चिनगारियाँ दिखायी देती हैं ; सर-दर्दके पहले धुँधली-दृष्टि, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, आँखोंको आक्रान्त करनेवाली वातज दशाएँ, इसलिये आँखोंकी वातज बीमारियाँ कहा जाता है। दानेदार पलकें, कनीनिकाका जखम, उसके भीतर स्पन्दन होनेके साथ जखम गहरा होता है। आँखें बहुत प्रादाहित और लाल रहती हैं, पलकें लाल और फूली रहती हैं, पलकों और आँखोंसे खून चूता है। आँखका कूप-सम्बन्धी प्रदाह। आँखोंमें जलन और खुजली। बहुत ज्यादा गाढ़ा श्लेष्मा निकलनेके साथ आँखोंकी श्लेष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। पलकोंके किनारे लाल और फूले रहते हैं। इसने चक्षु श्वेतपटलका मासांकुर, पलकोंकी सूजन और डोरीकी तरह श्लेष्माका स्राव आरोग्य किया है।

कानसे पीला, लसदार स्राव होता है, साथ ही सुई गड़नेकी तरह दर्द और कानोंमें फड़कन। छेद हो जानेके साथ मध्य कर्णमें पुराना पीव होना। कानपर अकौताके उद्भेद, सम्पूर्ण बाहरी कानमें खुजली।

नासा-पथके भी लक्षण बहुत अधिक हैं। इसमें सबसे प्रधान है, सर्दीके लक्षण। इसमें नयी और पुरानी दोनों ही प्रकारकी सर्दी है, जिसके साथ बहुत ज्यादा, गाढ़ा, लसदार, पीला या सफेद श्लेष्मा निकलता है। नाकसे बदबूदार गन्ध, नाकमें सूखापन रहनेके कारण बहुत तकलीफ होती है, गन्धका नष्ट हो जाना, गाढ़े, पीले श्लेष्मासे नाक रुक जाती है, जो इतना लसदार रहता है, कि नाक छिड़ककर निकाला नहीं जा सकता। इस श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशाके साथ नाककी जड़में कड़ा दर्द रहता है। सम्पूर्ण नाककी श्लैष्मिक-झिल्लीपर जखम पैदा हो जाता है। जखम खरोंट, श्लेष्मा-गुटिका बनती है, लगातार नाक छिड़कना पड़ता है ; पर निकलता कुछ भी नहीं ; पर अन्तमें बड़ी-सी हरी पपड़ी या खरोंट, नाकका ऊपरकी ओरसे आदर निकल पड़ती है। कभी-कभी वे पश्चात नासा-छिद्रको और खिंच जाती हैं। नासा-गह्वरमें जलन और टपक होती है। जब नासा-गह्वर श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाह और जखमकी इस दशामें रहता है, तो नाककी जड़से

चक्षु-वाह्य-कोणतक खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है, दोपहरके पहले भर। नाकके भीतरी भागमें असीम यन्त्रणा; साँसके साथ खींची हुई हवा गर्म मालूम होती है तथा उससे एक जलनका भाव पैदा हो जाता है। तर ऋतुमें उसकी नाकसे पानी बहता है और सर्दीकी दशा बढ़ जाती है। नाकमें जलन, खाल उधड़ जाना तथा पानीकी तरह स्राव उसी तरह होता है, जैसा नयी सर्दीमें। नाककी सर्दी तर रहती है, खाल उधेड़नेवाली, साथ ही गन्धशक्ति नष्ट हो जाती है; पुरानी दशामें नासास्थिमें छेद हो जाता है तथा सम्मुख-प्रनालीमें दबावकी तरह दर्द होता है, तब एक अद्भुत दशा देखनेमें आती है। नासा प्राचीरपर पपड़ी जमती है, जब उनको हटाया जाता है, तो आलोकातङ्क, धुँध दृष्टि हो जाती है, साथ ही सम्मुख कपालमें कड़ा दर्द होता है। जखमके कारण नासा-प्राचीर कभी-कभी नष्ट हो जाती है। नाकसे बहुत-सा गाढ़ा रक्त निकलता है। अब यदि ये दशाएँ उपदंशज रहती हैं, तो यह आरोग्य कर देता है। इसने नासार्बुद आरोग्य किया है। इसने नकड़ा आराम किया है।

चेहरेकी हड्डीमें अकसर बहुत दर्द होता है, इसके साथ ही गालकी अस्थिमें बहुत ही खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है। खाँसनेपर गालकी हड्डीमें दर्द सर्दीकी दशाके साथ कपोलास्थिकी **मर्क्युरियस**की तरह बहुत अधिक तकलीफ रहती है। इसने वृक्कक रोग आरोग्य किया है; इसने ओंठके जखम आरोग्य किये हैं। फूली हुई कर्णमूल-ग्रन्थि इसकी परीक्षाका स्वरूप है; इसने पीले रङ्गकी फुन्सियाँ आरोग्य की है।

जीभ चिकनी, चमकीली और कभी-कभी फटी रहती है। यह अकसर टाइफायडकी भाँतिके निम्न-रूपके ज्वरोंमें दिखाई देता है। जीभपर अकसर मैल-चढ़ी रहती है, मोटी और तलीमें पीली रहती है। जीभके सब काँटे जिह्वा-पटलपर खड़े हो जाते हैं, जिससे जीभ स्ट्राबेरी लाल जिह्वा की तरह दिखाई देता है। इसके अलावा जीभपर मोटा भूरा लेप चढ़ा रहता है। इसके परीक्षकको जीभको जड़में एक ऐसी अनुभूति थी, कि मानो केश अड़ा है, जिससे वह तङ्ग आ गया था। इसने जीभका जखम उत्पन्न और आरोग्य किया है, यहाँतक कि यह यदि उपदंशज रहता है, तो भी यह लाभदायक दवा होती है। जखम इतने गहरे रहते हैं, मानो छेद दिया गया है, साथ ही उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहता है।

मुँहमें बहुत सूखापन रहता है, डोरीकी तरह लार और श्लेष्मा निकलता है। मुँहमें कहींपर भी जखम, छालोंके गड़हे, मुँहकी छतके जखम, यहाँतक कि यदि ये उदंशज रहते हैं, तो भी यह बहुत लाभदायक होता है; गहरे, छेद कर देनेकी तरह जखम।

कण्ठके लक्षण भी बहुत ज्यादा रहते हैं। हम इसके कुछ अत्यन्त चरित्रगत लक्षण बतायेंगे। साधारणतः कण्ठका प्रदाह, जो उसके सभी तन्तुओंको आक्रान्त कर देता है, नाकतक फैल जाता है तथा नीचे स्वर-यन्त्रतक उतर जाता है, यहाँतक कि बहुत ऊँचे दर्जेके जखम, जिससे बहुत ज्यादा, डोरीकी तरह श्लेष्मा निकलता है इसने कण्ठके डिफ्थीरियाका रक्त-स्राव आरोग्य किया है, जब यह कण्ठमें ही अड़ा रहता है और जब कि यह स्वर-यन्त्रमें भी फैल जाता है। कैलि-बाइक्रोमके कण्ठका एक स्पष्ट लक्षण है, शोथ-ग्रस्थ उपजिह्वा। यह लक्षण **एपिस, कैलि-आयोड, लैकेसिस, म्यूरियेटिक एसिड, नाइट्रिक एसिड,**

फास्फोरस, सल्फरिक एसिड और टैबैकममें प्राप्त होता है। कण्ठमें गहरे जखम तथा तालुमूलमें कितने ही जखम। इतने ज्यादा जखम निकलते हैं, कि यह समूचे कोमल तालुको नष्ट कर देता है। तालुमूलका प्रदाह, जब वे फूले और लाल रहते हैं, जब गर्दन बहुत फूली रहती है, पीव होनेके साथ तालुमूलका प्रदाह। इस तरहके गलक्षतमें कानतक फैलनेवाला एक तरहका खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है। कण्ठमें बढ़ी हुई शिराएँ भी रहती हैं। जीभपर केश रहनेकी अनुभूतिकी तरह गलकोष और नाकमें भी अनुभूति होती है। सूखा, जलनकी अनुभूति तो कण्ठकी एक साधारण बात है। केलि-बाइक्रोमका एक ठीक चरित्रगत लक्षण है, यह जीभकी जड़में दर्द, जब वह बाहर निकाली जाती है। इसमें कण्ठसे बहुत रस-स्राव होता है, यह डिफ्थीरिया नहीं ; पर इसके अनुकूल ही है।

पाकाशयके लक्षण भी बहुत ज्यादा है, मांस खानेसे अनिच्छा रहती है और आश्चर्यकी बात है, कि शराब पीनेकी इच्छा होती है, जो उसे बीमार बना देती है, पतले दस्त आने लगते हैं। खाद्य पदार्थ पाकाशयमें एक बोझकी तरह पड़ा रहता है ; पाचन एकदम बन्द मालूम होता है। भोजनके बाद बोझकी तरह दबाव मालूम होता है और बहुत ही बदबूदार डकारें आती हैं। एकाएक मिचली पैदा हो जाती है ; कभी-कभी तो खानेके ही समय या खानेके बाद तुरन्त ही, सब खाया हुआ पदार्थ वमन कर देता है और यह इस तरह खट्टा रहता है, मानो यह बहुत तेजीसे खट्टा हो जाता है। इसीलिये खट्टे, अनपचे खाद्य, पित्त, तीता श्लेष्मा, रक्त, पीला श्लेष्मा और डोरीकी तरह श्लेष्माकी कै होती है। यह शराबियोंकी और बियर नामक शराब पीनेवालोंको मिचली और वमनकी बहुत ही लाभदायक दवा है। जब कि बियर पीनेवाला इस दशापर जा पहुँचता है, कि वह फिर बियर सहन नहीं कर सकता ; बल्कि उससे वह बीमार हो जाता है, कैलि-बाइक्रोम एक लाभदायक औषधि है। पाकाशयमें भी ठण्डक तथा घावकी तरह यन्त्रणा रहती है। यह पाकाशयकी जखमकी बहुत ही लाभदायक दवा है और जब यह जखम कर्कटीय (Cancerous) रहता है, तो यह दर्दमें आराम पहुँचाता है, वमनको रोक देता है और बहुत दिनोंतक रोगीको आरामसे रखता है। दूसरे शब्दोंमें ऐसा कहना चाहिये, कि यह उसका उपशामक होता है। पाकाशयके कुछ दर्द ऐसे भी होते हैं, जो खा लेनेपर घट जाते हैं, कभी-कभी मिचली भी घट जाती है ; पर यह एक अपवाद है। उसके पाकाशयमें एक मूर्च्छा-भाव रहता है, जिससे उसे अकसर खाना पड़ता है। पाकाशयकी पुरानी सर्दी एक सुदृढ़ उपसर्ग है और शायद यह एक ऐसी दशा है, जो अमूमन कैलि बाइक्रोमके रोगीमें प्राप्त होता है।

यकृतमें दर्द होता है, कड़ा संकोचनका दर्द जो कन्धोंतक फैल जाता है, यह **क्रोटेलस होरिडस**की तरह है। हिलने-डोलनेपर यकृतमें दर्द। यकृतमें धीमा यन्त्रणादायक दर्द। पित्त-पथरी सम्मिलित यकृत रोगकी यह एक लाभदायक दवा है। यह यकृतकी क्रिया ऐसी सुधार देता है, कि स्वस्थ पित्तबनने लगता है और पित्त-पथरी गल जाती है। हिलने-डोलनेपर यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और तिल्लीमें भी।

स्पर्श-कातरताके साथ तलपेट बहुत ही तना रहता है। सुई गड़ने और काटनेकी तरह दर्द होता है। भोजनके बाद, मिचलीके बाद, मिचलीके साथ तलपेट धँसते जानेका

भाव। इसके बाद वमन होता है, फिर पतले दस्त आने लगते हैं। इसी श्रेणीसे ये लक्षण अमूमन पैदा होते हैं। पाकाशय आंत्रिक रोगोंकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है। सान्निपातिक दशा (Typhoid condition) में आँतोंका जख्म। इस दवामें **सलफर**की तरह सवेरेके समय पतले दस्त आनेका लक्षण भी है इसमें यक्ष्मा रोगके पतले दस्त भी हैं। इसमें टाइफायड ज्वरका अतिसार है। पानीकी तरह दस्त। दस्त भूरे और पानीकी तरह होते हैं या ये काले पानीकी तरह हो सकते हैं। पाखानेके समय अकसर बहुत कूथन होती है। सवेरे दस्त आनेवाला संग्रहणी रोग (Chronic diarrhoea) **पेलो, चायना, गैम्बोजिया, लाइकोपोडियम, म्युरियेटिक एसिड** और **सल्फर**की तरह बियर नामक शराब पीनेके बाद अतिसार।

बहुत बार तो मिट्टीके रङ्गके दस्त आते हैं; फिर रक्तामाशयकी भाँति खून-मिले दस्त आते हैं। इसमें वात आराम हो जानेके बाद अतिसार और रक्तामाशय दोनों ही है। ऐसा मालूम होता है, कि वातज दशाएँ पर्यायक्रमसे अतिसारिक दशामें परिवर्त्तित होनेवाली रहती हैं। गर्म ऋतुमें होनेवाला अतिसार और रक्तामाशय इसमें है और जाड़ेमें इसमें वक्षकी तकलीफें तथा वायुपथकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह होता है। पाखाना होनेके पहले तलपेटमें दर्द होता है, पाखाना होनेके समय बहुत दर्द होता है, मरोड़ और कूथन। पाखानाके बाद इसमें **मर्क्युरियस**की भाँति कूथन है। इसमें कब्ज है, जिसमें कड़ा, गांठ-गांठ मल निकलता है और उस अंशमें तेज जलन होती है। पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें जलन। मलान्त्रकी स्थान-च्युति। सूखा कड़ा पाखाना होनेके बाद मलान्त्रमें बहुत जलन होती है। रोगीको ऐसा अनुभव होता है, मानो मलान्त्रमें एक बड़ी ठेपी लगी है तथा मलद्वारमें बहुत यन्त्रणा होती है। रोगीको बवासीरसे बहुत तकलीफ होती है, जिसका मसा पाखाना होनेके बाद निकल आता है और उसमें बहुत दर्द होता है।

खून-मिले पेशाबके साथ पीठमें दर्द। मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द तथा दिनके समय पेशाब लगनेके साथ मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें यन्त्रणा। मूत्रपिण्डमें यन्त्रणा होनेके साथ पेशाब रुका रहता है, पेशाबके साथ डोरीकी तरह श्लेष्मा पेशाब करनेके पहले गुदास्थिमें दर्द, जो पेशाब होनेके बाद आरोग्य हो जाता है। पेशाब करनेके समय नीगह्वर (Fossa Navicularis) में जलन।

पुरुषोंको कामेच्छा प्रायः नहीं रहती। लिङ्गके अन्तवाले स्थानमें बहुत जोरसे संकोचन या खिंचावका दर्द तथा विटप-स्थानमें बहुत खुजली होती है। गहरे छेदकी तरह शैङ्कर (गर्मीके घाव) बहुत कड़े, चलनेके समय मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। डोरीकी तरह, लसदार श्लेष्माका मूत्रनलीसे स्राव।

गर्मीके दिनोंमें बहुत अधिक शिथिलता इस दवामें रहनेके कारण यह खासकर स्त्रियोंको बहुत फायदा करती है। गर्मीके दिनोंमें उसे जरायुकी स्थान-च्युतिकी बीमारी हो जाती है, स्त्रियोंकी जरायुका अल्प-विवृद्धि (Sub-involution) की यह बहुत ही लाभदायक दवा है। मासिक ऋतु-स्रावमें अकसर झिल्ली रहती है, जिससे उसे तकलीफ होती है,

रजःस्राव बहुत जल्दी-जल्दी होता है, उस स्थानकी खाल उधेड़ देता है। भगोष्ठ फूल जाते और खुजलाते हैं। अन्य श्लैष्मिक-झिल्लीयोंकी सर्दीकी दशाकी भाँति पीला और डोरीको तरह श्वेत-प्रदरका स्राव होता है।

यदि दूसरे लक्षण मिलते हैं, तो गर्भावस्थाके वमनमें यह बहुत लाभ करता है और जब दूध सूतकी तरह हो जाता है, तब भी।

स्वर-यन्त्रसे सम्बन्ध रखनेवाले भी बहुतसे लक्षण हैं और सदाकी भाँति बहुत ज्यादा, गाढ़ा, डोरीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है। पुराना स्वर-भङ्ग, रुखी आवाज, सूखी खाँसी, स्वर-यन्त्रके फूल जानेका भाव और ऐसा अनुभव, होना मानो स्वर-यन्त्रमें एक चीथड़ा है। स्वर-यन्त्रकी सर्दी, क्रुप, साँस लेनेके समय खाँसी, श्लैष्मिक-झिल्लीकी सर्दी, क्रुप डिफ्थीरिया, जलन, खोंचा मारने और खाल उधेड़नेका स्वर यन्त्रमें भाव, टेंटुआमें सुरसुरी। अब ये सब लक्षण सर्दीमें, तर ऋतुमें और जाड़ेमें उत्पन्न होते हैं। इनके साथ ही बहुत खाँसी और वेचैनी रहती है; कभी-कभी ये लक्षण बिलकुल ही आराम हो जाते हैं और रातमें गर्म बिछावनपर उसे आराम मिलता है और सर्द ऋतुमें उसकी दशा हमेशा बदतर बनी रहती है, जब बर्फ गिरनेपर सर्द ऋतु आती है और जाड़ेभरतक ये लक्षण मौजूद रहते हैं। साँस लेनेके समय उसे बहुत सीटीजैसी आवाज होती है, टेंटुआकी द्वि-शाखाके पास कसावट, वक्षका एक चरित्रगत दर्द है, वक्षोस्थिसे लेकर पीठतकका दर्द, इसके साथ ही सर्दीकी दशा और खाँसी सम्मिलित रहती है। स्वर-यन्त्रमें और द्वि-शाखामें चुनचुनी होकर खाँसी आती है, सूखी, बार बार, कड़ी खाँसी, खाँसने और गहरी साँस लेनेके समय वक्षमें बहुत यन्त्रणा। पीठके भीतरसे वक्षोस्थिमें दर्दके साथ खाँसी। वक्षमें सुई गड़नेके साथ खाँसी। जोरकी आवाजका कड़ी खाँसी। जब वह सवेरे सोकर उठता है, तो उसे यही कड़ी खाँसी आने लगती है। उसे अकसर लेटे रहनेपर रोग ह्रास होता है तथा गर्म बिछावनसे रोग-ह्रास होता है। खुले रहनेपर, खुली हवा लगनेपर, खानेके बाद बदतर हो जाता है तथा गहरी साँस लेनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है और बिछावनमें गर्म होनेपर रोग-ह्रास होता है। ठण्डी हवा लगनेपर उपदाह और खाँसी बढ़ जाती है; खाँसी कभी-कभी श्वास-रोधक भी होती है, कभी-कभी स्वर-भङ्ग-जैसी खाँसी। बहुत बार, यह बहुत कुछ हूपिङ्ग खाँसी, आक्षेपिक और संकोचक खाँसीकी तरह होती है।

वक्षकी खाँसीके साथ जो बलगम निकलता है, वह डोरीकी तरह पीला या पीलापन लिये हरा, कभी-कभी खून मिला रहता है। कभी-कभी तो थक्का-का-थक्का बहुत-सा रक्त निकलता है। वक्षमें बहुत घरघराहट होती है, जाड़ेमें सर्दीकी दशा, समूचे जाड़ेभर वर्त्तमान रहती है, साथ ही वृद्ध पुरुषोंको घरघराहटके साथ सर्दीकी दशा, वक्षमें घरघराहट।

यह यक्ष्मा, फेफड़ेसे तथा फेफड़ोंके गह्वरसे रक्त-स्रावकी बड़ी ही लाभदायक दवा है। वक्षमें सर्दीका भाव रहता है, जो अमूमन हृत्पिण्ड-प्रदेशमें अनुभव होता है। खानेके बाद वक्षमें दबावकी अनुभूति तथा हृत्पिण्डके पास या मान लिया जाता है, कि हृत्पिण्डके पास होता है और हृत्पिण्डमें धड़कन होती है, इसने आरोग्य किया है और धड़कनके

साथ हृत्पिण्डकी विवृद्धि (Hypertrophy of the heart) की बहुत ही लाभदायक दवा है।

शरीरके सभी भागोंमें, पीठमें और खासकर गर्दनके पिछले भागमें सर्दीलापन रहता है। गर्दन तथा पृष्ठ-प्रदेशमें छुरा मारनेकी तरह दर्द, मूत्र-पिण्ड-प्रदेशमें बहुत तेज दर्द, पीठमें धीमा-धीमा दर्द। पीठके बहुतसे लक्षण वातज प्रकृतिके होते हैं और एक स्थानसे दूसरेमें भटका करते हैं। झुकनेपर वातज दर्द बदतर हो जाते हैं और दूसरे दर्दोंकी तरह हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाते हैं। इसका एक अपवाद त्रिक-प्रदेश (Sacrum) है, जहाँ रातमें लेटनेके समय धीमा-धीमा दर्द होता है और दिनमें हिलने-डोलनेपर अच्छा रहता है। बैठे-बैठे सीधे उठनेपर त्रिकास्थिमें दर्द होता है। बैठे रहनेके बाद उठनेपर गुदास्थि (Coccyx) में दर्द; पहली बार बैठते ही और बैठनेकी क्रियाके समय गुदास्थिमें दर्द।

सवेरे सोकर उठते समय अङ्ग-प्रत्यङ्ग कड़े रहते हैं और दर्द इधर-उधर, खासकर सन्धियोंमें घूमा करता है। इधर-उधर हटनेवाला वातज दर्द। सर्दीमें और हिलने-डोलनेपर प्रत्यङ्गोंका दर्द बदतर हो जाता है। वे तापसे तथा आराम करनेके समय अच्छे रहते हैं, समय बाँधकर होनेवाले दर्द, जो बँधे समयपर होते हैं। हड्डियोंमें छूनेपर दर्द मालूम होता है या जोरसे दबानेपर। सन्धियोंमें कड़कड़ आवाज होती है। कन्धोंकी वातज वेदना तो बहुत साधारण है; खञ्जता; अग्रबाहुमें जलन होती है, कोहनीमें वातज वेदना; बहुत टेढ़ापनके साथ हाथों तथा अंगुलियोंमें कमजोरिका भाव; अंगुलियोंका आक्षेपिक सङ्कोचन हाथों तथा अंगुलियोंकी हड्डियाँ कुचल गयी-सी मालूम होती हैं और कसकर दबानेपर उनमें बहुत स्पर्श-द्वेष रहता है। अंगुलियोंमें वातज वेदना इस दवामें बहुत साधारण लक्षण है। निम्नाङ्गमें तो स्पष्ट वातज वेदना कूल्हे और घुटनोंकी भीतरसे होती है। हिलने-डोलने या चलनेपर बदतर हो जाता है। इसके बाद अपवाद आता है, गृध्रसी स्नायु (Sciatic nerves) में दर्द, बहुत तेज होता है और गर्म मौसममें बदतर हो जाता है। यह हिलने डोलनेपर, बिछावनकी गर्मीसे अच्छा रहता है तथा ऋतु-परिवर्त्तनसे बदतर हो जाता है तथा पैर सिकोड़ लेनेपर अच्छा रहता है। जंघास्थिकी खींचनका दर्द बहुत साधारण है। इसने पैरके जखम आरोग्य किये हैं, गहरे मानो छेद कर दिया गया है। गुल्फमें जलन, एँड़ीमें यन्त्रणा। इसने एँड़ीका जखम आरोग्य किया है।

नींदमें बहुत ही बेचैन रहती है। नींदमें चौंकना, करवट बदलना और छटपटाना। इसके वक्षके लक्षण चलनेपर बदतर हो जाते हैं।

चर्मपर फुन्सियाँ, फोड़े, अकौता, छाले, भैंसिया दाद, शिंगल होते हैं, चर्मपर जखम, गुटिकाएँ, पीब होनेवाली गुटिकाएँ तथा औपदंशिक प्रकृतिके उद्भेद होते हैं।

कैलि कार्बोनिकम

(Kali Carbonicum)

कैलि-कार्बके रोगका अध्ययन कठिन है और स्वयं इस दवाका अध्ययन भी कठिन है।

इसका उतना अधिक व्यवहार नहीं होता, जितना होना चाहिये इसकी वजह यही है, कि यह एक बहुत ही जटिल और उलझन भरी दवा है। इसमें बहुत-से विपरीत लक्षण, परिवर्त्तनशील लक्षण हैं और इसीलिये यह ऐसे रोगियोंसे सम्बन्ध रखती है, जो अपने उपसर्गोंको रोके रहते हैं और बहुत-से अस्पष्ट लक्षण रहते हैं।

रोगी खाम-खयाली, क्रोधी स्वभाववाला, **असीम चिड़चिड़ा** और अपने परिवार-वालोंसे झगड़ालू रहता है, उसे अपने रोटी-मक्खनपर भी चिढ़ आती है। वह कभी अकेला नहीं रहना चाहता; **भय**से और खाम-खयालोंसे एकान्तमें परा रहता है—"भविष्यका भय, मृत्युका भय, भूत-प्रेतोंका भय।" यदि उसे बाध्य होकर घरमें अकेला रहना पड़ता है, तो वह जागता रहता है, नींद नहीं आती अथवा उसकी नींद डरावने स्वप्नोंसे भरी रहती है। कभी भी शान्त नहीं रहता; हमेशा खाम-खयाल और भयसे भरा रहता है, "यदि घर जल जाये, तो क्या हो ?" "यदि मैं ऐसा-वैसा करू तो क्या हो ? और "यदि ऐसी या वैसी बात हो जाये, तो क्या हो ?"

प्रत्येक पदार्थ, प्रत्येक **वायु-मण्डलके परिवर्त्तनका** उसे अनुभवाधिक्य रहता है। वह कभी ठीक तापमानमें अपना कमरा नहीं पाता; प्रत्येक हवाका झोंका तथा कमरेमें हवाका घूमना उसे अधिक अनुभव होता है। वह खिड़कियाँ, यहाँतक कि घरके दूरपरकी खिड़कियाँ भी नहीं खुली रखना चाहता, वह रातमें बिछावनसे उठ बैठेगा और खोजेगा, कि यह हवाका झोंका किधरसे आता है। तर और ठण्डी ऋतुमें उसके उपसर्ग बढ़ जाते हैं। उसे **सर्दी सहन नहीं होती** और हमेशा जाड़ा लगा रहता है, उसके स्नायु ठण्डे मालूम होते हैं; जब सर्दी रहती है, तो उन सबमें दर्द होता है। जब सर्दी रहती है, उसे इधर-उधर स्नायु-शूलका दर्द हुआ करता है और यदि रोगवाली जगह गर्म रखी जाती है, तो दर्द किसी दूसरी जगह हट जाता है। उसके सभी दर्द जगह बदला करते हैं तथा सर्द अंशमें चले जाते हैं; यदि वह एक अंशको ढँकता है, तो दर्द बिना ढँके अंशमें चला जाता है।

यह दवा सीखें गड़ने, जलन, फाड़नेकी तरह दर्दसे भरी है और ये दर्द एक जगहसे दूसरी जगह हटा करते हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि कैलिकार्बमें ऐसा भी दर्द है, जो एक जगह रहता है; पर अकसर **दर्द प्रत्येक दिशाकी ओर उड़ा करता है** छुरीसे काटनेकी तरह दर्द, गर्म सुई, सलाई घुमाने, डङ्क मारने और जलनकी तरह दर्द; ये दर्द भीतरी भाग और शुष्क-पथोंमें होते हैं। मलद्वार और मलान्त्रमें जलनका इस तरह वर्णन मिलता है, मानो गर्म सलाई उन पथोंमें घुसायी जा रही है; आगकी तरह जलन मसे आगके अङ्गारकी तरह जलते हैं; कैलि-कार्बकी जलन **आर्सेनिकम**की तरह होती है।

इसके अलावा, पाठ्य-ग्रन्थके पढ़नेसे मालूम होगा, **सवेरे २, ३ या ५ बजे** उपसर्गों का उत्पन्न होना, इस दवाका एक साधारण स्वरूप है। केलि-कार्बमें खाँसी आयगी या उसकी सबसे ज्यादा अभिवृद्धि सवेरे ३ बजे, ४ बजे या ५ बजे होगी; ज्वर भी सवेरे ३ से ५ बजेके भीतर आयगा। दमाका श्वास-कष्टवाले रोगीको ३ बजे सवेरे, नींदसे जागकर उसका दौरा होगा। अनेक उपसर्गोंको लिये वह जायेगा और सवेरे ५ बजेतक जागता रहेगा और इसके बाद ये उपसर्ग बहुत कुछ दब जायँगे। इसमें सन्देह नहीं, कि बहुत-सी बीमारियाँ २४ घण्टोंके भीतर हो सकती हैं; पर यह सबसे बदतर समय है। यह भयके साथ, मृत्यु-भयके साथ, भविष्यके भयके साथ, प्रत्येक पदार्थके सम्बन्धमें चिन्ताके साथ ३ बजे सवेरे जाग जाता है और २-३ घण्टोंतक जागता रहता है, इसके बाद सो जाता है और गहरी नींदमें सोता है।

उसके शरीर ठण्डा रहता है और उसे गरमानेके लिये बहुत कपड़ोंकी जरूरत रहती है; पर यह बात रहनेपर भी कि वह ठण्डा रहता है, उसे बहुत ज्यादा पसीना होता है; शरीरपर बहुत **ज्यादा ठण्डा पसीना** होता है। थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर पसीना, जहाँ दर्द होता है, वहाँ पसीना होता है, ललाटपर पसीना होता है; सर-दर्दके साथ ललाटपर ठण्डा पसीना।

मस्तक-त्वचा, आँखें और गालकी हड्डियोंमें स्नायु-शूलका-दर्द, जिसके साथ ही स्नायविक खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है। माथेमें यहाँ-वहाँ प्रचण्ड दर्द मानो माथा कुचल जायगा। माथेमें काटने और छुरा मारनेकी तरह दर्द। प्रचण्ड रक्त-सञ्चयी दर्द, मानो माथा भरा हुआ हो। माथा एक तरफ गर्म और दूसरी तरफ ठण्डा; ललाट ठण्डे पसीनेसे भरा हुआ।

इसमें **सर्दीका-रक्त-सञ्चयी सर-दर्द है**। जब कभी वह बाहर खुली हवामें जाता है, नाक खुल जाती है तथा श्लैष्मिक-झिल्लियाँ सूख जाती हैं और उनमें जलन होती है; जब वह गर्म कमरेमें लौट आता है, नाकसे स्राव होना आरम्भ हो जाता है और नाक इस तरह रुक जाती है, कि वह उससे साँस नहीं ले सकता और तब उसे खूब आराम मिलता है, इस तरह इसमें गर्म कमरेमें नाक बन्द हो जानेका लक्षण है तथा खुली हवामें नाक खुल जाती है। जब कि नाक इस तरह खुल जाती है, कि वह उससे साँस ले सके तो वही समय है जब सरमें बहुत दर्द रहता है; सर्द हवामें उसमें दर्द होता है और ठण्डी हवामें उसमें जलन होने लगती है। ठण्डी हवा गर्म अनुभव होती है। इन सब रोगियोंके पुरानी सर्दीकी बीमारी लगी रहती है और जब वे खुली हवामें घुड़सवारी करते हैं, सर्दीका स्राव रुक जाता है और सर-दर्द पैदा हो जाता है और इस तरह ठण्डी हवामें घुड़सवारी करनेपर उसे सर-दर्द पैदा हो जाता है। जब खुली हवाका झोंका लगकर स्राव रुक जाता है, तो सर-दर्द हो जाता है और ज्योंही स्राव होने लगता है, सर-दर्द आराम हो जाता है। ओंठ और मस्तक त्वचामें तथा पुरानी सर्दीका स्राव रुक जानेके कारण गालकी हड्डीके भीतरसे स्नायुशूलका दर्द और फिर जब स्राव जारी हो जाता है, तो ये दर्द रुक जाते हैं।

नाककी पुरानी सर्दीके साथ **गाढ़ा, ज्यादा, पीला** स्राव होता है। पर्यायक्रमसे नाक बन्द हो जानेके साथ नाकका सूखापन। पुरानी सर्दीकी बीमारी भोगनेवालेको सवेरे नाकसे स्राव होता है। जो पीले श्लेष्मासे नाकको भर देता है, सवेरेके वक्त वह नाक छिड़कता है और खखारकर सूखी, कड़ी पपड़ी, जो नासा-पथमें, गलकोषमें और नीचे कण्ठतक भरी रहती है, निकलता है। ये पपड़ियाँ सूख जाती हैं, मानो वे आंशिक रूपसे श्लैष्मिक-झिल्लीपर बनी हों और जब वे निकाल दी जाती हैं, तो उनसे रक्त बहता है। वहीसे रक्त बहता है जहाँसे पपड़ी उठायी जाती है।

उसे गलक्षत हुआ करता है हमेशा सर्दी हुआ करती है, जो कण्ठमें बैठ जाती है, उसके तालुमूल बढ़े रहते हैं और इनके साथ-ही कर्णमूल ग्रन्थियाँ—एक या दोनोंकी ही विवृद्धि और पुराना कड़ापन बना रहता है। कानके नीचे जबड़ेके पीछे बड़ी-बड़ी गांठे, ये उत्पन्न होती है और कड़ी हो जाती हैं और कभी कभी उनमें दर्द होता है; खुली हवामें जब घुमता रहता है, तो खोंचा मारते, धक्का देनेकी तरह दर्द। जब इन बढ़ी हुई ग्रन्थियोंमें हवा लगती है, तो उनमें यन्त्रणा और दर्द होता है और गर्म जगहमें जानेपर उसकी तकलीफ घट जाती है। नयी सर्दी वक्षतक फैल जाती है, पर कैलि-कार्ब वक्षकी पुरानी सर्दीके लिये, ब्राङ्काइटिसके लिये, बहुत उपयोगी प्रमाणित हुआ है।

नाककी तरह ही **वक्ष** भी अकसर आक्रान्त हो जाया करता है। सूखापन, सूखी, भूँकनेकी तरह आवाज तथा खुली हवामें खुसखुसी खाँसी रहती है, पर जब वक्ष गर्म हो जाता है, तो बहुत ज्यादा बलगम निकलता है और यही समय है, जब इसके रोगीको खूब आराम मिलता है; क्योंकि बलगम निकल जानेपर उसे आराम पहुँचता मालूम होता है। उसे ज्यादाकर सूखी खुसखुसी खाँसीके साथ सवेरेके वक्त बलगम निकलता है। सूखी, खुसखुसाहटके साथ खाँसी आरम्भ हो जाती है; धीरे-धीरे बढ़ती है और कभी-कभी तो बहुत तेजीसे प्रचण्ड **आक्षेपिक खाँसी, जिसके साथ ओकाई या वमन** हो जाता है और खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथा टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। चेहरा भर्राया हो जाता है, आँखें बाहर निकली-सी मालूम होती हैं और तब ऐसा दिखाई देता है, जो साधारणतः कैलि-कार्बमें मौजूद रहता है। एक विचित्र ढङ्गकी **पलकें और भौंवोंके बीचमें सूजन,** जो खाँसनेके समय भर जाती है। इस विचित्र रूपकी ओर आपका ध्यान आकर्षित किया गया है; क्योंकि चेहरेपर कहीं अन्य जगह सूजन नहीं रहती, पर पलकपर और भौंके नीचे एक छोटी-सी थैली उत्पन्न हो जायगी। यह कभी-कभी भरकर छोटी पानीकी थैलीकी तरह हो जाता है। ऐसी सूजन कभी-कभी कैलि-कार्ब उत्पन्न करता है और कभी-कभी केवल यह लक्षण इस दवाकी परीक्षाके लिये इसलिये परिचालित करता है, कि सम्पूर्ण रोगोंके लिये कैलि-कार्ब ठीक-ठीक बैठता है या नहीं। बोनिङ्गहौसेनने हूपिङ्ग खाँसी व्यापक-रूपमें फैलनेका वर्णन लिखा है, जिसमें अधिकांश रोगियोंको कैलि-कार्बकी जरूरत पड़ी थी और उसमें यही आश्चर्य-जनक लक्षण मौजुद थी। एक ही लक्षणपर कभी कोई दवा न देनी चाहिये। यदि किसी खास लक्षणपर कोई दवा आपके खयालमें आये तो यह निश्चय करनेके लिये कि आरोग्यके लिये क्या दोनों आपसमें सदृश हैं, उस समय औषधि

और रोगीकी परीक्षा कीजिये। इस नियमसे जरा भी विचलित होना हानिकर है और इससे केवल एक लक्षणपर दवा देनेका अभ्यास बढ़ेगा।

सूखी, खुसखुसी, लगातार आनेवाली, हुपिङ्ग खाँसीके साथ खाँसी, नाकसे खून निकलना, पाकाशयमें गई हुई प्रत्येक चीजका वमन तथा खूनकी लकीर पड़ा बलगम निकलना, एक वह हूपिङ्ग खाँसी, है, जो साधारणतः केलि-कार्बसे आरोग्य हो जायगी; पर यदि खासकर भौंवोंके नीचे और पलकोंके ऊपर थैलीकी तरह सूजन हो, आँखें भर्रायी हो, तो जरूर ही आरोग्य होगा।

नियुमोनियाके कुछ ऐसे रोगी रहते हैं, जिनके लिये केलि-कार्बकी जरूरत रहती है, यह फेफड़ेकी **यकृतभाव प्राप्तिवाली** दशामें (सल्फरकी तरह), इसके बाद जब नियुमोनिया आरोग्य हो जाये, तो केलि-कार्बपर ध्यान दीजिये। जितनी बार रोगीको थोड़ी भी सर्दी लगती है, वह इन लक्षणोंके साथ वक्षमें बैठ जाती है, जो मैंने वर्णन किये हैं। ऋतु-परिवर्त्तनका, ठण्डी और तर हवाका, शरीरकी स्पर्श सहन नहीं होता और लगातार सूखी, खुसखुसी खाँसी मुँह भर आनेके साथ आने लगती है। रोग-वृद्धि सवेरे ३ से ५ बजेतक होती है और रोगीको इधर-उधर हटनेवाला स्नायु-शूलका दर्द होता है। ये लक्षण धीरे धीरे बढ़ते हैं और रोगी उन्हें पीछे नियुमोनियाके कालसे बताता है। वह कहता है—"डाक्टर साहब! जबसे मुझे न्युमोनिया हुआ, मैं कभी अच्छा, न हुआ।" वक्षमें सर्दीकी दशा जम गई है और सर्दी लगनेकी प्राचीन प्रवणता हो गयी है। इन रोगियोंको यक्ष्मा हो जा सकता है और केलि-कार्बके बिना ये आरोग्य नहीं हो सकते। वक्षमें सर्दी जम जानेकी इस प्रवणतामें केलि-कार्बपर पूरी तरह ध्यान देना चाहिये और **फास्फोरस, लाइकोपोडियम** तथा **सल्फर**पर भी विचार करना चाहिये।

इस दवाकी एक दूसरी सार्वाङ्गिक दशा है—**शोथ-प्रवणता**। इसमें समूचे शरीरका शोथ है। पैर फूल जाते हैं, अंगुलियाँ मोटी पर जाती हैं, दबानेपर हाथके पिछले भागमें गड्ढे पड़ते हैं, चेहरा भर्राया और मोमकी तरह मालूम होता है। हृत्पिण्ड कमजोर रहता है। हृत्पिण्डकी चर्बीको अभिवृद्धिके बहुत-से रोगियोंकी और पलटकर देखनेसे मालूम होता है, कि यदि आरम्भमें रोगीको अच्छी तरह अध्ययन करता, तो मैं तकलीफको केलि-कार्बसे ही रोक देता। ये प्रच्छन्न रोगी रहते हैं और केलि-कार्ब बतानेवाले संकेत आरम्भमें ही देखने चाहिये, नहीं तो रोगी एक दुरारोग्य दशामें चला जायगा। कमजोरी और दुर्बल रक्तके दौरानकी वह दशा, जिसके अन्तमें शोथ हो जाता है और बहुत-सी अन्य जटिलताएँ आ जाती है, बहुत कुछ केलि-कार्बके सदृश रहती हैं। इसके सभी उपसर्गोंके आनेके समय कुछ प्रच्छन्नता रहती है। इसमें एक प्रकारका नवीन अद्भुत दृश्य रहता है, वह परिम्लान-शुष्क रहता है, पहाड़ीर चढ़नेपर बहुत श्वास-कष्ट होता है या जब समतल भूमिपर चला जाता है। फुसफुसकी परीक्षा करनेपर मालूम होता है, कि बहुत ही उत्तम दशामें है; पर अन्तमें जटिलता आ जाती है, स्वास्थ्य भङ्ग हो जाता है तथा यान्त्रिक परिवर्त्तन हो जाता है। आप इन रोगियोंको देखेंगे और कहेंगे—यदि आरम्भमें

इस रोगीको मैंने देखा होता, जो कि मैं अब देख रहा हूँ, तो मालूम होता है, कि रोगी आराम हो जाता। हम दवाका आरम्भ सीखते हैं, जैसे कि हम वीमारीका आरम्भ सीखते हैं। किसी होमियोपैथिक चिकित्सकके लिये, जिस रोगीको वह आराम न कर सका है, उसकी खोज-खबर लेना सावधानताकी बात होती है या जो किसी दूसरे चिकित्सक द्वारा आरोग्य न किया जा सका है, उसका आरम्भमें अध्ययन करना और देखना, चाहिये, कि क्या प्रदर्शन प्रकट हुए हैं? होमियोपैथिक चिकित्सकके लिये इस ढङ्गका अध्ययन उतना ही आनन्ददायक होता है, जितना ऐलोपैथीके लिये मुर्दा चिरना।

दाँत भी एक अद्भुत दशा प्रकट करते हैं। मसूढ़ोंकी या तो शीताद या कण्ठ-मालाकी प्रकृतिकी रहती है। दाँत मसूढ़ोंसे अलग हो जाते हैं और दाँत क्षय हो जाते हैं तथा ढीले हो जाते हैं, या पीले पड़ जाते हैं, इतने कि जीवनके आरम्भ-कालमें ही उखड़वा दिये जाते हैं। जब कभी झोंककी हवामें या शुष्क ऋतुमें सवारी करनेके कारण उसे सर्दी लगती है, तो उसके दाँतोंमें दर्द हो जाता है। दाँत पीले या क्षयित न रहनेपर भी दर्द पैदा हो जाता है; सुई गड़ने, फाड़ने, छेदनेकी तरह दाँतमें दर्द। दाँतसे बदबूदार गन्ध, दाँतोंके चारों ओरसे पीव चूता है। मुँह छोटे-छोटे जखम से भरा रहता है, छोटे-छोटे छालोंकी तरह गड़हे। श्लैष्मिक-झिल्ली पीली रहती है और सहजमें ही जखम हो जाता है। बदबूदार स्वादके साथ जीभ सफेद रहती है, खाकी आवरण रहता है। साथ ही सवमन सर-दर्द रहता है।

जब कि कैलि-कार्बके बहुत से लक्षण भोजनके बाद बढ़ जाते हैं तो कुछ लक्षण खानेपर घट भी जाते हैं। पाकाशय खाली रहनेपर, पाकाशयगह्वरमें धमक होती है; समूचे शरीरमें भी धमक होती है; *अंगुली तथा अंगूठोंमें स्पन्दन*; ऐसा कोई भी अंश नहीं रहता, जो न फड़कता हो और वह इस स्पन्दनसे जगा रहता है। इस फड़कनके कारण हृत्पिण्ड-प्रदेशमें किसी तरहकी धड़कन रहे बिना भी स्पन्दन। इसमें हृत्पिण्डमें प्रचण्ड धड़कन होती है।

वहुत-से **पुराने मन्दाग्नि**के रोगियोंकी कैलि-कार्ब ठीक बैठता है। भोजन करनेके बाद उसे ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा, इतना ही वह तना रहता है। बहुत आध्मान, वायुका ऊपर डकार आता है और निम्न मुखी वायु भी निकलती है, बदबूदार वायु छुटता है। डकारके साथ मुँहमें पानी भर आता है खट्टा तरल जो दाँतोंके किनारेपर बैठ जाता है; दाँत क्षय हो जाते हैं या गलकोष और मुँहमें तीव्र यन्त्रणा होती है। भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द, भोजनके बाद पाकाशयमें जलन; पाकाशयमें खालीपनका भाव, जो खानेपर भी नहीं जाता। कैलि-कार्बमें एक विचित्र दशा यह है कि **पाकाशयमें घबड़ाहटका भाव** पैदा हो जाता है, मानो यह भयसे हो। पहलेकी रोगिनीमें एक ऐसी मिली थी जिसने किताबोंकी अपेक्षा इसका अधिक उत्तमतासे वर्णन किया है; उसने कहा—"डाक्टर साहब। किसी तरह भी मुझे अन्य मनुष्योंकी भाँति डर नहीं लगता; क्योंकि यह मेरे पाकाशयमें रहता है।" उसने कहा, कि जब उसे डर लगता है, यह हमेशा उसके पाकाशयपर आघात करता है। "यदि कोई दरवाजा भड़भड़ाता है, तो

यह ठीक जहाँ (कुक्षि प्रदेशमें) मुझे मालूम होता है ; हाँ, यह अद्भुत और आश्चर्यजनक है। बहुत देर नहीं होने पायी थी, कि मुझे कैलि-कार्बका दूसरा लक्षण प्राप्त हुआ। मेरी थोड़ी-सी असावधानताके कारण मेरा घुटना रोगिनीके पैरमें लग गया ; क्योंकि वह पलङ्गके किनारेसे कुछ निकला हुआ था और रोगिनी बोल उठी,—"ओह।" यह निश्चित है, कि यह कैलि-कार्बका एक डरा हुआ रोगी मिलेगा और सभी चीज उनके पाकाशयमें चली जाती है और जब चर्म छुआ जाता है, तो, घबड़ाहट या भय या आशङ्का पाकाशय-प्रदेशमें मालूम होती है। आप सोच सकते हैं, कि इसका स्नायुवर्त्तुल (Solar plexus) से सम्बन्ध है ; पर ये लक्षण ही चिकित्सकके लिये सब कुछ हैं। कैलि-कार्बके रोगीके **पैरका तलवा इतना असहिष्णु** रहता है, कि बिछावनकी चादरका स्पर्श-मात्र भी समूचे शरीरमें कम्पन उत्पन्न कर देता है। जोरका दबाव ठीक रहता है, यह विचलित नहीं करता, पर कोई चीज जो अनजानमें आती है उत्तेजित कर देती है। कैलि-कार्बका रोगी अपने चारों ओरकी चीजोंका अत्यधिक असहिष्णु रहता है, बहुत ज्यादा स्पर्श-असहिष्णु रहता है, हलके और सरल स्पर्शसे भी सिहर उठता है, जब कि जोरका दबाव रुचिकर होता है। पैरके तलवेमें प्रचण्ड सुरसुरी। मैंने अकसर पैरोंकी परीक्षा की है, जब कि रोगी काँप उठता है, पैर खींच लेता है और चिल्ला उठता है—"मेरा पैर मत सुरसुराओ।" मैंने इसे शायद इतने धीमेसे छुआ था, कि मुझे यह भी नहीं मालूम हुआ, कि मैंने छुआ है या नहीं। **लैकेसिसमें** भी हलके स्पर्शसे दर्द होने लगता है, पर जोरका दबाव रुचिकर होता है, पर यहाँ इतनी सुरसुरी नहीं है। **लैकेसिसमें** तलपेट इतना असहिष्णु रहता है, कि बिछावनकी चादरका स्पर्श भी कष्टकर होता है। मैंने **लैकेसिसके** रोगीको तलपेटसे चादर न छु जानेके लिये एक पत्तर, चादर अलग रखनेके उद्देश्यसे व्यवहार करते देखा है ; अब आपको जानना चाहिये, कि आप **लैकेसिसके** राज्यमें है और यह उन मनुष्योंकी तरह है, जो गर्दनपर थोड़ा भी स्पर्श सहन नहीं कर सकते तथा कालर पहननेपर उन्हें बेचैनी होने लगती है। यह सभी उस सुरसुरीपनसे भिन्न है। मैंने ऐसे रोगी देखे हैं, जिनका चर्म इतना स्पर्श-असहिष्णु रहता है, कि मुझे उसे छूनेका साहस ही नहीं होता था, जबतक कि वे यह जान लेते थे कि किस जगहपर मैं छूना चाहता हूँ। "अब मैं तुम्हारी नाड़ी देखना चाहता हूँ, चुपचाप रहो।" यदि मुझे हाथ छूना होता या बिना सावधान किये नाड़ी देखना होता, तो एक कम्पन पैदा हो जाती थी। ऐसी ही दवा कैलि-कार्बमें रहती है। ये बातें अकसर परीक्षाकी पद्धति और आनुसङ्गिक बातोंकी अध्ययनकर उसके भीतरसे निकालनी पड़ती हैं। ये बातें जिससे रोगीको अत्यधिक असहिष्णुता मालूम होती है, वे चिकित्साके लिये बहुत उपयोगिनी होती हैं। हमारी मेटेरिया-मेडिकाकी योग्यता कुछ आश्चर्यजनक है, पर इसका और भी तेजीसे विकास किया जा सकता है। यदि होमियोपैथिक चिकित्सक ठीक-ठीक और बुद्धिमत्तासे उसका प्रयोग करें और उसपर ध्यान दें ; जो वे देखते हैं लिखते जायें। आजकल बहुत थोड़े होमियोपैथिक चिकित्सक ऐसे हैं, जो एक साथ एकत्र होकर सुनने योग्य बातें कह सकें—लज्जा जनक रीतिसे उनकी संख्या बहुत कम है, हम उस विस्तृत कालपर विचार करते हैं, जब कि हैनिमैनकी पुस्तक संसारके सम्मुख आयी थी।

बहुत-से ऐसे पुराने **यकृतके रोगी** हैं, जो यकृतके सिवा कोई दूसरी बात ही नहीं करते ; जब कभी वे डाक्टर-खानोंमें जाते हैं, तो यकृतका ही जिक्र लाते हैं और यकृत-प्रदेशसे भरापन, दाहिने कन्धेकी हड्डीके भीतरसे दर्द और वक्षके भीतरसे दाहिनी ओर ऊपरकी तरफ तथा वहाँ बहुत दबाव और तनावकी बातें कहते हैं, पित्तका वमन तथा बहुत तरहकी पाकाशयकी गड़बड़ी, भोजनके बाद भरापन ; अतिसारका आक्रमण ; पर्यायक्रमसे दस्त और कब्ज होना, जो कई दिनोंतक होता रहता है और पाखानेके समय बहुत काँखना पड़ता है। समय बाँधकर होनेवाला पित्तका आक्रमण, जब कब्जकी दशा वर्त्तमान रहता है ; रातमें लेट नहीं सकता ; रातमें या ३ बजे सवेरे श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ, खासकर जब रोगीको सर्दी, तर ऋतु बिलकुल ही सहन नहीं होती और जो हमेशा आगके पास बैठे रहना चाहता है। ये यकृतके रोगी अकसर कैलि-कार्बसे पूर्ण आरोग्य कर दिये गये हैं ; कभी-कभी तो वे सब तरहकी यकृतसे रस निकालनेवाली क्रिया किया करते हैं। वमन विरेचन करानेवाली दवाएँ लिया करते हैं ; ऐसी दवाएँ लेते हैं, जो वास्तवमें रोगको बढ़ा देती हैं। कैलि-कार्ब इन रोगियोंके तहतक काम करता है और रोगको जड़से हटा देता है।

तलपेटके भी बहुत-से कैलि-कार्बके लक्षण हैं। ऐसे रोगी जिन्हें शूल, काटनेकी तरह दर्द, पेट फूलना, भोजनके बाद दर्द, कब्ज या अतिसार रहता है। काटने, फारनेकी तरह शूलका दर्द, जिससे रोगी दोहरा हो जाता है ; यह रह-रहकर हुआ करता है। बहुत ही भयङ्कर आध्मान-वायु, जब जोरका शूलका दर्द आरम्भ होकर **कोलोसिन्थ** या कोई दूसरी नवीन रोगमें क्रिया करनेवाली ऐसी दवाकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हैं, जो दो-तीन मिनटोंमें शूलका दर्द आरोग्य कर देती है ; आप देखेंगे, कि नये रोगमें काम करनेवाली दवाएँ जो उदर-शूलकी तेजीसे आरोग्य कर देती हैं, जब दूसरी या तीसरी बार दी जाती है, तो उनका कोई भी प्रभाव नहीं होता। तब आपको कोई सोरा-नाशक औषधि खोजना आवश्यक हो जाता है, एक ऐसी दवा जो सम्पूर्ण रोगीको वशमें ला सके। आक्रमण-कालमें सिर्फ उदर-शूलका अध्ययन करते समय, आपको रोगीकी एकतर्फा बातें ही मिलती हैं और जब शूलका दर्द बन्द हो जाता है (मान लीजिये, कि वह **कोलोसिन्थ** आरोग्य हो गया) तब आप उस रोगीका अध्ययन करें और रोगको समझें और देखें, कि सभी लक्षण कैलि-कार्बके सदृश हैं। यह दवा देनेके बाद आपको आशा होगी, कि रोगीको फिर उदर-शूलका दर्द न होगा। कैलि-कार्बकी यही प्रकृति है। यह गहरी क्रिया करनेवाली, दीर्घ-क्रियाशील दवा है, खूब गहरायीतक जीवनी-शक्तिपर क्रिया करती है। यह सोरासे उत्पन्न दशाएँ आरोग्य करती हैं या बचपनमें उद्भेद दब जानेके कारण जो दशा आती है या पुराने जखम और भगन्दर वगैरहका घाव, जिसका हमेशा लगे रहनेका इतिहास प्राप्त होता है। ये सभी भ्रमणकारी वेदनाएँ और सर्दियाँ उद्भेद निकल आनेपर, स्राव जारी हो जानेपर, रक्त-स्राव होनेपर, गहरे और ऐसे जखम हो जानेपर, जिनसे खुसकर मवाद जाता है तथा भगन्दरका मुँह खुल जानेपर आरोग्य हो जाती हैं।

"उदरमें काटनेकी तरह दर्द, मानो टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है।" "काटनेकी तरह

प्रचण्ड दर्द, दोनों हाथोंसे अवश्य दवाकर झुककर बैठे रहना पड़ता है या आराम मिलनेके लिये पीछे ढुलक जाना पड़ता है, सीधा बैठ नहीं सकता।" "नकली प्रसव-वेदनाकी तरह काटने और खींचनेकी तरह दर्द।" दर्दके साथ बहुत ठण्डक, साथ ही तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द; वह ताप, गर्म पेय, गर्म पानीके थैले (Hot water bags) की इच्छा करता है। तलपेटमें एक पुरानी सर्दीकी दशा रहती है, भीतरी और बाहरी सर्दी। उदर-शूल जारी रहनेपर कैलि कार्ब देना निर्दयता होगी; क्योंकि यदि धातु प्रकृतिके अनुकूल दवा बैठ गयी; यदि रोगीके सभी लक्षण कैलि-कार्बके थे, तो एक ऐसी रोग वृद्धि, होगी, जो अनावश्यक है। ऐसी बहुत-सी लघु-क्रियाशील दवाएँ हैं, जो तेजीसे दर्द आरोग्य कर देंगी और आक्रमणका रोध हो जानेके बाद, धातुगत दवा देनेसे अच्छा फायदा होगा। यदि रोगी अन्ततक दर्द बर्दाश्त कर सके, तो यह अच्छा है, कि विना किसी दवाके ही यह आरोग्य हो जाये; पर कभी-कभी यह भी निर्दयतापूर्ण कार्य हो जाता है और उस समय लघु-क्रिया औषधियाँ देनी चाहियें। सभी दुहरानेवाली बीमारियाँ, वे बीमारियाँ जो सामयिक-रूपसे होती हैं या कोई चीज खानेपर जो बीमारी होती है या खुली हवा लगनेपर होती हैं या जो समय बाँधकर सामयिक-रूपसे होती हैं—यह सभी पुरानी दशाएँ हैं, ये सब नयी बीमारियाँ नहीं हैं। यह सभी केवल पुराने दोषके सूक्ष्म अंश हैं, एक पार्श्विक दृश्य और इन सब रोगियोंके लिये जल्द या देरसे धातुगत दवा देनी होगी। यह सत्य है, कि पहली बार देखनेके साथ ही आप प्रचण्ड दर्द आरोग्य कर सकते हैं; पर इसके बाद आपका गहरायीपर देखना होगा तथा फिर रोग होना रोक देना होगा; नहीं तो आप **बेलेडोना, कोलोसिन्थ** या कोई दूसरी ऐसी दवा देंगे, जो केवल शूलमें ठीक बैठती है, तो फिर बीमारी पैदा हो जायगी। अपने-अपने रोगीको आरोग्य नहीं किया है, आपने केवल रोग उपशम किया है; पर दूसरी ओर जैसा बताया गया है, उस तरहके उदर-शूलका यदि आप उपचार करेंगे और यदि कैलि-कार्ब केवल इन्हीं लक्षणके सदृश होता है तथा रोगीकी सम्पूर्ण धातुगत प्रकृतिके सदृश नहीं होगा। तब ऐसा होगा, कि कोई धातुगत और दीर्घ-सक्रिय दवा कैलि कार्बकी तरह होगी, जो पूरी तरह कार्य करेगी। इसकी क्रिया कुछ समय नहीं लेती तथा इसमें रोग-वृद्धि नहीं होती।

"औदरिक पेशियोंमें छूनेपर बहुत दर्द, ग्रन्थियोंकी सूजन।" आँतोंकी तकलीफोंके बाद या अन्त्रावरक झिल्ली-प्रदाहके बाद, उदरमें भी अन्त्रावरक झिल्ली-गह्वरसे रस-स्राव होता है, जिसकी वजहसे हाथ-पैरोंमें शोथ हो जाता है; पर हमेशा नहीं; यकृतके शोथमें खासकर यह दवा लाभदायक होती है।

इसमें मलान्त्र और मलद्वार तथा मलके भी बहुत-से उपसर्ग हैं। इसमें बहुत ज्यादा बना रहनेवाला और बहुत अधिक **आर्शिक अर्बुद** (Haemorrhoidal tumors) होते हैं, जिनमें जलन होती है, जो बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं, उनसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है, जिनमें बहुत दर्द होता है, जिससे रोगीके लिये सोना असम्भव हो जाता है। उसे बाध्य होकर पीठके बल लेटे रहना तथा चूतड़वाला अंश पकड़े रहना पड़ता है; क्योंकि बाहर मसामें दबाव बिलकुल ही सहन नहीं होता। मसे भीतर नहीं डाले

जा सकते ; भीतर बहुत तनाव और सूजन रहती है बवासीरके मसे जो पाखाना होनेके बाद बाहर निकल आते हैं और जिनसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है, बहुत ही दर्द-भरे रहते हैं, उन्हें पीछे जोरसे घुसा देना चाहिये, पलङ्गपर जानेके बहुत देर बाद वे आगकी तरह जलने लगते हैं। पखाना होनेपर बहुत ज्यादा रोग-वृद्धि होती है, मल बहुत कड़ा और गांठ-गांठ होता है और बहुत जोर लगाकर निकालना पड़ता है। मलद्वारके फटे घाव—भगन्दर। ठण्डे पानीमें बैठनेपर जलन क्षणिक-रूपसे आराम हो जाती है।

इसमें **पुराना अतिसार** (संग्रहणी) है तथा ऐसा अतिसार है, जो पर्यायक्रमसे कब्ज परिवर्त्तन होता है। बहुत बार जब बहुतसे चरित्रगत लक्षण रहते हैं, तो हमें सर्वाङ्गिक लक्षणोंपर निर्भर करना पड़ता है, जो इस दवाके चरित्रगत लक्षण हैं। पाठ्य-ग्रन्थोंमें रोगीको प्रयोगकर जो अतिसार उत्पन्न हुआ था, उसका बहुत कम वर्णन है। "तलपेटमें गड़गड़ाहट और पाखाना होनेके समय जलनके साथ दर्द-रहित अतिसार, केवल दिनके समय ; भौंवोंके नीचे मुटाईके साथवाले पुराने रोगी।" इसमें बहुत कम लक्षण प्राप्त होते हैं ; यह पुराने अतिसारकी एक वृहत और व्यापक औषधि है। वृद्ध, भग्न-स्वास्थ्य पुरुषोंको, कमजोर, पीले रोगियोंको, जिनकी पाचन-शक्ति दुर्बल रहती है, बहुत आध्मान रहती है, बहुत तनाव रहता है, साथ ही यकृत भी विशृङ्खलित रहता है।

इसके बाद मूत्रपिण्ड, मूत्राशय, मूत्रनलीकी तकलीफें आता है, जो श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशाकी तरह रहती हैं। मूत्राशयसे स्राव, गाढ़ा, लसदार, पीव-मिला स्राव, पेशाबमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा जमा रहता है। इसके साथ-साथ बहुत जलन होती है ; पेशाव करनेके समय और बाद मूत्रनलीमें जलन। "जलन और यन्त्रणाके साथ पेशाबकी धार धीमी निकलती है" पुरानी बहुत दिनोंकी मूत्राशयकी तकलीफोंमें कैलि-कार्बका **नेट्रम-म्यूरसे** बहुत ही निकटस्थ सम्बन्ध है। ग्लीट (पुराना सूजाक) के पुराने रोगी तथा पेशाबकी तकलीफोंके बहुत दिनोंके रोगी, जिन्हें **बादमें** सूजाक हो जाता है, उनमें ये दोनों दवाएँ बहुत ही उपयोगिनी होती हैं, थोड़ा, सफेद लसदार मवाद जो रह जाता है, उसमें ये दोनों ही उपयुक्त होती हैं। दोनोंमें ही पेशाब करनेके समय दर्द होता है। **नेट्रम म्यूरमें पेशाब करने बाद** जलन होती है, जिससे थोड़ा, लसदार पुराना सूजाकका स्राव होता है तथा बहुत स्पष्ट जलन होती है और यह केवल पेशाव करनेके **बाद** होती है तथा रोगी अत्यन्त स्नायविक और चञ्चल है, उसे **नेट्रम म्यूर** आरोग्य कर देगा। यदि पेशाव करनेके **समय और बाद** जलन होता हो तथा जैसा वर्णन किया गया है, वैसा स्वास्थ्य-भङ्ग हो गया हो, तब दवा कैलि-कार्ब होगी। इनमेंसे बहुतसे रोगियोंको बिलकुल ही दर्द नहीं होता, न पेशाव करनेके समय ही दर्द होता है और न बाद ही। ऐसी अवस्थामें दवा कुछ दूसरी ही श्रेणीकी हो जाती है। सूजाकके बाद होनेवाला पुराना स्राव नये डाक्टरोंके लिये बड़ा ही कठिन काम होता है। दवाएँ बहुत-सा है, लक्षण-बहुत-थोड़े रहते हैं और बहुत बार तो रोगी अधिक दिनोंतक चिकित्सकके तत्वावधानमें नहीं रहता, इसलिये चिकित्सक रोगीको धातुगत प्रकृति भी अच्छी तरह नहीं जान पाता और रोगी सिवा स्राव होनेके, उसे और कुछ बता नहीं सकता। "डाक्टर ! सिवा स्रावके और कुछ नहीं होता।" और उसका मन लक्षणोंकी

ओर नहीं फेर सकते। वह भूल गया है, कि वह ३ बजे सवेरे जाग जाता है और फिर ५ बजेतक सो नहीं सकता, वह सभी स्नायविक प्रदर्शन भूल गया है। पर जिस रोगीकी धातुगत प्रकृति यह दशा आ जानेके पहले आप जान जाते हैं और जो रोगी आपके अधिकारमें था, उसके इलाजमें आपको अधिक कष्ट न होगा।

कैलि-कार्वके रोगीके दुर्बल प्रकृतिके होने और स्वास्थ्य-भङ्गकी ओर बढ़ते जानेका एक यह भी प्रमाण है, कि संगमके बाद और कामोत्तेजनके बाद सभी लक्षण जागरित और उत्तेजित हो उठते हैं। अब आप इसे अभ्यासमें लायेंगे और यह खयाल रखेंगे, कि मनुष्यके लिये संगम करना एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जब कि यह नियमबद्ध रूपसे होता है, पर जब स्वाभाविक रूपसे इसके बाद सुस्ती आती है और यह बहुत दिनोंसे होता आ रहा है, तब इसमें धातुगत गड़बड़ी होती है तो इसमें सन्देह नहीं कि कुछ अवश्य ही गड़बड़ी है। कैलि-कार्वमें **सङ्गमके बाद सभी लक्षण बदतर** हो जाती हैं, उसकी दृष्टि कमजोर हो जाती है, उसकी बुद्धि कमजोर हो जाती है, कम्पनशील अवस्थामें रहता है और वह साधारणतः स्नायविक हो जाता है, उसे नींद नहीं आती और वह कमजोर हो जाता है और वह सङ्गमके बाद एक या दो दिनोंतक काँपता रहता है। स्त्रियोंमें भी ऐसे ही लक्षण दिखायी देते हैं, रोगीके दुर्बल रहनेपर भी कामेच्छा बढ़ी रहती है। यह नियमानुकूल नहीं है। यह एक ऐसी काम-वासना है, जो इच्छा शक्तिके शासनाधीन नहीं है, पुरुषोंकी बहुत ज्यादा और बार-बार वीर्य-स्राव होता है, रातमें स्वप्न-दोष होता है, लिङ्गन्द्रिय सुस्त रहती है। दुराचार करनेवाले जवान पुरुषोंमें या जिन्होंने बहुत ज्यादा रति-क्रियाका आनन्द लिया है, वे जब विवाह करते हैं, तो उनको लिङ्गेन्द्रिय दुर्बल रहती है, सङ्गम शक्ति नहीं रहती और इसके बाद एक निराशा उत्पन्न हो जाती है और इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि इसी वजहसे संसारमें इतना अधिक तलाक होता है। जब रोगी जवान रहे तो नियमित जीवन और निर्मूल होमियोपैथिके अन्तर्गत रहनेपर उसकी बहुत-सी तकलीफें दूर हो जा सकती हैं।

कैलि-कार्वमें पुरुष कामेन्द्रियको आक्रान्त करनेवाली बहुत-सी बीमारियाँ हैं, अण्डकोषमें विकलता और असहिष्णुता। एक फूला और कड़ा भी रह सकता है। शुष्कमें खुजली और खोंचा मारने और कष्ट देनेवाले भाव और एक ऐसी सनसनी जो रोगीको हमेशा याद दिलाया करते हैं, कि उसे जननेन्द्रिय है। लगातार होनेवाला उपदाह, उसे जननेन्द्रियका ध्यान दिलाया करता है, जो दुराचार, बुरी लतों और ज्यादतियोंसे उत्पन्न होते हैं। इस दशामें **फास्फोरस**का बहुत अपव्यवहार होता है। बहुत-से चिकित्सक इसे जननेन्द्रियकी दुर्बलताको सबसे बड़ी दवा समझते हैं। **फास्फोरसमें** जननेन्द्रिय सम्बन्धी निर्देशक लक्षण हैं, असीम उत्तेजना, बहुत जल्दी-जल्दी लिङ्गोद्रेक, जननेन्द्रियकी विशृङ्खलित शक्ति। ध्वजभंग या कमजोरीमें इसका सावधानतासे प्रयोग कीजिये; क्योंकि इसके साथ अकसर दुर्बल धातु-प्रकृति सम्मिलित रहती है और **फास्फोरस**से वे आरोग्य ही नहीं होते, बल्कि कमजोरी और भी बढ़ जाती है। आपको सीख रखना चाहिये, कि यह दुर्बलता जीवनी-शक्तिकी दुर्बलता है। जीवनी-शक्तिकी दुर्बलतावाले रोगी **फास्फोरस**से भी तेजीसे

दुर्बल होते जायेंगे, ऐसे रोगी हमेशा क्लान्त रहते हैं, केवल कमजोर, हमेशा सुस्त और बिछावनपर पड़े रहना चाहते हैं।

कैलि-कार्ब स्त्रियोंका बहुत बड़ा बन्धु है, यह उनके उपसर्गोंसे भरा है तथा बीमार स्त्रीके प्राप्त होनेवाले बहुतसे लक्षण इसमें हैं। यह **जरायुसे रक्त-स्रावबाली** रोगिनीके लिये उपयोगी है, जो बराबर पीली, मोमकी तरह, रक्त-स्रावी स्त्रियाँ रहती हैं, गर्भ-स्रावके बाद बहुत ज्यादा रक्त स्राव। उसकी क्यूरेट दिया गया है और सब तरहका इलाज हुआ है, पर अभी भी रक्त चूते रहना जारी ही हैं। मासिक रजः-स्रावके समय, बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है और थक्के निकलते हैं और फिर दस या इससे भी ज्यादा दिनोंतक रक्त-स्राव जारी ही रहता है, जिस कालमें उसे बहुत ज्यादा स्राव होता है, दूसरा महीना आनेतक कुछ-न-कुछ रक्त-स्राव होता ही रहता है और तब दूसरे दस दिनतक यह रक्त-स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है। संकटमयी अवस्था आनेके पहले ही तन्तुमय अर्बुद (Fibroid tumors) के बहुतसे रोगी कैलि-कार्बने आरोग्य कर दिये हैं। आपको याद रखना चाहिये, कि वयःसन्धिकालमें तन्तुमय अर्बुदकी वृद्धि रुक जानेकी एक स्वाभाविक प्रवणता रहती है और इसके बाद संकुचित हो जाता है और यह बिना किसी इलाजके ही हो जाता है, पर ठीक-ठीक दवा पड़ेगी तो रक्त-स्राव रुक जायगा, अर्बुदका बढ़ना रुक जायगा और कुछ दिन बाद इसके आकारमें बहुत कमी आ जायगी।

गर्भावस्थाके वमनमें अकसर कैलि कार्ब फायदा करता है; पर यह पता लगानेके लिये कि गर्भावस्थाके वमनकी दवा यह **कब** होती है, हमें समस्त धातुगत दशापर विचार करना होगा। **इपिकाक**से गर्भावस्थाका वमन आरोग्य नहीं होता, यद्यपि क्षणिक रूपसे इससे आराम पहुँचता है; क्योंकि यह ऐसी दवा है, जिसका मिचलीसे विशेष सम्बन्ध है। बहुतसे अवसरोंपर आरोग्य करनेवाली दवामें ओकाई और मिचली तो दूसरी या तीसरी श्रेणीके लक्षण हैं। वास्तवमें यह दशा धातुगत दशापर निर्भर करती हैं और आरोग्य करनेवाली दवा एक धातुगत औषधि है। **सल्फर, सीपिया** और कैलि-कार्ब निर्देशित दवाओं में से हैं। कभी-कभी **आर्सेनिक**की जरूरत पड़ती है। इसके अलावा, यदि किसी गर्भवती स्त्रीने अपना पाकाशय बिगाड़ डाला है और कितनी ही बार उसे पित्तका वमन हुआ है, तो दवा **इपिकाक** होगी। यदि किसी गर्भवती स्त्रीमें धातुगत प्रकृतिका लक्षण न मिले और रोगकी परीक्षा करनेपर आपको मिचलीके सिवा कोई दूसरा लक्षण न प्राप्त हो—खूब प्रचण्ड मारात्मक मिचली, साथ ही दिन-रातभर वमन होता हो, तो केवल एक खुराक **सिम्फारिकार्पस रैक** (Symphoricarpus Rac) सहायता पहुँचा देगा। यह बहुत थोड़ी सूचनापर नुस्खा लिखता है और इसका केवल स्थानिक तथा एकतर्फा रोगीके प्रति ही प्रयोग करना चाहिये। यह कोई दीर्घ-क्रिय दवा नहीं है, धातुगत प्रकृतिकी दवा नहीं है और बहुत कुछ **इपिकाक**की तरह क्रिया करती है।

कभी-कभी आपको प्रसव-गृहमें कमरकी रेखाके नीचे दर्द होती हुई स्त्री देखनेमें आयगी। जरायुका दर्द बहुत ही कमजोर होता है, उनसे प्रसव-क्रिया अग्रसर नहीं होती;

यह उस ढङ्गका दर्द होता है, जिससे स्त्रीको चिल्लाना पड़ता है—"मेरी पीठ—मेरी पीठ।" दर्द नीचे चूतड़ और पैरोंतक फैल जाता है। पीठमें दर्द, मानो पीठ टूट जायगी। अच्छी तरह दवा देनेपर यह दर्द सङ्कोचनमें परिवर्त्तित हो जाता है, जिससे कि जरायुकी सामग्री निकलनेमें सहायता मिलती है। जब आपको ऐसी बातें सुनाई पड़ें, तो रोगीके पिछले इतिहासपर ध्यान दीजिये। आपको हफ्तों पीछे देखना होगा; क्योंकि स्त्री प्रसवके पास आती-जाती है और देखिये कि फालतू बातें, सर्दीलापन तथा अन्य उपसर्ग उसकी धातुगत दशामें तैयार है, जिनके लिये अब आप दवा खोज रहे हैं और यही प्रसव-कालमें एक दर्दकी श्रेणीके रूपमें परिवर्त्तित होकर आते हैं। यदि आप उसे छः सप्ताह पहले देखे होते और उसे कैलि-कार्ब दिये होते, तो आप कष्टकर प्रसव रोक दिये होते। यह एक कष्टकर प्रसव होता है, बहुत देर लगानेवाला एक प्रसव, जरायु कमजोर मालूम होता है और दर्द भी कमजोर ही होता है। यह दर्द पीठमें होता है तथा क्रिया-स्थानके केन्द्रमें नहीं पहुँचता जैसा कि जाना चाहिये। अब उसी प्रकारका दर्द दूसरा रूप धारणकर आपको धोखा दे सकता है। दर्द पीठमें पैदा होता है और जरायुमें जाता मालूम होता है, फिर पीठमें आता है, जो कैलि-कार्बके दर्दसे आपको एकदम हटा देगा और उस दर्दको ओरला देगा, जो **जेलसिमियम**का निर्देश करता है। कभी-कभी यह दर्द इतना तीव्र होता है, कि वास्तवमें जरायुमे संकोचन पैदा होनेमें सहायता पहुँचानेको अपेक्षा रोक देता है। जब गर्भाशयका सङ्कोचन रुक जाता है और प्रसूता चीख उठता है और अपने कूल्हे रगड़वाना चाहती है तथा केन्द्रमें दर्द होनेके बदले तलपेट दोनों ओरके दर्दसे चिल्लाती है, उस प्रदेशमें दर्द होना चाहिये, जहाँ चौड़ी बन्धनी (Broad ligament) है, **एक्टिया रेसिमोसा** दर्दको नियमित कर देगा। यदि कोई क्रिया न होनेवाली भरपुर सङ्कोचनका अभाव रोगीनीमें दिखाई दे, तो **पल्सेटिला** ही उसकी दवा है। अक्रिय रोगमें जब कि जरायु-मुख अच्छी तरह फैल गया है तथा वह अंश ढीला पड़ गया है तथा ऐसा मालूम होता है, कि सहज और सरल प्रसव होगा; पर रोगिनी कुछ भी नहीं करती। यह दशा नर्मी या अक्रियताकी है। **पल्सेटिला** बहुतकर पाँच मिनटोंमें ही जबर्दस्त जरायुका सङ्कोचन उत्पन्न कर देगा और कभी-कभी तो एकदम दर्द-रहित भावसे सङ्कोचन होगा।

"चलनेसे पीठमें इतना दर्द होता है, कि उसकी ऐसी इच्छा होती है, कि वह राहमें ही लेट जाये" प्रभृति। ऐसा मालूम होता है, कि रोगिनीका सभी बल और शक्ति दर्द खींच लेता है। प्रसवके बाद बहुत देरतक रक्त-स्राव होनेकी प्रवणता रहती है, जो प्रत्येक मासिक-कालमें जागरित हो उठती है, जैसा कि वर्णन किया जा चुका है।

हृत्पिण्डकी कमजोरी, **हृत्पिण्डकी गड़बड़ीकी वजहसे श्वासकष्ट**; श्वास लघु रहता है और रोगी चल नहीं सकता या बहुत धीरे-धीरे घिसकना पड़ता है। यह वसापूर्ण हृत्पिण्डका आरम्भ है। श्वास-रोध और श्वास-कष्टके साथ श्वास इतना लघु रहता है, कि रोगी खाने-पीनेके लिये रुक नहीं सकता; श्वास तेज रहती है, गहरी नहीं, पर कमजोर रहती है। प्रचण्ड, अनियमित हृत्पिण्डकी धमकके साथ श्वासकष्ट, सम्पूर्ण शरीरको हिला देनेवाली धमक, ऐसा स्पन्दन जो अंगुलियों और अंगूठोंके सिरोंमें

मालूम होता है। प्रचण्ड स्पन्दन, रोगी बायीं करवट नहीं सो सकता; वक्षके भीतरसे और खाँसने पर सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। कमजोर नाड़ीवाले दमाके रोगियोंमें भी वही स्पन्दन और धड़कन रहती है और वह लेट नहीं सकता। सिर्फ एक ही स्थितिमें उसे कुछ आराम मिलता मालूम होता है अर्थात् कुर्सीपर कोहनी टेककर सामनेकी ओर झुके रहनेपर। आक्रमण प्रचण्ड और लगातार बना रहनेवाला होता है, सवेरे ३ से ५ बजेतक बदतर रहता है तथा बिछावनपर लेटनेपर बदतर हो जाता है। दमाके इस दौरेसे सवेरे ३ बजे उसका नींद खुल जाती है। दमा-जनित श्वासकष्ट, जब कि तर दमाकी दशा रहती है या वक्ष श्लेष्मासे भर जाता है, वक्षमें मोटी घरघराहट, जोरको सुन पड़नेवाली, घरघराहटवाला श्वास प्रश्वास। उस रोगीको जिन्हे वक्षमें बराबर घरघराहट रहती है, उन्हें घरघराहटके साथ खाँसी, कड़ा श्वास-प्रश्वास, प्रत्येक वर्सांती हवा या तर हवामें या सर्दीमें कुहरेवाले मौसममें, तर दमावाली दशा उत्पन्न हो जाती है। दमाका श्वास, साथ ही वक्षमें बहुत कमजोरी, सवेरे ३ से ५ बजेतक बदतर। रोगी पीला, रोगियल और रक्त-स्वल्प रहता है तथा वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होनेकी शिकायत करता है।

इस दवाकी **खाँसी** मेटिरिया-मेडिकाकी सभी दवाओंकी खाँसीसे प्रचण्ड होती है। समूचा शरीर हिल उठता है। खाँसी सविराम आती रहती है, इसके साथ ही ओकाई और वमन रहता है, ३ बजे सवेरे आरम्भ हो जाती है, एक सूखी, खुसखुसी, कड़ी, यन्त्रनादायक खाँसी, "५ बजे सवेरे श्वास-रोध करनेवाली और दम घुटानेवाली खाँसी, २ से ३ बजे सवेरेतक कण्ठमें बहुत ज्यादा सूखापन।" जब छोटी माता जैसी बीमारियोंके बाद, सर्दीकी दशा बनी रह जाये, प्रतिक्रियाके अभावके कारण सोराका प्रदर्शन हो, तो कैलि-कार्बपर ध्यान दीजिये। खसड़ाके बाद आनेवाली खाँसी अकसर कैलि कार्बकी खाँसी होती है। कैलि-कार्ब, **सलफर, कार्बो-वेज और ड्रोसेरा** ऐसी खाँसीयोंमें, खसड़ा या न्युमोनियाके बाद होनेवाली खाँसीमें अन्य दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा निर्देशित होती है।

बलगम बहुत ज्यादा, बहुत बदबूदार, लसदार, ढेला-ढेला, खूनकी रेखा पड़ा या पीबकी तरह, गाढ़ा या पीलापन लिये हरा होता है। बहुतकर तो इसमें सड़ी पनीरका स्वाद रहता है, कड़ा स्वाद जैसा कि पुरानी पनीर हो। वक्षकी सर्दी, दिन-रात सूखी खाँसी, वमनके साथ खाद्य और श्लेष्मा निकलता है, खाने-पीनेके बाद तथा शामके वक्त बदतर।

वक्षके भीतरमें **भ्रमणकारी सुई गड़नेकी तरह दर्द तथा वक्षकी ठण्डक**के सिवा कैलि-कार्बमें और कुछ भी इतना आश्चर्यजनक नहीं है। तेज श्वासकष्ट, क्षणस्थायी सुई गड़नेकी तरह दर्द और फुसफुसावरकमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना इस दवाके महत्वपूर्ण स्वरूप हैं। कैलि-कार्ब उपयोगी होनेवाले बहुतसे रोगी ऐसे होते हैं जहाँ कि तकलीफ फैलनेका कारण श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह रहता है और जो फेफड़ेके निम्न अंशसे ऊपरकी ओर चढ़ता है। यह साधारणतः उन रोगियोंके लिये निर्देशित नहीं रहा, जहाँ कि धीमापन (Dullness) एक या दोनों ही फुसफुस-शिखरोंसे आरम्भ हुआ है। जिस परिवारका टियुबरक्युलोसिसका इतिहास प्राप्त होता है, बहुत बार भविष्यमें रोग होना ही

आरोग्य कर देता है। यदि परिवारमें टियुबरक्युलोसिसका इतिहास प्राप्त हो, तो सोरा-नाशक औषधि देनेसे न डरिये, पर इस बातसे सावधान रहें कि जब रोगी इतना अग्रसर हो गया है, कि फेफड़ेमें गह्वर बन गया है या छिपा हुआ गुटिका-दोष (Tubercles) है या कोषावृत्त पनीरकी प्रकृतिकी गुटिकाएँ (Tubercles)। आपकी सोरा-नाशक दवा उसे खतरनाक दशामें पहुँचा दे सकती है। इसलिये यह मत मान बैठें, कि किसीके बाप माँ यदि यक्ष्मासे मरे हैं, तो उसे **सल्फर** देना खतरनाक है। ऐसा हो सकता है, कि बिना बाप-माँका अनुसरण करनेसे बच्चेको "सल्फर" बचा दे। कैलि-कार्ब अकसर उपयोगी होता है तथा यक्ष्माकी बढ़ी हुई अवस्थामें उन रोगियोंके लिये नये रोगकी दवाकी तरह कार्य करेगा, जिनमें पहले यह धातु-प्रकृतिकी दवाके रूपमें निर्देशित हुआ था। ऐसी दशामें यह यक्ष्माके उपशामकके रूपमें कार्य करेगा ; पर यही धातु-प्रकृतिकी दवाके रूपमें प्रधान तथा निर्देशित होगा, तो यह अन्तिम सप्ताहोंमें हानि करेगा। यह एक सौभाग्यकी बात है, कि बहुत-से होमियोपैथ होमियोपैथिक दवा चुन नहीं पाते। यदि अक्षतक रोगीके फेफड़ेमें ऐसी जगह है, जिनका आरोग्य करना जरूरी है, तो लक्षण मिलनेपर कैलि-कार्ब आश्चर्यमय कार्य दिखा देगा।

कैलि-कार्बके एक विषयके सम्बन्धमें मैं आपको सावधान कर देना चाहता हूँ, गठियामें यह एक अत्यन्त खतरनाक दवा होती है। यदि आपको गठियको कोई ऐसा रोगी मिले, जिसकी अंगूठे और अंगुलियोंकी सन्धियाँ बढ़ी हैं, उनमें यन्त्रणा होता है और रह-रहकर प्रदाह हो जाता है, तो आप सोच सकते हैं, कि कैलि-कार्ब ठीक-ठीक सदृश होता है, वह ऐसे ही मौसममें विशृङ्खलित हो पड़ता है, वह पीला और रोगियल हो रहा है, उसके उपसर्ग सवेरे २ से ३ बजेतक उत्पन्न होते हैं तथा उसे खोंचा मारनेकी तरह दर्द भी होता है ; पर ये गठियाके रोगी अकसर दुरारोग्य रहते हैं और यदि ऐसा रहा तो उन्हें आरोग्य करनेका जिम्मा लेना, एक भयानक विपद होगी ; क्योंकि रोग वृद्धिका काल बहुत लम्बा होगा। यदि आप ऐसे ही किसी दुरारोग्य रोगीको कैलि कार्ब ऊँचे क्रममें दे देंगे, तो यह आपके रोगीको बदतर कर देगा तथा रोग वृद्धि भयङ्कर और बहुत ज्यादा समयतक रहेगी ; पर ३० वीं शक्तिसे बहुत फायदा हो सकता है। गठियाकी दशामें जब **कैलि आयोड** निर्देशित रहता है, तो आराम पहुँचानेवाली और उपशामक दवाके रूपमें कार्य करता है ; पर कैलि-कार्ब देना एक भयानक दवाका प्रयोग है। यह एक तीव्र और दुधारी तलवार है। जब गठियाका चूर्ण (Nodosites) बहुत हो, तो आरोग्य करनेके खयालसे ऐसे गठियाके रोगियोंको दवा न दें, उन्हें धातुगत परिवर्त्तन करनेवाली दवा न दें, जिसका २० वर्ष पहले ही प्रयोग होना चाहता था ; क्योंकि उन्हें शृङ्खलामें लानेके लिये जीवनी-शक्तिकी काफि प्रतिक्रिया नहीं होती और वह नष्ट ही हो जायगा। यह कहना, तो विपरीत वाक्य है ; पर उसे आरोग्य करना उसे मारना है। उसे पूर्ण स्वास्थ्यमें लानेके लिये जीवनी-शक्तिकी जिस क्रियाकी आवश्यकता है, वह उसके शरीरके ढाँचेको टुकड़े-टुकड़े कर डालेगी। आपको इन बातोंपर विश्वास करनेकी जरूरत नहीं है, आपको बाध्य नहीं किया जाता ; पर उनके विषयमें सोचिये और कुछ दिनोंतक चिकित्सा करनेके बाद

तथा दुरारोग्योंको आरोग्य करनेकी चेष्टामें बहुत-सी गलतियाँ करनेपर आप होमियोपैथिक दवाओंकी आश्चर्यजनक शक्तियोंको स्वीकार करेंगे। वे केवल भयङ्कर हैं, पुराने गठियाकी रोगियोंमें, कोरण्ड घटित मूत्र ग्रन्थि प्रदाह (Bright's disease) के पुराने रोगियोंमें, यक्ष्माके बढ़े हुए रोगियोंमें, जिनमें बहुत-सी गुटिकाएँ (Tubercles) हो गई हैं, कैलि-कार्बका उच्च क्रम देनेसे सावधान रहिये।

पाठ्य-ग्रन्थको पढ़नेके समय अनुभूतियोंपर ध्यान दीजिये। वे बहुत ज्यादा हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि बहुत ही प्रत्यक्ष—सुई गड़ने और फारनेकी तरह दर्द, खोंचा मारने, चिपक जाने और भ्रमण करनेवाले दर्द हैं।

कैलि आयोडेटम
(Kali Iodatum)

यह बहुत ही सोरा-नाशक और उपदंश-नाशक दवा है। उपदंश-नाशकके रूपमें ऐलोपैथ इसका बहुत अधिक व्यवहार करते हैं, उन बड़ी-बड़ी मात्राओंमें जिसमें इसका वे प्रयोग करते हैं, रोगके विपरीत दशा हो जाती है; क्योंकि समस्त स्वास्थ्य-विधानपर जो भयङ्कर प्रभाव यह उत्पन्न करता है तथा अपना जो विष-प्रभाव जमाता है, उससे यह उपदंशके बहुत-से रोगियोंको दवा देता है। बहुत ही शक्तिशाली पदार्थ वे दवाएँ हैं, जो सार्वाङ्गिक रूपसे रोगसे होमियोपैथिक सम्बन्ध रखते हैं और जब ये सदृश रहती हैं, तो इनकी छोटी-से-छोटी खुराक आरोग्य कर देगी। जब इस रूपमें दवा काफी सदृश नहीं होती, तो मात्राको बढ़ाते जाना इसे होमियोपैथिक नहीं बनाता। यह एक भ्रम विचार है, कि मात्राको बढ़ाना दवाके सदृश बनाना है। यह सिद्धान्तसे दूर हट जाना है। यदि दवा सदृश नहीं है, तो किसी भी आकारकी खुराक इसे सदृश नहीं बना सकती।

उपदंशकी कार्य धाराके बाद यह ग्रन्थि-पूर्ण अंश और अस्थि-आवरक-झिल्लीपर अपना प्रभाव जमाता है। यह सर्दीका प्रदाह उत्पन्न करता है। यह एक गहरायीतक क्रिया करनेवाली दवा है तथा **मर्क्युरियस**से इसका अति निकटस्थ सम्बन्ध है। इसमें जखम, सर्दीकी दशाएँ तथा ग्रन्थियोंके **मर्क्युरियस**के भाँतिके ही रोग हैं। यह अपनी क्रियामें **मर्क्युरियस**के सदृश और इसका एक प्रतिविष है।

पुराने रोगी जो अपने पित्त जनित उपसर्गोंके लिये सदा **कैमोमेल या नीली गोली** लिया करते हैं, उन्हें समय पाकर बार-बार सर्दी होगी, कब्ज होगा, दर्द और यन्त्रणाएँ होंगी तथा यकृतकी गड़बड़ियाँ पैदा हो जायँगी, पाकाशय गड़बड़ाया रहेगा और **पारद**की दूसरी खुराक उन्हें लेनी ही होगी। इनमेंसे कुछ रोगियोंको इसकी जरूरत रहती है। यदि आप किसी ऐसे स्थानमें चिकित्सा करते हों, जहाँ बहुत कम पढ़ा होमियोपैथ है, तो आपको पता लगेगा, कि वह **बिनियोडाइड** (Biniodide) या **मर्क्युरी** मिश्रित कोई दूसरी दवा दे रहा है, यह सब तरहकी सर्दियों और गलक्षतोंके लिये। इससे इन रोगियोंमें

ऋतु-परिवर्त्तन पहुँचनेकी प्रवणता उत्पन्न हो जाती है और वे बराबर लाल पारदका चूर्ण लिया करते हैं। कितने ही तो उसे जेबमें लिये घूमते हैं; पर जितना ही ज्यादा वे लाल चूर्ण खाते हैं, उतनी ही ज्यादा उन्हें सर्दी लगती है और गलक्षत होता है। कितनी ही बार तो शक्ति कृतरूपमें कैलि-आयोड या **हीपर**के बिना उनकी यह तकलीफ आरोग्य ही नहीं होती। ऐसे रोगियोंको कैलि-आयोड या **हीपर** दो प्रधान दवाएँ हैं। जो मनुष्य सर्दी, लगक्षत या ऋतु-परिवर्त्तनकी प्रभाव-प्रवणतावाले होते हैं अर्थात् **मर्करी**के प्रभावके कारण जो **पारदीय** दवा (Mercurial state) में जा पहुँचते हैं, दो ढङ्गसे जाते हैं। जो हमेशा काँपनेवाले और सर्द रहते हैं तथा आगके चारों ओर घूमते रहना चाहते हैं तथा गर्म नहीं रह सकते, उन्हें तो **हीपर**की जरूरत होगी और जो हमेशा गरमाये रहते हैं, जो ओढ़ना उतार फेंकना चाहते हैं तथा लगातार हिलते-डोलते रहना चाहते हैं, अत्यन्त बेचैन रहते हैं, शान्त रहनेपर बहुत क्लान्त हो जाते हैं, उनके **मर्करी**का प्रतिविष कैलि-आयोड होगा। **पारदीय** दशाका प्रतिविष पड़ जायगा, पर कभी-कभी कई बार दवा देनेकी जरूरत पड़ती है और कभी सावधानता-पूर्वक चुनी हुई कई दवाएँ देनी पड़ती हैं। सोरा अर्थात् उसकी प्राचीन दशा तबतक प्रदर्शित न होगी, जबतक आप यह रोगात्मक दशा दूर कर देंगे, जो **मर्क्युरियस**से उत्पन्न हुई है। यह एक आश्चर्यकी बात है, कि कितने अधिक स्त्री-पुरुष और बच्चे **मर्करी** द्वारा उत्पन्न विषसे तकलीफ पा रहे हैं और इतनेपर भी दवा देनेवाले, उन्हें **मर्करी** देते ही जाते हैं और कहते हैं कि हम होमियोपैथिक चिकित्सा कर रहे हैं। मैं सिद्धान्तपर पहुँचा हूँ, कि दवा लिखनेकी कला सीखनेमें अब भी बहुत कुछ बाकी है।

इस दवामें एक विचित्र मानसिक दशा है। रोगीमें बहुत अधिक **उत्तेजना, निर्दयता** तथा **बदमिजाजी** रहती है। अपने परिवार और बच्चोंके प्रति वह कठोर रहता है; गालियाँ दिया करता है। यह उसके दिमागसे विशोधनका समस्त ज्ञान हर लेता है और इसके बाद वह उदास तथा आँसुओंसे भरा हो जाता है। अत्यधिक स्नायविक, बाध्य होकर चहल कदमी करनी ही पड़ती है। यदि वह गर्म कमरेमें रहता है, तो वह कमजोर और क्लान्त हो जाता है और ऐसा मालूम होता है, कि वह हिल-डोल न सकेगा। मिलना चाहता भी नहीं है और यह भी नहीं जानता कि उसे क्या हो रहा है। घरकी गर्मीमें वह बदतर रहता है, पर ज्योंही वह खुली हवामें जाता है, उसे आराम मालूम होने लगता है और ज्योंही वह चलना आरम्भ करता है, उसे और भी उत्तम मालूम होने लगता है और वह बिना थके बहुत दूरतक चल सकता है; फिर घरमें जाता है और कमजोर तथा श्रान्त क्लान्त हो जाता है। विश्राम करनेपर एक स्नायविक और मानसिक क्लान्ति आ जाती है।

मस्तकसे भी कुछ विचित्र बातें प्रकट होती हैं, जैसा कि हमलोग कभी-कभी उपदंशमें देखते हैं, जिसे यह दवा भी वशमें ले आती है, जब कि दूसरे लक्षण मिलते हैं। स्नायुगत उपदंशके पुराने बहुत दिनोंके रोगियोंका पार्श्व-कपालस्थिका सर-दर्द पार्श्व-कपालस्थिके भीतरसे दर्द माथेके बगलसे होकर, मानो कुचल गया है; भयङ्कर कुचलजानेकी तरह, धमक, दबाव, छेदनेकी तरह माथेके दोनों पार्श्वोंमें दर्द। ये दर्द घरके भीतर बदतर रहते हैं तथा तापसे

और हिलने-डोलने पर अच्छे रहते हैं, खुली हवामें घूमनेपर और भी अच्छे रहते हैं। समूचे माथेमें छुरी मारनेकी तरह दर्द होता है, मानो कीलें घुसायी जा रही हैं, चीरनेकी तरह दर्द मस्तक त्वचामें काटनेकी तरह दर्द, कनपटीमें, आँखोंके ऊपर आँखोंके भीतरसे दर्द। मस्तककी अस्थिको आवरक झिल्ली असहिष्णु हो जाती है तथा क्षुद्र ग्रन्थियोंसे भर जाती है। ग्रन्थि-पूर्ण उद्भेद, गुटिका-पूर्ण उद्भेद, औपदंशिक उद्भेदोंसे मस्तककी त्वचा टूट जाती है, "मस्तककी त्वचाकी खुजलानेपर जखम हो जानेकी तरह दर्द होता है।" "केशोंका रङ्ग बदलने और झड़ जानेकी बहुत ज्यादा प्रवृत्ति।" दर्द-भरे स्थानोंकी ठण्डक।

उपदंशके रोगीकी निगहबानी करते समय अकसर दृष्टिकी गड़बड़ी दिखाई देती है और अन्तमें चक्षु-उपतारा-प्रदाह (Iritis) हो जाता है। इनका होमियोपैथिक ढङ्गसे इलाज हो सकता है। मैंने औपदंशिक चक्षु तारका मण्डल प्रदाह (Iritis), बहुत ही जटिल प्रकृतिका **स्टैफिसेग्रिया, हीपर, नाइट्रिक एसिड, मर्क्यूरियस** और कैलि-आयोड तथा कितनी ही अन्य दवाओंसे आरोग्य होते देखा है। प्रदाहकी क्रिया तो उसी समय बन्द हो जाती है, आँख चिपकती नहीं, कदाकार नहीं रहती और आराम होनेके बाद कोई तकलीफ नहीं रह जाती। यदि आप यह सोचें कि प्रदाहका रोग तो अपनी गति **जरूर ही** पूरी करेगा तथा उससे तन्तुओंका रस-स्राव होगा ही तथा आँखें चिपकेंगी ही, इसमें सन्देह नहीं कि आपको **पेट्रोपिन**से प्रसारणका नक्शा तैयार करना ही पड़ेगा और तबतक तारका-मण्डल-प्रदाहको बनाये रखेंगे, जबतक कि रोगने अपना पूरा पथ न पार कर लिया हो; पर यदि मुनासिब दवा पड़ जाती है, तो रोगको अपना सम्पूर्ण पथ पार करनेकी **जरूरत ही नहीं पड़ती** और चूंकि यह प्रकट होनेवाला अन्तिम लक्षण है, इसलिये यही पहले दूर होगा तथा ठीक होमियोपैथिक दवा पड़ जानेके २४ घण्टोंके भीतर ही आँखके लक्षण दूर हो जानेकी आशा करनी चाहिये।

इसमें चक्षु श्वेतपटल (Conjunctiva) की भी बहुत-सी स्पष्ट तकलीफें हैं, जिनमें आँखोंसे सर्दीका हरा स्राव होता है। जब कभी आपको स्राव दिखाई दे तो हरा रङ्ग ही देखनेमें आयगा। नाकसे, आँखोंसे, कानसे **बहुत ज्यादा गाढ़ा, हरा स्राव, हरा श्लेष्मा, पीव-मिला स्राव होता है,** गाढ़ा हरे रङ्गका श्वेत-प्रदरका स्राव, जखमोंसे हरा स्राव। ये गाढ़े हरे या पीलापन हरे स्राव कभी-कभी बहुत बदबूदार होते हैं।

समयपर जब आप चक्षु-श्वेतपटलकी परीक्षा करेंगे, यह बाहर निकला-सा मालूम होता है, मानो उसके भीतर पानी भरा है,—अर्जुन रोग (Chemosis) आयोडाइड आफ पोटास यह अवस्था उत्पन्न करता है। "अर्जुन रोग।" "पीवका स्राव।" पहले समय जब मैं वातके रोगियोंको प्रचलित प्रथाके अनुसार अयोडाइड आफ पोटास देता था; मैंने देखा, कि एक या दो दिन बाद अर्जुन रोग आँखोंमें आ जाता और रोगीके समूचे शरीरकी हड्डियोंमें यन्त्रणा होने लगती थी; पर सन्धियोंका वात दूर हो जाता था। उस रोगीपर ऐलोपैथिक प्रभाव जड़ जमा लेता था, जो बरसोंतक रहता था। मैंने देखा है, कि किसी उपदंशके रोगीको यदि कैलि आयोडकी एक बड़ी खुराक दे दी गयी, तो दूसरे दिन सवेरे

रोगीको पलक खोलकर उठनेमें बहुत तकलीफ होती और आँख खोलनेपर श्वेत-पटलमें पानीकी थैलियाँ बनने लगतीं ; क्योंकि पानी उनके पीछे था, जो थैलियोंमें बाहर निकल आया। कैलि-आयोडमें पलकोंका शोथ भी है तथा चक्षु-श्वेतपटलमें छेद होना और सूजन। श्लैष्मिक-झिल्ली लाल हो जाती है, इनकी खाल उधड़ जाती है और रक्त-स्रावी बन जाती है। रक्तवाहिनियाँ बड़ी हो जाती हैं और सतह यन्त्रणा-पूर्ण प्रादाहित और ज्वाला पूर्ण रहती है। आँखें मिटमिटानेके समय उसे पलकें पकड़ रखनी पड़ती हैं, आँखें मिटमिटानेमें तकलीफ होती है और बालूसे छिल जानेकी तरह हो जाता है। नया चक्षु श्वेतपटल-प्रदाह (आँख उठना), खासकर जब यह उन रोगियोंको होता है, जो वातग्रस्त है, जिन्होंने पारद (**मर्क्युरी**) का अपव्यवहार किया है या जिन्हें उपदंश हुआ रहता है। आँखका उपदंश-जनित और वातज रोग।

पुराने गठियाके रोगी जिन्हें हमेशा हिलते-डोलते रहना पड़ता है तथा खुली हवामें रहना पड़ता है, जो हमेशा बहुत गर्म रहते हैं तथा कमरेकी किसी भी दर्जेकी गर्मी बरदास्त नहीं कर सकते जिन्हें शान्त रहनेपर गठियाका दर्द ज्यादा होता है, जो शान्त चुपचाप रहनेपर अधिक तकलीफ भोगते हैं और खुली हवामें बिना किसी तकलीफके चल-फिर सकते हैं, खासकर जब सर्दी रहती है, साथ ही उनकी सन्धियाँ बढ़ी रहती हैं, बहुत बेचैनी, घबड़ाहट, स्नायविकता, बदमिजाजी और अत्यधिक उत्तेजना रहती है, जिसमें पर्यायक्रमसे रुलायी आती है। बँधी-गतसे दवा देनेवाले इस हिलने-डोलनेसे आराम मिलनेपर बहुत-से अवसरोंपर **रस-टक्स** दे देंगे ; पर **रस-टक्स**से इस रोगीका कोई भी सम्बन्ध नहीं है। याद रखिये, कि **रस-टक्स**का रोगी सर्द रहता है, हमेशा सिहरावन लगा रहता है और आगके पास बैठा रहना चाहता है, जिसके उपसर्ग तापसे घटते हैं, गर्म कमरेमें जिसके रोग घटते हैं और हिलने-डोलनेपर जो क्लान्त हो पड़ता है, पर कैलि-आयोडका रोगी लगातार गतिशील रहनेपर क्लान्त नहीं होता।

नाकमें बहुत-सी तकलीफें रहती हैं। पुरानी उपदंश-जनित सर्दीमें नाकसे बड़ी-बड़ी खरोंटें तथा हड्डियोंके टुकड़े निकलते हैं, उपदंश-जनित नकसीर। नाककी हड्डियाँ अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं, उनमें अस्थि क्षत हो जाता है, नाक चिपटी पड़ जाती है और कोमल हो जाती है। इसका अस्थिभाग नष्ट हो जाता है, जिससे नाकका आकार ठीक रहता है और वह चिपटी होकर नीचे दब जाती है, जिससे सिर्फ लाल नोक मालूम होती है। **हीपर**की तरह नाककी जड़में असीम वेदना। गाढ़ा पीलापन लिये हरा, नाकसे बहुत ज्यादा स्राव होता है। प्रत्येक ऋतु परिवर्त्तनसे सर्दी पैदा हो जाती है। उसे बराबर सर्दी हुआ करती है, लगातार छींके आया करती हैं। नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव होता है, जिससे नासा-पथकी खाल उधड़ जाती है तथा नाकमें जलन पैदा हो जाती है। नाककी सर्दी खुली हवामें बढ़ जाती है, बाकी सब बातोंमें खुली हवामें रोगी अच्छा रहता है। इसलिये जब किसी रोगीमें ऐसी दो दशाएँ हों, जो एक दूसरेके विपरीत क्रिया करती हों, तो वह बहुत तकलीफ भोगता है, क्योंकि उसे आराम मिलनेकी जगह ही नहीं प्राप्त होती। गर्म कमरेमें उनकी नाककी सर्दी या सर्दी घटी रहती है, पर खुली हवामें उसकी बाकी तकलीफें

घटी मालूम होती हैं। "थोड़ी सी सर्दीसे प्रचण्ड, कटु नाककी सर्दीका बारम्बार आक्रमण।" नाककी सर्दीसे सम्मुखकी नासा प्रणालियाँ आक्रान्त हो जाती हैं और ललाटमें बहुत ज्यादा दर्द होता है, आँखोंमें दर्द, गालकी हड्डीके भीतरसे दर्द।

उपदंश और **मर्क्युरी**के सम्बन्धसे जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, कण्ठमें इस तरहकी बहुत सी तकलीफें रहती हैं। कण्ठमें गहरे जखम, पुराने उपदंशके जखम, छेद छेद जखम, जो समस्त कोमल तन्तुओंको, शुण्डिकाको और कोमल तन्तुओंको खा जाते और नष्ट कर देते हैं। तालु मूलपर जखम ; वर्द्धित तालुमूल, बहुत ही कष्टदायक गलक्षत। कण्ठमें श्लैष्मिक-झिल्लियोंपर गांठें और गूमड़। "कण्ठका और बढ़े हुए तालुमूलका सूखापन।" "रातमें जीभकी जड़में भयङ्कर दर्द।" सम्पूर्ण गलकोष, स्वर-यन्त्र, टेंटुआ, और श्वासोपनलियाँ सर्दीकी दशासे तकलीफ पाया करती हैं। हरे स्रावके साथ प्रदाहिक दशाएँ।

जब कि समस्त वाह्य लक्षण और बाकी शारीरिक लक्षण ठण्डी हवामें और बाहरी सर्दी लगनेपर अच्छे रहते हैं, भीतरी सर्द चीजें रोगको बढ़ा देती हैं। ठण्डा दूध, मलाईका बरफ, बरफका पानी, ठण्डे पेय और ठण्डे खाद्य, पाकाशयमें गयी हुई ठण्डी चीजें उपसर्गोंको बढ़ा देती हैं। यद्यपि रोगीको बहुत ज्यादा पिपासा रहती और वह बड़ी मात्राओंमें पानी पीता है, यदि बहुत सर्दी रहती हैं, तो यह उसे बीमार कर देगा।

केलि-आयोडमें, **कार्बो-वेज** और **लाइकोपोडियम**का समस्त आध्मान-वायु और डकार रहता है।

समस्त शरीरकी गाठें फूली, बढ़ी और कड़ी हो जाती हैं। इसने गल-ग्रन्थिकी विवृद्धि (Enlargement of the thyroid gland) आरोग्य कर दी है, यह **आयोडिन**से हो सकता है।

इसका एक विचित्र चरित्रगत लक्षण है, मूत्रनलीका पुराना प्रदाह, जो सूजाकके बाद होता है, जहाँ स्राव गाढ़ा और हरा होता है या हरापन लिये पीला होता है, **बिना किसी दर्दका**। अण्डकोषका प्रदाह, जो औपदंशिक प्रकृतिका होता है।

स्वर-भङ्गके साथ स्वर यन्त्रमें दर्द और खाल उघड़ना, स्वर-यन्त्रके सङ्कोचनके कारण जाग उठता है ; स्वर-यन्त्रके यक्ष्मामें यह बहुत लाभदायक होता है। स्वरयन्त्रमें लगातार उपदाहके कारण खाँसी। सूखी खुसखुसी खाँसी, स्वरभङ्गकी खाँसी, जिसके साथ बहुत ज्यादा हरा बलगम निकलता है। सर्दी-जनित यक्ष्मा, जिसमें गाढ़ा, बहुत ज्यादा हरा बलगम निकलता है। फुसफुसावरक-झिल्लीसे रस-स्राव, हृत्पिण्डका, फड़फड़ाना, थोड़ा भी परिश्रम करने या चलनेपर कलेजा धड़कना। तेज नाड़ी।

केवल पुरानी गठियाकी तकलीफोंमें नहीं, वल्कि जिन रोगियोंको यक्ष्मा हो जानेकी सम्भावना रहती है तथा पुरानी मैलेरियाकी तकलीफोंमें यह दवा बहुत ही लाभदायक होगी।

इसने गृध्रसी वात आरोग्य किया है, जब कूल्हेसे नीचे दर्द तेज रहता है, लेटनेपर बदतर हो जाता है या बैठने या खड़े होनेपर बदतर होता है और चलने-फिरनेपर अच्छा रहता है।

आप किसी रोगिनीकी पलङ्गके पास जाकर खड़े हो जायँ जिसे वह बीमारी हुई जिसको वह "आम-वात (Hive)" कहती है, आप देखेंगे कि उसे सरसे पैरतक एक तरहके उद्भेद हो गये हैं, जिसमें बड़े-बड़े थक्के बनते हैं, उसे सरसे पैरतक खाली जलन हो रही है। उसे कोई ओढ़ना सहन नहीं होता, उसके शरीरका ताप बढ़ा रहता है, इतनेपर भी उसका तापमान नहीं चढ़ता। समूचे शरीरपर रूखे गाँठ-गाँठकी तरह उद्भेद, एक वह दशा जो कई घण्टोंमें ही चली जायगी, पर कुछ दिन, सप्ताह या महीनों बाद फिर लौट आयगी कैलि-आयोडके ऊँचे क्रमकी एक ही खुराक इस आमवातकी बीमारीके रोगीको शृङ्खलामें ला देगी और फिर नहीं पैदा होगी।

कैलि फास्फोरिकम
(Kali Phosphoricum)

इस दवाके उपसर्ग सवेरे शामको और रातमें बदतर हो, जाते हैं। अधिक असहिष्णु, स्नायविक, कमजोर मनुष्य, बहुत दिनोंकी बीमारीसे क्लान्त, बहुत उदासी और विरक्त तथा बहुत दिनोंतक मानसिक कार्य करना और भी जैसे कि अत्यधिक विषय भोग और बुराइयोंके कारण स्वास्थ्य-हीन हो रहे हैं। यह एक दीर्घ-क्रिय सोरा नाशक दवा है। रक्त-स्वल्प और हरित्पाण्डु रोगग्रस्त रोगी। बहुत-सी बीमारी आराम करनेके समय बदतर हो जाती है और धीरे-धीरे हिलने-डोलने और बहुत धीरे-धीरे चलनेपर घट जाती है। सम्पूर्ण रोगी और उसकी वेदनाएँ ठण्डी हवामें बढ़ जाती हैं। ठण्डे हो जानेसे, ठण्डे हो जानेके बाद, ठण्डी जगहमें प्रवेश करनेपर, ठण्डमें और तर मौसममें बदतर हो जाती हैं। उसे आसानीसे सर्दी लग जाती है, खुली हवा पसन्द नहीं पड़ती, हवाका झोंका रोग बढ़ा देता है और खुली हवामें रोग वृद्धि हो जाती है। हाथ पैरोंमें सुन्नपन। बहुत ज्यादा आलस्य। सीढ़ी चढ़ने और शारीरिक परिश्रमसे रोग-वृद्धि। ग्रन्थियाँ सिकुड़ जाती हैं। नर्त्तन रोगकी तरह गति, स्त्री-सङ्गमसे रोग, बढ़ जाते हैं। कमजोरी, क्षीणता और रक्त-स्वल्पता और गुटिका-रोग प्रवणता (Tubercular tendency), इस सोरा नाशक दवाके जबर्दस्त स्वरूप हैं। प्रत्यङ्गोंका शोथ और रक्ताम्बु-गह्वरोंमें सूजन। भोजनके बाद उपसर्ग बढ़ जाते हैं। दुबलापन, क्षय करनेवाले रोग, जिसमें **सड़ा स्राव** और **सड़ा मल** निकलता है। मूर्च्छाके दौरे। उपवाससे रोग घटते हैं। पेशियों तथा यन्त्रोंकी वसा बढ़ जानेकी प्रवणता। सर्द पेय दूधसे रोग बढ़ जाते हैं। पाचनशील दशामें भी इस दवाका प्रयोग होता है। अङ्ग काले पड़ जाते है। सड़नेवाले, बदबूदार **रक्त-स्राव** और बहुत सुस्ती। सब तरहकी स्नायविक दुर्बलताएँ। व्याधि-शंका और गुल्मवायु (Hysteria)। ग्रन्थियोंका प्रदाह।

रस-क्षयके-कारण रोग। रक्तका बढ़ना। दर्द यन्त्रणदायक। दबावकी तरह, सुई गड़नेकी तरह, नीचे उतरनेवाला फाड़नेकी तरह, पक्षाघात करने वाला दर्द। पुराना स्नायु-शुलका दर्द, धीरे-धीरे हिलनेपर घटना, सर्दीसे बढ़ता है। धीरे-धीरे बढ़नेवाली कमजोरीसे एकतर्फा पक्षाघात। क्लान्तिके बाद दर्दका दौरा होता है। समूचे शरीरमें तथा प्रत्यङ्गोंमें स्पन्दन। अकसर **एकतर्फा** उपसर्ग। बहुतसे उपसर्ग नींदके समय और बाद उत्पन्न होते हैं। पेशियोंकी ऐंठन, प्रत्ङ्गोंका काँपना। सड़े स्राव होनेवाले जखम। बदबूदार सर्दीके स्राव। तेज चलनेपर बीमारी बढ़ जाती है। खुली हवामें घूमनेपर बीमारी बढ़ जाती है। बिछावनकी गर्मीसे रोग घटते हैं। जाड़ेमें रोग बदतर हो जाते हैं। सुसलरके अनुगामियोंसे बहुतसे रोगी आरोग्य किये गये हैं, जिससे इस दवाका पूरा वर्णन नहीं हुआ है। हमारे साहित्यमें इसकी उत्तम परीक्षाएँ प्राप्त हुई हैं। ऊँचे और सर्वोच्च क्रमसे सबसे ज्यादा फायदा होता है तथा इसकी केवल एक ही खुराक प्रयोग करनी चाहिये।

उत्तेजनापूर्ण हो जाता है और मुश्किलसे सम्हाला जा सकता है, सवालोंका जवाब देनेका इच्छा न होना। शामके समय बिछावनमें तथा रातके समय सन्देह-पूर्ण घबड़ाहट भोजनके बाद घबड़ाहट, भविष्यके सम्बन्धमें आशंका, स्वास्थ्यके सम्बन्धमें, अपनी मुक्तिके सम्बन्धमें। जब कभी उसकी नींद खुलती है, यह उसे चांप देता है और यह व्यक्ति शोक-ग्रस्त हो पड़ता है। उसे अपने पतिपर बिराग रहता है। अपने बच्चे और पतिके प्रति निर्दय रहती है। परिवर्त्तित प्रेम। अपनी अवस्थाको सोचा करता है। सङ्गी-साथकी इच्छा नहीं करता। बुरे समाचारसे उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। सवेरे और शामको चित्त-विभ्रम। विपरीत चिन्तना। टाइफायड और सेप्टिक ज्वरोंमें धीमा प्रलाप। सकम्प पक्षाघात। खाम-खयाल। मरे मनुष्योंको देखता है। मूर्त्तियाँ डरावनी मूर्त्तियाँ देखता है, निराशा और उदासी। सवेरे मनकी सुस्ती, हतोत्साह। वह खाना नहीं चाहता। वह बहुत उत्तेजनशील रहता है तथा बुरे समाचारसे बहुत विचलित हो जाता है, इसके बाद धड़कन हो जाती है और बहुत-से स्नायविक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। मानसिक परिश्रम करनेपर क्लान्ति। वह बहुत कुछ भ्रमोंमें पड़ा रहता है। शामको भय उत्पन्न हो जाता है। भीड़, मृत्यु, **रोग**, बुराई और मनुष्योंका भय, **एकान्त**का भय। वह सहजमें ही डर जाता है, जिससे उसके बहुतसे स्नायविक और मानसिक लक्षण बढ़ जाते हैं। **कमजोर याददाश्त भुलक्कड़**। शब्दोंको स्मरण नहीं कर सकता। घर लौट जानेकी बीमारी शोक तथा बहुत दिनोंके रञ्जका प्रभाव। क्रिया और बोलीमें स्नायविक जल्दबाजी दिखाई देती है। स्नायविक उत्तेजना तबतक बढ़ती जाती है, जबतक गुल्म-वायुका चरित्र मौजूद रहता है। यह **मानसिक दुर्बलताकी** बहुत बड़ी दवा है। वह असन्तुष्ट और क्रोधी रहती है। पारिपार्श्विक, प्रसन्नता तथा अपने परिवारवालोंसे उदासीनता। व्यवसायके काम-काज सम्बन्धमें उदासीन और इसके बाद शिथिल और आलसी हो जाता है। उन्माद, उदासीनता सोचती है, कि उसने धर्मके दिन पापमें बिता दिये हैं और खाना नहीं चाहती। अपने पारिपार्श्विकोंको वह नहीं पहचानती। पगलोकी तरह चीखती और क्रिया करती है। अपने परिवारवालोंसे झगड़ा करती है। सवेरे जागनेपर, शामको, सङ्गमके बाद, सर-

दर्दके समय, ऋतुकालके समय, बात करनेपर, किसी भी समय जागनेपर, अतिसारसे क्लान्त हो जानेपर उपदाह बहुत प्रत्यक्ष हो जाता है। हँसना, रोना, परिताप करना तथा हाथ मलना। जीवनसे घृणा रहती है, नींदमें गों-गों करता है। **इन्द्रियोंका सुस्त पड़ जाना,** शब्दोंका याद न रहना और **मनकी बहुत सुस्ती**। सवेरे नींद खुलनेपर **उदासी**, शामको तथा दिन और रातमें। जिद्दी, उदास, परिवर्त्तनशील भाव-भङ्गी। बोलने और लिखनेमें गलतियाँ। बहुतसे आरोग्य रोगियोंमें एक धीमी मानसिक दशा दिखाई दी थी, सार्वाङ्गि अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुता और खासकर शोर-गुलसे। ऋतु-कालमें बेचैनी। मानसिक परिश्रम, बहुत दिनोंकी चिन्ता, बहुत उदासी तथा अत्यधिक दुराचार और बुराइयोंके कारण उत्पन्न हुई स्नायविक सुस्तीके बहुतसे रोगियोंके लिये इस दवाकी जरूरत पड़ती है असम्बद्ध वाचा। चोंक पड़ना, **भयसे सहजमें ही चौंक** पड़ता है, निद्रा-कालमें, **स्पर्शसे या आवाजसे,** व्याकुलता और **सन्देह**। उसे बात करनेकी इच्छा नहीं होती या कोई बात करता है, तो अच्छा नहीं लगता। नींदमें बातचीत। विचारोंका गायब हो जाना। डरपोक और लजालु हो जाता है। विरक्तिसे बहुत-से उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। **रोना** और जीवनसे वितृष्णा।

तीसरे पहर और शामके समय सरमें चक्कर आना, खुली हवामें घट जाता है, भोजनके बाद रोग वृद्धि हो जाती है, सामने गिर पड़नेकी एक प्रवृत्ति, ऊपरकी ओर देखनेपर रोग वृद्धि, उसे बाध्य होकर लेटे रहना पड़ता है, मिचली और सर-दर्दके साथ, उठनेपर, सब चीजें घूमने लगती हैं, खड़े होनेके समय, सामने झुकनेके समय; सर घुमानेपर, खुली हवामें टहलनेपर।

सर ठण्डा रहता है और ठण्डी हवा सहन नहीं होती। रक्त-सञ्चय, खाँसनेपर माथा भरा मालूम होता है। शामके समय माथेमें गर्मी, ललाटमें तापकी झलक। सर ऐसा मानो सामनेकी ओर गिरा जाता है। मस्तक-त्वचामें तनाव। माथेमें भार, सवेरे सोकर उठनेपर, ललाटमें और पश्चात् मस्तकमें। मस्तिष्कोदक-रोगकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है और बहुत-से मस्तिष्क रोगको, जब बदबूदार अतिसार साथ रहता है। सवेरे सोकर उठनेपर, रातमें बिछावनमें, मस्तक त्वचामें खुजली, ३ से ५ बजेतक रोग बढ़ जाता है। सरमें धमक मालूम होती है। इसमें बहुत ज्यादा सर-दर्द है। **सवेरे** बिछावनमें दर्द, सोकर उठनेपर, जागनेपर और **घूमनेपर अच्छा** हो जाता है। तीसरे पहर शामको और **रातमें** दर्द बहुत ठण्डी हवामें बदतर हो जाता है; पर खुली ताजी हवामें घट जाता है। उसे अपने केश लटकाये रखने पड़ते हैं। नाककी सर्दीके साथ सर-दर्द होता है, सर्दी लग जानेपर होता है। खाँसनेपर दर्द बदतर हो जाता है, और खानेपर, घटता है, बहुत उत्तप्त हो जानेपर बढ़ जाता है, पाकाशयकी गड़बड़ी होनेपर, उत्तेजनासे तथा शारीरिक परिश्रमसे। क्लान्तिके साथ पश्चात् मस्तकमें भार। जरूर ही लेटजाना और रोशनी हटा देना पड़ता है, पीठके बल लेटना रोग घटाता है, हिलने, सीढ़ी चढ़नेपर रोग-वृद्धि; ऋतु-स्राव होनेके पहले समयमें रोग वृद्धि। मानसिक परिश्रमसे सर-दर्द, विद्यार्थियोंमें, अत्यधिक काम करनेके कारण जो मस्तिष्क-क्लान्ति आती है, वह इस दवासे आरोग्य हो जाती है—जब लक्षण

मिलते हैं। ऋतुकालमें स्नायविक सर-दर्द। आवेशिक सर-दर्द धीरे-धीरे हिलनेपर सर-दर्द घट जाता है, शोर-गुलसे बढ़ जाता है, गाड़ीमें सवारी करनेपर, नींदके बाद, छींकनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, झुकनेपर, छूनेपर, दबावसे, चलनेपर और लिखनेपर। आँखपर जोर पड़नेपर सर-दर्द हो जाता है तथा सरमें कपड़ा लपेट लेनेपर घट जाता है। प्रचण्ड धमकका दर्द। ऋतु-स्रावके पहले ललाटमें दर्द, आँखके ऊपर तथा पश्चात् मस्तकतक फैल जाता है, ललाट पारकर दोनों कनपटियोंमें। रातभर रहनेवाला पश्चात् मस्तकका सर-दर्द, बार-बार नींद खुल जाती है, उठनेपर दर्दके साथ, पश्चात् मस्तकमें और कमरमें दर्दके साथ जागता है, पीठके बल लेटनेपर घट जाता है, उठ बैठनेपर छूट जाता है। पश्चात् मस्तकमें इस तरहका दर्द, मानो केश खींचे गये हैं; केशको लटकाये ही रखना पड़ता है। **मस्तकके पार्श्व भागमें** प्रचण्ड सर-दर्द। बायें चुचुकाकार प्रवर्द्धन (Mastoid process) में स्नायु-शूलका दर्द; हिलने-डोलनेपर तथा खुली हवामें बढ़ जाता है। कनपटियोंमें दर्द। दर्द यन्त्रणादायक, छेदनेकी तरह जलनकी तरह। पाखाना होनेके समय ललाटमें जलन। ललाटमें फट जानेकी तरह दर्द, ललाटमें; मस्तक पार्श्वमें मस्तके शिखरमें खींचन। झटकेका दर्द, दबावका दर्द। ललाट मानो छेद दिया जा रहा है, पर खानेपर घट जाता है। **ललाटमें बाहरकी ओर** दबाव; आँखोंके ऊपर, मानो मस्तिष्क फैल जायगा। पश्चात् मस्तकमें दबाव, खानेपर घट जाता है। कनपटियोंमें और मस्तक शिखरमें दबाव। पश्चात् मस्तकमें यन्त्रणा। माथेमें, ललाटमें, आँखोंके ऊपर पश्चात् मस्तकमें, मस्तक-पार्श्वमें, दाहिने सम्मुख प्रवर्द्धनमें और कनपटियोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। सुन्न कर देनेवाला दर्द। माथेमें, ललाटमें ऋतु-स्रावके पहले फाड़नेकी तरह दर्द, लेट जानेपर तथा स्राव जारी हो जानेपर घट जाता है। पश्चात् मस्तकमें, मस्तक-पार्श्वमें, कनपटियोंमें और मस्तक शिखरमें फारनेकी तरह दर्द। मानसिक परिश्रम करनेपर ललाटपर, पसीना, ठण्डा पसीना। स्पन्दन, ललाट और कनपटियोंमें। मस्तिष्क झटका तथा आवाजोंको बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। माथेमें आघात मालूम होता है मस्तिष्कको कोमलता; माथा खोलनेपर उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

चाक्षुषी नाड़ीकी रक्त-हीनता। सवेरे पलकें सट जाती है और श्लेष्माका स्राव होता है, शामको रोग-वृद्धि हो जाती है। आँखोंका सूखापन और धुँधलापन। पलकोंका गिरना। चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह, छिद्र हुई रक्त-वाहिनियाँ और आँसूका स्राव होना। चाक्षुषी नाड़ीका पक्षाघात। आलोकातङ्क। आँखोंकी लाली। टकटकी लगी, बेचैन, उत्तेजित दृष्टि। मस्तिष्क रोगके बाद डेरा देखना। गड़हेमें धँसी आँखें। फूली शोथ ग्रस्त पलकें। आँखों और पलकोंकी ऐंठन कमजोर आँखें। आँखें हिलानेपर, पढ़नेपर, जागनेपर आँखोंमें दर्द, सूर्यकी रोशनीमें बढ़ जाता है। धीमा दर्द। आँखों और पलकोंके किनारे यन्त्रणा। खींचन, दबाव। आँखके गोलेमें छूनेपर यन्त्रणा। सवेरे आँखोंसे लेकर कनपटीतक तेज दर्द। सुई गड़नेकी तरह दर्द। आँखें चिपक जाती हैं, बालू रहने जैसी अनुभूति। फाड़नेकी तरह दर्द। विकृति दृष्टि। आँखके सामने नाना प्रकारके रङ्ग, काले धब्बे उड़ते हैं, काले रंग, रोशनीके चारों ओर घेरा। **सङ्गमके बाद धुँधली दृष्टि,** दृष्टि

कुहरेसे ढँकी। देखनेके परिश्रमसे आँखकी तकलीफें और सर-दर्द पैदा हो जाता है। दुर्बल दृष्टि-शक्ति।

कानसे स्राव, खून-मिला, **बदबूदार, सड़ा, पीव-भरा।** कानपर उद्भेद। कानकी तलीमें फुन्सियाँ। कानमें भरापन। कान गर्म रहते हैं। कानमें खुजली, लेटनेपर बढ़ जाती है। स्नायविक क्लान्ति तथा मस्तिष्ककी रक्तहीनताके कारण सरमें चक्कर आनेके साथ आवाजें। गुनगुनाहट, फड़फड़ाहट, भनभनाहट, घण्टी बजने, गरज, सनसनाहट, **गानेका आवाज,** सीटी बजनेकी आवाज। कानमें गहरायीपर दर्द। मरोड़, खींचन, दबाव। बायें कानमें नीचे गालतक और कानके पीछे सुई गड़नेकी तरह दर्द। कानमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, लेटनेपर बहुत बढ़ जाता है। कानमें फाड़नेकी तरह दर्द। कानमें स्पन्दन। अनुभूति रुकी। कानमें गानेकी आवाज। कान फूले। ऐंठन। शोरगुल और आवाजोंका बहुत तेज सुन पड़ना, गड़बड़ी मानो मानव-शब्दकी नकल की जा रही है हरापन।

नाककी सर्दी, बहनेवाली या सूखी, खाँसीके साथ, **सर-दर्द**के साथ। बहुत ज्यादा स्नायविक दुर्बलताके साथ उद्भिज्ज ज्वर। जल्द आरोग्य न होनेवाली सर्दी। स्राव खून-मिला, खाल उधेड़नेवाला, हरापन लिये **बदबूदार** पीव-मिला, डोरीकी तरह, गाढ़ा, पानी-जैसा, सफेद, **पीला,** सवेरे बदतर। पीली पपड़ी जमती है, दाहिने नथुनेमें बदतर। उसे नाकको अत्यन्त रुखेपनसे तकलीफ होती है। सवेरे नाकसे खूनका स्राव, नाक छिड़कनेपर, निम्न-ज्वरोंमें। नाक रुखी रहती है। नाकमें खुजली और जलन। नाककी जड़में दबावका दर्द। नाकके भीतर बहुत यन्त्रणा, साथ ही पीली खरोंट और काला रक्त निकलता है। गन्ध पहले तो तीव्र रहती है, फिर गन्धका अभाव हो जाता है। बार-बार छींकें आती हैं; २ बजे सवेरे बहुत ज्यादा छींके आती हैं; थोड़ी भी खुली हवा लगनेपर। नाकमें जखम, नाक फूली रहती है।

भौंवोंके किनारोंसे आँखकी पपरीतक भूरे दाग, जो तीन इञ्च चौड़े रहते हैं और तीन महीनेतक बने रहते हैं। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त चेहरा। आँखोंके चारों ओर काला घेरा। फटे ओंठ। चेहरा पीला, रोगियल और मैला। गालपर लाल गोल दाग। पीला कामला ग्रस्त चेहरा। ओंठपर भैंसिया दाद। ओंठोंपर जखमकी पपड़ियाँ। ओंठोंपर फुन्सियाँ। भाव घबड़ाया, रोगियल और कष्टपूर्ण रहता है। चेहरेपर तापकी झलक। कर्णमूल-ग्रन्थिकी सूजन और प्रदाह। चेहरेमें, गलमुच्छमें या दाहिने गालमें और कनपटीपर खुजलाहट। खाँसने, सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह चेहरेमें दर्द, ठण्डी हवामें बढ़ जाता है। खोखले दाँतसे पैदा होनेवाला चेहरेके दाहिने पार्श्वका दर्द, सर्द प्रयोगसे घट जाता है। जबड़ेकी हड्डियोंमें दर्द, भोजनके बाद, बोलनेपर, जागनेपर और छूनेपर घट जाता है। चेहरेका स्नायुशूल जिसके बाद बहुत कमजोरी आ जाती है। ठण्डी हवामें, घुड़सवारी करनेपर स्नायुशूलका सुई गड़नेकी तरह दर्द, तलहत्थीकी गर्मीसे घट जाता है। चेहरेके एक पार्श्वका पक्षाघात (**कास्टिकम**)। चेहरेमें पसीना होता है। ओंठ, कर्णमूल-ग्रन्थियाँ तथा हनुनिम्नस्थ ग्रन्थियाँ फूली रहती हैं। चेहरेका तनाव। ओंठपर जखम।

जीभ काले मैलसे ढँकी रहती हैं और खून वहता है। मसूढ़ोंसे खून जाता है तथा मसूढ़े जखमसे भरे रहते हैं। टाइफायडका मुँह, जीभ और दाँत, सेप्टिक ज्वरमें जब कि सड़ी वदबू आती है। मसूढ़े और जीभके किनारोंकी लाली। जीभ सफेद, चिकनी, हरापन लिये पीला रहती है। सवेरे मुँह और जीभ सूखी। मुख-गह्वर और मसूढ़े प्रादाहित। **वदवूदार गन्ध, सड़ी, सवेरे** नष्ट हुए पनीरकी तरह। यन्त्रणापूर्ण जलता हुआ मुँह और जीभ। अलग हुए मसूढ़े। गाढ़ी नमकीन लार। शीताद-ग्रस्त (Scorbutic) छेद-छेद मसूढ़े। मुख-गह्वरकी छतके किनारे फूले, ऐसे मालूम होते हैं मानो उनपर तेलकी लकीर पड़ी हुई है। स्वाद बुरा, तीता गन्दा, सड़ा, खट्टा ; सवेरेके वक्त तीता। नींदमें दाँत पीसता है। दाँतोंका स्नायविक कटकटाना। सर्दी लगनेपर दाँतमें दर्द, ठण्डी चीजोंसे बढ़ जाता है, चबानेपर बढ़ता है, नींदके बाद बढ़ता है। धमक, यन्त्रणा, झटका, दबाव, यन्त्रणा, सुई गड़ने और **फाड़नेकी** तरह दर्द।

जब डिफ्थीरियामें **सड़ी गन्ध** निकलती है, तो इस दवाका उसमें सफलता-पूर्वक प्रयोग होता है। शामको कण्ठमें सूखापन ; कण्ठमें भरापन और सङ्कोचन। खखार-खखारकर कण्ठ साफ करनेकी प्रवृत्ति। सवेरे कण्ठमें श्लेष्मा, कभी-कभी उसका स्वाद नमकीन रहता है। कण्ठमें ढेला रहनेकी तरह मालूम होना। निगलनेपर कण्ठमें दर्द। दाहिने तालुमूलमें दर्द। जलन, खाल उधड़ना, यन्त्रणा। निगलनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द। वायें तालुमूलसे लेकर कानतक सुई गड़नेकी तरह दर्द, तीसरे पहर सवारी करते समय। तालुमूल और कण्ठकी सूजन और प्रदाह, जिसके साथ झिल्लीकी तरह सफेद तलछट जमती है।

भूख बढ़ी रहती है और कभी-कभी तो राक्षसी भूख रहती है, पर खाद्य पदार्थका देखते ही गायब हो जाती है। भोजनके बाद तुरन्त ही भूख लग आना, स्नायविक दुर्बलताके कारण। ऋतुकालके समय भूख। खाद्य, रोटी मांससे अनिच्छा। पाकाशयमें ठण्डेपनकी अनुभूति। **ठण्डे पेयोंकी,** खट्टी चीजोंकी, मिठाइयोंकी इच्छा करता है। पाकाशय साधारणतः गड़बड़ाया ही रहता है। **भरापन** और तनाव। ऋतुकालके समय, भोजनके बाद, मिचलीके साथ खालीपन। भोजनके बाद डकार, कोई लाभ नहीं, पित्तके, तीते, खाली, खाद्यके, खट्टे ; मुँहमें पानी भर आना। कलेजेमें जलन। भोजनके बाद पाकाशयमें भार। खाद्यसे घृणा। खाँसनेपर, भोजनके बाद, सर-दर्दके-समय, ऋतुकालके समय, गर्भावस्थामें मिचली ; डकार आनेपर घट जाती है। ओकाई आना। भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द और ऋतुकालके समय। जलन, मरोड़ काटनेकी तरह दर्द, **यन्त्रना।** सुई गड़नेकी तरह दर्द। ५ बजे सवेरे जागनेपर चबानेकी तरह दर्द। भोजनके बाद दबाव। पाकाशयमें एक पत्थर रहनेकी तरह अनुभूति। ठण्डे पानीकी बहुत ज्यादा प्यास। तापके समय प्यास। कभी-कभी प्यासका बिलकुल ही न रहना। खाँसनेपर, भोजनके बाद, सर-दर्दके समय, ऋतुकालके समय, गर्भावस्थाके समय, सवेरेके वक्त वमन। पित्त रक्त, **खाद्य** तथा श्लेष्माका, खट्टा वमन।

तलपेट ठण्डा मालूम होता है तथा खुला रखना सहन नहीं होता। भोजनके बाद

और ऋतुकालमें तनाव। **टाइफायड ज्वरमें** बहुत दर्द के साथ आध्मान। शोथसे तना। खालीपनकी अनुभूति। हृत्पिण्डमें तकलीफके साथ उत्सेचन (Fermentation) आध्मान वायु **रुका, शब्द करनेवाला**। भोजनके बाद भरापनकी अनुभूति। तलपेटमें **भार और** गर्मी मालूम होना। आँतों, अन्त्रावरक झिल्ली और यकृतका प्रदाह। रातमें बढ़ जानेवाला तलपेटका दर्द ; तलपेटमें आड़ाआड़ी दाहिनेसे बायें ; दुहराकर झुक जानेपर घट जाता है। खाँसीके समय, अतिसारके समय, **भोजनके बाद** ऋतु-स्राव होनेके **पहले** और समय ; आवेशिक, पाखाना होनेके पहले। यकृत-प्रदेशमें दर्द। नीचेकी ओर खींचनेका दर्द, बैठनेपर घट जाता है, बायीं करवट लेटनेपर बढ़ जाता है। पानी पीनेपर बढ़ जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि छींकनेके समय तलपेटका पार्श्व भाग फट जायगा। जलन। भोजनके बाद मरोड़। काटनेकी तरह दर्द। वृथा ही पाखानेका वेग होनेके साथ कुक्षि-देश (Hypogastrium) में पीसनेकी तरह दर्द। यकृत और उदरमें घावकी तरह **यन्त्रणा**। तलपेट और यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द प्लीहामें सुई गड़ने और कसकर पकड़ रखनेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। गड़गड़ाहट और तनाव।

बहुत ही कष्टप्रद मलके साथ कब्ज ; मल कड़ा, बड़ा गांठ गांठ। अतिसार, सवेरे ६ बजे, शामको, **रातमें, भोजनके समय और बाद**। बकवादी ; भय या उत्तेजनासे, ऋतु-कालके समय, दर्द-रहित, वमन और मरोड़के साथ, **टाइफायडमें, अत्यधिक क्लान्तिके साथ**। रक्तामाशय। बदबूदार अधोवायु जो उपसर्गोंको घटा देता है। मलद्वारमें सुरसुरी। टाइफायडमें आँतोंसे रक्त-स्राव। भीतरी और बाहरी बवासीरके मसे, उनमें खुजली, दर्द-भरी जलन और सूजन। बदबूदार तरल-स्रावके साथ प्रादाहिक बवासीर। मलान्त्रकी निष्क्रियता। आप ही-आप पाखाना होने लगना। पाखाना होनेके समय और बाद मलान्त्रमें दर्द, पाखाना होनेके समय और बादमें जलन। **यन्त्रणा** और दबावकी तरह दर्द। सुई गड़नेकी तरह दर्द। पाखाना हो जानेके बाद कूथन। मलान्त्रका पक्षाघात। शिथिल मलद्वार। वृथा ही पाखानेका वेग होना। मल खाल उधेड़ देनेवाला ; खून मिली आम या केवल खून, भूरा, मिट्टीके रङ्गका, पानीकी तरह मल ; जलपानके बाद बदबूदार अधोवायु जिसके बाद कूथन होती है। मल **बहुत ज्यादा**, काला, बार-बार ; बड़ा हल्के रंगका, अनपचके दस्त। मल **बदबूदार सड़ा**, पीब मिला, पानीकी तरह, मांड़की तरह, पीला या पीलापन लिये हरा श्लेष्मा।

वृद्ध पुरुषोंकी तथा स्नायविक दुर्बलोंका, मूत्राशयका पुराना श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह। मूत्राशयमें दबाव और सुई गड़नेकी तरह दर्द। बार-बार पेशाब लगता है या वृथा ही लगता है और रातमें बदतर हो जाता है। पेशाब चूता है। पेशाब करनेके बाद पेशाब बून्द-बून्द चूते रहना ; कमजोर धार, बार-बार रातमें बहुत ज्यादा। धारा **रुक** जाती है **और फिर जारी** हो जाती है। वृद्ध पुरुषोंको टाइफायडमें, स्नायविक दुर्बलतामें **आप-ही-आप पेशाब** हो जाना। अनजानमें पेशाब हो जानेके दुरारोग्य रोगीमें तथा उत्तेजना-प्रवण असहिष्णु बच्चोंको। पेशाबसे सन्तोष नहीं होता। मूत्रपिण्डमें प्रदाह और सुई गड़नेकी तरह दर्द। पेशाब अण्डलाल मिला, जलन, धुँआ-सा, **बहुत ज्यादा**. बदबूदार, थोड़ा, पानीकी तरह,

केशरकी तरह पीला होता है। तली बुलबुलेकी तरह, श्लेष्माकी और लाल और बालूकी तरह। आपेक्षिक गुरुत्व बढ़ा रहता है। पेशावमें चीनी।

सवेरे और रातके समय, बिना कामेच्छाके ही प्रबल लिङ्गोद्रेक होता है, सवेरेके वक्त प्रचण्ड रहता है। **ध्वजभङ्ग**। उत्तेजनाके साथ बारम्बार विर्य-स्राव। लिङ्गमुण्डका प्रदाह। कामेच्छा लुप्त।

क्लान्त-श्रान्त स्नायविक स्त्रियोंमें जिन्हें गर्भ-स्राव हो जाया करता है। सङ्गमसे अनिच्छा। ऋतु-स्रावके बाद चार-पाँच दिनोंतक कामेच्छा खूब बढ़ी हुई। जरायुका प्रदाह। श्वेत-प्रदरके कारण खुजलाहट। पुराना कर्कट, जिससे समय बाँधकर, योनिकी-राहसे तथा मलान्त्रके भीतरसे बहुत ज्यादा पीले रङ्गका तरल स्राव होता था, जो इसने आरोग्य किया है। श्वेत-प्रदरका स्राव **कटु, जलन करनेवाला, बहुत ज्यादा**, हरा, पीला बदबूदार, सड़ा ; ऋतु-स्रावके बाद जवान लड़कियोंमें। ऋतु-स्राव नहीं होता, काला, **बहुत ज्यादा, काला**, देरसे, वार वार, अनियमित, देरसे, **बदबूदार, दर्द भरा**, पीला, रुका, **थोड़ा, कम**, रुका हुआ, **गाढ़ा**,। जरायुसे रक्त-स्राव। बायें डिम्बाशयमें दर्द, पीठके बल लेटने, दुहराकर झुक जाने और ऋतु-स्रावके समय घटता है। सोने जानेपर डिम्बकोषमें दर्द। डिम्बाशयमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। जरायुमें और डिम्बाशयमें, गर्भावस्थामें रातमें दर्द। प्रवसकी तरह दर्द। जरायुकी स्थान च्युति।

स्वर-यन्त्रमें और टेंटुआमें, ठण्डी हवामें उपदाह। वायु-पथोंका सर्दी, जिसमें गाढ़ा, पीलापन लिये सफेद श्लेष्माका स्राव होता है। स्वर-यन्त्रणमें यन्त्रणा और खरोंट। **स्वर-यन्त्र** और **टेंटुआमें** सुरसुरी। स्वर-भङ्ग, **स्वर-रज्जुके पक्षाघातके कारण**, स्वर- रज्जुके अत्यधिक श्रमके कारण स्वर-भङ्ग।

रातमें श्वास-कष्ट ; घरघराहट, लघु ; सीढ़ी चढ़नेपर श्वासमें कष्ट। स्नायविक दमा भोजनके बाद बढ़ जाता है।

खाँसी दिनके समय, सवेरे, शामको, बिछावन और रातके समय। ज्वरके समय, रातमें सूखी खाँसी। खुसखुसी खाँसी। स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें उपदाहके कारण खाँसी। ढीली खाँसी। आवेशिक खाँसी। हिला देनेवाली खाँसी। घरघराहटके साथ खाँसी। **लघु**, आक्षेपिक खाँसी। ठण्डी हवामें, गहरी साँस लेनेपर शीत और ज्वरके समय, भोजनके बाद खाँसी लेटनेपर बढ़ जाती है। दमाकी खाँसी स्वर-यन्त्रमें और टेंटुआमें सुरसुरीके कारण खाँसी। खाँसीमें सीटीकी तरह आवाज। बहुत अधिक स्नायविक क्लान्तिके साथ हूपिङ्ग खाँसी।

सवेरे बलगम, खून-मिला, फेन-फेन, हरा, श्लेष्मा-मिला **बदबूदार पीव-मिला**, सड़ा नमकीन, गाढ़ा, मीठा लसदार, **पीलापन लिये सफेद**।

हृदशूल (Angina pectoris) में इस दवासे लाभ होता बताया गया है। सवेरे वक्षमें घबड़ाहट। वक्षकी सर्दी। आक्षेपिक सङ्कोचन। हृत्पिण्डका सङ्कोचन, हृत्पिण्डकी

मेदापकर्षता। फेफड़ेसे रक्त स्राव। फेफड़ेकी यकृद्भाव-प्राप्ति। श्वासोपनलियाँ फेफड़ा और फुसफुसावरक-झिल्लीका प्रदाह। वक्षमें दवाव। चर्मका खुजली। **खाँसनेके समय वक्षमें दर्द, श्वास लेनेके समय, हिलने-डोलनेपर, श्वास लेनेपर।** खाँसनेके समय वक्षके निम्न भागमें, वक्षके भीतर, हृत्पिण्डमें दर्द। वक्षके वाम भागमें, स्कन्धास्थिके भीतरसे दर्द। वक्षमें जलन। वक्षमें दाहिने ओर काटनेकी तरह दर्द। वक्षमें यन्त्रणा। **खाँसनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, श्वास लेनेके समय,** स्तनमें, वक्ष-पार्श्वमें और हृत्पिण्डमें। वक्षमें फाड़नेकी तरह दर्द। **कलेजा धड़कना,** सीढ़ी चढ़नेपर हिलने डोलनेपर वढ़ना। **प्रचण्ड धड़कन।** वगलमें प्याजकी तरह पसीना। सर्दी-जनित यक्ष्मा (Catarrhal phthisis) में यह वहुत उपयोगी है। फेफड़ोंका स्वास-रोध। वगलमें सूजन; फोड़ा। वक्षका दुर्वलता। **दुर्वल हृत्पिण्ड।** नाड़ी सविराम और अनियमित, रक्तका दौरान कमजोर।

पीठ ठण्डी मालूम होती है। पीठपर उद्भेद; फुन्सियाँ। कटि-प्रदेशमें भार। गर्दनका पिछला भाग और पीठमें खञ्जता। खुजली विश्राम करनेके समय पीठमें दर्द। हिलने-डोलनेपर घटना, श्वास प्रश्वास वढ़ा देता है, ऋतु-स्रावके समय। पश्चात् मस्तक भाग और कमरेमें सवेरे या सोकर उठनेपर दर्द, पीठके वल लेटनेपर घट जाता है, उठ-वैठनेपर चला जाता है। गर्दनके पिछले भागमें दर्द। पृष्ठ-प्रदेशमें दर्द। सवेरे सोकर उठनेपर स्कन्धास्थिमें दर्द, करवट वदलकर वैठना पड़ता है। पहले दाहिनी स्कन्धास्थिमें दर्द, फिर बायीं स्कन्धास्थिमें। दोनों हँसुलियोंके वीचमें दर्द। ऋतु स्रावके समय कटि-प्रदेशमें दर्द, वैठे रहनेपर; हिलने-डोलनेके समय घट जाता है। ऋतु-स्रावके समय त्रिकास्थिमें दर्द पीठकी रीढ़ होकर तीव्र दर्द। गुदास्थिमें दर्द। स्कन्धास्थियोंके बीचमें धीमा-धीमा दर्द; यन्त्रणा, रीढ़में कुचल जानेकी तरह दर्द। पीठमें, कटि-प्रदेशमें जलन पीठमें, कटि-प्रदेशमें खींचन। समूचा पीठमें खञ्जता और कड़ापन, धीरे-धीरे हिलने डोलनेपर घट जाता है। पीठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, पृष्ठ-प्रदेशमें और कटि-प्रदेशमें, श्वास-कष्टके साथ वक्षके सम्मुख भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कुर्सीके सहारे उठङ्ग जानेपर घट जाता है, पीठके वल लेटनेपर, वैठने या चलनेपर वढ़ता है। पीठमें, कटि-प्रदेशमें फाड़नेकी तरह दर्द। मेरुदण्डका कोमलता। चलनेके समय ठोकर खानेके साथ कमजोरी। गर्दनकी गाँठें फूलीं। **पीठ कमजोर।** विना पीठको कुर्सीका सहारा दिये सीधा वैठ नहीं सकता। यह मेरुदण्डकी कितनी ही अवर्णित वीमारियाँ आरोग्य कर देता है।

हाथ पैर ठण्डे। पैर ठण्डा और तर। जङ्घामें पैरकी पीटलीमें और तलवेमें, मरोड़। प्रत्यङ्गपर उद्भेद, फुन्सियाँ। हाथ गर्म रहते हैं। प्रत्यङ्गोंमें भार, निम्न-प्रत्यङ्ग और तलवेमें। उरु सन्धि रोगमें यह वहुत लाभदायक है। प्रत्यंगोंमें **तलहत्थी और तलवेमें** खुजली। प्रत्यंगोंमें सुन्नपन, ऊपर और निम्न अंगोंमें; हाथ तथा पैरके सिरोंमें पंजे और पैरोंमें प्रत्यंग तथा सन्धियोंमें वातज और गठियाका दर्द, हिलने डोलनेपर और गर्मीसे घटता है। पीठ और प्रत्यंगोंमें दर्द, हिलने डोलनेपर घटना। कन्धा तथा बाहुओंमें तथा वाहुओंको ऊपर उठानेके समय दर्द, गृध्रसी वात धीरे-धीरे हिलानेपर घटना। कूल्हा और घुटनेमें दर्द। जागनेपर ५ वजे सवेरे पैरोंमें दर्द, धीरे-धीरे हिलने-डोलनेपर घटता है। घुटने तथा

पैरमें कुचलनेकी तरह दर्द। पंजा, तलवा और अंगूठेमें जलन। प्रत्यंगोंमें, पाक्षाघातिक खींचन, तापसे तथा धीरे-धीरे हिलने डोलसेपर घटना, ऊपरी प्रत्यंगोंमें जंघाओंमें, घुटनोंमें और पैरोंमें खींचन। तलवेमें खींचन और लंगड़ा कर देनेवाला दर्द। कन्धा तथा जंघाओंमें दबावकी तरह दर्द। तलवेमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। सन्धियोंमें, कन्धोंमें, घुटनोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। प्रत्यंगोंमें कन्धोंमे ऊपरी बाहुमें, कोहनीमें, अग्रबाहुमें, हाथमें तथा अङ्गुलियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। निम्न-प्रत्यंगोंमें कूल्हेमें, घुटनेमें, पैरोंमें, पैरके पंजोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। प्रत्यंगोंमें पाक्षाघातिक फाड़नेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर घट जाता है। **प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात। अर्द्धाङ्ग पक्षाघात** पैरके पंजोंमें पसीना होता है। निम्न-प्रत्यंग तथा पैर अनस्थिर रहते हैं। विश्राम करनेके बाद वातज काठिन्य। हाथ-पैरोका शोथ। हाथ काँपते हैं। प्रत्यंग ऐंठते हैं। सभी अंगोंमें कमजोरी, खासकर निम्नांगमें।

गहरी नींद। चिन्ता-भरे, **तङ्ग करनेवाले** स्वप्न, गिरनेके, भयावने, नंगे हो जानेके, गला दबानेके, विस्तृत स्वप्न, बच्चोंका रात्रिकालीन भय (**बोरैक्स**)। नींदमें बेचैन, स्नायविक और गर्म। पीठके बल सोता है। शामको जल्द ही, भोजनके बाद, औंघायी आने लगना। आधी रातके बाद, मानसिक परिश्रमके बाद, उत्तेजनाके बाद, विरक्त हो जानेके बाद नींद न आना। औंघायीके साथ अनिद्रा। बहुत सवेरे जागता है, मानो भयसे उठा हो। नींदमें चलना। बहुत ही कष्टदायक जम्हायी।

सवेरे, दोपहरके पहले, दोपहरमें, तीसरे पहर, शामको सर्दी। खुली हवामें, बिछावनमें सर्दी लगना। बिछावनमें मुश्किलसे गर्म हो पाता है। शामको मेरुदण्डके सहारे शीत चढ़ता है। दिनभर ठण्डा, भोजनके बाद जाड़ा। भीतरी और बाहरी जाड़ा। स्नायविक कम्पन और हिलना। हिला देनेवाला जाड़ा। एक पार्श्वकी ठण्डक।

तीसरे पहर और शामको ज्वर। भूखके साथ रातभर ताप रहता है। जाड़ेके साथ पर्यायक्रमसे बोखार होता है। रातमें बिछावनमें। बोखार सान्निपातिक ज्वर (Typhoid fever) धीमा, सड़नेवाले श्रेणीका। सूखा ताप। तापकी झलक। यह क्षय-ज्वरकी बहुत ही लाभदायक दवा है, जब बदबूदार पसीना और बदबूदार बलगम तथा बहुत स्नायविकता और उत्तेजना रहती है। भीतरी ताप। बिना पसीना होके ज्वर। आरक्त ज्वर, चमड़ा धुमैला और कण्ठ सड़ा और गहरा लाल। सवेरे और रातमें, खाने-पीनेके समय पसीना, थोड़े भी परिश्रम करनेपर, निद्राकालमें, बदबूदार पसीना, बहुत ज्यादा रातके समय पसीना।

पैरकी पोटलीपर धुमैले चकत्ते। खुजलानेके बाद जलन। चर्म ठण्डा, पीला और सूखा रहता है। तर उद्भेद तथा जो रस निकलता है उसमें बुरी गन्ध रहती है। भैंसिया दाद। उद्भेद, खुजलीके दाने फुन्सियाँ, विचर्चिका, पपड़ीवाला, आमवात चकत्ते, खून बहनेवाले, खाल उधेड़ देनेवाले। सड़ी बदबूके साथ करीब-करीब सड़नेवाला विसर्प इसने आरोग्य किया है। **चर्मकी अक्रियता**। खुजली सुरसुरी, चर्ममें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। बहुत ही असहिष्णु चर्म। चर्ममें चिपक जानेका भाव। जख्म, जलन बदबूदार, यहाँतक कि सड़ा, जिससे पीला मवाद बहता है।

कैलि सल्फरिकम
(Kali Sulphuricum)

दो अति गम्भीर कार्यशील औषधियाँ मिलकर यह एक दवा बनती है। सुसलरने ही सबके पहले इसकी आरोग्यदायिनी शक्ति प्रदर्शित की थी। "टीशू रेमिडिज" पर डिवुईका जो पुस्तक है, उसमें इसकी वायोकेमिक क्रिया दिखाई गयी है। बहुत वर्षोंतक जो आरोग्य हुए, उनकी रिपोर्टसे ही लेखकने लक्षण संग्रह किये हैं और इसीसे मालूम हुआ कि इन दोनों दवाके अध्ययनसे सम्मिलित रूपसे जो लक्षण प्राप्त हुए थे, उनके अनुसार ठीक है। कितने ही ये लक्षण रोग-वृद्धिके रूपमें रोगीमें उत्पन्न होते हैं। इनमें कितने ही केवल आरोग्य लक्षण हैं। परीक्षा करनेपर इस प्रवन्धकी उन्नति की जा सकती है। यदि पाठक इस दवाका सावधानता-पूर्वक इस तरह प्रयोग करेंगे, जैसा कि बनाया गया है, तो वे इसकी गहरी क्रिया देखकर चकित हो जायँगे और यदि वे उच्चक्रममें इसका प्रयोग करेंगे, तो इसकी प्रत्येक खुराककी क्रियाकी अवधिकी दीर्घता देखकर चकित रह जायँगे। इसने विसर्प, वृक्क-रोग और कोषार्बुद आरोग्य किया गया है तथा कितने ही जटिल चर्म-रोग आरोग्य किये हैं। इसने पुराने सविराम ज्वरके बहुतसे लँझड़ानेवाले रोगी आरोग्य किये हैं। गाढ़ा, पीला या हरा पीव, लसदार या **पतला पीला पानीकी तरह स्राव**के साथ श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी बीमारियाँ इसने आरोग्य की हैं। शामको बहुतसे उपसर्गोंकी वृद्धि हो जाती है। रोगी ताजी और यहाँतक कि ठण्डी हवाकी लालसा करता है तथा खुली हवामें और ठण्डी हवामें उसके रोग लक्षण घट जाते हैं। परिश्रम करने तथा उत्तप्त हो जानेपर रोग-वृद्धि। विश्राम करनेके समय उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं तथा हिलने-डोलनेपर घटते हैं। गर्म कमरेमें उपसर्गोंकी अभि वृद्धि हो जाती है। बहुत उत्तप्त हो जानेपर सर्दी लग जाती है। एक बार गर्मी लग जानेपर बिना सर्दी लगे इसका रोगी ठण्डा ही नहीं हो सकता। **यक्ष्मा हो जानेकी पूर्व-स्थिति। टियुवर्क्युलिनम**के बाद इसका बहुत बार प्रयोग होता है। मृगीके ढङ्गका टङ्कार। प्रत्यङ्गोंका कांपना और पेशियोंकी ऐंठन। हाथ-पैरोंकी शोथज अवस्था, मांस-क्षय और भोजनके बाद उपसर्ग बढ़ जाते हैं। उपवास बहुतसे उपसर्गोंको घटा देता है। थुल-थुली मांस पेशियाँ। ग्रन्थियाँ यकृत तथा हृत्पिण्डकी वसाका अपचय। प्रत्यङ्गोंमें भार और शरीरकी क्लान्ति। गुल्मवायुके लक्षण। शरीरकी शिथिलता तथा शारीरिक उपदाहकी कमी। खूब चुनी हुई दवाकी भी क्रिया कम पड़ जाती है। लेटे रहना चाहता है, पर बिछावनपर लेटना रोगलक्षणोंको बढ़ा देता है, उसे अपनी तकलीफें घटनाके लिये टहलते रहना पड़ता है। शरीरमें रक्तका दौरान। प्रत्यंगों, हड्डियों और ग्रन्थियोंमें दर्द। **भ्रमणकारी दर्द।** हिलने डोलनेपर दर्द घटता है, चलनेसे घटता है, खुली हवामें घटता है; गर्म कमरेमें बढ़ता है, बैठने या लेटनेपर बढ़ता है या किसी रूपमें आराम करनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है। जलन, **काटनेकी तरह**, झटकेकी तरह, **सुई गड़नेकी तरह** और **फाड़नेकी तरह** दर्द होता है। **जखमकी तरह दर्द।** प्रत्यंगोंमें नीचेकी ओर बढ़नेवाला फाड़नेकी तरह दर्द। ग्रन्थियों और पेशियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। **समुचे शरीरमें स्पन्दन।** छूनेपर बहुतसे

उपसर्ग बढ़ जाते हैं। **जागनेपर** बहुतसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। काँपना और सिहर उठना। चलनेपर रोग-लक्षण घट जाते हैं। गर्म ओढ़ना ओढ़नेपर रोग-लक्षण बढ़ते हैं, गर्म कमरेमें उपसर्ग बढ़ते हैं, गर्म बिछावनसे रोग वृद्धि होती है, गर्म कपड़ा लपेट लेनेसे रोग-लक्षण बढ़ते हैं ; नहानेपर उपसर्ग बढ़ते हैं। पहलेके दबे उपसर्गके कारण रोग-वृद्धि ; आरक्त ज्वरके पहलेका मूत्रपिण्ड प्रदाह। यह किसीको सोचनेकी जरूरत नहीं कि यह कुछ परिष्कृत **पल्सेटिला** है। **पल्सेटिला**के बादकी दवाके रूपमें यह कार्य आरम्भ करता और समाप्त करता है, जबतक कि कुछ अवसरोंपर, रोगी ठण्डा और सर्दीला हो जाता है तथा विश्रामके समय उसके रोग लक्षण घटते हैं और उस अवस्थामें **साइलिसिया**में वे बचे हुए लक्षण प्राप्त होंगे। गहराईतक क्रिया करनेवाली दवा खानेवाले रोगी आमतौर विपरीत लक्षण प्रकट करते हैं और इसीलिये **पल्सेटिला**के बाद अकसर **साइलिसिया** अनुगामी होता है ; पर हमेशा यह सत्य नहीं होता। जब कुछ समयतक **पल्सेटिला** अच्छी तरह क्रिया करता है तथा विपरीत लक्षणोंके कारण कुछ समयतक **साइलिसिया** अच्छा काम करता है और तब इसके बाद रोगी अपनी मूल दशामें चला जाता है, लक्षण और स्वरूप पुराने आ जाते हैं, उस समय कैलि सल्फ बहुत फायदा करता है। जो कुछ होता है, वह वही है, जैसा कि जब **सल्फर, कैल्केरिया लाइकोपोडियम** किसी रोगीको घुमा-फिराकर देनेपर, इतनी गहरायीतक क्रिया कर देते हैं, कि किसी एक दवासे रोगी आरोग्य नहीं हो सकता तथा आरोग्यके लिये दवाओंकी एक श्रेणीकी आवश्यकता पड़ जाती है ; क्योंकि लक्षण इस तरह परिवर्त्तित हो जाते हैं, कि होमियोपैथिक ढङ्गसे ऐसे औषध-समूहकी जरूरत पड़ती है।

ठीक **पल्सेटिला**के विपरीत यह रोगी भी सहजमें ही क्रोधित हो जाता है, जिद्दी और **बहुत उत्तेजनशील** रहता है। बहुत दूरकी किसी बातकी सोचा करता है। **शामको** बिछावनमें रहनेपर, रातके समय और जागनेपर **घबड़ाहट**। काम काज, व्यवसाय और संग-साथसे अनिच्छा (**पल्सकी तरह**)। किसी काममें मन लगाना कष्टकर होता है और आत्म निर्भरता नहीं रहती। शामको, सवेरे गर्म, कमरेमें, चित्त-विभ्रम, खुली हवामें घट जाता है। **मनकी सुस्ती**, साहस-रहित तथा सभी बातोंसे निराश रहता है। अत्यधिक **उत्तेजना-प्रवण** और **मानसिक परिश्रम रोग वृद्धि** हो जाती है। रातमें मृत्यु, गिर जाने और लोगोंका भय। छोटी-छोटी बातोंपर भय जाता है और कुछ कहना या करना चाहता था, उसे भूल जाता है। वह हमेशा जल्दबाज रहता है, मानो उत्तेजित हो उठता है। असन्तोषी और उत्तेजित। शामको गुल्म वायु ग्रस्त और उत्तेजित रहती है और मन क्रियाशील रहता है। काम करने और क्रियामें मन नहीं लगा सकता। सवेरे जागनेपर, शामको और ऋतु-स्रावके समय बहुत चिड़चिड़ी हो जाती है। लिखनेमें शब्दोंका गलत प्रयोग करती है। परिवर्त्तनशील भाव-भंगी। परिवर्त्तनशील प्रकृति। ऋतु-स्रावके कालमें बेचैनी। सवेरे और शामको हतोत्साह। शोल गुलकी **अत्यधिक असहनीयता**। अत्यधिक रति क्रियाके कारण मानसिक उपसर्ग। नींदमें चलना। चीखना। भयसे सहजमें ही चौंक

पड़ना, सो जानेपर और **निद्रा-कालमें**। वातचीत करनेकी इच्छा नहीं होती। वह नींदमें वातचीत करता है। **साधारणतः डरपोक**। रोना।

शामको, गर्म कमरेमें सरमें चक्कर आना एक प्रधान उपसर्ग है, भोजनके वाद रोग वृद्धि हो जाती है, सर-दर्दके समय वढ़ जाता है, ऊपरकी तरफ देखनेपर वढ़ जाता है मिचलीके साथ ; जरूर ही लेटे रहना पड़ता है ; सभी चीजें चक्कर खाया करती हैं ; वैठनेपर वढ़ता है, उठनेपर वढ़ता है और खड़े होनेपर ; खुली हवामें घट जाता है। ऐसा अनुभव होता है, मानो वह सामनेकी ओर गिर रहा है। वह डगमगाता है।

सरमें खौलनेकी तरह अनुभूति, मस्तक-शिखरमें ठण्डक। बिछावनमें, खाँसनेपर और गर्म कमरेमें रक्ताधिक्य हो जाना। ऐसा संकोचन मानो सरपर एक पट्टी वँधी है या कसकर टोपी पहने हुए हैं। ललाटमें संकोचन। बहुत रूसी। मस्तक त्वचापर उद्भेद, खरोंट, अकौता, तर, लसदार, फुन्सियाँ, पपड़ियाँ। माथेमें भरापन और **केश झड़ जाते हैं**। गर्म कमरेमें माथेमें ताप। **ललाटमें** ताप। तापकी झलक। सरमें भार, सवेरे, ललाटमें पश्चात् मस्तकमें। सवेरे मस्तक त्वचामें खुजली। मस्तिष्क ढीला मालूम होता है। माथेमें गतिकी अनुभूति, सर हिलानेपर। बहुत तरहका सर-दर्द। **सवेरे** जागनेपर, **शामको** और **रातमें** दर्द, हवाके झटकेसे, जाड़ा लगनेके समय, सर्दी लगनेपर, नाककी सर्दी हो जानेपर, खाँसनेपर, भोजनके वाद, उत्तप्त हो जानेपर, गर्म **कमरेसे**, झटका लगनेपर, ऋतु-स्रावके समय, सरका हिलाना, दबावसे बढ़ जाता है। खुली हवामें, ठण्डी हवामें, लेटनेपर यह घट जाता है। शामको वातज सर-दर्द। गर्म कमरेमें वढ़ जाता है। इस पार्श्वसे उस पार्श्वमें, सर हिलानेपर या पीछेकी ओर सर ले जानेपर वढ़ जाता है। सर्दीका सर-दर्द। पाकाशयकी गड़वड़ीके कारण सर-दर्द। हिलने-डोलनेनेपर सर-दर्दका वढ़ना तो एक अपवाद है और यह जानना बड़ा ही मनोरञ्जक होगा, कि आगेकी परीक्षाओं तथा अन्वेपणोंसे और क्या प्रकट होते हैं। दर्द धमकका, सर हिलानेपर, नींदके वाद, छींकनेपर, खड़े होनेपर, वहुत सीढ़ी चढ़नेपर, झुकनेपर आँखोंपर जोर पड़नेपर वढ़ जाता है ; **गर्म कमरे**में वढ़ जाता है। दर्द वहुत जोरका होता है। खुली हवामें घूमनेपर घटता है। दर्द आँखोंतक और ललाटतक फैल जाता है, ललाटमें, सवेरे और शामके वक्त दर्द ; भोजनके वाद वढ़ जाता है। **आँखोंके ऊपर** दर्द। **पश्चात् मस्तक, मस्तक-पार्श्व** तथा कनपटियोंमें दर्द। दर्द **छेदने**, जलने, फटने, खींचने, **झटका देने, दवाने, सुई गड़नेकी** तरह माथेमें और मस्तक **पार्श्व-भागमें** होता है। सुन पड़ जाना। फाड़नेकी तरह दर्द। पश्चात् मस्तकमें, मस्तक पार्श्व-भागमें, कनपटियोंमें, मस्तक-शिखरमें धमक। माथेमें, मस्तक पार्श्वमें, झटके, खासकर **दाहिने पार्श्वमें**।

आँखके लक्षण भी वहुत ज्यादा है। पलकें सट जाती हैं। सूखापन। स्राव, पीला, हरापन लिये। चक्षु-श्वेतपटलका और पलकोंका प्रदाह। काली नसें। आँख और पलकोंके चारों तरफ उद्भेद ; आँसू वहना और खुजली। कनीनिकाका गदलापन। मोतियाबिन्दके लिये भी इसकी सिफारिश की गई है। दर्द, **जलन**, दवाव और आँसू वहना। आलोकातङ्क, आँखोंका और पलकोंके किनारोंका लाल हो जाना। कनीनिकापर धव्वे ; कनीनिकाका

जखम। फूली हुई पलकें। काले रंग, विभिन्न रंग, पीले। रोशनीके चारों तरफ घेरा मालूम होना। काले धब्बे तैरते हैं। चकाचौंध लगना। धुँधली दृष्टि; दृष्टिके श्रमसे बहुतसे उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। कुहरेसे ढँकी दृष्टि। आँखोंके सामने चिनगारियाँ। दुर्बल दृष्टि।

कण्ठकर्णी नली और मध्य कानकी सर्दी, मध्य कर्णका सूखापन। कानसे स्राव **पीला,** पतला, **चमकीला, पीला** या हरा, खून-मिला, **बदबूदार पीब मिला**। उद्भेद; अकौता, खाल उधेड़नेवाला, फुन्सियाँ। कानके पीछे उद्भेद। **कानमें खुजली**। शोरगुल, भनभनाहट, चहचहानेकी आवाज, पटाका फटने, कटकटाने, भनभनाहट, **घण्टीकी आवाज, गरज, सनसनाहट,** सीटी बजनेकी आवाज। कानमें फड़फड़ाहट, कानमें दर्द, शामको, धीमा दर्द, छेदने, काटने, दबाने, सुई गड़ने, फाड़नेकी तरह कानमें दर्द। इसने कानका अर्बुद आरोग्य किया है। कान रुका मालूम होता है और स्पन्दन होता है। श्रवण-शक्ति गड़बड़ायी रहती है।

नाकसे पतला सर्दीका स्राव। नाककी सर्दी, जिसमें खून-मिला, जलन करनेवाला, खाल उधेड़नेवाला, हरा, बदबूदार, पीब-मिला, **पतला पीला,** चिकना या गाढ़ा लसदार स्राव होता है। नाकमें सूखापन। सबेरे और नाक छिड़कनेपर नाकसे खून जाना। **नाकमें खुजली**। रुकावट। दर्द जलन। नाकमें यन्त्रणा, नासास्थिका। गन्ध तीव्र। इसके बाद गन्ध नहीं **मिलती**। छींकें। फूली नाक।

रोगियल, पीला, **हरित्पाण्डु** रोग-ग्रस्त चेहरा। फटे ओंठ; कभी-कभी पीला, कभी चकत्तेकी तरह लाल। चेहरा खिंचा। कष्ट-पूर्ण, रोगियल चेहरा। चेहरेपर, ओंठोंपर और नाकपर उद्भेद। भैंसिया दाद, फुन्सियाँ और रूसियाँ। खाल उधड़ा चेहरा। तापकी झलक। खुजली। निम्न हन्वस्थि-ग्रन्थिकी सूजनके साथ प्रदाह। मुखमण्डलका स्नायुशूल, जब कमरा बहुत गर्म हो जाता है और शामको यह बढ़ जाता है; खुली हवामें घटता है। दर्द खींचने, सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह होता है। चेहरेपर पसीना। जबड़ेकी गाँठें फूलीं, फूले हुए ओंठ। चेहरेमें ऐंठन। इसने ओंठपरका मसा आरोग्य किया है और लक्षण मिलनेपर कोषार्बुद भी आरोग्य कर देगा।

मुँहमें छाले। मुँहका सूखापन तथा मसूढ़ोंसे खून जाना। मुँहमें और जीभपर श्लेष्मा। यन्त्रणा-पूर्ण जलती हुई जीभ; लार बहना। स्वाद बिगड़ा, सड़ा, खट्टा, मिठास लिये, स्वादका अभाव।

जीभ मैलसे ढँका चिकनी, अधिककर जीभकी तलीके पास। गर्म कमरेमें दाँतका दर्द बढ़ जाता है। ठण्ढी ताजी हवामें घट जाता है।

कण्ठका सङ्कोचन और सूखापन। बार-बार खखारकर श्लेष्मा निकालना। कण्ठमें ताप और प्रदाह। कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह अनुभूति। सबेरे **कण्ठमें श्लेष्मा**। गलक्षत बहुत ही दर्द-भरा। निगलनेपर दर्द। खाल उधड़ना; जलन और सट जाना। तालुमूल फूला। निगलनेमें तकलीफ।

बहुत घबड़ाहट और पाकाशयमें कष्ट। भूख बढ़ी रहती है। राक्षसी भूख या **भूख ही न लगना**। रोटी, अण्डा, खाद्य, गोश्त, गर्म पेय और खाद्यसे अनिच्छा। पाकाशयमे ठण्डक। पाकाशयकी सर्दी, खट्टी चीजोंकी **मिठाइयों**की, ठण्डे पेयोंकी और ठण्डे खाद्यकी इच्छा करता है। पाकाशयका तनाव, उपदाहित, सहजमें ही गड़बड़ा जानेवाला पाकाशय। पाकाशयमें खालीपन और मूर्च्छा आ जानेका भाव। भोजनके बाद **डकार**, तीती, खाली, खाद्यकी, **खट्टी**, मुँहमें डकारके साथ पानी भर आना। डकार आनेपर तकलीफ घटती है। कामला रोगके साथ पाकाशय-अन्त्राशयकी श्लेष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। **थोड़ा भी (लाइको)** खा लेनेपर भोजनके बाद भरापन। कलेजेमें जलन, **भार** और तापकी झलक। हिचकी। खाद्यसे घृणा। जाड़ेके समय, खाँसनेके समय, ठण्डे पेय पीनेके बाद, भोजनके बाद, **सर-दर्दके साथ**, हिलने-डोलनेपर। मिचली होने लगना। भोजन और पीनेके बाद, पाकाशयमें दर्द। जलन, मरोड़, काटने, चिकोटी, काटने, दबाने, यन्त्रणा, सुई गड़नेकी तरह दर्द। पाकाशयमें स्पन्दन। खाँसनेके समय ओकाई। **जलनकी तरह प्यास**। खाँसनेपर, भोजनके बाद, सर-दर्दके समय, ऋतु-स्रावके समय वमन। पित्तका, खाद्यका, श्लेष्माका **खट्टा** वमन।

उदरमें **ठण्डक**। भोजनके बाद **तनाव**। शोथ। बढ़ा हुआ यकृत। रुका हुआ आध्मान वायु। भोजनके बाद भरापनका भाव। निम्न उदरमें, पाखाना होनेके बाद खालीपनका भाव, अधोवायु निकलनेपर घटना। ताप और भार। यकृतकी शिकायतें। चर्मकी खुजली। रातमें तलपेटमें दर्द। अतिसार होनेके समय मरोड़, भोजनके बाद, ऋतु-स्रावके पहले, ऋतु-स्रावके समय, हिलने-डोलनेपर बढ़ना। यकृत तथा वंक्षण-प्रदेश (Inguinal region) में दर्द। जलन, काटने और दबानेकी तरह दर्द। यकृत और कुक्षि देशमें दबाव। यकृत और उदरमें यन्त्रणा। उदरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, तलपेटके पार्श्व-भागमें, वंक्षण देशमें और यकृतमें। स्पन्दन। पाखाना होनेके पहले गड़गड़ाहट। तलपेटमें कम्पन। पेट फूलना।

बहुत ही कड़ी कब्जियत, पर्यायक्रमसे अतिसार। मल कष्टसे निकलता है, कोमल या कड़ा, पर्याप्त नहीं होता। ऋतुकालके समय, मलान्त्रकी निष्क्रियताके कारण। सवेरे, शामको, रातमें, **आधी रातके** बाद **अतिसार**, दर्द-रहित या मरोड़के साथ, ऋतु-स्रावके समय। **पुरानी संग्रहणी** (Chronic diarrhoea), बदबूदार, सड़ा अधोवायु निकलना, जिससे कि उदरकी बहुत-सी तकलीफें घट जाती हैं। मलद्वारसे रक्त-स्राव। **बवासीरका मसा**, बाहरी, भीतरी, बड़ा और रक्त-स्रावी। अनैच्छिक दस्त। **मलद्वारकी भयानक खुजली। मलान्त्र** और **मलद्वार**में दर्द, पाखाना होनेके समय, पाखाना होनेके बाद, पतले दस्त आनेके समय, पाखाना होते समय और पाखाना हो जानेके बाद **जलन**। काटने, दबाने, **खोंचा** मारनेकी तरह दर्द और बहुत ज्यादा **यन्त्रणा**। कितने ही अंशोंकी **खाल उधड़** जाती है। **मलद्वारमें सुई गड़नेकी तरह दर्द**। पाखाना हो जानेके बाद कूथन। पाखाना लगता है, पर वृथा, दस्त न होनेवाली कब्जियत।

मल खाल उधेड़ देनेवाला, काला पतला और बदबूदार होता है। मल खून-मिला,

वार-वार, बदबूदार, पीव मिला, पानीकी तरह, पीला चिकना। कब्ज होनेपर मल सूख जाता है, कड़ा, गांठ गांठ, बड़ा भेंड़की मींगीकी तरह, छोटा। मल हलके रङ्गका और पित्त-रहित निकलता है।

मूत्राशयका पुरानी सर्दी। दर्द दबावकी तरह, चिरकनेकी तरह होता है। इसमें बार-बार पेशाबकी हाजत है, जो रातके समय बढ़ जाती है, लगातार या वार-वार पेशाव लगना, पर न होना। पेशाब करनेके समय दर्द होता है, रातमें वार-बार लगता है, चलनेके समय चूता रहता है। सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ मूत्रपिण्डका प्रदाह।

बढ़ी हुई अवस्थाका सूजाक, जिसके साथ हरा या पीला, पतला या लसदार मवाद आता है। मूत्रनलीसे रक्त स्राव। पेशाब करनेके समय जलन और कर्ण-कुहरमें काटनेकी तरह दर्द।

पेशाव अण्डलाल मिला और आरक्त ज्वर होनेके बाद, खासकर जो अण्डलाल मिला पेशाव होता है, उसकी यह दवा है। पेशावमें जलन होती है और धुमैला, गहरे रङ्गका, बहुत ज्यादा या थोड़ा, बदबूदार तथा लाल और पीव मिले तलछटके साथ होता है। पेशावमें बहुत ज्यादा लसदार श्लेष्मा।

ध्वजभङ्ग। अण्डोंका कड़ापन। लिङ्ग-मुण्डका प्रदाह। सूजाकका मवाद रुक जानेके बाद अण्डकोष-प्रदाह (पत्थर)। लिंगेन्द्रिय तथा मुष्ककी खुजली। अण्डकोषमें खोंचन। कामेच्छा घटी हुई या एकदम नदारद। अण्डकोष फूले।

जिन्हें गर्भ-स्राव हो जाया करता था, उनको इसने सुधार दिया है। सङ्गमसे अनिच्छा। खुजलीके साथ जननेन्द्रियकी खाल उधड़ जाना। श्वेत-प्रदर, जलन, खाल उधड़ना, हरा, पीला, पीव मिला, गाढ़ा या पानीकी तरह स्राव। ऋतु-स्राव होता ही नहीं, चमकीला लाल, बहुत ज्यादा बहुत जल्दी-जल्दी या बहुत देरसे, बदबूदार, दर्द-भरा, रुका हुआ, थोड़ा दबा। जरायुसे रक्त-स्राव। ऋतु स्रावके समय जरायुमें दर्द। वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर खिंचावकी तरह दर्द। जननेन्द्रियमें जलन। ऋतु-स्रावके समय प्रसवकी तरह दर्द जरायुकी स्थान च्युति।

वायु पथोंकी सर्दी, जिसके साथ हरा, पीला या सफेद श्लेष्मा निकलता है। स्वर-यन्त्रमें सूखापन, स्वर-यन्त्रकी खाल उधड़ना; यन्त्रणा और रूखापन। स्वर-यन्त्रमें करीब-करीब लगातार खुरचनेकी तरह दर्द होना, भोजनके बाद यह बढ़ जाता है, रातमें बिछावनपर, आधी राततक, स्वर-यन्त्रके साफ करनेकी जरूरत मालूम होते-होते तङ्ग आ जाता है और सिर्फ थोड़ा-सा सफेद गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है। स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी। स्वर-भङ्ग। स्वर-यन्त्रमें उपदाहके साथ बार-बार नाककी सर्दी हो जाना। स्वर-रुद्ध। प्रत्येक सर्दी स्वर-यन्त्रमें बैठ जाती है।

दमा गर्म कमरेमें बढ़ जाता है, खुली हवामें घटता है। शामको, रातमें, खाँसीके साथ, लेटनेपर, टहलनेपर श्वासकष्ट, खुली हवामें घटता है। घरघराहटके साथ

श्वास। गर्म कमरेमें लघु दम घुटानेवाला श्वास। गर्म कमरेमें साँय-साँय शब्द। सीटीकी तरह आवाज।

सवेरे, शामको, बिछावनमें, **रातमें** खाँसी, ठण्डी हवामें घट जाती है, खुली हवामें घटती है और ठण्डे पेयोंसे घटती है। नाककी सर्दीके साथ खाँसी लेटनेपर बढ़ जाती है। रातमें सूखी-रूखी, कम्पी खाँसी। भोजनके बाद, ज्वर आनेके समय खाँसी बढ़ जाती है। क्लान्त कर देनेवाली खाँसी। खुसखुसी खाँसी; ढीली खाँसी; आवेशिक हिला देनेवाली खाँसी। **घरघराहटके** साथ खाँसी; दम घुटनेवाली खाँसी। स्वर-यन्त्रमें, टेंटुआसे और वक्षमें गहरायीपर सुरसुरी। **गर्म कमरेमें खाँसी बढ़ जाती है, पीला चिकना** या **पीला पानीकी तरह बलगम** निकलनेके साथ कुकुर खाँसी (Whooping cough)। बलगम खून-मिला, **कष्टसे निकलता है,** निगल जाना पड़ता है या **पीछे सरक जाता है,** पीव-मिला **पीला** या **हरा, चिकना, पानीकी तरह,** लसदार।

वक्षमें **घबड़ाहट।** वक्षकी सर्दीकी यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक दवा है। प्रत्येक सर्द मौसमके परिवर्त्तनसे वक्षमें घरघराहट। वक्षमें सङ्कोचन। न्युमोनिया (फुस्फुस-प्रदाह) और प्लुरिसी (फुस्फुसावरक-झिल्ली प्रदाह) का अन्तिम अंश इस दवाके लक्षण उत्पन्न करते हैं। वक्षके चर्मकी खुजलाहट। उद्भेद, अकौता, फुन्सियाँ। वक्षमें **दबाव** और रक्त-स्राव। बच्चोंकी ब्राङ्काइटिस होनेके बाद, जब प्रत्येक सर्दी वक्षमें घरघराहट उत्पन्न कर देती है और बलगम नहीं निकलता। जलन, काटने, **सुई गड़नेकी** तरह दर्द और वक्षमें यन्त्रणा। हृत्पिण्डमें दर्द। हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। हृत्पिण्डमें घबड़ाहटके साथ धड़कन। कम्पनशील हृत्-स्पन्दन। बगलमें पसीना। कमजोर वक्ष। इस दवाने बहुतोंको **यक्ष्मासे** बचाया है। ऋतु-स्रावके पहले फूले असहिष्णु स्त्रीको, जो प्रत्येक महीने होता है, इसमें आरोग्य किया है।

पीठमें ठण्डक। साँस लेनेपर पीठमें दर्द, ऋतु-स्रावके समय, समय बाँधकर होनेवाला बैठनेपर बढ़ जाता है, खड़े होनेपर बढ़ जाता है; चलनेपर घट जाता है; गर्म कमरेमें बढ़ जाता है। **भ्रमणकारी दर्द।** ग्रीवा-प्रदेशमें **कटि-प्रदेशमें,** कन्धोंके बीचमें दर्द। **ऋतु-स्रावके समय,** कटि-प्रदेशमें दर्द, बैठनेके समय, चलनेके समय। त्रिकास्थिमें दर्द। धीमा दर्द, कुचलनेकी तरह दर्द, जलन, खींचन, **सुई गड़नेकी तरह** दर्द। ग्रीवा-प्रदेशमें तनाव। कटि-प्रदेशमें कमजोरी।

सन्धियोंमें गुटिकाएँ होना। ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें और हाथोंमें ठण्डक। शामको बिछावनमें, ज्वर-कालके समय **पैर ठण्डे।** हाथ फटे। सन्धियोंमें कड़कड़ाहट। प्रत्यङ्गोंपर फुन्सियाँ और चकत्ते। युवतियोंमें जूतेके ऊपर पैरोंकी खाल उधड़ जाना। हाथोंमें ताप। ऊरु-सन्धि-रोग। निम्न-प्रत्यङ्गोंका भार। चर्मपरकी खुजली। प्रत्यङ्गोंका हिल उठना। **हाथोंका निम्न-प्रत्यङ्गोंका** और पैरका सुन्नपन। जाड़ेके समय प्रत्यङ्गोंमें दर्द। प्रत्यङ्गोंमें **वातज दर्द।** पेशियोंमें मरोड़। घुटने और पैरोंमें खींचन। गर्म कमरेमें वातज दर्द बढ़ जाता है; खुली हवामें टहलनेपर घटता है; बैठनेपर बढ़ जाता है, हिलने-डोलनेपर घटता

है। जंघास्थिमें कुचल जानेकी तरह यन्त्रणा। सन्धियोंमें, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें, घुटनोंमें, पैरोंमें, **सुई गड़नेकी तरह दर्द ; भ्रमणकारी सुई गड़नेकी तरह दर्द।** जाड़ेके समय, सन्धियोंमें, ऊपरी प्रत्यंगोंमें, निम्न-प्रत्यंगोंमें, जंघामें, पैरोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। भ्रमणकारी फाड़नेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर घटना और खुली हवामें टहलनेपर घटना। तलहत्थी पंजोंमें पसीना। पैरके पंजोंमें ठण्डा पसीना। बेचैन पैर। सन्धियोंका कड़ापन। घुटनों, पैरों तथा पैरके पंजोंमें सूजन। प्रत्यंगों, हाथों और पैरके पंजोंमें कम्पन। **जंघाओं**की ऐंठन। **पैरोंमें जखम।** सन्धियोंकी, ऊर्द्ध प्रत्यंगोंकी और घुटनोंकी कमजोरी।

नींद स्वप्नभरी होती है। उसे रात्रिकालीन गला दबानेके स्वप्न दिखाई देते हैं। चिन्ता-भरे, मृत्युके आघात प्राप्त होने, करीब-करीब मरनेके, डाकुओंके, बीमारीके **भयावने, भूत प्रेतोंके।** देरसे नींद आती है, **बेचैन नींद।** तीसरे पहर और **शामको** और भोजनके बाद औंघायी आती है। आधी रातके पहले नींद नहीं आती, बहुत सवेरे और बहुत बार जागता है।

शामको और रातमें शीतावस्था। शामको जाड़ा मालूम होना, परिश्रमके बाद सर्दीलापन। चर्मकी ठण्डक। चौथिया जाड़ा। **सन्ध्याके ५ बजेसे ६ बजेतक हिला देनेवाला जाड़ा।** बिना शीत लगनेके ही ज्वर, शामसे आधी राततक रहता है। ज्वर, सूखा ताप, तापकी झलक। विलेपी ज्वर सविराम-ज्वर। सवेरे, **रातमें,** आधी रातके बाद पसीना होना। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर पसीना होने लगना। बहुत ज्यादा पसीना।

चर्ममें जलनकी अनुभूति ; खुजलानेके बाद जलन। चमड़ा अकसर ठण्डा रहता है, **खाल उधड़ जाना।** बदरंग हो जाना ; पीले दाग ; लाल दाग। **सूखा चर्म** ; चर्मकी अक्रियता। सूखा, जलता हुआ चर्म। कोषार्बुद। उद्भेद, छाले, जलन, सूखे, **तर,** पीलापन लिये हरा, पानीकी तरह स्रावके साथ अकौता, भैंसिया दाद। खुजलाने और डंक मारनेकी तरह उद्भेद। ददोरोंकी तरह छोटी माता। उद्भेद दर्द-भरे, फुन्सियाँ, विचर्चिका, पीवः गुटिकाएँ, लाल उद्भेद। **पपड़ी जमनेवाले उद्भेद।** खुजलानेके बाद पपड़ी पड़ना। तर पटलपर **छालेदार** उद्भेद। चुनचुनीवाले, पीव हो जानेवाले उद्भेद। टियुबरक्युलर उद्भेद, आमवात, **गुटिकाएँ।** चकत्तेकी तरह उद्भेद। छालोंके साथ विसर्प। सहजमें हो चमड़ेकी खाल उधर जाना। फुन्सियाँ। सुरसुरी, खुजली, **जलन,** रेंगनेकी तरह मालूम होना, **डङ्क मारना ; बिछावनमें गर्म होनेपर** रोग-वृद्धि ; खुजलानेपर घटना। खुजलानेपर चर्मका तर हो जाना। स्नायु-प्रदाह। चर्म अत्यन्त **असहिष्णु** रहता है ; चर्ममें एक यन्त्रणाका भाव। खुजलानेके बाद चिपकना। चर्म फूला और शोथग्रस्त। तनावकी अनुभूति। जखमकी तरह दर्द। जखम, खून बहनेवाले, जलन करनेवाले, खून-मिला मवाद, छुरा मारनेकी तरह दर्द, पीला स्राव, **जल्द न भरनेवाले,** स्पन्दन, पीव हो जानेवाले, गुटिका-दोषयुक्त। दर्द-भरे मसे।

कैलमिया लैटिफोलिया
(Kalmia Latifolia)

इस दवाके बतानेवाले लक्षण खासकर पेशियों, कण्डराओं, सन्धियों, स्नायुपथ और वातज उपसर्गोंके रूपमें प्रकट होते हैं। दर्द जगह बदला करते हैं, भ्रमणकारी वेदना तथा ये दर्द हिलने-डोलनेपर बढ़ जाते हैं। केन्द्रसे लेकर शाखा अंगोंतक तेज दर्द। फैल जाता है, भ्रमणकारी दर्द नीचेकी ओर उतरता है, बाहुके नीचे, पीठमें नीचेकी ओर और पैरोंमें नीचेकी ओर, कन्धेसे अङ्गुली और कूल्हेसे पैरके अंगूठेतक। कभी-कभी तो ये दर्द बिजलीकी तरह आघात करते हैं, इसके अलावा वे मानो स्नायुओंको फाड़ते हैं, उरु-स्नायु और पैरके स्नायु, पैरकी पोटलीके नीचेतक। वातज प्रकृतिवालोंका दर्द धीमा, फाड़नेकी तरह, कुचलनेकी तरह और दबावकी तरह होता है तथा हिलने डोलनेपर बढ़ जाता है तथा निम्न अंगसे ऊपरी अंगतक चढ़ता है। हिलना-डोलना दर्द पैदा कर देगा या मौजूद रहनेपर दर्दको बढ़ा देगा। माथेका दर्द बहुत ही तीव्र होता है। वे अकसर गर्दनके पिछले भागमें या माथेके पिछले भागमें उत्पन्न होते हैं और सरकी चोटीतक फैल जाते हैं। सरके सम्मुख भागमें भी दर्द होता है, एक या दोनों आँखोंपर दर्द, फाड़नेकी तरह स्नायु-शूलका दर्द, यह ताप और हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है।

सूर्यके साथ दर्द पैदा होता और जाता है अर्थात् सूर्योदयके समय दर्द पैदा होता है, दोपहरतक बढ़ता है, इसके बाद कम होता-होता सूर्यास्त-कालमें गायब हो जाता है। हिलते डोलते रहने या बैठे रहनेपर वह मानसिक कार्यके योग्य नहीं रहता, पर जब पीठके बल लेटा रहता है, बिलकुल शान्त रहता है, बिलकुल ही हिलता-डोलता नहीं है, तो दिमाग मजेमें काम करता है और स्वच्छतासे कार्य करता है; पर जरा भी हिलने डोलनेपर, भले ही साथ ही हिले, सरमें चक्कर आता और चित्त-विभ्रम उत्पन्न हो जाता है। हिलना-डोलना उसे विचलित कर देता है और उसे आरोग्य बना देता है। रात्रिके ऊर्द्ध-पूर्व भागमें दर्द बदतर रहता है। इसके साथ ही वातज मूलका हृत्पिण्ड-सम्बन्धी उपसर्ग भी रहता है। यह दशा तबतक बढ़ती जाती है, जबतक यान्त्रिक रोग नहीं आता, यहाँतक कि हृत्पिण्ड या हृत्कपाटकी अति-वृद्धि या प्रसारण हो जाता है। इस दवाने वह दशा आरोग्य कर दी है। धड़कन बायीं करवट सोनेपर बहुत स्पष्ट रहती है, पीठके बल लेटनेपर घटती है, कभी-कभी तनकर बैठनेपर घट जाती है, आगेकी ओर झुकनेपर बढ़ती है। सिर्फ इसी लक्षणपर बहुत जगह इस दवासे आराम पहुँचाया जा सकता है। यह वातज रोगियोंके लिये, जहाँ मूलमें उपदंश है, औपदंशिक वातमें बहुत लाभ करता है, जिसमें ऊपर बताया पथ ग्रहण किया है, यहाँतक कि अन्तमें हृत्पिण्ड आक्रान्त हो गया है और हृत्कपाट मोटे पर गये हैं। हृत्पिण्डके भीतर खोंचा मारनेकी तरह दर्द, वक्षमें दर्द, सविराम नाड़ी, बीच-बीचमें एक बार नाड़ी रुक जाती है। धामनिक या शैरिक-संस्थान (Arterial or venous system) या हृत्कपाट अथवा दोनों ही आक्रान्त हो जा सकते हैं। किसी

तरहके भी व्यायामसे श्वासकष्ट ; हृत्‌रोग-जनित श्वासकष्ट। इस दवामें इस ढङ्गके उपसर्ग है। वातज उपदंशके रोगियोंकी जड़में यह जा पहुँचती है तथा बहुतसे हृत्पिण्डके रोग जो उपदंश-सम्भूत थे, इसने आरोग्य कर दिये हैं। इसका खासकर परिचालक लक्षण है, दर्दका एक जगहसे दूसरी जगह भ्रमण करना और यदि दर्द ऊपरसे नीचे उतरता है, यदि दर्द कन्धेसे अंगुलीकी ओर जाता है, कूल्हेसे पैरकी ओर या मेरुदण्डसे नीचेकी ओर उतरता है, तो यही दवा है। सूजाककी वजहसे होनेवाले वातमें भी लक्षण मिलनेपर यह लाभ पहुँचाता है।

जरा भी हिलना-डोलना, थोड़ी भी चेष्टा या श्रम करनेपर सरमें चक्कर आने लगता है और यह खूनके दौरानमें गड़बड़ीके कारण होता है। हृत्पिण्डमें श्रम सहन करनेकी जराभी शक्ति नहीं रह जाती, थोड़ा भी हिलने डोलनेपर मस्तिष्कमें रक्तके दौरानमें गड़बड़ी हो जाती है। "आराम करनेवाली स्थितिमें मानसिक क्रियाएँ तथा स्मरण-शक्ति ठीक रहती हैं, पर हिलनेकी चेष्टा करते ही सरमें चक्कर आता है।" यदि रोगी हिलने-डोलनेकी चेष्टा करता ही रहता है, तो मिचली और वमन होने लगता है। इसमें कलेजेमें धड़कन होती है, जिससे समूचा शरीर हिल उठता है, सुन पड़नेवाली स्पष्ट कलेजेकी धड़कन। वह बायीं करवट लेट नहीं सकता।

यह पुराने, कष्टदायक, बार-बार होनेवाले सर-दर्द, जो हृत्पिण्डके रोगसे सम्मिलित रहते हैं, उनके लिये उपयोगी है। सूर्योदय अगर होगा, तो नित्य सर-दर्द भी होगा ; पर यदि बदली घिरी है, तो न होगा। सूर्यकी रोशनीसे तथा सूर्य किरणकी बढ़ती हुई चमकसे रोग बढ़ता है।

इसके अलावा, रातके समय दर्दका दौरा होता है। यह हड्डियोंका दर्द है, हृदस्थिमें दर्द, मानो अस्थि-आवरक-झिल्ली (Periosteum) टूट जायगी ; यह दर्द रातमें होता है या रातके पूर्वार्द्ध भागमें। उपदंशवालोंके विषयमें यह पूर्ण विख्यात है, कि रातमें रोग-वृद्धि होती है। यह एक सोरा-नाशक, प्रमेह-नाशक और उपदंश-नाशक दवा है और इन तीनोंमेंसे किसी दोषके लक्षण जब मिलते हैं, तो इसका चुनाव हो सकता है। करोटी-आवरक झिल्लीमें दर्द ; सतहके पास रहनेवाली हड्डियोंमें दर्द। रातमें बिछावनमें दर्द बहुत ही तेज हो जाता है और रातभर बना रहता है। उपदंश-नाशक औषधियोंमें, यह रात्रिकालीन रोग-वृद्धिका लक्षण बहुत ही स्पष्ट रहता है। यह हीपर और मर्क्युरियसमें पाया जाता है ; पर रोग कल्मष और उपदंशमें जैसा यह आश्चर्यजनक रूपसे प्रकट होता है, वैसा किसी भी दवामें नहीं होता। सूर्यास्त होनेके साथ-ही-साथ उपदंशमें रोग-वृद्धि हो जाती है। वह मनुष्य जातिका शत्रु है, जो रातमें अपना काम करता है। प्रमेहके बहुत-से उपसर्ग केवल दिनके समय प्रकट होते हैं और दर्दमें वृद्धि सुर्योदयसे सूर्यास्ततक होता है। दवाओंमें भी ऐसी ही अद्भुत बातें होती हैं। मानव-चरित्रकी भाँति ही हमलोगोंकी दवाओंका भी अध्ययन करना चाहिये। इनमेंसे बहुत सी तो अत्यन्त खाम-खयालोंसे भरी मालूम होती हैं और इन्हीं विचित्र, अद्भुत और खाम खयाली पदार्थोंके अध्ययनसे ही हम

दवाका चरित्र समझानेके योग्य हो सकते हैं। जब ये विशेषताएँ हम जानते हैं, तो हमें वे अवस्थाएँ मालूम हो जाती हैं, जिनमें ये दवाएँ उत्तम कार्य करती हैं।

इसमें मूत्रपिण्डके भी रोग हैं। सभी यन्त्रोंका आपसमें सम्बन्ध है, पर खासकर हृत्पिण्ड और गुर्देका तो बहुत अधिक सम्बन्ध है। जब मूत्रपिण्डकी क्रिया ठीक-ठीक नहीं होती, तो हृत्पिण्डमें भी अकसर तकलीफ रहती है। कोरण्ड-घटित मूत्रग्रन्थि-प्रदाहके भिन्न भिन्न रूपोंमें हृत्पिण्डमें तकलीफ होती है। श्वासमें कष्ट, कष्टकर हृद् क्रिया, साथ ही अण्डलाल मिला पेशाब। यह श्वासमें आराम पहुँचायगा। इसके अलावा गुर्देकी बीमारीके साथ बहुत-सी आँखकी बीमारियाँ भी रहती हैं, दृष्टि-शक्तिमें दोष और ये खासकर यही दवा मांगती हैं। यह अकसर कोरण्ड-घटित मूत्रग्रन्थि-प्रदाहमें निर्देशित होता है, जिसके साथ ही दृष्टिकी गड़बड़ी रहती है और गर्भावस्थामें होती है। आँखोंमें दर्दके लिये, सुई गड़ने और काटनेकी तरह दर्द, जो गर्भावस्थामें मूत्रपिण्डकी तकलीफोंके साथ होता है या अण्ड-लाल मिले पेशाबके साथ होता है, तो उसकी दवा कैलमिया ही होती है। यह दवा स्नायुशूलमें उपयोगिनी होती है, आँखका स्नायुशूल, चेहरेका स्नायुशूल, चेहरेमें प्रचण्ड फाड़नेकी तरह दर्द। कभी इसमें रातमें रोग-वृद्धि होती है और कभी यह दैनिक रोग-वृद्धिका आकार धारण करता है। दिनके समय रोग वृद्धि सूर्यके साथ आती और जाती है। लेटनेके साथ ही रातमें रोग-वृद्धि होती है। "चेहरेका चिन्ताजनक भाव"—हृत्पिण्डके वातके साथ सम्मिलित रहता है। "सरमें चक्कर आनेके साथ चेहरा तमतमा उठना।"

भैंसिया दादकी तरह उद्भेद गायब होनेके बाद, प्रचण्ड स्नायुशूल, उन स्नायुओंमें, जो रोगवाली जगहपर रक्त पहुँचाते है, खोंचा मारनेकी तरह दर्द। जब वर्त्तुलाकार विचर्चिका, दाद, ठण्डे जखम या अलग-अलग फुन्सियोंवाले उद्भेद गायब हो जाते हैं, एकाएक किसी प्रचण्ड कारणसे या अनुचित चिकित्साके कारण अथवा सर्दी लग जानेके कारण, तो उनके बदलेमें प्रचण्ड स्नायुशूल उत्पन्न हो जाता है और तबतक जारी रहता है, जबतक फिर उद्भेद नहीं निकल आते। यदि लक्षण मिलते हैं, तो यह दवा इसमें ठीक बैठती है अर्थात् यदि सम्पूर्ण रोगी, औषधकी दशासे मिलता है। दर्द सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह होता है, बहुत तेज होता है, कभी-कभी काटने और खोंचा मारनेकी तरह होता है, तब यह दवा बहुत ही लाभदायक होती है। ऐसा मालूम होता है, कि दर्द किसी स्नायुको पकड़ रखता है और कई मिनटोंतक पकड़े रहता है, दर्द बहुत प्रचण्डतासे होता है, एकाएक पैदा हो जाता है और एकाएक ही छोड़ जाता है। इसी ढंगसे हाथ-पैरोंमें दर्द होता है, इस तरह पकड़ता है, मानो स्नायु चिमटीसे बिंधे जा रहे हैं या वे टुकड़े-टुकड़े किये जा रहे हैं। रोगी कहता है—"अब यह गया।" इसके बाद ही आप फिर देखेंगे, कि उसका चेहरा भयङ्कर कष्टसे भरा है। वहाँ फिर दर्द हो रहा है और वह एक भी पेशी हिला नहीं सकता और फिर वह कहता है—"यह गया।" और यह कुछ मिनटोंतक और कभी-कभी घण्टोंतक जारी रहता है।

हृत्पिण्डके भी बहुतसे अध्ययनके योग्य लक्षण हैं। "हृत्पिण्डका फड़फड़ाना, हृत्पिण्डका धड़कना।" "ऊपर कण्ठतक धड़कन, बिछावनपर सोनेको जानेके बाद, समूचे

शरीरमें कम्पन।" **बहुत धीमी नाड़ी।** मुझे एक रोगी याद है, एक पुराना उपदंश-रोगी, जिसे कह दिया गया था, कि यदि वह कभी भी जोरसे चला तो मर जायगा, उसका हृत्कपाट इतनी ही बुरी तरह आक्रान्त हो गया था। हृत्कपाटोंसे जितने प्रकारकी शिकायत प्राप्त हो सकती है, सभी उसमें प्राप्त हुई थी। वह सर्वत्र घूम आया था और बहुत बड़ी-बड़ी खुराकोंमें उसने **मर्क्युरी** खाया था और उसकी औपदंशकि दशा बहुत कुछ दवा दी गयी थी, अन्तमें सभी उपसर्गोंने हृत्पिण्डको अपना घर बना लिया था। कुछ ही महीनोंमें कैलमियाने समस्त श्वासकष्ट और धड़कन दूर कर दी और लगभग दो वर्ष हुए, कि उपसर्ग लौट आये और दुबारा प्रयोग करनेपर वह पूर्ण स्वस्थ हो गया, जिससे कि उसे फिर दवाकी जरूरत न पड़ी। इसीसे मालूम होता है, कि कैलमिया कितनी गहरायीतक क्रिया करनेवाली दवा है और कैसे आश्चर्यजनक परिवर्त्तन यह ला सकती है। ऐसी बातें करनेके लिये किसी दवाको जीवनमें खूब गहरायीतक काम करनेवाली होनी चाहिये।

"हृत्पिण्ड-प्रदेशमें भ्रमणकारी वातका दर्द।" "जब सन्धिवातकी बाहरसे चिकित्सा की जाती है और हृत्पिण्डके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।" वात जो निम्न-प्रत्यङ्गसे ऊर्द्ध-प्रत्यङ्गमें जाता है। आपको ऐसी चीजें मिलना असाधारण नहीं है। "ये जबर्दस्त मरहम लेकर गली-गली घूमकर दवा बेचनेवाले बहुत बार वातको घुटनेकी सन्धिसे हटा देते हैं और जब ऐसा होता है, तो हृत्पिण्ड ही बहुतकर आक्रान्त होता है, तब कैलमिया, **आरम, ब्रायोनिया, रस-टक्स, लीडम, कैल्केरिया** और **पेब्रोटेनम** और कभी-कभी **कैक्टस**— ऐसी दवाएँ हैं, जो ऐसे हृद्-रोगोंके लिये उपयोगिनी होती हैं। इस ढङ्गसे जो वात रोगी हटाये जाते हैं, वे विना आरोग्य हुए ही परिवर्त्तित हो जाते हैं। लक्षणोंको हटा देनेका खतरा लोग अनुभव नहीं कर सकते। आरोग्यसे सम्बन्ध न रखनेवाला प्रत्येक निष्कर्षण मनुष्यके केन्द्रको आक्रान्त करता है अर्थात् हृत्पिण्ड और मस्तिष्कको। मालिश एक भयङ्कर चीज है। जब आपसे यह सवाल किया जाये—"क्या इसकी मालिशसे मुझे नुक्सान पहुँचेगा," तो आप जवाब दें—"यदि लक्षणोंमें मालिशसे कोई परिवर्त्तन न हो, तो इससे कोई हानि न पहुँचेगी।" जिस मात्रामें यह लक्षणोंको दबाता और आराम पहुँचाता है, ठीक उसी मात्रामें वह रोगीको नुक्सान भी पहुँचाता है; क्योंकि समस्त स्वास्थ्य-विधान कमजोर पड़ जाता है। ऐसे भी अवसर हैं, जहाँ मालिशसे लाभ होता है, पर वातमें नहीं। पक्षाघातग्रस्त पेशियोंके लिये यह एक लाभदायक व्यायाम है, क्योंकि उस समय मालिश स्वयं रोगीका व्यायाम हो जाता है, पेशियोंका; पर दर्द हटानेके लिये मालिश कभी उचित नहीं है। जितनी ही यह रुचिकर होती है, उतनी ही यह रोगीके लिये बदतर होती है। **फास्फोरस**के रोगीमें आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि मालिशसे उसको कितना आश्चर्यजनक लाभ होता है। **फास्फोरस**के रोगीसे बढ़कर जीवनी-शक्तिमें, भीतरी स्वास्थ्य-विधानमें दुर्बल मनुष्य न प्राप्त होगा। वह एक उत्तेजनशील, कमजोर रोगी रहता है, मालिशसे उसे आराम पहुँचता है और वह मालिशकी इच्छा करता है; पर यदि उसको घुटनोंका वात रहता है और घुटनेमें मालिशकी जाती है, तो वात हृत्पिण्डमें चला

जा सकता है। **फास्फोरस**का रोगी मालिश पसन्द करता है, क्योंकि मालिश उपसर्गोंमें आराम पहुँचाता है; चुम्बकधर्मी होना चाहता है।

"सभी प्रत्यङ्गोंकी क्लान्ति; सभी श्रम नापसन्द करता है," स्नायु-शूलके साथ सिर्फ कमजोरी सार्वाङ्गिक लक्षण रहता है।" यह कमजोरी वह दशा है, जिससे कि आप कुछ अनुमान लगा सकते हैं। जब स्वास्थ्य-विधानको तेज दर्द क्लान्त किये रहता है, तो हृत्पिण्ड-पर भी प्रभाव पहुँचता है। सार्वाङ्गिक दुर्बलता, प्रसवके बाद बहुत दिनोंतक कमजोरी या दर्दसे कमजोर, जैसी कि **हीपर**में मिलती है, पर कमजोरीके साथ ये दर्द अपना अंश छोड़कर हृत्पिण्डमें चले जानेकी सम्भावना दिखाते हैं। वह सम्पूर्ण रुपसे श्रान्त और बराबर क्लान्त रहता है।

पाठ्य-ग्रन्थमें केवल **ऐकोनाइट और बेलेडोना** प्रतिविष बताये गये हैं। इसके बाद **स्पाइजीलिया** बहुत फायदा करता है और इसका प्रतिविष भी होता है। **बेंझोयिक एसिड** इसका स्वाभाविक अनुपूरक है। **कैल्केरिया, लिथियम-कार्ब, लाइकोपोडियम, नेट्रम-म्यूर** और **पल्सेटिला** सदृश दवाएँ हैं और इनकी तुलना करनी चाहिये।

क्रियोजोटम

(Kreosotum)

क्रियोजोटममें तीन चीजें बहुत प्रधानतया रहती हैं और जब वे एक साथ ही प्रकट होती हैं, तो लघु श्रेणीमें उपसर्ग सम्मिलित रह सकते हैं। ये तीन चरित्रगत लक्षण हैं:— (१) खाल उधेड़ देनेवाला स्राव। (२) समूचे शरीरमें, स्पन्दन और (३) छोटे-छोटे घावोंसे बहुत खून निकलना।

जब उच्च श्रेणीमें ये तीनों बातें सम्मिलित रहें, तो क्रियोजोटकी जाँच करनी चाहिये। जरा-सा आलपीनकी नोक लगते ही चमकीला लाल रक्त चूने लगेगा और श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे भी सहजमें ही रक्त-स्राव होने लगता है। श्लैष्मिक-झिल्लीपर जरा-सा भी दबावसे रक्त चूने लगता है। जहाँ-तहाँसे शरीरसे रक्त-स्राव। आँसू भी खाल उधेड़नेवाला होता है। यह पलकोंके किनारे और गालकी खाल उधेड़ देता है, वे लाल और खाल उधड़े हो जाते हैं और यन्त्रणा होती है। यदि पीबका स्राव होता है, तो वह भी कटु ही रहता है। मुँहके और ओंठके कोने लाल और खाल उधड़े रहते हैं, लारसे भी जलन और यन्त्रणा होती है। मुँहके आस-पासकी तरी, यह चाहे जो भी हो, खाल उधेड़ देती है और मुँह खाल उधड़ा रहता है। आँखोंमें ऐसी यन्त्रणा और जलन होती है, मानो खाल उधड़ी हो। श्वेत-प्रदरके स्रावसे भगमें जलन और यन्त्रणा होती है, जिससे भगोष्ठोंका श्लैष्मिक-पटल लाल और खाल उधड़ा रहता है, कभी-कभी प्रदाहित रहता है, पर हमेशा ही उनमें जलन हुआ करती है। सङ्गमकालमें योनि-पथमें जलन होती है और संगमके बाद रक्त-स्राव होता है; योनि-पथ तथा जरायु-मुखमें दाने पड़ जाना, जिससे संगम क्रियामें जो दबाव पड़ता है, उससे रस-स्राव, जलन

यन्त्रणा होती है और खाल उधड़ जाती है और सङ्गम-कालमें योनि स्रावके साथ पु०-लिंगे-न्द्रियका संसर्ग होनेके कारण उसमें भी जलन और यन्त्रणा होने लगती है। पेशावमें जलन और यन्त्रणा होती है। स्रावों तथा मवादोंसे खाल उधड़ जानेकी प्रवणता, शरीरके सभी तन्तुओंमें लागू होती है।

प्रत्येक भावोद्रेक तथा उत्तेजक घटनाओंसे समूचे शरीरमें स्पन्दन होने लगता है, अङ्गुलियोंके सिरेतक स्पन्दन होता है। प्रत्येक भावोद्रेकके साथ आँसू निकल आते हैं। संगीत जो हल्के रूपसे मनोभावको उत्तेजित कर देता है, थोड़ी-सी भी अति चेष्टा या संगीत जो ठीक हृत्पिण्डपर आघात करता है, कारुणिक संगीत, कटु, अश्रु स्राव उत्पन्न कर देगा तथा धड़कन और स्पन्दन रोग होने लगेगा, जो हाथ-पैरोंतक अनुभव होगा।

क्रियोजोटका गल-क्षत (Sore throat) रहनेपर जीभका थोड़ा-सा भी दवाव रक्त निकाल देगा, छोटी-छोटी रक्तकी बूंदें निकलने लगेगी। नाककी सर्दीके समय नाकसे रक्त-स्राव होता है। जब आँखें लाल, खाल उधड़ी और प्रादाहित रहती हैं, तो उनसे सहजमें ही रक्त-स्राव होगा। यदि किसीकी अङ्गुलीमें काँटा गड़ जाता है, तो केवल एक बुन्द ही रक्त न निकलेगा ; पर बहुत-आरक्त वह जायगा। द्वारोंसे बहुत देरतक रक्त-स्राव होना ; गुर्देसे, आँखोंसे, नाकसे, जरायुसे रक्त-स्राव। संगमके बाद रक्त-स्राव। अर्बुदोंसे, सहजमें ही रक्त-स्राव होता है।

ये सब क्रियोजोटके बहुत ही स्पष्ट लक्षण हैं। यदि ये आपके मनमें बैठ जायँगे, तो आपको क्रियोजोटकी धातु प्रकृतिका ज्ञान हो जायेगा, जिसके बाहरसे बाकी सब लक्षण अपने सूक्ष्मतम रूपमें तथा प्रत्येक यन्त्रमें छोटे-छोटे लक्षण और उपसर्ग आ जायँगे। इस एक ही समूहमें क्रियोजोटका सुदृढ़ स्वरूप आपको प्राप्त हो जाता है। किसी रोगीमें चाहे कितने ही विशेष लक्षण क्यों न प्राप्त हों, यदि इन साधारण लक्षणोंसे कुछ भी आपको न मिले, तो आपको अपने रोगीको धातुगत रूपसे आरोग्य या क्रियोजोटसे आराम मिलनेकी कभी आशा न करनी चाहिये। ये बहुत ही आवश्यक जानने चाहिये।

मानसिक रूपसे तो रोगी इतना चिड़चिड़ा रहता है, कि कोई भी चीज उसे ठीक नहीं बैठती। इतनी ज्यादा उसकी चाहना रहती है, कि कोई भी चीज उसे सन्तुष्ट नहीं करती। रोगी प्रत्येक पदार्थ चाहता है, पर किसीसे भी सन्तुष्ट नहीं होता अर्थात् वह कुछ चाहता है और जब उसे वह दिया जाता है तो वह उसकी इच्छा नहीं करता। यही चिड़-चिड़ापन—उत्तेजनशीलताकी दशा है तथा पुरानी दशामें सन्तोषका अभाव। आप माताकी गोदमें बच्चेको देखेंगे, वह खिलौना चाहता है, जब उसे दिया जाता है, तो किसीके मुँहपर फेंक देता है ; वह चाहता है, पर कभी सन्तुष्ट नहीं रहता, हमेशा कुछ न-कुछ नयी चीजकी इच्छा करता है—एक नया खिलौना, जिसे वह पानेके साथ ही फेंक देता है, फिर कुछ दूसरी चीज मांगता है। ओंठ लाल रहते हैं और उनसे खून बहता है, मुँहके कोनोंकी भी खाल उधड़ी रहती है, पलकें लाल रहती हैं और चमड़ेकी खाल उधड़ी रहती है। इनके साथ ही, यदि आँतोंसे भी पतला मल निकलता हो तथा आप चूतड़ोंके बीचके फटे घावपर

ध्यान दें, तो आप देखेंगे, कि यह लाल और खाल उधड़ा है। यदि बच्चा इतना बड़ा हो, कि अपने भाव प्रकट कर सकता हो, तो वह यन्त्रणा-भरी जननेन्द्रियपर और फटे घावपर अपना हाथ रखेगा तथा बहुत ही उत्तेजित रूपसे चिल्लायगा; क्योंकि उसमें ऐसी ही यन्त्रणा है। ऐसा ही क्रियोजोटका बच्चा होता है। यह शिशु भले ही हैजाका रोगी हो, इसे बिछावनपर पेशाब हो जाया करता हो, इसे भले ही वमनका दौरा होता हो, जिनमें खायी हुई सब चीजें निकल जाती हों, यह क्रियोजोटका शिशु है। क्रियोजोटमें अतिसार और वमनका आक्रमण होता है; पेशाबकी सब तरहकी गड़बड़ियाँ रहती हैं; आँतोंमें बहुत तनाव और तकलीफ रहती है; तलपेट वायुसे तना रहता है। आप सम्पूर्ण रोगीको देखें, यह क्रियोजोटका इस वजहसे रोगी है; क्योंकि ये साधारण स्वरूप वर्त्तमान हैं, जो शिशुके दृश्यसे सम्मिलित किये जा सकते हैं।

कियोजोटके चेहरेपर पीलापन छाया रहता है; यह एक रोगियल चेहरा है, अर्द्ध रक्त-हीन अवस्था, जिसके साथ लाल दिखाई देनेवाले धब्बे रहते हैं, मानो विसर्प आरम्भ होना चाहता है। पुराने समयमें ऐसा चेहरा एक शीतादपूर्ण चेहरा कहलाता था।

इसी ढङ्गके चेहरेकी एक स्त्री लीजये; प्रत्येक ऋतुकालमें वह जननेन्द्रियमें बहुत सूजन और खाल उधेड़नेकी शिकायत करती है; स्राव बहुत ज्यादा होता है, थक्का-थक्का, रुक जाता है और फिर जारी होता है, बहुत जल्द होता है और बहुत दिनोंतक जारी रहता है, कभी-कभी यह काला होता है, बहुत बदबूदार, जंघाओं और जननेन्द्रियमें, बहुत सूजनके साथ खाल उधेड़ देता है, प्रत्येक ऋतु स्रावके समय घावोंकी खाल उधड़ जाती है और मुँहके कोनेमें फटे घाव हो जाते हैं, आँसू कटु हो जाते हैं, मासिक ऋतु स्रावके समय समस्त शरीरका तरल अम्ल हो गया हुआ मालूम होता है और जब उन्हें छुआ जाता है, उनमें लजन होती है। अकसर पीला दस्त होता है, जो कटु होता है और मासिक ऋतु-स्रावके समय मलद्वारमें यन्त्रणा होती है। मासिक कालमें सभी लक्षण बदतर हो जाते हैं, कभी-कभी आरम्भिक अंशमें, कभी मध्यमें और कभी समस्त कालमें और कभी ऋतु-स्राव बन्द होनेके समय। मसूढ़ोंके सम्बन्ध कुछ अधिक ही शीतादकी दशा दिखाई देती है। मसूढ़े फूल जाते हैं, लाल हो जाते हैं और फूले रहते हैं तथा दाँतसे अलग हो जाते हैं। वे छेद-छेद हो जाते हैं और उनसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है। मुँहमें बहुतसे जखम रहते हैं तथा मुखके गड़हेमें छोटे छोटे जखम फैलते हैं, यन्त्रणा और जलन, जीभपर भी जखम रहते हैं, छूनेपर सहजमें ही जिनसे रक्त स्राव होता है।

सान्निपातिक ज्वर (Typhoid fever) के अन्तमें आँतोंसे रक्त-स्राव, श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त स्राव। मुँह की खाल उधड़ जाती है, जहाँ कहीं श्लैष्मिक-झिल्ली रहती है, वहींकी खाल उधड़ी रहती है और जो रस चूता है वही क्षय करता और जखम पैदा करता है। यदि सान्निपातिक ज्वरके अन्तमें, जब आरोग्य काल आता है, तो वमन पैदा हो जाता है। वमन, रक्त-स्राव, अतिसार। पाकाशयसे वमन हुआ तरल इतना कटु रहता है, कि मुँहकी खाल उधेड़ देता है, दाँत किनारेपर ला देते हैं और ओठोंकी खाल उधड़ जाती है।

कटु तरलसे बहुत ज्यादा खाल उधड़ती है, साथ ही समूचे शरीरमें धमक होती है ; ये सब ऐसे स्वरूप हैं, जिन्हें क्रियोजोटके साथ आपको ध्यानमें रखना चाहिये।

शरीरसे बदबूदार स्राव होता है, बदबूदार, खून-मिला, नाकसे कटु स्राव, बदबूदार, पानीकी हरह, शरीरके किसी भी अंशसे स्राव ; यहाँतक कि कभी-कभी सड़ा हुआ, श्वेत-प्रदरका स्राव बहुत बदबूदार रहता है। तेजीसे शरीर क्षय होता जाता है, साथ ही छेद-भरे, जलते हुए घाव, पीव कटु खाल उधेड़नेवाला, बदबूदार और पीला। कभी-कभी जखममें प्रादाहिक दशा इतनी अधिक हो जायगी, कि केवल एक छोटे-से जखमसे सड़ना आरम्भ हो जायगा और इसीलिये सड़नेवाले जखम होते हैं ; प्रादाहित स्थानोंका सड़ने लगना। श्लैष्मिक-झिल्लियोंके किनारोंपर बहुत ही निम्न निर्माण होते हैं ; पपड़ियाँ जमती हैं। पपड़ियोंके बीच कड़ापन तथा पपड़ियाँ जमती ही रहती हैं। खूनका दौरान इतना दुर्बल रहता है, ओंठके किनारे, मुँहके कोने, आँखके कोनें, पलकें और जननेन्द्रियके अंशमें खूनका दौरान इतना दुर्बल रहता है तथा इतना अधिक शैरिक अवरोध रहता है, कि पपड़ियाँ जमती हैं और जखम होता है, उनसे रक्त बहता है और इकट्ठा होता है और यह तबतक होता रहता है, जबतक एक सड़नेवाला स्थान नहीं बन जाता। यह दशा कोषार्बुद (Epithelioma) से इतना सादृश्य रखती है, कि क्रियोजोटने कोषार्बुद आरोग्य किया है।

क्रियोजोटकी दूसरी आश्चर्यजनक चीज है, इसके पाकाशयके लक्षण। भोजनके बाद ही पाकाशयमें जलनका दर्द पैदा हो जाता है, इसके बाद ही भरापनका भाव और बढ़ती हुई मिचली, जो वमन होकर रुकती है, जो ठीक वैसा ही दिखाई देता है, जैसा खानेके समय था ; यह बिलकुल न पचा हुआ-सा दिखाई देता है ; पर यह खट्टा और कटु होता है, भोजनके घण्टे दो घण्टे बाद वमन होता है। वमन ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशय हजम नहीं कर सकता और जब रोगी पाकाशय खाली कर देता है, तो लगातार मिचली बनी रहती है। पानी पीनेके बाद मुँहमें बहुत देरतक तीता स्वाद बना रहता है। ठण्डी चीजें खानेपर रोग-वृद्धि हो जाती है और गर्म खानेसे आराम मिलता है। पाकाशयकी मारात्मक बीमारियोंमें, जब यह लक्षण वर्त्तमान रहता है, तो क्रियोजोट एक बहुत बड़ा उपशामक होता है ; यह जलन दूर कर देता है और कुछ समय के लिये भूख बीढ़ा देता है, पर बीमारी फिरसे पैदा हो जाती है। कर्कटके रोगोंमें तो बहुत बार हमारी दवाएँ बहुत बड़ी उपशामक बन जाती हैं। कर्कटीय तथा पाकाशयकी अन्य दुरारोग्य बीमारियोंमें होमियोपैथी हर समय बहुत ज्यादा उपशम प्रदान करती है। यह उपशम **मारफीन**से कहीं ज्यादा आराम पाकाशयको पहुँचायगा। मैंने **मारफीन**के प्रभावमें रहनेवाले तथा होमियोपैथिमक दवाके प्रभावमें रहनेवाले रोगियोंका निरीक्षण किया है और केवल आराम पहुँचानाभी जहाँ उद्देश्य होगा, मैं होमियोपैथिक दवा ही लूँगा। यह बहुतोंका तजुर्बा है। जब आप किसी होमियोपैथको यह कहते सुनें कि वह पाकाशयके कर्कटीया रोगोंके लिये तथा अन्य दर्द-भरे रोगोंके लिये कोई दर्दनाशक (Anodynes) खोज रहा है, तो यह इसका ज्वलन्त प्रमाण है, कि वह रोगीके लिये उपयोगी दवा नहीं खोज पाया है। ऐसे रोगोंमें ही तो चिकित्सककी योग्यता देखी जाती है।

गर्मीके दिनोंके अतिसारकी क्रियोजोट एक बहुत बड़ी दवा है, खासकर बच्चोंका अतिसार। जैसे मिजाजका बच्चा हमने ऊपर बताया है, सम्भव है, कि वह गर्मीयोंमें होनेवाले सबसे बुरी तकलीफ भोग रहा है या उसे शिशु हैजाका धीमा आक्रमण हुआ है या उसे "दाँत निकलते" हों तथा कुछ इस ढङ्गकी बीमारी हो, जिसका सम्बन्ध दाँत निकलनेसे हो। बच्चोंको दाँत निकलते समय इसीलिये तकलीफ होती है, क्योंकि वे रोगी रहते हैं और यदि बच्चेमें किसी तरहकी गड़बड़ी न हो, तो दाँत निकलनेमें भी तकलीफ न होगी। दाँत निकलना एक रोग सङ्कट काल है, इस समय जो चीजें भीतर रहती हैं, वे बाहर आ जाती हैं, ठीक उसी तरह जिस भीतरकी तकलीफें यौवन-काल तथा वयःसन्धि-कालमें आ जाती हैं।

क्रियोजोटकी धातुगत प्रकृतिका एक प्रत्यक्ष लक्षण यह है, कि जब पेशाब लगता है, तो उसे **दौड़कर जाना पड़ता है नहीं तो पेशाब निकल पड़ता है।** नींदमें भी पेशाब हो जाता है। खून-मिला पेशाब; पेशाबमें थक्के; पेशाब कटु और खाल उधेड़नेवाला; मूत्राशयकी कमजोरी; पेशाब रोकनेकी ताकतका न रहना। स्त्री-वाह्य-जननेन्द्रियमें पेशाबके साथ और बाद यन्त्रणा और जलन। "पेशाबमें चीनी।" इसने बहुमूत्र आरोग्य किया है। ऊपर बताये लक्षणोंको साधारणसे मिलान कीजिये और आपको मालूम हो जायगा, कि किस प्रकारके बहुमूत्रके रोगीको क्रियोजोटकी जरूरत रहती है।

लैक कैनाइनम
(Lac Caninum)

डाक्टर रीजिगने इस दवाका आरम्भ किया था और उनके बाद डाक्टर बेयर्डने इसे व्यवहार किया था। बेयर्डकी मृत्युके बाद डाक्टर डायरनने मुझे ३० शक्तिकी एक शीशी दी, यह रीजिगकी बनाई हुई थी, जिससे विशेषकर आगेके क्रम बनाये जाते थे।

सभी दूध शक्तिकृत कर डालना चाहिये। ये हमारी सर्वोत्तम दवाएँ हैं, ये जैव-पदार्थ हैं तथा प्राणधारियोंके आरम्भिक खाद्य हैं और इसीलिये हमारी भीतरी शारीरिक प्रकृतिसे आरम्भमें इसका बहुत सम्बन्ध है। यदि बन्दर, गाय, घोड़ी तथा मानव दुग्धकी पूरी-पूरी परीक्षाएँ की जायँ, तो बहुत लाभ हो। **लैक-डिफ्लोरेटमने** अत्युत्कृष्ट कार्य किया है और वैसा ही इस दवाने भी किया है। यद्यपि इसने बहुत-से आश्चर्यप्रद आरोग्य किये हैं, इतनेपर भी यह अभी अपने आरम्भमें ही है; पर इसके बहुत से लक्षण सन्देहजनक हैं और इन्हें स्थिर करनेमें एक शताब्दी लग जायगी। कुछ लोग सोच सकते हैं, कि दूध तो बच्चोंका खाद्य है, इसलिये यह दवा नहीं हो सकता, पर जो दूधसे बीमार पड़ते हैं, उन्हें शक्तिकृत रूपमें खिलाइये और फिर नतीजा बताइये। दूधसे नफरत करनेवाले परीक्षक शक्तिकृत रूपमें कई दिन इसे पीनेपर बीमार हो जायँगे और उनमें बहुतसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

यह दवा स्नायविक लक्षणोंपर काम करती है ; यद्यपि इसमें सन्देह नहीं, कि हन्तु-परिवर्त्तनके भी लक्षण हैं। यह एक दीर्घ-क्रिय और गहरायीतक काम करनेवाली दवा है ; परीक्षाके बरसों बादतक परीक्षा करनेवालोंको इसके लक्षण मालूम होते रहे। मानसिक लक्षण बहुत लम्बे और तकलीफ देनेवाले हैं। इसने बढ़ी हुई ग्रन्थियोंको आरोग्य किया है। जखमोंको बहुत लाल बना देता है और इसने ऐसे जखम आरोग्य किये हैं। जखमवाली जगहपर एक सूखा सीमाबद्ध स्थान रहता है और इस तरह चमकीला दिखाई देता है, मानो अन्तस्त्वक्से ढँका है। कुचिकित्सित डिफ्थीरियाके बादके रोगोंकी यह एक महत्व-पूर्ण दवा है तथा डिफ्थीरिया होनेके बादके पक्षाघात तथा अन्य अवस्थाओंको। इसके अधिक संख्यक लक्षण स्नायु संस्थानके रहते हैं। एक अति असहिष्णु दशा बनी रहती है, चर्म तथा समस्त अंशोंकी एक सर्वाङ्गिक स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। यह स्त्रियोंको प्रचण्ड गुल्म-वायु-ग्रस्त बना देता है तथा सब तरहके अद्भुत और असम्भव दिखाई देनेवाले लक्षण उत्पन्न कर देता है। उदाहरणार्थ कोई स्त्री कई दिनोंतक अपनी अंगली अलग-अलग फैलाये पड़ी रह सकती है और यदि वे आपसमें छू जाती हैं, तो पागल हो उठती है। अंगुलीकी तकलीफ जोरसे दबानेपर नहीं बढ़ती ; पर यदि धीरेसे छू लिया जाय, तो वह चीख उठेगी। लेक-कैन और **लैकेसिस**के बिना इस दशाको आरोग्य करना मुश्किल है। **लैकेसिसने** भी ऐसी ही अवस्था उत्पन्न की है। उदर इतना असहिष्णु रहता है, कि बिछावनकी चादर चर्मसे नहीं छुई जा सकती। यह दोनोंमें ही है।

दूसरी अद्भुत दशा है, सरका विचित्र चक्कर। एक अवस्था, जो चलनेके समय होती है, जिसमें उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह हवामें तैर रही है, लेटे रहनेपर, मानो वह बिछावनपर नहीं है। और-और दशाओंमें भी ये लक्षण हैं। यह तैरने या बिछावनपर न रहने अथवा नीचे डूब जानेकी अनुभूति **लैकेसिसमें** है। चलनेके समय सरमें चक्करका लक्षण **पेसाराम इयुरोपियममें** बहुत अधिक है।

किसी विशेष प्रकार या गुणके बिना ही रोग **पार्श्व-परिवर्त्तन** किया करते हैं। पहले एक गुल्फमें वात था, फिर दूसरेमें हुआ और फिर अपनी मूल जगहपर आ गया। यदि घुटनेमें, कूल्हेमें या कन्धेमें बात हो तो **वात पार्श्व परिवर्त्तन किया करता है।** सर-दर्द और स्नायु-शूल भी यही करते हैं। घूमनेवाला विसर्प पहले एक पार्श्वपर आक्रमण करता है, फिर दूसरेपर। डिम्बाशयके प्रदाह और स्नायु-शूलमें यही पर्यायशीलता दिखाई देती है। गलक्षत पर्यायक्रमसे कण्ठ और तालुमूलपर आक्रमण किया करते हैं। इस दवासे इस ढङ्गके बहुतसे रोगी आरोग्य किये गये हैं। रोग दाहिनी ओर उत्पन्न हुआ तथा बायीं ओर गया, **लाइकोपोडियमसे** कोई फायदा न हुआ ; पर जब यह लौटकर दाहिनी ओर आया, तो यह पर्यायशील देखनेमें आयी और दवाका पता लग गया। बहुत थोड़ी दवाओंमें यह पर्यायशील पार्श्व-परिवर्त्तन है।

एक या दो परीक्षकोंमें बहुत-से लक्षण प्रकट हुए थे और वे इतने विश्वसनीय नहीं हैं ; पर यह दवा इस तरह **विचारों** और **ज्ञानेन्द्रियोंकी** सफाई करती है, कि उन्हें

लक्षणोंपर विचार करना सहज हो जाता है और यह स्वतः बतानेवाला होता है। खामखयाली और तङ्ग करनेवाले तथा कष्टकर विचारोंसे भरा है। मानसिक-क्षेत्रमें भ्रमणकारी स्वरूप, भ्रमणकारी और पर्यायशील दशाएँ। विचारोको संग्रह नहीं कर सकता। ज्योंही यह आरम्भ होता है, त्योंहो वह प्रत्येक चीज छोड़ देना चाहती है, बहुत-सी दवाओंमें रहनेवाली अस्थिर-चित्तताकी दशा। उसमें यह विचार भरा रहता है, कि जो कुछ वह करती है वैसा नहीं है, सोचती है, कि जो कुछ वह कहता है झूठ है मानो चीजोंमें जो वास्तविकता रहना चाहिये, वह नहीं है। इस सम्बन्धमें यह **ऐल्यूमिना**के समवृत्ति है, जिसमें कि रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह स्वयं नहीं, बल्कि कोई दूसरा ही सब बातें कह रहा है, पदार्थोंकी वास्तविकतापर विश्वासका अभाव।

प्रत्येक बार जब कोई लक्षण उत्पन्न होता है, तो वह समझती है, कि यह कोई स्थिर बीमारी है ; भय और चिन्ताकी कोई भयङ्कर बीमारी उसे दबाये हुए है, एक भ्रम, कि उसके शरीरमें पीब पैदा हो रहा है और वह एक घृणाजनक दशामें है ; साँपका विष प्रवेश कर गया है। मानस-पटलपर भयङ्कर दृश्य रहते हैं, हमेशा साँप ही नहीं और वह डरती है, कि वह चीज रूप धारणकर उसके सामने आ जाती है। यह **लैकेसिस**के सदृश है, उसमें भी यह भाव है कि समस्त वायुमण्डल भयानक आत्माओंसे भरा है, यद्यपि रोगीको वह कभी दिखाई नहीं देते।

सोचती है, कि वह किसी दूसरेकी नाक पहने हुए हैं। सोचती है, कि वह स्वयं नहीं है और उसकी जायदाद अपनी नहीं है। सोचती है, कि वह मकड़ा, साँप या कीट-पतङ्ग देखती है। वह अकेली रहना सहन नहीं कर सकती। **लैकेसिस**में रोगी अकेला रहना तथा अद्भुत विचारोंमें संलग्न रहना चाहता है और जब अकेली रहती है, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह खिड़कीके बाहर उतर रही है या घासके मैदानके ऊपर, पर एक आवाज यदि हो जाये, तो वह फिर संसारमें आ जाती है। यह उन्माद या प्रलापकी सीमापर पहुँचता है।

यद्यपि रोगीमें ये सब अद्भुत भाव रहते हैं, इतनेपर भी वह दिनभर काम किया ही करती है तथा जबतक नहीं कहती, तबतक कोई उसकी तकलीफको नहीं जानता। पुरानी उदासी ; प्रत्येक पदार्थ इतना अन्धकारमय, चिड़चिड़ा, बदसूरत, घृणा-पूर्ण। सर चक्करसे भरा, पर यह ज्ञान-केन्द्रका लक्षण है, अस्वाभाविक रूपसे सुधार। असभ्य हिलना-डोलना, छटपटाना या एक ऐसा भाव, मानो चीजें चक्कर खा रही हैं। इसका समूचे शरीरपर प्रभाव होता है, मानो वह आत्माकी तरह तैर रही है या हवामें उतर रही है।

सर-दर्द बड़ा प्रचण्ड और अधिककर सम्मुख भागका होता है, पर इसमें पश्चात् मस्तकका सर-दर्द भी है। ठण्डी हवामें घुड़सवारी करनेके कारण आँखके ऊपर सर-दर्द, गर्म कमरेमें अच्छा रहता है। कपाल और पश्चात्-मस्तक दोनोंका ही सर-दर्द ऊपरको ओर चक्षु-गोलक घुमानेसे बढ़ जाते हैं तथा आँखोंसे महीन काम करनेपर। दिनके समय सर-दर्द, पहले एक पार्श्वमें, फिर दूसरी तरफ या दोनों ही पार्श्व एक साथ आक्रान्त हो

जाते हैं। चेहरा तथा आँखोंमें दर्द, पर्यायक्रमसे पार्श्व-परिवर्त्तन किया करता है, एकदम असह्य दर्द, खुली हवामें चले जानेपर घट जाता है। सर्दी तथा सर्द प्रयोगसे वातज लक्षण घट जाते हैं, इस तरह यह **पल्सेटिला** और **लीडम**की श्रेणीमें आ जाती है। कुछ सर-दर्द ऐसे भी मिले हैं, जिसमें गर्मीसे आराम पहुँचता है।

असहिष्णुता बहुत स्पष्ट रहती है; आवाज और रोशनी सहन नहीं होती। पढ़नेके समय पृष्ठ स्पष्ट नहीं रहते। अन्धेरेमें रोगिनीको अपने सामने चेहरे दिखाई देते हैं। वृद्ध, कष्टित, भिन्न-भिन्न, अरुचिकर चेहरे दृष्टि-पथपर या ख्यालमें आते हैं। काले, छिपनेवाले चेहरे, उसने आते हुए देखे हैं और उनसे वह बहुत कष्टित हो रही हैं। यह केवल दृष्टिका उपसर्ग नहीं है, पर मस्तिष्ककी एक दशा है।

आवाजें बहुत दूरमें मालूम होती हैं, डिफ्थीरियाके साथ कण्ठका पक्षाघात, तरल पदार्थ पीनेपर नाकसे निकल आते हैं। नाककी सर्दी, इसके साथ ही गलक्षत और छींकें आना। नाक रुकी, सफेद श्लेष्माका स्राव। चेहरेमें दर्द; परिश्रम करनेपर यह दर्द बढ़ जाता है, गर्म प्रयोगसे घटता है, पर केवल सर्द प्रयोग ही यन्त्रणाको आराम पहुँचाता है।

बदबूदार मुख इसका एक जबर्दस्त स्वरूप है। श्लैष्मिक-झिल्ली और दाँतपर फुन्सीकी तरह, चमकीला, चाँदीकी तरह पदार्थ जमा रहता है, बहुत कुछ दूधकी तरह। कण्ठमें रसस्रावकी तरह मालूम होता है, खाकी, भूरा या **चाँदीकी तरह चमकीला तल-छट**। पर्यायक्रमसे पार्श्व-परिवर्त्तन करनेवाले रोग रहनेपर इसका डिफ्थीरियामें प्रयोग हुआ है और डिफ्थीरियाके बाद होनेवाला पक्षाघात भी इसने आरोग्य किया है। कण्ठका दर्द बायें कानकी ओर धक्का देता है। दर्द पर्यायक्रमसे पार्श्व-परिवर्त्तन करता है। गर्म या ठण्डे प्रयोगसे कण्ठकी तकलीफ घट जाती है तथा खाली घूंट लेनेपर बढ़ जाता है। यह **कैलि-बाइक्रोम** की तरह, खासकर कण्ठके चमकीले, चिकने, लाल दिखाई देनेपर निर्देशित होता है। डिफ्थीरियाकी झिल्ली भी चाँदीकी तरह सफेद रहती है। लेक-कैनाइनमने बहुतसे पर्याय-क्रमसे होनेवाले ऐसे रोगी आरोग्य किये हैं, जिन्हें पहले दाहिने तालुमूलमें धब्बे (Patches) पड़े थे, फिर बायीं ओर। झिल्लीमय क्रूप। जहाँ कहीं भी श्लैष्मिक-झिल्ली होगी वहींसे रक्त-स्राव होगा, जो खाकी फुन्सिको तरह आवरण, जो जीभपर ढेर-का-ढेर लगा रहता है। मैंने एक बार लेककैनाइनमसे पुराना रोग आराम किया था, जिसमें समूचा गालका गह्वर (Buccal cavity) बिना प्रदाह या जखमके ही सफेद रस-स्रावसे भरा था, एक प्रत्यक्ष रस-स्राव था जो हर जगह गालमें इकट्ठा हो रहा था और जीभतक फैल आया था। यह सफेद और चाँदीकी तरह था, ऐसा मालूम होता था, मानो मुँहभर कार्बोलिक एसिड निगल लिया गया है तथा मुँह इतना असहिष्णु हो रहा था, कि रोगी दूधके सिवा और कुछ भी निगल नहीं सकता था।

उदर तकलीफोंसे भरा रहता है। बस्ति गह्वरमें दबावका दर्द; बायें वंक्षणमें तीव्र दर्द, बार-बार लगातार पेशाब लगना। उपदाहित मूत्राशय।

स्त्री-जननेन्द्रियके भी बहुतसे लक्षण हैं। दाहिने डिम्बाशय-प्रदेशमें तीव्र दर्द, चमकीला, लाल रक्त-स्राव होनेपर घट जाता है, यह फिर बहुत कुछ **लैकेसिस**की तरह है। ये दर्द पर्यायक्रमसे पार्श्व-परिवर्त्तन किया करते हैं। **जिङ्कम**में भी डिम्बाशयमें ऐसा ही दर्द होता है, जो रक्त-स्राव होनेपर घट जाता है; मासिक रजःस्राव कालके सिवा रोगिनीको और किसी भी समय आराम नहीं मिलता। अन्य समयमें गुल्म-वायु-ग्रस्त (Hysterical) रहती है; पर रजः-स्राव-कालमें अच्छी, ऐसा **जिङ्कम**में है। झिल्लीमय रजःस्राव लैक-कैनाइनमकी रक्त-स्रावी प्रकृतिका एक दूसरा उदाहरण है। मासिक रजःस्राव कालके साथ गलक्षत आरम्भ और अन्त होते हैं। मासिक रजःस्रावकालमें **मैग्नेशिया-कार्ब**में गलक्षत पहले है और ऋतु-स्रावके समय दर्दभरा कण्ठ **कैल्केरिया-कार्ब**ने आरोग्य किया है।

योनिसे वायु निकलना। श्लेष्माका तथा अन्य पदार्थोंका मूत्राशयमें उत्सेचनके कारण पेशाव निकलनेके समय वायु निकलना **सार्सा**में है; जोरकी आवाजके साथ पेशाब होता है, पेशाव करनेके समय वच्चेको वायु निकलना साधारण नहीं है तथा पेशाब गड़गड़ाहटकी आवाजके साथ होता है, यह **सार्सापैरिला**से आरोग्य हुआ है।

स्तनकी भी बहुत-सी तकलीफें हैं; ऐसा मालूम होता है, कि वे पक जायँगे। जब माताका बच्चा मर जाता है और दूध सुखा देना जरूरी रहता है, तो लैक-कैनाइनम और **पल्सेटिला** इस कार्यकी सर्वोत्तम दवाएँ हैं, जब कि कोई लक्षण मौजूद नहीं हो। वे यह काम तेजीसे कर देंगे; लैककैनाइनमकी रोगिनी विचार-पूर्ण रहती है और दर्द तथा अपने पारिपार्श्विकसे असहिष्णु रहती है, स्दर्श-द्वेष और स्पर्श-असहिष्णुता। **पल्सेटिला**की प्रकृति-वालोंके लिये **पल्सेटिला**की जरूरत पड़ेगी।

निम्नाङ्गकी सूजनके साथ वात, खासकर जब यह पर्यायक्रमसे प्रत्यङ्गोंपर आक्रमण करता है; ताप तथा हिलने-डोलनेपर रोग बढ़ता है, **सर्द प्रयोगसे घटता है।** पीटे जानेकी तरह प्रत्यङ्गोंमें दर्द। सन्धियोंकी वातज सूजन।

लैक वैक्सिनम डिफ्लोरेटम
(Lac Vaccinum Defloratum)

दवाके रूपमें रोगियोंकी मलाई उतारा दूध देना अशिक्षित मन कभी स्वीकार न करेगा, पर जब दूसरे पदार्थोंकी तरह यह भी शक्तिकृत कर दिया जाता है, तो यह एक बहुत ही लाभदायक औषध हो जाता है। अपने चिकित्सा-कालमें हरेक चिकित्सकको कुछ ऐसे रोगी मिले होंगे; पुरुष, स्त्री और वच्चे, जो दूध नहीं पी सकते। वे कहते हैं, कि वे दूध पीनेपर या व्यवहार करनेपर बीमार हो जाते हैं और दूध उनके लिये विषके समान है।

सच्चे चिकित्सकका कर्त्तव्य रोगीका अध्ययन है और प्रत्येक रोगीमें यह देखना, कि दूध पीनेपर कौन-से उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। इसकी परीक्षाके ये ही लक्षण हैं और यही इसकी सर्वोत्तम परीक्षा है; क्योंकि यह असहिष्णु व्यक्तियोंमें उत्पन्न होता है।

लेखकने प्रत्येक ऐसे रोगीका अध्ययन तबतक अपना कर्त्तव्य बना लिया है, जबतक दूधसे उत्पन्न रोगोंकी मूर्त्ति दोनों ही प्रकारसे व्यक्तिगत लक्षण और सामूहिक दृश्यके रूपमें, **उसके सामने न आ जाय।**

दूधकी प्रकृतिपर ध्यान देनेसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है; कुछ लोग सोच सकते हैं, कि मलाई उतारे दूध और नये दूधके मध्य कुछ अन्तर जरूर होगा; पर सभी चिकित्सा कार्योंके लिये मलाई उतारा दूध काफी होता है तथा दूधकी अत्यधिक असहिष्णुता दूर कर देता है, यदि उच्च क्रममें उसका प्रयोग किया जाता है। निम्न क्रममें तो यह बिलकुल बेकार होता है।

यह एक लाभदायक दवा है, यह विश्वास न करनेवालेको ऊँची शक्तिका प्रयोगकर आश्चर्यजनक रूप दिखाया जा सकता है। चौबीस घण्टोंतक इसकी रोग-वृद्धि बनी रहती है; कुछ रोगियोंके लक्षण केवल दिनके समय प्रकट होते हैं तथा सूर्यास्तके साथ-ही-साथ रोग ह्रास होने लगता है; पर यह असाधारण है।

पुराना दूधका रोगी बहुत ठण्डा और रक्त-रहित रहता है तथा गर्म कमरेमें तथा गर्म वस्त्रोंसे भी गर्म नहीं हो पाता; वह इतनी सर्दीली रहती है तथा सर्दी इस कदर बर्दास्त नहीं होती, कि उसे मालूम होता है, कि कमरेके भीतर हवा उसपरसे बह रही है, मानो उसे पङ्खा झला जा रहा है, जब कि कमरेमें झोंककी हवा आ नहीं सकती और दूसरोंको कमरा बहुत गर्म मालूम होता है। पर मौसम उसे बहुत असह्य होता है। उसके समूचे शरीरमें स्नायुशूल और वातज दर्द हो जा सकता है, पर खासकर सरमें। दर्द प्रयागसे सर-दर्द उत्तम रहता है, पर अन्य स्थानोंका दर्द तापसे अच्छा रहता है। हिलने-डोलनेपर सभी तकलीफें बढ़ जाती हैं तथा विश्राम करनेपर अच्छी रहती है; दबानेपर दर्द अच्छा होता है। हड्डियोंको छूनेपर यन्त्रणा होती है। बहुत आलस्य, यहाँतक कि कमजोरी रहती है, किसी तरहका भी श्रम सहन नहीं कर सकती। बहुत ज्यादा बेचैनी रहती है और नींद न आनेके बाद वह अपनेको सम्हाल नहीं सकती; थोड़ा भी चलनेपर बहुत अधिक थकावट। वह ऐसी दिखाई देती है और ऐसा काम करती है, मानो वह बहुत दिनोंसे बीमार है, मानो वह धीरे-धीरे कमजोर ही होती जाती है। समूचे शरीरका चर्म सर्द पदार्थोंसे तथा सर्द स्नायुसे बहुत असहिष्णु रहता है। इस दवाकी प्रकृतिमें स्पष्ट सामयिकता है, छूट-छूट-कर होनेवाले सर-दर्दमें यह खूब दिखाई देती है। बहुमूत्र आरोग्य करनेमें इसकी बहुत तारीफ है और उस अवस्थामें इसपर आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं रह जाती, जब यह मालूम है, कि इसने कमजोरी, रक्तस्वल्पता और बहुत पानीकी तरह पेशाब और तेज प्यास तथा बहुत ज्यादा, गाढ़ा पेशाब होनेकी बीमारी आरोग्य की है। बहुत-से असमर्थ रोगी, जो इस दवासे आरोग्य हुए हैं, वे लेखकके सामने ठीक बहुमूत्रके रोगीके रूपमें आये थे; पर यह तभी आरोग्य कर सकता है, जब अद्भुत लक्षण मिलते हैं। केवल साधारण लक्षण रहनेपर यह आरोग्य न करेगा। सभी गवेषणशीलोंकी ध्यानसे और हृदयसे उन सभी रोगियोंका अध्ययन करना चाहिये, जो दूध नहीं पीना चाहते; जिनको पतले दस्त, मिचली, वमन, स-

वमन सर-दर्द, डकारें आती हैं तथा दूध पीनेपर पाकाशय विगड़ जाता है और समय पाकर दुग्ध रोगका साधारण विचार उनपर प्रकट हो जायगा।

यह वहुत वार बच्चोंको आवश्यक पड़नेवाली और वहुत ही लाभदायक दवा है और जो बच्चे दूध नहीं पी सकते, उनके लिये हमेशा बँधी दवाके रूपमें नहीं, वल्कि एक इस दवाके रूपमें जो बहुत-से-बच्चोंकी अभिवृद्धिमें सहायता पहुँचायगी; कोई तो अस्वाभाविक रूपसे मोटे हो जाते हैं तथा दूसरे जब दूधपर रखे जाते हैं, तो दुबले हो जाते हैं।

दुर्बल हृत्पिण्डके कारण, यकृत रोगोंके कारण, दबे हुए मैलेरियाके कारण, जो शोथ होता है, उसके लिये यह उपयोगी है। जिन व्यक्तियोंको दूध पीनेका अभ्यास रहता है, रक्त-रहित और श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाह-ग्रस्त हो जाते हैं; पेशियोंमें, हृत्पिण्ड और यकृतमें मेद-वृद्धि हो जाती है। दुग्ध-विषका दुःपरिपोषण एक स्पष्ट स्वरूप है।

बहुत-से अंशोंमें दर्द बहुत ही तेज हो जाता है; मेरुदण्डमें, चक्षु-गोलकमें, चक्षो-र्ध्वनी स्नायुओंमें, ललाटमें तथा सरके भीतरसे, पाकाशयमें तथा तलपेटके निम्न-भागमें। कुछ मलाई खानेवाने आनन्दसे रहते हैं; पर वे ही दूध पी लेते हैं, तो बीमार हो जाते हैं। ऐसे रोगियोंकी दवा लैक-डी-फ्लोरेटम होती है और सावधानतासे जँचाई करनेपर उनके लक्षण मलाई उतारे दूधकी तरह मिलते हैं।

स्मरण-शक्तिकी कमी, ध्यान न जमना, मानसिक परिश्रमसे अनिच्छा, उदासी, मृत्युकी कामना और अपने नाशका सरल-से-सरल उपाय ढूँढ़ता है; रोने और कलेजा धड़कनेके साथ उदासी, लोगोंको देखने और वात करनेसे अनिच्छा, कमजोरी और उद्भ्रान्त मन। उसे निश्चय रहता है, कि वह मरना ही चाहता है। वह सोचती है, कि उसके सब दोस्त मर जायँगे और उसे वैरागियोंके मठमें जाना चाहिये, वन्द छोटे कमरेमें रहनेपर उसे भय होता है, कि कहीं दरवाजा न वन्द हो जाये, नहीं तो श्वासरोध होकर मरेगी। अपनी सुईमें डोरा पिरोनेके लिये, जब वह हाथ ऊँचे उठाती है, तो उसे मूर्च्छा और चकाचौंध पैदा हो जाता है; बिछावनमें करवट बदलनेपर सरमें चक्कर; तकियेसे सर हटानेपर; लेटे-लेटे आँखें खोलनेपर; लेटनेकी क्रिया करनेपर। सवेरे राह चलते समय मूर्च्छा और मिचली। हाथ ऊँचे उठानेपर सरमें चक्कर; खड़े होने या चलनेके समय दाहिनी ओर गिर जानेकी प्रवणता।

रोगियल, पीली, यत्न हीन स्त्रियाँ, जब सर-दर्द आँखोंके ऊपर तथा सम्मुख भागमें तथा दर्द बहुत ही जोरका होता है; दबाने और कसकर बाँध देनेपर बेहतर रहता है, अन्धेरे कमरेमें लेटे रहनेपर भी अच्छा रहता है, ठण्डे प्रयोगसे अच्छा रहता है, भरपूर विश्राम करनेपर बेहतर रहता है; थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर बदतर। रोशनीसे, आवाजसे और बात-चीतसे बदतर; जब दूध पीनेपर सर-दर्द होता है तथा साथ ही बहुत ज्यादा पीला पेशाब होता है; मिचली और खाद्यका वमन होता है या श्लेष्मा और पित्तका वमन होता है। पश्चात् मस्तकमें मस्तक-शिखरमें और मस्तक-पार्श्वमें प्रचण्ड दर्द; सब तरहके सर-दर्दके साथ मस्तकमें स्पष्ट स्पन्दन, सर-दर्दके समय चेहरा पीला और ठण्डा रहता है। तमतमाया चेहरा और माथेमें

तापके साथ स्पष्ट रक्तसञ्चय, स्पष्ट सामयिकताके साथ अकसर सर-दर्द होता है; यद्यपि कभी-कभी यह नियमित रूपसे नहीं होता। साप्ताहिक सर-दर्द बहुत साधारणतया होता है। झटका लगने और खाँसनेपर समूचे मस्तकमें बहुत यन्त्रणा; ऐसी अनुभूति मानो मस्तक-शिखर उठाया जा रहा है; पहले ललाटमें दर्द, जो पश्चात् मस्तकतक फैल जाता है जो रोगिनीको प्रायः पागल बना देता है। ललाटमें और सरके भीतरसे तेज दर्द, मस्तक-शिखरमें बहुत बदतर—इसके बाद माथा कुचल गया-सा मालूम होता है। समस्त सम्मुख कपालके सर-दर्दके साथ कनपटियोंमें जबर्दस्त धमक होती है। इसने बहुतसे प्रचण्ड, सामयिक, सवमन सर-दर्द आरोग्य किये हैं, जो बचपनसे ही थे तथा वंशगत रूपसे आये हुए कहे जाते थे। इन प्रचण्ड सर-दर्दोंके समय, कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है, कि माथा फैलता जा रहा है; इसने ऋतु-स्रावके समय और पहले होनेवाला सर-दर्द आरोग्य किया है। गर्भावस्थामें सवेरेका सर-दर्द।

सर-दर्दके पहले धुँधली दृष्टि; पदार्थ नहीं, केवल रोशनी देख सकता है; ऐसा अनुभव होता है, मानो आँखें पत्थरोंसे भरी हैं; **असीम आलोकातङ्क**, आँखोंमें धीमा-धीमा दर्द, बायेंमें बदतर, यहाँतक कि आँखें बन्द रहनेपर भी, ठण्डे पदार्थोंके प्रयोगसे, आँखें बन्द करनेपर, अन्धेरे कमरेमें अच्छा रहता है। पढ़नेके समय आँखोंमें खींचनका दर्द—एक बार लगातार कई मिनट ही पढ़ सकता है, पहले-पहल रोशनीमें जानेपर आँखोंमें बहुत दर्द; आँखोंके ऊपर और भीतर दर्द, ताप और हिलने-डोलनेपर बदतर। पलकें, भारी निद्रालु और सूखी मालूम होती हैं। अश्रु स्रावके साथ बायीं आँखपर बहुत तेज दर्द।

नाककी जड़में दर्द-भरा दबाव या कसावट।

मृत्युकी तरह चेहरेका पीलापन; क्षय-प्राप्त, दुबला और बहुत ही मलिन हुआ चेहरा, आँखोंके नीचे,काले दाग। अकौताके साथ मलिन मुखमण्डल। चेहरेके बायें भागमें तापकी झलक; ऐसा मालूम होता है, मानो चेहरेकी हड्डीसे मांस अलग हो गया है, किनारे अलग हो गये हैं और बाहरकी ओर लटके हुए हैं।

नींदमें दाँत कड़कड़ाना, साथ ही पाकाशयमें दर्द और सरमें दर्द, साथ ही वमन।

स्वाद बिगड़ा, खट्टा, मुँह सूखा, श्वास बदबूदार, मुँह लसदार और फेन-भरा, खासकर बातचीतके समय।

हिस्टीरियाका गोला चढ़ना, गल-क्षत, निगलनेके समय बदतर। कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्ली अत्यन्त पीली रहती है।

बिलकुल ही भूख न लगना; बहुत ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी तेज प्यास; खाली या **खट्टी डकारें**; गैसके कारण तनाव, शामको ठण्डा पानी पीनेके बाद मिचली—लेट जानेपर बदतर हो जाते हैं; अर्द्ध लेटी अवस्थामें रहनेपर मिचली या हिलने-डोलनेपर या सवेरे सोकर उठनेपर मिचली; प्राणघातक मिचली, पर वमन नहीं कर सकता, साथ ही बहुत तकलीफ प्रकट करनेवाला कराहना और चिल्लाना; बहुत बेचैनी और ठण्डककी अनुभूति, यद्यपि चर्म

गर्म और नाड़ी स्वाभाविक रहती है। वमन, पहले अनपचे खाद्यका बहुत ही अम्ल वमन होता है, फिर तीता पानी और अन्तमें भूरे थक्के जो पानीमें अलग हो जाते हैं और काफीकी तलछटके समान दिखाई पड़ते हैं। लगातार वमन जिसका रोगीनीके भोजनसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता; पित्तका वमन, सर दर्दके साथ; पाकाशयमें प्रचण्ड दर्द। दूधसे घृणा करनेवाली स्त्रियोंमें गर्भावस्थाके वमनको यह बहुत लाभदायक दवा है। पाकाशयमें मरोड़।

संग्रहनी और वमनके साथ पुराना पाकाशय अन्त्राशय-प्रदाह, तलपेटमें स्पर्श-असहिष्णुता, पेटमें वायु होना और तनाव। तलपेटमें भार और पत्थर रहनेकी तरह मालूम होना। नाभि-प्रदेशमें तेज दर्द, सर-दर्दके साथ।

पुराना कब्ज, जिसमें मलान्त्र पक्षाघात-ग्रस्त मालूम होता है तथा इञ्जेक्शन और जुलाबोंसे कोई लाभ नहीं होता, मल बड़ा, कड़ा और कष्टकर होता है; बहुत देरतक जोर लगानेपर कहीं मल निकलता है। **सिलिका**से फायदा न होनेपर इसने आरोग्य किया है। बहुत ही सर्दीले रोगियोंका कब्ज; समय बाँधकर होनेवाले सर-दर्द और वमनके साथ कब्ज; बहुत बार पर वृथा ही पाखाना लगना; दूध पीनेके कारण अतिसार।

बार-बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब, बहुत ज्यादा पीला, सर-दर्दके साथ पानीकी तरह पेशाब, बहुत काला और गाढ़ा; **अण्डलाल मिला पेशाब**। ठण्डी हवामें घूमनेके समय या घुड़सवारी करनेके समय और रेलगाड़ीमें सवार होनेकी जल्दीमें आप-से-आप होनेवाली पेशाबकी बीमारी इसने आरोग्य कर दी है, पेशाब करनेके बाद पेशाब चूते रहना इसने आरोग्य किया है, जब मूत्राशय भरा था, तब उसकी अनुभूतिका अभाव इसने आरोग्य किया है।

इसने पीला, भूरा श्वेत-प्रदर आरोग्य किया है। ऋतु-स्रावके बाद और पहले बदतर; इसने बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव आरोग्य किया है। डिम्बाशय-प्रदेशमें नीचेकी ओर खिंचाव; ऋतु-स्राव बहुत देरसे और बहुत थोड़ा होता है; ऋतु-स्राव बहुत देरसे, पीला और पानीकी तरह होता है। ऋतु-स्रावके समय पीठ और डिम्बाशय प्रदेशमें दर्द; ठण्डे पानीमें हाथ रखनेके कारण एकाएक ऋतु-स्रावका रुक जाना; समूचे शरीरमें, खासकर सरमें दर्द; जब दूध घट जाता है या नहीं होता, तब यह बहुत लाभदायक होता है। स्तन सिकुड़े रहते हैं।

पाकाशय तन जानेके साथ ही दमा, हृत्पिण्ड रोग-जनित श्वासकष्ट।

छोटी, सूखी खाँसी, ठण्डे कमरे या ठण्डी हवामें बदतर।

दबावके साथ वक्षमें यन्त्रणा; सर्दीमें तर ऋतुमें वक्षमें वातज दर्द; दोनों फेफड़ोंके शिखरमें टियुबर्क्युलर तलछट।

श्वासकष्ट और इस भावके साथ कि वह अवश्य मर जायगा, हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दबाव; हृत्-शिखरमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द। **चेहरे और गर्दनके बायें पार्श्व**में तापकी झलक और हृत्पिण्डका स्पन्दन, थोड़े भी परिश्रम या उत्तेजनासे कलेजा धड़कने लगना।

पीठ तथा एक कन्धेसे दूसरेतक ऊपरसे नीचेकी ओर ताप; ठण्डे पानीसे पोंछनेपर पीठमें असीम असहिष्णुता। पार्श्व और गर्दनमें वर्त्तुलाकार विसर्पिका (Herpes);

खुजलानेके बाद खुजली और जलन ; चतुर्थ ग्रैवेयी कशेरुका (Fourth cervical vertebra) के पास कठोर दबावकी तरह दर्द ; दोनों स्कन्धास्थियोंके बीचमें पीठकी राहसे सर्दी मानो चलती है ; त्रिकास्थि और पीठके निम्न भागमें तीव्र जलन ; पीठके किसी भागमें लगातार दर्द ।

अंगुलियोंके सिरे बर्फकी तरह ठण्डे —बाकी हाथ गर्म ; जंघाओंके भीतरी और बाहरी प्रदेशमें सुन्नपन और अनुभूतिका अभाव ; उरु-स्नायु और एँड़ीमें नीचेकी ओर दबावकी तरह दर्द ; सवेरे सोकर उठनेपर, मिचली और मूर्च्छाके साथ, फूले हुए गुल्फोंमें कमजोरी और दर्द । पैरके पंजेके किनारोंका चमड़ा मोटा हो जाता है ; बरफकी तरह ठण्डे पैर । कलाई और गुल्फोंमें धीमा-धीम दर्द ; सर दर्दके समय हाथ पैर ठण्डे ।

बहुत बेचैनी ; रातमें नींद न होनेके कारण बहुत ज्यादा तथा दीर्घस्थायी रोग, दिन-भर नींद न आना ; असीम अनिद्रा ।

सवेरे नौ बजेतक, सवेरेतक ज्वर, बहुत ज्यादा पसीनेसे भरा सोकर उठता है, जिसका कपड़ेपर पीला दाग पड़ता है । विलेपी ज्वर (Hectic fever), ऐसा अनुभव होना मानो बिछावनकी चादर तर है ।

चर्म ठण्डे, हाथ या स्पञ्जका इतना स्पर्श असहिष्णु रहता है, कि रोगी केवल गर्म जलसे स्नान कर सकता है । चर्म ठण्डा और पीला रहता है तथा शिराएँ नीली तथा बहुत उभरी रहती हैं । भैंसिया दादकी तरह उद्भेद, चर्मकी खुजली, खुजलानेके बाद जलन ।

लैकेसिस

(Lachesis)

लैकेसिस निरन्तर निर्देशित और एक ऐसी औषधि है, जिसका व्यवहार जाननेके लिये आपको बहुत अध्ययनकी जरूरत पड़ेगी । लैकेसिस समस्त मानव-जातिके लिये उपयोगी मालूम होता है ; क्योंकि प्रकृति और चाल-ढालमें यह सर्प जातिके समान हो रही है और यह केवल वही विष प्रकट करता है, जो मनुष्यमें है ।

पहले हम **साधारण लक्षणोंपर** दृष्टि डालेंगे, जो इस दवाका चरित्रगत लक्षण बताते हैं, वे बड़े ही महत्वपूर्ण हैं और वह परिस्थिति जिसमें ये लक्षण प्रकट होते हैं, या तो बाहर आ जाती है या उसकी अभिवृद्धि हो जाती है ।

लैकेसिस जिसकी धातु-प्रकृति है, उसे अपने रोग-लक्षण **वसन्त ऋतुमें** बढ़ते हुए दिखाई देते हैं, जब कि वह सर्द मौसमसे जरा धीमे मौसममें जाता है और खासकर जब ऋतु कोमल तथा बरसाती रहती है अथवा बदली घिरा, मौसम होता है या यदि वह ठण्डसे गर्म हवामें चला जाता है, तो लैकेसिसके लक्षण पैदा हो जायँगे । दक्षिण गर्म हवा लैकेसिसके लक्षणोंको उत्तेजित कर देती है ।

नींद आते ही लैकेसिसके लक्षण वदतर हो जाते हैं। जागनेपर कोई भी उपसर्ग नहीं भी मालूम हो सकते हैं; पर जव नींद आती है, वे जाग उठते हैं और ज्यों-ज्यों नींद गहरी होती जाती है, त्यों-त्यों वे वढ़ते जाते हैं इस तरह एक वहुत लम्बी नींद लैकेसिसके रोगीके सभी उपसर्गों और दशाओंको वढ़ा देगी और जव वह नींदसे जागता है, तो वह उस निद्रापर दुःखसे विचार करता है। भयङ्कर स्वप्न तथा दम घुटनेके दौरेके कारण नींद गड़बड़ा जाती है और फिर देरतक सोनेके वाद, वह भयङ्कर सर-दर्द और कलेजेकी धड़कनके साथ जागता है, साथ ही विषन्न चित्तता और शोक सरसे पैरतक छाया रहता है। उसकी देह कष्टोंसे भरी रहती है और मन किसी भी पदार्थमें उज्ज्वलता प्राप्त नहीं करता। एक मेघाच्छन्न दशा, उदासी, विषन्नता, उन्मत्त भाव, वहम, ईर्षा और सन्देह-भरा रहता है। जव **गर्म पानीसे** नहाता है या प्रादाहित स्थानोंपर गर्म पानीका प्रयोग करता है, तो उसके मानसिक उपसर्ग वढ़ जाते हैं। गर्म स्नान करनेके वाद या गर्म हो जानेपर या सर्द दिनोंमें वाहर निकलकर ठण्डे हो जानेपर, यदि वह गर्म कमरेमें चला जाता है, तो उसके उपसर्ग लौट आते हैं। कभी-कभी गर्म स्नान करनेपर, कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है; ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा फट जायगा, उसके पैर ठण्डे हो जाते हैं। उसके समूचे शरीरपर झटका लगता है, सभी जगह स्पन्दन होता है या हृत्पिण्ड कमजोर हो जाता है। गर्म स्नान करनेपर मूर्च्छा आ जाना। कभी-कभी गर्म स्नान करनेसे लड़कियाँ मूर्च्छित हो जाती हैं। रोगीके ठण्डे और सर्दीले रहनेपर भी गर्म कमरा उपसर्गों को वढ़ाता और ला देता है।

रोगीका साधारण दृश्य और स्थानिकता भी कभी-कभी लैकेसिसको वता देंगे चेहरेपर घवड़ाहट, विकलता और कष्ट छाया रहता है। चेहरा दाग-दगीला या **वैंगनी** रहता है और आँखें फूली-फूली रहती हैं। आँखें सन्देह-पूर्ण दिखाई देती हैं। यदि कोई प्रादाहित स्थान रहता है, तो वह नीला रहता है। यदि प्रादाहित ग्रन्थि रहती है तथा लैकेसिस ग्रन्थियों और कौषिक तन्तुओंके प्रदाहसे भरी है, तो चेहरा **वैंगनी** या चितकवरा रहता है। यदि जख्म रहता है, तो उससे काला रक्त निकलता है, जो तुरन्त जम जाता है और देखनेमें पोवालकी तरह मालूम होता है। घावोंसे वहुत ज्यादा रक्त वहता है। **फास्फोरस** और **क्रियोजोट**की तरह **छोटे जखमोंसे** वहुत ही ज्यादा खून वहता है। जरा-सी आलपीन गड़ते ही रक्तके वड़े-वड़े वुन्द टपकने लगते हैं। जखम भीतरकी ओर क्षय करता जाता है, उसमें झूठे दाने पड़ते हैं। सड़ता है, सहजमें ही उसमें खून वहता है और रक्त काला रहता है तथा जखमके चारों ओर **वैंगनी चितकवरी** शकल वनी रहती है और ऐसा दिखाई देता है, मानो सड़ रहा है। अकसर सड़ने भी लगता है; चोट खायी जगहका सड़ने लगना। वहुत वदवूदार और पिलपिला हो जाना। वे अंश काले और पिलपिले हो जाते हैं। *शिराएँ रक्तसे भर जाती हैं। ये प्रत्यङ्गोंपर दिखाई देती हैं, जिससे शिरा-*स्फीति रोगका दृश्य हो जाता है और जो गर्भ धारण होनेपर दिखाई देती है। शिराओंका वढ़ना लैकेसिसका एक प्रधान लक्षण है।

मनका थोड़ा भी श्रम होनेपर या थोड़ा भी भावोद्रेक होनेपर, हाथ-पैर ठण्डे हो

जाते हैं, हृत्पिण्ड बहुत कमजोर हो जाता है, चर्म पसीनेसे भर जाता है और माथा गर्म रहता है। गर्मीसे उसके हाथ पैरकी सर्दी घटती नहीं मालूम होती ; वे इतने अधिक ठण्डे रहते हैं। उन्हें भले ही फ्लानेलमें लपेट दिया जाय, इतनेपर भी वे ठण्डे ही रहते हैं ; पर श्वास-रोध होने लगता है। वह श्वास नहीं ले सकता और खिड़कियाँ खोल देने कहता है। यह हृत्पिण्डकी कमजोरी है। कभी-कभी तो इतना कमजोर रहता है, कि मुश्किलसे आवाज सुनी जा सकती है या मालूम किया जा सकता है तथा नाड़ी कमजोर और सविराम रहती है। अन्य समयोंमें हृत्पिण्डकी धड़कन स्पष्ट सुन पड़ती है।

ज्यों-ज्यों हम पाठ्य ग्रन्थके लक्षणोंपर विचार करते जायँगे, हमलोग रोगोंके सम्बन्धमें कुछ विचित्रता देखेंगे अर्थात् **बाम पार्श्व** आक्रान्त करनेकी उनकी प्रवणता या रोगका *बायीं ओर उत्पन्न होना और दाहिनी ओर फैलना। वाम-पार्श्वमें क्रमशः दुर्बलता बढ़कर* पक्षाघात होता है, जो दाहिनी ओर फैल जाता है। उसका डिम्बाशयसे बहुत सम्बन्ध है और इसमें भी यह देखनेमें आता है, कि पहले बायें डिम्बाशयपर रोगका आक्रमण होता है। ऐसा ही डिम्बाशयके प्रदाहमें भी होता है, पहले बायाँ डिम्बाशय आक्रान्त होगा और इसके बाद दाहिना। कण्ठके बायें भागमें प्रदाह पहले उत्पन्न होता है और फिर क्रमशः दाहिनी तरफ चला जाता है। मस्तकका भी बायाँ पार्श्व ही साधारणतः आक्रान्त हुआ करता है। बायीं आँखमें दर्द होता है और दाहिना ओर फैल जाता है। माथेके पिछले भागका बायाँ पार्श्व पश्चात् मस्तकके सर दर्दमें, दाहिनेकी अपेक्षा ज्यादा आक्रात होगा। यह हमेशा नहीं हुआ करता है और यदि इसके विपरीत सत्य हो, तो यह लैकेसिसके विपरीत नहीं *निर्देशित करता, पर यही इसका साधारण स्वरूप है। ऊपरी बायाँ और निम्न दाहिना* आक्रान्त होता देखा गया है।

लैकेसिसके बहुतसे लक्षणोंमें, **सवेरे रोग-वृद्धि** है। यह लैकेसिसके **निद्राके बादकी** विलक्षण रोग-वृद्धि है ; रोगी रोग-वृद्धि-कालमें ही सोयेगा। जब लक्षण हलके रहते हैं, यह रोग-वृद्धि भी हलकी होती है तथा जबतक रोगी देरतक सोकर नही जागता, तबतक मालूम नहीं होता ; पर यदि प्रचण्ड वेगकी रोग वृद्धि होती है, तो रोगीके सोनेको जाते ही उसे मालूम होने लगता है और यह उसको जगा देता है, उदाहरणार्थ हृत्पिण्डके लक्षण हैं। ज्योंही उसे नींद लगती है, वह कलेजेकी धड़कनके साथ, श्वासकष्ट, श्वासरोधके साथ, क्लान्तिसे और सरमें चक्करके साथ, माथेके पिछले भागमें दर्दके साथ तथा बहुतसे अन्य रक्तके दौरानकी *गड़बड़ीके साथ* जाग उठता है।

दूसरी अध्ययन योग्य महत्व-पूर्ण चीज **मानसिक दशा** है। आत्म-चेतनता, आत्म-प्रवञ्चना, ईर्षा, घृणा, बदला लेनेकी प्रवृत्ति तथा मनुष्यकी निर्दयतासे बढ़कर और कोई भी चीज अधिक स्पष्ट नहीं है। इसमें सन्देह नहीं, कि ये बातें आत्म-चेतनता या अपने ऊपरका एक अनुचित प्रेमका निदर्शन है। चित्त इतना विभ्रमित कि उन्मत्त हो जाता है। सब तरह की जल्दबाज उन्मत्तता। मन क्लान्त रहता है। शराबीके चेहरेकी (Maudling) तरह रोगीका चेहरा हो जाता है, मोटे ओंठ और मोटी जीभसे बातें करता है, भूल बोलता

है, रुक-रुककर बोलता है, शब्दोंका थोड़ा ही अंश बोलता है ; चेहरा बैंगनी और माथा गर्म रहता है। दम घुटता है तथा गलेमें कालर असह्य मालूम होता है ; गर्दनमें और भी असह्य मालूम होना तथा और भी ज्यादा दम घुटना, और भी अधिक चित्त-विभ्रम, और भी अधिक नशीलापन। किसी ह्विस्कीके नशेमें रहनेवालेसे बात करते समय आप देखेंगे, कि उसमें लेकेसिसका लक्षण है, वह बराबर रुक-रुककर बोलता है, मुश्किलसे समझमें आता है, कि वह क्या कह रहा है, अपने शब्द और वाक्य अधूरे ही छोड़ देता है, 'जी' का बोलना और सभी वर्त्तमान—कृदन्त छोड़ता जाता है। वह रुक-रुककर बोलता है, भूल करता है, बुदबुदाता है और कभी एक बात कहता है, फिर दूसरी। ये लक्षण ऊपर बतायी परिस्थितिमें बसन्तमें बढ़ जाते हैं ; सर्दीका जोर रहनेके बाद गर्म मौसम रहनेपर ; वर्षा ऋतुमें ; गर्म स्नानके बाद ; निद्राके बाद। मानसिक दशा बहुत बड़ी है। विना कारणके ही ईर्षा। विना कारणके ही ईर्षा और सन्देह। बहुत बार इस दवाने लड़कियोंका **सन्देहीपन** आरोग्य कर दिया है, जब कि उसे केवल अपने स्री-बन्धुओंपर सन्देह था। वह कभी फुस-फुसाहटकी बातें होती नहीं सुनती, पर वे उसके विषयमें बातें करती हैं उसकी हानिके लिये। सन्देह करती है, कि वे उसे हानि पहुँचानेकी चेष्टा कर रही हैं और वह किसी भी तरकीबको इस सम्बन्धमें स्वीकार कर लेगी, कि वे उससे छिपाकर उसकी हानिके लिये कोई बातें नहीं कर रही हैं। कोई स्री सोचती है, कि उसके दोस्त, पति और बच्चे उसे नुकसान पहुँचानेकी चेष्टा कर रहे हैं ; रोगिनीके दोस्त उसे पागलखानेमें रखना चाहते हैं। भविष्यके सम्बन्धकी आशङ्का। सोचती है, कि उसे हृद्-रोग होना चाहता है और पागल होती जा रही है और लोग उसे पागलखानेमें बन्द कर देनेकी चेष्टा कर रहे हैं। सोचती है, कि उसके रिश्तेदार उसे जहर दे देना चाहते हैं और वह खाना नहीं चाहती। कभी-कभी वह सोचती है, कि यह केवल एक स्वप्न है और वह मुश्किलसे बता सकती है, कि उसने यह सब स्वप्नमें देखा है या इसे सोचती है। वह सोचती है, कि वह मर गयी है या स्वप्नमें देखती है, कि वह मर गयी है और स्वप्नमें ही वह यह देखती है, कि उसे घरसे बाहर ले जानेकी तैयारियाँ हो रही हैं या वह मरना ही चाहती है।

सोचती है, कि वह कोई दूसरी ही है तथा किसी जबर्दस्त शक्तिके हाथोंमें है। वह सोचती है, कि वह **देवताओंके वशमें** हो रही है। आत्माके कहे अनुसार उसे बाध्य होकर काम करना पड़ता है। वह आदेश सुनती है, कुछ स्वप्न जिसे उसे पालन करना ही पड़ता है। कभी कभी यह आवाजोंका रूप धारण करता है, जिसमें उसे चोरी करने, हत्या करने या ऐसे कामोंका इकरार करनेको कहा जाता है, जो उसने कभी नहीं किये हैं और उसके मनमें तबतक शान्ति नहीं आती, जबतक वह कोई ऐसा भार स्वीकार नहीं कर लेती, जो उसने कभी नहीं किया है। ऐसा कष्ट कुछ प्रचण्ड रहता है, जबतक कि वह यह नहीं कह लेती, कि उसने किया है। सोचती है, कि कोई उसका पीछा कर रहा है। कल्पना करती है, कि उसने कुछ चुरा लिया है या कोई सोचता है, कि उसने कुछ चुरा लिया है और कानूनसे डरती है। वह आवाजें और सावधान वाक्य सुनती है और रातमें इनका ही स्वप्न देखती है। कष्टकी दशा कुछ भयानक होती है और फिर वह बुदबुदाती हुई प्रलापमें

जा पड़ती है। यह प्रलाप इस ढङ्गका होता है, मानो शराब पीकर कोई बुदबुदा रहा हो। यह दशा तवतक बढ़ती जाती है, जबतक बेहोशी नहीं आ जाती और रोगी तन्द्राकी दशामें जा पड़ता है, जिससे वह जगाया नहीं जा सकता। रोगी हिंसा, प्रचण्ड प्रलापमें भी जा पड़ता है।

यह **धार्मिक उन्मादसे** भरी है। आपको कोई ऐसी प्रिय, मधुर वृद्ध स्त्री मिल सकती है, जिसने हमेशा धार्मिक और ठीक जीवन विताया है, इतनेपर भी वह ईश्वरके शब्द (Word of God) में लिखे वाक्योंको पालन नहीं कर सकी है; ये चीजें किसी दूसरेपर लागू होती मालूम होती हैं, उसपर नहीं। वह बुराईसे भरी है और उसने अक्षम्य अपराध किया है। उसे बाध्य होकर ये बातें कहनी पड़ती हैं; वह इन बातोंमें उलझी रहती है और वह मरना ही चाहती है और उस भयङ्कर नरकमें जाना चाहती है, जिसके विषयमें उसने पुस्तकोंमें पढ़ा है। चिकित्सकको यह सब ध्यानसे सुनना चाहिये। इस अवसरपर, इन बातोंको साधारण समझ लेनेकी भूल चिकित्सक कर सकता है। यदि वह करता है, तो रोगी नहीं लौटेगा और वह उसे फायदा नहीं पहुँचा सकेगा। उसके खाम खयाल चाहे जो भी हों, उसके धार्मिक भाव चाहे जो हों, उसकी मानसिक दशाकी आदरके साथ चिकित्सा करनी चाहिये। इसकी उसी तरह चिकित्सा करनी चाहिये मानो यह ठीक ऐसा है।

उसके साथ सहानुभूति और दयालुताका व्यवहार करना चाहिये। किसी डाक्टरके लिये धार्मिक पुरुषोंमें अदेवी मनुष्य होनेका सम्मान प्राप्त करना एक दुर्भाग्यकी बात है, क्योंकि वह ऐसे मनुष्योंको भरपूर लाभ न पहुँचा सकेगा। उसे मनुष्योंके सभी खाम-खयालोंपर सहृदय रहना चाहिये, क्योंकि वह संसारके मनुष्योंको देख रहा है। उसे हर मनुष्योंका बन्धु बना रहना चाहिये और वह विना किसी कपटताके ही केवल शुद्ध और सात्विक मनुष्य बना सकता है।

धार्मिक विषन्नताको, धर्मोन्मादकी दशाके साथ, बहुत **बकवादके** साथ, बहुत बोलनेके साथ, सम्मिलित रहना कोई असाधारण बात नहीं है, जिससे लैकेसिस भरा है। यह साधारणतः स्त्रियोंको होता है, पुरुषोंको बहुत कम होता है, जो धर्मोन्माद दिखाया गया है। अब यह स्त्री यह कहनेके लिये उत्तेजित की गयी है; वह अपने हार्दिक बन्धुओंको भी, दिन रात, अपनी आत्माकी अधोगति और उसकी बुराइयाँ और जो कुछ भयङ्कर दुष्कर्म उसने किये हैं, कह-कहकर तङ्ग कर डालेगी। यदि आप उससे पूछेंगे, कि उसने क्या-क्या किया है, तो वह प्रत्येक बात कह डालेगी, पर आप उससे यह नहीं कहला सकते कि उसने किसीका खून किया है। यदि आप उसे अपनी कहानी कहने देंगे तो वर्षभरमें उसने जो पाप किये हैं, सब कह डालेगी, यद्यपि वह एक सच्चरित्र तथा सत्प्रकृतिकी स्त्री मानी जाती है। लैकेसिसमें एक दूसरे तरहका बकवादीपन भी है। रोगीको लगातार बातें करनेके लिये उत्तेजित किया जाता है। यह एक दूसरी दशामें भी प्राप्त होता है, जिसमें कि जो काम भी रोगिनी करती है, उसीमें जल्दबाजी करती है और दूसरोंसे भी जल्दी-जल्दी काम कराना चाहती है। जल्दबाजीकी इस दशाके साथ बकवादीपन भी रहता है और इसको जबतक

आप स्वयं न सुन लें, तबतक आप अनुमान भी नहीं लगा सकते। इसके वर्णनका चेष्टाका कोई कायदा नहीं है, यह इतना तेज रहता है, कि एक विषयसे दूसरेपर परिवर्त्तित होता रहता है। वाक्य कभी-कभी अधूरे ही निकलते हैं, वह मान लेती है, कि बाकी आपने समझ लिया है और फिर आगे बढ़ जाती है। दिन रात वह चौकन्नी रहती है तथा अपने आस-पासके सामानोंसे इतनी असहिष्णु रहती है, कि आप वास्तवमें सोचने लगेंगे, कि किन पदार्थोंसे वह सुनती है और किस तरह शोरगुलसे विचलित होती है, वह मक्खियोंको दीवार-पर चलने और दूरके गिर्जेके शिखरकी घड़ीकी टिकटिकाहट सुन सकती है। आप पाठ्य-ग्रन्थोंमें इन बातोंको नहीं पा सकते, इन्हें तो आपको प्रत्यक्षमें ही देखना होगा। पर जो बातें मैं आपको बताता हूँ वे रोगी शय्या-पार्श्वकी हैं और वे बातें हैं जो रोगियोंके शय्या-पार्श्वमें दवा देकर देखी गयी हैं। "एकदम असाधारण बकवादीपन, चुने हुए वाक्य खण्डोंमें व्याख्यान देती है, पर झटसे विभिन्न विषयोंपर कूद जाती है।" "एक शब्द अकसर दूसरी कहानीके बीचमें ले जाती है।" ये दशायें टाइफायडकी तरह नयी बीमारियोंमें उत्पन्न हो सकती हैं, जब कि मामूली टाइफायडका प्रलाप होने लगेगा या डिफ्थीरिया जैसी दशामें ये हो सकते हैं या किसी दूसरी ऐसी बीमारीमें, जिसमें रक्त विषैला हो गया हो; ये सूतिका-वस्थामें भी हो सकते हैं या उन्मादका रूप धारण कर सकते हैं। यह एक दीर्घ-क्रिय औषधि है और यदि इसका अपव्यवहार हुआ, तो जीवनभर परिणाम बना रहेगा।

बहुतसे रोगियोंमें मानसिक लक्षण तथा हृत्पिण्डके लक्षणोंमें बहुत सादृश्य दिखाई देगा, खासकर युवतियोंमें और उन लड़कियोंमें, जिन्हें निराशासे सामना करना पड़ा है, जो प्रेममें गड़बड़ी हो जानेके कारण या निराशाके कारण या आशा छिन्न-विच्छिन्न हो जानेके कारण या रञ्जसे रात-रातभर जागती पड़ी रहती हैं। बहुत दिनोंका विषाद, मानसिक अवसाद, गुल्मवायुके उपसर्ग, रोना, मानसिक सुस्ती और निराशा, इसके साथ ही हृत्पिण्डमें दर्द, हृत्पिण्डमें खालीपन या कमजोरीकी अनुभूति, श्वासकष्ट। वह आत्महत्याका चिन्तन करती है और अन्तमें एक उदासीनताकी दशामें जा पड़ती है, जिसमें प्रत्येक पदार्थसे, काम-काजसे, यहाँतक कि सोचनेसे भी अनिच्छा हो जाती है।

यदि मैं एक रोगीका स्वतःवर्णित माथेके लक्षण, जो इतना सटीक है, कि शायद ही पुस्तकोंमें प्राप्त हो, वर्णन कर दूँ, तो आपके मनपर अङ्कित कर सकूँ। वह बिछावनपर बैठी हुई थी और लेट नहीं सकती थी, वह लेटनेसे बदतर हो जाती थी, उसका चेहरा बैंगनी था, उसकी आँखें फूली-फूली थीं, चेहरा फूला-फूला और सूजा था तथा पलकें भी फूली थीं। वह बिछावनपर चुपचाप बैठी हुई थी और दर्दकी तरङ्गकी तरह अनुभूति बताती थी, जो गर्दनके पीछेतक फैल गयी और फिर माथेके ऊपर चला गया। यह लैकेसिसका एक प्रतिरूप है। तरङ्गोंके दर्द। ये **दर्दकी तरगें** सदा नाड़ीकी सम-गतिमें नहीं रहतीं। उनका रक्तके प्रवाहसे बिलकुल ही सम्बन्ध नहीं रह सकता है। हिलने-डोलनेपर तरङ्गोंकी तरह गति बढ़ जाती है, हिलने डोलनेकी क्रियामें उतना नहीं, बल्कि हटनेपर। कभी-कभी यह चलनेके बाद या दूसरी जगह परिवर्त्तनके बाद और फिर बैठ जानेपर मालूम होता है

अर्थात् हिलना-डोलना समाप्त होनेके कई सेकेण्ड बाद दर्द आरम्भ होता है और यह तुरन्त एकदम अपनी सीमापर पहुँच जाता है और फिर धिरे-धिरे एक सुदृढ़ तरङ्ग या बहुत ही धीमें दर्दके रूपमें दब जाता है। माथेमें लगातार बना रहनेवाला धीमा दर्द रहता है, जो बढ़ जा सकता है या तरङ्गमें जागरित हो सकता है, इतना प्रचण्ड होता है, कि ऐसा मालूम होता है, कि यह रोगीकी जान ले लेगा।

सवेरे सोकर उठनेपर सर-दर्द उत्पन्न हो जाता है। लैकेसिसका धीमा सर-दर्द सोकर उठनेपर सवेरे उत्पन्न होता है और कुछ देरतक इधर-उधर चलते-फिरते रहनेपर धीरे-धीरे घट जाता है। सर-दर्द और साधारणतः सभी उपसर्गोंके साथ लक्षणभरके लिये विचार-धारा रुक जाती है; सब तरहके सरके चक्कर। मिचली और वमनके साथ सरमें चक्कर। सरमें चक्करके कारण रोगीको बायीं ओर पलट जाना पड़ता है।

लैकेसिसमें माथेमें **फटनेकी तरह** दर्द होता है; एक उस भावके साथ रक्त सञ्चयी सर दर्द, मानो शरीरका समस्त रक्त माथेमें चढ़ गया है, क्योंकि हाथ-पैर बहुत ठण्डे रहते हैं और माथेमें धमक तथा हथौड़ीकी चोटकी तरह मालूम होता है। यह धमकका सर-दर्द सरसे पैरतक **सार्वाङ्गिक स्पन्दन**का ही एक अंश है। सभी धमनियों तथा प्रादाहित अंशोंमें स्पन्दन होता है प्रादाहित डिम्बाशयमें स्पन्दन होता है और कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो मनीके प्रत्येक स्पन्दनके साथ एक छोटी हथौड़ीसे प्रादाहित स्थानपर ठोंका जा रहा है। लैकेसिसने अनेकों बार भगन्दर (Fistula in ano) आरोग्य किया है, जब उसमें यह अनुभूति थी, कि भगन्दरकी नलीपर कोई छोटी हथौड़ीसे मार रहा है। इसने बहुत दिनोंके फटे घाव, उस अवस्थामें आरोग्य किये हैं, जब ऐसा मालूम होता था, कि प्रादाहित स्थानपर छोटी हथौड़ीसे मारा जा रहा है। यह हथौड़ीसे मारनेकी तरह अनुभूति रहनेपर इसने बवासीर भी आरोग्य किया है। इस तरह हम यह देखते हैं, कि माथेमें स्पन्दन कोई खास लक्षण नहीं है; बल्कि एक सार्वाङ्गिक लक्षण है, जो मस्तकके सम्बन्धसे उत्पन्न हो जाता है।

वारम्बार उत्पन्न होनेके कुछ लक्षण बहुत ही कीमती हैं और जब ऐसी अवस्था रहती है, तो सहयोगी लक्षणोंका सम्बन्ध महत्व-पूर्ण हो जाता है। लैकेसिसमें मस्तकके लक्षणके साथ हृत्पिण्डके लक्षण बहुत बार सम्मिलित रहते हैं। हृत्पिण्डकी तकलीफ हुए विना शायद ही कभी लैकेसिसके सर-दर्द उत्पन्न होते देखेंगे। कमजोर-नाड़ी या समूचे शरीरपर स्पन्दन अनुभव होना, यह कुछ-न-कुछ लैकेसिसके प्रचण्ड सर-दर्दसे सम्मिलित रहता है।

पाठ्य-ग्रन्थमें हम लैकेसिसके सर-दर्दके बड़े लक्षणोंमें **भार** और **दबाव** प्राप्त करते हैं। शरीरकी किसी भी बीमारीके साथ, टाइफायडके साथ, मासिक ऋतु स्राव कालमें, रक्त-सञ्चयी जाड़ेके कालमें ऐसा मालूम होता है, कि शरीर ठण्डा हो जाता है, हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं, घुटने ठण्डे रहते हैं, पैर ठण्डे रहते हैं और उन्हें गर्म रखना असम्भव हो जाता है; पर चेहरा बैंगनी या दाग दगीला रहता है, आखें बाहर निकली और फूली रहती

हैं और यह माथेका भयङ्कर दर्द, साथ ही बेहोश हो जानेकी प्रवणता, असम्बद्ध बोली, बोलनेमें कष्ट और अन्तमें वास्तविक बेहोशी रहती है।

माथे और मनके लक्षण तथा साधारण समस्त ज्ञानेन्द्रियोंके लक्षणोंके सम्बन्धमें, लैकेसिसमें जो अत्यधिक असहिष्णुता प्राप्त होती है, उसका भी अवश्य वर्णन होना चाहिये। उसके लक्षण बहुत ही तीव्र हो जाते हैं। दृष्टि शक्ति बहुत तीव्र हो जाती है। श्रवण-शक्ति भी तीव्र हो जाती है और स्पर्शेन्द्रिय विशेषकर तीव्र रहती है। वस्त्रका स्पर्श भी बहुत दर्द-भरा रहता है; पर जोरसे दबाना रुचिकर हो सकता है। मस्तक-त्वचा हाथके स्पर्शसे इतनी असहिष्णु हो जाती है, कि उसमें दर्द होने लगता है; परन्तु पट्टी बाँधनेका दबाव अच्छा मालूम होता है। सोर-गुलका अत्यधिक असहिष्णुता, कमरेमें चलना-फिरना, बातचीत तथा सहनपर दूसरोंका चलना बहुत ही असहनीय रहता है। इन परिस्थितियोंमें दर्द बढ़ जाता है। रोगीकी शरीरकी सभी इन्द्रियाँ बहुत ही असहिष्णु हो जाती हैं। **अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुता** शायद चर्ममें बहुत ज्यादा रहती है; क्योंकि जोरसे दबाना अकसर आराम पहुँचाता है। अन्त्राशय प्रदाहके रोगी, डिम्बाशय या जरायु-प्रदाहकी रोगिनी या औदरिक-संस्थानकी रोगिनीका चर्म इतना वस्त्र असहिष्णु रहता है, कि कभी-कभी बिछावनकी चादरके स्पर्शसे होनेवाली तकलीफ घटानेके लिये दूसरी चीजका प्रयोग करना पड़ता है। कभी-कभी बिछावनमें चक्कर (Hoop) पाया जाता है या रोगिनी अपने घुटने ऊपर खींचे रहती है या अपने हाथसे वस्त्र इस तरह पकड़े रहती है, कि शरीरसे न छू जाये। हाथका साधारण भार यन्त्रणा पैदा कर दे सकता है, जो तलपेटमें हो सकती है, जो कि एक बिलकुल ही दूसरे प्रकारकी यन्त्रणा है; पर वस्त्रका तलपेटसे स्पर्श चर्ममें अत्यधिक असहिष्णुता उत्पन्न कर देता है। अंगुली या हाथसे केवल चर्मका छूना एकदम असह्य रहता है।

आँखोंकी भी बहुत-सी प्रादाहिक और रक्त-सञ्चयी अवस्थाएँ रहती हैं। नींदके बाद आँखोंके उपसर्ग बदतर हो जाते हैं तथा आँखें स्पर्श और रोशनीको सहन नहीं कर सकतीं! आँखोंके लक्षणके साथ सर-दर्द होता है, क्योंकि मस्तिष्क और आँखोंका बहुत ही निकटस्थ सम्बन्ध है। गल क्षतमें, उपजिह्वा या जीभको दबानेवाला कण्ठकी प्राचीर छूता है, तालुमूल या जीभकी जड़ छूता है, तो ऐसा मालूम होता है, कि आँखें दबकर बाहर निकल पड़ेंगी। कण्ठके स्पर्शसे आँखोंमें प्रचण्ड दर्द। लैकेसिस कामला रोगकी बहुत बड़ी दवा है; क्योंकि यह यकृतको बहुत-सी गड़बड़ियाँ उत्पन्न करता है। चर्मका पीलापन तथा सफेदी लिये आँखें तथा आँखोंके चारों ओरके तन्तुओंका मोटापन। "अश्रुस्रावी नलीका फटाभाव" जिसके साथ ही बहुत दिनोंका चेहरेपरका उद्भेद रहता है।

बाह्य कर्ण-कुहरकी अत्यधिक असहिष्णुता। **कानके** छेदमें कोई भी चीज डालते ही जोरोंकी आक्षेपिक खाँसी और कण्ठमें सुरसुरी होने लगती है, कानकी श्लैष्मिक-झिल्ली इतनी असहिष्णु रहती हैं, कि हूपिङ्ग खाँसीकी तरह तेज खाँसी कानकी श्लैष्मिक झिल्ली छूनेपर आने लगेगी। इससे परावर्त्तित क्रियाकी अत्यधिक असहिष्णुता तथा सार्वाङ्गिक

असहिष्णुता प्रकट होती है। सुननेके सम्बन्धमें भी वही अत्यधिक असहिष्णुता है, जो अन्य जगह बतायी गई है। श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाहकी मोटाईके कारण कण्ठकर्णी-नली (Eustachian tube) बन्द हो जाती है, कण्ठकर्णी-नलीका सङ्कोचन।

नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहके भी लक्षण स्पष्ट रहते हैं। नाक तथा शरीरसे बार-बार रक्त-स्राव, नाकसे पानीकी तरह स्राव। नाकमें हमेशा सर्दी लग जाती है। घ्राणकी गड़बड़ीके साथ नाकका बन्द हो जाना। घ्राणकी अत्यधिक असहिष्णुता, गन्धोंकी अत्यधिक असहिष्णुता और अन्तमें गन्धका गायब होना। बहुत ही प्राचीन प्रकृतिकी, नाकमें खरोंट जमनेके साथ लैकेसिसमें प्रादाहिक दशाएँ रहती हैं, छींकें आती हैं, नाकसे पानीकी तरह स्राव होता है तथा सर्दी-जनित सर-दर्द होता है। जब सर्दीका स्राव जारी होता है, तो कभी-कभी सर-दर्द गायब हो जाता है और जब सर्दीका स्राव बन्द होता है, तो सर-दर्द पैदा हो जाता है। स्राव छींक और नाकके साथ प्रचण्ड सर-दर्द। सर्दीके स्रावके साथ रक्तपक्षयी सर-दर्द। इस सर्दीकी अवस्थाने उपदंशमें लैकेसिसका प्रयोग कराया है। नाकके उपदंशका सामना करनेके लिये भी यह काफी सदृश है। वह उपदंश जिसने नाककी श्लैष्मिक-झिल्लीपर आक्रमण किया है, जो पपड़ी उत्पन्न करता है और अन्तमें हड्डियोंमें जखम पैदा कर देता है। बदबूदार नकसीर, नाकसे बहुत ही बदबूदार स्राव होता है। नाकसे अगर रक्त-स्राव हो, तो आपको आश्चर्य न करना चाहिये; क्योंकि लैकेसिस एक रक्त-स्रावी दवा है। नाकसे या किसी भी भागसे, रक्त जब यह सूख जाता है और थक्का जमता है, झुलसे हुए पोवालकी तरह मालूम होता है या काला हो जाता है। सहजमें ही शरीरके अंशोंसे रक्त-स्राव होता है। बहुत ज्यादा और बहुत समयतक जरायुसे रक्त-स्राव होता रहता है, बहुत ज्यादा तथा अधिक समयतक रज-स्राव होता है; नाकसे रक्त-स्राव, रक्तका वमन, सान्निपातिक ज्वरमें आँतोंसे रक्त-स्राव। "नथुने और ओठोंकी बहुत असहिष्णुता, ओठोंका फूलना, उपदंशके पुराने रोगियोंकी नाककी बहुत अधिक सूजन और अर्बुदके आकारकी तरह फूल जाना।" नाक फूल जाती है और बैंगनी हो जाती है। नासास्थि बहुत ही यन्त्रणापूर्ण रहती है, नाकके पार्श्वकी ओर यन्त्रणा। लाल नाक रहनेवाले पुराने शराबियोंकी लैकेसिस खासकर लाभदायक दवा है तथा लाल नाकके साथ हृत्पिण्डके बीमारियोंकी। नाकके सिरेपर एक लाल धब्बा, एक स्ट्राबेरी फलकी तरह नाक।

चेहरा बैंगनी और चितकबरा रहता है; पलकें फूली रहती हैं, बहुत कुछ फूली; शोथ ग्रस्तोंकी तरह फूली नहीं, बल्कि तनी हुई। दबानेपर गड़हा नहीं पड़ता, जैसा कि शोथमें पाया जाता है; यद्यपि लैकेसिसमें ऐसा है; पर लैकेसिसमें फूलन एक विचित्र ही ढङ्गकी होती है। चेहरा फूला और प्रादाहित दिखाई देता है। यह शैरिक रक्त-रोधके कारण होता है, जिससे कि चेहरा बैंगनी और दाग-दगीला रहता है। नाक स्फीत रहती है, इतनेपर भी इसमें दबानेपर गड़हा पड़ा नहीं रह जाता। ओठ प्रादाहितकी तरह मालूम होते हैं, इतनेपर भी ये प्रादाहित नहीं रहते, केवल दबाना सहन नहीं होता। चेहरा शोथ-ग्रस्त-सा दिखाई देता है, जिसमें दबानेपर गड़हा पड़ता है, हृत्पिण्डके रोगोंमें तथा कोरण्ड-

घटित मूत्र-ग्रन्थि प्रदाह (Bright's disease) में। इसके अलावा, चेहरा बहुत पीला हो जाता है, पीला और ठण्डा; शरीर रुसी जमनेवाले उद्भेदोंसे भरा रहता है। ऐसे उद्भेद, जिनसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है, साथ ही खरोंट जमनेवाले उद्भेद, फुन्सियोंकी तरह उद्भेद। रक्तसे भर जानेवाले उद्भेद, खून-भरी फुन्सियाँ और बड़े-बड़े रक्त-भरे छाले, जैसे कि कभी-कभी जले घाव हो जाने या जल जानेपर हो जाते हैं। चेहरा एकदम कामला रोग-ग्रस्त और बहुत दवा रहता है। कभी-कभी तो वह हरितपाण्डु रोगका आकार धारण करता है। यदि आपने एक हरित्पाण्डु रोगका रङ्ग देख लिया होगा, तो इसके वर्णनकी जरूरत नहीं है। यह रक्त-स्वल्पताकी एक दवा है, सुनहरापन लिये पीलापन, खाकी रङ्ग या भूरा रंग, जिसके साथ कुछ हरा रंगमिला रहता है, इसलिये प्राचीन लोगोंने इसे हरित-रोग (Green sickness) कहा है। इसके अलावा चेहरा नीला हो जाता है तथा शराबियोंके भर्राये चेहरेकी तरह फूला फूला, शराबियोंका दाग दगीला बैंगनी चेहरा, जो वर्षोंसे खूब शराब पी रहे हैं, यहाँतक कि चेहरा भर्रा उठा है, स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है और हतबुद्धिकी हरह चेहरा दिखाई देता है। यह आप लेकेसिसमें देखेंगे।

लेकेसिस विसर्प तथा सड़नेवाले रोगोंकी भी एक दवा है तथा रोगवाले अंशका दृश्य लेकेसिसकी तरह रहता है, वही चित्ती-चित्ती बैंगनीपन लिये दृश्य। विसर्प और सड़नेवाले उपसर्गोंकी लेकेसिस रोगीपर परीक्षित एक प्रत्यक्ष दवा है; क्योंकि जबतक ये बातें नहीं प्रकट होतीं, तबतक परीक्षक दवाओंको समझ नहीं सकते। इसलिये हमें उनके जहरीले प्रभाव और रोगीपर प्रयोग द्वारा उन्हें समझना पड़ता है।

लेकेसिसमें दाँत और मसूढ़ेसे सहजमें ही रक्त चूता है। रस-रक्त विगड़नेवाली बीमारियोंमें दाँतोंपर सूखी पपड़ियाँ जमती हैं; अकसर काले दाग, दन्त-कीट और जीभकी आकृति भी मुँहकी जैसी ही रहती है और रोगियल हो जाती है। यह सान्निपातिक दशाओंमें होता है, जब एकदम समीकरण नहीं होता, भूख एकदम गायब हो जाती है, पाकाशय खाद्यको ग्रहण नहीं करता और जब पाकाशयमें खाद्य डाला जाता है, तो वह निकाल दिया जाता है। जीभकी अर्द्ध पक्षाघात अवस्था भी रहती है। जीभ मुँहमें चमड़ा रहनेकी तरह मालूम होती है, बहुत कष्टसे यह हिलायी जाती है। बोली अर्द्ध शराबीकी तरह रहती है, वह ठीक वाक्य-संयोग नहीं कर सकता। जीभ फूल जाती है और बहुत धीरे-धीरे बाहर निकाली जाती है। यह सूखी रहती है तथा दाँतसे अड़ती है और इसका कड़ापन चला गया-सा मालूम होता है। एक चीथड़े-जैसी दशा रहती है या इसपर मानो पेशियोंकी क्रिया नहीं होती, इसीलिये यह बाहर नहीं निकाली जा सकती या यदि जीभ बाहर निकाली जाती है, तो वह काँपती तथा हिलती और दाँतसे अड़ आती है। इसके अलावा यह फूली रहती है, इसके काँटे उघड़ेसे रहते हैं, चिकनी, चमकीली और ऐसी चमकदार रहती है, मानो वार्निश कर दी गयी है। मुँहमें साबुनके फेनकी तरह लाल रहती है, मुँहमें बहुत श्लेष्मा भरा रहता है और रोगी अकसर पलंगके किनारेपर सर रखकर लेटा रहता है और लार कड़ाही या कमोडमें चूती रहती है। लार सूतकी तरह रहती है तथा सूतके रूपमें ही मुँहसे खींच ली जा सकती है, सफेद श्लेष्मा या लार। यह डिफ्थीरियामें, गल-क्षतमें, जीभके प्रदाहमें या

मुँह और मसूढ़ोंके प्रदाहमें तथा लाला-ग्रन्थियोंके प्रदाहमें कोई असाधारण बात नहीं है। जब यह श्लेष्मा, गाढ़ा, कड़ा, पीला, सूतकी तरह या डोरीकी तरह है, तो यह **कैलि बाइ-क्रोमिकम**की तरह रहता है। जटिल गल-क्षतमें आप अकसर देखेंगे, कि रोगी लेटा रहेगा, ओकाई आयेगी, खाँसेगा तथा मुँहसे लार निकालनेके लिये बड़े कष्टसे जीभ बाहर निकालनेकी चेष्टा करेगा। बहुतकर तो जीभकी जड़में इतना तेज दर्द होता है, कि वह जीभसे लार हटा नहीं सकता तथा वह कमोडपर मुँह खोले पड़ा रहता है या तकियेपर कपड़ा रखे गाढ़ी, डोरीकी तरह लार निकालनेके लिये पड़ा रहता है। गल-क्षतके साथ ऐसी अवस्थामें, खासकर जो बायीं ओर उत्पन्न होता है और दाहिनी ओर जाता है, आपको ज्यादा पूछ ताछकी मुश्किल जरूरत पड़ेगी ; क्योंकि यह लैकेसिसका ही नजारा है। जीभकी साधारण प्रादाहिक दशा तथा जीभके कैन्सर वाले रोगोंमें यह दशा लैकेसिसकी ओर परिचालित करती हैं। लैकेसिसकी प्रकृतिमें सांघातिक पपड़ी जमे घाव और मारात्मक जखम उत्पन्न करनेकी प्रवणता है, जैसा कि हमें अन्तस्त्वकार्बुद (Epithelioma) में प्राप्त होता है। बहुतसे अन्तस्त्वकार्बुदके रोगियोंको इसने आरोग्य किया है। यह नकड़ा (Lupus) रोगकी एक बहुत ही लाभदायक दवा है। यह औपदंशिक गलक्षत, कण्ठके, जीभके, मुँहके औपदंशिक जखमकी एक लाभदायक दवा है, जब उसमें बहुत ज्यादा सूतकी तरह लार निकलती है।

गलकोषकी पेशियाँ पक्षाघात-ग्रस्त हो जाती हैं और काम नहीं करतीं और इसीलिये खाद्य गल-कोषमें एकत्र हो जाता है अर्थात् निगलनेवाला ग्रास गल-कोषमें चला जाता है और रुक जाता है और ओकाई, खाँसी तथा वक्षकी आक्षेपिक क्रियाके साथ फिर निगलनेकी एक भयङ्कर चेष्टा करनी पड़ती है ; यह श्वास लेनेके समय होता है और फिर वह उसकी चेष्टा नहीं करता। डिफ्थीरियामें अकसर यही दशा होती है। मैंने बहुत बार चिकित्सकको यह लक्षण पैदा कर देते देखा है, जिसमें लैकेसिस काफी मात्रामें, ऊँचे क्रममें और खूब सदृश-रूपमें रोगको आरोग्य करनेके लिये देनेके बदले, जितना निम्न क्रम उसे प्राप्त हो सका है अर्थात् आठवाँ या दसवाँ क्रम पानीमें मिलाकर, समस्त डिफ्थीरियाकी दशामें खिलाया है। जब इस प्रणालीसे चिकित्सित रोगीका आपको सामना करना पड़े, तो आपको यह देखकर आश्चर्य न करना चाहिये, कि डिफ्थीरियाके पूर्वका पक्षाघात उत्पन्न हो गया है ; क्योंकि लैकेसिस इसे उत्पन्न करेगा। यह डिफ्थीरियाको आरोग्य कर सकता है ; पर यह अपना जहरीला प्रभाव छोड़ जायगा, जो उस रोगीके जीवनभर रहेगा। प्रत्येक वसन्त ऋतुमें लैकेसिसके लक्षण उत्पन्न हो जायँगे। ऊपर वर्णन की हुई रोग-वृद्धिकी सभी दशाओंमें लैकेसिसके लक्षण पैदा हो जायँगे, यदि उसमें एक बार उसका जहर फैल गया है।

गल क्षतमें कितने ही लक्षण सम्मिलित रहते हैं। लैकेसिसने यह दशा उत्पन्न की है, यह बायीं ओरसे दाहिनी ओर जाता है ; पर गल-क्षतमें गर्दन और कण्ठमें एक भरापनकी अनुभूति रहती है, श्वासमें कष्ट होता है ; चेहरा पीला और रक्त-पूर्ण दृश्य रहता है। सोनेके समय दम घुटता है, विचित्र प्रकारकी लार और **गर्म पेयोंसे** कण्ठसे लक्षणोंकी वृद्धि। गर्म पेयोंसे स्वतः दर्दकी ही अभिवृद्धि सदा नहीं होती ; पर रोगी अकसर गर्म तरल गलेके

नीचे उतार नहीं सकता। गर्म तरलका निगलना अकसर दम घुटनेका भाव पैदा कर देता है और गर्म चायका एक घूंट लेते ही रोगी अपना गला पकड़ लेता है और ऐसा मालूम होता है, मानो उसका श्वास-रोध हो जायगा। वह कहता है—"अब हमको गर्म पेय न दो।" कुछ ठण्डी चीजसे आराम पहुँचेगा। कुछ गर्म चीज निगलनेसे कण्ठकी कष्ट और श्वासकी तकलीफ बढ़ जाती है। अब **लाइकोपोडियम**के गल-क्षतमें, गर्मीसे अकसर फायदा होता है ; पर **लाइकोपोडियम**के गल क्षतके सम्बन्धमें यह भी सत्य है, कि वे सर्द पेय पीना चाहते हैं और ठण्डा ही कण्ठमें अच्छा मालूम होता है।

बहुतकर लैकेसिसके बहुत ही नये लक्षणोंमें पाकाशयमें गर्म पेय नुकसान पहुँचाता है तथा मिचली और श्वास रोध पैदा हो जाता है तथा दम घुटना, कलेजा धड़कना और माथेका भरापन बढ़ा देता है ; पर लैकेसिसकी पुरानी बीमारियोंमें, जिनमें बरसों पहले इसका जहर फैल चुका है, ठण्डा पानी पीनेसे और फिर लेट जानेसे मिचली और वमनकी प्रवणताका भाव आ जाता है। लेट जाने बाद मिचली पैदा हो जाती है अर्थात् रोगीको बरफका ठण्डा पानी पीने और पलङ्गपर जाने दीजिये, मिचली पैदा हो जायगी। लैकेसिसमें यह एक विचित्र दशा है। जिन्होंने बहुत दिन पहले लैकेसिसकी परीक्षा की थी उनका यह बादका कथन है। कभी-कभी तो लैकेसिसके लक्षण बरसों बाद ग्रहण करने चाहिये।

लैकेसिसमें कण्ठमें जखम होता है। इसमें छालेकी तरह गड़हे पड़ते हैं। इसमें लाल और भूरे जखम, गहरे जखम होते हैं। श्लैष्मिक-झिल्लियोंके किनारोंपर जखम होनेकी प्रवृत्ति लैकेसिसका विचित्र लक्षण है। इसके अलावा चर्मपर जखम, जहाँ खूनका दौरान कमजोर रहता है। ऐसा मालूम होता है, कि कण्ठका दर्द खासकर निगलनेकी क्रियाके दर्म्यान होता है तथा ग्रासरहित तालुमूलपर ग्रासका दबाव दर्दमें आराम पहुँचता है। निगलनेके समय हमेशा दम घुटनेका भाव। कण्ठमें दम घुटने और मुँह भर आनेका भाव। खाँसी दम घुटाने-वाली होती है तथा एक सुरसुरीका भाव उत्पन्न कर देती है। यह **बेलेडोना**की खाँसीकी तरह है। **बेलेडोना** लैकेसिसकी खाँसीका प्रतिविष है, इसमें बहुत कुछ लैकेसिसकी तरह ऐसी खाँसी है, जिसे कोई भी लैकेसिसकी खाँसीसे अलग नहीं कह सकता। इसके अलावा लैकेसिसमें कण्ठ बहुत सूख जाता है और यह सूखापन प्यासके बिना ही होता है, पानी पीनेकी इच्छाके बिना ही सूखापन। घूंट लेनेकी बहुत अधिक इच्छा, बराबर निगलते रहनेकी इच्छा, इतनेपर भी इसमें दर्द होता है। कड़ी चीज निगलनेकी अपेक्षा खाली घूंट लेना विशेष कष्टकर होता है। हृत्पिण्डके रोग रहनेवाले कितने ही लैकेसिसके रोगी कण्ठके सङ्कोचनसे बहुत ही तङ्ग रहते हैं ; कोई भी गर्म चीज निगलते समय कण्ठ रोध होने लगता है या कभी-कभी गर्म कमरेमें जानेके समय दम घुटता है और कलेजेमें धड़कन होने लगती है। पुराना गलक्षत या बारम्बार होनेवाला गलक्षतमें तथा दुहराकर होनेवाले गलक्षतमें जखम हो जाना। आप देखेंगे, कि तरल, खाली घूंट लेनेके सदृश है तथा खाली घूंट लेनेपर विशेष दर्द होता है, बनिस्बत अन्नके ग्रासके जो गलक्षतपर दबाव डालता है ; क्योंकि यह मृदु स्पर्शकी भाँति होता है। मृदु-स्पर्श यन्त्रणा और कण्ठका दर्द बढ़ा देता है। कालरका मृदु दबाव कंठको उड़ा देता है। गलक्षतके साथ गर्दनकी पेशियों और ग्रन्थियोंमें भी दर्द होने

लगता है, वे प्रादाहित और स्फीत हो जाती हैं तथा बहुत स्पर्श-कातर रहती हैं। गलक्षतके साथ बहुतकर मस्तिष्कके, तलदेशमें या मस्तकके पश्चात् भागमें दर्द रहता है तथा गर्दनके पिछले भागमें यन्त्रणा रहती है, जो अकसर पीठके बल लेटनेपर घट जाती है तथा दोनों ही करवट लेटनेपर बढ़ जाती है। यदि आप कण्ठको देखेंगे, तो वह आपको दाग-दगीला तथा बैंगनीपन लिये दिखाई देगा। इन सब पदार्थोंको लसदार लार बहनेके साथ एकत्र कीजिये और बायीं तरफ पैदा होकर, दाहिनी ओर बढ़नेवालों डिफ्थीरियाके रोगीको आप खूब सम्हाल सकेंगे, भले ही झिल्ली थोड़ी या बहुत ज्यादा हो। तालुमूल पक जानेवाला, तालुमूलका प्रदाह, जब बायाँ तालुमूल प्रादाहित हो जाता है तथा एक या दो दिन बाद दाहिना तालुमूल प्रादाहित हो उठता है और अन्तमें दोनों पक जाते हैं या जब एक फूलता है और पकता है; फिर दूसरा फूलता और पकता है। कण्ठ डिफ्थीरियाकी तरह दिखाई देता है, यह **बायेंसे दाहिनी ओर फैलता है**। गलकोष गाढ़ा, उजला, डोरीकी तरह श्लेष्मासे सवेरे भर जाता है; सवेरे खखार-खखारकर मुँहभर बलगम निकालना पड़ता है।

तलपेट वायुसे तना रहता है। टाइफायडवाली दशामें तलपेट फूला रहता है, इस फूले या तने हुए उदरमें बहुत गड़गड़ाहट होती है। वस्त्र बर्दाश्त नहीं होते, वस्त्रका थोड़ा भी स्पर्श सहन नहीं होता और इतनेपर भी उदरमें खूब गहरायीपर होनेवाले यन्त्रणाको जाननेके लिये बहुत जोरका दबाव देना पड़ता है। यह दशा जैसीकी उदरके प्रदाहमें रहती है, वैसी ही डिम्बाशय और जरायुके प्रदाहमें, रोगी उदरके उपरसे वस्त्र हटाकर चित्त पड़ा रहता है। प्रचंड, प्रसवकी तरह दर्द, ऋतु-शूलका दर्द, टाइफायडमें, सूतिका ज्वरमें, सांघातिक आरक्त ज्वरमें तथा अविराम ज्वरके रस-रक्त बिगाड़नेवाले अधिक सांघातिक रोगोंमें होता है।

लैकेसिसमें कामला रोगके साथ, यकृतमें रक्त-सञ्चय, यकृतका प्रदाह, वर्द्धित यकृत तथा जायफलकी तरह यकृत, यकृतकी एक विचित्र दाग-दगीली दशा, जो हृत्पिण्डके रोग तथा कुछ अन्य रोगोंमें हो जाती है प्रभृति कितने ही यकृत-रोग हैं। यकृत प्रदेशमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द। पित्तका वमन; पाकाशयमें गयी हुई किसी भी चीजका वमन। बहुत ज्यादा मिचली; कामला रोगके साथ लगातार मिचली। सफेद, दस्त। इसने पित्त पथरीके रोगी आरोग्य किये हैं। "कुक्षि देश (Hypochondria) में किसी तरहका भी दबाव सहन नहीं कर सकता। पुरानी दशामें चर्मकी असहिष्णुता तलपेट, कमर और कूल्हेपर इतनी अधिक रहती है, कि वस्त्र पहननेसे भी दर्द होता है; बहुत बेचैनी और अस्थिरता रहती है, रोगीकी स्नायविकता धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और अन्तमें वह गुल्म-वायु ग्रस्त हो जाती है। निम्नोदरके ऊपर स्पर्श सहन नहीं होता; मुश्किलसे अपना वस्त्र उसपर छूने देती है।

पहले पढ़नेके समय तो यह आश्चर्य-जनक मालूम होता है, कि **मासिक रजः-स्राव-कालकी** लैकेसिस ऐसी साधारण दवा हो सकती है। यह **वयः सन्धि-काल**

(Climacteric period) की भी एक लाभदायक दवा है। अब यदि आप वयःसन्धि-कालकी स्त्रियोंकी रोगावस्थामें देखें, तो आप देखेंगे, कि उनमेंसे अधिकांशका चेहरा तमतमाया रहता है, माथेमें रक्त चढ़ता है तथा लैकेसिसमें प्राप्त होनेवाले अन्य रक्तके दौरान-सम्बन्धी गड़बड़ी मौजूद हैं। यही सर-दर्द प्रभृति उन शिकायतोंके सम्बन्धमें भी सत्य है, जो वयःसन्धि-कालमें और मासिक रजः स्राव-कालमें पैदा होता है। मासिक रजःस्राव-कालमें स्त्रियोंमें लैकेसिसके लक्षण जबर्दस्त रहते हैं। बहुत तेज सर-दर्द, मस्तक शिखर-देशमें छेदनेकी तरह दर्द मिचली और रजःस्राव-कालमें वमन होता है।

स्त्रियोंका स्राव, चाहे वह रजः-स्राव हो या रक्त-स्राव, काला होता है। वाम डिम्बाशय-प्रदेशमें दर्द या जो दर्द बायेंसे दाहिनी ओर जाता है। एक या दोनों ही डिम्बाशयोंका कड़ापन। इसने डिम्बाशयका पकना आरोग्य किया है। जरायु-प्रदेश बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहता है, जरा भी कपड़ा छू जानेसे तकलीफ होती है, डिम्बाशयका प्रदाह डिम्बाशयमें और जरायुमें दर्द, जो बायीं ओरसे दाहिनी ओर जाता है। श्रोणि-देशका दर्द, जो वक्षमें ऊपरकी ओर चढ़ता है; कभी-कभी एक प्रकारका लहरकी तरह दर्द, जो ऊपरकी ओर चढ़ता है, कण्ठको पकड़ लेता है। प्रसवका दर्द भी ऊपरकी ओर चढ़ता है, साथ ही कण्ठको कसकर पकड़ लेता है या प्रसवका दर्द एकाएक रुक जाता है, इसके साथ ही कण्ठको कसकर पकड़नेका भाव रहता है। मासिक रजः-स्राव-कालका दर्द, बहुत तेजीसे तबतक बढ़ता जाता है, जबतक स्राव होकर आराम नहीं होता। **रजः-स्राव होते रहनेपर** रोग-ह्रास लक्षणके साथ मासिक रजः स्राव-कालकी तकलीफें स्राव जारी होनेके पहले और बाद होती हैं। रजःस्राव बीचमें एक दिन रुक जाती है और फिर एक दिन होता है और इस बीचके बन्द होनेके समय या तो दर्द हो सकता है या सर-दर्द। रातमें सर्दी लगनेके साथ तथा दिनमें तापकी झलकके साथ अतिरजः (Menorrhagia) मासिक रजःस्राव-कालमें प्रचण्ड सर-दर्द, खासकर उस समय जब स्राव कम होता है। **स्रावसे आराम पहुँचना लैकेसिसका एक सार्वाङ्गिक लक्षण है।** अत्र स्राव होता है; पर नित्य एक घण्टेतक; रुक जानेपर वाम डिम्ब प्रदेशमें प्रचण्ड दर्द, जो ओकाई और व्यर्थ वमनोद्रेकके साथ पर्यायक्रमसे होता है।

यह तापकी झलकके कारण रजोनिवृत्ति कालमें खासकर उपयोगी होता है। जरायुसे रक्त-स्राव, मूर्च्छाके दौरे, गर्म कमरेमें श्वास-रोध; खूनका वेग बड़ा ही प्रचण्ड होता है। गर्भ-कालके उपसर्ग। पैरकी शिराओंका प्रदाह। शिरा-स्फीति रोग, नीला या बैंगनी शिराओंमें अत्यधिक असहिष्णुता, जरा भी स्पर्श सहन नहीं होता, यद्यपि दबानेसे आराम पहुँचता है।

कितने ही महत्वपूर्ण अंशोंपर लैकेसिसका अध्ययन केवल एक समालोचना है।

लारोसिरेसस
(Laurocerasus)

कितने ही अद्भुत धातुगत लक्षण, रक्तका कमजोर दौरान और दुर्बल हृत्पिण्ड निर्देशित करते हैं। बहुत अधिक सार्वाङ्गिक शीतलता, जो बाहरी गर्मीसे नहीं घटती। यह मुर्देको लपेट रखनेकी तरह हो जाता है। इतनेपर भी यदि वह गर्म चूल्हेके पास जाता है, तो मिचली पैदा हो जाती है। यदि गर्म कमरेमें रहता है, तो ललाटमें पसीना होने लगता है और ललाट ठण्डा रहता है; पर यदि वह धीरे-धीरे खुली हवामें घूमता है, तो उसका पसीना रुक जाता है और ललाट गर्म हो जाता है। जैव तापका अभाव। प्रतिक्रियाका अभाव। दवाएँ केवल उपशामकके रूपमें कार्य करती हैं; लघुक्रियात्मक दवाओंकी तरह धातुगत रोगोंमें कार्य करती हैं या रोग-लक्षण आंशिक रूपसे दब जाते हैं; पर रोगीमें प्रतिक्रिया नहीं होती। रोगी रोग आरोग्यकालमें नहीं आता। ऐलोपैथोंके हाथोंसे **डिजिटेलिस**का प्रयोग होकर जो हृद्-रोग (Heart-failure) होता है या रोग आरोग्य-कालमें जब हृत्पिण्ड दुर्बल होता है, तो यह अकसर आरोग्य कर देता है। यदि चर्म ठण्डा हो और बाहरी ताप सहन न हो तो इसकी **कैम्फर, एमोनियम-कार्बोनिकम** और **सलफर**से तुलना करनी चाहिये। बहुत देरतकका बेहोशीका दौरा, प्रत्यङ्गोंकी ऐंठन, श्वासके लिये मुँह फाड़ना। भय या गहरे शोकके बादके रोग। प्रत्येक उत्तेजनाके बाद नर्त्तन रोग। गहरी निद्राके दौरे, साथ ही खुर्राटा या जोरकी आवाज, घरघराहटके साथ श्वास, श्वास-रोधका दौरा होनेके समय उसे बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है (सोरिनम); परन्तु सूखी खुसखुसी खाँसी उसके लेटते ही फिर आने लगती है।

मन और शरीरकी दुर्बलता, मूर्च्छा, गतिराहित्य, आशंका।

खुली हवामें सरमें चक्कर आना, उसे लेट जाना पड़ता है।

गर्म कमरेमें ललाट ठण्डा हो जाता है, खुली हवामें यह भाव घटता है। माथेमें टपकके साथ हतबुद्धि बना देनेवाला दर्द, माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। सम्मुख कपालास्थिके नीचे समय बाँधकर होनेवाला कनकनीके दर्दका दौरा। ऐसा अनुभव होना, मानो झुकनेपर मस्तिष्क आगे गिर जाता है। मस्तिष्कमें तनाव। भोजन कर लेनेपर कभी-कभी सर-दर्द घट जाता है। मस्तक-त्वचामें खुजली होती है।

धुँधली दृष्टि, आँखोंके सामने पर्दा, चीजें बड़ी मालूम होती हैं।

चेहरा नीला, दबा हुआ, फूला-फूला और एकदम भाव-व्यञ्जनोंसे रहित, कामला रोगग्रस्त, पीले धब्बे। **चेहरेमें सुरसुरी।** जबड़े अटक जाना (दाँती लगना)।

मुँह और जीभ सूखी। जीभ सूखी रहती है, ठण्डी और सुन रहती है; कड़ी और फूली हुई।

कण्ठ और अन्ननलीका आक्षेपिक सङ्कोचन ; पेय कण्ठमें गड़गड़ाहटके साथ और आँतोंमें होकर उतरता है।

भोजनके बाद पाकाशयमें खालीपन (डिजिटेलिस) मानो वह अवतक भूखा है। बहुत तेज प्यास, खाद्यसे घृणा, गर्म चूल्हेके पास जानेपर मिचली। खाँसीके साथ खाद्यका वमन। तीती बादामकी तरह डकारें आती हैं, ठण्डे चर्मके साथ, पाकाशयमें तेज दर्द। पाकाशय तथा तलपेटमें ठण्डक, पाकाशयमें ऐंठनकी तरह संकोचन और तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द। यकृतमें इस तरहका दर्द, मानो फोड़ा हो रहा है। दवानेपर यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, आँतोंमें गड़गड़ाहट।

हरे श्लेष्माके साथ अतिसार और कूथनके साथ हरे पानीकी तरह दस्त। कष्टकर मलके साथ कब्ज। जब हरे पानीकी तरह दस्त होते हैं और जब पेय कण्ठनलीमें गड़गड़ाकर उतरते हैं तथा सार्वाङ्गिक ठण्डक, नीलापन और मूर्च्छाका दौरा रहता है, तब यह शिशु-हैजाको आरोग्य कर देता है।

समस्त मूत्र-यन्त्र पाक्षाघातिक दशामें रहता है। मूत्रका रोध हो जाना या रुकावट अथवा बहुत ही कमजोर धारामें पेशाब निकलता है। अनैच्छिक पेशाब, पेशाब करनेके समय पाकाशयमें दर्द। ये पेशाबके लक्षण कभी-कभी कलेजेमें धड़कनके साथ और श्वास-रोधके साथ मूर्च्छाके दौरेके साथ उत्पन्न होते हैं या हृत्पिण्डके लक्षण आ जाते हैं। इस अवस्थामें लारोसिरेससपर अवश्य ही ध्यान देना चाहिये।

ऋतु-स्राव बहुत जल्दी-जल्दी, बहुत ज्यादा, पतला होता है, साथ ही मस्तक-शिखरमें रातके समय फाड़नेकी तरह दर्द होता है। जरायुसे रक्त-स्राव, जिसमें काला थक्का रक्त ऋतु-स्रावके समय निकलता है। ऋतु-स्राव-कालमें ठण्डकके साथ मूर्च्छाके दौरे। ऋतु कालमें त्रिकास्थिमें दर्द।

जिन रोगियोंकी हृत्पिण्डकी तकलीफ रहती है और अकसर स्वर-यन्त्रमें बहुत सङ्कोचन होता है, उन्हें इस दवासे आराम पहुँचता है। कण्ठनली-द्वारकी अकड़न (Laryngismus stridulus)।

श्वासमें कष्ट। श्वास-रोध, वक्षमें दवाव, हृत्पिण्डके रोगमें हाँफना, लेट जानेपर घट जाता है। हृत्पिण्डको कसकर पकड़ रखनेका भाव और कलेजा धड़कना। इसने बहुत बार हृत्कपाटका उद्गीरण (Mitral regurgitation) रोग आरोग्य किया है।

लघु खुसखुसी, सूखी, स्नायविक खाँसी। हृत्पिण्ड रोगकी वजहसे खाँसी। छोटे बच्चोंकी हूपिङ्ग खाँसी, जब कमजोर हृत्पिण्डका इतिहास प्राप्त होता है। नीला ठण्डा चर्म और स्वर-यन्त्रका आक्षेप रहता है। वक्षके पाक्षाघातिक उपसर्ग।

अनियमित हृत्पिण्डकी क्रिया, धीमी नाड़ी, फड़फड़ाता हुआ हृत्पिण्ड, बैठनेपर हँफनी उत्पन्न हो जाती है ; लेट जानेपर दवाव घट जाता है। कमजोर नाड़ी, ठण्डा नीला पटल।

चेहरा और प्रत्यङ्गोंके पेशियोंकी ऐंठन। थोड़ा-सा भी परिश्रम सभी उपसर्गोंको बढ़ा देते हैं। रक्तमें अम्लजान न प्राप्त होनेके कारण चर्मका नीला पड़ जाना (Cyanosis neonatorum), श्वास लेनेपर वक्षमें जलन।

हाथकी शिराएँ तनी रहती हैं। पैर ठण्डे और लसदार। प्रत्यङ्गोंका दर्द रहित पक्षाघात। प्रत्यंगोंमें डङ्क मारने और फाड़नेकी तरह दर्द। पैर-पर-पैर रखकर लेटनेपर पैर सुन्न हो जाते हैं।

लीडम पैलस्टर

(Leadum Palustre)

लैकेकिससके अध्ययनके बाद यह दवा ठीक बैठती है ; क्योंकि इसके रोग-तत्वोंमें **लैकेसिस**के सदृश बहुतसे उपसर्ग प्राप्त होते हैं। इसमें भी चेहरेका वही चित्ती-चित्ती तथा फूला-फूला और भर्राया रूप रहता है। यह **लैकेसिस**का, कीड़ोंमें जहरका, **एपिस**के जहरका तथा जानवरोंके जहरका प्रतिविष (Antidotal) है।

लीडम अस्त्र चिकित्सकोंकी दवा है तथा **आर्निका** और **हाइपेरिकम**की प्रबल आघात-जनित शरीरावस्थासे इसका निकटस्थ सम्बन्ध है। लक्षण बहुत कुछ किसी खास प्रकारके आघातके बादकी अवस्था जैसे प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ, डोरीपर चलना, सुईसे छेद हो जाना, बहुत थोड़ा रक्त निकले घाव ; परन्तु जिनमें बादमें बहुत दर्द होता है, वह अंश फूला तथा ठण्डा रहता है। कांटीपर चढ़ जाना, यह पैरके तलवेमें विंध जाती है या एँड़ीमें गड़ जाती है या तलहत्थीमें ऐसा घाव हो जाता है, कि किसी खोलसे या वह नाखूनमें कांटा गड़ा लेता है। यदि ऐसे घावोंके बाद वह **अंश ठण्डा पड़ जाये** और इसके बाद पीला, पक्षाघात-ग्रस्त और चित्ती-चित्ती हो पड़े, तो लीडमपर ध्यान दीजिये। कभी-कभी घोड़ा किसी कांटीपर चढ़ जाता है। यदि वह कांटी भीतर घुस जाती है तथा काफिन हड्डीके किनारेपर आघात करती है, तो टङ्कार पैदा हो जायगा। इससे अवश्य ही मृत्यु होगी ; पर यदि उस घोड़ेकी जीभपर लीडम रख दिया जाय, तो फिर कोई भी तकलीफ न होगी ; क्योंकि यह ऐसी दशाओंको रोकता है।

जब तलहत्थीमें तलवेमें या अन्य अंशोंमें छेद हुए जखमोंसे अकड़न (टंकार) पैदा हो, तो **हाइपेरिकम** पर ध्यान दीजिये या जब आप छेद हुए घावका इलाज करनेके लिये बुलाये, जायें, तो तुरन्त लीडम दीजिये और आप टंकार होना रोक देंगे या अंगुलीका नाखून फट जाये या स्पर्श-चेतन भागके स्नायु, अंगुलीकी नोककी तरह कट जाये और फट जाये तो उसकी दवा **हाइपेरिकम** होती है। कितने ही अंशोंके कुचल जानेपर या रोगीको समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द मालूम होता है, भले ही कितना ज्यादा अंश कुचल गया हो, तो अमूमन **आर्निका** ही दवा होती है। यह कहा जा सकता है, कि छेद हुए घावोंके लिये लीडमका अध्ययन कीजिये। स्पर्श-चेतन स्नायुके कटे घावके लिये **हाइपेरिकम**का

अध्ययन कीजिये और कुचले घावोंके लिये **आर्निकाका**। कटे घाव और खुले नश्तरके घावके लिये **कैलेण्डुलाका** अध्ययन कीजिये। बाहरसे आनेवाले उपसर्गका इलाज भी बाहरसे ही होना चाहिये। जब छुरीसे कटे या फटे घाव मिलें या तेज धार अस्त्र या चोटके घाव मिलें, तो **कैलेण्डुलाका** प्रयोग कीजिये; क्योंकि चोट बाहरी है, इसका कोई भीतरी प्रभाव नहीं है। **कैलेण्डुलाका** साल्यूशन बाहरी कारणोंसे पैदा होनेवाले उपसर्गोंकी बढ़िया दवा है और इसका बाह्य प्रयोग करना चाहिये। भीतरी कारणोंसे जो-जो उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, उन्हें भीतरी दवाओंसे आरोग्य कीजिये तथा बाहरी कारणोंसे जो उपसर्ग उत्पन्न हों, जब कि रोगमें सब बाहर ही हो, तो स्थानिक प्रयोगोंसे चिकित्सा कीजिये। दूसरे शब्दोंमें यह कहा जा सकता है, कि स्थानिक कारणोंके लिये, स्थानिक जरिये प्रयोग कीजिये तथा भीतरी और शक्ति सम्पन्न कारणोंके लिये, भीतरी प्रयोग काममें लाइये। भीतरी दोषोंकी होमियोपैथिक दवासे चिकित्सा होने दीजिये तथा बाहरी और स्थानिक दशाओंका ऐसे शमनकारी बन्धनोंसे इलाज कीजिये, जिनसे आराम पहुँचे। खुले हुए, खाल उधड़े और रक्त-स्राव होनेवाले स्थानोंकी कुछ स्निग्ध और बहिस्थ प्रकृतिके पदार्थोंसे रक्षा कीजिये। सरल-से-सरल प्रणालीसे घावोंमें बन्धन बाँधना चाहिये तथा **कैलेण्डुलासे** बढ़कर कोई दूसरी सरल बन्धन बाँधनेकी सामग्री नहीं है; एक हिस्सा **कैलेण्डुलामें** चार या छः भाग पानी मिला लीजिये। इसका मूल अर्क बहुत जलन करेगा। **कैलेण्डुलासे** आपके घावोंमें बहुत जल्द अंगूर भरेगा तथा आपके स्वास्थ्यपर कोई प्रभाव न पहुँचेगा। जब धातुगत प्रकृतिकी दशा श्रेणीबद्ध रहती है और कोई खुला आघात प्राप्त हो जाता है, तो प्रकृतिको अकेली काम करने दीजिये; पर बाहरसे कोई चीज लगा दीजिये। इस सम्बन्धमें ऐसा कोई नियम नहीं है, जिसके अनुसार चिकित्सक चले। हवा खुली खाल उधड़ी जगहोंपर उपदाह उत्पन्न करती है और अनावश्यक पीब बहाती है, यहाँतक कि एकदम स्वस्थ घावसे भी। इससे "कैलेण्डुला" रक्षा करेगा। कटे स्थानोंके किनारे आपसमें मिला देने चाहिये और यह बिलकुल कसा हो, तो यह आप-से-आप भर जायगा। यदि यह नहीं भरता, तो आपको समझ लेना चाहिये, कि कोई धातुगत दोष है, जिसका आपको पता लगाना और उसके लिये ठीक दवा खोज निकालनी चाहिये। ऐसी अवस्थामें स्थानिक चिकित्सा रोक देनी चाहिये। जिन दवाओंका मैंने इतना जिक्र किया है, उनसे ही घावोंका प्रबन्ध हो सकता है और ये बहुत ही सरल हैं। किसीमें भी मुँह खुले जखमको खींचकर मिला देनेकी और ठीक-ठीक बाँध देनेकी बुद्धि हो सकती है। वे पेशियाँ जो स्वाभाविक रूपसे जखमको खींचती हैं, खोल देती हैं, उन्हें सुई टाँका देकर या फीतेसे बाँध देना चाहिये। दवा खिलानेकी चीज नहीं है। वे अस्त्र-चिकित्सककी सामग्री हैं।

लीडमके रोगीमें बहुतकर प्रकृतिगत ठण्डक, स्पर्श करनेपर ठण्डक, गर्म माथेके साथ शरीरमें और हाथ-पैरोंमें ठण्डक रहती है। इसके अलावा हमें दूसरी सीमा भी दिखाई देती है, जब कि समूचा शरीर उत्तप्त हो जाता है। माथा भी बहुत गर्म रहता है, समूचे शरीरमें टपक और स्पन्दन होता है; चमड़ा नीला या बहुत ही गहरे रङ्गका रहता है; वह रातभर ओढ़ना उतारे रहना चाहता है। लीडमकी रोगिनीको यह कहते सुनना

असाधारण नहीं है, कि वह सर ठण्डी हवामें बाहर रखना चाहती है, उसे खिड़कीसे बाहर निकाले रखना चाहती है, सरपर कोई आच्छादन नहीं रखना चाहती ; खूब ठण्डे पानीसे उसे नहलाना पसन्द करती है ।

लीडमके साथ, चेहरे और पैरके पंजोंकी दाग-दगीली अवस्था रहती है । दाग-दगीला और घुटनेसे नीचे किसी विशेष शोथज दशामें रहता है । इस बैंगनी, चित्ती-चित्ती, फूली दशाके साथ, घुटनेसे पैरतक इतनी अधिक सूजन रहती है, जितनी चर्ममें रह सकती है और दर्द हुआ करता है । केवल ठण्डे पानीके टबमें पैर डालकर बैठनेपर रोगीको आराम मिलता है । मुझे याद है, पहले-पहल मैंने ऐसे रोगीको देखा था । वह एक पुराना उपदंश-ग्रस्त था, जिसकी नाककी हड्डीको उपदंश खा गया था और उसकी नाक एक पिलपिला चर्मका टुकड़ा हो रही थी, उसमें जरा भी कड़ापन न था, वह एक शराबी था और जब नशेमें रहता, तो परिवारवालोंको खूब गालियाँ देता था । कई बरसों तक वह कुछ काम ही न करना चाहता था, उसकी आकांक्षाएँ नष्ट हो गयी थीं, वह घरमें बैठा रहता और अपनी स्त्रीसे सेवा कराता था । वह एक प्रकारसे केवल डँवाडोल होनेवाला हो गया था ; पर वह चल नहीं सकता था ; क्योंकि शोथज अवस्था आ गई थी और उसके पैर बुरी तरह फूले और स्पर्शकातर थे, कि वह दिन-रात घरमें बैठा रहता था । जब मैंने उसे देखा, तब उसके सामने एक बढ़िया आकारका, पुराने फैशनका, स्नानका टब रखा हुआ था और वहीं वह तीन हिस्सा बरफतक पानीमें पैर डुबोये बैठा था । बरफका एक टुकड़ा ऊपर उतरा रहा था, जिसको वह अपने चमड़ेसे लगये रखना चाहता था । जब वह बरफ गल जाता, तो वह उसमें थोड़ा और डाल देता था । उसकी स्त्रीने उसके रोगका वर्णन करते हुए कहा—"कुछ भयङ्कर यन्त्रणा वह भोगा करता था ।" लीडमने इस तरह उसके पैर बरफके पानीसे निकाल दिये, कि फिर कभी न रखना पड़ा । इससे बैंगनीपन गायब हो गया, पैरकी सूजन चली गयी और उसने शराब पीना छोड़ दिया । लीडमने उसकी औपदंशिक तकलीफें आरोग्य कर दीं और वह फिर कभी उस दशामें लौटकर न गया । **पलसेटिला** और लीडम ये दोनों प्रधान दवाएँ हैं, जो पैर ठण्डे पानीमें रखना चाहती हैं, पर लीडम उस मनुष्यको ठीक बैठा ।

जहाँ कहीं भी प्रादाहित स्थान रहता है, वहीं लीडममें रक्त-स्राव-प्रवणता रहती है और रक्त काला रहता है । लीडमका रोगी भरपूर रक्तवाला और थुलथुला रहता है, सुदृढ़ शरीरवाला होता है । ऐसे रक्त-पूर्ण रोगियोंको सहजमें ही रक्त-स्राव होता है, चेहरा लाल रहता है, वे मांसल रहते हैं, मजबूत और सुदृढ़ शरीरवाले । कभी-कभी चक्षु-कोष्ठमें रक्त-स्राव होता है । नाकसे रक्त-स्राव, गह्वरोंसे रक्त-स्राव, खून-मिला पेशाब ।

पुराने दर्द-भरे जखम जो फैलते हैं, जो चारों ओर चितकबरे रहते हैं, एक वह प्रकृति जो हमेशा ठण्डा रहना चाहता है । सर्दीसे जखमोंमें आराम पहुँचता है ।

यह वातज प्रकृतिकी, वात और गठियाकी दवा है । यह एक गठियाकी दवा है । उन मनुष्योंकी बीमारी जिन्हें गठिया होती है और सन्धियोंमें खड़िया पत्थर हो जाता है,

कलाईमें, अङ्गुलियोंमें और अंगूठेमें तलछट् जमता है। तलछट नीचेसे ऊपर चढ़ता है। गठिया-ग्रस्त सन्धियाँ एकाएक प्रादाहित हो जाती हैं और सर्दीसे आराम पहुँचता है। लीडम खास-कर घुटनेको आक्रान्त करता है, यह जानु सन्धिका प्रदाह या वातग्रस्त जानु-सन्धिके पुराने बहुत दिनोंके रोगियोंके लिये उपयोगी है। आप ऐसे रोगियोंको सर्दीमें घुटने खोले बैठे हुए देखेंगे, सन्धियोंपर हवा करते हैं या सन्धियोंपर वाष्पमें परिणत होनेवाले लोशन उड़ेलते देखेंगे, जैसे कि क्लोरोफार्म या ईथर, जो वाष्पाकारमें उड़कर जब सूखते हैं, तो सन्धियोंको आराम पहुँचाते हैं। दर्द और सूजनके साथ वात या गठिया—ग्रस्त हाथ-पैर। दर्द हिलने-डोलनेपर बदतर, रातमें बदतर और बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाता है; बहुत ज्यादा पीले पेशाबके साथ सर्द प्रयोगसे अच्छा रहता है। दर्द और सूजन ऊपरकी ओर चढ़ती है और हृत्पिण्ड आक्रान्त हो जाता है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि चेहरा **लैकेसिस**की तरह फूला-फूला और भरीया रहता है। यह एक हतबुद्धिकी तरह चेहरा रहता है तथा बहुत कुछ पुराने शराबियोंके चेहरेकी तरह दिखाई देता है। लीडम ह्विस्की नामक शराबकी क्रियाको नष्ट करता है और ह्विस्की पीनेकी इच्छा भी नाश कर देता है। लीडम ठीक वैसा ही ह्विस्कीके लिये हैं, जैसा **कैलेडियम** तम्बाकू पीनेकी आदतके लिये। आप रोगीकी धुम्रपानकी आदत इस तरह छुड़ा सकते हैं, जिससे कि वे दूसरी सीमापर जा पहुँचेंगे अर्थात् धूम्रपानसे घृणा हो जायगी।

जैसा कि आप आशा करते हैं, इसमें विसर्प भी है। इसमें पीला, दाग-दगीला और फूला तथा कभी-कभी शोथ-ग्रस्तकी तरह दृश्य रहता है। यह नवीन अवस्था धारण करता है और जलन होता है। शरीरके किसी भी अंशका विसर्प, जिसमें पीब हो जा सकता है; पर खासकर चेहरेका आघात-प्राप्त अंशका।

आप स्वभावतः अनुमान कर सकते हैं, कि जिस दवाकी गठियाकी प्रकृति है, उसमें कुछ-न-कुछ गुर्देके लक्षण होंगे ही। "बार-बार पेशाब होता है, एकदम घटी बढ़ी हुई, अकसर पेशाब होते-होते धार रुक जाती है।" "पेशाब करनेके बाद मूत्रनलीमें जलन।" "खुजलानेवाली लाली और पीबका स्राव होना;" **लाइकोपोडियम**की तरह इसमें भी स्पष्ट लाल बालूकी तली रहती है। इसमें बहुत-से रङ्गोंकी, बहुत ज्यादा मात्रामें बालूका तलछट जमता है। जब रोगीको अपना स्वास्थ्य सर्वोत्तम भी मालूम होता रहता है, उस समय भी बालूका तलछट बहुत कुछ निकला करता है। पेशाबमें जब थोड़ा तलछट रहता है, तो गठि-याका तलछट सन्धियोंमें बढ़ जाता है और उसे तबियत अच्छी मालूम नहीं होती। इसमें एक दूसरा लक्षण भी है, जिसको **लिपिने** खोज निकाला था अर्थात् बहुत ज्यादा साफ, बिना किसी रङ्गका, आक्षेपिक गुरुत्वमें हलका पेशाब होता है और पेशाबका हलकापन तथा लवणकी कमीके कारण, गठियाके प्रदर्शनोंकी अभिवृद्धि हो जाती है। याद रखिये, कि वाष्प-प्रवणता निम्न-शाखाओंसे ऊपरकी ओर फैलती है, परिधिसे केन्द्रकी ओर।

"ऋतुस्राव बहुत जल्दी-जल्दी, बहुत ज्यादा और चमकीला लाल होता है; जीवनी-शक्तिमें तापका अभाव रहता है।" इस समय शरीर बहुत ठण्डा रहता है, इतनेपर भी रोगी

ठण्डी हवाकी इच्छा करता है। बहुत ज्यादा मासिक ऋतु-स्राव। पुरानी गठियाकी रोगिनी, जिसका चेहरा चित्ती-चित्ती, सूजनके साथ रहता है, पर जो शोथ नहीं रहता, सिर्फ एक शिरा-स्फीति रोग रहता है, साथ ही बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव होता है, साथ ही रजःस्राव कालमें बहुत दर्द होता है। जरायु बहुत ज्यादा स्पर्श असहिष्णु रहता है तथा वस्ति गह्वरके यन्त्र इतने स्पर्श-कातर रहते हैं, कि जरा भी जोरसे छूनेपर रोगीको दर्द होने लगता है। गठियाकी रोगिनियोंका कष्टरजः (Dysmenorrhoea)। यह धातु-प्रकृतिको शृङ्खलामें ला देता है और फिर गठिया नहीं होने देता। जब ये बीमारियाँ बहुत ही बद्धमूल रहती हैं, तो मध्य-जीवनमें जरायुकी तकलीफें आरोग्य हो जायँगी तथा गठियाका दृश्य अलग ही पैदा होगा। किसी दुरारोग्य रोगमें, भीतरी बेहतर रहता है और बाहरी बदतर हो जाता है और जब यह ऐसा रहता है, तो स्वास्थ्यके लिये वाह्य तकलीफें आवश्यक रहती हैं और जबतक बाहरी प्रदर्शन हाथ-पैरोंमें रहते हैं और सन्धियाँ बहुत आक्रान्त रहती हैं तबतक भीतरी एक शृङ्खलाकी दशामें रहती है। जब दवा इस तरह काम करती रहे तो उसे मत बदलिये और कोई ऐसी चीज खोजनेकी चेष्टा कीजिये, जो बाहरीको हटा दे। जबतक कि रोगीकी उन्नति होती रहे तथा बाहरी बदतर होता जाय, तो बीमारी ठीक दशामें जा रही है। लीडम इस दिशामें क्रिया करता है। रोगको केन्द्रसे बाहरकी ओर ले जानेकी इसकी प्रवणता है; क्योंकि इसकी बीमारियाँ परिधिमें उत्पन्न होती है और केन्द्रकी ओर जाती हैं। कुछ ध्यान दिये बिना कभी-कभी गठियाके रोगीको वशमें लाना असम्भव हो जाता है, वाह्य-पटलकी ओर आनेवाले उपसर्गोंका लक्षण **लाइकोपोडियममें** भी है। जब भीतर जानेकी प्रवणता रहती है, तो यह उन्हें बाहर अपनी जगहपर भेज देता है। **लाइकोपोडियमसे** अकसर पेशाबमें बालू निकलने लगता है।

"रोगवाले अंशका शीर्ण हो जाना।" किसी जगह छेद हो जानेपर स्नायु आक्रान्त हो जाते हैं तथा थोड़ा-सा संक्रमण हो जाता है, जिससे कि घावमें रक्त-सञ्चय हो जाता है और उसकी शकल दाग-दगीली तथा शोथ ग्रस्त-सी रहती है और वह अंश ठण्डा हो जाता है, ठीक वैसी ही दशा, जिसे लीडम आरोग्य करेगा। रक्त पहुँचानेवाले भागमें उर्द्धगामी स्नायु-प्रदाह (Ascending neuritis) का आकार धारण करता है, स्नायु-पथकी राहसे दर्द होता है। उस स्नायु द्वारा सहायता पानेवाली पेशियाँ क्षीण हो जाती हैं और वह अंश क्षीण हो जाता है। **पल्सेटिलामें** भी ठीक ऐसी ही दशा है:—"रोगवाला अङ्ग पतला पड़ जाता है।"

लिलियम टाइग्रिनम
(Lilium Tigrinum)

जहाँतक परीक्षा हुई है, उससे मालूम होता है, कि लिलियम टाइग्रिनम स्त्री-रोगोंकी दवा है। यह खासकर गुल्म-वायु-ग्रस्त (Hysterical) स्त्रियोंके लिये उपयोगी है, जिन्हें जरायुकी तकलीफें, हृत्पिण्डकी तकलीफें और बहुतसे स्नायविक प्रदर्शन रहते हैं। उस

स्त्रीके लिये उपयोगी होती है, जो बहुत ही चिड़चिड़ी होती है, खाम-खयालपूर्ण भाव उन्माद, धर्मोन्माद, भ्रम-विचारके साथ, हृत्पिण्डके रोग और जरायुकी स्थान-च्युति रहती हैं। ये उपसर्ग अकसर पर्यायक्रमसे आते हैं, जब मानसिक लक्षण प्रकट रहते हैं, तो शरीरके लक्षण आराम रहते हैं। जरायुकी स्थान-च्युतिके साथ जो "नीचेकी ओर खिंचावका" लक्षण रहता है, उसमें ऐसा मालूम होता है, कि पाकाशय-प्रदेशसे और कभी-कभी कण्ठसे नीचेकी ओर खिंचाव हो रहा है। नीचेकी ओरकी खिंचावकी एक अनुभूति मानो सभी भीतरी यन्त्र बाहर खिंचे जा रहे हैं। इस असीम शिथिलताके साथ बहुत ही चञ्चलता और सबसे बढ़कर कलेजेकी धड़कन रहती है। वह केवल पीठके बल लेट सकती है तथा दोनों ही करवट बदलनेसे रोग-वृद्धि हो जाती है। प्रत्येक भावोद्रेकपर कलेजा फड़फड़ाने लगता है तथा अनियमित और उत्तेजना-प्रवण रहती है। ये मानसिक लक्षण, हृत्पिण्डके लक्षण और जरायुके लक्षण अकसर घूम-घूमकर या पर्यायक्रमसे आते हैं और यही इसका प्रधान स्वरूप है।

वह मुश्किलसे किसीसे एक सीधी बात बोल सकती है। यदि दयापूर्ण शब्द भी उससे कहे जायँगे, तो वह चिढ़ उठेगी। वह इतनी चिड़चिड़ी रहती है, कि उसके मित्र उसे शान्त नहीं रख सकते। यहाँतक कि सान्त्वना देना भी रोग बढ़ा देता है। बातचीत करनेसे भी वह उत्तेजित हो जाती है। वह रात-रातभर जागती रहती है तथा पागलकी तरह धार्मिक विचारोंसे कष्ट पाया करती है या धर्मोन्मादमें व्यस्त रहती है तथा धर्म-सम्बन्धी पागल जैसे खयालोंमें तथा जीवनके नियमोंपर विचार करती है, अयौक्तिक, अतर्क-पूर्ण और खाम-खयालोंसे भरी रहती हैं। प्रत्येक पदार्थका गलत खयाल रहता है। गलत भाव ग्रहण करती है और सभी बातें परिवर्त्तित मालूम होती हैं। उसे प्रसन्न करना मुश्किल रहता है। जनन-यन्त्रके उपदाहकी दशाके साथ ही यह दशा मौजूद रहती है, कामोन्माद, ऐंठन कलेजेकी धड़कन, पसीना, क्लान्तिके कालके साथ प्रचण्ड कामोन्माद। वह अकेलेमें बैठ जाती है और खयाली तकलीफोंसे कष्ट पाया करती है और जब उससे बात की जाती है, तो चिढ़ उठती है। "विचार स्पष्ट नहीं रहते" यदि वह अपनी इच्छा-शक्तिसे काम लेती है, तो और भी स्पष्ट हो जाते हैं।" लिखने, बोलने, दृढ़तासे मनःसंयोग करनेमें गलती करती है। अपनी मुक्तिके सम्बन्धमें कुण्ठित रहती है।"

रोगिनी यह कहकर अपना अवर्णनीय भाव प्रकट करना चाहती है, कि उसके माथेमें एक "क्षिप्त भाव" मालूम होता है, मानो विचार बिखरे हुए हैं और जितना ही वह वैज्ञानिक रूपसे इसपर विचार करनेकी कोशिश करती है, उतनी ही वह विवेक-हीन होती जाती है। जितना ही ज्यादा वह किसी बातको सोचनेकी चेष्टा करती है, उतना ही कम वह उसकी तहतक पहुँचती है और जब वह फिर किसी बातपर मन लगाती है, तो वह बात याद आ जाती है। अतिक्लान्त और स्नायविक स्त्रियोंमें, कामोत्तेजनसे, कलेजेकी धड़कनके साथ जो चित्त-विभ्रम होता है और सभी तरहके काम-सम्बन्धी ज्यादतियोंसे पैदा होनेवाले लक्षण इसमें हैं।

पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है—"अमनोयोगी, निष्क्रिय रहती है, इतनेपर भी चुप बैठना

नहीं चाहती है।" इसका रोगी चुपचाप, एकान्तमें बैठा और गत-जीवनपर सोचा करेगा और जब कहा जाता है, तो उछल पड़ता है और तेजीसे तथा उत्तेजित रूपसे दौड़ जाता है और बिना किसी कारणके ही दरवाजोंमें धक्का दे देता है ; जब परिवारके मनुष्य या दोस्त नम्रतासे भी उससे बोलते हैं, तो यह मालूम होता है, कि वह पगली हो उठेगी। इस दवाकी रोग-वृद्धिमें रहनेवाली एक रोगिनीने मुझसे कहा—"राहमें गाड़ीमें, मुझसे बातें कीं और मैं ऐसी पागल हो उठी, कि मेरी इच्छा हुई कि कुछ उसके सरपर पटक दें।" वह अपने तई किसी विषयपर सोच रही थी और चाहती थी, कि कोई उसे दिक न करे। यह मिजाजकी एक प्रचण्ड दशा, उत्तेजनाकी एक प्रचण्ड दशा, समताका नाश है। वह कहती है—"मुझे ऐसा मालूम होता है, कि यदि कोई मुझसे बात करता या तंग करता है, तो मैं भाग जाऊँ।" जब अपने दोस्तोंसे मिलती है, तो उसमें ये ही भाव पैदा होते हैं। यह संयोग इसे आलस्य और शान्तिसे मानो जगा देता-सा मालूम होता है। इस दवामें अद्भुत बातें होती हैं। पाठ्य-ग्रन्थमें वर्णित लक्षण इतने अनिश्चित और विभिन्न रहते हैं, कि आप देख सकते हैं, कि परीक्षकोंने, जो उनका अनुभव होता है, वर्णन करनेकी चेष्टाकी है। इसकी अनुभूतियाँ बहुत-सी और अवर्णनीय हैं।

इसकी रोगिनी बहुत कम गर्म खूनवाली होती है। वह **पल्सेटिला**की रोगिनीकी तरह रहती है, गर्म खूनवाली, ठण्डा कमरा चाहती है, खुली हवामें घूमना चाहती है, सिवा उस समयके, जब खुली हवामें स्थान-च्युति बढ़ जाती है। खुली हवामें घूमनेपर माथेमें साधारणतः आराम पहुँचता है, खुली हवामें घूमनेपर रोग घटता है। सर-दर्द तथा बहुत-से अन्य उपसर्ग सर्दीसे, सर्द कमरेसे घटते हैं और गर्म कमरेमें रोग वृद्धि हो जाती है। गर्म कमरेमें श्वास-कष्ट होने लगता है। **एपिस, आयोडिन, कैलि-आयोड और लाइकोपोडियम** तथा **पल्सेटिला**की तरह ही मनुष्यसे भरे कमरेमें, थियेटरमें, गिरजामें रोगीको श्वास-कष्ट होने लगता है।

माथेके पिछले भागसे माथेके शिखर-देशतक एक दुर्बलताका भाव आता है। यह क्या है, यह वही बता सकता है, जिसे हुआ हो। कभी-कभी इसका वर्णन चुनचुनी या बिजलीकी लहरकी अनुभूतिकी तरह किया जाता है। माथेके पिछले भागसे एक हलकी चुनचुनी मस्तक-शिखरपर चढ़ती है और इसके साथ ही सरमें चक्कर आता है। जब आप इस विचारको जाँच करना चाहते हैं, तो वास्तवमें मनमें कुछ भी नहीं आता। बहुतकर तो ये बातें रोगी-शय्याके पास आपको देखनेके लिये मिलती हैं और ठीक जगहपर पहुँचनेके लिये आप सोचने लगते हैं। ललाटमें स्पष्ट सर-दर्द रहता है और इसके साथ ही दृष्टिकी भी बहुत अधिक गड़बड़ी रहती है, दृष्टिका लोप रहता है, कमरा अन्धेरा दिखाई देता है या आँखें ठीक पदार्थपर जमती नहीं। दृष्टिकी स्नायविक गड़बड़ी, आलोकातङ्क (Photophobia), पलकोंका ऐंठन, चक्षु-गोलकका हिलना और आँखकी, पलकोंकी और चक्षु-गोलककी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह, आँख उठना। बहुत बार तो माथेकी तकलीफके साथ आँखें भीतरकी ओर पलट जाती हैं, नाककी ओर पलट जानेवाली आँखकी ढेरी-दृष्टि (Convergent strabismus)। मूर्च्छा हो जानेका उपक्रम रहता है, साथ ही ललाटमें

दर्द होता है। इन सभी बतायी हुई बातोंसे यह मालूम हो सकता है, कि कितना अधिक असहिष्णु, असीम स्नायविक और गुल्म-वायु-ग्रस्त लिलियम-टिगका रोगी या रोगिनी होना चाहिये। ये बातें साधारणतः उनकी ही होती हैं, जो स्नायविक रहते हैं, जिनका हृत्पिण्ड फड़फड़ाता है, जिन्हें मेरुदण्डकी राहसे नीचेकी ओर दर्द होता है तथा कुछ न-कुछ जरायुकी स्थान-च्युतिकी बीमारी रहती है, जिसमें बहुत ज्यादा नीचेकी ओर खिंचाव अनुभव होता है। जब एक उपसर्ग मौजूद रहता है, तो दूसरा साधारणतः गायब रहता है; वे पर्यायक्रमसे होते हैं या वे सभी एक साथ ही हो सकते हैं।

दाहिने कोखवाली जगहपर दर्दके साथ, माथेमें एक विचित्र वहशतका भाव, मानो वह पगली हो जायगी।" वे परीक्षक ये उक्तियाँ पसन्द करते मालूम होते थे—"माथेमें पागल-पनका भाव, मानो वह पगली हो जायगी।" यह पागलपनका भाव, एक चित्त-विभ्रम है, मानो मन एकाग्र होनेके अयोग्य है। यह जो कि रोगी द्वारा पागलपनका भाव बतलाया गया है। यह कभी-कभी सरमें चक्करकी तरह होता है, मानो चीजें सब चक्कर खा रही हैं या उसका मन नष्ट हो जायगा। इसके बाद यह फिर भयङ्कर होकर आता है, फाड़नेकी तरह सर-दर्द, इसका वर्णन ललाटमें पागल बना देनेवाला दर्द हुआ है। वह सर-दर्द, जिसमें चित्त-विभ्रम रहता या मानो मन पागल हो उठेगा।

उदर, मल, मूत्र और काम यन्त्र, इस औषधका व्यवहार-क्षेत्र बनते हैं। सम्पूर्ण औदरिक यन्त्र पाकाशयसे नीचेकी ओर खिंच जाना चाहते हैं। रोगी तलपेट पकड़ रखना चाहता है, झूलता हुआ उदर। ऐसा मालूम होता है, कि वस्ति गह्वरके यन्त्र बाहर निकल पड़ेंगे। रोगीको लेट जाना और 'टी' का बन्धन बाँधे रहना पड़ता है। बगलसे उदरको पकड़ रखना चाहता है और सहारा देनेके लिये उसे ऊपर उठाये रखता है। यह कमजोरी या वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर खिंचावकी अनुभूति है, मानो समस्त पदार्थ योनि-पथसे बाह्य-जगतमें आना चाहते हैं।

इस दवामें बहुत जोरका पतला दस्त लगता है, सवेरे ही बिछावन छोड़कर भागना पड़ता है; उसे बहुत जल्दी करनी पड़ती है। आप इस सम्बन्धमें **सलफरसे** भ्रममें पड़ सकते हैं; क्योंकि लिलियम टिगमें भी माथेमें बहुत ताप रहता है, पाकाशयमें खालीपन तथा तलहत्थी और तलवेमें जलन। इसमें ऐसा रक्तामाशय है, जिसका **मर्क्युरियस**से प्रभेद करना बहुत मुश्किल होता है, बहुत ही ज्यादा कूथन, आम और रक्त रहता है। मल केवल आमके साथ रक्त मिला रहता है और कूथन बहुत ही ज्यादा और मलद्वारमें जलन भी **मर्क्युरियस-कोर**की तरह बहुत ज्यादा रहती है। यह खासकर रक्तामाशयके उन आक्रमणोंके लिये उपयोगिनी होती है, जैसा कि मैंने बताया है, वैसे स्नायविक रोगियोंको समय समयपर पुराने प्रदर्शनके रूपमें होता है। अब ऐसा न सोचिये, कि यह रोगिनी स्नायविक है, इसलिये दुर्बल या क्षुद्रकाय अथवा दुबली है; क्योंकि यह खासकर उनके लिये उपयोगिनी है, जो शिराओंसे भरी रहती हैं देखनेमें, थुलथुली, रक्तसे भरी, मांसल, सुदृढ़काय स्त्रियाँ जो बहुत ही स्नायविक रहती हैं और खासकर वयःसन्धि-कालके समय। प्रत्येक सर्दीके साथ बारम्बार रक्तामाशयका

उन स्त्रियोंपर आक्रमण होता है, जो वस्ति-गह्वर या उदरकी शिथिलता भोगती हैं, जैसा वर्णन किया गया है, वैसी मानसिक चिड़चिड़ी रहती है, कलेजा धड़कता और फड़कता है ; स्नायविक प्रकृति रहती है। ऐसे चित्रमें आपको **मर्क्युरियस** नहीं दिखाई देता है। यदि यह केवल रक्तामाशय रहता, तो मैं नहीं कह सकता, कि यह किसका है। ये सभी आमाशयिक प्रदर्शक **गाइडिङ्ग सिम्पटम्स** नामक ग्रन्थके लिये रख छोड़े गये हैं। इतनेपर भी मैंने वारम्बार इनकी तसदीक होते देखा है। इसके अलावा इसमें अत्यन्त कठोर और कष्ट-दायक कब्ज भी रहता है।

इसमें मूत्राशय और मलान्त्रका कूथन है। पेशाब करनेका तथा पाखानेका वेग। बहुत वेगके साथ बहुत देरतक बैठी रहती है ; पर बहुत देरतक काँखनेपर भी पाखाना बिलकुल नहीं होता। बार-बार पाखाना लगता है, साथ ही एक ऐसी अनुभूति रहती है, कि मलान्त्रमें एक गोला है। जब जरायु गात्र मलान्त्रकी ओर घूम जाता है, तो ऐसा अनुभव होता है, मानो मलान्त्र मलसे भरा है ; इससे पाखानेका वेग होता है तथा रोगी बैठा रहता और जोर लगाता है और मूत्राशय तथा मलान्त्रकी अकड़न असह्य होती है। बार-बार पाखाना लगता है ; पर मलान्त्रमें मल नहीं रहता। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि ऐसे लक्षणोंसे निर्देशित होनेवाली औषधि, बहुत कम समयमें रोगीको आराम पहुँचायगी ; पर आप पूछ सकते हैं, कि क्या यह दवा जरायुको ठीक स्थानपर ला देगी? हाँ, इस दवाका प्रयोग होनेके बाद रोगिनीकी तकलीफ दूर हो जायगी और यह तकलीफ देनेवाली दशाका उसे अनुभव नहीं होगा। पाकाशय नियमबद्ध हो जायगा, पेशाबकी तकलीफ आराम हो जायगी तथा रोगिनी धीरे-धीरे स्वास्थ्यपूर्ण दशामें आ जायगी और इसके बाद जरायु भी अपनी जगहपर आ जायगा।

"बराबर पाखानेकी इच्छाके साथ मलान्त्रमें दबाव" जलनके साथ बाहर निकलनेवाले अत्यन्त दुःसाध्य बवासीरके मसेको भी लिलियम टाइग्रिनमने आरोग्य किया है। "प्रसवके बाद बवासीर, छूनेसे बहुत दर्द, पाखाना हो जानेके बाद नीचेकी ओर खिंचावका दर्द, मानो योनि-पथसे समस्त बाहर निकल पड़ेगा।" इसका यह मतलब नहीं है, कि प्रसवके बाद होनेवाले बवासीरके लिये ही हम इसका प्रयोग करेंगे ; पर इसने ऐसी रोगी प्रकृतिवालोंका बवासीर आरोग्य किया है और केवल बवासीर ही नहीं, बल्कि शिथिल जरायु और योनि भी आरोग्य कर दी है।

सभी औदरिक मांस-तन्तुओंमें एक पाक्षाघातिक शिथिलता मौजूद रहती है। मैंने अन्य अंशोंके साथ मौका पाकर जरायुके लक्षणोंका भी वर्णन किया है। "ऋतु-स्राव थोड़ा, केवल चलनेके समय स्राव होता है।" इससे आपका ध्यान **पल्स**की ओर चला जायगा, ऋतु-स्राव बहुत थोड़ा होता है, क्योंकि **पल्सेटिला**की रोगिनी ऐसी ही स्नायविक प्रकृतिकी होती है ; **पल्स**में थोड़ा ऋतु-स्राव होता है और खुली हवामें आराम पहुँचता है। इसमें भी वस्ति-गह्वरमें बहुत नीचेकी ओर खिंचाव है, यद्यपि उतना अधिक नहीं, जितना नियमानुसार इस दवामें है। पर इस दवामें **पल्सेटिला**से विभिन्न बहुत कुछ है।

इसके बाद हृत्पिण्डके लक्षण आते हैं। "ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड कसकर पकड़ लिया गया है या फन्देमें कस दिया गया है, मानो बहुत जोरसे कसकर पकड़ लिया गया है।" हृत्पिण्डमें संकोचनका दर्द" "ताजी हवामें सर्दी लगती है, पर सरका चक्कर घट जाता है।

पीठ और मेरुदण्डमें नीचेकी ओर दर्द, कम्पनके साथ उपदाहित और असहिष्णु मेरुदण्ड। इसका प्लैटिनासे बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है।

लाइकोपोडियम
(Lycopodium)

लाइकोपोडियम एक सोरा-नाशक, उपदंशक-नाशक और प्रमेह-नाशक औषधि है और इसका कार्य-क्षेत्र बहुत विस्तृत और गहरा है। यद्यपि इसकी गणना जड़ पदार्थों की श्रेणीमें की गयी है तथा केवल ऐलोपैथिक गोलियाँ बाँधनेके व्यवहारमें आने योग्य ही माना गया है, तथापि हैनिमैन इसको व्यवहारमें लाये और शक्तिकृत कर इसकी शक्ति बढ़ा दी। यह हैनिमैनका एक स्मृति-स्तम्भ है। यह जीवनमें गहरायीतक प्रवेश कर जाता है तथा कोमल तन्तुओंमें, रक्तवाहिनियोंमें, अस्थियोंमें, यकृत, हृत्पिण्ड और सन्धियोंमें असीम परिवर्त्तन लाता है। मांस-तन्तुओंका परिवर्त्तन भी विचित्र है। अस्थि-क्षत, फोड़े, फैलने-वाले जख्म तथा बहुत क्षीणताकी प्रवणता भी इसमें है। **शरीरके दाहिने पार्श्वमें** ही लक्षणोंका प्राधान्य-विशेष रहता है और वे **दाहिनेसे बायीं ओर जा सकते हैं या ऊपरसे-नीचे उतर सकते हैं** अर्थात् मस्तकसे वक्षपर। रोगी ऊपरकी ओर दुबला होता जाता है, खासकर गर्दन; पर निम्न-शाखाएँ खासी उन्नत और परिपोषित रहती हैं। बाहरी तो **गर्म वायु-मण्डलसे असहिष्णु** रहता है, जब कि माथे और मेरुदण्डके उपसर्ग रहते हैं। माथेके उपसर्ग भी बिछावनके तापसे और तापसे बदतर हो जाते हैं तथा परिश्रमसे उत्तप्त हो जानेपर। रोगीको सर्दी सहन नहीं होती और जैव-तापकी कमी रहती है तथा ठण्ड और ठण्डी हवासे तथा ठण्डे खाद्य और पेयसे सार्वाङ्गिक रूपसे बदतर हो जाता है। माथा और मेरुदण्डको छोड़कर अन्य स्थानके दर्द गर्मीसे घटते हैं। परिश्रमसे लाइकोपोडियमके रोगीकी सार्वाङ्गिक रोग-वृद्धि हो जाती है। वह भर्राया, कष्ट-ग्रस्त हो जाता है तथा परिश्रमसे श्वास-कष्ट बढ़ जाता है। वह ऊँचे नहीं चढ़ सकता, तेजीसे चल नहीं सकता। हृत्पिण्डके लक्षण बढ़ जाते हैं तथा परिश्रमसे उत्तप्त हो जानेपर श्वास-कष्ट बढ़ जाता है। तापके प्रयोगसे कभी-कभी प्रादाहित स्थानोंमें आराम पहुँचता है। ताप-प्रयोगसे कण्ठके लक्षण अमूमन घट जाते हैं या गर्म चाय या गर्म शोरवा पीनेसे। **गर्म** पेयोंसे पाकाशयका दर्द अकसर आराम हो जाता है या पाकाशयमें गर्म पदार्थ लेनेपर। स्नायविक उत्तेजना और सुस्ती भी स्पष्ट रहती है।

वातज वेदना और दूसरे रोगोंमें लाइकोपोडियमके रोगीको हिलने-डोलनेपर **आराम मिलता है।** वह बहुत ही बेचैन रहता है, हमेशा करवट बदला करता है और यदि दर्द

और यन्त्रणाके साथ प्रदाह रहता है तो **रोगी बिछावनकी गर्मीसे अच्छा रहता है** और हिलने-डोलनेसे आराम पाता है और वह रातभर छटपटाया करता है। वह करवट बदलता है, नयी जगहपर जाता है और सोचता है, कि अब सो जायगा ; पर रातभर बेचैनी बनी रहती है। सरके उपसर्गोंके साथ वह ठण्डी हवा, ठण्डी जगहमें रहना चाहता है। यह सत्य है, कि गर्म हो जाने योग्य गतिसे सर-दर्द बदतर हो जाता है ; पर केवल गतिसे नहीं। लेट जाने और **कमरेकी गर्मीसे** सर-दर्द बदतर हो जाता है तथा **ठण्डी हवामें और हिलने-डोलनेपर अच्छा रहता है** ; पर जबतक कि चलने-फिरने और व्यायामसे वह उत्तप्त न हो जाये, जब कि सर-दर्द बदतर हो जाता है। लाइकोपोडियमके सम्बन्धमें यह याद रखना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ; क्योंकि यह प्रभेद व्यंजक स्वरूप प्रकट कर सकता है। गर्म कपड़ा लपेट लेने और गर्म बिछावनसे मस्तकके लक्षण बदतर हो जाते हैं।

लाइकोपोडियमकी तकलीफें बँधे **समयपर** बदतर हो सकती हैं अर्थात् **शामको ४ बजेसे ८ बजेतक**। नयी बीमारियोंमें और अकसर पुरानी बीमारियोंमें इसी समय रोग-वृद्धि होती है। लाइकोका जाड़ा और बोखार इसी समयपर बदतर होता है और सन्निपातिक (टाइफायड) तथा आरक्त ज्वर (Scarlet fever) में तो खासकर ४ से ८ बजे राततक रोगीकी दशा बदतर रहती है। गठियाके आक्रमणोंमें, वातज ज्वरोंमें, प्रादाहिक दशाओंमें, नियुमोनियामें, नयी सर्दीमें, जो बीमारियाँ लाइकोपोडियम मांगती हैं, उनमें इस दवापर उस अवस्थामें ध्यान देना आवश्यक है, जब ४—८ बजे शामको निश्चित रोग वृद्धि होती हो।

लाइकोपोडियमका रोगी **आध्मान-ग्रस्त** (Flatulent) रहता है, ढोलकी तरह पेट फूला रहता है, इतना कि वह मुश्किलसे साँस ले सकता है। वक्षोदर मध्यस्थ-पेशी ऊपर चढ़ जाती है, हृत्पिण्डकी जगह और फेफड़ेपर दबाव डालती है, जिससे कि उसका कलेजा धड़कता है, मूर्च्छा आती है और श्वास कष्ट होता है। लाइकोपोडियमके रोगीके लिये यह कह देना कुछ असाधारण नहीं है, कि "जो कुछ मैं खाता हूँ, वही वायुमें परिणत हो जाता है।" एक ग्रास खानेपर भी उसका पेट वायुसे फूलने लगता है और तन जाता है, जिससे कि फिर वह कुछ खा नहीं सकता। वह कहता है, कि एक ग्रास खानेसे ही कण्ठतक भर जाता है। जब उसका तलपेट तना रहता है, तो वह इतना स्नायविक रहता है, कि वह शोर-गुलकी आवाज सहन नहीं कर सकता। कागजकी खड़खड़ाहट, घण्टोंकी आवाज या दरवाजेकी भड़भड़ाहट उसके भीतर प्रवेश कर जाती है तथा **ऐण्ट्रिम-क्रूड, बोरैक्स** और **नेट्रम-म्यूरकी** तरह उसे मूर्च्छा आने लगती है। यह साधारण दशाएँ सभी बीमारियोंमें रहती हैं, वे नयी हो या पुरानी। ज्ञान-केन्द्रकी एक उत्तेजना-प्रवण दशा रहती है, जिसमें पदार्थ गड़बड़ी पैदा कर देता है। छोटी-छोटी बातें उसे रुष्ट और कष्टपूर्ण बना देती हैं।

लाइकोका रोगी सीपी नहीं खा सकता। इससे वह बीमार हो जाता है। सीपी लाइकोके रोगीको विष-जैसा हो जाता है, जैसा कि प्याज थूजाके रोगियोंके लिये होता है।

आक्जैलिक एसिडका रोगी स्ट्रावेरीका फल नहीं खा सकता। यदि स्ट्रावेरी, टोमाटो या सीपी खानेके कारण किसी रोगीको आप बीमार होते पायें और आपके पास कोई होमियोपैथिक दवा न हो तो आपको यह याद रखना चाहिये, कि पनीर स्ट्रावेरीको या टोमाटो अथवा सीपीको कई मिनटोंमें ही पचा देगा।

चर्मपर जखम होते हैं। ये दर्द-भरे जखम होते हैं। चर्मके नीचे गोश्तखोरे जखम, चर्मके नीचे फोड़े, सौत्रिक रोग। (Cellular troubles)। पुराने जखम जल्द न भरनेवाले होते हैं, उनमें झूठा दाना भरता है, दर्द, जलन, डङ्क मारने और खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है, अकसर ठण्डी चीजोंके प्रयोगसे आराम पहुँचता है और गर्म पोल्टीससे बढ़ जाता है। लाइकोपोडियमका यह सार्वाङ्गिक लक्षण है, कि गर्म पोल्टीस और गर्मीसे आराम पहुँचता है, घुटनेका दर्द, पकनेवाली दशा और गठियाकी तकलीफ गर्म लेपोंसे घटती है। किसी गैरमामूली गर्म बिछावनमें और कमरेमें पित्ती निकल आती है। या तो गांठ-गांठके रूपमें या लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरोंके रूपमें पित्ती निकल आती है; खासकर तापमें और बहुत अधिक खुजलाती है। लाइकोपोडियममें चर्मपर उद्भेद होते हैं, जिनमें भयङ्कर खुजली होती है। चकत्ते और भूसीवाले उद्भेद, तर उद्भेद और सूखे उद्भेद, भौंके चारों तरफ उद्भेद, आँखके चारों ओर उद्भेद, कानके पीछे, नाककी दीवारके नीचे तथा जननेन्द्रियपर उद्भेद, फटे उद्भेद, हाथपर पुराना अकौताकी तरह खून बहनेवाले उद्भेद। चर्म मोटा और कड़ा हो जाता है। पुराने जखम और फुन्सियोंकी जगह कड़ी पड़ जाती हैं और गांठ-गांठका रूप धारण करती है जो बहुत दिनोंतक बनी रहती है। चर्म अस्वस्थ दिखायी देता है और इसपर आसानीसे रूसी जमती हैं; घाव भरना नहीं चाहते। चर्म-पटलके घावोंमें इस तरह पीव होने लगता है, मानो उनमें खीलें हैं और यह पीव चर्मके नीचे नीचे होता है। जखमोंसे खून बहता है और बहुत ज्यादा मात्रामें गाढ़ा, पीला, बदबूदार, हरा पीव बनता है। सैंकर (गर्मीके घाव) तथा कोमल क्षत, उपदंशके जखम (Chancroid) की सदृशता अकसर लाइकोपोडियममें दिखाई देती है।

लाइकोकी दशाका जब विश्लेषण किया जाता है, तो सब जगह कमजोरी मालूम होती है। शिराएँ और धमनियोंकी बहुत ही निम्न दशा, थोड़ा बल और दुर्बल रक्तका दौरान, स्थान-स्थानपर सुन्नपन, किसी एक अंगका पतला पड़ जाना; अंगुलियाँ तथा अंगूठोंका मृत्युपन। टकटकी लगाकर देखते रहना तथा प्रत्यङ्गोंसे काम न ले सकना। प्रत्यङ्गोंकी कुरूपता और कदाकारिता। प्रत्यङ्गोंका काँपना।

लाइकोपोडियमके **मानसिक** लक्षण भी बहुत-से हैं। इसका रोगी क्लान्त रहता है, उसके मनकी भी क्लान्त दशा, एक पुरानी थकान, सुलक्कड़पन, कोई नया काम करनेकी इच्छा नहीं होती, नये रूपमें सामने आनेसे अनिच्छा, अपना काम करनेकी इच्छा न होना। डरा करता है, कि कुछ होगा अथवा वह कुछ भूल जायगा। सर्वसाधारणमें आनेका भय लगातार बढ़ता ही जाता है, इतनेपर भी भय, समय-समयपर या एकान्तका भय रहता है। अकसर काम-काजी आदमियोंको, जैसे कि वकील और मन्त्री, जिन्हें सर्वसाधारणमें आना

पड़ता है, उनमें एक अपूर्णताका भाव आ जाता है, अपना काम कर सकनेकी अयोग्यताका भाव; यद्यपि उन्हें कई बरसोंसे यह काम करनेका अभ्यास रहता है। वकील कचहरीमें हाजिर होनेकी बात सोच नहीं सकता, वह कालक्षेप करता है, वह तबतक देर करता रहता है, जबतक उसे बाध्य होकर हाजिर न होना पड़ता है; क्योंकि उसे भय रहता है, कि वह अटक जायगा, भूल कर बैठेगा, वह भूल जायगा; पर जब वह काम उठा लेता है, तो बहुत आसानी और आरामसे काम करता जाता है। यह **साइलिसिया**का भी एक आश्चर्यजनक स्वरूप है। इन दोनोंकी तरह इतना स्पष्ट भय और किसी भी दवामें नहीं है।

लाइकोपोडियममें धर्मोन्माद भी है। जिसका आरम्भ बहुत ही धीमा और सरल होता है, एक तरहकी विषादग्रस्तवाली दशा। यह धार्मिक विषाद बढ़ता ही जाता है, यहाँतक कि वह सिर्फ बैठा-बैठा सोचा करता है। संग-साथकी उसे बहुत कम इच्छा होती है, पर इतनेपर भी एकान्तसे भय मालूम होता है। "मनुष्य और एकान्तसे भय, चिड़चिड़ापन और उदासीनता।" पर यह पुरुषोंका भय हमेशा स्त्रियोंमें नहीं रहता। यह पुरुषोंका भय है और जब लाइकोपोडियमके रोगीमें यह पूरा-पूरा हो जाता है तो आप देखेंगे, कि रोगिनी नये मनुष्योंका भय करती है या दोस्तों और मिलनेवालोंके आनेसे भय खाती है; वह केवल उनके साथ रहना चाहती है, जो उसे हमेशा घेरे रहते हैं; एकदम अकेली नहीं रहना चाहती; यह अनुभव करती है, कि घरमें कोई दूसरा भी है, पर उसका साथ नहीं करना चाहती, बातचीत करना नहीं चाहती या जबर्दस्ती कोई काम करना चाहती है; किसी तरहका श्रम नहीं करना चाहती, इतने पर भी जब उससे जबर्दस्ती कोई काम कराया जाता है, तो उसे आराम पहुँचता है। "एकान्त-प्रियता, अकेली रहना चाहती है।" अब जरा इसका और भी खुलासा करने दीजिये। यह एकान्त-प्रियता इसलिये है, कि रोगिनी बोलना नहीं चाहती, चुप रहना चाहती है, इतनेपर भी जैसा मैंने पहले कहा है, यह जानकर उसे बहुत आनन्द होता है, कि घरमें कोई दूसरा भी है और वह अकेली नहीं है। वह एक छोटे-से कमरेमें एकदम अकेली रहना चाहती है, जिसमें वह एकदम अकेली रहे, पर इतनेपर भी एकदम एकान्तमें नहीं रहना चाहती। यदि घरमें दो सटे हुए कमरे हों, तो आप लाइकोके रोगीको उनमेंसे एकमें जाकर रहते देखेंगे, पर यदि दूसरेमें कोई रहे तो वह बहुत प्रसन्न रहता है।

यदि कोई मित्र आ जाता है या जान-पहचानवाला मिल जाता है, तो लाइकोपोडियमका रोगी अकसर रोता है। एक अस्वाभाविक उदासी, रुलाईके साथ, कोई उपहार लेनेके समय इसके रोगीमें आ जाती है। जरा भी प्रसन्नता होनेपर वह रोती है, इसलिये हम देखते हैं, कि लाइकोपोडियमका रोगी बहुत ही स्नायविक, असहिष्णु, भावपूर्ण रोगी रहता है। यह देखिये—"इतना असहिष्णु कि धन्यवाद देनेपर चिल्लाता है।"

निम्न श्रेणीके ज्वरोंमें जब वह बीमार पड़ता है, तो प्रलाप, यहाँतक कि बदहवासी भी रहती है। वह हवामें खयाली चीजें पकड़ा करता है, हवामें मक्खी तथा अन्य सभी प्रकारके पदार्थ देखा करता है। "अलौकिक प्रसन्न और साधारण बातपर भी रोता है।"

एक उन्मादकी दशा। "निराशा" लाइकोपोडियमका रोगी सवेरे उदासीसे जाग पड़ता है। इसमें उदासी और विषन्नता है। संसारका अन्त हो सकता है, समस्त परिवार मर जा सकता है या घर जल जा सकता है। उसे कुछ भी प्रसन्न करनेवाला नहीं दिखायी देता, भविष्य अन्धकारमय दिखायी देता है। थोड़ा-सा भी चलने-फिरनेपर यह भाव चला जाता है। यह उन्मादवाली दशाके पहले होता है और अन्तमें आत्मघात करनेवाली दशा आती है, जीवनसे घृणा। अब देखिये यह हत्याशक्तिपर क्रिया करती है और वास्तवमें मनुष्यकी जीवन-धारणकी इच्छा ही नष्ट कर देती है। जो मनुष्यमें पहले है, वह उसकी जीवित रहनेकी इच्छा, टहलनेकी इच्छा और कुछ होनेकी इच्छा, चाहे वह कितना ही छोटा हो, जब यह नष्ट हो जाती है, तब हम देखते हैं, कि एक कैसी अद्भुत चीज नष्ट हो गयी है। वही मनुष्य फिर न रहनेकी इच्छा करता है। यह प्रत्येक उस पदार्थका परिवर्त्तन है जो मनुष्य बनाता है, इच्छा-शक्तिका नाश। "आशंका, श्वासकष्ट और भयपूर्णता।" "आशंकाजनक भाव मानो वह मरना ही चाहता है।" "आत्म-विश्वासका अभाव, अनिर्णयता, डरपोकपन, त्याग" अपने तथा प्रत्येक पदार्थपर अविश्वास। "नरद्वेषी, अपने बच्चोंसे भी भागता है।" "अविश्वासी, सन्देही और दोष ढूँढ़नेवाला।" "दर्दकी अत्यधिक असहिष्णुता; रोगी उसके बगलमें रहता है।"

लाइकोके रोगीको सामयिक सर-दर्द होता है तथा पाकाशयिक तकलीफोंके साथ सर-दर्द भी सम्मिलित रहता है। यदि खानेका समय निकल जाता है, तो उसे वमन और सर-दर्द हो जाता है, उसे नियमित रूपसे खाना पड़ता है या उसे सदा बना रहनेवाला सर-दर्द होता है। यह बहुत कुछ **कैक्टस**की तरहका सर-दर्द है। **कैक्टसमें** एक प्रकारका रक्तसञ्चयी सर-दर्द होता है, जो एकदम बढ़ जाता है, चेहरा तमतमा उठता है, यदि रोगी बँधे समयपर नहीं खाता। इसका एक प्रभेदक स्वरूप यह है, कि लाइकोपोडियमके सर-दर्दमें, यदि वह कुछ खा लेता है, तो सर दर्द अच्छा हो जाता है, पर **कैक्टस**का सर-दर्द भोजनसे बढ़ जाता है। लाइकोपोडियम और खासकर **फास्फोरस** और **सोरिनममें** बहुत भूखसे सर-दर्द होता है। आक्रमण होनेके समय या आरम्भमें, एक बेहोशी और खालीपन, भूखका भाव आ जाता है, जिसे खा लेना भी तृप्त नहीं कर सकता। जब भूख और सर-दर्द सम्मिलित रहते हैं, तो **फास्फोरस** और **सोरिनम**की ऐसी ही प्रकृति रहती है। लाइकोपोडियमका सर-दर्द तापसे बढ़ जाता है, बिछावनकी गर्मीसे बढ़ जाता है और लेटनेपर बढ़ जाता है; सर्दीसे घटता है, ठण्डी हवासे तथा खिड़कियाँ खुली रहनेपर घटता है। दुबले-पतले क्षीणता-प्राप्त लड़कोंको बहुत देरतक सर-दर्द हुआ करता है। जब-जब इन बच्चोंको सर्दी लगती है, उन्हें बहुत समयतक टपकका रक्तसञ्चयी सर दर्द होता है और हर महीने, हर दिन कुछ-न-कुछ दुबले ही होते जाते हैं, खासकर उनका चेहरा और गर्दन पतला पड़ जाता है। यही तकलीफ उस समय भी मौजूद रहती है, जब कोई संकरे वक्षवाले लड़केको सूखी, तङ्ग करनेवाली खाँसी आने लगती है, बलगम नहीं निकलता और उसकी गर्दन तथा चेहरा पतला पड़ जाता है। यह दवा खासकर इन क्षीण बच्चोंके लिये उपयोगिनी होती है, जिन्हें सूखी खाँसी या बहुत दिनोंका सर-दर्द रहता है। जो बच्चे न्युमोनिया या

ब्राङ्काइटिसके वाद दुबले पड़ जाते हैं, गर्दन और चेहरा क्षीण हो जाता है, जरा भी कारण होनेपर सर्दी लग जाती है, गर्म हो जानेपर सर-दर्द होने लगता है, रातके समय सर-दर्द होता है तथा एक तरहका रक्त-सञ्चय होता है, जिसका मनपर कुछ-न-कुछ प्रभाव होता है, जिसमें वे घबड़ाकर नींदसे जाग पड़ते हैं। बच्चे नींदमें चिल्ला उठते हैं, डरे हुए जागते हैं, घबड़ाये दिखायी देते हैं, कुछ देरतक माता-पिताको या धाय और परिवारवालोंको नहीं पहचानते, जवतक कुछ क्षणके वाद उनकी बुद्धि ठिकाने आ जाती है और तव वे समझते हैं, कि वे कहाँ हैं और सोनेके लिये फिर लेट जाते हैं, कुछ देर बाद ही वे फिर भयसे जाग उठते हैं, विचित्र और घबड़ाये दिखायी देते हैं। यह स्वयं ही अपनेको बताता है। सर-दर्द टपक और दबावकी तरह होता है, मानो माथा फट जायगा, पर यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना वह तरीका जिससे यह उत्पन्न होता है, उनके कारणकी परिस्थिति, बच्चा जो काम करता है और वह विषय कि वे ठण्डसे अच्छे तथा शोर-गुल, बातचीतसे और ४ बजेसे ८ बजे शामतक बदतर रहते हैं और ऊपरसे नीचेकी ओर दुबले पड़ते जाते हैं। यह दर्दके ढंगकी अपेक्षा जो रोगीको मालूम होता है, ज्यादा महत्वपूर्ण है, पर यदि वह दर्दका ढंग बताता है, तो यह टपक, दबाव या फाड़नेकी तरह या भरापनकी तरह रहता है।

माथेकी त्वचामें थक्के-के-थक्के उद्भेद होते हैं, चिकने थक्के ; साथ ही केश झड़ जाते हैं। चेहरेपर धब्बे और कानके पीछे अकौताकी तरह उद्भेद, जिनसे रक्त बहता है और पानीकी तरह रस चूता है, कभी कभी पीला पानीकी तरह। कानके पीछेसे कानके ऊपर अकौता फैल जाता है तथा मस्तककी त्वचातक चला जाता है। बच्चोंके अकौताका अध्ययनको लाइकोपोडियम एक बहुत ही महत्वपूर्ण दवा है। दुबले, भूखे, क्षय-प्राप्त बच्चोंको, कुछ-न-कुछ माथेकी तकलीफके साथ, जैसा कि बताया जा चुका है अकौता, जिससे कानके पीछेसे तर स्राव होता है, पेशाबमें लाल बालूकी तली जमती है, चेहरा झुर्री पड़ा दिखायी देता है, एक तरहकी सूखी तंग करनेवाली खाँसी रहती है, वे बच्चे जो ओढ़ना उतार फेंकते हैं, जिनका बायाँ पैर ठण्डा रहता है तथा दूसरा गर्म, लालचीकी तरह भूख रहती है, बहुत खाते हैं, समयपर गैर-मामूली भूख रहती है और बहुत प्यास रहती है और इतनेपर भी दृढ़तासे क्षीणकाय होते जाते हैं, यह अकसर लाइकोपोडियमसे आरोग्य हो जाता है। पहले तो इससे बहुतसे उद्भेद निकल आयँगे, पर अन्तमें यह दब जायगा और बच्चा स्वस्थ हो जायगा। एक लक्षणसे माथेका बहुत अधिक सम्बन्ध है अर्थात् पेशाबमें लाल बालू। जबतक लाल बालू काफी मात्रामें आती रहती है, रोगी इन रक्तसञ्चयी सर-दर्दोंसे मुक्त रहता है, पर जब पेशाब पीला हो जाता है तथा लाल बालूकी तली नहीं रहती, तब फटने, दबानेकी तरह सर-दर्द होने लगता है, जो कई दिनोंतक होता रहता है। यह कहा जा सकता है, कि यह मूत्र-विकारके कारण सर-दर्द है ; पर आप इसे जो चाहें कहें, यदि लक्षण मौजूद है, तो दवा काम करेगी ही। पुराने गठियाकी धातु-प्रकृतिवालोंमें जब सर-दर्द बहुत स्पष्ट रहेगा, तो शाखा-अंगोंका वात घट जायगा या पर्यायरूपसे ऐसा ही होगा। शाखा-अंगोंमें जब दर्द नहीं रहता, तभी सर-दर्द होता है। इसके अलावा, जब गठियाकी

दशामें पेशाबमें लाल बालूकी तली रहती है, गठिया माथेमें हो या बाहरी शाखाओंमें, गठियाकी दशा गायब हो जायगी ; पर जब कभी उसे सर्दी लग जाती है, तो दर्दकी वृद्धिके साथ स्राव रुक जाता है। लाइकोपोडियमके सर-दर्दका एक दूसरा लक्षण भी है, जिसका सम्बन्ध सर्दीसे रहता है। नयी सर्दीके कारण जब सर्दी रुक जाती है, तो सर-दर्द बढ़ जाता है। लाइकोपोडियमके रोगीको नाकसे अकसर गाढ़े, पीले स्रावकी तकलीफ हुआ करती है। नाक पीली, हरी खरोंटोंसे भरी रहती है, सवेरे नाक छिड़कनेपर निकलती है और कण्ठसे खखारनेपर निकलती है। अब, जब रोगीको सर्दी लग जाती है, तो गाढ़ा स्राव बहुत कुछ रुक जाता है, वह छींकने लगता है और नाकसे पतला स्राव होता है। इसके बाद लाइकोपोडियमका सर-दर्द होता है, दबावकी तरह दर्दके साथ, भूखके साथ और अन्तमें नाककी सर्दी चली जाती है और गाढ़ा पीला स्राव होने लगता है और सर-दर्द दब जाता है।

लाइकोपोडियममें बहुत-से **चक्षुके** लक्षण हैं, पर उनमें सबसे प्रधान है, आँखकी सर्दीकी दशा। ये लक्षण इतने अधिक हैं, कि उनसे आँखकी कोई भी सर्दीकी दशा प्रकट होती है, इसलिये आप केवल आँखोंके लक्षणको ही अलग नहीं कर सकते। लाल आँखोंके साथ और बहुत ज्यादा स्रावके साथ प्रादाहिक दशा, चक्षु-श्वेत पटल और पलकका जखम और दानेदार पलकें।

कानोंके लिये भी लाइकोपोडियम एक महत्वपूर्ण दवा हो जाती है ; क्योंकि वह क्षीण हुआ दुबला बच्चा, सूखे झुर्री पड़े चेहरे और सूखी खाँसीके साथ, जबसे आरक्त ज्वरका आक्रमण हुआ है, उसे कानसे स्राव होने लगा है, स्राव गाढ़ा, पीला और बदबूदार होता है, श्रवण-शक्ति घट जाती है। यदि आरक्त ज्वरमें ठीक-ठीक दवा पड़ गयी, तो कानकी कोई तकलीफ न रह जायगी ; क्योंकि आरक्त-ज्वरमें खासकर कानकी तकलीफ जरूर ही हो, ऐसा कुछ नहीं है। यह आरक्त-ज्वरका कोई अंश नहीं है, पर बच्चेकी धातुगत प्रकृतिपर निर्भर है। लाइकोमें कष्टदायक उद्भेद होते हैं, मध्यकर्णका कर्ण प्रदाह, कानमें, फोड़ा, इसके साथ ही कानके चारों तरफ और कानके पीछे अकौता रहता है।

सरके साथ **नाकके** लक्षण मैंने आंशिक रूपसे वर्णन किये हैं रोग अकसर बचपनमें ही उत्पन्न हो जाता है। छोटा बच्चा पहले नाकसे एक विचित्र ढङ्गकी घरघराहट करता हुआ पड़ा रहता है और इसके बाद वह केवल मुँहसे साँस लेगा, क्योंकि नाक रुक जाती है। यह कई दिन और कई महीनोंतक होता रहता है। बच्चा केवल मुँहसे साँस लेता है, जब वह रोता है तो तीखी आवाजमें रोता है, जैसा कि नाकमें ठेपी बैठ जानेपर पाया जाता है। यदि आप देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि नाक पीबकी तरल पदार्थसे भरी है और कण्ठसे श्लेष्मा पीब मिला स्राव निकला करता है। नाकका बहुत रुकना लाइकोपोडियमका पुराना दृश्य है। बच्चेको यह तकलीफ तबतक बनी रहती है, जबतक कि बड़े-बड़े खरोंट नहीं जमने लगते, पीले, कभी काले, कभी हरापन लिये खरोंट और नाकसे खून निकलता है। नाकसे रक्त-स्राव होनेके साथ जो कष्टदायक सर-दर्द होता है, उसके लिये यह बहुत

उपयोगी है, उन रोगियोंके लिये जिनकी गर्दनका मांस क्षय हो जाता है। यह अद्भुत और अगण्य मालूम होगा, कि लाइकोपोडियमसे गर्दनमें पतलापन आ जायगा तथा चेहरा दब जायगा, जब कि निम्न-प्रत्यङ्ग एक बहुत ही उत्तम दशामें रहेंगे। जवानोंकी बहुत दिनोंकी पुरानी सर्दीमें उन्हें हमेशा नाक झाड़ते रहना पड़ता है। वह रातमें नाकसे साँस नहीं ले सकते; क्योंकि श्लैष्मिक-झिल्लियोंके सभी अंशोंमें खरोंट जम जाती हैं। अकौताके साथ पपड़ी-भरे नथुने, साथ ही चेहरा और नाकमें रसस्रावी उद्भेद। श्लेष्माका स्राव **कैलि-बाइक्रोम**की तरह गाढ़ा और लसदार होता है।

चेहरा दबा हुआ, रोगी, पीला, अकसर झुर्री-पड़ा, सिकुड़ा और क्षीण हुआ रहता है। बद्धमूल-वक्षकी बीमारियोंमें, ब्राङ्काइटिस या नियुमोनियामें, जहाँ वक्ष श्लेष्मासे भरा हो, यह देखनेमें आयगा, कि चेहरा और ललाट दर्दसे शिकनदार हो रहा है तथा **श्वास लेनेकी चेष्टा करनेपर नासाप्राचीर हिलती है**। यह सब तरहके श्वासकष्टोंमें होता है। हमें ऐसा ही कुछ **ऐण्टिम-टार्ट**में दिखाई देता है, काले नथुने चौड़े खुले रहते हैं और हिलते हैं। **ऐण्टिम टार्ट**में कमरे भरमें श्लेष्माकी घरघराहट सुन पड़ती है और रोगी कष्टमें पड़ा मालूम होता है, पर यदि आप पलङ्गपर पड़े रोगीकी नाक हिलते देखें तथा ललाट सिकुड़ जाये, साथ ही वक्षमें घरघराहट हो या सूखी खुसखुसी खाँसी हो और बलगम न निकलता हो, तो परीक्षाके विशेषत्व अकसर आपके मनमें जम जायँगे, कि यह लाइकोपोडियमका रोगी है। नियुमोनियाकी रसस्रावी दशामें, यकृद्भाव प्राप्ति (Hepatization) की अवस्थामें, लाइकोपोडियम रोगीकी जान बचा सकता है। यकृद्भाव प्राप्तिके कालमें **फास्फोरस** और **सल्फर**का इससे निकटस्थ सम्बन्ध है। **सल्फर**का रोगी ठण्डा रहता है; प्रतिक्रियाकी प्रवणता ही नहीं रहती; उसे वक्षमें भार मालूम होता है और वक्षकी परीक्षा करनेपर मालूम होता है, कि यकृद्भाव प्राप्ति (Hepatization) बहुत स्पष्ट है। वह चुपचाप पड़ा रहना चाहता है और मरनेकी ही तैयारी रहती है। **सल्फर** उसे सहायता देगा। इसमें नाक नहीं हिलती, न लाइकोपोडियमकी तरह ललाटपर झुरियाँ पड़ जाती हैं। **स्ट्रैमोनियम**के मस्तिष्क-रोगोंमें भी ललाटमें सिकुड़न पड़ती है तथा लाइकोपोडियमकी वक्षकी बीमारियोंमें ललाट सिकुड़ता है और उनकी झुरियाँ बहुत कुछ समान प्रकारकी होती हैं। आप मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके अर्द्ध चेतन रोगीके पास जायें और उसकी निगरानी करें; वह वहशत भरा हो रहा है और आँखें चमकीली हैं, ललाट सिकुड़ा है और मनकी सक्रियताकी प्रवणता है। वह लाइकोका रोगी नहीं है, बल्कि **स्ट्रैमोनियम**का। खूब ध्यान देकर देखनेपर ये अभ्यासगत बातें आपको बहुत जल्दी, **स्ट्रैमोनियममें** मस्तिष्कको तकलीफें और लाइकोपोडियममें **नियुमोनिया**की बढ़ी हुई दशाके प्रभेद बतलायेंगी।

चेहरा अकसर ताँबेले रङ्गके उद्भेदोंसे भरा रहता है, जैसा कि उपदंशमें देखनेमें आता है और इसीलिये कभी-कभी उपदंशके पुराने रोगियोंमें, जिनकी नाक आक्रान्त हो गयी, नासास्थिका अस्थि-क्षय या अस्थि-नाश हो गया है तथा पूर्व-वर्णित सर्दीकी दशा तैयार है, उनके लिये लाइकोपोडियम उपयोगी होता है। चेहरेके चारों ओर बहुत ऐंठन होती है। चेहरेका अध्ययन करनेपर आपको मालूम होगा, कि उसके भाव उसके चेहरेपर

प्रकट होते हैं। यह एक अति-असहिष्णु रोगी रहता है तथा प्रत्येक झटके या शोर-गुलपर, जैसे कि दरवाजेका भड़भड़ाना, घण्टेका वजना,—इन सवपर उसका चेहरा सिकुड़ जाता है। वह विचलित रहता है और यह उसके चेहरेपर प्रकट होता है। उसका चेहरा 'रोगियल' झुर्रीभरा रहता है, साथ ही उसकी भौवें कुञ्चित रहती हैं, तन्नपेट और वक्षकी तकलीफोंमें भी। हम यह भी देखते हैं, कि **ओपियम** और **म्युरियेटिक एसिड**की तरह जवड़ा लटक पड़ता है। यह अत्यन्य क्लान्तिकी दशामें होता है और इससे मारात्मक अवस्था प्रकट होती है। यह खासकर टाइफायडमें स्पष्ट दिखाई देता है, जब रोगी विछावनकी चादर नोंचता है, विछावनमें नीचेकी ओर सरक जाता है, प्रायः कुछ भी नहीं चाहता तथा मुश्किलसे जगाया जा सकता है। यह रोगकी अन्तिम दशा, एक निम्न-श्रेणीका ज्वर, टाइफायड, सेप्टिक ज्वर या रस-रक्त विगड़नेवाली वीमारीका वर्णन है। हनुके नीचे अकसर गांठोंकी सूजन रहती हैं, कर्णमूल-ग्रन्थि (Parotid) और हनु-निम्नस्थ ग्रन्थि (Sub-maxillary gland) गाँठोंकी सूजन। यह सूजन कभी-कभी कौषिक (Cellular) होती है और गर्दनकी पेशियाँ आक्रान्त रहती हैं। इन ग्रन्थियोंमें पकनेकी प्रवणता रहती है तथा आरक्त ज्वर और डिफ्थीरियामें गर्दनके पास सूजन रहती है।

कण्ठके लक्षण प्रधान दिखाई देनेवाले दूसरे लक्षण हैं। सार्वाङ्गिक दशा वताते समय यह वताया जा चुका है, कि लाइकोपोडियमका आश्चर्यजनक लक्षण **दिशाके** सम्वन्धमें यह है, कि इसके लक्षण दाहिनेसे वायें फैलते मालूम होते हैं; हम देखते हैं, कि दाहिना पैर ठण्डा, पर वायाँ गर्म है; दाहिना घुटना आक्रान्त हो गया है; यदि दर्द घटनेवाला होता है, तो वह दाहिनेसे वायें जाता है। वहुतसे उपसर्ग दाहिनेसे वायें जाते दिखाई देते हैं या वायें पार्श्वसे अधिक दाहिने पार्श्वको आक्रान्त करते हैं। यही गल क्षतके सम्वन्धमें भी होता है; यदि दाहिनी ओरका तालुमूल प्रदाह हुआ हो तो यह भी अपना पूरा ही समय तय करेगा और जव करीव-करीव समाप्त हो जायगा, तो वायाँ तालुमूल प्रदाहित हो उठेगा और पक जायगा, यदि ठीक-ठीक दवा न दी गयी। अमूमन गलक्षत दाहिने पार्श्वमें आरम्भ होगा, दूसरे दिन दोनों पार्श्व ही आक्रान्त हो उठेंगे, प्रदाह वायीं तरफ फैल जायगा। इस दवामें कण्ठ तथा गल-गह्वरका सव तरहका दर्द है। यदि कण्ठका दाहिनी तरफ झिल्ली पैदा हो तथा वायीं ओर फैल जाये, तो यह डिफ्थीरियामें भी उपयोगी है। एक दिन दाहिने पार्श्वमें धव्वे दिखाई देंगे, तो दूसरे दिन वायें पार्श्वमें। हमलोगोंने यह भी देखा है, कि लाइकोपोडियमकी वीमारी ऊपरसे नीचे उतरती है, ऐसा ही इन निःसरणोंमें भी होता है। वे अकसर गलकोषके ऊपरी भागमें होते हैं और पीछे कण्ठमें उतर आते हैं। लाइकोने ऐसे वहुतसे रोगी आरोग्य कर दिये हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि लाइकोपोडियमके रोगीको मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर अच्छा मालूम होता है; पर अमूमन लाइकोपोडियमके गल-क्षत गर्म-पेय निगलनेपर आराम रहते हैं। यह एक ऐसा स्वरूप है, जिसपर लाइकोपोडियम और **लैकेसिस** का प्रभेद किया जा सकता है। **लैकेसिस**का रोगी ठण्डेसे अच्छा रहता है तथा गर्म पेय पीनेकी चेष्टा करनेपर कण्ठमें अकड़न पैदा हो जाती है; पर लाइकोपोडियमका रोगी गर्म पेयोंसे अच्छा रहता है, यद्यपि कभी-कभी ठण्डे पेयोंसे भी आराम मिलता है।

लैकेसिसकी भाँति लाइकोपोडियमका रोगी श्वासरोध और कण्ठका संकोचन तथा श्वासकष्टमें नहीं सोता। कण्ठमें बहुत दर्द होता है, इसमें बिगड़ी हुई डिफ्थीरियाकी सभी प्रचण्डताएँ प्राप्त होती हैं। इसमें जाइमोसिस (तसवीर) भी रहती है।

पाकाशय और औदरिक लक्षण सम्मिलित रहते हैं। एक प्रकारका क्षुधा-राहित्य भाव रहता है, भूख बिलकुल ही नहीं लगती। उसका पेट इतना भरा मालूम होता है, कि वह खा नहीं सकता। यह भरापनका भाव तबतक नहीं आता, जबतक कि वह एक ग्रास भोजन नहीं निगल लेता, वह भोजनके स्थानपर भूखा जाता है, पर एक ग्रास खाते ही उसका पेट भर जाता है। भोजन करनेके वाद उसका पेट वायुसे तन जाता है, डकार आनेपर क्षणभरके लिये आराम मिलता है; इतनेपर भी पाकाशय तना ही रहता है। मिचली और वमन, पाकाशय-प्रदाहकी भाँति पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द; सर्दी, जखम और कर्कट रोग (Cancer) में जलन, भोजनके वाद तुरन्त ही दर्द; पित्तका वमन; काफीके चूरकी तरह वमन; काला स्याहीकी तरह वमन। लाइकोपोडियमके अधिकारमें रहनेवाले मारात्मक रोगोका जीवन वर्द्धित हो जाता है। रोगीका इस ढङ्गसे सुधार हो जाता है, कि कई महीनोंके भीतर ही समाप्त हो जानेके वदले, रोगी कई वरसतक जीवित रह सकता है। यकृतकी तकलीफोंकी तरह दाहिना कुक्षि-प्रदेश (Hypochondrium) फूला हुआ। यकृतमें दर्द, पित्तका वमन होनेके साथ वारम्बार होनेवाला पित्तका आक्रमण। उसे पित्त-पथरी शूल भी होता है। लाइकोपोडियमके वाद इसके आक्रमणका दौरा घट जाता है, पित्तका स्राव स्वाभाविक हो जाता है और पित्त पथरीका स्वरूप छेद-छेद हो जाता है, मानो घुल गयी हो। लाइकोपोडियमका रोगी वरावर डकार लिया करता है; तेज तेजावकी तरह खट्टी और कटु डकारें आया करती हैं, जिनसे गलकोषमें जलन होती है। "खट्टा पाकाशय" खट्टा वमन, खट्टा अधोवायु निकलना, भोजनके वाद तनाव और दर्द, साथ ही भरापनका भाव। भयङ्कर 'खालीपन' या पाकाशयमें कमजोरी, भोजन कर लेनेपर यह भाव नहीं जाता (डिजिट)। **ठण्डे पेयोंसे** पाकाशय बदतर हो जाता है और **अकसर** गर्म पेयोंसे आराम मिलता है। पाकाशय तथा आँतोंमें बहुत उथल पुथल रहती है, आवाजके साथ गड़गड़ाहट, वायुका इधर-उधर घूमना मानो उबल रहा है। वायुकी लाइकोपोडियम, **कार्वो-वेज** और **चायना** दवाएँ हैं और इनकी आपसमें तुलना करना चाहिये। पाकाशयके लक्षण ठण्डे पेय, वियर, काफी या फलसे वदतर हो जाते हैं अथवा पैदा हो जाते हैं और पतले दस्त आने लगते हैं। पुराने मन्दाग्निके वृद्ध रोगी, दुबले-पतले, झुर्रियाँ पड़े, थके और झुके रोगी जो खाते हैं, वही वायुमें परिणत हो जाता है। लाइकोपोडियम वृद्ध क्लान्त रोगियोंके लिये उपयोगी है, जिनकी प्रतिक्रिया दुर्बल रहती है और सभी क्रियाएँ कमजोर रहती हैं, साथ ही कमजोर होते जाते हैं और आरोग्य न होनेकी प्रवणता रहती है।

इस रोगीको वहुत ही कष्टकर कब्ज रहती है। कई दिनोंतक उसे बिलकुल ही पाखाना नहीं लगता और मलान्त्र भरा रहनेपर भी पाखाना नहीं लगता। यन्त्र-प्रणालीकी अक्रियता। पाखाना लगना, पर न होना। मल कड़ा, कष्टप्रद, लघु और अपूर्ण। मलका प्रथम अंश तो कड़ा रहता है और मुश्किलसे निकलता है, पर अन्तवाला भाग, कोमल और

पतला और झोंकसे निकलता है जिसके साथ मूर्च्छा और कमजोरी रहती है। लाइको-पोडियमके रोगीको अतिसार और सब तरहका पाखाना होता है। इसलिये आपको पाठ्य-ग्रन्थ पढ़नेपर मालूम होगा कि लाइकोपोडियमका चरित्रगत लक्षण मलमें नहीं है। किसी तरहका भी अतिसार, यदि लाइकोपोडियमके दूसरे लक्षण मौजूद हैं, तो लाइकोपोडियमसे आरोग्य हो जायँगे। इसमें कष्टकर बवासीर है, पर ये गुप्त रहते हैं। यदि आध्मान-वायु पाकाशयके लक्षण, मानसिक लक्षण और लाइकोपोडियमके सार्वाङ्गिक लक्षण मौजूद हैं, तो किसी तरहका भी बवासीर क्यों न हो, इससे आरोग्य हो जायगा; क्योंकि बवासीरके लक्षण बहुत-से हैं।

गुर्देके भी बहुत-से लक्षण हैं तथा बहुत-से अवसरोंपर लाइकोपोडियमकी कुञ्जी हो सकते हैं। मलान्त्रकी तरह मूत्राशयमें भी वही अक्रियता दिखायी दे सकती है। यद्यपि रोगी बहुत जोर लगाता है, तो भी उसे पेशाब करनेके लिये बहुत देरतक बैठे रहना पड़ता है। इसका प्रवाह धीमा रहता है तथा कमजोर धारमें निकलता है। पेशाब अक्सर गदला रहता है, उसके साथ ईंटके चूर जैसी तली या लाल बालूका तलछट जमता है या उसे हिला देनेपर या खौलते हुए साइडर (सेवके रसकी शराब) की तरह दिखायी देता है। ज्वरकी हरारतकी दशामें यह बात दिखायी देती है। रोगकी नयी दशामें, जब बहुत ज्यादा लाल बालूका तलछट निकलता है, अकसर दवा लाइकोपोडियम होती है। यह एक बहुत प्रधान लक्षण है। पुराने लक्षणोंमें जब कि रोगीकी तबीयत बहुत अच्छी मालूम होती है, तो पेशाबमें लाल बालू पायी जाती है। लाइकोपोडियममें मूत्ररोध और मूत्रनाश भी है। इसमें बच्चोंका "बिछावनमें पेशाब कर देनेका" भी लक्षण है; नींदमें अनैच्छिक रूपसे आप-ही-आप पेशाब हो जाना टाइफायड तथा निम्न-ज्वरोंमें आप-ही-आप पेशाब होना। लाइकोपोडियमका एक स्पष्ट लक्षण तथा सब दवाओंकी अपेक्षा प्रधान, रातमें बहुत पेशाब होनेका लक्षण है। उसे रातमें कई बार उठ-उठकर बहुत ज्यादा मात्रामें पेशाब करना पड़ता है, यद्यपि दिनके समय पेशाब स्वाभाविक रहता है। बहुत ज्यादा मात्रामें पेशाब, बहुत ही साफ और हलका आपेक्षिक-गुरुत्व।

पु०-लिङ्गेन्द्रिय—ध्वज-भङ्गकी यह एक बहुत ही प्रधान दवा है। कमजोर जीवनी-शक्तिके मनुष्य, अतिक्षय क्लान्त व्यक्ति, बहुत कमजोर मनुष्य, जननेन्द्रिय कमजोर, इनके लिये शायद ही कभी **फास्फोरस**की जरूरत रहती है; पर लाइकोपोडियम ही जवानोंके लिये ठीक दवा है, जिन्होंने बहुत गुप्त पाप किये हैं तथा मेरुदण्ड, मस्तिष्क और जननेन्द्रिय क्लान्त हो पड़ी है। यदि यह रोगी ऐसा निर्णय करता है, कि विवाहकर जीवन बितायेगा, तो वह देखता है, कि वह नपुंसक हो गया है, उसकी लिङ्गेन्द्रियमें कड़ापन नहीं आता या आता भी है, तो बहुत कमजोर या बहुत थोड़ी देरके लिये और अब वह पुरुष नहीं रह गया है।

लाइकोपोडियममें मूत्रनलीकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह, सूजाकके स्रावके साथ है। यह प्रमेह-विष-नाशक दवा है, पुरुष और स्त्री-जननेन्द्रियपर कष्टदायक मसे निकलते हैं। "लिङ्गेन्द्रियपर तर मसा, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी अभिवृद्धि।"

डिम्बाशयका प्रदाह और स्नायु-शूलकी यह स्त्रियोंकी बहुत ही लाभदायक दवा है, इसी तरह **जरायु**के प्रदाहकी भी। स्नायु-शूलका आक्रमण खासकर दाहिने डिम्बाशयपर होता है, साथ ही बायीं ओर जानेका प्रवणता रहती है। डिम्बाशयका प्रदाह, जब कि बायेंसे दाहिना विशेष आक्रान्त रहता है। इसने दाहिने डिम्बाशयका कोषार्बुद आरोग्य कर दिया है।

लाइकोसे योनि-पथका सूखापन, जिसमें संगममें कष्ट होता है, उत्पन्न और आरोग्य होता है। संगमके समय और बाद योनि-पथमें जलन। इसमें ऋतु-स्रावकी गड़बड़ी भी है। कई महीनोंतक ऋतु-स्राव होता नहीं या रुका रहता है। रोगिनी दुर्बल, क्षीण, पीली, दबी, बहुत कमजोर होती जाती है। ऐसा मालूम होता है, कि उसमें इतनी जीवनी-शक्ति ही नहीं है, कि रजःस्राव हो। यह जवानी आनेके समयकी लड़कियोंके लिये भी उपयोगी है, जब प्रथम रजोदर्शनका समय आता है; पर रजःस्राव होता नहीं। वह १५, १६, १७, १८ बरसकी बिना किसी अभिवृद्धिके ही होती जाती है, स्तन नहीं बढ़ते और डिम्बाशय भी अपनी क्रिया नहीं करता। जब लक्षण मिलते हैं, लाइकोपोडियमसे प्रतिक्रिया होने लगती है, स्तन बढ़ने लगते हैं, स्त्रियोचित गुण आने लगते हैं और बच्ची औरत बन जाती है। इसमें अभिवृद्धि करनेकी एक विचित्र शक्ति है और इस सम्बन्धमें यह बहुत कुछ **कैल्केरिया-फास**की तरह है। "योनिसे वायु निकलना।" "जननेन्द्रियकी शिराओंका प्रसारण।"

श्वास-यन्त्रोंकी भी लाइकोपोडियम एक आश्चर्यजनक दवा है। वक्षकी सर्दीमें श्वास-कष्ट तथा दमाकी तरह श्वास। सर्दी नाकमें बैठ जाती है; पर करीब-करीब सदा ही वक्षमें चली जाती है, जिसके साथ ही बहुत सीटी बजने और भनभनाहटकी तरह आवाज आती है और बहुत श्वास-कष्ट रहता है। तेज चलनेपर, परिश्रमसे और पहाड़पर चढ़नेपर श्वास-कष्ट बदतर हो जाता है। वक्षमें धमक, जलन और चुनचुनी। सूखी, तंग करनेवाली खाँसी। **क्षीण हुए बच्चोंकी सूखी खाँसी।** न्युमोनिया आराम होनेके बाद, बहुत दिनोंतक सूखी तंग करनेवाली खाँसी आया करती है या बहुत कुछ साँय-साँय आवाजें आती हैं और दमाकी तरह श्वास चलता है। हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं; पर माथा और चेहरा गर्म रहता है, इसके साथ ही बहुत खाँसी और वक्षकी तकलीफें रहती हैं। वह माथा खोले इधर-उधर जाना चाहता है; क्योंकि माथेमें बहुत ज्यादा रक्त-सञ्चय रहता है। इस रोगीकी प्रतिक्रिया कमजोर रहती है, सुधार प्रवणता नहीं रहती तथा रोगीका इतिहास यह रहता है, कि ब्राङ्काइटिस और न्युमोनियाके आक्रमणके बादसे ही उसकी यह दशा है। सूखी तंग करनेवाली खाँसीके अलावा, लाइकोपोडियम एक दूसरी दशामें भी चला जाता है, जिसमें जखम हो जाता है और बहुत ज्यादा गाढ़ा, पीला या हरा श्लेष्मा पीब-मिश्रित लसदार और सूतकी तरह बलगम निकलता है। अन्तमें रातमें पसीना होने लगता है, साथ ही तीसरे पहर ४ से ८ बजेतक बोखार हो आता है। इसका प्रयोग, न्युमोनियाकी वर्द्धित अवस्थामें यकृद्भाव-प्राप्तिकी दशामें, सिकुड़ा चेहरा या भौंवें, नासा-प्राचीरका हिलना और थोड़ा बलगम निकलना, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। इसके अलावा,

इसमें बहुत घरघराहटके साथ, खासकर बच्चोंकी वक्षकी सर्दी है। **वक्षमें घरघराहट, नासा-प्राचीरका हिलना तथा बलगम निकालनेकी शक्तिका न रहना।** दाहिना फेफड़ा अत्यधिक आक्रान्त रहता है या बायेंकी अपेक्षा अधिक आक्रान्त होनेकी प्रवणता रहती है या डबल न्युमोनियामें यह पहले आक्रान्त होता है और वे तकलीफें होती हैं, जो एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वको जाती हैं। अचिकित्सित न्युमोनियाके लिये लाइकोपोडियमपर ध्यान दीजिये तथा फुसफुसावरक झिल्ली और वक्षावरक झिल्लीमें रक्ताम्बु इकट्ठा हो जानेके कारण श्वासमें तकलीफके लिये।

प्रत्यंगोंकी गठियाकी प्रवणता और स्नायुके लक्षणोंके सम्बन्धमें काफी बताया जा चुका है; पर निम्नांगोंमें एक प्रकारकी बेचैनी तब पैदा हो जाती हैं, जब रोगी सोना चाहता है और इससे उसे आधी राततक नींद नहीं आती। बहुत कुछ **आर्सेनिकम**की तरह। यह अकसर बहुत ही कष्टदायक लक्षण हो जाता है। **प्रत्यङ्गोंका सुन्नपन।** रातमें प्रत्यंगोंमें खींचने, फाड़नेकी तरह दर्द; हिलने-डोलने और बिछावनकी गर्मीसे बेहतर रहता है। ये दर्द कभी-कभी पुराने सविराम ज्वरोंमें दिखाई देते हैं तथा इस दवासे आरोग्य हो जाते हैं। समय बाँधकर होनेवाला गृध्रसी वात, तापसे और टहलनेपर अच्छा रहता है। पैरकी शिराओंकी स्फीति। एक पैर गर्म, दूसरा ठण्डा। पैरके पञ्जोंका शोथ।

इसमें सब तरहके बोखार—अविराम, सविराम और स्वल्प-विराम सभी हैं। यह खासकर वृद्धावस्थामें तथा अकालपक्व हो जानेवाली अवस्था (Premature age) में उपयोगी होता है, जब ६० वरसकी उमरवाला ८० वरसका दिखाई देता है, भग्न-स्वास्थ्य, कमजोर और क्लान्त। यह खासकर दुर्बल प्रकृतिके रोगियोंमें उपयोगी होता है। यकृत तथा हृत्पिण्डके रोगोंके साथ जो शोथ होता है, उसमें यह खासकर उपयोगी होता है। चर्मपर रूखी जमी रहती है, अलग नहीं होती, उनपर पपड़ी जमती है और पपड़ी नहीं गिरती या रुपियाकी (Rupia) (एक चर्म-रोग, जो उपदंशसे होता है और जिसमें पपड़ी जमनेवाले जखम होते हैं) तरह हो जा सकता है। **सलफर, ग्रैफाइटिस और कैल्केरिया,** लाइकोपोडियमकी अपेक्षा दीर्घक्रिय या गहराईतक क्रिया करनेवाली दवाएँ नहीं हैं। वे पदार्थ, जो मूल-रूपमें इतने अक्रिय मालूम होते हैं, शक्तिकृत होनेपर बहुत ही जबर्दस्त निकलते हैं और आश्चर्यमय प्रयोगकी दवाएँ बन जाते हैं।

मैग्नेशिया कार्बोनिका
(Magnesia Carbonica)

इस दवाकी आंशिक रूपसे परीक्षा हुई है और हमारे सामने वैसी ही आती है, जैसी हैनिमैन छोड़ गये हैं। मानसिक लक्षण और शरीरके कुछ भावोंके लक्षण तथा विशेष लक्षण अच्छी तरह प्रकट नहीं हुए हैं। एक तो यह है, कि असहिष्णु परीक्षकोंपर इसकी उच्च

क्रममें परीक्षाकी जरूरत है, जिससे कि इसकी सब तरहकी सूक्ष्म बातें और भी प्रकट हो सकें। मैं इस विषयमें नहीं कहता, पर इस वजहसे कहना पड़ता है, कि इसका सम्बन्ध एक इस श्रेणीके रोगियोंसे है, जिनपर इसका प्रयोग किये बिना काम ही नहीं चल सकता। इसका और भी पुरानी तथा विशेष बद्धमूल सोरा-जनित बीमारियोंसे सम्बन्ध है। यह गहरायीतक क्रिया करनेवाली और दीर्घ कालतक क्रिया करनेवाली एक दवा है, तथा **सलफर**की तरह ही समस्त स्वास्थ्य-विधानपर अपना प्रभाव दिखाती है।

बहुत ही अद्भुत कुछ सार्वाङ्गिक लक्षण हैं:—हिलने-डोलनेपर रोग ह्रास; खुली हवाकी इच्छा; इतनेपर भी ठण्डी हवा सहन नहीं होती; ज्वरकी सभी अवस्थाओंमें कपड़ा ओढ़े रहना चाहता है; नित्य शामको ज्वर आता है; प्रत्येक २१ दिनोंपर उपसर्ग दोहरा जाते हैं; गर्म चीजें खाने-पीनेपर तापका अनुभव होना, यहाँतक कि पसीना हो जाना; शामके वक्त प्यास।

अन्य **मैग्नेशियाओं**की तरह, इसमें भी बहुत तेज स्नायु-शूलका दर्द होता है, स्नायु-पथकी राहसे दर्द, इतना प्रचण्ड दर्द रहता है, कि वह शान्त नहीं रह सकता और इधर-उधर हटा करता है तथा **हिलने डोलनेपर उसे आराम मिलता है**। परीक्षकोंको यह दर्द अधिककर माथा और चेहरेमें अनुभव हुआ, पर रोगियोंपर परीक्षा करनेपर मालूम हुआ कि उसे हर जगह प्रचण्ड स्नायुशूल हुआ, इसमें अन्य स्थानोंकी परीक्षामें भी हमलोगोंको यह प्रमाणित हुआ है, कि **इसका सम्बन्ध खासकर चेहरेके बायें भागसे है; रातमें स्नायु-शूल; उसे पलङ्गसे उतर जाना पड़ता है**, बराबर हिलते-डोलते रहना पड़ता है। ज्योंही वह हिलना-डोलना बन्द करता है, दर्द बहुत ही तेज हो जाता है, खोंचा मारने, फाड़ने और काटनेकी तरह दर्द।

इसमें चर्मपर बहुत तरहके उद्भेद होते हैं। सूखे, भूसी, पपड़ी जमे चर्मपर उद्भेद, नाखून तथा केश बहुत ही अस्वस्थ, खासकर यह दाँत तथा दाँतकी जड़को आक्रान्त करता है। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनके कालमें दाँतकी जड़ बहुत ही दर्द-भरी हो जाती है, जलन होती है, धक्का देनेकी तरह दर्द होता है और लगातार यन्त्रणा हुआ करती है। ऋतु-कालके समय और पहले दाँतमें दर्द। गर्भावस्थामें उसे बराबर दाँतमें दर्द हुआ करता है, चेहरेमें बायीं ओर फाड़नेकी तरह दर्द होता है; यद्यपि दाँतकी जड़ एकदम सुदृढ़ रहती है। खोखले दाँत अमूमन स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं और दर्द होता है। दाँत इतने असहिष्णु रहते हैं, कि दन्त-चिकित्सक उनमें कुछ कर नहीं पाता। यह **एण्टिम-क्रूड**की तरह है; पर मैग्नेशिया-कार्बकी क्रिया खासकर दाँतकी जड़पर होती है; जब कि **एण्टिम-क्रूड**की क्रिया खासकर दन्तावरकपर होती है। दाँतकी स्पर्श-कातरता, जिससे वह दाँतसे काट नहीं सकता और दाँत बहुत लम्बे मालूम होते हैं। जब कोई दूसरा लक्षण मौजूद नहीं रहता, तो मैग्नेशिया-कार्ब और **चायना**, गर्भावस्थामें दाँतके दर्दको प्रधान दवाएँ हो जाती हैं।

एक तरहकी सुखण्डी (मांस-क्षीणता) की बीमारी होती है, जिससे यदि आप यह दवा नहीं जानते, तो घबड़ा उठेंगे। यदि हम सम्पूर्ण दवाक विश्लेषण करें, तो हम

देखेंगे, कि शरीकी दशा यक्ष्माकी पूर्वकी दशाकी तरह बना देता। उसका सुधार हो नहीं पाता, उसक मांस क्षय होता जाता है तथा मांस पेशियाँ थुलथुली होती जाती हैं, मानो कोई भीषण रोग होना चाता है। यक्ष्मा-ग्रस्त माता-पिताके बच्चेको सुखण्डी हो जानेकी प्रवणता रहती है। बच्चेकी मांस पेशियाँ थुलथुली रहती हैं, बच्चा दवा तथा भोजन देनेपर भी नहीं पनपता। यह मानो किसी कठिन रोगकी नीव पड़ रही है। अन्तमें वह क्षीण हो जाता है तथा माथेका पिछला भाग धँसने लगता है, मानो लघु-मस्तिष्ककी क्षीणता हो रही है। दूध, मांस तथा मांसके शोरवाकी भूख बढ़ जाती है; पर वे पचते नहीं और जब दूध पिया जाता है, तो कुम्हारके मिट्टीके रङ्गके या प्रोटीनके रङ्गके दस्त होते हैं। मल कोमल रहता है तथा इसमें पुटीन (लेई) जैसे पदार्थ ही रहते हैं। यदि किसी चीनाकी मिट्टीके कारखानेमें आप जायें जहाँ लोग हाथसे काम करते हैं, एक आश्चर्यजनक रीतिसे सब तरहकी खूबसूरत रकाबियाँ और साँचे बनाते हैं, वहाँ आप देखेंगे, कि मूल मिट्टी जिसको वे सानते हैं, सफेद रहती है। बस ठीक ऐसा ही मैग्नेशिया-कार्वका मल है, जो पुटीनकी तरह अनपचे दूधका बना रहता है।

खासकर अज्ञान बच्चोंमें मैंने देखा है, कि गुप्त अवैध सङ्गमसे उत्पन्न बच्चोंके माथेके पिछले भागमें गड़हा पड़ जानेकी प्रवणता रहती है। पश्चात मस्तककी हड्डी दब जायगी और पार्श्व कपालास्थि (Parietal bones) ऊपर निकल आती है और गड़हा पड़ जाता है। सुखण्डी होनेवाले बच्चोंके लिये यह कोई असाधारण बात नहीं है। उन्हें काली मिट्टीकी तरह पाखाना होता है। यह बढ़ भी नहीं जाता और कड़ा भी नहीं होता। सफेद, कड़ा मल, एक दूसरा लक्षण है और कोमल, अर्द्ध-तरल मल एक दूसरी दवाकी ओर परिचालित करता है, पर यह घसघसा मल, जो ऐसा दिखायी देता है, कि किसी भी साँचेमें ढाला जा सकता है, मैग्नेशिया-कार्वका मल है। एक बार मैं बच्चोंके एक अनाथालयका निरीक्षक था, जिसमें सदा ६० से १०० बच्चे रहते थे। इनके लिये सुखण्डीकी दवा खोजनेमें ही मैं घबड़ा उठता था। उनमें बहुत बड़ी संख्यामें अवैध-सङ्गमसे उत्पन्न बीमार बच्चे थे। यह मानो उन बच्चोंके लिये एक आरामकी जगह थी। सालभर बीत गया और प्रत्येक सप्ताह बच्चे इस क्रमवह क्षयसे घटते ही जाते थे, अन्तमें मैग्नेशिया-कार्बमें मुझे इन बच्चोंकी मूर्त्ति दिखायी दी थी और इसके बाद उनमेंसे बहुत-से आरोग्य।

मैग्नेशिया-कार्बके बच्चेमें **हीपरकी तरह खट्टी गन्ध** आती है; उसे पानीसे धो डालिये फिर भी गन्ध खट्टी रहेगी, पसीना खट्टा होता है और सम्पूर्ण बच्चेमें खट्टी गन्ध रहती है। खासकर मल हो नहीं। मलकी गन्ध कड़ी और वेधक तथा सड़ी रहती है और अकसर बालकके सम्पूर्ण शरीरसे चुभनेवाली गन्ध आती है, जैसे कोई अस्वच्छ गन्दा बच्चा हो, यद्यपि वह खूब अच्छी तरह नहलाया गया है।

मैग्नेशियाओंसे मलान्त्र और मलकी अक्रियता उत्पन्न होती है—एक अर्द्धपक्षाघात। मल बड़ा और कड़ा होता है, निकालनेमें बहुत जोर लगाना पड़ता है, फिर टूट जाता है और कई टुकड़ोंमें निकलता है, दूसरे ढङ्गका मल, जिसके विषयमें पुस्तकोंमें बहुत कुछ लिखा है,

मैग्नेशिया-कार्बका हरा होता है। यह सूखा, कड़ा और टुकड़ा-टुकड़ा होता है। मल एक हिस्सेके रूपमें रहता है, यह अतिसारकी तरह पतला मल रहता है तथा पानीके ऊपर मलका हरा अंश तैरा करता है। मल अकसर ढेला-ढेला और तरल होता है। ढेला पात्रकी तलीमें बैठ जाता है, पर तरल मलके ऊपर तालावकी काईकी तरह हरा अंश उतराया करता है। यह अकसर एक बहुत ही आश्चर्य-जनक स्वरूप माना जाता है। "मल हरा, कोई जमे तालाबकी काईकी तरह, खट्टा, फेन-फेन, सफेद, तैरते हुए ढेले चरबी खून-मिले श्लेष्माकी तरह।" चर्बीके ढेलेकी तरह उतराया करता है। यह **फास्फोरस** का विशेष चरित्रगत लक्षण है और बहुत बार **डलकामाराने** इसे आरोग्य किया है।

पुराने अवस्था-प्राप्त रोगियोंका चेहरा पीला, मोमकी तरह, रोगियल और कालापन लिये रहता है और आपको आश्चर्य होगा, कि यह रोगी क्यों नहीं ठीक होता और पनपता है। रोगिनीका चेहरा रोगियल रहता है, **उसकी मांस-पेशियाँ शिथिल रहती** हैं, वह बहुत अधिक क्लान्त रहती है और थोड़ेसे भी परिश्रमसे पसीना हो जाता है। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन कालमें वह विचलित हो जाती है तथा रजः-स्राव जारी होनेके आरम्भमें बदतर हो जाता है। जब रजः-स्राव होता है, तभी उसे सर्दी लग जाती है। वह कहती है,—मैं जानती हूँ, कि मेरा ऋतु काल आ रहा है; क्योंकि मेरे माथेमें सर्दी है।" मैग्नेशिया-कार्बमें प्रत्येक मास ऋतु-स्रावके पहले सर्दी हो जाती है। इन रोगियोंकी ऐसी दशा रहती है, मानो धँसती जा रही हैं; इतनेपर भी बरस-पर बरस कोई काम न करने योग्य हो वे होती जाती हैं, यहाँतक कि घर-गृहस्थी भी नहीं कर सकतीं, मांस खानेकी बहुत ज्यादा लालसा होती है तथा मांस-हीन खाद्यकी इच्छा नहीं होती, दुबली और बहुत ही थुलथुली होती जाती हैं। मांस-पेशियाँ शिथिल पड़ती जाती हैं तथा जरायुकी स्थान-च्युति-प्रवणता रहती है। उदर-प्राचीरके झूल जानेकी और शिथिल हो जानेकी प्रवणता रहती है तथा चक्रोंसे अन्त्र-वृद्धिकी सम्भावना रहती है। इसी ढङ्गका यह ढीलापन रहता है। स्नायुओंमें दर्द होता है और मांस-पेशियाँ क्लान्त रहती हैं। जब आपको कोई ऐसा रोगी मिले, आपने दवा दे दी है और हरेक दवा दे देनेपर भी वे वैसे ही बने रहते हैं, तो आप जान जाते हैं, कि यह रोगी ठीक-ठीक दवा नहीं निर्देशित कर रहा है, उपसर्ग छिपे हुए हैं और किसी जटिल भीतरी रोगकी सम्भावना है। यन्त्र सब भग्न होनेका भय दिखा रहे हैं; गुर्दा, हृत्पिण्ड, फेफड़ा या मस्तिष्कमें यान्त्रिक परिवर्त्तन होना ही चाहता है।

इस दशामें सर्दीकी भी दशा है; पर यह सूखी सर्दी रहती है, बहुत ज्यादा स्राव नहीं होता। कोई पुराना जखम सूख जायगा और चमकीला हो जायगा और स्राव कुछ भी न होगा। नाक सूखी रहती है और चक्षु-गोलक इतने सूखे रहते हैं, कि पलकें आपसमें सट जाती हैं तथा आँख खोलना मुश्किल हो जाता है, शरीरका चमड़ा भी सूख जाता है, खुजलाता है और उसमें जलन होती है। श्लैष्मिक-झिल्लीकी शुष्कताका प्रवणता और चर्मका सूखापन। सूखापन इस दवाका एक स्पष्ट स्वरूप है।

"बच्चोंकी मांस खानेकी असाधारण भूख।" पाकाशय एक अत्यन्त कष्टप्रद यन्त्र रहता है मैग्नेशिया-कार्बका रोगी हमेशा अम्लपूर्ण पाकाशयकी शिकायत करता है; खट्टी डकारें।

खाद्य खट्टे होकर ऊपर चढ़ते हैं। मिचली रहती है और खट्टा खाया हुआ पदार्थ कण्ठतक चढ़ आता है। साधारण-सा भोजन करने पर भी पाकाशयमें दर्द हो जाता है ; भोजन करनेके बाद पेट फूल जाता है ; भोजनके बाद बहुत आध्मान। पाकाशय धीरे-धीरे खाद्यको पाचन करता है और यह खट्टा हो जाता है।

यदि टियुबरक्युलोसिसका इतिहास मिले, तो यह दवा खासकर उपयोगी होती है। मांस-क्षय और उन व्यक्तियोंमें मांस खानेकी इच्छा, जो यक्ष्मा-ग्रस्त हैं या जो यक्ष्मा-ग्रस्त माता-पितासे उत्पन्न हुए हैं। रोगी सूखी खाँसीसे तकलीफ पाते हैं। **रस-टक्स**की तरह शामको होनेवाले जाड़ेके पहले सूखी खाँसी। ऐसे भी मनुष्य हैं, जिनमें बरसोंतक इसी स्वास्थ्य-भङ्गकी दशा रहनेकी प्रवणता रहती है, साथ ही लघु खुसखुसी खाँसी रहती है, ज्यादा नहीं बढ़ती। अन्तमें ऐसी कुछ सुविधाकी परिस्थिति आ जाती है, कि बहुत तेजीसे यक्ष्मा रोग उत्पन्न हो जाता है, जो बहुत दिनोंतक बहुत ही शिथिल अवस्थामें पड़ा था। इस दशासे सम्बन्ध रखनेवाली कुछ और भी दवाएँ हैं, **आर्सेनिकम, कैल्केरिया कार्ब, लाइकोपोडियम, टियुबरक्युलिनम** और मैग्नेशिया-कार्ब। वे इस लँझड़ानेवाली दशामें ठीक बैठती हैं, तेज सक्रिय यक्ष्माके पहले ऐसा होता है। कभी-कभी तो ये रोगीको पनपने देते हैं ; पर याद रखिये, इन रोगियोंको वशमें लाना मुश्किल है। इनके लिये दवा खोज निकालना भी कठिन है। उनकी तकलीफें इतनी गुप्त रहती हैं, कि लक्षण बाहर प्रकट नहीं होते और कभी-कभी तो आपको सीधी ही देखनी पड़ती है। ये एकतर्फा रोगी होते हैं, हैनिमैनने ऐसा ही कहा है।

इसके साथ ही सूखी, सुरसुरीवाली खाँसी, जिसका वर्णन पुस्तकोंमें नहीं है। हमें प्राप्त होती है। "खाँसी, स्वर-यन्त्रमें सुरसुरीके कारण रातमें आक्षेपिक रहती है।" "दिनमें औंघाई, पर रातमें नींद नहीं आती।" जब आप यक्ष्माकी ओर बढ़नेवाले ऐसे बहुत-से रोगियोंको देखेंगे, तब आप देखेंगे कि उन सबका यही सार्वाङ्गिक स्वरूप है। "डाक्टर साहब ! मैं सवेरेके वक्त बहुत ही क्लान्त रहता हूँ ; रातमें तो मैं कुछ सोता हूँ, पर सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो मैं सोया ही न होऊँ। हमेशा क्लान्त और शिथिल। इनमेंसे बहुत-से रोगी ठण्डे और सर्दीले रहते हैं। यह दशा अबतक इस दवामें प्रकट नहीं हुई है ; पर रोगीपर परीक्षा करनेपर इसका **ठण्डे और सर्दीले रोगीसे** सम्बन्ध मालूम होता है। वे रोगी जो कहा करते हैं, कि उनमें भरपूर रक्त नहीं है।

मैग्नेशिया म्यूरियैटिका
(Magnesia Muriatica)

यह आश्चर्यकी बात है, कि **मैग्नेशिया-कार्ब** और मैग्नेशिया-म्यूरकी तरह दवाएँ, जिनको हैनिमैनने परीक्षा तथा प्रयोग द्वारा इस उत्तमतासे चलाया, उनको इस तरह भुलाया गया है और ध्यान नहीं दिया जाता। यदि इनका व्यवहार हो तो ये बहुतसे उन यकृत

रोगोंको आरोग्य कर देंगी जो अब आरोग्य नहीं किये जाते। स्नायविक, उत्तेजनशील स्त्रियोंकी बहुत-सी बीमारियाँ, जो दुरारोग्य रह जाती है, मैग्नेशिया-म्यूर आरोग्य कर सकता है। इन दवाओंपर तो ध्यान नहीं दिया जाता, पर **फास्फोरस** और **सल्फर**का प्रायः सब बातोंके लिये प्रयोग होता है।

मैग्नेशिया-म्यूर गहरायीतक क्रिया करनेवाली, एक सोरा-नाशक दवा है, जो पाकाशय और यकृत रोगवाले स्नायविक रोगियोंके लिये लाभदायक होती है। इसमें वर्द्धित ग्रन्थियाँ तथा मस्तिष्क और स्नायु-केन्द्रोंकी उपदाह है। रोगीको अकसर सर्दी सहन नहीं होती, सर्दीला रहता है, पर खुली और ताजी हवाकी इच्छा करता है। खुली ताजी हवासे बहुत-से उपसर्ग घट जाते हैं, पर कुछ मस्तकके लक्षण इसके अपवाद हैं। माथा अवश्य ढँका रहना चाहिये; क्योंकि यह खुली हवा बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करता। वह बहुत अधिक बेचैन रहता है, बहुत मुश्किलसे शान्त रह सकता है और यदि जबर्दस्ती शान्त रखा जाता है तो वह चिन्तित हो पड़ता है। घबड़ाहट इसका एक प्रत्यक्ष स्वरूप है। समस्त शरीरमें बेचैनी, छटपटी, इसके साथ ही घबड़ाहट मिली रहती है। यह किसी भी समय हो सकता है, पर रातमें यह बदतर हो जाता है और उससे भी बदतर आँखें बन्दकर सोनेके समय। जब वह आँखें बन्द करता है, तो इतना घबड़ाता, छटपटाता और बेचैन हो जाता है, कि वह बाध्य होकर ओढ़ना उतार फेंकता है, लम्बी साँसें लेने लगता है या कुछ करने लगता है। चिन्ताप्रद भावोंसे वह रातभर जागता रहता है, परीक्षकने उसे पहले बेचैनी बताया था, पर **गाइडिङ्ग-सिम्पटम** नामक ग्रन्थमें यह बिछावनपर बेचैनी बताया गया है। यदि आप इसकी हिस्टीरियाकी प्रकृति, घबड़ाहट और बेचैनीका अध्ययन करें, तो आपको मालूम होगा, कि यह समस्त स्वास्थ्य-विधानमें है तथा इसको मन और स्नायुकी श्रेणीमें रखना चाहिये। कितनी ही दवाओंमें आँखें बन्द करनेपर सरमें चक्कर और कितनी ही में आँखें बन्द करनेपर घबड़ाहट है। **कोनायम**में आँखें बन्द करनेपर पसीना आ जाता है। कुञ्जीके अनुसार नुस्खा लिखनेवालोंके ये ही रूप थे और कितनी ही बार खूब लाभ हुआ था। मुझे याद है, कि मैंने एक बार यान्त्रिक संकोचन (Organic stricture) आरोग्य किया था, जो प्रसारित तो कर दिया गया था, पर आरोग्य न हुआ था। रोगीने अपने लक्षण वर्णन किये थे और जो कुछ वह सोच सका था, वह उसने संकोचन—संवृत्ति (Stricture) बताया। मैं उसकी कोई दवा न खोज सका और सभी चीजें बिना किसी तरहका आराम पहुँचाये ही दिया। एक दिन उसने मुझसे कहा, कि बिना खूब ज्यादा पसीना हुए सोते समय वह अपनी आँखें नहीं बन्द कर सकता। मैंने इसी कुञ्जीपर उसे **कोनायम** दिया, पर इसने उसका पसीना और संवृत्ति (Stricture) दोनों ही आरोग्य कर दिया और पुराना सूजाकका स्राव तथा प्रादाहिक बाहुना स्रावका जो शोथज हुआ था, उसे जारी कर दिया। कोई भी वैज्ञानिक रूपसे औषधि लिखनेवाला ऐसा नहीं कर सकता; पर जब उसने वह लक्षण सुना, तो वह नहीं जानता था, कि यह **कोनायम**की प्रकृतिमें संवृत्ति (Stricture) भी है और दूसरे रोगमें वह देखता, कि **कोनायम** लाभ नहीं करता और वह जान जायगा, कि कब उसका प्रयोग करना चाहिये और कब नहीं।

कमरेके भीतर घबड़ाया, पर खुली हवामें रोग-लक्षणका घट जाना। रातमें पलङ्गपर आँखें बन्द करनेपर चिन्ता। पढ़नेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसके पीछे-पीछे पढ़ रहा है और उसे और भी तेजीसे पढ़ना पड़ता है। यह उन रोगिनियोंको होता है, जो बहुत ही अधिक कार्य कर क्लान्त हो पड़ती हैं और ऐसा मालूम होता है, कि वे टुकड़े-टुकड़े हो जायँगी। मनमें उत्पन्न हुआ कोई भी विचार दुहरा जाया करता है।

सरमें चक्कर, खुली हवामें घूमनेपर घट जाया करता है। सवेरे सोकर उठनेपर सरमें चक्कर। माथेके लक्षण कष्टदायक रहते हैं, जहाँ यह दवा देनी चाहिये, वहाँ **साइलिसिया**का प्रयोग हो जायगा ; क्योंकि **साइलिसिया**का सर दर्द भी सरमें कपड़ा लपेट लेनेपर घट जाया करता है। इस दवामें भी ऐसा ही है। रोम-कूपोंमें यन्त्रणा। ऐसा अनुभव होना, मानो केश खींचे जा रहे हैं। सरके चारों तरफ कसकर पट्टी बाँध लेने या सरको लपेट लेनेपर सर-दर्द घट जाता है।

समूचे शरीरपर पीलापन। कामला रोग और यकृत रोगमें पीली आँखें। आँखें प्रादाहित। पलकोंके किनारे और बरुनियोंपर पपड़ी जमी, महीन फुन्सियाँ और उद्भेद। तरके लक्षणोंको छोड़कर, जो गर्मीसे घटते हैं ; हमें गर्म कमरेमें बदतर होनेवाले बहुतसे लक्षण प्राप्त होते हैं।

कानमें स्पन्दन। नथुनोंके किनारेके जखम, जीभकी ऐसी शकल रहती है, मानो जल गयी है ; कितनी ही दिशाओंमें उसकी खाल उधड़ी और फटी रहती है। फटे घाव आगकी तरह जलते हैं। भूख रहती है, पर नहीं जानता कि किस चीजकी। मिचलीके बाद राक्षसी भूख। नमकीन चीजें, नमकीन खाद्य, नमकीन स्नान, सामुद्रिक स्नान और समुद्रके किनारेकी हवा श्वाससे खींचनेपर रोग-वृद्धि। समुद्रके किनारेपर रहनेपर वक्षकी बीमारियाँ यकृतके रोग और कब्ज। **ब्रोमाइन**में जहाजियोंके उस समयके रोग हैं, जब वे तटपर आते हैं। मैग्नेशिया-म्यूरमें समुद्रमें जानेकी बीमारियाँ हैं। जब समुद्र तटपर रहनेपर किसीको शुलपित्ती हो जाये, तो **आर्सेनिक**के रोगियोंको **आर्सेनिक** आरोग्य कर देगा और केवल यही लक्षण रहेगा, तो अकसर आराम पहुँचायगा।

गले अण्डेकी तरह सड़ी डकारोंका स्वाद। बिगड़ा हुआ पाकाशय। पाकाशय सहजमें ही विकृत हो जाता है। मुँहमें पानी भर आना, वमन। **मैग्नेशिया-कार्ब**की तरह इसमें भी दूध पचानेकी शक्ति नहीं। दूधसे दर्द पैदा हो जाता है और यह बिना पचा ही निकल जाता है—अनपचके दस्त। हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रियाँ भोजन-कालमें ही मूर्च्छित हो जाती हैं।

इसमें बहुतसे यकृत-रोग हैं। यकृतकी अभिवृद्धि और कड़ापन, साथ ही कामला-ग्रस्त त्वचा। यकृतका दाहिना खण्ड यन्त्रणापूर्ण रहता है, उसके बल लेटनेपर दर्द होता है और जब रोगी बायीं करवट हो जाता है, तो तकलीफ होने लगती है ; उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसे यकृतने बायीं तरफ खींच दिया। **नेट्रम-सल्फ** अकसर इस लक्षणको

आरोग्य कर देता है और टीलियामें भी कुछ ऐसी ही दशा है। ये ही दोनों लक्षण—कि दाहिनी करवट लेटनेपर रोग-वृद्धि अर्थात् यन्त्रणा और बायीं करवट लेटनेपर रोग-वृद्धि अर्थात् खींचन या तो अलग-अलग आते हैं या एक साथ ही। यकृतके बल लेटनेपर इसमें बहुतसे यकृत रोग होते हैं।

पाकाशय-प्रदेश और आँतोंके ऊपर स्पर्श-कातरता। शामको पाकाशय-शूलका आक्रमण। इस दवाका एक जबर्दस्त स्वरूप अजीर्ण है। पाकाशय, धीरे-धीरे कम-से-कम पचाने लगता है और अन्तमें यह दशा हो जाती है, कि एक ग्रास भी बिना तकलीफके नहीं खाया जाता; औदरिक शोथ। शूल, मरोड़, फाड़नेकी तरह दर्द। बहुत वायु होना। इस तरहके दर्दके साथ फीता-क्रिमि हो जाती है, इस रोगीमें यह सरलतापूर्वक अपना वंश बढ़ाती है। वे रोगी और भी कष्ट देते हैं जो कड़ी दवाओंसे फीता-क्रिमिका इलाज करानेके बाद आते हैं। उनको आरोग्य करनेमें बहुत दिन लगते हैं; यदि कोई रोगी क्रिमिवाला आये और उसके लक्षण मिलें तो मैं उसे आराम पहुँचा सकता हूँ और जल्द ही वही कायदेमें आ जायगा और फीता-क्रिमिकी भी तकलीफ न होगी।

बच्चोंका कब्ज, जैसा कि **मैग्नेशिया-कार्बमें** रहता है। **मैग्नेशिया-कार्बकी** तरह ही खड़िया जैसा मल। जब रोगी अवस्था-प्राप्त हो तथा कामला रोगके कारण पीला पड़ गया हो तो मल हलके रंगका पित्त रहित हो जाता है और बाहर निकालनेकी शक्ति नहीं रहती।

मूत्राशयकी सामग्री बाहर निकालनेकी शक्ति नहीं रहती, इसलिये, वह भरे हुए मूत्राशयपरकी उदरका पेशियोंको दबाता है और बहुत थोड़ा पेशाब होता है। मूत्राशयमें अनुभूतिका अभाव, जिससे कि वह कभी कभी कह नहीं सकता, कि उसे पेशाब लगा है या नहीं; जबतक कि मूत्राशय खूब भर नहीं जाता, जिससे कि दबाव पड़ता है। यह अनुभव करनेकी अयोग्यता मूत्रनलीतक फैल जाती है तथा रोगी अन्धेरेमें नहीं बता सकता, कि उसे पेशाब हो रहा है या नहीं।

पीठमें दर्दके साथ, दो मासिक रजःस्रावोंके बीचमें रजःस्राव, जो कुर्सीके बल जोरसे दबाव देनेपर या कड़े तकियेपर लेटनेपर घटता है। वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर खिंचावका दर्द, खासकर हिस्टीरिया ग्रस्त स्त्रियों और लड़कियोंको।

समुद्रमें स्नान करनेके कारण वक्षमें रक्त-सञ्चय। समुद्रके किनारे और नमकीन स्नानसे वक्षकी तकलीफें और वक्षमें सर्दी लग जाना। कलेजा धड़कना, साथ ही घबड़ाहट। आराम करनेके समय घबड़ाहट और बेचैनी पैदा होती है, उसे कुछ करना ही चाहिये; बहुत जल्दी करना चाहिये। शामको जब वह सोनेको जीनेकी चेष्टा करता है तो ये लक्षण फिरसे आ सकते हैं।

बिजलीके झटकेकी तरह समूचे शरीरको हिला देता है, जब खूब जागता रहता है, तो समूचे शरीरको हिला देता है, ऐंठन और हिल उठना। हाथ-पैरोंमें सुन्नपन। ऊपरी अंगमें फाड़नेकी तरह दर्द तथा निम्न अंगोंमें स्पष्ट बेचैनी। रातमें पंजोंमें ऐंठन। सभी

प्रत्यंगोंमें पाक्षाघातिक खींचन और फाड़नेकी तरह दर्द। रातमें बिछावनमें तलवेमें जलन होना। **साइलिसिया**की तरह पैरोंमें पसीना होना एक दूसरा लक्षण है। सवेरे सोकर उठनेपर बाहुओंमें सुन्नपन।

हिस्टीरियाकी तथा आक्षेपिक (Spasmodic) बीमारियाँ। नमकका स्नान या समुद्रमें स्नान करनेपर कमजोरी। यह नमकसे रोग-वृद्धि है। नींदसे ताजगी नहीं आती, घबड़ाहट-भरे स्वप्न। शारीरिक दशामें सर्दी सहन नहीं होती तथा सर्दी लग जानेकी बहुत अधिक प्रकृति रहती है। बहुत सर्दी नहीं भी रहे तो भी कुछ रोग **ताजी** हवासे घट जाते हैं।

मैग्नेशिया फास्फोरिका

(Magnesia Phosphorica)

इसकी आक्षेपिक दशाएँ और स्नायु शूलके लिये मैग्नेशिया-फास बहुत प्रसिद्ध है। दर्द बहुत प्रचण्ड होता है तथा किसी भी स्नायुको आक्रान्त कर सकता है। किसी स्नायुमें दर्द घर बना लेता है और बदतर-से-बदतर होता जाता है; कभी-कभी तो यह दौराके रूपमें आता है; पर इतने जोरोंका होता है, कि रोगी पागल हो जाता है। दर्द **ताप तथा दबावसे घटता है।** रोगीको गर्म स्थान अच्छा मालूम होता है और उसका स्नायु-शूल भी अच्छा रहता है, वह कष्टमें रहता है और उसका दर्द ठण्डा होनेपर या ठण्डी जगहमें बदतर हो जाता है। सर्दीमें घुड़सवारी करनेपर, सर्दीमें और तर ऋतुमें दर्द पैदा हो जाता है। बहुत देरतक ठण्डी जोरकी हवा लगनेपर चेहरेका स्नायु-शूल उत्पन्न हो जाता है।

हर जगह दर्द मालूम होता है। आँतोंमें दर्द, यन्त्र-शूल, पाकाशय तथा आँतोंमें, उसी आकारके साथ मरोड़। इसी नियमके मुताबिक मेरुदण्डमें भी दर्द होता है—तापसे घटता है। ऐसा भी समय आता है, कि जब किसी स्नायुमें दर्द रहता है, तो उसपर दबाव सहन नहीं होता, यन्त्रणापूर्ण हो जाता है। मेरुदण्डमें यन्त्रणा होने लगती है। प्रत्यंगोंमें कड़ापनके साथ टंकार। बच्चे या जवानोंकी अकड़न, इसके बाद ही बहुत स्पर्श असहिष्णुता, जोरकी हवा, शोर-गुल, उत्तेजना तथा प्रत्येक बातका सहन न होना पैदा हो जाता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय ऐसी अकड़न होती है। शूलका दर्द, त्रैमासिक शूल, मरोड़, पित्त-शूल; पर इसका खास स्वरूप है—इसकी दुर्बल करने तथा स्नायु और पेशियोंमें उपदाह पैदा करनेकी शक्ति। बहुत देरतक परिश्रम करनेपर ऐंठन। कड़ापन, सुन्नपन, क़दाकारिता और स्नायुओंका बहुत देरतक परिश्रम करनेपर मृतवत् हो जाना। इस तरह यदि लिखनेमें बहुत देरतक हाथ और अङ्गुलियोंका प्रयोग किया जाये, तो यह उसके लिये उपयोगी होता है तथा लिखनेवालोंकी ऐंठनका यह स्पष्ट उदाहरण है। यह खासकर अङ्गुलियोंकी अकड़नमें लाभदायक है। लिखनेपर, पियानो बजानेका अभ्यास करनेपर अङ्गुलियाँ कड़ी पड़ जाती हैं, पर कई वर्षोंतक हर रोज कई घण्टोंतक बराबर परिश्रम

करनेपर पियानो बजाने-वालोंका हाथ एकाएक रुक जाता है। अङ्गुलियाँ काम नहीं देतीं। बाजा बजानेपर मरोड़ पैदा हो जाता है और अङ्गुलियाँ अपना प्रयोग ठीक-ठीक नहीं करतीं। बहुत देरतक परिश्रम करनेपर इसी तरह अन्य अंग भी आक्रान्त हो जाते हैं। किसी मिकके हाथमें कभी-कभी ऐंठन हो जायगी और वह बिलकुल बेकार हो जायगा। ज्योंही वह कोई विशेष कार्य करना चाहता है, उसका हाथ ऐंठने लगता है और या तो सामग्रीको कसकर पकड़ लेता है या वह हाथसे छूट जाती है। बढ़ईको अपने हथियारसे बहुत देरतक काम करनेपर, ऐसा होता है। सब प्रकारके अति-परिश्रमपर इस दवाका यह एक सुदृढ़ स्वरूप है।

रक्तामाशय तथा हैजामें भयङ्कर मरोड़, जिससे वह चीखने लगता है। शरीरकी सभी पेशियोंकी ऐंठन, जैसा कि हैजामें होती है। नर्त्तन रोग (Chorea) के लिये यह सुसलरकी प्रधान दवा है, पर हमलोग तो इसका परीक्षा द्वारा ही प्रयोग कर सकते हैं। सुसलर सभी स्नायविक दशाओंमें इसका प्रयोग करते थे, पर इसकी परीक्षाने स्नायुशूलमें जो ताप और दबावसे घटता है, मरोड़ और ऐंठनमें प्रयोग बताया है। स्नायुमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द, पर ये आवेशिक वेदनाकी तरह साधारणतः नहीं होते—फाड़नेकी तरह दर्द मानो स्नायु प्रदाहित हो उठे थे और फैल हो गये थे। सकम्प पक्षाघात (Paralysis agitans) की तरह हिल उठना और इसीके समान अन्य उपसर्ग। ताप और दबावसे घटना और ठण्ड, ठण्डे स्नान, ठण्डी हवा, ठण्डा मौसम तथा वस्त्रोंकी कमीसे रोग-वृद्धि, समूचे शरीरमें दर्द, पर ज्यादाकर एक अंगमें ही दर्द घर बनाये रहता है।

मानसिक लक्षण कुछ भी प्रकट नहीं किये गये हैं। एकाएक अतिसार रुक जानेसे, मस्तिष्ककी तकलीफ पैदा हो जानेपर, रोगीपर इसका प्रयोग हुआ है। मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय, पर यह भी रोगीपर परीक्षित लक्षण है। तापसे स्नायुशूल और वातका सर-दर्द घट जाता है। बहुत कष्ट देनेवाला दर्द। सर-दर्दका भयानक आक्रमण, जो जोरसे दबानेपर, तापसे और अन्धकारमें घटता है। मैंने यह लक्षण-संयोग पुराने रक्तसञ्चयी सर-दर्दमें देखा है, जब चेहरा लाल था और उसमें टपक होती थी, करीब-करीब बेलेडोनाकी तरह। यदि ताप और दबावसे आराम मिले तो मैग्नेशिया-फासके लिये ये दर्द राह साफ कर देते हैं। रोगी खूब कसे कपड़ेसे सर बाँध रखना और गर्म कमरा चाहता है और ठण्डमें उसकी रोग-वृद्धि हो जाती है।

आँखोंमें ऐंठन और झटका या बहुत देरतक बराबर बना रहनेवाला पक्षाघात, जिससे वक्र-दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। आँखके ऊपर और नीचे प्रचण्ड दर्द, यह भी ताप और दबावसे घटता है। इसने अन्य दर्दोंकी अपेक्षा चेहरेका दर्द विशेष आरोग्य किया है। चेहरेका स्नायुशूल, दाहिनी ओर बदतर, ताप और दबावसे घटता है और सर्दसे बढ़ जाता है। मुख-मण्डलका आक्षेपिक स्नायुशूल (Tic douloureaux)। चेहरेका पुराना झटका लगनेका रोग। यह वातग्रस्त और गठियाग्रस्तोंके लिये उपयोगी होता है, जिन्हें स्नायुशूल हुआ करता है। आक्षेपिक हिचकीकी यह एक आश्चर्यजनक दवा

है। जब दवा देनेका कोई दूसरा लक्षण न मिला तो मैंने हिचकीके लिये कभी-कभी मैग्नेशिया-फास दिया है।

पाकाशय-गह्वरमें दर्द। साफ जीभके साथ पाकाशयकी अकड़न। **कोलोसिन्थ**की तरह दुहरा जानेपर, शूलका दर्द घट जाता है और तापसे घटता है। **कोलोसिन्थ**में शूलका दर्द इस तरह स्पष्ट रूपसे तापसे नहीं घटता, पर यह दबावसे घटता है। उदरका तन जाना और वायु होना। इसके साथ ही बहुत दर्द। **तलपेटमें इधर-उधर विकीर्ण होनेवाला दर्द।** दर्दसे कराहना और बाध्य होकर इधर-उधर घूमना पड़ता है। उदर-गह्वरमें गैस होना (Meteorism)। इससे गायोंकी भी इस दशाको आरोग्य करता बताया जाता है। तिनपतिया घास (Clover pathes) खाकर जब गायोंका गैससे पेट तन जाता है, तो **कोलचिकम** आरोग्य कर देता है।

बवासीरमें काटने और धक्का देनेकी तरह दर्द। अच्छी तरह परीक्षा होती, तो बहुतसे यकृतके लक्षण प्राप्त होते, क्योंकि **मैगनेस और फास्फोरस**में यकृतके लक्षण हैं।

नये वातमें प्रचण्ड दर्द, तापसे घटता है। अंगोंमें स्नायुशूलका दर्द। बहुत-से उपसर्ग विश्राम करनेपर घट जाते हैं और थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर बढ़ जाते हैं। दर्द स्थान बदला करते हैं।

मैंगेनम

(Manganum)

मैंगेनम एक ऐसा भेषज है, जो एक ढंगका हरित्पाण्डु रोग (Chlorosis) उत्पन्न करता है तथा यह हरित्पाण्डु ग्रस्त लड़कियोंके लिये, भग्न-स्वास्थ्य प्रकृतिवालोंके लिये मोमकी तरह, रक्तस्वल्प, पीला, रोगियल, **यक्ष्माकी सम्भावना** बतानेवाला शरीर, जिसमें अस्थिक्षत और अस्थि-क्षय तथा यन्त्रोंकी बीमारी रहती है, उपयोगी है। बहुत दिनोंके स्वल्परजःका इतिहास प्राप्त होता है या तबतक ऋतु-स्राव रुका रहता है, जबतक रोगिनी अट्ठारह या बीस बरसकी उमरकी नहीं हो जाती।

अस्थि-आवरक और खासकर जङ्घास्थिकी अस्थि-आवरककी यन्त्रणा इसका एक जबर्दस्त स्वरूप है। जखम और उद्भेद होनेकी प्रवृत्ति और इनके चारों तरफ मोटापन और रसस्राव रहता है। पुराने उद्भेद, विचर्चिका (Psoriasis) की तरह दुरारोग्य। छोटे जखमोंमें भी पीब हो जाता है तथा बैंगनी रङ्गके कड़ापनके साथ रसस्राव होता है। इसकी गहरी क्रिया होती है, रक्तकणोंको तोड़ देता है तथा यक्ष्माकी नींव डाल देता है और खासकर स्वर-यन्त्रके यक्ष्माकी। स्वरयन्त्र-प्रदाहका बारम्बार आक्रमण, प्रत्येक रोगीकी दशा पहलेकी अपेक्षा बदतर कर जाता है। स्वरयन्त्रमें आरम्भ होनेवाला यक्ष्मा। भोजनकी इच्छा न होना, भूख नदारद, किसी चीजके खानेकी इच्छा नहीं होती। यह और इसके साथ ही समूचे शरीरमें घोर यन्त्रणा, किसी गहरी बीमारीकी नींव डालते हैं। यह कोई नया अस्थि-

आवरक-प्रदाह नहीं है, बल्कि समूचे शरीरमें धीमी यन्त्रणा। सन्धियोंके प्रदाह और सूजनसे पीव और अस्थि-क्षत होने लगता है। जख्म और पीव होनेवाले प्रवर्द्धन अर्द्ध सांघातिक रूप धारण करते हैं और आरोग्य नहीं होते, जिससे कि विसर्पका दृश्य दिखायी देता है। हर जगह छूनेपर यन्त्रणा होती है तथा हिलने-डोलनेपर यंत्रणा होती है। चलनेपर हड्डियोंमें यन्त्रणा होती है। आर्निकासे एक या दो दिनोंके लिये आराम मिलता है; पर इस दवामें यह बद्धमूल और विलम्बित रहता है तथा आर्निका या कैन्थेरिसपर खयाल नहीं जाता, जो एक या दो दिनके लिये आराम पहुँचायेंगे। फुन्सियोंवाले उद्भेद, रसस्राव, बद्धमूल जिसमें फटने और रक्त बहनेकी प्रवणता रहती है। चमड़ेका रूखापन और विचर्चिका। इसके उपसर्ग सर्दी, तर ऋतु और तूफानके पहले बदतर हो जाते हैं।

अब हम कुछ मानसिक लक्षणोंको लेंगे। ये उनमेंसे कुछ हैं, पर हैं ये आकर्षक और ये मनुष्यकी स्वतः प्रकृतिके भीतर गहराईपर चले जाते हैं, उनकी अपेक्षा भी ज्यादा जिनके विषयमें हम कह रहे हैं। घबड़ाहट और भय। बहुत ज्यादा संदेहीपन, कोई गड़बड़ी होनेवाली है। बेचैन और घबड़ाया। वह सड़कपर टहलता है और जितना ही ज्यादा वह सड़कपर टहलता है, उतनी ही उसकी घबड़ाहट बढ़ती जाती है। वह मानसिक कार्य करना चाहता है; मनपर अधिकार करना चाहता है और जितना ही ज्यादा वह ऐसा करता है, उतना ही वह चिन्तित होता जाता है। वह क्लान्त और यत्न-रहित रहता है। वह सोच नहीं सकता; वह चिन्तन नहीं कर सकता। उसको कारबारमें तकलीफ होती है; क्योंकि वह अच्छी तरह सोच नहीं सकता। घबड़ाहट-भरी बेचैनी।

सबसे बढ़कर जाँचनेकी बात तो यह है, कि उसे कैसे आराम मिलता है। वह लेट जाता है और यह सब चला जाता है। यह आपको हरेक दवामें नहीं प्राप्त हो सकता, यह दुष्प्राप्य, अद्भुत और विचित्र बात है और इतनेपर भी यह देखिये, कि यह कितना सार्वाङ्गिक है; इससे रोगी मनुष्यकी सम्पूर्ण प्रकृतिका पता लग जाता है। उसका स्वतः जीवन उत्तेजित, क्लान्त और चिन्तापूर्ण रहता है। अत्यन्त उदासी और कष्ट। वह लेट जाता और कहता है—“मैंने यह पहले ही क्यों नहीं सोचा?” अब एकदम आराममें हैं। वह उठ बैठता है तथा घबड़ाहट और बेचैनी फिरसे पैदा हो जाती है और वह खासा कष्टमें जा पड़ता है। देखिये, किस तरह यह रस-टक्ससे विसदृश है, जिसमें हिलने-डोलनेपर आराम पहुँचता है। देखिये यह आर्सेनिकके भी किस तरह विसदृश है अर्थात् उसका रोगी एक पलंगसे दूसरीपर, पलङ्गसे कुर्सीपर और फिर पलङ्गपर जाता है; वह चुप नहीं बैठ सकता या शान्तिसे लेट नहीं सकता; क्योंकि उसकी घबड़ाहट इतनी ज्यादा रहती है, कि उसे शान्त नहीं रहने देती। देखिये कितने आकर्षक ये लक्षण हैं और देखिये हमारे सामने कैसा वैषम्य प्रदर्शन है। मानो रोगीका अन्तस्तम जीवन हमसे बातें कर रहा है और दवा मांग रहा है अब हमें, विशृङ्खलित स्वास्थ्य-विधानके चिह्न और दिखावोंका अध्ययन करना चाहिये।

इसके बाद, उसे कष्टदायक भय मालूम होता है। दिनमें इधर-उधर करते समय घबड़ाहट और लेट जानेपर अच्छा मालूम होना। उदास, रोना और चुप। लेटकर शान्ति

प्राप्त करनेके सिवा अपनेको सान्त्वना देनेके लिये और कोई उपाय ही नहीं रहता। फिर क्या यह ताज्जुबकी बात है, कि इनमेंसे कुछ रोगी पलङ्गपर पड़े रहते हैं? तथा मैंगेनम उन पलंगपर पड़ी रहनेवाली स्त्रियोंको जो चुपचाप पड़ी रहना चाहती हैं, एक आश्चर्यजनक दवा है और यह उनके लिये ही कहा गया है, कि वे पलंगपर पड़ी रहना चाहती हैं। जहाँतक हमें अनुभव है, हम देखते हैं कि सब चीजोंसे एक वही विचार और चीजोंकी प्रकृति प्रकट होती है, जिसकी हैनिमैनने अपने पहले पैरग्राफमें—(आर्गेननमें) बताया है, कि किसी चिकित्सकका प्रधान कर्त्तव्य है, बीमारियों और रोगीपर अपना ध्यान देना और यह स्वतः रोगी कौन है? इसीपर हम बातें कर रहे थे अर्थात् जिसको हम यहाँ बाहर प्रकट करना चाहते हैं और जो कुछ विशेष लक्षण हम लेंगे, वे इसी चीजको बतायेंगे। ये विशेष बताये हुए साधारण इस तरह सूत्रबद्ध हैं, कि उनसे एक वृहत विचार सामांजस्य बन जाता है और हम उन्हें अलग नहीं कर सकते।

चिड़चिड़ापन और हतोत्साह—**सल्फर** और **ग्रैफाइटिस**की तरह। यह गुप्त यक्ष्मा प्रवणतामें **आर्जेण्ट-मेट, फास्फोरस, ग्रैफाइटिस** और **सल्फर**के सदृश है। हर-एक छोटी चीजोंसे ही चिढ़ उठना।

रक्तहीनतामें होनेकी तरह सर-दर्द, भयङ्कर सर-दर्द; सर भारी मालूम होता है; सुई गड़नेकी तरह दर्द दबाने, छेदनेकी तरह दर्द। सुई चुभानेकी तरह दर्द होता है। सीढ़ी चढ़ते समय झटका लगनेपर रोग-वृद्धि। मस्तिष्क तथा मस्तक-त्वचामें यन्त्रणा। स्पर्श तथा चाप मस्तक-त्वचामें सहन नहीं होते। मस्तक-त्वचामें (**फास्फोरस**की तरह) यहाँ-वहाँ लाल यन्त्रणा-भरे दाग; मानो विसर्प हो जायगा। खुली हवामें खींचने या डङ्क मारनेकी तरह सर-दर्द, घरके भीतर घट जाता है। दूसरे सर-दर्द हवामें ह्रास प्राप्त होते हैं। हिलनेसे, गतिसे और तर, सीड़-भरी ऋतुमें, तापमान परिवर्त्तन होनेपर बदतर।

पलकोंका सटना। यह पीव पैदा होने और श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहकी दवा है। पलकें फूली रहती हैं। पासकी चीजें देखनेपर खासकर नजदीककी रोशनी देखनेपर आँखोंमें दर्द। इस लक्षणपर मैंने अकसर इस दवाका प्रयोग किया है और जब सिलाई करनेपर, महीन अक्षर पढ़नेपर या आँखोंपर जोर पड़नेका कोई काम करनेपर सर दर्द होता था तो आरोग्य कर दिया है। स्नायविक गठियाकी धातुवालोंको, जब आँखोंमें दर्द हो तथा सिलाई करनेपर सर-दर्द हो या देरतक महीन अक्षर पढ़नेपर सर-दर्द हो, तो **रूटा** ही दवा है। बड़ा दिखाई देनेवाला शीशा (Magnifying glass) लेकर जो कार्य करते हैं, खासकर उनकी दवा **रूटा** है।

कानसे बदबूदार स्राव। श्रवण-शक्तिका-धीमापन, यह नाक छिड़कनेपर घट जाता है। बन्द हो जानेकी अनुभूति, नाक छिड़कनेपर घट जाती है। कण्ठकर्णी-नली (Eustachian tube) की सर्दी। बाहरी कानको छूनेपर दर्द होता है।

कानके भी बहुतसे उपसर्ग हैं। बहुत से रोगियोंको ऐसा अनुभव होता है, कि उनकी सभी तकलीफें कानमें ही घर बनाता हैं। शरीरके उर्द्ध भागके सभी दर्द और यन्त्रणाएँ

कानोंमें ही जा बैठती हैं। कण्ठका दर्द कानमें ही खोंचा मारता है। कण्ठमें दर्द होता है और दाँतोंमें दर्द होता है, जो कानमें जाता है। आँखमें दर्द जो कानोंको केन्द्र बनाता है। यह एक अद्भुत बात है। कान बहुतसे सन्तापोंका केन्द्र रहता है। "श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशा, साथ ही बढ़ती हुई बधिरता।" सर्दीसे, तर ऋतुसे। जब कभी बरफ गिरनेके समय ठण्डी वर्षा होती है, वह बहरा हो जाता है। इसके बाद यन्त्रणा, खाल उघड़ना और कर्णनालीमें जलन, इसके साथ ही बहुत खुजली। कर्ण-नलीमें खराश हो जानेपर आवेशिक खाँसीकी **सिलिका** और **कैलि-कार्ब** दोनों दवाएँ हैं। मैंने उनका दम घुटते, मुँह बन्द होते और वमन होते उस अवस्थामें देखा है, जब कर्णनालीमें खराश हो जानेपर उन्हें **कैलि-कार्ब** की जरूरत थी। कर्णनालीमें खराश हो जानेके कारण जो आवेशिक खाँसी आती है, उसकी **सिलिका** और **कैलि-कार्ब** दवा है; पर मैंगेनमने भी इसे आरोग्य किया है। बोलने, कुछ निगलने, हँसने या ऐसा कोई काम करनेपर जिससे कण्ठमें क्रिया हो, कानमें खुजली। बोलनेपर, जो स्वरयन्त्रसे काम लेता है। जब अन्नका गोला स्वरयन्त्रके पीछे नीचे उतरता है, तब ऐसा होता है। ऐसा कभी-कभी स्वरयन्त्रके यक्ष्मामें मौजूद रहता है तथा स्वरयन्त्रके पुराने जखममें जिनमें जलन, स्वरयन्त्रमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहता है, जो कानोंमें खोंचा मारता है। मैंगेनमकी परिक्षामें यह एक आश्चर्यकी बात हुई है, कि कितने ही कानके लक्षण लिखे गये हैं और दूसरोंकी तरह ये सभी कानके लक्षण पैदा होते या **ठण्डी, सीड़वाली** ऋतुमें बढ़ते हैं। "कण्ठकर्णी-नलीकी सर्दी," रुकावट। ऐसा मालूम होता है, मानो कान रुक गया है। "ऐसा मालूम होता है, मानो कानके सामने एक पत्ती रखी है।" सर्द, बरसाती ऋतुमें।

इस दवामें सर्वत्र एक लक्षण **डलकामारा**के सदृश है, उसमें यह सर्दीसे, सर्द हवासे और तर, सीड़-भरी मौसममें बदतर रहता है। उसकी सर्दी ठण्डे मौसममें जाग उठती है। प्रत्येक सर्दी, तरीका दौरा उसे स्वरभङ्ग उत्पन्न कर देता है तथा कण्ठमें श्लेष्मा हो जाता है। इसके सभी उपसर्ग मौसमके अनुसार होते हैं।

जहाँ कहीं उपदाह होता है, वहीं बहुत यन्त्रणा होती है। आँखें लाल और यन्त्रणापूर्ण रहती हैं। कण्ठ लाल और खाल उघड़ी रहती है। कानके स्रावमें बहुत स्पर्श-कातरता रहती है। इसमें सर्वत्र यन्त्रणा और स्पर्श-कातरता है। पुरानी सर्दी। नाक रुक जाती है। स्राव पीला, ढेला-ढेला और सवेरे हरा होता है। खूनका स्राव। नाक और उपास्थियाँ यन्त्रणापूर्ण रहती हैं। वह नाकको हाथ लगानेसे अपनेको बचाता है।

किसी भी दवामें ऐसा रोगियल चेहरा नहीं रहता। जब लोगोंको रक्त-स्राव होता है और वे मोम और पीले हो जाते हैं, तो बँधी गतसे काम करनेवाले **चायना** देते हैं; पर जब रक्त स्राव नहीं होता तथा वही दशा रक्त-कणके भङ्ग हो जानेके कारण मौजूद रहती है, तो मैंगेनमपर ध्यान देना चाहिये। हरित्पाण्डु और प्राणघातक रक्त-स्वल्पतापर भी लोगोंका मैंगेनमपर ध्यान जायगा तथा **पिकरिक एसिड** और **फेरम**पर। छोटे-छोटे घावोंमें

भी पीव हो जाता है; प्रत्येक वार कुचल जानेपर वहुत दिनोंतक दर्द रहता है। वहुत रक्त-स्राव नहीं होता; क्योंकि वहुत रक्त रहता ही नहीं।

इस दवामें रस-स्राव भी है। मैंने इसे रक्त स्वल्प रोगियोंके कड़े और नीले हुए जखमको आरोग्य करते देखा है। पुराने "ज्वरके जखम" (Feversores) इस दवासे आरोग्य किये जा सकते हैं। पपड़ी जमें उद्भेद।

सभी तरहकी पाकाशयकी बीमारियाँ, अजीर्ण, भूख न लगना। पाकाशय-प्रदेशमें खींचन, उदर-शूल; ये सभी तर, सीड़वाली ऋतुमें वदतर रहते हैं। दुहरा जानेपर दर्द घट जाता है। **मध्य अन्त्रका क्षय रोग** (Tabes mesenterica), रक्त-स्वल्प धातु-प्रकृति, भूख न लगना, अतिसार, आँतोंमें दर्द और ज्यों ज्यों रोगी दुवला होता जाता है, उसकी ग्रन्थियाँ अनुभवमें आती हैं। कुछ समयतक रक्त-क्षय हो जानेके कारण जो स्त्रियाँ रक्त स्वल्प हो गयी हैं। उनके लिये लाभदायक है; पर रक्त-स्राव होनेके कारण जो रक्त-स्वल्पता होती है, उसके लिये यह इतनी उपयोगिनी नहीं है, जितनी कि रक्त-कणका नाश होनेपर जो रक्त-स्वल्पता होती है, उसके लिये। **सोरिनम, लैकेसिस, सल्फर** और **ग्रैफाइटिस**की तरह तापकी भयङ्कर झलक उनमें आती है, जो कुछ दिनोंसे रक्त-हीन हो रही हैं।

यह यकृत रोगकी भी एक वहुत वड़ी दवा है। यकृतमें कड़ापन और रक्त-सञ्चय रहता है। इसने चर्वी वढ़नेकी प्रवणता आरोग्य कर दी है। इसने कामला रोग आरोग्य किया है; इसने पित्त-पथरीके वहुतसे रोगी आरोग्य किये हैं, जिसका मतलब यह है, कि यकृत एक ऐसी शिथिल अवस्थामें जा पहुँचता है, कि पित्त अस्वस्थ हो जाता है, स्राव रुका हुआ और फिर इसमें छोटी-छोटी गाँठें वनने लगती हैं और पित्त पथरी वनने लगती है। यह पाकाशयको ठीक-ठीक क्रियाशील वनाता है—यकृतको क्रियाका आधार ठीक रखता है, पित्त स्वस्थ हो जाता है तथा पित्त-पथरी स्वस्थ पित्तमें गलकर परिवर्तित हो जाती है। पित्त-पथरीके साथ पित्त-पथरी-शूल भी उत्पन्न हो सकता है।

पेट गड़गड़ाहटसे भरा कहा जा सकता है, वार-वार मरोड़की तरह दर्द होता है और यह सर्द, सीड़वाली ऋतुमें होता है। वरफमें रखे खाद्यकी तरह ठण्डा खाद्य खानेपर यह दर्द उत्पन्न होता है। यकृत-प्रदेशमें ठण्डी चीजें वहुत गड़वड़ी पैदा कर देती हैं। पाकाशयमें तथा आँतोंकी राहसे तकलीफ। "नाभीके पास दर्द और सङ्कोचन।" कुछ-कुछ **प्लम्बम**की तरह। यद्यपि ऐसा नहीं कहा गया है, कि **प्लम्बम** और **प्लाटिनम**की तरह नाभीके पास डोरीसे कोई खींचता है।

"मलके साथ वहुत वायु निकलता है। आँतोंकी अनियमित क्रिया।" कब्ज कुछ कलतक रह सकता है, इसके वाद अजीर्ण होकर पतले दस्त आने लगते हैं,—जिससे आँतें वरावर अनियमित रहती हैं। वह कभी एक दम सुरक्षित नहीं रहता, उसे या तो कब्ज रहता है या पतले दस्त आने लगते हैं; जैसा कि हमलोग अनुमान कर सकते हैं, पाकाशय एक दोष-पूर्ण यन्त्र हो जाता है।

"बैठे रहनेपर मलद्वारमें मरोड़का दर्द। लेट जानेपर अच्छा हो जाता है।"

रजः बन्द कालमें जो तापकी झलक होती है, उसकी यह लाभदायक दवा है। रजः-स्रावकी दशासे ऊपर बतायी हरित्पाण्डुवाली दशाका निकटस्थ सम्बन्ध है। जरायु तथा पाकाशयकी विश्रृङ्खलता।

बहुत थोड़ा मासिक रजः-स्राव होता है; यह एक या दो दिनतक ही रहता है और बहुत जल्द ही फिर आ जाता है। रक्त-स्वल्पवाली दशामें यह गैरमामूली तौरसे होता है, हरित्पाण्डु (Chlorosis) रोगमें भी अनियमित रहता है। उन स्त्रियोंमें, जिनका रजःस्राव होना रुक गया है; थोड़े-थोड़े समयपर थोड़ा-थोड़ा रक्त-स्राव होता है, थोड़ा-सा पानीकी तरह स्राव। रक्त-हीन वृद्धाएँ, जिनके जरायुसे थोड़ा-सा पानीकी तरह स्राव होता है। जरायुसे पानीकी तरह स्राव होनेवाली वृद्धाओंके लिये पहले हमें **कैल्केरिया** पर निर्भर रहना पड़ता था।

यदि मांस-पेशियोंकी शिथिलता रहे तो हमें इन दुर्बलताओंपर आश्चर्य न करना चाहिये और यही क्लान्त, दुर्बल पेशियोंवाली स्त्रियोंके लिये मैंगेनमके सम्बन्धमें भी है तथा जरायुकी स्थान-च्युति और मलान्त्रकी स्थान च्युति है। आँतोंका नीचेकी ओर खिंचाव और शिथिलताके कारण सम्पूर्ण तलपेट भारी मालूम होता है।

सबसे अधिक भय स्वर-यन्त्र, टेंटुआ और फेफड़ेके आक्रान्त होनेका रहता है। यदि ऐसी रक्त-स्वल्प लड़कियोंकी स्वास्थ्योन्नति नहीं होती और अच्छी प्रतिक्रिया नहीं होने लगती, तो कुछ-न कुछ जटिल रोग उत्पन्न हो जाता है। रजःस्राव सिर्फ पीला तरलकी तरह या श्वेत-प्रदरका होता है। स्वर-यन्त्रकी खाल उधड़ जाना। पुरानी दशामें स्वर-भङ्ग और आवाजका क्षय हो जाना। प्रत्येक बार तर मौसमका दौरा होनेपर, बार-बार तबतक दुहरानेवाले जबतक यक्ष्मा नहीं आरम्भ हो जाता है, उपयोगी है। स्वर-यन्त्रमें प्रत्येक बारकी सर्दी कोई और भी स्वर-यन्त्रक तकलीफ उत्पन्न कर देती है, स्वर-यन्त्र-प्रदाह (Laryngitis) उत्पन्न कर देता है। यह गायक और वक्ताओंकी वैसी ही उपयोगिनी दवा है, जैसी **आर्जेण्टम मेटालिकम**। लगातार श्लेष्मा इकट्ठा होना, ज्योंही रोगी इसे साफ करता है, त्योंही श्लेष्मा ज्यादा बनता है। सभी समय खखारता है और प्रत्येक मनुष्यको रञ्ज किया करता है। **आर्जेण्टम मेटालिकम, सिलिका, सलफर, फास्फोरस** और मैंगेनम, ये सभी ऐसा ही करते हैं। प्रत्येक बार खखारनेपर मुँहभर बलगम निकल आता है। यक्ष्माका स्वर-यन्त्र-प्रदाह। स्वर-यन्त्रकी खाल उधड़ जाना। हरे श्लेष्माका बलगम, बहुत अधिक रक्त-स्वल्पता। सर्दीकी प्रत्येक लहर **डलकामारा**की तरह ब्राङ्काइटिस (श्वासोपनली-प्रदाह) उत्पन्न कर देता है। ठण्डे, सूखे मौसमसे कभी-कभी आराम पहुँचता है; पर रोगीको सर्दी सहन नहीं होती; वह सर्दीला और रक्त-स्वल्प रहता है।

लेट जानेपर खाँसीका ह्रास हो जाता है; बहुत-सी खाँसियाँ लेट जानेपर बदतर हो जाती हैं और कुछ दवाओंमें लेट जानेपर रोग-ह्रासके लक्षण हैं। **इयुफ्रेशिया**में नाककी सर्दीके कारण खाँसी आती है; खासकर बलवान मनुष्योंको जब नयी सर्दी होती है और लेट

जानेपर खाँसी अच्छी रहती है। इसके अलावा, मेरुदण्डके रोगियोंको स्नायविक मेरुदण्डीय खाँसी रहती है तथा स्नायविक लड़कियोंको, जिन्हें लेटते ही खाँसी आने लगती है, जो **हायोसायमस**से आरोग्य हो जाती हैं। इस दवामें दिनके समय खाँसी आती है, रातमें लेटनेकी वजहसे खाँसी बिलकुल ही नहीं आती। **आर्जेण्टम मेटालिकम**में भी दिनके समय खाँसी आती है ; मैंगेनमकी तरह यह भी स्वर-यन्त्रको आक्रान्त करता है और लेट जानेपर खाँसी घट जाती हैं। बोलने, हँसने, गहरी साँस लेने और ठण्ड तथा सीड़वाली ऋतुमें खाँसीका बदतर हो जाना।

बार-बार लौट आनेवाली बीमारीकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है और प्रथम आक्रमणमें शायद ही कभी देखनेमें आती है। क्रमशः धीरे-धीरे क्षय होनेवाले रोगियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। फेफड़ेमें जखम और उससे रक्त-स्राव। रक्त-स्राव पानीकी तरह होता है, खूनकी लार या खूनी श्लेष्माकी तरह। रोगी स्नायविक, कम्पनशील हो जाता है और उसका कलेजा धड़कने लगता है।

प्रत्यङ्ग कष्टसे भरे रहते हैं, यहाँतक कि गठियामें भी यन्त्रणा-पूर्ण अस्थियाँ, तलवोंमें जलन, सन्धियोंकी विवृद्धि, अस्थि-आवरक दर्द-भरा, यन्त्रणा-पूर्ण सन्धियाँ। इसमें तीव्र प्रादाहिक वात **पल्सेटिला** और **बेलेडोना**की तरह नहीं होता ; बल्कि सन्धियोंमें बहुत अधिक सूजन न रहनेपर भी स्पर्श-कातरता रहती है तथा **रोडोडेण्ड्रन, रस टक्स** और **डलकामारा**की तरह तर ऋतुसे रोग-वृद्धि हो जाती है।

यह दवा अमूमन ज्वरमें नहीं प्रयुक्त होती ; पर निम्न सान्निपातिक ज्वरमें, जब ज्वर कुछ घट जाता है, अस्थियाँ असहिष्णु रहती हैं, सारे शरीरमें यन्त्रणा रहती है, रोगीमें ताकत नहीं आती, वह लगातार बहुत दिनोंतक बनी रहनेवाली रोगारोग्य-कालकी दुर्बलतामें रहता है। खासकर वे जिनका बुरी तरह इलाज हुआ है, जिन्हें दवा तबतक खिलायी गयी है, जबतक रक्त कण नष्ट नहीं हो गये हैं। आप सोचेंगे, कि उसे यदि बड़ा-सा जखम हो जाता, तो वह अच्छा रहता ; पर इसके लिये उसमें पूरी ताकत नहीं रहता। इसमेंसे कितनों ही को "ज्वरका घाव" हो जाता है। यह उपदाह-नाशक चर्म-सूत्र (Seton) की तरह हो जाता है और उन्हें आराम पहुँचाता है ; पर यह रोगी किसी तरह भी एकको उन्नत नहीं कर सकता ; केवल अस्थि-आवरक यन्त्रणापूर्ण और रस स्रावी रहता है।

मेडोरिनम

(Medorrhinum)

बच्चोंको वंशगत रूपसे प्राप्त बीमारियाँ इस दवाके बहुत-से प्रयोगोंमेंसे एक है। बहुत दिनोंके तथा सक्रिय तजुर्बेकार चिकित्सकोंको बच्चोंके बहुत-से जल्द न आरोग्य होनेवाले रोग प्राप्त होते हैं। बच्चा बहुत जल्द दुबला हो जाता है तथा सुखण्डी रोग-ग्रस्त हो

पड़ता है या बच्चेको दमा हो जाता है या नाक या पलकोंसे लसदार सर्दीका स्राव होता है अथवा मस्तक-त्वचा अथवा चेहरेपर दाद हो जाती है अथवा बौना हो जाता है, बढ़ता नहीं तथा उसके पिताका जटिल सूजाकका इलाज हुआ था और शायद पिताकी जननेन्द्रियपर श्लेष्मागण्ड (Condylomata) था। यह दवा या तो आरोग्य कर देगी या आरोग्यता आरम्भ कर देगी। कई बरस पहले किसी स्त्रीका विवाह हो चुका है, अब वह सन्तान चाहती है। विवाह होनेके समय वह स्वस्थ थी, पर अब उसके डिम्बाशयमें दर्द होता है, रजः-स्रावके रोग हैं, उसकी काम-वासना बन्द हो गयी है, पीली और मोमकी तरह होती जाती है तथा बहुत ही प्रचण्ड असहिष्णु तथा स्नायविक हो रही है। पतिके इतिहाससे रोगका पता लगता है और यह दवा आरोग्य कर देगी। पीले मोमकी तरह युवक, जिन्हें स्फूर्त्तिदायक और तम्बाकूकी इच्छा रहती है, जिन्हें खुली हवा सहन नहीं होती, व्यायाम और चलनेके बाद अकड़ जाते हैं, जिन्हें आसानीसे पसीना होने लगता है तथा जिन्हें बहुत ज्यादा सर्दी सहन नहीं होती, जबसे इञ्जेक्शन देकर जिनका सूजाक आरोग्य किया गया, तबसे कभी अच्छे नहीं रहे। शरीरके सभी अंशोमें वातके लक्षण। कितने ही लक्षण तो दिनके समय बदतर रहते हैं। **सिफिलिनम**से इसकी तुलना करनेपर मालूम होता है—"मेडोरिनम दिनके समय और **सिफिलिनम** रातके समय बदतर रहता है"—यह कोई ठीक ठीक वर्णन नहीं है। यह सत्य है, कि **सिफिलिनम**के बहुत से दर्द रातके समय बदतर रहते हैं। यह सत्य है, कि कुछ प्रमेह-विषज (Sycotic) दवाओंके और मेडोरिनमके उपसर्ग दिनके समय बदतर रहते हैं। यह भी सत्य है, कि बहुत-से प्रमेहज उपसर्ग (Sycotic) दिन-रात प्रचण्ड रूप धारण किये रहते हैं। यह भी सत्य है, कि मेडोरिनमके मानसिक लक्षण रातके समय बहुत प्रचण्ड रहते हैं। इस नोसोड (रोग विषज औषध) की घटनाको लेकर ठीक विवरण प्राप्त हो सकता है। हिलने-डोलनेपर वातके प्रदाह बदतर हो जाते हैं, पर जब सूजन नहीं रहती, तो ये रोगी **रस-टक्स**के रोगियोंकी तरह क्रिया करते हैं। उन्हें सर्दी सहन नहीं होती, उनमें धीमा तथा तीव्र दर्द हुआ करता है और केवल हिलते-डोलते रहनेपर उन्हें आराम पहुँचता है – **रस-टक्सकी तरह**। बहुतसे प्रमेहके रोगियोंको सर्दीसे तकलीफें हुआ करती हैं, कितनोंको ही ताप सहन नहीं होता। यन्त्रणा, कुचल जानेकी तरह दर्द और खंजता, मानो उसे गहरी सर्दी लग गयी है तथा बोखारमें पड़ना ही चाहता है। सार्वाङ्गिक खींचनके साथ दर्द पैदा होता है। वातके जल्द आरोग्य न होनेवाले रोगी। मांस क्षय होता जाता है। झुककर चलता है; कदाकार होता जाता है। लंगड़ाकर चलता है। ऐसा मालूम होता है, कि इसे बहुत जल्द फेफड़ेका यक्ष्मा हो जायगा। बहुत अधिक स्नायविक अनुभूतियाँ, खासकर जेवर या केश कोई छू लेता है, **तो सहन नहीं होता**।

काँपना और सिहरना; दृढ़तासे कमजोर ही होता जाता है, समूचे शरीरमें **बहुत ज्यादा सुरसुरी**। जरा भी आवाजसे चौंक पड़ता है, बेहोश हो जाना चाहता है और पंखेकी हवा खानेकी इच्छा करता है। खुली हवा चाहता है। ठण्डा और नाड़ी-रहित, साथ ही ठण्डा पसीना। अत्यन्त यन्त्रणा तथा रक्ताम्बुके शोथके साथ **प्रत्यङ्गोंमें शोथ**।

वाहरसे ठण्डी तर ऋतु सहन नहीं होती। **स्नायुशूल हुआ करता है।** सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। तापसे दर्द घटते हैं। पीठ और प्रत्यंगोंमें खोंचनका दर्द। रोगी वहुत ही अधिक दर्द-कातर रहता है। इस दवाका निम्न-क्रममें कभी भी प्रयोग न करना चाहिये।

विषय, अङ्क और नाम भूल जाता है ; क्या पढ़ा है, उसे भी भूल जाता है। लिखने, हिज्जे करने और शब्दोंमें भूल करता है। **समय वहुत धीरे धीरे अतिवाहित होता है** ; हर शख्स वहुत धीरे-धीरे चलते हैं। वह हमेशा जल्दवाज रहता है, इतनी जल्दीमें कि दम फूलने लगता है। वह इतनी जल्दीमें रहता है, कि उसे मूर्च्छाका आवेग मालूम होने लगता है। चित्त-विभ्रम, चकराया, अनुभूतियोंका भय, वोलनेके समय विचार-धारा खो देती है। अपने लक्षण वतानेमें रोगिनीको वहुत तकलीफ होती है, अपनेको भूल जाती है और वार-वार उससे पूछना पड़ता है। सोचती है, कि कोई उसके पीछे है ; फुसफुसाहट, वोलनेकी आवाज सुनती है। सामानोंके पीछेसे झाँकते हुए चेहरे देखती है (फास)। सभी चीजें अवास्तविक दिखाई देती हैं (ऐल्यूमिन.)। प्रच्छन्न उन्मादकी तरह उन्मत्त निराश भाव। वात करनेके समय रोती है। शामके समय आनन्दातिरेक। मनकी परिवर्त्तनशील दशा ; क्षणभर उदास, दूसरे क्षण आनन्दपूर्ण। मृत्युका पहलेसे ही खयाल। सोकर उठनेपर डरावना भाव, मानो कुछ भयङ्कर हो गया है। **अंधेरेका भय।** अपनी मुक्तिकी चिन्ता।

झुकनेपर सरमें चक्कर आ जाना ; लेटनेपर घट जाता है ; चलने फिरनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है। गिर जानेका भय।

मस्तकका भ्रमणकारी स्नायुशूल, तर सीड़वाली ऋतुमें वदतर हो जाता है। एकाएक तेज दर्द पैदा होता और चला जाता है। माथेका कोई अंश वेदना-रहित नहीं रहता। रोशनीसे और खाँसनेपर दर्दकी अभिवृद्धि हो जाती है। खूव भीतरकी तरफ जलनका दर्द, मानो वह मस्तिष्कके भीतर हो रहा है। मस्तक-त्वचामें वहुत ज्यादा तनाव। ललाटपर मानो पट्टी वँधी है। पश्चात्-मस्तक तथा गर्दनमें दर्द, हिलने-डोलनेपर वढ़ जाता है। माथेकी त्वचामें वहुत ज्यादा खुजली। मस्तक-त्वचामें विचर्चिकाके उद्भेद, दाद। वहुत ज्यादा रूसी होना। केश सूखे और टूटनेवाले।

आँखोंके सामने चिनगारियाँ, दोषावह दृष्टि और काले, भूरे धव्वे दृष्टि-क्षेत्रमें दिखाई देना। चीजें या तो दो दिखाई देती हैं या वहुत छोटी। खयाली पदार्थ देखता है। आँखें खींची मालूम होती हैं। पेशियोंमें तनाव। आँखें घुमानेपर उनमें दर्द होने लगना। आँखोंमें वालूकी अनुभूति। आँखोंमें खीलें रहनेकी अनुभूति। कनीनिकामें जखमके साथ चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह। वहुत सूजनके साथ पलकोंके किनारोंका प्रदाह। सवेरे पलकें आपसमें जुड़ जाती हैं। किनारे लाल और खाल उधड़े। पलकोंका गिर जाना ; पलकोंका फड़कना। वरौनियाँ झड़ जाती हैं। आँखोंके नीचे सूजन, जैसी कि कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease) में हो जाती है।

विश्रृङ्खलित-श्रवण-शक्ति और एकदम बहरापन। ऐसा मालूम होता है, मानो आवाजें या लोगोंको बातें करते सुनता है। पहले तो श्रवण-शक्ति बहुत तीव्र रहती है। कानके भीतरमें कण्ठकर्णी-नलीमें दर्द। कानमें सुरसुरी। कानमें खुजली; कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

इस दवासे तापकी दुरारोग्य सर्दी आरोग्य हो जाती है तथा गन्ध-रोधके साथ नाकका अग्र-छिद्र रुका। श्लेष्मा, सफेद या पीला। बहुत उच्च शक्तिका मेडोरिनम देकर दुरारोग्य नासा-स्राव, एक मध्यम अवस्था प्राप्त व्यक्तिका, आरोग्य कर दिया गया था तथा मूत्रनलीका स्राव जो कई बरस पहले रोक दिया था, जारी हो गया तथा पुराने सूजाक (Gleet) की तरह क्रिया करने लगा और अन्तमें बिना किसी दूसरे इलाजके ही दब गया। नाकसे रक्त-स्राव तथा नाकका स्राव खून-मिला। श्वासमें खींची हुई हवा नाकमें सहन नहीं होती। नाकमें खुजली और सुरसुरी।

हरापन लिये पीला, मोमकी तरह, प्रमेह-ग्रस्त रोगियोंका रोगियल चेहरा **आर्सेनिक**के रोगीकी तरह दिखाई देता है; परन्तु यह कहना विचित्र है; **आर्सेनिक**के लक्षण ठीक-ठीक नहीं मिलते; पर इसके बदले भ्रमसे उसका प्रयोग हो सकता है। शरीरका चमड़ा चमकता है तथा अकसर इसपर ददोरे हो जाते हैं तथा मुँहमें ज्वरके छाले पड़ जाते हैं। चेहरेपर भैंसिया दाद। नाककी प्राचीर या ओंठपर अन्तस्त्वकोषार्बुद (Epithelioma) चेहरेमें वातका दर्द और कड़ापन। हनु-निम्नस्थ-ग्रन्थिकी सूजन। चबानेके समय दाँत हमेशा असहिष्णु रहते हैं। स्वाद बदला रहता है, जीभ बदबू-भरी रहती है और तलदेशमें सफेद रहती है। मुँह नासूरके जखमोंसे भरा रहता है। मुँह और जीभपर जखम, श्वासमें बदबू रहती है। मुँह और कण्ठमें डोरीकी तरह श्लेष्मा रहता है। मुँह सूखा और जला हुआ-सा मालूम होता है। कण्ठकी सर्दी और गाढ़ा सफेद श्लेष्मा हमेशा पश्चात् नासा-रन्ध्रसे निकाला करता है।

राक्षसी भूख, यहाँतक कि भोजनके बाद भी। अदम्य पिपासा। स्फूर्ति-दायक पदार्थ, तम्बाकू, मिठाइयाँ, हरे फल, बरफ, खट्टी चीजें, नारङ्गियाँ, एल नामकी शराब, नमक खानेकी इच्छा करता है। भोजन करने और पानी पीनेके बाद मिचली। श्लेष्मा और पित्तका वमन। खट्टा और तीता वमन। बहुत ओकाई। बिना मिचलीके ही वमन।

पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द, खाने-पीनेसे नहीं घटता। पाकाशयमें कम्पन, पाकाशयमें सङ्कोचन, घुटने खींचनेपर रोग बढ़ जाता है। पाकाशयमें धँसना। पाकाशयमें अशङ्काप्रद दर्द।

यकृतमें भयङ्कर दर्द। यकृत और प्लीहामें कसकर पकड़नेकी तरह दर्द। इसने क्रिमि आरोग्य कर दी है। तलपेटमें स्पन्दन अनुभव होना। वंक्षण-ग्रन्थिमें दर्द और सूजन। एक स्वस्थ और मांसल मनुष्यको सूजाक हो गया। उसकी इञ्जेक्शनसे चिकित्सा हुई। जल्द ही उसका मांस-क्षय होने लगा। उसके वक्षणमें दर्द होता था, जिससे बाध्य

होकर उसे झुककर चलना पड़ता था। वह पीला और मोमकी तरह हो गया; सब जगह कड़ा और खञ्ज तथा उसे सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती थी। बारम्बार सर्दी लग जाती थी, जो कभी एकदम आरोग्य होती नहीं मालूम होती थी। बहुत ऊँचे क्रमका मेडोरिनम देनेपर उसका स्राव लौट आया और वह बिलकुल अच्छा दिखाई देने लगा शुक्र-रज्ज (Spermatic cords) में दर्द।

इस दवाने कितने ही बच्चोंको सुखण्डी रोग आरोग्य किया है, जिन्हें पितासे वंशगतरूपसे प्रमेह प्राप्त हुआ था। प्रमेह-ग्रस्त पिताकी सन्तानोंको अकसर वमन और अतिसार तथा मांश-क्षयकी बीमारियाँ हो जाती हैं। वे सूख चुनी हुई प्राचीन रोगकी दवाएँ ही तक जाते हैं या चुनी हुई दवा केवल उपशामक रूपमें कार्य करती हैं। मेडोरिनम ऊँचा क्रम देनेपर वे पनपने लगते हैं तथा अन्य दवाएँ भी अच्छी क्रियाएँ करती हैं। कब्ज। पाखानेके कालमें, काँखते समय, उन्हें बहुत पीछे झुक जानेपर ही पाखाना होता है। मलान्त्रकी निष्क्रियता। मल गोली या कड़े ढेलेके रूपमें होता है। मलद्वारके पास कुछ रस-सा चुआ करता है, जिससे मछलीकी तरह गन्ध आती है।

थोड़ा, गहरे रङ्गका तेज बूवाला पेशाब, उन लोगोंको होता है, जिन्हें वातके कारण खञ्जता तथा अकड़न रहती है। सर्दी सहन नहीं होती, तलवे स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं। हेयालीनोंके तलछटके साथ अण्डलाल मिले पेशाबमें, जब रोगी मोमकी तरह पीला तथा पैरमें और घुट्ठीमें शोथ रहता है तथा तलवे इतने स्पर्श-कातर रहते हैं, कि उसे चला नहीं जाता। तलवेका चमड़ा नीलापन लिये गर्म रहता है; इसके अलावा जब पैर इतने यन्त्रणापूर्ण रहते हैं, कि वह उन्हें छूने नहीं देना चाहता या दबाव भी सहन नहीं कर सकता, जो यह देखनेके लिये दिया जाता है, कि गड़हा पड़ता है या नहीं। इस ऊपर बतायी दशामें मेडोरिनम बहुत तेजीसे कार्य करेगा, यदि सूजाकका इतिहास प्राप्त हो। मूत्राशय, मूत्राशय-मुखशायीग्रन्थि और मूत्रपिण्डका प्रदाह। पेशाबमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा। दर्द-गुर्दा। मूत्रपिण्डका कोरण्ड-घटित प्रदाह। बहुत ज्यादा पीला पेशाब। रातमें बार-बार पेशाब होना। बिछावनमें पेशाब हो जाता है। मूत्राशयकी अक्रियता और पेशाब कमजोर धारमें होता है। इसने बहुमूत्र (Polyuria) के बहुतसे रोगी आरोग्य किये हैं।

स्वप्नदोष तथा जवानोंका ध्वजभङ्ग। जिन्हें कई बार सूजाक हो चुका है, खासकर यदि इञ्जेक्शनसे उनका इलाज हुआ है। वातज लक्षण और क्षय होते हुए स्वास्थ्यके साथ बहुत दिनोंतक सूजाकका स्राव। सूजाकके कारण होनेवाले वातकी यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण औषधि है। यह वातज लक्षणोंको वशमें लाता है तथा स्रावको जारी करता है। इसने अण्डोंका कड़ापन तथा शुक्ररज्जुका दर्द आरोग्य कर दिया है। वाम शुक्ररज्जुमें दर्द, बायें गृध्रसीस्नायुमें दर्द तथा प्रत्येक बार झोंककी खुली हवा लगनेपर कटिवात, उन मनुष्योंको जो कई बरसोंतक सूजाक भोगते रहे हैं तथा मेडोरिनम १० एम० लम्बे अन्तरसे दे देकर आरोग्य किये गये थे।

डिम्बाशय प्रदेशका पुराना दर्द। वन्ध्यात्व। कष्टरज। बड़ा ही दुःसाध्य प्रदरका स्राव। वर्द्धित डिम्बकोष। भग तथा योनि-पथमें प्रचण्ड खुजली। बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव।

त्रिकास्थिमें खींचन, मानो ऋतु-स्राव होगा। समस्त वस्ति-गह्वर-प्रदेशमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द। मुष्क और उरुमें ऋतु-स्रावके समय जलन।

श्वासकष्ट। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर श्वासरोध और लघु-श्वास ; प्रमेह विषवाले पिता-माताके बच्चोंका दमा (नेट्र-सल्फ)। स्वरयन्त्रमें कुटकुटीके साथ श्वासनली द्वारमें अकड़न ; कष्टसे श्वास निकलता है, पर सरलता-पूर्वक खींचा जाता है। इस दवासे दमाके बहुतसे रोगी आरोग्य किये गये हैं। सो जानेपर स्वरयन्त्रका सूखापन जिससे अकड़न और खाँसी होने लगती है। श्वासोपनलियोंकी आराम न होनेवाला सर्दी, जिसके साथ बहुत ज्यादा लसदार बलगम रहता है इस दवासे आरोग्य किया गया है। श्लेष्माके पास पहुँचनेतक गहरी खाँसी नहीं ले सकता। (कास्टि)। तलपेटके बल लेटनेपर खाँसी घट जाती है और रातमें बढ़ जाती है। बलगम बहुत पीला, सफेद या हरा, लसदार रहता है, निकालनेमें कष्ट होता है। गर्म कमरेमें खाँसी बदतर रहती है।

इस दवाकी जरूरतवाले बहुतसे रोगी, रोगियल, पीले दिखायी देते हैं और झुककर चलते हैं, मानो उन्हें यक्ष्मा हो जाना चाहता है। वक्षमें घरघराहटके साथ सूखी खाँसी। बहुत ताप, यहाँतक कि वक्षमें जलन होने लगती है। वक्षमें बहुत तरहका दर्द। वातज, तर सीड़-भरी हवा लगनेपर वक्षके भीतरसे तेज दर्द। जब सूजाकके रोगीको यक्ष्माके जटिल लक्षण पैदा होते दिखायी दें तथा लक्षणोंसे प्रमेहकी न्यूनता दवाको सन्देह-जनक बना देती है, तो इस दवासे अच्छी प्रतिक्रिया होने लगती है और कभी-कभी कई महीनोंके लिये दवा हो जाती है। खाँसनेपर वक्षमें बेहद दर्द। वक्ष और स्तनमें ठण्डककी अनुभूति। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। स्पर्श करनेपर वक्षमें दर्द होता है तथा श्वासकी गतिसे दर्द बढ़ जाता है।

वात-प्रकृतिवालोंको अमूमन जो लक्षण रहते हैं, हृत्पिण्डमें वे ही सब लक्षण प्रकट होते हैं। श्वासकष्ट, हृत्पिण्डका फड़फड़ाना, कलेजा धड़कना, दर्द तेज, काटनेकी तरह, सुई गड़नेकी तरह होता है ; हिलने डोलनेसे बढ़ जाता है। हृत्पिण्डमें जलन, यह बायें बाहुतक फैल जाती है।

"लँगड़ी पीठ" इन रोगियोंकी एक आम शिकायत रहती है। यह साधारण कटि-वात अथवा कटि-त्रिकास्थि सम्बन्धी दर्द रहता है और अकसर निम्न-प्रत्यङ्गतक फैल जाता है। जंघा या उरु-स्नायुका दर्द, गर्दन और पीठमें खींचन। पीठमें आड़ाआड़ी दर्द, बायेंसे दाहिने कन्धेमें दर्द। मेरुदण्डके ऊपरी भागमें बहुत तेज ताप। सोकर उठनेपर या घसकना आरम्भ करनेपर पीठमें कड़ापन। ठण्डी तर ऋतुमें दर्द बढ़ जाते हैं। स्पर्श-कातर मेरुदण्ड, मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें यन्त्रणा।

ठण्डी सीड़वाली ऋतुमें पुराना वातज दर्द। प्रत्यङ्ग खञ्ज और अकड़े। समूचे शरीरमें और प्रत्यङ्गोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। तेज दर्द। रोगी अत्यन्त दर्द-असहिष्णु रहता है तथा बहुत तेज मालूम होता है और सुई गड़नेकी तरह दर्द। हिलने-डोलनेसे कुछ दर्द आरम्भ हो जाते हैं और कुछ लगातार गतिशील रहनेपर अच्छे हो जाते हैं। हाथ-पैर

ठण्डे। तलहत्थी तथा तलवोंमें जलन। प्रत्यङ्गोंका काँपना। कन्धोंमें वातका दर्द, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। बाहु और हाथमें सुन्नपन, बायाँ बदतर रहता है। हाथ और बाहु काँपते हैं। तलहत्थीमें जलन होती है, उनपर हवा करना चाहता है। दाहिना हाथ ठण्डा, फिर बायाँ। ठण्डे हाथ। हाथके पिछले भागका सुन्नपन और गर्म रहना।

कम्पनशील दुर्वलता और निम्न-प्रत्यङ्गोंका सुन्नपन। पैरकी कदाकारिता, इच्छानुसार वे नहीं चलते। जंघाका सुन्नपन, बराबर निम्नाङ्गको बाध्य होकर फैलाना पड़ता है। पैरोंमें तनाव और खींचनका दर्द। वातज दर्द। मांस और अस्थि-आवरकमें कड़ापन और यन्त्रणा। बिजली कड़कनेके साथ, तूफानके समय ऊपरकी तरफ खोंचा मारनेकी तरह दर्द। पैरोंमें अस्थिरता, उन्हें बराबर हिलाते रहना पड़ता है। पैर और जंघाओंमें धीमा दर्द और खींचन, गृध्रसी तथा जंघा-स्नायुमें दर्द, लगातार हिलाते-डोलाते रहनेपर अच्छा रहता है। पैर सुन्न और भारी, लकड़ीके कुन्देकी तरह। पैर घुटनोंतक ठण्डे रहते हैं। जंघाके पश्चात् भागसे लेकर नीचेतक घुटने फूले। तलवे और पोटलीमें अकड़न। पैरके गट्टे कमजोर। पैरमें जलन होती है और उन्हें खुला रहना चाहता है और पंखा झलना चाहता है। पैर घुटनेतक फूले और दबानेपर गड़हा पड़ता है, यन्त्रणापूर्ण कुचल गये-से पैर, गुल्फ और तलवे। तलवे यन्त्रणापूर्ण और कुचल गये-से, नीले दिखाई देते हैं। वह तलवोंके बल चल नहीं सकता। तलवोंमें सूजन और खुजली। पुराने प्रमेहज वातमें अमूमन होनेवाली तलवोंकी स्पर्श-कातरता यह आरोग्य करता है। तलवोंमें इतनी स्पर्श-कातरता कि उसे घुटनोंके बल चलना पड़ता है। ठण्डे पसीना-भरे पैरके पंजे।

सरके ऊपर हाथ रखकर केवल पीठके बल सो सकता है। तकियेमें चेहरा घुसाकर घुटनेके बल सोती है। भूत और मरे मनुष्योंके भयावने स्वप्न, रोगिनी रातसे भय खाती है। नींद आती है; पर सो नहीं सकती। रातके प्रथम भागमें नींद न आना, बहुत ज्यादा रात्रिकालीन पसीना।

मिलिफोलियम
(Millefolium)

शिरा-स्फीति रोगकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है; खासकर कैशिक-नाड़ियाँ (Capillaries) छेद-छेद और वर्द्धित रहती हैं। जब रक्त-सञ्चय होता है, तो शिराएँ आसानीसे टूट जाती हैं। घावोंसे सरलतापूर्वक और बहुत ज्यादा खून निकलता है। यह संन्यास-रोग (Apoplexy) उत्पन्न करता है। चर्म तथा आँखोंपर काले दाग (Ecchymosis) पड़ना। यह स्थानिक रक्त-सञ्चय उत्पन्न करता है। किसी भी शरीरांश घाव या जखमसे रक्त-स्राव। **रक्तवाहिनियोंकी दुर्वलता।** फेफड़े, पाकाशय, मलान्त्र, नाक आदिसे तथा दाँत उखड़वानेके बाद रक्त-स्राव। रक्त अमूमन चमकीला लाल रहता है। गर्भावस्था, जब **वेदनापूर्ण** रहती है, तो प्रत्यङ्गोंका शिरा-स्फीति रोग। सांघातिक जखमोंसे

रक्त-स्राव। नश्तर देनेके वाद तथा घाव ठीक-ठीक वन्द हो जानेपर भी घावके किनारे बनानेवाले चर्मसे चमकीला लाल रक्त चूने लगता है। जव एक सार्वाङ्गिक रक्त-स्रावी दशा जारी रहती है। जैसी कि आशा की जाती है, ये उपसर्ग अकसर हृत्पिण्डकी तकलीफोंमें सम्मिलित रहते हैं। यदि रक्त-स्रावका इतिहास प्राप्त हो, तो अस्त्र-चिकित्साके पहले इसका प्रयोग कर देना चाहिये (लैकेसिस)। रक्त-स्रावके वाद प्रचण्ड रक्त-सञ्चय। रक्तवहा नाड़ी-तन्तुकी सुधारकी प्रवणता नहीं रहती। मस्तिष्कका रक्ताधिक्य और लाल चेहरा। माथेमें ताप और पूर्णता ; पर ज्वरका न रहना। रक्त चढ़नेकी तरह वक्षसे माथेमें रक्त चढ़ना। प्रचण्ड सर-दर्द। धीमा पश्चात्-मस्तकका दर्द। झुकनेपर सर-दर्द वढ़ जाता है।

रक्तकी तरह लाल आँखें। नाककी जड़ और आँखोंमें तेज दर्द। आँखें लाल और उनमें रक्त-सञ्चय। कुहरेसे ढँकी दृष्टि।

वायें कानमें आवाज रोगिनीको चौंका देती है इसके वाद हँसनेके समय, ऐसा अनुभव होना, मानो कानके वाहरसे ठण्डी हवा वह रही है। ऐसा मालूम होता है मानो कान वन्द हो गये थे। कानमें तेज दर्द, कानमें दर्द।

नाकसे रक्त-स्राव, इसके साथ ही माथा और वक्षमें रक्त-सञ्चय।

विना बोखारके ही चेहरा लाल। शिरा-पूर्ण चेहरा। चेहरेका तमतमा उठना।

गरम चीजोंसे दाँतमें दर्द। दाँत उखड़वानेके पहले रक्त-स्रावी रोगीको मिल्लीफोलियम या **लैकेसिस**की एक खुराक दीजिये। कण्ठ लाल, जखम भरा रहता है और उससे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है।

सवेरे खालीपन और भूखका भाव। पाकाशयमें जलन, जो सामनेकी ओर झुकनेपर वढ़ जाती है। पाकाशय और तलपेटमें जलन, जो वक्षतक फैल जाती है। रक्तका वमन होता है।

तलपेट वायुसे तना रहता है। आँतों तथा मलान्त्रसे रक्त-स्राव। टाइफायड ज्वरमें रक्त-स्राव। भारी चीज उठाने या चोटसे भीतरी रक्त-स्राव। वहुत देरतक रक्त-स्राव होते रहना। रक्त-स्रावी अर्श (खूनी ववासीर), मलद्वारका खूनी मसा।

पेशाव खून मिला रहता है, खड़े होनेके वाद पेशावमें थक्के। गुर्देमें दर्द, जिसके वाद खून-मिला पेशाव होता है, जो कई दिनोंतक रहता है। पेशावकी अनिच्छा रहनेपर भी होना।

सङ्गममें कड़ापन नहीं होता। मूत्राशय और मूत्रनलीसे रक्त स्राव। खून वहनेवाले जखम।

वहुत ज्यादा रजः-स्राव, देरसे, जरायु और तलपेटमें मरोड़ ; गर्भ-स्रावके वाद थोड़ा भी परिश्रम करनेपर या प्रसव-कालमें जरायुसे रक्त-स्राव ; लगातार, चमकीला लाल रक्त। गर्भवती स्त्रियोंके पैरकी फूली हुई शिराओंमें जखम हो जाता है तथा रक्त-स्राव

होता है। कष्टकर प्रसवके बाद बहुत देरतक दुसाध्य रक्त-स्राव होता है। रक्त-स्रावी प्रकृतिवाली स्त्रियोंको प्रसवके पहले एक खुराक मिल्लिफोलियम खिला देना चाहिये। प्रसवान्तिक स्राव रुका हुआ। स्तनमें दूध नहीं होता। जरायुसे रक्त-स्राव होनेपर जरायुका प्रदाह।

वक्षमें दबाव ; कलेजा धड़कना ; वक्षसे **मस्तकमें रक्त चढ़ना।** फेफड़ोंसे रक्त-स्राव। फेफड़ोंमें रक्त-सञ्चय, जिसके बाद फेफड़ोंसे रक्त-स्राव होता है। दबे हुए ऋतुस्रावके कारण फेफड़ेसे रक्त-स्राव। रोज शामको ४ बजे खून-मिला बलगम निकलना। यक्ष्मा-रोगमें फेफड़ोंसे रक्त-स्राव। परिश्रम करनेके बाद फेफड़ोंसे रक्त-स्राव। एक आदमी गाड़ीसे गिर पड़ा था, उसे कई सप्ताहतक खाँसनेपर रक्त निकलता था ; वह इस दवाके खूब उच्च क्रमसे आरोग्य हुआ। हृत्पिण्डके चारों तरफ अतिरिक्त रक्तोत्तेजना।

मर्क्युरियस
(Mercurius)

मर्करीका रोग-तत्व मर्क्युरियस वाइवस और मर्क्युरियस सोल्यूबिलिसकी परीक्षामें प्राप्त होता है। इन दोनों ही दवाओंमें थोड़ा ही प्रभेद है ; पर इतना अधिक भेद नहीं है, कि चिकित्सामें प्रभेद किया जा सके।

तापमानकी जाँचमें मर्क्युरीका प्रयोग होता है और मर्क्युरियसकी धातु-प्रकृति इतनी ही परिवर्त्तनशील और **शीत और तापसे** असहिष्णु रहती है। तापमानके बहुत बढ़ जानेपर रोगी बदतर हो जाता है, ताप और शीत दोनोंसे ही बदतर। दोनों ही लक्षण और रोगी, उष्ण-वायुमण्डलमें बदतर हो जाते हैं, खुली हवामें बदतर हो जाते हैं तथा ठण्डमें बदतर हो जाते हैं। मर्क्युरीकी बीमारियाँ जब इतनी तीव्र रहती हैं, कि रोगीको शय्याशायी कर दे, **तो वे बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाती हैं**, जिससे उसे जबर्दस्ती ओढ़ना उतार फेंकना पड़ता है ; पर ओढ़ना उतारने और सर्द हो जानेके बाद वह और भी बदतर हो जाता है, यहाँतक कि वह आरामसे रह नहीं सकता। यही हालत दर्दोंमें, ज्वरोंमें, जखमोंमें, उद्भेदोंमें तथा स्वतः रोगीमें भी रहती है।

यह **बदबूदार** रोगी होता है। हम मर्करीके गन्धके विषयमें कह रहे हैं। खासकर साँस तो बहुत ही बदबूदार रहती है तथा इसका पता कमरेमें घुसते ही लग जाता है ; यह समूचे कमरेको गन्धसे भर देता है। पसीना बदबूदार होता है, इसमें जबर्दस्त, मीठापन लिये, तेज बेधक गन्ध रहती है। सर्वत्र बदबू रहती है ; बदबूदार पेशाब, मल और पसीना ; नाकका और मुँहका गन्ध भी बदबूदार रहता है। जब बड़ी-बड़ी खुराकोंमें मर्क (पारद) का प्रयोग होता है और रोगीको लार बहता है, तो उससे भी ऐसी ही गन्ध निकलता है। जिसने लार बहनेवाले रोगीकी लारका गन्ध कभी सूंघी है, उसीको मर्क्युरीकी गन्धका पता लग सकता है। जब मैं विद्यार्थी था, तो मुझे याद है, कि प्रत्येक कमरेसे पारदकी गन्ध आती

थी। तबतक मर्कुरी दिया जाता था, जबतक कि मसूढ़ोंपर उसका प्रभाव हो जाता था और लार बहने लगती थी। यह गन्ध मर्कके प्रयोगकी एक सूचना है।

रोगी **रातमें बदतर रहता है**। हड्डियोंका दर्द, सन्धियोंके रोग और प्रादाहिक दशाएँ सभी रातमें बदतर रहती हैं तथा दिनमें कुछ अच्छी रहती हैं। सब जगहकी **हड्डियोंमें दर्द** होता है; पर खासकर जहाँ हड्डियोंपरका मांस पतला रहता है। अस्थि-आवरकका दर्द, छेदनेकी तरह दर्द रातमें और बिछावनकी गर्मीसे बदतर।

ग्रन्थियाँ प्रादाहित और फूली रहती हैं; कर्णमूल, जिह्वाधोवर्त्तिनी, गर्दनकी लसिका-ग्रन्थियाँ, वंक्षण तथा बगलकी ग्रन्थियाँ, सभी आक्रान्त हो जाती हैं; स्तन-ग्रन्थि फूल उठती हैं तथा यकृतमें सूजन और प्रदाह रहता है। यह बहुतकर ग्रन्थियोंकी एक दवा है। सार्वाङ्गिक **कड़ापन** भी रहता है, **प्रादाहित अंश कड़े हो जाते हैं**। यदि चर्म प्रादाहित रहता है, तो वह कड़ा रहता है, प्रादाहित ग्रन्थियाँ कड़ी रहती हैं। जखमके साथ कड़ापन रहता है।

समूची दवामें **जखम होनेकी प्रवणता** है। सभी जगह जखम निकलते हैं, कण्ठ, नाक, मुँह तथा निम्न प्रत्यङ्गोंमें जखम। जखमोंमें **डङ्क मारनेकी तरह जलन** होती है और **चर्बीकी तली** रहती है, देखनेमें खाकी सफेद रहती है, मानो उसपर चर्बीकी एक तही फैली हुई है। यह डिफ्थीरियाके रसस्रावकी तरह मालूम होता है तथा प्रादाहित स्थानपर मक्युंरियसमें डिफ्थीरियाका रस-स्राव होता है। कण्ठके जखम, जिनकी ऐसी ही शकल रहती है। बिना जखमके ही कभी-कभी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रादाहित हो जाती है, पर रस-स्रावके साथ और इसीलिये यह **डिफ्थीरियामें** उपयोगी है। जखमोंमें भी वही दशा रहती है; जब स्वास्थ्य-भङ्ग हो जाता है, तो स्राव चर्बीकी तरह या खाकी तलछट निकलता है। **गर्मीके घाव** (Chancres) की भी यही दशा रहती है, उनकी तलीमें भी एक सफेदी लिये पनीरकी तरह तलछट रहता है। जब आपको यह मालूम हो जाये, कि मक्युंरियसकी बीमारियाँ रातमें बदतर रहती हैं तथा अस्थिके वेदनाके विषयमें, अस्थि-आवरकके प्रदाह प्रभृतिके विषयमें सोचिये तो आपको आश्चर्य होगा, कि क्यों कभी-कभी मक्युंरियस उपदंशको आरोग्य करता है। यह आश्चर्यकी बात है कि ऐलोपैथ इसपर इस रोगके लिये ही दारमदार रखता है और सादृश्यके कारण इसका अनवरत व्यवहार कर काफी रोगोंको या तो दबा देता है या आरोग्य कर देता है। जब ठीक-ठीक प्रयोग किया जाता है, तो यह आरोग्य कर देता है।

पीब बनानेकी प्रवणता इसका एक दूसरा प्रत्यक्ष स्वरूप है। प्रदाहके साथ ही जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहता है और तेजीसे पीब बनता है तथा यह अंश गर्मी और सर्दी दोनोंसे ही बदतर हो जाता है। फोड़ोंमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है; सन्धियोंके प्रदाहके साथ पीब होता है; फुसफुसावरक प्रदाहमें पीबसे गह्वर भर जाता है। पीबका स्राव पीलापन लिये हरा रहता है। मक्युंरियसका सूजाकका स्राव गाढ़ा, हरापन लिये पीला रहता है, साथ ही मूत्रनलीमें डङ्क मारने और जलनकी तरह दर्द होता है।

सन्धियोंका **वातज प्रदाह** और श्लैष्मिक-झिल्लियोंका **सर्दीका प्रदाह** इस दवामें सर्वत्र प्राप्त होनेवाला लक्षण है और इसके साथ ही **पसीना** होता है, पर आश्चर्यजनक लक्षण तो यह है, कि **पसीना होनेपर** आराम नहीं पहुँचता ; वल्कि **पसीना होनेके समय रोग-वृद्धि** हो जाती है। वृद्ध उपदंश-ग्रस्त, सूजाक-ग्रस्त या गठिया-ग्रस्त रोगियोंका वात। सोरा ग्रस्त, उपदंश-ग्रस्त और प्रमेह-ग्रस्तोंसे भी इसका काफी सादृश्य सम्बन्ध है। इसमें तीनों ही धातु-दोषोंकी प्रकृति प्राप्त होती है।

कोई परीक्षक जब बहुत दिनोंतक मर्क्युरी लेता है, तो वह दुबला होने लगता है। यह पुराने पारद-सेवियोंमें दिखाई देता है तथा उन उपदंश-ग्रस्तोंमें जिनमें पारद-विष फैला हुआ है। इस दशाकी यह एक बहुत बड़ी दवा है,—कम्पनके साथ दृढ़तासे क्षीण होते जाना, रातमें तथा बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाना, अत्यधिक बेचैनी, किसी भी अवस्थामें आराम नहीं मिलता। ये कष्ट-पूर्ण रोगी, जिनका स्वास्थ्य भङ्ग होता जाता है, बहुत अधिक कष्ट पाते हैं, चाहे वे सोरा-ग्रस्त हों, उपदंश-विष-ग्रस्त हों या प्रमेह-विष ग्रस्त हों।

इसका एक विचित्र लक्षण है बिना तापके ही बार-बार सूजन और फोड़ा होना। किसी सन्धिमें फोड़ा या सूजन हो जाती है और रोगीको सरसे पैर तक पसीना होने लगता है, रातमें तकलीफ बढ़ जाती है, मांस-क्षय हो जाता है, काँपता है और कमजोर रहता है ; पर जबतक फोड़ा बना रहता है, तबतक बिलकुल ही गर्मी नहीं रहती। जब जीवनी-शक्तिकी ताकत घटी रहती है, तभी फोड़े होते हैं, उनकी सुधार-प्रवणता भी नहीं रहती ; धीमा और बहुत दिनोंतक पीब बनता रहता है, फोड़ेमें उपदाह नहीं रहता, दाना पड़नेकी प्रवणता भी नहीं रहती, यह खुला रहता है, मवाद बहा करता है और मृतकी तरह मालूम होता है। मर्क्युरियस उसे गर्म कर देगा, पसीना रोक देगा और अंकुर भरनेमें मदद देगा।

छिछले **जखमोंमें फैलनेकी प्रवणता रहती है** और वे गलित हो जाते हैं ; वे गहरे नहीं होते ; वल्कि बड़े होते जाते हैं। पुराने उपदंश-ग्रस्तोंमें ये खुले जखम खासकर दिखाई देते हैं, उनकी पेंदी चर्बी भरी रहती है, बहुत उपदाह नहीं रहता, यहाँतक कि वे सुन्न रहते हैं और यदि मवाद निकलता है, तो वह हरापन लिये पीला होता है ; नकली दाने दिखाई देते हैं। गलनेवाले तथा चर्मको क्षय करते जानेवाले छिछले जखमोंकी **मर्क-कोर** बहुत बड़ी दवा है। समय-समयपर मर्कमें **सड़नेवाली** अवस्था आ जाती है। यह कहीं भी दिखाई दे सकता है ; पर खासकर ओंठ, गाल और मसूढ़ोंपर। मुँहके सड़े घाव (Cancrum oris)। गलनेवाले गर्मीके घाव, बदबूदार, काले ; सैंकर (गर्मीके घाव) में एक तरहका मांसतन्तु इकट्ठा होता है और कुछ अंश गला हुआ अलग रहता है। ये सभी दशाएँ तापसे बढ़ जाती हैं। ठीक मर्क्युरियसका रोगीका फोड़ा समय-समयपर पोल्टीस लगानेपर विद्रोह मचा देता है ; क्योंकि यह कष्टका और भी बदतर बना देता है।

दवामें सर्वत्र **कम्पन है**, सभी जगह सिहरना। सकम्प पक्षाघातमें (Paralysis agitans), इसका फायदेके साथ प्रयोग होता है। हाथका इस तरह काँपना कि न तो

कुछ उठाया जा सकता है, न खाया या न लिखा जा सकता है। मृगीका दौरा होनेवाले बच्चे, जिन्हें ऐंठन तथा विशृङ्खलित गतियाँ होती हैं, उनकी मर्क्युरियस एक बहुत बड़ी दवा है। इन सशंक कोनाकोनी हाथ-पैरकी गतियोंसे यह बच्चोंको बचा लेगा। झटका, ऐंठन और कम्पन। जीभकी गति विशृङ्खलित रहती है और बच्चा बोल नहीं सकता। टङ्कार। अनैच्छिक हिलना-डोलना, जो क्षणभरके लिये भी इच्छा-शक्तिसे नहीं रोका जा सकता असीम अनस्थिरता रहती है।

कँपकँपी, कमजोरी, पसीना, बदबू, पीब और जखम, रातमें ताप और ठण्डसे रोग-वृद्धि, इस दवाका आरम्भिक दिखावा बताते हैं।

इस दवाकी और भी गहराईतक प्रकृति बतानेवाले **मानसिक** लक्षण बहुत-से हैं। एक विचित्र स्वरूप, जो इस दवामें सर्वत्र पाया जाता है, वह **जल्दबाजी** है; एक जल्दबाज, बेचैन, घबराहट भरी, हठी प्रकृति। यह दौरेके रूपमें आता है, ठण्डी बदलीवाली मौसममें या तर मौसममें, मन कार्य न करेगा, यह धीमा, शिथिल और भुलक्कड़ रहता है। यह उन मनुष्योंमें दिखायी देता है, जो मानसिक दौर्बल्यकी ओर बढ़ जाते हैं। वह प्रश्नोंका उत्तर नहीं देता, देखता और सोचता है और अन्तमें उसे आयत्त कर लेता है। मस्तिष्कका दौर्बल्य और मस्तिष्ककी कोमलता इसके सुदृढ़ स्वरूप हैं। वह बेवकूफ हो जाता है। नयी बीमारियोंमें प्रलाप। अपने भावोंसे वह सोचता है, कि उसकी तर्क-शक्ति चली जा रही है। रोगिनीको मनुष्योंको मारनेकी वासना तङ्ग करती है। हत्या करने या आत्मघातका भावोद्रेक, हिंसा करनेके भावके साथ आकस्मिक क्रोध। रोगिनीको आत्माघात या हिंसात्मक कार्य करनेका भावोद्रेक होता है, वह डरती है, कि वह अपना विवेक खो देगी तथा भावोंके अनुसार कार्य करेगी। क्षणस्थायी उन्माद; तब एक लक्षण हो जाता है, पर उन्मादकी अपेक्षा मानसिक दौर्बल्य ही साधारणतः रहता है। ये मनोवेग ही परिचालक स्वरूप है। रोगी अपने मनोवेगोंके सम्बन्धमें आपसे कुछ न कहेगा, पर उनसे इच्छा-शक्तिकी गहरी खराबीका पता लगता है, वे उसे कोई कार्य करनेके लिये खूब खींचते हैं। रोगीको जब मर्क्युरियस दिया जाता है और उसे मनोवेग होता है, तो उसे दबानेकी चेष्टा करता है, चाहे कैसा भी मनोवेग हो, मर्क्युरियस उसके लिये कुछ-न-कुछ अवश्य करेगा। ऋतु-कालमें बहुत चिन्ता, बहुत उदासी। बेचैन और चिन्तित, मानो कोई दुर्घटना घटा ही चाहती है, रातमें बहुत पसीना होनेके साथ बदतर।

पुराने उपदंश-ग्रस्तोंके ये सब साधारण लक्षण हैं, पारद द्वारा तथा गन्धकके झरनोंमें स्नान करनेके बाद स्वास्थ्य-भङ्ग व्यक्ति, साथ ही उनकी हड्डियोंमें दर्द, ग्रन्थियोंकी तकलीफें, पसीना, सर्दी और जखम सर्वत्र होते हैं।

मस्तक-त्वचाके वातज उपसर्गमें मर्क्युरियस लाभदायक है और स्नायुशूल तथा मस्तिष्कके रोग, जब उनमें जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है तथा **दर्दों पर मौसमका** प्रभाव पहुँचता है तथा स्राव रोक देनेके कारण पैदा हुई सरकी बीमारियाँ जब रहती हैं, जैसा कि कानका स्राव रुका हुआ, आरक्त-ज्वर या जब आरक्त-ज्वरमें मस्तककी

तकलीफें हो तो यह फायदा करता है। **माथेमें पसीना होनेवाले**, पुतलियाँ फैली, सर लुढ़काना, रातमें रोग-वृद्धि जिसे आरक्त ज्वर हुआ था कानका स्राव रोक दिया गया है, ऐसे वच्चे देखनेके लिये आप यदि बुलाये जायँ, तो मर्क्युरियसपर ध्यान दें। टाइफायड दशासे सम्बन्ध रखनेवाला, कानका स्राव रुक जानेके कारण होनेवाली ज्वरकी दशाको मर्क्युरियस आरोग्य करता है। सुहागा, थायडोफार्म प्रभृतिसे कान भर दिये जानेके कारण तकलीफ पैदा हो जानेवाले बहुत-से रोगी मैंने आरोग्य किये हैं; रोगीको पहले स्वल्प-विराम और फिर अविराम ज्वर होने लगा था। यह पाँच-छः सप्ताहोंतक जारी रहेगा और तभी आराम होगा, जब मर्क्युरियसकी एक खुराक पड़ेगी। मुझे इस ढङ्गका एक रोगी याद है। यह मस्तिष्क-मेरुमज्जाका प्रदाह (Cerebro-spinal-meningitis) कहा गया था, माथा पीछेकी ओर खींचा हुआ था और ऐंठा तथा एक पार्श्वमें स्थिर हो गया। यह मध्यकर्णके स्रावके कारण हुआ था, जो रोक दिया गया था। दो या तीन डाक्टर बुलाये गये, पर कुछ न हुआ। रातको मैं रोगीके शय्याके पास गया तथा मर्क्युरियसका इतिहास और लक्षण मिले। चौबीश घण्टोंके भीतर मर्क्युरियसने स्राव फिरसे जारी कर दिया; माथा झुकनेके साथ ग्रैवेयी पेशीका खिचाव चला गया, ज्वर दब गया और बच्चा एकदम आरोग्य हो गया। मुझे ऐसे बहुत-से रोगी याद है।

माथेकी त्वचामें इस तरहका खिचाव रहता है, मानो पट्टी बँधी हुई है। स्नायविक लड़कियोंको नाकके ऊपर और आँखोंके चारों तरफ इस तरहका सर-दर्द होता है मानो फीता कसकर बँधा हुआ है या कोई कसी टोपी माथेको दबाये हुए है। आँखोंमें दबाने और फाड़नेकी तरह दर्द। कनपटियोंमें जलनका दर्द, जो चलने-फिरने और तनकर बैठ जानेपर घट जाता है, रातमें बदतर हो जाता है **ठण्डी तर ऋतुमें** अस्थि-आवरक (Periosteal) का दर्द बदतर हो जाता है, गठिया और वातकी धातु प्रकृतिमें इसके साथ ही आँखों और कानोंमें सनसनी रहती हैं, गलेके घाव और ग्रन्थियाँ फूली रहती हैं। पारा सेवन करनेवाले पुराने उपदंश-ग्रस्तोंका सर-दर्द; वे वैरोमेटर बन जाते हैं; मौसमका तुरन्त प्रभाव पहुँचता है। सर्दीका सर-दर्द बहुत ही कष्टदायक होता है; गाढ़ा स्राव होनेवाली पुरानी सर्दीके रोगियोंका सर-दर्द। गाढ़ा स्राव पीनीकी तरह हो जाता है तथा ललाट, चेहरा और कानोंमें बहुत ही कष्टप्रद दर्द हो जाता है। ये सर-दर्द बहुत ही तीव्र होते हैं। किसी भी अंशका स्राव दब जानेके कारण या पैरका पसीना रुक जानेके कारण पुराना वातज सर-दर्द, पर्यायक्रमसे पैरमें पसीना और सर-दर्द होना। जब पैरका पसीना रुक जाता है, तो सन्धियोंमें दर्द और अकड़न हो जाती है; **साइलिसिया**में भी ऐसा ही होता है। खूब चुने हुए रहनेपर **साइलिसिया** और मर्क्युरियस, एकके बाद दूसरे ठीक क्रिया नहीं करते; पर यदि बहुत दिनोंतक मूल पारद सेवन किया गया है, तो **नाइट्रिक एसिड**की तरह, लक्षण मिलनेपर **साइलिसिया** आरोग्य कर सकता है।

सभी सर-दर्दोंके साथ माथेमें बहुत ताप रहता है। सर फट जानेकी तरह दर्द, मस्तिष्कका भरापन और पट्टी बँधी रहनेकी तरह सङ्कोचन। जाल बँधे रहनेकी तरह दबाव। जब सर-दर्द रहता है, तो हवा सहन नहीं होती। यह सर्वत्र मर्क्युरियसके

विषयमें सत्य है। कमरेमें वह अच्छा रहता है, पर गर्म या ठण्डे कमरेमें बदतर और जोरकी हवा लगनेपर बहुत अधिक बदतर हो जाता है। वह ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है, पर गर्मी जानेपर बदतर हो जाता है। हूपकी तरह अनुभूति रातके समय ज्यादा बदतर हो जाती है।

खसड़ा और आरक्त ज्वरके बाद जो **नया मस्तिष्कोदक** रोग (Hydrocephalus) होता है और उसकी मर्क्युरियस एक आश्चर्यजनक दवा है। बच्चा इधर-से-उधर माथा लुढ़काता और कराहता है और माथेमें पसीना होता है। इसका **एपिससे** बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है और यह भी आरक्त ज्वरके बादका मस्तिष्कोदक रोग आरोग्य करनेवाली बहुत ही उत्तम दवा है।

पुराने उपदंश-ग्रस्तोंका अस्थ्यर्बुद (Exostoses)। मस्तिष्ककी अस्थि-आवरक झिल्लीमें फाड़ने, काटनेकी तरह दर्द। **समूचे वाह्य सिरमें छूनेपर दर्द होता है।** मस्तक-त्वचामें तनाव और यन्त्रणा। माथेपर बदबूदार, तेलहा पसीना। बच्चोंको तर अकौता, खाल उधेड़नेवाले और बदबूदार उद्भेद निकलते हैं।

मर्क्युरियस **चक्षु-रोगकी** एक आश्चर्यजनक दवा है, खासकर सर्दीके लिये। गठिया तथा वातके रोगियोंकी हरएक सर्दी आँखमें बैठ जाती है। आँखकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह आगकी ओर देखने या आगके पास बैठनेपर बदतर हो जाता है। विकीर्णित तापसे यन्त्रणा उत्पन्न हो जाती है। पलकें जबर्दस्ती आपसमें खिंचकर मिल जाती हैं, मानों बहुत दिनोंसे नींद न आयी हो। आँखके सामने कुहरा या पर्दा। उपदंश-ग्रस्तोंका, चक्षु-उपतारका प्रदाह मर्क्युरियस आरोग्य कर देता है। आजकल चक्षु-उपतारका प्रदाह (Iritis) में पुतलीको फैला देनेवाली दवा देनेका एक नियम बन गया है। यह नियम हो गया है। मैंने बहुतसे रोगियोंका इलाज किया है तथा आँखकी पुतली फैलानेकी इच्छा मुझे नहीं है। मुझे विश्वास है, कि यह अनावश्यक है। होमियोपैथिक दवा चक्षु-उपतारका प्रदाह (Iritis) को तेजीसे आरोग्य कर देगी, जिससे कि पलकें न जुड़ेंगी और यदि आँख चिपकना आरम्भ हो गया है। तो दवा उसे हटा देगी। आँखोंके चारों तरफ तथा कनपटियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द प्रभृति। मस्तक-त्वचामें तनाव, मानो कसकर टोपी पहनी गयी है या फीतेसे कसकर बाँध दिया गया है। कनीनिकामें जखम और प्रदाह। कनीनिका रक्तवाहिनियों जैसा दिखाई देता है, प्रदाह खासकर कनीनिकामें होता है, कभी-कभी फुन्सीकी तरह, कभी-कभी समूची आँखमें फैल जाता है। आँखके सभी उपसर्गोंमें बहुत ज्यादा अश्रु-स्राव होता है, आँसू खाल उधेड़नेवाले होते हैं, जिससे गालोंपर लाल लकीर जैसा दाग पड़ जाता है। हरापन लिये पीला या हरा स्राव। पलकें अकड़कर बन्द हो जाती हैं। बहुत अधिक आलोकातङ्क। पलकोंके समस्त तन्तुओंकी, चक्षु-श्वेत-पटलकी गहरायीपरके बनावटोंकी प्रादाहिक दशा। **डलकामाराकी** तरह सर्दी आँखोंमें बैठ जाती है।

कभी-कभी आपको चक्षु-उपतारापर एक छोटा-सा प्रवर्द्धन दिखायी देगा, यह पुतलीपर उत्पन्न होता है तथा एक वृन्तिका (Pedicle) से लगा रहता है। यह वास्तवमें एक

उपदंशोत्पन्न प्रवर्द्धन है। मर्क्युरियस इसे कई दिनोंमें ही आरोग्य कर देता है। चक्षु-चित्रपट और कृष्णपटल तथा चाक्षुषी नाड़ीका प्रदाह। सब तरहकी विकृति दृष्टि। पीव बहनेके साथ योजक त्वचाका प्रदाह तथा फूली पलकोंकी यह लाभदायक दवा है। दो तरहकी धातु-प्रकृतिकी इसे जरूरत रहती है, उपदंश और वात तथा गठियाकी। वह आँखें नहीं खोल सकता; वे आक्षेपिक रूपसे बन्द हो जाती हैं तथा बहुत अधिक सूजन रहती है।

कानकी तकलीफें। बहुत ज्यादा चिपकनेवाला हरा स्राव। हरा, गाढ़ा, कटु पीव कानसे, जो नाक तथा दूसरे अंशोंसे स्रावकी तरह रहता है। चिपकनेवाला कानसे स्राव। मध्य कर्णके स्रावमें, कटे हुए कर्ण-पटहके साथ, मर्क्युरियस बारम्बार आवश्यक दवा होती है। लम्बे सर्द-भरे जाड़ेके साथ वसन्त ऋतुमें, सर्द सीड़-भरी ऋतु बहुतोंके कानमें मवाद पैदा कर देती है, बड़े-बड़े शहरोंमें तो यह दैनिकके रूपमें दिखायी देता है। किसी अन्य स्थानकी तरह कर्ण-पटह भी आरोग्य हो जाता है, यदि इस दवासे रोगी अच्छी दशामें आ जाता है। यदि अच्छी तरह चिकित्सा नहीं हुई तो एक छेद रह जायगा। कान प्रादाहित, साथ ही ऐंठनकी तरह दर्द। मर्क्युरियसमें **एपिसकी भाँति डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है।** डङ्क मारनेकी तरह दर्दमें, बँधी गतसे काम करनेवाले सभी **एपिस** देंगे, पर अकसर रोगीको मर्क्युरियसकी जरूरत रहती है। पीव-भरा, बदबूदार कानका मवाद। कर्णमूल-ग्रन्थि और ग्रैवेयी ग्रन्थिकी विवृद्धि, साथ ही कानोंमें प्रदाह। कर्णमूल-ग्रन्थि यन्त्रापूर्ण और बढ़ी हुई, गर्दन अकड़ी और कभी-कभी माथा पीछेकी ओर खिंचा रहता है। बाह्य कर्णमें फोड़ा। छत्तेकी तरह उद्भेद और अर्बुद।

नाककी बीमारियाँ वर्णन करनेमें बहुत समय लगेगा। पुराने उपदंश-ग्रस्त, जिसके साथ नासास्थि आक्रान्त रहती है, गाढ़ा, हरापन लिये पीला, कटु, दुर्गन्धपूर्ण स्राव होता है। नाकसे खून जाता है तथा खून मिला नाकका स्राव। नाकसे सर्दीका स्राव कटु, पानीकी तरह रहता है तथा चेहरेकी हड्डीके भीतरसे दबाव रहता है, ताप या शीतसे बढ़ जाता है, रातमें बढ़ जाता है; हवाका प्रत्येक झोंका सहन नहीं होता; उठकर सहनपर टहलना पड़ता है। विपरीत दशाके साथ, बहुत छींक आनेवाली नाककी सर्दी रहती है, लेटनेपर घट जाती है, पर रातमें बिछावनपर लेटनेके समय बिलकुल ही नहीं रहती, सिर्फ दिनके समय जब इधर-उधर घूमता या बैठा रहता है। गर्म हवा श्वासके साथ नाकमें जाना अच्छा मालूम होता है, पर ताप शारीरिक उपसर्ग बढ़ा देता है। लगातार छींके आना। खून बहनेवाले पपड़ी जमे नथुने। नाकमें पुरानी सर्दीकी गन्ध। खाल उधड़ना, जलन और सूजन। नथुनोंके भीतरी भागमें यन्त्रणा और जलन। हड्डियोंमें कनकनी, फाड़ने और दबावकी तरह दर्द। चेहरेकी हड्डियाँ दर्द-भरी, ऐसा मालूम होता है, मानो बाहरकी ओर दबायी जा रही है और रोगी उन्हें दबाना चाहता है, पर उनमें दर्द होता है।

हमेशा सर्दी लग जानेवाले पुराने सोरादोष-ग्रस्तोंको समस्त धातुदोष दूर करनेकी मर्क्युरियसमें पूरी गहरायीतक काम करनेकी शक्ति नहीं है। यह सर्दीको आरोग्य तो कर

देता है, पर अपनी प्रकृतिकी जड़ जमा देता है और रोगीको वारम्वार सर्दी लगा करती है। इसका वार-वार प्रयोग न करना चाहिये, समूची शीत ऋतुमें दो वारसे अधिक नहीं। **कैलि-आयोड** चेहरेकी जलन, वहनेवाली नाककी सर्दी तथा ताप और बिछावनकी गर्मीसे रोग-वृद्धिके लिये कहीं अधिक उपयोगी है, जब मर्क्युरियस निर्देशित रहेगा, तो यह रात-भरमें ही नाककी सर्दीको आरोग्य कर देगा। यह भी मर्करीका प्रतिविष-नाशक है। सोरावाले रोगियोंको मर्क्युरियसकी बहुत-सी खुराकें न दीजिये ; उससे भी अधिक गहरायी-तक क्रिया करनेवाली दवा खोजिये।

इसमें बिना सर्दीके या सर्दीके साथ स्नायुशूल और औपदंशिक उद्भेदका **चेहरेका** लक्षण है। यह तालुमूल प्रदाह (Mumps) की एक वहुत वढ़िया दवा है ; इस दशाकी यह एक बँधी दवा है, जिससे प्रकट होता है, कि इसका बारम्बार निर्देश होता है ; पर वह वहीं आरोग्य करता है, जहाँ लक्षण सादृश्य रहता है।

शीतादपूर्ण मसूढ़े—उनके जिन्हें लार वहती है। रिग्स रोग, (दन्तगह्वरका अस्थि क्षय) ; दाँतके चारों ओरसे मवाद जाना। दाँतमें दर्द ; हरेक दाँतमें दर्द होता है, खासकर पुराने गठिया-ग्रस्त और पारा सेवन करनेवाले रोगियोंमें। दाँतोंका ढीलापन। लाल कोमल मसूढ़े। दाँत काले और मैले। **स्टैफिसेग्रिया**की तरह उपदंश-ग्रस्त बच्चोंका काला दाँत तथा दाँतोंका क्षय हो जाना। बहुत ज्यादा लार बहना, छुनेपर मसूढ़ेमें दर्द होता है। मसूढ़े और दाँतकी जड़में स्पन्दन। मसूढ़ोंका किनारा लाल रहता है या बैंगनी रङ्ग रहता है, छेद छेद रहता है तथा उससे सहजमें ही खून वहता है। मसूढ़े अलग हो जाते हैं और दाँत लम्बे मालूम होते हैं तथा उठे हुए रहते हैं। दाँत यन्त्रापूर्ण और दर्द-भरे, जिससे कि उनसे चबाया नहीं जाता। मसूढ़ोंका फोड़ा और दाँतकी जड़का फोड़ा।

स्वाद, जीभ और मुँह महत्वपूर्ण और स्पष्ट लक्षण प्रकट करते हैं, जीभ निकलनेपर वह **फूली-फूली** मालूम होती है, उसका पटल मैदेकी तरह रहता है और अकसर पीली दिखायी देती है। समूची जीभके किनारे-किनारे **दाँतके दाग** दिखायी देते हैं। जीभ फूली मानो स्पञ्जकी तरह रहती है, दाँतोंपर उसका दबाव पड़ता है और इस तरह उसपर दाँतके दाग पड़ जाते हैं। प्रदाह, जखम और जीभकी सूजन इसके सुदृढ़ लक्षण हैं। पुरानी गठियाकी धातु-प्रकृतिवालोंकी जीभ फूली रहती है ; रातमें जीभ फूल जाती है और जब सवेरे जागता है, तो उसका मुँह भरा रहता है। स्वाद बदला रहता है, किसी चीजका भी ठीक-ठीक स्वाद नहीं मिलता। जीभपर पीली या सफेद खड़िया मिट्टीकी तरह मैल रहती है। **बदबूदार मुँह, सड़ी गन्ध** मुँहसे आती है, खासकर लार बहनेवाले रोगियोंके मुँहसे पारदकी गन्ध। जीभ कदाकार हो जाती है ; बोलनेमें तकलीफ होती है ; उसकी बोली मुश्किलसे समझमें आती है। नशा खाये मनुष्योंकी तरह लड़खड़ाती जीभ। जखम चिपटे, मांसको खा जानेवाले जखम ; गालके भीतर गड्ढे पड़ जाते हैं। कोमल तालुको अकसर ये जखम खा जाते हैं तथा कठिन तालुकी अस्थि भी खा डाली जाती है। ऊर्ध्व हन्वस्थि गह्वरमें पीब पैदा

होना और मुँहसे गहरतक दरार पड़ जाना, इन दरारोंसे खासकर यदि हड्डी आक्रान्त हो जाती है, तो **फ्लुयोरिक एसिड और साइलिसिया** विशेष निर्देशित रहता है। **बदबूदार लारका बहुत ज्यादा स्राव।** बच्चे तथा दूध पिलानेवाली माताके मुँहमें यन्त्रणा ; पारदकी गन्धके साथ मुँहमें छाले और थुलथुली, छेद भरी जीभ और श्लैष्मिक झिल्लीका दृश्य। मुँहका साधारण प्रसारित प्रदाह। सम्पूर्ण श्लैष्मिक झिल्ली असहिष्णु और दर्द-भरी रहती है, जलन, डङ्क मारने और खोंचा मारनेकी तरह दर्द ; मुँहकी छालके साथ या बिना छालोंके ही सूखापन। बच्चोंको मुँहकी फफूँदी, शीताद-पूर्ण मसूढ़े।

गल-क्षत। यह कण्ठके प्रदाहकी एक दवा है, इसका दृश्य छेद-छेद रहता है, सब जगह फैली हुई सूजन,-कर्णमूल-ग्रन्थिकी सूजन, भरापन और गर्दनकी अकड़न। जखमोंकी तली चर्बीकी तरह ; चिपटे जखम ; फैलनेवाले जखम। कण्ठमें बहुत सूखापन। उन समस्त पेशियोंका हिलना-डोलना, जो निगलनेमें भाग लेती है ; सूजन गड़बड़ा देती है। कष्टसे निगल सकता है, दर्द और पाक्षाघातिक दुर्बलता तथा निगलनेकी चेष्टा करनेपर ग्रास नाकके भीतर चढ़ आता है तथा नाकके छेदसे तरल बाहर निकल पड़ता है। पारदका गन्ध इसका एक सुदृढ़ स्वरूप है, पर जब यह गन्ध नहीं भी दिखायी देती तब भी मर्क्युरियस आरोग्य कर देता है ; कण्ठके साथ इसका ऐसा ही मेल है। इसमें पुरानी कण्ठकी तकलीफ और उपदंशके जखम और दाग हैं। प्रदाह ऊपर तथा नीचे फैल जाता है ; लाल और पीले दाग, ऐसे लाल दिखायी देते हैं मानो वे पक जायँगे या जखम हो जायगा। लाल दाग एकदम बैंगनी हो जाते हैं, पर जितने ही वे बैंगनी होते जाते हैं, उतने ही **लैकेसिससे** उनका सादृश्य बढ़ता ही जाता है। तालुमूल गहरा लाल साथ ही उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द। तालुमूल-प्रदाह (Quinsy), पीब हो जानेके बाद। यह डिफ्थीरियामें भी लाभ करता है, बहुत-से रोग फैले, बहुत-से दाग-सा इधर-उधर दाग, छेद-छेद स्पञ्जकी तरह दिखायी देते हैं, पर जखम नहीं होता। सूजन तथा फूले हुए पटल से रसस्राव होता है। गर्दन अकड़ना, कण्ठका विसर्पके आकारका प्रदाह। काले, मरे मांस, क्षय करनेवाले, खा जानेवाले कण्ठके जखम।

रोगी मांस, मदिरा, ब्राण्डी, काफी, तेलकी चीजें, मक्खन प्रभृति नहीं खाना चाहता। दूध रुचता नहीं और खड़ा होकर ऊपर चढ़ आता है। मिठाइयाँ भी नहीं रुचतीं। बियर नामक शराबसे वह मुँह फेर लेता है। **पाकाशय** पुराने ढङ्गसे बिगड़ा रहता है ; डकार, उदगोरण, कलेजा जलना प्रभृति। यह पाकाशय ; खट्टा बदबू-भरा रहता है। उसे वमनके साथ मिचली रहती है तथा अन्न निकलता है। ऐसे पाकाशयमें खाद्य एक भारकी तरह रहता है स्वाद बिगड़ा ; तीता मुँह ; वह खाद्यका स्वाद लेता है ; यह खट्टा होकर ऊपर चढ़ आता है। इन सबके साथ मुँहसे बराबर लार चुआ करती है। पाचन जारी रहनेपर भी यह नहीं घटता। अध पचे पदार्थ वमनमें निकलते हैं। यह उस व्यक्तिकी दशाकी तरह रहता है, जिसने बियर शराब, ह्विस्की प्रभृति नशीली चीजें पीकर अपना पाकाशय नष्ट कर डाला है।

यकृतकी भी बहुत-सी तकलीफें हैं। हमारे पूर्वज यकृतको ठीक रखनेके लिये

बहुत नीली गोलियाँ लिया करते थे। उन्होंने इससे अपनेको बीमार बना डाला और प्रत्येक वसन्त ऋतुमें उससे अपने यकृतमें छेद किया करते थे, इसका परिणाम यह होता था, कि उनका यकृत उससे भी बहुत ही बदतर दशामें रहता था, जैसा कि डाक्टरके घरमें रहनेपर रहता है। कब्ज, पित्तज अभ्यास और पाकाशयकी विशृङ्खलता। पाकाशय-प्रदेशमें भरापन, यह दौरेके रूपमें आता है, ठण्डी ऋतुमें बदतर हो जाता है तथा सीड़वाली और गर्म ऋतुमें, तर ऋतुमें, वसन्तमें बदतर, कामला रोगकी तरह दशा, विकृत पाकाशय, बिछावनकी गर्मीसे तथा रातमें रोग-वृद्धि, रातमें बोखारकी हरारत और बिगड़ा मुँह, आपको मर्क्युरियसकी दशा बता देगा। यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, दाहिनी करवट लेटने पर यकृतके लक्षण बदतर हो जाते हैं। **दाहिनी करवट लेटनेपर** मर्क्युरियसके बहुतसे उपसर्ग **बढ़ जाते** हैं। फेफड़ेके उपसर्ग और खाँसी, यकृत, पाकाशय और आँतोंके लक्षण, ये सभी दाहिनी करवट लेटनेपर बदतर होते हैं।

उदरमें शूलका दर्द होता है, गड़गड़ाहट, तनाव, कुटकुटाहट और दर्द, डंक मारने और जलनकी तरह दर्द। इसमें बहुत किस्मका पाखाना होता है, अतिसारका और कब्जका। इसमें खाँसी अतिसारकी दशा है। चिकने, खून-मिले मल, बहुत काँखना पड़ता है, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो पाखाना कभी साफ होगा ही नहीं, यहाँतक कि जब कुछ भी नहीं होता, तब भी उसे **खुलासा हो जानेका सन्तोष नहीं** होता। यह **नक्स-वोमिका** और **रस-टक्स**के रक्तामाशयके बिलकुल विपरीत है। इनमें थोड़ा-सा भी पाखाना हो जानेपर आराम पहुँचता है; पर मर्क्युरियस और **सल्फर**का रोगी बैठेगा और काँखेगा तथा मर्क्युरियसके सभी लक्षणोंकी यह दशा है। **मर्क्युरियस कोर**में और भी प्रचण्ड आक्रमण होता है। उसमें पेशाब और पाखानेके समय बहुत काँखना पड़ता है, बहुत ही तेज यन्त्रणा होती है, साथ ही उन अंशोंमें तथा शुद्ध रक्त निकलनेवाला राहमें जलन होती है। **गर्म** मौसममें रक्तामाशय जब बहुव्यापक रूपसे फैलता है, तो **मर्क्युरियस, इपिकाक** और **ऐकोनाइट** बहुत बार निर्देशित औषधियाँ रहती हैं तथा **सर्द** मौसमके रक्तामाशयमें **इपिकाक, डलकामारा** तथा **मर्क्युरियस** बहुत बार निर्देशित रहते हैं। रक्तामाशयके रोगीकी शय्याके पास आपको रेपर्टरी लेकर जाना चाहिये अथवा घर जाकर दवा भेजनी चाहिये। बहुव्यापक रक्तामाशय तो आपकी पहली खुराकसे ही आरोग्य हो जाना चाहिये और यदि आप सावधानतासे कार्य करेंगे, तो प्रत्येक रोगीको आरोग्य कर देंगे। यह आरोग्य करने योग्य एक बहुत ही सरल उपसर्ग है; पर यदि मिल जाता है, तो बहुत जटिल हो जाता है। रक्तामाशयकी दशामें सादृश्य रहनेके कारण **आर्सेनिक**का प्रयोग मत कीजिये, क्योंकि यह रोगको आरोग्य न करेगा; बल्कि रोगीको मिला देगा। तबतक रक्तामाशयमें **आर्सेनिक**का प्रयोग करनेसे हिचकिये, जबतक आपको पूरी तरह विश्वास न हो जाये, कि यह निर्देशित है। कुछ दिन पहले मैंने एक ऐसा रोगी देखा, जो कुक्षिदेश (Hypochondria) के दर्दके कारण लेट नहीं सकता था, उसे लगातार वमन होता था, गुल्फों, हाथों, बाहुओं और कन्धोंका प्रादाहिक वात था, उसके बाहुओं तथा पैरोंपर धूम्र-रोगके (Purpuric) दाग थे, उसको पाकाशयका प्रदाह था और रोगोंका खासा

अजायब-घर हो रहा था। उसे बहुत उच्च क्रममें **फास्फोरस** और **आर्सेनिक** तथा बहुत सी अन्य दवाएँ पड़ चुकी थीं। सभी खूब चुनी हुई मानी गई थी; पर **कैडमियम-सल्फने** उसे पन्द्रह मिनटोंमें सुला दिया। बात यह थी, कि वह एकदम शान्त रहना चाहता था और इसीलिये यह **आर्सेनिक**की तरह नहीं था; यद्यपि दूसरे सभी लक्षण **आर्सेनिक**के थे। **कैडमियम-सल्फ**का यह एक सुदृढ़ स्वरूप है, वह **कोलच्चिकम** और **ब्रायोनिया**की भाँति शान्त रहना चाहता है। बहुत बरसोंतक ऐसे रोगियोंपर मैंने इसका प्रयोग किया है। मैंने कैन्सरका एक दूसरा रोगी देखा, जिसे पीसी हुई काफीकी तरह वमन होता था, **कैडमियम-सल्फने** उसका वमन रोक दिया और उसने खूब भरपूर खाया, यहाँतक कि वह छः सप्ताह बाद मर गयी। जो डाक्टर उसका इलाज करता था, उसने उसको तबतक **आर्सेनिक** और **फास्फोरस** तथा मार्फीन दिया, जबतक वह फिर ले ही न सकी।

पेशाबमें जलन और यन्त्रणा होती है। बार-बार पेशाब लगता है, थोड़ा-थोड़ा चूता है, खून-मिला पेशाब, बहुत जलन। मूत्र-नलीसे रक्त-स्राव। पेशाब लगनेपर खुजली बदतर हो जाती है। कुछ समयतक रहनेवाला **सूजाक**, स्राव गाढ़ा, हरापन लिये पीला और बदबूदार। पेशाब करनेके समय मूत्र पथमें जलन और यन्त्रणा। संगम-शक्तिका क्षय। दर्द-भरे कड़ापनके साथ कामोत्तेजन। लिङ्गावरक चर्म तथा लिङ्गपर जखम, इसे **सैंकर** (गर्मीके घाव) और कैङ्करायडके योग्य बनाता है। चिपटे जखम, चर्बीकी तलीके साथ जखम। लिङ्गाग्र-चर्मके भीतरी भागका प्रदाह। लिङ्ग-मुण्ड-प्रदाह, बदबूदार पीब। पुराने मन्योषमें, जब लिंग-मुण्डके पीछे तथा अंग-चर्मके नीचे पीब रहता है, **सूजाक** या सोराकी वजहसे तो **जैकाराण्डा कैरोबा**पर ध्यान दीजिये।

स्त्रीको बहुत मनःकष्ट रहता है डिम्बकोषमें **जलन** और **डङ्क मारनेकी** तरह दर्द रहता है। दर्दसे चिल्लाती है। डङ्क मारने, फाड़ने और काटनेकी तरह डिम्बाशयमें दर्द, रोगिनी पसीनेसे भरी रहती है। बहुत ज्यादा खाल उधेड़ देनेवाला श्वेत-प्रदर, यह अंश खाल उधड़ा, यन्त्रणा-पूर्ण, प्रादाहित और खुजलीसे भरा रहता है। डंक मारने, खुजलाने और छेदनेकी तरह जरायुमें दर्द। जरायु तथा डिम्बाशयमें मासिक रजः-स्रावके समय दर्द। मासिक रजः-स्रावके समय अगर्भवतीके स्तनमें भी दूध। रजः-स्रावके बदले स्तनमें दूध। मुझे एक बार सोलह बरसका एक लड़का मिला था, जिसके स्तनमें दूध था। मैंने उसे मर्क्युरियससे आरोग्य किया था।

मासिक रजः-स्राव हलका लाल, पीला, कट्ठ, थक्का-थक्का और बहुत ज्यादा या थोड़ा। कभी-कभी रजः-स्राव रुका रहता है। पित्त प्रकोपके लिये जो स्त्रियाँ पारद लिया करती हैं, वे वन्ध्या रहती हैं। (काफी पीनेवाली भी अकसर-वन्ध्या रहती हैं और आपको उनका काफी पीना बन्द कर देना चाहिये) खौलनेके भावके साथ ऋतु रोध। स्त्री-जननेन्द्रियपर गर्मीके घाव। अवस्थाप्राप्त स्त्रियोंकी जननेन्द्रिय खाल उधड़ी रहती है, यन्त्रणा और झूठे दाने पड़ना, जिनसे हमेशा रक्त-स्राव होता रहता है। जलन, टपक और योनि पथमें खुजली। पेशाब लगनेपर जननेन्द्रियमें खुजली, उसे अवश्य धोना चाहिये। बच्चे, लड़के या

लड़कियोंमें पेशाव करनेके वाद पेशाव जलता है और वे हमेशा अपनी जननेन्द्रियपर हाथ रखते हैं। छोटी वच्चियोंकी कटु प्रदर हो जाता है, जिससे जलन और खुजली तथा वहुत तकलीफ होती है। जननेन्द्रियका श्लेष्मामय प्रदाह। रजः-स्रावके समय वड़े फोड़े और छोटे फोड़े, छोटे उठे हुए फोड़े, ये श्लैष्मिक झिल्लीके किनारे तथा चर्मपर होते हैं, दर्द होता है, चलनेपर वढ़ जाते हैं, स्राव जारी रहनेके समय होते हैं और स्रावका काल समाप्त होनेपर घट जाते हैं। खुजलोके साथ यह वहुत तकलीफ देता है।

सवेरेके वक्त वमन। गर्भावस्थाके समय किसी स्त्रीके जननेन्द्रियमें शोथज सूजन हो जाती है। फैला हुआ प्रदाह, यन्त्रणा और जननेन्द्रिय तथा वस्ति गह्वरका भरापन, इससे चलनेमें तकलीफ होती है और रोगीको विछावनपर पड़ जाना पड़ता है। वस्ति-गह्वरके कोष-प्रदाहमें, गर्भावस्थाके आरम्भिक मासोंमें मर्क्युरियस एक महत्वपूर्ण औषधि होती है। गहरी दुर्वलताके कारण वार वार गर्भ-स्राव। जव मर्क्युरियसका मुनासिव प्रयोग होता है, तो यह एक आश्चर्यजनक मजवूत वनानेवाला हो जाता है। वहुत दिनोंतक प्रसवके वादके स्राव (परिस्रव)। दूध थोड़ा और विकृति।

जरायु तथा स्तनके कैन्सरका मर्क्युरियस एक वहुत वड़ा उपशामक है। यह रोक देगा और कभी-कभी अन्तस्त्व कोषार्वुदको भी आरोग्य कर देगा। **प्रोटो आयोडाइडसे** आरोग्य हुए एक रोगीको मैं जानता हूँ, उसके स्तनमें एक जखम-भरा कड़ा गूमड़ था, यह हंसके अण्डेके जितना वड़ा था वगलमें गांठ थी और वह अंश नीला हो रहा था तथा आरोग्यकी कोई आशा न थी। जब-जब दर्द तीव्र होता तो १०० क्रम, दिया जाता था, इसने आरोग्य कर दिया और रोगिनी अच्छी रही।

नाकपर जो प्रभाव देखा गया है, वह केवल मर्क्युरियसकी सर्दी ही नहीं है। मर्क्युरियसकी वहुत सी वीमारियाँ नाकसे आरम्भ होती हैं और कण्ठमें उतर जाती हैं, जिससे स्वर यन्त्रकी खाल उधड़ना और खरोंच उत्पन्न हो जाता है तथा वक्षमें भी यन्त्रणा और खाल उधड़नेका भाव हो जाता है; स्वर-यन्त्र-प्रदाह, टेंटुआका प्रदाह और श्वासोपनलियोंका प्रदाह (Bronchitis)। स्वरका क्षय, एकदम स्वर-भंग। मर्क्युरियसकी गति नीचेकी ओर रहती है, यहाँतक कि नियुमोनिया भी हो जाता है, साथ ही पसीना, वेचैनी और विछावनकी गर्मीसे रोग-वृद्धि रहती है। इसमें सन्देह नहीं, कि वहुत-सी सर्दियाँ नाकतक ही रह जाती हैं।

वक्षकी भी वहुत-सी दशाएँ हैं। खाँसी, सर्दी, जो वक्षमें रह जाती हैं, प्रतिक्रियाकी कमी और देरसे आरोग्य होना। अन्तमें यह सर्दी श्वासोपनलियोंमें वैठ जाती है; ऐसा मालूम होता है, कि वक्ष फट जायगा और **दाहिनी करवट लेटनेपर खाँसी वदतर हो जाता है**। खुली हवा लग जानेपर सर्दी हो गये वहुतसे रोगियोंको मैं देखा करता हूँ, जो अव रोगियल और मलिन दिखाई देते हैं, उनकी खाँसी भयानक रहती है और वक्षमें घरघराहट रहती है; प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनसे उन्हें नयी सर्दी हो जाती है और वे दाहिनी करवट लेट नहीं सकते; श्लैष्मिक यक्ष्मा तथा वहुत जल्दीसे क्षय रोग हो जानेकी उनकी प्रवणता रहती

है। रातकी हवामें खाँसी ज्यादा रहती है। वक्षमें बहुत तरहके दर्द होते हैं। उनकी वातज धातु-प्रकृति रहती है, बराबर पसीना हुआ करता है, पसीना होनेके समय बदतर रहता है तथा असीम गर्मी और शीतसे बदतर हो जाता है। सुई गड़नेकी तरह, छुरा मारनेकी तरह वक्षमें वातज दर्द, साथ ही रात्रिकालीन पसीना। खून-मिला गाढ़ा, हरा बलगम। फेफड़ेमें पीव हो जाना, बहुत ज्यादा मात्रामें पीब बनता है। भयंकर रक्तका दौरान, बुलबुले उठना और वक्षमें तापकी झलक। बहुतसे उपसर्गोंके साथ गलक्षत, वात और गर्दनका अकड़ना रहता है ; घेघा और फूली ग्रन्थियोंके साथ गर्दन अकड़ी। प्रत्येक सर्दीके साथ गर्दन अकड़ी गर्दनका पिछला भाग तथा पार्श्वका अकड़ जाना। दूसरी बीमारियोंके साथ ग्रैवेयी-ग्रन्थियोंका कड़ापन और यन्त्रणा।

मर्क्युरियस खासकर **सन्धियोंको** आक्रान्त करता है ; बहुत सूजनके साथ **प्रादाहित वात,** बिछावनकी गर्मी तथा ओढ़ना उतारनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है। कपड़ोंका ठीक भार सहन कर लेना बहुत कठिन होता है। पसीनेके साथ वातज रोग, रातमें, बिछावनकी गर्मीसे, पसीना होते रहनेपर रोगियल चेहरेके साथ रोग वृद्धि। यह खासकर ऊपरी अङ्गोंको आक्रान्त करता है, पर निम्नांगमें भी प्राप्त होता है।

हाथ-पैरोंकी **कम्पनशील दशा,** सकम्प पक्षाघातकी तरह। बहुत कमजोरीके साथ हाथोंका काँपना। निम्नांगोंका पक्षाघात और ऐंठन, हिलन और पक्षाघात-ग्रस्त अंशोंका कांप उठना। **आर्जेण्टम नाइट्रिकम, फास्फोरस, स्ट्रैमोनियम, सिकेलि** और मर्क्युरियसके पेशियों और पक्षाघात ग्रस्त अङ्गोंकी ऐंठन होती है।

जननेन्द्रिय और जंघाके बीचमें यन्त्रणा, पैरमें जखम, फोड़े। पैरका शोथज सूजन। ठण्डा पसीना। नींदमें बहुत ज्यादा पसीना होना। बिछावनमें आरामके समय दर्द और पसीना होना, हड्डीमें दर्द। रोगी ठण्डा लगनेके कारण ओढ़ना ओढ़ लेता है, पर गरमा जानेपर दर्दकी वृद्धि हो जाती है।

मर्क्युरियस **ज्वरसे** भरा है। इसमें सच्चा, प्राथमिक अविराम ज्वर बहुत कम आता है। केवल अविराम ज्वरके लिये इसका बहुत कम प्रयोग होता है, पर यह खासकर नश्तर लगनेके बाद आनेवाले ज्वरोंके लिये उपयोगी होता है, पहले स्वल्प-विराम, पर पीछे अविराम जैसे कि स्रावरोधके कारण आने लगते हैं। शीतावस्था आनेके पहले भी मर्क्युरियसका रोगी सर्दीला रहता है, यहाँतक कि जब शीतावस्था नहीं भी आयी है ; गर्म कमरेमें हवाका आना-जाना सहन नहीं होता, जोरकी हवा तो बिलकुल ही सहन नहीं होती। हाथ पैर ठण्डे। पसीना बहुत ज्यादा और बदबूदार होता है। साधारणतः पसीना होते रहनेके समय उसके उपसर्ग बदतर रहते हैं और जितना ही ज्यादा उसे पसीना होता है, उनका ही बदतर होता जाता है। उसे बहुत ज्यादा पसीना होता है और उसके सबसे बड़ी तकलीफें पसीनेमें हैं। स्पष्ट सविराम ज्वर मर्क्युरियसमें नहीं होता। आवेशोंके मध्य कालमें उसे यकृतकी गड़बड़ियाँ रहती हैं, अतिसार, ज्वर। नश्तर लगवानेके बाद आनेवाले ज्वरोंमें, पित्तज ज्वरोंमें, बच्चोंके क्रिमी ज्वरमें और स्वल्प-विराम ज्वरोंमें हड्डियोंमें बहुत दर्द रहता है, हवा बहुत

ज्यादा असहनीय रहती है, रातमें बिछावनमें रोग वृद्धि हो जाती है, जब बोखार ऊँचा चढ़ा रहता है, मर्क्युरियसकी साँस चलती है और चर्म मलीन रहता है। बेलेडोनाकी तरह न तो तेज बोखार होता है और न चमड़ा ही उतना गर्म रहता है। मैलसे लदी जीभ तथा पित्तज ज्वर मर्क्युरियसके बाद कम हो जाते हैं। क्षयकी अन्तिम अवस्थामें होनेवाले विलेपी ज्वर और विलेपी ज्वरके साथ क्षय करनेवाली बीमारियोंमें, कर्कट रोगमें जब दर्द, बुरा पसीना प्रभृति होता है, तब उपयोगी होता है। सर्दीके ज्वर, इनफ्लुएञ्जा प्रभृतिमें यह आश्चर्यजनक कार्य करता है तथा जब सर्दी वक्षतक फैल जाती है और सर्वत्र बहुत ज्यादा स्राव होता है। यह स्वल्प-विराम, लक्षणपूर्ण सान्निपातिक ज्वरोंके लिये उपयोगी है, जब रोगी कामलाग्रस्त, निम्न, अवसन्न, कम्पनशील, काँपती पेशियोंवाला रहता है तथा बहुत सुस्ती और सविराम ज्वर (Continued fever) रहता है।

चर्मके भी बहुतसे उपसर्ग हैं; भूसीवाले उद्भेद, चकत्तेदार, उद्भेद, पीववाले उद्भेद। फुन्सियोंमें जलन और यन्त्रणा होती है, उनसे खाल उधेड़नेवाला स्राव होता है, खासकर माथेमें। चर्म बहुत खुजलाता है, शरीरके सब भागोंमें प्रचण्ड खुजली होती है, मानो किसी कीटने काटा हो, खासकर रातमें जब बिछावनमें गर्म हो जाता है। उपदंशकी तरह ताँबेके रंगके उद्भेद और श्लेष्मा-गुटियाँ। खासकर ध्यान देनेकी चीज है, भूसी-भरे उद्भेद। जहाँ हड्डियोंपर मांस और चर्म पतला है, वहाँ जखम। अकौतेका बदबूदार रूप। बहुत ज्यादा स्रावके साथ बहुतसे उद्भेद तर रहते हैं। यह कटि-दर्द आरोग्य करता है। चर्म मलिन रहता है। जहाँ दो अंश मिले हैं, वहाँकी खाल उघड़ना। ऐसे स्थानोंमें उद्भेद। इसमें सन्धि-स्थानों तथा मुँह और आँखोंके कानोंके फटे घाव हैं; मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानकी खाल उघड़ना और खून बहना, जिससे चलना असम्भव हो जाता है।

इससे मर्क्युरीके लक्षणोंका आधार प्रकट होता है।

मर्क्युरीके लवण

(The salt of mercury)

मर्क्युरियस, कोरोसिव मर्क्युरी प्रोटो-आयोडाइड और विन-आयोडाइडका अध्ययन करनेके बाद, किसी रोगीके विशेष लक्षणोंसे हम कह सकते हैं, कि हम किसी एक मर्क्युरीके लवणोंको महत्व देते हैं। जब वात या गठियाके रोगी मिलते हैं, जिनकी रोग वृद्धि पसीनेसे होती है, बिछावनकी गर्मीसे होती है, पारदकी गन्ध आता है प्रभृति तो हम कह सकते हैं, कि **मर्क्युरियस**के लवणोंमेंसे कोई एक इस रोगीको आरोग्य कर देगा।

मर्क्युरियस कोरोसाइवस
(Mercurius Corrosivus)

मर्क्युरियस कोरमें और भी ज्यादा खाल उघड़ना और जलन है, **ज्यादा क्रियाशीलता और उत्तेजना है। मर्क्युरियस** धीमा और ज्यादा शिथिल है। मर्क्युरियस कोर प्रचण्ड और अपनी गतियोंमें क्रियाशील है, यह अधिक तेजीसे पकड़ता और अपनी गति पूरी करता है। इसलिये मर्क्युरीके आधारोंमें हमें अकसर इस लवणको विशेष महत्व देना पड़ता है।

आँखोंके लक्षणमें अधिक खाल उघड़ना है। उद्भेद और जखमोंमें और भी प्रचण्ड दर्द, जलन तथा यन्त्रणा प्रभृति होती है। **मर्क्युरियसके** जखम धीरे-धीरे फैलनेवाले होते हैं, पर मर्क्युरियस कोरमें बहुत ज्यादा **मांस खा जाता है**, यह रातभरमें आपके हाथके बराबरके स्थानके जखममें फैल जायगा। इसमें पारदकी गन्ध और पसीना भी है और रोगी मलिन रहता है; उसे पारदकी जरूरत है, पर **मर्क्युरियस वाइवस** इससे ज्यादा जबर्दस्त दवा है।

मर्क्युरियस कोरोसाइवसके अपने निश्चिन्त लक्षण हैं; पर वे थोड़ेसे हैं। आप बहुत लार बहना या चर्बी-भरे जखमोंको अलग नहीं कर सकते। **गलक्षतमें**, यदि यह **मर्क्युरियसका रोगी** है, तो जखम तेजीसे फैलते हैं और अङ्गारेकी तरह जलन और यन्त्रणा होती है, आप कहेंगे, कि **मर्क्युरियस** इसकी भाँति तीव्र नहीं है। आपको **प्रचण्डताके लिये, तीव्र जलनके लिये, तेजीसे फैलनेकेलिये** मर्क्युरियस कोरकी जरूरत है। कण्ठ बेहद फूला हुआ, गांठें फूली हुईं और अदम्य पिपासा है।

रक्तामाशयमें और भी ज्यादा प्रचण्डता रहती है; बहुत ज्यादा खून निकलता है। बहुत घबड़ाहट रहती है, क्षणभरके लिये भी पाखाना नहीं छोड़ सकता, मलान्त्रमें और मूत्राशयमें बहुत कूथन रहती है; लगातार पाखाना-पेशाबकी इच्छा बनी रहती है; मलान्त्रमें बहुत जलन होती है। यह रक्तामाशयका एक जटिल रोगी है। साधारण **मर्क्युरियसके** रोगियोंके लिये हम **मर्क्युरियस** चुनेंगे, पर यदि इससे रोगीको आराम न पहुँचा तो न जियेगा, ऐसी जगहपर मर्क्युरियस-कोरकी जरूरत है।

मूत्रयन्त्रके भी लक्षण बहुत प्रचण्ड हैं। अण्डलाल मिला पेशाब **मर्क्युरियसकी** अपेक्षा मर्क्युरियस-कोरमें अधिक हैं। गर्भावस्थाके अण्डलाल मिले पेशाबकी बीमारीमें यह बहुत निर्देशित औषधि होती है और जब गठिया मौजूद रहती है, तो और भी लाभ करती है।

पु०-लिंगेन्द्रियके अग्रचर्ममें थोड़े भी उपदाहसे, श्लैष्मिक-झिल्ली और चर्म सिकुड़ता है तथा उल्टे चमड़े (Phimosis) की बीमारी हो जाती है। मर्क्युरियस-कोरसे खुजली और जलन आराम हो जाती है तथा नसें ढीली पड़ जाती हैं। सूजाकमें इसका बहुत कम प्रयोग होता है, पर उस समय इसकी जरूरत पड़ती है, जब यह हरापन लिये पीला या खून-मिला पानीकी तरह स्राव होता है, इसके साथ ही प्रचण्ड जलन और बार-बार पाखाना

पेशाव लगता है तथा प्रचण्ड दर्द-भरा लिंगोद्रेक होता है। गर्मीके घाव (Chancres) बहुत तेजीसे फैलते हैं।

सुई गड़ने, छेदने, फाड़नेकी तरह यहाँ-वहाँ दर्द, खासकर वक्षमें।

मर्क्युरियस सियानेटस

(Mercurius Cyanatus)

मर्क्युरियसका आधार और डिफ्थीरिया हो, जब कि झिल्ली हरापन लिये हो तथा नाकके भीतरसे फैलनेकी सम्भावना हो तथा बहुत ज्यादा स्थान घेरे हो, तो सियानाइड आफ मर्क्युरी (Cyanide of Mercury) की जरूरत रहती है। मर्क्युरीके किसी दूसरे रूपकी अपेक्षा इसमें अधिक प्रत्यक्ष रस-स्राव होता है। मारात्मक आकारकी डिफ्थीरिया, तेजीसे बढ़नेवाला तथा सड़नेवाले जख्म।

मर्क्युरियस आयोडेटस फ्लेवस

(Mercurius Iodatus Flavus)

(प्रोटो आयोडाइड आफ मर्करी—Proto-Iodide of Mercury)

कितने ही ऐसे गलक्षत रहते हैं, जिनके लिये प्रोटो-आयोडाइडकी जरूरत रहती है। गलक्षतमें जब प्रदाह और दर्द प्रधानतया **दाहिनी** ओर हो तथा दाहिनी ओर ही ठहर जानेकी प्रवणता हो या मर्क्युरियसकी दशा मौजूद हो तथा गलक्षत **दाहिनेसे बायें** जाता हो, तो प्रोटो-आयोडाइडकी जरूरत रहती है। जिस धातुगत तकलीफोंके लिये रोगीको इस दवाकी जरूरत होगी, वह आराम करनेके समय और गर्म कमरेमें बदतर रहेगा और खुली हवामें अच्छा।

यह खासकर सत्य है, कि जब रोगीको दाहिने बाहुके स्नायु-प्रदाह (Neuritis) में, जो लिखनेवालोंको होता है मर्क्युरियस प्रोटो-आयोडाइडकी जरूरत रहती है। लिखनेके समय, धीमी गति रहनेपर, रगड़नेपर, दबानेपर तथा शीत और ताप दोनोंसे ही बाहुमें बहुत दर्द होता है, पर खुली हवामें रहनेपर अच्छा रहता है। शरीरके दाहिनी ओरकी करीब-करीब सभी शिकायतें बदतर रहती हैं।

मर्क्युरियस आयोडेटस रूबर

(Mercurius Iodatus Ruber)

(बिन-आयोडाइड आफ मर्करी—Bin-Iodide of Mercury)

इसके अलावा यदि डिफ्थीरिया, तालुमूल-प्रदाह प्रभृतिके रोगोंमें, प्रदाह और दर्द **बायीं** तरफ शुरू हो तथा वहीं रहना चाहे या दाहिनी ओर फैलना चाहे, तो बिन-आयोडाइडपर निर्देशित रहता है।

इन दोनों ही आयोडाइडोंमें जखम और गर्मीके जखमोंके नीचे मर्क्युरियसकी अपेक्षा बहुत ही तीव्र और ज्यादा कड़ापन रहता है तथा पुराने उपदंश-ग्रस्तोंके लिये कभी-कभी अयोडाइड बहुत ही लाभदायक होता है।

मर्क्युरियस सल्फरिकस

(Sulphate of Mercury—Turpeth Mineral)

यदि वक्षोदक (Hydrothorax) का रोगी हो, जिसकी साँस तेज और लघु प्रभृति हो, वक्षमें जलन हो, तो कभी-कभी मर्क-सल्फसे बहुत सहायता पहुँचेगी। यदि शोथके साथ खूनके दौरानमें रक्त-सञ्चय हो या वक्षोदकके कारण श्वासकष्ट हो और जब मर्क्युरियसका आधार मौजूद हो, तो इस सल्फेटकी क्रिया देखकर आप आश्चर्यमें जा पड़ेंगे।

सिनावेरिस

(Cinnaberis—Red-sulphide of Mercury)

विछावनकी गरमीसे तथा पसीना होते रहनेपर रातमें लक्षण बदतर हो जाते हैं—ठीक **मर्क्युरियस**की तरह। ताप और शीत दोनोंसे ही बदतर। सर्दीका प्रदाह। जोरकी तरह मसे (थूजा)। जखम। खानेसे बहुत-सी बीमारियाँ। सभी अवस्थाओंका उपदंश। पीव होनेवाली ग्रन्थियाँ ; शैंकर (गर्मीके घाव)। **मर्क्युरियस**के रूपमें ही इस दवाका अध्ययन सर्वोत्तम है ; जिसके कि अपने कुछ जटिल लक्षण हैं। प्रमेह-दोषकी यह एक गहरायीतक क्रिया करनेवाली दवा है।

रोगी अकेला रहना चाहता है। मानसिक परिश्रमसे घृणा। जो करना चाहता था, वह भूल जाता है। माथेमें विचारोंकी इतनी भीड़ रहती है कि नींद रुक जाती है।

माथेमें प्रचण्ड दर्द होता है। भोजनके बाद बदतर हो जाता है ; ताप और दबावसे अच्छा रहता है। समूचे माथेमें भरापन। संकोचन। ठण्डे ललाटमें दर्द, जो तापसे घट जाता है। मासिक ऋतु-स्रावके पहले ललाटमें फाड़नेकी तरह दर्द। सवेरे मस्तक शिखर और ललाट दर्द, बायीं करवट और पीठके बल लेटनेपर बदतर, दाहिनी करवट लेटनेपर घटता है और सोकर उठनेपर छोड़ जाता है। बहुत लार बहने और बहुत ज्यादा पेशाब होनेके साथ माथेके बायें पार्श्वमें धक्का देनेकी तरह दर्द। नाकसे खून बहनेके साथ सर-दर्द। मस्तक त्वचा और खोपड़ीमें असहिष्णुता। चक्षुके ऊपरका स्नायुशूल।

आँखोंमें सुई गड़नेकी तरह और धीमा दर्द। चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह, रातमें बदतर। लाल, रक्तपूर्ण पलकें। पलकोंका गिर जाना। दुर्बल दृष्टि। उपदंशके कारण चक्षु-उपतारा प्रदाह (Iritis)। रातमें लक्षण बदतर हो जाते हैं। विछावनकी गर्मीसे तेज आवेशिक (रह-रहकर होनेवाला) दर्द।

भोजनके बाद कानमें गरजकी आवाज, कानमें खुजली।

नाककी जड़पर ठण्डे स्थान। नाककी हड्डीमें दबाव। मैला पीला श्लेष्मा नाकके पिछले छेदसे निकलनेके साथ नाककी सर्दी। नाकसे खून बहना; पीठ और प्रत्यंगोंमें दर्द।

दाँतके लक्षण **मर्क्युरियस**के समान ही रहते हैं।

रोज सवेरे जीभपर सफेद मैल चढ़ा रहती है। स्वाद बिगड़ा, धातुका और तीता। यन्त्रणापूर्ण जखमोंसे भरा मुँह। लार बहना। तेज प्यासके साथ मुँह और कण्ठका प्रदाह, रातमें बदतर। सूखा मुँह और कण्ठमें लसदार बलगम। बराबर घूंट लेटनेकी इच्छाके साथ कण्ठका भरापन। कण्ठका सूखापन।

खाद्यकी इच्छा न होना। डकारें और वमन। पाकाशयमें स्पर्श-कातरता। गर्मीकी गांठें—बाघी।

रक्तामाशय, रोज रातमें बढ़ जाता है; खून मिली आमका मल, बहुत कूथन। अतिसार, जिसमें हरा मल निकलता है, रातमें बदतर हो जाता है। पाखानेके साथ काँच निकलना।

बहुत ज्यादा पेशाव। पेशाव करते समय मूत्रनलीमें जखम हो जानेकी तरह दर्द, यह उसे रातमें भी जगा देता है; पेशावमें अण्डलाल।

बहुत ज्यादा पीवका स्राव होनेके साथ लिंग मुण्डका प्रदाह। कामेच्छा बढ़ी हुई। बहुत खुजलीके साथ लिङ्गाग्र-चर्मका फूलना। लिङ्गावरक चर्म तथा झिल्लीपर मसे, छूनेपर उनसे खून बहता है। सड़नकी गन्धके साथ लिङ्गाग्र-चर्मपर गर्मीका जखम। फूले और प्रादाहित गर्मीके घाव, कड़े, उनसे पीव बहता है। कड़े और अचिकित्सित गर्मीके घाव।

सूजाक, पीला या हरा स्राव, पेशाव करनेके समय बहुत दर्द। रातमें तथा बिछावनकी गर्मीसे लक्षण बदतर। रोगीको ठण्डा और गर्म दोनों ही प्रकारका कमरा और ठण्डी सहन नहीं होती। अण्डोंका कड़ापन।

यक्ष्मा-ग्रस्त रोगियोंका औपदंशिक स्वर-यन्त्रका जखम। शामको स्वरभङ्ग।

शामको और रातमें नाड़ी तेज।

पश्चात् मस्तकमें धक्का देनेवाले दर्दके साथ गर्दन अकड़ी। पीठ और कमरके प्रत्येक किनारे तथा मेरुदण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। यह गहरी साँस लेनेपर बदतर हो जाता है।

रातमें प्रत्यङ्गोंमें दर्द। मौसमके आकस्मिक परिवर्त्तनसे बदतर। सभी प्रत्यङ्गोंमें खञ्जता, कुचलापन और कड़ापन। हिलने-डोलनेपर दर्द बढ़ जाता है। जङ्घास्थिमें उपदंशकी गांठें। चलनेपर जङ्घा-पृष्ठसे पैरकी एँड़ीतककी कण्डर-पेशीमें और पार्ष्ण्यस्थि (Os calcis) में दर्द। पैरमें सुन्नपन। दिन-रात पैर ठण्डे। भ्रमणकारी गठिया।

चर्ममें जलन और खुजली, खुजलानेपर बढ़ जाती है। सर्वत्र खुजली। चर्मपर लाली और लाल दाग। फुन्सियाँ। सड़नेवाले जखम। उठे हुए जखम। **हीपर** और **नाइट्रिक एसिड** इसके प्रतिविषका काम करते हैं। इसका **थूजा**से निकटस्थ सम्बन्ध है।

मेजेरियम
(Mezereum)

उद्भेदों और जखमोंमें ही इस दवाका प्रधानतया व्यवहार होता है। श्लैष्मिक-झिल्ली, चर्म तथा अस्थि-प्रावरक झिल्लीपरके इसके लक्षण बहुत ही तीव्र और महत्वपूर्ण हैं। शरीरका वाह्य-पटल बराबर ही एक उपदाहकी दशामें रहता है, स्नायविक भाव, कुटकुटाना, सुरसुराना, खुजलाना, खुजलानेपर जगह बदल देना। यहाँतक कि जब कुछ भी नहीं दिखाई देता, तो भी प्रचण्ड खुजली रहती है तथा रोगी तबतक रगड़ता और खुजलाता रहता है, जबतक उस स्थानकी खाल नहीं उड़ जाती और फिर जलन होती है ; खुजली जगह बदलती है, खुजलानेपर वह जगह ठण्डी पड़ जाती है, स्थान-स्थानपर ठण्डी ; खुजानेपर खुजलाहट जगह बदल देती है, खासकर जब कोई दृश्य कारण नहीं मालूम होता। ज्योंही वह बिछावनमें गर्म होता है या ज्योंही वह गर्म कमरेमें जाता है, खुजली आरम्भ हो जाती है। सुरसुरी, खुजली, कुटकुटी। रोगी इतना स्नायविक रहता है, कि उसे अपनी अवस्था बदलनेके लिये बाध्य होकर हटना, घूमना पड़ता है।

चर्मपर फफोले या जल-भरी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद, किसी एक निश्चित गतिसे होते हैं, खुजलाहट, आगकी तरह जलन, उद्भेद भूसीके रूपमें सूखते हैं और गायब हो जाते हैं ; उसी जगह नयी फसली फिरसे पैदा हो जाती है, उसी जगह या उसके आस-पास। फफोलोंपर पपड़ी जमती है, जिसके नीचे जखम रहता है ; ये पपड़ियाँ सफेद हो जाती हैं, खड़िया मिट्टीकी तरह, मोटी रहती हैं, कड़ी और चमड़ेकी तरह। वे अकसर उठी रहती हैं ; पपड़ियोंके नीचे पिलपिलापन ; दबानेपर गाढ़ा, सफेद पीव, कभी-कभी पीलापन लिये सफेद, मवाद निकलता है ; बहुत ज्यादा खुजलाहट। सर्दी से दर्द बढ़ जाता है ; पर खुजलाहट और बेचैनी तापसे बदतर हो जाती है। बच्चा जब पपड़ी जमी रहती है, तो अपनी अंगुलीसे उखाड़ता रहता है।

खल्वाट-शिर ; गाढ़ी, सफेद, उठी हुई खरोंटें, बहुत ज्यादा, सफेद या पीलापन लिये सफेद पीव, अकसर बदबूदार रहता है ; सड़ी गन्ध, पपड़ियोंमें अकसर कीड़े मिलते हैं। कटु पीव केशको खा जाता है ; मस्तक-त्वचाके किसी भी अंशमें उद्भेद फैल जाते हैं, खासकर चोटीपर ; यह कानके नीचे भी मिलते हैं तथा चेहरा और चिबुकके पास।

बहुत खुजलीके साथ उद्भेद ; काले, लाल दाने, जिनमें भयङ्कर खुजली, कुटकुटी, सुर-सुरी और रेंगनेकी तरह होता है, दबानेपर, रगड़ने या खुजलानेपर जगह बदल देता है। रुके हुए अकौता या उपदंशके इतिहासका रोगी। पैर तथा बाहुओंपर उद्भेद, रक्तका दौरान

जहाँ कम रहता है, जैसे कान, कलाई, करभ प्रभृतिपर चर्मोद्भेद, जिनके बाद जखम हो जाता है और जिससे गाढ़ा, सफेद, बदबूदार मवाद निकलता है। जहाँ जस्तेके मरहम (Zinc ointment) या पारदका मरहम (Mercurial salve) प्रभृति लगाकर दवा दिया गया है, वहाँ यह ज्यादा उपयोगी होता है। चेहरा, कान, आँख, मस्तक त्वचामें बच्चों और अवस्था-प्राप्तोंको उद्भेद, जो किसी तरहका मरहम लगानेपर गायब हो गये हैं और जिनकी सर्दीकी दसा परिणाम-स्वरूपमें हो गयी हैं या जहाँ आँखके उपसर्ग उत्पन्न हो गये हैं, चक्षु श्वेत पटल, प्राचीन भावसे फूला, पलकें उलटी (Ectropion), दानेदार पलकें, श्वेत-पटल कच्चे मांसकी तरह, आँखके कोनेमें फटे घाव, आँखके चारों तरफ जहाँ कि उद्भेद हुए थे, वहाँ लाल जखमके दाग, आँखों और नाकके चारों तरफ सूखे दाग और वर्द्धित शिराएँ ; चर्म कड़ा मालूम होता है।

दबे हुए उद्भेदोंके कारण कानकी तकलीफें, कानकी श्लैष्मिक झिल्लीका मोटा पड़ जाना ; कर्ण-पटहका अपचय होना ; बहरापन ; कानसे मवाद आना।

नाकसे बदबूदार और कष्टकर सर्दीका स्राव, नाकमें पपड़ी जमना ; श्लैष्मिक-झिल्लीयोंका मोटापन, जखम, कठण्से खखार-खखारकर गाढ़ा, पीला मवाद निकलता है, जला, टुकड़े टुकड़े प्रभृति इतनेपर भी नाकका बदबूदार स्राव रहता ही है। अस्थि-आवरक झिल्ली इतनी आक्रान्त हो जाती है, कि वह टूट जाती है। कण्ठ तथा नाककी श्लैष्मिक-झिल्लियोंके क्षीणतामय अपचयकी बढ़ती हुई दशा।

कण्ठमें मोटापन, जलन, पुरानी लाली, स्पर्श सहन न होना, यन्त्रणा और निगलनेके समय यन्त्रणा रहती है, कण्ठमें दाने पड़ जाना और जखम। कोमल तालुको छेदनेवाले जखम, ये सभी रुके हुए उद्भेदके कारण होते है। आप यह दवा दीजिये और मल स्थानमें बहुत ज्यादा उद्भेद उत्पन्न हो जायेंगे ; यदि नहीं निकले, तो आराम न पहुँचेगा। अकसर बहरापन आरोग्य नहीं किया जा सकता ; क्योंकि कर्ण-पटह या समूचा कान नष्ट हो जाता है , सफेद, खड़ियाकी तरह रहता है और उसमें रक्तवाहिनियाँ नहीं रहती ; एक प्रकारकी क्षीणतामय सर्दीकी दशा, जिससे बनावटमें बहुत कुछ ऐसा परिवर्त्तन आ जाता है, जिसके सुधारकी भी जरूरत रहती है ; इतनेपर भी रोगी आरोग्य किया जा सकता है।

सभी सर्दीकी दशाएँ, जखम, ताँबेके रङ्गके चकत्ते, जो उपदंशमें प्राप्त होते हैं।

जब बाहरी प्रदर्शन प्रकट रहते हैं, तो भीतरी प्रदर्शन बहुत थोड़े रहते हैं। यह शरीरके रोग चर्मपर प्रकट करनेकी प्रवृत्ति रखता है ; यह शारीरिक दोषोंको पटलपर ला फेंकता है। इसीलिये मेजेरियमका रोगी, जब उद्भेद निकले रहते हैं, तो खासी स्वस्थ अवस्थामें रहता है ; पर जब ये दवा दिये जाते है, तब सर्दीके रोग, अस्थि-रोग, स्नायविक गड़बड़ीयाँ, अद्भुत मानसिक लक्षण, कब्ज, वात और सन्धियोंके उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं ; वह मानसिक भग्न रहता है।

धार्मिक या आर्थिक विषाद ; विषाद जो रोगीके व्यवसायके अनुसार होता है ; प्रत्येक व्यक्ति तथा पदार्थसे उदासीन, चिड़चिड़ा, सोचना मुश्किल रहता है, याददाश्त कमजोर,

भुलक्कड़, अकेला रहनेपर शान्ति नहीं मिलती, इतनेपर भी बोलनेकी इच्छा नहीं होती। विषादके साथ उन्माद, उदासी तथा मेजेरियमकी जरूरतके उद्भेदोंका इतिहास।

प्रचण्ड सर-दर्द और मस्तिष्कके रोग। दर्द, छेदने, फाड़नेकी तरह, विदीर्ण करनेकी तरह, माथेमें स्पर्श सहन नहीं होता, मस्तिष्कके औपदंशिक रोग, माथेके पार्श्वमें दर्द, मानो हड्डियोंमें हो रहा है; ऐसा मालूम होता है, मानो माथा चूर-चूर हो जायगा (**मर्क्युरियस** और **कैलि-आयोड**से निकटस्थ सम्बन्ध है)। नाककी जड़से ललाटतक फैलनेवाला सर-दर्द (**मर्क्युरियस, हीपर**)। सर-दर्दसे मूर्च्छा आ जाती (**हीपर**)। खोपड़ीकी हड्डियोंमें दर्द, स्पर्शसे बढ़ जाता है; हड्डियाँ ऐसी मालूम होती हैं, मानो खुरच ली गयी हैं।

केश आपसमें चिपक जाते हैं। "माथा, मोटी चमड़ेकी तरह पपड़ियोंसे ढँका रहता है, जिनके नीचे गाढ़ा, सफेद पीव, यहाँ-वहाँ इकट्ठा होता है और केशोंको आपसमें सटा देता है। सरके ऊपरकी पपड़ियाँ खड़ियाकी तरह मालूम होती हैं तथा भौंवोंतक फैल जाती हैं या नाककी नोकतक। उठी हुई सफेद, खड़ियाकी तरह पपड़ियाँ, जिनके नीचे पतला मवाद रहता है, उनमें कीड़े जनमते हैं।"

स्नायु-शूल, गृध्रसी वात, मेरुदण्डमें दर्द, बाहु-ग्रन्थिमें तथा बाहुओंके नीचे दर्द; चेहरेका स्नायु-शूल, ये सब दबे हुए उद्भेदके बाद होते हैं।

चर्म तथा उद्भेदोंका जहाँतक सम्बन्ध है, उसमें मेजेरियमके रोगीको गर्म हवा सहन नहीं होती। पर स्नायु-शूलमें तर या ठण्डी हवा सहन नहीं होती। जब उद्भेदके स्थानपर भीतर प्रदर्शन आरम्भ हो जाते हैं, तो रोगी सर्दीला रहता है, ऋतु परिवर्त्तन उसे सहन नहीं होता, तूफानी ऋतुमें उसका रोग बढ़ जाता है, स्नानके बाद बदतर हो जाता है, क्योंकि उसे सर्दी लग जाती है और उसके भीतरी रोग बढ़ जाते हैं। धोनेके बाद उद्भेदोंकी वृद्धि हो जाती है। जब उद्भेद बाहर नहीं निकले रहते, तो चर्म गर्म रहता है और रोगी उसे ठंडा करनेवाले कोई चीज चाहता है; वह ठण्डे पानीसे अच्छा रहता है; इस समय केवल लाली रहती है। गर्म पानीसे नहानेपर खुजलाहट बढ़ जाती है।

दाँतकी जड़ोंमें जखम; मसूढ़ोंकी कण्ठमाला-ग्रस्त दशा, उनसे खून बहता है, दाँत मसूढ़ेसे अलग हो जाते हैं, एकाएक दाँतोंका क्षय हो जाती है।

चेहरा रोगियल रहता है, जखमोंसे भरा, पुराने क्षत-चिह्न, फोड़े प्रभृति। रक्तहीन चेहरे समय-समयपर तमतमा जा सकते हैं, पर यह अमूमन पीला रहता है, खाकी और मोमकी तरह; कुछ अस्थि-रोगोंमें धातु विकारका प्रदर्शन।

पाकाशयमें खालीपनका भाव, भय, आशंका, मूर्च्छा, मानो कुछ होगा, प्रत्येक आघात दर्द और दुःसमाचारसे यह आशङ्का, भूखापन, मूर्च्छा, दुर्बलता, खालीपनका भाव, पाकाशय गह्वरमें उत्पन्न हो जाता है। दरवाजेकी घण्टी बजनेपर, यदि रोगीको डाकियेकी आशा है, किसी दोस्तके आगमनकी राह देखते हुए स्टेशनमें बैठा है या गाड़ीके विदायीके समय या

किसीसे परिचय कराते समय, उसे पाकाशयमें आरम्भ होता हुआ एक कम्पन मालूम होता है। "पाकाशयमें भयभीत" **कैल्केरिया, कैलि-कार्ब, फास्फोरस** और मेजेरियममें यह लक्षण है। ये "स्नायुवर्त्तल व्यक्ति (Solarplexus individual) हैं अकसर गहरी फटी-फटी जीभ रहती है और उन्हें आरोग्य करना मुश्किल होता है।

बिछावनकी गर्मीसे बदतर (इसीलिये **मर्क्युरियस** और उपदंशसे इसका सम्बन्ध है)। स्नायुशूल बिछावनपर और रातमें बदतर हो जाता है, बाहरी तापके प्रयोगसे आराम पहुँचता है, पर इसके बाद बदतर हो जाता है ; खुली हवामें उत्तम रहता है।

प्रादाहिक वात। बिछावनकी गर्मीसे और रातमें बदतर ; स्पर्शसे बदतर। दर्द हड्डी-तक दौड़ जाता है, हड्डियोंमें फटनेकी तरह अनुभूति। वे बढ़ी हुई मालूम होती हैं, अस्थि-आवरकमें फाड़नेकी तरह दर्द, अस्थि-क्षत, अस्थि-क्षय, भगन्दरके दरार, जिनसे लवणाक्तके टुकड़े निकलते हैं और बड़े-बड़े जखम जो फुन्सियोंसे घिरे रहते हैं।

मस्कस
(Moschus)

मस्कस उन अनेकों गुल्म वायु (हिस्टीरिया) ग्रस्त लड़कियोंको आरोग्य कर देता है जो यह सीखे विना ही जवानीमें पहुँचती हैं, कि आज्ञानुवर्त्तिता क्या है ? वे अपनी इच्छा-नुसार काम करनेवाली, जिद्दी और स्वाधिन होती हैं। जब उन्हें पूर्ण धूर्त बननेमें प्रोत्साहन मिलता जाता है, बचपनसे अट्ठारह बरसकी उमरतकके उनके सब खाम-खयाल पूरे किये जाते हैं, तो वे मस्कस, **ऐसाफिटिडा, इग्नेशिया** और **वैलेरियेनम**की रोगिनी हो जाती हैं। उनमें केवल बहुत से वास्तविक और खयाली उपसर्ग नहीं रहते, बल्कि वे इच्छा करते ही नाना प्रकारके रङ्ग-बिरङ्गी जटिल उपसर्ग उत्पन्न कर सकती हैं, ये गुण और तेजीमें तबतक बढ़ते जाते हैं, जबतक उनको अपनी इच्छाकी पूर्त्ति नहीं होती और देखनेवाला, वह पुरुष हो या स्त्री धात्री, चिकित्सक या घबड़ायी माता ही क्यों न हो, चंचल, निराश और हताश हो जाते हैं। वे सत्यवादी और इमानदार होनेका कितना भी बहाना क्यों न करें, उनकी बतायी अनुभूतियाँ अविश्वसनीय होती हैं। उन्होंने अपनी अनुभूतियों और खयालोंको इतना ज्यादा रौंदा है, कि सच्ची बात कहनेकी सीधी चेष्टा उनकी असफल हो जाती है। एक अत्यन्त अव्यवस्थित और अचिन्तित स्नायु-रोग सम्बन्धी घटना हमेशा दिखायी दिया करती है। अपने तजुर्बेसे चिकित्सक इन रोगियोंको अन्दाजा नहीं लगा सकते और जो साधारण और असाधारण है, वही कहा करते हैं। उन्हें बाध्य होकर एक ही शब्दपर निर्भर रहना पड़ता है, जिसमें अनगिनती प्रदर्शन आ जाते हैं अर्थात "हिस्टीरिया" इन प्रकृतिवालोंके लिये मस्कस अकसर निर्देशित रहता है और जब इसके अद्भुत लक्षण मिलते हैं, तो जो कोई मारात्मक रोग है, उसको यह आरोग्य कर देता है। जब सर्दी लगकर इनमेंसे कोई लड़की बीमार हो जाती है, तो नये उपसर्ग उसके अनेकानेक खयाली

अनुभूतियोंके साथ कहे जायँगे। हिस्टीरियाका गोला (Globus hystericus) अमूमन मौजूद रहता है, चर्मका स्पर्श-द्वेष, पेशियोंका काँपना, नींद न आना, कलेजा धड़कना, उत्तेजना, मूर्च्छा और कम्पन। समूचे शरीरमें "भयानक" दर्द, माथेमें रक्त चढ़ जाना, हाथ-पैरोंमें ऐंठन, समूचे शरीरका अकड़ जाना। यह साधारणतः नहीं जाना जाता है, कि रोगात्मक अनुभूतियाँ और क्रियाएँ रोगी-व्यक्तिके मानसिक लक्षणोंसे समता रखती हैं। जब क्रियाएँ और मांस तन्तुके लक्षण हिस्टीरियाके या अव्यवस्थित रहते हैं, तो मानसिक दशा भी हिस्टीरियाकी रहती है। जब चेहरेका मस्कसका विचित्र लक्षण रहता है अर्थात् एक गाल लाल और ठण्डा और दूसरा पीला और गर्म, तो निश्चय ही उस रोगीके मस्तिष्कमें कुछ गुल्म-वायु-जनित परिवर्त्तन हैं। रोगात्मक अनुभूतियाँ और क्रियाओंको देखकर कितनी ही बार रोगीकी मानसिक दशाका सन्देह किया जा सकता है। रोगी मनुष्योंमें दिखायी देनेवाले रोगात्मक प्रदर्शनोंका भी एक श्रेणीबद्ध भाव रहता है। सर्दीका सहन न होना तथा सर्द हो जानेपर उपसर्गोंका पैदा हो जाना। अनेकानेक गुल्मवायुके मानसिक लक्षणोंके साथ रोगिनीको शाप देने और धिक्कारनेके साथ भयङ्कर क्रोधका दौरा होता है, अन्तमें उसका चेहरा पीला हो जाता है और मूर्च्छित होकर गिर पड़ती है। मृत्युका भय, केवल मृत्यु-विषयक बातें करती है, जब कि कोई भयानक प्राण-घातक बीमारी नहीं रहती। आशंका और कलेजा धड़कना। चिड़चिड़ी और झगड़ालू। लगातार जल्दीमें रहती है, हाथसे चीजें गिरा देती है। बेहूदा भावभङ्गी और दर्दकी शिकायत। आशंका, कम्पन और कलेजा धड़कना। लेटनेसे भय कि कहीं मर न जायें।

ऊँचेसे गिर जानेकी अनुभूति या तेजीसे घुमा दी गयी है।

माथा या पलकें हिलानेपर सरमें चक्कर आ जाना, खुली हवामें घटना ; मिचली, वमन और मूर्च्छाके साथ।

गर्म हो जानेपर तथा ताजी हवामें सर-दर्द घट जाता है। पीठके पीछेवाले भागमें और ग्रीवा-सन्धिमें तनाव। माथेमें ठण्डक मालूम होनेके साथ कष्टकर व्यथा। दबाव, हतबुद्धि कर देनेवाला सर-दर्द, अधिककर ललाटमें, मिचलीके साथ रहता है, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है, ताजी हवामें घट जाता है। हिस्टीरियाका सर-दर्द, जिनके साथ बहुत ज्यादा वर्णहीन पेशाब होता है। डोरीसे बँधे रहनेकी तरह सङ्कोचन। पश्चात्-मस्तकमें कांटी गड़नेकी तरह दर्द, कमरेमें बढ़ जाता है, ताजी हवामें घट जाता है।

टकटकी लगी आँखें। एकाएक अन्धापन या धुँधला दृष्टि, यह आती है और जाती है। आँखें ऊपर उलटी, स्थिर और चमकीला।

हवा घुसनेकी तरह कानमें सों-सोंकी आवाज या चिड़ियेके पैरकी तरह फड़फड़ हट। तोपकी गरजकी वजहसे मानो कान बन्द हो जाना, साथ ही कई बून्द खून निकल पड़ता है। भयङ्कर पागल बना देनेवाले बेहोशीके दौरे या बादमें आवेशिक स्नायविक बहरापन।

नाकसे रक्त-स्राव और गन्धमें भ्रम।

एक गाल लाल और ठण्डा, दूसरा पीला और गर्म। पीले चेहरेमें ताप और धुँधली दृष्टि। चेहरेमें तनाव। पसीनेके साथ पीला चेहरा। मिट्टीके रंगका पीला चेहरा। चबानेकी तरह निचले जबड़ेका हिलना।

मुँह और कण्ठ सूखे और गर्म; तीता, सड़ा, स्वाद; तेज प्यास, खासकर गुल्म-वायुवाली दशामें।

बियर या ब्राण्डी नामक शराबकी इच्छा करता है। खाद्यसे घृणा। इसको देखनेसे ही वह बीमार हो जाती है। वमन। दबाव और जलनका दर्द और पाकाशयका तन जाना। भोजनके समय मूर्च्छा आ जाना। मुँहमें पानी भर आना। हिस्टीरियाकी हिचकी। खाद्यकी बात सोचते ही मिचली। नाभि स्थानपर भीतरकी ओर खिंचाव (**ऐस्वम**)। खाद्यका बहुत देरतक वमन होते रहना। भोजनके बाद भार। रक्तका वमन। पाकाशय सहजमें ही गड़बड़ा जाता है।

तेज दर्दके साथ तलपेटका आध्मानयुक्त तनाव। ऊर्द्ध या अधो, किसी भी मार्गसे वायु नहीं निकलता, इतनेपर भी बहुत ज्यादा तना पेट, मरोड़का दर्द।

नींदके समय आप-ही-आप पाखाना हो जाना। रातमें बहुत ज्यादा पानीकी तरह मल। मलद्वारसे मूत्राशयतक सुई गड़नेकी तरह दर्द।

बहुत ज्यादा, वर्णहीन, पानीकी तरह पेशाब। रातमें बदबूदार पेशाब होता है और श्लेष्मासे भरा रहता है।

पुरुषोंको भयानक कामोत्तेजना होती है, बिना लिङ्गोद्रेकके ही वीर्य स्राव हो जाता है।

स्त्रियोंको भयङ्कर कामेच्छा रहती है। ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा होता है, साथ ही खींचनका दर्द होता है; स्त्री-जननेन्द्रियमें टनक और मूर्च्छा। नीचेकी ओर खींचनेकी तरह अनुभूति।

गर्भावस्थामें अव्यवस्थित स्नायविक घटनाएँ।

मनमानी करनेवाली लड़कियोंमें, कण्ठनली द्वारका आक्षेप, जब उनकी इच्छा पूरी नहीं होती। गन्धककी भाफ लगनेकी तरह स्वर-यन्त्रका सङ्कोचन। ठण्डे हो जानेपर स्वर-यन्त्रका आक्षेप। सजा पानेके बाद स्नायविक बच्चोंकी आक्षेपिक क्रूप।

वक्ष और हृत्पिण्डमें दबाव और श्वास-कष्ट। असीम स्नायविक स्त्रियाँ और बच्चोंका आक्षेपिक दमा।

वक्षमें सङ्कोचन। वक्ष और वक्षोदर मध्यस्थ-पेशीकी ऐंठन, चेहरा नीला हो जाता है और ठण्डे होनेपर मुँहमें फेन भरता है। वक्षका पक्षाघात, घरघराहट, बलगम नहीं निकाल सकता; मूर्च्छा।

हिस्टीरिया-ग्रस्त लड़कियोंका कलेजा धड़कना। कलेजेमें धड़कन; वक्षपर दबाव, मूर्च्छा, उत्तेजना, साथ ही बहुत ज्यादा वर्णहीन पेशाब होता है। नाड़ी स्वाभाविक रहनेपर भी हृत्पिण्ड काँपता मालूम होता है।

प्रत्यङ्गोंमें कष्टकर वेदना। पैर अनस्थिर और जंघास्थि ठण्डी। एक हाथ पीला और गर्म, दूसरा ठण्डा और लाल।

रातमें बिछावनमें ताप, केवल दाहिने पार्श्वमें ; ओढ़ना उतार देना चाहता है। सवेरे पसीनेसे कस्तूरीकी गन्ध आती है।

शरीर ठण्डा, कम्पनशील ; मूर्च्छा और हृत्स्पन्दन।

म्युरियेटिक एसिड
(Muriatic acid)

निम्न-रूपके अविराम ज्वरकी, जिसमें असीम सुस्ती रहती है, चिकित्सा करते समय **आर्सेनिक, फास-एसिड** और म्युरियेटिक एसिड ध्यानमें आ जाते हैं। जब **आर्सेनिक**का रोगी रहता है, तो घबड़ाहटके साथ बेचैनी रहती है। **फास-एसिड**में मानसिक सुस्ती और मांस-पैशिक दुर्बलता रहती है ; म्युरियेटिक एसिडमें मांस-पैशिक दुर्बलता पहले आती है, बेचैनीका इतिहास मिलता है और जितनी आशा की जाती है, उससे कहीं ज्यादा मन सुदृढ़ रहता है। इस मांस-पैशिक क्लान्तिके साथ, जबड़े लटक जानेके साथ, रोगी पलङ्गमें पातानेकी ओर सरक जाता है और जल्द ही अनजानमें मल, मूत्र निकलने लगता है, तो यह दवा जबर्दस्ती ही मनमें आ जाती है। इसे पाक्षाघातिक दुर्बलता कहना चाहिये। जल्द ही जीभ पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ती है, मूत्राशयकी और मलद्वारकी मुखावरक पेशियाँ (Sphincters) भी पक्षाघात-ग्रस्त हो जाती हैं। रस-रक्त बिगड़ जानेवाले सर्व निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें यह सबसे ज्यादा उपयोगी होती है, जब ऊपर बताये लक्षण वर्त्तमान रहते हैं। अन्तमें वह बेहोश हो जाता है। वह बेचैनी भी रहती है ; पर **रस टक्स** और **आर्सेनिक**की तरह नहीं। वह बोलनेसे इनकार करता है ; क्योंकि ऐसा करनेसे विरक्ति होती है। **फास-एसिड**का रोगी धीरे-धीरे प्रश्नका उत्तर देता है ; क्योंकि उसका मन क्लान्त रहता है, जिससे वह सोच नहीं सकता।

आँखें हिलानेपर और **दाहिनी करवट** लेट जानेपर सरमें चक्कर आता है। कभी यकृत रोगके साथ सरमें चक्कर आता है। एक सुदृढ़ रक्त-पूर्ण कामला-ग्रस्त चालीस वर्षके मनुष्यको यकृतमें बहुत दर्द होता था, बहुत ज्यादा यन्त्रणा भी होती थी, केवल बायीं करवट लेटनेपर आराम मिलता था, जब वह पीठके बल या दाहिने पार्श्वमें लेटता, तो तुरन्त घबड़ाहट-भरा सिरोघूर्णन उत्पन्न हो जाता था, उसे बहुत ज्यादा पसीना होने लगता तथा जबर्दस्ती उसे बायीं करवट हो जाना पड़ता था। बहुत ही जटिल कही जानेवाली यकृतकी बीमारीको म्युरियेटिक एसिडने जड़से आरोग्य कर दिया।

आँख घुमाने और बिछावनपर उठ बैठनेपर सरमें चक्कर आ जाता है, धीरे-धीरे टहलनेपर घटता है। धुँधली दृष्टिके साथ पश्चात्-मस्तकका सर-दर्द, देखनेकी चेष्टा करनेपर

बढ़ जाता है। पश्चात्-मस्तकमें भार। ललाटमें सुन्नपन। पश्चात-मस्तकमें यन्त्रणा। ऐसा मालूम होना, मानो केश अपने सिरेके बल खड़े हो जाते हैं। मस्तक-शिखरमें ताप।

खड़ी अर्द्ध-दृष्टि। अन्धेरेमें आँखके लक्षण घट जाते हैं। सुई गड़नेकी तरह दर्द। जलन, दाहिनी आँखसे बायीं ओर फैल जाती है, धोनेके बाद घटती है। आँखोंमें खुजली।

सुननेमें कठिनता, रातमें जोरकी पटाखेकी आवाज आना। बोलियोंकी आवाज सहन नहीं होती। कानोंमें भनभनाहट।

नाक रुकी रहती है। हूपिङ्ग खाँसीमें, रस-रक्त बिगड़नेवाले ज्वरोंमें, डिफ्थीरिया और आरक्त ज्वरमें **नाकसे खून बहता है**। नाकसे काला, सड़ा खून निकलता है।

टाइफायड ज्वरमें निचला जबड़ा झूल पड़ता है। ओठोंके किनारे सूखे रहते हैं, यन्त्रणापूर्ण और फटे रहते हैं, जलते हुए ओंठ।

मुँह और जीभपर सफेद लेप **चढ़ी** रहती है।

दाँतपर मैल जमता है। मसूढ़े फूले और रक्तस्रावी। दाँत ढीले पड़ जाते हैं। जीभ **सूखी**, भारी, **अकड़ी** और **पक्षाघात-ग्रस्त**। मुँह सूखा। जीभ और मुँहका जखम। जीभ लाल। जीभका नीलापन। ओठोंकी श्लैष्मिक झिल्ली उधड़ जाती है। दूध पीनेवाले बच्चोंके मुँहमें घाव। मुँह जखमोंसे भरा रहता है। काली तलीके साथ गहरे जखम।

कण्ठका भयानक प्रदाह। कण्ठका सूखापन। जखमोंके साथ काला-लाल कण्ठ। भूरापन लिये सफेद रस-स्राव। डिफ्थीरियाकी तरह सफेद रस-स्राव। सड़नेवाले गलक्षत। बदबूदार श्लेष्मा खखारकर निकालता है। असीम सुस्तीके साथ डिफ्थीरिया।

बहुत प्यास। शीतावस्थामें प्यास और ज्वर चढ़ा रहनेपर प्यासका न रहना। मांससे घृणा। स्फूर्तिदायकोंकी इच्छा करता है। डकार तीती और सड़ी। कण्ठनलीकी आक्षेपिक क्रिया। खट्टा वमन। अनैच्छिक रूपसे घूँट लेना। पाकाशयमें खालीपन, भोजनसे नहीं घटता है। पाकाशयमें तथा तलपेटमें खालीपनका भाव, वगैरह खानेकी इच्छाके। दस बजे सवेरेसे शामतक पाकाशयमें खालीपन। मामूली स्वाभाविक पाखाना होनेके बाद सवेरे तलपेटमें खालीपन। अजीर्ण ; मूर्च्छा ; कब्ज ; चित्त-विभ्रम ; भोजनके बाद औंघाई।

यकृतमें दबाव। यन्त्रणा और बर्द्धित यकृत। तलपेटमें भरापन और गड़गड़ाहट।

पानी जैसा मल, पेशाब करनेके समय अनैच्छिक रूपसे हो जाता है। अनजानमें पाखाना हो जाता है। गहरा भूरा मल, **रक्तके साथ**। पाखानेके साथ बहुत वायु निकलना। हिलने-डोलनेपर पाखाना लग आता है। रक्तामाशय, सड़ा खून और श्लेष्मा। काले तरल रक्तका आँतोंसे रक्त-स्राव। पेशाब करते समय काँच निकल आना। पेशाब करनेके समय पाखाना लग आना। मलद्वारमें खुजली और स्पष्ट शिथिलता।

बड़ा, काला, बैंगनी बवासीरका मसा, असीम **स्पर्श-कातरता** रहती है। बवासीरके अर्बुदका प्रदाह, गर्म और स्पन्दन-शील ; प्रत्यङ्गोंको खूब फैलाकर लेटे रहना पड़ता है। **खूनी बवासीर**। पाखाना होनेके समय जलन और काटनेकी तरह दर्द। पाखाना होनेके

बाद जलन, गर्म प्रयोगसे घटता है ; ठण्डे पानीसे नहानेपर बढ़ जाता है। मलद्वारकी खाल उधड़ जाना। फटे घाव।

कमजोर धारमें पेशाब होता है, पेशाब जारी होनेके लिये बहुत देरतक बैठे-बैठे राह देखनी पड़ती है, दबाव डालना पड़ता है, जिससे मलद्वार बाहर निकल आता है। यह शरीरकी सार्वाङ्गिक, पाक्षाघातिक मांसपेशिक दुर्बलताके कारण होता है। निम्न-ज्वरोंमें पाखाना-पेशाब अनैच्छिक रुपसे होने लगना। पेशाब करनेके समय मूत्रनलीमें जलन और काटनेकी तरह दर्द, इसके बाद कूथन होती है।

ध्वजभङ्ग, कामेच्छा दुर्बल। मूत्रनलीसे खूनका, पानीकी तरह स्राव। मुष्क नीला। खुजलानेपर मुष्ककी खुजली नहीं घटती। लिङ्गाग्र चर्मके किनारे यन्त्रणापूर्ण।

जननेन्द्रियमें ऐसा दबाव मानो ऋतु-स्राव होगा। ऋतु स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा होता है। सड़े स्रावके साथ जननेन्द्रियमें जखम। जरा भी स्पर्श सहन नहीं होता, यहाँतक कि कपड़ेका भी जननेन्द्रियपर। पीठमें दर्दके साथ **श्वेत-प्रदर**। असीम अवसन्नताके साथ सूतिका ज्वर, जबड़े लटके पलङ्गमें पातानेकी ओर सरक जाना, रुका हुआ परिस्रव (Lochia) पाखाना-पेशाब सड़ी बदबू-भरा और अनैच्छिक होता है।

पीनेके बाद घरघराहटके साथ लघु-श्वास। पाकाशयसे श्वास आता मालूम होता है। वक्षमें दबाव।

नाड़ी कमजोर, धीमी, तीसरा स्पन्दन रुक जाता है।

पीठमें दबावका दर्द। दबाव, खींचन, पीठके निचले भागमें क्लान्त भाव। मेरुदण्डमें जलन।

बाहुमें भार। रातमें अङ्गुलियोंमें सुन्नपन और ठण्डक। निम्न-प्रत्यङ्ग धुमैला ; पैरमें सड़े घाव, जिनके किनारोंमें जलन होती है। दाहिनी गुल्फ देशकी सुदृढ़ कण्डरा (Tendo achillis) की सूजन। पैर ठण्डे और नीले। तलहत्थी और तलवोंकी जलन। अंगूठोंकी नोककी सूजन और जलन। प्रत्यङ्गोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर घटना। सविराम ज्वरके कालमें प्रत्यङ्गोंमें दर्द।

शीतके साथ, शामको पसीनेके साथ या बिना पसीनेके ज्वर। ज्वर-मिश्रित शीत। इस दवाकी मूर्त्ति टाइफायड और पीत ज्वरमें प्राप्त होती है। पहली नींदके समय पसीना, पसीना होते समय लक्षणोंका बदतर हो जाना।

नैजा

(Naja)

नैजाकी परीक्षामें प्राप्त लक्षणोंकी अपेक्षा इसका व्यवहार बहुत अधिक फैल गया है। सर्प-परिवारका वर्त्तमान लक्षण इसमें साधारण है, जिसका बहुत कुछ अनुमान लगाया गया है—बात भी ऐसी ही है। इन दवाओंमें सर्वत्र बहुत-से विशेष लक्षण हैं, हरएक

दवाका अपना एक विचित्र ही क्षेत्र है। एक साथ लेनेपर, इस परिवारसे बहुत बड़ी आरोग्यदायिनी क्रिया प्राप्त होती है।

ब्रेजिलके म्यूरने सोचा कि मनुष्य जातिके आरोग्य करनेके लिये सर्पमें आरोग्यदायिनी शक्ति है।

खनिज-राज्यमें, मनुष्य अपनी दवा प्राप्त कर सकता है, जब बीमार रहती है, इसी तरह उद्भिद और जीव राज्यसे। यह सम्भव है, कि मनुष्यके आरोग्यके लिये सर्पसे उत्पन्न पदार्थ ही सब कुछ हो। इसे समस्त जैव-राज्यमें प्रसारित कर दीजिये और यह शायद ऐसा ही हो। इसके राज्यमें रहनेवाली चीज एक राज्यमें रहनेवाली हरेक चीज मालूम होती है; सर्व-निम्न खनिज है, उसके बाद उद्भिद और अन्तमें जैव-राज्य। यदि किसी एक राज्यका हमें पूर्ण ज्ञान हो, तो शायद आरोग्यका समस्त कार्य उसीसे हो सकता है; पर हमें प्रत्येक राज्यकी कुछ ही दवाओंका ज्ञान है।

दूसरा यह विचार आगे बढ़ा है, कि किसी विशेष प्रदेशमें उद्भिज जगत, उस प्रदेशमें आरोग्यके लिये समस्त प्राप्त होता है। यदि हमें समस्त उद्भिदोंका ज्ञान होता, तो जितना हम जानते हैं, उसकी तुलनामें कितना अधिक जानते। यह अत्यधिक सम्भव है, कि रुग्न मानव-जातिसे कुछ ऐसा फेंक दिया जाता है जो उद्भिज राज्यसे आशोषण कर लिया जाता है। मनुष्यके द्वारा जो खराबी फेंक दी जाती है, उद्भिज राज्य उसे आशोषण कर सकता है। जिस प्रदेशके पौधे उत्पन्न होते हैं, उस प्रदेशके मनुष्यसे वे समता करते हैं, यदि इस बातमें कुछ है। दो हजार वर्षोंमें पौधोंकी उत्पत्तिमें बाधा डालनेकी कुछ जरूरत आ पड़ेगी। इन दोषोंके अशोषणसे उनके गुणमें भेद हो जायगा, यदि वे पैदा होते ही जायँगे और मानव-जातिके दोषोंको हरेक आशोषण करते जायँगे, तो उनमें प्रभेद भी होने लगेगा। यह क्रम-विकासका पक्ष करता है और एक प्रकारसे इसे बता भी देता है।

दूसरे साँपोंसे नैजाकी तुलना करना महत्वका काम है। गलेका कालर सटा रहनेपर रोगी विचलित हो उठता है, नींदके बाद रोग-वृद्धि हो जाती है। क्लान्ति और कम्पन रहता है, पेशियोंका कम्पन। इसकी गतिकी दशा बहुत कुछ **लैकेसिस**की तरह है। बायेंसे दाहिने अर्थात् डिम्बाशयका दर्द, डिफ्थीरिया, सन्धियोंके रोग, बायेंसे दाहिनी ओर जाते हैं। **लैकेसिस**की तरह नैजाकी बीमारी तर मौसममें बढ़ जाती है। प्रादाहित स्थानोंपर इसमें भूरा रक्तस्राव होता है। यह **लैकेसिस** और **क्रोटेलस**की तरह अपने विशेष लक्षणोंका प्रसार नहीं करता। नैजामें सड़नेवाले रोगकी एक छाया मात्र है; परन्तु यह **लैकेसिस**में बहुत ज्यादा है और **क्रोटेलस**में तो बहुत ही ज्यादा दिखायी देता है। **लैकेसिस** या **क्रोटेलस**की तरह नैजामें इतना रक्त-स्राव नहीं होता।

पेशियोंमें कम्पन होता है, एक वातदोष और सभी रोगोंकी हृत्पिण्डमें जा बैठनेकी प्रवणता रहती है। इसका हृत्कपाटकी बीमारियोंमें प्रयोग हुआ है, उन बच्चोंके लिये जो हृत्कपाटके रोगके साथ ही बढ़ते जाते हैं। सब तकलीफ हृत्पिण्डमें जमी रहती है। यह नैजाको बताता है और नैजाने इसे अकसर आरोग्य किया है। यदि जन्मसे ही हृत्कपाटकी

बीमारी है, तो यह आरोग्य नहीं हो सकतो, पर यदि ऐसा नहीं है, यह मालूम होता है, कि सभी कष्टप्रद शक्तियाँ हृत्पिण्डके पास ही बसी हैं, सभी उपसर्ग हृत्पिण्डके पास हैं। नेजामें यह है। स्कूली लड़के या लड़कियोंमें, जिनमें कोई भी लक्षण नहीं रहता, उनके लिये इस ढङ्गके रोगकी यह आम दवा है। जबतक कोई खास लक्षण परिचालित करनेवाला न मिले, तबतक बराबर नेजाका प्रयोग कीजिये।

नेजामें अधिक स्नायविक और **लैकेसिसमें** अधिक दूषित (Septic) लक्षण है। नेजामें बिना सड़नेसे उत्पन्न (Sepsis) के ही उत्तेजना है, **लैकेसिसमें** रक्त-स्राव और दूषणक (Sepsis) की प्रवणताके साथ सब तरहकी स्नायविकताएँ हैं, काला रक्त, जले हुए पोवालकी तरह, काला थक्का थक्का रक्त।

नेजामें, **लैकेसिसकी** तरह, ऊपरकी ओर रक्त चढ़ता है, बड़ा ही कष्टदायक लक्षण है। हृत्पिण्डके कारण हो या दूसरे कारणसे, बहुत श्वासकष्ट रहता है। वक्ष कस जाता है; टेंटुआ और स्वर-यन्त्रमें बहुत खाल उधड़ जानेका भाव रहता है, समूचा पथ कच्चा रहता है, मानो खाल उधड़ गयी है।

नाकसे पानी गिरनेके साथ बहुत छींक आती है; रातमें लेट न सकना; नाकके वायु पथोंका सूखापन; उद्भिज्ज्वर। अगस्तमें रोगीको दम घुटनेवाले आक्रमण होते हैं।

समस्त वक्ष रक्त सञ्चयकी दशामें रहता है, वक्षके वाम पार्श्वका खालीपन; धीमी या सविराम नाड़ी। वक्षकी सभी शिकायतोंके साथ बायीं करवट लेटनेकी शक्ति नहीं रहती। बायें बाहुका सुन्नपन। श्वासकष्ट रहता है, यदि वह सोता है, तो वह श्वासकष्टसे, हाँफता, दम घुटता जाग पड़ता है या नींदसे चौंक पड़ता है मानो सपनेसे जागा हो। बहुत-सी बीमारियोंमें बायीं करवट लेटनेकी शक्ति नहीं रहती।

हाथकी तलहत्थीमें पसीना होनेके साथ सूखी खुसखुसी खाँसी रहती है, यह नेजासे आरोग्य की गयी है। इन हृत्पिण्डके रोगोंके साथ अकसर सूखी खुसखुसी खाँसी रहती है, थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर खाँसी आने लगती है। यह न तो सर्दीकी, न तो यक्ष्माकी दशा है। हृत्पिण्डकी चाल धीमी रहती है तथा काम नहीं करना चाहता; परिश्रम करनेपर खाँसी आने लगती है। **कैक्टसमें** भी हृत्पिण्डसे उत्पन्न खाँसी रहती है।

हाथ-पैर ठण्डे और नीले रहते हैं तथा माथा गर्म। मस्तकके लक्षण गर्म कमरेमें बढ़ जाते हैं; माथा गर्म मालूम होता है, ज्वर रहता है, इतनेपर भी पैर और प्रत्यङ्ग गर्म नहीं होते। हाथ-पैरमें बहुत ज्यादा पसीना होता है, जिससे दस्ताना और जूता गल जाता है; पर पसीना बदबूदार नहीं होता। हाथ-पैरमें भरापन और कुछ सूजनका भाव रहता है, जिससे प्रकट होता है, कि शिराओंमें रक्तका दौरान कमजोर है और ऐसी ही हमलोग आशा करते हैं।

हमलोग स्वभावतः यही आशा करते हैं, कि यह रोगी बहुत ही तीव्र और उत्तेजनाशील होगा, ऐसा ही होता है। आत्मघातकी प्रवृत्ति रहती है।

सर-दर्द अद्भुत ढङ्गका होता है; समूचे माथेमें रक्त-सञ्चयी प्रकृतिका दर्द होता है, खासकर पश्चात् मस्तकमें। तीव्र और स्नायविक नाड़ीके साथ सर-दर्द।

सभी साँपोंमें गहरी नींद रहती है। गहरी अचेतन, निद्राके साथ घरघराहट-भरी साँस।

नित्य सवेरे सर दर्दके साथ वह जागती है। सवेरे नैजाका सर-दर्द रहना स्वाभाविक है तथा परिश्रम करनेपर बढ़ जाता है। दूसरे-दूसरे रोग भी परिश्रम करनेपर बढ़ जाते हैं। मानसिक परिश्रम करनेपर मनके लक्षण बढ़ जाते हैं।

उद्भिज्वरके साथ ये ही लक्षण रहते हैं। कण्ठ तथा स्वरयन्त्रकी खाल उधड़ना; कण्ठमें भयङ्कर यन्त्रणा जो स्वरयन्त्रतक चली जाती है; जो घूंट निगलनेपर भी नहीं घटती। **लैकेसिस**की दशा, कण्ठमें ढेला रहनेपर और भी प्रकट होती है; दम घुटनेके भावके साथ कण्ठ पकड़ लेता है।

नैजाके रोगीको ब्राङ्काइटिसका भयंकर आक्रमण हो सकता है। स्वरयन्त्र और टेंटुआके बीचकी खाल उधड़ी रहती है, खाँसनेपर बढ़ती है।

दमाकी यह बहुत बड़ी दवा है, खासकर हृत्पिण्ड रोग-जनित दमामें। श्वास इतनी खराब रहती है, कि वह लेट नहीं सकता।

पुराने स्नायविक कलेजेकी धड़कनमें यह लाभदायक है; किसी तरहका भी परिश्रम करनेपर कलेजा धड़कना। दम घुटनेके कारण बोलनेकी शक्ति न रहनेके साथ पुरानी स्नायविक कलेजेकी धड़कन।

लगातार, धीमा, यन्त्रणाप्रद दर्द, पीठके भीतरसे, कन्धोंके बीचमें होता है, इसके साथ ही हृत्पिण्डके रोग रहते हैं। कभी-कभी इसके अलावा तापकी, यन्त्रणाकी अनुभूति रहती है, जो इस दवाकी निर्देश करती है; इस स्थानपर वह इतना क्लान्त रहता है, कि वह लेट जाना चाहता है या पीठके बल उठङ्ग जाता है।

बायीं करवट लेटनेपर कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है, चलनेपर बढ़ती है।

बहुत कम लक्षणवाले हृत्पिण्डके रोगोंकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है। यह सत्य है, कि यह प्रदेश खासकर नैजा द्वारा अपने लक्षण प्रकट करनेके लिये छाँट लिया गया है।

नेट्रम आर्सेनिकोसम

(Natrum Arsenicosum)

इस दवाके उपसर्ग **दिनके समय, सवेरे, दोपहरके पहले, शामको, रातमें और आधी रातके** बाद उत्पन्न होते हैं। ठण्डी हवामें इसके उपसर्ग बदतर हो जाते हैं, पर गर्म हवा उपशम करती है; मानसिक उपसर्ग खुली हवामें अच्छे रहते हैं; साधारणतः

सर्दीसे ; सर्द हवामें ; **सर्द हो जानेपर,** सर्द, तर मौसममें बदतर रहते हैं ; रोगीको सहजमें ही सर्दी लग जाती है। सीढ़ी चढ़नेपर लक्षण बदतर हो जाते हैं। प्रत्यंगोंका शोथ, रक्त-स्वल्पता और कमजोरी। भोजनके बाद उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। शरीरका मांस-क्षय होता जाता है। **परिश्रम करनेपर** उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। मक्खन, सर्द पेय, ठण्डे खाद्य, वसा, **फल, दूध, सूअरका मांस,** सिर्का—इन सबसे उपसर्ग बढ़ जाते हैं। प्रत्यंगोंमें और समूचे शरीरमें सुरसुरी होती है ; ग्रन्थियोंका कड़ापन ; किसी भी भागमें प्रदाह। शारीरिक उपदाह और चिड़चिड़ापन मिली कमजोरी स्पष्ट रहती है। हिलना बहुत-से लक्षणोंको बढ़ा देता है। समस्त परीक्षामें आलस्य प्राप्त हुई है। लेटे रहनेकी और कोई तंग न करे, ऐसी इच्छा, इतनेपर भी लेटना अकसर रोग लक्षणोंको बदतर कर देता है और लेटनेपर स्पष्ट रोग-वृद्धि दिखाई देती है। इतनेपर भी बहुत से उपसर्ग हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाते हैं ; हिलने-डोलनेकी एकदम इच्छा नहीं होती। बहुत ज्यादा बलगम निकलता है। सर्दी लग जानेपर वात हो जाता है। तीव्र यन्त्रणा, जलन और दबावका दर्द ; घावकी तरह यन्त्रणा ; सभी अंशोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; सभी अंशोंमें धक्का देनेकी तरह दर्द ; नीचे और ऊपरकी ओर। पसीना होनेपर रोग नहीं घटता ; दबावसे बढ़ जाता है। सार्वाङ्गिक स्पन्दन।

नाड़ी अनियमित। वात और मैलेरियाके रोगी, अत्यधिक असहिष्णु, भीतरी और बाहरी। शरीरमें बिजलीके झटके। दाहिनी ओर ही लक्षणोंकी प्रधानता रहती है। चुपचाप बैठा या लेटा रहना चाहता है, कोई तंग न करे। निद्राकालमें, निद्राके पहले और जागनेपर उपसर्ग पैदा हो जाते हैं ; कम्पन इसका एक प्रधान लक्षण है। पेशियोंमें ऐंठन। खुली हवामें घूमना शारीरिक उपसर्गोंको बढ़ा देता है, पर मानसिक उपसर्गोंकी उन्नति कर देता है ; तेज चलना बहुतसे उपसर्गोंको उत्तेजित कर देता है। **सवेरे,** ऋतु-कालमें, **थोड़ा भी परिश्रम करनेपर, चलनेके समय,** कमजोरी। तर ऋतु उपसर्ग पैदा कर देती है। शराबसे और शीत ऋतुमें बदतर।

जरा सेमें क्रोध चढ़ आना ; बात काटनेपर तो महान उत्तेजित हो जाता है ; क्रोधसे उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। शामको बिछावनमें घबड़ाहट, रातमें बिस्तरपर रहनेपर, आशंका-प्रद घबड़ाहट ; ज्वर-कालमें ; सोकर उठनेपर। घरमें मन-संयोग कष्टकर रहता है, खुली हवामें उत्तम रहता है, शामको चित्त-विभ्रम। छोटी-छोटी बातोंपर न्याय-भीरुता। निराश, साहसहीन और समय-समयपर एकदम निरुत्साह। वह सहजमें ही हतबुद्धि हो जाता है। मनकी सुस्ती, खुली हवामें अच्छा रहता है। सहजमें ही उत्तेजित हो जाता है। मानसिक परिश्रमसे रोग-लक्षण बदतर हो जाते हैं। बिछावनपर जानेपर, शामको भय ; भीड़में भय ; रोग होनेका भय ; किसी आपदका ; कुछ होगा ; मनुष्योंका भय। **सहजमें ही डर जाता है,** भुलक्कड़ ; वह हमेशा जल्दबाजीमें रहता है। गुल्मवायुग्रस्त और उसका मन बहुत तीव्र रहता है ; विचार-धारा बहुत तीव्र रहती है। शक्ति-हीनता, चिड़चिड़ापन, असन्तोष, सभी प्रसन्नताओंसे उदासीन। मानसिक परिश्रम तथा कारबारसे उदासीन ; पढ़नेसे उदासीन ; सुस्ती, **याददास्त कमजोर।** परिताप करती है, हँसती है, जीवनसे घृणा ; बकवादीपन।

मानसिक लक्षण धीमें रहते हैं। हर्षोत्फुल्ल ; हृष्टचित्त ; मनकी अवसन्नता। वह झगड़ालू हो जाती है, बेचैन ; रातमें छटपटाती है; घबड़ाहट-भरी बेचैनी। शामको उदासी ; ज्वर-कालमें। आवाज सहन नहीं होती ; सहजमें ही आवाजसे, सोनेको जानेपर और निद्रासे चौंक उठती है। सन्देही। बातचीत नहीं करना चाहती ; लोगोंकी बातचीतसे विरक्त हो जाती है। मनके खालीपनके भावके साथ डरपोकपन। रोना। चलनेके समय सरमें चक्कर आना। जब किसीमें ऊपर लिखे सार्वाङ्गिक लक्षण भरपूर मात्रामें रहते हैं, तो नीचे लिखे विशेष लक्षण इस दवाको निर्देश करते हैं।

ताप तथा पूर्णताके साथ मस्तिष्कमें बहुत अधिक रक्त चढ़ जाना ; ललाटमें भरापन, ललाटमें आन्तरिक ताप और बाहरी ठण्डक। माथेमें तथा ललाटमें भार। माथेमें खालीपनका भाव। शामको ललाटमें सुन्नपन। **माथेमें दर्द** ; सवेरे ; दोपहरके बाद ; **शामको** ; रातमें ; जागनेपर रातमें ; खुली हवामें अच्छा रहता है ; सर्दीका सर-दर्द ; नाककी सर्दीके साथ ; भोजनके बाद बदतर, गर्म हो जानेपर बढ़ना ; गर्मीसे बदतर, हिलनेसे, रोशनीसे, ऋतु स्रावके पहले और समय ; **मानसिक परिश्रमसे** ; सर हिलानेपर, प्रत्येक गति सरमें झटका देती है ; **शोर-गुलसे** ; आवेशिक दर्द ; **सामयिक सर-दर्द** ; दबावसे, स्पन्दनसे ; कमरेमें बदतर ; नींदके बाद, झुकनेसे, तम्बाकू पीनेपर, चलनेपर, गर्म कमरेमें, शराबसे। ललाटमें दर्द, सवेरे जागनेपर, सम्पूर्ण दिनभर, आँखोंके ऊपर, कनपटीतक फैल जाता है। पश्चात् मस्तकमें दर्द, मस्तक पार्श्वमें दर्द, कनपटियोंमें दर्द ; दाहिनी तरफ, एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक ; मस्तक शिखरमें दर्द। कनपटीमें छेदनेकी तरह दर्द, दाहिनेसे बायें, मिचलीके साथ, सरमें फट जानेकी तरह दर्द, ललाटमें ; सरमें खींचन, **ललाटमें** ; माथेमें **दबावका** दर्द ; ललाटमें, **पश्चात् मस्तकमें, कनपटीमें** ; मस्तक शिखरमें ; दाहिनी आँखके ऊपर तेज दर्द ; दाहिनी आँखके ऊपर धक्का देनेकी तरह दर्द। मस्तक-त्वचा यन्त्रणा-पूर्ण और स्पर्श-कातर, ललाटकी। माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, सरमें **अचेतन** कर देनेवाला दर्द ; माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द ; ललाटमें ; मस्तक-पार्श्व भागमें। **ललाटपर पसीना।** ललाटमें भरापनके साथ, माथेमें ; ललाटमें मस्तक-शिखरमें धमक।

सवेरे आँखके लक्षण बदतर रहते हैं, पलकें सवेरे आपसमें सट जाती हैं, आँखें तथा रक्तवाहिनियाँ रक्त पूर्ण, आँखोंसे श्लेष्माका स्राव। सुखापन। सवेरे सोकर उठनेपर ऐसा मालूम होना, कि आँखें बड़ी हो गई हैं। दानेदार पलकें। आँखें गर्म मालूम होती हैं। सर्दी या झोंककी हवा लगनेपर, चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह, सवेरे बदतर हो जाना और रातमें काम करनेके बाद, पलकें तथा पलकोंके किनारोंका प्रदाह। छेद हुई शिरायें। सवेरे जागनेपर, खुली हवामें तथा आँखें गड़ाकर देखनेपर, पढ़नेके समय, आँखसे आँसू बहना, पलकें खोल नहीं सकता। आँखोंमें दर्द, सूर्यकी रोशनीमें, हिलने-डोलनेपर, पढ़नेके समय, गैसकी रोशनीमें पढ़नेके समय, लिखनेके समय बदतर हो जाना ; **गर्मीसे अच्छा रहता है।** आँखोंके भीतर और ऊपर दर्द, सोकर उठनेपर सवेरे। आँखोंमें जलन ; शामको, खुली हवामें, पढ़नेके समय। आँखोंमें दबावका दर्द, धूआँ लगनेकी तरह यन्त्रणा, पढ़नेके समय यन्त्रणा और स्पर्श-कातरता, आँखोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। ऊपरी पलकोंका पक्षाघात, चाक्षुषी नाड़ीका।

दिनकी रोशनीमें आलोकातङ्क। पुतलियाँ फैलीं; दाहिनीकी अपेक्षा बायीं आँख बड़ी रहती है। **शिराओंकी लाली**। टकटकी बँधी आँखें; पलकोंका कड़ापन, **चक्षु-गोलक**का। डेरा देखना। फूली आँखें, फूली **पलकें, शोथ-ग्रस्त पलकें; आँखके ऊपरका शोथ**। कनीनिकाका जखम। आँखें और दृष्टि कमजोर, दृष्टि बिगड़ी, पढ़नेके समय क्लान्त हो जाता है। आँखोंके सामने काले रंग। देरतक देखते रहनेपर धुँधली दृष्टि; आराम मिलनेके लिये आँखें पोंछा करता है। आगकी चिनगारियाँ, कुहरेसे भरी दृष्टि। अर्द्ध दृष्टि। दूरतक देखनेकी सामर्थ्यका न रहना। आँखोंके सामने चिनगारियाँ।

कान गर्म रहते हैं; कानोंमें खुजली। शोरगुल; सवेरे, शामको, सरमें चक्करके साथ भनभनाहट, घण्टी बजनेकी आवाज, गरज, दाहिने कानमें सनसनाहट, गानेकी आवाज। कानोंमें दर्द; **सवेरे, सुई गड़नेकी तरह**, फाड़नेकी तरह, कानोंके पीछे। कान बन्द हुए-से मालूम होते हैं। श्रवण शक्ति **तीव्र, शोरगुलके लिये, विकृत**।

ललाट और नाककी जड़में दर्दके साथ सर्दी. लसदार बलगम नाकके पिछले छेदसे निकलता है। नाककी सर्दी. खुली हवामें बदतर, खाँसीके साथ, पतली या सूखी सर्दी; सूखी सर्दी और तर पर्यायक्रमसे होती है; स्राव; **बहुत ज्यादा, पपड़ियाँ**, सूखी **खून-मिली पपड़ियाँ**, कड़ा, नीला श्लेष्मा बदबूदार, **पीव मिला, रुका हुआ, गाढ़ा, लसदार, पानीकी तरह, पीला**। नाकमें सूखापन। नाकसे खरोंट हटानेपर **रक्त-स्राव** होना, चमकीला लाल रक्त। रातमें नाक रुक जाना (दाहिनी), सवेरे सोकर उठनेपर, श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी पड़ जाती है और नाकसे साँस लेनेमें कठिनाई होती है। पीनस रोग। नाक लाल रहती है। नाकमें, नाककी जड़में दर्द, जलन, नाककी जड़में दबाव, नाककी खाल उधड़ना। पहले तो गन्ध बहुत तीव्र रहती है, फिर गन्ध आती ही नहीं। बार-बार प्रचण्ड छींकें।

ओंठोंके कोने फटे और कड़े। चेहरा बदरङ्ग हो जाता है; आँखोंके चारों तरफ नीला घेरा, मिट्टीकी तरह, **पीला** लाल, दर्द, यकृतके दाग। चेहरा खिंचा रहता है। चेहरेपर उद्भेद; ललाट और ओठोंपर; **मुँहके चारों तरफ, नाकपर**, काली; नोंकदार कीड़ेकी तरह फुन्सियाँ ओंठोंपर भैंसिया दाद, पर उद्भेद; फुन्सियाँ चकत्ते। चेहरा गर्म और खुजलाता है। जबड़े हिलानेपर दर्द। चेहरा फूला-फूला मालूम होता है। चर्वण-पेशियोंका कड़ापन। सवेरे सोकर उठनेपर सूजन; कपोलास्थि फूली मालूम होती है; शोथ-ग्रस्त, कर्णमूल ग्रन्थियाँ फूलीं। चेहरेमें ऐंठन। ओंठोंपर जखम। मुँहमें छाले; खून बहते हुए मसूढ़े, फटी और काँटे निकली जीभ। बदरंग हो जाना; जीभ और मुँहकी लाली, सफेद जीभ, पीली जीभ। मुँहका सूखापन; **जीभका सूखापन**; थुलथुली जीभ। मुँह और जीभका प्रदाह, लार बहना और लार लसदार होती है; तोतलाती हुई बोली। सवेरे मुँहका स्वाद तीता; **धातुका**, नमकीन, **खट्टा** मिठास लिये। मुँहमें जखम। जीभ और मुँहपर चकत्ते; जलन। दाँत ढीले पड़ जाते हैं। दाँतमें दर्द; रातमें स्पन्दन, गर्मीसे घटता है; झटका देनेकी तरह, फाड़नेकी तरह दर्द।

दम घुटना; कण्ठनलीका संकोचन; कण्टमें सूखापन; सवेरे और सर्दीके बाद बदतर।

कण्ठ लाल और चमकीला, बैंगनीपन लिये लाल ; सफेद श्लेष्मा निकालनेके लिये लगातार खखार करता है ; खुली हवामें बदतर। प्रदाह, कालिमा लिये लाल, पीले श्लेष्मासे ढँका। कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह अनुभूति ; कण्ठसे भूरा रस-स्राव। कहा जाता है, कि इसने डिफ्थीरिया आरोग्य किया है। कण्ठमें श्लेष्मा, कड़ा लसदार, खाकी, पीला, सफेद, नाकके पिछले छेदसे निकलता है ; निगलनेपर कण्ठमें दर्द, खाली घूंट लेनेपर ; पर खाद्य या पेय निगलनेके समय दर्द नहीं होता, जलन, यन्त्रणा सुई गड़नेकी तरह दर्द। कण्ठमें सूखापन, कण्ठमें खरोंच। निगलनेमें तकलीफ होती है। सूजे हुए स्वर-यन्त्र ; उपजिह्वा और तालुमूल ; **शोथ ग्रस्त ;** पानीके थैलेकी तरह उपजिह्वा लटका करती है। चुल्लिका-ग्रन्थि (Thyroid gland) के प्रदेशमें संकोचन। गर्दनके पार्श्व-भागमें कड़ापन।

भूख बढ़ी हुई, राक्षसी, भूख लगती नहीं, चर्बी, मांस, सिगारसे अनिच्छा ; पाकाशयमें सङ्कोचनका भाव। बियर नामक शराब, रोटी, ठण्डे पेय, मीठी चीजें चाहता है। विकृत पाकाशय ; दूधसे। पाकाशय तना रहता है ; खालीपनकी अनुभुति ; तीसरे पहर, भोजनके बाद डकारें आना, **खाली**, खाद्यके गन्धकी, भोजनके बाद खट्टी, मुँहमें पानी भर आना। भोजनके बाद पाकाशयमें भरापन। कलेजेमें जलन। तापकी झलक, भोजनके बाद भार। भोजनके बाद **हिचकी**, अजीर्ण तो बहुत ही स्पष्ट रहता है। खाद्यसे घृणा। मिचली ; भोजनके बाद ; लगातार , खाँसी आनेके समय, ठण्डे पेयोंसे मिचली ; सर-दर्दके साथ ; ऋतु-स्रावके समय। पाकाशयमें दर्द, **भोजनके बाद**, गर्म चीजोंके बाद जलन; **मरोड़, काटने,** चबाने ; भोजनके बाद दबावकी तरह दर्द, यन्त्रणा, सुई गड़नेकी तरह दर्द। पाकाशयमें स्पन्दन। कण्ठसे बलगम निकलनेके समय ओकाई आ जाना धसते जानेका भाव। पाकाशयमें पत्थर रहनेकी तरह अनुभूति। पाकाशयमें तनाव। प्यास ; सवेरे, शामको, रातमें ; जलती हुई प्यास ; असीम प्यास ; अदम्य प्यास ; बार-बार पानी पीता है, पर थोड़ा-थोड़ा प्यासका न रहना। वमन ; खाँसनेपर ; भोजनके बाद ; **पित्त, तीता, खून,** श्लेष्मा ; **खट्टा** ; पानीकी तरह।

भोजनके बाद तलपेटका तन जाना ; आध्मान ; भरापन, गड़गड़ाहट, कड़ापन। तलपेटमें भार अनुभव होना। प्लीहा, यकृतका प्रदाह ; यकृत रोग। तलपेटमें दर्द ; रातमें, भोजनके बाद ; **वायुसे** ; पतले दस्त होनेके पहले ; पाखाना होनेके पहले ; पाखाना होने और वायु छूटनेके बाद अच्छा मालूम होता है ; कोखकी जगहपर ; कुक्षि देशमें ; नाभि-प्रदेशमें। मरोड़ ; पाखाना होनेके पहले, पाखाना होने और वायु खुलनेके बाद अच्छा। पाखाना होनेके पहले, काटनेकी तरह दर्द। तलपेटमें खींचन ; कुक्षि-देशमें। यन्त्रापूर्ण, स्पर्श-कातर तलपेट ; कुक्षि-देशमें। तलपेटमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; कुक्षि-देशमें ; वंक्षण-प्रदेशमें ; प्लीहामें। तलपेटमें स्नायविक भाव। तलपेटमें गड़गड़ाहट, मानो पतले दस्त जायँगे। प्लीहा-सम्बन्धी रोग। वंक्षण-ग्रन्थियाँ फूलीं। तलपेटमें, कुक्षि-देशमें तनाव।

कब्ज और अतिसार पर्यायक्रमसे होते हैं। मल कड़ा। अतिसार ; शामको ; दिनके समय ; सवेरे ; बिछावन छोड़कर दौड़कर जाना पड़ता है, **रातमें** ; आधी रातके बाद ;

दिनके समय बार-बार दस्त ; ठण्डे हो जानेसे ; ठण्डे पेयोंसे ; **सर्दी लग जानेपर, भोजनके बाद** बदतर ; ऋतुकालमें ; **दूध पीनेके बाद** साग सब्जी खानेके बाद ; मल—**खून-**मिला, बहुत ज्यादा, बार-बार, श्लेष्मा ; दर्द-रहित। लसदार, **थोड़ा**, कोमल, पतला, पानीकी तरह, **पीला**। मलद्वारकी खाल उघड़ जाना। वायु बहुत ज्यादा निकलता है और बदबूदार। **मलद्वारका खुजलाना। दर्द** :—पाखाना होनेके समय और बादमें **जलन**, मरोड़, पाखाना हो जानेके बाद अच्छा हो जाता है, पाखाना होनेके समय और कुक्षि-देशमें काटनेकी तरह दर्द ; पाखाना होनेके पहले, यन्त्रणा और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; पाखाना होनेके समय फाड़नेकी तरह दर्द, **पाखाना होते समय कूथन।** पाखाना लगता, पर होता नहीं ; पाखाना हो जानेके बाद कूथन।

मूत्राशयमें यन्त्रणापूर्ण दर्द, जो पेशाब होनेपर आरोग्य हो जाता है ; रातमें पेशाब लगना लगातार ; बार-बार। पेशाबमें तकलीफ ; बार-बार ; रातमें ; नींदमें **अनजानमें** पेशाब हो जाना, खुलासा न होना। मूत्रपिण्ड (गुर्दा) में जलन और दर्द। पेशाब करनेके समय मूत्रनलीमें जलन। पेशाब :—**अण्डलाल मिला** ; काला ; पीला ; जलता हुआ ; रातमें बहुत ज्यादा ; पानीकी तरह साफ ; **बदबूदार** ; थोड़ा ; श्लेष्मा और फास्फेट मिला। आक्षेपिक गुरुत्व घटा ; १०१०।

सवेरे लिङ्गोद्रेक, अपूर्ण। लिङ्गमुण्डका, लिङ्गाग्र-चर्मका और अण्डका प्रदाह। जननेन्द्रिय, लिङ्ग और मुष्कमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। बायें अण्डकोषमें यन्त्रणा। वीर्य-स्राव। लिङ्ग और अण्ड फूले।

स्त्रियोंकी कामेच्छा बढ़ी रहती है। श्वेत-प्रदर—**बहुत ज्यादा, बदबूदार**, गाढ़ा पीला। ऋतु-स्राव :—बहुत ज्यादा ; समयके बहुत पहले ; **रुका हुआ, थोड़ा**। जरायुसे रक्त-स्राव ; जरायुमें दर्द।

स्वर-यन्त्रमें सूखापन और सङ्कोचन, स्वर-यन्त्रसे खखारनेपर स्लेटी रङ्गका श्लेष्मा निकलता है। कष्टसे बलगम अलग होकर निकलता है ; स्वर-यन्त्रमें जलन और यन्त्रणा। स्वर-यन्त्रमें सूखापन। धूलसे, धूएँसे, या ठण्डी हवासे स्वर-यन्त्रके लक्षण बदतर हो जाते हैं। आवाज :—सर्दीके साथ स्वरभंग, आवाज रुकी ; कमजोर। श्वास-प्रश्वास तेज और गहरा ; कोयलेकी धूलके कारण खानमें काम करनेवालेका दमा ; ऊपर चढ़नेमें श्वास-कष्ट, लघु श्वास।

खाँसी :—सवेरे, तीसरे पहर, शामको, **रातमें**, गहरी साँस लेनेपर ; रातमें सूखी ; सवेरे और परिश्रमसे ; दिनभर सूखी तङ्ग करनेवाली खाँसी ; क्लान्त कर देनेवाली ; खुसखुसी खाँसी ; स्वरयन्त्र और टेंटुआमें उपदाहके कारण ; ढीली, कष्टप्रद, लघु, आक्षेपिक, स्वरयन्त्र और टेंटुआमें सुरसुरीके कारण प्रचण्ड खाँसी ; गर्म कमरेमें बढ़ जाती है। **बलगम**—सवेरे, शामको, खून-मिला, कष्टकर श्लेष्मा **बदबूदार, पीबकी तरह**, स्वाद तीता फैला हुआ, सड़ा, लसदार, पीला।

वक्षमें घबड़ाहट और संकोचन ; उद्भेद, फुन्सियाँ। वक्षमें भरापनका भाव। फेफड़ोंसे रक्त-स्राव। कोयलेकी धूलसे खानमें काम करनेवालेको निमुमोनिया और यक्ष्मा। सवेरे

श्वासोपनलियोंमें उपदाह। गहरी साँस लेनेपर और परिश्रम करनेपर वक्षमें दबाव; हृत्पिण्डमें। खाँसनेके समय, वक्षमें दर्द; हृत्पिण्डमें दर्द; **जलन,** सातवीं पसलीके नीचे काटनेकी तरह दर्द; दबाव; खाल उधड़ना; खाँसनेके कारण यन्त्रणा; **सुई गड़नेकी तरह दर्द।** कलेजा धड़कना; रातमें, **घबड़ाहट,** सीढ़ी चढ़नेपर; परिश्रमसे, कम्पनशील। ऐसी अनुभूति मानो उसकी साँसमें धुआँ गया है।

रातमें पीठमें ठण्डक। ग्रीवा-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पीठमें दर्द, शामको; रातमें; चलनेके समय बदतर; हसुलीकी हड्डीमें; दोनों स्कन्धास्थियोंके बीचमें; सामनेकी ओर झुकनेपर और श्वास लेनेपर; झुकने या चलनेके समय कटि-प्रदेशमें; बैठने और चलने दोनों ही समय त्रिकास्थि प्रदेश (Sacrum) में; पीठमें यन्त्रणा; पीठमें खींचनकी तरह दर्द; पीठमें घावकी तरह दर्द; त्रिकास्थिमें झुकने और चलनेके समय घावकी तरह दर्द ग्रीवा-प्रदेशमें घावकी तरह दर्द; हँसुलियोंके नीचे यन्त्रणापूर्ण दर्द; दबानेपर पीठकी रीढ़में घावकी तरह दर्द। ग्रीवा प्रदेशमें कड़ापन, पीठमें **कमजोरी।**

प्रत्यङ्गोंकी कदाकारिता (टेढ़ा-मेढ़ापन); **हाथ** और **पैर** ठण्डे पिंडलीमें; तलवोंमें मरोड़, प्रत्यङ्गोंपर उद्भेद; पतली सफेदी भूसी; फुन्सियाँ। दोनों जङ्घोंके बीचकी खाल उधड़ जाना। पैरोंमें सुरसुरी। भाव, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें, पैरोंमें सुन्नपन। प्रत्यङ्गोंमें दर्द; सन्धियोंमें, शीतावस्थाके समय; प्रत्यंगोंमें स्नायुशूलका दर्द, **वातज दर्द,** गठियाका दर्द; ऊपरी प्रत्यंग; दाहिने बाहुमें **वातज दर्द,** कन्धोंमें; कन्धा और कोहनीमें वातका दर्द; तलहत्थीमें दर्द; अङ्गुलियोंमें दर्द। निम्नांगमें दर्द; गृध्रसी वात चलनेपर बदतर हो जाता है। कूल्हेमें; जंघामें चलनेके समय, घुटनेमें। पैरके सामनेवाले भागमें नीचेकी ओर दर्द; लगातार हिलाते रहनेपर प्रत्यंगोंमें कुचल जानेकी तरह दर्द; पंजा और तलवेमें जलन, पैरकी पिण्डली में मरोड़का दर्द; अङ्गुलियोंमें, तलहत्थीमें और अग्रबाहुमें उड़ता हुआ दर्द; निम्न प्रत्यंगोंमें खींचनकी तरह दर्द; जंघा, घुटने, पिण्डलीमें; बगलसे लेकर छोटी अङ्गुलीतक स्नायु शूलका दर्द; कूल्हा, जङ्घा, कूल्हेसे लेकर घुटनेतक गतिशील रहनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द, घुटना, पैर. उर्ध्व-प्रत्यङ्गोंमें, निम्न-प्रत्यङ्गमें, जांघमें, पैरमें, घुट्टे में, पैरके पंजेमें फाड़नेकी तरह दर्द। हाथ-पैरोंमें पसीना। प्रत्यङ्गोंका फड़कना। प्रत्यङ्ग, उर्ध्व प्रत्यङ्ग, निम्न प्रत्यङ्ग, पैरोंमें अस्थिरता। प्रत्यङ्गोंका **सन्धियोंका,** कलाईका कड़ापन। प्रत्यङ्गोंकी सूजन, **शोथज,** पैरकी, पञ्जोंकी। काँपते हुए हाथ और निम्न-प्रत्यङ्ग। ऊपरी अङ्गोंमें, जांघमें, ऐठन। प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी; उर्ध्व-प्रत्यङ्गोंकी; हाथोंकी, **निम्न-प्रत्यङ्गोंकी,** जङ्घाकी; पैरोंकी, **घुट्टीकी,** पैरकी कमजोरी।

निद्रा गहरी रहती है। स्वप्न, काम-पूर्ण, **घबड़ाहट, डरावने,** हत्याके; गला दबानेके, आनन्ददायक, तङ्ग करनेवाले, विस्तृत। देरसे सोता है; बेचैन नींद। तीसरे पहर औंघाई। आधी रातके पहले नींद न आना, **आधी रातके बाद,** औंघाईके साथ। अस्फूर्तिदायक निद्रा। **बहुत सवेरे जागता है;** बार-बार।

शीत सवेरे; **दोपहरके पहले,** शामको बिछावनपर; ठण्डी हवामें; रातमें बिछावन-

पर सर्दी लगती है ; सर्दीलापन, भीतरी जाड़ा, सवेरे हिला देनेवाला जाड़ा ; २ बजे सवेरे शीत ; १ बजे दोपहरमें ; २ बजे दोपहरको ; गर्म कमरेमें जाड़ा कम हो जाता है ।

रातमें ज्वर, सूखा ताप, तापकी झलक, पसीना न होना ।

पसीना :—सवेरे, **रातको**, घबड़ाहटसे, बिछावनमें, सर्दीसे, खाँसनेपर, थोड़ा भी परिश्रम करनेपर ; ज्वरके बाद, हिलने डोलनेपर ; रातमें बहुत ज्यादा, पसीना होनेके समय लक्षण बदतर हो जाते हैं ; पसीना होते समय कपड़ा उतारनेकी इच्छा न होना ।

जलता हुआ चर्म, ठण्डा चर्म ; खाल उठना । यकृतके पीले दाग, लाल दाग, पीला चर्म ; चर्मका सूखापन । उद्भेद, छाले, फोड़े, जलते हुए, तर ; **भैंसिया दाद,** गर्मीमें खुजलाना, दर्द-भरा, फुन्सियाँ, रूसी ; तर सफेद भूसी, डङ्क मारने और पीव होनेवाले टियुबर्कल्स (गुटिकाएँ) ; आमवात ; गांठें ; चकत्तेदार विसर्प, सूजनके साथ, खुजलानेपर बदतर ; चर्मकी सुरसुरी, खुजली, रेंगना, खुजलानेपर बदतर । जलनके साथ चर्मकी सूजन । जखम, जलन, गहरे, पीला स्राव, फैलनेवाले, **डङ्क मारनेकी तरह** ।

नेट्रम कार्बोनिकम
(Natrum Carbonicum)

हैनिमैन, हेरिङ्ग और दूसरोंने इसकी परीक्षा की । पाकाशयमें अम्ल होनेके कारण जिनको कार्बोनेट आफ सोडा लेनेका अभ्यास रहता है, उनपर इस दवाकी परीक्षा हो जाती है । मुझे ऐसे कुछ मनुष्य मिले हैं और मुझे **नेट्रम**के बहुतसे उपसर्ग निश्चित करनेका मौका मिला है ।

पुराने मन्दाग्निके रोगी, जिन्हें बराबर डकारें आया करती हैं, पाकाशयमें अम्ल और वात होता है ; बीस बरसके बाद ही उनकी कमर झुक जाती है ; पीले, शीत असहिष्णु, सर्दीले हो जाते हैं और थोड़ी भी हवा लगनेपर उनकी रोग-वृद्धि हो जाती है, बहुतसे कपड़ोंकी जरूरत रहती है , शीत और ताप सहन नहीं कर सकते ; मातदिल आबहवाकी जरूरत रहती है, ऋतु परिवर्त्तनसे उनकी रोग-वृद्धि हो जाती है ; उनकी पाचन, वात और गठियाकी तकलीफें ऋतु-परिवर्त्तनसे बदतर हो जाती हैं । थोड़ा भी शोरगुल, दरवाजेकी भड़भड़ाहटसे एक कम्प हो जाता है ; बहुत सुस्तीके साथ स्नायविक उत्तेजना और कलेजेकी धड़कन, सकम्प स्नायविक कमजोरी, थोड़े भी मानसिक या शारीरिक परिश्रमसे कमजोरी आ जाती है ; भीतरी और बाहरी कम्पन । कागजकी खड़खड़ाहटसे कलेजेमें धड़कन, चिड़चिड़ापन और विषन्नता पैदा हो जाती है । परिवार और दोस्तोंसे स्नेह नहीं रहता । समाजसे, मनुष्य जातिसे, सम्बन्धियोंसे, अपरिचितोंसे घृणा, उनमें और अपनेमें बहुत बड़ा प्रभेद देखाता है ; किसी विशेष मनुष्यसे असहिष्णु । संगीतसे आत्महत्या, विषन्नता, रुलाई तथा कम्प उत्पन्न होनेका प्रवणता रहती है, पियानो बजना इतना क्लान्तिकर

रहता है, कि उसे लेट जाना पड़ता है, संगीतसे बहुत उदासी उत्पन्न हो जाती है, जिससे धर्मोन्माद बढ़ जाता है। सभी **सोडियमों**की यही दशा है; पर खासकर नेट्रम-कार्बोनिकममें ऐसा ही होता है, दरवाजेकी भड़भड़ाहटसे पिस्तौलकी आवाजसे रोग वृद्धि जिससे सर-दर्द और सार्वाङ्गिक उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं, संगीतसे रोग वृद्धि।

ये रोगी जितना ही सोडा पीते हैं, उतना ही उनके पेटमें आध्मान बढ़ता जाता है, उनके कन्धे झुक जाते हैं, पाचन कष्टकर होता है और अन्तमें दूध विलकुल ही नहीं पचता, पतले दस्त आने लगते हैं अनपचका, अन्न-मिला दस्त, लेईसे, आध्मान हो जाता है और अँतड़ियाँ ढीली हो जाती हैं। उत्तप्त अवस्थामें ठण्डा पानी पीनेसे उत्पन्न बहुत-से लक्षण।

घोड़ेकी तरह बदबूदार पेशाव, दूध पीने या शाक-सब्जी खानेके कारण। यह **नाइट्रिक एसिड**की तरह बहुत ज्यादा नहीं रहता; पर उससे मिलता-जुलता है।

अङ्गुलियोंकी नोक और पोरोंपर नेट्रम-कार्ब उद्भेद प्रकट करता है; अंगूठोंपर भी चकत्तेवाले उद्भेद खुल जाते हैं तथा सन्धियों और अङ्गुलियोंकी नोंकोंपर जखम हो जाते हैं। **बोरैक्स, सीपिया, आर्स** और नेट्रम-कार्ब अङ्गुलियोंकी नोंक और पोरोंपर उद्भेद उत्पन्न करते हैं तथा अंगूठोंपर भी।

थक्के-का थक्का और चकत्तेके रूपमें शरीरपर फुन्सियाँवाले उद्भेद, भैंसिया दादके परिवारका नेट्रम-कार्बसे खास सम्बन्ध है। कमरबन्दकी तरह दाद, भगोष्ठका दाद, लिंगाग्र-चर्मका दाद; कुल्हेपर, जांघपर और पीठपर रुपये बराबर चकत्ते हो जाते हैं। सफेद रक्ताम्बु-भरी फुन्सियोंके छोटे-छोटे छत्ते, जलन, यन्त्रणा और खुजली, खुजलानेपर अच्छा रहता है। पपड़ी जमकर उद्भेद गायब हो जाते हैं; पर अकसर जखम हो जाता है, यह आरोग्य नहीं होता और जखम हो जाता है। रक्तका दौरान कमजोर रहता है, घावोंमें पीव होता है। पैर और चमड़ेमें जलन होती है। चर्मपर पपड़ी जमें उद्भेद, जो फुन्सियोंके रूपमें नहीं होते; पर नेट्रम-कार्ब और **नेट्रम-म्यूर** के अधिकांश उद्भेद जल-भरी फुन्सियोंके रूपमें होते हैं। टनक, काटनेकी तरह दर्द, खुजली, जगह बदलना, कभी यहाँ, कभी वहाँ, ठण्डा चर्म; पसीनेसे भरा शरीर।

स्नायविक क्लान्ति, शारीरिक क्लान्ति, मन और शरीरकी दुर्बलता, खाता रखनेवाले अङ्गुलियोंका जोर नहीं लगा सकते। एक पृष्ठ पढ़नेपर, उसके पहलेका पृष्ठ मनसे गायब हो जाता है। किसी वाक्यका आदिसे अन्ततक याददाश्तमें नहीं रह सकता। जो कुछ पढ़ता है, भूल जाता है। इसके बाद चित्त-विभ्रम हो जाता है और तब वह कोई भी मानसिक परिश्रम नहीं कर सकता। काम-काजके विवरणसे मनुष्य इतने क्लान्त हो जाते हैं, कि उनका चित्त विभ्रममें जा पड़ता है; उनका मस्तिष्क शून्य हो जाता है।

तापकी अत्यधिक असहिष्णुता, खासकर लू लग जानेके बाद, यहाँतक कि कई बरस बाद भी, धूपमें चलनेपर पूरी तरह छाया किये रहना पड़ता है, ठण्डी या अन्धेरी जगह खोजनी पड़ती है; नये आक्रमणके समय रोगीको ठीक-ठीक दवा नहीं पड़ी है, सर्दी और

ताप दोनोंसे ही इस दवामें रोग-वृद्धि हो जाती है; पर इससे खासकर सूर्यके तापसे रोग-वृद्धि है। नेट्रम-कार्बमें माथेकी तकलीफें ठण्डेसे बदतर नहीं होतीं। कमजोरी और कम्पके साथ मस्तिष्क-क्लान्तिके पुराने रोगी। सर्दीसे और शीत ऋतुमें शारीरिक कष्टोंकी अभिवृद्धि हो जाती है, इतनी सर्दी, मानो उसके शरीरमें रक्त नहीं है; हाथ-पैर ठण्डे और वह उन्हें गर्म नहीं कर सकता; पैरके घुटनेतक तथा हाथ कोहनीतक बरफकी तरह ठण्डे। शरीर और हाथ-पैर, जाड़ेमें बदतर रहते हैं तथा माथा गर्मीमें।

दर्दके समय घबड़ाहट-भरा कम्पन और पसीना।

सभी इन्द्रियाँ विशृङ्खलित रहती हैं। रोशनीसे अत्यधिक असहिष्णुता : चमकीली रोशनीसे आँखोंमें दर्द।

अत्यधिक बढ़ी हुई श्रवण-शक्ति थोड़ी आवाज भी बहुत अधिक मालूम होती है, बिजली कड़कनेकी तरह; कागजकी खड़खड़ाहट झरनेके पानीकी गरजकी तरह मालूम होता है।

स्वाद बिगड़ा, बहुत अधिक बढ़ा, यहाँतक कि साधारण स्वादिष्ट चीज कष्टदायक हो जाती है; कभी-कभी स्वाद भी नहीं मिलता।

गन्ध नहीं मिलती, उद्भिज्ज्वर, सर्दीका बोखार, जब सर्दीकी दशा मौजूद रहती है, तो बहुत ज्यादा, गाढ़ा, पीला, पीब-भरा स्राव आँखोंसे, नाक तथा योनिसे होता है। फुन्सियाँ पतले, सफेद रक्ताम्बुसे भरी रहती है; पर फुन्सियाँ फटती हैं, तो उनसे गाढ़ा पीला स्राव होता है। श्वेत-प्रदरका स्राव गाढ़ा, पीला, डोरीकी तरह, इसी प्रकृतिका सूजाकका स्राव, गाढ़ा, पीला, डोरीकी तरह, पीब-भरा मूत्राशयसे स्राव, जो पेशाब करनेके समय मूत्रनलीको बन्द कर देता है।

कानसे मवाद आना, इसके साथ ही तेज, खोंचा मारने और वेधनेकी तरह दर्द होता है, जब मानसिक दशा, सर्दीलापन और दूसरे सार्वाङ्गिक लक्षण मौजूद रहते हैं।

स्राव आम तौरसे बदबूदार रहते हैं।

नाककी सर्दीमें बहुत तकलीफ होती है, हमेशा ही माथेमें सर्दी रहती है, पानी जैसा स्राव बहुत थोड़ी देरतक रहता है और इसके बाद ही बहुत गाढ़ा, ज्यादा, पीले श्लेष्माका स्राव होने लगता है। जखम, मोटी पपड़ियाँ; रातमें मुँह खोलकर सोता है; सूखी पीली पपड़ियाँ, दर्द और रक्त-स्रावके साथ नाकसे निकलती हैं। जितनी बार ताजी हवा लगती है, नाककी सर्दी बढ़ जाती है, अन्तमें यह बदबूदार हो जाती हैं; नाककी हड्डियाँ आक्रान्त हो जाती हैं, करीब-करीब लगातार आँखके ऊपर दर्द बना रहता है तथा ललाटमें और नाककी जड़में दर्द होता है; रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, ऋतु-परिवर्त्तनसे, ठण्डे कमरेमें, तर मौसममें बदतर; प्रत्येक तूफानमें बढ़ जाता है। बहुत ही बदबूदार पीनस-रोग, श्लैष्मिक-झिल्ली जखम-भरी और नष्ट हुई।

आँखोंकी चारों तरफ नीले घेरेके साथ पीला चेहरा, ललाटपर पीले धब्बे, सूजन। सार्वाङ्गिक सूजनका भाव रहता है; हाथ-पैर, चेहरेमें दबानेपर गड़हे पड़ते हैं, कौपिक-

तन्तुओंसे रस-स्राव, हृत्पिण्ड और गुर्देकी वह दशा जो शोथ उत्पन्न करती है ; पुराने मैलेरियाके रोगी, मांस रूखा ; पेशाव अण्डलाल मिला ।

कड़ापनके साथ ग्रन्थियोंकी, अभि-वृद्धि, बगलकी वंक्षणकी, उदरकी तथा लाला-ग्रन्थियाँ वर्द्धित । खासकर वृद्धोंकी मुखशायी-ग्रन्थिकी अभि-वृद्धिके लिये उपयोगी है। कर्णमूल-ग्रन्थिकी पुरानी अभि-वृद्धि, धीमी और बहुत दिनोंकी तालुमूल-ग्रन्थि बढ़ी ।

मुँहका जखम ; दूध पिलानेवाली स्त्रियोंके मुँहका जखम ; बच्चोंके मुँहमें छाले ; छोटे-छोटे सफेद छालोंके दाग, खासकर स्नायविक रोगी बच्चोंका, जो किसी तरहका भी दूध सहन नहीं कर सकते, जिन्हें दूधसे पतले दस्त आने लगते हैं ; वे हास्य आदि अच्छी तरह सहन नहीं कर सकते हैं । सोये सोये बच्चा उछल पड़ता है, रोता है, कूदता है और माताको कसकर पकड़ लेता है ; एक स्नायविक, ठण्डा शिशु, सहजमें चौंक पड़ता है, **बोरैक्सके** बच्चेकी तरह, इसी तरह साधारणतः **नेट्रमके** भी बच्चे रहते हैं ।

कण्ठ और पश्चात्-नासामें श्लेष्माका सञ्चय, खासकर पीले रंगका ; पर **नेट्रम म्यूरका** सफेद रहता है, इसके रोगीको बहुत ज्यादा, गाढ़ा, सफेद मुँहपर श्लेष्मा निकलता है ।

नेट्रम-कार्बके रोगीको भोजन करनेके बाद रोग-ह्रास होता है ; जब सर्दीला रहता है, तब वह खाता है और अपनेको गर्म रख सकता है ; भोजनसे दर्द घट जाता है ; उसके पाकाशयमें दर्द और खालीपनका भाव रहता है, जिससे उसे भोजन करना पड़ता है ; उसे ५ बजे सवेरे और ११ बजे रातमें भूख लगती है । नेट्रम-कार्बकी रोग-वृद्धिका बढ़िया समय ५ बजे सवेरे हैं ; इस समय उसे इतनी भूख लगती है, कि उसे बाध्य होकर पलंग छोड़कर कुछ खाना पड़ता है, जिससे उसका दर्द भी घट जाता है । सर-दर्द, कलेजेकी धड़कन और सर्दीलापन भोजन करनेपर अच्छे रहते हैं (**इग्नेशिया, सीपिया, सल्फर**) ।

गर्भवतियोंकी स्नायविक भूख, जो तबतक सो नहीं सकती, जबतक रातमें उठकर बिस्कुट नहीं खा लेती, यह **सोरिनम** मांगता है ।

अपने प्रचण्ड वेदनाके साथ गति-शक्ति-राहित्य (Locomotor ataxia) ; भोजन करनेपर घटता है, चबानेकी तरह, खालीपन, भूखका पाकाशयमें भाव । तलवे सुन्न, पुरुषोंका लिङ्गोद्रेक और वेदना पूर्ण लिङ्गोद्रेक ; असहिष्णु जंघा ; अत्यधिक असहिष्णु मेरुदण्ड ; अत्यधिक उत्तेजनाका परिणाम । वीर्य-स्राव, समयसे पहले ही वीर्य-स्राव हो जाता है ।

तीसरे पहर प्यास, बहुत तीव्र ; शीत और तापावस्थाके मध्यकालमें प्यास ; भोजनके कुछ घण्टे बाद ठण्डे पानीकी तीव्र इच्छा । दूधकी घोर अनिच्छा ।

आँतोंमें आध्मान वायु-सञ्चय, गूदेंकी तरह कोई पीला पदार्थ ; **दूध पीनेपर पतले दस्त** । बहुत ही कष्टदायक कब्ज ; मल कड़ा, काला, चिकना और टूट जानेवाला । सभी **नेट्रमोंमें** पाखानेकी हाजत नहीं होती ; मल नीचे ढकेलनेकी शक्ति नहीं रहती ; मल बड़ा और कड़ा रहता है ; बहुत मुश्किलसे निकलता है ।

पेशाब करने और कड़ा पाखाना होनेके बाद मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव।

वन्ध्यत्व, जो स्त्री गर्भ-धारण नहीं कर सकती, उसकी यह धातुगत प्रकृति रहती है ; वह स्नायविक रहती है, घुटने और कोहनीतक ठण्डी रहती है ; जाड़ेके दिनोंमें शरीर ठण्डा रहता है, गर्मियोंमें माथा गर्म ; हमेशा क्लान्त ; योनि-द्वारावरोधिनी पेशीकी शिथिलता, जिससे पुरुष-वीर्य पतन होनेके साथ ही बाहर निकल आता है और इसीलिये सन्तान नहीं होती। द्वारावरोधिनी पेशीकी अकड़न भी हो सकती है, जिसका परिणाम भी यही होता है या आवाजके साथ वायु निकलनेके साथ ही-साथ रक्त या श्लेष्माका एक थक्का योनिसे निकल पड़ता है। स्नायविक, अस्थिर, उत्तेजनशील, दुबली, मन्दाग्नि-पूर्ण स्त्रियाँ, गुल्मवायु-ग्रस्त नहीं। ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले या बहुत देरसे होता है ; स्नायुशूल, झोंककी हवा या भीड़ सहन नहीं होती, मेरुदण्ड असहिष्णु, पैर सुन्न, श्वेतप्रदर पीलापन लिये हरा और बहुत ज्यादा।

पाक्षाघातिक दशाएँ ; पलकोंका आप-ही-आप गिर जाना या अकड़न, निगलनेमें कष्ट, गलकोषके पक्षाघातके कारण बाध्य होकर बहुत-सा पानी पीकर खाद्यको नीचे उतारना पड़ता है ; आँतोंका पाक्षाघात, मल नहीं निकाल सकता, मल भेंड़की मींगीकी तरह, सुर-सुरीके साथ बायें पैरका पक्षाघात।

सीढ़ी चढ़नेके समय और बायीं करवट लेटनेके समय रातमें कलेजा धड़कना। बहुत-से मेरुदण्डके उपसर्ग। घेघा। गर्दन अकड़ना, चलनेके बाद पीठमें प्रचण्ड दर्द। हाथ-पैरोंमें वातज दर्द। सभी प्रत्यंगोंमें झटका। चलनेके समय झटके खाना। बच्चोंके गुल्फ कमजोर। पैरोंमें भार। हिलने-डोलनेपर घुटनेके खोखले स्थानमें दर्द। घुटनेके मोड़की जगहपर तनाव। गुल्फका सहजमें ही स्थान-च्युत हो जाना। चलनेके समय तलवेमें जलन होती है। छालोंसे एँड़ीमें जखम हो जाता है। पैर बरफकी तरह ठण्डे। पैरोंकी कमजोरी। अङ्गुलियों और अंगूठोंकी नोकपर फुन्सियाँ। चर्मपर दाग और टियुबरक्युलर (गुटिकाएँ)। चर्म सूखा और फटा। खुजली और सुरसुरी।

नेट्रम म्युरियेटिकम
(Natrum Muriaticum)

नमक एक ऐसी साधारण भोजन-सामग्री है, कि यह मान लिया गया है, कि इसका औषध-रूपमें व्यवहार हो ही नहीं सकता। यह उन लोगोंकी ही राय है, जो एकदम मांस-तन्तुओंमें नश्तर देते हैं। मूल लवणका कोई भी धातुगत प्रभाव नहीं होता।

नमक समस्त लक्षणोंके साथ कोई व्यक्ति दुबला होता हुआ दिखायी दे सकता है ; वह बहुत ज्यादा मात्रामें नमक खाता है, पर उसमें कुछ भी पचा नहीं सकता। उसके मलमें नमक मिलेगा, क्योंकि वह उसके जीवनमें नहीं प्रवेश कर पाता। यह नेट्रम-म्यूरका चिह्न है,

नमककी भूख। यही चूनेके (Lime) सम्बन्में भी सत्य है। बच्चे अपने खाद्य-पदार्थोंसे ही भरपूर लवण प्राप्त कर सकते हैं, यही उत्तम भी है, जब कि नमक या चूना उन्हें इस रूपमें खिलाया जाता है, कि यह भीतर—उस घरको लक्ष्यकर नहीं जिसमें वह रहता है (शरीर), बल्कि स्वयं वह व्यक्ति (जीव) हजम नहीं कर सकता—तब हड्डी—नमककी कमी नेट्रम-म्यूरकी कमी जल्द ही गायब हो जायगी। हमलोग अपनी क्षुद्र खुराकोंसे शरीरके लिये आवश्यक नमककी पूर्त्ति नहीं करते, बल्कि हमलोग भीतरी रोग आरोग्य करते हैं, भीतरी शारीरिक मनुष्यको हम शृङ्खलामें ले आते है और तब खाद्यसे ही मांस तन्तु भरपूर लवण प्राप्त करने लगते हैं। सभी भेषज यथोचित रुपमें प्रत्युक्त होने चाहिये। हमलोगोंको तबतक ऊँचे चढ़ते ही जाना चाहिये, जबतक गुप्त झरना न स्पर्शमें आ जाये।

नेट्रम-म्यूर एक गहरायीतक क्रिया करनेवाला तथा दीर्घ-क्रिय औषधि है। यह स्वास्थ्य-विधानको आश्चर्य-जनक रूपसे पकड़ती है और शक्तिकृत मात्रामें जब इसका प्रयोग होता है, तो स्थायी परिवर्त्तन कर देती है।

बहुत कुछ निदर्शन तो रोगीको देखनेसे ही प्राप्त हो सकते हैं, इसलिये हम कहते हैं :—यह नेट्रम-म्यूरके रोगीकी तरह दिखायी देता है। तजुर्बेकार चिकित्सक चेहरा देखकर ही रोगीका श्रेणी-विभाग कर सकते हैं। रोगीका चमड़ा चमकीला रहता है, पीला, मोमकी तरह, ऐसा दिखायी देता है, मानो तेलहा हो रहा है। एक विचित्र तरहकी आश्चर्य जनक सुस्ती रहती है। दुबलापन, कमजोरी, स्नायविक सुस्ती, स्नायविक उत्तेजन-शीलता।

मानसिक लक्षणोंकी एक लम्बी लड़ी है ; शरीर और मनकी गुल्म-वायु-ग्रस्त दशा ; पर्यायक्रमसे रोता और हँसता है ; अनुपयुक्त समयपर अदम्य हँसी ; बहुत देरतक आक्षेपिक हँसी। इसके बाद ही आँसू बहाना, बहुत उदासी तथा आनन्दहीनताकी अवस्था आयगी ; कितनी भी आनन्दकी बात क्यों न हो, वह प्रसन्नताकी दशामें अपनेको ला ही नहीं सकती। वह भावोंसे सुन्न रहती है, सहजमें ही रञ्ज हो जाती है, बेकार ही नाराज हो पड़ती है। असुखकर घटनाएँ याद आती हैं, जिनपर वह रञ्ज किया करती है। सान्त्वना उसकी मानसिक दशा—विषन्नता, रुलाईको बढ़ा देती है, कभी-कभी क्रुद्ध कर देती है। ऐसा मालूम होता है, कि वह सहानुभूति चाहती है, पर जब सहानुभूति प्रदर्शन किया जाता है, तो पगली हो उठती है। इस विषन्नताके साथ सर-दर्द पैदा हो जाता है। वह क्रोधमें भरी सहनपर टहलती है। वह भयङ्कर भुलक्कड़ रहती है ; हिसाब नहीं रख सकती ; चिन्तन नहीं कर सकती ; जो कुछ कहना चाहती थी ; वह भूल जाती है ; जो सुनती या पढ़ती है, उसका सूत्र भूल जाती है। मनकी अवसन्नता बहुत ज्यादा रहती है।

अतृप्त प्रेमसे उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। वह अपने प्रेमपर अधिकार नहीं रख सकती और विवाहित पुरुषसे प्रेम कर लेती है, वह जानती है, कि यह मूर्खता है, पर उसके प्रेम-चिन्तनमें जागती पड़ी रहती है। किसी कोचवानसे प्रेम कर लेती है, वह जानती है, कि यह बुद्धिहीनता है, पर उसे रोक नहीं सकती। नेट्रम-म्यूर इस तरहके रोगीके मनको

ठिकाने ला देगा और वह गत घटनाओंपर ध्यान देगी और आश्चर्य करेगी, कि उसने ऐसी मूर्खता क्यों की। गुल्मवायु-ग्रस्त लड़कियोंकी यह दवा है।

मानसिक उपसर्गोंमें जहाँ **इग्नेसिया** सामयिक रूपसे लाभ करता है, पर रोगको आरोग्य नहीं करता, तो उसकी क्रियाको पूर्ण **करनेवाला**— पुरानी दशामें दवा नेट्रम-म्यूर देना चाहिये। यदि कोई छिपी धातुगत दशा **इग्नेशियाके** लिये बहुत ही गहरी हो, तो तुरन्त नेट्रम-म्यूर देना चाहिये।

रोटी, वसा और गरिष्ट पदार्थोंसे अनिच्छा।

नेट्रम-म्यूरका रोगी उत्तेजनासे बहुत ही विचलित हो जाता है, अत्यन्त भावुक रहता है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य विधान चञ्चल और उपदाहकी दशामें रहता है, शोर-गुल, दरवाजेकी भड़भड़ाहट, घण्टेकी आवाज, पिस्तौल छूटनेकी आवाजसे रोग वृद्धि हो जाती, सङ्गीतसे भी रोग-वृद्धि होती है।

दर्द सुई गड़ने बिजलीके झटकेकी तरह, अकड़नकी तरह झटके प्रत्यङ्गोंमें सोनेपर होते हैं, ऐंठन, खोंचा मारनेकी तरह दर्द। सब प्रकारके प्रभावोंसे, अत्यधिक स्पर्श असहिष्णु रहती है, उत्तेजन-शील, भाव प्रवण और तीव्र रहती है।

गर्म कमरेमें बीमारी पैदा हो जाती है, घरके भीतर बदतर रहती है, वह खुली हवा चाहती है। खुली हवामें मानसिक उपसर्ग ह्रास हो जाते हैं। पसीना होनेपर उसे सहजमें ही सर्दी लग जाती है, पर अमूमन खुली हवामें अच्छी रहती है, यद्यपि गर्म हो जानेपर बदतर हो जाती है, पर जब गर्म हो जाने योग्य परिश्रम होता है, तो रोग बढ़ जाता है, पर खुली हवामें हलका परिश्रम करनेपर अच्छी रहती है।

नेट्रम-कार्ब और नेट्रम-म्यूर दोनोंमें ही **नेट्रमका** सार्वाङ्गिक स्नायविक तनाव रहता है; पर एकका रोगी सर्दीला होता है, दूसरा गर्म रक्तवाला।

चेहरा देखनेमें रोगियल, चमड़ा तेलहा, चमकीला, बदरङ्ग, पीला, अकसर हरित्पाण्डु रोगीकी तरह रहता है, केशोंके नीचे कान तथा गर्दनके पीछे चकत्ते उद्भेदोंसे भरे रहते हैं। पपड़ी जमनेवाले तथा भूसी उतरनेवाले उद्भेद भी रहते हैं, जिनमें बहुत- खुजली होती है, पानीकी तरह तरल चूता है और कभी-कभी सूखा भी रहता है। कर्ण-नलीमें खाल उधड़ जाती है और एक चमकीली सतह रह जाती है। छेदमें परत पड़ जाती है, खाल उधड़ जाती है और पानी निकलती हुई सतह रह जाती है। नाककी दीवार तथा ओठोंके पास तथा जननेन्द्रिय और मलद्वारके पास फुन्सियाँ निकलती हैं। चकत्ते उद्भेद, उजले, पानीकी तरह तरल चूता है, उत्पन्न होते हैं और छुट जाते हैं। चर्ममें बहुत खुजलाहट मौजूद रहती है।

चर्म मोमकी तरह और शोथ-ग्रस्त दिखाई देता है। बहुत दुबलापन रहता है, चमड़ा सूखा, शिकनदार और झुर्री खाया दिखाई देता है, चेहरा दबा रहता है। एक छोटा बच्चा वृद्धकी तरह दिखाई देता है। चेहरा उतरा रहता है, जो कुछ सुधार होनेपर चला जाता है। ऊपरसे नीचेकी ओर दुबलापन उतरता है। स्कन्धास्थियाँ निकल आती हैं और गर्दन

पतली दिखाई देती है, पर कूल्हे और निम्न-प्रत्यङ्ग वैसे ही फूले और गोल रहते हैं। **लाइकोपोडियममें** भी ऊपरसे नीचेकी ओर क्षीणता है। औषधोंकी दिशासे भी हमलोगोंको एक दूसरेसे प्रभेद करनेमें सहायता मिलती है।

श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे चरित्रगत स्राव पानीकी तरह या गाढ़ा सफेद—अण्डेकी सफेदीकी तरह होता है। पानीकी तरह स्रावके साथ नाककी सर्दी रहती है, पर धातुगत दशा, गाढ़ा, सफेद स्राव होनेकी ही है। वह सवेरे खखार खखारकर गाढ़ा, सफेद बलगम निकालता है। आँखोंसे लसदार स्राव होता है। कानसे गाढ़ा, सफेद गोंदकी तरह स्राव होता है। श्वेत-प्रदरका स्राव भी सफेद और गाढ़ा होता है। सूजाकमें स्राव बहुत दिनोंतक रहकर ग्लीटकी तरह हो गया है। सिर्फ पेशाब करनेके बाद मूत्रनलीमें चुनचुनाहट होती है।

सर-दर्द भयङ्कर होता है : डरावना दर्द ; फाड़ने, दबानेकी तरह, मानो शिकंजेमें कसा है, *माथा ऐसा मालूम होता है, मानो खोपड़ी चूर-चूर हो जायगी,* हथौड़ी मारने और टपककी तरह सर दर्द होता है। हिलना आरम्भ करते ही ऐसा मालूम होता है, मानो छोटी हथौड़ीसे सरमें मारा जा रहा है। सवेरे जागनेपर छोटी हथौड़ीसे मारे जानेकी तरह सरमें दर्द। नींदके शेष भागमें दर्द प्रारम्भ होता है। रातके प्रथम भागमें बहुत स्नायविकता रहती है ; वह रातमें देरसे सोती है और माथेमें हथौड़ीसे मारनेकी तरह चोटके साथ जागती है। सर-दर्द सवेरे १०—११ बजे ही आरम्भ होता है, जो दिनके ३ बजेतक या शामतक रहता है। सर दर्द समय बाँधकर, नित्य, तीसरे दिन या चौथे दिन होता है। मैलेरियावाले जिलोंमें रहनेवालोंका सर-दर्द, सोनेपर घटता है ; रोगीको बाध्य होकर शान्त-भावसे पलङ्गपर लेट जाना पड़ता है, पसीना, होनेपर घटता है, सविराम ज्वर-सम्मिलित सर-दर्द। शीतावस्थामें तो ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा ; वह प्रलाप-ग्रस्त रहता है और बहुत मात्रामें ठण्डा पानी पीता है। जबतक पसीना नहीं होता, तबतक सरके दर्दमें आराम नहीं पहुँचता। कभी-कभी तो सर-दर्दके सिवा सभी लक्षण पसीना होनेपर घट जाते हैं।

सर-दर्दके दूसरे रूपमें ; जितना ही ज्यादा दर्द होता है, उतना ही ज्यादा पसीना होता है ; पसीना होनेसे आराम नहीं मिलता, ललाट ठण्डा रहता है, ठण्डे पसीनेसे तर रहता है। जब माथा लपेट लेनेपर गर्मा जाता है, तो ठण्डी हवामें घूमनेपर उसे आराम मिलता है।

दृष्टि-शक्तिमें गड़बड़ीके कारण सर-दर्द, जहाँ कि जल्दीसे दृष्टि जमानेकी योग्यता नहीं रह जाती। शोरगुलसे सर-दर्द बढ़ जाता है।

सर-दर्द माथेके समूचे पिछले भागको आक्रान्त किये रहता है और मस्तिष्कके रोग तथा मस्तिष्कोदक (Hydrocephalus) में तो यहाँतक कि मेरुदण्डमें नीचेकी ओर उतर जाता है।

मेरुदण्डके रोगोंमें, जब बहुत ज्यादा दबाव असहिष्णुता रहती है—मेरुदण्डका उपदाह रहता है। कशेरुकाएँ असहिष्णु रहती हैं और मेरुदण्डमें बहुत यन्त्रणा रहती है। खाँसनेपर मेरुदण्डका दर्द बढ़ जाता है, साथ ही चलनेपर भी ; पर यह किसी कड़ी चीजपर

सोनेपर घट जाता है या कड़ी चीजपर जोरसे पीठको दवानेपर, वे पीठके पीछे तकिया या हाथ रखे वैठे रहते हैं। रजः-स्राव (मासिक) की तकलीफोंमें आप किसी स्त्रीको मेरुदण्डके नीचे कुछ कड़ी चीज रखे पड़ा देखेंगे।

समूचे शरीरमें एक सार्वाङ्गिक स्नायविक कम्पन रहता है। पेशियाँ काँपती हैं, प्रत्यंग काँपते हैं, प्रत्यंगोंको शान्त नहीं रखा जाता, जैसा कि **जिङ्कममें** होता है।

पाकाशय और यकृतका भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। पेट वायुसे तना रहता है। भोजन करनेपर पाकाशयमें ढेलेकी तरह हो जाता है। खाद्यके पाचनमें बहुत देर लगती मालूम होती है। भोजनके बाद रोग-वृद्धि। सफेद चिकना श्लेष्माका वमन होनेपर आराम मिलता है। ठण्डे पानीकी बहुत ज्यादा प्यास रहती है; कभी-कभी तो पानी पीनेपर आराम मिलता है और कभी-कभी प्यास वुझती ही नहीं। सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्दके साथ यकृत-प्रदेशमें भरापन प्राप्त होता है। आँतें गैससे तनी रहती हैं, आँतोंकी क्रिया धीमी होती है, पाखाना कष्टकर, कड़ा और गांठ-गांठ होता है। मूत्राशयकी क्रिया भी शिथिल रहती है। पेशाब होना जारी होनेके लिये बैठे रहना पड़ता है, इसके बाद यह धीरे-धीरे होता है— टपकता है; पेशावकी धारमें तेजी नहीं रहती। पेशाव हो जानेके बाद भी ऐसा मालूम होता है, कि कुछ पेशाव मूत्राशयमें रह गया। **यदि कोई मौजूद रहता है तो वह पेशाब नहीं कर सकता।** सर्व-साधारण पेशाब-खानेमें वह पेशाब नहीं कर सकता। पेशाव बराबर लगा रहता है, उसे अकसर पेशाव करना पड़ता है।

होमियोपैथी द्वारा संग्रहणी और फौजी अतिसारको आरोग्य करनेके लिये इस दवाका और **नेट्रम सल्फ**का प्रयोग हुआ है।

स्त्रियोंकी वीमारीमें, कष्ट-पूर्ण रजः-स्रावमें यह लाभ करता है। वहुत तरहकी ऋतु-कालकी वीमारियाँ होती हैं—ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले या वहुत देरसे, बहुत थोड़ा या वहुत ज्यादा। ऋतु-स्रावके लक्षणोंसे हम प्रभेद नहीं कर सकते, हमें धातुगत दशासे प्रभेद करना पड़ता है। हरेक क्रियाकी परीक्षा कीजिये, जिसमें आपको सव लक्षण प्राप्त हो जावें। प्रत्येक यन्त्रकी परीक्षा कीजिये, इसको केवल शारीरिक रूपसे ही परीक्षा न कीजिये; क्योंकि रोगके परिणाम दवातक नहीं पहुँचाते; वल्कि लक्षणोंकी परीक्षा कीजिये।

उस तेजीको देखिये, जिससे दवाएँ मानव शरीरको आक्रान्त करती हैं; कितनी ही ऐसी हैं, जिनकी क्रिया वहुत दिनोंतक चलती है, कितनोंको ही गहराईतक क्रिया होती है। नेट्रम-म्यूर भी इनमेंसे ही एक है। यह वहुत धीमें भावसे कार्य करती है, इसीलिये परिणाम वहुत देरमें प्रकट होता है; क्योंकि इसका सादृश्य उन रोगोंसे है, जो धीमें, दीर्घ-क्रियाशील हैं। इसका यह मतलव नहीं है, कि यह तेजीसे क्रिया नहीं करेगी। सभी दवाएँ तेजीसे क्रिया करती हैं; पर सभी धीमी गतिसे क्रिया नहीं करतीं, सवसे दीर्घ-क्रियाशील भी नयी वीमारीमें क्रिया कर सकती है; पर लघु-क्रियात्मक पुरानी वीमारीमें दीर्घ क्रिया नहीं कर सकती। दवाओंकी गति, सामयिकता ग्रहण कीजिये। कितनी ही दवाओंमें अविराम ज्वर है, कितनोंमें सविराम और कितनोंमें ही स्वल्पविराम ज्वर। **एकोनाइट, वेलेडोना**

और **ब्रायोनिया** तीन विभिन्न गतियाँ, तीन विभिन्न पदक्षेप, तीन विभिन्न प्रकारकी तेजी दिखलाता है, इसी तरह **सल्फर, ग्रैफाइटिस,** नेट्रम-म्यूर **कार्बो वेजमें**—एक दूसरा ही रूप—एक दूसरा ही विकास है। कितनोंको ही अविराम ज्वरमें **बेलेडोना** देते हुए सङ्कोच न होगा ; पर इसके उपसर्ग बहुत जल्दबाजीसे आते हैं, बड़ी प्रचण्डता रहती है और उनकी प्रकृतिमें अविराम ज्वरकी तरह कुछ नहीं है। यह टाइफायड (सन्निपात) की तरह नहीं है। **बेलेडोना** और **एकोनाइटमें** लक्षण मौजूद रहनेपर भी टाइफायडका कोई प्रदर्शन नहीं है। विश्वास रखिये, कि दवामें लक्षण-समूह ही नहीं हैं ; बल्कि रोगकी प्रकृति भी। टाइफायड रोगका सादृश्य **ब्रायोनिया** या **रस-टक्ससे** हो सकता है ; पर बेलसे नहीं। जब हममें अपने विषयमें सोचनेकी शक्ति आ जाती है, तो किसी मनुष्य, यहाँतक कि माता पिताके आज्ञाकारी भी नहीं रहते। हम सत्यके आज्ञाकारी रहते हैं।

नेट्रम-म्यूर एक दीर्घ-क्रिय औषधि है ; इसके उपसर्ग वर्षों बने रहते हैं ; ये धीमे पैदा होते हैं, देरतक ठहरते हैं और बद्धमूल उपसर्ग रहते हैं। इसके प्रभावमें आनेके लिये मनुष्यको बहुत समय लगता है ; यदि यह बहुत साधारण असहिष्णु भी रहता है।

शीतावस्था १०॥ बजे सवेरे आती है ; प्रत्येक दिवस, एक दिन नागा देकर या तीसरे अथवा चौथे दिन। जाड़ा हाथ-पैरोंसे आरम्भ होता है और वे नीले हो जाते हैं, सरमें टपकका दर्द होता है, चेहरा तमतमा उठता है ; प्रलाप, हर विषयमें बातें करता है, लगातार बकता है। पागलोंकी तरह क्रिया। वे तबतक बदतर होते जाते हैं, जबतक रक्त-सञ्चयी आक्रमण आता है। सम्पूर्ण आक्रमणावस्थामें ठण्डे पानीकी प्यास रहती है। शीतावस्थाके समय तापसे उसकी बीमारी नहीं घटती, खूब कपड़ा ओढ़ लेनेपर भी जाड़ा नहीं जाता ; पर ठण्डे पेय पीना चाहता है। हम स्वभावतः मान लेंगे, कि कोई व्यक्ति मृत्यु-कालकी तरह ठण्डा पड़ते जानेपर गर्म चीजें मांगेगा, पर नेट्रम-म्यूरका रोगी उसे सहन नहीं कर सकता। दाँत कटकटाता है, एक करवटसे दूसरी करवट छटपटाता है, हड्डियोंमें यन्त्रणा होती है, मानो वे टूट जायँगी और रक्त-सञ्चयी दशाकी तरह वमन होता है ; तापावस्थामें वह इतना गर्म हो जाता है, कि अत्यधिक तापसे अङ्गुलियाँ करीब-करीब झुलस जाती हैं तथा उसे रक्त-सञ्चयी निद्रा या तन्द्रा आ जाती है। पसीना होनेपर उसे आराम मिलता है ; पसीना होनेपर शरीरकी सब यन्त्रणा घट जाती है और समय पाकर सर-दर्द भी गायब हो जाता है। बहुत जाड़ा, बोखार और पसीना होता है। कभी-कभी तो खूब हट्टे-कट्टे, बलवान व्यक्तिपर इसका आक्रमण होता है ; पर अमूमन रक्त-स्वल्प, क्षीण, मैलेरियासे भरे व्यक्तियोंपर, लँझड़ानेवाले, पुराने रोगियोंपर इसका आक्रमण होता है। सदा ही यह लम्बा समय उपसर्गोंमें नहीं लगता। मैलेरिया-पूर्ण स्थानोंमें बहुत दिनोंतक रहनेवाले रोगीपर ही इसका विशद प्रयोग होता है तथा वे जो मैलेरिया-पूर्ण वायु-मण्डलसे क्षत-विक्षत हो रहे हैं ; वे रक्त हीन, अकसर शोथ-ग्रस्त रहते हैं, पुराने रोगी जिनमें **आर्सेनिक** और क्विनाइन-मूल भेषज जो पुरानी प्रणालीवाले ज्वर छुड़ानेके लिये तबतक प्रयोग करते हैं, जबतक रोगी उसके अधिकारमें रहता है, खूब मिला दिया गया है ; पर रोगी भीतरसे बीमार है, यहाँतक कि पहलेसे भी ज्यादा और जब कि उपसर्ग लौट आते हैं, तो अमूमन पूर्व रूपमें ही रहते हैं। स्वल्प-विराम ज्वरका

ढङ्ग वदलनेकी शक्ति मूल भेषजमें नहीं रहती। रोगसे आंशिक रूपसे सादृश्य रखनेवाले भेषज वीमारीका ढंग ऐसा वदल देंगे, कि उस रोगीको कोई भी आरोग्य न कर सकेगा। यदि आपको ठीक दवा मिले तो होमियोपैथिक दवा हर समय स्वल्प-विराम ज्वरको आरोग्य कर देगी। यदि ऐसा नहीं होगा तो इस तरह रोग सम्मिलित कर दिया गया है, जिससे कि कोई भी उसे आरोग्य न कर सकेगा। सवसे पहले तो किसी सुदक्षको रोगको समझना चाहिये और उसे कायदेमें इस तरह लाना चाहिये, कि जिससे वह आरोग्य किया जा सके। ऐसे कुछ ही मनुष्य हैं जो जाड़ा बोखारके रोगीको नष्ट न कर देते हों; क्योंकि बहुत-से रोगी तो आंशिक विकसित छिपे रोगके रोगी रहते हैं, लक्षण सभी वाहर नहीं प्रकट रहते, खासकर वे रोगी, जिन्होंने होमियोपैथिक दवाएँ ली हैं। होमियोपैथिक असफलता, इस जगतकी सबसे वदतर असफलता है।

अपनी प्रकृतिमें नेट्रम-म्यूर शीतको नियमित रूपमें लानेके लिये काफी अनियमित है। जव यह कुछ कायदेमें आ जाये, तो ठहर जाइये, या तो सम्पूर्ण रोग ही दव जायगा अथवा दूसरी दवा ही स्पष्ट हो जायगी। दूसरी दवाएँ भी हैं, जो रोगको कायदेमें ला सकती हैं। अकसर होमियोपैथों द्वारा नष्ट किये हुए रोगी **सिपियासे** कायदेमें आ जाते हैं। सरमें रक्त-सञ्चयके साथ प्रच्छन्न रोगी, पीठमें दर्द और मिचलीवाले रोगी **इपिकाकसे** कायदेमें आते हैं। होमियोपैथिक दवा देनेके वाद स्थायी आरोग्य होता है, फिर जाड़ा लौटकर नहीं आता।

नेट्रम-म्यूर स्वल्प-विराम-ज्वर प्रवणता ही केवल नहीं हटाता, वल्कि रोगीको स्वास्थ्य-पूर्ण दशामें ले आता है तथा सर्दीकी प्रवणता—सर्दी लग जानेकी प्रवृत्ति और सामयिकताको भी दूर कर देता है। यह प्रवणता ही हटा दी जाती है। हम जानते हैं, कि प्रत्येक आक्रमण, दूसरे आक्रमणकी पूर्व-सूचना है। शीत-ज्वरका प्रत्येक आक्रमण पूर्वकी अपेक्षा विशेष हानिकर होता है। व्यवहारमें आये हुए भेषज प्रवणता वढ़ा देते हैं; होमियोपैथिक दवा यह प्रवणता ही रोक देती है। होमियोपैथिक चिकित्सा मानव-स्वास्थ्य-विधानको सरल स्वच्छ और रोगको सहज ही वशीभूत होनेवाला वना देती है। जबतक यह रोग-प्रवणता नहीं हटा दी जाती, मनुष्य धीरे-धीरे क्षीणताको ही प्राप्त होते जाते हैं—ऊपरसे नीचेकी ओर दुवलापन।

मैलेरियावाले प्रदेशोंमें उत्पन्न होनेवाले वच्चोंको सुखण्डी हो जा सकती है। उन्हें राक्षसी भूख, एक विचित्र भूख रहती है; वहुत खाते है, पर वरावर दुवले ही होते जाते हैं।

गर्भावस्थाकी दशा। स्तन-ग्रन्थि क्षय हो जाता है, शरीरका ऊपरी भाग क्षय हो जाता है। जरायुमें वहुत यन्त्रणा रहती है, श्वेत-प्रदर, जो पहले सफेद था, हरा हो जाता है। हवाके प्रत्येक झोंकसे सर्दी लग जाती है। योनि-पथमें सूखापन रहनेके साथ सङ्गम-कालमें दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो योनि-प्राचीरमें खीलें दव रही हैं; गड़नेकी तरह दर्द। सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें सूखापन रहता है, सव जगहकी झिल्लियाँ सूखी रहती हैं।

कण्ठ सूखा, लाल और फैला रहता है; निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मछलीकी हड्डी अटकी है; भोजनको तरलसे धो डाले बिना निगलनेकी शक्ति नहीं रहती; कण्ठनलीके नीचे समस्त पथमें चिपकनेका भाव रहता है।

कण्ठमें खीलें या मछलीकी हड्डीकी अनुभूतिपर अधिकांश चिकित्सक हीपर देते हैं; यह पुरानी कुञ्जी है, पुरानी बँधी गत। **नाइट्रिक-एसिड, आर्जेण्टम नाइट्रिकम, पेलम** और नेट्रम-म्यूर इन सबमें यह है; परन्तु विभिन्न प्रकारका।

हीपर—तालुमूल फूला, भूरा, बैंगनी, तालुमूल-प्रदाह। थोड़ा भी झोंककी हवा रोगीको सहन नहीं होती, कण्ठमें दर्द, यहाँतक कि बिछावनसे बाहर हाथ निकालनेपर भी दर्द होता है; रातमें रोगीको पसीना होता है, पर कोई आराम नहीं पहुँचता, प्रत्येक खयाल उसे असह्य होते हैं, पर चीज दसगुनी मालूम होती है।

नाइट्रिक-एसिड—कण्ठमें पीले धब्बे रहते हैं, कण्ठमें फटे-फटे जखम या कण्ठ प्रादाहित और नीला रहता है; पेशाबसे घोड़ेके पेशाबकी तरह बू आती है।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम—बहुत ज्यादा स्वरभङ्ग रहता है, स्वर-रज्जु गड़बड़ायी रहती है। कण्ठ फूला रहता है, विस्तृत, रोगी ठण्डी चीजोंकी इच्छा करता है, ठण्डा पानी, ठण्डी हवा चाहता है। खरोंचके साथ जिनके जरायु-मुखमें जखम रहता है, उनके लिये उपयोगी है।

नेट्रम-म्यूर—श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें बहुत सूखापन रहता है, मानो वे टूट जायँगी, बिना जखमके ही पुरानी शुष्कता। अण्डेकी सफेदीकी तरह बहुत ज्यादा सर्दीका स्राव होता है, साथ ही जब श्लेष्मासे ढकी नहीं रहती, तब श्लैष्मिक-झिल्लीकी शुष्कता। रोगी अत्यधिक असहिष्णु, ऋतु-परिवर्त्तनका असहिष्णु रहता है।

हरेक दवाका अपना अलग कदम, अपनी परम्परा श्रेणी रहती है। यह परम्पराकी श्रेणी भी हमें याद रखनी चाहिये।

पुराने शोथ, खासकर कौषिक-तन्तुओंके शोथ (Cellular tissues) के लिये नेट्रम-म्यूर लाभदायक है। कभी-कभी तो कोषोंका शोथ रहता है तथा नयी बीमारीके बाद मस्तिष्कका शोथ। अत्यधिक स्नायविक तनावके साथ तथा मेरुमज्जा-प्रदाह (Spinal meningitis), जिसमें माथेके पीछेकी ओर खिंचनेका पुराना भाव रहता है, आगेकी ओर माथेका बहुत दिनोंसे झटका खाना। नयी बीमारियाँ जिनका परिणाम मस्तिष्कोदक होता है या मेरुदण्डके उपदाहमें। कभी-कभी यह औदरिक शोथमें भी लाभदायक होता है; पर विशेषकर निम्न-शाखाओंके शोथमें। आरक्त-ज्वरके बादका नया शोथ; रोगी अत्यधिक असहिष्णु रहता है, नींदसे चौंक पड़ता है, घबड़ाकर रातमें उठ बैठता है, पेशाबमें अण्डलाल और तलछट रहता है।

मैलेरियाके बादवाले शोथमें, जब आरोग्यप्रद रूपमें नेट्रम-म्यूर कार्य करता है, तो मूल शीतको लौटा लाता है। मनुष्यकी जो एक ही आरोग्य ज्ञान है, वह ऊपरसे नीचे,

भीतरसे बाहर और विपरीत नियमसे आता है। जब इसके विपरीत होता है, तो केवल उन्नति होती है, आरोग्य नहीं होता। यदि उपसर्ग लौट आयें तो आशा होती है; यही आरोग्य-पथ है, कोई दूसरा नहीं।

कभी-कभी चर्मके लक्षण भी अत्यन्त आश्चर्यजनक होते हैं। पुराने लँझड़ानेवाले उन रोगियोंका, जिनका चमड़ा पारदर्शक रहता है, मानो रोगी शोथ-ग्रस्त हो पड़ेगा, मोमकी तरह, तेलहा, चमकीला चर्म; तेलके चमकीले चर्मकी अन्य दवाएँ **प्लम्बम, थूजा, सेलेनियम** हैं। ये दवाएँ जीवनीमें गहरायीतक क्रिया करती हैं। कोई भी दवा, जो इतना आश्चर्यजनक परिवर्त्तन उत्पन्न कर सकती है, दीर्घ-क्रिय होती है।

जब माताकी अच्छी तरह उन्नति नहीं होती, प्रसवके बाद लाभ करती है, वह कमजोर और उत्तेजनशील रहती है; प्रसवके बादका क्लेद स्राव बहुत दिनोंतक, बहुत ज्यादा और सफेद होता है; मस्तक तथा जननेन्द्रियपरके केश झड़ जाते हैं; दूध नहीं होता या उससे बच्चेका पोषण नहीं होता। जब गर्भाशय कुछ बढ़ा रहता है तथा गर्भाशय वर्द्धित रक्त-सञ्चयके रूपमें होता है, तो प्रसवके बादके दर्दमें यह उपयोगी होता है। उसका रोग शोरगुल, सङ्गीत तथा दरवाजेकी भड़मड़ाहटसे बढ़ जाता है। वह नमक चाहती है, रोटी, शराब या बसामय पदार्थ अच्छे नहीं लगते। खट्टी शराब पाकाशयको गड़बड़ा देती है। नेट्रम-म्यूर रोगको आरोग्य कर देगा, दूध उतार देगा तथा रोगीको सङ्खलामें ला देगा।

उन हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त लड़कियोंको नेट्रम-म्यूरकी जरूरत रहती है, जिनका तेलहा चमड़ा रहता है, हरा, पीलापन लिये रहता है; जिन्हें दो या तीन मासमें एक बार ऋतु-स्राव होता है। ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा होता है या बहुत ज्यादा अथवा पानीकी तरह। जब लक्षण मिलते हैं, तो यह दवा हरित्पाण्डु रोगको आरोग्य कर सकती है और चेहरेकी स्वस्थता निदर्शक बना दे सकती है; पर थोड़े समयमें नहीं। हरित्पाण्डु रोगको दूरकर पूर्ण स्वास्थ्य लौटा लानेमें बरसों लगते हैं; कटी हुई अङ्गुलीसे केवल पानी निकलता है; मासिक रजःस्राव केवल श्वेत प्रदरका होता है; सांघातिक रक्तहीनता रहती है। नेट्रम-म्यूर जीवनमें इतनी गहरायीतक प्रवेश करता है, कि गुलाबी चेहरा बना देता है।

नेट्रम फास्फोरिकम

(Natrum Phosphoricum)

इस दवाके निदर्शनोंके लिये हमें केवल सुसलरपर ही नहीं निर्भर रहना पड़ता; क्योंकि हमलोगोंके इसके निजी नैदानिक लक्षण भी बहुत-से हैं। रोगी-शय्या-पार्श्वकी जँचाईसे सुसलरके निदर्शन बहुत ठीक और बहुत-से सुनिश्चित प्रकट हुए। लेखकने बीस बरसोंतक यह दवा बहुत से उन रोगियोंको दी है, जिनके स्नायु मानसिक परिश्रमसे, अत्यधिक रति-क्रियासे और दुराचारसे विचलित हो पड़े थे। रोग-लक्षण **सवेरे, शामको**

और रातमें तथा आधी रातके बाद बदतर हो जाते हैं। स्पष्ट **रक्त-हिनता** रहती है और **खुली हवासे घृणा।** हवाका झोंका, खुली हवा, सर्दी, सर्द हो जाना और सर्द हो जानेके बाद बदतर हो जाता है और बार-बार सर्दी लगनेकी प्रवणता रहती है। ऋतु-परिवर्त्तन होनेसे वह बदतर हो जाता है। हरित्पाण्डु रोग। नहानेकी इच्छा नहीं होती, सङ्गमके बाद बहुत-से उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं, वह एक सङ्गम व्यभिचारी हो सकता है। उपवासके बाद बहुतसे लक्षण पैदा हो जाते हैं और भोजनके बाद अमूमन रोग-लक्षण घट जाते हैं। किसी भी तरहका शारीरिक परिश्रम करनेपर उसके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं। उसकी पेशियाँ थुलथुली रहती हैं और उसका मांस क्षय होता जाता है। मक्खन, ठण्डे पेय, ठण्डा खाद्य, **चसा, फल, दूध, खट्टी चीजें** और **अंगूरका सिर्का** खानेपर विशृङ्खल हो पड़ता है। भीतरी और बाहरी सुरसुरी रहती है। बहुत अधिक शारीरिक उपदाह रहता है और उसके बाद बहुत ज्यादा प्रतिक्रियाका अभाव रहता है। हिलने-डोलने, सीढ़ी चढ़नेपर बहुत-से उपसर्ग बढ़ जाते हैं। गर्म ऋतुमें, सवेरेके वक्त बहुत ज्यादा आलस्य रहता है। हमेशा पड़े रहनेकी इच्छा रहती है। तरलका क्षय हो जानेके कारण बहुत दिनोंकी दुर्बलता। बायीं करवट सोनेपर बहुत-से लक्षण बढ़ जाते हैं। ऋतु-स्रावके पहले और बाद रोगिनी बदतर रहती है। ऋतु-स्राव-कालमें तीसरे पहर और शामको लक्षण बदतर हो जाते हैं। किसी एक अंशमें सुन्नपन। खूनका ऊपर चढ़ना। सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द; यह बिजली, तूफानके समय बढ़ जाता है। समूचे शरीरमें स्पंदन। एक पदार्थ-प्रतिपादित लक्षण है, ऐसा अनुभव होना, मानो एक गोली धमनियोंमें जबर्दस्ती घुस गयी है। सार्वाङ्गि तथा वेदना **अत्यधिक असहिष्णुता।** शरीरमें रातमें जागते रहने पर झटका। बैठनेपर रोग-वृद्धि, बिजली-पानीके समय सार्वांगिक रोग-वृद्धि। पेशियों और कण्डराओंमें तनाव। बिजली तूफानके समय कम्पन। पेशियोंका ऐंठना। **स्नायविक** और पाक्षाघातिक दुर्बलताएँ, सवेरे और परिश्रम करनेपर बढ़ जाती हैं; शरीरसे खट्टी गन्ध आती है (**हीपर, सल्फ, लाइको**की तरह)।

छोटी-छोटी बातोंपर क्रोध और विरक्त होनेसे उपसर्ग। शामको और रातमें; बिछावनपर; आधी रातके पहले; भोजनके बाद; भयके; ज्वर कालमें, भविष्यके सम्बन्धमें; अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें, जागनेपर चिन्ता। दुःसमाचारोंसे उत्पन्न उपसर्ग। संगी साथीकी इच्छा नहीं रहती, मनः-संयोग कष्टकर होता है। सवेरे, शामको, भोजनके बाद, मानसिक परिश्रमसे और सोकर जागनेपर मन चञ्चल रहता है। मति-भ्रम, भय, सोचता है, कि वह मृत पुरुषोंको देखता है; खाम-खयाल, सोचता है, कि उसे सान्निपातिक ज्वर होना चाहता है; दूसरे कामसे पैरके चापकी आवाज आती है। निराश, निरुत्साह और सहज ही स्थान-च्युत। पढ़नेके समय मनकी सुस्ती। मानसिक परिश्रम बहुत-सी बीमारियाँ उत्पन्न कर देता है। वह बहुत उत्तेजनशील रहता है, रातमें डरता है। आसन्न रोगोंका भय, कुछ होनेवाला है; दुर्भाग्यका; जागनेपर। दुःसमाचारोंसे डरता है। भुलक्कड़। सहजमें ही डर जाता है और ध्यान नहीं देता। वह गुल्म-वायु-ग्रस्त और जल्दबाज रहती है, उसके मुकाबले कोई भी तेज काम नहीं करता। कभी-कभी रोगीमें बहुत अधिक विचार

उठते हैं और फिर कमी हो जाती है और उसका मन शिथिल हो जाता है। असन्तुष्ट। वह सभी पदार्थोंसे, यहाँतक कि अपने परिवारवालोंसे भी उदासीन रहता है। क्रमशः बढ़ती हुई जड़ता ; मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे भय। चिड़चिड़ापनः—सवेरे, ऋतु-स्रावके समय, छोटी-छोटी बातोंपर। याददाश्त कमजोर। समयपर प्रफुल्लता, **मनकी बहुत अधिक खुस्ती।** शामको और रातमें बेचैन। शामको वीर्यपातके बाद, ज्वर-भोग-कालमें और संगीतसे उदासी, आस पासके लोग, शोर गुल तथा संगीत उसे बिलकुल ही सहन नहीं होता। वह गम्भीर और चुप होता जाता है और बहुत देरतक अकेला चुपचाप बैठा रहता है ; वह सहजमें ही भयसे, शोर-गुलसे, सो जानेपर और निद्रा कालमें चौंक उठता है। उसपर बेहोशीका दौरा होता है। उसके दोस्त उसे सन्देही कहते हैं। बातचीतकी इच्छा नहीं होती। उसके विचार भटका करते हैं। वह डरपोक और लजालु होता जाता है। सहजमें ही रोता है। मानसिक परिश्रम असम्भव हो जाता है और वह जड़ होता हुआ मालूम होता है।

सवेरे सरमें चक्कर आना, मानसिक परिश्रमसे, बैठने और चलनेपर रोग-वृद्धि। गिर जाना चाहता है।

शामको रक्त-सञ्चय। शामको माथेमें, ललाटमें और मस्तक शिखरमें ताप। पसीना होनेपर तापकी झलक। मस्तक-त्वचामें तनाव। सुनहरे पीले पपड़ी जमें उद्भेद माथेपर होते हैं। ललाटमें अकौता। ललाटमें, आँखोंके ऊपर भरापन, सवेरे, मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाता है। सरमें भार रहता है और केश झड़ जाते हैं। सवेरे, तीसरे पहर, शामको और रातमें सरमें दर्द, केश बाँधनेपर रोग बढ़ जाता है; **भोजनके बाद** ; बाध्य होकर लेट जाना पड़ना है; रोशनीसे रोग वृद्धि ; लेटनेपर, सवेरे, **ऋतु-स्रावके बाद** और समय रोग-वृद्धि ; **मानसिक परिश्रमसे,** खट्टे दूधके बाद; हिलने-डोलने, सर हिलानेपर, शोर-गुलसे, लेटे-लेटे उठनेपर, कमरेमें, **काम-सम्बन्धी ज्यादतियाँ,** निद्राके बाद, झुकनेके बाद, आँखोंपर जोर पड़नेपर ; **बिजली-पानीके समय** ; चलनेके समय ; गर्म कमरेमें रोग-वृद्धि। खुली हवामें और दबावसे रोग-लक्षण घट जाते हैं। समय बाँधकर सर-दर्द होता है, धमकका दर्द, ललाटका दर्द, **मानसिक परिश्रमसे** ; हिलने डोलनेसे बढ़ जाता है ; **आँखोंके ऊपर** ; पश्चात **मस्तक** ; मस्तक-पार्श्वमें ; कनपटीमें ; सवेरे जागनेपर खोपड़ीमें ; मस्तक-शिखरमें और ललाटमें दर्द। दर्द फटनेकी तरह, मस्तक-पार्श्व और कनपटीमें काटनेकी तरह दर्द, माथा और पश्चात्-मस्तकमें ; खट्टे लसदार वमनके साथ दबावका दर्द, ललाटमें दबाव, बाहरकी ओर आँखोंके ऊपर, पश्चात् मस्तकमें और पश्चात् मस्तक पार्श्वमें दबाव ; कनपटियोंमें दबाव ; मस्तक-शिखरमें ऐसा दबाव, मानो यह खुल जायगा। माथेमें, ललाटमें, मस्तक-पार्श्वमें, कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। माथा और ललाटमें विह्वलकारी दर्द। माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द। ललाटपर पसीना। माथेमें, ललाटमें, कनपटीमें और मस्तक-शिखरमें स्पन्दन। माथेमें झटका। ऐंठन। माथेका खुला रखना, उपसर्ग पैदा कर देता है।

आँखोंका सूखापन। मलाईकी तरह पीला स्राव। पलकोंका भार, पलकोंका प्रदाह। कण्ठमालाके कारण बहिरायत चक्षु-गोलक (Scrofulous ophthalmia) और दानेदार

पलकें। पलक तथा पलकोंके किनारोंमें जलन और खुजली। जलता हुआ आँसू, आँखोंको रगड़ना पड़ता है। पढ़नेके समय आँखोंमें दर्द। जलन और काटनेकी तरह दर्द। ऋतु-स्राव-कालमें दवाव। ऐसा दर्द मानो आँखोंमें वालू पड़ी है। पढ़नेके समय यन्त्रणा, कुचलनेकी तरह दर्द। आँखोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। चाक्षुषी-नाड़ीका पक्षाघत। आलोकातङ्क। पुतलियाँ फैलीं। एक पुतली फैली। दाहिनी आँखकी पलकका पढ़नेके समय फड़कना। घूर-घूरकर देखना। वक्र-दृष्टि (डेरा देखना), फूली हुई पलकें। पीला चक्षु-कृष्ण पटल। आँखोंके सामने रङ्ग, अन्धेरा। रोशनीके चारों ओर घेरा। दूरकी चीज देखनेपर धुँधली दृष्टि। कुहरेसे ढँकी ; अन्धापन। **देखनेमें परिश्रम पड़नेपर** वहुतसे लक्षण वढ़ जाते हैं। सवेरे ५ वजे सोकर उठनेपर आँखोंके सामने चकाचौंध। आँखोंके सामने कुहरा, ८ वजे रातमें गैसकी रोशनीमें वढ़ जाता है। अदूर दृष्टि। आँखोंके सामने चिनगारियाँ।

कानोंमें उद्भेद। कानोंपर मलाईकी तरह पीली पपड़ी। कानोंमें भरापन। एक कान धीमा और लाल। कानोंमें खुजली। दाहिने कानके खण्ड (लोव) में जलन और खुजली, जवतक खून नहीं निकलता, खुजलाना पड़ता है। सरमें चक्कर, भनभनाहट, घण्टा वजनेकी आवाज, **गरज**, सनसनाहट, गाना, सीटी वजनेकी आवाजके साथ कानोंमें आवाजें। कानमें दर्द। दाहिनी वाह्य कर्ण-नलीमें यन्त्रणा। जलन। कानके भीतर और पीछे **सुई गड़नेकी** तरह दर्द। **फाड़नेकी तरह दर्द।** टपक। अनुभूतियाँ रुकी। श्रवणशक्ति वहुत तीव्र रहती है, शब्दोंके लिये तीव्र, गड़वड़, नष्ट श्रवण-शक्ति।

रोगीकी नाकसे पतला सर्दीका स्राव हुआ करता है और नाककी सर्दी जिसमें **गाढ़ा, पीला, पीवकी तरह स्राव** होता है। नाक छिड़कनेपर नाकसे खून जाना। नाककी जड़में भरापन। नाक श्लेष्मा और पपड़ियोंसे रुकी रहती है, पर स्राव अमूमन थोड़ा होता है। सवेरे नाकसे वदबू आती है। पीनस रोग। वायें नथुनेमें चुनचुनीके कारण आँखोंमें आँसू भर आते हैं। घ्राण-शक्ति वहुत तीव्र रहती है। वायें नथुनेमें यन्त्रणा। वह हमेशा नाक खूँटा करता है और पपड़ी जमा करती है। वार-वार छींकें आती हैं। नाककी जड़में तनाव।

चेहरा वदरंग हो जाता है, नीला, आँखोंके चारों ओर घेरे, मिट्टीके रङ्गका **पीला ;** लाल धब्वे, पर वोखार नहीं, पर्यायक्रमसे लाल और पीला होता है, पीले, यकृतके दाग, नाक और मुँहके चारों तरफ सफेदी। चेहरेपर उद्भेद, ठुड्डीपर, ललाटपर, ओंठोंपर, मुँहके चारों तरफ, **नाकपर।** ललाटपर फुन्सियाँ। चेहरेपर दाने। शामको ताप। शीतावस्थाके समय। चेहरेमें जलन। नाक और चेहरेमें खुजली।

चेहरेमें स्नायुशूलका दर्द, जलन। दाहिने गालमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द। दाहिने निम्न हनुके कोनेके पास यन्त्रणा, उसके भीतरसे खोंचा मारना। सुई गड़नेकी तरह दर्द। निम्न-हनुकी ग्रन्थियोंकी सूजन। निम्न हन्वस्थ ग्रन्थिकी सूजन।

खून वहनेवाले मसूढ़े। जीभ पीली मैलसे ढँकी रहती है। **तलदेशमें पीली** या मैलापन लिये सफेद। मुँहकी छत **सुनहरे पीले या मलाईकी तरह** आवरणसे ढँकी रहती

है। मुँह और जीभका सूखापन। लार बहना। जीभपर केश रखनेकी तरह अनुभूति, इसके पीछे समूचे मुँहमें चुनचुनानेके साथ सुन्नपन रहना। बोलनेमें तकलीफ होती है। जीभपर डङ्क मारनेकी तरह दर्द। जागनेपर मुँहका स्वाद बुरा, तीता, धातुका, नमकीन, खट्टा। मुँह और जीभपर छाले।

दाँतोंका क्षय हो जाना। बच्चोंका नींदमें दाँत पीसना। दाँतोंका ढीलापन। दाँतमें दर्द, रातके समय, दबाव तथा बाहरी गर्मीसे घट जाता है। जलन, दबाव और स्पन्दन।

कण्ठ और तालुमूलपर पीला आवरण चढ़ा रहता है। कण्ठका सूखापन। कण्ठमें श्लेष्मा बनता है। कड़ा, साफ सफेद श्लेष्मा पश्चात् नासामें रहता है। पश्चात् नासा छिद्रसे गाढ़ा पीला श्लेष्मा टपकता है, रातमें रोग-वृद्धि हो जाती है, कण्ठको साफ करनेके लिये बैठे रहना पड़ता है। कण्ठमें ढेलेकी अनुभूति। बहुत खखारना। कण्ठका प्रदाह; निगलनेपर कण्ठमें दर्द। दाहिनी तरफ गलक्षत, निगलनेपर बढ़ता है। जलन, चुनचुनी, सुई गड़नेकी तरह दर्द। बायें तालुमूलमें स्पन्दन। पिछले नाकके छेदसे खरोंचकी तरह श्लेष्मा। गलक्षतमें कड़ी चीजोंकी अपेक्षा तरल पदार्थ अच्छी तरह निगल सकता है।

भूख बढ़ी हुई, राक्षसी रहती है या लगती ही नहीं। खाद्यसे, मांससे, दूध, रोटी और मक्खनसे घृणा। अलकोहल मिले पेय, बियर, कड़वे, तीक्ष्ण पदार्थ, अण्डे, भूँजी हुई मछली और ठण्डे पेयोंकी इच्छा करता है। भोजनके बाद डकारें, खाली, खट्टी डकारें, मुँहमें पानी भर आना। भोजनके बाद भरापन। कलेजेमें जलन, भार और दबाव। पाकाशयमें गर्मी। सवेरे, शामको, खाँसनेके समय और सर-दर्दके समय मिचली। पाकाशयमें दर्द; भोजनके बाद; भोजनके दो घण्टे बाद, मरोड़, पाकाशयका शूल, दिनमें खट्टे पदार्थोंके वमनके साथ कई बार आक्रमण होता है। दुग्धाम्ल (Lactic acid) का, बहुत ज्यादा स्राव; पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द। भोजनके बाद दबाव। यन्त्रणा और सुई गड़नेकी तरह दर्द। ओकाई। असीम पिपासा। पाकाशयमें जखम। खट्टी कै। जीभपर मलाईकी तरह लेप। शरीरसे खट्टी गन्ध। सर-दर्दके साथ खाँसनेपर वमन, पित्तका वमन, तीता, सर-दर्दके साथ फेन-फेन वमन, श्लेष्माका, दूध पीनेवाले बच्चोंका खट्टा वमन, स्वल्प-विराम ज्वरमें खट्टे पनीरकी तरह ढेले वमनमें निकलना; गर्भावस्थामें वमन; वमन पीला, हरा।

भोजनके बाद पाकाशयमें तनाव। पाखाना हो जानेके बाद खालीपनका भाव। भोजनके बाद पेट फूलना; जल्दी घटता नहीं। भरापन, गड़गड़ाहट और कड़ापन। तीसरे पहर और रातमें तथा भोजनके बाद दर्द, दौराके रूपमें दर्द, पाखाना होनेके पहले। यकृत-प्रदेश (Hypochondria) में दर्द। तलपेटमें जलन। पाखाना होनेके पहले मरोड़, जिससे चलनेके समय पाखाना लग जाता है। तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द। कुक्षि-प्रदेश (Hypogastrium) में दबाव। समूचे तलपेटमें यन्त्रणा। तलपेट और यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। यकृत निश्चेष्ट। गुड़गुड़ाहट। तनाव।

कड़े मलके साथ कब्ज। मलान्त्रकी निष्क्रियता; एक दिन कब्ज दूसरे दिन पतले दस्त आना। सवेरे, रातमें, शूलके साथ अतिसार; भोजनके बाद, गर्मीके दिनोंमें, वायु

छूटनेके साथ अतिसार। मलद्वारकी खाल उधड़ जाती है; **बहुत वायु** निकलता है; आप-ही-आप अनजानमें पाखाना हो जाता है, वायु निकलनेके साथ अनजानमें पाखाना हो जाता है। *यन्त्रणा-पूर्ण* खुजलाहट भरा मलद्वार, बिछावनकी गर्मीसे खुजली बढ़ जाती है। पाखाना होनेके बाद मलान्त्रमें दर्द। पाखाना होनेके समय और बादमें जलन। मलद्वारका कष्टकर संकोचन। पाखाना होनेके समय काटनेकी तरह दर्द। चलनेके समय सुई गड़नेकी तरह दर्द। कूथन। पुरुषको संगमके बाद पाखाना लग आना। वृथा मलका वेग, पाखाना खुलासा नहीं होता। पाखाना होनेके पहले मलान्त्र (Rectum) में कमजोरी मालूम होना। मल खून मिला, पनीरकी तरह टूट-टूटकर होता है; हलके रङ्गका, पित्त रहित मल। **हरा;** चाशनीकी तरह थक्के; लपसीकी तरह; खट्टी गन्ध आनेवाला मल; पतला पीलापन लिये भूरा; पानीकी तरह, पीलापन लिये हरा, पीलापन लिये भूरा। दस्तके साथ क्रिमी।

मूत्राशयका पक्षाघात पेशाब करनेके पहले मूत्राशयमें दर्द और दबाव। रातमें (पुरुषोंको) संगमके बाद पेशाब लगता है; भोजनके बाद; बराबर; बारम्बार पेशाब लगता है। मूत्रकृच्छ्र। बार-बार पेशाब लगता है; **रातके समय,** पसीना होनेके समय, अनैच्छिक रूपसे आप-ही-आप, रातमें, निद्रा-कालमें। पेशाब होना जारी होनेकी राह देखनी पड़ती है। पेशाब होना जारी होनेके पहले बहुत देरतक दबाव डालना पड़ता है; पेशाबसे सन्तोष नहीं होता। मूत्रपिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पाखाना होनेके समय मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिका रस-स्राव। मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि बढ़ी हुई। पेशाब होते रहनेके समय मूत्रनलीमें जलन। पाखाना होनेके बाद मूत्रमार्गमें जलन और खुजली। पेशाब **अण्डलाल मिला** जलन, धुमैला, काला, पीला, रातमें बहुत ज्यादा और सवेरे, बदबूदार, थोड़ा, साथ ही श्लेष्माकी तली।

सवेरे और रातमें कष्टकर लिङ्गोद्रेक होता है, लगातार, बार-बार, **अपूर्ण,** दर्द-भरा, बिना कामेच्छाके ही प्रचण्ड लिङ्गोद्रेक; लिङ्गमें **कड़ापनका अभाव।** लिङ्गेन्द्रियपर चकत्ते। मुष्क, लिङ्ग मुण्ड और मलद्वारमें खुजली। शुक्र-रज्जु और अण्डमें दर्द। शुक्र-रज्जुमें खींचन। अण्डोंमें दबाव। **सङ्गमके बाद** वीर्य स्राव, बिना स्वप्नके ही; बिना लिङ्गोत्तेजनके ही, **बार-बार,** अज्ञानमें। काम-वासना घटी हुई या बढ़ी हुई, **बिना लिङ्गोद्रेकके, ही वमन।** लिङ्गेन्द्रिय तथा मुष्ककी सूजन।

स्त्रियोंकी काम वासना बढ़ी हुई। **रजःस्रावके बाद** श्वेत-प्रदर, कटु, **बहुत ज्यादा, मलाईकी तरह,** शहदके रङ्गका, **खट्टी गन्ध भरा,** पीला और जलीय। रजः-स्राव नदारद, बहुत ज्यादा, बहुत जल्दी-जल्दी, देरसे, पीला, दर्द-भरा, **विलम्बित।** पाखाना होनेके बाद कमजोर धँसते जानेके भावके साथ गर्भाशयकी स्थान-च्युति। बन्ध्यत्व।

टेंटुआमें यन्त्रणा। स्वर-भङ्ग और आवाज बैठ जाना। दमाकी तरह श्वास निकलता है, **कष्टकर श्वास,** लघु और लम्बी साँस।

तीसरे पहर खाँसी, शामको बिछावनमें, रातमें, शीतावस्थामें, लगातार नाककी सर्दीके साथ, कुछ पीनेके बाद। शामको सूखी खाँसी, सवेरे बलगमके साथ खाँसी। खुसखुसी

खाँसी, लघु, हिला देनेवाली खाँसी, साथ ही वक्ष या स्वर-यन्त्रमें प्रदाह, सवेरे ढीली खाँसी ; वक्ष और स्वर-यन्त्रमें चुनचुनी ; प्रचण्ड खाँसी ; बैठनेपर खाँसी बढ़ जाती है। बलगम सवेरे निकलता है। खून मिला, हरा श्लेष्मा, **बदबूदार**, पीबकी तरह, गाढ़ा, लसदार, पीला ; कोई स्वाद नहीं रहता, सड़ा हुआ, नमकीन।

वक्षमें घबड़ाहट ; हृत्पिण्डसे एक बुलबुला उठता है और धमनियोंमें होकर चला जाता है। वक्षका संकोचन। भोजनके बाद वक्षमें खालीपनका भाव। वक्षपर फुन्सियाँ। वक्षके ऊपरी भागमें एकाएक भरापन मालूम होना। वक्षका दबाव। भोजनके बाद वक्षमें दर्द, बाहरी साँस लेनेपर, खाँसनेके समय। हृत्पिण्डमें दर्द। वक्षमें यन्त्रणा, दबाव। वक्षमें खूब गहराईपर जलन, दाहिने पार्श्वमें बढ़ा रहता है, शामको बिछावनपर। काटनेकी तरह दर्द, दबाव, खाँसनेपर वक्षमें खाल उधड़नेका भाव। वक्षमें यन्त्रणा। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, वक्ष-पार्श्वमें, बायीं तरफ ज्यादे रहता है। **कलेजेमें धड़कन, घबड़ाहट** भोजनके बाद ; **शोरगुलसे**, बायीं करवट लेटनेपर, **अन्धड़-बिजलीके समय** रोग-वृद्धि। जवानोंका जल्द ही बढ़ जानेवाले मारात्मक यक्ष्मा। हृत्पिण्डका काँपना, रजःस्रावके बाद, सीढ़ी चढ़नेपर।

पीठमें भारी खींचन। पीठके चर्ममें खुजली। रातमें, रजःस्राव कालमें ; हिलने-डोलनेपर, अत्यधिक **रति-क्रियासे**, बैठे रहनेपर पीठमें दर्द। पृष्ठदेश, बायीं हसुली, दोनों हसुलियोंके बीचके स्थानमें दर्द। रजःस्राव-कालमें त्रिकास्थिमें दर्द। पीठमें दर्द, रजःस्राव-कालमें। कटि-प्रदेशमें पीठमें वेदना, रजःस्राव-कालमें। पीठ और मेरुदण्ड यन्त्रणा भरे, मानो कुचल गये हों। **मेरुदण्डका उपदाह।** कटि-प्रदेश और **मेरुदण्डमें** जलन। पीठमें खींचन। दाहिनी त्रिक-कुक्षि सन्धिके स्थानपर तेज दर्द। कटि-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

पीठमें पसीना। गर्दनके दोनों तरफ कड़ापन। गर्दनकी गांठोंका फूलना। शामके समय पीठमें कमजोरी, कटि-प्रदेशमें, वीर्य-स्रावके बाद।

हाथ, पैर और पैरोंके पंजेके ठण्डे। ऋतु-स्राव-कालमें पैरके पंजे बरफकी तरह ठण्डे, दिनमें, रातमें बिछावनमें जलन। लिखनेके समय अग्र-बाहुकी प्रसारिणी-पेशीमें सङ्कोचन। यन्त्रणा-पूर्ण डङ्क मारनेकी तरह दर्द-भरे गट्ठे। पैरकी पोटली और पंजोंमें मरोड़। लिखनेके समय हाथमें मरोड़। जोड़पर टूटन। प्रत्यङ्गोंपर उद्भेद, चकत्ते ; निम्न-प्रत्यङ्गोंपर फुन्सियाँ और चकत्ते ; चूतरोंपर फुन्सियाँ तथा घुट्टियोंपर अकौता। ऊपरी प्रत्यङ्ग और पैरोंमें सुरसुरी। हाथ-पैरोंमें ताप ; प्रत्यङ्ग, निम्न-प्रत्यङ्ग, पैरके पंजोंमें और पैरोंमें भार। प्रत्यङ्गोंमें खुजली, ऊपरी प्रत्यङ्गमें, निम्न प्रत्यंगोंमें, **गुल्फोंमें**। प्रत्यंगोंका सुन्नपन, ऊर्द्ध, दाहिना हाथ और बाहुमें, अङ्गुलियोंमें, दाहिने हाथकी अङ्गुलियोंमें, पैरोंमें सुन्नपन। प्रत्यंगोंमें दर्द। गठिया तथा वात-पूर्ण सन्धियाँ, कलाई। दाहिने कन्धेमें वातका दर्द। पैरोंमें, पैरकी पिण्डलीमें, गुल्फमें, घुट्टियोंमें, पहले अंगूठेमें दर्द। प्रत्यंगोंमें, निम्न-प्रत्यंगोंमें, घुटनेमें, पैरमें कुचलनेकी तरह दर्द। हाथ तथा तलवोंमें जलन। बायाँ हाथ तथा तर्जनी अङ्गुलीमें मरोड़का

दर्द। अग्रबाहु, कलाईमें रजः-स्रावके समय खींचन, हाथ, सन्धियों, बायाँ कन्धा, कूल्हा तथा घुटनेमें खींचन। कन्धेमें दबाव। कन्धा तथा अङ्गुलियोंमें, कूल्हेमें, **जङ्घामें**, घुटनेमें, तलवोंमें, एँड़ीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। प्रत्यङ्गोंमें, सन्धियोंमें, ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें, कन्धेमें, ऊर्द्ध-बाहुमें, कोहनोमें और अङ्गुलियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द; निम्न-प्रत्यङ्ग, कूल्हा, घुटना, पैर, प्रपाद तथा अंगूठोंमें फाड़नेकी तरह दर्द हाथ और पैरोंमें पसीना, बेचैन पैर। घुटनेके खोलमें कण्डराओंका छोटा पड़ जाना और रजः-स्रावके बाद भी। सन्धियोंका कड़ापन; अङ्गुलियोंकी सूजन, निम्न-प्रत्यङ्गोंकी और प्रपादकी। पैरकी पोटली, कूल्हा, और नितम्बके स्थानकी नसोंमें खिचाव। वीर्यपातके बाद हाथ और घुटनोंका काँपना। पेशियोंकी ऐंठन। ऊपरी प्रत्यङ्ग, हाथ, दाहिनी कलाई और बायें गुल्फकी रजःस्रावके बाद कमजोरी; निम्न-प्रत्यङ्गोंकी, जंघाओंकी और **गुल्फों**की। बच्चोंके गुल्फकी कमजोरी (नेट्रम कार्ब); चलनेके समय एकाएक पैरका फिसल जाना।

बहुत गहरी नींद। रोगी बहुत बड़ा स्वप्न देखनेवाला हो जाता है। स्वप्न चिन्ता-भरे, **काम सम्बन्धीय**, मृत पुरुषोंके, कष्टदायक, गत घटनाओंके, आग लगनेके, **डरावने**, गला दबनेके, **मनोहर**, विरक्त करनेवाले और विस्तृत। कुर्सीपर बैठा बैठा सो जाता है। निद्रा बेचैन रहती है। दिनभर और भोजनके बाद औंघाई आया करती है; बहुतकर **दोपहरके पहले। आधी रातके पहले** नींद नहीं आती, आधी रातके बाद, विचारोंकी भीड़ एकत्र हो जानेके कारण। औंघाई आती है; पर सो नहीं सकता। अस्फूर्तिदायक निद्रा। १२ से लेकर ३ बजेतक जागता रहता है, ५ बजे सवेरे ही जाग पड़ता है, ताजगी नहीं आती। देरसे उठता है।

ठण्डी हवामें रातमें बिछावनमें सर्दी मालूम पड़ना ऋतु कालके समय शामको सर्दी मालूम पड़ना, भोजनके बाद। हिला देनेवाला जाड़ा। एक पार्श्वकी ठण्डक। भीतरी ठण्डक। बोखार, प्रत्येक दोपहरके बाद सर दर्द और तापकी झलक। सो नहीं सकता, बहुत गर्म मालूम होता है। नींदके समय बोखारके साथ पसीना। खट्टे पदार्थोंके ढेले के होनेके साथ स्वल्प-विराम ज्वर। **दिनके समय**, सवेरे, तीसरे पहर, रात्रिके समय पसीना। घबड़ा देनेवाला पसीना। ठण्डा पसीना। खाँसनेपर और **थोड़े भी परिश्रमसे** पसीना। सवेरे और रातके समय, बहुत ज्यादा स्नायविक दुर्बलताके साथ गहरा पसीना होता है। खट्टी गन्ध आनेवाला पसीना। बच्चोंके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है।

चर्ममें काटने, जलन और ठण्डक। पीले दाग, लाल दाग, सुहरे दाग तथा कामलारोग ग्रस्त चर्म; सूखा चर्म, सूखे, जलते हुए उद्भेद छाले, फोड़े, जलन, भूसी निकलना, तर, सूखे, दादकी तरह, दर्द भरे। सड़नेवाले, फुन्सियाँ, सुनहरे पीले खरौंट, पीब होनेवाले, जुलपित्ती, चकत्ते। शहदके रङ्गका स्राव होनेवाला अकौता। विसर्प। खाल उघड़ना। सुरसुरी। चित्तियाँ। चर्ममें चबानेकी तरह दर्द। चर्मकी **अक्रियता।** खुजली, कुटकुटी, जलन, सुरसुरी, रेङ्गना, डङ्क मारना, खुजलानेपर घटता है तथा बिछावनकी गर्मीसे बढ़ता है। **स्पर्श-असहिष्णु चर्म**। चर्मका यन्त्रणा-पूर्ण भाव। चर्ममें लसलसाहट।

चर्म तथा आक्रान्त अङ्गकी सूजन। शोथ-पूर्ण चर्म। जख्मकी तरह दर्द। जखम, काटनेकी तरह दर्द, जलन, सुरसुरी, गहरे ; बदबूदार और पीला मवाद आता है ; फटे घाव, प्रादाहित, लाल चकत्ते ; स्पर्श-असहिष्णु डङ्क मारनेकी तरह मालूम होना, पीब होना, फूले, अस्वस्थ। अस्वस्थ चर्म। मसे।

नेट्रम सल्फरिकम
(Natrum Sulphuricum)

यह हमारी बहुत निर्देशित धातुगत दवाओंमेंसे एक है। इसके लक्षण सवेरे, शामको और रातके समय और खासकर आधी रातके पहले उत्पन्न होते हैं। कुछ लक्षण तो **सिवा पसीनेके,** दिनके समय और आधी रातके बाद, जलपानके बाद अच्छे रहते हैं। अचिकित्सित सुजाकके बाद जो उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, उनकी यह बहुत लाभदायक दवा है। तर मौसममें रोगीकी धातुगत दशा और लक्षण बहुत बदतर रहते हैं। जल-पथके पास रहनेवाले तथा मैलेरियाका प्रभाव बहुत दिनोंतक भोगनेवाले रोगियोंके लिये यह बहुत ही लाभदायक है। किनाइनके अपव्यवहार होनेपर भी यह प्रतिविषके रूपमें लाभ करती है। स्नायविक और पित्तज प्रकृतिके रोगियोंके लिये यह खासकर उपयोगी है। रातकी हवा उसे बिलकुल ही सहन नहीं होती। उसे बराबर सर्दी लगी रहती है और स्राव अमूमन हरा होता है। यह शोथज दशाको आरोग्य करता है। स्पर्श और दबाव सहन नहीं होता ; मानसिक और शारीरिक अत्यधिक असहिष्णु रहता है। दर्दसे बहुत ही असहिष्णु रहता है। दर्द बहुत तरहका होता है ; धीमा दर्द, तेज दर्द, सभी हिलने डोलनेपर अच्छे रहते हैं। समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द। खुली हवाकी सुदृढ़ इच्छा और खुली हवामें टहलनेपर अच्छा रहता है; गर्म कमरेमें असहिष्णु, यद्यपि उसे कभी-कभी सर्दी सहन नहीं होती और गर्म वस्त्रकी जरूरत पड़ती है। बहुतसे स्थानोंपर भरापन और तनावका भाव पाया जाता है ; माथेमें, कानमें, तलपेटमें और साधारणतः शिराओंमें। बसन्त और गर्म मौसममें उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। सार्वाङ्गिक शरीरिक बेचैनी और चिन्ता। भीतरी स्पन्दन और तीव्र हृत्पिण्डके साथ प्रत्यक्ष दुर्बलता और कम्पन। पेशियोंका ऐंठना। माथे और मेरुदण्डमें चोटके कारण उत्पन्न उपसर्ग। सभी लक्षण विश्राम-कालमें बदतर हो जाते हैं। समूचे शरीरमें वातज उपसर्ग। उसे बाध्य होकर पीठके बल लेट जाना पड़ता है। माथेमें आघातके कारण अकड़न। मसे और फूलगोबीकी तरह मसेके इतिहासके साथ प्रमेह विषकी दशा। सवेरे घबड़ाहट जो जलपानके बाद दूर हो जाती है ; शामको बिछावनमें घबड़ाहट ; रातमें आधी रातके पहले ; ज्वर कालमें ; भविष्यके सम्बन्धमें ; आत्मघातकी भावनाओंकी चिन्ता और जीवनसे घृणा, आत्मघात रोकनेके लिये उसे अपनी आत्मसंयमकी समस्त शक्ति लगा देनी पड़ती है। गर्भावस्थामें एक स्त्रीने कई बार अपनेको फाँसी लगा लेनेकी चेष्टाकी ; पर इसका प्रयोग करनेके बाद वह प्रसन्न रहने लगी तथा फिर आत्मघातका भाव न लौटा।

पाखाना हो जानेके वाद प्रसन्न। सङ्गीतसे उसपर उदासी छा जाती है। सवेरेके वक्त उदासी, जो जलपानके वाद चली जाती है। सवेरे बहुत ही चिड़चिड़ा रहता है। भयङ्कर क्रोध, जिसके बाद कामला-रोग हो जाता है। सङ्ग-साथसे अनिच्छा। न किसीसे बोलना चाहता है न बात सुनना चाहता है। मनकी सुस्ती और उत्तेजनशीलता। मानसिक परिश्रमसे मानसिक उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। माथेमें चोटके कारण मानसिक तकलीफें उत्पन्न हो जाती हैं। एक युवक बहुत उदास हो गया, उसे सरमें चक्करका दौरा होने लगा तथा एक गेंदकी चोट सरके एक पार्श्वमें लग जानेके कारण वह अपने कारबारपर भी ध्यान न देने लगा। यह दवा देनेके बाद उसके सभी उपसर्ग दूर हो गये। भीड़से भय ; बुराईसे ; मनुष्योंसे। भुलक्कड़, सहज ही डर जाता है ; गुल्म-वायु ग्रस्त ; उदासीन ; जड़ ; उन्मत्त। वह अति असहिष्णु और सन्देह-पूर्ण रहती है। भय या शोरगुलसे और नींदमें चौंक उठती है। सरमें चक्कर आया करता है, पूर्णता और तापके साथ रक्त सञ्चयी सर-दर्द। स्पन्दनके साथ सरमें बाहरकी ओर दबाव। पित्तके वमनके साथ समय बाँधकर होनेवाला सर दर्द। दर्दके विषयमें सोचनेपर वह बदतर हो जाता है तथा दबानेपर, खुली हवामें और लेटे रहनेपर अच्छा रहता है। चलनेके समय कनपटियोंमें स्पन्दन। मस्तक-शिखरमें फाड़नेकी तरह दर्द। मस्तक-शिखरमें ताप। सवेरे सोकर उठनेपर सर-दर्द। मानसिक परिश्रमसे सर-दर्द हो जाता है, ऐसा मालूम होता है, कि जिस करवट लेटा है, उसी ओर मस्तिष्क लुढ़क जाता है। स्वल्प विराम ज्वरके साथ सर-दर्द प्रचण्ड पश्चात् मस्तकका सरका दर्द, साथ ही ग्रीवा-पश्चाद् भागमें दर्द। माथेमें आघातके कारण सर-दर्द। मस्तक त्वचामें खुजली। सुरसुरी। मस्तक-त्वचाका बहुत तर रहनेवाला अकौता।

रोशनीकी ओर देखनेपर आलोकातङ्क और मस्तकके उपसर्ग। आँखोंसे आँसू बहना और धुँधली दृष्टि. कामला-रोग ग्रस्त आँखें ; बहुतसे छालोंके साथ प्रादाहित आँखें। सवेरे और शामको आँखोंमें जलन। आँखोंसे हरापन लिये स्राव। सवेरे पलकें आपसमें जुड़ जाती हैं। दानेदार पलकें। चक्षु-श्वेत पटलका गण्डमालाके कारण प्रदाह। लाली, सूजन और पलकोंके किनारोंपर जलन। पलकोंमें भार, आँखोंका व्यवहार करते समय आँखोंमें दबाव। सवेरे आँखोंमें खुजली।

शामको कानोंमें चिड़ियोंके चहचहानेकी आवाज ; शीतावस्थामें और ज्वर-कालमें। कानोंमें फड़फड़ाहटकी आवाज। कानोंमें घण्टी बजनेका शब्द। कानोंमें दबावका दर्द। कानका इस ढंगका दर्द, मानो कोई चीज उसमें जबर्दस्ती घुसायी जा रही है। कानोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, ठण्डी हवासे गर्म कमरेमें जानेपर बदतर हो जाता है ; तर मौसममें बदतर। कानका दर्द। दाहिनी ओरके उपसर्ग बदतर रहते हैं। शामको दाहिने कानमें ताप। दाहिने कानकी सर्दी। दाहिने कानकी अनुभव शक्ति बन्द। कानसे पीब-मिला स्राव।

नाकसे पीलापन लिये हरा सर्दीका स्राव। रजःस्राव-कालमें और पहले नाकसे रक्त जाना ; दोपहरमें और शामको। नाकमें सूखापन और जलन। रातमें नाक श्लेष्मासे रुकी रहती है। पश्चात् नासा-रन्ध्रसे श्लेष्मा निकलता है, वह नमकीन रहता है। ढीली सर्दी

और इन्फ्लुएञ्जाके साथ छींक आना। बहुव्यापक इन्फ्लुएञ्जा। नाकमें ऊपरकी ओरसे सूखे श्लेष्माके थक्के झोंकसे निकलते हैं।

अवीताके साथ चेहरेकी खुजली। रोगियल चेहरा और कामला-ग्रस्त चर्म। चेहरेपर चकत्ते और फुन्सियाँ। निम्न ओंठ और मुँहके चारों तरफ चकत्ते। हनुपर फुन्सियाँ, छूनेपर जलन होती है।

दाँत ढीले पड़ जाते हैं तथा प्रमेह-विष-दूषित धातुवालोंके गिर जाते हैं। दाँतोंसे मसूढ़े अलग हो जाते हैं। गर्म चीजोंसे बदतर हो जानेवाला दाँतका दर्द, ठण्डे पेय और ठण्डी हवासे अच्छा रहता है। मसूढ़े लाल, जख्म हो जाता है और जलन होती है। मसूढ़ोंपर छाले। मुँह हमेशा लसदार रहता है, मुँह और कण्ठमें बहुत श्लेष्मा बनता है। स्वाद तीता रहता है और जीभपर मैला हरापन लिये भूरा आवरण चढ़ा रहता है। जीभ और मुँहकी छतपर फफोले। रजः-स्राव-कालमें मुँहकी छतमें जलन। मुँहमें सुन्नपन, लार बहना।

बहुत ज्यादा, लसदार सफेद श्लेष्माके स्रावके साथ कण्ठका पुराना प्रदाह। कण्ठमें सूखापनकी अनुभूति। खाद्य-पदार्थ निगलनेपर कण्ठमें दर्द। चलनेके समय कण्ठमें दम घुटनेका भाव। गठियामें इसकी अकसर जरूरत पड़ती है। शामको बहुत ज्यादा प्यास, हर तरहके ठण्डे पेयोंकी, शीतावस्थामें और ज्वर कालमें। रोटी और मांससे अनिच्छा। आँटेके बने खाद्य खानेपर मिचली ; शामको रोटी खानेपर हिचकी। खट्टे पानीकी डकारें, तीते तरलकी। जलपानके पहले मिचली। लगातार मिचली बना रहना। खट्टे तथा तीते तरलका वमन। शूलके साथ हरे पित्तका वमन। पाकाशय तना और भारी मालूम होता है। जलपानके बाद पाकाशयमें स्पन्दन। अम्लके साथ पाकाशयिक दुर्बलताके जटिल रोगी। केवल सरलतर खाद्य ही हजम होता है बहुत ही धीमा पाचन। इस दवाने यकृतके बहुतसे उपसर्ग आरोग्य किये हैं, रक्त सञ्चय, वर्द्धित, यन्त्रणा-पूर्ण यकृत। दाहिनी करवट लेटनेपर यकृतमें दर्द। बायीं करवट लेटनेपर दाहिने कुक्षि-देशमें खींचन (**मैग्नेशिया म्यूर कार्डुयस मेरियानस, टीलियम**), चलनेके समय यकृतमें यन्त्रणा और खुजली। गहरी साँस लेनेपर यकृतमें तेज दर्द। मानसिक परिश्रम और क्रोधसे यकृत गड़बड़ा जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि यकृतसे बहुत ज्यादा पित्त स्राव होता है। परिवर्त्तित लसदार पित्त, जो तुरन्त पथरीमें बदल जाता है। इससे यकृतमें वह स्वस्थ पित्त उत्पन्न होता है, जो पथरीको गला देता है, जब काफी लम्बे समयका अन्तर देकर होमियोपैथिक मात्रामें इसका प्रयोग होता है। इसने दर्द गुर्दा या पित्त पथरी शूलके बहुत से रोगी आरोग्य किये हैं। इसने बहुतोंको पित्त-पथरी हटा दी है। कुक्षि-प्रदेशमें वस्त्र सहन नहीं होना। निम्नलिखित तीन रोगी विवरणोंसे ही पता लग जायगा।

रोगी विवरण १।– स्त्री, विवाहित, बड़े बड़े लड़के। उम्र ३७ वर्ष। कई वर्षोंतक सर-दर्द होता था, जिसके बाद पित्तका वमन होता था। चेहरा बैंगनी। तापसे दर्द घटता था। दर्द दाहिने आँखमें आरम्भ होता था, ललाटतक फैल जाता था तथा माथेके पिछले भागमें

खींचनका भाव रहता था। त्रिक प्रदेशका दर्द, जांघतक फैल जाता था, दाहिनी ओर बढ़ा रहता था। स्नायविक, सहजमें ही चौंक उठती थी। आशङ्का पूर्ण असीम चिड़चिड़ी, तीन महीनेसे पित्त-पथरीका शूल भी होता था। पैर ठण्डे। १६ वरसोंसे रजः स्रावके समय दर्द होता था। मानसिक रजःस्राव गाढ़ा, थक्का-थक्का, काला, कुल एक दिन रहता था। मल हलके रंगका, जब बीमारी रहती थी; पर काला जब स्वस्थ रहती थी। अपनेको खूब संयत रखना पड़ता था, जिसमें आत्महत्या न कर ले। समय-समयपर नाड़ी धीमी हो जाती थी। सब समय ही क्लान्त रहती थी। पित्त पथरीके लिये नश्तर देनेसे सर्जन हिचकता था। जीभ फटी-फटी। नेट्रम सल्फरिकमने आरोग्य कर दिया; पित्त-पथरी गायब हो गयी।

नं० २ रोगी।—पुरुष, व्यवसायमें खूब संलग्न, वजन १८० पौण्ड। उमर ४० वर्ष। पित्त-पथरी प्रदेशमें दर्द। पित्त-पथरी शूल, यह अपचसे हुआ। उरु-प्रदेशमें धीमा धीमा दर्द। बाध्य होकर उसे कमरेमें टहलना पड़ता था, किसी भी दशामें आराम नहीं मिलता। केवल एक बार हलके रंगका पाखाना होता था। वृक्क-प्रदेशमें दर्द, इसके अलावा श्रोणि-देश और पैरोंके भीतरसे दर्द होता था; पेशाब धुंधैला होता था; पेशाब हो जानेके बाद भी कई बूंद पेशाब चू पड़ता था। नीचेकी पसलीमें पीछे दाहिनी तरफ, धीमा भारी दर्द, लगातार दर्द; दाहिनी ओर स्तन-वृन्ततक दर्द फैल जाता था; वक्षमें छुरा मारनेकी तरह दर्द। भोजनके बाद द्वादशांगुल अन्त्रका दर्द बढ़ जाता था। नेट्रम सल्फरिकमने आरोग्य कर दिया। रोगी इस समय पूर्ण स्वस्थ है।

नं० ३ रोगी।—स्त्री। उम्र ६४ वर्ष। अतिसार; मल पानीकी तरह, कभी-कभी खड़ियाकी तरह; यकृत बढ़ा हुआ; पित्ताशयमें कसकर पकड़ रखनेका भाव; पित्त-पथरी शूल। सर्जनके द्वारा नश्तरके टेबलपरसे नश्तरके अयोग्य कहकर हटा दी गयी थी। पाखाना हो जानेके बाद अवसन्नताके दौरे; शीतके दौरे; सरमें चक्कर, झुकनेपर, लेटने या चलनेपर; कलेजेके जोर-जोरसे धमकनेके दौरे; मानसिक अवसाद; प्यास न थी; तापमान स्वाभाविकसे भी कम; तलपेटका हिलना सहन न होता था; तलपेटमें आध्मान और गड़गड़ाहट; घुटनोंतक पैर ठण्डे; हाथ ठण्डे; बहुत डकारें; भोजनके बाद बढ़ जाती थी, ऋतु-परिवर्त्तन सहन नहीं होता था, तूफानके पहले अनिद्रा और स्नायविक हो जाती थी; यकृतमें यन्त्रणा और खींचनका भाव; आँतें शिथिल; पाचन भी धीमा; बाहु और पैरोंमें भार; पीठतक सर्दीलापन; आरामसे दाहिनी करवट सो नहीं सकती थी; पेशाब बहुत ज्यादा; सुदृढ़; देरसे सोती थी। नेट्रम-सल्फने उसकी अवस्था भरपूर परिवर्त्तन ला दिया और अब पित्त-पथरीका कोई भी चिह्न नहीं है।

वायुके इधर-उधर होनेपर तलपेटकी तकलीफ आराम हो जाती है। डकार आनेपर या हवा खुलनेपर खालीपनमें आराम पहुँचता है। रुके हुए वायुके कारण मरोड़ तथा बहुत तरहके दर्द। वायुके कारण ऊर्ध्व-गामी अन्त्रमें दर्द और तनाव। अधान्त्र-प्रदेशमें दर्द। ऐपेण्डिसाइटिस (अधान्त्रका प्रदाह) की पहली अवस्था जैसे बहुत-से रोगी इसने और आरोग्य किये हैं। सम्पूर्ण तलपेटमें दर्द और स्पर्श-कातरता। धीमा भारकी तरह दर्द,

आरोग्य किये हैं। सम्पूर्ण तलपेटमें दर्द और स्पर्श-कातरता। धीमा भारकी तरह दर्द, तलपेटसे पीठतक। तलपेटमें जलन, तलपेटमें ऐसा भाव, मानो पतले दस्त आयँगे डकार आने और हवा खुलनेपर घटता है। तलपेटमें ऐसा गड़बड़ी, जिससे रोगीको दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है; पर वायुके सिवा और कुछ नहीं निकलता। रजःस्राव कालमें तलपेटमें दर्द। जलपानके पहले सवेरे मरोड़ और ४ से ८ बजेतक शामको तलपेटमें दर्द। आँतोंमें हमेंशा तकलीफ और पाखाना लगना। पूर्णता, गुड़गुड़ाहट, हलचल, गड़गड़ाना, पतले दस्तके साथ या बिना दस्तके ही। ऊर्ध्वगामी बृहदन्त्रमें दाहिनी करवट लेटनेपर दर्द। पित्तके वमनके साथ पित्तशूल। इसने उपदंशके बहुतसे रोगी आरोग्य कर दिये हैं। इसने बढ़ी हुई औदरिक ग्रन्थियाँ आरोग्यकी हैं; दस्त बहुत ज्यादा, वायु निकलनेके साथ सवेरेका अतिसार, सोकर उठनेके बाद तुरन्त ही या पैरके बल खड़े होनेके साथ ही। तर मौसमका अतिसार। झोंकसे दस्त आते हैं; दस्त बहुत ज्यादा हरापन लिये, पतला, बहुत बदबूदार; लसलसा, खून-मिला; पाखाना होनेके पहले तलपेटमें मरोड़। पाखाना होनेके समय मलद्वारमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द। कभी-कभी पाखाना होनेके बाद प्रसन्न होता है। अकसर बिना दर्दके ही दस्त होता है। मैदेकी चीजें खानेके बाद अतिसार, उद्भिदसे; फलसे; कचौड़ी वगैरहसे, ठण्डे पेयोंसे; मलाईकी बरफसे। कब्जके साथ पर्यायक्रमसे पतले दस्त आते हैं। दिन या रातके किसी भी समय पतले दस्त; पर खासकर सवेरे और शामको। आप-से आप और अनपचका दस्त होनेवाले पुराने अतिसारके बहुतसे रोगी इसने आरोग्य किये हैं। मलद्वारमें खुजली और कुछ रेंगनेका भाव। मलद्वारमें फूलगोभीकी तरह मसे। इसने एक वकीलका सरलान्त्रका जखम आरोग्य किया है, जिससे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता था और जो बहुत दिनोंसे आत्महत्याकी प्रवृत्तिसे झगड़ा कर रहा था। इसने अकसर खूनी बवासीर आरोग्य किया है।

आरक्त ज्वर और मैलेरियाके प्रभावके बाद होनेवाला मूत्रपिण्डका कोरन्डका प्रदाह (Parenchymatic inflammation) इसने आरोग्य किया है। मूत्रमें चीनी और मधुमेह इसने आरोग्य किया है। बहुत बार ईंटके चूरकी तरह पेशाबका तलछट इसने आरोग्य किया है। साथ ही जहाँ बहुत ज्यादा बालूकी तरह तलछट पड़ता था। बहुत ज्यादा चाशनीकी तरह श्लेष्माका तलछटके साथ फास्फेटका बहुत ज्यादा तलछट इकट्ठा होनेको आरोग्य किया है, रातमें अकसर पेशाब करनेके लिये उठना पड़ता है। पेशाब करनेके समय और बादमें जलन। पेशाब पित्तसे लदा रहता है। जहाँ ये लक्षण अचिकित्सित सूजाकके बाद उत्पन्न होते हैं।

पुरुषोंका बहुत बड़ी कामेच्छा और कष्टप्रद लिंगोद्रेक होता है। सूजाकमें जब हरापन लिये पीले रङ्गका मवाद आता है और पेशाब करनेके समय और बाद जलन होती है। बहुत बार वर्द्धित मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि इसने आरोग्य की है। फूलगोभीकी तरह मसा, कोमल मांसल हरा मवाद। मुष्क तथा लिंगमुण्डका शोथ। लिंग और मुष्कमें खुजली, साथ ही खुजलानेपर जलन।

बहुत ज्यादा, कटु और थक्का थक्का रजःस्राव होता है। श्वेत-प्रदर कटु, हरापन लिये, पीव-भरा, खाल उधेड़नेवाला होता है। सूतिकास्तम्भ (Milk leg) रोग इसने आरोग्य किया है।

बहुत ज्यादा, गाढ़ा, लसदार श्लेष्मा, स्वर यन्त्र और टेंटुआमें बनता है। परिश्रम करने और चलनेके समय श्वास-कष्ट हो जाता है, बायें वक्षमें तेज दर्द होने लगता है। गहरी साँस लेनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द। तर मौसममें श्वास-कष्ट। प्रमेह-विष-दूषित माता-पिताके बच्चोंके तर दमाकी यह एक बहुत लाभदायक दवा है। गर्म ऋतुके हरेक दौरेमें बहुत ज्यादा लसदार श्लेष्माके साथ तर दमा। श्वासोपनलियोंकी बहुत पुरानी सर्दी।

स्वर-यन्त्रमें उपदाहकी वजहसे आवेशिक खाँसीके बारम्बार दौरे, जिनका अन्त बहुत ज्यादा, सफेद, लसदार बलगम निकलनेपर होता है। बलगम खून-मिला, हरापन लिये पीला, पीव-मिला, सफेद, लसदार। **शामकी तर हवासे वक्षमें दबाव** तथा सवेरे सोकर उठनेपर। श्वास लेनेपर वक्षमें खालीपन। खाँसनेपर वक्षमें यन्त्रणा, हाथसे वक्ष पकड़ रखनेपर अच्छा रहता है। वायु-नली-भुज-प्रदाह (Bronchitis) और फुसफुस-प्रदाह (Pneumonia) प्रमेह विष-दूषित रोगियोंका आरोग्य करना कभी-कभी तबतक कठिन रहता है, जबतक यह दवा नहीं दी जाती। वृद्ध पुरुषोंका श्लेष्मा पीव-मिला बलगम। प्रमेह-विष-दूषित रोगियोंको प्रत्येक वसन्तमें वक्षमें उद्भेद। बगलकी ग्रन्थिकी सूजन और पीव।

मस्तिष्क-मेरुमज्जाका प्रदाह, जिसमें माथेके पिछले भागमें और गर्दनमें स्पष्ट दर्द रहता है, "कुत्तेकी जंभाईकी तरह" और माथा पीछेकी ओर खिंचा रहता है। शामको, बैठे रहनेपर दोनों हँसुलियोंके बीचमें भोंकनेकी तरह दर्द। मेरुदण्डकी स्पर्श-कातरता। त्रिकास्थि तथा पीठके निचले भागमें यन्त्रणा-पूर्ण दर्द। रातमें पीठके निचले भागमें दर्द, दाहिनी ओर लेटनेके लिये रोगिनीको बाध्य करता है, यह सवेरे सोकर उठनेपर चला जाता है। पेशाब रोकनेपर पीठके निचले भागमें दर्द। कपड़ा उतारनेपर पीठमें खुजली। त्रिक-प्रदेशमें दर्द, दोनोंसे किसी भी करवट लेट नहीं सकता।

प्रत्यङ्गोंमें कम्पन, ऐंठन और कमजोरी, निद्रा-कालमें हाथ-पैरोंमें ऐंठन। विश्रामके समय प्रत्यंगोंमें दर्द। तर मौसममें प्रत्यङ्गोंमें वातका दर्द। सन्धियोंमें कड़कड़ाहट। बाहु और हाथोंपर मसे। शीतावस्था और ज्वर भोग-कालमें प्रत्यङ्गोंमें दर्द, हिलने-डोलने और टहलनेपर अच्छा रहता है। ऊर्ध्व प्रत्यंगसे निम्न ज्यादा बदतर रहता है।

हाथोंमें कमजोरी ; किसी चीजको भी पकड़नेपर संकर्षणी-पेशियोंमें दर्द होने लगता है। सवेरे सोकर उठनेपर और लिखनेके समय हाथोंका काँपना। इस दवाका एक विचित्र लक्षण है, नखोंके चारों तरफ पीव हो जाना। तलहत्थीकी खाल उधड़ जाती है, यन्त्रणा होती है और उनसे पानीकी तरह तरल बहता है। इसने तलहत्थीकी विचर्चिका (चम्बल या अपरससे बदतर होना) आरोग्य किया है। अंगुलियाँ फूलीं और कड़ी। अङ्गुलवेढ़ा—खुली हवामें दर्द ज्यादा सहन होता है।

जखम होना, नाखूनके नीचे तथा अङ्गुलियोंकी नोकोंपर दर्द ।

हिलने-डोलनेपर दाहिनी उरु-सन्धिमें दर्द । बायें कूल्हेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; कूल्हेका दर्द फैलकर घुटनेतक चला जाता है । बायें पैरोंमें सूजन । गृध्रसी वात हिलने-डोलनेपर अच्छा रहता है । शीतावस्थामें और ज्वरावस्थामें निम्न-प्रत्यंगोंमें धीमी यन्त्रणा, यह टहलनेपर अच्छा रहता है । रातमें बिछावनपर प्रत्यङ्गोंमें बेचैनी । जंघाके बाहरी तरफ जखम । घुटनोंका कड़ापन । निम्न-प्रत्यङ्गोंमें कमजोरी । घुटनोंतक टांग तथा पैरमें जलन । रातमें पैरमें सूखा ताप । पोरका शोथ । तलवा एँड़ीमें तेज दर्द ।

दोपहरके पहले पढ़नेके समय औंघाई । भयावने स्वप्न । ६ से ६ बजे राततक ज्वरके साथ शीतका दौरा होता है, इसके बाद १ बजे राततक शुष्क ताप रहता है, पसीना नहीं होता । बरफकी तरह ठण्डकके साथ शीत और रोयें खड़े हो जाना, यह ४ से ८ बजे राततक ऋतु स्राव-कालमें होता है । हिला देनेवाला जाड़ा । रातकी हवासे शामको ज्वरके साथ जाड़ा । आधी रातके बाद या सवेरेकी तरफ पसीना । पित्त वमनके साथ ज्वर । सविराम और स्वल्प-विराम ज्वर । पुराने स्वल्प-विराम ज्वरमें इस दवापर बहुत कुछ ध्यान नहीं दिया जाता ।

पानीकी तरह स्रावके साथ अकौता । पानी-भरे फफोले । चकत्ते फोड़ देनेपर पीली पपड़ी । कामला रोग । बच्चोंके मलद्वार प्रभृतिकी खाल उधड़ना । समूचे शरीरपर मसेकी तरह लाल दाने । सरपर, कानके ऊपर लाल, गांठ गांठ उद्भेद ; ललाटपर तथा गर्दनके पिछले भागमें बायीं तरफ ; वक्षके मध्य भागमें । कपड़ा उतारनेपर खुजली ।

नाइट्रिक एसिड

(Nitric Acid)

बहुत ज्यादा सार्वाङ्गिक दुर्बलता ; कमजोर प्रतिक्रिया ; अत्यन्त स्पर्शाधिक्य और स्नायविक कम्पन, इस दवाके प्रत्यक्ष स्वरूप हैं । बहुत दिनोंतक रोग भोगते-भोगते रोगी बहुत स्वास्थ्य-भग्न हो जाता है ; दर्द और बीमारी, शारीरिकसे मानसिक तकलीफ बहुत ज्यादा रहती है । अन्तमें रक्त-स्वल्प हो जाता है और दुबलापन प्रत्यक्ष हो जाता है । सर्दी सहन नहीं होती ; हमेशा सर्दीला रहता है । सर्द हो जानेपर तथा ठण्डी हवामें उपसर्ग बढ़ जाते हैं । हमेशा सर्दी लगा करती है । रक्तवाहिनी-प्राचीरें शिथिल रहती हैं और उनसे सहजमें ही रक्त चूता है ; बहुत ज्यादा काला रक्त । इस तरहका दर्द, मानो हड्डीसे मांस अलग किया जा रहा है और एक ऐसी अनुभूति मानो प्रादाहित स्थानोंमें जखम और स्नायुओंमें कांटा गड़ाया जा रहा है । अस्थि-आवरक, अस्थि और स्नायुओंका प्रदाह । उपदंशकी वजहसे हड्डियोंमें दर्द । अस्थि क्षत और अस्थि-क्षय । शरीर-द्वारोंके किनारोंसे खून चूता है और वहाँ मसे निकलते हैं । पुराने जखमके दागोंमें ठण्डी ऋतुमें दर्द होने लगता है और जब मौसम सर्दीमें बदलता है । कांटा चुभनेकी तरह दर्द । उपदंश-ग्रस्तोंका पारदके अपव्यवहारके बाद

ग्रन्थियोंका प्रदाह। ग्रन्थियोंसे बहुत दिनोंका पीब बहना, जिनमें सुधारकी प्रवणता नहीं रहती; जब चिपनेकी तरह दर्द होता है। स्राव पतला, खून-मिला, बदबूदार और खाल उधेड़नेवाला होता है, कभी कभी मैला पीलापन लिये हरा होता है। सुधारकी प्रवणता जब नहीं रहती तब पीब होना, यह अकसर तब होता है, जब रोगी उपदंश-ग्रस्त रहता है तथा खूब पारद खिलाया गया है। कैन्सरकी बीमारियोंमें पीब होना और जखमके लिये, जिसके साथ खूनका, पानीकी तरह, बदबूदार स्राव और चिपक जानेकी तरह दर्द होता है। यह अकसर देखा गया है, कि नाइट्रिक एसिडकी जरूरत रहनेवाले रोगीको कब्जकी अपेक्षा पतले दस्त ही ज्यादा आते हैं। इसने उन रोगियोंके बहुत-से उपसर्ग आरोग्य कर दिये हैं, जो गाड़ीमें सवारी करनेके सिवा और कभी भी आराममें नहीं रहते। शरीरके सभी भागोंकी पेशियोंमें ऐंठन। हिल जानेपर और शोरगुलसे बहुत-से उपसर्ग बढ़ जाते हैं। यहाँतक कि उसका दर्द भी शोर-गुलसे बढ़ जाता है। नाइट्रिक एसिडके रोगीको अकसर दवा भी बिलकुल सहन नहीं होती; खासकर उच्च क्रमकी दवा—प्रत्येक ऊँचे क्रमकी दवाकी उनपर मानो परीक्षा हो जाती है। बहुत-से स्थानोंपर फटे घाव हो जाते हैं; आँखका कोना, मुँहके कोने, मलद्वारके ऊपर फटे घाव; चर्म फट जाता है—और इन सबमें कांटा चुभने जैसी अनुभूति होती है। अन्तमें वह शोथ-ग्रस्त हो पड़ता है, खासकर हाथ-पैरोंमें शोथ। बदबू इसके रोगीकी एक स्पष्ट दशा है, अकसर सड़ी गन्ध आती है। पेशाबसे घोड़ेके पेशाबकी बू आती है। बदबूदार श्वेत-प्रदर, बदबूदार नाककी सर्दी और श्वास; पैरका पसीना भी बदबूदार। शरीरसे कड़ी गन्ध आती है। काले, काले-मलिन चेहरेपर बहुत ज्यादा ध्यान देनेकी जरूरत नहीं हैं, जिसके विषयमें अकसर बताया गया है, कि ऐसे चेहरेवालोंको इस दवाकी जरूरत रहती है। **यदि लक्षण मिलें**, तो नाइट्रिक एसिड सुन्दरी या श्यामा दोनोंको ही आरोग्य कर देती है।

मनकी सुस्ती। किसी भी विशेष चीजपर सोचनेकी चेष्टा विचारको उड़ा देती है। सभी विषयोंसे साधारण उदासीनता; जीवनसे ऊबी; किसी चीजमें आनन्द नहीं मिलता; रजःस्राव कालमें बीमारी बढ़ जाती है। शामको मानसिक क्लान्ति। अपने बिगड़ते हुए स्वास्थ्यकी चिन्ता, साथ ही मृत्यु-भय। निद्रा न आनेके कारण घबड़ाहट; विषन्नता और उदासी। अपनी गलतियोंपर ही उसे क्रोध आता है। कम्पनके साथ क्रोध। जिद्दी और अपने दुर्भाग्यपर सन्तोष करनेसे इन्कार करता है। वह जीवनसे ऊबा रहता है, पर मृत्युसे डरता है। उत्तेजनशील और रोता है। आरोग्यसे निराश। निराशा। सहजमें ही चौंक और डर जाता है। सो जानेपर डरकर चौंक पड़ता है। जो कुछ उसे कहा गया है उसे समझ नहीं पाता। सभी मानसिक दशा सवारी करनेपर अच्छी रहती है।

सवेरे सरके चक्करसे बहुत कष्ट पाता है; लेटे रहना पड़ता है।

उसे प्रचण्ड सर-दर्द होता है, ईंट-जड़ी सड़कपर जानेवाली गाड़ीकी घड़घड़ाहटसे उसकी बीमारी बढ़ जाती है, पर अकसर, शहरकी चिकनी सड़कपर सवारी करनेपर घट जाती है। शोर-गुल और हिलना-डोलना दर्दको बढ़ा देता है। दर्द, एक कानसे दूसरेतक

मानो जालमें कसा है। इस दवासे अकसर दोनों ही पार्श्व-कपालास्थियोंकी औपदंशिक वेदना आरोग्य हो जाती है। इस तरहका दर्द मानो माथा कसकर बाँध दिया गया है। मिचलीके साथ माथेमें दर्द-भरी खींचन, जो आँखोंतक फैल जाती है। माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। माथेमें हथौड़ीसे मारनेकी तरह दर्द। सवेरे जागनेपर दर्द, जो सोकर उठनेके बाद घट जाता है, झटकासे, हिलने-डोलनेसे, शोरगुलसे बढ़ जाता है और गाड़ीमें सवारी करनेपर घट जाता है। अकसर गर्मीसे सर-दर्द घटता और सर्दीसे बढ़ता है। कपड़ा लपेट लेनेपर घटता है। दर्द ऐसा मानो फीतेसे कसकर बाँधा है। मस्तक-त्वचा और खोपड़ीमें अत्यधिक असहिष्णुता, कंघीसे केश झाड़ना सहन नहीं होता और टोपी सहन नहीं होती। बहुत-बहुतसे केश झड़ जाते हैं, जैसा कि उपदंशमें होता है। मस्तक-त्वचामें उद्भेद और उनमें तेज चिपकनेकी तरह दर्द, मानो कांटा गड़ रहा है; तर, खुजलानेवाले और बदबूदार उद्भेद। खोपड़ीकी हड्डीका क्षय-रोग। अस्थि-क्षत।

आँखोंकी चमक चली जाती है, पुतलियाँ फैली रहतीं हैं और द्वित्व-दृष्टिकी बीमारी रहती है। कटु आँसू निकलनेके साथ चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह रहता है। कांटी गड़नेकी तरह दर्दके साथ कनीनिकाका जखम। डङ्क मारनेकी तरह, सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ चक्षु-उपतारा-प्रदाह, यह रातमें तथा गर्मसे ठण्डे कमरेमें जानेपर या ठण्डी हवामें बढ़ जाता है। कनीनिकापर धब्बे। बहुत ज्यादा आलोकातङ्क, जलन, दबाव और ऐसी अनुभूति मानो आँखोंमें बालू पड़ा है। पलकोंका गिर जाना। फूली हुई पलकें जो कड़ी रहती हैं और जिनमें जलन होती है। ऊपरी पलकोंके छोटे-छोटे मसे। मसे जिनसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है तथा चिपक जानेका भाव।

बहरापन, जो गाड़ी या रेलगाड़ीमें सवारी करनेपर घट जाता है। कण्ठ-कर्णी नली (Eustachian tubes) की सर्दी। कानोंमें स्पन्दन। कानसे बदबूदार, भूरा, खाल उधेड़नेवाला, पीवका स्राव; आरक्त ज्वरके बाद। कर्णपथ करीब-करीब बन्द रहता है। कानके पासकी ग्रन्थियोंका फूलना। शंखास्थिके प्रवर्द्धन (Mastoid) का अस्थिक्षत।

प्रत्येक शीत-ऋतुमें नाककी सर्दी हो जाती है; एक सर्दी आराम होते-न-होते दूसरी हो जाती है। रातमें निद्रा-कालमें नाक रुक जाती है, ठण्डी हवामें छींकें आती हैं, हरेक झोंककी हवा लगनेपर, उसे बाध्य होकर कमरा गर्म रखना पड़ता है। नाकमें बदबू और दूसरोंकी नाककी सर्दीके स्रावसे बदबू आती है। सवेरे और रातके समय नाकसे खून निकलता है। नाककी सर्दी कटु; रातके समय पानीकी तरह, पीला, बदबूदार, खाल उधेड़नेवाला, खून-मिला, भूरापन, पतला—जबसे आरक्त ज्वर हुआ या पारद उपदंशके रोगीको। नाकमें ऐसा मालूम होता है, मानो खीलें भरी हैं। नाकमें ऊपरकी ओर बड़ी-बड़ी पपड़ियाँ। रोज सवेरे नाक छिड़कनेपर हरी पपड़ियाँ निकलती हैं। नाकमें ऊपरकी ओर जखम। नथुनेके पास और भीतर मसे। नाककी ठोर लाल और भूसी-भरे। नासा-प्राचीरपर भी पपड़ियाँ जमती हैं। फटी-नाक।

बीमारीकी गहरी रेखाएँ नाइट्रिक एसिडका चेहरा प्रकट करती है। चेहरा पीला, सर्द, मलिन और धसा हुआ रहता है। आँखें गड़हेमें धसी रहती हैं। मुँह, नाक और आँखोंके चारों तरफ काले घेरे। चेहरा मर्राया चित्ती-चित्ती रहता है। सवेरे पलकें फूली रहती हैं। उसपर भूरे दाग रहते हैं। ललाटपर उठे हुए मसेकी तरह स्थान। दाहिनी कर्णमूल-ग्रन्थि बढ़ी रहती है। चमड़ा चेहरेपर खिंचे हुएकी तरह मालूम होती है। चेहरेपर भी पपड़ियाँ और फुन्सियाँ होती हैं। चबानेके समय जबड़ेमें कड़कड़ाहट। मुँहके कोने फटे, जखम-भरे और पपड़ी-भरे। ओंठोंकी खाल उधड़ी और उनसे खून बहता है। निम्न-हन्वस्थि-ग्रन्थि (Sub-maxillary gland) की दर्द-भरी सूजन। चेहरेका भाव चिन्ता-पूर्ण, घबड़ाया और रोगियल रहता है।

दाँतमें दर्द, फाड़नेकी तरह, सर्द या गर्म चीजोंसे बढ़ जाता है। शामको, रातमें पारद सेवनके बाद टपक। दाँतोंका क्षय हो जाना। दाँत पीले हो जाते हैं। मसूढ़ोंसे सहज ही खून जाता है, शीताद-पूर्ण, फूले मसूढ़े।

जीभकी खाल उधड़ी रहती है, यन्त्रणा-पूर्ण, लाल, पीली, सफेद, सूखी, फटी-फटी रहती है, उसपर यन्त्रणा पूर्ण दाग रहते हैं। मुँहमें लसदार श्लेष्माके साथ जीभका जखम। जीभका प्रदाह।

मुँहमें जखम, जीभपर या कण्ठमें, सफेद या काला और मैला, बदबूदार, सड़नेवाला औपदंशिक, साथ ही कांटा गड़नेकी तरह चपकनेवाला दर्द। डङ्क मारने और जलनके दर्दके साथ मुँहका घाव। श्लैष्मिक-झिल्ली खाल उधड़ी; लाल और फूली। मुँहसे गन्दी मुर्देकी तरह गन्ध आती है। मुँहसे इतनी कट्टु लार गिरती है, कि वह ओंठोंकी खाल उधेड़ देती है।

कण्ठकी मांस-पेशिक क्रियाकी गड़बड़ीके कारण खाद्य कण्ठमें अड़ जाता है और श्वास-रोध होने लगता है। निगलना कष्टकर होता है। निगलनेपर कण्ठमें प्रचण्ड दर्द, जो कानतक फैल जाता है। निगलनेपर कण्ठमें खीलें गड़नेकी तरह चपक जानेका भाव (**हीपर, नेट्रम-म्यूर, ऐल्यूमिना, आर्जेण्टम-नाइट्रिकम**)। कण्ठमें लसदार श्लेष्मा। पश्चात् नासासे श्लेष्मा निकलता है। कण्ठ, तालुमूल, उपजिह्वा और कोमल तालुका प्रदाह। उपजिह्वा और तालुमूल शोथ-ग्रस्त (**एपिस, रस-टक्स**)। कण्ठ और तालुमूलमें बहुत ज्यादा सूजन। तालुमूल, उपजिह्वा तथा कोमल तालुका जखम। उपजिह्वा और तालु शोथ-ग्रस्त (**एपिस**) कण्ठनलीका प्रदाह।

वसा, तीखी चीजें, मछली (एक प्रकारकी छोटी सामुद्रिक मछली), खड़िया, चूना और मिट्टी खानेकी इच्छा तथा रोटी और गोश्तसे अनिच्छा। **साधारणतः प्यास नहीं रहती।**

दूधसे पाकाशय गड़बड़ा जाता है। खाद्य खट्टे हो जाते हैं और खट्टी डकारें तथा खट्टा वमन होता है। वसामय पदार्थ सहन नहीं होते। भोजनके बाद मिचली, इधर-उधर चलने फिरने या गाड़ीमें सवारी करनेपर घटता है। तीती, खट्टी और पाकाशयिक

सामग्रियाँकी कै होती है। पाकाशयका जखम। निगलनेपर पाकाशय हृत्पिण्ड-मुखके पास दर्द। पाकाशयमें चिपक जानेकी तरह दर्द। पाकाशयकी सर्दी। भोजनके बाद भार। भोजनके बाद पाकाशयमें खाल उधड़नेका भाव।

यकृतका पुराना प्रदाह। मिट्टीके रङ्गका मल। बहुत ही ज्यादा बढ़ा हुआ यकृत। कामला-रोगके साथ यकृत-प्रदेशमें दर्द। यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। बढ़ी हुई प्लीहा।

तलपेटमें मरोड़की तरह दर्द। अन्धान्त्र और अन्धान्त्र संयोग-स्थलमें प्रचण्ड दर्द, यन्त्रणा-पूर्ण और स्पर्श-कातर, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। तलपेटमें मरोड़के दर्दके कारण आधी रातके समय जाग पड़ता है; सर्दीला; हिलने-डोलनेपर दर्द बढ़ जाता है। पेटमें गुड़गुड़ाहट। पाकाशय तना और स्पर्श सहन नहीं होता। तलपेटमें बहुत ज्यादा यन्त्रणा। वंक्षण-ग्रन्थियोंमें प्रदाह और पीव होना। कमजोर शिशुओंको शिथिल दशा, जिससे वंक्षणकी अन्त्र-वृद्धिको पूर्व-सूचना मिलती है, अकसर नाइट्रिक एसिडसे दूर हो जाती है और अन्त्र-वृद्धि आरोग्य हो जाती है। (**लाइकोपोडियम, नक्स वोमिका**)।

स्वास्थ्य-भग्न व्यक्ति, जिन्हें बारम्बार अतिसारका आक्रमण हो जाता है। या जिन्हें कब्ज और पतले दस्त पर्यायक्रमसे होते हैं, उन्हें अकसर इस दवाकी जरूरत रहती है— जब पेशाबमें घोड़ेकी पेशाबकी तरह गन्ध आती है और रोगी पीला और रोगियल रहता है, ताकत और शरीरका मांस घटता जाता है, उसके शरीर द्वारोंकी खाल उधड़ जाती है तथा खाल उधेड़नेवाली सर्दीका स्राव और जखम हो जाता है। मल खून-मिला, सड़ा, अनपचका, हरा, चिकना, खाल उधड़नेवाला, खट्टा, दहीकी तरह यदि दूध पिया जाता है, काला सड़ा रक्त। रक्तामाशयमें। मौसमके सर्दीमें परिवर्त्तनसे पतले दस्त आने लगते हैं। मलद्वारकी खाल उधड़ी, जलन, फटे घाव, नसोंसे ढका रहता है। मलके साथ झिलियाँ आती हैं। मलके साथ बहुत-सा शुद्ध रक्त—यहाँतक कि थक्का नहीं निकलता है, बहुत बदबूदार। बार-बार वृथा ही पाखाना लगता है। ऐसा अनुभव होता है, मानो सरलान्त्र मलसे भरा हुआ है और वह उसे निकाल नहीं सकता। कब्ज, दर्द-भरा, कड़ा, कष्टकर मल। पाखाना होनेके पहले खींचन, काटने और दबानेकी तरह दर्द; बार-बार वृथा ही पाखाना लगना (**नक्स-वोमिका**), पाखाना होनेके समय शूलका दर्द, कूथन और मलद्वारका आक्षेपक संकोचन रहता है, असन्तोषजनक जोर लगना। सरलान्त्रमें खीलें रहनेका भाव। पाखाना हो जानेके बाद भी पाखाना लगा ही रहता है (**मर्क**) क्लान्ति, मलद्वारमें यन्त्रणा, काटनेकी तरह दर्द; सरलान्त्रमें जलन और खोंचा मारनेकी तरह दर्द; मलद्वारका संकरा पड़ जाना, बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना; कलेजा धड़कना। प्रत्येक बार पाखाना हो जानेके बाद रोगिनीको घण्टों बिस्तरपर पड़े रहना पड़ता है। मलद्वारमें खुजली और जलन। मलद्वारमें बराबर कटु तरी रहना। सरलान्त्रसे समय बाँधकर होनेवाला रक्त-स्राव और त्रिकास्थिमें दर्द। मलद्वारके फटे घाव; सरलान्त्रकी दर्द-भरी स्थान-च्युति। यह भगन्दर, फटे घाव, श्लेष्मा-गुटि (Condylomata), अर्बुद, छोटे-छोटे मांसके प्रवर्द्धन, बतौड़िया, सरलान्त्रका कर्कट रोग

और बवासीरके मसे,—**जब लक्षण मिलते हैं**, तब इनकी बहुत ही आरोग्यदायक दवा है। इसने ऐसे-ऐसे प्रवर्द्धन आरोग्य किये हैं, जो इतने स्पर्श-असहिष्णु थे, कि उन्हें छूते ही रोगी चिल्ला उठता था। मसे जिनके छूनेपर और पाखानेके समय बहुत तकलीफ होती है, जिनसे खून बहता है, बाहरी या भीतरी मसा, जिनके साथ जलन और पाखाना होनेके समय खीलें गड़नेकी तरह दर्द होता है। जखम हो जानेवाला-बवासीर, जिनसे बहुत ज्यादा रक्त और पीबका स्राव होता है। जब बवासीरमें इतना दर्द होता है, कि रोगिनीको पसीना होने लगता है, घबड़ा उठती है, सारे शरीरमें स्पन्दन होता है, जरा-सा छूनेपर या पाखानेके समय बहुत दर्द होता है, तो यह दवा लाभदायक होती है (**ब्रायोनिया और स्टैफिसेग्रिया**से तुलना कीजिये)। मलद्वारके पास बदबूदार तरी रहना।

पुरुषेन्द्रिय लगातार उपदाहकी अवस्थामें रहती है। कामेच्छा बढ़ी रहती है और रातमें कष्टकर लिङ्गोद्रेक होता है। रातमें दर्द-भरा आक्षेपिक लिङ्गोद्रेक; मूत्रनलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द और लिङ्गमें कड़ापन। जब मवाद पतला और खून-मिला रहता है, इसके बाद फिर हरापन लिये या पीला हो जाता है, पेशाब करनेपर जलन और सीखें गड़नेकी तरह दर्द होता है; मूत्रनली फूली और बहुत यन्त्रणा-पूर्ण रहती है, उस समय यह सुजाकमें बहुत फायदा करता है। इसने श्लेष्मार्बुद आरोग्य किया है, जब उसमें "कांटा" गड़ने जैसी अनुभूति थी और सहज ही खून निकलने लगता था तथा स्पर्श एकदम सहन नहीं होता था। जननेन्द्रिय और मलद्वारके चारों तरफ श्लेष्मार्बुद। सुजाकके साथ मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह, खासकर जब सर्दी लगकर या जबर्दस्त इञ्जेक्शनोंसे मवाद थोड़ा आने लगता है। यह पुराने सुजाकके बहुत से रोगी आरोग्य करता है, जब मूत्रनलीमें पेशाब करते समय या छूनेपर कांटा गड़नेकी तरह दर्द होता है। रस-स्रावके साथ बहुत दिनोंतक रहनेवाला मूत्रनलीका प्रदाह, जिससे कि मूत्रनली कड़ी और कोड़ेकी डोरीकी तरह गांठ-गांठ मालूम होती है (**आर्जेण्टम नाइट्रिकम**)। मूत्रनलीमें **यन्त्रणा-पूर्ण स्थान**, जखम, जिनसे खून-मिला पीब निकलता है और कांटा गड़नेकी तरह अनुभूति होती है। सूजाकके बाद मूत्रनली खुजली (पेट्रोलियम), फुन्सियाँ, चकत्ते, भैंसिया दाद और पपड़ियाँ लिङ्गाग्र-चर्मपर होती हैं। लिङ्गाग्र-चर्म तथा लिङ्ग-मुण्डपर छोटे छोटे जखम। **फैलनेवाले जखम**। जखमोंसे भूरा, खूनकी तरह पानीका बदबूदार स्राव होता है। सड़नेवाले जखम (**आर्स, आरम-म्युरियेटिकम, नेट्रोनेटम, कास्टिकम, मर्क्युरियस-कोर**)। लिङ्गाग्र-चर्मका प्रदाह। लगाम (Frænum) का नष्ट कर देनेवाले जखम। जखमवाले और प्रादाहित अंशोंमें कांटा गड़नेकी तरह अनुभव होता है और खून-मिले पानीकी तरह स्राव होता है। चमड़ी (Phimosis) और उल्टी चमड़ी (Para-phimosis) की बीमारियाँ और बहुत सूजन। विटपदेशके केश झड़ जाते हैं।

खुजली और जलन तथा कामेच्छासे स्त्रियाँ अत्यन्त विचलित हो उठती हैं। श्वेत-प्रदरके कारण और मासिक-स्राव लगकर उस स्थानकी खाल उधड़ जाना। प्रत्येक श्रमसे जरायुसे रक्त-स्राव होता है (कैल्केरिया)। रजः स्राव काला और गाढ़ा होता है। रजःस्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा, खूनके पानीकी तरह होता है। जरायुका स्थान-च्युति।

रजःस्रावके समय बहुत-सी और असीम स्नायविक तकलीफें पैदा हो जाती हैं, आध्मान, प्रत्यंगोंमें कुचल जानेकी तरह दर्द, जंघाओंके नीचेकी ओर दर्द तथा अङ्गुली और अंगूठेके नाखूनोंके नीचे "कांटा" गड़नेकी तरह दर्द, कलेजा धड़कना, घबड़ाहट, कम्पन, स्नायविक वेदना, यह किसी भी अङ्गमें हो सकती है। रजःस्रावके बाद कीचकी तरह पानीका स्राव होता है, जो कई दिनोंतक होता है तथा उस अंशकी खाल बहुत उधड़ जाती है। पतला खून-मिला, खाल उधेड़नेवाला प्रदरका स्राव उसी समय या किसी एक समय होता है। योनि-पथकी खाल उधड़ जाती है और जननेन्द्रियपर श्लेष्मार्बुद उत्पन्न होते हैं। उठे हुए अर्बुद। मूत्रनली-मुखपर मांसाङ्कुर (Carbuncle), जिसे छूनेपर बहुत दर्द होता है। सर्दीसे खुजली बढ़ जाती है। उन अंशोंमें दरारें पड़ जाती हैं और सहजमें ही खून बहने लगता है।

रजःस्राव और दूध पिलानेवाले कालमें बहुत-सी तकलीफें पैदा हो जाती हैं। स्तनमें ढेला हो जाता है। स्तन-वृन्त फट जाते हैं और स्पर्श सहन नहीं होता, उनकी खाल उधड़ जाती है और "कांटा" गड़नेकी तरह दर्द होता है। सार्वाङ्गिक दुर्बलताके कारण गर्भ-स्रावकी प्रवणता रहती है तथा बहुत ही सहजमें गर्भाशयसे रक्त-स्राव जारी हो जा सकता है।

स्वर-भङ्ग और स्वर-यन्त्रमें जख्म। आवाज बन्द। पुराने उपदंशके रोगियोंका स्वर-यन्त्र-प्रदाह (Laryngitis) वक्षमें दबाव, यह बलगम निकल जानेपर घट जाता है। श्वास-लघुता। रुक-रुककर श्वास चलना।

जाड़ेके दिनोंमें खाँसी बढ़ जाती है; पर यह गर्म कमरेमें और गर्म हो जानेपर भी बढ़ती है। खाँसी सूखी रहती है, भूकनेकी तरह, रातमें बढ़ती है, लेटनेपर बढ़ती है, आधी रातके पहले बढ़ती है और निद्रा-कालमें आती है। क्षय ज्वरके साथ खाँसी और रातमें पसीना। ओकाईके साथ, कुक्कुर खाँसीकी तरह, प्रचण्ड, झकझोर डालनेवाली आवेशिक खाँसी। खाँसीके कड़े और बहुत देरतक ठहरनेवाले दौरे, जिनमें बलगम मुश्किलसे निकलता है। स्वर-यन्त्रमें सुरसुरीकी भाँति खाँसीकी उत्तेजना होती है। बलगम हरी आभा लिये, लसदार या पतला, मैला, पानीकी तरह, खून-मिला श्लेष्मा या काला थक्का-थक्का रक्त रहता है। दिनके समय ढीली खाँसी, पर रातमें सूखी। दिनके समय घरघराहट, पर बलगम नहीं निकलता। भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तियोंकी खाँसी, यकृत तथा फेफड़ोंके दोषसे, यक्ष्मावाले रोगियोंकी। बलगमका स्वाद तीता; खट्टा या नमकीन रहता है। यह बदबूदार, यहाँतक कि सड़ा रहता है। वह बलगम निकलनेकी चेष्टा करनेपर पसीनेसे भर जाता है। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। सान्निपातिक फुसफुस-प्रदाह (Typhoid pneumonia) में, जिसमें वक्षमें घरघराहट रहती है, बलगम निकालनेकी शक्ति नहीं रहती या जब बलगम निकाल सकता है, तो बलगम भूरा और खून-मिला रहता है और पेशाबमें घोड़ेकी पेशाबकी तरह बू आती है। रक्तोत्कास और रातमें पसीनेके साथ यक्ष्मामें। उत्तेजनासे, सीढ़ी चढ़नेपर कलेजा धड़कना। नाड़ी तेज, अनियमित रहती है और प्रत्येक चौथा स्पन्दन गायब हो जाता है।

गर्दन तथा बगलकी गांठें फूल जाती हैं। गर्दन अकड़ी। पीठ और वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। मेरुदण्डमें जलन होनेवाले स्थान। पीठमें दर्द, रातमें, जिससे रोगीको तलपेटके बल लेट जाना पड़ता है। पीठके क्षय-रोगमें (Tabes dorsalis) पीठ और प्रत्यङ्गोंमें तेज दर्द। खाँसनेपर पीठमें तेज दर्द।

प्रत्यंगोंमें वातका दर्द। उर्ध्व बाहु और जंघाओंका दुबलापन। प्रत्यंगोंकी कमजोरी। प्रत्यंगोंका शोथ। नाखून भंग-प्रवण। उर्द्धाङ्गोंमें वातका दर्द। सुई गड़नेकी तरह दर्द। सर्द ऋतुमें प्रत्यंगोंमें चिपक जानेकी तरह दर्द। बाहु और हाथोंका सुन्नपन। बाहुओंपर तांबेके रंगके चकत्ते। हाथों और अङ्गुलियोंमें शीतकालके फोड़े। ठण्डे, पसीनेसे तर हाथ। हाथके पिछले भागमें बहुत—से बड़े-बड़े मसे। अङ्गुलियोंके दर्म्यान भैंसिया दाद। अँगूठेके ऊपर फफोले, जो खुलकर जखम हो जाते हैं, अङ्गुलबेढ़ा हो जाता है, नाखून टेढ़े-मेढ़े और बदरंग रहते हैं। पीले टेढ़े नाखून, नाखूनोंके भीतर कांटा गड़नेकी तरह अनुभूति। यह प्रादाहित हो जानेवाले घावोंके लिये उपयोगी है, जिनमें "काँटा गड़ने" की तरह अनुभव होता है। रातमें निम्नांगकी लम्बी हड्डियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। पैर क्लान्त और कुचल गयेसे रहते हैं। कूल्हेमें ऐसा दर्द मानो कुछ बिंध गया है। स्नायुमें चिपक जानेकी तरह दर्द मानो कांटा गड़ रहा है। जंघास्थिपर रात्रि-कालीन वेदनाके साथ औपदंशिक गुल्म (Syphilitic nodes)। पैर और अंगूठोंपर शीतस्फोट (Chilblains)। अंगूठोंपर सड़नेवाले छाले (**ग्रैफाइटिस**)। जङ्घास्थिमें असीम यन्त्रणा। बहुत ज्यादा, बदबूदार पैरका पसीना।

सोनेको जानेपर झटके (**ऐगरिकस आर्जेण्टम-मेटालिकम, आर्सेनिक, नेट्रम-म्यूर**)। निद्राकालमें दर्द हो जाता है। नींदमें चौंक पड़ता है। चिन्तापूर्ण, स्फूर्ति न लानेवाली निद्रा, साथ ही डरावने स्वप्न।

नाइट्रिक एसिड ज्वरोंकी बहुत ही लाभदायक दवा है। सभी अवस्थाओंमें प्यासका न रहना अकसर इसपर ध्यान दिलाता है। हाथ-पैर ठण्डे। धातु-विकृत प्रकृतिवालोंको पुराना सविराम-ज्वर; रातमें बहुत ज्यादा पसीना; अत्यधिक दुर्बलता, साथ ही इसका विशेष लक्षण पेशाबकी गन्ध और किसी अंशसे काले रक्तके स्रावमें, यह दवा खूब काम करती है।

नक्स मस्केटा
(Nux Moschata)

यह कोई बहुत बड़ी दवा नहीं है; इसके फायदोंकी कोई बहुत बड़ी श्रेणी भी नहीं है, पर इसका प्रयोग तब नहीं होता; जब इसकी जरूरत रहती है। हमलोगोंको आदत पड़ गयी है, कि हमलोग नित्य व्यवहारमें आनेवाली दवाएँ ही प्रयोग करते हैं।

गुल्म-वायु-ग्रस्त (Hysterics) को वृद्धाएँ जायफल (Nutmeg), दिया करती थीं और आश्चर्यकी बात तो यह है, कि इसकी परीक्षा इसके व्यवहारका अनुमोदन

करती है। इसका अवश्य ही कुछ-न-कुछ हिस्टीरियाकी उपशामकतासे सम्बन्ध है। फलकी अपेक्षा इसकी जड़ ज्यादा जबर्दस्त होती है, उसी मात्रामें और वास्तविक भेषज गुण उसीमें रहता है।

रोगिनी चकरायी-सी मालूम होती है ; स्मरणशक्तिका तो बिल्कुल ही नाश हो जाता है ; वह बँधी गतसे काम करती जाती है। यह मनकी आश्चर्य जनक दशा है। अपना कर्त्तव्य करती वह घरमें घूमा करती है, पर यदि उसमें हस्तक्षेप किया जाता है, तो भूल जाती है, कि वह क्या करना चाहती थी ; भूल जाती है, कि वह दिन-भर अपने बेटेसे बातें कर रही थी ; उसे गत घटनाएँ स्मरण नहीं रहतीं। कभी-कभी हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रियोंके मनकी यह विचित्र दशा रहती है। कभी-कभी तो यह खोज निकालना असम्भव हो जाता है, कि उसके मनकी इस समय कैसी दशा है, वह इतनी भूल जानेवाली रहती है। वह आँखें बन्द किये पड़ी रहती है और इतनेपर भी जो कुछ हो रहा है, सब जानती है, पर उसे याद कुछ भी नहीं रहता। उस समयकी बातोंपर तो वह बड़ी बुद्धिमानीसे बातें करती है, पर बीती हुई बातें बिस्मरण हो जाती हैं। भविष्य वाणियाँ करती है, एक तरहकी दिव्य-दृष्टिकी तरह भविष्यकी बातें करती है। मानसिक दशा ही इस दवाकी कुञ्जी है। कभी-कभी उसकी बीमारी सवेरे बढ़ती है, कभी शामको और कभी सोकर उठनेपर। वह अपने सभी कर्त्तव्य पालन करती है और इतनेपर भी ऐसा मालूम होता है, कि स्वप्नमें है—ऐसा मालूम होता है, कि वह अपने दोस्तोंको भी नहीं जानती।

नक्स-मस्केटाकी रोगिनी हमेशा सोनेके लिये तैयार रहती है ; बड़ी मुश्किलसे उसे जगाया रखा जा सकता है। सभी अवसरोंपर, सभी ऋतुओंमें और समय न रहनेपर भी वह सो जाती है। आँखें भारी मालूम होती हैं ; वह जागती नहीं रह सकती ; गहरी निद्रामें सो जाती है, कभी-कभी बेहोशीमें जा पड़ती है।

सान्निपातिक (Typhoid) और सविराम ज्वरकी तन्द्रामें यह लाभदायक है। जब जगायी जाती है, तो उसे कुछ भी याद नहीं रहता ; चकरायी-सी दिखायी देती है, चारों तरफ देखती और जानना चाहती है, कि उसके चारों तरफ कौन-कौन व्यक्ति हैं और वे क्या कर रहे हैं। यह वह अवस्था है, जिसमें बहुत देरके अन्तरसे रोगी धीरे-धीरे उत्तर देता है और इसके बाद फिर घबड़ाया-सा दिखायी देता है। वे ऐसा उत्तर देते हैं, जिनका प्रश्नसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता या ठीक-ठीक जवाब भी दे देते हैं, हमें टाइफायडमें, हिस्टीरियामें, किसी आघातके बाद, भयके बाद अवरुद्ध प्रेमके बाद या दोस्तके खो जानेपर यह दशा दिखायी देती है। टाइफायडकी अपेक्षा यह उस आघातमें विशेष उपयोगी होता है, जिनका अन्त इस ढङ्गकी तकलीफोंमें होता है। यह टाइफायडमें भी लाभ करता है, पर जब बहुत कमजोरी रहती है, रोगी पातालकी ओर सरक जाता है तथा स्नायविक कम्पन रहता है, तो **फास-एसिड** ज्यादा फायदा करता है। **फास-एसिडकी** तरह नक्स-मस्केटासे टाइफायडकी सार्वाङ्गिक प्रतिमूर्त्तिका इतना ज्यादा सम्बन्ध नहीं दिखायी देता।

ओकाई और चकरायी दशा—ये दो चीजें सम्मिलित रहती हैं और जब सम्मिलित रहती हैं, तो किसी दवासे सम्पूर्ण मिलना कष्टकर हो जाता है। यह दशा बहुत कुछ **ओपियम**की तरह रहती है।

मूर्च्छा और यहाँतक कि देरतक खड़े रहनेपर मूर्च्छा, जैसा कि स्नायविक स्त्रियोंमें होता है, जो पोशाक पहननेके लिये खड़ी रहती हैं।

मुँह सूखा रहता है, सभी बीमारियोंमें जीभ मुँहकी छतसे सट जाती है। बहुत औंघाई और यन्त्र चालितकी तरह चाल, खासकर स्नायविक स्त्रियोंमें होती है। इसने मृदु अपस्मार (Petit mal) आरोग्य किया है।

रक्त स्राव होनेपर उसे बहुत आराम मिलता है; नाक, जरायु और आँतोंसे रक्त-स्राव। रक्तका वमन होता है।

रोगीको झोंककी हवा, हवाका झटका, तर हवा सहन नहीं होती। उसे सर-दर्द होता है, जो हवाके विरुद्ध चलनेपर बढ़ जाता है। झोंककी हवाके विरुद्ध चलनेपर स्वरभङ्ग; उसे ठण्डी ऋतु जरा भी सहन नहीं होती, वह झोंककी हवाके विरुद्ध चलकर औंघाती, चकराती घर आती है; उसका मुँह सूखा, पर प्यास बिलकुल ही नहीं रहती; उसे पानीकी इच्छा नहीं होती (कभी-कभी प्यास रहती है)। रोगिनी निगल जानेके लिये बिना इच्छाके ही पानी मुँहमें रख सकती है। नक्स-मस्केटाकी रोगिनी बरफका पानी और रस-भरे फल सूखापन दूर करनेके लिये मुँहमें रख सकती है। अकसर जब मुँह तर रहता है, तो एक सूखापनकी अनुभूति रहती है।

हाथ पैरोंमें सुन्नपन, टनक, चुनचुनी और पक्षाघातिक दुर्बलता है; पक्षाघात हो जानेकी सम्भावना रहती है; क्षणिक गुल्म-वायुका पक्षाघात; यह थोड़ी देरके लिये आता है और फिर चला जाता है। गुल्म वायु-ग्रस्त रोगियोंका स्वरभंगके साथ सूखा मुँह; जब घरके बाहर रहता है। यह स्वरभङ्ग घर जानेपर दूर हो जाता है।

समूची पीठमें दबानेपर असहिष्णुता; कशेरुकाएँ स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं।

इसमें बहुत दिनोंतक और न घटनेवाली कब्ज रहती है; बहुत देरतक पाखाना लगा रहता है, जिसके बाद कोमल मल होता है। **(एल्यूमिना, सोरिनम, चायना)**। मल कष्टसे, पर कोमल होता है। उसे ताज्जुब होता है, कि उसे क्यों कोमल पाखाना होता है।

स्त्रियोंको बहुत-सी तकलीफें रहती हैं; अतिरजः, जो दस या पन्द्रह दिनोंतक बना रहता है; रक्त थक्का-थक्का निकलता है, रजःस्राव बहुत जल्दी-जल्दी होता है, बहुत दिनोंतक होती रहती है और अनियमित रहता है, तलपेट शूलके दर्दसे भरा रहता है। मरोड़का दर्द चौड़ी बन्धनी और नीचे प्रत्यंगोंतक उतर जाता है; बहुत तकलीफ देनेवाला ऋतुशूल, सर्दी लग जानेके कारण, हवामें घुड़सवारी करनेके कारण या सील-भरे मकानमें रहनेके कारण। इसके-साथ ही मुँह सूखा और पिपासा-हीनता रहती है; ऐसा मालूम होता है, कि जीभ मुँहकी छतसे चिपक गयी।

यह दवा खासकर दुबली पतली स्त्रियोंके लिये उपयोगी है। वे जिनका मांस-क्षय हो गया है। स्तन चिपटे हो जाते हैं। मुझे एक ३५ वर्षकी स्त्री-रोगिनी याद है, जिसके स्तन जो पहले खूब गोलगाल थे ; एकदम चिपटे हो गये। नक्स-मस्केटाने स्तनोंको ठीक कर दिया।

यह एक छोटी दवा है, पर जब इसकी जरूरत पड़ती है, तो कोई इसकी समता नहीं कर सकती।

नक्स वोमिका

(Nux Vomica)

इस दवामें सर्वत्र आश्चर्य जनक अत्यधिक असहिष्णुता दिखायी देती है ; यह सभी उपसर्गोंमें आ जाती है। चिड़चिड़ा, आवाज, रोशनी, थोड़ा-सा भी वायु-प्रवाह तथा अपने पारिपार्श्विकोंसे असहिष्णु ; अपने खाद्य-पदार्थके सम्बन्धमें अत्यधिक छान-बीन करनेवाला, बहुत तरहके खाद्य उसे गड़बड़ा देते हैं, कड़े खाद्य विचलित कर देते हैं ; मांस खानेपर रोगीके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं, स्फूर्तिदायक, तीखे, तीते, रसीले पदार्थ, कुछ आराम पहुँचानेवाली पदार्थोंकी इच्छा करता है। दवाएँ अत्यधिक सहन नहीं होती। नक्सके रोगी बहुत ज्यादा रहनेका कारण यही है, कि ऐलोपैथ द्वारा लोगोंको बहुत दवा खिला दी गयी है। जब किसी ऐलोपैथके पाससे कोई रोगी आता है या कुचिकित्सित होकर अथवा स्फूर्तिदायक और बलकारक दवाओंको खाकर शराब और सब तरहके उत्तेजक लेनेके बाद आता है, तो विश्वसनीय लक्षणोंका ग्रहण करना या रोगीको ठीक-ठीक समझ लेना, तबतकके लिये असम्भव हो जाता है, जबतक उसे नक्स वोमिका नहीं दिया जाता।

बहुत ज्यादा चाय, काफी या शराब पीनेवालोंके लिये यह उपयोगी है। पुराने काफी पीनेवाले असहिष्णु हो जाते हैं, शोर-गुल उन्हें सहन नहीं होता तथा उनके लक्षण विशृङ्खलित रहते हैं ; वे अपने लक्षण ठीक-ठीक नहीं बताते। नक्स देनेपर ऐसे रोगी कई दिनोंतक अच्छे रहते हैं ; उनके कुछ लक्षण घट जायँगे और यह उन्हें स्थिर कर देगा।

मानसिक अवस्था भी विचित्र रहती है ; पर इन सबसे ही अत्यधिक असहिष्णुता प्रकट होती है ; चिड़चिड़े, स्पर्श-असहिष्णु, असहिष्णु दशाएँ। वे कभी सन्तुष्ट नहीं रहते, कभी तृप्त नहीं होते ; अपने पारिपार्श्विकोंसे विचलित रहते हैं, उत्तेजित हो उठते हैं, चीजोंको तोड़-फोड़ डालना चाहते हैं, शाप देते, धिक्कारते हैं। समय-समयपर भावोत्तेजन जबर्दस्त दिखायी देता है। स्त्रीमें अपने पतिको मार डालने या अपनी सन्तानको आगमें फेंक देनेकी भावना पैदा हो जाती है ; तेज विचारके साथ यह भावोद्रेक सम्मिलित रहता है, उसकी बातको न तो कोई काट सकता है, न बाधा दे सकता है, यदि उसकी राहपर एक कुर्सी रखी है, तो उसे लात मारकर फेंक देगा ; यदि कपड़े उतारते समय, बटनमें कोई कपड़ा उलझ जाता है, उसे खींच लेगा, क्योंकि वह इतनेसे ही पागल हो उठता है

(**नाइट्रिक-एसिड**की तरह)। उत्तेजनाकी एक अनिर्धारणीय दशा ; यह दुर्बलता है और इसके साथ ही शारीरिक दौर्बल्य सम्मिलित रहता है, समताका अभाव। उदाहरणार्थ, कोई व्यवसायी तबतक काम करता रहता है, जबतक क्लान्त नहीं हो जाता, उसे बहुत से पत्र मिलते हैं, उसके सामने बहुत से झंझट रहते हैं ; हजारों छोटी-छोटी बातोंपर वह उलझनमें पड़ा हुआ है ; उसका मन बहुत जल्दी-जल्दी एकसे दूसरे विषयपर दौड़ता है, यहाँतक कि वह कष्टित हो पड़ता है। यह कोई भारी काम नहीं, बल्कि तुच्छ बातें हैं। उसे बाध्य होकर सम्पूर्ण विवरण जाननेके लिये मनः संयोग करना पड़ता है ; वह घर जाता और इन्हीं विषयोंपर विचार करता है ; रात-भर जागता पड़ा रहता है ; उसका मन कारबारके चक्करसे विशृङ्खलित हो जाता है और दिन-भरकी बातोंकी भीड़ उसके दिमागपर एकत्र हो जाती है, अन्तमें उसका दिमाग सुस्त हो पड़ता है। जब ब्योरे उसके सामने आते हैं, वह नाराज हो जाता है और भाग जाना चाहता है, चीजोंको तोड़-फोड़ डालता है, गालियाँ देता है, घर जाता है और अपने परिवार तथा बच्चोंपर अपना क्रोध उतारता है। बेहोशकी तरह सोता और चौंक-चौंककर उठता है ; ३ बजे रातमें ही जाग पड़ता है और उसके कारबारकी बातें उसके सामने एकत्र होकर उसे फिर सोने नहीं देतीं, यहाँतक कि सवेरे देरमें वह क्लान्तिकर निद्रामें जा पड़ता है और क्लान्त तथा सुस्त अवस्थामें जागता है। वह सवेरे देरतक सोना चाहता है।

विषन्नता, उदासी, पर हर समय उसे ऐसा ही मालूम होता है, मानो वह खण्ड-खण्ड हुआ जाता है, बात-बातपर हिल उठता है, चीजोंको तोड़ता-फोड़ता है ; अपने ही ढङ्गसे चलना चाहता है, भावोद्रेकमें उस ढङ्गके काम करता है, जो पागलपनमें गिना जा सकता है—दूसरोंका नाश। **नेट्रम-सल्फ**में अपने ही नाशकी सुदृढ़ भावना रहती है। **आर्जेण्टम-नाइट्रिकम**में भी खासकर ऊँचेसे कूद पड़नेकी इच्छा होती है और इस स्थितिमें जानेसे वह अपनेको बचाता है।

उसे खुली हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती—झोंककी हवा ; हमेशा सर्दीला रहता है, हमेशा ही सर्दी लगा करती है और यह सर्दी उसकी नाकमें बैठ जाती और वक्षतक फैल जाती है।

चर्म-स्पर्श-असहिष्णु रहता है, वायु-प्रवाहसे। दर्द और यन्त्रणाओंसे भरा रहता है, जरा भी उत्तेजित होनेपर इसे सहजमें ही पसीना हो जाता है। मस्तिष्ककी, क्लान्ति, थकान स्नायु-शूल ; पागलकी सीमापर जा पहुँचता है और यह बढ़कर टङ्कार हो जाता है। किसी एक ही पेशीकी और समूचे शरीरकी अकड़न ; मांस-पेशिक ऐंठन, कमजोरी, कम्पन और पक्षाघात। पाक्षाघातिक दुर्बलता तथा पेशियों और स्नायुओंकी क्रियाकी विशृङ्खलित दशा प्रधान रहती है।

नक्सकी दूसरी दशा यह है, कि क्रिया विपरीत गतिकी ओर पलट पड़ती है, जब पाकाशय रुग्न रहता है, साधारणतः बिना विशेष परिश्रमके ही अपने भीतरकी सामग्री निकाल फेंकता है ; पर नक्समें ओकाई और जोर लगाना इस ढङ्गका रहता है, मानो क्रिया

विपरीत और अग्रसर हो रही है, मानो वह जबर्दस्ती उदरको खोल देगा। एक विपरीत क्रिया, ओकाई, मुँह भर आना और काँखना और बहुत देरतक चेष्टा करनेपर अन्तमें वह पाकाशयको खाली कर देता है। मूत्राशयमें भी यही अवस्था प्राप्त होती है, उसे पेशाबमें भी जोर लगाना पड़ता है। कूथन और वेग रहता है। मूत्राशय भरा रहता है और पेशाब चूता रहता है, इतनेपर भी जब वह जोर लगाता है, तो पेशाब टपकना बन्द हो जाता है। आँतोंके सम्बन्धमें, यद्यपि रोगी बहुत काँखता है, फिर भी थोड़ा-सा ही दस्त होता है। अतिसारमें, समय-समयपर, जब वह पाखानेमें सीधा होकर बैठता है, तो थोड़ा-सा ही पाखाना होता है। इसके बाद कूथन पैदा हो जाती है, जिससे वह काँखना, जोर लगाना बन्द नहीं कर सकता और जब वह जोर देता है, तो मल निकलना कठिन हो जाता है। अतिसार और रक्तामाशयमें, बिना किसी तरहका आराम पहुँचते ही जोर लगता है; पर ज्योंही उसे थोड़ा-सा भी पाखाना होता है, तो उसे आराम मिलता है। रक्तामाशयमें, **मर्क्युरियस** में अनवरत वेग रहता है। **मर्क्युरियस-कोरमें** पेशाबकी बहुत अधिक इच्छाके साथ कूथन रहती है। बहुत-सी शारीरिक क्रियाओंकी विपरीत क्रियासे इस दवाकी आक्षेपिक प्रकृति मालूम होती है। सरलान्त्रसे ऊपरकी ओर दर्द धक्का देता है, जलन होती है।

आँखें, चेहरा और माथेका स्नायु-शूल; स्नायु-शूलके सर-दर्द; दर्द चिपकने और फाड़नेकी तरह होता है; उससे रुलाई और मूर्च्छा आती है; उनमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है। सर, चेहरा और वाह्याङ्गोंमें दर्द, जो डङ्क मारने और फाड़नेकी तरह होता है; पर खासकर खोंचनकी तरह। पेशियोंमें तनावकी अनुभूति। खींचनेकी तरह पीठमें खींचन या पेशियोंमें तनाव। दर्द खींचनकी तरह मालूम होता है; पेशियोंमें अकड़न; पीठमें खींचनका दर्द; गर्दनके पिछले भागमें खींचनका दर्द, जिससे बाध्य होकर रोगीको सर पीछे जाने देना पड़ता है, मेरुदण्डमें नीचेकी ओर खींचनका दर्द; कटि-वात। ज्योंही (गर्भावस्थामें) वह लेटती है, त्योंही पीठका दर्द बदतर हो जाता है, मानो पीठ टूट जायगी (**ब्रायोनिया, फास्फोरस**—मानो टूट गया है—**कैलि कार्ब**) बाध्य होकर उठ बैठती और टहलती है। चर्ममें बहुत यन्त्रणाके साथ स्नायु-प्रदाह। मूत्रपिण्ड और यकृतप्रदेशमें दर्द। दर्दसे ऐसी खींचन होती है, कि वह पलंगपर करवट नहीं ले सकता और उसके लिये, इससे बचनेका सिर्फ यही एक उपाय रह जाता है, कि अपने हाथोंसे अपना शरीर ऊपर उठाये, इसके बाद करवट होकर लेटे। त्रिक-प्रदेशमें और उसमें खींचनका दर्द; रक्तामाशयके साथ त्रिकास्थिमें खिंचावकी तरह दर्द। आँतोंमें छेदनेकी तरह दर्द और प्रत्येक **दर्दके झोंकके साथ उसे पाखाना लग आता है।** औदरिक वेदनाओंका यही चरित्रगत लक्षण है। हाथ-पैरोंमें खींचनका दर्द, जिससे पिण्डलियोंमें, पैरोंमें और अंगूठोंमें ऐंठन हो जाती है। तलपेटके **मरोड़से रोगीको पाखाना लग** आता है; मरोड़की तरह दर्द होनेके बाद पाखानेका वेग होता है, ऋतु-शूल, जिसके साथ पाखानेका वेग रहता है; भोजनके बाद, पाकाशयमें दर्द और पाखाना लग आना। बहुत जोर लगानेके बाद भी पाखाना कुछ नहीं होता; पर कई बार जानेके बाद, थोड़ा-सा पाखाना होता है और

आराम मिलता है। यह थोड़ा होता है और विपरीत कीटाकार क्रियाके साथ (Reversed peristaltic action)।

उत्तेजकोंसे अत्यधिक असहिष्णुता। अपनेको शान्त रखनेकी चेष्टा करनेवाले मनुष्योंकी यह एक बँधी दवा है; यहाँतक कि सकम्प पक्षाघातमें भी। पुराने व्यभिचारी, उत्तेजक पीनेवाले भग्न-स्वास्थ्य व्यक्ति, अत्यधिक काम-चरितार्थ तथा कारबारकी झंझटें और चिन्ताएँ; वे आध घण्टेतक काम करते हैं और फिर बाहर जाकर पी आते हैं, यह तबतक जारी रहता है, जबतक अन्तमें उन्हें बाध्य होकर काम छोड़ देना और घर जाकर लेट रहना पड़ता है। वह उन्मादकी सीमापर जा पहुँचा है, चिड़चिड़ा, क्लान्त हो रहा है, उसे बहुत पसीना होता है, हवा लगनेपर उसकी बीमारी बढ़ जाती है तथा रोशनी और शोर-गुलकी आवाज सहन नहीं होती; भग्न-स्वास्थ्य। उसे नक्स और आरामकी जरूरत है, स्फूर्तिदायकोंकी बिलकुल ही नहीं।

जो बहुत चाय, काफी और उत्तेजक पदार्थ पीते हैं, वे दिन-रात जागते रहते हैं, यहाँतक कि अन्त समय आ जाता है, सभी स्नायुओंमें खिचाव रहता है, उन्हें ऐसा मालूम होता है, कि उन्हें भाग जाना चाहिये, ऐसा मानो वे अपनेको सम्हाल नहीं सकते; इनकी पेशियाँ और हाथ काँपते हैं; सोनेको जानेके समय और निद्राकालमें उनके प्रत्यङ्ग हिल उठते हैं।

चिन्ता, निराशा और व्याधि-शङ्काओंसे भरा; "खयालोंसे अत्यधिक असहिष्णु", सभी इन्द्रियाँ इसी दशामें रहती हैं। "पढ़ना या बातचीत सहन नहीं कर सकता; चिड़चिड़ा और अकेला रहना चाहता है।" हर शख्स से नाराज करता है या ऐसा कोई काम कर बैठता है, जिससे उसे रञ्ज पहुँचे। जो कोई भी उसे शान्त करना चाहता है, वही रञ्ज कर देता है। वह दिनके व्यवसायिक कामोंसे डरता है। अन्तमें यह अवस्था आ जाती है, कि 'वह झगड़ता, धिक्कारता, शाप देता और ईर्षासे अपमान करता है, इसके साथ ही अपवित्र भाव सम्मिलित रहता है; इसके थोड़ी ही देर बाद कराहता और जोर-जोरसे रोता है।"

रोगीकी लिंगेन्द्रिय भी दुर्बल रहती है; क्योंकि उसमें कामेच्छा अस्वाभाविक रहती है और वह तबतक काम-चरितार्थ करता रहता है, जबतक वह बिलकुल ही बेकार नहीं हो जाता; लिंगेन्द्रिय क्लान्त रहती है, ध्वजभङ्ग हो जाता है। मानसिक उत्तेजना; पर रति-कालमें शिथिलता। आत्महत्याकी ओर प्रवृत्ति हो जाती है।

नक्सका रोगी पुराना मन्दाग्नि-ग्रस्त रहता है, दुबला, भूखा, मुरझाया; आगेकी ओर झुका हुआ; अकाल वार्द्धक्य; हमेशा ही अपना खाद्य चुना करता है और कुछ भी पचता नहीं; मांस खानेकी इच्छा नहीं होती, यह उसे बीमार बना देता है; तीखी, तीती चीजें, बलकारक वस्तुकी इच्छा करता है। पाकाशय कमजोर; भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द, मिचली, ओकाई; पेट धँस जाता है; दुबला हो जाता है और मांस क्षय हो जाता है।

सर्दी हो जानेकी प्रवणता ; नाककी सर्दी हो जाया करती है। नाकमें सर्दी बैठ जाती है, कण्ठ तथा वक्ष और कानोंमें। जरा भी कोई कारण होनेपर सर्दी लग जाती है ; सहजमें ही पसीना हो जाता है और थोड़ा-सा भी वायु-प्रवाह सर-दर्द और नाककी सर्दी पैदा करता है। यदि वह गर्म कमरेमें रहता है और सामंजस्य ठीक नहीं रहता, तो उसे नाककी सर्दी हो जाती है। **एलियम सेपा**की सर्दी भी गर्म कमरेमें बदतर हो जाती है। रातमें घरमें नाक बहुत बन्द हो जाती है ; नाक एकदम भरी रहती है, खासकर घरके बाहर ; पर घरके भीतर रहनेपर सर्दी पतला रहती है ; दिनके समय पतला पानीकी तरह स्राव। जरा भी वायु प्रवाह सहन नहीं होता ; नाकमें खुजली होकर छींकें आती हैं। यह खुजली कण्ठ और टेंटुआमें चली जाती है। खाँसी ; वायु-पथमें जलन ; सभी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ उपदाहकी दशामें रहती हैं। नकियाकर बोलता है ; स्वर-भङ्ग ; गल-क्षत। सुरसुरी होकर खाँसी। सूखी, तंग करनेवाली खाँसी ; वक्षमें यन्त्रणाके साथ, **ब्रायोनिया**की तरह, मस्तक ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा। नाककी सर्दी वक्षमें पहुँच जाती है। ज्वर और हड्डियोंमें दर्दके साथ श्लेष्मा-ज्वर (Grippe) ; कपड़ा बहुत ओढ़ लेना पड़ता है, अस्वाभाविक रूपसे गर्म रहनेपर ही कुछ आराम मिलता है, इतनेपर भी गर्म कमरा नाककी सर्दी, ज्वर आनेके पहले बढ़ा देता है ; पर ज्वर आनेके बाद, उसे गर्म रहना ही चाहिये, बिछावनके वस्त्रोंके नीचे हवाकी गति रहनेपर भी रोग बढ़ जाता है ; ओढ़ना उठानेपर खाँसी, दर्द प्रभृति बढ़ जाते हैं।

तेज ज्वर और पसीना या **ओपियम**की तरह गर्म पसीना (पर **ओपियम**का रोगी गर्म पसीना होनेपर वस्त्र उतार फेंकना चाहता है ; जब कि नक्सका रोगी ओढ़ना उतार नहीं सकता)। शीत और ज्वर, ताप और पसीना मिला हुआ। शीतावस्थामें अंगुलियाँ और हाथ ठण्डे और नीले रहते हैं ; सरसे पैरतक ठण्डे ; हाथ-पैरोंमें या पीठमें जाड़ा आरम्भ हो जाता है और समूचे शरीरमें फैल जाता है और रोगीको खूब ओढ़ना ओढ़े रहना पड़ता है। थोड़ी देरके लिये इसकी प्रतिक्रिया होती है और ताप तथा पसीना होता है ; पर उसे सभी दशाओंमें ओढ़ना ओढ़े ही रहना पड़ता है ; प्यास इसका कोई प्रत्यक्ष स्वरूप नहीं होता ; कभी-कभी यह तापमें प्राप्त होता है।

सभी ज्वरावस्थाओंमें कामला हो जानेकी प्रवृत्ति। शीतादवाले पीले हो जाते हैं और चर्म तो बहुत ही पीला हो जाता है ; पीले चर्मके साथ पुराने सविराम ज्वरके रोगी। कामलाके साथ उदरकी बीमारियोंमें इसका **ब्रायोनिया**के साथ अत्यन्त निकटस्थ सम्बन्ध है।

नक्सका रोगी विकृति पाकाशयकी तकलीफें भोगा करता है। यकृत-संस्थानमें रक्तके दौरानमें रुकावट रहती है, यकृतमें रक्त सञ्चय ; बवासीरके साथ बवासीरसे सम्बन्ध रखनेवाली शिराओंमें रक्त-रोध ; कब्ज ; रक्तामाशय ; सरलान्त्रका पक्षाघात। **पल्सेटिला**की तरह पाकाशयके लक्षण ; सवेरेके वक्त बदतर ; **पल्स**की तरह सवेरे बदबूदार मुँह। विकृत पाकाशयके बाद माथेमें फट जानेकी अनुभूति मानो एक पत्थरसे माथेको चूर-चूर कर दिया।

पाक्षाघातिक दशाओंसे परिपूर्ण। आँतें उत्तेजनाकी एक दशामें तनी रहती हैं; पर यह हट जाता है और वह समय आता है, जब बिना किसी तरहकी हरकत मालूम हुए ही मल मलान्त्रमें रह जाता है। यह मूत्राशयतक फैल जाता है, जिससे कि यह पेशाबसे भरा रहता है, जो निकाला नहीं जा सकता; बढ़ी हुई मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि या सूजाकके साथ वृद्ध पुरुषोंको पेशाब टपकते रहना। हाथ-पैरोंका पक्षाघात या चेहरेका; एक बाहुका; एक हाथका; एक पेशीका पक्षाघात; मुखमण्डलका पक्षाघात साधारण-रूपसे नक्ससे आरोग्य किया गया है। पक्षाघातमें चिपक जानेकी तरह दर्द एक महत्वपूर्ण लक्षण है।

समय-समयपर तमतमाये हुए चेहरेके साथ झूठी रक्त-पूर्णता; चेहरेकी उत्तेजनशीलता; तमतमा उठना, बहुत क्लान्ति और अवसाद, इसके साथ ही चिड़चिड़ापन और मानसिक उपसर्ग। जब कोई भी परिश्रम नहीं करता रहता, कुछ भी नहीं सोचता, तो रोगी अच्छा मालूम होता है; पर किसी कामको करनेका विचार, उसे क्षणभरमें ही अवसन्न कर देता है।

पसीना होनेपर सर-दर्द; शराब पीनेवालोंको, जो रातमें घरके बाहर रहते हैं, उनको; जो रातमें जागते हैं। एकदम चुपचाप पड़े रहनेपर सर-दर्दमें सबसे ज्यादा आराम पहुँचता है। सर-दर्द, मानो मस्तक-शिखर एक पत्थरसे दबाया जा रहा है। बहुत-से उपसर्ग तापसे अच्छे रहते हैं; पर सर तापसे बदतर हो जाता है। पनीर खानेके कारण मुँहसे।

इसमें आँखका गोला बाहर निकले रहनेके साथ प्रचण्ड अकड़न रहती है; शरीरकी सभी पेशियोंकी अकड़न, इसके साथ ही नीला चेहरा तथा गतियोंसे श्वासका क्षय; सम्पूर्ण अकड़नके समय चेतन या अर्द्ध-चेतन, अपनी बीमारियोंसे जानकार रहता है और बड़ा ही भयानक कष्ट होता है। थोड़ी भी हवा लगनेपर बदतर हो जाता है, पैरोंमें चुनचुनी; कण्ठको जरा भी छूना कण्ठमें ओकाई ला देता है।

भूख न लगनेकी यह एक बँधी दवा हो रही है। यह भूख तो बढ़ा देगा; पर रोगीके लिये खतरनाक कार्य कर देगा। "साधारण खाद्य, पेय, बराबरके अभ्यासकी तम्बाकू, काफी, पानी, आल नामकी शराब, गोश्तसे अनिच्छा तथा तुरन्त खाये हुए खाद्यसे।"

खासकर तलपेटका दर्द; काटनेकी तरह दर्द, जिससे कि रोगी दुहरा हो जाता है, साथ ही ज्यादा खानेके कारण मिचली, नीचेकी ओर खींचनका दर्द, तलपेटमें आक्षेपिक दर्द, यह अकसर प्रत्यङ्गतक फैल जाता है; पर ज्यादाकर सरलान्त्रकी तरफ बढ़ जाता है; शूलका दर्द, जिससे पाखाना, पेशाब लग आता है, दर्द-गुर्दा खासकर उस समय जब प्रत्येक दर्द सरलान्त्रमें धक्का देता है, जिससे पाखानेका वेग होता है। मूत्र पथमें पत्थर हो जानेके कारण दर्द-गुर्दा, जो अपने उपदाहके कारण उस पथके गाल-रेशेदार तन्तुओंमें आक्षेपिक सङ्कोचन पैदा कर देता है; उचित औषधिका यदि प्रयोग होता है, तो ये रेशेदार तन्तु शिथिल पड़ जाते हैं और पीछेसे दबाव पड़नेपर पथरी झोंकसे बाहर तुरन्त निकल जाती है। यही पित्त-पथरीके सम्बन्धमें भी सत्य है। वह दवा, जो रोगको घटाती या कुछ दवाएँ सदृश-गुण-सम्पन्न होती हैं, वे पथरी होनेकी प्रवणता ही दूर कर देंगी। स्वस्थ पित्त-गह्वरमें ही पथरीको गला देता है और स्वस्थ मूत्रसे मूत्रपिण्डके गह्वरमें ही पथरी लग जाती है।

नक्सका **ब्रायोनियासे**, उदरके रोगोंमें निकटस्थ सम्बन्ध है, जिसके साथ चर्म स्पष्ट रूपसे पीला रहता है। **ब्रायोनियाका** रोगी हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है तथा तापसे भी अच्छा नहीं रहता—नक्समें यह दोनों ही हैं तथा यकृतमें रक्त-सञ्चय और स्नायु-शूलके लिये यह ज्यादा उपयोगी है, थोड़े भी दबावसे बदतर हो जाता है (**कोलोसिन्थका** रोगी थोड़े भी दबावसे अच्छा रहता है, **मैग्नेशिया-फासमें** दबाव और तापसे अच्छा रहता है)। **ब्रायोनिया** अन्त्रच्छ-प्रदाह (Peritonitis) में विशेष निर्देशित रहता है, रोगी अङ्गोंको तनाये पड़ा रहता है। ववासीर, यकृतमें रक्त-सञ्चय, सरलान्त्रमें काटनेकी तरह दर्द जिससे पाखाना लग आता है। **क्यूप्रममें** आगेसे पीछेतक काटनेकी तरह दर्द होता है, मानो कस दिया गया है। नक्समें तलपेट धँसा रहता है ; पर **कैल्केरिया** और **सीपियामें** तना, फूला रहता है। **इनुलाका** नक्ससे सादृश्य है ; इसमें भी पाखाना, पेशाब लगनेके साथ शूलका दर्द होता है।

"पाकाशयमें जाकर दूध खट्टा हो जाता है", "भोजन-कालमें माथेमें ताप।" काफी, अलकोहल-मिले पेय, व्यभिचारके दुष्परिणाम। कण्ठमें श्लेष्मा रहनेकी अनुभूति, भोजनसे बदतर। बियर पीना छोड़ देनेपर पतले दस्त आनेका लक्षण पेलोमें है। नक्समें नशीले पेय छोड़ देनेपर पतले दस्त आते हैं। पाकाशयमें एक ढेला रहनेकी अनुभूति (ब्रायोनिया)। पुराने रोगोंमें **सीपीया** विशेष निर्देशित हो सकता है और नक्सके बाद यह उत्तम क्रिया भी करता है, पर यह **ब्रायोनियासे** झगड़ता है ; इसके साथ ही मस्तक-शिखरमें दबावको सम्मिलित कर लीजिये, आपको नक्स-वोमिकाका वजिन्स रोगी प्राप्त हो जायगा। भोजनके एक घण्टा बाद, पत्थर रहनेकी अनुभूति पैदा होती है, इससे प्रकट होता है, कि पाचनकी चेष्टा आरम्भ हुई है ; पर यह **ऐबीज नाइग्रामें** तुरन्त होता है। **क्रियोजोटका** दर्द भोजनके तीन घण्टे बादतक नहीं पैदा होता और इसके बाद खाद्यका वमन हो जाता है।

इसका **सल्फरसे** बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है और अकसर **सल्फरकी** अतिक्रियाके प्रतिविषका काम करता है। यह शायद ही कभी तहतक पहुँचता है तथा **सल्फरकी** धातुगत क्रियाके लिये प्रतिविषका काम करता है ; पर इसके अतिवर्द्धित और फालतू क्रियाको हटा देता है।

ऋतु स्राव बहुत जल्दी-जल्दी होता है, बहुत दिनोंतक जारी रहता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है, बहुत ही आश्चर्यजनक ढङ्गसे ज्यादा दिनोंतक हुआ करता है, यहाँतक स्राव होता और टपकता है कि कपड़ेतकमें दाग पड़ जाता है, जभी तभी आरम्भ हो जाता है और थक्के निकलते हैं। एक बारका ऋतु स्राव दूसरे महीनेके स्रावतक जारी रहता है। इसके साथ ही मानसिक दशा सम्मिलित रहती है ; उत्तेजनशीलता ; औषधिकी अत्यधिक असहनीयता। "रजःस्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा, बहुत जल्दी होता है और बहुत दिनोंतक जारी रहता है। स्राव काला।" कभी-कभी इसके साथ ही प्रचण्ड दर्द होता है, जरायुमें ऐंठन, यह ऐंठन समूचे शरीरमें फैल जाती है और ताप तथा दबावसे घटती

है, जरा-सा हवाका झोंका या सर्दी लगनेपर बढ़ जाती है; गर्म पानी बोतलमें भरकर सेंकनेसे, वस्त्र और तापसे दर्द और अकड़न घटती है। **आर्निका**की तरह यन्त्रणाके साथ प्रसवका दर्द, वेग होना प्रभृति। नीचेकी ओर खिंचावका दर्द, मानो भीतरकी सब सामग्रियाँ बाहर निकल पड़ेंगी, साथ ही पेशाबके लिये काँखना और पाखाना लग आना। स्राव थोड़ा और उत्तेजना-प्रकाशक हो सकता है। योनिकी खुजली प्रधान रहती है।

एकदम हिस्टीरियाके प्रदर्शनोंसे पूर्ण। युरोपके अधिवासियोंमें हिस्टीरियाके प्रदर्शनोंमें अधिकांश लक्षण नक्सके प्रकट होते हैं; पर अमेरिकाके अधिवासियोंमें अक्सर **इग्नेशिया**के।

इसमें बहुत ही कष्टदायक दमाका लक्षण है। उन व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जो कहते हैं, कि प्रत्येक बार पाकाशयकी गड़बड़ीके कारण उन्हें दमाका जोर हो जाता है। नक्सका प्रयोग करनेके बाद एक वर्षतक उनका यह छूट सकता है और तब वे कुछ ऐसी चीज खाते हैं, जो ठीक नहीं बैठती और फिर रातभर दमासे हाँफते बैठे रहते हैं, उन्हें नक्सकी जरूरत है। खाँसीके साथ दमा; वक्षमें घरघराहट, वक्ष श्लेष्मासे भर जाता है; मुँह भर जानेके साथ खाँसी, ओकाई; ऐसा मालूम होता है, कि उसे नयी सर्दी लग गयी है।

जितनी बार उसका पेट गड़बड़ाता है, नाककी सर्दी हो जाती है। मेरे हाथोंमें एक ऐसी रोगिनी थी, जो जितनी बार मांसका कबाब खाती थी, उतनी ही बार उसे नाककी सर्दी हो जाती थी; उसके आराम होनेका कोई रास्ता नहीं था; क्योंकि वह अपने स्वास्थ्यकी अपेक्षा काफी, शराब और सामाजिक विषयोंको ज्यादा मानती थी। वह गो-मांसका टुकड़ा नहीं खा सकती; कुछ मांस ही नहीं खा सकते। विकृत पाकाशयकी सर्दी, जो वक्षमें चली जाती है, इसके बाद दमा हो जाता है।

हृत्पिण्ड और रक्तके दौरानमें धड़कन और उत्तेजना। बहुत टपक।

सवेरेके वक्त मानसिक और शारीरिक लक्षण बदतर रहता है। **मर्क्युरियस**की तरह बिछावनकी गर्मीसे नाककी सर्दी और मस्तकके लक्षण बदतर रहते हैं; इतनेपर भी ओढ़ना उतार देनेपर बदतर; भोजन करने और हिलने-डोलनेसे बदतर; तापसे माथा बदतर रहता है।

बायीं वंक्षण सन्धिमें दबाव और कमजोरी—इसीलिये यह बच्चोंकी अन्त्र-वृद्धि (Hernia) आरोग्य करता है (दाहिनी तरफकी—लाइको)। **आर्निका**से यन्त्रणा प्रभृति दूर हो जाती है, **कोनियम**से भी—यह वंक्षण-प्रदेशके खालीपनमें नक्ससे समता करता है।

कितना भी ओढ़ना ओढ़ लिया जाय, जाड़ा नहीं जाता, **इग्नेशिया**का जाड़ा ओढ़ना उतार देनेपर अच्छा रहता है। स्वल्प-विराम-ज्वरोंमें, शीत और ताप सम्मिलित रहता है; ताप थोड़ी देरके लिये और सूखा रहता है इसके बाद गर्म पसीना और तेज ताप होता है; सवेरेके वक्त ज्यादा रहता है, पर जाड़ा किसी भी समय लगने लगता है।

ओपियम
(Opium)

ओपियमके आश्चर्यजनक स्वरूपोंमें एक तरहकी बीमारियोंका समूह है, जो दर्द-रहित, अक्रिय और जड़त्व-पूर्ण रहती हैं। बहुत थोड़ी मात्रामें लेनेवाले कोई परीक्षकोंमें जड़ता आ गयी थी, अपने चारों ओर होनेवाली घटनाओंको समझने या अनुभव करनेमें या चीजोंकी वास्तविक प्रकृतिको समझकर निर्णय करनेमें असमर्थ हो गये थे। दृष्टि, स्वाद और स्पर्शमें धोखा ; वह जिस दशामें है, उसके समझनेमें भ्रम अपने अनुभवमें भ्रम, बहुत ही भ्रमके साथ समस्त इन्द्रिय-ज्ञानका परिवर्त्तन।

इसका साधारण चरित्रगत लक्षण है, दर्दका न रहना, पर जभी-तभी पर्यायक्रमसे होनेवाली अवस्था भी उत्पन्न हो जाती है, जिसमें ओपियमकी एक छोटी-सी मात्रा भी दर्द, अनिद्रा, अशान्ति और स्नायविक उत्तेजनशीलता उत्पन्न कर देता है, अधिकांश रोगियोंमें जो दशा उत्पन्न होती है, उसके ठीक विपरीत दशा। अधिकांश रोगियोंको कब्ज रहता है, पर किसी-किसीको रक्तामाशय और कूथन भी हो जाती है। रोगी निद्रालु रहता है, इतनेपर भी इस भेषजका लक्षण अनिद्रा-पूर्ण रातें चिन्ता, शोरगुलका सहन न होना ही है, जिसमें कि रोगी कहता है, कि उसे दीवारपर मक्खियोंका चलना तथा दूरके गिरजेकी घड़ीकी टिक-टिक आवाज सुनायी पड़ती है।

साधारणतः यह मान लिया गया है, कि इन विपरित दशाओंमें एक प्राथमिक और दूसरी गौण रहती है। यह सत्य है अर्थात् जिनमें तन्द्रा और दर्द-राहित्यका प्रदर्शन होता है, वे अत्यधिक अचेतनता, अशान्ति, घबड़ाहट और उत्तेजन शीलतामें जा पहुँचेंगे और जिनमें पहले बढ़ा हुआ चैतन्य है, उन्हें बादमें जड़त्व अवस्था प्राप्त होगी। कुछ अति असहिष्णु परीक्षकोंको प्रथम घण्टेमें एक खुराक लेनेपर माथेकी नलीमें सर-दर्द हो जायगा, जिससे कि वे तकियेसे सर न उठा सकेंगे ; वे इससे पक्षाघात-ग्रस्त हुए रहते हैं ; दर्दसे वे गिर जाते हैं। जबतक कि बड़ी खुराक नहीं पड़ती, तबतक बहुत-से परीक्षकोंमें यह अवस्था नहीं उत्पन्न होती। यह प्राथमिक और गौण क्रिया बतायी गयी है। एकमें जो क्रिया है, दूसरेमें वही प्रतिक्रिया हो सकता है ; पर ये सभी भेषजके प्रभाव हैं और इसके बाद जो लक्षण उत्पन्न होते हैं, वे इस दवाके ही लक्षण हैं।

शिथिलता और वेदना-राहित्य बड़े ही आश्चर्यजनक स्वरूप हैं। ठीक-ठीक चुनी हुई होमियोपैथिक दवामें प्रतिक्रियाके अभावमें भीतरी क्रिया दिखाई देती है। यहाँ यह सल्फरसे समता करता है। रोगीका अध्ययन करनेपर आपको ओपियमके बहुत-से लक्षण प्राप्त हो सकते हैं और जब इस तरह निर्देशित रूपमें इसका प्रयोग होता है, तो यह शिथिलताकी दशाके भीतरसे स्वास्थ्य-विधानको जागरित करता है और प्रतिक्रिया पैदा कर देता है।

एकदम दर्द-हीन जखम, जिनमें अङ्कुर नहीं भरता या जो फैलते या क्षय नहीं करते, साथ ही जिन जखमोंमें सुन्नपन या तेजका अभाव रहता है, जिन्हें सतेज रहना चाहता था ;

उन्हें ओपियम अकसर आरोग्य कर देगा। उन अंशोंमें अचेतनता जिनमें बहुत ही ऊँचे दर्जेका प्रदाह है।

पाक्षाघातिक दशा या अर्द्ध-पक्षाघात, आंशिक पक्षाघात; अक्रियता, शिथिलता। ऐसा ही दशा उन आँतोंकी रहती है, जिससे कि वे क्रिया नहीं करते और जिससे सरलान्त्र गोल, कड़े, काले गोलेसे भरा रहता है, जो अङ्गुली या चम्मचसे खोदकर निकाला जा सकता है। उसमें अक्रियता और मल निकालनेमें जोर लगानेकी योग्यता नहीं रहती।

मूत्राशय भी ऐसी ही दशामें रहता है। औदरिक पेशियोंको व्यवहार करनेकी योग्यता नहीं रहती; पेशाब करनेमें वह जोर नहीं लगा सकता; मूत्र-रोध; उत्तोलक पेशियाँ अर्द्ध-पक्षाघातकी दशामें रहती हैं।

कुछ पीनेके समय कण्ठनलीमें क्रिया होती नहीं दिखाई देती और तरल नीचे नहीं उतरता, बल्कि नाककी राहसे बाहर निकल जाता है; अर्द्ध पक्षाघात; तरल गलत राहपर चले जाते हैं या नाककी राहसे निकल जाते हैं।

प्रत्यङ्गों और पेशियोंकी कमजोरी और पक्षाघात।

अकसर शान्तिकी ही अवस्था रहती है। रोगी अकेला रहना चाहता है। रोगिनी कहती है, कि वह बीमार नहीं है और इतनेपर भी उसका तापमान १०५—१०६° रहता है, दग्धकारी गर्म पानीसे भरी रहती है, नाड़ी तेज रहती है; प्रलाप-ग्रस्त रहती है। आप उससे पूछिये, कि तुम कैसी हो, वह कहेगी, वह एकदम अच्छा और प्रसन्न है; न कहीं दर्द है, न यन्त्रणा; न कुछ मांगती है, न कोई लक्षण है; पर सुश्रूषाकारिणी कहती है, कि रोगीको पाखाना-पेशाब कुछ नहीं हुआ है। चेहरा भर्राया, चित्ती-चित्ती, बैंगनी रहता है, आँखें चमकीली और आँखकी पुतली सिकुड़ी रहती हैं। मस्तिष्क एक घबड़ायी अवस्थामें रहता है, इतनेपर भी वह सवालोंका जवाब दे सकती है या मानसिक लक्षण बहुत स्पष्ट रह सकते हैं और शारीरिक बहुत कम स्पष्ट; चित्त-विभ्रमित रहता है, प्रलाप, बकवादीपन, पर यह बहुत कम होता है, साधारणतया जब जगायी जाती है, तब बातें करती है; एक तन्द्राकी दशा, जिसमें रोगी न तो कुछ कहता और न करता है। मनके प्रसन्नतापूर्ण परिवर्त्तनके साथ प्रलाप।

पाकाशय अस्वाभाविक गर्मीकी दशामें रहता है; धसना, खालीपन; भूख और यह खानेसे भी नहीं जाता। वह पेटभर खा लेता है, पर इतनेपर भी मूर्च्छाकी दशा रह ही जाती है। पाकाशयमें जाकर खाद्य खट्टा हो जाता है और वमन हो जाता है। वह ज्यादा नहीं खा सकता। वह ठण्डे पसीनेसे भर जाता है; बहुत सुस्ती, मिचली; ओकाई और वमन जारी रहता है। ओपियम या **मार्फीन**के प्रयोगके बाद मिचली एक कष्टदायक लक्षण है। यह एक बहुत देरतकका वमन और मिचली है। वह पाकाशयमें कुछ भी नहीं ले सकता और न कोई चीज उसके वमनको रोकता है। होमियोपैथिक चिकित्सक **कैमोमिला**का प्रयोग जानते हैं और इसकी खुराक पड़ते ही तुरन्त एक आश्चर्य-जनक लाभ दिखायेगा और मृत्युकी तरह डूबते जानेका भाव और मिचली रोक देता है।

बीमारोंके लिये कभी भूल ओपियम (अफीम) का प्रयोग नहीं होता है. चीर-फाड़के समय अक्सर इसका व्यवहार होता है मानो बहुत जरूरी है और हम सर्जनोंसे इस विषयपर झगड़ना नहीं चाहते। पर रोगमें, बीमार मनुष्यके लिये यह आवश्यक नहीं होता। इससे कोई काम नहीं निकलता और अन्तमें यह नुक्सान पहुँचाता है, इससे होमियोपैथिक दवाकी खोजमें रुकावट होती है। इसने लक्षणोंको छिपाकर, रोगीको नष्ट कर दिया है और बहुत दिनोंतक आप रोगीके लिये कुछ भी नहीं कर सकते।

ओपियमका बहुत अपव्यवहार हुआ है और इससे बहुत कुछ सीखनेमें आया है, पर इस अपव्यवहारसे इसकी परीक्षामें बहुत कुछ सहायता नहीं पहुँची है, क्योंकि व्यक्तिगत लक्षण नहीं प्राप्त होते। बड़ी खुराकोंसे बहुत प्रभाव होता है और इस तरह प्राप्त किये हुए लक्षण कभी-कभी लाभजनक होते हैं अर्थात् मस्तिष्क सम्बन्धी संन्यास रोग (Cerebral apoplexy) जिसके साथ कष्टकर श्वास, लटका हुआ जबड़ा आँखकी पुतलियाँ फैलीं या सिकुड़ी रहती हैं, खासकर निचली, चेहरा मलिन, बैंगनी या गर्म, गर्म पसीना, एक पार्श्वका पक्षाघात रहता है। आप ऐसे रोगी देखकर आश्चर्य करेंगे; कि इस रोगीको पक्षाघात तो नहीं हो गया है, अफीम खाता है, कहीं गिरकर चोट खा ली है या शराब पी ली है, आप प्रभेद करनेके लिये रोगीकी परीक्षा करेंगे। यह एक यान्त्रिक रोग है, मस्तिष्कमें रक्त चढ़ गया है। केवल इसीसे मृत्यु नहीं होगी, पर इसके बाद, प्रादाहिक दशा थक्केके चारों तरफ आरम्भ हो जायगा। ओपियम मस्तिष्कमें रक्तका दौरा आरम्भ कर देता है, पर जब होमियोपैथिक रूपसे इसका प्रयोग होता है, तो यह उनको रोक देता और छः घण्टोंमें वह स्वाभाविक दशामें आ जाता है, उसका चमड़ा ठण्डा हो जाता है, चेहरा स्वाभाविक रंगका रहता है और नाड़ी भी स्वाभाविक दशामें आ जाती है। इस तरह संन्यास रोगकी तस्वीर सामने मूल रखनेमें हम ओपियमका प्रभाव देखते हैं।

पीठके पिछले भागमें स्नायविक दर्द हो जाता है और समूचे चेहरेमें फैल जाता है; सवेरेके वक्त बदतर रहता है। मस्तिष्कके तलदेशमें तेज यन्त्रणा-पूर्ण वेदना रहनेके कारण उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा तकियेमें गड़ गया है और इतनेपर भी जब वह उठता है, तो फिर लेट नहीं सकता। यह साधारणतः स्त्रियोंको होता है; एक झूठा रक्ताधिक्य; उत्तेजनशील या तो गर्भावस्था है या रजःस्राव काल है सर-दर्द। रोगिनी बैठी रहती है और लेट नहीं सकती। सवेरे दर्द आरम्भ होता है और इतना प्रचण्ड दर्द रहता है, कि रोगिनी हिल नहीं सकता, आँख बन्द नहीं कर सकती, सर घुमा लेती है, जरा भी झटका या घड़ीकी टिकटिकाहट सहन नहीं कर सकती; चेहरा मलिन रहता है, बैंगनी, नीला; आँखें खूनकी तरह लाल। उससे लक्षण प्राप्त करना कठिन होता है। ओपियम तुरन्त लाभ पहुँचाता है; पर अधिकांश रोग दर्द-रहित रहते हैं।

शराबियों जैसा चेहरा हो जाता है; चित्ती-चित्ती; चित्ती-चित्ती चेहरेके साथ ज्वर; भयङ्कर घबड़ाहटके साथ सकम्प पक्षाघात, वमन, रक्तसञ्चयी सर-दर्द, आँखकी पुतलियाँ सङ्कुचित; पीनेके बाद प्रचण्ड सर-दर्द, क्लान्ति; बिछावनसे निकल नहीं सकता; प्रलाप।

बहुत-सी बीमारियोंमें तन्द्रा भाव रहता है; संन्यास रोगकी तरह बेहोशीमें पड़ा रहता है, जगाया नहीं जा सकता।

ओपियमका रोगी अकड़नसे भरा रहता है। रोगी खुला रहना चाहता है, ठण्डी हवा चाहता है, खुली हवा चाहता है। यदि कमरा बहुत गर्म रहता है, तो अकड़न हो जाती है। धनुष्टङ्कार; माथा पीछेकी ओर खिंचा; मस्तिष्क मेरुमज्जाका प्रदाह। मस्तिष्क-मेरुमज्जा प्रदाहकी बीमारीमें हमें अकड़न आती मालूम होती है, धनुष्टङ्कार, माथा पीछेकी ओर खिंचा, ओढ़ना उतार फेंकता है, ठण्डा कमरा चाहता है; चमड़ा लाल; चेहरा लाल और दाग-दगीला; पुतलियाँ सिकुड़ी। अब यदि माता बच्चेको गर्म जलसे नहला देती है, कि अकड़न आराम हो, तो वह बेहोश हो जायगा और मृत्युकी तरह सर्द हो जायगा। यदि आप ऐसा रोगी देखने बुलाये जायँ, तो विश्वास-पूर्वक ओपियमका प्रयोग कर दें और आपको बारह घण्टोंके भीतर ही यह देखकर आश्चर्य होगा, कि शान्तिकी अवस्था आ गयी है। वहाँ **एपिससे** इसका सम्बन्ध मालूम होता है। सूतिकाक्षेप (Puerperal convulsions)।

इस धातु प्रकृतिवालोंकी एक मानसिक दशा दिखायी देती है। भय और इसके परिणाम। ओपियमका रोगी, जब एकदम जड़ नहीं रहता है, तो चौंक जानेकी तरह जाग पड़ता है, साथ ही उसके चेहरेपर भयङ्कर भय या घबड़ाहट रहती है। पुराने अफीमची घबड़ाहट और भयसे भरे रहते हैं। यदि एकाएक कोई कुत्ता उनपर झपट पड़ता है, तो उन्हें टङ्कार पैदा हो जायगा, दस्त आने लगेंगे, किसी तरहकी बदहोशी आ जायगी और इस भयके दूर होनेमें कई दिन या सप्ताह लगेंगे। जब भय रह जाता है या भयका खयाल रह जाता है या उसका कारण आँखके सामने आता है, तो उससे उत्पन्न बीमारियाँ। कोई गर्भवती स्त्री डर जाती है और गर्भस्राव हो जाता है और भयवाली चीज हमेशा उसकी आँखोंके सामने मंडराया करती है। बहुत दिन पहले भयके कारण मृगी और दौरा होनेके पहले वही चीज आँखोंके सामने आ जाती है और **उस भयका डर बना रहता है**। हिस्टीरिया (गुल्म-वायु) के आक्रमण, अतिसार और कभी-कभी कब्जके साथ शारीरिक झटके; इसीका यह नतीजा है कि पेशाब रुक जाता है या मासिक ऋतुस्राव होने लगता है या कई महीनोंतकके लिये रजःस्रावका रोध हो जाता है। इन दशाओंमें बहुत भय रहता है और भयवाली चीज आँखोंके सामने बनी रहती है।

ओपियमका परीक्षक जब इस भेषजके प्रभावसे छूटता है, तो भयावनी मूर्त्तियाँ देखता है, काले रूप, भूत-प्रेतोंके दृश्य, आग, प्रेत, कोई चीज उसे उठाये लिये जाती है और हत्याके दृश्य देखती है। ऐसा मालूम है, कि उसका कुछ अंश फूल गया और अब फटना चाहता है।

शरीर सुधर जानेकी भी एक अनुभूति होती है; बहुत आनन्द; भेषज लेनेके प्रथम कई घण्टोंतक आत्म-निर्भरताकी दशा। इसीलिये आकस्मिक आनन्द, क्रोध, लज्जा या आकस्मिक भयकी तकलीफ हो जाती है। **काफियामें** भी स्वर्गीय सुखकी एक ऐसी ही

दशा है। ओपियममें शारीरिक और मानसिक दोनों ही आनन्द आता है। ओपियम और **काफिया**का आपसमें सम्बन्ध भी है; वे एक दूसरेके प्रतिविष हैं।

ह्विस्की पीनेवालोंकी तरह अफीम खानेवाले एक प्रकृतिगत झूठे होते हैं; उनमें कोई भी विवेक रह नहीं जाता।

"आवाज, रोशनी तथा थोड़ी-से-थोड़ी गन्धका भी बहुत ज्यादा अनुभव होना।" "सर-दर्दके साथ औंघाई, जो करीब करीब अचैतन्यकी तरह ही होती है।" "सुखण्डी; बच्चा झुर्रियोंसे भरा और सूख गये हुए वृद्धकी तरह दिखाई देता है; अचैतन्य।"

सीसाके विषके पुराने रोगी। अफीमके अपव्यवहारके बाद जो अतिसार होता है, उसे **पल्सेटिला** आरोग्य कर देता है।

आक्जैलिक एसिड
(Oxalic Acid)

यह दवा बहुत ज्यादा बिसार दी गयी है। यह बहुत-सी हृत्पिण्डकी उन बीमारियोंको आरोग्य कर देगा, जो वृथाकी मूल, अपरीक्षित दवाओंसे, हानिकर परिणामके साथ चिकित्सितकी जाती हैं। हृत्पिण्डके ऊपरकी प्रचण्ड क्रिया समूचे शरीरको हिला देती है। कम्पन, अकड़न, अनुभूतियोंका क्षय, धड़ तथा प्रत्यङ्गोंका सुन्नपन; निम्न-प्रत्यङ्गोंका, अङ्गुलियों और ओंठोंका नीलापन; प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात, ऐसा लक्षण है, जिससे मालूम होता है, कि दवा शरीरपर किस तरह अधिकार करती है और हृत्पिण्ड सुषुम्ना और मस्तिष्कको आक्रान्त करती है। परिश्रम और हिलने-डोलनेपर उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। रोगीको ठण्डी हवा सहन नहीं होती। उपसर्ग आवेशके रूपमें उत्पन्न होते हैं। कलेजेका धड़कन और आवाजका क्षय, पर्यायक्रमसे होता है। इससे अधिक प्रचण्ड दर्द और किसी भी दवामें नहीं होता; काटनेकी तरह, खोंचा मारनेकी तरह, सुई गड़नेकी तरह तथा बहुत-से अंशोंमें फाड़नेकी तरह दर्द; समूचे शरीरमें यन्त्रणा और कुचल जानेकी तरह दर्द; ललाट, पाकाशय, तलपेट, कण्ठ, मूत्रनली, हाथों और पैरोंमें जलन; मस्तक त्वचामें दर्द-भरे स्थान, छूनेपर यन्त्रणा तथा अन्य स्थानोंमें भी। बहुत-से स्थानोंमें शरीर दाग-दगीला रहता है। खट्टे फल खानेके कारण, जैसे कि स्ट्रावेरीका फल, क्रैनबेरीका फल, सेव, रेवतचीनी, टोमाटो, अंगूर प्रभृति तथा चीनी और श्वेतसार मिले पदार्थ खानेसे भी। शराब और काफी सहन नहीं होती। उपसर्ग और खासकर दर्द, उनके विषयमें सोचनेपर या तो पैदा होते या बदतर हो जाते हैं। समय-समयपर बहुत उत्तेजना और प्रफुल्लता रहती है, इसके अलावा स्मरण-शक्तिका क्षय और निराशा रहती है; पागलोंकी तरह चाल-चलन; बातचीतसे अनिच्छा। पाखाना होनेके समय मूर्च्छा। मस्तिष्कका स्पष्ट रक्ताधिक्य रहता है और धड़से माथेपर रक्त चढ़ जाता है; तापकी झलक ऊपरकी ओर चढ़ती है; वह

चकाचौंधमें जा पड़ता है और दृष्टि-शक्ति लोप हो जाती है। माथा खाली मालूम होती है; मस्तकमें धीमा-धीमा दर्द; ललाट तथा मस्तक-शिखरमें; मस्तिष्कमें जलन होती है; **जगह-जगहपर सर-दर्द**; छोटे-छोटे स्थानोंपर दबावकी तरह दर्द। कानके पीछे दबावका दर्द, शराबसे, लेटनेपर, सोनेके बाद तथा सोकर उठनेपर सर-दर्द बदतर हो जाता है और पाखाना होनेके बाद अच्छा रहता है। **मस्तक-त्वचापर यन्त्रणा-भरे स्पर्श-असहिष्णु स्थान।** पढ़नेके समय अक्षर अस्पष्ट हो जाते हैं; दृष्टिका गायब हो जाना; छोटी, खासकर लकीर-वाली चीजें बड़ी और ज्यादा दूरपर दिखाई देती हैं, आँखोंमें दर्द, खासकर बायीं आँखमें; धुँधली आँखें। दृष्टि-लोपके साथ नाकसे खून जाना (Epistaxis)। चेहरा पीला और नीला रहता है, दबा हुआ चेहरा; चेहरेमें ताप; चेहरा ठण्डे पसीनेसे भरा रहता है; निम्न-हनुके कोनेके पास कड़ापनके साथ खींचनकी तरह दर्द—पहले बायेंमें, फिर दाहिनेमें। मसूढ़ोंमें जखम, मसूढ़ोंसे खून बहता है और जगह जगहपर दर्द होता है; मुँहका स्वाद खट्टा; जीभ यन्त्रणा-पूर्ण, लाल, सूखी, जलती हुई, फूली, उसपर सफेद मैल चढ़ी रहती है; स्वाद भी नहीं मिलता, मुँहमें छाले; बहुत गाढ़ा श्लेष्मा रहनेके कारण रोगीको बार-बार खखार-खखारकर गला साफ करना पड़ता है; सवेरे निगलनेमें कष्ट होता है; कण्ठमें दर्द; पुराना गल-क्षत।

भूख बढ़ी रहती है; स्वाद नष्ट होनेके साथ भूखका अभाव; प्यास।

पाकाशयका दर्द, भोजनके बाद अच्छा रहता है; पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द, जो शोरबा खानेपर अच्छा रहता है। भोजनके बाद डकारें, मिचली, नाभिके पास दर्द, उदर-शूल आँतोंमें गड़गड़ाहट, पाखाना लग आना, कमजोरी। चीनी पाकाशयका शूल बढ़ा देता है; शराबमें सर दर्द और भी बदतर हो जाता है, काफीका हृत्पिण्डपर प्रचण्ड प्रभाव होता है और पतले दस्त आने लगते हैं; कलेजेकी जलन शामको बदतर रहती है; भोजनके बाद डकारें, खट्टी, स्वाद-हीन। मिचली और वमन, गर्भावस्थामें मिचली, पाखाना हो आने बाद प्यास और उदर-शूल; पाखाना हो आने बाद मिचली और पिण्डलियोंमें ऐंठन। रातमें रह-रहकर तलपेटमें दर्द, वायु निकलनेपर अच्छा होता है; पाकाशय और कण्ठमें जलन; पाकाशयमें असीम स्पर्शकातरता; पाकाशय और आँतोंका प्रदाह; भोजनके बाद खालीपनका भाव चला जाता है। तलपेटमें मरोड़का दर्द। तलपेटमें जलन। तलपेट और यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। नाभि प्रदेशमें बहुत तेज दर्द; शामको और रातमें बदतर; हिलने-डोलनेसे बदतर। नाभिके पास यन्त्रणा-पूर्ण दर्द। तलपेटका दर्द, उसके विषयमें सोचनेपर या तो पैदा हो जाता है अथवा बदतर हो जाता है। वृहदन्त्रके प्लीहाकी ओरकी महराबके पास वायु रुक जाता है, जिससे बायें कुक्षिदेशमें दर्द हो जाता है। यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, जो गहरी साँस लेनेपर आराम हो जाता है।

तलपेटमें मरोड़का दर्द, रातमें वमनके साथ बदतर; हिलने डोलने और चीनी खानेपर बदतर। आँतोंका पुराना प्रदाह। तलपेटकी अत्यधिक स्पर्श-कातरता, नाभीके पास मरोड़ होनेके साथ सवेरेके वक्तका पुराना अतिसार; कूथन, लेटनेपर फिर पाखाना लग आता है।

काफीसे फिर पाखाना लग आता है, मल पानीकी तरह, रक्त और श्लेष्मा-मिश्रित ; आप-ही-आप पाखाना हो जाता है। पाखाना होनेके समयकी कूथनसे सरमें दर्द हो जाता है ; कष्टकर मलके साथ कब्ज और जोर लगानेके कारण सर-दर्द हो जाता है।

मूत्र-प्रदेश दर्द-भरा और स्पर्श-असहिष्णु रहता है। बार-बार पेशाब होता है, आक्जैलेट और खून-मिला बहुत ज्यादा पेशाब ; सम्पूर्ण मूत्र पथमें यन्त्रणा ; पेशाबसे यन्त्रणा और मूत्रनलीमें जलन हो जाती है ; पेशाब करते समय लिङ्गमुण्डमें दर्द होता है ; नींदमें पेशाब हो जाना ; सभी मूत्र-सम्बन्धी उपसर्ग उनके विषयमें सोचनेपर बदतर हो जाते हैं।

शुक्ररज्जुमें फाड़नेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर बदतर अण्डोंमें स्पर्श-कातरता, जो चलनेपर कष्टदायक हो जाता है। बिछावनपर रहनेपर अत्यधिक कामेच्छा, वीर्य-स्राव और लैङ्गिक दुर्बलता ; शुक्र-रज्जुमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द।

हृत्पिण्डके रोगोंके साथ आवाजका क्षय ; आवाज न निकलनेके साथ पर्यायक्रमसे कलेजा धड़कना ; स्वर-यन्त्र यन्त्रना-पूर्ण ; खाल-उधड़ा, उसमें चुनचुनी और जकड़ जानेका भाव ; बोलनेके समय स्वर-यन्त्रमें बलगम भर जाता है ; बोलनेके समय लगातार स्वर-यन्त्रको साफ करना पड़ता है। स्वर-यन्त्रमें सफेद श्लेष्मा, गाढ़ा, पीला और सफेद श्लेष्मा खखार-खखारकर निकालता है।

हृत्पिण्डके रोगोंमें बहुत अधिक श्वास-कष्ट होता है। कमजोर, स्नायविक स्त्रियोंको आवेशिक श्वास रहता है ; थोड़ी-थोड़ी देरतक स्वाभाविक श्वास रहनेके साथ प्रचण्ड तीव्र श्वास-प्रश्वास। हृत्शूल (Angina pectoris) में हिला देनेवाला श्वास और एकाएक बहुत वेगसे प्रश्वासका निकलना। स्वर-यन्त्रमें बहुत ही कष्टदायक संकोचनके साथ श्वास-कष्ट ; इसके साथ ही वक्षमें भनभनाहटकी आवाज और दबाव, सोचनेपर बदतर हो जाना।

थोड़ा भी परिश्रम करनेपर हृत्पिण्ड-रोग-जनित खाँसी ; स्वर-यन्त्रमें दम घुटनेका भाव, ठण्डी हवामें चलनेके समय स्वर-यन्त्रमें चुनचुनी।

बायें फेफड़े, हृत्पिण्ड और बायें प्लीहा-प्रदेशमें तेज खोंचा मारनेकी तरह दर्द, यहाँतक कि विश्रामके समय श्वास लेनेकी ताकत नहीं रहती, वक्षमें यन्त्रणा ; वक्षके मध्यमें पीठके भीतरसे होकर दर्द। बायें फेफड़ेके निम्न-भागमें धीमापन।

वक्षोस्थिके पिछले भागमें, कन्धे और बाहोंमें जानेवाला फाड़नेकी तरह दर्द ; बायीं ओर बदतर ; नाखूनों और ओंठोंमें नीलापन ; ठण्डा पसीना ; निम्न-प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात ; आक्षेपिक श्वास-प्रश्वास (**लेट्रोडीटस क्टैन्ससे** तुलना कीजिये)। वात रोगियोंकी प्रचण्ड धड़कन ; उनके विषयमें सोचनेपर और भी बदतर हो जाता है। नाड़ी अनियमित, सविराम, तीव्र ; ठण्डा पसीना, नीले नाखून, बहुत कमजोरी। इसने बहुत-सी हृत्पिण्डकी बीमारियाँ आरोग्यकी है ; हृद्-गह्वरवेष्ट झिल्ली-प्रदाह (Endocarditis) हृद्वेष्ट-प्रदाह (Pericarditis), हृत्कपाटकी पूरी-पूरी क्रिया न होना प्रभृति। **फड़फड़ाता हुआ हृत्पिण्ड।**

स्कन्धास्थियोंके कोनेके नीचे दर्द, दोनों कन्धोंके बीचमें, पीठके नीचेकी ओर फैल जाता है ; वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, जो हसुलीकी हड्डीतक फैल जाता है ; पीठमें प्रचण्ड यन्त्रणाका दर्द और जंघाओंके नीचे, स्थान बदल देनेसे यह आरोग्य हो जाता है। यह लक्षण एक अपवाद है, क्योंकि दर्द हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है। पीठके नीचले भागमें दर्द, यह पाखाना होनेके बाद अच्छा रहता है। सुन्नपन, चुनचुनी, जिससे कि मेरुदण्डमें कमजोरीके साथ सर्दीकी अनुभूति होती है, कमर और कूल्हेमें कमजोरी, जो निम्न-प्रत्यङ्गोंतक फैल जाता है ; माथेके पिछले भागमें दर्द आघात करता है। पीठके नीचेवाले भागतक ठण्डा शीत, जिसके बाद शामको ज्वर आता है, नित्य-प्रति ज्वर आता है। हिलने-डोलनेपर पीठकी पेशीमें बहुत खींचनके साथ बहुत तरहका दर्द पैदा हो जाता है ; मेरुदण्डके प्रदाहसे पक्षाघात ; प्रत्यङ्ग कड़े हो जाते हैं ; श्वास-कष्टका आवेश।

अंगुलीकी नोकके बराबर जगहपर कन्धोंमें सुन्नपन ; बाहुओंमें तेज छेदनेकी तरह दर्द ; दाहिनी कलाई कुचल गयी सी मालूम होती है ; ताप और सुन्नपनके साथ दाहिनी कमरास्थि (Meta-carpus) और अंगूठेके मांस-पूर्ण अंशमें दर्द ; हाथ एकदम असहाय ; **हाथ मुर्देकी तरह ठण्डे** ; हृत्पिण्ड रोगोंमें अङ्गुलियाँ और नाखून नीले ; झुकी हुई अङ्गुलियोंकी नोकमें दर्द। कन्धेकी पेशियों, बाहु और अङ्गुलियोंमें ऐंठन। पैर कड़े रहते हैं सुन्न और कमजोर ; निम्न-प्रत्यङ्ग ठण्डे, नीले और पक्षाघात-ग्रस्त। निम्न-प्रत्यङ्गोंमें प्रचण्ड दर्द। पैरों और हाथोंमें जलन। सन्धियोंमें वात।

भयावने स्वप्न ; कलेजेमें धड़कन, ठण्डा पसीना और प्रत्यङ्गोंमें दर्दके साथ जागरण ; दिनके समय औंघाई ; पर रातमें कष्टदायक नींद ; वायु खुलनेके बाद अच्छा मालूम होता है। पाकाशयका प्रचण्ड दर्द उसे जगाये रखता है।

जाड़ा ; हिला देनेवाला जाड़ा, ठण्डा शरीर। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर ताप ; पहले तो तापका झोंका आता है, फिर ठण्डा पसीना ; शामको हिला देनेवाला जाड़ा, जिसके बाद भीतरी और बाहरी पसीना, हाथ ठण्डे। चेहरेका, हाथ और पैरोंका ठण्डा पसीना।

पेट्रोलियम
(Petroleum)

यह एक वैसी दवा है, जिसका बहुत अपव्यवहार होता है। वातमें, कुचले स्थान और सब तरहकी तकलीफोंमें इसका बाहरी प्रयोग होता है और इससे जो ह्रास होता है, रोगके पटलपर स्थित हो जानेके कारण तथा शरीरके दूसरे स्थानपर कृत्रिम उपदाह (Counter-irritation) के कारण होता है, न कि होमियोपैथिक क्रियाके कारण। "सब तरहकी बीमारियों" के आरोग्य-कारकके रूपमें मनुष्य तथा पशुओंके लिये मूल पेट्रोलियमका तेलकी तरह व्यवहार होता है।

यह कृत्रिम उपदाह उत्पन्न करनेवाला है और यह चर्मपर, उपदाह, उद्भेद और तकलीफ, **टर्पेण्टाइन** ताड़पीन (Turpentine) की तरह ही उत्पन्न करता है। सबसे पहला काम परीक्षकपर पेट्रोलियम यह करता है, कि उसमें चित्त-विभ्रम और चकाचौंध उत्पन्न कर देता है, वह इतना चकरा जाता है, कि राह चलते-चलते अपना गमन-पथ भूल जाता है। स्त्रीके हृदयमें ऐसे भ्रम-विचार आते हैं, कि उसके पास ऐसे व्यक्ति हैं, जो अब मौजूद नहीं हैं ; वायुमण्डल विचित्र आकारोंसे भर रहा है ; उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग दोहरे हो गये हैं ; कोई दूसरा ही व्यक्ति उसके साथ पलंगपर है। ये बातें ज्वरमें पायी जाती हैं। प्रसवके बाद किसी स्त्रीको ऐसा भ्रम होता है, कि उसके साथ पलंगपर दूसरा बच्चा है और उसे आश्चर्य होता है, कि वह दो-दो बच्चेका कैसे यत्न करेगी। बहुत-सी बीमारियोंमें ऐसे खयाल दिखाई देते हैं। इनकी कई बार जँचायी हो चुकी है। टाइफायड और निम्न रूपोंके रोगोंमें ; अतिसारोंमें नींद खुलनेपर रोगी चित्त-विभ्रममें रहता है, स्वप्नमें उसे दो या ज्यादा होनेके खयाल आते है तथा अर्द्ध चेतन दशामें रोगीमें यह खयाल रहता है। वह अपनी दशा छिपा नहीं सकता ; पर जब जगाकर चेतनमें किया जाता है, तो वह उसे हटा देता है, पर जब अर्द्ध-चेतन अवस्थामें रहता है, तो ये ही ख्याल लौट आते हैं। ये उसे दिन-रात तङ्ग किये रहते हैं।

चर्मके लक्षण। चर्म-पटलके लक्षण भी बहुत आश्चर्य जनक हैं। इसमें चकत्ते, भैंसिया दादकी तरह इधर-उधर बिखरे चकत्तेको बाहर निकाल फेंकनेकी प्रवणता है और इन चकत्तों फुन्सियोंमें बहुत तरीके साथ पीली पपड़ियाँ जमनेकी प्रवणता रहती है। फुन्सियाँ बहुत जल्दी ही फूट जाती हैं। समय-समयपर उन छालोंपर पपड़ियाँ नहीं भी जमतीं, पर ये जल्द ही फूट जाती हैं और नीचे-ही-नीचे जखम हो जाता है और यह बदलकर सड़नेवाला जखम हो जाता है, अंगुलियाँ, मुष्क, चेहरा और मस्तक-त्वचाकी यह दशा होती है। गर्दनके पिछले भागमें चकत्तेवाले उद्भेद होनेकी खास प्रवणता रहती है। कड़ी बीना पीबकी फुन्सियाँ, फुद्रिये, रसभरे फफोले, सूखे, भूसी-भरे उद्भेद ; पर ज्यादातर ये तर ही रहते हैं ; उद्भेद जो गहरायीपर बढ़ते जाते हैं। यह पुराने उद्भेदके चिह्नपर दूसरे उद्भेद तैयार करता है, जिससे पुराने उद्भेदकी तली कड़ी हो जाती है। जब पपड़ी सूखती है, तो कड़ी पड़ जाती है और यह कड़ापन किनारेपर होता है और इसी वजहसे किनरेके पास छोटी-छोटी अंगूठियाँ बन जाती हैं। यह कड़ा स्थान फटता है, खून बहता है और नीला दिखायी देता है। पुराना अकौता (Salt rheum) तथा हाथके पास होनेवाले उद्भेदोंमें इसका प्रयोग कीजिये। जब अंगुलियोंके सिरे और हाथका पिछला भाग फटता है, तो यह उपयोगी होता है। चमड़ा सूखा फटा-फटा, खाल-उधड़ा, फटे घाव रहते हैं, रक्त बहता है, मांस-तन्तु कड़े पड़ जाते हैं ; यह कभी-कभी तलहत्थी और नाखूनोंमें होता है। तन्तुमें जखम होता है तथा जखम मांस खाते और फैलते हैं। सभी उद्भेदोंमें प्रचण्ड खुजली होती है। जबतक वह चमड़ा खखोड़ नहीं डालता, जिससे वह स्थान तर, खून-भरा, खाल-उधड़ा और प्रदाहित नहीं हो जाता, तबतक उसे आराम नहीं मिलता। कोई उद्भेद नहीं दिखायी देता, फिर भी खुजली रहती है। वह तबतक खुजलाता रहता है, जबतक रस नहीं

निकलता और तबतक बराबर खुजलाता ही रहता है, जबतक चर्मसे खून नहीं बहता और वह अंश **ठण्डा** हो जाता है। (इस ठण्डे शब्दपर यहाँ कहना पड़ता है कि **जगह जगह-पर ठण्डक** इस दवाका एक प्रकट खरूप है। जगह-जगहपर ठण्डक ; पाकाशयमें ; तलपेटमें और जरायुमें ठण्डक ; स्कन्धास्थियोंके बीचमें जगह-जगहपर ठण्डक ; हृत्पिण्डमें ठण्डक ऐसी अनुभूति मानों हृत्पिण्ड ठण्डा हो गया है)। बहुत तरहका अकौता। मस्तक-त्वचापर अकौता ; खासकर माथेके पिछले भागमें। मुँहके चारों तरफ भैंसिया दादकी तरह (उद्भेद **नेट्रम-म्यूर**), जननेन्द्रिय, ओंठ, चेहरेके पास और उसके धब्बोंपर पपड़ी जम जाती है और बहुत रसस्राव होता है।

श्लैष्मिक-झिल्ली या भीतरी चर्मपर भी छोटे-छोटे जखमोंके दाग रहते हैं, उन दागोंमें कड़ापन रहता है और इसीलिये उपदंशके जखमोंमें पेट्रोलियम लाभ करता है। कण्ठमें जखमके धब्बे ; मुँहमें छालोंके दाग। सब जगहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें प्रदाह रहता है, जिनसे पहले पानीकी तरह और फिर पीला गाढ़ा स्राव होता है। शिडीरियन झिल्लीकी सूजनके कारण नाक भरी रहती है। नाककी पुरानी सर्दीकी बीमारी, खरोंट, गाढ़ा पीला स्राव, नाकसे बदबू आती है। नाक, नाकके पिछले छिद्र और गलकोष मोटे पड़ जाते हैं और खासकर सवेरे उसमें श्लेष्मा जमता है। स्वर-यन्त्र आक्रान्त रहता है आवाज नहीं निकलती, तकलीफ वक्षमें फैल जाती है, जिससे खाँसीके साथ सर्दीकी दशा उत्पन्न हो जाती है। खासकर रातमें खाँसी आती है तथा वक्षमें यन्त्रणा और वेदना रहनेके साथ-ही-साथ शरीर दुबला होता जाता है। सूखी, खुसखुसी खाँसी, जिसमें पर्यायक्रमसे बहुत ज्यादा बलगम निकलता है ; वक्षके पासके मांसका घट जाना। इस भेषजका एक आश्चर्यजनक लक्षण यह है, कि रातमें खाँसी बढ़ी रहती है और पतले दस्त दिनमें ज्यादा आते हैं। पाकाशय तथा आँतोंकी सर्दी। सरलान्त्रकी सर्दी मलके साथ बहुत श्लेष्मा निकलता है। **दिनके समय अतिसार, रातमें यह घट जाता है**, जब कि रोगी शान्त और विश्राममें रहता है। बिना वेदनाके वह खा नहीं सकता ; पर उसमें चबानेकी तरह भूख रहती है, जिससे बाध्य होकर उसे खाना पड़ता है (**लैकेसिस, ग्रैफाइटिस**)। पाखाना होनेके बाद एकदम 'खालीपन" और भूखका भाव रहता है, जिससे उसे खाना पड़ता है। अतिसारके साथ लगातार भूख रहती है, इतनेपर भी बिना दर्दके वह खा नहीं सकता, दुबलापन, चर्मोद्भेद, अस्वस्थ खुरखुरी अङ्गुलियाँ, जो कभी साफ-सुथरी नहीं दिखाई देती ; वह उन्हें धो नहीं सकता ; क्योंकि धोनेपर वे फटने लगती हैं।

मूत्राशय और मूत्र-पथकी सर्दी, पुराना सर्दीका स्राव, पुराना सूजाक। भीतरी चर्ममें बराबर खुजली रहती है और सूजाकमें तो एक विचित्र लक्षण यह रहता है, कि मवाद आनेके साथ मूत्रनलीके पिछले अर्द्ध भागमें खुजली रहती है। यह उसे करीब-करीब पागल बना देता है, रात-रातभर जगाये रखता है। वह खुजलीको घटानेके लिये मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानका रगड़ा और हस्त-क्रिया किया करता है। सूजाकका मवाद सफेद या पीला आता है। यह उस "अन्तिम बूंदमें" लाभदायक है। इसके अलावा सूजाककी आरम्भिक अवस्थामें जब खुजलाहटसे बहुत तकलीफ होती है।

समूचे शरीरमें, खासकर सन्धियोंमें यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेकी तरह भाव। हिलने-डोलनेपर सन्धियोंमें वातज दर्द, छूनेसे यन्त्रणा, ऐसा मालूम होता है, मानो कुचल गया है। कुचल जानेके सम्बन्धमें यह **आर्निका**के सम-लक्षण-सम्पन्न है।

पुराने कठिन **पश्चात् मस्तकके सर-दर्दोंमें** पेट्रोलियम लाभदायक होता है। समय बाँधकर होनेवाले सर-दर्द और पैरोंके बदबूदार पसीनेकी **साइलिसिया** (Silicea) बँधी दवा है। पेट्रोलियममें भी पैरमें बदबूदार पसीना होता है; सब जगह बदबूदार पसीना और खासकर बगलमें जहाँ कि उसमें इतनी तीखा गन्ध रहती है, कि रोगीके कमरेमें घुसते ही अनुभव की जा सकती है। दर्द अकसर पश्चात् मस्तिष्कमें रहता है, पर जब यह बहुत तेज रहता है, तो यह मस्तक-शिखरपर, आँखोंपर और ललाटपर फैल जाता है (**साइलिसियामें** भी यह दशा है)। पेट्रोलियमका **साइलिसिया**से इतना निकटस्थ सम्बन्ध नहीं है, जितना **ग्रैफाइटिस** और **कार्बो-वेज**से ; जो कार्बनसे उत्पन्न पदार्थ हैं। "पश्चात् मस्तकसे सरके ऊपर, ललाट और आँखोंपर दर्द, साथ ही क्षणस्थायी अन्धापन; वह कड़ा पड़ जाता है, चेतना गायब हो जाती है।" "पश्चात् मस्तकमें गोल स्पष्ट स्थानपर दर्द, माथा हिलानेपर यह दर्द बढ़ जाता है।" **कार्बो-वेज**की तरह इस दवामें इन्द्रियाँ, श्रवण, स्पर्श और गन्धेन्द्रियोंमें अत्यधिक अनुभूति रहती है।

पेट्रोलियमको धातु-प्रकृति एक विचित्र प्रकारका सरमें चक्कर उत्पन्न करती है, जो नियमित परिस्थितिमें उत्पन्न करता है, जब जहाजपर रहता है या गाड़ीपर सवारी करता है या गाड़ीमें रहता है। यह गाड़ीमें सवारी करनेपर या इसी तरह हिलने-डोलनेपर, समुद्री रोगकी तरह मिचलीके साथ पश्चात् मस्तकके सर दर्दमें उपयोगी होता है। समुद्री रोग इस तरहकी एक तकलीफ है, जिसका सामना हमेशा नहीं होता, इतनेपर भी बहुतसे मनुष्योंका जब धातु-प्रकृतिके अनुसार इलाज होता है, तो वे उत्तम दशामें लाये जा सकते हैं, जिससे वे साधारण दशाओंमें, जैसे गाड़ी या बैलगाड़ीमें सवारी करनेपर तकलीफ न उठायेंगे। यह ऊपर बतायी दशा ठीक-ठीक समताके अभावके कारण दृष्टि-दोषके रूपमें होता है, उदाहरणार्थ, यह दोष जहाजके पाससे जाती हुई समुद्रकी तरङ्गोंपर दृष्टि जमानेपर उत्पन्न हो जाता है या जाती हुई किसी चीजको देखनेपर। रोगी जब अन्धेरे कमरेमें रहता है, तो उसे आराम मिलता है। पश्चात् मस्तकका सर-दर्द, साथ ही ऊपर बताये ढङ्गका सरका चक्कर तथा पेटमें खालीपनकी तरह भूखका भाव या पाकाशयमें दर्द, जिससे उसे खाना पड़ता है, यह पेट्रोलियमसे आराम हो जायगा। एक साधारण ढङ्गका सामुद्रिक वमन इस आगे लिखे ढङ्गका मुझे मिला है—भयङ्कर प्राणघातक मिचली, बहुत सुस्ती, ठण्डा शरीर, बहुत ज्यादा पसीना और क्रान्ति पङ्खा झलनेसे, खुली हवामें, आँखें बन्द करनेपर, एकान्त और अन्धकारमें घटता है तथा गर्मीसे बढ़ता है। ऐसे रोगियोंकी दवा साधारणतः **टैबेकम** होती है।

पेट्रोलियममें दृष्टिकी बहुत गड़बड़ी रहती है, पर आँखकी सर्दीकी दशा बहुत आश्चर्यजनक है। फुन्सियाँ निकलना, जखम होना, प्रदाह, लाली और बहुत ज्यादा मवाद

आना ; दानेदार पलकें, श्लैष्मिक-झिल्लीका मोटापन, पलकें, फटी, आँखके कोनोंमें **बहुत खुजलीके** साथ फटे घाव। श्लैष्मिक-झिल्लीके सभी प्रदाहोंमें खुजली मौजूद रहती है। **कण्ठकर्णी नलियाँ।** श्लैष्मिक-झिल्लियाँ मोटी पड़ जाती हैं और परिणामस्वरूप बहरापन आ जाता है। यह श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी एक दशा है तथा इसके साथ ही नलीमें बहुत खुजली रहती है, जिसे वह किसी भी तरीकेसे हटा नहीं सकता, कानमें गहरायीतक खुजली। वह कानको रगड़ता है और उसे खुजलाना चाहता है, पर वह वहाँतक पहुँच नहीं पाता। गलकोषमें खुजली, साथ ही वाह्य कर्णकी नलीमें। कानोंसे मवाद आना।

शरीरकी ग्रन्थियोंका कड़ापन और प्रदाह। कानकी बीमारियोंमें कर्ण-मूल-ग्रन्थि बढ़ जाती है ; हनुकी तकलीफोंमें हनु-निम्नस्थ-ग्रन्थि तथा जिह्वा-अधोवर्त्तिनी ग्रन्थि आक्रान्त होती हैं, वे कड़ी हो जाती हैं और ऐसी ही रहना चाहती हैं। चेहरा पीला या सुनहरा ; रोगियल। "दिनभर मिचली और वमनेच्छुकता (Qualmishness)।"

पीठका अकड़ना। अपनी जगहसे उठनेपर पीठमें दर्द।

गर्मी और जलन। जगह-जगहपर चर्म गर्म रहता है तथा जगह जगहपर सर्दी अनुभव होती है। तलहत्थियाँ तथा तलवोंमें जलन और खुजली ; चेहरे और मस्तक-त्वचामें जलन होती है। जलन और खुजली अकसर साथ-साथ चलती है ; जिन भागोंमें जलन होती है, उनमें बहुत खुजली होती है। पैरोंमें जलन और ऐसी अनुभूति होती है, मानो जम गया है। शीत-कालके फोड़े, जो खुजलाते, जलते और बैंगनी हो जाते हैं, वरफ लगे हुए अंश वरसों बाद खुजलाते हैं, जलन होती है, डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है और लाल तथा गर्म हो जाते हैं। शीत-कालके फोड़ोंमें रोगी कह सकता है, कि ये कब उभरेंगे, क्योंकि उनमें इतनी ही खुजलाहट होती है। गले हुए अंशोंकी जलन और खुजली पेट्रोलियम आरोग्य कर देती है, पर **ऐगरिकस**की तरह प्रधान रूपसे नहीं। **ऐगरिकस** अन्य सभी दवाओंमें प्रधान होता है, खासकर जब रोग उस स्थानपर आक्रमण करता है, जहाँ कि हड्डियोंके ऊपरके तन्तु पतले हैं, जैसे कि पीठ और अंगूठोंके।

अर्द्ध पाक्षाघातिक दशा, खासकर बायीं तरफकी। पेशियोंकी कमजोरी, निम्न-प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी, खासकर बायें तरफकी।

चर्म पटलके ऊपरके उद्भेद तथा कड़ापनकी दशा **ग्रैफाइटिस**की तरहकी होती है, पर पेट्रोलियमकी रसस्राव पतला और पानीकी तरह होता है और **ग्रैफाइटिस**का गोंदकी तरह लसदार, शहदकी तरह, चिपकनेवाला, लसलसा। अंगुलियोंमें कड़ापन और फटे घाव मिलेंगे तथा दोनों ही दवाओंमें चर्ममें दरारें पड़ती हैं, पर सींगकी तरह उठे हुए प्रवर्द्धन, नाखूनके कोने उठ जाना, यह आपको "ग्रैफाइटिस" में ही प्राप्त होगा।

पुरुष या स्त्री-जननेन्द्रियके अकौतामें यह आश्चर्य-जनक रूपसे कार्य करती है और **रस-टक्स**की समता करता है। मुष्क, लिङ्गेन्द्रिय, योनिके उद्भेद। पुरुष और स्त्री-जननेन्द्रियमें **रस-टक्स** भयङ्कर प्रदाह उत्पन्न करता है ; विसर्पके आकारका प्रदाह ; गाँठें, फफोले और बड़े-बड़े छाले। पेट्रोलियम छोटे छाले, खुजली, डङ्क मारनेकी तरह दर्द और

जलनके साथ उत्पन्न करता है। भैंसिया दादकी तरह उद्भेद, जो विसर्पाकार हो जाना चाहते हैं; मुष्क और जननेन्द्रियके उद्भेदोंकी पेट्रोलियम और **रस-टक्स** साधारण दवाएँ हैं। "दादकी तरह खुजली, लाली और मुष्कपर तरी, चर्म फटा, रूखा और रक्तस्रावी; यह मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थान और जांघोंतक फैल जाता है। "जननेन्द्रिय तथा जननेन्द्रिय और मलद्वारके बीचके स्थानमें जल्द आरोग्य न होनेवाले सूखे उद्भेद।" पुरुष और स्त्री दोनोंकी ही जननेन्द्रियोंपर पसीना और तरी।"

शीवादपूर्ण स्तनवृन्त; सफेद, गेहूँकी भूसीकी तरह छाल; खुजलाहट; छाल हमेशा उतरा करती है। यदि किसी स्त्रीका स्वास्थ्य-भङ्ग हो जाता है, तो स्तन-वृन्त प्रादाहित हो जाते हैं और कपड़ेका स्पर्श भी उनमें सहन नहीं होता।

फास्फोरस और **रोडोडेण्ड्रन**की तरह ऋतु-परिवर्त्तन एकदम सहन नहीं होता; तूफान-विजलीके पहले रोग-वृद्धि हो जाती है। अकसर हवा और सर्दी सहन नहीं होती। पतले, क्षीण हुए रोगी; जिन्हें यक्ष्मा हो जानेकी सम्भावना रहती है। उद्भेद आप ही गायव हो जाते हैं या दवा दिये जाते हैं। हाथ-पैरोंमें जलन होती है; तलहत्थी और तलवे विस्तरके वाहर निकाले रखना चाहता है। तलवेमें जलन होनेके कारण एकदम **सल्फर**पर निर्भर न रहिये अथवा पैरमें पसीना होनेके कारण **साइलिसिया**पर एकदम विश्वास न कर वैठिये। किसी एक हीं अङ्गमें पसीना। थक्के-का-थक्का उद्भेद। थक्कोंमें खुजली। वहुत अंशोंमें ठण्डक। रोग एक ही अंशमें उत्पन्न होते हैं। सवसे वढ़कर वदबू पैरोंके पास और वगलसे निकलती है। वहुत-सी विचित्र और आश्चर्य-जनक अद्भुत अनुभूतियाँ हैं; खूव ध्यान देकर चर्मके अध्ययन कीजिये और **ग्रैफाइटिस** तथा **सल्फर**से तुलना कीजिये।

फास्फोरस
(Phosphorus)

दुर्बल धातु-प्रकृतिवालोंमें अधिकतर फास्फोरसकी वीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे कि जो वीमार ही उत्पन्न हुए हैं, कमजोर होते हुए वढ़े हैं और वहुत तेजीसे वड़े हो गये हैं; इसके उपसर्ग उनमें प्राप्त हुए हैं, तो क्षीण हो गये हों और जो तेजीसे क्षीण होते जाते हैं; जिन वच्चोंको सुखण्डी होना चाहता है और जिनमें यक्ष्माकी नींव अच्छी तरह पड़ चुकी है। कोमल, मोमकी तरह, रक्तहीन और क्षीण हुए रोगी। क्रोधी, चिड़चिड़े तथा व्यग्र व्यक्तियोंमें। इससे ही उस व्यक्तिका स्वभाव और उसकी भीतरी धातु-प्रकृतिका वहुत कुछ पता लग जाता है। वह भीतरी कष्टमें रहता है। प्रचण्ड स्पन्दन होता है, वायु-मण्डलके विद्युत-परिवर्त्तनके कारण रोग, प्रचण्ड रूपसे कलेजा धड़कना और रक्त चढ़ना। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त लड़कियोंको, जो वहुत तेजीसे वढ़ गयी है और एकाएक उनमें दुर्वलता आ गयी है। हरित रोग हो गया है तथा मासिक रजःस्रावकी गड़बड़ियाँ है। खौलना और रक्त-सञ्चय। रक्त-सञ्चयी धातु-प्रकृति। छोटे-छोटे घावोंसे भी वहुत खून जाता

है ; जरा-सा सुई गड़नेपर भी वलवलाकर बहुत-सा लाल चमकीला रक्त निकल पड़ेगा। छोटे-छोटे जखमोंसे, नाकसे, फेफड़ेसे, पाकाशयसे, मूत्राशय और गर्भाशयसे रक्त-स्राव। जखमोंसे रक्त-स्राव। खून बहनेवाले झूठे दाने पड़ना। श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त-स्राव। काले और नीले चकत्ते। चक्षु-श्वेत-पटलके नीचेतक या शरीरमें किसी भी स्थानके नीचे खून जम जाता है। खून-मिली लार ; विशृङ्खलित रक्त प्रवाहका प्रमाण या खून तरल हो गया मालूम होता है। छोटे कुचले स्थान चौड़े नीले धब्बे बन जाते हैं। नाक छिड़कनेपर बहुत-सा रक्त निकल पड़ता है। टाइफायड ज्वर, रक्त-स्रावके साथ होनेवाले निम्न प्रकारके अविराम ज्वरमें होनेवाले दानोंकी तरह छोटे छोटे दाने समूचे शरीरमें हो जाते हैं। छत्रक जातिके प्रवर्द्धन। वसाकी वृद्धि फास्फोरसका एक प्रत्यक्ष स्वरूप है और यह यकृत, हृत्पिण्ड या मूत्रपिण्डमें प्राप्त हो सकता है। सार्वाङ्गिक शोथज दशा। हाथ और पैरोंका सूजना, खासकर आरक्त ज्वरके बाद शोथज दशा। श्लैष्मिक झिल्लियाँ पीली रहती हैं जैसा कि रक्त-स्रावके बाद या निम्न-प्रकारके रोगोंमें पायी जाती है। रक्त-स्वल्पताकी स्पष्ट दशा और मांस पेशियाँ ढीली हो जाती हैं। थुलथुली मांस-पेशियाँ। पेशियोंके वसाका अपचय। जननेन्द्रियाँ लटक पड़ती हैं। स्त्रियोंमें श्रोणि-यन्त्र शिथिल पड़ जाता है, स्थान-च्युत हो जाता है या दूसरे प्रकारकी स्थान च्यूतियाँ हो जाती हैं। कड़ापन फास्फोरसका एक स्पष्ट स्वरूप है। हिलना डोलना आरम्भ करनेपर अकड़न मालूम होना। किसी अड़ियल घोड़ेकी तरह अङ्ग अकड़ जाते हैं, खासकर सवेरे। प्रत्येक अङ्गमें वातज कड़ापन। फास्फोरसमें फाड़ने और खींचनेकी तरह प्रत्यङ्गोंमें दर्द होता है। रोगी अङ्गोंमें खींचन और फाड़नेकी तरह दर्द। फास्फोरसको तकलीफें शीत ऋतुमें बदतर हो जाती हैं। साधारणतः ऐसा ही मालूम होता है, कि रोगी स्वतः शीत असहिष्णु रहता है। उसकी सभी बीमारियाँ, सर्दी, सर्दी-प्रयोगसे बदतर हो जाती हैं तथा ताप और गर्म प्रयोगसे उत्तम रहती हैं, सिवा माथे और पाकाशयकी बीमारियोंके जो, जैसा कि आगे बताया जायगा, सर्दीसे घट जाती है। फास्फोरस दुर्बल, मोच आ जानेके बाद सन्धियोंकी शिथिल दशामें बहुत लाभदायक होता है, जब लक्षण मिलते हैं। अस्थिक्षत फास्फोरसका दूसरा लक्षण है, खासकर निम्न-हनुकी ; पर दूसरे स्थानकी अस्थियोंके अस्थिक्षतमें भी यह उपयोगी होता है। फाड़नेकी तरह दर्दके साथ खोपड़ीका अस्थ्यार्वुद। फाड़ने और छेदनेकी तरह दर्द खासकर रातके समय। फास्फोरसने नाक और कानका गूमड़ (Polypi) आरोग्य किया है। कण्ठ-माला तथा गांठोंकी सूजन। ग्रन्थियाँ बढ़ जाती हैं, खासकर बेलिसकी तरह कुचल जानेपर दुर्बल, पीले, रोगियल व्यक्तियोंको, जिन्हें अतिसार होता है, जिन्हें क्षयकर रोग होते हैं, फोड़े, भगन्दर, साथ ही क्षय ज्वर होता है, उनके ग्रन्थियोंके रोग। पीला पीवका स्राव होनेवाले फोड़े। फास्फोरसके प्रयोगसे मारात्मक प्रवर्द्धन बहुत कुछ रोक दिये जाते हैं, जब लक्षण सादृश्य रहता है। हर जगह जलनकी तरह दर्द अनुभव होता है। मस्तिष्कमें जलन, चर्ममें जलन। पाकाशयमें, वक्षमें तथा बहुतसे अंशोंमें जलन।

फास्फोरसका रोगी थोड़ी भी वाह्य आवाज, गन्ध, शोर-गुल, स्पर्श प्रभृतिके प्रभावोंसे बहुत ज्यादा असहिष्णु रहता है। थोड़े-थोड़े कारणोंसे वह शारीरिक या मानसिक क्लान्त

हो पड़ता है। थोड़ी-सी बातसे उसका सारा शरीर काँपने लगता है, जैसे हाथोंसे काम लेनेपर, थोड़े भी परिश्रमसे, दुर्बलतासे, खाँसनेपर। बहुत अधिक दर्जेकी कमजोरी मौजूद रहती है; अन्तमें पक्षाघात या पाक्षाघातिक दुर्बलता आ जाती है, जैसी कि बहुत तरहके सान्निपातिक (Typhoid) ज्वरोंमें होती है, साथ ही रोगी पैतानेकी ओर सरक जाता है, सभी पेशियाँ काँपने और हिलने लगती हैं। प्रत्यङ्गोंमें फाड़नेकी तरह दर्द और सुरसुरीके साथ पक्षाघात। संन्यास रोग (Apoplexy) के साथ होनेवाला पक्षाघात। पेशियोंमें धक्का देने और फाड़नेकी तरह, जैसा कि पक्षाघातमें होता है। पक्षाघात ग्रस्त अंशोंकी अकड़न। फाड़नेकी तरह, खींचन और जलनकी तरह समूचे शरीरमें दर्द। फास्फोरसका रोगी मालिश करवाना चाहता है; वह अमूमन नींदके बाद अच्छा रहता है। हमेशा विश्राम ही खोजा करता है। हमेशा क्लान्त। फास्फोरसके रोगीको बहुत उत्तेजना हुआ करती है। कम्पन-शीलता। पागलकी तरह विचार। उत्तेजनशीलता, जिससे वह रातभर जागता रहता है। प्रचण्ड भावनाएँ। आनन्द या आमोदमें भी उत्तेजनशीलता। मन या तो बहुत सक्रिय रहता है अथवा याददाश्तकी कमीके साथ असीम धीमा। मन तथा शरीरका उपदाह तथा थोड़ी भी मानसिक चेष्टा करनेपर मन बहुत सुस्त पड़ जाता है और थोड़ा भी परिश्रम करनेपर शरीर क्लान्त हो पड़ता है। घबड़ाना, अन्धकारमय भविष्य देखना। यह भय, कि कुछ होनेवाला है। चन्द्रमाकी रोशनीमें चिन्तित। अकेला रहनेपर चिन्तापूर्ण। आशंकापूर्ण। अन्धड़-तूफानके समय आशङ्कापूर्ण, जिससे बहुतसे उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं; कलेजा धड़कना, अतिसार और कम्पन, समूचे शरीरका काँपना। भयके कारण अजीर्ण हो जाना। शामको भय, मृत्युका भय। ऐसा भय कि अद्भुत वृद्ध चेहरे कोनेसे उसकी ओर झांक रहे हैं। एकदम अद्भुत उन्मादपूर्ण ख्यालोंसे भरा, उन्मादकी सीमापर जा पहुँचता है। मानसिक परिश्रम सहन करनेकी शक्तिका न रहना। संन्यास रोगका भय। किसी विषयको सोचनेपर सर-दर्द और श्वास-कष्ट सम्मिलित रूपसे हो जाता है, इसके साथ ही आशङ्का या पाकाशय-गह्वरमें धँसते जानेका भाव हो जाता है। उसका भय पाकाशय-गह्वरमें आरम्भ होता मालूम होता है; संज्ञा-शून्यता या उदासीनता; अपने मित्र और पारिपार्श्विकोंसे उदासीन। अपने बच्चोंसे उदासीन। किसी भी सवालका जवाब नहीं देता; अपने परिवारकी या उनके सम्बन्धकी बातोंकी खबर नहीं लेता; बहुत धीरे-धीरे सवालका जवाब देता है, बहुत शिथिलता पूर्वक सोचता है, चकराया या तन्द्राभिभूत-सा मालूम होता है। सभी चीजें अन्धकारमय दिखाई देती हैं, अपने जीवनसे ऊबा रहता है, उदास और कुछ नहीं कहता। हताश; व्याधि-शङ्काका एक स्पष्ट रोगी। रोना, उदास और गुल्मवायु-ग्रस्त; अपना शरीर खोल देता और लिङ्गेन्द्रिय दिखाता है। प्रचण्ड, बकवादी, प्रलापग्रस्त। निम्न-श्रेणीके ज्वरोंका प्रलाप या उन्मादका सकम्प प्रलाप (Mania a potu)। क्रोध और असीम प्रचण्डताके साथ निद्राकालमें उन्मादका आक्रमण होता है, जिससे कि कोई भी उसके पास जानेका साहस नहीं करता और यही बढ़कर जड़ता, मूर्खता, दुर्बल मस्तिष्क और बेहूदापनपर जा पहुँचता है। अत्यधिक मानसिक परिश्रम और लगातार आँखोंपर जोर पड़नेके कारण मस्तिष्ककी क्लान्ति। फास्फोरसके सभी उपसर्गोंके साथ सरमें चक्कर आना तो एक बहुत ही साधारण-सी बात है। चलनेके समय

नशेमें रहनेकी तरह डगमगाता है। खुली हवामें सरमें चक्कर आना ; भोजनके बाद सरमें चक्कर ; शामके वक्त सरमें चक्कर। माथेमें भार और विह्वलता और यह बराबर जारी रहता है। माथेकी बहुत ज्यादा कमजोरी। मानसिक परिश्रम करनेपर ये सभी मानसिक लक्षण बदतर हो जाते हैं ; शोरगुलसे बढ़ जाते हैं। अन्धेरेमें सभी लक्षण बदतर रहते हैं ; अकेले रहनेपर बदतर ; कभी-कभी सङ्गीतसे भी बदतर ; उत्तेजनासे बदतर और पियानो बजानेपर बदतर हो जाते हैं।

फास्फोरसका सर दर्द रक्त-सञ्चयी और टपकका होता है। खून माथेपर दौड़ जाता है। ठण्डसे सर-दर्द घटता है और तापसे बढ़ता है, हिलने-डोलनेपर बढ़ता और आराम करनेसे घटता है, लेटनेपर बदतर हो जाता है। रोगीको अकसर बाध्य होकर माथेपर अत्यधिक दबावके साथ और सर्द प्रयोगके साथ तनकर बैठना पड़ता है। चेहरा तमतमाया और गर्म रहता है ; मस्तिष्कमें जलन। गर्म कमरा, गर्म आस पासकी चीजें, गर्म भोजन, गर्म पानीमें हाथ रखना सर-दर्दको बढ़ा देगा। पाकाशयकी तकलीफोंकी तरह सर-दर्दकी तकलीफें तापसे, गर्म प्रयोगसे और गर्म भोजनसे बढ़ जाती हैं तथा ठण्डी चीजोंसे अच्छी रहती है ; पर शरीरकी तकलीफें गर्माहटसे अच्छी रहती हैं तथा सर्दीसे बदतर हो जाती हैं। बहुत ही प्रचण्ड सर-दर्द होता है और अकसर या तो इसके पहले भूख लगती है या साथ-ही-साथ भूख लगती है। वमनके साथ सर दर्द, लाल चेहरा और बहुत थोड़ा पेशाब ; मूत्र विकार-जनित सर-दर्द ; प्रचण्ड स्नायु-शूलका दर्द— झटका देने, फाड़ने और माथेके भीतरसे खोंचा मारनेकी तरह होता है ; माथेमें दबावका दर्द। समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द, मानसिक परिश्रमके कारण होनेवाला सर-दर्द। माथेमें बहुत ताप तथा चेहरा और जबड़ेकी पेशियोंका कड़ापन। यह कभी कभी ठण्डके साथ सरके पीछे भी रहता है। मस्तिष्कके भीतरसे झटका। शोरगुल तथा रोशनीसे सर-दर्द बदतर हो जाता है, माथेका संन्यास रोग जनित रक्त-सञ्चय। इसने नया मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोग और मस्तिष्कोदकके समान रोगका लक्षण आरोग्य किया है। मस्तिष्ककी झिल्लीका पुराना प्रदाह ; मस्तिष्ककी कोमलता ; जड़ता ; उन्माद। प्रचण्ड सर-दर्द ; मस्तिष्ककी क्षीणता तथा सुषुम्ना-शीर्षक (Medulla oblongata) की कोमलता। सरकी त्वचा रूसीसे भरी रहती है ; झव्वे-के-झव्वे केश झड़ जाते हैं, जिससे इधर-उधर खल्वाट पर जाता है। मस्तक-त्वचामें बहुत ताप ; मस्तक-त्वचा और चेहरा तथा ललाटमें इस तरहका तनाव, मानो एक पट्टी बँधी है। माथेके केश उड़ गये हुए स्थानोंमें भूसी-भरे उद्भेद ; माथेमें अस्वाभाविक अस्थि-प्रवर्द्धन। अत्यधिक उत्तप्त हो जानेपर माथेकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। ऐसा अनुभव होना, मानो केश खींचे जा रहे हैं ; मस्तक-त्वचामें बहुत यन्त्रणा ; सर दर्दके समय केश लटकाये रखना पड़ता है।

आँखके लक्षण भी बहुत ज्यादा है। जलन, लाली, रक्त-सञ्चय, रक्त-वाहिनियोंकी विवृद्धि। चीजें लाल दिखाई देती हैं और अकसर दृष्टि-क्षेत्रमें नीले या ये पदार्थ कभी-कभी उसी तरह हरे और भूरे दिखाई देते हैं, जैसे कि मोतियाबिन्द हो जानेके पहले होते हैं।

आँखके सामने रङ्ग भी काले दिखाई देते हैं। दृष्टि-शून्य रहती है; पढ़नेके समय आँखें काम नहीं करतीं, सवेरे और चन्द्रमाकी रोशनीमें अच्छा देखता है। फास्फोरसके अन्य सार्वाङ्गिक लक्षणोंकी तरह आँखके लक्षण भी विश्राम करनेपर अच्छे रहते हैं। मूर्च्छाकी तरह क्षणिक अन्धत्व; एकाएक ऐसा मालूम होता है, कि अन्धा हो गया, चाक्षुषी नाड़ीका पक्षाघात; बिजलीका झटका लगनेके बाद या आकाशकी बिजलीका आघात लगनेपर अन्धापन। इसने धुन्ध (Glaucoma) का रोग आरोग्य किया है। इसने कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाहमें चक्षु-चित्रपत्रका प्रदाह आरोग्य किया है। इसने कांचकी तरहके चक्षु-आवरणका धुन्धलापन आरोग्य किया है। इसने आँखकी बहुत-सी पेशियोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलता आरोग्य की है। इसने तृतीया स्नायुओंका पक्षाघात उस समय आरोग्य किया है, जब पलकें गिर जाती थीं, आँखोंका गति प्रवण प्रदाह। जलन, लाली और दर्द ठण्डे प्रयोगसे घटते हैं, पलकें ऐंठती और काँपती हैं; पलकोंका फूलना; आँखोंके चारों तरफ बहुत कालापन; आँखोंके चारों तरफ बड़े-बड़े घेरे। आँखको आक्रान्त करनेवाले सांघातिक प्रवर्द्धनोंकी यह बहुत लाभदायक दवा है तथा रोगकी अभिवृद्धिको बहुत कुछ रोक देता है। माथे और मनके लक्षणकी तरह आँखके लक्षण ऐसे हैं, जो अकसर मस्तिष्कका काम करनेवालोंमें उत्पन्न होते हैं; चमकीली रोशनीमें काम करनेपर बहुत-सा रक्त माथेमें चढ़ जाता है, जिससे आँखें तथा अन्य अंशोंकी भी तकलीफ होती है।

फास्फोरसमें एक विचित्र ढङ्गका बहरापन है। फास्फोरसका एक आश्चर्यजनक स्वरूप यह है, कि मानव-शब्दका संयोग उसकी समझमें नहीं आता। सुननेमें तकलीफ होती है। कभी-कभी उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कानोंके ऊपर कोई चीज है; मानो कान ढके हुए हैं, जिससे कि शब्द तरंगें रुक जाती हैं। कानोंमें भयानक खुजली, बाहरी कानमें रक्त सञ्चय, खुजली, फाड़नेकी तरह दर्द; टपक; कानके भीतर जलन करनेवाला दर्द। इसने कानके भीतरका गूमड़ आरोग्य किया है।

नाकके लक्षण भी अनगिनत हैं, अदम्य नाककी सर्दी। नाकमें सर्दी लग जाती है; पर फास्फोरसकी सर्दीका साधारण स्थान वक्ष है तथा उसकी अधिकांश तकलीफें वक्षमें ही उत्पन्न होती हैं; परफास्फोरस नाककी श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह और नाककी सर्दी आरोग्य करता है। नाकमें कष्टप्रद सूखापन रहता है, खूनकी तरह पानी लगातार नाकसे चूआ करता है और छींकें आया करती हैं। पर्यायक्रमसे बार-बार नाक सूखती और नाकसे पानी बहता है, गल-क्षत (Sore throat) के साथ नाककी सर्दी; नथुनोंका रुक जाना; आरक्त ज्वरमें बहुत छींक और नाकका रुकना पर्यायक्रमसे नाकके सूखापनके साथ होता है; नथुने हरे श्लेष्मासे भरी रहती हैं, हरापन लिये पीला, खूनकी लकीरें पड़ श्लेष्माका बहुत ज्यादा नाकसे स्राव होता है; सवेरेके वक्त बदतर हो जाता है; नाकसे बदबू आता है; नाक छिड़कनेपर बार-बार नाकसे रक्त गिरना; नाकसे बहुत ज्यादा चमकीले लाल रक्तका स्राव; नाकका फूलना, लाल और चमक; बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु; नाककी हड्डीका अस्थि-क्षत। इसने नासार्बुद, खासकर खून बहनेवाला नासार्बुद आरोग्य किया है। नाकका पंखेकी तरह हिलना, **लाइकोपोडियम**की तरह।

फास्फोरसके रोगीका चेहरा रोगियल, मिट्टीके रङ्गका, धँसा और पीला रहता है, जैसा कि यक्ष्माके रोगियोंका रहता है तथा जिन्हें फेफड़ेका यक्ष्मा होना चाहता है तथा जिन्हें बद्धमूल धातुगत रोग रहते हैं, बदरंग, रक्त-स्वल्प चेहरा। रङ्ग परिवर्त्तनशील रहता है; फूला, शोथ-ग्रस्त चेहरा, आँखोंके नीचे फूला-फूला, ओंठ और पलकें फूलीं। इसके अलावा गालोंपर लाल दाग, जो क्षय ज्वरमें दिखाई देता है, क्षयकी तमतमाहट। चेहरा और चर्मका तनाव; फाड़ने, खोंचा मारनेकी तरह समूचे चेहरे और आँखोंके पास दर्द, कनपटी, शिरोर्द्ध-प्रदेशसे नीचे, गालकी हड्डीके दोनों उभारोंतक होता है। दाँतोंमें झटका देने और फाड़नेकी तरह दर्द। दाँतोंका दर्द अकसर गर्मीसे घटता है; पर सरका दर्द सर्दीसे घटता है। बोलने और भोजनके समय तथा भोजके बाद दाँतका दर्द बदतर रहता है। इसमें चेहरेका भयङ्कर स्नायु-शूल होता है, जो जबड़े और कनपटियोंको आक्रान्त करता है, चेहरा गर्म और चित्ती चित्ती रहता है; बोलने और भोजन करनेपर बढ़ जाता है। इसमें निम्न-हनुका अस्थि क्षत है, जिसके साथ बहुत ताप, जलन और नासूरकी तरह छेद रहते हैं; दाँत और मुख-मण्डलका स्नायु-शूल; रातमें खूब कपड़ा लपेटे रहना पड़ता है; झोंककी हवावाली ऋतुमें बदतर रहता है। चेहरा रोगियल, धँसा, उतरा रहता है, मानो कोई घातक बीमारी होनी चाहती है।

ओंठ सूखे चमड़ेकी तरह, सूखे और रक्तस्रावी रहते हैं। ओंठ काले हो जाते हैं, भूरे, फटे-फटे जैसे कि निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें होते हैं तथा निम्न हनुमें अस्थि-क्षत हो जाता है; कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह, खासकर जब उसमें पीब हो जाता है या नासूर पड़ जाता है। दाँतोंका अति शीघ्र क्षय हो जाना। मसूढ़ोंसे रक्त-स्राव होता है और वे दाँतोंसे अलग हो जाते हैं।

दाँत उखड़वानेके बाद यदि चमकीला लाल रक्त स्राव हो तो फास्फोरस बहुत लाभदायक होता है, जीभ फूली रहती है और बोलनेमें तकलीफ होती है। ठीक-ठीक बोलना मुश्किल होता है। मुँहका स्वाद तीता या खट्टा रहता है, खासकर दूध पीनेके बाद खट्टा हो जाता है, कभी-कभी नमकीन या मीठापन लिये रहता है; भोजनके बाद तीता। सवेरे हाइड्रोजेन सल्फाइडका स्वाद। जीभ रोएँकी तरह ढँकी रहती है; कभी-कभी खड़ियेकी तरह सफेद और कभी पीली रहती है; सूखी, फटी और रक्तस्रावी, दाँतोंपर मैलकी कीट। मुँहकी, मसूढ़ोंकी, ओंठोंकी और जीभकी श्लैष्मिक झिल्लियोंपर पपड़ियाँ जमती हैं। जीभ फूली और जीभ काँटे उठे हुए रहते हैं।

मुँह और कण्ठका सूखापन, घाव, मुँह और कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी खाल उधड़ी। मुँह छालोंसे भरा रह सकता है, जैसा कि दूध पिलानेवालियोंके मुँहमें घाव होता है, खून बहनेवाले जख्म द्वारा खाया हुआ स्थान; स्तनका दूध पिलानेवालियोंका मुँहका घाव। मुँहसे बहुत-सी पानीकी तरह और खून-मिली लार बहती है। लार बहुत ज्यादा रहती है, स्वाद मीठा, नमकीन या फीका रहता है। कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ भी मुँहकी तरह ही रहती हैं। बहुत सूखापन, रुखड़ापन, कच्चापन, खाल उधड़ना, रक्त बहना और तालुमूलमें

प्रदाह ; कण्ठमें प्रदाह ; कण्ठमें रूई रहनेकी तरह अनुभूति ; कण्ठमें मखमल रहनेकी तरह अनुभव होना। तालुमूल बहुत फूले रहते हैं। कण्ठमें बेहद दर्द और कण्ठमें जलन, जो अन्न-नलीतक फैल जाती है। कोई भी खाद्य निगलनेकी शक्तिका न रहना, क्योंकि अन्ननली पक्षाघात-ग्रस्त रहती है अथवा कण्ठ और अन्ननलीकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंका तीव्र प्रदाह रहता है ; कण्ठनलीका सङ्कोचन। फास्फोरसमें प्रचण्ड भूख रहती है और खानेके बाद तुरन्त ही फिर भूख लौट आती है। शीतावस्थाके समय खाना ही पड़ता है। रातमें खानेके लिये बाध्य होकर उठना पड़ता है। मूर्च्छाकी तरह मालूम होता है और बाध्य होकर खाना पड़ता है। सर-दर्दके समय राक्षसी भूख ; वह जानता है, कि प्रचण्ड भूखके कारण सरमें दर्द हो रहा है, समय बाँधकर होनेवाले सर-दर्दमें। भूख अकसर आक्षेपिक रहती है ; क्योंकि समय-समयपर एकदम खानेकी इच्छा नहीं होती। इसके अलावा रोगी खाना चाहता है, पर ज्योंही उसको खाना दिया जाता है वह इनकार कर देता है। फास्फोरसका एक स्थायी स्वरूप प्यास है। नयी और पुरानी बीमारियोंमें प्रचण्ड पिपासा रहती है ; बरफकी तरह ठण्डे पानीका प्यास। कुछ स्फूर्तिदायक चाहता है ; ठण्ठी चिजें पीनेपर क्षणभरके लिये ह्रास हो जाता है, पर ज्योंही पानी पेटमें गर्म हो जाता है, फिर प्यास लग आती है। पाकाशयमें पानीके गर्म होते ही वमन होने लगता है, पर ऐसी बहुत-सी दशायें हैं, जब कि बरफकी तरह ठण्डा पानी ठीक बैठता है। अदम्य पिपासा। जब पानीकी कै हो जाती है, हमेशा अदम्य प्यास रहती है। वह ठण्ठा खाद्य और ठण्डे पेयकी इच्छा करता है ; स्फूर्तिदायक, मसालेदार चीजें, रसदार चीजें, शराब और खट्टी चीजोंकी इच्छा। फास्फोरस शराबियोंके शराबकी प्रचण्ड इच्छाकी अकसर आरोग्य कर देता है। यह केवल पाकाशयकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंके रक्त-सञ्चयसे समता रखता है। मिठाई, मांस, उबाला हुआ दूध, नमकीन मछली, बियर नामक शराब, हलवा, चाय और काफीसे घृणा।

भोजन करनेपर फास्फोरसके बहुतसे उपसर्ग घट जाते हैं। फास्फोरसके स्नायविक लक्षण रोगीको खानेके लिये बाध्य करते हैं और खानेके बाद उसे कुछ देरतक अच्छा मालूम होता है और इसके बाद उसे फिर खाना पड़ता है, अन्यथा स्नायविक लक्षण फिर आ जायँगे। वह अकसर अच्छी तरह भोजनके बाद सो सकता है और तबतक सो नहीं सकता, जबतक वह कुछ खाता नहीं है।

पाकाशयके लक्षण भी बहुतसे हैं—दर्द, मिचली, वमन, जलन। ठण्डी चीजोंसे पाकाशयके उपसर्ग दब जाते हैं और गर्म चीजोंसे बढ़ जाते हैं। गर्म पानीमें हाथ रखनेसे, गर्म कमरेमें रहनेसे, गर्म चीजोंसे और पाकाशयमें गर्म चीजें लेनेपर मिचली और वमन पैदा हो जाता है। यदि बिना वमन हुए कोई स्त्री गर्म पानीमें अपना हाथ नहीं डाल सकती तो इससे गर्भावस्थाकी मिचली आरोग्य हो जाती है। फास्फोरसका दूसरा लक्षण है खायी हुई चीजकी डकार आना। अन्तिम बारके भोजनसे जबतक पाकाशय खाली नहीं हो जाता, तो मुँहभर खाया हुआ अन्न डकारमें आ जाता है। पाकाशयमें कुछ ठण्डी चीज लेनेके सिवा बराबर मिचली बनी रहती है। ज्योंही पाकाशयमें पानी गर्म होता है, वमन हो जाता है। यह **क्लोरोफार्मके** वमन और मिचलीसे बहुत कुछ सम्बन्ध रखता है और फास्फोरस अस्त्र-चिकित्सकोंका बड़ा

भारी दोस्त है ; क्योंकि वह हमेशा पाकाशयका **क्लोरोफार्म**का प्रभाव फास्फोरससे दूर कर सकता है। रक्तका वमन तथा खट्टे तरलोंका चूरकी प्रचण्ड वमन ; पित्त और श्लेष्माका वमन ; काले पदार्थोंका, काफीके तरह पदार्थोंका वमन। पाकाशयमें खालीपनका भाव, धँसते जानेका विचित्र भाव। यह कभी-कभी **सलफर**की तरह ठीक ११ बजे दिनके समय होता है। दबावकी तरह दर्द, जलनकर दर्द, फाड़नेकी तरह पाकाशयमें दर्द, भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द, पाकाशय गह्वरमें स्पर्श-असहनीयता ; पाकाशय प्रदाह। पाकाशय कर्कट-रोगकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है, जिसमें काफीके चूरकी तरह वमन और जलन होती है। सर्दी ; जमी रहती है, पाकाशय-गह्वरमें ; पाकाशयमें रह-रहकर छुरी मारनेकी तरह, दर्द होता है। पाकाशयका दर्द, क्षणभरके लिये बरफ-सी सर्द चीजोंसे घट जाता है, पाकाशयका आक्षेपिक संकोचन ; पाकाशयसे रक्त-स्राव ; जमे हुए रक्तका बहुत ज्यादा मात्रामें वमन ; बहुत दिनोंकी मन्दाग्नि ; बहुत आध्मान होना ; भोजनका मुँहमें भर आना ; पाकाशय और तलपेट तना हुआ ; पाकाशयमें घाव।

यकृतमें भी फास्फोरसके बहुत से लक्षण उत्पन्न होते हैं। यकृतमें रक्त-संचय, भरापन, दर्द, कड़ापन, यकृतके वसाका अपचय, यकृतकी विवृद्धि। यकृत-रोगकी फास्फोरस एक बहुत ही लाभदायक दवा है ; कड़ा, बढ़ा हुआ यकृत . पाकाशय और यकृतके लक्षणोंके साथ साधारणतः कामला हो जाता है।

बहुत ही असहिष्णु तलपेट ; छूनेसे दर्द ; गुड़गुड़ाहट। और गड़गड़ाहट। उदरमें खालीपनकी अनुभूति ; उदरमें धँसते जानेका भाव। उदर शिथिल हो गया-सा मालूम ; होता है ; लटक जानेकी तरह अनुभूति और ऐसा मालूम होना, मानो बहुत बड़ा बोझ रखा हुआ है। टाइफायड ज्वरकी तरह फूला हुआ उदर फास्फोरसका एक स्पष्ट लक्षण है, एक विचित्र खलखलाहट, जो पाकाशयमें आरम्भ होता है और खलखलाकर आँतोंमें नीचे उतर जाती है, इसके साथ अनैच्छिक रूपसे पाखाना लग आता है। यह सान्निपातिक ज्वरमें होता है। **आर्सेनिकम**में होनेवाली गड़गड़ाहट अन्न-नलीमें नीचेकी ओर होती है। आध्मान, उदर-शूल, छेदने, फाड़ने, काटनेकी तरह समस्त तलपेटमें दर्द ; तलपेटमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; तलपेटमें प्रचण्ड स्नायु-शूलका दर्द ; आँतोंमें तथा मलद्वार और लिंगेन्द्रियके मध्य-स्थानमें प्रदाह ; ऐपेण्डिसाइटिस (उपान्त्र-प्रदाह)। तलपेटपर भूरे, पीले धब्बे ; टाइफायड ज्वरमें उदरपर छोटी-छोटी बैंगनी फुन्सियाँ। सरलान्त्र और मलके भी लक्षण फास्फोरसमें भरे हैं, आँतोंसे अनैच्छिक रूपसे स्राव होता है, तरलका बहुत ज्यादा स्राव, बदबूदार, खूब जोरसे मल निकलना, अत्यन्त बदबूदार, पीला, पतला दस्त। रोगी मृत वत् पड़ा रहता है, मल अनैच्छिक रूपसे निकलता है ; सफेद आमके दस्त, आमके दस्त जिसके साथ चर्बीके टुकड़े उतरते रहते हैं, बराबर खुले हुए मलद्वारसे अनवरत रस चुआ करता है। सान्निपातिक ज्वरमें तथा निम्न-श्रेणीके अन्य रोगोंमें आँतोंसे रक्त-स्राव ; मांसके धोवनकी तरह खून-मिला स्राव, आप-ही-आप और जरा भी हिलने डोलनेपर होने लगता है। पाखाना होनेके समय सरलान्त्रमें जलन। सरलान्त्रका बाहर निकल आना, बवासीरके मसेका बाहर निकल आना। तेज, सुई गड़नेकी तरह दर्द गुदास्थिसे लेकर मस्तिष्ककी सतहतक मेरुदण्डमें,

जिससे गर्दन पीछेकी ओर खिंच जाती है और यह लक्षण पाखानेके समय होता है। यह अनैच्छिक रूपसे पाखाना होनेके समय हुआ है। पाखाना होनेके बाद सरलान्त्रमें यन्त्रणा-पूर्ण अकड़न, मलद्वारमें जलन, प्रचण्ड कूथन ; उदरमें धँसते जानेका भाव, बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है, क्लान्ति और मूर्च्छा। किसी पीपेसे पानीकी धार गिरनेकी तरह बहुत ज्यादा दस्त आता है। यह हैजा फैले रहनेके समयके अतिसार तथा सामान्य हैजाके लिये उपयोगी है। कोमल, पतला मल होनेवाली संग्रहणी (Chronic diarrhœa) के लिये यह लाभदायक है। बच्चोंके हैजाकी भी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है ; खून-मिली आमके साथ होनेवाले आमाशयमें (रक्तामाशय), प्रचण्ड कूथनके साथ थोड़ा-सा पाखाना होनेपर यह लाभ करता है। अदम्य कब्जको भी यह आरोग्य करता है। मल कड़ा लम्बा और संकरा—किताबोंमें कुत्तेके मलकी तरह बताया गया है। वृद्ध पुरुषोंको पर्यायक्रमसे अतिसार और कब्ज। सरलान्त्रकी अकड़न। आँतोंका पक्षाघात, जिससे पाखानेके समय काँखना असम्भव हो जाता है। आँतोंसे रक्त-स्राव। इसने सरलान्त्रका गूमड़ आरोग्य किया है। सरलान्त्रका प्रदाह। इसने बहुत बार खूनी, बाहर निकला बवासीरका मसा आरोग्य किया है। जलन होनेवाला बवासीरका मसा। इसने मलद्वारके फटे घाव आरोग्य किये हैं (भगन्दर)। इससे आँतोंके बहुत-से लक्षणोंमें एक यह भी है, कि मलद्वार ऐसा मालूम होता है, मानो एकदम खुला हुआ है।

मूत्रपिण्डकी बीमारियोंकी, खासकर बहुमूत्रकी फास्फोरस एक बहुत ही लाभदायक दवा है, जब पेशाबमें चीनी आती है तथा बरफकी तरह ठण्डी चीज और बरफकी तरह ठण्डे पानीकी बहुत ज्यादा प्यास रहती हैं। धीरे-धीरे दुबले होते जाना ; क्रमशः कमजोरी बढ़ते जाना ; माथेमें बहुत ज्यादा ताप ; हाथ-पैर ठण्डे और पेशाबमें चीनी ; मूत्रकी चर्बीकी अपचय फास्फोरस आरोग्य कर देगा। मूत्राशयमें पथरी। यद्यपि मूत्राशय भरा है ; पर पेशाब करनेकी इच्छा नहीं होती। एक तरहकी पाक्षाघातिक दुर्बलता रहती है, जो शरीरकी सभी पेशियोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलताकी समता करती है। वह पेशाब करनेके समय जोर नहीं लगा सकता ; क्योंकि इस तरह काँखनेपर मूत्राशय-प्रदेशका दर्द बढ़ जाता है। बहुत ज्यादा, पीला, पानीकी तरह पेशाब ; बार-बार और थोड़ा या एकदम ही रुका हुआ पेशाब। गदला, सफेदी लिये पेशाब, दूधकी तरह बिगड़ा। अण्डलाल मिला पेशाब। नींदके समय आप ही-आप पेशाब हो जाना। मूत्रनलीमें फाड़नेकी तरह दर्द, मूत्रनलीमें ऐंठन और जलन। समय बाँधकर होनेवाला स-वमन सर-दर्दके पहले कभी-कभी थोड़ा पेशाब होता है और कभी-कभी बहुत ज्यादा पानीकी तरह पेशाब होता है।

पुंलिंगेन्द्रियके फास्फोरसके बहुत-से लक्षण हैं। प्रचण्ड कामेच्छासे रोगी पागल हो उठता है। बार-बार लिंगोद्रेक होता है तथा दिन-रात दर्द हुआ करता है। बिना अश्लील स्वप्न देखे ही रातमें स्वप्न-दोष हो जाता है। नमकका बहुत अधिक व्यवहारके कारण इन्द्रिय-दौर्बल्य। अत्यधिक उत्तेजना और गुप्त व्यभिचारके बाद ध्वजभङ्ग, जिसके पहले लिंगेन्द्रियमें बहुत ज्यादा उत्तेजना होती है। दिन-रात बार-बार, पतला, लसदार, वर्णहीन तरलका मूत्र-पथसे स्राव हुआ करता है। मेरुदण्डके रोगके साथ अत्यधिक काम-चरितार्थ। कड़ा

पाखाना होनेके समय मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव। मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी विवृद्धिके कारण पुराना मूत्रनलीका स्राव ; पुराने सूजाकका स्राव। अण्ड तथा शुक्र-रज्जुमें सूजन और यन्त्रणा ; अण्ड तथा शुक्र-रज्जुका प्रदाह। सूजाकके बाद होनेवाला अण्डवृद्धि (Hydrocele) की बीमारी इसने आरोग्य की है।

स्त्रियोंके लिये भी यह समान रूपसे लाभदायक है। प्रचण्ड कामोत्तेजनपर निर्भर माना जानेवाला बहुत-सा वन्ध्यत्व इसने आरोग्य किया है। सङ्गमसे अनिच्छाके साथ प्रचण्ड कामोत्तेजन। डिम्बाशयमें भयङ्कर दर्द, जो ऋतु-स्राव कालमें जांघोंके भीतरकी तरफ फैल जाता है, यह डिम्बाशयके प्रदाहके कारण होता है। ऋतुकालमें और गर्भावस्थामें या रक्त विषाक्त हो जानेके कारण जरायुका प्रदाह। जरायुसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, रक्त लाल चमकीला, प्रसवके बाद थक्का-थक्का रक्त, रजःस्रावके समय तथा सन्धि-कालमें बहुत ज्यादा रक्तस्राव। कर्कटीया रोग (Cancerous affections) के कारण उत्पन्न बहुत ज्यादा और बार-बार जरायुसे रक्त-स्राव। मासिक ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले हो जाता है, चमकीले लाल रक्तका स्राव होता है, बहुत दिनोंतक होता रहता है और मात्रामें भी बहुत ज्यादा होता है ; रजःस्रावके समय हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं ; मिचली ; पीठमें इस तरहका दर्द, मानो टूट गयी है ; आँखोंके चारों तरफ नीला घेरा ; मांसका क्षय ; बहुत भय। खाँसीके साथ यक्ष्मामें मासिक रजोरोध भी इसमें है। नाकसे रक्त-स्राव होना और बलगमके साथ खून आना। प्रचण्ड कामोत्तेजनके कारण गुप्त पाप करना पड़ता है। बहुत कमजोरीके साथ अत्यधिक श्वेत-प्रदरका स्राव ; ऋतु-स्रावके बदले श्वेत-प्रदरका स्राव ; सफेद, पानीकी तरह श्वेत-प्रदरका स्राव, कटु, खाल उधेड़ देनेवाला ; दूधकी तरह श्वेत-प्रदर, चलनेके समय बहुत अधिक स्राव। श्वेत-प्रदरका स्राव इतना खाल उधेड़नेवाला होता है, कि जननेन्द्रियपर फफोले पड़ जाते हैं। योनिमें जलन और कुटकुटी। योनिसे ऊपरकी ओर श्रोणिदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; जब सङ्गम-कालमें प्रचण्ड उत्तेजना होती है, तो योनिमें अनुभूतिका अभाव हो जाता है, मानो सुन्न पड़ गया है। फूलगोभीकी तरह जननेन्द्रियपरके मसे तथा अन्य प्रवर्द्धन तथा योनि-पथमें मसे। खून बहनेवाले मसे। बाह्य जननेन्द्रियपर उभरे हुए अर्बुद। भगोष्ठकी शोथज सूजन ; बहुत रक्त-स्रावके साथ फूलगोभीकी तरह उभार। दर्द भरे; कड़े, बड़ी गांठ स्त्री स्तन-ग्रन्थिमें हो जाती है। स्तनका तन्तुमय अर्बुद (Fibroid tumors), बहुत ज्यादा रक्त-स्रावके साथ जरायुका तन्तुमय अर्बुद।

गर्भावस्थाके समय और स्तनसे दूध पिलानेके समय प्रचण्ड कामेच्छा ; गर्भावस्थामें वमन। बहुत सुस्ती, डूबते जाना और कम्पन, सूतिकाक्षेप (Puerperal Convulsions) ; पीठमें ऐसा दर्द मानो टूट जायगी। समय न रहनेपर भी स्तनमें बहुत ज्यादा दूध होना। बहुत ताप, भार और पीबके साथ स्तन-ग्रन्थियोंका प्रदाह। स्तनका विसर्प या जननेन्द्रियका।

सवेरे स्वरभङ्गके साथ स्वर-यन्त्रका प्रदाह ; खसखसी आवाज ; स्वर-यन्त्रमें ठण्डी हवा और स्पर्शकी बहुत असहिष्णुता , बोलनेपर स्वर-यन्त्रमें जलन और दर्द ; स्वर-रज्जुमें

दुर्बलता ; वातचीतके समय स्वर-यन्त्रमें भयानक चुनचुनी ; स्वर-यन्त्रमें सङ्कोचन और अकड़न ; स्वर-यन्त्रमें खाँसीका लगातार उपदाह ; स्वर-यन्त्रका यक्ष्माकी दशा ; रक्त-स्राव ; स्वरका क्षय ; स्वर-यन्त्रमें दर्दके कारण एक शब्द भी वोल नहीं सकता ; स्वर-यन्त्रमें मखमल रहनेकी अनुभूति ; स्वर-यन्त्रकी खाल उघड़ना और कुटकुटी। फास्फोरसने क्रूपके, झिल्लीमय क्रूपके, वहुतसे रोगी आरोग्य किये हैं, जब सभी लक्षण मौजूद थे। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनसे, उत्तप्त होनेपर या सर्दी स्वर-यन्त्रमें वैठ जाती है, जिससे आवाजका क्षय हो जाता और स्वरभङ्ग पैदा हो जाता है, खासकर वक्ताओं और गवैयोंको। स्वरभङ्ग और आवाज वैठ जाना, सभी वायु-पथ और स्वर-यन्त्रमें वहुत सूखापन। कड़ी, सूखी, झटकेकी खाँसी जो स्वर-यन्त्रके उपदाहसे समूचे शरीरको हिला देती है। यह उपदाह वायु-पथोंमें नीचे उतर जाता है, टेंटुआको आक्रान्त करता है और श्वासमें कष्ट हो जाता है ; दमाकी तरह श्वास ; स्वर-यन्त्रमें कसकर पकड़ रखनेका भाव ; श्वास-रोध ; श्वास-कष्ट ; वक्षका संकरा पड़ जाना और आक्षेप। शामको सो जानेपर प्रचण्ड घरघराहटका श्वास ; श्वासरोधका भय ; परिश्रम सापेक्ष श्वास-प्रश्वास। फेफड़ोंका पक्षाघात ; भोजनके वाद वक्षमें भरापन, स्वर-यन्त्रमें वहुत उपदाह ; कष्टकर श्वास ; भोजनके वाद स्वर-यन्त्रसे खखार-खखारकर श्लेष्मा निकलना।

फास्फोरस वक्षमें दवाव उत्पन्न करता है ; घवड़ाहट, कमजोरी और संकोचन सभी वक्षकी तकलीफोंमें वना रहता है। ऐसा मालूम होना, मानो वक्षपर एक भार रखा हुआ है। खाँसी, ब्राङ्काइटिस (वायुनलीभुज-प्रदाह), न्युमोनिया (फुसफुस-प्रदाह) और हृत्पिण्डके उपसर्ग, सवमें ही वक्षमें कुछ-न-कुछ इस तरहका सङ्कोचन रहता है, मानो कसकर वँधी है या पट्टी वांध दी गई या डोरीसे कसकर वांध दिया गया है। वक्षोस्थिपर कसावट मालूम होना और सभी उपसर्गोंमें वक्षमें वहुत दुर्वलता ; वक्षोस्थिके मध्य भागमें एक भार-सा मालूम होना ; बिना भयङ्कर स्पन्दनके या स्पन्दनके साथ वक्षमें खून दौड़ जानेका भाव। वक्षकी तापकी अनुभूति माथेपर चढ़ जाती है ; वक्षमें तापकी झलक जो ऊपरकी ओर चढ़ती है। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; वक्षमें आक्षेपिक दर्द ; वक्षमें वायीं तरफ सुई गड़नेकी तरह तेज दर्द, दाहिनी करवट लेनेपर अच्छा रहता है। ये सब दर्द प्लुरिसी (फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह) या न्युमोनियाके साथ प्लुरिसी (फेफड़ेके प्रदाहके साथ फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह) में होते हैं। वक्षकी तकलीफें ठण्डी हवामें वदतर रहता है। टेंटुआमें खाल उघड़नेका भाव, जो फेफड़ेतक फैल जाता है, वक्षमें जलन ; फेफड़ेके निम्न-भागमें तेज दर्द ; खाँसीके साथ वक्षमें वहुत तेज दर्द। रोगीको वाध्य होकर हाथसे वक्ष पकड़ रखना पड़ता है। घवड़ाहट, दवाव तथा चमकीला लाल रक्त वलगममें निकलनेके साथ फेफड़ेका प्रदाह। यक्ष्माकी अवस्थामें, प्रदाहमें तेज ज्वरके साथ वायुनलियोंके प्रदाहमें और प्रचण्ड हिला देनेवाली खाँसीमें ; फास्फोरसके रोगियोंको फेफड़ेसे वहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है ; खाँसीके साथ शरीर काँप उठता है ; खाँसीके साथ वक्षोस्थिमें फाड़नेकी तरह दर्द ; वक्षमें सङ्कोचन और श्वासरोधका भाव। स्वर-यन्त्रमें दर्द। न्युमोनियाकी तरह जङ्गके रङ्गका या खूनकी रेखा पड़ा वलगम। यह पीव-मिला भी हो सकता है। पिछली अवस्थामें यह गाढ़ा, पीला और मिठास लिये हो जाता

है। पुराने वायुनलीकी सर्दीवाले रोगी तथा न्युमोनिया और ब्राङ्काइटिसके वाद होनेवाली बीमारियोंकी फास्फोरस एक लाभदायक दवा है। प्रत्येक सर्दी वक्षमें बैठ जाती है। फेफड़ा कमजोर हो गया-सा मालूम होता है। इसके अलावा न्युमोनियामें फेफड़ेकी यकृत भाव-प्राप्ति (Hepatization) वाली अवस्थामें, जिनके साथ कड़ी, सूखी, खुसखुसी खाँसी रहती है तथा न्युमोनियामें फेफड़ेकी यकृत-भाव प्राप्तिमें फास्फोरस, **सल्फर** और **लाइकोपोडियम** बहुत निर्देशित दवाएँ हैं। जब बेचैनी, सुस्ती, घबड़ाहट, फेफड़ेकी यकृत्-भाव-प्राप्तिके कारण होते हैं और उसकी दवा **आर्सेनिक** होता है; परन्तु **आर्सेनिक** रोगको आरोग्यकी ओर फिर नहीं बढ़ा सकता हो; अकसर **आर्सेनिक**के बादकी दवा फास्फोरस ही होती है। तब यदि रोगीमें खूब ठण्डे पानीकी प्यास रहती है, वक्षमें सङ्कोचन, सूखी, खुसखुसी खाँसी, फेफड़ेकी पाक्षाघातिक दुर्वलता रहती है और खून या फेन-भरा श्लेष्मा बलगमके साथ निकलता है, तो फास्फोरस ही सर्वोत्तम औषधि होती है। न्युमोनियामें वक्षमें जलन हो सकती है, माथेमें जलन, गाल गर्म और ज्वर, नाना प्रकारकी भाव-भङ्गियाँ बनाता है और प्रलाप रहता है; वरफकी तरह ठण्डे पानीकी अदम्य पिपासा रहती है, नाकका पंखेकी तरह हिलना; श्वासकष्ट, पकड़ रखनेकी तरह श्वास-प्रश्वास; माथा खूब पीछेकी तरफ हटाये पीठके बल पड़ा रहता है; लघु, सूखी खाँसी रहती है। कपालकी धमनीमें टपक होती है। वक्षमें खाल उघड़नेका भाव; वक्षमें कुचल जानेकी तरह भाव; दर्द काटने, जलन या और फाड़नेकी तरह खाँसनेके समय फेफड़ेमें होता है। श्वास-रोध या श्वास लेना एकदम असम्भव-सा रहता है, खासकर यकृत् भाव-प्राप्ति (Hepatization) की प्रथम अवस्थामें, जब कि चेहरा बदरंग, काला या नीला पड़ जाता है तथा ठण्डा पसीना, तेज, कड़ी, नाड़ीका स्वरूप दिखाई देता है। निम्न-श्रेणीके न्युमोनियामें, जिसे टाइफायड न्युमोनिया कहते हैं; फेन-फेन बलगम। फेफड़ोंका पक्षाघात हो जानेकी सम्भावना। इसके अलावा, जब टियुबरक्युलोसिस हो जाना चाहता है, तो फास्फोरस एक लाभदायक दवा होती है, उन मनुष्योंमें जिनका वक्ष संकरा है, कोमल रहता है और जीवनी-शक्ति कमजोर रहती है। सब सर्दियाँ वक्षमें बैठ जाती हैं। उन मनुष्योंको जो कमजोर, पीले, रोगियल रहते हैं तथा जिन्हें रक्त-स्राव हुआ करता है, उनका प्रत्येक वार सर्दी लगनेपर बहुत घरघराहट और कड़ी खाँसी हो जाती है, जो समूचे शरीरको हिला देती है। ठण्डी हवा लगनेपर खाँसी आने लगती है। दुबलापन, वक्ष और गर्दनका दुबलापन। यक्ष्माकी अन्तिम दशामें इन दशाओंके साथ क्षय ज्वर (Hectic fever) आने लगता है, तेज ज्वर, लाल चेहरा और रातके समय पसीना; ज्वर तीसरे पहर आता है और आधी राततक रहता है। खूब ऊँची शक्तिका फास्फोरसका विचूर्ण ज्वरको घटा देगा और मृत्युतक रोगीको आराम रहने देगा। सभी दुरारोग्य रोगियोंको ज्वर घट जानेके बाद फास्फोरस न देना चाहिये; क्योंकि यह ज्वरको साफ कर देगा और जो बचानेके लिये इसका प्रयोग किया गया था, वही कर देगा। फास्फोरसके प्रयोगके बाद संकटकाल (Crisis) आ जाना कोई असाधारण बात नहीं है। बहुत देरतक पसीना और दस्त होना कदापि न रोक देना

चाहिये ; क्योंकि ये आप ही-आप रुक जायँगे तथा रोगी शान्त अवस्थामें आ जायगा। यक्ष्माके कुछ रोगियोंको— यक्ष्माकी अन्तिम अवस्थामें बहुत ऊँची शक्तिका फास्फोरस देना खतरनाक है। उन्हें तो उसी समय फास्फोरस पड़ना चाहता था, जब वे आरोग्य हो सकते थे। ऐसे रोगियोंके लिये कभी-कभी ३० शक्तिका फास्फोरस सुरक्षित रूपसे प्रयोग किया जा सकता है और यह सन्देह-जनक रोगियोंके लिये परीक्षा करनेमें सहायता देगा, कि प्रतिक्रिया होती है या नहीं। जिन रोगियोंमें प्रतिक्रिया होती है, उन्हें पीछे ऊँची शक्तिके फास्फोरससे फायदा हो सकता है, पर बढ़े हुए यक्ष्माके रोगियोंके लिये फास्फोरस ३० या २०० वीं से अधिक शक्तिका प्रयोग अच्छा नहीं है। वास्तविक फास्फोरसके पड़े हुए रोगी इसीलिये सुरक्षित रह गये हैं, कि फास्फोरस उनके लिये इतना सदृश नहीं था, कि जान ले ले या आरोग्य कर दे।

फास्फोरसमें कलेजेमें प्रचण्ड धड़कन होती है ; हिलने-डोलनेपर ; बायीं करवट लेनेपर, खासकर शामको बदतर हो जाती है, जागनेपर रातमें बदतर जिनके साथ वक्षमें खूनका दौरान तेज हो जाता है, साथ ही बहुत अधिक श्वास-रोधका भाव रहता है। वक्षमें कसावट और समूचे शरीरमें धड़कन ; हृत्पिण्ड प्रदेशमें दबाव। फास्फोरसने हृदयावरक झिल्ली-प्रदाह आरोग्य कर दिया है। फास्फोरसने हृत्पिण्डकी विवृद्धि और प्रसारण तथा वसाका अपचय आरोग्य किया है। वसाके अपचयके साथ जहाँ शिराओंमें बहुत अधिक रक्तकी रुकावट, चेहरेका फूला-फूला भाव, खासकर पलकोंके नीचे रहता है, इसकी अकसर फास्फोरस ही दवा होती है। हृत्पिण्डके सभी रोगोंमें हमेशा ठण्डे पानीकी प्यास बनी रहती है। भीतरी ताप ; अपने भीतर ठण्डा करनेके लिये, रोगी कुछ ठण्डी चीज चाहता है। प्रत्येक उत्तेजनासे, झंझटोंसे और कोई झंझट आ पड़नेकी सम्भावनासे वक्षमें खूनका प्रचण्ड दौरान हो जाता है। फास्फोरसमें बाह्य वक्षपर स्नायुशूलका बहुत दर्द होता है तथा पीले, भूरे दाग पड़ते हैं। पीठके बहुतसे लक्षण रहते हैं ; पीठ और गर्दनके पिछले भागमें, कन्धोंके बीचमें तथा पीठके निचले अंशमें कड़ापन। अपनी जगहसे उठनेपर कड़ापन मालूम होना। पीठमें तीव्र तापका अनुभव होना, यह पीठमें ऊपरकी ओर चढ़ता है। रोगी मेरुदण्ड गर्म रहनेकी शिकायत करता है। मेरुदण्डमें ऊपर और नीचेकी तरफ जगह-जगहपर यन्त्रणा ; कन्धोंके बीचमें स्पर्श करनेपर यन्त्रणा होती है ; पीठमें जगह-जगह और समूचे मेरुदण्डमें स्पन्दन होता है। गुदास्थिपर दबाव सहन नहीं होता, गुदास्थिमें इस तरह दर्द होता है, मानो जखम हो गया है, हिला-डोला नहीं जाता। रजःस्राव कालमें पीठमें दर्द और प्रसवावस्थामें इस तरहका दर्द मानो पीठ टूट जायगी। मेरुदण्डके रोग और प्रदाह। मानसिक परिश्रमके बाद, बहुत देरतक शारीरिक परिश्रम करनेपर, बहुत उत्तप्त हो जानेपर, लू लगने और अत्यधिक रतिक्रियाके बाद प्रत्यङ्गोंमें कमजोरी आ जाना ; पाक्षाघातिक दुर्बलता। मेरुमज्जाका प्रदाह ; मेरुदण्डका कोमल पड़ जाना ; बढ़ता हुआ मेरुदण्डका पक्षाघात और गति-शक्ति-राहित्यका फास्फोरस एक लाभदायक दवा है। बहुत-से उपसर्गोंको दवा देती है ; दर्द तथा प्रतिक्रियाको ला देती है। बार-बार होनेवाला कड़ापन जिसमें बहुत कमजोरी और हाथ-पैरोंका कम्पन रहता है, फास्फोरस अकसर

लाभदायक होता है और अत्यधिक कड़ापनकी प्रगति रोक देता है। कण्ठमाला-ग्रस्त बच्चोंका कशेरुकाका अस्थि-क्षत रोग फास्फोरसने आरोग्य किया है। मेरुदण्डकी बहुत-सी बीमारियोंकी फास्फोरस एक विस्तृत औषधि है।

दोनों बाहु और पैरोंतक, कम्पन और सुन्नपनके साथ प्रत्यङ्गोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलता; एक या दोनों निम्न शाखाओंका या ऊर्द्ध-शाखाओंका कम्प और सुन्नपनके साथ पक्षाघात। बाहु और हाथ बहुत ठण्डे हो जाते हैं। प्रत्यङ्ग क्षीण हो जाते हैं और शिराएँ फैल जाती हैं; बाहुओंमें जलन होती है; अङ्गुलियोंमें समय बाँधकर संकोचन होता है; सुन्नपन बढ़ते-बढ़ते अङ्गुलियाँ एकदम चेतना-रहित हो जाती हैं; अङ्गुलियोंकी नाक सुन्न और चैतन्य हीन मालूम होती हैं। निम्न-प्रत्यङ्गोंमें बहुत बेचैनी; निम्न-प्रत्यङ्गोंमें क्लान्ति; निम्न-प्रत्यङ्गोंमें कमजोरी; यह खासकर चलनेके समय अनुभवमें आती है, अदृढ़ और काँपती हुई चाल; निम्नाङ्गोंका पक्षाघात। घुटनोंकी सन्धियोंका और ऊरु सन्धिका नया प्रदाह। सर्दी लग जानेके कारण प्रत्यङ्गोंमें जलन और फाड़नेकी तरह दर्द। सन्धियों और पेशियोंका वात; सर्द हो जानेपर सन्धियोंका अकड़ जाना। प्रत्यङ्गोंकी सभी तकलीफें तापसे घटती हैं, पर माथा और पाकाशयकी तकलीफें शीतसे घटती हैं। वक्षकी तकलीफें भी तापसे घटती हैं। निम्न-प्रत्यङ्ग बदबूदार पसीनेसे तर रहते हैं। निम्न-प्रत्यङ्ग सड़नेवाले रहते हैं। जंघास्थिकी आवरक-झिल्लीका प्रदाह। निम्न-प्रत्यङ्गोंपर जखम; पैर बरफकी तरह ठण्डे। फास्फोरसका रोगी लेट जाना चाहता है; क्लान्त रहता है, चल नहीं सकता; कमजोरी तथा सरमें चक्करके कारण चलनेके समय डगमगाता है। उसपर धीरे-धीरे बढ़नेवाली दुर्बलता आती जाती है; कमजोरी; कम्पन; मूर्च्छा। पेशियोंका ऐंठना और हिल उठना; पक्षाघात-ग्रस्त अंशोंकी अकड़न। मृगी; टङ्कार; स्नायुशूलका दर्द; यह शरीरके विभिन्न भागोंमें और खासकर प्रत्यङ्गोंमें होता है, तापसे घटता है। इसने एक ही समय शरीरके बहुतसे अंशोंमें होनेवाला स्नायुशूल-प्रदाह आरोग्य किया है।

बेचैन नींद; नींदमें चौंक पड़ता है; सवेरे उसे ऐसा मालूम होता है, मानो भरपूर नींद नहीं हुई, इतनेपर भी बहुत-सी तकलीफें और दर्द, खासकर माथेके उपसर्ग नींदसे घट जाते हैं, नींदमें चलता है। वह दाहिनी करवट सोता है। बायीं करवट लेटनेसे घबड़ाहट तथा हृत्पिण्डमें दर्द और धड़कन पैदा हो जाती है। शामको देरसे नींद आती है, दिनभरके कामोंको सोचता, कष्टोंको बटोरता हुआ, जागता पड़ा रहता है। ऊपर बताये लक्षण मिलनेपर निम्न-श्रेणीके टाइफायडकी फास्फोरस एक आम दवा है।

फास्फोरसमें बहुत तरहके उद्भेद भी हैं। उद्भेद सूखे और भूसी-भरे रहते हैं; सूखे रूसी भरे। भैंसिया दाद; खून-भरे छाले; बैंगनी चकत्ते; पीले धब्बे, ज वक्ष और तलपेटपर होते हैं; पक्षाघात-ग्रस्त अंशोंमें सुरसुरी और खुजली; चर्मका सुन्नपन; शरीरपर असम टेढ़े-मेढ़े भूरे दाग; घुटने, पैर, केहुनियाँ और भौंवोंकी विचर्चिका; खून-भरे फोड़े और फुन्सियोंके छत्ते; दाहक प्रदाह। क्षय-ज्वरके साथ पुराने पीब बहनेवाले छिद्र; नासूरके मुँह, ऋतु-स्राव आरम्भ होनेपर जखमोंसे खून बहना; गहराईतक मांस खा जानेवाले जखम;

जल्द आरोग्य न होनेवाले जखम ; मारात्मक जखम । छत्तेकी तरह शकल वन जानेवाले और खून वहनेवाले कर्कटीया जखमोंकी यह वहुत उपयोगिनी दवा है तथा उन निम्न-श्रेणीके आरक्त ज्वरोंमें, जिनके दानें वहुत धुमैले रहते हैं या गायव हो जाते हैं तथा गर्दनकी विभिन्न जगहों या वाह्य शाखा-अङ्गोंपर अङ्गुलियोंके सिरोंपर पीव होना प्रारम्भ होता है और ठण्डे पानीकी तेज प्यास रहती है, कण्ठ देखनेपर वैंगनी मालूम होता है और सूखी खुसखुसी तथा हिला देनेवाली खाँसी रहती है, यह बहुत लाभदायक दवा है ।

फास्फोरिक एसिड
(Phosphoric Acid)

फास्फोरिक एसिडका रोगी जो कुछ कहता, करता और देखता है, उसपर ख्याल करनेसे मनमें 'मानसिक दुर्बलता' का ही विचार आयगा । मन क्लान्त मालूम होता है। सवाल करनेपर वह वहुत धीरे-धीरे जवाव देता है या वोलता ही नहीं ; वल्कि सवाल करनेवालेकी तरफ देखता रहता है । वह इतना क्लान्त हो जाता है, कि वोलना और यहाँतक कि कुछ सोचना भी नहीं चाहता । वह कहता है—"मुझसे न वोलिये ; मुझे अकेले रहने दीजिये ।" यह दशा नयी और पुरानी दोनों ही तरहकी वीमारियोंमें दिखाई देती हैं । वह इतना क्लान्त रहता है, कि मन विलकुल सुस्त रहता है । जब बहुत अध्ययन करनेके कारण, कारबारमें वहुत अधिक दिनोंतक झंझटमें पड़े रहनेके कारण ; कमजोर स्कूली लड़कियोंमें, जो प्रत्येक श्रमके कार्यके वाद शिथिल हो जाती हैं, उनकी पुरानी वीमारियाँ । नयी वीमारीमें, खासकर सान्निपातिक-विकार ज्वरमें वोलने या सवालोंका जवाव देनेकी उसकी इच्छा नहीं होती । वह केवल देखता रहता है । अन्तमें वह जाग पड़ता और कहता है—"मैं वहुत थका हूँ, मुझसे न वोलिये ।" वह जो कहना चाहता है, उसे सोच नहीं सकता ; उत्तरके वाक्यकी रचना नहीं कर सकता । दूसरा कारण है, युवकोंकी अत्यधिक काम-लिप्सा या उनकी जो गुप्त पाप चरितार्थ किया करते हैं । कमजोरी ; प्रतिक्रियाका न होना ; ध्वजभङ्गके साथ एक अचैतन्यकी दशा ; मानसिक अवसन्नता और यदि मेरुदण्डकी क्रिया ठीक नहीं होती ।

प्रत्येक रोगीमें **मानसिक** लक्षण ही पहले प्रकट होते दिखाई देते हैं । यह दवा मानसिकसे शारीरिकको ओर चलती है ; मस्तिष्कसे पेशियोंपर आती है । यह इतना आश्चर्यजनक है, कि **म्युरियेटिक एसिड**से इसकी समता होती है । **म्युरियेटिक एसिडमें मांस-पैशिक** सुस्ती पहले आती है तथा दिमाग साफ मालूम होता है, जवतक कि बहुत दिन वादतक पेशियाँ क्लान्त नहीं हो पड़तीं । फास्फोरिक एसिडमें मस्तिष्क दूर्बल हो जानेपर पेशियाँ सुदृढ़ रहती हैं । रोगी शरीरसे खूव वरिष्ठ मालूम होता है । वह कहता है, कि वह शारीरिक रूपसे अच्छा है, काम कर सकता है, प्रचण्ड रूपसे व्यायाम कर सकता है ; परन्तु मन क्लान्त हो गया है, मानसिक क्षीणता, वह अङ्कोंका जोड़ नहीं लगा सकता,

समाचार-पत्र नहीं पढ़ सकता तथा विचार-धाराको ग्रहण नहीं कर सकता, घटनाओंको मिला नहीं सकता। अपने परिवारके मनुष्यका नाम भूल जाता है; व्यवसायी अपने कर्मचारीका नाम भूल जाता है; वह चित्त विभ्रममें रहता है इतनेपर भी वह व्यायाम कर सकता है, वाहर निकलकर चल सकता है; मांस-पेशियोंकी कमजोरी तो पीछे आयगी।

फास्फोरिक एसिडकी शारीरिक दुर्बलता भी बहुत ज्यादा रहती है; पीठमें बहुत क्लान्ति रहती है, पेशियाँ बहुत क्लान्त रहती हैं; समूचे शरीरमें बहुत अधिक क्लान्ति; एक पाक्षातिक दुर्बलता। इसके वाद इन्द्रिय-शैथिल्य आता है; सङ्गमसे अनिच्छा; काम-बासनाका न होना; लिङ्गोद्रेक न होना; लिङ्गेन्द्रिय आलिङ्गन-कालमें ही शिथिल हो जाती है और वह पूरी क्रिया नहीं कर सकता (नक्स-वोमिका)।

कारवारकी-झंझटोंसे उत्पन्न उपसर्ग; बहुत दिनोंका रञ्ज; युवतियोंको प्रेमका बदला न प्राप्त करनेके कारण बीमारियाँ या प्रेमीके खो देनेके कारण। किसीको किसीसे ज्यादा कष्ट होता है, कुछको कम; कुछ अधिक दार्शनिक दिखाई देती हैं। "झंझट, दुःख, शोक, विषन्नता, घर लौटनेकी बीमारी या निराश-प्रेमके कारण उत्पन्न रोग; खासकर औंघाईके साथ; सवेरेके वक्त रात्रिकालीन पसीना; दुवलापन।" रोगी कृष और क्षीण होता जाता है, दिनोंदिन कमजोर होता जाता है; चेहरेपर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं; रातमें पसीना होता है; पीठमें नीचेकी ओर ठण्डा पसीना; पैरोंसे अधिक वाहु और हाथोंपर ठण्डा पसीना; हाथ पैर ठण्डे; रक्तका दौरान कमजोर, कमजोर हृत्पिण्ड; जरा भी उत्तेजना होनेपर सर्दी लग जाती है और यह सर्दी वक्षमें वैठ जाती है, सुखी, खुसखुसी खाँसी; वक्षकी सर्दीकी दशा; राज-यक्ष्मा; धीरे-धीरे बढ़नेवाली कमजोरी और मांस-क्षयके साथ दुर्बलता।

इस कमजोरीके कालमें सरमें चक्कर आता है। पलंगपर लेटे रहनेके समय सरमें चक्कर; पलंगपर लेटे रहनेके समय उतराता-सा मालूम होता है। माथा जहाँ-का-तहाँ, परन्तु प्रत्यङ्ग उठे हुए-से मालूम होते हैं, मानो प्रत्यंग उतरा रहे हैं।

रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, आँखोंसे काम लेने और दिमागसे परिश्रम करनेपर स्कूली लड़कियोंको हो जाता है। अस्थि-आवरणमें दर्द; हड्डियोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो खुरच ली गयी है, हिलने-डोलनेपर घटना; लेटे रहनेपर; लेटनेवाले पार्श्वकी ओर दर्द हट जाता है।

बहुत-से उपसर्ग अपनेको गर्म रखनेपर, एकदम चुपचाप रहनेपर, एकदम एकान्तमें शान्तिसे रहनेपर घट जाते हैं। श्रम करनेपर उपसर्ग वढ़ जाते हैं—यह मानसिक हो या शारीरिक, वातचीत करनेपर भी। सवेरेके वक्तका सर-दर्द। उसे सर-दर्दसे लेट जाना पड़ता है। वातचीत करनेसे सर-दर्द वढ़ जाता है। सर्द मौसम उसको सहन नहीं होता और गर्म कमरा भी सहन नहीं होता।

सर-दर्दमें यह दर्द अकसर माथेके पिछले भागसे आरम्भ होता है और सरकी चोटीतक फैल जाता है ; ऐसा मालूम होता है, मानो सरकी चोटीपर कुचल देनेवाला भार रखा हुआ है, हिलने-डोलने, बातचीत और रोशनीसे बदतर। "ऐसा मालूम होता है, मानो सरपर ऊपरसे नीचेकी ओर एक दबाव पड़ा हुआ है।" ये सर-दर्द, मानसिक दुर्बलता, मस्तिष्ककी क्लान्तिसे सम्मिलित रहते हैं, वह बहुत ज्यादा क्लान्त और क्षय हुआ रहता है। कानमें आवाज और शीशेकी तरह चमकीली आँखोंके साथ सरमें चक्कर आना।

निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें भी इसका अध्ययन करना चाहिये। उपसर्ग धीरे-धीरे आते हैं, धीरे-धीरे उतरते हैं, धीरे-धीरे बढ़नेवाली सुस्ती। ऐसे लक्षण बढ़े हुए सान्निपातिक ज्वर (Typhoid) में प्राप्त होते हैं। इसमें सुस्ती, फूला हुआ उदर, सूखी, भूरी जीभ दाँतोंपर मैलकी कीट और धीरे-धीरे बढ़नेवाली चेतन-हीनता रहती है ; थोड़ी प्यास बढ़कर बहुत तेज प्यास हो जाती है, जिसमें पसीना होनेके समय बहुत पानी पीनेकी इच्छा होती है, अकेला रहना चाहता है ; चमकीली आँखोंसे प्रश्नकर्त्ताकी तरफ इस तरह देखता रहता है, जिससे मालूम होता है, कि सवालको धीरे-धीरे समझ रहा है, आँखकी पुतलियाँ सिकुड़ी या फैली ; आँखें धसी हुई ; दबा हुआ चेहरा ; अविराम ज्वर ; नाक, फेफड़ा तथा आँतोंसे रक्त-स्राव ; किसी भी श्लैष्मिक-झिल्लीसे रक्त-स्राव, आँखोंके चारों तरफ गड़हा ; ओंठ बदरंग ; मैलकी कीटसे ढँके ; बहुत काले हो जाते हैं ; सुस्ती क्रमशः बढ़ती जाती है। आरम्भसे ही मानसिक दशा बहुत ही प्रत्यक्ष रहती है और अन्तमें मांस-पैशिक दुर्बलता आती है और यह तबतक बढ़ती जाती है, जबतक जबड़े नहीं लटक पड़ते और ऐसा मालूम होता है, कि रोगी क्षय होकर मर जायगा। कमजोरीकी यह दशा रक्त-स्रावसे उत्पन्न हो सकती है (पुराने होमियोपैथोंकी चायना बँधी दवा थी)। यह रक्त-स्राव रोक देता है और कायदेमें ले आता है, शोथ होना रोक देता है। रक्तहीनताकी तरह दशा रहती है ; जीभ और ओंठ फूले ; चेहरा, हाथ और पैर मोमकी तरह।

समूचे शरीरमें दर्द और यन्त्रणा ; हिलने-डोलनेपर घटती है तथा सर्दीसे बदतर रहती है। दर्द गहराईपर घर बनाये मालूम होता है ; अकसर स्नायुओंमें ; पर लम्बी अस्थियोंमें दर्द रहता है, मानो वे खुरच ली गयी हैं, मानो कोई खुरदरा यन्त्र हड्डियोंपरसे खींच दिया गया है। दर्द रातके समय साधारणतः बदतर होता है। तेज हड्डीका दर्द।

पाकाशय कार्य नहीं करना चाहता, खाद्य पाकाशयमें रह जाता है और खट्टा हो जाता है। खट्टा वमन। मस्तिष्ककी क्लान्तिके साथ पुराने अजीर्णके रोगी। खट्टे पेय ठण्डे पेय और गरिष्ठ खाद्यके कारण उत्पन्न उपसर्ग। साधारण पाखाना हो जानेके बाद तलपेटमें धँसते जानेका भाव।

फास्फोरिक एसिडकी बहुत-सी बीमारियोंमें एक स्पष्ट स्वरूप **दूधिया** पेशाब रहता है। कभी पेशाब होते समय यह दूधकी तरह होता है, पेशाबमें दूधकी तरह छेछड़े। कभी-कभी पुरुष मूत्रनली बन्द हो गयी-सी मालूम होती है और परीक्षा करनेपर ये दूधकी

तरह छेछड़े दिखाई देते हैं। पेशाब रखनेपर दूधकी तरह हो जाता है, आँटेकी तरह, खड़िया या फास्फेटका तलछट इसमें मिला रहता है।

फास्फोरिक एसिडमें अतिसार होनेपर उपसर्ग घट जाते हैं। बहुत ज्यादा, पतला, पानीकी तरह दस्त। मात्रा देखनेसे ही मालूम होता है, कि रोगी क्षयित हो पड़ेगा। बच्चेको बहुत ज्यादा, पानीकी तरह दस्त, गर्म मौसममें होता है; इतना ज्यादा होता है, कि रूमालसे कोई काम नहीं निकलता मालूम होता; माताके वस्त्रोंपर तथा सहनपर मलकी धार बह जाती है, जिससे तलैया बन जाता है। मलमें प्रायः **गन्ध नहीं रहती**; पतला और पानीकी तरह रहता है और बच्चा इस तरह हँसता रहता है, मानो कुछ हुआ ही नहीं है। माताको ताज्जुब होता है, कि यह इतना कहाँसे आता है और इतनेपर भी बच्चा अच्छा दिखाई देता है। फास्फोरिक एसिडका अतिसार अकसर लक्षणोंको दवा देता है और रोगीको अच्छा मालूम होता है। पुराना अतिसार (संग्रहणी), बहुत ज्यादा, पतला और पानीकी तरह सफेदी लिये खाकी होता है तथा रोगी रोग-मुक्त और प्रसन्न दिखाई देता है। यदि दस्त होना बन्द हो जाता है, तो रोगी बदतर रहता है और इसके बाद यक्ष्माके लक्षण, दुर्बलता, सुस्ती तथा मस्तिष्ककी क्लान्ति आ जाती है। कितने ही रोगी कहते हैं, कि जबतक उन्हें पतले दस्त नहीं आते, तबतक आराम नहीं मिलता। **पोडोफाइलम** इसके बिलकुल विपरीत है। उसी बच्चेको लीजिये,—मल बहुत ज्यादा होता है और समूचे सहनपर फैल जाता है; माताको ताज्जुब होता है, कि इतना मल कहाँसे आ गया; पर मल इतना **बदबूदार** रहता है, बहुत भयानक गन्ध और रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि मानो मर रहा है, मुँह और नाक खिंचे, चेहरा मुर्देकी तरह धँसा; करीब-करीब अचेतन। दोनोंमें ही दर्द-रहित भावसे दस्त होता है; पर फास्फोरिक एसिडमें इतनी अवसन्नता नहीं रहती। फास्फोरिक एसिडमें मल सफेदी लिये खाकी होता है, मैले सफेद रंगकी तरह **पोडोफाइलममें** यह पीला रहता है। **ग्रैटियोलामें** इसी तरहकी अवसन्नता रहती है; पर पतला मल हरे पानीकी तरह होता है; देखनेपर यह ऐसा मालूम होता है, मानो हरे काँचके भीतरसे हलका रङ्ग चमक रहा है; कभी-कभी गाढ़ा, हरे पित्तकी तरह होता है।

तलपेट बहुत फूला, आध्मानयुक्त रहता है, जैसा कि टाइफायड ज्वरमें होती है, वैसी ही तलपेटमें अत्यधिक यन्त्रणा। "सफेद या पीले, पानीकी तरह पतले दस्त, पुराना या नया अतिसार, बिना दर्द या किसी स्पष्ट दुर्बलता और क्लान्तिके।" पाखाना जब पानीकी तरह होता है, तो उसका पीला रहना असाधारण है। यह पीसे भुट्टेकी तरह जब रहता है, तभी पीला रहता है; जब पानीकी तरह होता है, तो हलके रङ्गका होता है; कभी-कभी दूधकी तरह होता है। जब पीला रहता है, तो पीसे भुट्टेकी तरह, घसघसा; जैसा कि सान्निपातिक (Typhoid) दशामें, पतला, पीसे भुट्टे (मकई) की तरह पतला। "अतिसार, सुस्ती न लानेवाला; गर्म मौसममें तापके बाद एकाएक सर्दी लग जानेपर; पानी; पुराना; प्रचण्ड, पित्त-मिला या बीस महीनेका श्लेष्मा-मिला; बुड्ढेकी तरह शकल दिखाई देती है, उन मनुष्योंके अम्ल-रोगमें, जो बहुत जल्दी-जल्दी बढ़ते हैं; भोजनके बाद; अनपचका हरापन लिये सफेद; दर्द-रहित।" जब अम्लकी वजहसे अतिसार होता है, तो

हमें कभी-कभी फास्फोरिक एसिडके लक्षण प्राप्त होते हैं। खट्टी शराव पीनेके कारण अतिसार होनेपर, जैसी कि कैलरेट शरावसे, खटाईसे, सिर्का या नेबू खानेपर अतिसार हो जाये, तो विश्वास-पूर्वक **पेण्टिमोनियम क्रूडम**का अध्ययन कीजिये। इस दवाका यह एक वहुत ही आश्चर्यजनक स्वरूप है। हैजामें लाभदायक है।

पुं०-लिङ्गेन्द्रिय। लिङ्गकी कमजोरी, वहुत दिनोंकी क्लान्ति, ध्वजभङ्ग हस्त-मैथुन करनेवाले ; वहुत क्लान्तिके साथ रात्रिकालीन स्वप्न-दोष। "मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव, जरा-सी भी उत्तेजना होते ही मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव।" कोमल पाखाना होनेपर भी मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव हो जाता है।

केश झड़ जाना भी इसका एक आश्चर्यजनक लक्षण है, जननेन्द्रियके, दाढ़ीपरके, भौंवोंके और सरके केश झड़ जाना। इसका **नेट्रम म्यूरियेटिकम** और **सेलिनियम**से केश झड़ जानेके विषयमें निकटस्थ सम्बन्ध है। **सेलिनियम**में भी सर, भौंवें और वरुनियाँ तथा दाढ़ी और जननेन्द्रिय तथा समूचे शरीरपरके केश झड़ जाते हैं। **नेट्रम-म्यूर** केशोंको वहुत पतला वना देता है। प्रसूति-कालमें जननेन्द्रियपरके केश झड़ जाते हैं।

फास्फोरिक एसिडसे कष्टकर श्वेत-प्रदर उत्पन्न होता है, "वहुतकर रजःस्रावके वाद, खुजलीके साथ पीला श्वेत-प्रदर ; वहुत ज्यादा, पीला, पतला, कटु श्लेष्मा, हरित्पाण्डु रोगके साथ।" वहुत दिनोंतक जो अपने वच्चेको दूध पीलाती हैं या जोड़ा वच्चोंको दूध पिलाती हैं और जो वहुत दूध देती हैं, उन स्त्रियोंके लिये यह उपयोगी है। वह क्लान्त और कमजोर हो जाती हैं। तरल और रक्तका क्षय, वहुत दिनोंतक दूध पिलाना और ऐसे ही कारणोंसे कमजोरी।

मस्तिष्ककी क्लान्ति और कमजोरीके अन्तमें फास्फोरिक एसिडके रोगीमें **वक्षकी वीमारी** हो जानेकी प्रवणता रहती है। यदि पतले दस्त आते हैं, तो वक्षकी तकलीफ वन्द हो जाती है। धारक (कब्ज करनेवाली) औषधि या कोई ऐसी दवा जो रोगीके सदृश नहीं रहती, जो अतिसारको वन्द कर देगी, तो वड़ा ही भयङ्कर परिणाम होता है। उसे यक्ष्मा हो जाता है ; कष्टकर श्वास-प्रश्वास ; खाँसी तथा वक्षमें तकलीफ होती है तथा फेफड़ा यान्त्रिक परिवर्त्तनकी तकलीफमें परिणत हो जाता है। मांस-तन्तुओंके परिवर्त्तनमें फास्फोरिक एसिडका निदर्शन शायद ही कभी पाया जाता है ; पर वे रोगीको **आरम्भिक** दशामें पाये जाते हैं। स्नायविक दशाएँ, दूधकी तरह पेशाव और अतिसार जो वहुत समयतक जारी रहता है। वक्षकी तकलीफ तेज रहती है ; टाइफायड न्युमोनिया ; निम्न-रूपका ज्वर, जिसका अन्त वक्षके कष्टमें होता है ; **फास्फोरस**की तरह नहीं। मानसिक उपसर्गोंके साथ वहुत दिनोंका फुसफुस-प्रदाह ; प्रतिक्रियाका अभाव ; न्युमोनियाके अन्तमें रस-स्राव। रक्तोत्कास।

वहुत दिनोंका ज्वर, जिसका कि हृत्पिण्डकी कमजोरीमें अन्त होता है ; इसके साथ ही कलेजा धड़कना और मानसिक लक्षण रहते हैं। कामोत्तेजन-कालमें कलेजा धड़कना। दीर्घ-कालीन ज्वरके वाद फोड़ा होनेकी प्रवणता।

प्रत्यङ्ग और सन्धियाँ आक्रान्त हो जाती हैं। उरु-सन्धिमें दर्द। सन्धियोंके दर्म्यानकी लम्बी हड्डियोंमें दर्द, हिलने-डोलनेपर आराम मिलना। पुरानी गठियाकी धातु-प्रकृति। मांस-तन्तु कमजोर पड़ जाते हैं। हड्डियोंपरका मांस जहाँ पतला रहता है, वहाँ लाल दाग दिखाई देते हैं और ये ही दाग प्रदाहित हो जाते और खुले जखम बन जाते हैं। ज्वरके बाद, पेशियोंमें तथा घुट्ठियोंके पास आणविक दुर्बलता तथा जंघास्थिपर जहाँका मांस पतला रहता है। अस्थि-आवरक-झिल्लोसे फास्फोरिक एसिडका एक खास सम्बन्ध रहता है। अस्थि-आवरक-झिल्लीका प्रदाह। रातके समय जङ्घास्थिमें दर्द। हड्डीमें ऐसा मालूम होता है, मानो खुरच ली गई है। हाथ ठण्डे और पैर गर्म। पानीकी तरह बदबूदार मवाद आनेके साथ पैरोंपर जखम।

फोड़े, फुन्सियाँ और दूसरे तर उद्भेद; पीव होनेवाले उद्भेद; मांस-तन्तु कमजोर हो जाते हैं।

स्नायविक दशा; स्पष्ट उदासीनता; कमजोर और कम्पनशील; मूर्च्छा; अत्यधिक स्नायविक अवसाद; हिस्टीरिया-जनित रोग। सुरसुरी, टनक और समूचे शरीरमें कुछ रेंगनेकी तरह भाव, खासकर जहाँ केश रहते हैं, मानो केशोंकी जड़में हो रहा है; सुरसुरी, खासकर अत्यधिक रति-क्रियाके कारण दुर्बल हुए मनुष्योंका। "समूचे शरीरमें सुरसुरी।" मेरुदण्डमें यन्त्रणा-पूर्ण धब्बे; खञ्ज पीठ; पीठमें दर्द।

"अङ्गुलियोंके नीचेके स्थान या सन्धियोंके मोड़ या हाथोंपर खुजली।" भैंसिया दाद; अकौता; विसर्प। चर्मपर बड़े-बड़े बैंगनी दाग पड़ जाते हैं; केशिका-शिराओंसे रक्त निकलना; काले दाग (Ecchymoses) चर्मपर जखम; विष-व्रण (Carbuncles); मसे; बिवाई फटना; बतौड़ियाँ; जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ गट्ठे और अंश काले हो जाते हैं; चर्ममें रक्तका दौरान कमजोर। चमड़ा झुर्री-भरा, जीर्ण और खाकी तथा रोगी दुबला होता जाता है।

फाइटोलैका
(Phytolacca)

यह बिलकुल ही अपूर्ण परीक्षित औषध है और इसका केवल एक आभास बताना ही सम्भव है। मानसिक लक्षण प्रकट नहीं किये गये; पर इतनेपर भी इस दवाके कुछ आश्चर्यजनक लक्षण हैं।

मर्क्युरीसे इस दवाकी समानता आपको दिखाई देगी और यह **मर्क्युरी**का प्रतिविष है। पारदके उन लँगड़ानेवाले हड्डीके दर्दोंके रोगियोंमें, जिन्हें कि रातको लार बहा करती है; बिछावनकी गर्मीसे रातमें दर्द पैदा हो जाता है; शरीरमें यन्त्रणा होती है; एक पुरानी, यन्त्रणा-पूर्ण, कुचल जानेकी तरह दशा; अस्थि-आवरकमें जहाँ कि अस्थि-आवरणपरका मांस पतला रहता है तथा जङ्घास्थिके ऊपर, सन्धियोंमें यन्त्रणा, पेशियोंमें यन्त्रणा; खींचन और

मरोड़ ; पीठकी पेशियोंके खींचन ; पीठमें दर्द, रातमें बढ़ जाता है ; बिछावनकी गर्मीसे बढ़ जाता है ; **मर्क्युरी**की तरह रोगी सर्दी तथा तर मौसममें इन उपसर्गोंसे तकलीफ पाता है। जखम हो जानेकी प्रवणता, इसीलिये यह उपदंशमें लाभदायक है। बहुत दिनोंके, पुराने, उपदंशके जखम ; रोगीको लार बहायी गई थी ; **मर्क्युरी**की मालिश की गई थी ; इससे वह अत्यधिक भर जाता है ; फिर कोई लाभ नहीं होता। कण्ठमें जखम ; चर्मपर और किसी भी जगहकी श्लेष्मिक-झिल्लीपर जखम।

आक्षेपिक दशाएँ ; पेशियोंमें खींचन ; प्रचण्ड अकड़नतक हो जाती है। पश्चात टङ्कार (Opisthotonos) ; कभी-कभी ग्रीवा-प्रदेश आक्रान्त हो जाता है और माथा पिछेकी ओर खिंच जाता है, पेशियोंमें झटका और ऐंठन।

फाइटोलैक्का **ग्रन्थियोंकी** दवा है। ग्रन्थियाँ प्रादाहित हो जाती हैं। और कड़ी पड़ जाती हैं। इससे गलक्षत उत्पन्न होता है, उसके साथ ही गर्दनकी ग्रन्थिमें प्रदाह रहता है, खासकर निम्न-हन्वस्थ और कर्ण-मूल-ग्रन्थिमें। गाढ़ा, लसदार श्लेष्मा एकत्र होनेके साथ कण्ठका प्रदाह ; तालुमूल (Tonsil) की सूजन। विसर्पकी तरह निम्न-श्रेणीकी सूजन।

रातमें, सर्द दिनोंमें, सर्द कमरेमें, बिछावनके तापसे रोग-वृद्धि, जिससे कि ताप और सर्दीसे, मानो प्रतियोगिता चला करती है।

ऐसा मालूम होता है, कि दवा **स्तन-ग्रन्थि**को अपना केन्द्र बनाती है। प्रत्येक सर्दीसे ; सर्दीके दौरेसे स्तनमें यन्त्रणा और ढेलेकी तरह मालूम होना ; सर्दीला हो जाता है और स्तनमें यन्त्रणा पैदा हो जाती है ; रजःस्रावके साथ सम्बन्ध रखनेवाला यन्त्रणा-पूर्ण स्तन ; स्तनसे दूध पिलानेवालीको सर्दी लग जाती है, स्तन प्रादाहित हो जाता है और स्तनका दूध डोरीकी तरह हो जाता है ; जमा हुआ दूध। यह परीक्षामें प्रकट होता है ; परन्तु गाय पालनेवालों द्वारा पोककी जड़का बहुत अधिक व्यवहार हुआ है, जब कि गायका दूध गाढ़ा हो जाता है और स्तनकी थैलीमें ढेला पड़ जाता है तथा बरसातके पानीमें गाय खड़ी रहनेके कारण यह दशा होती है।

करीब-करीब कोई भी उत्तेजना स्तन-ग्रन्थिमें ही स्थान बनाती है, कोई आकस्मिक घटना घटनेका या भय, ढेले बँध जाते हैं ; दर्द, ताप, सूजन और फोड़ेकी तरह हो जाता है, यहाँतक कि जोर प्रदाह और पीब होना भी रहता है। स्तन-ग्रन्थिपर मेटिरिया-मेडिकाकी कोई भी दूसरी दवा इतना प्रभाव नहीं। **मर्क्युरी** इसके सदृश है, जब रोगिनीको सर्दी लग जाती है, तो ग्रन्थियाँ घावकी तरह यन्त्रणा-पूर्ण हो जाती हैं। यदि किसी दूध पिलानेवाली स्त्रीको प्रत्येक मनस्ताप या कष्ट स्तन-ग्रन्थिमें यन्त्रणा उत्पन्न कर दे, तो उसे फाइटोलैक्का दीजिये। यदि कोई माता यह कहे, कि उसे दूध नहीं होता या बहुत थोड़ा, गाढ़ा और अस्वस्थ दूध होता है, जल्द ही सूख जाता है और यदि विपरीत बतानेवाले कोई लक्षण नहीं मिलते, तो फाइटोलैक्का ही धातुगत दवा हो जाती है। बच्चेको दूध पिलानेके बाद पाँच वर्षोंतक लगातार होनेवाला खूनके पानीकी तरह स्राव फाइटोलैक्कासे आरोग्य

किया गया था। स्तनमें इतनी यन्त्रणा रहती है, कि जब वह बच्चेको दूध पिलाती है, तो, उसे अकड़न पैदा हो जाती हैं; साथ ही दर्द पीठके नीचे और सारे शरीरके प्रत्यङ्गोंमें फैल जाता है।

डिफ्थीरिया। कितनी ही बहुव्यापक अवस्थाओंमें, कण्ठमें बहुत सूजन; गर्दनकी गांठोंका, कर्ण-मूल और हनु-निम्नस्थ-ग्रन्थिका फूलना; हड्डियोंमें कनकनी; मुँहसे बदबू और जीभपर मोटी मैल जमी; पीठमें बहुत दर्द; नाकसे रक्त-स्राव; पेशियोंमें यन्त्रणा। यह **मर्क्युरियस**के सदृश है; डिफ्थीरियामें इनका निकटस्थ सम्बन्ध है। समय समयपर डिफ्थीरियामें केवल बदबू प्राप्त होती है, लदी हुई जीभ, रस-स्राव, फूली ग्रन्थि और अकड़ी हुई गर्दन। यह "मर्क्युरियसकी तरह या मर्क्युरियसोंमेंसे किसी एककी तरह मालूम होता है। **प्रोटोआयोडाइडमें दाहिनी ही तरफ होता है** और वहीं ठहर जाता है या बायीं तरफ चला जाता है। **बिन-आयोडाइड बायेंसे दाहिनी** ओर जाता है। **मर्क-सायानाइडमें** गाढ़ा, हरी श्लैष्मिक-झिल्लीका तलछट रहता है, जो नाकसे कण्ठतक फैल जाता है। फाइटोलैक्कामें **मर्क्युरी**के बहुतसे स्वरूप दिखाई देते हैं।

इसने खोपड़ीकी और हड्डीकी औपदंशिक गांठें आरोग्यकी हैं।

बहुतसे उद्भेद। "भूसी निकलनेवाले उद्भेद; रूसी; विचर्चिका (चम्बल रोग)", "दाद," "हजामतकी खुजली," शरीरपर दाने; खसड़ा; समूचे शरीरपर लाल उद्भेद।" यह आश्चर्यकी बात नहीं है, कि यह आरक्त-ज्वरको आरोग्य करती है; क्योंकि इसमें लाल दाने निकलते हैं, गलक्षत होता है और ग्रन्थियाँ आक्रान्त होती हैं।

सांघातिक प्रवर्द्धनों (Malignant growths) को, खासकर वक्षके मारात्मक प्रवर्द्धनोंको तथा उन ग्रन्थियोंके अर्बुदोंको जो कड़े या गूमड़की तरह हो जाते हैं, उन्हें रोक रखनेकी इसमें शक्ति है। जबतक यह दवा मालूम नहीं हुई थी, तबतक स्तन-ग्रन्थिके पुराने क्षत चिह्नोंकी एक ही दवा थी। वर्षों पहले जिस स्त्रीको प्रसव हुआ था, उनके स्तनमें फोड़ा हो जाता था, जिसपर पोल्टीस चढ़ायी जाती थी, नश्तर दिया जाता था और जखमका दाग रह जाता था और अब उन्हें प्रसवकालके समय तकलीफ होती है। पुराने क्षत-चिह्नोंका प्रदाह; जखम जो दुग्ध-ग्रन्थियोंको खा जाते हैं या दुग्ध-नलीको एक तरफ हटा देते और मरोड़ देते हैं, ऊँचा प्रदाह, टपक और दर्द, दूध खून-मिला। **ग्रैफाइटिस** पुरानी बँधी हुई दवा थी; परन्तु फाइटोलैक्का उससे अच्छी दवा है तथा सार्वाङ्गिक उपसर्गोंसे अकसर मिलती है। प्रसवके साथ अकसर प्रदाहित स्तनमें पाये जानेवाले लक्षण आगे लिखे हैं:—पीठ और हड्डियोंमें यन्त्रणा; ज्वर और कम्पन। फाइटोलैक्कामें ये सब तो हैं ही, साथ ही रोगकी प्रकृतिसे यह बहुत मिलता है। **ग्रैफाइटिसमें** यह सीमित रूपसे है। यदि तेज बोखार रहता है, माथेमें रक्त-सञ्चय, कपालकी धमनियोंमें टपक, बहुत लाली तथा यह लाली स्तन वृन्तसे विकीर्णित होती है, तो उसकी दवा **बेलेडोना** है। जब समस्त ग्रन्थियाँ पत्थरकी तरह भारी और कड़ी हो जाती हैं और रोगीको हिलना-डोलना और स्पर्श सहन नहीं होता, तो **ब्रायोनिया** दवा होती है। जब सार्वाङ्गिक लक्षण

मिलते हैं, तो **मर्क्युरी**। पीव होनेके बाद **हीपर** और **साइलिसिया**; खासकर जब केवल तापसे ही आराम मिलता है। जब बहुत दर्द और यन्त्रणा रहती है, उपदाह रहता है और यह तापसे उपशम होता है, तो **हीपर** देना चाहिये, यह पीव बढ़ना रोक देता है और विना दर्दके ही उस अंशको खोल देता है।

नाककी हड्डीके क्षयके साथ, कष्टदायक, लझड़ानेवाली, जिद्दी सर्दी। "नाकका एक-दम रुक जाना; घुड़सवारी करनेके समय, मुँहसे साँस लेनी पड़ती है।" नाककी सर्दी और खाँसीके साथ आँखोंमें लाली और आँसू बहना; आलोकातङ्क; आँखमें बालू रहनेकी तरह अनुभव होना, साथ ही यन्त्रणा और जलन।" औपदंशिक नक्सीर, जिसके साथ खून-मिला पतला, वदबूदार, हरापन लिये रक्ताम्बुका स्राव होता है और हड्डीकी बीमारी रहती है। "नाकका जखम और नाकके कर्कटिका रोग।

यह बहुत कुछ **ग्रेफाइटिस**की तरह रहता है, उसमें यह फटे घाव खोज निकलता है, जिसमें प्रदाह, कड़ापन और उद्भेद स्थापित कहता है। जहाँ रक्तका दौरान कमजोर रहता है, वहाँ काठिण्य लानेकी प्रवणता इसमें रहती है।

"चेहरा धसा, पीला, मुर्देकी तरह, आँखोंके चारों ओर नीला घेरा; पीलापन लिये मुखमण्डल; कष्ट-पूर्ण और नीला दिखाई देता है। "रातके समय माथेकी हड्डियाँ और चेहरेमें दर्द।" वायें कानके चारों तरफ और चेहरेके पार्श्व-भागमें विसर्पकी तरह सूजन; वहाँसे यह मस्तक-त्वचाके ऊपर जाती है; बहुत दर्द-भरी। "ओंठ उलटे और सुदृढ़। "टङ्कार।" "ओंठोंपर जखम। "कर्णमूल और हनु-निम्नस्थ ग्रन्थि फूली।" "जीभपर पीछेकी ओर मोटी मैल चढ़ी रहती है; पीला और सूखा आवरण रहता है।" यह सभी नयी बीमारियोंमें पाया जाता है और बहुत कुछ **मर्क्युरियस**की तरह है। एकलेक्टिक चिकित्सकोंमें तो यह बहुत ही विख्यात है और इसके परिणाम-स्वरूप हम उसकी होमियोपैथिक क्रियाका आभास पाते हैं। सिनसिनेटीमें एक वड़े गिलासभर पानीमें वे इसकी तीन बूंदोंका प्रयोग करते थे तथा मुँहके जखमोंके लिये देते थे। उनके लिये यह खास दवा थी और उन्होंने कुछ होमियोपैथिक आरोग्य भी किये। "जखम-भरा, यन्त्रणा-पूर्ण मुँह।" लक्षण मिलनेपर गर्मीके घाव भी फाइटोलैक्कासे आरोग्य होते हैं।

गाइडिङ्ग सिम्पटम्स नामक ग्रन्थमें इसपर कई पृष्ठ लिखे गये हैं, जिनमें कण्ठको होमियोपैथिक आरोग्य दिखाया गया है, डिफ्थीरिया; गल-क्षत; प्रदाहित ग्रन्थियाँ; रातमें बदतर हो जानेवाली हड्डियोंकी टनक; निगलनेमें कष्टवाले तालुमूलमें दर्दके प्रचण्ड रोगी; बढ़े हुए तालुमूल; फुन्सी पड़नेकी प्रवणता। औपदंशिक और पारद-घटित गलक्षत। गर्म पेयोंसे गलक्षत अकसर बढ़ जाते हैं; वह ठण्डी चीजें चाहता है और रातमें रोगी वृद्धि हो जाती है। सारांश यह है—"डिफ्थीरिया, बैठनेके समय बीमारी और सरमें चक्कर; कपालमें दर्द; कण्ठसे कानमें दर्द आघात करता है, खासकर निगलनेकी चेष्टा करनेपर; चेहरा तमतमाया; जीभपर बहुत मैल-चढ़ी; बाहर निकली; पीछेकी तरफ मोटी मैल चढ़ी; नोकपर; आगकी तरह लाल, श्वास बदबूदार; सड़ी गन्ध; वमन; निगलनेमें कष्ट;

तालुमूल फूले, झिल्लीसे ढँके, पहले वायीं तरफ ; तीन या चार धब्वे ; तालुमूल, उपजिह्वा और कण्ठके पिछले भागपर खाकी रङ्गका रस-स्राव। जीभ निकालनेपर जीभकी जड़में दर्द।"

प्रत्यङ्गोंकी पुरानी गठिया और वात ; नया वात जो वहुत दिनोंतक बना रहता है, रातमें वदतर, विछावनकी गर्मीसे वदतर, गर्म-प्रयोगोंसे वदतर। गठिया वात ; उपदंश-विष-दूषित रोगी ; दर्द मानो हड्डियोंमें हो रहे हैं। "कूल्हेमें तेज काटनेकी तरह दर्द, खींचन, पैर खिंचे, सहनको छू नहीं सकते।" "औपदंशिक या प्रमेहज गृध्रसी वात प्रभृति।" "पैरपर जखम और गुटिकाएँ।

एक विशेष श्रेणीके चिकित्सक **पोडोफाइलम**को "उद्भिज **पारद**" कहते हैं (Vegetable mercury)। फाइटोलैक्काको भी उद्भिज **पारद** कहना चाहिये ; क्योंकि इसमें भी **मर्क्युरी** जैसे ही लक्षण भरे हैं।

पिकरिक एसिड
(Picric Acid)

इसकी परीक्षाको ध्यानसे पढ़नेवालोंको पहला भाव मानसिक और शारीरिक दुर्वलताका ही होता है। यह क्लान्तिसे पक्षाघातकी ओर वढ़ती हुई रहती है। मस्तिष्क तथा सुषुम्नाकी कोमलता जवर्दस्त रहती है। उसे जल्द ही गर्मी सहन नहीं होती और ठण्डी हवाका इच्छा करता है, जो उसके मस्तक और शरीरके उपसर्गको घटा देती है। ठण्डी हवा और शीतल स्नान रुचता है। उसे तर मौसम सहन नहीं होता। वहुत-से अंशोंका सुन्नपन, कम्पन, आलस्य, भार, पड़े रहना पड़ता है, जरा भी परिश्रमसे वदतर हो जाना प्रभृति इसके प्रत्यक्ष लक्षण हैं। नींद न आना, मानसिक उद्वेग, मानसिक श्रम इसके उपसर्गोंके उत्तेजक कारण हैं। असीम उदासीनता।

उदासीनता और इच्छा-शक्तिका अभाव ; वोलनेकी, सोचनेकी या मानसिक परिश्रमकी इच्छा न होना, मस्तिष्क क्लान्तिकी एक वँधी दवा है। थोड़े भी मानसिक श्रमसे वह तुरन्त क्लान्त हो पड़ता है और इससे वहुत से उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे यन्त्रणा और खञ्जता, अतिसार, मेरुदण्डमें जलन, सार्वाङ्गिक दुर्वलता और प्रत्यंग तथा पीठका भार। सभी चीजोंसे उसकी संलग्नता चली जाती है ; मानसिक परिश्रमसे चिड़चिड़ा हो जाता है। स्कूली लड़कोंके लिये इस वहुमूल्यपर भूरी हुई दवाका साधारण प्रयोग होता है। जव वच्चा वर्णमाला सीखना आरम्भ करता है, सर-दर्द होने लगता है और हरेक वार चेष्टा करनेपर लौट आता है, अकसर पुतलियाँ भी इसके साथ फैली रहती हैं। स्कूलकी प्रत्येक परीक्षाके वाद यह प्रचण्ड सर-दर्द हो जाता है। नीचे लिखे लक्षणवाला स्कूलमें पढ़नेवाला एक युवक तुरन्त इससे आरोग्य कर दिया गया था :—विद्यार्थियोंका सर-दर्द, खड़े रहनेपर सरमें चक्कर आना, माथेमें भार, नाकसे रक्त-स्राव, पुतलियाँ फैलीं, चक्षु-श्वेत-पटलमें

रक्त-सञ्चय, नकली रोशनी सहन करनेका शक्तिका न रहना, भूख न लगना, मुँहका तीता स्वाद, वमन, कामला। मानसिक श्रमसे सरमें चक्कर आना, झुकनेपर, चलनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, तकियेसे सर उठानेपर खञ्जता, तनकर बैठ नहीं सकता ; जल्द ही इससे मिचली होने लगती है। यह अकसर सर-दर्दसे सम्मिलित रहता है। विद्यार्थियों, शिक्षकों, वकीलों और बहुत ज्यादा काम रहनेवाले व्यवसाइयोंकी यह बहुत लाभदायक दवा है। रञ्ज और हतोत्साह करनेवाले भावोंके कारण बहुत अधिक स्नायविक दुर्बलताके साथ सर-दर्दमें, अकसर इसपर ध्यान नहीं दिया जाता। इसमें खोपड़ीमें, ललाटमें और पश्चात् मस्तकमें भयङ्कर दर्द होता है, जो बहुत तापके साथ नीचे मेरुदण्डतक फैल जाता है। रक्त-सञ्चयी सर-दर्द। माथा अवश्य ठण्डा रहना चाहिये, गर्म कमरेमें और शरीर या माथेमें कपड़ा लपेट लेनेपर यह बदतर हो जाता है तथा शारीरिक और मानसिक विश्रामसे अच्छा रहता है।

अकसर दिनके साथ-ही-साथ सर-दर्द आरम्भ होता और बढ़ता है और रातमें सोनेपर अच्छा रहता है। दिनके समय तो रोगी एकदम आरोग्य हो जाता है ; पर रातमें निन्द्रा और विश्रामसे अच्छा रहता है। इन सर-दर्दोंके साथ अकसर असीम अवसन्नता आ जाती है। अकसर इसके सर-दर्द और बहुत-से उपसर्गोंके साथ असीम कामोत्तेजना होती है। पर ऐसा होना कोई बहुत ही आवश्यक नहीं है।

मस्तिष्ककी क्लान्ति भोग करनेवालोंको आँखकी पेशियोंकी ताकत घट जानेके कारण आँखके उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। देखना, महीन छपाई पढ़ना और दृष्टिका श्रम सर-दर्द और आँखके उपसर्ग उत्पन्न कर देगा (ओनोस् मोडियम)। आँखमें बालू रहनेकी अनुभूति, टनक, कटु अश्रु-स्राव, आँखोंके सामने चिनगारियाँ, अदूर दृष्टि, धुँधली दृष्टि, चीजें गड़बड़ा देती हैं, पुतलियाँ फैलीं, आँखोंपर तेज दर्द। आँखोंमें गाढ़ा श्लेष्मा। नकली रोशनीसे आँखोंके लक्षण बदतर हो जाते हैं।

बाह्य कर्णनलीमें छोटे फोड़े और फुन्सियाँ।

डकारें, अकाल-प्रसूत, खट्टी। सवेरेके वक्त मिचली, जो उठनेपर और घूमने-फिरनेपर बदतर हो जाती है।

यकृत-दोषोंका प्रमाण मिलता है और रोगी कामला-रोग-ग्रस्त रहता है।

पेटमें गुड़गुड़ाहट, मानसिक परिश्रमसे अतिसार। पीला, पानीकी तरह या पतला मल-मिला, बेलहा मल, पाखाना होनेके बाद टनक, पीले भुट्टेके चूरकी तरह मल। पाखाना हो जानेके बाद बहुत कमजोरी, दुर्बलीभूत व्यक्तियोंमें।

पेशाबमें चीनी और अण्डलाल रहता है। उच्च आपेक्षिक गुरुत्वका पेशाब, युरेट, यूरिक एसिड (मूत्रक्षार), फास्फोरसके साथ पेशाब भारी तथा सल्फेट कम रहता है। पेशाब हो जानेपर भी पेशाब टपकता रहता है। मूत्राशयकी दुर्बलता। फास्फेटका बहुत क्षय होना।

परीक्षामें तो यह स्वाभाविक काम-वासनाको काम-लिप्सामें परिणत कर देता है और प्रचण्ड लिङ्गोद्रेकके साथ लम्पटता, खासकर रातके समय उत्पन्न हो जाती है। बहुत दिनोंका रहनेपर भी इसने बहुत बार इसे आरोग्य किया है। पश्चात् मस्तक और मेरुदण्डमें दर्द, प्रत्यङ्गोंमें भार और कामोत्तेजना। यदि पैरोंमें बेचैनी रहती है, **जिङ्कम पिक्रिकम** बढ़िया काम करता है। यह ध्वजभंग और धातु-क्षीणताको आरोग्य करता है, जब मनकी यह शक्ति नहीं रहती कि काम-लिप्साको संयमित कर सके।

मानसिक या शारीरिक परिश्रमसे मेरुदण्डमें जलनकी तरह ताप। मेरुदण्डमें कमजोरी और प्रत्यंगोंमें भार, खासकर निम्न-प्रत्यंगोंमें। पीठ इतना क्लान्त रहती है, कि वह सीधा बैठ ही नहीं सकता, कुर्सीपर अड़कन लगाकर बैठता है या लेट जाता है। लेट जानेपर उसे आराम मिलता है। कमजोर प्रत्यङ्ग तथा ऐसी अनुभूति कि शरीर और प्रत्यंग पट्टीसे बँधे हैं या सिकुड़नके साथ मेरुमज्जा-प्रदाहमें यह लाभदायक है तथा पैरोंकी दुर्बलता और मानो उसने आप से आप बढ़नेवाला मोजा पहन लिया है। नींद आते ही कष्टदायक लिङ्गोद्रेक और वीर्य-स्रावके साथ गति-शक्ति-राहित्य; इस दवासे मेरुदण्डकी कमजोरीके बहुतसे रोगी आरोग्य किये गये हैं।

कम्पन, सुन्नपन और संकोचनके साथ निम्न-प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी। सुरसुरी और सुई गड़नेकी तरह मालूम होना। पैरोंकी स्पष्ट ठण्डक। इन सब लक्षणोंको शारीरिक श्रम खूब बढ़ा देता है। बहुत समयतक विश्राम करनेके बाद उसका रोग घटता है।

प्रत्यंग तथा समूचा शरीर थोड़ा भी परिश्रम करनेपर अतिशय क्लान्त; **अत्यधिक आलस्य।** बहुत ज्यादा शारीरिक दुर्बलता; दिनमें औंघायी और रातमें अनिद्रा, खासकर मानसिक परिश्रमके बाद।

प्लाटिनम
(Platinum)

प्लाटिनमकी परीक्षासे किसी स्त्रीका परिवर्त्तित मन प्रकट होता है। यह खासकर गुल्म-वायु-ग्रस्त स्त्रियोंके लिये उपयोगी है, जो भयमें जा पड़ी हैं, बहुत दिनसे उत्तेजना भोग रही हैं या निराशा, मानसिक आघात या बहुत दिनोंसे जारी रहनेवाला रक्त-स्राव भोग रही है। वह जिद्दी और गर्म-मिजाजवाली हो जाती है। इस भेषजका सबसे आश्चर्यजनक चरित्रगत लक्षण है, अहंकारी और अपनेको वास्तवसे बहुत ज्यादा समझना। वह समझती है, कि वह किसी उच्च परिवारकी है तथा उसके मित्र और सम्बन्धी नीचोत्पन्न हैं तथा उन्हें निम्न-दृष्टिसे ही देखती है। उसके परिचित उससे नीचे दर्जेके हैं। इस दवाकी एक आश्चर्यजनक बात यह है, कि यह विचार उसके शरीरपर फैल जाता है। वह समझती है कि उसका शरीर बड़ा है तथा दूसरे मनुष्योंका शरीर उसके शरीरकी तुलनामें छोटे हैं। वह एक घृणा-पूर्ण भाव-भंगीमें रहती है, जटिल विषय न रहनेपर भी उनपर गम्भीर रहती है, जरा-जरा-सी बातमें चिढ़ उठती है, थोड़ी भी दिक्कतपर अप्रसन्न हो उठती, घबड़ाती और

रोती है। कलेजा धड़कना तथा प्रत्येक उत्तेजनासे सभी प्रत्यंग काँपने लगते हैं, मृत्युसे डरती है तथा जीवनसे घृणा करती है। भय इस दवाका एक प्रधान स्वरूप है। वह डरती है, कि कुछ होगा, डरती है, कि उसका अनुपस्थित पति कभी लौटकर न आयगा ; यद्यपि वह नियमित रूपसे आता है। बेचैन प्रकृति, उत्तेजनशील, टहलती है, इधर-उधर हटती है और रोती है।

मानसिक और शारीरिक लक्षण पर्यायक्रमसे आते हैं। खयालोंका विचित्र भ्रम। सोचती है, कि वह इस जातिकी नहीं है तथा धार्मिक विषयोंपर उन्मत्त हो उठती है, कोनेमें बैठ जाती है, सोचती है और कुछ नहीं बोलता है। पगली हो जाती है, कामुक हो पड़ती है, अपवित्र बातें बोलती है और काँपती है। विषन्नता या क्रोधसे अकड़न पैदा हो जायगी। सीटी बजायगी, गायगी और नाचेगी। कल्पना-पूर्ण चीजोंपर हमेशा बातें करेगी। उसे विषादोन्माद या उन्माद हो जा सकता है। उसके मनमें किसी तरहकी भी गड़बड़ी उपसर्ग पैदा कर देगी। कामोत्तेजनासे उसे उपसर्ग उत्पन्न हो जायगी। हमेशाके मानसिक लक्षण प्रत्यङ्गोंके कम्पन, कामोत्तेजन तथा शरीरके कितने ही अंश और प्रत्यंगोंके सुन्नपनसे सम्मिलित रहते हैं। सङ्कोचनकी अनुभूति, दबावका दर्द, प्रत्यंगोंपर इस तरहका दबाव, मानो पट्टी बँधी हुई है या सिकुड़ गये हैं ; प्रत्यंगोंके चर्ममें इस तरहका तनाव, मानो पट्टी बँधी हुई है। ये ही चरित्रगत लक्षण शरीरके विभिन्न प्रदेशोंमें बने रहते हैं और बहुतसे विशेष लक्षणोंको सुधार करते हैं ; माथेमें दबावके दर्दके साथ मस्तक-त्वचामें सुन्नपनका भाव, माथेमें छेदने और सङ्कोचनकी तरह मालूम होना। मस्तक-त्वचामें तनाव, ऐंठनकी तरह मस्तक-त्वचामें सङ्कोचन, जो धीरे-धीरे बढ़कर प्रचण्ड हो जाता है ; मरोड़की तरह दर्द भी क्रमशः बढ़कर प्रचण्ड हो जाता है। माथेमें निचोड़नेकी तरह अनुभूति। यह दर्द कनपटियोंमें, मस्तक-शिखरमें या ललाटमें हो सकता है। इसके अलावा, रेंगने, सुरसुरानेका भाव और मस्तक-त्वचामें सुन्नपन। सरमें एकाएक झटका लगने-सा मालूम होना। मस्तक-त्वचामें सुन्नपनसे ज्यादा और कोई भी लक्षण इतना लगातार नहीं बना रहता है, यह सभी अनुभूतियों और दर्दोंके साथ बना रहता है। सभी सर-दर्द धीरे-धीरे बढ़कर तीव्र हो जाते हैं। सरमें भयंकर स्नायु-शूलके साथ गुल्म-वायु-ग्रस्त व्यक्तियोंमें असहनीयता। कभी-कभी तो माथेकी अवशता ऐसी बनायी गयी है, मानो दिमाग ही सुन्न हो गया। विरक्ति, भय, असन्तोष, रक्त स्राव तथा कामोत्तेजनसे सर-दर्द पैदा हो जाता है।

आँखोंके सामने चिनगारियाँ, पलकोंका अकड़न, चीजें वास्तवमें छोटी दिखाई देती हैं। आँखोंमें ठण्डक मालूम होती है ; अकड़न, अकड़न-भरा कम्पन और आँखोंकी पेशियोंमें ऐंठन मालूम होती है। कानोंमें मरोड़का दर्द, कानमें ठण्डक तथा वाह्य कर्णका सुन्न हो जाना। कानोंकी यह जड़ता, चेहरा, नाक तथा मस्तक त्वचातक फैल जाती है। प्लाटिनम एक रक्तस्रावी औषधि है। शरीरके विभिन्न अंशों तथा श्लेष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त-स्राव होता है। जिस किसी स्थानसे रक्त-स्राव होता है, उसमें तरलके साथ काले थक्के दिखाई देते हैं। नाकके उपसर्गोंकी परीक्षा करनेपर रक्त-स्राव देखनेमें आता है। नाकसे

काला, जमा हुआ रक्त निकलता है। गन्ध सहन नहीं होती। नाककी जड़में मरोड़का प्रचण्ड दर्द, साथ ही चेहरा लाल।

चेहरेमें ठण्डक अनुभव होना, चेहरेका सुन्नपन, मरोड़, चेहरेमें दवावका दर्द। चेहरेका स्नायु-शूल। चेहरेमें ठण्डक, रेंगनेका भाव और सुन्नपन। कपोलास्थिका सुन्नपन। चेहरेमें फाड़ने और छेदनेकी तरह दर्द।

निम्न हनुके भीतरसे स्पन्दन और खोदनेकी तरह भाव, खासकर दाहिनी तरफ, इसके साथ ही सुन्नपन और ठण्डक। दर्द धीरे-धीरे पैदा होता और धीरे-धीरे ही गायब हो जाता है। ऐसा मालूम होना, मानो जीभ झुलस गयी है, जीभपर कुछ रेंगनेका भाव। निराश भावके कारण भूख न लगना या दूसरे समय राक्षसी भूख, जल्दी-जल्दी खाना, अपने पासकी सब चीजें खा जाती है। बहुत आध्मान और पाकाशयमें उत्सेचन। तलपेट तथा पाकाशयकी पेशियोंका फड़कना। ऐसा मालूम होना, मानो सम्पूर्ण उदर सिकुड़ा है या कसकर पट्टी बँधी हुई है। उदर-चर्मका तनाव। तलपेटमें मरोड़का दर्द; नाभीके पास इस तरहका खींचनेका दर्द, मानो नाभी डोरीसे खींची जा रही है, जिससे कि तलपेट पीछे खिचा-सा मालूम होता है। उदरमें दवाव और नीचेकी ओर खींचनका दर्द। ये दर्द बहुत कुछ **प्लम्बम**की तरह होते हैं और प्लाटिनम **प्लम्बम**के प्रतिविषके रूपमें प्रयुक्त होता है। दबाव, रुके हुए वायुके कारण खींचनका दर्द। अन्त्र-नालीकी निष्क्रियता बहुत कुछ **प्लम्बममें** प्राप्त होनेकी तरह ही होती है। अदम्य कोष्ठबद्धता, बहुत वायु।

मल अधपचा और खण्ड-खण्ड या जलेकी तरह कड़ा होता है अथवा थोड़ा और बहुत ही कष्टकर हो सकता है या लसदार और कोमल मिट्टीकी तरह मलद्वारमें चिपक जानेवाला हो सकता है। बार-बार पाखाना लगता है; पर पाखानेके समय जोर नहीं लगाया जा सकता, अदम्य कब्ज और बार-बार पाखाना लगना; पर न होना सीसाका विष फैल जानेके कारण तलपेटमें दर्द तथा सीसाका विष प्रवेश कर जानेके बाद उदर शूल। यात्रियोंकी कब्जकी बीमारी। बहुत देरतक पाखाना होनेके लिये काँखना। कनकनीका दर्द, जलनका दर्द और पाखाना होनेके समय ववासीरका मसा निकल आना। पाखाना होनेके समय मलान्त्रमें जलन। मलद्वारमें खुजली, चुनचुनी और कूथन, खासकर शामके वक्त। पुरुष-स्त्री दोनोंमें ही असीम कामोत्तेजना रहती है। पुरुषोंको तो बहुत ही ज्यादा कामोत्तेजना होता है, जिससे उसे गुप्त पाप करना पड़ता है। इसने कामोत्तेजनके कारण उत्पन्न अपस्मार आरोग्य किया है। प्लाटिनमकी रोगिनी स्त्रीके लिये कामोत्तेजन एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्वरूप है। असह्य कामोत्तेजन और जननेन्द्रियमें लगातार सुरसुरी। वाह्य जननेन्द्रियकी इतनी असीम असहिष्णुता रहती है, कि रजः-स्राव-कालमें वस्त्र लेना स्त्रीके लिये कठिन हो जाता है। योनिकी इतनी असीम असहिष्णुता रहती है, कि बीचकी अङ्गुलीसे चिकित्सकके लिये परीक्षा करना कठिन होता है। यह प्रदाह नहीं; बल्कि अनुभूतिका अतिरेक है; युवतियोंकी, गुल्म-वायु-ग्रस्त लड़कियोंकी वर्द्धित कामोत्तेजन,

खुजली, चुनचुनी और काम-भावके साथ विवाहिताओंमें प्रचण्ड कामेच्छा। डिम्बाशय-प्रदेशमें खासकर बायें डिम्बाशय-प्रदेशमें दर्द। इसने बहुत दिनोंका वन्ध्यत्व, खासकर वह वन्धत्व, जो अत्यधिक काम-तृप्तिके कारण उत्पन्न माना जाता है, आरोग्य किया है। डिम्बाशयमें जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द। जरायुसे रक्त स्राव होनेके साथ और रजःस्रावके समय डिम्बाशयका प्रदाह। इसने डिम्बाशयका अर्बुद (Ovarian tumors) और कोषार्बुद (Cystic tumors) आरोग्य किये हैं। गर्भाशयका प्रदाह, नीचेकी ओर खींचनेकी तरह दर्द जैसा कि जरायुकी स्थान-च्युति होनेपर होता है। स्थान-च्युत जरायु और वस्ति-गह्वरमें खींचन। जरायुका गुल्म और जरायुसे रक्त स्राव। बहुत ज्यादा मासिक रजःस्राव ; स्राव गहरे रंगका, यहाँतक कि काला और बहुत से तरल रक्तके साथ थक्का-थक्का होता है। इन स्नायविक स्त्रियोंको हमेशा ऐसा अनुभव हुआ करता है, मानो रजःस्राव होना ही चाहता है। रजःस्राव समयके बहुत पहले, बहुत अधिक होता है और इसके बाद अमूमन बहुत कम समयतक होता रहता है। वृद्धाओंको रक्त-स्राव बहुत कुछ मासिक रजःस्रावकी तरह होता है। कभी-कभी तो रजः स्राव प्रत्येक चौदहवें दिन होने लगता है या रजःस्राव बिलकुल होता ही नहीं। भग और योनि-सङ्गम-कालमें बहुत असहिष्णु रहती है, कभी-कभी तो यह क्रिया ही रोक देनी पड़ती है। स्त्रीको अण्डलाल मिला श्वेत प्रदर होता है, ज्यादाकर बिना किसी अनुभूतिके दिनके समय ही होता है। गर्भावस्थाके भी बहुत से उपसर्ग हैं,—गर्भ-स्राव होनेकी आशङ्का, क्लान्तकारी रक्त-स्राव, रक्तके काले थक्कोंका स्राव। प्रसव-कालमें योनि तथा भीतरी भागके असहिष्णु रहनेके कारण संकोचनमें बाधा पड़ती है। प्रसव करानेवालेके लिये मामूली परीक्षा करना भी असम्भव हो जाता है। प्रसव-कालमें प्रत्यंगोंमें ऐंठन या अतिरिक्त रक्त-स्राव ; गुल्म-वायुकी तरह टंकार, सूतिकाक्षेप (Puerperal convulsions)। हरेक मानसिक परिश्रमके बाद कलेजा धड़कना, कम्पन, अवशता, सिहरावन और प्रत्यंगोंमें उत्तेजनशीलता होती है। अवशताके साथ पैरोंमें कम्पनशील अस्थिरता। पैर ठण्डे। अंगूठेमें इस तरहका दर्द, मानो पट्टी बँधी है। यह अनुभूति सर्वत्र ही रहती है। जांघ या टांगोंके पास प्रत्यङ्ग ऐसे मालूम होते हैं, मानो पट्टीसे कसे हैं। अधिकांश समय स्नायु-सब उत्तेजनाकी बढ़ी हुई दशामें रहते हैं। रोगी अनसन्न रहता है। पाक्षाघातिक दुर्बलता, यह विश्रामके समय एकदम बदतर हो जाती है। सुन्नपन, अकड़न, और ठण्डक। समूचे शरीरमें कष्टदायक कम्पन, इसके साथ ही रक्त-वाहिनियोंमें टपक। मस्तक-त्वचाका सुन्नपन, पैरोंका, हाथोंका और प्रत्यङ्गोंका। इधर-उधर हटनेवाला, स्नायु-शूलका दर्द। गुल्म वायु-ग्रस्ताओंकी अकड़नकी बीमारियाँ। काम-चिन्तनाके कारण अकड़न। चर्ममें खासकर ज्वरके समय, ठण्डक, रेंगनेका भाव और सुन्नपन हो जाना।

प्लम्बम मेटालिकम
(Plumbum Metallicum)

यह भेषज हैनिमैनकी शिक्षा—क्रम-विभाजनकी शिक्षाका निदर्शन करता है। जब आप सीसाके न गलनेकी बातको सोचते हैं और फिर इस बातको सोचिये, जब यह कमरेकी दीवारपर फैला दिया जाता है और इसके बाद यह याद कीजिये, कि नये रंगे हुए कमरेमें सोनेपर कितने बीमार पड़ते हैं, तब आपको ताज्जुब होगा, कि उनको बीमार करनेके लिये कितने सीसेकी जरूरत पड़ी। नये रंगे हुए कमरेमें बहुत-से रोगी नहीं सो सकते—उन्हें सीसक-शूल या सीसासे उत्पन्न कोई नयी बीमारी हो जाती है। बहुतोंको सीसा सहन नहीं होता। यह असहिष्णुता जितनी रंगसाजोंमें देखी जाती है, जो वर्षों बिना तकलीफके इसका व्यवहार करते रहते हैं, उससे कहीं ज्यादा रहती है; क्योंकि एकाएक वे इसके ग्रहण-शक्य बन जाते हैं। आपको ताज्जुब होगा कि हवामें मिला हुआ एक कितना प्राप्त करता है। यह इतना सूक्ष्मीकृत बन गया है, कि अनुवीक्षण यन्त्रसे इसकी परीक्षा नहीं हो सकती; पर इतनेपर भी, इतना ही उसे बीमार बनानेके लिये काफी होता है। ऐसी कोई माप नहीं है, जिससे पता लगे कि वह कितना प्राप्त करता है। हमलोग ऐसी ग्रहण-शक्यताका उपयोग करते हैं, सीसाका काम करनेवालोंका सीसाके कारण पक्षाघात, रंगसाजोंकी सीसाके कारण शूल-वेदना—ये बातें ही मुनासिब परीक्षाके फलकी वृद्धि करती हैं तथा प्लम्बमकी एक सुडौल मूर्ति सामने खड़ी कर देती हैं।

यदि प्लम्बमकी समस्त लक्षणावलीका हम अध्ययन करें, तो इस दवाकी सार्वाङ्गिक पाक्षाघातिक दशाको देखकर चौंक पड़ेंगे। शरीरकी क्रियाएँ और शरीर-यन्त्रोंकी वृत्तियाँ, धीरे-धीरे सुस्त पड़ती जाती हैं। उचित सक्रियताके साथ स्नायु अपने सम्वाद नहीं पहुँचाते। पेशियोंकी क्रिया धीमी, शिथिल हो जाती है। पहले अर्द्ध-पक्षाघात (Paresis) और अन्तमें पक्षाघात हो जाता है, पहले अंशोंका और फिर सम्पूर्ण शरीरका पक्षाघात। मन भी विशृङ्खलित, शिथिल रहता है। उपलब्धि भी धीमी होती है। बड़ी कठिनतासे वह कुछ याद करता है। अनुभव भी कष्टकर होता है। अपनी भाव-व्यञ्जनाके लिये शब्द नहीं प्राप्त कर सकता। मस्तिष्ककी क्रिया धीमी होती है। ऐसे रोगीसे बातें करते समय, आपको आश्चर्य होगा, कि जवाब देनेके विचारके लिये रोगी क्या सोच रहा है। चर्ममें भी यही शिथिलता रहती है। आप उसे चिकोटी काट लें और एक सेकेण्ड बाद वह कहेगा,—ओह!" जिससे अनुभव-शक्तिकी शिथिलता मालूम होती है। आप चाहेंगे, कि चिकोटीका प्रभाव उसे तुरन्त अनुभव हो। जब आप यह देखेंगे, कि इसका प्रभाव उसपर कुछ न हुआ, तो उसका शरीर काँप उठेगा। चर्मकी स्पर्श-ज्ञान-हीनता। नयी बीमारियोंमें यह अचैतन्यकी एक दशा आती है; परन्तु पुरानी बीमारीका चरित्रगत लक्षण अनुभूतिके अभावसे प्रकट होता है। अङ्गुलियाँ, अंगूठे, तलवे, तलहत्थियोंका सुन्नपन और यह मेरुदण्डकी ओर फैल जाता है।

क्षीणताकी क्रिया भी धीमी होती है, यह जितना क्षय होता है, उतनी नहीं होती और इसीलिये दुबलापन बढ़ते-बढ़ते यहाँतक जा पहुँचता है, कि रोगी कङ्काल-सा हो जाता है। चर्म सूखता है, झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, सिकुड़ जाता है, गद्दीकी तरह हो जाता है और हड्डियोंसे नीचे झूलता रहता है। कभी-कभी स्थानिक दुबलापन होता है। जब यह स्थानिक होता है, तो अमूमन दर्द-भरे स्थानसे सम्मिलित रहता है, दर्द-भरे स्थान सूखता है। गृध्रसी स्नायुमें दर्द होता है; जलन और खोंचा मारनेकी तरह दर्द, मानो अस्थियाँ अपने स्थानसे खींची जा रही हैं. मानो खुरची जा रही हैं और प्रत्यङ्ग क्षीण होते जाते हैं। बाहुमें नीचेकी ओर दर्द, कन्धोंमें, बाहुके जालमय अंशमें भयानक दर्द और बाहु सूख जाता है। चेहरेके एक पार्श्वका स्नायु-शूल और वही पार्श्व शुष्क हो जाता है। किसी एक पेशीका पक्षाघात और वह पेशी शुष्क हो जाती है। आकर्षणी और प्रसारिणी दोनोंका ही पक्षाघात, परन्तु खासकर प्रसारिणीका। पक्षाघात प्रसारिणीमें आरम्भ होता है, इसीलिये कलाई लटक जाती है। वह कोई भी चीज हाथसे उठा नहीं सकता, हाथ फैलाना भी मुश्किल होता है। यह पियानो बजानेवालोंको होता है; वे काफी तेजीसे, एक पर्देसे दूसरेपर जानेके लिये अपनी अङ्गुली उठा नहीं सकते; परन्तु प्रसारण ठीक रहता है। पियानो बजानेवालोंके इस उपसर्गके सदृश एक दूसरी दवा **क्युरारि** है, प्रसारिणी पेशीके अतिरिक्त परिश्रमके कारण उत्पन्न पक्षाघात। लगातार कई घण्टोंतक बजाना, बोलना प्रभृति एक ही व्यायामके कारण, जब कि बजानेवालेको बारम्बार वही काम करना पड़ता है, पेशियाँ थक जाती हैं, तो **रस-टक्स** फायदा करता है; पर यह एक नयी बीमारीकी दवा है और केवल थोड़े समयतक अपना प्रभाव रखती है। जब किसी खास पेशीका अत्यधिक व्यवहार होता है और रोगीको सर्दी लग जाती तथा कमजोरी आ जाती हैं, तो **रस-टक्स** एक खास दवा होती है; ठण्डे पानीसे नहाने या ठण्डे पानीमें डुबकी मारनेपर अर्द्ध-पक्षाघात हो जाता है, क्लान्तवाली अवस्थामें भींग जानेपर **रस-टक्स**की दशा आ जाती है; पर इसके बाद आनेवाली पुरानी दशामें प्लम्बम और कभी-कभी **क्युरारि** ही निर्देशित रहते हैं।

आँतोंका अर्द्ध पक्षाघात; कब्ज; पाखानेके समय काँख नहीं सकता। रोगी औदरिक पेशीका व्यवहार कर सकता है; पर सरलान्त्र (Rectum) एक अर्द्ध पक्षाघात-ग्रस्त दशामें रहता है और वह मलको बाहर नहीं निकाल सकता।

मूत्राशय भी अर्द्ध पक्षाघात-ग्रस्त रहता है; पेशाब नहीं निकल सकता, पेशियाँ पेशाब निकाल बाहर करनेमें सहयोग नहीं देतीं और पेशाब रह जाता है। प्लम्बममें मूत्र-रोध और मूत्र-नाश दोनों ही लक्षण हैं।

पक्षाघात तो पुरानी दशामें प्राप्त होता है। नेयेमें ज्वर, शूलका दर्द और आकस्मिक कोष्ठ-बद्धता रहती है, आँतोंमें फाड़नेकी तरह दर्द; वमनके साथ अजीर्ण; जो कुछ खाता है, वही अम्ल हो जाता है।

जो कुछ खाता है, उसीका प्रचण्ड वमन। पुरानी पाकाशयिक सर्दी, जिसके साथ

अण्डलालीय श्लेष्माका और मिठास लिये पदार्थोंका वमन होता है। मलकी तरह पदार्थोंका, कालापन लिये रक्त और हरे तरलका वमन। खट्टी डकारें।

यह दवा धीमी और गुप्त रूपसे क्रिया करनेवाली है; यह लगातार क्रिया करती है; यह स्वास्थ्य-विधानको त्याग नहीं देती; बल्कि पकड़े रहती है और अपना ही गुण विस्तार करती है। इसीलिये यह धीमी और प्रच्छन्न-पुरानी बीमारियोंके लिये उपयोगिणी होती है, जिसमें आरोग्य-प्रवणता नहीं रहती। बढ़ती हुई मांस-पेशिक क्षीणता; बढ़नेवाला पक्षाघात। पुरानी कब्जकी बीमारी; पुराना मूत्र रोध रोग; मस्तिष्कका पुराना क्षय।

मनकी सुस्तीके अलावा, जो आम तौरसे रहती है, यह दवा विषादोन्माद, उदासी, कोई भयङ्कर घटना घटित होनेका भाव प्रभृतिसे भरी है; उसने अपने कृपाके दिन पापमें बिताये हैं; रोगिनीने अक्षम्य अपराध किये हैं। मन तथा शरीर दुर्बल रहते हैं। "डरपोकपन और बेचैनीके साथ गहरी उदासी।" मानसिक दशामें, जब कि वह बहुत धीमें भावसे सोचता है, इतनेपर भी इस धीमें सोचनेमें भी वह बहुत कुछ सोच जाता है; वह सोचनेकी चेष्टा करता है। रातभर उसके विचार उसे कष्ट देते और नींद नहीं आने देते हैं। अनिन्द्रा; बराबर सोचते रहनेकी चेष्टाकी वजहसे नींद न आना। मस्तिष्क क्रिया नहीं करता, इतनेपर भी रोगी खाम-खयालों और भावोद्रेकोंसे भरा रहता है। समझने और याद रखनेकी शक्तिका न रहना। अब यह अनिद्राका काल बढ़कर बेहोशीमें जा पहुँचता है और इस बेहोशीके साथ मूत्ररोध-सम्मिलित रहता है। मूत्र-विकारके कारण बेहोशी। मूत्रक्षार-विकार। यदि रोगी शय्या-पार्श्वकी कुछ बातें आपको बतायें तो यह शायद आपके दिमागमें जम जायगी। कुछ वर्ष हुए एक चिकित्सक अपनी स्त्रीकी बीमारीके लिये मेरे पास आया। वह दो दिनोंसे बेहोश थी और कई दिनोंसे उसे पेशाब न हुआ था, मूत्र-शलाका (Catheter) देनेपर मालूम हुआ कि मूत्राशयमें पेशाब नहीं है। उसमें लक्षणोंकी लड़ी थी; पर वे साधारण लक्षण थे। कई दिन पहलेसे ही उसमें सुस्ती आ रही थी और नाभीके पास हमेशा खींचनकी अनुभूतिकी शिकायत किया करती थी, मानो डोरीसे मेरुदण्डकी ओर नाभी खींची जा रही है, इसके बाद बेहोशी भी आ गयी। बड़े कष्टमें पड़कर यह चिकित्सक आधी रातके समय मेरे पास आया। उसने कहा, कि रोगिनी मुर्देकी तरह पीली हो रही है और धीरे-धीरे साँस लेती है। सम्ब्रम ऊँचे क्रमकी एक ही पुड़िया दी गयी और कुछ ही घण्टे बाद, उसे पेशाब हुआ, होशमें आ गयी और दुबारा ऐसा आक्रमण फिर कभी न हुआ।

हृत्पिण्डका भयानक आक्षेपिक स्पन्दन, बायीं करवट सोनेपर बदतर रहता है, साथ ही हृत्प्रदेशमें बढ़ी हुई घबड़ाहट रहती है। हृद्-वृद्धि और हृद्-प्रसारण। हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

हिस्टीरियाकी प्रकृति; गुल्म-वायुके कारण चिरस्थायी कठोरता; अङ्गुलियोंकी ऐंठन; गुल्मवायुकी जैसी गति; शरीरके अंशोंमें अकड़न, हाथ पैर और समूचे शरीरकी अकड़न; एक तरहका स्पष्ट प्रलाप; हृत्पिण्डका दर्द; शरीरके अंशोंमें सुन्नपन—सभी गुल्म-वायुकी बातें हैं।

स्लम्ब्रममें धोखा देने, ठगनेकी प्रवृत्ति है। एक स्त्रीमें **एसिटेट आफ लेड**ने एक सुनिश्चित गुल्म-वायुकी अवस्था उत्पन्न कर दी, उसने आत्महत्याके लिये थोड़ा-सा खा लिया था। जब कोई उसकी ओर देखता रहता। तो वह घण्टों गुल्म-वायुकी अवस्थामें रहती थी। जब वह देखती कि पासमें कोई नहीं है, तो वह उठ बैठती, टहलती, अपनी सुन्दरताको आइनेमें निहारती; पर ज्योंही किसी आनेवालेके पैरोंका शब्द सीढ़ीपर सुनती, वह बिछावन-पर लेट जाती और अचेतन जैसी मालूम होती थी। वह बहुत ज्यादा चिकोटी काटना सह सकती है और आप मुश्किलसे बता सकते हैं, कि वह साँस ले रही है। स्लम्बम शरीर-विधानमें एक गुल्म-वायुकी अवस्था स्थिर कर देता है, एक धोखा देने, बीमार होनेका बहाना करनेकी भावना जमा देता है; अपनी बीमारीको बढ़ाकर बताना और यदि लक्षण मिलते हैं, तो यह दवा रोगकी जड़ हीला देती है।

परिवर्त्तनशील; बराबर एकसे दूसरी चीजपर बहका करती है; एक प्रकारके खाम-खयालोंसे दूसरेपर, एक भाव-समूहसे दूसरे भाव-समूहपर। सम्पूर्ण औषधि भावोद्रेकसे भरी है। बुद्धि-शक्ति जब धीमी पड़ जाती है, तो भी बहुत-से लक्षण भावोद्रेक-पूर्ण रहते हैं।

पेशाबमें अण्डलाल और चीनीके साथ मूत्रपिण्डके रोग स्लम्बम आरोग्य कर देता है। पेशाब काला, थोड़ा और उच्च आक्षेपिक गुरुत्व-पूर्ण रहता है। मूत्राशय पूर्ण रहनेकी अनुभूतिके अभावके कारण मूत्र रोध।

संन्यास रोग। बेहोशी, जब मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय हटानेके लिये **ओपियम** काफी तौरसे सदृश रहता है, जो हमेशा संन्यासके थक्कोंको घेरे रहता है, तो उसके बादकी दवा स्लम्ब्रम हो सकती है। स्लम्ब्रम, **फास्फोरस** और **पेल्यूमिना**—ये तीनों ही सबसे बड़े सहारे हैं। प्राथमिक दशा **ओपियमकी** तरह रहनेपर, ये अकसर लक्षणोंके अनुकूल होते हैं। पेशियोंका पक्षाघात शरीरके एक पार्श्वकी या किसी एक ही अंशकी पाक्षाघातिक दुर्बलता, ऐसे रोगोंसे इनका सम्बन्ध बताती हैं।

उर्द्ध-अङ्गका, सर और मस्तिष्कका एक दूसरा स्वरूप भी है, जो पुस्तकोंमें स्पष्ट नहीं लिखा है और जो आपके ध्यान देने योग्य है। मानसिक लक्षण, भाव सम्बन्धी लक्षण तथा माथेके लक्षण, परिश्रम करनेपर बहुत बढ़ जाते हैं, खासकर खुली हवामें व्यायाम करनेपर। खुली हवामें टहलनेके समय, रोगीको माथेमें गर्मी मालूम होती है, चेहरा पीला हो जाता है और हाथ-पैर ठण्डे; हाथ-पैर इतने ठण्डे रहते हैं, जैसे बरफ, मुर्दे जैसे और यदि वह परिश्रम करता ही जाता है, तो चेहरा एकदम मुर्देकी तरह हो जाता है। बिना हाथ पैर ठण्डे हुए; ये व्यक्ति न तो व्यायाम कर सकते हैं और न इसे जारी रख सकते हैं। एक उपदाहित मस्तिष्क; मस्तिष्कके तलदेशमें, गर्दनके पिछले भागमें तथा स्नायु-केन्द्रोंमें दर्द। परिश्रम करनेपर शाखा अंग ठण्डे; इतनेपर भी बिना सर्द हुए काफी मानसिक परिश्रम कर सकता है; यह खुली हवामें घूमनेकी तरह शारीरिक परिश्रम करनेपर होता है। प्रत्यंगोंमें शामके वक्त और रातमें आवेशिक वेदना, दबावसे घटता है और चलने-फिरनेसे

बदतर होता है। बिजलीको लहरकी तरह दर्द। सभी प्रत्यङ्गोंका झटके खाना और कम्पन।

प्लम्बमका रोगी ठण्डा और दुबला रहता है। गर्म मौसममें भी उसे बहुत कपड़ोंकी जरूरत रहती है; सरपर नहीं, बल्कि शरीरपर। हाथ-पैर ठण्डे, नीले, सुन्न और पतले शाखा अङ्गोंपर पसीना और पैरपरके पसीनेसे तो दुर्गन्ध निकलती है। धोबियोंके हाथकी तरह पैर और अंगूठे फटे रहते हैं। अंगूठोंपर फफोले; दो अंगुलियोंके बीचमें छाले, कुटकुटाहट जखम हो जाना। अङ्गुलियों और अंगूठोंकी चर्मके अणुकणिकाका क्षय, यहाँतक कि सड़ जाते हैं। पैरके पास कड़े स्थान, गट्ठे बतौड़ियाँ।

मस्तकके पुराने रोग रहनेपर पीठ और गर्दनकी माँस-पेशियाँ सिकुड़ती हैं, खींचन और ऐंठन, जिससे मालूम होता है, कि मस्तिष्ककी झिल्लीकी कोई बीमारी है, अकड़न-भरे झटके। "हनु-निम्नस्थ और जिह्वाधोवर्त्तिनी-ग्रन्थियोंकी सूजन।" अकसर दाँती लगनेके साथ टङ्कारकी तरह अकड़न होती है। "मसूढ़ोंके किनारे स्पष्ट नीली रेखा दिखाई देती है।" "मसूढ़े पीले, फूले, जिनपर सीसाके रंगकी लकीर रहती है; नीले, बैंगनी या भूरे; कड़ी गुटिकाओं (Tubercles) के साथ दर्द-भरे।" "जीभ सूखी, भूरी, फटी, पीली या हरी मैल चढ़ी रहती है; सूखी, लाल और चमकीली पुराने पाकाशय-प्रदाह (Chronic gastritis) में रहती है।" साँस बदबूदार, मुँहका सूखापन, जखम और मुँहमें फफोले। "कण्ठमें एक ठेपी रहनेकी तरह मालूम होना; वायु-गोला (Globus hystericus)", "कण्ठका पक्षाघात और निगलनेमें तकलीफ।" कण्ठनलीका एक प्रकारका पक्षाघात।

पाकाशयमें पाचन-शक्ति नहीं रहती, समीकरण भी नष्ट हो जाता है; तलपेटमें फाड़नेकी तरह शूलका दर्द, जिससे रोगी दोहरा जाता है। नाभीके पास डोरीसे खींचनका लगातार भाव, मानो तलपेट भीतरकी ओर खींचा जा रहा है। समय-समयपर तो तलपेट नतोदर हो जाता है, मानो उदर और पीठ बिलकुल सट गये हैं।

कब्ज एक साधारण और जाना हुआ लक्षण है। कब्ज, शूल और औदरिक लक्षण प्रायः साधारणतया सम्मिलित रहते हैं। "कब्जका मल, कड़ा, ढेला-ढेला भेंड़की मींगीकी तरह; मलका वेग और मलद्वारकी अकड़न और संकोचनकी वजहसे बहुत ही तेज दर्द; गेंदकी तरह गांठ-गांठ मल," कितना भी न काखें, वह मल नहीं निकल सकता। "आँतोंका संकोचन, नाभी और मलद्वार प्रचण्ड रूपसे पीछेकी ओर खिंचे।" "उदरमें अत्यधिक दर्द, वहाँसे शरीरके सभी भागोंमें विकीर्ण हो पड़ता है।" प्रचण्ड शूलका दर्द, खिंचा हुआ तलपेट; पीछेकी ओर झुक जाता है; गति-स्नायु विशेष रूपसे आक्रान्त होते हैं।" गड़गड़ाहट और आध्मान। मलका कस जाना। इसकी अकड़नकी क्रियाके कारण अपत्य पथमें (Vaginismus) भी अकड़न हो जाती है।"

"बिछावनपर अद्भुत भाव-भंगी और स्थिति बनाना।" रक्त-स्वल्पता, हरित्पाण्डु रोग। क्षीणता, मांस-पैशिक क्षीणता, भ्रमणकारी वेदना, शोथज-सूजन, पीला चर्म, कामला रोग।"

जखमोंमें जलन इस दवामें सर्वत्र प्राप्त होनेवाली जलनकी तरह ही है।

पोडोफाइलम

(Podophyllum)

नयी बीमारीके सिवा और समय शायद ही इस दवाका प्रयोग होता है ; परन्तु यह दीर्घ-क्रिय और खूब गहराईतक क्रिया करनेवाली औषधि है ; यह शरीर-विधानमें एक शक्तिशाली प्रभाव पैदा करती है। बद्धमूल दोषोंसे इसका सम्बन्ध है।

यह औदरिक कोष्ठको आक्रान्त करती है। वस्ति गह्वरके यन्त्रोंपर और यकृतपर यह अधिककर अपना प्रभाव दिखाती है। इसके आक्रमणका सबसे पहला स्थान उदर ही मालूम होता है ; यह पाकाशय और अन्त्र प्रणालीपर एक ऐसा प्रभाव उत्पन्न करती है, कि स्वस्थ क्रिया गड़बड़ा उठती है, पाचन और समीकरण रुक जाता है। जो कुछ पेटमें जाता है, खट्टा हो जाता है। पाकाशयकी ग्रन्थियाँ मानो पक्षाघात-ग्रस्त हुई रहती हैं ; पाचन नहीं होता ; यह तबतक जारी रहता है, जबतक वमन और पतले दस्त नहीं हो जाते। इस कालमें, तलपेटमें एक भयंकर गड़बड़ी मची है ; गुड़गुड़ाहट ; भड़भड़ाहट, मानो जानवर दौड़ रहे हैं, रोगी शय्या-पार्श्वके अनुसार, मानो किसी तालाबमें मछलियाँ छटपटा और पलटा खा रही हैं, जैसा कि हमलोगोंने तूफान आनेके पहले देखा है। गुड़गुड़ाहट और कुछ लुढ़कना। इसके साथ ही प्रचण्ड मरोड़की तरह दर्द होता है, यह मरोड़का दर्द रोगिनीको दुहरा देता है। तलपेट असहिष्णु रहता है ; इतना यन्त्रणा पूर्ण कि रोगिनी दबाव सहन नहीं कर सकती। यह यन्त्रणा पाकाशयतक फैल जाती है, आँतोंतक और अन्तमें यकृततक। सम्पूर्ण उदर-यन्त्र यन्त्रणापूर्ण और चाप-असहिष्णु (Sensitive to pressure) रहते हैं। इसके बाद गड़गड़ाकर पतले दस्त, मलद्वारसे झोंकसे निकलते हैं। इतना अधिक दस्त होता है, कि रोगी आश्चर्य करता है, कि कहाँसे इतना तरल आ गया है और तुरन्त ही यह फिर लग आता है। बहुत ज्यादा मात्रामें अधिक और बहुत बार-बार। यह यन्त्रणा, मरोड़ और गुड़गुड़ाहट दस्त होनेके पहले होती है ; पर कभी-कभी यह पाखाना होते समय भी होती रहती है। साधारणतया दस्त होनेपर रोगीको आराम मिलता है ; बहुत वायु और फड़फड़ाहट होती है ; पर इतनी अधिक नहीं, जितनी पेल्लोमें होती है। बिना पाखाना हुए ही शूलका दर्द उत्पन्न होता और चला जाता है। बिना दर्द हुए पाखाना, इसमें **चायना**से तुलना कीजिये, जिसमें रातके समय और भोजनके बाद दस्त आते हैं। सड़ी गन्ध हो या न हो ; परन्तु स्याहीके रङ्गका होता है। बदबूदार दस्त न होनेपर पोडोफाइलम बहुत कम निर्देशित रहता है। थोड़ी देर बाद ही पेट फूल जाता है और पाखाना होनेके बाद फिर शान्ति आ जाती है। ऐसा ही बार-बार हुआ करता है। ऐसा मालूम होता है, मानो उदर-गह्वरमें रक्तवाहिनियाँ अपनी सामग्री उँड़ेल देगी और फिर बाह्य जगतमें। हैजा और हलकी विसूचिकाकी तरह नहीं और ये ही दोनों रोगके साधारण प्रदर्शन हैं, जिसके लिये बँधी गतके अनुसार इस दवाका प्रयोग होता है। रातके पिछले भागमें होनेवाली विसूचिका, खासकर ३, ४ या ५ बजे पोडोफाइलमके सदृश रहती है। गुड़गुड़ाहट, दर्द और यन्त्रणाके साथ आँतोंकी विशृङ्खलित क्रिया और सुस्ती

इतनी ज्यादा रहती है, कि एक या दो दिनोंमें यदि आराम नहीं पहुँचाया जाता, तो मालूम होता है, कि रोगी जरूर मर जायगा। चावलके धोवनकी तरह दस्त, रख देनेपर चाशनीकी तरह हो जाता है।

इस विशृङ्खलित क्रियाके साथ रोगिनीमें अवर्णनीय अनुभूति रहती है, एकदम खाली-पनका भाव, एक भयानक रोग-भाव; इसीको किसी-किसीने खालीपन कहा है, मानो उपवास किये हैं, इतनेपर भी खानेकी इच्छा नहीं होती। एक भयानक, भूखा, खाली दुर्बलता, मानो सम्पूर्ण आँतें लटक पड़ेंगी। यदि वे ऐसा सोचते हैं, तो कोई ताज्जुबकी बात नहीं है; क्योंकि यह दवा एक आश्चर्यजनक शिथिलता उत्पन्न कर देती है। इसीको कितनोंने ही नीचेकी ओर खिंचावकी अनुभूति बताया है। गर्भाशयकी बन्धनियाँ शिथिल हो जाती हैं और गर्भाशय स्थान-च्युत रहता है। सरलान्त्र कई इञ्च बाहर निकल आता है। नीचेकी ओर खींचनका भाव, मानो सभी अंश बाह्य जगतमें आ पड़ेंगे; यह इसका एक साधारण स्वरूप है। यह यकृतमें होता मालूम होता है, मानो समस्त अंश लटक गये हैं। यन्त्रणाके साथ कमजोरी।

डिम्बाशय-प्रदेशमें नीचेकी ओर खिंचाव और डिम्बाशय रक्त सञ्चयीभूत रहता है। गर्भाशय असीम यन्त्रणा-पूर्ण और वर्द्धित रहता है; छूनेसे ही इतनी यन्त्रणा होती है, कि हलका वस्त्र भी यन्त्रणाको बढ़ा देता है। अतिसार और वमनमें; सामान्य हैजामें; स्त्रियोंमें रजः-स्रावके समय तलपेटमें असहिष्णुता। यदि रजः-स्राव कालमें बहुत ज्यादा पतले दस्त आते हैं और जरायुमें बहुत यन्त्रणा रहती है, तो यह निर्देशित होता है। डिम्बाशयोंमें बहुत दर्द, एक या दोनोंमें, यह पाँवोंतक, जांघके सामनेवाले भागसे नीचेतक फैल जाता है। डिम्बाशयोंमें दर्द, खासकर दाहिने डिम्बाशयमें; रजः-स्राव-कालमें डिम्बाशयमें दर्द; रजः-स्राव कालमें आँतोंमें पीसनेकी तरह दर्द। मासिक रजः-स्राव-कालके पहले और समग्र तलपेटमें बहुत यन्त्रणा—(**एपिस, सिमिसिफ्यूगा, वेस्पा, लैकेसिस**; पर इन सबमें पतले दस्त इतने नहीं हैं और यदि हैं भी तो इतने ज्यादा नहीं)।

पर्यायक्रमिक दशा, इस दवाका एक लक्षण है। यदि पोडोफाइलमके किसी रोगीको सर्दी लग जाती है, कोई मानसिक उत्तेजना होती है, बहुत ज्यादा श्रम कर लेता है, उबाला हुआ भोजन करता है, कोवी, फल खा लेता है या बहुत गरिष्ट भोजन कसकर कर लेता है, तो उसे अतिसार हो जाता है और इसके बाद कब्ज होता है, जो हफ्तों बना रहता है, ढेला-ढेलाके सिवा और किसी तरहका पाखाना नहीं होता; कष्टकर, थोड़ा मल और ज्योंही वह अपने पाकाशयको गड़बड़ाता है, त्योंही फिर पतले दस्त आने लगते हैं। यह पर्यायक्रमसे दस्त और कब्ज पोडोफाइलमकी दशा है, न कि पुरानी संग्रहणीकी जो कि अनवरत बनी रहनेवाली दशा है और बहुत-सी दवाओंमें प्राप्त होती है। अतिसार, समय बाँधकर और कब्जके साथ पर्यायक्रमसे होता है।

दूसरा पर्यायक्रमसे होनेवाला लक्षण सर-दर्द है। पुराना सर-दर्द, समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द, सवमन सर-दर्द, रक्त-सञ्चयी प्रकृतिका दर्द, मानो समस्त रक्त माथेपर चढ़

गया है, मानो माथा फट जायगा और माथेके पिछले भागमें प्रचण्ड दर्द होता है ; फटनेकी तरह दर्द और इसके बाद दस्त शुरू हो जाते हैं, जिससे माथेकी तकलीफ़ घट जाती है। कभी-कभी जब एकाएक दस्त रुक जाते हैं, तो सर-दर्द पैदा हो जाता है। अतिसारमें उच्च क्रमका पोडोफाइलम देनेके बाद यह एक साधारण लक्षण हो जाता है, कि अतिसार रुकनेके बाद सर-दर्द हो जाता है। इसका मतलब यह है, कि आकस्मिक रूपसे दवाकी क्रिया हुई है और सर-दर्द जल्द ही दूर हो जायगा।

यकृतकी गड़बड़ीके साथ पर्यायक्रमसे होनेवाला सर-दर्द। रोगी या तो करवट सोता है या उदरके बल। द्वादशांगुल अन्त्र (Duodenum) की तरह छेदनेकी तरह दर्द। आपको ताज्जुब होगा, कि यह पित्त-शिला शूल (Gall-stone colic) तो नहीं है। बँधे समयपर होनेवाला प्रचण्ड सर-दर्द, पर्यायक्रमसे होनेवाला अतिसार और कब्ज ; वह पीछेसे यकृत-प्रदेशको धक्का देकर आगेकी ओर ढकेलता है और इस तरह रोगीको आराम मिलता है, इतनेपर भी यकृतमें इतनी यन्त्रणा रहती है, कि वह दबावको सहन नहीं कर सकता। यकृतमें स्पर्श सहन नहीं होता ; यकृतके पास यन्त्रणा, पीठकी राहसे दर्द ; धीमा कनकनी जैसा दर्द, अन्तमें कामला रोग हो जाता है ; बहुत ज्यादा पीला पड़ जाता है। भोजनके दो या तीन घण्टे बाद बेचैनी और कष्ट, साथ ही कामला रोग ; बहुत जोरोंकी मिचली ; खाद्यसे अनिच्छा ; आँतोंमें एकदम खालीपनका भाव। वमन, हरा, बहुत ज्यादा, पानीकी तरह, हर चीजकी कै हो जाती है ; दूध निकल जाता है (**कैल्केरिया, इथ्यूजा**—पिछलेमें कभी-कभी पानी रह जाता है) ; वमनके बाद भूख, मृत्युकी तरह, बेकार बना देनेवाली मिचली और सुस्ती। वमनके समय सरलान्त्र और मलद्वारकी स्थान-च्युति (**म्यूरियेटिक-एसिड**)। एक वह दशा, द्वादशांगुल अन्त्रका श्लैष्मिक झिल्ली-प्रदाह (Duodenal catarrh) कहलाता है ; एक पुरानी दशा ; थोड़े-सेमें ही यह पोडोफाइलमके अतिसारमें परिणत हो जाता है।

मानसिक लक्षण भी कष्टप्रद रहते हैं। मनकी अक्रिय गड़बड़ दशाके साथ अक्रिय यकृत भी सम्मिलित रहता है ; इसके अलावा नाड़ी भी धीमी, शिथिल रहती है ; कलेजा धड़कता है। मनकी बहुत सुस्ती, विषाद, उदासी, निराशा ; सभी बातें गलत हो जाती हैं ; बादल बहुत ही काले रहते हैं ; रोशनी नहीं आती, सोचता है, कि वह मर जायगा या वह बीमार होना ही चाहता है ; उसकी बीमारी पुरानी पड़ जायगी ; उसे हृत्पिण्ड और यकृतकी यान्त्रिक बीमारी है ; उसने अपने पुण्यके दिन पापमें बिता दिये हैं और ऐसी-ऐसी कितनी ही भ्रम-पूर्ण बातें सोचा करता है। सहजमें ही मन जाता है ; छटपटी और बेचैनी ; शान्त बैठ नही सकता ; समूचा शरीर हिला-डोला करता है।

कामला रोग, एकदम खालीपनका भाव और खाद्यकी अनिच्छाके साथ यह मानसिक दशा, यहाँतक कि खानेका विचार या खाद्यकी गन्ध भी सहन नहीं होती ; यकृत-प्रदेशमें जकड़ जाने और तनावका भाव। गाढ़े क्लेदसे जीभ ढकी रहती है, लेईकी तरह, पीला

आवरण, मानों सरसों छिड़क दी गई हैं ; जीभपर दाँतके दाग ; बदबूदार श्वास प्रश्वास। इन्हीं लक्षणोंपर पुराने चिकित्सक **कैलोमेल** देते थे।

पित्त पथरी शूल ; यकृतकी विवृद्धि ; पाकाशयिक दुर्बलता ; पाचनकी शक्तिका न रहना ; द्वादशांगुल अन्त्रकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह ; बहुत ज्यादा पतले दस्तके साथ आँतोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। यदि आप पाखानेके बर्तनोंमें पोडोफाइलमका मल देखें, तो आपको बहुत-सा पानी दिखाई देगा और पेंदेमें अन्नके चूरकी तरह दाने, मानो भुट्टेका आँटा मिला दिया गया है। यदि पाखाना होनेके बाद जल्द ही देखेंगे, तो यह पीला, कीचकी तरह या पीलापन लिये हरा, बहुत ज्यादा, बदबूदार, मुर्देकी तरह गन्धसे भरा मालूम होगा ; गन्ध समूचे मकानमें छा जाती है ; किसी पीपेसे पानी ढालनेकी तरह वेगसे मल निकलता है ; गड़गड़ाहट और बहुत वायु। पाखाना होनेके साथ-ही साथ बहुतकर काँच निकल पड़ती है, काँच निकलना और पानीकी तरह दस्त ; बहुत कूथनके साथ कोमल धसधसा मल और काँच निकलना।

जरायुकी स्थान-च्युति। इसमें **म्यूरेक्स, सीपिया** और **नेट्रम-म्यूर** प्रधान हैं। **सीपिया**की रोगिनी बैठी या लेटी रहनेपर अच्छी रहती है ; चलने-फिरनेपर बदतर। संगमसे अनिच्छा, गर्मीकी झलक ; सरलान्त्रमें एक ढेला रहनेकी अनुभूतिके साथ कब्ज या पाखाना हो जानेके बाद अच्छी रहती है। **म्यूरेक्स**में आगे लिखे लक्षण हैं :— योनिपर दबाव देनेसे ही कुछ आराम मिलता है, लेटनेपर अच्छी नहीं रहती, उस समय उसकी पीठ और कूल्होंमें दर्द होता है, जिससे बाध्य होकर उसे टहलना पड़ता है ; पर इससे उसकी बीमारी बढ़ जाती है। कड़ी कामेच्छा। दाहिने डिम्बाशय-प्रदेशमें दर्द, जो समूचे बायें धड़ भागको पारकर बायें स्तनमें जा पहुँचता है। दर्द गर्भाशयमें आघात करता है।

"पित्त" शब्द पोडोफाइलमका एक आश्चर्यजनक स्वरूप है। आप इस रंगसे मल और वमनको मिला सकते हैं। रोगी स्वयं कहता है, कि वह "पित्त-पूर्ण" हो रहा है ; उसका "यकृत विकृत हो रहा है।" मुँहका स्वाद तीता, पित्त थूका करता है और उसका रंग पीला होता है ; अतिसारमें तो हरा पदार्थ निकलता है।

ऐसे बच्चोंको, जिन्हें बहुत ज्यादा दस्त आते हैं, साथ ही मलद्वार बाहर निकल पड़ता है ; परन्तु कोई दूसरा लक्षण नहीं मिलता,—उन्हें अकसर पोडोफाइलम आरोग्य कर देता है।

बच्चोंका एक स्वरूप आगे लिखा जाता है :—बच्चेको पतले दस्त नहीं आ सकते ; कब्ज ही रह सकता है ; पर वह बिछावनपर पड़ा रहता और सर इधर-उधर नींदमें लुढ़कता है। **बेलेडोना** और **एपिस**के रोगी भी सर लुढ़काते हैं। **एपिस**का रोगी पीठके बल पड़ा रहता है और माथा एक पार्श्वमें रहता है। जबड़ोंकी चबानेवाली हरकत ; कभी-कभी चूबनेकी तरह, जो बढ़ गये हैं और जिन्हें दाँत निकल आये हैं, उनका दाँत कड़मड़ाना ; एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वको सर लुढ़काना, यदि आप पलकोंको

उठायेंगे, तो आपको तिर्यक-दृष्टि (Strabismus) दिखाई देगी। परीक्षकोंको ऐसा अनुभव हुआ, मानो आँखें पीछेकी ओर खींच ली गयीं। एकाएक दस्त रुक जानेपर मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय होकर जो तिर्यक-दृष्टिकी बीमारी हो गई थी, उसको इसने आरोग्य कर दिया है।

एक बच्चा, जिसे रंगीन पाखाना होना चाहिये, उसके बदले खड़ियाकी तरह सफेद पाखाना होता है (कैल्केरिया-कार्ब) अवस्था-प्राप्तको पित्त-रहित, सफेद मल।

शरीरसे बदबू ; बदबूदार पसीना ; **सीपिया, मर्क्युरियस** पेलो **सल्फर स्यूरेक्स** और **नक्स**से तुलना कीजिये।

सोरिनम
(Psorinum)

सोरिनमका **सल्फर**से निकटस्थ सम्बन्ध है। रोगी नहानेसे डरता है। शरीरका चमड़ा, खासकर चेहरेका, गन्दा दिखाई देता है ; यद्यपि उसे खूब अच्छी तरह धोया गया है। एक मैला, गन्दा चेहरा, मानो धूलसे भरा है। चमड़ा सूखा और असमान, सहजमें ही फट जाता है, खून बहनेवाले घाव ; यह रूखे और खरोंट-भरे हो जाते हैं। उन्हें वह साफकर धो नहीं सकता। हाथका चमड़ा रूखा रहता है, सहजमें ही दरारें पड़ जाती है, मोटा हो जाता है और पपड़ी जमा हो जाती है, सहजमें ही फटता है ; छोटे छोटे खरोंट जमे उद्भेद पैदा होते हैं ; बिना धोया हुआ-सा दिखाई देता है ; उसके हाथ हमेशा गन्दे दिखाई देते हैं। बिछावनकी गर्मी और स्नानसे उसके कितने ही चर्म-रोग बदतर हो जाते हैं। चर्ममें खुजली होती है, जब गर्म हो जाता है ; ऊनी कपड़े पहननेपर खुजलाता है। बिछावनमें गरम होनेपर खुजलाता है ; वह तबतक खखोड़ता है, जबतक खाल नहीं उधड़ जाती और इसके बाद उसपर खरोंटें जमती हैं। जब आराम होनेको होता है, तो खुजलाता है और रोगीको उसे खुजलाना पड़ता है। खुजलानेसे पैर और बाहु खाल उधड़े और खरोंट-भरे। बिछावनकी गर्मीसे तेज खुजली, यहाँतक कि उद्भेद न निकले रहनेपर भी। चर्म अस्वस्थ, मैला दिखाई देता है, मलिन, वर्द्धित शिराएँ तथा कैशिका रक्तवाहिनियोंसे भरी। उद्भेद निकलनेके पहले यही दशा रहती है। खुजलानेपर पपड़ियाँ जमती हैं और इसके बाद उद्भेद निकलते हैं। तर, सूखी, फुन्सियाँ, ददोरे, फोड़े, फफोले और इन उद्भेदोंसे पानीकी तरह स्राव होता है। कुछ दिनोंतक उद्भेद बने रहनेके बाद खरोंटवाले उद्भेद और फफोले मिल जाते हैं, चमड़ा मोटा पड़ जाता है और कड़ा हो जाता है तथा पुराने जखमके चिह्नोंपर नयी फसल निकलती है, खाल उधड़ना, खुजली, सुरसुरी, रेंगनेका भाव और रक्त बहना।

मस्तक-त्वचा तथा चेहरेका अकौता ; पपड़ियोंसे मस्तक-त्वचा भर जाती है, केश झड़ जाते हैं ; रस-स्राव पपड़ियोंको उठा देता है और नये घावोंको खोल देता है ; यह कच्चे

मांसकी तरह दिखाई देता है और इसमें इतनी कलकलाहट होती है, कि बच्चा उससे अङ्गुली हटा नहीं सकता ; रातमें बदतर, बिछावनकी गर्मीसे बदतर, गर्म प्रयोगोंसे बदतर, जो कोई चीज हवाको इससे दूर रखती है, उसीसे बदतर ; ठण्डी हवासे घटता है और आवरण रहनेपर बदतर हो जाता है। यह सोरिनमकी सार्वाङ्गिक दशाके विपरीत है, जिसमें खुली हवासे रोग-वृद्धि होती है। उसे खुली हवा अच्छी नहीं लगती।

उद्भेद निकला करते हैं, फैलते हैं और अन्तस्त्वचा ऊँची उठ जाती है, मोटी और कड़ी पड़ जाती है, साथ ही इसकी रक्तवाहिनियाँ और लाली बढ़ जाती है। स्रावसे सड़े मांस या बिगड़े हुए मांसकी तरह बदबू आती है ; जो रस बहता है, उससे मिचली पैदा करनेवाली गन्ध।

सोरिनमका बदबूपन इस तरह चरित्रगत रूपसे रहता है, कि उसका वर्णन यहाँ जरूरी है :—सड़ी गन्ध, बदबूदार श्वास, स्राव तथा मवादोंसे ऐसी बदबू आती है, मानो गलित मांस है। मलमें इतनी दुर्गन्ध रहती है, कि समूचे मकानमें फैल जाती है ; अतिसारमें, गर्मीके दिनोंके उपसर्गमें, शिशु-विसूचिकामें ; पसीना भी बदबूदार ; श्वेत-प्रदरका स्राव घोर दुर्गन्धित ; डकारोंमें ऐसी गन्ध रहती है, मानो बहुत कड़े उबाले हुए अण्डे उसने खाये हैं और वे नष्ट हो गये हैं और ऐसी ही गन्ध उनसे दूसरोंको भी आती है ; मल, अधोवायु और डकारोंमें सड़े अण्डेकी तरह गन्ध आती है ; देखने और सूँघनेमें दुर्गन्धित विषय ही इस दवाको मांगते हैं।

चर्म बहुत ही ज्यादा मोटा पड़ता जाता है और उससे रक्त स्राव होता है, उद्भेद दूसरे अंशोंमें फैल जाते हैं। ओंठोंपर उद्भेद और जननेन्द्रियपर ; बहुत बदबूदार ; मलद्वारकी खाल उधड़ जाना और यन्त्रणा ; भग स्थानमें जखम हो जाता है और बहुत बदबूदार रहता है ; पैरोंपर जखम ; जङ्घास्थिपर हाथके पिछले भाग (करभ) पर ; पैरके पृष्ठ भागपर ; कानोंके पीछे और कानोंके ऊपर ; मस्तक-त्वचामें ; कपोलास्थिपर ; नासा-प्राचीरपर तथा नाक और पलकोंपर उद्भेद। तेलहा चमड़ा। नाक, मुँह, ओंठ और आँखोंकी श्लैष्मिक-झिल्ली लाल हो जानेके साथ उद्भेद। पलकें मोटी पड़ जाती हैं और उलट जाती है, मानो उलटी पलकें हों ; श्लैष्मिक-झिल्लियोंका दानेदार और कड़ी हो जाना, जिससे कि वे कोमलास्थिकी तरह हो जाती हैं, जाली और जखम। कनीनिकाका जखम, अश्रु स्राव ; पलकें उलट जानेके साथ बरुनियोंका झड़ जाना। लाल आँखोंके कारण रोगी भयावना दिखाई देता है और चेहरेपर उद्भेद, लाल चर्म जिससे गाढ़ा पीला स्राव होता है। पहले सफेद पतला या सफेद गाढ़ा रस निकलता है। पुराने उद्भेदोंमें खरोंटोंके नीचे जखम हो जाता है और उससे गाढ़ा, पीला, पीब-मिला स्राव होता है। आँख और नाकसे पीला हरा स्राव। नाकसे अत्यन्त दुर्गन्धित स्राव, नाकसे गोंदकी तरह ; **मर्क्युरियस, सिलिका, कैल्केरिया-फास,** हीपरकी तरह बदबूदार। आँखोंमें बदबूदार पीबका सञ्चय होना।

गाढ़े, पीले स्रावके साथ नाककी सर्दी। हमेशा सर्दी लगा करती है। सर्दीमें नाक कुछ समयतक सूखती और कुछ समय बहा करती है, उसे लगातार रूमालका व्यवहार करना

पड़ता है ; हमेशा नाक छिड़कना पड़ता है। सर्दीकी आरम्भावस्थामें, वह हमेशा नाक छिड़का करता है ; पर न तो उससे कुछ निकलता है और न उसे आराम मिलता है। यह दशा इतनी बढ़ी रहती है कि कुछ लोग सोचते हैं, कि इसे अविराम उद्भिज ज्वर (Hay fever) हो गया है, जो सालभर चलता है और वरफ गिरनेके समय पकता है। इसका उद्भिज ज्वरसे निकटस्थ सम्बन्ध है, वरफ गिरनेके समय नाकका रुकना ; आँखों और नाककी सर्दीकी दशा। उद्भिज ज्वरसे किसी दवाका ठीक बैठना बहुत ही मुश्किल है। यह निम्न-धातु प्रकृतिवालोंको होता है, जिसे पहले सुधारना पड़ता है, तब उद्भिज ज्वर बन्द होता है। यह सोराका एक प्रदर्शन है, जो सालमें एक बार होता है और सोरा-दोषको अवश्य परिवर्त्तन करना चाहिये। कुछ वर्षोंमें, अधिकांश रोगी बदल दिये जा सकते हैं ; पर एक ऋतुमें नहीं, इसलिये निराश न होना चाहिये। सर्दीकी दशामें अचिकित्सित निम्न ज्वरके कारण ही उद्भिज ज्वर हो जाता है।

सोरिनमका रोगी स्वतः एक दुर्बलीभूत व्यक्ति रहता है। वह जरा-सा चलनेके बाद ही घर लौट जाना चाहता है। खुली हवामें वह बदतर हो जाता है। खुली हवामें साँस नहीं ले सकता, खड़े रहनेके समय साँस नहीं ले सकता ; **घर जाकर लेट जाना चाहता है, जिससे वह साँस ले सके।** दमा या हृत्पिण्ड-जनित श्वास-कष्ट रहता है, जब कि रोगी घर लौट आना और श्वास लेनेके लिये लेट जाना चाहता है। आम तौरसे यह दशा बैठे रहनेपर घट जाती और खुली हवासे सुधर जाती है ; परन्तु सोरिनममें ऐसा नहीं होता, रोगी गर्म स्थान और लेट जाना तथा एकान्तमें रहना चाहता है।

सोरिनमके रोगीकी सभी क्रियाएँ धीमी होने लगती हैं ; एक तरहकी अर्द्ध-पाक्षाघातिक दशा। ज्वर आनेके बाद उसका सुधार नहीं होता, उसका पाचन धीमा रहता है ; पाखाना स्वाभाविक होता है ; पर मल निकालनेके लिये बहुत ज्यादा चेष्टा करनी पड़ती है ; मूत्राशय पेशाबसे भरा रहता है ; पर पेशाब धीरे-धीरे होता है और उसे ऐसा अनुभव होता है, कि कुछ रह गया, वह पेशाब या पाखानाकी क्रिया पूरी नहीं करता, उसे कई बार जाना पड़ता है। यद्यपि पाखाना ढीला और एकदम स्वाभाविक होता है ; पर वह एक बैठकमें नहीं निकाल दिया जा सकता।

सोरा-ग्रस्त रोगीको सान्निपातिक ज्वर (Typhoid) हो जा सकता है। टाइफायड या तो वशमें ले आया गया है अथवा उसने अपनी मियाद पूरी कर ली है और अब रोग आरोग्यके बादकी दुर्बलता है। ज्वर दब गया है ; पर रोगीको भूख नहीं लगती ; वह आरोग्य नहीं होता ; वह लेटे रहना चाहता है और इधर-उधर घूमना नहीं चाहता, बैठे रहनेपर उसकी दशा बदतर हो जाती है ; पीठके बल लेट जाता है ; उसको श्वास लेनेमें तकलीफ होती है और **अपने बगलसे हाथ निकालकर** पलङ्गसे लटकाये पड़ा रहता है ; इससे उसे श्वास-क्रियामें आराम मिलता है और वक्षको मुनासिब तौरसे क्रिया करनेका अवसर मिलता है, बहुत क्लान्त और बहुत दुर्बल रहता है, एक खुराक सोरिनमसे ही प्रतिक्रिया होने लगेगी; उसका पसीना बन्द हो जायगा, भूख बढ़ जायगी और श्वासकी क्रिया अच्छी तरह होने लगेगी।

सोरिनमकी लक्षणोंकी जटिलता वह है, जिसमें दवाएँ लाभ दिखाती हैं ; पर थोड़े समयके लिये और इसके बाद लक्षण परिवर्त्तित हो जाते हैं और दूसरी दवा अवश्य चुनी जानी चाहिये। यह एक दुर्बल प्रतिक्रियावाली दशा है।

मानसिक लक्षण भी कुछ जबर्दस्त स्वरूप दिखाते हैं। उदासी, निराशा, उसे अपने माथेपर घिरे बादलोंसे रोशनी आती नहीं दिखाई देती ; उसे अपने चारों तरफ अन्धेरा ही दिखाई देता है। वह सोचता है कि उसका कारबार नष्ट हो जाना चाहता है ; वह अब यतीमखानेमें पहुँचना चाहता है ; उसने अपने कृपाके दिन पापमें बिताये हैं। दिनके समय इसी खयालका समा बँधा रहता है और रातमें इसके ही स्वप्न देखता है। उदासी छायी रहती है ; निराशा ; अपने परिवारमें उसे आनन्द नहीं मिलता ; सोचता है, कि ये चीजें उसके लिये नहीं हैं। उसका कारबार फल-फूल रहा है, इतनेपर भी वह यही सोचता है, कि वह दरिद्रागारमें पहुँचना चाहता है। उसे कोई आनन्द या फायदा नहीं दिखाई देता। बहुत ज्यादा चिड़चिड़ा, अकेला रहना चाहता है। नहाना नहीं चाहता। चिन्तासे भरा, यहाँतक कि आत्मघातके विचार। यदि बीमार है, तो आरोग्यसे निराश रहता है।

यद्यपि कोई उद्भेद नहीं रहते तथापि रातमें लगातार खुजली होनेके कारण वह निराश हो पड़ता है। यदि ओढ़ना उतार देता है, तो उसे सर्दी मालूम होती है ; यदि ओढ़ना ओढ़ लेता है, तो खुजली पैदा हो जाती है। सर्दी सहन नहीं होती ; इतनेपर भी चर्म गर्मीसे बदतर हो जाता है। सुरसुरी, खुजली, कलकलाहट, चींटी रेंगनेकी तरह मालूम होना, मानो चर्म-पटलके भीतर कीड़े हैं।

यह खासकर भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जिन्हें खुली हवामें जाते ही सरमें चक्कर आने लगता है, चकाचौंध लग जाती है और घर जाकर लेट जाना चाहते हैं ; डरते हैं, कि उनकी साँस रुक जायगी।

बहुत दिनोंका पुराना समय बाँधकर होनेवाला **भूखके साथ सर-दर्द** और अकसर जितनी देरतक सर-दर्द रहता है, उतनी देरतक भूख बनी रहती है, **रातमें बाध्य होकर कुछ खानेके लिये उठना पड़ता** है ; कभी-कभी तो खा लेनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है। यदि नहीं खाता है, तो भी उसे सरमें दर्द होता है। माथेमें रक्तका तेज दौरान, चेहरा गर्म, केश पसीनेसे तर, भूख। हरएक, दो या तीन सप्ताहपर सर-दर्द लौट-लौटकर आता है। जितनी ही बार उसके सरमें हवा लगती है, वह सर्दीको ढीला करती है और सर-दर्द हो जाता है। सर्दी लगनेके कारण या तो नाककी सर्दी या सर-दर्द। प्रचण्ड सर-दर्द होता है, टपक, मानो किसी छोटी हथौड़ीसे ठोका जा रहा है, चेहरा लाल, माथा गरम—रक्त-सञ्चय ; कभी-कभी पसीना होता है। जिन्हें जाड़ेमें सूखी खाँसी होती है ; ऐसोंका भूखके साथ सर-दर्द। सूखी, तंग करनेवाली ; हिला देनेवाली खाँसी, बलगम नहीं निकलता। यदि खाँसी रुक जाती है, तो बँधे समयपर सर-दर्द होता है। इस तरह पर्यायक्रमसे उपसर्ग आते हैं। सर-दर्द छूटता है, तो खाँसी आने लगती है या जाड़ेके दिनोंके उद्भेद और सर-दर्द पर्यायक्रमसे होते हैं।

मस्तक-त्वचा ठण्डी ; गर्मियोंमें भी रोएँदार टोपी पहनता है ; सर खोलनेपर रोग बढ़ जाता है (**सिलिका**) ; केश कटवानेपर बीमारी बढ़ती है (**बेलेडोना, ग्लोनोइन, सिपिया**) ; हीपरका रोगी भी सर्दीसे बदतर रहता है ।

एक तरहका पुराना अकौता (Salt rheum), जाड़ेमें चम्बल रोग । सूखी, ठण्डी ऋतु तथा ठण्डी तर ऋतु ; ठण्डे पानीसे नहाना ; तश्तरियाँ धोना—इन सबसे अकौता बढ़ जाता है ।

"केश सूखे, चिकनाहट-रहित, सहजमें ही लट बँध जाती है, आपसमें चिपक जाते हैं ; उन्हें लगातार कंघीसे झाड़ते रहना पड़ता है ।"

पुराना बदबूदार, कानका स्राव ; गाढ़ा, पीब-भरा, बदबूदार ; कानका स्राव पीला ; सड़े हुए गोश्तकी तरह गन्ध आती है ; लगातार कान बहा करता है । कानके पास और पीछे उद्भेद । आरक्त ज्वरमें कानसे मवाद आना ; मध्य-कर्णमें फोड़ा ; मध्म-कर्णसे मवाद आना ; कानके पर्देका फट जाना ; ऐसे फोड़ेसे बहुत दिनोंतक मवाद आना ; बदबूदार स्राव । "कर्ण-स्राव—सर-दर्दके साथ, पतला, खाल उधड़नेवाला और भयानक बदबूदार, मानो बिगड़ा हुआ मांस हो ; बहुत दुर्गन्धित, पीब-मिला ; भूरा, बायें कानसे बदबूदार, करीब-करीब चार वर्षोंसे ।" पानी जैसे, बदबूदार दस्तके साथ कर्ण-स्राव । कानोंमें पपड़ी और कानोंके पीछे तर पपड़ियाँ ।

दाँत । रिग्स रोग (दन्त-गुहाका प्रदाह), दाँत ढीले पड़ जाते हैं, मसूढ़े जड़ छोड़ देते हैं, छेद-भरे, उनसे सहज ही रक्त-स्राव होता है ; तर नीले, दाँत गिर जाते हैं । जीभ और मुँहके पास जखम ; बचपनमें दिखाई देनेवालेकी तरह जखम ; मुख क्षत (मुँहके छाले), मसूढ़ेके घाव, जखम-भरा यन्त्रणा-पूर्ण मुँह ; गल-क्षत ; कण्ठके पुराने घाव । शुण्डिकाका पुराना मोटापन और विलम्बित दशा । तालुमूल-ग्रन्थि, कर्णमूल-ग्रन्थि, हनु-निम्नस्थ ग्रन्थियोंकी विवृद्धि ; वे कड़ी और स्पर्श-असहिष्णु हो जाती हैं ; सर्दी लग जानेके कारण सूजन । गर्दनकी ग्रन्थियाँ यन्त्रणा-पूर्ण ।

मलकी गड़बड़ीके साथ उदरकी पुरानी बीमारियाँ । कोमल मल निकलनेके लिये भी रोगीको काँखना पड़ता है (**नक्स-मस्केटा, पेल्यूमिना**) । संग्रहणी रोग ; बहुत बदबूदार दस्त ; दिन रातमें कितनी ही वार दस्त (**सल्फर**की तरह नहीं, जिससे इस दवाका बहुत सादृश्य है) । स्वाभाविक पाखाना होनेपर भी उसे कितनी वार जाना पड़ता है ।

पुराना वमन-रोग ; पाकाशयका जखम ; उसके साथ ही पेटका तन जाना साधारणतः सम्मिलित रहता है । हमेशा खट्टी डकारें आया करती हैं ; खट्टा पाकाशय । रक्त वमन और रक्त-मल (रक्तातिसार) । यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है ; क्योंकि सोरिनममें रक्त-स्राव-प्रवणता है, खासकर गर्भाशयसे सब तरहकी मासिक विशृङ्खलता, खासकर बहुत दिनोंतक रजःस्राव होते रहना । जब किसी स्त्रीको गर्भ-स्राव हो जाता है और फूल निकल आता है ;

पर कई दिनोंका नागा देकर थोड़ा-सा ताजा, लाल चमकीला रक्त और थक्के निकलते हैं या लगातार कितने ही दिनों और सप्ताहोंतक थोड़ा-थोड़ा लाल चमकीले रक्तका स्राव हुआ करता है ; जितनी ही बार वह खड़ी होती है, उतनी ही बार नया रक्त-स्राव होता है ; एकदम आरोग्य होनेकी प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती। इस दशाके सदृश दो औषधियाँ हैं—**सलफर** और सोरिनम। शिथिलताकी एक बढ़ी हुई दशा, गर्भाशयकी अल्प विवृद्धि (Sub-involution)। गर्भाशय अपनी स्वाभाविक दशामें नहीं जाता और यह रक्त-स्राव-प्रवणता बनी रहती है ; एक जड़ता—निर्जीवताकी दशा।

"मल कोमल ; पर मुश्किलसे पाखाना होता है।" इसे न भूल जायें। जिद्दी कब्ज। सरलान्त्रके रक्त-स्राव। शिशु हैजा ; आरम्भके दिनोंमें अकसर मल बहुत ही बदबूदार, चिकना, अजीर्णका रहता है ; वमन और बढ़ी हुई दुर्बलता रहती है और सम्पूर्ण बच्चेसे बदबू निकलती है ; बच्चा मैला, नाक भीतर धँसी हुई (**पेप्टिम-टार्ट**), भीतर दबा हुआ चेहरा। सोरिनम प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है और आरोग्य करता है या बच्चेको इस दशामें ला देता है, कि कोई सीधी-सादी दवा भी रोगीको सम्पूर्ण आरोग्य कर देती है। यह **हीपर**का खट्टापन नहीं है ; बहुत कुछ धोने-नहलानेपर भी बच्चेसे बहुत ज्यादा खट्टी गन्ध आती है ; खट्टे दूधकी तरह। तौलिया, पेशाब, मल और पसीना, सभी खट्टे। यह **हीपर**का एक जबर्दस्त लक्षण है। मल सड़े हुए अण्डेकी तरह और इसी तरह सभी डकारें और अधोवायु भी। मलकी बदबू भयङ्कर रहती है ; पर **बैप्टीशिया**की तरह भीतर प्रवेश करनेवाली नहीं, मल गाढ़ा और मिट्टीकी तरह होता है ; पर सोरिनमके दस्त पानीकी तरह, भूरे, झोंकसे निकलनेवाले और रक्त मिले भी हो सकते हैं। पुराना अतिसार, खूब सवेरे, दौड़कर जाना पड़ता है। गर्म अधोवायु, मलद्वारमें जलन ; सड़े अण्डेकी तरह गन्ध (**आर्निका** और **स्टैफिसेग्रिया**)। रातमें अनैच्छिक रूपसे पाखाना हो जाना (**चायना**में काला, बहुत ज्यादा, पानीकी तरह दस्त रातमें और भोजनके बाद होता है)। सोरिनममें **सलफर**की तरह जल्दबाजी दिखाई देती है तथा **ओलियैण्डर** और **पेलो**की तरह आध्मान तथा **पेल्यूमिना, चायना** और **नक्स-मस्केटा**की तरह कोमल मलको निकालनेमें कष्ट।

सोरिनमके कुछ रोगीमें सुस्ती भी रहती है ; जननेन्द्रियकी अवसन्नता। यह कोई बहुत गैरमामूली बात स्त्रियोंके लिये नहीं है, कि उन्हें सङ्गमसे वितृष्णा हो जाय ; पर पुरुष ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, कि उन्हें ऐसा रोग हो, कि संगमसे वितृष्णा पैदा हो जाय। इतनेपर भी पुरुष तथा स्त्री—दोनोंमें ही एक ऐसी दशा प्राप्त होती है, कि उन्हें वास्तविक संगम-वितृष्णा हो जाती है या आनन्द नहीं मिलता। वह क्रिया करता है, लिङ्गोद्रेकमें भी कोई कठिनाई नहीं होती, इसलिये यह ध्वजभंग नहीं है ; पर उसे आनन्द नहीं मिलता। नपुंसकता तो इसके बाद आती है। "लिङ्गोद्रेक न होना ; अंश फूले, अक्रिय।" "संगमसे अनिच्छा ; ध्वजभङ्ग ; सङ्गम-कालमें वीर्य-पात न होना।" "पेशाब करनेके पहले मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे रक्त-स्राव।"

पुराना सूजाक, बिना दर्दके मवाद आना, "अन्तिम बून्द।" शिथिल और ठण्डी लिङ्गेन्द्रिय ; खूब चुनी हुई दवा देनेके बाद भी एक बून्द सफेद या पीला पीव (**सीपिया, सल्फर, पेल्यूमिना,** सोरिनम)। यदि जननेन्द्रियसे गैरमामूली बदबू आती हो, तो सोरिनम सबके ऊपर निर्देशित रहता है। **थूजा,** यदि गन्ध मिचली पैदा कर देनेवाली हो, मीठी प्रकृतिकी हो ; अग्रचर्मको पीछे हटानेपर मसे निकल पड़ना ; धोनेपर भी एक तरहकी मीठी गन्ध।

सोरिनम बहुत-से हृद्-रोगोंको आरोग्य कर देता है। थोड़े भी परिश्रमसे कलेजा धड़कना, लेट जानेपर बेहतर। सुई गड़नेकी तरह दर्द, लेट जानेपर अच्छा हो जाता है। दोनों ओर ही हृत्पिण्ड-जनित मरमर शब्द। हृद्-कपाटके उद्गीरण-जनित मरमर शब्द (Mitral regurgitant murmur)। वातज हृद्वेष्ट-प्रदाह (pericarditis of Rheumatics)। सार्वाङ्गिक दुर्बलताके साथ हृत्पिण्डके लक्षण, धुमैला चेहरा, चकरायी हुई दृष्टि, कमजोर, अनियमित और तीव्र नाड़ी।

पर इसके स्वरूपोंपर ध्यान दीजिये। खुली हवामें रोग-वृद्धि, तनकर बैठनेपर रोग-वृद्धि, लिखनेके टेबिलके सामने बैठते ही रोग-वृद्धि ; लेट जाना चाहता है ; लेटकर श्वास-यन्त्र और वक्षको विश्राम देना चाहता है। दमाकी वजहसे श्वास-कष्ट, लेट जानेपर घटता है और बाहु जितने ही धड़के पास लाये जाते हैं, उतना ही बदतर होता जाता है। बहुत कम दवाओंमें ऐसे लक्षण प्राप्त होते हैं और सोरिनमकी तरह किसी भी दवामें इतने स्पष्ट नहीं हैं।

ज्वरकी दशा। सविराम, पित्तज ज्वर, सर्दी लगकर ज्वर ; रोगी इतना गर्म रहता है, कि ओढ़नाके भीतर रखे हुए हाथ ऐसे मालूम होते हैं, कि वाष्प स्नान हो रहा है और तापकी अनुभूति उसे हटा लेनेके लिये बाध्य करती है। यह **बेलेडोना**की तरह शुष्क ताप नहीं है, इतनेपर भी यह अति तीव्र है। यह भाफ है। ज्वरकालमें वह खौलते हुए पसीनेसे भरा रहता है। माथा और शरीर गर्म तथा ओढ़नेके नीचे गर्म हवा या भाफ रहती है। (**ओपियममें** यह है ; पर यह मस्तकके प्रचण्ड रक्त-सञ्चयमें, संन्यास रोगकी अवस्थामें रहता है)। सविराम ज्वरमें श्वास-कष्टके साथ वह राहमें चलता है। वह घर लौट जाना चाहता है ; वह दुर्बल और श्रान्त क्लान्त रहता है ; हाथ और घुटनोंके बल सीढ़ी चढ़ता है। जाड़ा इतना ज्यादा नहीं रहता ; परन्तु ताप बहुत तेज और पसीना बहुत ज्यादा होता है। वह बेहोश-सा, बुद्धि-भ्रष्ट, घबड़ाया रहता है, सवालोंका जवाब नहीं दे सकता ; चेहरा लाल, भरीया, दाग-दगीला। "बहुत ज्यादा पसीना ; ठण्डा, थोड़ेसे परिश्रमसे लसदार पसीना।" यह एक दूसरा रूप है, जो दुर्बल, भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तिमें दिखाई देता है। सान्निपातिक ज्वर (मियादी बोखार) के बाद, बिछावनपर करवट लेनेपर भी उसे पसीना होने लगता है, थोड़े भी परिश्रमसे पसीना और पसीना ठण्डा होता है। रातके समय बहुत ज्यादा पसीना। यक्ष्मा रोगमें रात्रिके समय पसीना, जब कि ओढ़नेके भीतर वही प्रचण्ड ताप रहता है ; बहुत ज्यादा गर्म पसीना ; मानसिक दशा, मानो चकाचौंध लगी।

सुखण्डी ; चर्ममें झुर्रियाँ ; मैला चर्म ; धोकर साफ नहीं कर सकता। आँतोंसे बदबूदार स्राव, बहुत दुबलापन ; चेहरेपर केश ज्यादा निकलते हैं ; एकदम खूब छोटे-छोटे दाने (**नेट्रम-म्यूर**, सोरिनम, **सलफर, कैल्केरिया**); धोनेपर भी भयानक बदबूदार ; राक्षसी भूख, इतनेपर भी दुबला होता जाता है। बदबूदार गन्ध ही लोगोंको सोरिनमकी ओर निर्देशित करती है।

पल्सेटिला

(Pulsatilla)

यह **स्त्रियोंके लिये**, सुन्दरियोंके लिये और खासकर **आँसू बहानेवाली सुन्दरियोंकी** बहुत लाभदायक दवा कहलाती है। यह एक नित्य-प्रयोजनीय औषधि है और एक ऐसी दवा है, जिसका जितना ही ज्यादा व्यवहार होता है, उतना ही अकसर अपव्यवहार भी होता है।

पल्सेटिलाका **रोगी** एक मनोज्ञ रोगी होता है। किसी भी घरमें मिल सकता है, जिसमें बहुत-सी छोटी लड़कियाँ हैं। वह रोती, रक्त-पूर्ण रहती है और चेहरेसे बीमार दिखाई देनेपर बहुत कम सहानुभूति प्राप्त करती है ; इतनेपर भी वह अत्यन्त स्नायविक, चञ्चल, परिवर्त्तनशील और सहजमें ही परिचालित या प्ररोचित की जानेवाली रहती है। वह **नम्र, शरीर** और **आँसुओंसे** भरी रहनेपर भी बहुत चिड़चिड़ी रहती है ; विषाद-प्रिय रूपमें नहीं ; पर सहजमें ही चिढ़ उठती है, असीम स्पर्श-असहिष्णु रहती है ; हमेशा यही अनुभव करती है, कि उसकी अवज्ञा की गई है या डरती है, कि उसकी उपेक्षा की जायगी ; सभी सामाजिक प्रभावोंसे समझती है। विषाद, उदासी, रोना, निराशा, धार्मिक निराशा, उन्माद-पूर्ण ; भावों और खाम-खयालोंसे भरी ; कल्पना-प्रिय ; असीम उत्तेजनाशील। वह सोचती है, कि पुरुष-जातिका साथ करना भयानक है तथा मानव-जातिकी भलाईके लिये समाजमें प्रचलित कितने ही कार्य करना खतरनाक है। ये विचार खाने और सोचनेके सम्बन्धमें भी हैं। वे सोचती हैं, कि दूध पीना अच्छा नहीं है, इसलिये वे न पियेंगी ; वे सोचती हैं, कि कोई विशेष खाद्य मानव-जातिके लिये अच्छा नहीं है। विवाहसे अनिच्छा इसका एक जबर्दस्त लक्षण है। किसी पुरुषके दिमागमें यह घुस जाता है, कि अपनी स्त्रीसे रति-क्रिया करना बुरा है। वह उसे त्याग देता है ; धार्मिक कल्पनाएँ ; धार्मिक भावोंपर विचार करते रहनेकी एक विशेष प्रवृत्ति ; धर्म-ग्रन्थ-सम्बन्धी बँधे विचार ; वह अपने खयालके अनुसार धर्म-ग्रन्थोंका अपव्यहार करता और अर्थ लगाता है, तबतक अपनेको पवित्र करनेके फेरमें पड़ा रहता है, जबतक बुद्धि-भ्रष्ट और उन्मत्त नहीं हो पड़ती ; सोचता है, कि वह एक आश्चर्यजनक रूपसे मनकी पवित्र-पूर्ण दशामें है या उसने अपने कृपाके दिवस पापमें बिता दिये हैं। यह तबतक जारी रहता है, जबतक वह अन्य विषयोंमें बुद्धि-हीन नहीं हो जाता है और तब मौन होकर दिन-पर-दिन बैठे रहनेकी प्रवृत्ति हो जाती है।

जबतक उसपर भरपूर जोर नहीं दिया जाता, तबतक सवालोंका जवाब नहीं देता; पर यदि कुछ कहता है, तो "हाँ" या "नहीं" या सिर्फ अपना सर हिला देता है। किसी नम्र, शरीफ और अश्रु-पूर्ण स्त्रीका सूतिकोन्माद, इसके बाद वह उदास और मौन रहती है और इसके बाद अपनी कुर्सीपर दिनभर बैठी रहती है, किसी बातका जवाब नहीं देती या "हाँ" "नहीं" के लिये अपना सर हिलाया करती है।

पाकाशयकी गड़बड़ी और अजीर्ण या मानसिक रजःस्रावकी गड़बड़ियाँ दुर्बलताके साथ सम्मिलित रहती हैं। जिन स्त्रियोंको गर्भ-स्राव हो जाता है; स्राव सम्बन्धी विभिन्न अनियमितताएँ रहती हैं; मिथ्या गर्भ। डिम्बाशय और गर्भाशयके लक्षणोंके साथ अकसर मानसिक लक्षण सम्मिलित रहते हैं।

इस मानसिक दशाके साथ, शरीरकी सार्वाङ्गिक दशा; **गर्म कमरेमें बदतर हो जाती है और हिलने-डोलनेपर** उपशम। आँसुओंसे भरा, उदास और निराश; खुली हवामें टहलनेपर घट जाता है, खासकर जब हवा ठिठुरानेवाली, ठण्डी, ताजी और चमकीली रहती है। गर्म कमरेमें श्वास-रोध और दर्द बढ़ जाता है, यहाँतक कि सर्दी मालूम होने लगती है, एक स्नायविक सर्दीलापन, जब कि रोगीको कमरेकी गर्मीकी वजहसे पसीना होने लगता है। प्रादाहिक लक्षण, स्नायु-शूल और वात ठण्डकसे, ठण्डी चीजें खाने-पीनेपर, ठण्डे प्रयोगसे या ठण्डे हाथ रखनेपर अच्छे रहते हैं। ठण्डे पेय आराम पहुँचाते हैं, यहाँतक कि यदि रोगी **प्यासा नहीं भी रहता**। ठण्डे खाद्य पच जाते हैं; पर गर्म खाद्य शरीरको गरम कर देते हैं, जिससे सभी उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। कण्ठनलीके नीचे उतरकर बरफका पानी अच्छा मालूम होता है तथा पाकाशयमें ठहर भी जाता है; यद्यपि प्यास नहीं रहती।

बहुत-से लक्षण भोजनके बाद बदतर हो जाते हैं। यह अकसर पेटमें ढेलेकी तरह पड़ा रहता है; पर मानसिक और स्नायविक लक्षण भी भोजनके बाद बदतर हो जाते हैं। पाकाशयके लक्षण सवेरे बदतर रहते हैं और मानसिक लक्षण शामके वक्त। **चर्बी (घी आदि) तथा गरिष्ट खाद्योंसे रोग-वृद्धि।** चर्बी, सूअरका मांस, तेलकी बनी चीजें, रोटियाँ, पीठीकी बनी चीजें तथा गरिष्ट पदार्थ खानेके कारण उत्पन्न बीमारियाँ। पल्सेटिलाके पाकाशयमें बहुत धीमा पाचन होता है। भोजनके घण्टों बाद पाकाशयमें भरापन, पाकाशयमें एक ढेला सा पड़ा मालूम होता है। **यह खुली हवामें धीरे-धीरे टहलनेपर** घट जाता है। **खुली हवामें धीरे-धीरे चलने-फिरनेपर** साधारणतः रोगीको आराम पहुँचता है, शान्त रहनेकी चेष्टा करनेपर बाह्य-ज्ञान-शून्य या उन्मत्त हो पड़ता है, विश्राम करनेके समय बदतर; कुछ करनेपर, साधारणतः धीमे भावसे, साधारण गतिसे रोग घटता है। यह हिलने-डोलनेपर आराम और विश्रामसे रोग वृद्धि उत्पन्न करता है; खुली हवामें आराम और गर्म कमरेमें रोग-वृद्धि, इस सुन्दर दवाका उत्तम सार बता देते हैं।

पल्सेटिलाके रोगियोंका चर्म ज्वर-भरा और गर्म मालूम होता है; पर शरीरका तापमान स्वाभाविक रहता है। बहुत वस्त्र पहननेपर रोग-वृद्धि हो जाती है; रोगिनी खूब

महीन वस्त्र, यहाँतक कि साधारण सर्दीमें भी महीन वस्त्र पहनना चाहती है। गर्म कपड़ोंकी उसे जरूरत नहीं होती, बहुत वस्त्र और ओढ़ना रोग-वृद्धि कर देते हैं; अकसर रोगी फ्लानेल या ऊनी-पोशाक नहीं पहन सकता; क्योंकि इनसे चर्ममें उपदाह हो जाता है, जिससे खुजली और उद्भेद **सलफर**की भाँति उत्पन्न हो जाते हैं और यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है; क्योंकि पल्सेटिला और **सलफर** आपसमें विषघ्न हैं। पल्सेटिलाकी तरह **सलफर**की प्रतिविष दूसरी दवा नहीं है, जब इसका प्रत्येक वसन्तमें "रक्त साफ करनेके लिये" प्रयोग होता है। कुछ मनुष्य तो तबतक **सलफर**का प्रयोग किया करते हैं, जबतक चर्म लाल, गर्म, सहजमें ही उपदाहित नहीं हो जाता और वस्त्रोंसे रोग-वृद्धि नहीं हो जाती। पल्सेटिला उसका विषघ्न है। विचर्चिकाके पुराने रोगी; छोटे चौड़े, भूरे रङ्गके धब्बे, अंगूठेके नाखूनके आकारके, जिनमें भयंकर खुजली होती है और जो **सलफर**के पुराने रोगियोंको निकलते हैं, वे पल्सेटिलासे आरोग्य हो जाते हैं। चर्मका एक सार्वाङ्गिक लक्षण है,—खुजली और जलन; पर पल्सेटिलाकी और भी स्पष्ट दशा है, चर्मका **लैकेसिस**की तरह दिखाई देना। यह चित्ती-चित्ती रहता है, विसर्प-पूर्ण, दाग-दगीला, बैंगनी धब्बे, शिरायें फूलीं; कैशिकाएँ स्फीत; कैशिकाओं या शिराओंके चालक स्नायुका एक पक्षाघात, जिससे कि यह चितकबरा दृश्य उत्पन्न हो जाता है। पल्सेटिलामें एक गैरमामूली **शैरिक** धातु-प्रकृति रहती है। शिराएँ स्फीत रहती हैं, एक शिरा-रोधकी दशामें, इसीलिये चर्ममें बहुत अधिक ताप रहता है। एक गैरमामूली भरापन, लाली और चेहरेका बैंगनी दृश्य एक कृत्रिम रक्त-पूर्णता है। यह अकसर सूजन और फूलनमें परिणत हो जाता है और खासकर ऐसा मासिक रजः स्राव कालमें होता है। चेहरे और आँखोंपर बहुत-से फूले स्थान; तलपेटका फूल जाना; पैर फूले, जिससे वह जूते नहीं पहन सकती, मासिक रजः-स्राव-कालमें पैर लाल और फूले, रजः-स्राव जारी हो जानेपर घट जाता है। बहुत सी स्त्रियोंको देरसे रजः-स्राव होता है और एक सप्ताह या दस दिनोंतक होता रहता है। चेहरा नीला, लाल, भर्राया और फूला-फूला; तलपेट तना हुआ; श्वास-कष्ट और ये सभी मासिक रजः-स्राव जारी होनेपर घट जाते हैं। ये लक्षण रोगिनीको शायद एक या दो सप्ताह पहलेसे ही अनुभव होने लगते हैं और खुली हवामें धीरे-धीरे चलनेपर आराम हो जाते हैं। गरम कमरेमें सास नहीं ले सकती; खिड़की खुली रखना चाहती है; गर्म बिछावनमें, रातके समय श्वास रोध होने और दम घुटने लगता है। यह तबतक बढ़ता जाता है, जबतक रजःस्राव जारी नहीं हो जाता। पाकाशय इतना भरा और तना रहता है, कि वह खा नहीं सकती। न तो भूख लगती है और न खानेकी इच्छा ही रहती है।

शिराओंकी स्फीतिके साथ, शिरा-स्फीतिसे घिरे **जखम**, इस दवामें साधारणतया प्राप्त होते हैं। जखमोंसे काला रक्त बहता है, जो समयके पहले ही जम जाता है; छोटे काले थक्के; रक्त-स्राव बहुत ज्यादा नहीं होता; सहजमें ही थक्के बँधते हैं, काले, अलकतरेकी तरह, बदबूदार। जखमसे खून बहता और रस चूता है, खून-मिला पानीकी तरह तरल या बहुत गाढ़ा पीला या हरा स्राव होता है।

यह हमें श्लैष्मिक-झिल्लीके **प्रदाहवाली** दशामें लाता है। जहाँ कहीं भी श्लैष्मिक-

झिल्ली रहती है, वहाँ श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह होता है। श्लैष्मिक-झिल्ली नीले धब्बे और सूखे दागोंसे भरी रहती है; फूली, तनी, विसर्पकी तरह दिखाई देती है। जहाँ कहीं भी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह होता है, यह पीला दिखाई देता है; एक शैरिक रक्त-सञ्चय। **गाढ़ा, हरा, पीला, सर्दीका स्राव** इसके विशेष चरित्रगत लक्षण हैं। सर्दीका स्राव **स्निग्ध** होता है, पर योनिसे होनेवाले स्रावके अतिरिक्त वह खाल उधेड़नेवाला होता है, उस अंशकी खाल उधेड़ देता है। आँख, कान, नाक और वक्षसे गाढ़ा, पीला, हरा और **स्निग्ध**-स्राव, साथ ही गाढ़ा, पीला, हरा **खाल उधेड़नेवाला** श्वेत प्रदरका स्राव होता है। याद रखिये, कि पल्सेटिलाकी श्वेत-प्रदर स्निग्ध उसकी सार्वाङ्गिक दशाके अनुसार होता है। अकसर स्राव बदबूदार; कभी-कभी खूनका, पानीकी तरह; पर इतनेपर भी पीले हरे पीव-मिले तरलसे सम्मिलित रहता है।

आँखोंके उपसर्गके कारण पल्सेटिलाके रोगीमें **सरमें चक्कर** आता है, यह ठीक-ठीक चश्मा लगानेपर घट जाता है, इसके साथ ही मिचली रहती है, जो लेटनेपर बदतर हो जाती है; हिलने डोलनेपर बढ़ती है, आँखें हिलानेपर बढ़ती है और ठण्डे कमरेमें तथा ठण्डी हवामें गाड़ीकी सवारी करनेपर घटती है। ज्योंही रोगिनी किसी गरम कमरेमें प्रवेश करती है, उसे मिचली आने लगती है, यहाँतक कि वमन हो जाता है। भोजनके बाद वमनके साथ सरमें चक्कर।

पल्सेटिलामें प्रचण्ड **सर-दर्द** है। रजःस्राव होनेको रहता है, ऐसी स्कूली लड़कियोंका सर-दर्द। रजः-स्राव जारी रहनेके साथ सर-दर्द। ऋतु-रोधके कारण, मासिक रजःस्रावकी गड़बड़ीके साथ सर-दर्द; **इनकी वजहसे** नहीं होता; बल्कि इनके साथ होता है। कनपटियों और मस्तक-पार्श्वोंमें दर्द पल्सेटिलाका एक साधारण सर-दर्द है। रजःस्रावके पहले, समय और बादमें सर-दर्द; पर अधिककर पहले ही होता है, जब रक्त-सञ्चयकी सार्वाङ्गिक दशा रहती है, शिरा-रोध तथा शिराओंकी सूजन और यदि रजः-स्राव स्वाभाविक होता है, तो ऋतु-स्राव जारी हो जानेपर सर-दर्द घट जाता है। रजः-स्रावके समय मस्तक और स्नायुके लक्षण होना साधारण है; क्योंकि स्राव बहुत थोड़ा होता है; अकसर श्वेत-प्रदरके स्रावसे कुछ ही ज्यादा और एक ही दिन, थोड़ा-सा काले रक्तका एक थक्का। **एक पार्श्वका सर-दर्द** और **एक पार्श्विक उपसर्ग,** पल्सेटिलाके लिये अद्भुत हैं। चेहरे तथा मस्तकके एक पार्श्वमें पसीना; शरीरके एक पार्श्वमें बोखार; एक पार्श्व ठण्डा, स्वाभाविक और दूसरा गर्म। मुझे एक सूतिका ज्वरकी रोगिनी याद है, जिसके शरीरके एक पार्श्वमें पसीना होता था और दूसरा शुष्क, उत्तम तथा अन्य लक्षण गड़बड़े थे। पल्सेटिला दिया गया और रोगिनी आरोग्य हो गयी।

पल्सेटिलाका सर-दर्द टपकका, रक्त-सञ्चयी सर-दर्द होता है; माथेमें बहुत ताप, यह सर्द-प्रयोगसे घटता है तथा बाहरी दबावसे और कभी-कभी धीरे-धीरे हिलने-डोलनेसे; लेटनेपर और चुपचाप बैठनेपर बढ़ जाता है, हवामें धीरे-धीरे टहलनेपर घट जाता है; शाम

होनेके वक्त बदतर हो जाता है और ज्यों-ज्यों सन्ध्या होती जाती है, बढ़ता जाता है, आँखें हिलानेपर और झुकनेपर बदतर हो जाता है। दर्द अकसर सङ्कोचक, धमकका और रक्त-सञ्चयी होता है। बँधे समयपर होनेवाला सवमन सर-दर्द, जिसके साथ खट्टे खाद्यका वमन होता है। अधिक खा लेनेपर सर-दर्द। यद्यपि उसे कुल्फी बहुत पसन्द होती है; पर खानेपर सर-दर्द तथा पाकाशयमें रक्त-सञ्चय हो जाता है।

आँखें। सर्दीके लक्षण। पलकोंके पास चक्षु-गोलकपर तथा कनीनिकापर फुन्सियाँ। प्रादाहिक लक्षण। गाढ़ा, पीलापन लिये हरा पीव। दानेदार पलकें। छोटी छोटी फुन्सियोंका लगातार निकलते जाना; पलकोंपर इधर-उधर बिखरे हुए दाने, यहाँ वहाँ उत्पन्न होते हैं तथा आल्पीनकी नोकके बराबर गुच्छोंमें होते हैं। पलकें प्रादाहित हो जाती हैं और उनसे सहज ही रक्त-स्राव होता है। जितनी ही बार उसे सर्दी लगती है, उतनी बार वह आँख और नाकमें बैठ जाती है। आँखें लाल, प्रादाहित और उनसे मवाद आना। बच्चोंकी सर्दी-जनित, सूजाककी प्रकृतिकी, आँखकी बीमारियोंमें आँख उठना (Ophthalmia neonatorum)। आरम्भिक दिनोंमें बच्चोंको अकसर उसी धातुगत औषधकी जरूरत होती है, जो माताको। आँखोंसे पीला, हरा स्राव; गर्म पानीसे धोनेपर आँखके लक्षण घटते हैं या सुसुम पानीसे, यहाँतक कि ठण्डा पानी भी आँखोंको अच्छा लगता है। **सल्फर**का रोगी नहानेपर बदतर हो जाता है, आँखोंमें दर्द, जलन होती है और पानीसे धोनेपर वे बहुत ज्यादा लाल हो जाती हैं। पल्सेटिलामें **अंजनी** (गुहौरी) की प्रवणता है; बार-बार गुहौरी निकलना; बराबर गुहौरी बनी रहना। फुन्सियाँ, रस-भरे दाने और पलकोंपर छोटी-छोटी गाँठें।

मासिक रजः स्राव होनेके पहले, खासकर छोटी लड़कियोंको आँखोंके सामनेकी चीजें काली दिखाई देती हैं, मानो सूक्ष्म पटल या परदेके भीतरसे देख रही है। स्नायविक प्रदर्शन, ऐंठन, अन्धापन और बेहोशीके दौरे। चाक्षुषी नाड़ी (Optic nerve) के पक्षाघातकी आरम्भिक दशामें, यह एक बहुत बड़ी दवा है। रोगी हमेशा आँखें मला करता है; आँखोंमें श्लेष्मा रहे या न रहे, इसपर ध्यान देनेकी जरूरत नहीं; लेकिन यह आँखोंके सामने एक सूक्ष्म वस्त्र रहनेकी अनुभूति है, जो आँखें रगड़ देनेपर घट जाती है। पल्सेटिलाने होनेवाला (प्रच्छन्न) मोतियाबिन्द आरोग्य कर दिया है। **आँखोंकी खुजली**, चर्मके लक्षणके समान ही होती है। कानोंमें, नाकमें खुजली, कण्ठमें और स्वर-यन्त्रमें चुनचुनी।

कानोंमें भी वही श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशा प्राप्त होती है। उससे गाढ़ा, पीला, बदबूदार, स्निग्ध स्राव होता है; बहुत बदबूदार, कभी कभी खून-मिला। बच्चोंके कानके दर्दमें साधारणतः पल्सेटिला निर्देशित रहता है, जब कि बच्चा शरीफ, मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट, रक्त-पूर्ण, लाल चेहरेवाला रहता है और बराबर मार्मिकतासे रोया करता है। यदि किसी नये बच्चेको कानका दर्द हो, तो भी पल्सेटिला अस्थायी रूपमें कार्य किया करेगा, कानके दर्दसे इसका इतना ही निकटस्थ सम्बन्ध है। शामके वक्त या रातमें कानोंमें दर्द, कमरेमें धीरे-धीरे टहलनेपर दर्द घट जाता है। **कैमोमिला**में रोगी बच्चा

गुर्राता है, दाँतसे काटता है, कभी प्रसन्न नहीं रहता, धात्री और माताको झिड़कते रहता है; इधर-उधर टहलनेपर अच्छा रहता है। इसका चिड़चिड़ापन **कैमोमिला**का निर्णय करता है। एक क्रुद्ध उन्मत्त चीत्कार और एक दर्दनाक चीत्कारका फर्क आप सहज ही निर्णय कर सकते हैं। दोनों ही हिलने डोलनेपर, गोदमें लेकर घूमनेपर घटते हैं। दोनों ही यह-वह मांगते हैं और कभी भी सन्तुष्ट नहीं रहते; वे आमोद चाहते हैं; परन्तु पल्सेटिलाके बच्चोंको जब फुसलाया नहीं जाता, तो मार्मिक चीत्कार करता है और **कैमोमिला**का बच्चा एक क्रुद्ध चीत्कार करता है। आप एकका प्यार करना चाहेंगे और दूसरेको झापड़ मारकर हटा देंगे।

फटे हुए कर्णपटहके साथ कानकी तकलीफें और आराम होनेकी प्रवणता नहीं रहती; मध्य-कर्णका प्रदाह। मध्य-कर्णमें फोड़ा; मध्य कर्णका प्रदाह; बहुत ज्यादा गाढ़ा खूनका स्राव, इसके बाद पीलापन लिये हरा। कानसे तबतक दिन-रात स्राव हुआ करता है, जबतक कर्ण-पटह फट नहीं जाता। मैंने यह दशा दैहिक-रूपसे फैली देखी है, जिसमें **मर्क्युरियस, हीपर** और पल्सेटिलाका बहुत अधिक बार-बार प्रयोग होता था। उद्भेदवाले रोगोंके बाद कानकी तकलीफें। आरक्त ज्वर या खसड़ा होनेके बादसे ही बदबूदार सर्दीका स्राव; बुरी तरह चिकित्सित या बहुत औषध खाये हुए रोगी। वाह्य-कर्णका प्रदाह और सूजन; विसर्प-पूर्ण बैंगनी दशा। कर्ण-शष्कुलीके बाहरी भागपर खुरण्ड।

रोगीको बराबर नाककी सर्दी हो जाया करती है, छींकें आती हैं और नाक रुकती है। एक ज्वर-सी दशा; कभी कभी शीत, ज्वर तथा पसीनेके साथ होती है। नाकके भीतरसे मुखमण्डलमें दर्द। शामके वक्त बहुत छींकके साथ बहुत ज्यादा पानी नाकसे गिरता है; सवेरे नाक रुक जाती है और गाढ़ा पीलापन लिये हरा स्राव होता है। पुरानी सर्दीमें पल्सेटिला उपयोगी होता है, जिसके साथ स्निग्ध और गाढ़ा पीलापन लिये हरा स्राव होता है; नाक रुक जाती है; बहुत ज्यादा स्राव; रोगीको नाकसे बुरी गन्ध मालूम होती है; बहुत-सी दुर्गन्धित वस्तुओंकी गन्ध आती है; कभी खादकी तरह, पर ज्यादा बार वर्णन सड़ी दुर्गन्धका ही मिलता है। खून-मिली, गाढ़ी, पीली पपड़ी नाकमें जमती है, ये कड़ी रहती हैं और सवेरे नाक छिड़कनेपर गाढ़े पीले पीबके साथ निकलती हैं। पुराने लँझड़ानेवाले रोगियोंमें—**गन्ध और स्वादका नष्ट हो जाना।** श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी पड़ जाने और पीब हो जानेकी आवस्थामें रहती है, जिसमें खरोंटें जमती हैं और जखम हो जाते हैं। नाकमें बहुत ज्यादा भरापन रहता है, पश्चात् नासाका रुकना और पूर्णता। ढेर का-ढेर पीला बलगम खखारकर निकलता है, सवेरे खरोंटें निकलती हैं और अकसर दूसरोंको बदबू आती है। बड़ी-बड़ी खरोंटें निकल जानेपर पल्सेटिलाके रोगीको इस भयंकर दशासे कुछ आराम पहुँचता है। सूखे हुए पीब या सूखे हुए श्लेष्माका मोटा टुकड़ा निकलता है और कई दिनोंतक पीब इकट्ठा होता है और इस भयंकर सर्दीकी गन्ध आती है; ज्योंही वह इन खरोटोंको नाक छिड़ककर निकाल देता है, यह गन्ध चली जाती है और उसे आराम मिलता है, जबतक वे कई दिनोंमें फिर बन नहीं जाती हैं। रोगी **स्वयं** खुली हवामें अच्छा रहता है और गर्म कमरेमें बदतर रहता है। खुली हवामें वह अच्छी तरह साँस ले सकता है और

गर्म कमरेमें नाक बन्द-सी मालूम होती है, परन्तु ऐसा भी अवसर आता है, जब उसका **नाक** गरम कमरेमें और भी ज्यादा रुक जाता है; जहाँ वह गरम कमरेमें ज्यादा छींकता है।

पुरानी और नयी दोनों ही सर्दियोंमें गन्धका क्षय मौजूद रहता है। शामको बहुत ज्यादा नाक रुकता है; वह दिनमें तो सरलता पूर्वक नाक छिड़ककर साफ कर लेता है; पर शामको यह बन्द हो जाता है और वह साफ नहीं कर सकता है। याद रखिये, कि मानसिक लक्षण शामके वक्त बदतर हो जाते हैं। वह रुकी हुई नाकसे सवेरे उठता है; पर उसे साफ कर सकता है, उसके मुँहसे गन्ध आती है, जीभ मैलसे ढकी रहती है, स्वाद परिवर्त्तित, जलपानके पहले दाँतको बहुत मांजना और मुँहका धोना आवश्यक हो जाता है। इस तरह आप देखते हैं, कि मुँह और पाकाशयके लक्षण सवेरे बदतर रहते हैं, मानसिक लक्षण शामको बदतर रहते हैं और शामको नाक रुकी रहती है। खाँसीके साथ इसकी तुलना कीजिये। पल्सेटिलामें **शामको सूखी खाँसी आती है और सवेरे ढीली खाँसी आती** है। सवेरे बहुत ज्यादा बलगम निकलता है; पर शामको वक्षमें सूखा, कसा, सङ्कोचक भाव रहता है। शामको नाक बन्द, जिससे श्वास लेना कष्टकर होता है। अतएव फिर कहना पड़ता है कि गन्धके क्षयके साथ गाढ़े पीले स्राव, खुली हवामें उपशम होना; पुरानी सर्दीके लिये पल्सेटिला एक सुदृढ़ लंगर है, स्नायविक, डरपोक, विनम्र मनुष्योंमें जिनकी नाक रातमें रुकती है और सवेरे बहुत ज्यादा स्राव होता है।

श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह और नयी सर्दीमें अकसर नाकसे रक्त-स्राव होता है, नाक छिड़कनेपर रक्त निकलना, खरोंटें कसकर सट जाती हैं और जब जोरसे नाक छिड़की जाती है, तो वे टूट जाती हैं और इसी वजहसे रक्त-स्राव होता है; पर नाकसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है, नाकसे रक्त-स्रावके रोगी। मासिक रजःस्राव-कालमें नाकसे रक्त-स्राव; रजः-स्राव-कालके पहले नाकसे रक्त-स्राव; ऋतु-रोधके कारण नाकसे रक्त-स्राव; रक्त धुमैला, गाड़ा, थक्का थक्का, करीब-करीब काला, शैरिक रक्त रहता है। खासकर स्त्रियाँ ऐसी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहवाली मिलती हैं, जिन्हें देरसे, थोड़ा और फीका रजः-स्राव होता है; मुश्किलसे श्वेत-प्रदरके स्रावसे कुछ ज्यादा; यदि खूनका रहता है, तो एक छोटा-सा काला धब्बा वस्त्रमें आता है या थक्का। हरित्पाण्डु रोगकी रोगिनियाँ, जिन्हें दो-तीन महीनेमें एक बार रजः-स्राव होता है; हरित्पाण्डु रोगिनी लड़कियाँ जो अनियमित रहती हैं और जिन्हें इस तरहके श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके उपसर्ग रहते हैं।

उद्भिजज्वर (Hay faver) में पल्सेटिला बहुत उपयोगी है। उद्भिजज्वरका प्रबन्ध करना बहुत अध्ययन चाहता है; क्योंकि आपको रोगीकी कष्टदायक धारणाओंसे सामना करना पड़ता है; वह आपको अपना अध्ययन न करने देगा, वह चाहता है, कि आप उद्भिज ज्वरकी चिकित्सा करें; वह नहीं चाहता कि बवासीर, पैर या तलवेका मोटा चर्म, त्रिक-प्रदेशमें दर्द, अतिसार, जोर कब्जके साथ पर्यायक्रमसे होता है, उनके बारेमें आप बातें करें या जाँच पड़ताल करें, उद्भिजज्वर रहनेपर ये सभी अच्छे रहते हैं; कभी कभी तो

वह आपसे कहेगा, कि उद्भिजज्वर होनेके सिवा हमेशा वह अच्छा रहता है। उसे अच्छा मालूम हो सकता है ; पर उसके लिये अच्छा रहना असम्भव है ; उसे अकसर ये उपसर्ग लगे रहते हैं ; परन्तु वह आपको इनमें उलझाना नहीं चाहता। किसी रोगीके लिये किसी दवाका निर्देश मुश्किलसे उद्भिजज्वर कमी होने देगा।

दूसरा व्यक्ति मृगीका रोगी रहता है और यदि आप दौरेके समय उसके सदृश कोई दवा खोज निकालना चाहेंगे, तो आप भूल करेंगे। जब कई वार इस रोगका नवीन धीमा-धीमा प्रदर्शन होता है, तो उस चोट खाये पटलसे विवरण प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। वह अपने उद्भिज ज्वरके सम्बन्धमें कुछ विशेष नहीं जानता। यदि आप कुछ चीजें बतायें तो उसके पास वे सभी हैं। करीब करीब इन सभी नये प्रदर्शनोंमें, आप अतिवर्द्धित आक्रमण कदापि न पायेंगे ; वह लक्षण जो आपको दवातक पहुँचा दे। उद्भिज ज्वर होनेके पहले आप चाहें तो रोगीसे ये लक्षण प्राप्त कर सकते हैं। ये प्राचीन लक्षण ज्यादा महत्व-पूर्ण होते हैं। कभी-कभी तो यह जानना आवश्यक होता है, कि नाक आक्रान्त होनेके पहले कौन-सा स्थान आक्रान्त हुआ था। समय-समयपर आपको मेरुदण्डके उपसर्ग प्राप्त होंगे ; पीठमें बहुत तेज यन्त्रणा, जो किसी कड़ी चीजपर लेटनेपर आरोग्य हो जाती है। यह कुछ ही दवाओंमें है। वे इसे पहले न बतायेंगे ; पर लगातार उद्भिज ज्वरके सम्बन्धमें ही कहते रहेंगे। बहुत-सी स्नायविक स्त्रियोंमें छींक और पानीकी तरह स्रावके साथ रोग आरम्भ होता है और इसके बाद बहुत ज्यादा, गाढ़ा पीलापन लिये हरा स्राव होता है। उद्भिज ज्वरके ये स्वाभाविक लक्षण हैं ; पर "पीछेके" लक्षणोंमें आप कुछ भी नहीं जान पाते।

पल्सेटिलामें रजः-स्रावके लक्षण और स्थान-च्युति भी हैं। जब उद्भिजज्वर होता है, तो सभी दूसरे उपसर्ग बेहतर रहते हैं। रोगिनीको उद्भिज ज्वरके सिवा और कुछ भी अनुभव नहीं होता ; यद्यपि सभी उपसर्ग; एक दूसरेसे सम्मिलित रहते हैं। **नेट्रम-म्यूर**के उपसर्ग सवेरेसे दोपहरतक बदतर रहेंगे ; पर पल्सेटिलाके उपसर्ग शामके वक्त बदतर हो जाते हैं, गाढ़े, पीलापन लिये हरे, डोरीकी तरह श्लेष्मासे नाक भर जाती है और जब नाक साफ कर डाली जाती है, तो एक सूखापन, जलन और चुनचुनाहटका भाव रह जाता है ; यदि कमरा रातमें गर्म रहता है, तो रोगिनी सो नहीं सकती। रातमें गर्म कमरेमें न सो सकते और चुनचुनीके सम्बन्धमें यह कुछ-कुछ **नेट्रम-म्यूर**के सदृश है। **नेट्रम-म्यूर**में भी स्राव दिन-रात जारी रह सकता है। एक तरहके नयी श्रेणीके रोगी मिलते हैं, जिनमें कभी-कभी पल्सेटिला निर्देशित रहता है, जिनमें बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव, जिसका अन्त छींकमें होता है। आरम्भमें हमलोग **कार्बो-वेज, आर्सेनिक, एलियम-सेपा** और **इयुफ्रेशियाके** विषयमें सोचेंगे।

कार्बो-वेजमें पानीकी तरह स्राव होता है और उपदाह वक्षतक फैल जाता है, साथ ही स्वर-भङ्ग और खाल उधड़ना रहता है। **एलियम-सेपामें** एक तरहके लक्षण-समूह रहते हैं, जो इस दवाको निर्देश करते हैं। नाकसे खाल उधड़नेवाला स्राव तथा आँखोंसे स्निग्ध-

स्राव ; स्वर-यन्त्रमें ऐसा मालूम होता है, मानो हुक अड़ा हुआ है और कभी-कभी यह भाव स्वर-यन्त्रके नीचेतक चला जाता है, इसका हमेशा यही मतलब है, कि **ऐलियम-सेपा**की जरूरत है ; वह पल्सेटिलाकी तरह ही गर्म कमरेमें बदतर हो जाता है। **इयुफ्रेशिया** भी बहुत कुछ **ऐलियम-सेपा**की तरह दिखाई देता है ; केवल आँखोंसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह और जलन करनेवाला स्राव होता है—आँसुओंसे आँखें जलती हैं और गालोंकी खाल उधड़ जाती है, नाकका स्राव पल्सेटिलाकी तरह स्निग्ध होता है ; कभी-कभी यह वक्षतक चला जाता है, फिर यह **इयुफ्रेशिया** नहीं रह जाता।

आयोडिनका रोगी गर्म कमरेमें बदतर रहता है ; नाकसे गाढ़ा स्राव होता है, जिससे जलन होती है, खाल उधड़ जाती है और पीलापन लिये हरे रंगका रहता है ; पर एक बात ऐसा है, जो अन्य सभी दवाओंसे इसे अलग कर देती है—रोगी तुरन्त ही दुबला होने लगता है, जब रोग आरम्भ होता है और बहुत भूखा रहता है।

काली हाइड्रेटमें गाढ़ा, पीलापन लिये स्राव होता है, गर्म कमरेमें बदतर हो जाता है, नाकमें बहुत ज्यादा खाल उधेड़ना और जलन रहती है ; बाहरी नाकमें दबावसे बहुत यन्त्रणा होती है ; नाककी जड़में असहिष्णुता मालूम होती है ; समूचे चेहरेमें दर्द होता है और रोगी बहुत बेचैन हो जाता है, खुली हवामें घूमना चाहता है, जिससे उसे क्लान्ति नहीं आती।

आयोडाइड आफ आर्सेनिक ; घबड़ाहट, बेचैनी और कमजोरी ; बारम्बार छींक और बहुत ज्यादा पानीकी तरह नाकसे स्राव, जिससे ओंठमें जलन होती है। जलन, **आर्सेनिक**की तरह आखोंसे पानीकी तरह स्राव। **आर्सेनिक**का रोगी बहुत गर्म रहना चाहता है ; आँखोंमें गरम पानी लगाना चाहता है ; नाकसे गरम पानी सुड़कनेसे ही कुछ आराम मिलता है। **आयोडाइड आफ आर्सेनिक**का रोगी गर्म कमरेमें बदतर रहता है और कई दिनोंतक छींकें आनेपर, स्राव गाढ़ा और गोंदकी तरह हो जाता है, जो **गाढ़ा पीला शहद**की तरह दिखाई देता है, यह खाल उधेड़ देता है ; आँखों और नाककी जड़में बहुत दर्द ; अकसर श्वास कष्टके साथ वक्षमें कड़ापन। श्वास-कष्टका लक्षण रहनेवाली दवाएँ **आर्सेनिक, आयोडाइड आफ आर्सेनिक, आयोडिन, काली हाइड्रेट** और **सेबाडिला** हैं। ये ऐसी हैं, जो दमाके लक्षणवाले उद्भिज्जज्वरमें निर्देशित होती हैं। यदि उस समय अत्यन्त उत्तम हो जानेके कारण उपसर्ग-वृद्धि हो गयी है, तो आपको **सिलिका,** पल्सेटिला और **कार्बो-वेज** अवश्य ही सावधानतासे तुलना करनी चाहिये। एक श्रेणीकी दवाएँ और भी हैं, जिनमें नाक बन्द होना स्राव होनेपर भी नहीं जाता। हमेशा नाक छिड़कनेपर इच्छा बनी रहती है, इतनेपर भी उसे आराम नहीं मिलता। इससे तुरन्त **लैकेसिस, कैलि बाइक्रोम, सोरिनम, नैजा** और **स्टिक्टा**पर ध्यान चला जाता है।

सोरिनममें बहुत ज्यादा, पानीकी तरह नाकका स्राव स्निग्ध होता है, यह खाल उधेड़नेवाला भी हो सकता है, इसमें दोनों ही हैं। ज्यादातर खुली हवामें नाक रुकती है ; गर्म,

बन्द कमरेमें और लेटे रहनेपर रोगीको आराम मिलता है, कुछ श्वास-कष्ट भी रहता है, जो शरीरके सम-कोणमें बाहुओंको फैला देनेपर आरोग्य हो जाता है। उद्भिजज्वर एक सोरा-दोष-सम्बन्धी बीमारी है। एक खुराक **सोरिनम** देनेपर इस तरह रोग-लक्षण प्रकट हो पड़ेंगे, कि बीमारी और भी स्पष्ट हो जायगी। यह आक्रमण दवा देनेकी उत्तम चीज नहीं है। यह बहुत ही प्रचण्ड होता है, इसके लिये तो कोई लघु-क्रिय औषधि चुननी चाहिये, जो इसे शान्त करेगी।

नक्स वोमिकामें खुली हवामें सरलता-पूर्वक, बिना किसी कष्टके, श्वास-क्रिया होती है; परन्तु जब रोगी किसी गर्म कमरेमें जाता है, उसकी नाक रुक जाती है, जो रातके समय भी होता है; यद्यपि नाकसे तकियापर पानी चूता रहता है, इतनेपर भी पल्सेटिला, **ब्रायोनिया** और **आयोडिन**की नयी औषधियाँ, **आयोडाइड आफ आर्सेनिक** और **साइक्लामेन**की तरह नाक बन्द हो जाती है। यह न समझ लीजिये, कि मैंने उद्भिज ज्वरके लिये दवाएँ बतायी हैं; हमलोग रोगके नामके अनुसार दवा नहीं बताते। सम्पूर्ण धातु-प्रकृतिकी पूरी तरह परीक्षा करनी चाहिये।

चेहरा रोगियल रहता है, अक्सर दाग दगीला, बैंगनी, अस्वस्थ पीले रङ्गोंसे मिला; शिराओंका भर जाना; पूर्णताका भाव; अकसर लाल चेहरा, स्वस्थकी तरह और रोगी किसी तरहकी सहानुभूति नहीं प्राप्त करता; चेहरा अकसर तमतमाया रहता है; चेहरेपर तापकी झलक; कभी-कभी धसा हुआ चेहरा; आँखोंके चारों तरफ काला घेरा; मलिन, हरा, हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त। विसर्पके रोगी; चेहरेपर विसर्पके धब्बे, जो मस्तक-त्वचातक फैल जाते हैं, साथ ही डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन होती है, ऐसे अवसरोंपर मुखमण्डलकी त्वचा बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती है।

कर्णमूल फूला, कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह। यदि कर्णमूल-प्रदाहकी किसी रोगिनीको नियमित सर्दी लग जाती है, तो उसका स्तन फूल जाता है और स्तन-ग्रन्थिमें भी प्रदाह हो जाता है। लड़कियोंको सर्दी लग जाती है, कर्णमूल ग्रन्थिकी सूजन तुरन्त दब जाती है और उसी तरफकी स्तन-ग्रन्थि फूल जाती है; कभी-कभी दोनों ही स्तन फूल जाते हैं या यह सूजन एकमें आरम्भ होती है और दूसरेमें चली जाती है। पुरुषोंको ऐसा अण्डकोषमें होता है। इस तरहके स्तन-ग्रन्थि-प्रदाहकी पल्सेटिला एक अत्यन्त महत्वपूर्ण औषधि है, यह इधर-उधर भटकनेवाले उपसर्गोंको तोड़ देती है। किसी बच्चेको कर्णमूल छोड़कर जोरका अण्डकोष-प्रदाह होनेपर पल्सेटिला एक साधारण दवा है। **कार्बो-वेजिटेबिलिस** एक दूसरी दवा है; पर आपके सामने **कार्बो-वेज**का रोगी रहना चाहिये। भ्रमणकारी उपसर्गोंका **पेट्रोलियम** भी एक लाभदायक औषध है। पल्सेटिलामें **भ्रमणकारी वेदना** होती है; एक सन्धिसे दूसरीपर वात चला जाता है, यहाँ-वहाँ हुआ करता है; एक जगहसे दूसरी जगह स्नायु-शूलका दर्द होता है; एक ग्रन्थिसे दूसरी ग्रन्थिपर प्रदाह जाता है। पर प्रभेदक लक्षण आगे बताया जाता है—पल्सेटिला **अपने ही ढङ्गपर रहता है**; यह इधर-उधर भटका करता है; पर इसमें नयी श्रेणीकी बीमारी नहीं उत्पन्न होती। **पेट्रोलियममें**

यह स्तन-प्रदाह है ; पर यह समूचे रोग-निदान तत्वको बदल देता है। अर्थात् ऐलोपैथ कहते हैं,—"यह तो आज एक नयी बीमारी है।" आज रोगीको प्रचण्ड अतिसार जारी हो गया है और अज्ञान चिकित्सक उसे दबा देता है ; एक प्रादाहिक वात उत्पन्न हो जाता है और वह उसे नयी बीमारी बताता है। पतले दस्त या रक्त स्रावको रोक देना या बवासीरको हटाना ; कहीं-न-कहीं दूसरी जगह कोई फसल उत्पन्न करता है। किसी बच्चेकी गर्मीके दिनोंकी बीमारी दबा दी जाती है और उसके बाद मस्तिष्क, मूत्रपिण्ड, यकृतके उपसर्ग पैदा हो जाते हैं या नीचेसे ऊपर चढ़नेवाली सुखण्डीकी बीमारी पैदा हो जाती है। ये लक्षण **ऐब्रोटेनम**की प्रकृतिमें हैं।

पाकाशय। भोजनके घण्टों बाद रोगीको मुँहभर खट्टा, अनपचका तीता पानी डकारके साथ चढ़ आता है ; पाकाशयसे यह तरल ऊपरकी ओर चढ़ता है ; हमेशा न पचे भोजनकी डकार आती है। कुछ रोगी मक्खन नहीं पचा सकते, अपने खाद्यमें जैतूनके तेलका व्यवहार नहीं कर सकते। मुँहमें सब तरहका बुरा स्वाद। भोजनके कई घण्टे बाद भी पाकाशयमें खाद्य हजम नहीं होता। खट्टा वमन और डकारें। पाचन धीमा रहता है और रोगी भूखा होकर दूसरी बार खानेको जा पहुँचता है ; भोजनसे वह सन्तुष्ट नहीं होता ; समीकरण दोषावह रहता है। हमेशा पित्त-पूर्ण रहता है। मुँह लसदार और स्वाद बिगड़ा रहता है। ये सभी लक्षण सवेरे बदतर हो जाते हैं। "मुँहमें बहुत-सी लार और श्लेष्मा इकट्ठा होता है।" "मीठापन लिये या लसदार लार गिरना।" हमेशा रूईकी तरह श्लेष्मा और फेन थूका करता है।"

पल्सेटिलाके रोगीका एक अद्भुत लक्षण यह है, कि वह कभी भी पानी नहीं पीना चाहता। मुँह सूखा रहता है ; पर **शायद ही कभी प्यास लगती है**। यहाँतक कि बहुत-से ज्वरोंमें भी उसे प्यास नहीं रहती ; पर कभी-कभी इसका अपवाद भी पाया जाता है—ऊँचे बोखारमें प्यास रह सकती है। "सूखी या तर जीभ रहनेके साथ प्यासका न रहना।" "खट्टे, स्फूर्तिदायक पदार्थोंकी इच्छा।" अकसर वे ही चीजें चाहता है, जो पचा नहीं सकता, लेमोनेड, समुद्री मछली, पनीर, तीखी चीजें, खूब मसलेदार चीजें, रसीली चीजें। "मांस, मक्खन, चर्बीके बने खाद्य, सुअरका मांस, रोटी, दूध, धूम्रपान, इन सबसे अनिच्छा।" पाकाशय और अन्त्रनलीमें खुरचनेकी तरह अनुभूति, कलेजेमें जलनकी तरह।" पाकाशय खाली या भरा रहनेपर बहुत तरहका दर्द। पर वायु भरना, गैस और खट्टा पाकाशय बहुत ही निदर्शक है। पाकाशयिक सर्दी। मलाईका बरफ खानेकी इच्छा पीठीकी बनी चीजें खानेकी इच्छा, पर वे पचती नहीं और उसे बदतर बना देती हैं। वे ही चीजें मांगता है, जो उसे बीमार बना देती हैं। यह असाधारण नहीं है। ह्विस्की नामक शराब पीनेवाले शराब चाहते हैं ; पर वे जानते हैं, यह उसे मार डालेगी। पल्सेटिलामें भी पीठीकी चीजोंके सम्बन्धमें ऐसा ही होता है। मिस्सेकी रोटी और मैपेलका शरबत खाना चाहता है, इतनेपर भी वह जानता है, कि वे वमनके साथ निकल जायँगे। **बहुत मसालेदार** चटनी खाना चाहता है, इतनेपर भी केवल सूअरके मांससे घृणा रहती है।

पल्सेटिला कामला रोग उत्पन्न और आरोग्य करता है। "यकृतका प्रदाह और पतले दस्तके साथ पित्त स्रावमें गड़बड़ीके कारण उत्पन्न कामला रोग; द्वादशांगुल अन्त्रकी श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह; पाचनमें गड़बड़ी; ज्वर-भाव; पिपासा हीनता; क्विनाइन सेवनके बाद।"

तलपेटका फूलना, उदरका तन जाना, आध्मान, शूलका दर्द, गड़गड़ाहट, खाद्यका उत्सेचन और मासिक रजः-स्रावकी गड़बड़ी या अतिसारके कारण पाकाशयमें बहुत सी तकलीफें उत्पन्न होती मालूम होती हैं। बहुत असहिष्णुता, स्पर्श कातरता, सूजन, समूचा तलपेट, पाकाशय और वस्ति-गह्वर-यन्त्र स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं, भोजनके बाद पेट फूलना, खासकर चर्बी और गरिष्ट भोजनके बाद। शिराओंकी पूर्णता, सार्वाङ्गिक शिरा-स्फीति रोग। यह खासकर उदरमें एक कोमल पूर्णता उत्पन्न करता है; ऐसा रुकावटका भाव, कि रोगिनी श्वास नहीं ले सकती। रजःस्राव होनेवाली स्त्रीका तलपेट फूल सकता है, ऐसा कसावटका भाव मालूम हो सकता है, कि उसे अपने वस्त्र उतार फेकने पड़ते हैं, कसे वस्त्र नहीं पहन सकती, ढीले वस्त्र पहनना चाहती है या बिछावनपर लेट जाना चाहती है—इतनी ज्यादा वह मर्रायी रहती है। इस औदरिक स्फीतिके साथ ओंठ और चेहरा भी फूला और तना रहता है, आँखें लाल रहती हैं और पैर इतने फूले रहते हैं, कि वह जूते नहीं पहन सकती। नीचेकी ओर खींचनकी अनुभूति, बहुत कमजोरीका भाव; अकसर रजः-स्रावकी गड़बड़ियों या गर्भाशयके विकारोंसे सम्मिलित रहते हैं; जरायुकी स्थान च्युति नीचेकी ओर खींचनेसे मालूम होती है; यह सम्पूर्ण उदरमें अनुभव होता है, इसे एक फोंफीका भाव कहा गया है, मानो भीतरसे सब चीजें बाह्य-जगतमें आ पड़ेंगी; एक नीचेकी ओर खींचन। तलपेटकी अत्यधिक असहिष्णुता; खासकर तलपेटके निम्न-भागकी। वह न तो अपने पैरोंके बल खड़ी हो सकती है या बहुत चल-फिर सकती है, इसी भार और नीचेकी ओर खिंचावके कारण। जरायु और पीठमें प्रसवकी तरह दर्द, मानो रजः स्राव होगा। पल्सेटिलाकी रोगिनीके लिये सम्पूर्ण महीनाभर यह अनुभव होते रहना असाधारण नहीं है, कि उसे रजः स्राव होना ही चाहता है।

उदर और आँतोंके उपसर्ग सम्मिलित रहते हैं। काटने और तेजीसे इधर-उधर उड़नेकी तरह परिवर्त्तनशील वेदना। ऐसा दर्द, जिससे पाखाना लग आता है। रक्तामाशय या अतिसारसे सम्मिलित आँतोंमें पीसनेकी तरह दर्द; ढीला पानीकी तरह या हरा मल। आँतोंका आकर्षक लक्षण है, ढीला पानीकी तरह, हरा मल, **हमेशा रंग बदला करता है**; पीला, मल-मिला, चिकना। गर्म मौसमकी बीमारियोंमें, जब पल्सेटिला निर्देशित औषधि रहती है, तो मुश्किलसे दो बारका दस्त एक समान होगा; लगातार बदला करता है। यह पल्सेटिलाके सार्वाङ्गिक लक्षणोंका विशेषत्व है; दर्द इधर-उधर भटकता है; रोग बदलकर दूसरेमें परिणत हो जाते हैं; रोगिनी या रोगी, मुश्किलसे दो बारके उपसर्गोंमें एक समान रहता है; कब्जके साथ पर्यायक्रमसे अतिसार। मासिक रजः-स्राव रुकता है और फिर जारी होता है, सविराम और परिवर्त्तनशील। पल्सेटिलाके रोगीके सम्बन्धमें आप कभी नहीं जान सकते कि आगे क्या होगा। रक्तामाशय; रक्तामाशयके दस्त; थोड़े,

लसदार, खूनके, हरे, पानीकी तरह मल, जिसमें छोटे-छोटे टुकड़े तैरते हैं, दूसरी वारका दस्त अतिसारकी तरह हो सकता है, जिसके साथ ज्यादा स्राव होगा, इस तरह आपको रक्तामाशय और अतिसार एक साथ ही प्राप्त होते हैं।

कष्टदायक पुरानी कोष्ठवद्धता ; मल वड़ा, कड़ा और मुश्किलसे निकाला जाता है। इसमें (नक्सकी तरह), बिना पाखाना हुए ही वार-वार हाजत होती है या वार-वार लगकर बहुत थोड़ा पाखाना होता है ; पाखाना होनेके पहले, कई वार जाना पड़ता है, **नक्स-वोमिका** और पल्सेटिला। पुरानी बीमारीमें वार-वार वृथा ही मलका वेग होना **नक्स-वोमिका** प्रयोगकी एक कुञ्जी माना जाता है ; पर यह लक्षण बहुत-सी दवाओंमें है। उनमेंसे एक पल्सेटिला है। अतिसार और पल्सेटिलाके आँतोंके लक्षण ; शामको और रातके समय वदतर हो जाते हैं अर्थात् रातमें दस्त ज्यादा आते हैं। पाकाशय, कण्ठ और मुँहके लक्षण सवेरेके वक्त वदतर रहते हैं। मानसिक लक्षण शामको वदतर रहते हैं। एकदम शान्त रहनेपर आँतें और मलके लक्षण वदतर हो जाते हैं तथा धीरे धीरे चलने-फिरनेपर घट जाते हैं। पल्सेटिलामें बहुत बेचैनी रहती है। ठण्डी खुली हवामें, हिलने-डोलनेपर रोग-ह्रास होता है। बन्द कमरेमें जकड़ा-सा मालूम होता है और खिड़कियाँ खोल देना चाहता है। "साफ पीले, लाल या हरी आमके रक्तामाशयके दस्त ; पीठमें दर्द, कूथन।" "गहरी हरी आमके दस्त ; तलपेटमें दर्द ; प्यासका न रहना।" पल्सेटिलामें आपको **हरा** शब्द याद रखना होगा ; क्योंकि श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहके स्रावसे इसका सम्बन्ध बहुत ज्यादा है।

अत्यन्त कष्टदायक कब्ज, साथ ही ववासीर ; ववासीरमें भयानक दर्द, लेटनेपर वदतर हो जाता है और धीरे-धीरे चलते-फिरते रहनेपर अच्छा रहता है ; बिछावनकी गर्मीसे बढ़ता है ; पर खुली हवामें टहलनेपर अच्छा रहता है। रोगिनी कमरेके भीतर विश्रामके समय बहुत ज्यादा स्नायविक रहती है, उसे दर्द बढ़ा हुआ अनुभव होता है और उसे बाध्य होकर चलना-फिरना पड़ता है। "ववासीरके मसे ; दर्द-भरे, बाहर निकले, अन्धवलिके (बादी ववासीर) साथ मलद्वारमें खुजली और सुई गड़नेकी तरह दर्द।" बहुत ही दर्दवाले ववासीरमें, लेटनेपर रोग-वृद्धि **एमोनियम-कार्वोनिकम**से बिलकुल वैषम्यपूर्ण है, जिसमें कि प्रचण्ड दर्द-भरा ववासीर रहता है और जो पीठके बल लेटनेपर अच्छा हो जाता है। तेज दर्दवाले ववासीरमें जिसमें असीम ज्वाला रहती है, **आर्सेनिकम** और **कैलि-कार्वोनिकम**पर ध्यान दीजिये। जिनमें सीखें गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द होता है, **इस्क्युलस**का अध्ययन कीजिये। कितने ही वर्षोंसे देखते-देखते मुझे बाध्य होकर ऐसे रोगियोंको एक ऐसी दवा देनी पड़ती है, जिसकी अबतक पूरी तरह परीक्षा नहीं हुई है। यदि भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तियोंको दर्द-भरा ववासीर हो ; जहाँ ऐसा मालूम हो, कि सब रोग ववासीरमें ही परिणत हो गये हैं, रक्त-स्राव, मसा बाहर निकलना, जरा भी छूनेसे करीब-करीब अकड़न पैदा हो जाती है ; उसे पूरी ताकतसे चीखना पड़ता है ; उसमें इतना दर्द होता है, कि रोगिनी समझती है, कि मृत्यु हो जाय तो अच्छा ; वह अपने दोनों हाथोंसे चूतड़ोंको अलग फैलाये पड़ी रहती है ; प्रत्येक वार पाखाना होनेके बाद, उसे तीन-चार

घण्टोंतक असीम कष्ट होता रहता है। ऐसे रोगियोंके लिये **पियोनी** (Pæony) को देखिये। जिस बवासीरके मसोंको यह आरोग्य करता है, वे पौधेके फूलकी तरह दिखाई देते हैं, वे बहुत प्रादाहित रहते हैं, बहुत लाल रहते हैं और उनसे रक्त-स्राव होता है, रस चूता रहता है ; स्पर्श सहन नहीं होता ; रोगी दर्दसे छटपटाया करता है। इसने बहुत बार दर्द आरोग्य किया है और इन वृहत् बवासीरके अर्बुदोंको आरोग्य किया है। मैंने उन्हें उस समय आरोग्य किया है, जब नश्तर लग चुका था और उनपर सब तरहका बल प्रयोग किया गया था ; पर कोई आराम न पहुँचा था। यदि रोगीके **सभी लक्षणोंसे सदृश रहनेवाली** कोई दवा मिल सके तो इस दवाको न दीजिये। बहुत से रोगी कोई दूसरा लक्षण न बतायेंगे और इनमेंसे कितनोंको ही सिर्फ बवासीरकी इतनी तकलीफ होगी, कि आपको वास्तवमें इस दवाकी जरूरत आ पड़ेगी।

बार-बार पेशाव, थोड़ा, बराबर वेग होता है ; आश्चर्यजनक कूथन ; बहुत दर्द-भरे, खून-मिले पेशाव, जलन, पेशावके समय चुनचुनी ; यदि मुश्किलसे एक बूंद भी मूत्राशयमें सञ्चित हो तो उसे बाध्य होकर निकाल ही देना पड़ता है। **पेशाव लग आये बिना वह पीठके बल लेट** ही नहीं सकती। यदि वह पीठके बल नहीं लेटे तो रातभर उसे पेशाव नहीं लगेगा ; पर ज्योंही वह पीठके बल होगी, त्योंही उसे पेशाब लग आयगा और वह जाग जायगी और उसे ऐसा मालूम होता है, कि यदि वह जल्दीसे न जायगी, तो आप-ही-आप पेशाब हो जायगा। खाँसने और छींकनेके समय या एकाएक कोई आघात या आश्चर्य होनेपर अथवा आकस्मिक आनन्द या हँसनेपर या दरवाजा भड़भड़ानेकी आवाज या पिस्तौलके शब्दसे आप-ही आप पेशाब हो जाना। पल्सेटिलामें पेशाव चूआ करता है, जरा भी उत्तेजना मिलनेपर पेशाव चू पड़ता है। उसे बराबर इसपर ध्यान रखना पड़ता है, नहीं तो पेशाव हो जाता है। ज्योंही वह सोने जाती है, उसे पेशाब हो जाता है। छोटी, विनम्र, कोमल, रक्तिमाभ, रक्त पूर्ण, गर्म रक्तवाली लड़कियाँ, जो रातमें ओढ़ना उतार फेंकती हैं और रातमें शय्यामें पेशाव हो जाता है। पीली, मलिन, रोगियल लड़कियां, जिन्हें प्रथम निद्रामें ही पेशाव हो जाता है, उन्हें **सीपिया**की जरूरत रहती है। प्रथम निद्रामें ही पेशाब हो जाना, एक जबर्दस्त लक्षण माना जाता है ; पर आप इसे हटा सकते हैं, इसलिये वह **ऐसा सुदृढ़** नहीं है। जिन सब रोगियोंको दिनके समय पेशाव रोके रहनेकी चेष्टा करनी पड़ती है, उन्हें प्रथम निद्रामें ही पेशाव हो जाता है ; क्योंकि उस समय, उसपरसे ध्यान हट जाता है और ज्योंही उसपरसे मन हटता है, त्योंही पेशाव चू पड़ता है। प्रथम निद्रामें पेशाब हो जाना रोकनेवाली दवाएँ **कास्टीकम** और **सीपिया** मानी जाती हैं ; पर मैंने इसे कितनी ही अन्य दवाओंसे आरोग्य किया है। एक मध्य वयससे भी अधिक उमरके रोगीको रातमें सोते ही पेशाव हो जाता था। इस लक्षणवाली दवाएँ सीमित हैं और उसने वे सभी ले ली थीं ; मैंने सोचा कि इसे दूसरे आधारपर करना चाहिये। मैंने खोज निकाला, कि काममें इधर-उधर घूमनेमें उसे पेशाव रोकनेमें तकलीफ नहीं होती ; पर जब वह बैठता है, तो पेशाव रोकनेकी उसे चेष्टा करनी पड़ती है। जिस समय यह लक्षण बढ़ा, उस समय वह ऐटलाण्टिक सिटीमें था तथा महासागरमें उसने खूब स्नान किया था। यह **रस-टक्स**की

तरह रोग-वृद्धि और ह्रास था और इसीलिये, **रस-टक्स**ने उसे आरोग्य कर दिया। पेशावकी बीमारियोंमें बहुत कम लोग **ब्रायोनिया**पर ध्यान देंगे। जब वह चलता-फिरता है, पेशाब चूता है, जब टहलता है, यह बहता है। केवल चुपचाप बैठे रहनेपर उसे आराम मिलता है। **ब्रायोनिया**की बीमारी हिलने-डोलनेपर बढ़ती है ; **रस-टक्स**की गतिशील रहनेपर घटती है।

पल्सेटिलामें भी गतिशील रहनेपर रोग-ह्रासका लक्षण है। बहुत कम दवाओंमें धीरे-धीरे हिलने-डोलनेपर आराम मिलनेका लक्षण है और इन सबमें पल्सेटिला और **फेरम** विशेष आकर्षक हैं। कई दवाओंमें तेज गतिसे रोग घटते हैं, तेजीसे चलना चाहता है। ये **ब्रोमिन** और **आर्सेनिक** हैं। **आर्सेनिक**का बच्चा बहुत तेजीसे गोदमें नहीं ले जाया जा सकता। पल्सेटिलाका बच्चा धीरे-धीरे चलनेपर शान्त रहता है। ऐसी कोई भी गति जो पल्सेटिलाके बच्चेको **गर्म कर देती है,** उसके सब रोगोंको बढ़ा देती है। लकड़ीमें एक करात चलानेवालेने कहा—हिलते डोलते रहनेपर उसकी खाँसी घट जाती है ; पर जब आरा चलाते-चलाते वह गर्म हो जाता है, तो उसे प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसीके कारण बैठकर सुस्ताना पड़ता है।

पल्सेटिलामें बर्साती पानीमें भींगनेकी भी शिकायतें हैं ; पैरका भींगना। सर्दीला हो जानेपर पेशावकी तकलीफें बदतर हो जाती हैं (डल्कामारा)। पल्सेटिलासे पुराना, अदम्य, मूत्राशयका श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह उत्पन्न होता है। बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव, खूनका स्राव, खासकर सर्दी लग जानेके बाद। गाढ़ा, डोरीकी तरह, पीव-भरा, हरा, बदबूदार स्राव।

कामेच्छा अस्वाभाविक रूपसे सुदृढ़ रहती है। "बहुत देरतक रहनेवाला प्रातः-कालीन लिङ्गोच्छ्वास।" अत्यधिक काम-चेष्टाओंके कारण सर-दर्द, पीठमें दर्द ; प्रत्यंग भारी।" "अण्डकोषोंमें जलन और दर्द, सूजनके साथ या बिना सूजनके ही।" अण्डकोष-प्रदाह ; रुके हुए सूजाक, कर्णमूल-प्रदाह, सर्दी लगना, सीड़-भरी जगहमें बैठना या पसीना होनेके समय ठण्डे पत्थरपर बैठना प्रभृति कारणोंसे अण्डकोष-प्रदाह और सूजन। इन्जेक्शन देकर सूजाकको दवा देना। "सर्दी" अण्डकोषमें बैठ जाती है। सूजाककी बहु-व्यवहृत औषधि पल्सेटिला है, जिसमें मवाद, गाढ़ा पीला या गाढ़ा पीला और हरा आता है ; उनका जिन्हें गर्मी सहन नहीं होती तथा खुली हवामें घूमनेपर रोग घटता है। पर उन मनुष्योंके लिये भी उपयोगी है, जिन्हें कोई दूसरा लक्षण नहीं है और सूजाकका मवाद गाढ़ा पीला या हरा आता है, इसके विपरीत बतानेवाला कोई भी लक्षण नहीं मिलता। कष्टप्रद लंङड़ानेवाला मवाद बहना ; पुराने सूजाकसे गाढ़े पीले रङ्गका स्राव होता है, जब उसे सर्दी लग जाती है या स्त्री-सङ्गम करता है। बार-बार कूथन ; लिङ्गोद्रेक ; पेशाब लग आना ; जलता हुआ पेशाब और पीला मवाद। लिङ्गके पास सूजन, लिङ्गाग्र चर्म भी फूला हुआ। (**नाइट्रिक एसिड, फ्लुओरिक एसिड, कैनाबिस सैटाइवा**)। दवा दिये गये सूजाकके रोगियोंके लिये पल्सेटिला उपयोगी है, जिसमें आगे लिखे उपसर्ग रहते हैं।

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह। वर्द्धित मुखशायी-ग्रन्थिवाले पुराने पापी, कड़ा, चिपटा, कसा मल, अवश्य ही मूत्रशलाकाका व्यवहार करना पड़ता है ; खासकर जब अत्यधिक रति-क्रिया, काम-सम्बन्धी अपव्यवहार या दोषोंके कारण यह उत्पन्न होता है। अण्डकोषमें दर्द ; फूले हुए अण्डकोषोंमें काटनेकी तरह दर्द। छुरीसे काटनेकी तरह शुक्र-रज्जुमें दर्द ; छेदने ; फाड़नेकी तरह दर्द।

बढ़ी हुई कामेच्छा ; कामोन्माद ; कामुक विचारोंसे उन्मत्त रहती है ; अदम्य काम-वासना। डिम्बाशय और गर्भाशयका प्रदाह। पैर भींगनेके कारण ऋतु-रोध। रजः स्राव बहुत देरसे, थोड़ा। चेहरा पीला, सुनहरा, मलिन या हरित्पाण्डु-ग्रस्ताओंकी भांति हरा। यह गर्भ-स्राव-प्रवणताको दूर कर देता है, मिथ्या गर्भको तथा मसे प्रभृतिको और तन्तुमय अर्बुद तथा अन्य सदृश उपसर्गोंको रोक देता है। गर्भावस्था और सूतिका-गृहके बहुत से उपसर्गोंमें पल्सेटिलाकी जरूरत पड़ती है। बहुतकर, अकसर तब जरूरत होती है, जब रोगिनी चिड़चिड़ी नहीं रहती और दर्द बहुत कमजोर रहता है, कई दिनोंतक बना रहता है ; पर होता कुछ नहीं है, अनियमित, इधर-उधर उखड़नेवाला, परिवर्त्तनशील दर्द, कभी पीठके ऊपरी भागमें, कभी नीचेके प्रत्यंगोंमें ; एक बढ़ी हुई पहली दशा या वर्द्धित प्रस्तुतकारी लक्षण। जब स्त्री बहुत चिड़चिड़ी रहती है, तो **कैमोमिला** ज्यादा फायदा करता है ; पर कोमल, विनम्र, मानसिक दशा जब रहती है, दर्द अनियमित रहता है, जरायु-मुख प्रसारित रहता है और सङ्कोचन जारी रहता है ; दर्द बहुत थोड़ी देरतक ठहरता है, तो पल्सेटिला बहुत कम समयमें प्रसव करा देगा। एक खुराक देनेके बाद जो दर्द उठेगा, वह अच्छा रहेगा। इन रोगिनियोंमें आप अकसर देखेंगे, कि बाह्य-भागके अंश शिथिल हैं और दशा ऐसी है, कि सब काम ठीक-ठीक न होने चाहिये ; पर क्रिया नहीं होती। कमजोर दर्दमें पल्सेटिला बहुत काम करता है।

प्रचण्ड बाधक-वेदना, जिससे रोगिनीको दोहरा जाना पड़ता है, जरायु और डिम्बाशय-प्रदेशमें यन्त्रणा ; तना हुआ तलपेट ; ओढ़ना उतार फेंकती है ; खिड़कियाँ खुली रखना चाहती है ; आँसुओंसे भरी ; बिना कारण ही रोती है। पैर पानीमें भींगनेके कारण मासिक स्रावका रुक जाना। आरम्भ होनेके समय रजः-स्राव धीमा रहता है और इसके बाद श्वेत प्रदरसे कुछ ही ज्यादा रहता है। रक्त-पूर्ण लड़कियोंको जबसे ऋतु होने लगा है, तबसे ही वेदना पूर्ण। सोलहसे अट्ठारह वर्षकी कितनी ही लड़कियोंको पल्सेटिलासे आरोग्य होते मैंने देखा है। माता यह कहती हुई मेरे पास आती है, कि प्रथम रजोदर्शनसे ही मेरी कन्याको दर्द हो रहा है ; वह तैरने गयी थी या किसी तरह पैर गीले हो गये थे और तबसे ही तकलीफ है। डाक्टर कहता है, कि वह अंश अविकसित है और उसे नश्तर लेना होगा। पल्सेटिलाने स्वाभाविक स्राव कुछ ही महीनोंमें जारी कर दिया है। अब मैं एक दूसरी दवाका विपरीत लक्षण बताऊँगा। सर्दी सहन न होनेवाली दुबली-पतली लड़कियाँ, जिन्होंने प्रथम रजोदर्शनके आरम्भ होनेके समय स्नान किया है या पैर गीले कर लिये हैं और स्राव होना आंशिक रूपसे रुक गया है या प्रदाहके साथ स्राव हुआ है ; एक अविकसित दशा हो गयी है, एक शिरा-रोधवाली दशा ; भयङ्कर ऋतु शूल

हो जाता है ; नीचेकी ओर खिचावका दर्द, मानो सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी ; रोगिनीको दोहरा जाना पड़ता है ; यह दर्द तापसे घटता है और ठण्डसे बढ़ता है। उसकी दवा—**कैल्केरिया-फास** है। "नम्र प्रकृतिकी स्त्रियाँ, जब उनका ऋतु-काल अस्वाभाविक विलम्बसे होता है या रजःस्रावकी क्रिया दोषावह रहती है अथवा अनियमित होती है, तो वे पीली और दुर्बल रहती हैं, सर-दर्दकी शिकायत करती हैं, सर्दीलापन और आलस्य रहता है।" इन लड़कियोंको विकसित करनेके लिये पल्सेटिला एक बहुत बड़ी दवा है। जरायुकी स्थान च्युतिकी कष्टदायक रोगिनियाँ। यह **सीपिया, बेलेडोना, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका** और **सिकेलिसे** प्रतियोगिता करती है। इन सभी दवाओंमें बहुत शिथिलता, नीचेकी ओर खिचावका दर्द रहता है, यहाँतक कि इनमेंसे कुछने गर्भाशयका अग्र-पतन (Procidentia) तक आरोग्य किया है। स्त्रियोंके सूजाककी बहुत-सी रोगिनियोंको पल्सेटिलाने आरोग्य कर दिया है ; मैं समझता हूँ, यह साधारणतया निर्देशित होता है। इसका एक आश्चर्यजनक लक्षण यह है, कि मासिक रजः-स्राव होते रहनेपर स्तनमें दूध आ जाता है. जवानी आनेके समय लड़कियोंके स्तनमें दूध आ जाना ; दूधका असमयमें पैदा हो जाना। अगर्भवती स्त्रियोंके स्तनमें दूध (**साइक्लामेन** और **मर्क्युरियस**)।

वक्ष, श्वास यन्त्र और खाँसी, कुछ कष्टदायक लक्षण प्रकट करते हैं। वायु-नलीभुज-प्रदाह (Bronchitis) ; फुसफुस-प्रदाह (Pneumonia)। सूखी, तङ्ग करनेवाली खाँसी और श्वास-कष्ट ; खिड़कियाँ खुली रखना चाहता है ; लेटनेपर बढ़ जाता है। खाँसी मुँह भर आनेवाली और श्वास-रोधक। सवेरे बहुत ज्यादा बलगम निकलता है ; बलगम गाढ़ा पीलापन लिये हरा रहता है। रातमें सूखी, तंग करनेवाली खाँसी, लेटनेपर बदतर। खसड़ा हो जानेपर पुरानी ढीली खाँसी। कुकुर खाँसी (Whooping cough)।

स्वर-यन्त्रके भी बहुत-से लक्षण हैं ; सङ्कोचन, सुरसुरी, जिससे खाँसी आती है। सूखी, तङ्ग करनेवाली खाँसी, लेटनेपर और गर्म कमरेमें बढ़ जाती है। रातमें बदतर हो जानेवाली खाँसी।

वायुनली-भुज-प्रदाह, जिसमें सवेरे ढीली और शामको सूखी खाँसी आती है।

श्वास-कष्ट, तेज चलने या भोजनके बाद उत्तप्त हो जानेपर दबाव ; नाक रुक जाना ; भावोद्रेकोंके बाद। स्वर-यन्त्रका आक्षेपिक सङ्कोचन। वक्षमें कसावट, बायीं करवट लेट जानेपर श्वास-कष्ट ; शामको और रातके समय श्वासरोध ; खसड़ाके दाने दब जानेके कारण बच्चोंका दमा या ऋतु-स्राव रुक जानेके कारण स्त्रियोंका दमा। लेटनेपर वक्षमें जोरकी घरघराहट। खसड़ाके बाद पुरानी ढीली खाँसी। बहुत ज्यादा, गाढ़ा, पीलापन लिये हरा या खून-मिला बलगम निकलना ; नमकीन, बदबूदार बलगम। वक्षकी पुरानी सर्दी। शामको वक्षमें भरापनका भाव, इसके साथ ही स्पन्दन, जिससे नींद नहीं आती। बायीं करवट लेटनेपर कलेजा धड़कना, वक्ष-प्राचीरमें यन्त्रणा, विपरीत पार्श्वमें

सोनेपर कभी-कभी वक्षका दर्द घट जाता है, वक्षमें सूखापन और खाल उधड़नेका भाव। वंक्षणमें इधर-उधर भटकनेवाला फाड़नेकी तरह दर्द ; फुसफुसावरक-झिल्ली (Pleurisy) में फाड़नेकी तरह दर्द ; वक्षमें भयङ्कर ताप अनुभव होना। फेफड़ेसे रक्त-स्राव, काला रक्त। शामके वक्त सूखी खाँसी, सवेरे ढीली। रजः-स्राव रुक जानेके साथ या रजः-स्रावके बदले रक्त-स्राव। हरित्पाण्डुरोग-ग्रस्त लड़कियोंके सर्दी-जनित यक्ष्मामें पल्सेटिला बहुत उपयोगी होता है।

मेरुदण्ड टेढ़ा हो जानेपर पल्सेटिला बहुत लाभदायक है। पीठमें दर्द, कटि-प्रदेशमें और त्रिक-प्रदेशमें दर्द ; भ्रमणकारी वेदना ; अत्यधिक रति-क्रियाके बाद मेरुदण्डका उपदाह। मेरुदण्ड तथा प्रत्यंगोमें वातका दर्द, विश्रामके समय बढ़ जाता है और धीरे-धीरे चलने-फिरनेपर घटता है। पीठके निम्न-भागमें इस तरहका दर्द, मानो मोच आ गयी है। ऐसा अनुभव होना मानो पीठपर ठण्डा पानी ढाल दिया गया है।

सभी प्रत्यंग दर्द-भरे रहते हैं ; प्रत्यंगोमें खींचने, फाड़नेकी तरह दर्द, गतिशील रहनेपर और उसके बाद आराम मिलता है, गर्म कमरेमें बदतर और सर्द प्रयोगसे ह्रास होता है। बाहु और हाथोंका शिराओंकी सूजन। **फ्लुओरिक-एसिड**की तरह शिरा-स्फीति रोग (Varicose veins)। सन्धि-वात ; सन्धियोंमें इस तरहका दर्द, मानो स्थान-च्युत हो गई है। शामको बदतर हो जानेवाला गृध्रसी वात तथा धीरे-धीरे चलनेपर उसका अच्छा रहना। शामको बिस्तरपर, निम्न-प्रत्यङ्गोंकी पेशियोंमें खींचन और तनाव। प्रत्यङ्गोंमें फाड़ने और झटका देनेकी तरह दर्द ; यह जगह बदला करता है। शिराओंमें जलन। पैरमें भयङ्कर खुजलीके साथ बैंगनी रङ्गकी सूजन, मानो उनमें पाला मार गया है। पैरोंमें जलन होती है और रोगीको उन्हें बिछावनसे बाहर निकाल रखना पड़ता है। चलनेके समय तलवोंमें जलन और कुचल जानेकी तरह दर्द होता है। प्रत्यङ्ग तथा पैरोंकी बढ़ी हुई स्पष्ट बेचैनी और ऐंठन, लेटे हुए प्रत्यङ्गोंका सुन्नपन ; सभी प्रत्यङ्गोंमें भ्रमणकारी वेदना।

सरके ऊपर हाथ रखकर पीठके बल सोता है। बायीं करवट नहीं सो सकता ; क्योंकि इससे कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है और श्वास-रोध होता है। चल-विचल, भयावने और चिन्ता-भरे स्वप्न। देरसे सोता है ; तापकी झलकके कारण सो नहीं सकता। पल्सेटिला विकृत पाकाशयके कारण उत्पन्न सविराम ज्वरको आरोग्य करता है। नित्य सवेरे और शामके वक्त जाड़ा मालूम होना। हाथ-पैरोंसे शीत आरम्भ होता है ; शीतावस्थामें प्रत्यङ्गोंमें दर्द ; सुन्न भावके साथ एक पार्श्वकी ठण्डक, एक पार्श्विक ज्वर। शीतके पहले प्यास, तापके समय शायद ही कभी रहती है ; तनी हुई शिराओंके साथ ताप ; सर्वत्र बहुत ज्यादा पसीना या शरीरके एक पार्श्वमें ही होता है। शीतावस्थामें श्लेष्माका वमन।

पाइरोजेन
(Pyrogen)

वियोजित गो-मांसके हीथके तृतीय क्रमसे जो क्रम तैयार हुए हैं, उन्हें लेखकने दूषित ज्वर और परवर्त्ती रोगोंमें वहुत वर्षोंतक व्यवहार किया है, जब कि लक्षण मिले हैं। प्रचण्ड शीतावस्था, जिसके साथ ताप और पसीना सम्मिलित रहता है या ताप, जिसके साथ प्रत्यङ्गोंमें वहुत दर्द रहता है, बेचैनी, ताप और हिलने-डोलनेपर बढ़ता है। यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेवाली दशा उतनी ही स्पष्ट रहती है, जितनी **आर्निका** और **वैप्टीशियामें**, **इयुपेटोरियम** की तरह अस्थियोंमें दर्द, बेचैन, **रस-टक्स**की तरह ताप और हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि। सभी दर्द बैठनेपर बढ़ जाते हैं। सर्द हो जानेपर और ठण्डी सीड़-भरी ऋतुमें रोग पैदा हो जाते हैं।

ये लक्षण क्षय ज्वर (Hectic fever) में यक्ष्माकी अन्तिम दशामें तथा दूषित ज्वरमें (Septic fever) पाये जाते हैं। यह यदि स्पष्ट निर्देशित रहता है, तो कई घण्टोंमें ही सूतिका ज्वरको दूर कर देता है। सान्निपातिक ज्वर (मियादी बोखार) में, जिसमें **वैप्टीशिया**की तरह गड़बड़ी प्राप्त होती है और ताप इतना ज्यादा है, कि उस दवामें हो नहीं सकता, तो हमेशा पाइरोजेनपर ध्यान देना चाहिए। जब तापमान १०६° डिगरीतक पहुँच जाता है और बहुत यन्त्रणा तथा दर्द रहता है, तो यह दवा एक ही दिनमें बहुत बड़ा परिवर्त्तन ला देगी ; पर यदि दर्द हिलने-डोलने या तापसे बढ़ जाता है, तो यह ज्वरको छुड़ा देगा।

जब नाड़ी बहुत तीव्र रहती है तथा तापमान नाड़ीकी समतामें ऊँचा नहीं रहता, तो यह दवा लाभ करेगी। दूसरी ओर जब नाड़ी और तापमान समतामें किसी तरह भी नहीं रहते, तो इस दवाको उस समय देना चाहिये, यदि रोग दूषित (रुग्न) मूलका है। जब किसी खुले फोड़ेका स्राव घटकर बहुत दर्द हो जाये। **फोड़ेमें भयानक जलन (आर्सेनिक, ऐन्थ्रासिनम, टैरेन्ट्यूला)**।

बहुत ज्यादा बदबू रहती है, यहाँतक कि सड़ी और मुर्देकी तरह शरीर, श्वास, पसीना और स्रावोंकी गन्ध रहती है। नालीकी गैसका जहर प्रवेश कर जानेके कारण ज्वर ; रोग-संक्रमणके कारण उत्पन्न विसर्प और नश्तर लगवानेके बाद ज्वर। सड़नेवाली दशाके बहुत दिन बाद पैदा होनेवाली पुरानी बीमारियोंको यह आरोग्य करता है। बहुत वर्ष हुए, जबसे सूतिका ज्वर हुआ, वह कभी अच्छी नहीं रही ; यह पाइरोजेनपर ध्यान देनेका एक बहुत बड़ा कारण है।

अच्छे वंशके किसी युवकके रक्तमें विष फैल गया ; वह ठीक-ठीक आरोग्य न हुआ और कई बरसोंतक विभिन्न स्थानोंपर उसे फोड़े निकलते रहे। वह पाला और रोगियल था, वात-पूर्ण और अकड़ा ; इसी समय उसके पैरकी पोटलीपर एक फोड़ा तैयार हो रहा था।

उसने पाइरोजेन लिया और बहुत शीघ्र आरोग्य हो गया। इस बार वह फोड़ा फटा नहीं। दस वर्ष हो गये, वह अबतक स्वस्थ है।

इसने कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease) आरोग्य किया है, जो दूषित-मूलका था। जब दूषित और रस-रक्त बिगड़नेवाली बीमारियोंमें हृद्-गति-रोध (Heart failure) का उपक्रम होता है, तो यह बहुत ही लाभदायक दवा होती है। सड़न रोगके कारण रक्त स्राव, जब कि रक्त काला रहता है। बड़े ही खतरनाक और तीव्र दूषित ज्वरोंसे अकसर यह जान बचा देगा।

बकवादीपन; पहलेसे कहीं तेज बोल और सोच सकता है, खासकर ज्वर-भोग कालमें।

चिड़चिड़ा। अपने शरीर और प्रत्यंगोंके सम्बन्धमें मनका विभ्रम और प्रलाप (बेप्टीशिया)।

ऐसी अनुभूति, मानो वह सम्पूर्ण पलंगपर पड़ा है।

जानती है, कि उसका सर तकियेपर है; पर नहीं जानती कि बाकी शरीर कहाँ है।

ऐसा अनुभव करती है, कि जब एक करवट पड़ी रहती है, तो वह एक व्यक्ति है तथा दूसरी करवट होनेपर दूसरी हो ही जाती है।

ऐसी अनुभूति मानो उसे बहुतसे बाहु और पैर हैं।

ये लक्षण बहुत कुछ **बैप्टीशिया**की तरह हैं; पर यदि तापमान बहुत ऊँचा रहता है, तो पाइरोजेनकी तरह **बैप्टीशिया** काम न कर सकेगी।

दबावकी तरह दर्द और स्पन्दनके साथ माथेका प्रचण्ड स्पन्दन, दबानेपर बढ़ जाता है। माथेमें बहुत ज्यादा पसीना होता है। खाँसनेपर माथेके पिछले भागमें दर्द, सवेरे टहलनेपर।

चक्षुगोलक स्पर्श करनेपर यन्त्रणा होती है या ऊपर तथा बाहरकी ओर घुमानेपर।

नाकसे सड़न रोगके कारण रक्त-स्राव, नासा-प्राचीरका पंखेकी तरह हिलना (**लाइकोपोडियम**)।

चेहरा पीला, धसा और ठण्डे पसीनेसे भरा। गाल लाल और जले हुए की तरह गर्म।

मुँहसे बदबू आती है और स्वाद सड़ा रहता है। जीभ मैलसे ढकी और भूरी रहती है। नीचे मध्यकी ओर भूरी लकीर। दाँतपर मैलकी कीट। मुँहसे सड़ी गन्ध आती है।

पित्त, खून और सड़े हुए लोदेका वमन। पानीका वमन जब पाकाशय गरमा जाता है। मलकी तरह वमन; काफीके चूरकी तरह वमन। शीत और तापके समय ठण्डे पानीकी प्यास।

तलपेटमें तनाव और अत्यधिक असहिष्णुता। अन्त्रावरक झिल्ली, आँतों और जरायुका प्रदाह, दूषित मूलका। आँतोंमें गड़गड़ाहट ; गहरी साँस लेनेपर दर्द। काटनेकी तरह शूलका दर्द। पीठके भीतरसे प्रत्येक गति, बोलने, श्वास लेने प्रभृतिमें घटनेवाला दाहिने पार्श्वका दर्द ; दाहिनी करवट सोनेपर बढ़ जाता है ; प्रत्येक श्वासके साथ कराहना।

बहुत ज्यादा, तरल, सड़ा मल। अनैच्छिक रूपसे पाखाना हो जाना। बहुत ज्यादा, पानीकी तरह, दर्द-रहित मल। मल कड़े कब्जकी तरह सड़े मांसकी तरह गन्ध। कब्ज, जिसमें कड़ा, सूखा, काला, सड़ा पाखाना होता है ; जैतूतकी तरह छोटे काले गोले। सड़ा हुआ खून-मिला मल। कोमल सकरा मल बहुत जोर लगानेपर होता है। आँतोंसे रक्त स्राव।

पेशाब थोड़ा और दबा हुआ ; पेशाबमें लाल तलछट, जिसको धोकर निकालना मुश्किल होता है। कास्ट मिला रहनेवाला अण्डलाल मिला पेशाब। वदबूदार पेशाब वार-वार पेशाब लगना, मानो ज्वर आना चाहता है। मूत्राशयमें असह्य कूथन ; आक्षेपिक सङ्कोचन, जो सरलान्त्रको डिम्बाशयको और चौड़ी बन्धनियोंको आक्रान्त करता है। (ऐसा रोगी इङ्गलिङ्गने आरोग्य किया था।) दूषित (Septic) ज्वरोंमें आप ही-आप पेशाब और पाखाना होना।

जरायुसे रक्त-स्राव। **सड़ा हुआ, थोड़ा परिस्रव** (Lochia)। **रुका हुआ परिस्रव ; प्रचण्ड जाड़ा ; सूतिका ज्वर।** ऋतु-स्राव केवल एक दिन होता है, इसके वाद रक्त-मिश्रित श्वेत प्रदरका स्राव होता है। **गर्भ स्रावके वाद दूषित ज्वर** (Septic fever) ; जरायुकी स्थान-च्युति।

साँस छोड़ते समय सीटी वजनेकी तरह आवाज। कमजोर हकलानेवाली आवाज और स्वरभङ्ग। स्वर-यन्त्रसे श्लेष्माका बड़ा-बड़ा ढेला निकलनेके साथ खाँसी, हिलने-डोलनेपर वढ़ना और गर्म कमरेमें वीमारी बढ़ जाना ; स्वर-यन्त्र तथा श्वासनलियोंमें खाँसीसे जलन पैदा हो जाती है। वदबूदार, गाढ़ा पीवकी तरह बलगम। लेटनेपर खाँसी बढ़ जाती है और तनकर बैठनेपर घटती है ; खून-मिला या जङ्गकी तरह बलगम। वहुत ज्यादा, रातके समय होनेवाले वदबूदार पसीनेके साथ खाँसी। यक्ष्माके अन्तिम सप्ताहोंमें यह बहुत बड़ा उपशामक होता है। फेफड़ेमें फोड़ा।

दूषित ज्वरोंमें, हृद्-गति-रोध, जरा भी हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। प्रत्येक स्पन्दन दूरके भागोंमें सुन पड़ता है। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें घवड़ाहट और धँसते जानेका भाव। हृत्पिण्डकी स्पष्ट सचेतनता अर्थात् ऐसा मालूम होना, कि हृत्पिण्ड है। टेंटुआकी दो-भागके स्थानपर धीमा-धीमा दर्द। वक्ष और हृत्पिण्डमें दवाव। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें पूर्णता। ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्ड ठण्डा पानी झोंकसे उगल रहा है (इङ्गलिङ्ग)। कलेजा धड़कना, जोरकी हृत्पिण्डकी आवाज। हृत्पिण्डकी फड़फड़ाहटकी अनुभूति। **तीव्र अनियमित, फड़कती हुई नाड़ी।**

गर्दनमें स्पन्दन। पीठमें कमजोरी अनुभव होती है। खाँसनेपर पीठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

बहुत बेचैनीके साथ समस्त प्रत्यङ्गोंमें दर्द। समूचे शरीरकी हड्डियोंमें दर्द। पेशियोंमें यन्त्रणा और विस्तर कड़ा मालूम होता है, हिलने-डोलनेपर घटता है। हाथ-पैर ठण्डे। हाथ-पैरोंमें सुन्नपन। हाथ और बाहु सुन्न। हाथ ठण्डे और सिकुड़े। ज्वर तथा शीतावस्थामें जांघोंमें दर्द। ज्वर तथा शीतावस्थामें घुटने और पैरोंमें दर्द, चलने-फिरनेपर और तापसे घटता है। बैठे रहनेपर पैरोंमें धीमा-धीमा दर्द, यह हिलने-डोलनेपर घट जाता है। घुटनेके ऊपरी भागमें इस तरहका दर्द, मानो हड्डियाँ टूट गयी हैं; प्रत्यङ्गोंको फैला देने तथा हिलने-डोलनेपर घटता है। पैर तथा पैरके पंजे शोथ-ग्रस्त। पैरोंका सुन्नपन।

चर्म पीला, ठण्डा तथा खाकी रङ्गका। वृद्ध मनुष्योंका बहुत ही जिद्दी शिरास्फीतिका जखम, जिससे बदबू आती है। इसने बहुत-से पुराने ज्वरके घाव आरोग्य किये हैं, जिससे बदबूदार, पतला खूनका स्राव होता है। सड़े मांसकी तरह गन्ध-भरा पसीना। शरीरसे सड़ी गन्ध। सभी दशाओंमें शरीर ढके रहना पड़ता है। गर्म बिस्तरसे शीत घट जाता है। जाड़ा प्रतिदिन लगता है; शामको आता है, अमूमन ७ बजे शामको। इसकी सामयिकता नियमित रहती है। शरीरपर ठण्डा पसीना। बहुत ऊँचे तापमानके साथ गरम पसीना। भयावने स्वप्नोंसे निद्रा भरी रहती है। लगातार ख्याल पैदा होकर नींदको रोक देते हैं। नींदमें श्वास-रोध। वक्षपर दबावके कारण नींदमें चिल्ला उठता है।

रैननक्युलस बल्बोसस
(Ranunculus Bulbosus)

इस बटरकप (एक तरहका छोटा पीला फूल) से एक ऐसी कटु आकाशी (Ethereal) भाफ निकलती है, जो उनके लिये बहुत ही जहरीली होती है, जो उसे सहन नहीं कर सकते और बहुत बार **रस-टक्स**के जहरसे इसका भ्रम हो जाता है। यह साधारण खेतोंमें पैदा होनेवाला बटरकप अकसर उतना व्यवहार नहीं किया जाता, जितना यह निर्देशित रहता है और यह भी ठीक है, कि अन्य औषधोंकी भाँति यह विख्यात नहीं है। जब वक्षकी पेशियाँ आक्रान्त रहती हैं, तो यह वातकी एक बहुत ही उपयोगी दवा होती है। मेरुदण्डके स्नायु, फुसफुसावरक झिल्ली (Pleura) तथा पसलियोंकी पेशियोंमें दर्द, जिसके साथ असीम यन्त्रणा सम्मिलित रहती है। इसमें **ब्रायोनिया**की तरह ही हिलना-डोलना सहन नहीं होता तथा **डलकामारा**की तरह सर्द और सीड़वाली ऋतु सहन नहीं होती। इसमें एकाएक कमजोरी, यहाँतक कि मूर्च्छा भी आ जाती है; इसने मृगी रोग आरोग्य किया है। यह असीम उत्तेजना-प्रवल है तथा असहिष्णु रोगियोंकी एकदम भग्न-स्वास्थ्यवाली दशाके बहुत सदृश है; इसलिये इसमें भय और तरद्दुदोंसे उत्पन्न होनेवाली बीमारियाँ हैं। इसकी बीमारियाँ शामके वक्त बदतर हो जाती हैं तथा किसी भी ऋतु-परिवर्त्तनसे, खासकर जब ऋतु गर्मसे

ठण्डेमें बदलती है ; शामको रोग वृद्धि बहुत स्पष्ट रहती है ; सर-दर्द, कानका दर्द, नाकके उपसर्ग, ज्वर, छोटी पलसियोंमें यन्त्रणा, श्वास कष्ट, वक्ष तथा हृत्पिण्डमें दबाव, वक्षकी कसावट, स्पन्दनका बढ़ जाना, कम्पन, शीत मालूम होना,—ये सभी शामके वक्त बदतर हो जाते हैं। उसे सर्दी और सर्द ठण्डी खुली हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती। ठण्डी हवासे सर-दर्द, वात, वक्ष, मेरुदण्ड तथा डिम्बाशयका स्नायु-शूल उत्पन्न हो जाता है, सरमें चक्कर आता है। खूब गरमाये रहनेपर एकाएक अगर खुली हवा लग जाती है, तो ज्वर-भावका उपसर्ग उत्पन्न हो जाता है अथवा फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह (Pleurisy) या फुसफुस-प्रदाह (Pneumonia) उत्पन्न हो जाता है। ठण्डी हवा लग जानेपर, उसके वक्षकी पेशियोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो कुचल गयी हैं। बहुत से अंशोंमें ठण्डी हवाका झोंका यन्त्रणा-पूर्ण वेदना उत्पन्न कर देता है। बरसाती और तूफानी मौसम उसे बिलकुल ही सहन नहीं होती। उसके बहुत-से अंशोंमें यन्त्रणा और कुचल जानेकी तरह दर्द होता है। यकृतमें **सुई गड़नेकी तरह दर्द**, कानोंमें, वक्षमें, तलपेटमें, कन्धे और अन्य सन्धियोंमें, मेरुदण्डमें, कटि-प्रदेशसे लेकर उदरतक, पीठमें दोनों कन्धोंके बीचमें, सुई गड़ने और जलनकी तरह दर्द, जो कटि-प्रदेशसे विकीर्णित होता है। पाकाशयकी ओरकी हृत्पिण्ड-मुखके पास **जलनकी तरह दर्द** तथा पाकाशय गह्वरमें, मूत्राशय-ग्रीवामें, कनीनिकामें, उद्भेदोंमें, जखमोंमें। ललाटमें **दबावका दर्द** ; मस्तक-शिखरमें, आँखोंमें, कनपटियोंमें ; नाककी जड़में ; पाकाशय-गह्वरमें ; कन्धेमें, वक्षके निम्न-भागको पारकर ; वक्षके मध्य भागमें दबावकी तरह दर्द, इसमें रेंगने, सुरसुराने और कुटकुटानेकी तरह होता है। संयोजनके (Adhesion) शोथके साथ फुसफुसावरक-झिल्लीका प्रदाह। फुसफुसावरकसे रस-स्रावके साथ जब पसलियोंमें असीम यन्त्रणा रहती है, खासकर निम्न-पसलियोंमें तो यह बहुत लाभदायक होता है। इसने नकड़ा (Lupus) और अन्तस्त्वकार्बुद (Epithelioma) आरोग्य किया है। रोगी कामला रोग-ग्रस्त।

इसमें बहुत निराश भाव और मरणेच्छा रहती है। भूत प्रेतोंका भय और बहुत चिड़चिड़ा तथा झगड़ालू रोगी रहता है। चित्त-विभ्रम।

खुली हवामें जानेके समय सरमें चक्कर आना। माथा बड़ा हो जानेकी अनुभूति।

चेहरेमें ताप मालूम होनेके साथ वृहत् मस्तिष्ककी विवृद्धि (Cerebral hyperæmia)। तापमानके परिवर्त्तनके साथ सर-दर्द, ललाट और मस्तक-शिखरमें दबावका दर्द, जब तापमान बदलता है, सर्दीमें या गर्म कमरेमें बदतर हो जाता है। दाहिनी आँखके ऊपर प्रचण्ड दर्द, लेटनेके समय बदतर और चलने या खड़े होनेके समय अच्छा रहता है। अन्य सभी दर्द हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाते हैं। यह एक ध्यान देने योग्य अपवाद है।

आँखोंमें दबाव और जलन। आँखमें बहुत दर्द, खासकर दाहिनी आँखमें। **दाहिनी निम्न पलकमें** यन्त्रणा और जलन। दाहिनी आँखके बाहरी कोनेमें जलन और यन्त्रणा। नीलापन लिये काली दादकी तरह आँखोंपर फुन्सियोंके चकत्ते। गर्भावस्थामें होनेवाला अर्द्ध-दृष्टि रोग (Hemiopia) इसने आरोग्य किया है।

कानोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, खासकर दाहिने कानमें ; शामको बदतर।

आँखोंमें जलन तथा कोमल तालुमें खुजली (वाइथियाकी तरह) के साथ होनेवाला उद्भिज ज्वर इसने आरोग्य किया है। शामके वक्त बदतर, नाककी जड़में दवाव, नाकका चमड़ा लाल और बहुत प्रादाहित रहता है।

बहुत जलनके साथ चेहरेपर चकत्तेदार उद्भेद इसने उत्पन्न किये हैं। मुखमण्डलका अन्तस्त्वकार्बुद (Epithelioma) इसने उत्पन्न किया है। चेहरेमें, नाक और ठुड्डीमें चुनचुनी। ओठोंका ऐंठना।

कण्ठमें जलन, यन्त्रणा और लाली, कोमल तालुमें कुटकुटी और खुजली।

तीसरे पहर बहुत प्यास लगती है। बहुत दिनोंतक ह्विस्की और ब्राण्डी जैसी ताकत लानेवाली चीजें व्यवहार करनेवाले कमजोर और डगमगानेवाले रोगियोंको इसने बहुत बार आरोग्य किया है। यह सकम्प प्रलापकी बहुत बढ़िया दवा है, जब वह बदहोश रहता है, हिचकियाँ आती हैं तथा कुछ न-कुछ टङ्कार-ग्रस्त रहता है। अलकोहल शराब पीनेसे मृगीकी तरह दौरे। हिचकी बहुत तेज और आक्षेपिक रहती है। बार-बार डकारें आती हैं।

पाकाशयमें जलन और खासकर हृत्पिण्ड-मुखकी तरफ। पाकाशय बहुत स्पर्श असहिष्णु रहता है। पाकाशयके स्नायु-शूलका आवेश।

छोटी पसलियोंमें यन्त्रणा पूर्ण कुचल जानेकी तरह भाव, यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कामला ग्रस्त। बहुत दबानेपर यकृत-प्रदेशमें दर्द ; शामको लक्षण बदतर हो जाते हैं।

तलपेटमें बहुत आध्मान रहता है ; शूलका दर्द, जलन और दबानेपर बहुत यन्त्रणा। पसलियोंके नीचे तलपेटके दाहिनी ओर सुई गड़नेकी तरह दर्द। हिलने-डोलनेपर, श्वास लेने और चलनेपर दर्द बहुत बदतर हो जाता है। तलपेटमें बहुत तरहका सुई गड़नेकी तरह दर्द। इसमें पानीकी तरह अतिसार और रक्तामाशय है। इसमें प्रचण्ड दर्दके साथ भैंसिया दाद है।

खाल उधेड़नेवाला श्वेत-प्रदर तथा डिम्बाशयमें तेज दर्द, ऋतुके प्रत्येक सर्दीमें परिवर्त्तनसे, हिलने-डोलनेसे और शामको होने लगता है।

वक्षमें दवावके साथ शामको भारी और लघु-श्वास ; ठण्डी साँसकी तरह श्वास-क्रिया। वक्षमें दवाव और सङ्कोचन। वक्ष प्राचीरमें दवावकी तरह दर्द ; वक्ष-प्राचीरमें सुई गड़नेकी तरह प्रचण्ड दर्द। पाँचवीं और छठीं पसलियोंके प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। स्पर्श करनेपर या दवानेपर अन्तिम पसलियोंमें दर्द-भरी यन्त्रणा। वक्षमें वातज दर्द। पसलियोंका पुराना वात। वक्षोदर मध्यम-पेशी चपक गयी हो, ऐसी यन्त्रणा। वक्षोदर मध्यस्थ-पेशी और फुसफुसावरक-झिल्लीका प्रदाह। फुसफुसावरक-झिल्लीके संयोजनके कारण वक्षमें जल-सञ्चय-जनित दर्द। ऐसी अनुभूति, मानो भीतरी अंश चपक गये हैं। दर्द हिलने-डोलनेपर बदतर

हो जाता है, ठण्डी हवामें, ठण्डे हो जानेपर या श्वास लेनेपर। ठण्डी हवामें जानेपर शरीरपर एक भीगे कपड़े रखे रहनेकी तरह अनुभूति। प्रत्येक बार जब ऋतु गर्मीसे ठण्डमें परिवर्त्तित होती है, तो सुई गड़नेकी तरह दर्द। पसलियोंपर यहाँ वहाँ यन्त्रणा-पूर्ण स्थान। श्वास खींचने, बायीं करवट सोने तथा हिलने-डोलनेपर हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्द। स्पर्श करनेपर अत्यधिक यन्त्रणाके साथ वक्षकी पेशियोंमें वातज सूजन। श्वास लेने, दबाव, शरीरको इधर-उधर घुमाने और ठण्डी हवामें काटनेकी तरह प्रचण्ड दर्दके साथ पार्श्व शूल। नाड़ी-पूर्ण, कड़ी और तीव्र, शामके वक्त और सवेरे सुस्त रहती है।

मेरुदण्डमें यन्त्रणा-पूर्ण स्थान। बायीं स्कन्धास्थिके किनारे-किनारे दर्द। दोनों स्कन्धास्थियोंके बीचमें, मेरुदण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। स्कन्धास्थिके निम्न और भीतरी किनारेपर, जूता बनानेवालेको, सुईका काम करनेवालोंको और झुककर लिखनेवालों को दर्द। अकसर एक स्कन्धास्थि पीठमें चपक जाती है और एकदम अचल हो जाती है और इसके बाद जलन करनेवाला दर्द पैदा हो जाता है। कमजोर मेरुदण्ड और असीम आलस्य। पीठ और वक्षपर चकत्ते-चकत्ते उद्भेद निकलते हैं, जिनके भीतर नीली सामग्री और बहुत ही तेज दर्द होता है।

वातज-वेदनाएँ, ऊपरी अङ्गोंमें आवेशिक ढङ्गसे होती हैं। बाहु और हाथोंके स्नायुओंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। अग्रबाहु और हाथोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। सर्दीसे दर्द बढ़ जाता है तथा हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है। तलहत्थी और अङ्गुलियोंपर नीले रङ्गके चकत्ते। अंगूठोंपर बीजकी तरह मसे।

तीसरे पहर प्रत्यङ्गोंमें बहुत कमजोरी। सर्दीमें, तर ऋतुमें और तूफानी मौसममें मेरुदण्डसे लेकर गृध्रसी स्नायुतक सुई गड़नेकी तरह दर्द और जलन चलने-फिरनेपर और ठण्डी हवामें बदतर। जंघाओंमें खींचनका दर्द। घुटनोंमें वातका दर्द; पैरमें तथा पंजोंमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और यन्त्रणा; पैरके गट्टे बहुत ही दर्द भरे रहते हैं, छूनेपर यन्त्रणा होती है; डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है और जलन होती है। शीतस्फोटकी तरहके उपसर्ग उसे हुआ करते हैं।

देरसे सोता है। श्वास-कष्टके कारण, गर्मीके कारण और रक्तका दौरान तेज हो जानेके कारण नींद नहीं आती।

चर्मपर गहरे नीले रंगकी फुन्सियाँ; ये फुन्सियाँ फट जानेपर सींगकी तरह उठी हुई खीलें निकलती हैं। फफोलोंकी तरह उद्भेदोंके लिये इसका व्यवहार हुआ है तथा जले घाव और वर्तुलाकार विसर्पिकामें, विम्बिका (Pemphigus) और अकौतामें इसका प्रयोग होता है। चिपटे, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होनेवाले जखम। सींगकी तरह प्रवर्द्धन।

रोडोडेण्ड्रन
(Rhododendron)

यह गठियाके उन रोगियोंकी बहुत ही लाभदायक दवा है, जिन्हें वातके दर्दकी तकलीफ हुआ करती है, कभी-कभी दर्द एक सन्धिसे दूसरीपर भ्रमण किया करता है, विश्रामकालमें बढ़ जाता है तूफान आनेके पहले और समय बढ़ जाता है, सर्दीमें बढ़ जाता है तथा तर मौसममें बढ़ता है और गर्म वस्त्र लपेट लेनेपर घट जाता है। ये दर्द सरमें या प्रत्यङ्गोंमें हो सकते हैं। बहुत दिनोंसे गठियाकी तकलीफ भोगते रहनेवाले वृद्धोंके लिये यह बहुत बड़ा उपशामक है। सन्धियोंकी वातज सूजन। रातमें विश्राम कालमें कण्डराओंके प्रसारण स्थानमें दर्द (aponeuroses)। वह हमेशा यह पहले ही बता दे सकता है, कि तूफान आनेवाला है। दर्द फाड़ने और खोंचा मारनेकी तरह होता है। यन्त्रणापूर्ण कुचल जानेकी तरह दर्द। सन्धियाँ, गर्दन और पीठकी अकड़न। ठण्डी ऋतु उसे बिल्कुल ही सहन नहीं होती और ठण्डा हो जानेपर रोग बढ़ जाता है। आरामके समय पाक्षाघातिक दुर्बलता, इतनेपर भी परिश्रम करनेपर वह कमजोर रहता है। लगातार हिलते-डोलते रहनेपर ही केवल उसे आराम मिलता है। झोंककी हवावाली सर्द ऋतुमें वह बेतरह दर्दसे असहिष्णु रहता है। तूफान आनेके पहले नर्त्तन रोग (chorea)। हिलने-डोलनेपर साधारणतः अच्छा रहता है, यहाँतक कि जब रोग-ग्रस्त अंशोंको हिलाने-डोलानेपर दर्दवाले अंशोंकी रोग-वृद्धि होती है।

स्नायविक व्यक्तियोंके (फास्फोरस) बिजलीका भय, भूल जानेवाला। बात करते करते वह भूल जाता है, कि वह क्या बातें कर रहा था। लिखनेमें शब्द छोड़ देता है। अपने कारबारकी इच्छा नहीं होती। शराबका प्रभाव तुरन्त पहुँच जाता है।

सवेरे बिछावनपर प्रचण्ड वातज सर-दर्द, यह दर्द इधर-उधर चलने-फिरनेपर और सर लपेट लेनेपर घटता है; शराब पीनेपर बढ़ता है तथा तर ठण्डी ऋतुमें बढ़ जाता है। तूफान आनेके पहले सर-दर्द हो जाता है। कनपटियों और ललाटमें दर्द। सर इतना यन्त्रणापूर्ण अनुभव होता है, मानो कुचल गया है। बाहरी ताप सर-दर्दको घटाता है।

तूफान आनेके पहले आँखोंमें दर्द, यह ताप तथा हिलने-डोलनेपर घटता है। चक्षुगोलककी भीतरी पेशियोंमें कमजोरी, साथ ही तूफानके पहले सुई गड़नेकी तरह दर्द।

कानमें जोरोंका दर्द, कभी-कभी फाड़नेकी तरह, यह तूफान आनेके पहले बढ़ जाता है और तापसे घटता है। गरज, घण्टी बजने और भनभनाहटकी आवाजें कानमें आती हैं।

गठियाके रोगियोंको चेहरेका स्नायु-शूल, यह हिलने-डोलनेपर बढ़ता है, ठण्डी झोंककी हवासे बढ़ता है और ताप प्रयोगसे घटता है। विश्रामके समय साधारणतः रोग-वृद्धि

होती है ; तूफानी मौसममें बीमारी होती है। खानेसे और गर्मीसे दर्द घटता है। तूफानके पहले दाँतोंमें दर्द ; कानमें दर्दके साथ दाँतोंमें दर्द, यह तापसे घटता है ; रातमें बढ़ता है, ठण्डे पेयोंसे बढ़ता है।

थोड़ा भी खानेपर पेट भरा मालूम होता है (लाइकोपोडियम)। खाली डकारें। ठण्डा पानी पीनेपर हरा, तीता वमन। पाकाशयमें धँसते जानेका भाव। भोजनके वाद पाकाशयमें दबाव।

तलपेटके पार्श्व-भागमें ऊपरकी ओर इस तरहका दर्द मानो वायु भर गया है। तेज चलनेपर प्लीहामें सुई गड़नेकी तरह दर्द। पाकाशयमें गुड़गुड़ाहट और भोजनके वाद पूर्णता अनुभव होना।

ढीले पाखानेके समय भी बहुत काँखना पड़ता है। अनपचका, पतला, भूरा पाखाना होता है। भोजनके वाद, फल खानेके बाद, ठण्डसे, तर मौसमसे और बिजली चमकनेके साथ आनेवाले तूफानके पहले पतले दस्त आना। बिजली तूफानके पहले रक्तामाशय। मलद्वारमें स्पन्दन, मलद्वारमें खींचन, जो जननेन्द्रियतक फैल जाती है।

वार-वार पेशाब लगनेके साथ मूत्राशयमें खींचनकी तरह दर्द।

वातज-रोगियोंको सर्दी लग जानेके कारण वहुत सूजनके साथ अण्डकोष-प्रदाह (Orchitis) अथवा ठण्डे पत्थरपर बैठने और दबे हुए सूजाकके कारण अण्डकोष-प्रदाह ; दाहिनी अण्डकोष अधिक आक्रान्त होता है। शुक्र रज्जुमें खींचनकी तरह दर्द ; विश्रामके समय ; ताप तथा चलने-फिरनेपर घट जाता है। अण्डोंमें, शुक्र-रज्जुमें और कूल्होंमें बहुत दर्द, हिलने-डोलने तथा ताप-प्रयोगसे घटता है। इसने लड़कोंकी अण्डवृद्धिकी बीमारी आरोग्य कर दी है। मुष्कमें बहुत ज्यादा खुजली।

मासिक रजः-स्राव जल्दी-जल्दी और बहुत ज्यादा होता है। योनिमें रक्ताम्बु-कोष उत्पन्न हो जाते हैं।

तूफानी ऋतुमें, विश्राम करनेके समय वक्षमें वातज सुई गड़नेकी तरह दर्द। वक्षका सङ्कोचन। हृत्पिण्डमें दर्द।

गर्दन और पीठमें वातका दर्द और कड़ापन। पृष्ठ-प्रदेशमें वातका दर्द, जो तर, ठण्डी ऋतुमें वाहुओंतक फैल जाता है, विश्रामके समय बढ़ता है। गर्दन और पीठमें इस तरह फाड़नेकी भाँति दर्द होता है, कि रोगीको विछावन छोड़ देना पड़ता है।

तूफानी ऋतुमें, सभी प्रत्यंगोंमें वातज फाड़नेकी तरह दर्द, यह तूफान आनेके पहले और विश्राम कालमें बढ़ जाता है ; रातमें बढ़ता है ; ज्यादातर अग्रबाहु और पैरोंमें होता है। प्रत्यंगों और सन्धियोंमें भ्रमणकारी वेदनाएँ। अस्थि और अस्थि-आवरकमें दर्द। दर्दके मारे विछावन छोड़ देना पड़ता है। प्रत्यंगोंमें पाक्षाघातिक वेदना। पैर-पर-पैर चढ़ाये विना सो नहीं सकता। आधी रातके वाद नींद नहीं आती। कन्धोंके जोड़की जगहपर इतना तेज दर्द होता है, कि हाथ नहीं हिलाये जा सकते ; पर चलते-फिरते रहनेपर स्वतः रोगीको आराम मिलता है और दर्दकी तकलीफ घट जाती है।

रस टाक्सिकोडेण्ड्रन
(Rhus Toxicodendron)

सर्द सीड़वाली ऋतुमें इस दवाके उपसर्ग उत्पन्न होते हैं या पसीना होते रहनेके समय सर्द तर हवा लग जानेपर। रोगीको ठण्डी हवा सहन नहीं होती और उसके सभी उपसर्ग ठण्डसे बदतर हो जाते हैं तथा गर्मीसे सभी अच्छे रहते हैं। साधारणतया धीमा-धीमा दर्द, समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह भाव, सम्पूर्ण प्रत्यङ्गोंमें बेचैनी तथा हिलने-डोलनेपर तकलीफका घटना ऐसे लक्षण हैं, जो रस-टक्समें सर्वत्र प्राप्त होते हैं। यद्यपि वह हिलने-डोलने और चलने-फिरनेपर अच्छा रहता है, तथापि यदि वह चलना जारी रखता है, तो क्लान्त हो पड़ता है। मन या शरीरका कोई भी अनवरत परिश्रम रस-टक्सके रोगीको क्लान्त कर देता है। हड्डियोंमें दर्दके साथ वह वातज दशाओंको भोगा करता है; पसीना रुक जानेके कारण या सर्दी लग जानेके कारण पेशियोंमें खञ्जता, कण्डराओंमें, वन्धनियोंमें खञ्जता। यह ज्वर और विज्वर दोनोंमें ही होता है। बहुत दिनोंकी पुरानी वातज दशाओंके लिये रस-टक्स उपयोगी है। वह अकड़ा, लङ्गड़ा और कुचलाकी तरह पहली वार हिलना डोलना आरम्भ करते समय रहता है; पर गर्म हो जानेपर यह चला जाता है; पर जल्द ही वह कमजोर हो जाता है और उसे बाध्य होकर विश्राम करना पड़ता है। इसके बाद बेचैनी, धीमा-धीमा दर्द, अस्थिरता पैदा होती है, जिससे बाध्य होकर उसे हिलना-डोलना पड़ता है और जिससे वह फिर अच्छा हो जाता है; पर जल्द ही वह कमजोर हो जाता है और यह बराबर जारी रहता है, जिससे कि उसे कभी भी शान्ति और आराम नहीं मिलता। ग्रन्थियों और श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रदाह; पेशियोंका प्रदाह। वस्ति गह्वर, गर्दन तथा उसके पासकी ग्रन्थियोंका बहुत सूजनके साथ कौषिक-झिल्ली-प्रदाह (Cellulitis)। चर्मका प्रदाह, जो विसर्पके आकारका हो जाता है। बैंगनी; बड़े-बड़े छालोंके साथ दवानेपर गड़हा पड़ना; ये छाले रक्ताम्बुसे भरे रहते हैं; कभी-कभी खूनसे भरे। इसमें फोड़े, विष-व्रण (Carbuncles) और फफोलोंवाले उद्भेद होते हैं। ग्रन्थियोंका प्रदाह, जो गर्म और अत्यन्त वेदना-पूर्ण रहती हैं। ग्रन्थियाँ गर्म रहती हैं और अन्तमें उनमें पीव हो जाता है। बगलकी ग्रन्थि और कर्णमूल ग्रन्थिका फोड़ा। गर्दन और निम्न-हनुकी ग्रन्थिका कण्ठमाला-जनित प्रदाह। अस्थि तथा अस्थि-आवरकका प्रदाह। कण्ठमाला और अस्थि विकारके रोग। हड्डियोंके प्रधान-प्रधान प्रवर्द्धनोंको छूनेपर बहुत यन्त्रणा होती है, खासकर कपोलास्थियोंको। इसमें उपसर्ग अधिकांश रूपमें समय बाँधकर होनेवाले होते हैं। इसने सविराम ज्वरके बहुत-से रोगी आरोग्य किये हैं और अकसर स्वल्प विराम ज्वरमें भी उपयोगी होता है और अविराम ज्वर तथा निम्न-श्रेणीके सान्निपातिक ज्वरोंमें तो बहुत ज्यादा उपयोगी होता है। रस-टक्समें होनेवाला दर्द, फाड़नेकी तरह होता है और कुचल जानेकी तरह दर्द अकसर सुन्नपन और निम्न-प्रत्यङ्गोंके पाक्षाघातिक दुर्बलतासे सम्मिलित रहता है। इसमें अनुभूतिके क्षयके साथ प्रत्यंगोंका पक्षाघात है। बच्चोंके पक्षाघातकी तो रस-टक्स एक प्रचलित दवा

है। आजकलकी धात्री-लड़कियाँ अकसर बच्चोंमें पाक्षाघातिक उपसर्ग और मेरुदण्डका पक्षाघात उत्पन्न कर देती हैं। ये धात्रियाँ बच्चेको बागोंमें ले जाती हैं, उन्हें गाड़ीसे निकाल लेती हैं और उन्हें सर्द सीड़-भरी भूमिपर रख देती हैं और कुछ ही दिनोंमें बच्चेको शिशु-पक्षाघात रोग उत्पन्न हो जाता है। रस-टक्स इन रोगियोंको आरोग्य कर देगा ; क्योंकि लक्षण रस-टक्सके ढङ्गके ही हो जाते हैं। खासकर दाहिनी ओरका अर्द्ध-पक्षाघात। प्रत्यङ्गों और पेशियोंमें ऐंठन, सर्द-स्नानसे पैदा होनेवाला नर्त्तन-रोग (Chorea) इसने आरोग्य कर दिया है।

रस-टक्सके बहुत-से मानसिक लक्षण ऐसे रहते हैं, जैसे कि निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें, खासकर मियादी बोखारमें होते हैं। वह असम्बद्ध बातें बोलता है ; जल्दी-जल्दी सवालोंका जवाब देता है। चिन्ता, आशङ्का और भय बना रहता है। रातमें बहुत ज्यादा भय रहता है। रस-टक्सके उपसर्ग अकसर रातमें पैदा होते हैं। मानसिक लक्षण रातमें बदतर रहते हैं। प्रलाप भी रातमें ही बदतर रहता है। भय और घबड़ाहट रातमें ही बढ़ जाते हैं। रस-टक्सके पुराने मानसिक लक्षण हैं,—निराशा, मानसिक अवसाद, मानसिक परिश्रम सहन करनेकी शक्तिका न रहना, जीवनसे वितृष्णा तथा आत्मघातका विचार। वह अपनेको पानीमें डुबा देना चाहता है ; इतनेपर भी उसे मृत्युका भय रहता है। वह मरनेकी इच्छा करता है ; पर उसमें आत्महत्या कर लेनेका साहस नहीं रहता। बहुतसे अवसरोंपर वह आत्मघाती विचारोंसे पूर्ण रहता है ; उदासी, रोना, पर इतनेपर भी वह नहीं जानता, कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। इतना चिड़चिड़ापन और घबड़ाहट मानो उसपर कोई आपद आना चाहती है, नयी और पुरानी बीमारियोंमें बेचैनी, घबड़ाहट और असीम स्नायविकता। समस्त शरीर और प्रत्यङ्गोंमें सर्दी बैठ जाती है। नशेमें रहनेकी तरह वह चौंधियोंया रहता है ; चलनेके समय डगमगाया करता है।

सर-दर्द, ज्वर, वात तथा मूत्राशय-प्रदाहमें जैसा होता है, वैसा ही होता है। मस्तिष्क ढीला मालूम होता है अथवा माथेमें एक घरघराहटका भाव मालूम होता है ; माथेमें इस तरहका दर्द मानो मस्तिष्क फाड़ लिया गया है। कानमें भनभनाहटके साथ हतबुद्धि कर देनेवाला सर-दर्द। माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो उसके अंश सब पेंचके सहारे आपसमें जोड़ दिये गये हैं ; ऐसा अनुभव होना, मानो मस्तिष्क दबाया जा रहा है। मस्तककी पेशियाँ यन्त्रणा-पूर्ण रहती हैं। करोटी (मस्तककी खोल) को छूनेपर करोटीके आवरणमें दर्द होता है ; माथेके पिछले भागका दर्द, माथा पीछेकी ओर झुकाये रहनेपर घट जाता है। मस्तक-त्वचामें स्फुरण। माथेमें रक्तका दौरान। कानमें गूँजकी आवाज। मस्तक-त्वचामें सुरसुरी। टपकका दर्द। ऊँचे ज्वरके साथ मस्तिष्का-वरणका प्रदाह। रस-टक्सके इन लक्षणोंके साथ बहुत बेचैनी ; मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह, साथ ही घबड़ाहट और बेचैनी। हड्डियोंमें निरन्तर क्लेशदायक दर्द ; हिलने-डोलनेपर घटना। मस्तक-त्वचापर उद्भेद ; बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु। जिस पार्श्व सोया रहता है, उस ओरकी मस्तक-त्वचा बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु। मस्तकके अस्थि-आवरकमें फाड़ने और खींचनेकी तरह दर्द ; माथेकी हड्डियोंमें ऐसा दबाव मालूम होना, मानो पेंचसे आपसमें कस दी गयी हैं। प्रत्येक सर्द, सीड़-भरी मौसममें या माथेका पसीना रुक जानेके कारण सर-दर्द पैदा हो

जाता है ; वातज सर-दर्द । केश गीले होनेपर सर-दर्द बदतर हो जाता है । मस्तक-त्वचापर फफोलोंकी तरह उद्भेद, बड़े-बड़े छालोंके साथ मस्तक त्वचाका विसर्प ; पक जानेवाले मस्तक-त्वचाके उद्भेद । बच्चोंकी मस्तक-त्वचाके इलाजकी यह बहुत लाभदायक दवा है, मस्तक-त्वचापर मैंसिया दादकी तरह उद्भेद ।

वात-रोगियोंको सर्दी लग जानेके कारण या तर ऋतु अथवा पसीना रुक जानेके कारण ज्वर और बेचैनीके साथ आँखोंका प्रदाह । कनीनिकापर फुन्सियाँ ; आलोकातङ्क अर्थात् रोशनीका सहन न होना ; आँखमें पीब हो जाना । चक्षुताराका वातज प्रकृतिका प्रदाह ; बहुत सूजन रहती है और सूजनके कारण आँखें बन्द हो जाती हैं । बहुत ही तेज चक्षु-श्वेत पटलका प्रदाह (आँख उठना) ; अर्जुन रोग ; आँखें लाल रहती हैं और सवेरे रोग-वृद्धि हो जाती है ; सर्दी लग जानेके कारण आँखोंका प्रदाह ; पलकें लाल रहती हैं ; शोथ-ग्रस्त । चक्षु-गोलक हिलानेपर आँखका दर्द बढ़ जाता है ; खासकर कुचल जानेकी तरह दर्द । चक्षु-गोलककी पेशियोंका पक्षाघात, वात और ठण्ड लग जानेका या पैर भींग जानेका दुष्परिणाम है । आँखें लाल और आँसू बहता है ; पलकोंका विसर्प ; ऊपरी पलकोंका पक्षाघात । बहुत ज्यादा, पीबका या श्लेष्माका स्राव होनेके कारण पलकें चिपक जाती हैं । रस-टक्सके रोगियोंको निचली पलकोंपर गुहौरियाँ हुआ करती हैं ; आँखोंका स्नायु-शूल ।

कानोंका स्नायु-शूल ; वाह्य कर्णका फफोलोंके साथ विसर्पके आकारका प्रदाह ; कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह । नाकसे रक्त-स्राव ; नाककी प्रचण्ड सर्दी । प्रत्येक सर्दीसे नाक रुक जाती है ; नथुनोंमें बहुत यन्त्रणा, नाकसे गाढ़े पीले श्लेष्माका स्राव ; हरा, बदबूदार श्लेष्मा । विसर्पके कारण नाककी बहुत ज्यादा सूजन । नाककी नोक लाल और असहिष्णु रहती है । नाक फूली और शोथ-ग्रस्त रहती है । नाकके कोने और नाकपर उद्भेद ; नाकका अकौता और बहुत ज्यादा सूजन ।

जलनके साथ चेहरेका विसर्प ; बड़े-बड़े छाले और तेजीसे बढ़नेवाला प्रदाह, जो बहुत नीला हो जाता है और दबानेपर गड़हे पड़ते हैं । चेहरेका विसर्प अकसर चेहरेको पारकर बायेंसे दाहिनी तरफ चला आता है । बहुत ज्यादा जलन, खुजली, फड़कन, प्रलाप और ऊँचा ज्वर रहता है और ऊपर बतायी हुई मानसिक अवस्था रहती है । चेहरेका अकौता, पुराने पीब होनेवाले चेहरेके उद्भेद । जबड़ोंका अकड़न ; जबड़े और सन्धियोंकी वात-पूर्ण दशा । मुँहके कोनोंमें जखम हो जाता है ; ज्वरके फफोले ; ओंठ सूखे और सूखे चमड़ेकी तरह तथा टाइफायड ज्वरमें उनपर लाली लिये भूरी पपड़ी जमती है ; ओठोंसे खून बहता है । हमें मुँहके बहुतसे लक्षण, खासकर मियादी बोखारके लक्षण प्राप्त होते हैं । जीभ यन्त्रणा-पूर्ण, खाल उघड़ी और रक्त-स्रावी रहती है ; मुँहके सभी मांस-तन्तुओंमें जलन होती है ; जीभ लाल रहती है ; स्वाद बिगड़ा और धातुका स्वाद रहता है । दाँत रक्तसे ढँके रहते हैं । मसूढ़ोंमें रक्तके साथ ज्वर ; जीभपर छाले और समूचे मुँहकी खाल उघड़ी-सी मालूम होती है और कभी-कभी उनसे रक्त-स्राव होता है । मुँह सूखा रहता है और लार इकट्ठी होती है और कभी-कभी तो खून-मिली लार रहती है, जो नींदमें मुँहसे टपका करती है ।

रस-टक्समें कभी-कभी प्रचण्ड पिपासा रहती है ; पर कड़ी चीजें निगलनेमें तकलीफ होती है ; क्योंकि कण्ठमें सङ्कोचन रहता है। निगलनेमें कष्ट ; कण्ठका प्रदाह ; कण्ठकी दर्द-भरी सूजनके साथ कण्ठका भीतरी और बाहरी कौषिक-झिल्ली-प्रदाह। गर्दनकी विवृद्धि ; गर्दनकी गांठोंका फूलना। गर्दन अकड़ी रहती है ; कभी-कभी कर्णमूलका विसर्पके आकारका प्रदाह ; गर्दन बहुत फूली रहती है ; इन लक्षणोंवाला डिफ्थीरिया रस-टक्सने आरोग्य कर दिया है। कण्ठनलीके प्रदाहमें रस-टक्स खासकर उपयोगी होता है। यह क्षार-पदार्थ निगलनेके कारण जब तीव्र रहता है ; क्योंकि बहुत ज्यादा कौषिक-झिल्ली प्रदाहके कारण जो ऐसे पदार्थ उत्पन्न कर देते, तो यह रोगी रस-टक्सका हो जाता है।

यह दवा बहुत चल-विचल लक्षणोंवाली है। उदाहरणार्थ;—बिना भूखके ही भूख ; बिना भोजनकी इच्छाके ही भूखका भाव या पाकाशयमें खालीपनका भाव ; बहुत प्यासके साथ मुँह और कण्ठका सूखापन ; ठण्डे पेयोंकी अदम्य पिपासा, खासकर मुँहके सूखापनके साथ रातके समय। इतनेपर भी ठण्डे पेयोंसे शीतावस्था आ जाती है ; खाँसी पैदा हो जाती है।

पाकाशयमें दर्द और मिचली। उसकी इच्छाएँ भी कुछ विचित्र रहती हैं ; सीपी, ठण्डा दूध और मिठाइयाँ खाना चाहता है। गोश्त खानेकी इच्छा नहीं होती। रस-टक्समें मिचली और वमन है, ठण्डा पानी पीनेके कारण पित्तज वमन और मिचली ; भोजनके बाद मिचली, साथ ही एकाएक वमन ; वमनकी इच्छाके साथ असमान भूख ; रातमें और भोजनके बाद बदतर।

पाकाशय-गह्वरमें स्पन्दन ; पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द ; पाकाशयमें पूर्णता और इस तरहका भार, मानो एक बोझ लदा है ; पाकाशय-गह्वरमें इस तरहका दबाव, मानो एक भारी बोझ लदा है ; पाकाशयमें दर्द और मिचली, खासकर ठण्डे चीजोंके बाद ; मलाई बरफ खानेके बाद पाकाशयमें दर्द ; मलाईका बरफ खानेके बाद मिचली।

यकृतमें सूजन रहती और दबानेपर यन्त्रणा होती है, जिससे यकृतके दाहिने तरफ करके सो नहीं सकता। चलने-फिरनेपर यन्त्रणा बढ़ने लगती है, यकृत-प्रदेशमें धक्का देनेकी तरह दर्द।

उदरमें रस-टक्सकी बहुत ही शिकायतें रहती हैं। सान्निपातिक ज्वरमें तना हुआ तलपेट ; तलपेटके मांस-तन्तुओंमें छूनेपर असीम यन्त्रणा ; कोई भी दबाव सहन नहीं कर सकता ; वस्त्र सहन नहीं होते। शूलका दर्द ; दर्द और प्रचण्ड शूलके कारण उसे पीठके बल और प्रत्यङ्गोंको खींचे लेट जाना पड़ता है। उदरके मांस-तन्तुओंका प्रदाह ; अन्त्रावरक-झिल्लीका प्रदाह ; अन्त्र-प्रदाह ; अन्धान्त्र-प्रदाह (Typhlitis)।

आँतोंकी इन प्रचण्ड प्रादाहिक अवस्थाओंमें अनैच्छिक रूपसे पाखाना होनेके साथ टाइफायडके लक्षण मौजूद रह सकते हैं। तलपेट और वंक्षणकी ग्रन्थियोंका प्रदाह और सूजन ; सान्निपातकी दशाके साथ अतिसार रहता है, बहुत ज्यादा पानीकी तरह, खूनके दस्त या पीसे हुए भुट्टेकी तरह दस्त ; आप-से-आप अनजानमें पाखाना होते जाना ; फेनकी तरह

दस्त। टाइफायड ज्वरमें पतले दस्त ; रातमें ज्यादा दस्त आते हैं और दिनके समय अच्छे रहते हैं ; बहुत क्लान्तिके साथ अनजानमें दस्त होते जाना। इसने निम्न श्रेणीका शिशु-हैजा आरोग्य किया है और अकसर रक्तामाशय तथा आम-मिले दस्तोंमें भी उपयोगी होता है। प्रचण्ड कूथन, तलपेटमें फाड़ने और चिकोटी काटनेकी तरह तेज दर्द ; आप-ही-आप पाखाना होते जाना ; रक्तामाशयके दस्त ; रक्तामाशयके दस्त, जिससे रोगीको ४ बजे सवेरे ही विछावन छोड़कर भागना पड़ता है। आँतोंसे काले रक्तका स्राव, सरलान्त्रमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द। इसने ववासीरका मसा आरोग्य किया है, जब उसमें बहुत यन्त्रणा थी और जब मसा भीतरी था या वाहर निकल आनेवाला था। सरलान्त्रमें दवावके साथ पाखानेके समय मसा बाहर निकल पड़ता था।

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदेशमें दर्द और कूथनके साथ पेशाब लगना, जिससे पाखाना भी लग आता है ; इधर-उधर चलते रहनेपर घटना। मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें भी कुछ-न-कुछ फाड़नेकी तरह दर्द रहता है। अण्डलाल-मिला पेशाव ; खून-मिला पेशाव ; पेशाव गर्म ; कीचकी तरह ; सफेद तलछट, जो रखा रहनेपर गदला हो जाता है, पेशावकी खून मिली वूंदें चू पड़ती हैं। रक्त टपकनेके साथ मूत्राशयमें प्रचण्ड कूथनका भाव ; मूत्र-रोध ; मूत्राशयकी पाक्षाघातिक दुर्वलताके कारण पेशाव धीरे-धीरे निकलता है। कभी-कभी तो रातमें विछावनपर अनजानमें पेशाव होनेके साथ मूत्राशयका सम्पूर्ण पक्षाघात रहता है। दिन रात वारम्बार पेशाव लगना ; लड़कियोंको और स्त्रियोंको वारम्बार पेशाव लगनेके साथ मूत्राशयकी दुर्वलता, खासकर स्त्रियोंको ठण्डी हवामें और बहुत ठण्डे होनेपर पेशाव टपका करता है।

पुं-लिङ्गेन्द्रियमें विसर्पकी प्रकृतिका प्रदाह रहता है। लिङ्गेन्द्रियपर अकौता। मुष्क मोटा पड़ जाता है और कड़ा, साथ ही असह्य खुजली होती है ; लिङ्गेन्द्रियकी शोथके आकारकी सूजन ; लिङ्गेन्द्रियका विसर्प ; लिङ्गेन्द्रियपर रस बहनेवाले उद्भेद। स्त्रियोंमें भी यही लक्षण प्राप्त होते हैं ; खासकर जननेन्द्रियपर विसर्पके आकारकी सूजन और कुछ उद्भेद भी रहते हैं। जोर देने या कुछ उठानेके कारण स्त्रियोंको जरायुकी स्थान-च्युतिकी बीमारी रहती है, वस्ति-गह्वरकी पेशियोंकी दुर्वलता ; काँखनेके कारण तलपेटमें प्रसवकी तरह दर्द। बहुत ज्यादा मासिक रजः-स्राव ; प्रसवकी तरह दर्दके साथ थक्का-थक्का रक्त। बहुत जल्दी-जल्दी रजः-स्राव-काल आ जाता है ; मात्रामें बहुत ज्यादा होता है और बहुत समयतक जारी रहता है। स्राव कटु होता है, जिससे उस स्थानकी खाल उधड़ जाती है, जरा भी ज्यादा परिश्रम करनेपर अतिरजः (Menorrhagia) आरम्भ हो जाता है। मासिक-स्रावमें झिल्लियोंके तन्तु निकलते हैं ; भींगनेके कारण, पैर भींगे रहनेके कारण या शीत लग जानेके कारण रजोरोध। ज्यादा जोर लगानेपर ऐसी ही तकलीफें गर्भावस्थामें भी उत्पन्न हो जाती हैं और गर्भ-स्राव-प्रवणता हो जाती है। प्रसवके वादका दर्द बहुत ही कष्टदायक होता है। जैसा कि सूतिकास्तम्भ रोगमें होता है, वैसा ही कौषिक-झिल्लीका प्रदाह। सन्निपातके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और स्तन-ग्रन्थिमें प्रदाह हो जाता है। दूध होना वन्द हो जाता है।

स्वर-यन्त्रमें भी बहुत-सी सर्दियाँ घर बना लेती हैं, जिससे स्वर-भङ्ग, खाल उधड़ना और सूखापन पैदा हो जाता है। वक्षमें यन्त्रणा, जोरसे बोलने और स्वरसे ज्यादा काम लेनेके कारण स्वर-यन्त्रकी मांस-पेशियोंका क्लान्त हो जाना। गाना आरम्भ करनेके समय स्वर-भंग जो कुछ थोड़ा-सा गानेपर या थोड़ी-सी बातें करनेपर चला जाता है, स्वर-यन्त्रमें जलन और खाल उधड़नेका भाव। रस टक्स इन्फ्लुएञ्जाके बहुतसे रोगियोंके लिये उपयोगी होता है, जो कि नाकमें आरम्भ होता है और स्वर-यन्त्रमें चला जाता है और जिनके साथ स्वर-भङ्ग और रस-टक्सके लक्षण रहते हैं। श्वास जल्दी-जल्दी चलता है; वक्षमें दबाव रहता है; बहुत ही कष्टप्रद और कड़ा श्वास, खासकर फेफड़ेका प्रदाह (न्युमोनिया), वायुनली-भुज-प्रदाह (ब्राङ्काइटिस) तथा उस सर्दीमें जो वक्षमें बैठ जाती है। रस-टक्सके रोगीको परिश्रम करनेपर श्वास-भङ्ग हो जाता है। रस-टक्सकी खाँसी बहुत कष्टदायक होती है; तंग करनेवाली खाँसी, किसी भी तरहका खाँसीका दौरा होता है, कष्टदायक सूखी, तंग करनेवाली खाँसी, शीतावस्थाके समय और पहले। **सूखी तङ्ग करनेवाली खाँसी आनेके कारण वह जान जाता है, कि शीतावस्था आ रही है।** मुँहमें रक्तके स्वादके साथ खाँसी; सूखी, रूखी, हिला देनेवाली वातज खाँसी; वात-ज्वरके कारण खाँसी।

फेफड़ेका प्रदाह; सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ फुसफुसावरक-झिल्लीका प्रदाह, बहुत ज्वर, जो सान्निपातिक दशाकी ओर बढ़ता है और हड्डियोंमें लगातार दर्द रहता है, बेचैनी, हिलने-डोलनेपर सार्वाङ्गिक रोग ह्रास होता है; तेज बोखार, तेज प्यास, बहुत सुस्ती; सान्निपातिक उपसर्ग। न्युमोनिया निम्न-प्रकारका होता है; ऐसा न्युमोनिया जो टाइफायड को प्रकट करता है, रस-टक्समें फेफड़ोंसे तथा वायु-पथोंकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे खूनका बलगम निकलता है; अत्यधिक परिश्रम करनेके कारण वक्षसे रक्त-स्राव; वायु-यन्त्र फूँकनेके कारण रक्त स्राव; प्रचण्ड मानसिक उत्तेजनाके कारण वक्षसे रक्त स्राव।

हृत्पिण्ड कमजोर रहता है। कलेजा धड़कनेके साथ कम्पन; चुपचाप बैठनेपर प्रचण्ड रूपसे कलेजा धड़कना; इतनी जोरका स्पन्दन कि शरीरको हिला देता है। सवेरे सोकर उठनेपर घबड़ाहट-मिला हृत्स्पन्दन; व्यायाम करनेपर कलेजा धड़कना, ऐसा मालूम होता है, कि परिश्रमने हृत्पिण्डकी पेशियोंपर दबाव डाल दिया है। तेज व्यायामके कारण हृत्पिण्डकी विवृद्धि; खिलाड़ियों तथा दौड़ मारनेवालोंकी हृद्-वृद्धि। चपक जानेकी तरह दर्दके साथ यांत्रिक रोग; **हृद्-रोगके साथ बायें बाहुकी अवशता और खञ्जता।**

पीठमें भी अकड़न और खञ्जता रहती है। यह पहली बार हिलना-डोलना आरम्भ करते ही स्पष्ट मालूम होती है; पर चलने-फिरनेपर चली जाती है। कड़ापनके साथ कंधोंमें दर्द; खाना निगलनेपर दोनों कन्धोंके बीचमें दर्द; वातज लक्षण; स्कन्धास्थियोंके बीचमें दर्द-भरा तनाव। बैठनेके समय पीठके निचले भागमें दर्द होता है; बैठे हुए स्थानसे उठनेपर पीठमें यन्त्रणा-पूर्ण कड़ापन, पीठमें ऐसा दर्द, मानो कुचल गया है; समूची पीठमें यन्त्रणा और खञ्जता। व्यायाम करने या किसी कड़ी चीजपर लेट जानेपर पीठका दर्द घट जाता है।

पीठमें प्रचण्ड दर्द होता है, खासकर कमरवाली जगहपर, मानो पीठ टूट गयी है। भींग जानेपर, भारी चीज उठानेपर, सर्दी लग जानेपर या पसीना दब जानेपर जो कटि-वात हो जाता है, उसकी यह उपयोगी दवा है। हिलने डोलने और चलने-फिरनेपर रोगीका रोग घट जाता है; हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर बदतर हो जाता है। निम्न-प्रत्यंगोंकी या शरीरके किसी एक अंशकी पाक्षाघातिक दुर्बलताके साथ इस दवामें बहुत-से मेरुदण्डके लक्षण हैं। त्रिकास्थि-प्रदेशमें अकड़न और खञ्जता, विश्राम या व्यायाम करनेपर बढ़ जाता है। अब यह कहा जा सकता है, जो सार्वाङ्गिक रूपसे लक्षण बताये गये हैं, वे ही प्रत्यंगोंमें भी प्राप्त होते हैं। उनमें सुई गड़ने, दबानेकी तरह दर्द, सब तरहकी वातज खञ्जता रहती है और ये दर्द हिलने-डोलनेपर घटते हैं और चुपचाप शांत पड़े रहनेपर बढ़ते हैं; ये ठण्डी हवासे उत्पन्न होते हैं या पसीना रुक जानेके कारण और ज्यों ज्यों ये दर्द बढ़ते जाते हैं, वे निम्न-प्रत्यंगोंमें फाड़ने और खींचनेके दर्दकी तरह होते हैं। पाक्षाघातिक वेदना, सुन्न कर देनेवाला दर्द और ये सभी हिलने-डोलनेपर घटते हैं, समस्त प्रत्यंगोंमें सुन्नपन; हृद्-रोगके कारण बाहुओंमें सुन्नपन और यन्त्रणा; सन्धियोंमें अवशता; सन्धियोंमें झटका लगने और फाड़नेकी तरह दर्द। बाहुओंका पक्षाघात; प्रत्यंगोंमें बहुत सूजनके साथ विसर्प; हाथ और बाहुओंका फूलना। किसी चीजको पकड़नेके साथ हाथों और अङ्गुलियोंमें एक तरहका स्फुरण और कुछ चुभनेकी तरह मालूम होता है; अङ्गुलियोंकी नोक और अङ्गुलियोंमें कुछ रेंगनेकी तरह सुरसुरी और अवशता मालूम होती हैं; अङ्गुलियोंकी सूजन, हाथों और अंगुलियोंपर उद्भेद निकलते हैं। निम्न-प्रत्यंगोंमें, इसी तरहका दर्द और ऐसा ही स्वरूप प्राप्त होता है। कुल्हेके बल लेटनेपर कूल्होंमें दर्द; निम्न-प्रत्यंगोंमें खींचन, फाड़नेकी तरह दर्द; निम्न अंगोंमें गृध्रसी वात, जिसमें फाड़ने और खींचनेकी तरह दर्द होता है; यह विश्राम-कालमें बदतर हो जाता है तथा हिलते-डोलते रहनेपर घट जाता है। सर्द हो जानेपर, ठण्डी सीड़वाली ऋतुमें, हवा लग जानेपर और पसीना रुक जानेपर बढ़ जाता है। मोच खानेपर, जैसा कि घुट्टियोंमें तथा किसी भी सन्धिमें हो जाता है, जब प्राथमिक लक्षणोंको तथा बहुत ही कष्टदायक लक्षणोंको **आर्निका** हटा देता है, तो रस-टक्स कण्डराओं और मांस-पैशिक तन्तुओंकी उन दुर्बलताओंको दूर कर देता है, जो अकसर मोच खा जानेके बाद आती है। मोच खा जानेके बादवाली दुर्बलताकी यह एक बँधी दवा है। दर्द, निम्न-प्रत्यंगोंकी ओर लकीरकी तरह दौड़ता है, रातमें निम्न-प्रत्यंगोंमें बेचैनी; परन्तु हिलने-डोलनेपर घटना; बराबर अंगोंको हिलाते रहना पड़ता है; निम्न-प्रत्यंगोंका पक्षाघात। निम्न शाखा अंगोंमें बहुत क्लान्ति और भार; सीढ़ी चढ़नेपर निम्न-प्रत्यंगोंमें कमजोरी मालूम होना; निम्न-प्रत्यंगोंकी सन्धियोंका फूलना; घुटने और पैरोंका अकड़ जाना। भींग जानेके कारण पैरोंमें आवेशिक दर्द, खासकर पसीना होते समय भींगनेपर; सीड़-भरे मकानोंमें रहनेके कारण उपसर्ग; सीड़-भरे मकानोंमें रहनेके कारण निम्न-प्रत्यंगोंका वात, पैरोंपर जखम। रातमें बिछावनपर असह्य खुजली; पैर तथा पंजोंपर उद्भेद; वात-प्रकृतिवालोंके पैरोंमें बदबूदार पसीना। निम्न-प्रत्यंगोंका अकौता। ज्वरोंकी भी रस-टक्स एक बहुत लाभदायक दवा है। टाइफायडके सम्बन्धमें काफी बताया जा चुका है। रूखे दानोंवाले आरक्त ज्वर

(Scarlet fever) की यह एक बहुत उपयोगी औषध है। जब दाने दब जाते हैं, ग्रन्थियोंमें प्रदाह और बहुत गल-क्षत रहता है। ज्वर भोग-कालमें अकसर बहुत जोरोंकी जुलपित्ती निकलती है, जो पसीना होनेके समय गायब हो जाती है; बहुत खुजलानेवाले उद्भेदोंके साथ रात्रिकालीन पसीना; पैरोंका पसीना रुक जानेके कारण ज्वर; वात-ज्वर; रातमें ज्वर बदतर हो जाता है; ओंठोंपर ठण्डे जखम निकलनेके साथ ज्वर, स्वल्प-विराम और सविराम ज्वर, मियादी बोखारका ढङ्ग पकड़ लेते हैं और उसी तरह अपनी मियाद पूरी करते हैं, जिस तरह लाक्षणिक सान्निपातिक ज्वर (Typhoid fever)। चर्ममें असह्य खुजलाहट, चर्मके भीतर सनसनाना; उद्भेदोंमें प्रचण्ड जलन और खुजली होती है; चर्मके उद्भेदोंसे बहुत रस बहता है। विसर्प रोगके साथ या बिना विसर्पके ही चर्मपर बड़े-बड़े छाले निकलते हैं। यह अदम्य खुजली, कभी-कभी उस अंशको "झुलसानेसे" आराम मिलता है, जैसा कि कुछ रस-टक्सके रोगी कहा करते हैं, कि उस अंशको जहाँतक सम्भव हो, गर्म पानीसे नहलानेपर आराम पहुँचता है। भैंसिया दादकी तरह उद्भेद तथा वर्त्तुलाकार विसर्पिका (Shingles) को इसने आरोग्य किया है। तर अकौता, जिसकी खाल उधड़ी रहती है, उसको आरोग्य करनेके लिये यह विख्यात है, खाल उधड़ी और बहुत ज्यादा रस बहता है। भींगनेके कारण या रातके समय या शीतावस्था और जो ज्वरके समय जो एक तरहकी पनसाहाकी तरह छत्ते-के-छत्ते फुन्सियाँ निकलती हैं और जो ठण्डी हवामें बढ़ जाती हैं, उनके लिये यह बहुत लाभदायक है।

रियुमेक्स क्रिस्पस
(Rumex Crispus)

रियुमेक्स एक किस्मकी पीली झाड़ी, एक भूली हुई दवा है और इसकी आंशिक रूपसे परीक्षा हुई है। इसके मानसिक लक्षण प्रकट नहीं किये गये हैं; परन्तु परीक्षकोंने इसके श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके लक्षण खूब प्रकट किये हैं।

एक तरहकी उदासीकी दशा रहती है; हताश, काम करनेकी इच्छाका न होना; चिड़चिड़ा; मानसिक उत्तेजनाशील। इस दवाकी मानसिक दशाके सम्बन्धमें जो कुछ हमलोग जानते हैं, वह इतना ही है, क्योंकि इसकी परीक्षा निम्न-क्रम और मूल अर्कोंसे हुई थी। यह पीला फूल घरेलू दवाओंके रूपमें व्यवहृत होता था, एक रक्त-शोधक औषधिके रूपमें उद्भेदों और फोड़ोंको आरोग्य करनेके लिये। जब इस तरह इसका व्यवहार होता है, तो यह एक कोमल पदार्थ रहता है और इसीलिये इसकी परीक्षा भी बहुत कुछ इसी रूपमें हुई है।

सर्दीके उपसर्ग बहुत ही आश्चर्यजनक हैं। नाक, आँख, वक्ष और टेंटुआ तथा समस्त श्वास पथोंसे एक तरहका बहुत ज्यादा स्राव होता है। बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव। मैंने

नाकसे यह स्राव इतना ज्यादा होते देखा है, कि लगातार एक धारा बहती मालूम होती थी ; टेंटुआसे और वायु-उपनलियोंसे इतना ज्यादा श्लेष्मा निकलता था, कि रोगी बराबर खखारा करता था ; मुँहभर पतला फेन, सफेद बलगम भर आता था, इतना कि थोड़ी देरमें आधी बोतल पतला श्लेष्मा आ जाता था ; पानीकी तरह पतला, उगलदान भर जाता था। इसमें स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें कड़ी, सूखी, आक्षेपिक खाँसीके साथ खासा सूखापन रहता है।

समय-समयपर तो यह इन्फ्लुएञ्जाका रूप धारण कर लेता है, जिसके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव होता है, श्लेष्मा पतला, पानीकी तरह, फेनकी तरह, मुँहभर निकलता है, यह तो केवल पहली दशा है। इसके बाद बलगम गाढ़ा हो जाता है, पीला, कड़ा या गाढ़ा अथवा सफेद या लसदार ; यह इतना डोरीकी तरह और ऐसा लम्बे सूतकी तरह या कड़ा रहता है, कि नाक छिड़कते रहने और खाँसनेपर भी वह उसे नहीं निकाल सकता। कड़े डोरीकी तरह, लसदार, यहाँतक कि गोंदकी तरह बलगम निकालनेकी अपनी चेष्टामें वह एकदम क्लान्त हो पड़ता है। इस सर्दीकी दशाके साथ अकसर सबेरेके वक्त पतले दस्त आते हैं और यही इसका परिचालक लक्षण है।

"स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें अत्यन्त उपदाहके साथ सर्दीका सर-दर्द। हँसुलियोंमें दर्द और वक्षोस्थिके पीछेकी ओर दर्द।" सर्दीका सर-दर्द वह चीज है, जो सूखेपनसे दौरेके साथ आता है, इसके साथ ही पर्यायक्रमसे बहुत ज्यादा पतला स्राव होनेका लक्षण भी रहता है। स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें बहुत ज्यादा खाल उधड़नेका भाव ; जलन और तकलीफ ; कण्ठ-गह्वरके पास दबाव सहन नहीं कर सकता। **कण्ठ-गह्वरमें सुरसुरी, जिससे खाँसी आने लगती है।** चुपचाप बिना हिले-डोले बैठ जाना पड़ता है ; गहरी साँस नहीं ले सकता, अनियमित और जल्दी-जल्दी साँस लेता है क्योंकि श्वासमें किसी तरहका भी परिवर्त्तन होनेपर जलन बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। यदि वह खुली हवामें चला जाता है, त. आवेशिक खाँसी आकर उसकी साँस रोकने लगती है या यदि वह खुली हवासे गर्म कमरेमें चला जाता है, तो वही आवेशिक खाँसी आने लगती है। आवेश इतना ज्यादा होता है, कि सवेरे, जब उसे ढीला पाखाना होता है, तो खाँसीके साथ अनैच्छिक रूपसे ही निकल जाता है। खाँसीके साथ-साथ पेशाब भी निकल जाता है। जब नाकका स्राव सूखता है, तो सर-दर्द हो जाता है।

हँसुलियोंके नीचे दर्द होना भी इसका एक विचित्र स्वरूप है। हँसुलियोंके नीचे एक तरहका खाल उधड़ जानेका भाव, मानो भीतरी अंशोंको खाल उधड़ गयी है, मानो सीधे हँसुलियोंके नीचे हवा पहुँच गयी, जिससे खाल उधड़ गयी और जलन पैदा हो गयी। श्वासके साथ हवा खींचनेपर खाल उधड़नेका भाव और जलन।

"नाक रुकी हुई, सूखापन अनुभव होना, यहाँतक कि पश्चात् नासामें भी।" कभी-कभी तो पश्चात् नासामें परपूर सूखापन होकर नाककी सर्दी आरम्भ होती है, जिससे कि वह हमेशा खखारा करता है ; उपदाह इतना ज्यादा होता है, कि वह उसे अकेला नहीं छोड़ सकता। नासा-गलकोष स्थल मोटा पड़ जानेकी एक अनुभूति होती है और इससे छुटकारा

पानेके लिये रोगी एक विचित्र प्रकारकी आवाज निकालता है। "नाककी स्पिडेरियन झिल्ली (शैष्माणत्वक) में एकाएक तेज चुनचुनी मालूम होने लगती है।" यह बहुत तेज होती है; चुनचुनी, इसे ही कभी-कभी नाकके अन्तिम भागसे गलकोषतक फैल जानेवाली खुजलाहट कहा जाता है। कभी-कभी तो इससे छींकें आने लगती हैं, नाक छिड़कना पड़ता है और विचित्र आवाज निकलती है और कभी-कभी इस श्लेष्माको निकलनेके लिये खखारना पड़ता है, जब यह स्वर-यन्त्रमें कुछ नीचेकी तरफ रहता है; जब यह स्वर यन्त्रमें रहता है, तब उसे निकालनेके लिये खखारता है। छोटी से-छोटी श्वासोपनलियोंमें प्रदाह चला जाता है, जिससे कैशिक-वायुनलीभुज-प्रदाह (Capillary bronchitis) हो जाता है और अन्तमें फुसफुस-प्रदाह हो जाता है।

यह नयी और पुरानी दोनों ही सर्दियोंमें लाभदायक होता है। पुराने यक्ष्माके रोगी, हर बार उसे सर्दी लग जाती है, उसे सर्द हवा तथा वायुका परिवर्त्तन बिलकुल सहन नहीं होती, जिससे कि वह चादरसे मुँह ढँककर सोता है। वायुका प्रत्येक श्वास आक्षेपिक खाँसी उत्पन्न कर देता है। सवेरे तो पतला बलगम निकलता है, इसके बाद यह गाढ़ा और लसदार होता जाता है और वह उसे निकाल नहीं सकता; वह घरघराहट सुनता है। क्लान्त कर देनेवाली बहुत-सी चेष्टाओंके बाद, उसे थोड़ा सा बलगम निकलता है, जिससे उसे कठिनतासे कुछ आराम मिलता है। यक्ष्माको सम्हाले रखनेकी यह बहुत बड़ी दवा है। यन्त्रणा, खाल उधड़ जानेका भाव और जलन, खासकर टेंटुआके नीचे और वक्षोस्थिके नीचे।

"बहुत ज्यादा सर्दीका स्राव होनेके साथ बहुत छींकें, रातमें और शामको ज्यादा छींकें आती हैं।" बहुत-से लक्षण शामके वक्त बदतर हो जाते हैं। "नाककी सर्दी, पतली, बहुत छींकें और सर-दर्द-सहित, शामको और रातमें बदतर हो जाते हैं।" कुछ लक्षण ११ बजे रातके समय बदतर होती हैं। एक खास ढङ्गकी खाँसी ११ बजे रातमें बदतर हो जाती है। इस खाँसीमें **लैकेसिस** और रियुमेक्स, चकरा देते हैं, अतएव हरेकको समझना चाहिये। **लैकेसिसमें** छोटे बच्चे आरम्भिक निद्राके समय खाँसते हैं; पर यदि उन्हें जागते रखा जाता है, तो वे नहीं खाँसते। इसीलिये **लैकेसिसमें** ११ बजे रातकी खाँसीमें निद्रासे एक रोग-वृद्धि है। रियुमेक्समें ११ बजे खाँसी आयेगी ही, बच्चा सोया रहे या जागता। "पश्चात् नासामें बलगम जमा होना, पश्चात् नासासे पीले, श्लेष्माका स्राव।" "नाकसे रक्त स्राव, प्रचण्ड छींकें तथा नासा-छिद्रोंका दर्द-भरा उपदाह।" "प्रचण्ड सर्दीके साथ इन्फ्लुएञ्जा, जिसके बाद ब्राङ्काइटिस हो जाती है।" कण्ठमें खुरच जानेका भाव; "जब कभी सर्दीकी यह दशा स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें चली जाती है, तो कण्ठमें लगातार खुरच जानेकी तरह भाव मालूम होता है। स्वर-भङ्ग; कड़े श्लेष्मासे स्वर-रज्जु आच्छादित रहनेके कारण रोगी बोल नहीं सकता। इससे पुराने-पुराने रोगी आरोग्य किये गये हैं; **फास्फोरसमें** भी यह स्वर-भङ्ग है; परन्तु स्वर-रज्जुसे खखार-खखारकर थोड़ा-सा श्लेष्मा निकाल देनेपर, खासकर यह स्वर-भङ्ग चला जाता है। **कास्टिकमका** स्वर-भङ्ग स्वर-रज्जुकी दुर्बलताके कारण उत्पन्न हो जाता है **फास्फोरसमें** प्रादाहिक दशा रहती है और लगातार श्लेष्मा एकत्र होते रहनेके कारण बोलनेमें बाधा देता है।

रियुमेक्समें कड़ा, लसदार, गोंदकी तरह बलगम इकट्ठा होता है और रोगी लगातार स्वर-यन्त्रको खुरच-खुरचकर बलगम निकाला करता है।

"कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह अनुभूति, यह खखारने या कुछ निगलनेपर नहीं घटता ; यह घूंट लेनेपर नीचे उतर तो जाता है ; परन्तु तुरन्त ऊपर चढ़ आता है ; यह **लैकेसिस**का भी एक जबर्दस्त लक्षण है। "स्वर-यन्त्रमें लगातार यन्त्रणा, इसके साथ ही गलकोषमें कड़ा श्लेष्मा इकट्ठा होता है।" "कण्ठ और गलकोषकी सर्दीकी बीमारियाँ।" इस दवामें तीव्र सर्दीकी कई अवस्थाएँ दिखाई देती हैं ; पर यह खासकर उस धातु-प्रकृतिवालोंके लिये उपयोगी होती है, जिन्हें बराबर सर्दी लगा करती है ; ऋतु-परिवर्त्तनसे बदतर ; आगके पास भी हमेशा सर्दी लगा करती है ; बहुत वस्त्रकी इच्छा करता है, यहाँतक कि सर भी ढके रहना चाहता है।

बहुत से उपसर्ग शामके वक्त तथा स्नानसे, सर्द हो जानेपर या ठण्डी हवा श्वासके साथ खींचनेपर बदतर हो जाते हैं। वातके उपसर्ग तो साधारण हैं तथा सर्दी लगनेपर बढ़ जाते हैं। हरेक सर्दी सन्धियोंको आक्रान्त करती है। यह **कैल्केरिया-फास**का एक प्रत्यक्ष स्वरूप है। सर्दीका हरएक परिवर्त्तन सन्धियोंमें अनुभव होता है ; इसके बाद स्नान और सर्द हो जानेपर सन्धियोंका आक्रान्त होना।

"पीठ होकर, उदरोर्द्ध-प्रदेशमें कसावट, श्वास-रोधक, भारी यन्त्रणा ; वस्त्र कसे अनुभव होते हैं ; उदरोर्द्धके स्थानपर कमजोरी मालूम होना ; ये सभी बातचीतसे बढ़ जाते हैं ; रह रहकर लम्बी साँस लेता है।" "पाकाशय-गह्वरसे लेकर वक्षतक खोंचा मारनेकी तरह दर्द ; बायें वक्षमें तेज दर्द ; हलकी मिचली ; ललाटमें धीमी-धीमी लगातार बनी रहनेवाली यन्त्रणा।" "पाकाशय-उदरोर्द्ध स्थानपर तथा उसके ऊपर वक्षोस्थिके हरेक तरफ धीमा-धीमा दर्द और खोंचा मारनेकी तरह दर्द।" पाकाशय खाद्य पाचन नहीं करता या केवल सरल खाद्य पाचन करता है। इस दवासे अन्य श्लैष्मिक झिल्लियोंकी तरह पाकाशयकी श्लैष्मिक-झिल्ली आक्रान्त होती है। पाकाशयमें तरह-तरहका दर्द ; धीमा दर्द, पाकाशय-गह्वर (उदरोर्द्ध) में खोंचा मारनेकी तरह दर्द। "पाकाशय-गह्वरमें लगातार बना रहनेवाला दर्द, जो धीरे-धीरे तेज होता जाता है ; पाकाशयमें तेज सुई गड़नेकी तरह दर्द, जो वक्षतक फैल जाता है और नीचेकी ओर इस तरहकी एक अनुभूति पाकाशय गह्वरमें होती है, कि एक ढेले जैसा दबाव पड़ रहा है, यह कभी-कभी वक्षोस्थितक उठ आता है ; यह हिलने-डोलने और कुछ-कुछ लम्बी साँस लेनेपर बढ़ जाता है ; साधारणतः भोजनके बाद बढ़ जाता है और एकदम चुपचाप पड़े रहनेपर घट जाता है।" यह अद्भुत बात है; कि बातचीतसे पाकाशयके लक्षणोंकी किस तरह वृद्धि हो जाती है। पाकाशय यन्त्रणा-पूर्ण मालूम होता है, बातचीत करने, चलने और ठण्डी हवा श्वासके साथ खींचनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है ; गर्म चीजें चाहता है। बहुत आध्मान, आध्मानका दर्द भरा रहता है ; डकार लेने और अधोवायु खुलनेपर दर्द घट जाता है (कार्बो-वेज)। पाकाशय और औदरिक वेदनाएँ बोलनेपर बढ़ जाती हैं, अनियमित श्वास, बाध्य होकर कुर्सीपर बैठ जाना और

नियमित रूपसे साँस लेना पड़ता है ; अनियमित श्वाससे खाँसी और श्वास-रोध उत्पन्न हो जाता है।

सवेरे **सलफर**की तरह दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है। "पाखाना दर्द-रहित, बदबूदार और बहुत ज्यादा होता है ; भूरा या काला, पतला या पानीकी तरह, इसके पहले तलपेटमें दर्द होता है ; पाखाना होनेके पहले एकाएक जोरसे लग आता है, जिससे सवेरे ही उसे दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है।" कण्ठ गह्वरमें चुनचुनी होनेके कारण खाँसी और प्रातःकालीन अतिसार।" यह यक्ष्मा-ग्रस्त रोगियोंके लिये एक साधारण बात है, कि सवेरे अतिसार हो और इनमें बहुत-से रोगी **सलफर**के रोगीकी तरह मालूम होते हैं। जब सवेरे बहुत झोंकसे दस्त आते हैं, तो रियुमेक्स उन्हें उपशम कर देता है ; यह फेफड़ोंकी असीम असहिष्णुताको घटा देगा ; यह सर्दी सहन न होनेकी प्रकृतिको दूर कर देगा और उसकी मरम्मत कर देगा। रियुमेक्स **सलफर**की तरह गहरी क्रिया करनेवाली दवा नहीं है ; पर यह सोरा-विष-नाशक है। यह केवल आरम्भिक अवस्थामें ही उपयोगी होती है ; यह बहुत दिनोंतक पुरानी बीमारीको चलायगा ; पर इसके बाद एक दूसरा सोरा-विष-नाशककी जरूरत पड़ती है ; इसके बाद **कैल्केरिया** अच्छा काम करती है।

रियुमेक्स **रसटक्स**की तरह ही सर्दी, स्नान और आस-पासकी सर्दीली चीजोंसे असहिष्णु है ; पर इसकी रोग-वृद्धि हिलने-डोलनेपर हो जाती है। इससे और **ब्रायोनिया**से गति और बातचीतसे रोग-वृद्धिमें भ्रम हो सकता है ; पर **ब्रायोनिया**का रोगी ठण्डी हवासे इतना असहिष्णु नहीं रहता ; बल्कि अकसर ठण्डी हवासे उसे आराम पहुँचता है तथा गर्म कमरेमें उसकी बीमारी बदतर हो जाती है और अगर कमरा ठण्डा हो जाता है, तो उसके उपसर्ग दब जाते हैं। रियुमेक्समें खुली हवा स्नायुओंको सहन नहीं होती, ठीक **नक्स-वोमिका**की तरह ही स्नायुओंकी असहनीयता।

"भूरे, पानीकी तरह पतले दस्त, खासकर सवेरे, ५ बजेसे ६ बजे सवेरेतक दस्त आते रहते हैं।" "सत्तर वर्षके वृद्धको **सलफर**से लाभ न होनेके बाद, तीव्र अतिसार।" खाँसीवाला **सलफर**का रोगी, खासकर यक्ष्मामें, साधारणतया ठण्डी हवाकी इच्छा करता है। ठण्डा करनेवाली चीजें ; यद्यपि पाकाशयके लक्षण कभी-कभी गर्म पेयोंसे घट जाते हैं, इतनेपर भी वह ठण्डी, ताजी हवाकी ही इच्छा करता है।

"ठण्डी हवा लगनेपर स्वर-भंग।" "स्वर-यन्त्र या कण्ठमें लसदार श्लेष्मा, लगातार खखारते रहनेकी इच्छा।" "कण्ठ-गह्वरमें चुनचुनी, जिससे खाँसी आती है।" जबतक सम्भव है, वह खाँसीको रोके रहता है ; क्योंकि जलन और खाल उघड़ जानेकी तरह मालूम होने लगता है। बहुत ही जोरोंकी नाककी सर्दीमें **ब्रायोनिया**, **रस-टक्स** और **एकोनाइट**के ज्वरके लक्षण नहीं रहते। इसमें प्रत्यंगोंमें लगातार यन्त्रणा, सार्वाङ्गिक यन्त्रणा, ऊँचा ज्वर या प्यास कोई भी प्रकृतिगत लक्षण नहीं हैं। उपसर्ग एक स्थानपर-स्थित रूपसे मालूम होते हैं।

रूखी, कुत्ता भूकनेकी तरह खाँसी, प्रत्येक आक्रमणमें, नित्य ११ बजे रातमें और २ तथा ५ बजे सवेरे आती है (बच्चोंको)।" "मध्य वक्षोस्थिके पीछे दर्दके साथ खाँसी।"

"लेटनेके बाद कुछ देरतक बहुत तेज खाँसी आती रहती है और रातके समय कुछ रोगियोंको एकदम स्वर-भङ्ग हो जाता है।"

"स्त्रियोंको प्रत्येक बार खाँसी आनेके साथ कई बूंद पेशाब निकल आता है।"

बढ़े हुए यक्ष्माके लिये रियुमेक्स एक बहुमूल्य उपशामक है; यह अकसर रोगीका दूसरा जाड़ा भी पार करा देता है। रियुमेक्स, **पल्सेटिला, सेनेगा, आर्सेनिक** और **नक्स-वोमिका**से आप यक्ष्मा रोगियोंके अन्तिम वर्ष किसी तरह कटवा दे सकते हैं। यक्ष्माके रोगियोंको जो पतले दस्त आते हैं, उनके विषयमें हम आपको सावधान कर देना चाहते हैं। आप देखेंगे, कि यक्ष्माके रोगियोंके पतले दस्तके लिये **पेसेटिक एसिड**की सिफारिश की गयी है। आपको इन उपसर्गोंको योंही अकेला छोड़ देना चाहिये, जबतक वे बहुत स्पष्ट न हो जायँ। यदि पतले दस्तोंसे बहुत क्लान्ति आती हो, तो इसकी तरह कुछ सरल औषधिका प्रयोग कीजिये, जिसमें वह रुक जाये; पर यक्ष्माका रोगी हलका अतिसार रहनेपर कुछ अच्छा रहता है, सवेरेका ढीला पाखाना। ऐसा ही रातको होनेवाले पसीनेके सम्बन्धमें भी है; यदि ऐसा उन्हें न होता, तो उन्हें कुछ और भी प्रचण्ड उपसर्ग होंगे। ऐलोपैथ चिकित्सक पतले दस्त और पसीना रोक देते हैं और इसके बाद उन्हें जो उपसर्ग पैदा होते हैं, उनके लिये उन्हें **मारफीन** भरना पड़ता है। इन बाहरी उपसर्गोंको रोकनेकी आप जितनी ही चेष्टा करेंगे, इन वृथा चीजोंको, उतना ही आप रोगीको नुक्सान पहुँचायेंगे और यदि आप यही क्रम जारी रखेंगे, तो आपको अपनी होमियोपैथी त्याग देनी होगी और **मारफीन** देना होगा, जो वास्तवमें एक अपराध है।

किसी यक्ष्मा-ग्रस्तके समूचे शरीरकी यंत्रणा, कुचल जानेकी तरह दर्द तथा धीमा-धीमा लगातार दर्द आप **आर्निका**से हटा दे सकते हैं और यह खाँसी, ओकाई, मुँहमें पानी भर आना आदिको दूर कर देगा तथा उसे सुला देगा। इसके बाद हड्डियोंमें लगातार बनी रहनेवाली यन्त्रणा और तकलीफ देनेवाली खाँसीके लिये **पाइरोजेन**की जरूरत पड़ सकती है। आप वर्ष-प्रति-वर्ष रोगीकी मरम्मत करते जाइये; कभी-कभी तो **आर्सेनिक** ही दवा होती है और बारम्बार इसका प्रयोग करना पड़ता है; कभी **लाइकोपोडियम, पल्सेटिला, पाइरोजेन** या **आर्निका**की जरूरत पड़ती है। ये दवाएँ उसे मदद पहुँचाती हैं और उन्हें अकसर बदलते रहना पड़ता है; पर अन्तमें स्वास्थ्य-भंग हो ही जाता है और फिर ये दवाएँ काम नहीं करतीं। इसके बाद धीरे-धीरे रोगीको भयानक श्वास-कष्ट होने लगता है, उसे हवाकी लालसा बढ़ जाती है; श्वासका स्थान घटने लगता है। हाथ-पैरोंमें सूजन आने लगती है। हृत्पिण्डकी क्रिया भी घट जाती है, शरीर क्षीण होने लगता है; मुर्देकी तरह चेहरा दिखाई देता है; ठण्डा पसीना, नीला चेहरा हो जाता है और रोगी धसने लगता है। इस समय भी हम **टैरेण्टुला क्यूबेन्सिस**से उपशम कर सकते हैं। कभी-कभी तो इसका बारम्बार प्रयोग करना पड़ता है। यह कई दिनोंतक आराम पहुँचाता रहेगा और एक शान्तिपूर्ण मृत्यु होगी, **मार्फिया**की तरह बेहोशी, उसकी इन्द्रियोंकी अवशता न होगी; पर वास्तविक शान्ति होगी।

रूटा ग्रैवियोलेन्स

(Ruta Graveolens)

रूटा एक ऐसी दवा है, जिसपर अकसर ध्यान नहीं दिया जाता। कभी-कभी तो यह भुला दी जाती है और इसके बदले, इससे सादृश्य रखनेवाले रोगियोंको भी **रस टक्स, आर्जेण्टम-नाइट्रिकम** दे दिया जाता है; क्योंकि **रूटा** अच्छी तरह विख्यात नहीं है। **रेपर्टरी**के सहारे इसके बहुत-से उपसर्गोंका श्रेणी विभाग करना मुश्किल हो जाता है। इसकी **प्रकृति**-ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इसमें उस श्रेणीके उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, जो **रस-टक्स**के सदृश हैं, उसमें यह ठण्डसे असहिष्णु रहता है, ठण्डसे और सीड़वाली ऋतुसे उसकी रोग वृद्धि होती है; ठण्डे हो जानेपर रोग बढ़ता है और उस अंशपर जोर पड़नेसे रोग-वृद्धि होती है। किसी अंशपर बहुत जोर पड़ जाना या किसी अंशका अत्यधिक परिश्रम; पर यह खासकर उस अंशमें होता है, जिसकी कण्डरवाली प्रकृति रहती है। कण्डरा-प्रसारण विषयक रेशेदार तन्तु; सफेद रेशेदार मांश-तन्तु, खासकर संक्रामक कण्डराएँ; संकोचक कण्डराएँ, जिनपर परिश्रम करनेसे बहुत जोर पड़ जाता है। **रस-टक्समें** इसी तरहकी कुछ बातें हैं; परन्तु रूटामें जो प्राप्त होता है, वैसा कुछ भी नहीं है। बहुत-से शस्त्र चिकित्सावाले उपसर्गोंमें भी रूटा उपयोगी होता है, अस्थि-आवरक-झिल्लीकी तकलीफमें, जो आघात या चोटके कारण हो जाती है। अस्थि-आवरक-झिल्लीकी तकलीफ जहाँकी हड्डीपरका मांस थोड़ा है, उस स्थानका; जंघास्थिके ऊपरका स्थान। कुचले हुये स्थानका दर्द धीरे-धीरे चला जाता है और एक कड़ी जगह छोड़ जाता है; अस्थि आवरकका कड़ापन; एक गांठ-गांठ जैसी दशा; इसमें यन्त्रणा होती रहती है, धीरे-धीरे सुधार होता है। अस्थि-आवरकमें एक लोंदा-सा जो महीनों या बरसों बना रहता है, असहिष्णु यन्त्रणा-पूर्ण और ग्रन्थिके आकारका; किसी छड़ी या हथौड़ीसे मारनेका परिणाम वा हनुकी हड्डीमें टक्कर लग जानेका दुष्परिण म। किसानों, काम काज करनेवाले बढ़ाहिलों, यन्त्रका काम करनेवाले शिल्पीको, जो हथौड़ी या लोहेका बना दूसरे औजार पकड़े रहते हैं, उनकी तलहत्थीमें कड़े-कड़े गट्टेसे लोहेके यन्त्रपर हाथ रखने और उनको आगे बढ़ानेकी चेष्टामें बन जाते हैं, जैसा कि भारी लोहेके डण्डेसे काम करनेसे होता है। कण्डराओंमें मांस-तन्तुओंकी कड़ी गाँठें, एक थैलेकी तरह। अस्थि-आवरकमें तलछट इकट्ठा होनेकी प्रवणता अथवा हड्डीमें, कण्डराओंमें अथवा सन्धियोंके पास। इसका स्थान खासकर कलाईकी हड्डी होती है; इस अंशमें ही थैले और गांठें बनती हैं। कण्डराओं तथा उन स्थानोंमें जहाँ गाँठें बँधनेकी सम्भावना रहती है, वहीं जोर पड़नेके कारण गांठें बन जाती हैं, ढेले, गुच्छे और कण्डराओंमें छोटे-छोटे अर्बुद। संकोचनी पेशीका धीरे-धीरे बढ़ता हुआ संकोचन, जिससे कि हाथ सदाके लिये सङ्कुचित हो जाते हैं; पैर भी सङ्कुचित हो जाते हैं और इसी वजहसे तलवा बहुत नतोदर हो जाता है और संकोचनी-पेशीपर जोर पड़नेके कारण नीचेकी ओर अङ्गुलियाँ खिंच जाती हैं।

आँखकी पेशीपर ज्यादा जोर पड़ जाना। ये पेशियाँ बहुत बड़ी कण्डरा-पूर्ण रहती हैं। इसका लगातार तबतक व्यवहार, जबतक अपव्यवहार नहीं हो जाता। आँखोंपर दबाव, जिसके बाद सर दर्द होता है तथा इसका प्रभाव चक्षु-गोलकपर भी पहुँचता है तथा आँखके आवरणपर, इसलिये आँखोंसे बहुत ज्यादा काम लेनेपर वे लाल हो जाती हैं। आँखमें दर्द, आँखके ऊपर तथा आँखके भीतर उस समय दर्द जब वह दृष्टिसे काम लेना चाहता है अर्थात् दृष्टि-शक्तिके श्रमके कारण उत्पन्न रोग-वृद्धि। महीन छपे अक्षर या महीन सिलाईकी तरफ देखनेके कारण। दृष्टि शक्तिका यह अत्यधिक श्रम आँखोंमें लाली, दर्द तथा एक ही बिन्दुपर दृष्टि जमाये रखनेकी ताकत हरण कर लेता है। इसके बाद सर-दर्द पैदा हो जाता है। यहाँ **आर्जेण्टम नाइट्रिकम** और रूटामें सादृश्य है। **आर्जेण्टम नाइट्रिकम** और **नेट्रम-म्यूर**—इन दोनों दवाओंका बहुत प्रयोग होता है; पर **ओनोस्मोडियम** आँखपर दबावके कारण पैदा हुए रस-दर्दकी बहु-निर्देशित औषधि है। इनका प्रभेद आसानीसे किया जा सकता है। रूटाकी रोग वृद्धि सर्दीसे होती है, रोगी सभी चीजें गर्म चाहता है। **आर्जेण्टम-नाइट्रिकम** की रोग वृद्धि तापसे होती है, ठण्डी जगहमें रहना चाहता है। रोगीपर अवश्य विचार करना चाहिये।

रूटामें एक सार्वाङ्गिक क्लान्ति रहती है। कुर्सीसे उठनेपर पैर ठिकाने नहीं जमते, रोगी डगमगाता है और अपनी जगहसे उठनेपर उसे कितनी ही बार सीधे रहनेकी चेष्टाएँ करनी पड़ती है। बँधी गतसे दवा करनेवाले इसके लिये **फास्फोरस** और **कोनायम**का प्रयोग करते हैं। रूटा और **फास्फोरस** इन दोनोंमें ही ठण्डे बरफ-मिले पानीकी अदम्य पिपासा रहती है। कूल्हे और जंघोंमें कमजोरी रहनेपर **फास्फोरस** और **कोनायम**से तुलना कीजिये।

इस दवाकी इतनी काफी परीक्षा नहीं हुई है, कि मानसिक लक्षण प्रकट हों। ये साधारण लक्षण हैं और बहुत-सी अन्य दवाओंमें भी है। "बात काटने और झगड़ा करनेकी इच्छा। "स्वतः अपनेसे तथा अन्य लोगोंसे असन्तुष्ट।" "चिन्तित और हतोत्साह, इसके साथ ही मानसिक निराशा।" ये केवल साधारण उपसर्ग हैं; ये एक-दो श्रेणी-समूहोंमें नहीं विभाजित किये जा सकते। रोगी चिड़चिड़ा रह सकता है और इसके विपरीत सम-प्रकृतिका भी। चिड़चिड़ोंकी श्रेणीमें यह दवा रखी जाती है। "निराश—अर्थात् खुशीके विपरीत—दो अन्य श्रेणियोंका।" "शामके समय उदासी छा जाना।" यहाँ केवल ध्यान देनेकी बात यह है, कि शामके वक्त रोग-वृद्धि होती है। जब चीजें इस तरह प्रकट कर ली जाती हैं, कि वे एक या दो श्रेणीकी हैं, तो वे थोड़ी महत्व-पूर्ण होती हैं।

बहुत-से उपसर्ग लेटनेपर बढ़ जाते हैं, खासकर तेज रहनेवाले दर्द, डङ्क मारने, फाड़नेकी तरह स्नायुओंमें दर्द। रूटा एक दर्द-भरी दवा है; पर इसके लक्षण धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं, इसीलिये इसके दर्द पुरानी प्रकृतिके होते हैं। पुराने स्नायु-शूलके रोगी; डङ्क मारने, फाड़ने और जलनकी तरह दर्द, खासकर निम्न-शाखा अङ्गोंमें और आँखोंके पास; चेहरेका दर्द। इसमें सभी तरहके दर्द हैं; दर्दके लिये जो कुछ भी विशेषण है, सभी लग

सकते हैं। परन्तु इसके दर्द सर्दी और ठण्डसे बदतर हो जाते हैं। छेदने, फाड़नेकी तरह गृध्रसी स्नायुओंमें दर्द। सबसे तीव्र आकारका गृध्रसी-वात, दर्द पीठसे आरम्भ होकर कूल्हें और जांघमें चला जाता है, फाड़नेकी तरह दर्द; दिनमें तो रोगी आरामसे रहता है; पर ज्योंही रातमें लेटता है, त्योंही उसके रोग बढ़ जाते हैं। **नैफेलियम** गृध्रसी वातकी एक बहुत बड़ी दवा है और इसमें भी लेटनेपर रोग वृद्धि होती है।

"आँखें आगके गोलेकी तरह गर्म मालूम होती हैं।" यदि केवल शुद्ध प्रदाहके लिये, जिसमें आँखें बहुत गर्म मालूम होती हों रूटाका प्रयोग किया जायगा, तो एकदम असफलता आ जायगी। **इयुफ्रेशिया, बेलेडोना** और **ऐकोनाइट**, सर्दीसे होनेवाले सामान्य उपदाहमें उपयोगी होते हैं और जब बीमारी पुरानी होती है, तो सोरा विष-नाशक (Antipsorics) दवाएँ उपयोगिनी होती हैं; पर यदि बहुत देरतक **सिलाईका महीन काम कर** कोई स्त्री अपनी आँखोंपर बेहद दबाव डाल लेती है तथा चक्षु-गोलक आगकी तरह गर्म मालूम होता है, तो उसे रूटाकी जरूरत रहती है और यदि ठण्डी हवा लगकर, आँसू बहनेके साथ आँखोंमें प्रदाह हो जाता है और आँखें कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती हैं, तो **ऐकोनाइट** लाभ करेगा।

"आँखोंमें जलन, लगातार यन्त्रणा होती है, दबाव पड़ गया-सा मालूम होता है; दृष्टि-विकृत; शामको उनसे काम लेनेपर रोग-वृद्धि," शामको आंशिक रूपसे सार्वाङ्गिक रोग-वृद्धि हो जाती है। जब नकल करनेके समय, हस्त लिपि एक स्थानपर तथा मूल ग्रन्थ दूसरे स्थानपर रहता है, तो दृष्टिके बराबर परिवर्त्तन करनेकी, इधर-से-उधर देखनेकी जरूरत पड़ती है और खासकर यदि धीमी रोशनीमें काम करना पड़ता है, तो सर-दर्द पैदा हो जायगा, उसे रूटा आरोग्य कर देगा। इस तरह काम करनेके बाद, यदि रोगी ठण्डी हवामें घुड़सवारी करता है, तो एक पाक्षाघातिक दुर्बलता आ जाती है और यह रूटाका एक दूसरा निदर्शन है। ठण्डमें घुड़सवारी करने या झोंकको हवा लग जानेके कारण अश्रु-स्राव। आँखकी किसी-किसी पेशीका पक्षाघात, यहाँतक कि वक्र-दृष्टि; आँखें जमनेकी क्रियामें सब तरहकी गड़बड़ी। "आँखकी भीतरी पेशियोंपरकी शक्तिका क्षय।" "क्षीण या वेदनादायक दृष्टि; अत्यधिक **महीन काम करने** या कामोंपर आँखोंका व्यवहार करनेके कारण प्रत्येक मांस-तन्तुका उपदाह, आँखोंके ऊपर और भीतर ताप तथा लगातार बनी रहनेवाली यन्त्रणा, रातमें आँखें आगके गोलेकी तरह दिखाई देती हैं; दृष्टिका धुँधलापन; अक्षर आपसमें सटे-से मालूम होते हैं; आँसुओंका स्राव प्रभृति।" दृष्टि-क्षेत्रकी गड़बड़ी, यह आँखोंसे अत्यधिक काम लेनेपर निर्भर करती है या आलोक-विभाजनमें गड़बड़ी; नकली रोशनीमें लिखनेके कारण, **खूब महीन सुईका काम** प्रभृति करनेके कारण; बीननेवाले मुश्किलसे एक धागेसे दूसरेका प्रभेद जान सकते हैं और पढ़ तो बिलकुल ही नहीं सकते; कुहरेसे ढँकी दृष्टि, जिससे दूरकी चीज बिलकुल दिखाई नहीं देती।

क़ब्ज इसका एक आश्चर्यजनक स्वरूप है, साथ ही पाखाना होनेके समय काँच निकल पड़ती है। "मलद्वारकी स्थान-च्युतिके साथ बार-बार वृथा ही मलका वेग," "प्रसवके

बाद सरलान्त्रका बाहर निकलना।" बैठे रहनेपर सरलान्त्रमें दर्द ; सरलान्त्रमें घाव हो जानेकी तरह बहुत ज्यादा यन्त्रणा। यह बवासीर और सरलान्त्रकी संकीर्णताकी लाभदायक दवा है।

पीठके लक्षण। यह वात-रोगकी एक निश्चित औषधि है। वे सभी दवाएँ, जिनमें रोगीको शीत सहन नहीं होता या सर्दीसे, तर, तुफानी मौसमसे रोग-वृद्धि हो जाती है ; ये वात-रोगकी दवाएँ कही जाती हैं। पीठके वातके उपसर्ग। "कटि-कसेरुकामें कुचल जानेकी तरह दर्द।" "पीठ या गुदास्थिमें इस तरहका दर्द, मानो कहींसे गिर पड़ा है या मार खायी है या कुचल गया है।" "जांघके सामनेवाली पेशियोंकी कण्डरायें छोटी और कमजोर हो गयी-सी मालूम होती हैं ; सीढ़ी चढ़ने-उतरनेमें घुटने काम नहीं करते।" "गुल्फोंमें मोच खा जाने या हड्डी खिसक जानेके कारण दर्द और खञ्जता।" "मोचा खा जानेके बाद, खासकर कलाई और गुल्फमें मोच आ जानेके बाद खञ्जता।" मोच आ जानेके बाद ही, प्रादाहित दशाके लिये आपको बहुतकर **आर्निका** देनेकी जरूरत पड़ेगी और उसके बाद शायद **रस-टक्स** काम करेगा ; परन्तु जब जोर पड़ जानेके कारण कण्डराओंमें गांठें पड़ जाता है, तब रूटाकी जरूरत पड़ती है। सिर्फ मोच आनेकी रूटा बहुत बढ़िया दवा है, इसमें कण्डराओंकी सब तरहकी कमजोरियाँ और यन्त्रणाएँ हैं। बँधे ढङ्गसे काम करनेके लिये **आर्निका, रस-टक्स** और **कैल्केरिया**की अकसर जरूरत पड़ा करती है, सिवा इसके कि केवल दवाव न पड़ गया हो।

पीठमें मोच आ जानेके बाद निम्न-शाखा-अङ्गोंमें पाक्षाघातिक दुर्वलता।

शामको रोग-वृद्धिमें विषन्न प्रकृति, आँखोंमें जलन, रोशनीके चारों तरफ हरा घेरा दिखाई देना ; धुँधली दृष्टि ; आँखोंमें लगातार दर्द और दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे दर्द पाया जाता है।

रस-टक्सकी तरह असीम छटपटी, इतना बेचैन कि शान्त नहीं रह सकता ; एक स्नायविक बेचैनी।

"गिर जाने या चोट खानेकी तरह सम्पूर्ण शरीरमें कुचल जानेकी तरह भाव ; यह प्रत्यङ्गोंमें और सन्धियोंमें बढ़ा रहा है।" अस्थि और अस्थि-आवरककी यान्त्रिक चोटें और कुचले भाव, मोच आ जाना ; अस्थि-आवरकका प्रदाह ; विसर्प रोग।"

रूटाका **मर्क्युरी**से सम्बन्ध है और इसका प्रतिविष भी है।

खुजलाहटके साथ चर्मपर उद्भेद, जो **मेजेरियम**की तरह खुजलानेपर जगह बदला करता है। निम्न-शाखा-अङ्गोंकी दुर्वलता और ठण्डे पानीकी प्यासके लिये **फास्फोरस**से तुलना कीजिये। वातमें **फाइटोलैका**से प्रभेद देखिये। **रस-टक्स, सीपिया, साइलिसिया** और **सल्फर**से तुलना कीजिये। रूटा सोरा-विष-नाशक है ; पर उतना गहरायीतक काम करनेवाला नहीं है, जितना कि **साइलिया** और **सल्फर** है।

सैबाडिला

(Sabadilla)

सैबाडिलाका रोगी एक सिहरावनवाला रोगी होता है, उसे ठण्डी हवा सहन नहीं होती, न ठण्डा कमरा और न ठण्डा खाद्य ही सहन होता है। वह खूब कपड़ा लपेटे रहना चाहता है और अपना पाकाशय गर्म रखनेके लिये गर्म पेयोंकी इच्छा करता है। उसे सर्दीके उपसर्ग होते हैं और इनमें वह गर्म हवा चाहता है। कण्ठके सर्दीके उपसर्गोंमें उसे गर्म पेय और गर्म खाद्यकी जरूरत पड़ती है। गर्म चीजें उसे बहुत सुखकर होती हैं। उसके लिये ठण्डी चीजें निगलना मुश्किल हो जाता है; उनसे दर्द बढ़ जाता है तथा निगलनेकी तकलीफ बढ़ जाती है।

हमलोग दवाओंका एक दूसरेसे प्रभेदकर अध्ययन करते हैं। यह दवा **बायेंसे दाहिनी** तरफ जाती है और बढ़िया नुस्खा लिखनेवाला तुरन्त इसका **लैकेसिससे** सम्बन्ध देख लेता है। यन्त्रणा, दर्द तथा कण्ठकी प्रादाहिक दशायें बायीं तरफसे शुरू होती हैं तथा सैबाडिला और **लैकेसिस** दोनोंमें ही दाहिनी ओर फैल जाती हैं; पर **लैकेसिसमें** गर्म चीजोंसे उपसर्ग बढ़ जाते हैं; उनसे अकड़नवाले उपसर्ग पैदा हो जाते हैं तथा दम घुटनेका एक भाव रहता है और इसीलिये वह ठण्डी चीजें चाहता है, जिससे उसे आराम पहुँचता है; इन्हें वह सहजमें ही निगल सकता है और इससे कण्ठका दर्द भी घट जाता है। इसके विपरीत सैबाडिला तापसे घट जाता है या तो बाहर या भीतर।

नाककी श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहवाली दशा, जिसमें बराबर छींकें आया करती हैं, नाकमें बहुत ज्यादा खाल उधड़ जानेका भाव; जलन; नाकका रुकना। पहले तो पतले श्लेष्माका स्राव होता है, फिर गाढ़ी श्लेष्माका। इसमें नाककी सर्दीकी समस्त दशाएँ हैं। गर्म हवा श्वासके साथ जानेसे नाककी सर्दी घटती है, खुले, चूल्हे या अंगीठीके पास बैठ जाता है, माथा उसके नजदीक रखता है और गर्म हवा श्वासके साथ खींचता है। खासकर उस अवस्थामें उपयोगी है, जब नाककी श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाहकी दशा ज्यादा दिनोंतक रहती है, बहुत दिनोंतक ठहरनेवाली नाककी सर्दी, जो साधारण दवाओंसे वशमें नहीं, आती, लँझड़ानेवाली नाककी सर्दी तथा फूल सूँघनेपर स्राव बढ़ जाता है, यहाँतक कि फूलकी गन्ध याद आ जानेसे भी उसे छींकें आने लगती हैं और नाकका बलगम बढ़ जाता है। इसी तरह बहुत-सी चीजोंके विषयमें सोचना उसकी रोग-वृद्धि कर देता है।

बहुत-से उद्भिज ज्वरके रोगियोंको फूलोंकी गन्ध सहन नहीं होती, उद्भिजवाले खेतोंकी गन्ध तथा सड़ती हुई साग-सब्जियोंकी गन्ध सहन नहीं होती; कितनों ही को फलोंकी गन्ध इतनी असह्य रहती है कि उनके घरसे सेव हटा देना पड़ता है। लेवेण्डर जैसी सुन्दर चीजोंकी गन्ध श्वासके साथ जाना भी कितने ही रोगियोंको बरदाश्त नहीं होती; ऐसी चीजें मौसम न रहनेपर भी उद्भिज ज्वर पैदा कर देती हैं। सैबाडिला भी इसी ढंगकी है। आस-पासकी चीजें तथा गन्ध सहन नहीं होती; ये कण्ठ और पश्चात् नासाका सर्दीके

उपसर्ग बढ़ा देती हैं। छींकें तथा नाकसे श्लेष्माका स्राव, यहाँतक कि जखम हो जाता है। समय बाँधकर होनेवाले आक्रमण; जूनके महीनेकी गुलाबी सर्दी; हेमन्तमें लगभग २० अगस्तके उद्भिज ज्वरके दौरे। लघु-क्रिय औषधियोंसे उद्भिज ज्वरको दवा देना एक आसान बात है; वे कई दिनोंमें ही आक्रमण काल काट डालेंगी; पर आरोग्य करनेके लिये कई वर्ष चाहिये और रोगीका इलाज इस बीचके समयमें और लक्षणोंके अनुसार अवश्य होना चाहिये। जब उद्भिज ज्वरके लक्षण मौजूद रहते हैं, तो उसे कोई दूसरा उपसर्ग नहीं रहता; एक लक्षण-समूह एक समय प्रकट होते हैं और दूसरे—दूसरे समय; पर रोगी बीमार रहता है और उसके सभी लक्षण एक साथ संग्रह कर लेने चाहिये और उनके अनुसार ही चिकित्सा होनी चाहिये।

इस व्यक्तिके बहुतसे मनःकष्ट खयाली मालूम होते हैं, उसका दिमाग अद्भुत बातोंसे भरा रहता है। स्वतः तथा अन्य व्यक्तियोंसे सम्बन्ध रखनेवाले विचार भी अद्भुत रहते हैं। सोचता है, उसके शरीरपर झुर्रियाँ पड़ रही है, प्रत्यङ्ग टेढ़े-मेढ़े हो गये हैं, ठुड्डी लम्बी बढ़ गयी है तथा एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वकी कुछ बड़ी है। रोगिनीको अनुभव होता है, कि वह ऐसी है और आँखसे देख लेनेपर भी वैसा ही विश्वास कर लेती है। यह एक अनुभूति है, जिसपर वह विश्वास करती है, एक भ्रम, एक उन्माद। "अपने शरीरकी दशाके विषयमें भ्रम धारणा।" अपनेको बीमार समझती है; खयाल करता है, कि शरीरका कोई अंश सिकुड़कर पीछे हट गया है; पेटमें वायु भरा रहनेपर सोचती है, कि गर्भ रह गया है; उसे कण्ठको कोई ऐसी बीमारी हो गयी है, जो प्राण ले लेगी।" ये सभी विचार भित्तिहीन रहते हैं; कुछ भी देखनेमें नहीं आता और कोई चीज दिखाई देनेपर जो तकलीफ होती, उससे कहीं ज्यादा तकलीफ होती है। ये रोगी अकसर कोई सहानुभूति नहीं प्राप्त करते, उन्हें वास्तवमें कोई दवा चाहिये। **थूजा**में शरीरकी दशाके सम्बन्धमें भ्रम पूर्ण विचार रहते हैं, सोचती है, कि वह शीशेकी बनी है, उसकी पारदर्शकतापर यह विचार नहीं रहता; बल्कि उसके भङ्गु-प्रवणतापर; डरती है, कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। ऐसी कुछ ही दवाएँ है, जिनमें बँधे विचार रहते हैं; ये विचार राजनीति, धर्म, वस्त्र या पारिवारिक और जीवन-सम्बन्धी हो सकते हैं। मेरे पास एक बार एक उन्मादकी रोगिनी थी, जो किसी भी किरायेकी गाड़ीसे उस समय उतर पड़ती थी, जब किसी विशेष रङ्गका वस्त्र पहना कोई व्यक्ति उसी गाड़ीमें घुसता था; क्योंकि उसका यह बँधा विचार था, कि वह रङ्ग उसपर विपत्ति ला देगा। **पल्सेटिला**के पुरुषकी मानसिक दशा ऐसी रहती है, कि स्त्री उसके आत्माको हानि पहुँचानेवाली होगी। यह एक धोखा-पूर्ण विचार है, एक निश्चित विचार। **आयोडिन** इन निश्चित विचारोंसे भरा है। **पेनाकोर्डियम**में एक बँधा खयाल है, कि उसके एक कन्धेपर भूत बैठा है और उसके कानमें कुछ कह रहा है और दूसरे कन्धेपर देवदूत है, जो दूसरे कानमें कुछ कह रहा है; वह दोनोंके बीचमें पड़ा रहता है और कुछ भी नहीं बोलता।

"विराम-कालमें प्रलाप" मानसिक परिश्रमसे सर-दर्द बढ़ जाता है और नींद आने लगती है।" "कुछ सोचने या ध्यान करनेसे या पढ़नेसे नींद आने लगती है।"

कुर्सीपर बैठे-बैठे कुछ ध्यान करनेपर, वह **नक्स-मस्केटा** और **फास्फोरिक एसिड**की तरह सो जाता है।

चकाचौंध सरमें चक्कर ; वह रातमें सरमें चक्कर आनेके कारण जाग जाता है। खुली हवामें सरमें चक्कर, सभी परिस्थितियोंमें सरमें चक्कर आना, सर-दर्दोंसे पूर्ण, एक तरफका सर-दर्द। वह चिन्तन, जिससे उसे नींद आने लगती है, सर-दर्द पैदा कर देता है। स्कूलकी लड़कियोंका सर-दर्द। कमजोर बच्चे, जिन्हें सर-दर्दके कारण स्कूलसे हटा देना पड़ता है, वे स्कूलके तथा अपने सम्बन्धमें विचित्र विचार लेकर घर लौटते हैं। सर-दर्द हतचेतन बना देनेवाला और नाककी सर्दीके साथ होता है ; सामनेवाले भागोंमें और आँखोंके ऊपर होता है। पूर्णता, फटनेकी तरह हतचेतनवाला दर्द यह झटका लगने, छींक आने या चलनेपर बढ़ जाता है। नाककी सर्दीके साथ अचेत कर देनेवाला दर्द, अकसर सर-दर्दके साथ ही सवेरे सोकर उठता है और दोपहर होनेके पहले बढ़ जाता है। सर ठण्डे पसीनेसे तर रहता है। इसके बहुत-से लक्षणोंका **वेरेट्रम**से निकटस्थ सम्बन्ध है, खासकर उपसर्गोंमें ललाटपर ठण्डे पसीनेके सम्बन्धमें।

उद्भिज ज्वर, जब आक्षेपिक रूपसे छींकें आती हैं ; नाक बहनेवाली सर्दी ; नासा-रन्ध्र रुकी ; नाकसे जोर लगाकर साँस लेना पड़ता है ; नाक बोलना, नाकमें खुजली, नाकसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव ; पश्चात् नासासे चमकीला लाल रक्त आता है और वही बलगमका स्राव निकलता है। लहसुनकी गन्ध बिलकुल ही सहन नहीं होती ; पलकोंकी लाली और कपालमें दर्दके साथ नाककी सर्दी ; बहुत ज्यादा छींकें आती हैं ; नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव।

उद्भिज ज्वरमें एक विचित्र प्रकारकी खुजली पैदा होती है, जो मुँहकी छतमें, कोमल तालुमें होती है ; इससे आराम पानेके लिये रोगीको जीभ कोमल तालुपर आगे पीछे फेरते रहना पड़ता है, इसके साथ ही नाककी सर्दी, छींक प्रभृति भी रहती है। **वाइथिया**से इसका आक्रमण घटा दिया जा सकता है।

जब खुजली स्वरयन्त्र और टेंटुआतक पहुँच जाती है, तब बहुत उपदाह और शीत-कातरता रहती है (**नक्स-वोमिका**)।

जब नाकमें जलन होती है, तो ऊपरी ओंठपर और नासा-प्राचीरके पास एक लाल लकीर पड़ जाती है, साथ ही छींक आती है और नाकसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव होता है (**आर्सेनिकम**)।

नाकसे छींकोंके साथ बहुत ज्यादा कटु अश्रु-स्राव तथा बहुत अधिक स्निग्ध स्राव होता है (**इयुफ्रेशिया**)।

आँखोंसे बहुत ज्यादा, स्निग्ध, पानीकी तरह स्राव और बहुत अधिक, कटु, पानीकी तरह नाकसे स्राव (**पेलियम-सेपा**)।

पर ये सभी धातुगत दवाएँ नहीं हैं ; वे आरोग्य नहीं करतीं, पर तेज आक्रमणके कालमें कुछ आराम पहुँचा देती हैं। सोरा-दोषके कारण ही ये उपसर्ग उत्पन्न होते हैं और

इस धातु-प्रकृतिकी चिकित्सा भी सोरा-विष-नाशक औषधियोंसे ही होनी चाहिये। कभी-कभी उद्भिज ज्वर इतना तेज रहता है, कि रोगीमें केवल सोराका प्रदर्शन दिखाई देता है; पर यदि कुचिकित्सा द्वारा या तो रोक या दवा दिया जाय तो वह सालभर अच्छा नहीं रहता। यदि यों ही छोड़ दिया जाये, तो सालभर वह अच्छी दशामें रहेगा। बहुत बार उद्भिज ज्वर सम्पूर्ण जाड़ेभर रहता है और केवल धातुगत-प्रकृतिके सुधार द्वारा ही यह दवाया जा सकता है। प्रत्येक वार्षिक आक्रमण हलका हो जाता है और चिकित्साके बाद अपने जलवायुमें ही वह निर्भय रह सकता है। उन्हें शान्त करनेके लिये पहाड़ीपर नहीं जाना पड़ता; यदि उसे ऐसी जगह जाना पड़े, जहाँ इसका आक्रमण और भी भयङ्कर हो सकता है, जहाँ कि उसके सभी प्रदर्शन प्रकट हो सकते हैं। यदि रोगी आरोग्य होने योग्य है, तभी उद्भिज ज्वर आरोग्य हो सकता है; पर यदि वह दुरारोग्य ही रहा है; यदि उसका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया है, कि वह दुरारोग्य हो रहा है, तो उसका उद्भिज ज्वर आरोग्य न होगा।

इसके आक्रमणका सबसे विचित्र स्थान नाक, कण्ठ, टेंटुआ और स्वर-यन्त्रकी श्लैष्मिक-झिल्ली होती है। इन अंशोंकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रचण्ड तीव्र प्रदाह।

गर्म पेयोंकी तेज प्यास। भूख भी विचित्र रहती है; यह अकसर गर्भवतियोंमें दिखाई देता है। वह कहती है, कि उसे कभी भूख नहीं लगती, कभी कोई चीज खाना नहीं चाहती और अकसर खाद्यसे अनिच्छा रहती है; परन्तु जब किसी वजहसे वह खानेपर उतारू होती है और एक ग्रास खा लेती है, उसे अच्छा स्वाद लगता है, यह भूखको जगा देता है और वह खूब भर-पेट खाती है। अन्य समय केवल भूख ही नहीं लगती; बल्कि खाद्यसे अनिच्छा और घृणा हो जाती है। "सब तरहके खाद्योंकी अनिच्छा—मांसकी, खट्टी चीजोंकी काफीकी या लहसुनकी।" अस्वाभाविक भूख या खाद्यसे घृणा।

आल्पीनकी तरह कृमि, सूत्र-क्रिमि, सब तरहके क्रिमियोंकी यह बँधी दवा है, पाकाशयकी और फीता क्रिमिमें भी उपयोगी है। सावधान चिकित्सक कहीं भी केवल क्रिमिके लिये दवा देना नहीं चाहता। वह रोगीके समस्त लक्षण ग्रहण करता है और ये ही उसे औषध-निर्वाचनमें परिचालित करते हैं। मुझे याद है, कि एक महिलाके घरमें, एक कुत्तेको अपना पश्चाद् भाग मैंने इस तरह कार्पेटमें रंगते देखा, मानो वह अपने मलद्वारको खुजलाना चाहता है। उस महिलाने कहा—"डाक्टर साहब! क्या आप इस कुत्तेको कोई दवा नहीं दे सकते?" मैंने उससे मुँहमें सेबाडिलाकी एक खुराक दे दी। कुछ दिन बाद उसने मुझसे फिर पूछा—"आपने उस दिन उस कुत्तेको कौन-सी दवा दी थी?" मैंने पूछा—"क्यों क्या हुआ?" वह बोली—"कुछ दिन बाद ही उसके पेटसे बहुत-सी क्रिमि निकली।" आल्पीनकी तरहकी क्रिमिके लिये सेबाडिला और **सिनेपिस नाइग्रा** बहुत प्रचलित दवाएँ हैं। अकसर कोई दवा रोगीकी सार्वाङ्गिक स्थिति सुधार देती है और उससे सभी विशेष अङ्ग फिर ठीक-ठीक काम करने लगते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय—"क्रिमिके कारण कामोन्माद।" "डिम्बकोषमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द।" "रजः-स्राव बहुत विलम्बसे, कई दिन पहलेसे नीचेकी ओर खिंचावके दर्दके साथ होता है; स्राव घटा हुआ, रुक-रुककर होता है; रुकता है फिर होने लगता है; कभी ज्यादा, कभी कम और रक्त लाल चमकीला रहता है।

गुल्मवायु-ग्रस्त रोगी; एक असमान मस्तिष्कका रोगी, जिसमें और भी बहुत-से स्नायविक लक्षण रहते हैं। 'ऐंठन, अकड़नकी प्रकृति कम्पन या क्रिमिके कारण मृगी।" यह ठीक है, कि खूब स्वस्थ पाकाशय, आँतें या मलान्त्रमें कभी भी क्रिमि न होगी। वे केवल अस्वस्थ व्यक्तियोंको ही होती है। कितनी ही बार तो सोरा-विष-नाशक दवा देनेके बाद रोगी बोतलमें फीता क्रिमि भरकर मेरे पास लाये हैं, जब कि मुझे उनका सन्देह भी न था। स्वास्थ्य-विधानको शृङ्खलामें ले आइये और क्रिमियाँ भाग जायेंगी। यह बात कीटाणुओंके सम्बन्धमें भी लागू होती है; वे रोगके परिणाम-स्वरूप ही उत्पन्न होते हैं। पहले रोग हुए बिना उनका रहना कभी भी प्रकट नहीं हुआ है। यदि क्रिमिपर ध्यान न देंगे और लक्षण समूहके अनुसार औषध निर्वाचन करेंगे, तो रोगी स्वस्थ हो जायगा और जहाँतक क्रिमिका सम्बन्ध है, बिना किसी उपसर्गके ही गायब हो जायगा। क्रिमि छोटी होती जाती है, सिकुड़ती है और अन्तमें नष्ट हो जाती है। दवा देनेके बाद, छः सप्ताहोंके भीतर क्रिमि दूर होती मुश्किलसे दिखाई देती है। इसके विपरीत, यदि आप जबर्दस्त उपायोंसे क्रिमिको दूर करेंगे, तो वर्षोंतक रोगी कष्टदायक उपसर्ग भोगता रहेगा, और आपको पता न लगेगा, कि क्यों आप उसके आरोग्यके सम्बन्धमें असफल रहे।

पहले रोगीके लिये दवा दीजिये। जबतक ठीक-ठीक धातु-प्रकृति परिवर्त्तन कर देनेवाली दवा न दी जायगी, तबतक बीमारीका परिणाम दूर नहीं हो सकता और आपको विश्वास होना चाहिये, कि आपकी दवा ठीक है।

सैबाइना
(Sabina)

इस दवाका प्रयोग अमूमन मूत्रपिण्ड, मूत्राशय, जरायु, सरलान्त्र और मलद्वारके उपसर्गोंके लिये होता है, खासकर इन अंशोंके प्रादाहिक और रक्त स्रावी उपसर्गके लिये। यह रक्तवाहक-संस्थानमें एक गड़बड़ी पैदा कर देता है, जिसके कारण समस्त शरीरमें प्रचण्ड स्पन्दन होती है। रोगी तापसे विचलित रहता है तथा गर्म कमरेमें या बहुत ज्यादा कपड़े पहन लेनेपर विचलित हो पड़ता है। खिड़कियाँ खुली और खुली हवामें ही रहना चाहता है (पल्सेटिला)। रक्त-वाहक-संस्थानमें हलचल; उसी ढङ्गकी होती है, जैसी कि रक्त-स्रावी औषधोंमें होनी चाहिये। सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त-स्राव-प्रवणता; खासकर मूत्रपिण्ड, मूत्राशय और जरायुसे। घटती हुई गाँठें, विवृद्धियाँ

और शिराओंके रोगोंपर इसका निश्चित प्रभाव होता है। इसकी प्रधान क्रिया निम्न आँतोंपर होती है, मलद्वारके पास। बवासीरके अर्बुद, जिनसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है। खूनी बवासीरके साथ कब्ज। इन अंशोंमें पूर्णताका भाव। धड़की शिराओंमें एक पूर्णताका भाव, तनावका भाव, पूर्णता, सूजन, भरापन, सब जगह स्पन्दन, इसके साथ ही समस्त श्लैष्मिक झिल्लियोंसे बार-बार रक्त स्राव होता है। मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें बहुत जलन और टपक। तेज तकलीफें, जिनके साथ प्रादाहिक उपसर्ग रहते हैं; खूनका पेशाब; लगातार पेशाब लगनेके साथ मूत्राशयका प्रदाह, इसके साथ ही समूचे शरीरमें टपकके साथ तापसे रोग वृद्धि हो जाती है।

सूजाकके स्रावके साथ मूत्र पथका प्रदाह या पुरुषोंके मूत्र-पथसे सर्दीका स्राव। इसके मासिक रजःस्रावके लक्षणोंका क्षेत्र तथा जरायुसे रक्त-स्रावका सम्बन्ध बहुत ही महत्वपूर्ण है। रजः-स्रावके उपसर्गोंमें, स्त्रीको नीचेकी ओर खींचनका, प्रसवकी तरह दर्द होता है। कष्ट-रजःमें बहुत अधिक कष्ट। ऋतु स्राव बहुत दिनोंतक होता रहता है और बहुत ज्यादा मात्रामें होता है और किसी किसीको दूसरे मासिक रजः-स्रावके समयतक स्राव होना नहीं रुकता। बार-बार और बहुत दिनोंतक अधिक मात्रामें रजः स्राव। इस दवाका एक आश्चर्यजनक स्वरूप, जैसा कि कुछ अन्य दवाओंमें है, कि स्राव तरल, चमकीला लाल रहता है और इसमें रक्तके थक्के रहते हैं। यह बहुतसे उन रोगियोंके लिये उपयोगी होता है, जिसमें कि स्राव सूख जाता है और कुछ समयतक रुका रहता है और इसके बाद प्रसवकी तरह दर्द पैदा हो जाता है और बहुत ज्यादा आंशिक-रूपसे बिगड़े थक्के निकलते हैं और इसके बाद फिर चमकीला लाल रक्तका स्राव होता है। यह बार-बार हुआ करता है। गर्भ स्राव होनेके बाद ऐसी दशा होती है; प्रसवके बाद और कष्टरजःमें होती है। प्रसवकी तरह दर्दके साथ त्रिक-प्रदेशमें प्रचण्ड दर्द होता है, जो भीतरसे सामनेकी ओर आघात करता है; दर्द त्रिकास्थिसे जरायु या विटप-देशतक फैल जाता है। दूसरा आश्चर्य-जनक स्वरूप है,—खुजली, खोंचा मारने और छुरी घुसानेकी तरह दर्द, जिससे रोगी चिल्ला उठता है, योनिसे जरायुतक **धक्का देता है** या और भी ऊपर चढ़कर नाभितक धक्का मारता है। ये दोनों स्वरूप पीठसे सामनेतक और नीचेसे ऊपरतक धक्का मारनेकी तरह रक्त-स्रावके साथ दर्द आश्चर्यजनक उपसर्ग हैं।

तीसरे महीने गर्भ स्रावकी **बेलेडोना** और सेबाइना, दोनों ही महत्व-पूर्ण दवाएँ हैं। **बेलेडोनामें** भी इसी तरहका नीचेकी ओर खिचावका दर्द होता है, जिससे एक थक्का-सा निकल जाता है, जिसके बाद बहुत ज्यादा चमकीला लाल रक्त-स्राव होता है; परन्तु **बेलेडोनाकी** दशा सेबाइनाकी तरह नहीं होती। **बेलेडोनामें** एक तरहकी अतिरिक्त अनुभूति रहती है, अत्यधिक असहिष्णुता रहती है, जिसमें स्पर्श या झटका सहन नहीं होता; रोगी परिचारिकाको पलङ्ग हिलाने न देगी तथा चमकीला लाल रक्त-स्राव गर्म रहता है, इतना कि अनुभव होता है, वे अंश जिनपरसे रक्तका प्रवाह होता है इतने स्पर्श कातर रहते हैं, कि उसे रक्त बहुत ही गर्म मालूम होता है। यह **बेलेडोनाकी** अत्यधिक असहिष्णुताके समान है, जिसमें स्पर्श, आलोक, हिलना-डोलना या झटका सहन नहीं होता। यदि चिकित्सक

पलङ्गको हिला देगा, तो रोगीकी नाक-भौं तुरन्त चढ़ जायगी। बेलेडोनामें बहुत तरहके दर्द हैं; केवल धक्का मारनेकी तरह ही नहीं; बल्कि हरएक दिशामें अनियमित और नीचेकी ओर खिचावकी तरह दर्द होता है। ये दर्द बिजलीकी तरह उत्पन्न और गायब हो जाते हैं; एकाएक उत्पन्न और एकाएक ही गायब होते हैं, प्रत्येक दशाकी ओर आघात करते हैं। यदि ये लक्षण मौजूद हैं, तो आपको कभी जीवन-सम्बन्धी प्रभावोंके लिये अर्गटकी जरूरत न पड़ेगी। यह अकसर कहा जाता है, कि "रक्त-स्रावके इन रोगियोंका लक्षण लेनेका अवसर नहीं मिलता।" चतुर चिकित्सक क्षणभरमें ही ये सब उपसर्ग देख लेगा। रोगीकी क्रियाएँ, सुश्रूषा करनेवालीके मुँहसे निकला हुआ एक शब्द और जो कुछ उसने स्वयं देखा है, सब मिलकर दवा बता देंगे।

गर्भ-स्राव रोकनेकी दवाओंके सम्बन्धमें इसपर सबसे पहले ध्यान देना चाहिये; क्योंकि इसके लक्षण गर्भ स्रावके समय होनेवाले उपसर्गोंकी तरह हैं तथा झिल्लियाँ फट जानेपर बहुत ज्यादा लाभदायक होती हैं या डिम्ब निकल जानेके बाद, जब फूल निकलना बाकी रह जाता है। इससे जरायुकी क्रिया इस तरह स्वाभाविक हो जाती है, कि इन झिल्लियोंके पीछे जो कुछ रह जाता है, उन सबको निकाल देता है। होमियोपैथिक दवाके समय खुरचकर निकालनेकी कभी जरूरत नहीं पड़ती। इससे पता लगता है, कि स्त्रीके यन्त्रोंमें कुछ दोष है।

"गर्भ-स्राव या असमयके प्रसवके बाद डिम्बाशय और जरायुका प्रदाह।" डिम्बाशय और जरायुमें प्रचण्ड दर्द। टूट जानेकी तरह त्रिकास्थिमें दर्द मानो हड्डियाँ अलग हो जायेंगी। बड़ा ही तेज, फाड़ने, छेदने और जलनकी तरह दर्द, इसके साथ ही त्रिक-प्रदेशमें दर्द, समूचे शरीरमें जलन और टपक, खासकर उन अंशोंमें टपक, चाहे वे जरायु हों या मूत्राशय। "बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, इसके साथ ही जरायु-शूल।" प्रसवकी तरह संकोचक दर्द, यह पीठसे विटप स्थानतक फैल जाता है और पेशाबका बहुत ज्यादा वेग होता है। जरायु-शूल प्रसवके दर्दकी तरह बताया गया है; शूलकी तरह ऊपरकी ओर खींचन; पर थक्के निकाल देनेके लिये नीचेकी ओर भी खिचाव। कृत्रिम रक्त-वृद्धिकी वजहसे जरायुसे रक्त-स्राव (Metrorrhagia); थक्का-थक्का और तरल रक्त; दर्द त्रिक-प्रदेश या कटि-प्रदेशसे विटप-देशतक फैल जाता है, इसके साथ ही नीचेकी ओर खिचावका तेज दर्द होता है, यह पीठके निम्न-अंशसे तलपेटके चारों ओर और जांघोंतक फैल जाता है, रक्त चमकीला लाल, पतला और तरल रहता है, कटि और जरायु-प्रदेशमें प्रसवकी तरह दर्द, बड़े-बड़े रक्तके थक्के निकलना, चमकीला, लाल, झोंकसे निकलता है, खासकर हिलने डोलनेपर ज्यादा हो जाता है प्रभृति। यह गर्भ-स्राव या मासिक रजः-स्राव-सम्बन्धी उपसर्ग बताता है। "रजः-स्राव बहुत ज्यादा, समयके पहले, बहुत दिनोंतक रहता है; कुछ अंश पतला, कुछ थक्का थक्का और बदबूदार रहता है, आवेगके रूपमें स्राव होना, इसके साथ ही शूल और प्रसवकी तरह दर्द; त्रिक-प्रदेशसे विटप-देशतक दर्द।

दूसरे समय, वयःसन्धि-कालमें अत्यधिक परिश्रम करने और बहुत सन्तान-प्रसवके कारण किसी स्त्रीका स्वास्थ्य-भंग हो जाता है, इसी प्रकृतिका बराबर उसे जरायुसे रक्त-स्राव हुआ करता है ; रक्त चमकीला लाल रहता है और उसमें थक्के मिले रहते हैं, त्रिक-प्रदेशसे विटप-देशतक दर्द, वह क्लान्त और रक्तहीन हो जाती है ; पर कुछ समय बाद वह फिर सुधर जाती है, उसका चेहरा भर जाता है और वह रक्त-पूर्ण हो उठती है ; केवल दूसरी बार जब पुनः रक्त-स्राव होता है, तभी उसका स्वास्थ्य भङ्ग होता है। रेशेदार तन्तुओंसे रक्त स्राव।

दाने पड़नेके साथ योनि-पथकी पुरानी सर्दी, बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव। खूनका श्वेत-प्रदर। वृद्ध, पुराने सोरा-दोष-ग्रस्त रोगी। यह दवा खासकर स्त्रियोंके सूजाकके लिये उपयोगी होता है। इसमें **थूजा**की तरह तथा प्रमेह विषकी तरह, सभी मसेकी तरह प्रवर्द्धन निकलते हैं। **थूजा**के मसे छोटे-छोटे असहिष्णु मसे रहते हैं, इनपर पतली झिल्ली-सी चढ़ी मालूम होती है और जरा भी छू देनेपर रक्त-स्राव होने लगता है। सैबाइना मलद्वारकी आस-पासका मसेकी तरह प्रवर्द्धन आरोग्य कर देता है, फूलगोभीकी तरह मसा, भागका सूजाकका प्रवर्द्धन तथा पुं०-जननेन्द्रियके आस-पासके मसोंकी तरह प्रवर्द्धन भी इससे आरोग्य हो जाता है।

जरायुसे रक्त-स्रावमें इसकी **इपिकाक्युआन्हा**से तुलना कीजिये, जिसमें सैबाइनाकी तरह ही बड़े झोंकसे चमकीला रक्त लाल निकलता है ; पर यह झोंकसे निकलना आरम्भ होनेके पहले बहुत समयतक रक्त-स्राव होते रहनेके कारण क्लान्ति आ जानेके पहले, चेहरा पीला हो जाता है, मिचली और मूर्च्छाका भाव पैदा हो जाता है ; चेतना क्षणभरके लिये चली जाती है, जितना रक्त जाता है, उससे यह सभी अधिक होता है। **मिल्लीफोलियममें** भी झोंकसे रक्त-स्राव होता है ; पर इसमें दिन-प्रति-दिन लगातार रक्त चूता रहता है। एक प्रकारका लाल चमकीला रक्त बराबर जारी रहता है। **सिकेलि** भी सैबाइनाकी तरह दिखाई देता है ; परन्तु जब इसका निर्देश हो तो कभी बड़ी मात्रामें इसका प्रयोग न करना चाहिये। इसमें भी बाहर निकालनेवाला, नीचेकी ओर ढकेलनेवाला, प्रसवकी तरह दर्द होता है, जिसके साथ बड़े-बड़े थक्के निकलते हैं और बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है ; पर स्राव काला और बदबूदार रहता है और थोड़े ही समय बाद यह पतला तथा पानीकी तरह हो जाता है, जिससे कपड़ेपर भूरा दाग पड़ता है, जिसे छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। कभी-कभी तो अलकतरेकी तरह, बहुत ज्यादा तथा अनवरत स्राव होता है, मानो गर्भाशयमें सिकुड़नेकी शक्ति नहीं है। यदि आप रोगियोंका अध्ययन करें, जिन्हें प्रसव या गर्भ स्रावके समय **अर्गाट** दिया गया है, तो आप देखेंगे कि उस स्त्रीके जरायुकी संकोचन-क्रिया दुर्बल हो रही है, मानो शिथिल दशा हो रही है और यही रजः-स्राव-कालमें या दूसरे प्रसवके समय देखनेमें आयगा। **अर्गाट**के उपसर्ग बरसों बने रहते हैं, यह एक दूसरा सोरा-विष है। बड़ी मात्राएँ भ्रूणको मार डाल सकती हैं और गर्भ-स्राव हो सकता है ; बल्कि उसका रक्त-स्राव जारी ही रहेगा, जिस समय खूब सङ्कोचनकी जरूरत रहेगी, उस समय जरायुमें संकोचन न होगा। यह एक पाक्षाघातिक दशा उत्पन्न करता है और इसी दशामें हमलोग **सिकेलि**का प्रयोग करते हैं।

इसके आरम्भिक प्रभावोंके लिये हमलोग शायद ही कभी इसका प्रयोग करते हैं; बल्कि इसका प्रयोग जरायुकी अल्प विवृद्धिकी दशामें होता है, जब कि जरायुमें भ्रूण निकल जानेके वादकी सामग्री रुकी रहती है। बराबर काला और बदबूदार स्राव चूता रहता है। इसका चित्र सब परिपूर्ण होता है, यदि यह दिखाई दे, कि कमरा कितना भी ठण्डा क्यों न हो, वह ताप नहीं चाहती, ओढ़ना उतार फेंकना चाहती है और रोगिनी दुबली-पतली, झुर्रियाँ-भरी, सिकुड़ी, भूखी रोगिनी रहती है और उसका चर्म धुमैला रहता है; उसके शरीरपर कभी चर्बी नहीं रहती; वह सुदृढ़ शरीरवाली नहीं रहती। यह चर्ममें शिरा-स्फीति उत्पन्न करता है तथा अंगूठोंके पासका चर्म मलिन हो जाता है तथा हन्वस्थिके ऊपर काले चकत्ते हो जाते हैं और वह हाथ-पैर खोले लेटे रहना चाहती है। ऐसे रोगीका मांस क्षय हो जाता है और मांस सिकुड़ जाता है।

पुराने, कष्ट-पूर्ण, लँझड़ानेवाले रक्त-स्रावोंमें, जरा भी उत्तेजना मिलनेपर नये सिरेसे जारी हो जाता है, सेबाइनासे झोंकसे रक्त निकलना बन्द हो जायगा, नयी दशा, परन्तु यह पकड़ नहीं रखता, रक्त-स्राव फिरसे जारी हो जाता है और इसके बाद सोरा दोष-नाशक दवाकी जरूरत पड़ती है। **सल्फर** इसकी बहुत साधारण दवा है; परन्तु **सोरिनम,** यद्यपि रक्त-स्रावके लिये ग्रन्थोंमें लिखा नहीं दिखाई देता; पर **सल्फर**की क्रिया यदि समाप्त हो गयी है, तो फिर रक्त चूना और बार बार रक्त-स्राव होना जारी हो जायगा, इस समय **सोरिनम** कार्य करेगा।

फास्फोरस बहुत कुछ सेबाइनाकी तरह है। इसमें भी बहुत ज्यादा चमकीला लाल रक्त स्राव होता है, जिसमें थक्के रह सकते हैं और नहीं भी रह सकते हैं। इसका आश्चर्यजनक स्वरूप स्रावके बाहर है। उसका चेहरा सिकुड़ा रहता है; मुँह और जीभ एकदम सूखी रहती है; तेज, अदम्य प्यास रहती है; बरफकी तरह ठण्डा पानी चाहता है। चमकीले लाल रक्तका स्राव होता है, यह या तो झोंकसे निकलता है या लगातार चूता रहता है।

इस तरह हमलोगोंको रक्त-स्रावी औषधियोंका अच्छी तरह स्मरण करना चाहिये। चिकित्सकको जरूरतकी दवाओंकी पूरी जानकारी रहनी चाहिये, जैसे कि प्रचण्ड अतिसार, हैजा, तेज तकलीफें और रक्त-स्राव प्रभृतिमें तुरन्त काम करनेवाली दवाओंकी। इन्हें तो उन्हें अंगुलियोंपर याद रखना चाहिये और उन्हें इस योग्य रहना चाहिये, कि तुरन्त तुलना कर लें। रक्त तुरन्त रोक देना चाहिये।

जरायुकी शक्ति-क्षीणता सेबाइनाका एक आश्चर्यजनक स्वरूप है। जरायु आप-ही-आप नहीं सिकुड़ता, जबतक कि इसके पास संकोचन करनेवाली कोई चीज न हो, एक थक्के या ढेलेकी तरह। सभी अन्य अंशोंसे भी रक्त-स्राव; परन्तु इन प्रदेशोंके लिये प्रभेदक लक्षण न प्रकट होनेके कारण दूसरी दवाओंने स्थान ग्रहण कर लिया है।

बहुत वात और गठिया; सन्धियोंमें गठियाकी गांठें, उनमें इतनी जलन होती है और वे इतनी गर्म रहती हैं, कि रोगीको बाध्य होकर बिस्तरके बाहर हाथ या पैर

निकाले रखना पड़ता है। गठियाके रोगी, खासकर जब उनकी धातु-प्रकृतिकी दशा बदल जाती है; एक पर्यायक्रमसे पैदा होनेवाली दशा, जब गठिया मौजूद रहती है, तो रक्त-स्राव नहीं होता और जब रक्त-स्राव होता रहता है, तो गठिया आराम रहती है। उपसर्गोंका पर्यायक्रमसे पैदा होना। शिराओंकी गठियाकी दशा, अकसर एक रक्त-स्रावी दशा रहती है।

सैंगुइनेरिया

(Sanguinaria)

[एक जड़ी]

रक्त-मूल एक पुरानी घरेलू दवा है। बहुत-से पूर्वी किसानोंकी स्त्रियाँ घरमें विना-रक्त-मूल (Blood root) रखे न मानेंगी। ठण्डे सर्दीके दिनोंमें जब नाककी सर्दी हो जाती है, माथेमें "सर्दी" हो जाती है, वक्ष और कण्ठमें सर्दी बैठती है, तो वे रक्त-मूलको तैयारकर उसकी चाय बनाती हैं। उनके लिये तो सर्दीकी यह बँधी दवा है। वे इसे सभी उपसर्गोंके लिये देती हैं और इसमें तो कोई सन्देह नहीं, कि इस तरह मूल रूपमें रहनेपर भी यह "सर्दी" को तोड़ देती है; क्योंकि परीक्षामें वक्षके रोगोंसे और वक्षमें चली जानेवाली "सर्दियों" से इसका सम्बन्ध दिखाई देता है।

समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द, जब कि सातवें दिन सर-दर्द पैदा हो जाता है। यह नींद खुलनेपर सवेरे ही उत्पन्न होता है या रोगीको जगा देता है। यह माथेके पिछले भागमें होता है और ऊपर चढ़ता जाता है तथा दाहिनी आँखके ऊपर या दाहिनी कनपटीमें जाकर जम जाता है। दिनके समय यह बदतर हो जाता है और रोशनीसे बढ़ जाता है, जिससे कि उसे भागकर अंधेरी कोठरीमें चले जाना पड़ता है और बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है। वमन होने लगता है और वमनमें पित्त निकलता है; लसदार तीते पदार्थ और खाद्य निकलते हैं और तब दर्द शान्त होता है। ऊपर या नीचेसे वायु निकलनेपर सर-दर्द घटता है, यदि रोगीको बिछावनपर लेटनेके समय तलहत्थी और तलवोंमें जलनकी तकलीफ होती है, जिससे कि उसे बिछावनके बाहर उन्हें निकाले रखना पड़ता है, तो यह इसका एक दूसरा सहयोगी लक्षण होता है।

कोई ऐसा व्यक्ति लीजिये, जिसने सर-दर्दका ठीकसे किसी कारणसे बहुत समयतक इलाज नहीं किया; पर उस भयसे ही उसे सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती और "सर्दी" नाकमें, कण्ठमें और श्वासोपनलियोंमें घर बना लेती है और ये अंश आगकी तरह गर्म मालूम होते हैं, साथ ही इनमें खाल उधड़नेका भाव और जलन रहती है, बलगम गाढ़ा तथा लसदार श्लेष्मा रहता है, पेटकी गड़बड़ी, जिसके साथ बहुत डकारें आती हैं और खाँसीका तेज आक्रमण होनेके बाद, खासकर ये डकारें आती हैं।

यह कोई अति दीर्घ-क्रिय औषधि नहीं है। जब सैंगुइनेरिया देकर कोई सामयिक स-वमन सर-दर्द रोक दिया जाता है और कोई गहरी क्रिया करनेवाली सोरा-विष नाशक औषधि नहीं दी जाती है, तो सर-दर्द लौट आयगा या इससे भी कोई बदतर बीमारी पैदा हो जायगी ; क्योंकि सैंगुइनेरिया रोगकी प्रकृतिकी तहतक अपनी क्रिया नहीं करता। मुझे एक रोगी याद है, जिसने सैंगुइनेरियाके सर दर्दपर ध्यान नहीं दिया और उसे अन्तस्त्वकार्बुद हो गया, जो फिर **फास्फोरस**से आरोग्य किया गया। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि यदि आक्रमणके अन्तमें **फास्फोरस**का प्रयोग किया गया होता, तो कर्कट (Cancer) हुआ ही न होता ; क्योंकि **फास्फोरस** उसकी धातु प्रकृतिके अनुकूल दवा थी। यदि किसी पुराने स-वमन सर-दर्दमें बाधा दी जायगी, तो रोगीमें यक्ष्मा-प्रवणता उत्पन्न हो जायगी ; वक्षकी तकलीफें पैदा हो जायँगी तथा वे बदतर-से-बदतर होती जायँगी। यक्ष्माको उपशम करनेकी इसकी शक्ति बहुत विख्यात है।

वायुनलीकी सर्दीसे दुर्बल हो गये हुए रोगीको, जिसे सर्दी लगजाया करती है, प्रत्येक ऋतु परिवर्त्तनका और ऋतुका तर ऋतुमें परिवर्त्तन, झोंकको हवा तथा वस्त्रोंके परिवर्त्तनका प्रभाव पहुँच जाया करता है ; हमेशा नयी "सर्दी" हो जाया करती है। वक्षोस्थिके पीछे वक्षमें जलन हुआ करती है, गाढ़ा, कड़ा, डोरीकी तरह बलगम निकलता है, आक्षेपिक खाँसी आती है और प्रत्येक खाँसीके बाद डकारें आती हैं ; गैसकी डकारें ; खाली डकारें आया करती हैं। यदि वक्षमें जलन, स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें बातें करनेके समय दर्द तथा डकारोंमें अन्त होनेवाला खाँसी हो, तो इसके साथ ही आप तलहत्थी और तलओंमें जलन सम्मिलित कर लीजिये, सैंगुइनेरिया उस रोगीका स्वास्थ्य सुधार देगा और तकलीफोंको घटा देगा। ऐसे बहुत-से रोगियोंको **सलफर** दिया जाता है ; परन्तु इससे उनकी खराबी होती है। कुछ ऐसी दवाएँ भी हैं, जो यक्ष्माके इन रोगियोंके लिये **सलफर, साइलिसिया** और **ग्रैफाइटिस**से ज्यादा उपयोगी होती हैं। **पल्सेटिला**, सैंगुइनेरिया, **सेनिशियो ग्रैसिलिस** और **काक्स, कैक्टाई** ऐसी दवाएँ हैं, जो रोगको उपशम करती हैं, उसके कष्टोंको घटाती हैं और उसे ऐसा भी बना दे सकती हैं, कि वह किसी गहरी क्रिया करनेवाली दवाका मध्यम क्रम ग्रहण कर सकता है ; परन्तु यदि जीवनी-शक्ति धीमी पड़ गयी है और यदि स्वास्थ्य इतना खराब हो गया है, कि मरम्मतके योग्य नहीं है, तो गहरायीतक क्रिया करनेवाली दवा न लेनी चाहिये। कम जीवनी-शक्तिवाले रोगियोंको **फास्फोरस** देनेकी हैनिमैनने मनाही की है। सैंगुइनेरिया पटलोंपर काम करनेवाली एक दवा है। इससे बहुत बढ़िया रोगोपशम न होता है।

नाक और कण्ठके सर्दीके उपसर्ग, खासकर जो सर्दी लगने और जहरीले पौधेके कारण उत्पन्न हुए हैं तथा गुलाबी सर्दी (उद्भिज ज्वर) भी। सैंगुइनेरियाके रोगियोंको जूनमें उद्भिज ज्वर होता है (Rose colds)। फूल और गन्धोंका सहन न होना ; उद्भिज ज्वरके रोगी। उद्भिज ज्वरके रोगी,—नाकमें कण्ठमें जलन, मानो सूख गये हैं, मानो श्लैष्मिक-झिल्लियाँ फटकर खुल जायँगी। स्वर-यन्त्रमें सूखापन, और स्वरभंगके साथ जलन ; सम्पूर्ण वक्षमें दमाके साथ जलन और सूखापन, जिसके साथ तलहत्थियों और

तलवोंमें जलन होती है। परीक्षा करनेपर तलहत्थी सूखी मालूम होती है, सिकुड़ी और छूनेपर गर्म ; ऐसा ही तलवा भी रहता है, जहाँका चमड़ा मोटा और कड़ा पड़ जाता है। जलन करनेवाले गट्टे ; अंगूठेमें जलन होती है और रोगी आराम पहुँचनेके लिये पैर बिछावनसे बाहर निकाल रखता।

सर-दर्द मौजूद रहनेपर यह साधारणतः रक्त-सञ्चयी सर-दर्द मालूम होता है ; यद्यपि यह सवेरे आरम्भ होता है, पीछेसे ऊपर चढ़ता है और दाहिनी आँखतक फैल जाता है, समूचा माथा गर्म और अनवरत यन्त्रणा-पूर्ण रहता है।

सलफर साइलिसिया और सैंगुइनेरियामें समय बाँधकर साप्ताहिक सर-दर्द होता है। **आर्सेनिकमें** प्रत्येक दो सप्ताहपर सर-दर्द होता है। ऐसी कोई बात नहीं कि ये दवाएँ दूसरे सर-दर्दोंको आरोग्य न करेंगी ; क्योंकि सैंगुइनेरियामें भी तीसरे दिन होनेवाला सर-दर्द है। अधिकांश सर-दर्द जो दो सप्ताहोंपर पैदा होते हैं, वह **आर्सेनिकसे** आरोग्य हो जाता है या भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तियोंका बहुत कुछ घट जाता है। पुराना स-वमन सर-दर्द आराम करनेकी चेष्टा अवस्था ढलनेके पहले ही करनी चाहिये।

"तिक्त वमनके साथ मस्तकमें स्पन्दन ; हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। सर-दर्द अमूमन हिलने-डोलनेपर बढ़ता है ; परन्तु **ब्रायोनियाकी** तरह आश्चर्यजनक रूपसे नहीं। जब तीसरे पहर या रातके समय **ब्रायोनियाका** सर-दर्द बढ़ता है, तो यह इतना तेज हो जाता है, कि उसे बिस्तरपर लेट जाना पड़ता है और सर बहुत यन्त्रणा-पूर्ण हो जाता है और इसके बाद एक कदम चलना या झटका लगना, बहुत ही कष्टदायक हो जाता है। तेज सर-दर्दमें रोशनी, शोरगुल या हिलना-डोलना प्रभृति विचलित कर दे सकता है।

"सर-दर्द, मानो माथा फट जायगा ; इसके साथ ही जाड़ा और पाकाशयमें जलन।" "दाहिनी आँखके ऊपरवाला सर-दर्द।" यह इसका एक चरित्रगत लक्षण है। "समय बाँधकर होनेवाला स-वमन सर-दर्द ; यह सवेरे उत्पन्न होता है, दिनके समय बढ़ता है और शामतक ठहरता है ; सर ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा या आँखें बाहर निकल पड़ेंगी, टपक, नश्तर देनेकी तरह दर्द मस्तिष्कके भीतरसे होता है, दाहिनी ओर बदतर रहता है, खासकर ललाटमें और मस्तक-शिखरमें, इसके बाद ही जाड़ा लगना, मिचली, खाद्य या पित्तका वमन होता है, या तो बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है या चुपचाप रहना पड़ता है ; नींदसे घट जाता है।" इनमेंसे कुछ बातें सभी रोगियोंमें नहीं दिखाई देतीं ; परन्तु इन सबसे ही सैंगुइनेरियाका सर-दर्द तैयार होता है।

सब तरहके स्नायु-शूलके दर्द ; काटने, फाड़ने, नश्तर देनेकी तरह दर्द, मानो पेशियाँ फाड़ी जा रही हैं या फैलायी जा रही हैं। किसी भी स्थानमें फाड़नेकी तरह दर्द, स्नायु-शूल या वातका दर्द। मस्तक-त्वचामें भार ; पर ज्यादाकर कन्धे और गर्दनके पास ; अकड़ी हुई गर्दन ; पलङ्गपर करवट नहीं ले सकता ; बाहु नहीं उठा सकता ; यद्यपि वह बाँहोंको आगे पीछे झुला सकता है। गर्दनमें दर्द आघात करता है ; त्रिकोण-पेशी (Deltoid) में दर्द। यह दवा दाहिना पार्श्व विशेष पसन्द करती है ; पर बायीं ओरकी बीमारियाँ

भी आरोग्य करती है। दाहिने कन्धेमें वातका दर्द, जिससे कि वह बाहु नहीं उठा सकता और गर्दन तथा गर्दनके पिछले भागकी समस्त पेशियाँ आक्रान्त हो जाती हैं; अकड़ी हुई गर्दन। यदि दिनके समय दर्द पैदा होता है, तो यह ज्यों-ज्यों दिन रातकी तरफ बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों दर्द भी बढ़ता जाता है। सैंगुइनेरियाकी तकलीफें रातमें बदतर रहती हैं।

सर्दी लग जानेके बाद कोई रोगी आपके पास आता है; वह अपनी बाँह नहीं उठा सकता; वह बगलकी तरफ लटका रहता है, रातमें बिछावनमें दर्द बदतर रहता है, करवट लेनेपर बदतर हो जाता है (क्योंकि वह करवट लेनेमें कन्धेको पेशीसे काम लेता है)। यह शायद त्रिकोण-पेशीमें होता है; पर आपको उस तन्तुपर इतना माथा लड़ानेकी जरूरत नहीं है, जो आक्रान्त हुआ है।

यह **फेरम**की समता करता है। सभी लाल चेहरेवाले, खूब रक्त पूर्ण व्यक्ति जो हाथ नहीं उठा सकते और दर्द होता है, दर्द दिनके समय बदतर रहता है, रातके समय नहीं तथा धीरे-धीरे हिलाने डोलानेपर घटता है, उन्हें **फेरम**की जरूरत रहती है। सैंगुइनेरियाका दर्द हिलने-डोलनेपर नहीं घटता; यह उन गतियोंसे बढ़ जाता है, जिसमें बाहुका व्यवहार होता है। धीरे धीरे डोलानेपर **फेरम**में आराम पहुँचता है; पर तेजीसे हिलाने-डोलानेपर दर्द बढ़ जाता है और दर्द दिनके समय होता है। **फेरम**के रोगीका समान रूपसे लाल, रक्त पूर्ण चेहरा रहता है; सैंगुइनेरियाके रोगीका चेहरा पीला रहता है। वक्षकी बीमारियोंमें, सैंगुइनेरियामें कपोलास्थिपर एक लाल दाग रहता है, जैसा कि क्षय-ज्वर (Hectic fever) के रोगियोंमें देखनेमें आता है।

पाकाशयकी गड़बड़ियोंके कारण सर-दर्द, बहुत ज्यादा खानेसे, गरिष्ठ भोजन या शराब पीनेके कारण सर-दर्द। यह पुराने शराबियोंको **नक्स-वोम**की तरह ही फायदा करता है। जो अपने पाकाशयको बिगाड़ लेते हैं या बियर नामक शराब पीकर पाचन-शक्तिको कमजोर कर डालते हैं, वे खा नहीं सकते; एक चम्मचभर पानीकी भी कै होना; कोई भी खाद्य या पेय पाकाशयमें नहीं ठहरता, ऐसी तकलीफोंके साथ सर-दर्द; इन कष्टोंके साथ वमन और अतिसार।

श्लैष्मिक-झिल्लीके रोग भी स्पष्ट रहते हैं। कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह; कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्लीका स्पष्ट मोटापन। नाक तथा गलकोष श्लेष्मासे भर जाते हैं। वह इसे खखारकर निकाल देता है; वहाँ एक शुष्क जलनकी अनुभूति रहती है; पर हर समय जब उसे ताजी सर्दी लगती है, यह जलन बहुत स्पष्ट हो जाती है।

एक दूसरा स्वरूप है,—स्रावोंकी कटुता। नाकमें कटु श्लेष्मा बनता है, जिससे कण्ठमें जलन होती है। पाकाशयसे डकारके साथ कटु, गर्म तरल चढ़ आता है, जिससे कण्ठ और मुँहकी खाल उधड़ जाती है। अतिसारमें कटु पानीकी तरह दस्त आते हैं, खासकर बच्चोंको; चूतड़ खाल उधड़े और लाल हो जाते हैं। यह जलन सम्पूर्ण आँतोंतक फैल जाती हैं; पुराने पाकाशयके रोगियोंके तलपेट और पाकाशयमें जलन; जलनके साथ कम-से

कम चम्मचभर पानीकी कै हो जाना ; पुराना पाकाशयिक उपदाह ; मन्दाग्नि ; पाकाशयकी सब तरहकी गड़बड़ियाँ ।

जीभ लाल और इस तरह जलन होती है, मानो किसी गर्म चीजसे सटी हुई है ; गलकोष और कण्ठनलीमें जलन, मुँहकी छतमें जलन। जलनके साथ तालुमूल-प्रदाह। "कण्ठमें ताप, श्वासके साथ ठण्डी हवा खींचनेपर घट जाती है। कण्ठ इतना सूखा रहता है, कि ऐसा मालूम होता है, कि तड़क जायगा।" सभी आक्रान्त श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें यह जलन और खाल निकलनेका भाव रहता है।

रोगीको एकाएक जाड़ा लगता है और वह बिस्तरपर जा पड़ता है ; वक्षमें जलन ; न्युमोनियाके लक्षण ; जंगकी तरह बलगम निकलना ; प्रचण्ड खाँसी ; टेंटुआके द्वि-शाखा स्थानपर हरेक खाँसी विकम्पन पैदा करती मालूम होती है, मानो उन अंशोंमें कोई छुरी रखी है, मानो फाड़कर अलग कर दिये गये हैं और खाँसी आनेके बाद बहुत ज्यादा, जोरकी, खाली डकारें, आती हैं, ऐसा भी दूसरी दवामें नहीं है।

"पाकाशयमें जलनके साथ मिचली, साथ ही बहुत थूक निकलता है।" मिचली वमनसे भी दूर नहीं होती। लगातार वमन और ओकाई आती रहती है। इस तरह जलन होती है, मानो आगपर रखा है। इस अधिक जलनपर अकसर भूलसे **आर्सेनिक** दे दिया जाता है।

"तीते पानीका वमन ; खट्टे पानीका कटु ; तरलका ; खाये हुए पदार्थोंका ; क्रिमिका वमन ; वमनके पहले एक प्रकारकी घबड़ाहट होती है, सर-दर्द और पाकाशयमें जलन होती है ; इसके बाद माथेमें आराम पहुँचता है ; बहुत सुस्ती आ जाती है।" ये लक्षण सर-दर्दमें होते हैं, विकृत पाकाशय या अम्ल-पूर्ण पाकाशयमें। खट्टा वमन या खट्टी डकारोंसे पाकाशयमें अम्लका पता लगता है। रोगी अकसर "खट्टे पाकाशय" की शिकायत किया करता है और आपको पता लगा लेना चाहिये, कि रोगी खट्टी डकारें या खट्टे वमनकी शिकायत तो नहीं करता। वह कहता है, कि उसे "खट्टे खाद्योंका वमन होता है।

सैंगुइनेरियाकी बहुत-सी तकलीफों और उपसर्गोंके साथ मूर्च्छाका भाव रहता है, भूखकी तरह, पर खाद्यके लिये नहीं। एक धँसते जानेका, मूर्च्छाका "खालीपनका भाव" यह "भूखके सर-दर्द" के लिये **फास्फोरस**की तरह है। "भूखके सर-दर्दकी" सबसे प्रधान दवा **सोरिनम** है ; पर **सोरिनम**का रोगी खाना चाहता है और उसका पेट भरता ही नहीं। सैंगुइनेरियामें भी भूख है ; पर यह खाद्यकी भूख नहीं है ; खाद्यके खयाल और गन्धसे अनिच्छा। **सोरिनम**का रोगी एक भेड़ियेका खाना खा सकता है और इसी तरह **फास्फोरस**का रोगी भी। सैंगुइनेरियाके सर-दर्दमें झूठी भूख रहती है। "पाकाशयमें जलन, जाड़ा और सर-दर्दके साथ।"

दमामें डकारके साथ कटु तरल चढ़ आना ; उद्भिद-जनित दमा। पाकाशयकी गड़बड़ीके साथ सम्मिलित दमाको सैंगुइनेरिया उपशम कर देता है। पाकाशयकी तकलीफोंके साथ दमा हो, तो **नक्स-वोमिका**को न भूलिये।

यकृतके उसपर्ग ; दर्द, यन्त्रणा और पूर्णताका भाव। साधारण भाषामें जिसे पित्तकी तकलीफें कहते हैं। ऐसा मालूम होता है, कि यकृत बहुत अधिक मात्रामें पित्त बनाता है, पर पाकाशय द्वादशांगुलकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह रहता है, जिससे कि नीचे जानेके बदले पाकाशयमें पित्तका उद्‌गीरण होता है और तीता, हरा, पीला तरल डकारके साथ निकल आता है, विकृत पित्त। यह एक विचित्र बात है। यदि आप पुराने सैंगुइनेरियाके रोगीको देखें, तो आप देखेंगे, कि एक सप्ताहतकके लिये पाकाशय गड़बड़ा जायगा ; थूकमें पित्त आना, बहुत वायु निकलना ; खट्टी गर्म डकारें ; इसके बाद यह एकदम गायब हो जायगा और एकाएक जोरोंके पतले दस्त आने लगते हैं, पित्तज, तरल, झोंकसे होनेवाले दस्त। **नेट्रम-सल्फ, सैंगुइनेरिया, पल्सेटिला और लाइकोपोडियम,** कफके साथ पर्यायक्रमसे होनेवाला अतिसार आरोग्य करते हैं।

"जरायु-मुख क्षत-ग्रस्त ; बदबूदार, खाल उधेड़नेवाला श्वेत-प्रदर।" शामके वक्त तलपेटका तन जाना तथा जरायु-मुखसे योनिकी राहसे वायु निकलना, जो लगातार खुला रहता है ; उसी समय गर्दनके पिछले भागसे सरतक एक दर्दकी किरण चली जाती है।"

"कण्ठमें पुराना, सूखापन, स्वर-यन्त्रमें सूजनकी अनुभूति और सूखापन, खाल उधड़नेका भाव, जलन और कुटकुटीके साथ गाढ़े श्लेष्माका बलगमके रूपमें निकलना।" हूपिङ्ग खाँसी, सँकरा पड़ जाना, जबड़ोंके नीचे आक्षेपिक क्रिया ; अतिसारके साथ शामके वक्त खाँसी बढ़ जाती है।" अतिसारके साथ रातके समय खाँसीका बदतर हो जाना, इस दवाको देनेका स्वरूप है। "हूप खाँसीके बाद आनेवाली तेज खाँसी, जब रोगीको सर्दी लग जाती है, जो हूपिङ्ग खाँसीकी आक्षेपिक प्रकृतिको बताती है।" किसी अवस्था-प्राप्तको सर्दी लग जाती है और उसे हूपिङ्ग खाँसीकी तरह आक्षेपिक खाँसी हो जाती है। वह कहता है, कि यह पाकाशयिक खाँसी है ; क्योंकि इसमें मुँहभर पानी भर आनेका भाव है। इन सबमें ही इस तरह जलन और अतिसार रहता है।

"तकलीफ देनेवाली, सूखी, आक्षेपिक, क्लान्तकर खाँसी ; खासकर बच्चोंकी, यह रातमें; लेटनेपर, सोनेके लिये ठण्डे कमरेमें जानेपर बढ़ जाती है ; श्वासोपनलियोंमें खाल उधड़ने और जलनका भाव।" टेंटुआ बहुत यन्त्रणा-पूर्ण मालूम होता है और यह यन्त्रणा-पूर्ण रहता भी है, खाद्यका ग्रास अन्त्रनलीसे नीचे उतरता स्पष्ट मालूम होता है ; वह उस जगहको रेखा खींचकर बता सकता है, जहाँसे खाद्य जाता है।

सार्सापैरिला

(Sarsaparilla)

निम्न आकारकी पुरानी बीमारियोंमें सार्सापैरिला उपयोगी होता है, खासकर मिश्रित दोषोंके कारण उत्पन्न जटिल दशाओंमें और खासकर प्रमेह और उपदंशके रोगियोंके लिये ; पारद, प्रमेह, उपदंश और सोराके सम्मिलित उपसर्गोंमें । सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानमें **मर्क्युरियस, लैकेसिस** तथा अन्य दवाओंकी भाँति कमजोरी आ जाती है । मांस-तन्तु थुलथुले हो जाते हैं, आघात लगनेपर घाव भरना नहीं चाहते, जरा भी कारण होनेपर जखम हो जाता है । आघात लगनेके बाद खुला हुआ घाव रह जाता है और जड़ या सड़नेवाला हो जाता है तथा **आर्सेनिक, लैकेसिस और मर्क्युरियस-कोर**की तरह फैलने लगता है। समुचे शरीरमें कमजोरी ; एक पाक्षाघातिक भाव । मानसिक दशाओंमें यह एक चकाचौंध-वाली दशा उत्पन्न करता है, वह कोई बात समझ नहीं पाता, मनकी क्रिया धीमी होती है, यह एक दुर्बलता है जो जड़त्वकी सीमापर जा पहुँचती है, जहाँ अन्तमें यह पहुँच जा सकती है । मन तथा मांस-तन्तुओंकी दुर्बलता ।

सभी यन्त्र धीमे, कमजोर, शिथिल तथा रक्त-सञ्चयी हो जाते हैं । कमजोरी और शिराओंका प्रसारण, प्रत्यङ्गोंमें शिरावरोध, शिरा-स्फीतिवाले जखम, बवासीरके मसे, चेहरेकी और धड़की शिरा-स्फीति उत्पन्न करनेकी प्रवणता रहती है । चेहरा अकसर लाल और चकत्ते-चकत्तेके रूपमें बदरङ्ग हो जाता है । जब रक्तकी गति कमजोर रहती है, तो वे अंश नीले पड़ जाते हैं ; हृवस्थिके ऊपर ऐसा होता है ; पैरके अंगूठों और अंगुलियोंकी पीठकी ऐसी ही दशा हो जाती है ; बुढ़ापेकी सड़नकी बीमारीकी तरह नीले दाग । बुढ़ापेमें जिस समय हाथके पिछले भाग (करभ) तथा अन्य स्थानोंमें काले और नीले दाग पड़ते हैं, उस समय लाभदायक होता है ।

तर, खुजलानेवाले, भूसी-भरे और पपड़ी-भरे उद्भेद । करभ और तलहत्थी मोटी पड़ जाती है और कड़ी, इसके साथ ही गेहूँकी भूसीकी तरह विचर्चिकाके आकारकी भूसी निकलती है, इसके साथ ही नीले धब्बे-मिले रहते हैं ।

इसमें सर्दी और गर्मीके बहुत-से लक्षण हैं । तापका प्रयोग सभी उपसर्गोंको भीतर बढ़ा देता है ; पर बाहरी शीतलता रहती है, जिसमें तापसे आराम पहुँचता है, गर्म खाद्य या पेय रोग-वृद्धि कर देता है ; ठण्डा खाद्य चाहता है ; बाहरी ताप जब प्रयोग किया जाता है, तो लाभ करता है ।

सिकेलिमें मांस-तन्तुओंमें बहुत कमजोरी पैदा हो जाती है, साथ ही शिरा-रोध, जखम और सड़नेवाले घाव हो जाते हैं ; पर ये दोनों ही दवाएँ यद्यपि देखनेमें समान मालूम होती हैं, ताप और शीतमें दोनोंमें प्रभेद है ।

पाकाशय बहुत ही बुरी दशामें रहता है । आध्मान, लगातार मिचली, डकारें और खट्टे पदार्थोंकी कै होती है । हमेशा पाकाशयमें वायु होने और बेचैनीकी इस तरह शिकायत

क्रिया करता है, मानो रोगीने बहुत खा लिया या मानो खाद्य बिगड़ गया है ; पाचन धीमा और कमजोर रहता है।

यन्त्र सब स्फीत और रक्त-सञ्चयकी दशामें रहते हैं। कण्ठ, जीभ और मुँह ऐसे मालूम होते हैं, मानो उनमें जखम हो जायेंगे। बैंगनी धब्बे ऐसे दिखाई देते हैं, मानो वे टूट जायेंगे ; परन्तु हफ्तों और महीनों ज्यों के त्यों बने रहते हैं।

मांस-तन्तुओंका शोथ, निम्न शाखा-अङ्गोंका ; दबानेपर गड्हे पड़ना ; शोथकी दशा ; कोरण्ड घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (ब्राइट्स डिजीज)।

उन पुराने उपदंश-ग्रस्तोंके लिये उपयोगी है, जिनकी बीमारी **मर्क्युरीसे** दवा दी गयी है ; मन और शरीर अवसन्नताकी दशामें रहते हैं ; निम्न-शाखा-अङ्गोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलता, सहनशीलताका न रहना ; परिश्रम करनेपर कलेजेमें धड़कन होने लगती है ; थोड़ा भी परिश्रम करनेपर श्वास-रोध होने लगना ; हमेशा क्लान्त ; शरीरपर यहाँ-वहाँ जखम ; चमड़ा झूलता हुआ और रातमें कष्टोंसे परिपूर्ण रहता है। रात्रि कालमें **अस्थियोंका दर्द बदतर हो जाता है।** सार्सापैरिला **मर्क्युरियस**का प्रतिविष है और यह प्रतिक्रिया स्थापित कर देता है।

वंशगत उपदंशके कारण बच्चोंकी सुखण्डीकी बीमारी ; गर्दनके पास दुबलापन ; सूखा, नीला, ताँबेकी तरह उद्भेद ; ठीक-ठीक समीकरण नहीं होना।

बच्चोंको हमेशा अपने वस्त्रोंमें बालुका पेशाब हुआ करता है, पीली या खड़ियाकी तरह सफेद बालू ; बच्चा पेशाब करनेके पहले चिल्लाया करता है ; क्योंकि उसे याद आ जाता है, कि पेशाब करनेके समय उसे कितनी अधिक तकलीफ होती है। कभी-कभी पेशाब होना बन्द होनेके समय वह भीषण चीत्कार कर उठता है। पुराने भग्न स्वास्थ्यवाले रोगियोंमें यह लक्षण दिखाई देता है। मूत्राशयमें एक तरहका ऐसा कसकर पकड़नेका भाव उस समय होता है, जब पेशाब बन्द होता है जिससे रोगी चिल्ला उठता है। पेशाबके अन्तमें दर्द।

पुराने व्यभिचारी, मद्य तथा मैथुनसे दुर्बल हुए व्यक्ति, जिनका कलेजा, फेफड़ा, मस्तिष्क, मूत्राशय कमजोर रहता है और जो क्षीण और झुर्रियोंसे भरे रहते हैं। समयके पहले ही वृद्ध, चालीस वर्षका व्यक्ति अस्सी वर्षकी तरह दिखाई देता है, पैर फूले, लकड़ीके सहारे डगमगाता चलता है। इस स्वास्थ्य-भङ्गके आरम्भिक कालमें **नक्स** उपशम करेगा। पर ऐसा समय आता है, जब उसके मन और शरीर, दोनों ही कमजोर हो जाते हैं और उस समय उसे सार्सापैरिला, **लैकेसिस** और **सिकेलि** प्रभृति दवाओंकी जरूरत पड़ती है।

सूख गये हुए बच्चे ; चेहरा वृद्धोंकी तरह दिखाई देता है ; पेट बढ़ा हुआ, सूखा, झूलता हुआ चर्म ; पीसी हुई मकईकी तरह पाखाना होता है।

बसन्त-कालमें उद्भेद निकलते हैं, शिराओंके सभी रोग शीत ऋतुमें पैदा होते और वसन्ततक जाते हैं, जैसे—**लैकेसिस, सिकेलि** और **हैमामेलिस**में।

मूत्राशय और मूत्रपिण्डकी श्लैष्मिल-झिल्लीका प्रदाह। रातमें बच्चोंको और कमजोर बच्चोंको आप-ही-आप अनजानमें बिछावनमें पेशाव हो जाना। पेशाव करनेको बैठनेके समय द्वारावरोधिनी पेशीकी थकड़ी हुई दशा रहती है, जिससे उस स्थितिमें बैठकर पेशाव करना असम्भव हो जाता है; परन्तु जब **रोगी खड़ा हो जाता है, तो उसे खुलासा पेशाव होने लगता है।** खासकर उस समय यह महत्व-पूर्ण लक्षण हो जाता है, जब किसी स्त्रीमें यह लक्षण उत्पन्न होता है; क्योंकि उन्हें खड़े होकर पेशाव करनेमें बहुत तकलीफ होती है। रातमें बहुत ज्यादा पेशाव, बिछावन भिगा देता है; परन्तु दिनके समय केवल खड़े होनेपर उसे पेशाव होता है।

पन्द्रह बरस हुए मैंने नीचे लिखा रोगी-विवरण प्रकाशित किया था और तबसे अबतक वह व्यक्ति निरोग है। "एक पुरुष, अवस्था ५२ वर्ष। बरसोंसे ह्विस्की नामक शराब पीनेका उसे अभ्यास था; चार महीने हुए, उसकी आँतोंसे बहुत ज्यादा रक्त स्राव हुआ; कुछ ही दूर चलनेके परिश्रमसे उसे श्वास-रोध होने लगता था; रक्त-स्राव होनेके बाद, उसके पैर फूलने लगे, दोनों ही प्रत्यङ्ग जाङ्घोंतक अत्यन्त शोथ-ग्रस्त हो पड़े; उसे दो या तीन बार अद्भुत ढङ्गके शीतका आक्रमण हुआ; कई महीने हुए, एकाएक बायें बाहु और पैरमें पाक्षाघातिक दुर्बलता आ गयी; पर यह तीन घण्टोंमें ही चली गयी तथा बायें हाथमें एक प्रकारका सुन्नपन रह गया तथा मुख-मण्डल और सरके बायें पार्श्वमें एक प्रकारका फाड़नेकी तरह दर्द; भूख एकदम नदारद; मलके साथ खून-मिला स्राव; सभी समय उसे ऐसा मालूम होता था, मानो स्वप्नमें है। स्मरण-शक्तिका क्षय; चेहरा शिरा-स्फीतिसे भरा और बहुत लाल था; सार्वाङ्गिक शिरा-रोध; मस्तक-शिखरमें ऐसा मालूम होता था, मानो किसी हथौड़ीसे ठोका जा रहा है। रातमें कितनी ही बार पेशाव करना पड़ता था; पेशाव रखा रहनेपर गाढ़ा और धुमैला हो जाता था; पर पहले निकलनेके समय साफ रहता था; बहुत आर्थिक कठिनाइयोंके कारण उसे झंझटें थीं; पाखानेके लिये बैठनेके समय पेशाव नहीं कर पाता था; परन्तु खड़े होनेपर बिना रुकावटके पेशाव खुलासा होता था; पेशावमें अण्डलाल था।" जब सार्सापेरिलामें ऐसे ५२ वर्षके वृद्धको पकड़ रखनेकी और स्वस्थ-दशामें लानेकी शक्ति है, तो यह एक ध्यान देनेकी चीज है।

"पुरुष मूत्रनलीमें झटका लगनेकी अनुभूति।" जितनी ही बार रोगिनी पेशाव करती है, तो गड़गड़ाहटकी आवाजके साथ मूत्र-पथसे वायु निकलता है।" मूत्राशयके श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहमें यह एक साधारण उपसर्ग है। यह श्लेष्माके उत्सेचनके कारण होता है और इसीलिये गैस बनती है। "घटे हुए मूत्र-स्रावके साथ बार बार वृथा पेशावका वेग।"

इस दवाने बहुत बार मूत्राशयकी पथरी गला दी है; यह पेशावकी प्रकृति ही इस तरह बदल देता है, कि फिर पत्थर बननेकी सम्भावना ही नहीं रहती तथा पटलपरका पत्थर बराबर गलते रहनेके कारण यह छोटा होता जाता है। मैंने सार्साके प्रयोगके बाद पेशाबका गहरा रङ्ग, खून-मिला तथा श्लेष्मा-मिला पेशाव साफ हो जाते देखा है; परन्तु रखे

रहनेपर बालू साफ मालूम होगी। फिर जब पेशाब गँदला होने लगे, तो दूसरी खुराक देनेका समय है। पेशाब द्रवको धारण करता है अर्थात् वास्तवमें पत्थर अणुओंको गला देता है।

कई बरस हुए एक वृद्ध मनुष्यको अस्त्र-चिकित्सक नश्तर देनेके लिये तैयार था। उन्होंने उसके मूत्राशयकी आवाज सुन ली थी और कहा था, कि उसमें पत्थर हो गया है; पर अन्तमें वह इस निर्णयपर आया कि वह नश्तर लेनेकी इजाजत नहीं दे सकता। उनके मना करनेपर भी उसने मुझे बुला भेजा और मैंने उस रोगीका भार ले लिया। उसके लक्षणोंने सार्सा मांगा। दूसरे वर्ष जिस वृहत् मात्रामें बालू निकली, वह आश्चर्यमय था। इसने श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह दूर कर दिया और मूत्राशयको बड़े आरामसे रखा। एक बरसके बाद, रातभर बहुत कष्ट भोगनेके बाद, उसे पेशाबके साथ मटरके बराबरका एक पत्थर निकला। और भी कितने ही छोटे छोटे पत्थर इसके बाद निकले तथा वह स्वस्थ हो गया।

"एक युवकको इतना दानेदार तलछट निकलता था, कि मैंने उसे एक अलग ही मूत्र-पात्र रखने और उसे जमने देनेके लिये कहा, पेशाब ढाल देनेको कह दिया। एक महीनेके अन्तमें एक इञ्चका सोलहवाँ भागके अन्दाजकी एक तही जम गयी। सार्साके प्रयोगमें रहनेपर इस युवकको फिर पत्थर न होने लगा। बालू निकला करती थी; पर द्रव-रूपमें और केवल ठण्डा होनेपर जमती थी। कुछ समय बाद यह भी गायब हो गयी।" वह युवक गठियाकी प्रकृतिका था और वह भी दूर हो गयी।

असीम यन्त्रणाके साथ सार्सामें गठियाकी गांठे पड़ती हैं। यह दवा देनेके बाद, पेशाबमें बालूका तलछट जमता है, जिससे इस दवाकी उत्तम क्रिया प्रकट होती है और दवा बन्द न करनी चाहिये।

'पेशाबका प्रचण्ड वेग होनेके साथ बेहद कब्ज, आँतोंके सङ्कोचनके साथ पाखाना लगना; ऊपरसे नीचेकी ओर अत्यधिक दबाव, मानो आँतें बाहर निकल आना चाहती हैं; पाखाना होनेके समय फाड़ने, काटनेकी तरह सरलान्त्रमें प्रचण्ड वेदना। नीचेकी ओर बहुत दबावके साथ छोटा मल।"

"पुराने सूखे, प्रमेहज मसे, जो गठियाके दर्दोंका मर्क्युरीसे इलाज होनेपर रह जाते हैं।

सिकेलि कार्नुटम
(Secale Cornutum)

सिकेलिके सर्वोत्तम परीक्षक, जो इसकी क्रियाके अत्यधिक ग्रहण-क्षम होते हैं वे दुर्बल (स्कानी) व्यक्ति होते हैं और ऐसे ही मनुष्योंके लिये यह आरोग्यदायक औषधके रूपमें प्रयुक्त होती है। इसमें सन्देह नहीं, कि यह मोटे-ताजे व्यक्तियोंके लिये विपरीत

निर्देशित जरूर ही नहीं रहती। किसी दवाके उपयोगी होनेके लिये कुछ विशेष धातु-प्रकृति बतायी गयी है; परन्तु इससे यह नहीं निष्कर्ष निकालना चाहिये, कि लक्षण मिलनेपर भी दूसरोंपर इसकी किसी प्रकारकी क्रिया न होगी। दुबले-पतले मनुष्योंका खासकर सिकेलिसे सम्बन्ध रहता है।

दुबला, झुर्रियाँ-भरा, मलिन, अस्वस्थ चर्मका दृश्य; बैंगनीपन या नीलापन लिये चर्म; यह या तो सार्वाङ्गिक रूपसे या जगह-जगह होता है, मलिन चर्मपर बैंगनी धब्बे, खासकर करम या पैरका पिछला भाग अथवा टांगोंकी हड्डी जैसे कमजोर रक्तके दौरानवाले स्थान। ये अंश सुन्न पड़ जाते हैं, झुनझुनी होती है और मलिन हो जाते हैं। शाखा अङ्गोंमें कांटा गड़नेकी तरह दर्द होता है, जलन और झुनझुनी होती है; रेंगने और सुरसुरानेका भाव, मानो चर्मके नीचे कीड़े रेंग रहे हैं, मानो चर्म और मांसके भीतर कीड़े चल रहे हैं; सुन्न, मृत, काठकी तरह अङ्गुलियोंमें और खासकर अंगूठोंमें अनुभूति। अगूठे काले, सड़नेवाले हो जाते हैं। एक बुढ़ापेकी मलिनता, जैसी कि कमजोर वृद्ध पुरुषोंमें दिखायी देती है; रक्त-वाहिनियाँ बन्द हो जाती हैं; अंगूठोंमें रक्त नहीं जाता और वे सुन्न, काले और अनुभूति-रहित हो जाते हैं। इसीलिये सिकेलि अवस्था प्राप्तोंके रक्तका दौरान बढ़ा देता है और बुढ़ापेका सड़ना रोक देता है।

जलन इस दवाका एक स्वरूप है; चर्ममें जलन होती है; हाथ-पैरोंमें जलन होती है, वे अंश ठण्डे मालूम होनेपर भी उनमें जलन और वे वास्तवमें ठण्डे रहते हैं; ठण्डकके साथ तापकी अनुभूति, जलन, खासकर भीतरी अंशोंमें। जलनके साथ सूखापन; पाकाशय और आँतोंमें जलन; मुँह और कण्ठमें, नाक तथा वायु पथोंमें सूखापन और जलन; फेफड़ोंमें जलन।

यह दवा जखम, यहाँतक फूँसी पड़ना भी उत्पन्न करती है। पुराने जखम, विचित्र, मलिन दृश्य धारण कर लेते हैं; बिना दाना पड़े ही सूखापन; एक चमकीला, काला दृश्य और तुरन्त काले दाने निकल पड़ते हैं, धीमे और अन्तमें काले सड़नेवाले दाने होते हैं, जो धीरे-धीरे अलग होते हैं; वह अंश सूखा रहता है; थोड़ा-सा काला रक्त, कभी-कभी निकल पड़नेके सिवा किसी तरहका स्राव नहीं होता।

काला, तरल रक्त टपकना, प्रवाह न रहनेपर भी टपकते रहना; नाकसे काला, शैरिक, बदबूदार, तरल रक्त निकलता है; कण्ठ, फेफड़ा, मूत्राशय, मलान्त्रसे काले रक्तका स्राव होता है; स्याहीकी तरह पेशाब होता है। बहुत समयतक जरायुसे रक्त-स्राव, यहाँतक कि एक बारका रजःस्राव दूसरे महीनेतक लगा रहता है, मलिन रोगी, पहले दिन बहुत ज्यादा स्राव, पतला और कालापन लिये, यह दो सप्ताहोंतक होता रहता है और इसके बाद काला पानीकी तरह स्राव होता है, जो दूसरे कालतक जारी रहता है। इसके बाद गाढ़े, काले, तरलका फिर बहुत अधिक बदबूदार स्राव जारी हो जाता है। ऐसी दशा, उन स्त्रियोंको होती है, जिसने गर्भपातके लिये अर्गाट लिया है या उन असहिष्णु रमनियोंको होता है, जिन्हें इसकी अधिक मात्राएँ सरल प्रसवके लिये दी गयी हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि यदि स्त्री असहिष्णु नहीं है, तो लँगड़ानेवाले लक्षण आपको न मिलेंगे।

कुछ स्त्रियाँ इतनी बुद्धिहीन रहती हैं, कि वे भले ही मर जायें, वे अपनी सन्तानसे छुटकारा पाना चाहती हैं। ये सब स्त्रियाँ कहा करती हैं,—"जबसे मैंने गर्भपात किया, मैं कभी अच्छी न रही।" स्वास्थ्यकी सबसे बुरी अवस्था अर्गाटसे उत्पन्न होती है ; यह सोराकी तरह ही बद्धमूल दोष स्थापित कर देता है। अपनी सन्तानको नष्ट कर देनेकी इच्छा सोरा-दोषका एक प्रदर्शन है और अर्गाट लेनेपर उसमें एक दोष सम्मिलित हो जाता है, जो प्रमेह या उपदंश-दोष (Sycosis or Syphilis) की समता करता है।

मेरे पास ऐसी रोगिनियाँ हैं, जिन्होंने गर्भपातके लिये अर्गाट खाया था और मैं इसके सिवा कुछ भी नहीं कर सकता, कि उनका रोग दबाये रहूँ। उनमें सिकेलिके उपसर्ग रहते हैं ; रोगाक्रमणके परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुए उपसर्ग, उनके सोराके लक्षण दबे हुए, रोके हुए, ठीक उसी तरह, जैसे कि उपदंश सोराके प्रदर्शनोंको रोके रखता है ; केवल सिकेलिके दोषको दूर कर तथा सोरापर पहुँचकर ही हम रोगीकी सहायता कर सकते हैं। उन्होंने अपनेको चिकित्सककी पहुँचके बाहर पहुँचा दिया है और अर्गाट उनके जीवन कालको कई वर्षोंके लिये घटा देगा, सिवा इसके कि उन्हें जीवनभर काफी तरीकेसे सावधानता-पूर्वक दवा न मिलती रहे।

सर्वाङ्गिक प्रकृतिगत उपसर्ग तापसे बढ़ जाते हैं ; इसका बहुत कम अपवाद है। प्रत्यङ्ग बरफकी तरह ठण्डे रहनेपर भी ठण्डी चीजें चाहता है, खुला रहना चाहता है, खिड़कियाँ खुली रखना चाहता है ; कमरा ठण्डा रहनेपर भी रक्त-स्रावका रोगी ओढ़ना उतार फेंकना चाहता है। जखमवाला रोगी ओढ़ना उतार फेंकना चाहता है ; पाकाशय और आंतोंकी प्रादाहिक दशाओंमें तलपेट खुला रखना चाहता है।

बहुत बार चर्मके तापकी लँझड़ानेवाली दशा रहती है और रोगी ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है, तेज डङ्क मारनेकी तरह स्नायु शूलका दर्द होता है, जो आगकी तरह जलता है और छुरीसे काटनेकी तरह दर्द होता है ; यह तापके प्रयोगसे घटता है ; ठण्डी हवामें सर-दर्द बढ़ जाता है ; पर सार्वाङ्गिक दशामें **खुले रहनेसे ही रोग-ह्रास होता है** तथा **ठण्डे कमरेमें और रोगीपर ठण्डी हवा लगनेपर।**

शरीरके किसी भी अंशका प्रचण्ड प्रदाह ; सड़नेवाला फुसफुस-प्रदाह ; पाकाशय-प्रदाह ; अन्त्रच्छद ; जरायु और डिम्बाशयका प्रदाह। प्रादाहिक दशाओंमें यह **आर्सेनिक**की समता करता है। दोनोंके लक्षण इतने सदृश हैं, कि इनका प्रभेद करना मुश्किल हो जाता है, दोनोंमें ही बेहद तना हुआ तलपेट रहता है ; पेट फूलना ; आगके अङ्गारेकी तरह जलना ; प्रचण्ड पिपासा ; असीम असहिष्णुता तथा स्पष्ट-कातरता, जिससे कि हिलना-डोलना या झटका लगना सहन नहीं होता ; खूनकी के ; रक्तके थक्के निकलना ; भयानक, बदबूदार, खून-मिला आँतोंका स्राव परन्तु सार्वाङ्गिक रूपसे ये अलग-अलग रहते हैं। **आर्सेनिक**का रोगी ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है, गर्म रहना चाहता है, गर्म प्रयोग चाहता है, यह गीला हो या सूखा ; परन्तु सिकेलिका रोगी खुला रहना चाहता है, ठण्डी हवा चाहता है।

एक अंश या सम्पूर्ण मांस-पेशिक संस्थानकी अकड़न; बहिरायाम टङ्कार (Opisthotonos); पिण्डलियों, जंघाओं, तलवों और तलहत्थियोंमें ऐंठन ; गुल्म-वायुका सङ्कोचन ; गुल्म-वायुका प्रकृति। यह अकड़न चेहरेसे आरम्भ होती है। बहुत उत्तेजनाके साथ सक्रिय उन्माद ; अपना गुप्ताङ्ग खोल देती है और जननेन्द्रियको फाड़ती है ; अपनी अङ्गुली योनिमें डालती और तबतक खुजलाती है, जबतक भगोष्ठसे खून न निकल आता है। लज्जाशीलताके सभी विचार गायब हो जाते हैं।

अकड़न, स्नायविक और मानसिक लक्षण रक्त-स्राव होते रहनेपर बदतर हो जाते हैं, जिससे रक्त-स्रावके कालमें ही सूतिकाक्षेप (Puerperal convulsion) उत्पन्न होता है।

रक्त-स्रावकी प्रवणता और रक्तके लाल कणोंका नष्ट करनेकी शक्ति रहनेके कारण रक्तहीनता आ जाती है। चेहरा सूखे हुए गो-मांसकी तरह दिखाई देता है, मलिन, सिकुड़ा, दुबला-पतला, मानो यह धोया नहीं गया है, मानो चर्मपर खाकी मिट्टी सूख गयी है और यह खासकर शाखा-अङ्गोंमें होता है, एक मैली, खाकी शकल।

सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी प्रदाहकी दशा, वे सूखी रहती हैं और उनसे रक्त बहता है, श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहवाले पटलोंसे रक्त चूता है, पतला, काला, बदबूदार रक्त, बहुत धीरे-धीरे जमता है या बिलकुल ही नहीं जमता। "नाकसे रक्त-स्राव होता है, रक्त काला रहता है, लगातार बहा करता है ; इसके साथ ही बहुत सुस्ती रहती है, महीन सूतकी तरह नाड़ी रहती है ; वृद्ध पुरुष या शराबियोंका, युवतियोंका दुर्बलता के कारण।"

अर्गटका जहर जिनमें फैल गया है, उनके चक्षु-चित्रपत्र (Lens) में धुँधलापन आ जाता है, जैसे कि बुढ़ापेकी दुर्बलतामें ; वृद्ध पुरुषोंका मोतियाबिन्द (Cataract)।

मलिन दुबले-पतले जखम होनेकी प्रवृत्तिवाले व्यक्ति, चर्म अस्वस्थ रहता है और **तापसे उनकी रोग-वृद्धि हो जाती है**, यह लक्षण नयी और पुरानी दोनों ही बीमारियोंमें आश्चर्यजनक रूपसे रहता है।

पुराना अतिसार (संग्रहणी), क्लान्त करनेवाला, पानीकी तरह दस्त, हैजा। इसका **कैम्फर**से सम्बन्ध है। दुबले पतले मनुष्योंको हैजा हो जाता है ; उनका बदन ठण्डा और नीला हो जाता है, सर्दीसे अच्छे रहते हैं। लगातार प्रचण्ड प्यास बनी रहती है।

अतिसार और रजः-स्राव बहुतकर एक साथ ही होते हैं खून-मिले पानी या काले तरल रक्तके दस्त।

बड़ी खुराकोंसे जरायुमें इतना अधिक सङ्कोचन उत्पन्न होता है, कि उसकी सामग्रियाँ बाहर निकल पड़ती हैं और इसके बाद क्लान्त बना देनेवाला रक्त-स्राव होता है, बड़े-बड़े थक्कोंका निकलना और आरम्भिक अवस्थामें उसके साथ थोड़ा लाल रक्त मिला रहता है ; पर उसका बहुत ही आश्चर्यजनक स्वरूप है,—तरल, काला स्राव।

"एशियाटिक हैजा, हिमाङ्गके साथ, धँसा, विकृत मुखमण्डल, खासकर मुँह, चींटी रेंगनेकी तरह अनुभूति।"

अर्द्ध-पाक्षाघातिक दशा ; निम्न शाखा-अङ्गोंका पक्षाघात ; एक पार्श्वका ; एक वाहु या एक पैरका ; ऊर्द्ध शाखा-अङ्गका झुनझुनीके साथ पक्षाघात, सुन्नपन और कांटा चुभनेकी तरह मालूम होना। सुन्नपन और जलन मेरुदण्डके सम्पूर्ण नीचे भागतक, सार्वाङ्गिक दुर्बलता या रोगाक्रान्त अंशका।

उद्भेद, बड़े फोड़े, छोटे फोड़े, कार्वङ्कल हरे पीवका स्राव ; एक हरा बेंगनी चेहरा, हरी सामग्री-भरे छोटे-छोटे फोड़े, ये बहुत धीरे धीरे पकते और आरोग्य होते हैं।

बन्ध्यात्व पैदा करता है ; गर्भाशय इतना कमजोर रहता है, कि भ्रूणको धारण नहीं कर सकता, इसीलिये बराबर गर्भ-स्राव और बन्ध्यात्वमें यह उपयोगी होती है।

स्तनका सूख जाना, प्रसवके बाद स्तनमें दूध न होना।

"दुबले-पतले बच्चे, जिनका चमड़ा झुर्रियाँ-भरा रहता है, रह-रहकर ऐंठन होती है, एकाएक चिल्ला उठते हैं, ज्वर-भाव।"

श्लैष्मिक-झिल्लीसे भयङ्कर रक्त स्राव। शाखा-अंगोंका पक्षाघात, मेरुदण्डीय उपदाह। रूखे चर्म और सड़नेवाली फुन्सियाँ होनेवाली धातु-विकार-विशिष्ट स्त्रियाँ (Cachectic females)।

सेलीनियम

(Selenium)

बहुत दिनोंतक ज्वर भोगनेके बाद अथवा अत्यधिक काम-चरितार्थ, गुप्त पाप अथवा गर्मियोंमें लू गल जानेके कारण बढ़ी हुई मानसिक और शारीरिक दुर्बलता। बहुत क्लान्ति, जिसे विश्राम करनेपर भी वह दूर करने योग्य नहीं रहता ; जरा भी परिश्रम करनेपर बहुत क्लान्ति और कमजोरी आ जाती है और खासकर गर्मीकी ऋतुमें। गर्म मौसममें एकाएक दुर्बलता आ जाना ; पीठमें बहुत ज्यादा कमजोरी, करीब-करीब पाक्षाघातिक दुर्बलता या मियादी बोखार (Typhoid fever) या दूसरी क्षण स्थायी बीमारियोंके बाद आ जाती है। झोंककी हवा, ठण्ढी, गर्म या तर, एकदम सहन नहीं होती। बढ़ी हुई सार्वाङ्गिक क्षीणता और खासकर चेहरा, जंघाएँ और हाथोंका ज्यादा क्षीण हो जाना। रोगी-अङ्ग मलिन पड़ जाते हैं। समूचे शरीर, सर, भौं, दाढ़ी तथा जनन-यन्त्रके ऊपरके केश झड़ जाते हैं। सभी स्नायविक लक्षण संगमके बाद बढ़ जाते हैं। सभी अंगोंमें और भोजनके बाद तलपेटमें स्पन्दन। **असीम उदासी।** कुछ उपसर्ग शराब, चाय और लेमोनेडसे बदतर हो जाते हैं। शराबियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। नशीले उत्तेजकोंकी अदम्य इच्छा। निन्द्राके बाद उपसर्ग बदतर हो जाते हैं, खासकर गर्मीके दिनोंमें। वीर्य-स्रावके बाद चिड़चिड़ा हो जाता है ; अपने पारिपार्श्विकोंसे वह उदासीन रहता है और उसका मन सुस्त और विभ्रमित रहता है। जागते रहनेपर वह बहुत भुलक्कड़ बना रहता है ; परन्तु जो कुछ वह भूल गया था, वही स्वप्नमें देखता है। शब्दोंके विवरणमें भूल करता है और गलत उच्चारण करता

है। तोतलाती हुई बोली। अकसर जो कुछ सुनता या पढ़ता है, उसे समझ नहीं सकता। वह अपने कारबारके अयोग्य रहता है। शामको वह उत्तेजित और बकवादी बन जाता है। मानसिक परिश्रमसे क्लान्ति आ जाती है और उसे संग-साथसे डर लगता है। उसका मन कामुक-विचारोंसे पूर्ण रहता है; इतनेपर भी वह कभी-कभी नपुन्सक रहता है। सङ्गमके बाद सभी मानसिक लक्षण बदतर हो जाते हैं।

पलङ्गसे या अपनी जगहसे उठनेपर, चलते-फिरते रहनेपर सरमें चक्कर आ जाता है, साथ ही मिचली, वमन और मूर्च्छा आती है; जलपान या भोजनके बाद बदतर हो जाता है।

कड़ी गन्धसे, शराब, चाय, लेमोनेड या शराब-मिले उत्तेजक पीनेपर सर-दर्द हो जाता है; बायीं आँखपर तेज डङ्क मारनेकी तरह दर्द, जब कि धूपकी गर्मीमें चलना पड़ता है। सर-दर्दके समय पेशाब होना बढ़ जाता है। पुराने शराबियोंका सर-दर्द।

समूचे माथेके केश झड़ जाते हैं, खोपड़ी चिकनी निकल आती है और केश-हीन हो जाती है तथा भौंवों और चेहरेपरके भी केश झड़ जाते हैं, जिससे विचित्र शकल बन जाती है। उपदंश-ग्रस्तोंका केश झड़ना यह अकसर रोक देता है। मस्तक-त्वचाका अकौता, भुनभुनी और खुजली इसने आरोग्य कर दी है। मस्तक-त्वचा ऐसी मालूम होती है, मानो कसकर करोटीकी हड्डीपर बैठा दी गयी है।

पलकोंके किनारे खुजलानेवाली फुन्सियाँ और बायें चक्षु-गोलककी आक्षेपिक ऐंठन।

कान रुक जाता है और कानका मल कड़ा हो जाता है, जिससे उसे सुननेमें कठिनाई होती है।

नाकसे काला थक्का-थक्का रक्त निकलता है, गाढ़े, पीले, चाशनीकी तरह श्लेष्मासे नाक भरी रहती है। नाकका खुजलाना, नाकमें अंगुली डालकर नाक खूँटा करता है। नाकका पुराना रोध होना। नाककी सर्दी, जिसके बाद पानीकी तरह दस्त आते हैं।

चेहरा रोगियल रहता है, तेलहा और चमकीला दिखाई देता है। चेहरेका बहुत ज्यादा दुबलापन। चेहरेकी पेशियोंकी ऐंठन।

चाय पीनेके कारण दाँतका दर्द।

बहुत नमक-मिले पदार्थ खानेसे अनिच्छा। जीभ सफेद रहती है और जलपानमें उसे स्वाद नहीं मिलता। **कड़े पेयोंकी अदम्य इच्छा।** भोजनके बाद समस्त शरीरमें स्पन्दन, खासकर तलपेटमें। चीनी, नमकीन खाद्य, चाय और लेमोनेडसे उपसर्ग सब बदतर हो जाते हैं।

दबाने और श्वास लेनेपर यकृतमें यन्त्रणा, इसके साथ ही दाहिने कुक्षि देशपर दाने निकल आते हैं। दाहिने कुक्षि-देशमें खींचनेकी तरह दर्द, गहरी श्वास लेनेपर बदतर हो जाता है। यकृत बढ़ा रहता है। हिलने-डोलने और दबानेपर यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

सरलान्त्रकी अक्रियताके साथ कब्ज। **बहुत ही कष्टकर मल, यहाँतक कि मल-रोध**

हो जाना। मल बड़ा, कड़ा और बहुत सूखा ; यान्त्रिक सहायताकी जरूरत पड़ जाती है। कोमल लेईकी तरह मल। पानीकी तरह अतिसार।

पेशाब कर लेने और पाखाना होनेके बाद चलनेके समय आप-ही-आप अनजानमें पेशाब होना। मूत्रनलीके बाहरकी ओर दर्दका झोंक रहता है, इसके साथ ही ऐसा अनुभव होता है, मानो बूंद टपक रहा है। ऐसा अनुभव होना, मानो काटनेवाली बूंदें जोरसे बाहर निकल रही हैं। पेशाब गहरे रङ्गका थोड़ा और शामके वक्त लाल होता है। तलछट रूखा, लाल और बालूका पड़ता है। इसने मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह उत्पन्न किया है। पुराने सुजाककी यह बहुत ही उपयोगिनी दवा है।

लिङ्गेन्द्रियकी असीम दुर्बलता, यद्यपि कामेच्छा प्रबल रहती है, पर लिङ्गमें कड़ापन नहीं होता या सङ्गम-क्रिया असन्तोष-पूर्ण और सम्पूर्ण होती है। बार-बार वीर्य-स्राव तथा लगातार मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव हुआ करता है। बिना कामेच्छाके ही सवेरेके वक्त लिङ्गोत्तेजन ; पर सङ्गमकी चेष्टा करनेपर लिङ्गेन्द्रिय शिथिल हो जाती है। जननेन्द्रियमें खुजली और सुरसुरी।

रजः-स्राव बहुत ज्यादा और काला होता है। गर्भावस्थामें तलपेटमें स्पन्दन, भोजनके बाद बदतर।

कमजोरी तथा आवाजका दब जाना सार्वाङ्गिक दुर्बलताके अनुकूल ही रहती है ; आवाजसे काम लेनेकी चेष्टा करनेपर स्वर-भङ्ग ; बहुत देरतक आवाजका अतिरिक्त व्यवहार करनेपर दुर्बलताके कारण स्वर-भंग। बहुत-सा साफ, स्टार्च (लेई) की तरह श्लेष्मा स्वर-यन्त्रको खखारनेपर निकलता है, बाध्य होकर बार-बार स्वर-यन्त्र साफ करना पड़ता है। यह यक्ष्मा-पूर्ण स्वर-यन्त्र-प्रदाहकी बहुत लाभदायक दवा है, गलेकी ग्रन्थियाँ बड़ी और कड़ी रहती हैं।

सवेरे सूखी खुसखुसी खाँसी ; वक्षमें दुर्बलताका भाव। खून-मिले श्लेष्माका ढेला थूकमें निकलता है। किसी प्रकारका भी परिश्रम करनेपर और वक्ष तथा वायु-पथोंमें श्लेष्मा रहनेके कारण श्वास-कष्ट हो जाता है। वक्षके दाहिने पार्श्वमें, सबसे निचली पसलीमें दर्द, जो मूत्रपिण्डतक फैल जाता है और जिनपर दबाव सहन नहीं होता।

पीठ और मेरुदण्ड दुर्बल, मानो टाइफायड तथा अन्य लँझड़ानेवाली बीमारियोंके बाद वह पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ेगा। सर घुमानेपर गर्दन अकड़ी मालूम होना ; सवेरे पीठमें खञ्जता।

इसने तलहत्थीकी उपदंशज विचर्चिका आरोग्यकर दी है। खुजलानेवाली तलहत्थी। हाथ फटे-फटे, रातमें हाथोंमें फाड़नेकी तरह दर्द।

पैरका दुबलापन, निम्नाङ्गकी बहुत दुर्बलता। शामको गुल्फमें खुजली, अंगूठेपर छाले। पैरों और गुल्फोंमें चिपटे जखम। पिण्डलियों और तलवोंमें मरोड़।

आधी राततक उसे नींद नहीं आती, थोड़ी-थोड़ी देरतक सोता है। खूब सवेरे और **हमेशा एक ही समय** जागता है ; नींदके बाद रोग-लक्षण बदतर हो जाते हैं।

शीत और ताप पर्यायक्रमसे होते हैं। जगह-जगहमें जलनकी तरह ताप। वक्ष, बगल और जननेन्द्रियपर बहुत ज्यादा पसीना होता है, जिससे पीला दाग पड़ता है। थोड़ा भी श्रम करनेपर पसीना।

चर्मपर यहाँ-वहाँ, बहुत खुजलानेवाले स्थान तथा उद्भेद निकलनेके बाद झुनझुनीकी स्थानिक रूपसे इसके द्वारा चिकित्साकी गयी है। चपटे जखम। अंगुली-सन्धियोंके पास और अङ्गुलियोंके दरारोंमें खुजली।

कहा जाता है, कि **चायना**के पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं होता। साधारण क्रियामें यह बहुत-कुछ **सल्फर**के समान है तथा स्नायु-संस्थान और जननेन्द्रियकी क्रियामें **फास-एसिड**की तरह। इसके वक्षके लक्षण तथा बलगम **आर्जेण्टम मेट** तथा **स्टैनम**के सदृश हैं। इसका कब्ज बहुत कुछ **पेल्यूमेन** और **पेल्युमिना**की तरह रहता है। अतएव इन दवाओंके साथ इसकी सावधानता-पूर्वक तुलना करनी चाहिये।

सेनीशियो आरियस

(Senecio Aureus)

देशके कुछ भागोंमें, जहाँ यह उत्पन्न होता है, इसे **गोल्डन रैगवर्ट** कहते हैं और अन्य स्थानोंमें **हकलर रूट**। यह एक पुरानी घरेलू दवा है। इसकी परीक्षा आभास-रूपमें ही हुई है। बहुत-सी घरेलू बन जानेवाली दवाओंकी पूरी-पूरी परीक्षा होनी चाहिये। केवल इसी तरह उनकी मुनासिब ताकत और प्रभावका पता लग सकता है अर्थात् निर्देशित रहनेपर उनके उत्पन्न किये लक्षणोंपर उचित रीतिसे उनका प्रयोग हो सकता है।

मासिक रजःस्रावकी गड़बड़ी रहनेवाली जवान लड़कियोंके सम्बन्धमें इसपर विचार करना चाहिये। जिनका भींगनेके कारण या पैर भींगा रहनेके कारण **ऋतु रोध** हो गया है, जिन्हें **अतिरजः**की बीमारी है और जबतक वे एकदम रक्त रहित नहीं हो जातीं, तबतक बराबर स्राव जारी रहता है तथा वे जिन्हें **कष्टरजः** (Dysmenorrhœa) की बीमारी है ; जिन्हें बहुत प्रचण्ड दर्द होता है। इस सार्वाङ्गिक लक्षणोंके साथ, इस दवामें जवान लड़कियाँ, श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहयुक्त यक्ष्माकी ओर अग्रसर होती जाती हैं। बहुत बार तो कई महीनोंतक मासिक रज-स्राव रुका रहता है, वह पीली दिखाई देने लगती है, सूखी खुसखुसी खाँसी रहती है, साथ ही मासिक रजःस्रावके बदले फेफड़ेसे रक्त-स्राव होता है, रक्तका अनुकल्प-रूपसे थूकके साथ आना। समूचे वक्षकी श्लैष्मिक प्रदाहकी दशा रहती है। वे मलिन और कमजोर लड़कियाँ रहती हैं। वे कहती हैं, कि मासिक रजःस्राव होना बन्द हो गया है और बहुत दिनोंकी पुरानी खाँसी है, हवाका प्रत्येक झोंका उन्हें सहन नहीं होता,

उन्हें हमेशा सर्दी लगा करती है और अन्तमें बहुत ज्यादा बलगम निकलता है। वक्षकी सर्दीके साथ वर्षोंतक यक्ष्मा जारी रह सकता है; परन्तु अन्तमें छोटी छोटी गांठें पड़ जानेवाली यक्ष्मा (Miliary tuberculosis) हो जाता है और तीव्र यक्ष्मा होकर रोगिनी कालके गालमें चली जाती हैं। सार्वाङ्गिक श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा और मासिक रजः स्रावकी गड़बड़ीसे सम्मिलित रहनेपर खासकर यही दशा होती है। "रुके हुए रजः स्रावके साथ यक्ष्मा।" इस ढङ्गके रोगमें जब लक्षण मिलते हैं, तो सेनीशियो मासिक रजःस्राव जारी करनेमें बहुत सहायता पहुँचाता है। इस क्रियासे ही आपको मालूम हो जायगा, कि यह ठीक काम कर रहा है, कि खाँसी धीरे-धीरे घटती जाती है। इसमें सन्देह नहीं, कि ऐसी सार्वाङ्गिक दशाके लिये बहुत-सी दवाएँ उपयोगिनी हो सकती हैं; पर यह दवा एक गैरमामूली तरीकेसे निर्देशित रहती है और ऐसे रोगियोंसे इसका एक विशेष सम्बन्ध रहता है। कितने ही प्रदेशोंमें, सेनीशियोका व्यवहार घरेलू दवाके रूपमें मासिक रजः-स्राव जारी कर देनेके लिये होता है।

शरीरकी सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे **रक्त स्रावकी प्रवणता**की बात पढ़कर आप चौंक पड़ेंगे। नाकसे रक्त स्रावके साथ नाककी सर्दी होती है; कण्ठ तथा वक्षसे खून निकलता है; फेफड़ोंसे रक्त-स्राव होता है, सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंकी प्रतिश्यायी दशाके साथ रक्त-स्रावकी प्रवणता रहती है। रक्त-स्रावके साथ मूत्रपिण्डका प्रदाह और रक्त-क्षय। आप जानते हैं, कि किस तरह साधारणतया इन रोगियोंका अन्त शोथमें होता है। ये मोमकी तरह, रक्त-स्वल्प, हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्ता लड़कियाँ, जिनका रजः-स्राव रुक जाता है, जरायु, मूत्रपिण्ड और मूत्राशयसे धीमा रक्त-स्राव होनेके बाद, शोथ-ग्रस्त हो पड़ती हैं। "रक्त-स्वल्पताके कारण शोथ।" श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशाके साथ रक्त-स्रावकी यह सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

मूत्र यन्त्रकी तकलीफोंके भी बहुत से लक्षण इसकी परीक्षामें प्राप्त हुए हैं। दर्द भरा पेशाब। मूत्राशय-ग्रीवामें कष्टप्रद ताप। दर्द गुर्दा, दर्द इतना ज्यादा होता है, कि मिचली पैदा हो जाती है। मूत्र-पथका शोथ। दाहिने मूत्रपिण्ड प्रभृतिमें तेज दर्द। समस्त मूत्र-पथ दर्दसे भरा और रक्त स्रावी रहता है; परन्तु खासकर इस दवाका प्रधान स्वरूप है, रजः-स्राव न होकर रक्त-स्राव होना। जहाँ कहीं भी प्रादाहिक स्थान रहता है या श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रतिश्यायी दशा रहती है, तो मासिक रजः-स्राव न होनेपर उनसे रक्त-स्राव होने लगेगा। अनुकल्प रजःके लक्षणकी दूसरी दवाएँ भी हैं; जैसे,—कि **हैमामेलिस, फास्फोरस** और **ब्रायोनिया**; पर सेनीशियोमें यह दशा आश्चर्यजनक रूपसे है और ऐसे उपसर्गोंकी यह नयी दवा है।

"मूत्रके उपसर्गोंके साथ कष्टरजः; त्रिक और कुक्षि-प्रदेशमें काटनेकी तरह दर्द।" "रातमें खुसखुसी खाँसी, सर्दी, लगकर ऋतु-रोध; स्नायविक उपदाह; आलस्य; शोथ।" यक्ष्मा-ग्रस्त रोगियोंकी मासिक रजःस्रावकी गड़बड़ियाँ।" "दबी हुई खाँसीके साथ श्लेष्माकी घरघराहट।"

खासकर हरित्पाण्डु-रोग-ग्रस्ता लड़कियोंका श्वेत-प्रदर। यह हरित्पाण्डु-रोग, रक्त-स्वल्प दशा, जिसके साथ हरा रंग हो जाता है और जिसे "हरित्-रोग" (Green-sickness) कहा जाता है आदिके लिये महत्व-पूर्ण औषधि है।

सेनेगा
(Senega)

यह एक पुराना फुसफुस-बल-वर्द्धक है और मुझे सन्देह है, कि गत एक सौ वर्षोंसे यह अधिकांश फेफड़ेकी दवाओंके उपादान रूपमें व्यवहृत हो रहा है। इसकी आंशिक रूपसे परीक्षा हुई है तथा पूरा-पूरा विवरण प्रकट करनेके लिये इसकी फिरसे परीक्षाकी जरूरत है। जब किसी दवाकी **पूरी तरह परीक्षा** हो जाती है, तो यह कहा जा सकता है, कि इसके लक्षण पूर्ण रूपसे जाननेमें आ गये और अब मूर्त्तिके रूपमें उनकी परीक्षा की जा सकती है अर्थात् इस भेषजने किसी व्यक्तिके **समस्त** अंशोंपर इस तरह प्रभाव पहुँचाया है, कि उसकी समस्त स्वाभाविक क्रियाएँ तथा उसकी यान्त्रिक क्रियाओंपर एक विचित्र ढङ्गकी छाप लगा दी है इस दवाने कुछ आश्चर्यजनक कार्य किये हैं और ये परिणाम, बहुत-से अवसरोंपर, केवल आनुमानिक कार्य मान लिये जा सकते हैं। अयत्नशील और मनमानी दवा देनेके सम्बन्धमें यही कहा जाता है।

सेनेगा बहुत ज्यादा खासकर वक्षकी दवा है। यह वक्षके उपसर्गोंसे भरी है और वायु-पथोंपर इसकी जो क्रिया होती है, उससे यह एक विचारणीय औषधि हो जाती है; यद्यपि बहुत-से प्रभेदक लक्षण अबतक प्रकट नहीं किये गये हैं। वायु-पथोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीपरकी इसकी अद्भुत क्रियाओंके कारण, इसका प्रधान प्रयोग वक्षकी बीमारियोंमें ही होता है तथा दमाके उपसर्गोंमें बहुत प्रकारके श्वास-कष्टोंमें यह हृत्पिण्ड-जनित हो या दमाके कारण।

वक्षमें बहुत दर्द होता है, खासकर प्लुरिसी फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह) की तरह। इसमें फुसफुस प्रदाह (न्युमोनिया) के भी उपसर्ग हैं; इसका बहुत ही उपयोगी क्षेत्र प्लुरी-न्युमोनिया (फुसफुसवेष्ट और फुसफुस—दोनोंका ही सम्मिलित प्रदाह) है। पशुओंके प्लुरी-न्युमोनियाकी विशेष दवा भी सेनेगा है। जानवरोंके लिये खास दवाका मनुष्योंकी अपेक्षा प्राप्त करना सत्य है; क्योंकि जो दवा आंशिक रूपसे निर्देशित है, वह पशु-जातिको आरोग्य कर सकती है, पर मानव-जातिके रोगोंके लिये खूब अच्छी तरह पृथक्कृत औषधिकी जरूरत पड़ती है। न्युमोनियासे सम्मिलित प्लुरिसीका प्रचण्ड आक्रमण, जो **ब्रायोनिया**के लिये बहुत ही गहरा और बहुत ही दुष्ट रहता है, सेनेगासे आरोग्य हो जाता है। **ब्रायोनिया** और **रस-टक्स**के बीचकी दवा सेनेगा है। इसके प्रचण्ड लक्षण तो **ब्रायोनिया**की तरह होते हैं; परन्तु **ब्रायोनिया**के विपरीत, विश्राम करनेपर बदतर हो जाते हैं। सेनेगाके लक्षण बहुत कुछ **रस-टक्स**की तरह नहीं है; पर इसमें **रस-टक्स**की तरह रोग-ह्रास है; हिलने-

डोलनेपर अच्छा रहता है ; परन्तु विश्राम-कालमें दर्द बदतर हो जाते हैं। वक्षका दर्द, वातज दर्द तथा प्रादाहिक वेदना विश्रामके समय बदतर हो जाती है ; परन्तु खाँसी गतिशील रहनेपर बढ़ जाती है और जरा भी हिलने-डोलनेपर दमाकी तकलीफ बदतर हो जाती है। सेनेगाका रोगी पहाड़ीपर नहीं चल सकता ; वह हवाके विरुद्ध नहीं चल सकता ; क्योंकि इससे वक्षके उपसर्ग और श्वास-कष्ट उत्पन्न हो जाते हैं।

ऐण्टिमोनियम टार्टरिकमकी तरह ही इसमें वक्षकी घरघराहट रहती है ; लसदार श्लेष्मा बहुत ज्यादा निकलता है, जैसे गोंदकी तरह और **कैलि वाइक्रोमिकम**की भाँति डोरीकी तरह, इस रोगीकी ऐसी हालत रहती है, कि वह केवल कुछ दूरतक ऊपर उठा सकता है और आक्षेपिक चेष्टाके कारण वह बलगम निकल जाता है ; **स्पञ्जिया** और **कास्टिकम**की तरह। सेनेगा एक दीर्घ-क्रियाशील औषधि है तथा नयी बीमारीकी दवाकी तरह है। यह तेज और नयी तकलीफोंसे भरी है, वे उपसर्ग जो बहुत तेजीसे, सर्दी लगनेके कारण या समस्त वक्षको आक्रान्त करनेवाली सर्दीके कारण हो जाते हैं।

पाठ्य-ग्रन्थमें चक्षुके कुछ उपसर्ग भी हैं, जो ध्यान देने योग्य हैं। "आँखकी पेशियोंका पक्षाघात।" "चक्षु-उपतारा प्रदाह और कनीनिकापर धब्बे।" "ऊर्द्ध नेत्र चालिनी पेशीका अर्द्ध-पक्षाघात।" "चक्षु-गोलकपर लगातार बनी रहनेवाली यन्त्रणा।" "आँखोंमें इस तरहका दर्द होता है मानो दवा दी गयी हैं।" "पलकोंका प्रदाह।" इसने आँखको ढकनेवाले काँचकी तरह आवरणका धुँधलापन (Opacity of the vitreous humor) आरोग्य किया है।

स्वर यन्त्रके सम्बन्धमें पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है—"तेज सर्दी या अत्यधिक स्वर-यन्त्र परिचालनके कारण स्वर-भङ्ग।" "स्वर-यन्त्रमें लगातार सुरसुरी और जलन, जिससे कि क्षण-भरके लिये भी रोगीको आराम नहीं मिलता तथा उसे लेटनेसे रोकती है, श्वास-रोधका भय।" सेनेगा निर्देशित रहनेपर मुँह और कण्ठमें सूखापन रहता और खाँसी लगातार बनी रहती है, मुँह और कण्ठमें लगातार ताँबा धातुका स्वाद रहता है, मानो वह ताँबेका चूर खाँस रहा है। परीक्षामें बहुत थोड़ी-सी दवा ऐसा सूखापन तथा ताँबेकी तरह स्वाद मुँहमें उत्पन्न कर देगी तथा जीभ की जड़, गलकोष और स्वर-यन्त्रमें ऐसी चुनचुनी होगी और अन्तमें बहुत ज्यादा, गाढ़ा, गोंदकी तरह बलगम निकलकर खाँसीका अन्त होगा। "खाँसनेके समय दाहिनी आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ इन्फ्लुएञ्जा।" "स्वर-यन्त्रका यक्ष्मा।" "वायुनलियोंमें कड़ा श्लेष्मा बहुत-सा इकट्ठा होना, जिससे कि बहुत ज्यादा और अकसर विना कुछ निकले ही खाँसने और खाँसकर बलगम निकाल देनेकी चेष्टा करनी पड़ती है।" इस गाढ़े लसदार बलगमको देखकर बँधी गतसे दवा देनेवाले **कैलि वाइक्रोमिकम, लैकेसिस** और **मर्क्युरियस कोरोसाइवस** दे देंगे ; पर सेनेगाकी उपयोगितापर बिलकुल ही ध्यान न देंगे।"

वक्ष, स्वर-यन्त्र और टेंटुआके रोगोंकी यह अत्यन्त विस्तृत दवा है, जब तेज "सर्दी" इन अंशोंमें बैठ जाती है और खासकर जब लसदार बलगम इसके साथ निकलता है ; यह इतना लसदार रहता है, कि खाँसकर निकाल नहीं सकता ; समय-समयपर तो ऐसा

मालूम होता है, कि साँस रुककर वह मर जायगा ; खाँसेगा और श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टामें वमन करेगा ; पर बलगम गायब हो गया मालूम होता है और रोगी नहीं जानता, कि यह कहाँ जाता है।

"ऐसा अनुभव होना, मानो वक्ष बहुत संकरा हो गया है।" "दमाके साथ बड़ा ही प्रचण्ड श्वास रोध।" सीढ़ी चढ़नेके समय 'लघु-श्वास और वक्षमें दबाव।" "श्वास-कष्ट, खासकर विश्रामके समय।"

"स्वर-भङ्गके साथ सूखी खाँसी ; ठण्डी हवामें और चलनेसे बदतर" ; **फास्फोरस** और **रियुमेक्स**की तरह। ये दोनों दवाएँ खाँसी उत्पन्न करती हैं, जो प्रथम बार हवामें जानेके समय आरम्भ होती है। सेनेगामें **फास्फोरस**की तरह एक दूसरा लक्षण भी है। उसमें इतनी तेज खाँसी आती है, कि रोगी सरसे पैरतक हिल उठता है ; यह समूचे शरीरमें एक कम्पनशील भाव उत्पन्न करता है। ठण्डी हवा श्वासके साथ खींचनेके कारण वह खाँसता है ; खाँसी बहुत ही प्रचण्ड रहती है और बहुत मुश्किलसे बलगम निकलता है। वृद्धोंका, वक्षका प्राचीन श्लैष्मिक झिल्ली-प्रदाह जिसकी आरम्भिक दशाके लिये **ब्रायोनिया** अत्यन्त सदृश दवा थी, इसके साथ ही गाढ़ा, कड़ा डोरीकी तरह श्लेष्मा निकलता है ; सेनेगा इसमें बहुत उपयोगी होता है, यहाँतक कि यदि रोगी यक्ष्माकी अन्तिम दशामें रहता है, तो भी फायदा करता है ; लक्षण बहुत ही कष्टप्रद हो जाते हैं, मुँह भर आना और खाँसी तथा बलगम निकालनेकी चेष्टा ; क्योंकि गाढ़ा, डोरीकी तरह श्लेष्मा बहुत तकलीफ देता है। उसे ठण्डा पसीना होने लगता है, खासकर शरीरके ऊपरी भागमें कड़ा श्लेष्मा रहनेके कारण जिसे रोगी निकाल नहीं सकता, वक्ष रूखे श्वास शब्दसे भरा रहता है। ऐसे रोगियोंके लिये हम **एण्टिमोनियम टार्टरिकम, पाइरोजेन, कैलि बाइक्रोमिकम** प्रभृति दवाओंको सोचते हैं ; पर यह दवा भी ठीक उसी तरह उपयोगी होती है ; खासकर जब स्वर यन्त्र और कण्ठमें बहुत ज्यादा सूखापन रहता है, निद्राकालमें कण्ठमें सूखापन और यह नींद खुलनेपर अनुभवमें आता है और कड़ा डोरीकी तरह श्लेष्मा खासकर निकाल देनेकी शक्ति नहीं रहती। "हिला देनेवाली खाँसी" अर्थात् खाँसी इतनी प्रचण्ड रहती है, कि यह सम्पूर्ण शरीरको हिला देती है। खाँसीके कारण जो संधान होता है उससे बिना इच्छाके ही पेशाब निकल जाता है और माथा तथा आँखोंके ऊपर प्रचण्ड दर्द होता है। सेनेगा खासकर उन रोगियोंके लिये उपयोगी है, जिसमें पहली या दूसरी दशामें फुसफुसावरक-झिल्ली आक्रान्त हो जाती है। दर्द बढ़ जाता है और ऐसा मालूम होता है, कि खाँसनेपर वक्ष फट जायगा। "वक्ष-प्राचीर असहिष्णु रहता है या छूनेपर दर्द होता है।" **"वृद्ध पुरुषोंके फेफड़ोंसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा-स्राव होना।"** लसदार कड़े श्लेष्माकी सेनेगा प्रधान दवा है और वृद्ध पुरुषोंके रूखे श्वास शब्दकी, जब कि कोई दूसरा लक्षण नहीं रहता। यह अकसर कण्ठको साफ कर देता है और वृद्ध पुरुषोंको, जब स्वास्थ्य-भङ्ग होता जाता है, सम्हाल देता है। "वक्षमें श्लेष्माकी बहुत ज्यादा घरघराहट और वक्षमें इधर-उधर उड़नेवाला दर्द।"

इसने कभी-कभी प्लुरो-न्युमोनिया आरोग्य किया है, जब रोगीमें **फास्फोरस** और

आर्सेनिकम जैसी बहुत क्लान्ति थी। ऐसे रोगियोंमें सेनेगाने प्रतिक्रिया आरम्भ कर दी है; इसमें ऐसी ही दुर्बलता है। खासकर यह यक्ष्माकी बढ़ी हुई बीमारीमें उपयोगी होता है, जब कि हमारे बताये हुए लक्षण मौजूद रहते हैं। यह उपशामकके रूपमें क्रिया करता है। यह बिना अधिक रोग वृद्धिके ही अत्युत्तम सुधारका कार्य करता है; क्योंकि इसका कृत्रिम लक्षणोंसे बहुत अधिक सम्बन्ध हैं। यह **सल्फर** और **साइलिसिया**की तरह गहरायीतक क्रिया नहीं करता। हमलोग ऐसी दवाएँ तभी देते हैं, जब हमलोगोंको पूरा विश्वास हो जाता है, कि हम आरोग्य कर सकते हैं और अभी भी आरोग्यके योग्य हैं; पर जब हम समस्त आशाएँ त्याग देते हैं तब हमलोग अत्यधिक वेदना-पूर्ण अंशोंपर ध्यान देते हैं; हमलोग स्थानिक उपसर्गोंपर विशेष ध्यान देते हैं, उन लक्षण-समूहोंपर जो बहुत तकलीफ देते हैं और मरम्मत कर देनेकी चेष्टा कर देते हैं। यदि वक्षकी तकलीफें और क्लान्ति बहुत ही तीव्र हो जायें तो यह सत्य है, कि **आर्सेनिक** कुछ मरम्मत अवश्य करेगा और उसमें जीवनका अनुभव कुछ अधिक ला देगा और विशेष आरामके साथ उसकी मृत्यु होगी। यदि वक्षमें बहुत ही तेज दर्द है, तो **ब्रायोनिया** और सेनेगा ऐसी दवाएँ उसे सहायता पहुँचायेंगी; यदि उसे यन्त्रणा है और कुचल जानेकी तरह अनुभव होता है और उसे एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वको हटना पड़ता है, तो **आर्निका** आराम पहुँचायगा; पर ये दवाएँ जीवनीपर गहराईतक नहीं जातीं कि यक्ष्माकी तरह बद्धमूल रोगका निकाल बाहर कर सकें। इतनेपर भी इन दवाओंके द्वारा कोई यक्ष्माके रोगीको सुख-पूर्वक स्मशानतक पहुँचा दे सकता है; केवल उसकी मरहम-पट्टी करते जाना और तुरन्त जो तकलीफ पैदा हो जाये, उसकी दवा देना। दर्द-नाशक और हवाके साथ सुँघानेवाली दवाओंकी अपेक्षा इन दुरारोग्य रोगियोंको होमियोपैथिक दवाएँ ज्यादा आराम पहुँचाती हैं।

विश्राम-कालमें तथा श्वास ग्रहण करनेपर वक्षका दर्द बदतर हो जाता है। दाहिनी करवट लेटनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; वक्षकी दीवारोंमें बहुत यन्त्रणा। खाँसनेके समय दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे दर्द। खुली हवामें टहलनेके समय वक्षका दर्द अच्छा रहता है।

सीपिया

(Sepia)

सीपिया लम्बी, पतली, संकरा वस्ति-गह्वर और शिथिल तन्तु और पेशीवाली स्त्रियोंके लिये उपयोगी है, ऐसी स्त्री ठीक स्त्रीके अनुरूप नहीं बनी रहती। जिस स्त्रीके ऊरु सुदृढ़ पुरुषोंकी तरह होते हैं, वह सन्तान-प्रसवके योग्य नहीं रहती, वह वस्ति-गह्वरके यन्त्र और मांस तन्तुके शिथिल हुए बिना स्त्रियोचित क्रियाएँ नहीं कर सकती। ऐसी बनावट सीपियाकी बनावट है, बहुत लम्बी, कृश, संकरी, कन्धेसे लेकर नीचेतक सीधी सरल।

सीपियाकी रोगिनीका जबर्दस्त स्वरूप मनमें दिखाई देता है, स्नेहकी दशामें दिखाई देता है। बहुत अधिक रूपमें, यह दवा स्वाभाविक प्रेम अनुभव करनेकी योग्यता हरण कर लेती है; प्रेम-पूर्ण होने नहीं देती। माताके शब्दोंमें इसका वर्णन यों है :—"मैं जानती हूँ, कि मुझे पति और पुत्रसे प्रेम करना चाहिये। मैं उन्हें प्यार किया करती थी; पर अब उस विषयपर मेरा भाव ही नहीं है।" प्रेम स्नेहमें परिणत नहीं होता, अनुभव-शक्तिकी और ऐसे स्नेहको ठीक-ठीक बैठा लेनेकी कमी रहती है प्रेमका प्रदर्शन भी नहीं होती। ध्यान देनेपर यह दिखाई देगा, कि स्वतः प्रेम इस तरह परिवर्त्तित नहीं किया जा सकता; पर स्नेह परिवर्त्तित किया जा सकता है; क्योंकि ये प्रेमके दिखावे हैं। इस दवाका एक बिचित्र रूप यह है, कि स्नेह शान्त पड़ जाता है; सभी चीजें अद्भुत दिखाई देती हैं; रोगिनी अनुभव नहीं कर पाती; जिन्हें वह प्यार करती है, उनसे वह अन्तरित और अलग हो जा सकती है। यह उन्मादकी सीमापर है; यह उससे बिलकुल ही अलग है, कि जब किसी पतिसे धिक्कारी हुई औरत अपने ज्ञान-शक्ति-सम्पन्न मनमें यह जानती है, कि वह उसे प्यार नहीं करती।

प्रसूतिकी अवस्थामें किसी स्त्रीमें यह दशा, जरायुसे या अन्य स्थानसे रक्त-स्राव होनेपर अथवा बहुत दिनोंका अजीर्ण रोग रहनेपर उत्पन्न हो जाती है; रक्तके दौरानमें गड़बड़ीके साथ ऊँचे दर्जेकी रहन-सहन, शरीरका पीलापन, मन और शरीरका कमजोर पड़ जाना। यह दशा पुरुषोंमें शायद ही कभी प्रकट होती है; परन्तु स्त्रियोंमें तो यह आश्चर्य-जनक लक्षण है। अक्सर बच्चेको दूध पिलानेवाले कालमें, बहुत बलवान सन्तानको स्तनका दूध पिलानेके कारण या कमजोरोंको दूध पिलानेके कारण यह दशा आती है; जो बहुत दुग्ध-रस चाहते हैं और माताको नीचेकी ओर खींच लाते हैं। यह उन स्त्रियोंमें भी उत्पन्न हो सकती है, जिनका पति बलवान है। अत्यधिक कामोत्तेजन और अत्यधिक काम चरितार्थ ठण्डक ला देते हैं और वह एक सर्द स्त्री बन जाती है।

उत्तेजना-प्रवण, स्नायविक और चञ्चल रहनेवाली स्त्री, विपरीत हो जाती है; ठण्डी और उसकी मानसिक दशा उदासीन हो जाती है। इतनेपर भी सीपियामें किसी भी दवाका सब तरहकी उत्तेजनशीलता है, शोर गुलसे रोग वृद्धि, उत्तेजना, सङ्ग-साथ, मांस-तन्तु और मनका असीम चिड़चिड़ापन; एक उत्तेजना-प्रवण आत्मघाती रोगिनी; विषादोन्मत्त, बैठी रहती और कुछ भी नहीं बोलती है; मौनी; जवाब देनेके लिये दबाव डालनेपर नकियाकर बोलती है। सब तरहके आनन्दका अभाव; यह अनुभव करनेकी शक्तिका न रहना, कि पदार्थ वास्तविक हैं; सभी चीजें अद्भुत दिखाई देती हैं; जीवनको आनन्द पहुँचानेवाली सभी चीजोंसे प्रेमका अभाव; कोई आनन्द नहीं; रोगिनीके लिये जीवनमें कुछ नहीं है। वह सङ्ग-साथमें बदतर रहती है; इतनेपर भी अकेली रहनेसे डरती है; जब वह सङ्ग-साथमें रहती है, तो ईर्षा-पूर्ण रहती है, मन सुस्त रहनेपर भी वह ईर्षा-पूर्ण रहती है; जिन्हें वह सबसे ज्यादा प्यार करती है, उनसे ही घृणा करती है। सीपियाकी रोगिनी अपने मतको काटने देना नहीं चाहती। यदि वितर्क उठता है, तो उसका सर्वोत्तम भाव गायब हो जाता है।

दूसरी सबसे ज्यादा सार्वाङ्गिक दशा है—एक विचित्र प्रकारका पीलापन, जिसे अपने मनमें जमा रखनेकी आपको जरूरत दिखाई देगी। सीपियामें कामला रोग है; पर यह अद्भुत पीलापन मोमकी तरह रहता है, रक्त-स्वल्प चेहरा, पीलापनके साथ दाग-दगीलापन, पीलापन, नाकके आर-पार और गालोंपर पीला, पीताभ रङ्ग, जिससे नाकपर पीली जीन चढ़ी रहती है और चेहरेके अगल-बगल नीचेकी ओर भी रहता है। अनगिनती दागोंसे चेहरेका भरा रहना भी साधारण बात है, बड़े-बड़े भूरे धब्बे जैसे गर्भावस्थामें हो जाते हैं; गालोंपर भूरे दाग, भूरे मसे, लाल या गुलाबी मसे नोकदार हो उठते हैं; चेहरे, वक्ष और उदरपर पीले दाग (Liver spots); चेहरेका चर्म मलिन और फूला-फूला रहता है, ऐसा मालूम होता है, मानो पेशियाँ थुलथुली हैं; बुद्धिकी उभरी हुई लकीरें रहनेवाले रोगीके लिये शायद ही कभी सीपिया निर्देशित होगा; जो मनुष्य बहुत समयतक सोचता रहा है, उसके चेहरेपर स्पष्ट रेखाएँ और दीर्घकालतक सोचनेवाले व्यक्तियोंके उग्र कोण बने रहते हैं, यह उनमें होता है, जो बुद्धि और इच्छा शक्ति सम्पन्न होते हैं। सीपियाका रोगी मूर्ख और सुस्त रहता है, धीरे-धीरे सोचता है और भूल जाया करता है; मन किसी तरह सक्रिय रहता है और यह चेहरेपर ही दिखाई देता है। बहुत-से अवसरपर, यद्यपि सीपियाका रोगी एक जल्दबाज रोगी रहता है; पर बुद्धिकी सुस्ती इसका एक स्पष्ट स्वरूप है और इसकी छाया चेहरेपर ही पड़ती है। चेहरा अमूमन फला फूला रहता है; अकसर चिकना और गोल रहता है तथा उसपर बुद्धि-सम्बन्धी रेखाएँ और कोण नहीं रहते।

यह रोगी रक्त स्वल्प रहता है; ओंठ और कान पीले, पीला, मलिन चेहरा, अंगुलियाँ और हाथ कुञ्चित, पीताभ, मोमकी तरह और रक्त-स्वल्प रहता है। सीपिया शरीरमें क्षीणता ला देता है और चर्म झुर्री-भरा हो जाता है; व्यक्ति अकाल वृद्ध दिखाई देता है; ३५ वर्षके युवकके चेहरेपर झुर्रियोंके साथ पीले धब्बे, जिससे वह पचास बरसका दिखाई देता है। बच्चा झुरियाँ-भरे वृद्ध पुरुषकी तरह दिखाई देता है।

सभी उपसर्गोंके साथ कब्ज रहता है। आँतोंमें अपनी सामग्री निकाल बाहर करनेकी योग्यता नहीं रहती और रोगीको हमेशा कब्ज बना रहता है; गर्भावस्थामें कब्ज, धीमा, कष्टकर मल, भेंड़की मींगीकी तरह मल; सरलान्त्रमें हमेशा ढेला रहनेकी तरह अनुभव होता है; कभी भी सरलान्त्रका खाली नहीं कर सकता; यद्यपि वह पाखाने जाता है, पर हमेशा सरलान्त्रमें एक ढेला रहनेका अनुभव हुआ करता है। मल जब नीचेकी आँतोंमें आता है, तो यह तबतक नहीं निकलता, जबतक खूब जमा नहीं हो जाता, जिससे मलके बाहर निकलनेके लिये दबाव पड़ता है।

सीपियाके रोगीका एक दूसरा लक्षण है, राक्षसी-भूख। शायद ही कभी सन्तुष्ट होता हो, यहाँतक कि भरपेट खा लेनेपर भी उसे चबानेकी तरह, खालीपन और भूखका भाव पाकाशयमें मालूम होता है, यह भोजनसे नहीं घटता या सिर्फ क्षणभरके लिये घटता है। यह आश्चर्यजनक है, खासकर जब इसमें कब्ज सम्मिलित रहता है और स्नेहकी विचित्र दशा मिली रहती है।

जब ये लक्षण जरायुकी स्थान-च्युतिसे सम्मिलित रहते हैं, तो सीपिया अवश्य आरोग्य करेगा। यह स्थान-च्युति चाहे कैसी भी बुरी क्यों न हुई हो या किसी तरहकी भी स्थान-भ्रष्टता क्यों न हो। यह समस्त भीतरी अंशोंकी शिथिलताका परिणाम है, मानो वे सब झूल पड़े हैं, उन अंशोंको ऊपर उठाये रखनेके लिये एक पट्टी बाँधना चाहती है या उस स्थानपर हाथ या रूमाल रखे रहना चाहती है ; एक फोंफीकी तरह अनुभूति, बैठे रहने और **पैर-पर पैर चढ़ाकर बैठनेपर** अच्छी रहती है।

जब ये उपसर्ग एकत्र सम्मिलित हो सकते हैं, चबानेकी तरह भूख, कब्ज, नीचेकी ओर खिंचाव और मानसिक दशा, तो यह सीपिया और केवल सीपियाका ही रोगी हो जाता है। एक यथेष्ट नहीं है ; पर यह तो लक्षण-समूह है।

सीपियामें बढ़ी हुई श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी प्रवणता है, दूधकी तरह श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे स्रावकी प्रवणता रहती है। पाचन रुक जानेके बहुत दिन बाद और पाकाशय खाली रहनेपर मिचली पैदा हो जाती है और कुछ वमन होता है। यह पाकाशयकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी एक दशा है और जब इसके साथ दूधकी तरह वमन होता है, तो सीपिया लाभ करता है। गर्भावस्थाके वमनका यह कोई असाधारण लक्षण नहीं है। खाद्यका वमन होता है और पाकाशयकी सामग्री खाली हो जानेके बाद दूधकी तरह तरल या तो वमन करता है अथवा डकारके साथ ऊपर चढ़ आता है, प्रातःकालीन वमन, पहले खाद्य, फिर दूधकी तरह पदार्थ। इसको दूधके वमनके साथ न गड़बड़ा दीजिये ; कुछ दवाओंमें केवल दूधका वमन होता है और सीपिया भी ऐसा करता है।

पश्चात् नासासे सफेदी लिये दूधकी तरह स्राव तथा योनिसे, खाल उधेड़ देनेवाला, दूधकी तरह श्वेत-प्रदर, जो कभी-कभी दहीका रूप धारण करता है, गाढ़ा, पनीरकी तरह और भयानक बदबूदार ; इसमें गाढ़ा, हरा और पीला स्राव भी होता है, इसमें श्लैष्मिक-झिल्ली-पर सूखे रूखड़े पदार्थ भी हैं।

नाककी बहुत दिनोंकी सहजमें न छूटनेवाली जिद्दी सर्दी, गाढ़ी, हरी और पीली पपड़ियाँ नाकसे निकलती हैं और कभी-कभी खखारनेपर पश्चात् नासासे आ जाती हैं, गाढ़ी, चमड़ेकी तरहकी बनावट। गन्ध और स्वादका न मिलना। पकाये हुए खाद्य, मांस और शोरवेकी गन्धसे मिचली आती है। गाढ़े, लसदार, पीले बलगमके साथ वक्षकी सर्दी, जिसके साथ ही प्रचण्ड खाँसी, ओकाई, मुँह भर आना, बहुत देरतक तेज ओकाई और वमन रहता है ; सूखी खाँसी, पर इतनेपर भी घरघराहट रहती है। कुकुर खाँसी (हूपिङ्ग खाँसी) ; ओकाई और पेशाब निकल जानेके साथ दमाकी खाँसी। खाँसी बहुत तेज आती है। पहली नींदके समय ही खाँसी (**लैकेसिस**, चिड़चिड़े बच्चोंको— **कैमोमिला**)। यक्ष्मा। सूजाक दब जानेके बाद बहुत तेज फेफड़ेका यक्ष्मा ; यदि जल्द ही प्रयोग हो जायेगा, तो यह रोक देगा। शामके वक्तसे लेकर आधी राततक आक्षेपिक खाँसी ; खाँसीके समय अपना वक्ष पकड़ लेता है (**ब्रायोनिया, नेट्रम-सल्फ, फास्फोरस**)।

चर्मके उद्भेद। भैंसिया दादकी तरह जननेन्द्रियके आस पास उद्भेद उत्पन्न करनेकी प्रवणता तथा ओंठ और मुँहपर ; चेहरा और धड़पर दाद। इसने कमरबन्दकी तरह दाद

(Zona) तथा भगोष्ठ और लिङ्गाग्र-चर्मपरके दादकी तरह उद्भेद आरोग्य किये हैं। बगल तथा कोहनीकी नोंकपर छालोंकी तरह उद्भेद ; कोहनीपरके बड़े-बड़े खरोटोंकी ढेर लगा देनेवाले उद्भेद ; सन्धियोंपर मोटी पपड़ियाँ जमती हैं, अङ्गुलियोंके मध्यमें उद्भेद ; तर उद्भेद, जिनसे पानीकी तरह तरल निकलता है या गाढ़ा, पीला पीव-मिला तरल मवाद निकलता है।

सीपिया वह कड़ापन उत्पन्न करता है, जो अन्तस्त्वकार्बुदकी तरह किसी-न-किसी रूपके उद्भेदमें होता है, ओंठोंपर कड़ापन पैदा हो जायगा और फटेगा तथा खून वहेगा। अन्तस्त्वकार्बुदकी तरह दिखाई देनेवाले शलकावृत्त (Scaly) उद्भेद खासकर सीपिया है। जब यह भूसी उतर जाती है, तो पीली, हरी खाल उघड़ी तली रह जाती है और ज्योंही एक पपड़ी उतरती है, दूसरी बनती है ; अन्तमें यदि समयके पहले ही उखाड़ ली जाती है, तो खून बहने लगता है। ओंठ, नाककी प्राचीर और पलकोंका अन्तस्त्वकार्वुद सीपियाने आरोग्य किया है। मिट्टीकी सिगरेटकी नली व्यवहार करनेवालोंका पुराना काठिन्य इसने आरोग्य किया है, जहाँ यह बनने लगता है और उसके नीचे गाढ़ा, पीला, पीवकी तरह रस-स्राव दिखाई देता है। यह चर्मकी बतौड़ी या नकड़ा (Lupoid) के आकारके रोग, जिनसे रस-स्राव होता है, उनमें निर्देशित रहता है ; कभी-कभी एक घेरा बनानेके लिये मध्यसे भरने लगता है ; यह सीपियाकी एक खास दशा है । इनका कड़ापन और बैंगनी रङ्ग एक रूपसे सीपिया हो जाते हैं। इस बैंगनी दृश्यमें सीपिया लैकेसिसके समतुल्य रहता है।

सीपियामें हिस्टीरियाकी प्रकृति रहती है। रोगिनीपर रुलाईका दौरा होता है, एक मिनटभर उदास, शरीफ, विनम्र रहती है और क्षणभर बाद ही अरुचिकर, उत्तेजित और जिद्दी हो जाती है। आप नहीं जान सकते, कि इसके बाद ही वह क्या करना चाहती है। वह अद्भुत बातें कहती और विचित्र कार्य करती है, गलतियाँ करती हैं, उसपर निर्भर नहीं रहा जा सकता ; मानसिक सहनशीलता नहीं रहती ; अपने परिवारवालोंपर स्नेह नहीं रहता समस्त मन दुर्बल और विशृङ्खलित रहता है, उस समय नहीं, जब ज्वर रहता है ; बल्कि यह सोरा और प्रमेह-विषका पुराना प्रदर्शन है। भूत प्रेतोंका भय, कुछ गैरमामूली घटना घटेगी ; वायु-मण्डल मूर्त्तियोंसे परिपूर्ण हो रहा है, दिखाई नहीं देती ; पर वह जानती है, कि वे हैं, मरे हुये दोस्त या दूसरे रूपोंमें और बहुतकर उसके धार्मिक विचारोंके अनुसार वे मौजूद हैं। जबतक किसीको रञ्ज नहीं कर लेती, कभी सुखी नहीं होती ; अपनी तकलीफोंका वर्णन किया करती है ; व्यङ्ग बोलनेवाली, अपमान करनेवाली ; उन्मादका ; दरिद्रताका भय। "भूखों मरनेका भय, डरपोक रहती है और अपनेको अपमानित अनुभव करती है, सजहमें ही डर जाती है और अमङ्गलकी आशङ्कासे भरी रहती है।" "कामुक, चिड़चिड़ी, जरा-सा कारण मिलते ही बहुत ज्यादा चिढ़ उठना, बहुत सहजमें नाराज हो जाती है। विपन्न और शाप देनेकी प्रकृति रहती है।"

स्नायविक सर-दर्द, पित्तज, सामयिक, प्रचण्ड रहता है ; समस्त मस्तकको आक्रान्त किये रहता है ; रक्त-सञ्चयी सर-दर्द। साधारणतः लेटे रहनेपर, एकदम शान्त रहनेपर अच्छी रहती है ; साधारण चलने-फिरनेपर बदतर हो जाती है ; पर सीपियाके अन्य सार्वाङ्गिक

लक्षणोंकी तरह तेजीसे चलने-फिरनेपर आराम पहुँचता है ; वह चलकर अपनी तकलीफोंको घटा सकती है। मस्तिष्कका रोध, विचारोंका धीमापन, मस्तिष्क कार्य न करेगा और मानसिक परिश्रम सर-दर्दको बढ़ा देता है। अच्छी खाँसी नींद आनेपर इसमें आराम पहुँचता है ; पर यदि थोड़ी ही देर सोनेपर वह जगा दी जाती है, तो सर-दर्द बढ़ जाता है। यही गतिशीलताके सम्बन्धमें भी देखनेमें आता है ; आँखें सर या शरीरको हिलाना, गर्म कमरेमें इधर-उधर चलना-फिलना दर्दको बढ़ा देता है ; पर अच्छी तरह खुली हवामें तबतक घूमती है, जबतक गरम न हो जाये, उससे आराम पहुँचता है। यह शरीरकी शिथिल दशा है, जो व्यायाम चाहता है और प्रचण्ड व्यायाम आरामकी दशामें रखता है। सीपियाके उपसर्ग खुली हवामें तबतक बदतर रहते हैं, जबतक उसमें लगातार हिलना-डोलना नहीं सम्मिलित रहता ; यह खुली हवामें व्यायाम करनेपर अच्छा रहता है और घरमें बदतर हो जाता है। झुकनेपर, गतिशील रहनेपर, खाँसनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, झटका लगनेपर, रोशनीसे, सर घुमानेपर, पीठके बल लेटनेपर और सोचनेपर सर-दर्द बदतर हो जाता है ; पर लगातार कड़ा व्यायाम करने पर आराम होता है, जैसा कि कड़े बन्धनसे, तापके प्रयोगसे होता है, यद्यपि गर्म कमरेमें यह बदतर हो जाता है।

सीपियाका ऐसा भी सर-दर्द होता है, जो खासकर पश्चात् मस्तकको आक्रान्त करती है, सवेरेके वक्त बदतर रहता है ; आँखें और कनपटी होकर तेज दर्द ; यह पसीना होनेपर अच्छा होता है और हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर बदतर हो जाता है ; झुकनेपर धमक मालूम होता है और सीढ़ी चढ़नेपर बदतर हो जाता है।

फास्फोरसका सर-दर्द सोनेपर आराम हो जाता है ; पर लगातार हिलते-डोलते रहने पर बढ़ जाता है। इसे रोगी सहन नहीं कर सकता। पुरानी चालके पित्तज सर-दर्दोंके लिये सीपिया उपयोगी है। वमन हो जानेके बाद यह अच्छा रहता है ; दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है ; खाद्यसे घृणा, इसके बाद मिचली, वमन और रोगी सो जाता है और सर-दर्द-रहित भावसे जागता है। इसका **सैंगुइनेरिया**से सादृश्य है, वमन होनेपर अच्छा रहता है ; अंधेरे कमरेमें अच्छा रहता है ; यद्यपि दिशा अलग है।

मस्तकका स्नायु-शूल ; गठियावाले व्यक्तियोंका सामयिक स वमन सर-दर्द ; युवतियाँ, जिन्हें शोर-गुल सहन नहीं होता अथवा बहुत ही कोमल मांस-तन्तुओंवाली स्त्रियाँ, खासकर काली आँखेंवाली, साँवली और जो रोगसे मलिन हो पड़ी हैं, उनका प्रचण्ड रक्त-सञ्चयी सर-दर्द। अकसर सर-दर्दोंके साथ पाण्डु-रोग आ जाता है ; सर-दर्दके अन्तमें वमन और कुछ ही दिनमें चर्मका कामला-ग्रस्त हो पड़ना, जो चला जाता है ; परन्तु फिर दूसरी बारके सर-दर्दके साथ लौट आता है। मिचलीके साथ प्रत्येक दिवस सवेरे सर-दर्द ; खाद्यकी गन्ध अप्रसन्नकर।

जैसा ऊपर बताया गया है, सीपियामें मनकी दशा जड़वत हो जाती है। काम नहीं करेगा, सवालोंका जवाब न देगा, मानो नशेमें हो, सुन्न हो गया हो ; आँखें और चेहरा फूला ; चक्षु-श्वेत-पटल पीले और कामला-रोग-ग्रस्त। इसका कभी-कभी प्रचण्ड वमनोद्वेगमें अन्त

होता है। मसालेदार, तीखी, बियरकी तरह कटु चीजोंकी इच्छा करता है—पुराने शराबी सर-दर्दके साथ खानेकी इच्छा करते हैं; संन्यास रोग हो जानेकी सम्भावना। "शराब पीनेवाले और अत्यधिक कामवासना चरितार्थ करनेवालोंका संन्यास, जिनको गठिया और बवासीर प्रभृति होनेकी प्रकृति रहती है।" "मध्य वयसवाले, लम्पट, जिन्हें सन्धिवात और बवासीरकी शिकायतें रहती हैं, उन्हें संन्यास हो जानेकी सम्भावना; उन्होंने मामूली तौरसे संन्यास रोगके कई आक्रमण पार कर दिये हैं और बहुत बार इसके प्रारम्भिक लक्षण देखे हैं।

बाह्य मस्तकमें उद्भेद निकलते हैं और सरके केश झड़ जाते हैं; पीली पपड़ियाँ; पीब तथा अन्य तरलोंका स्राव होना; फफोले; बच्चोंका अकौता।

आँखें; छाले और फुन्सियोंके तथा श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके लक्षण; दानेदार पलकें जखम तथा सोराके प्रदर्शन; आँखों और आँखोंके पास बहुत से रस-स्रावी उपसर्ग; पलकोंके किनारे रस-भरी फुन्सियाँ; चक्षुगोलकपर फुन्सियाँ, ऐसा मालूम होता है, मानो परदेके भीतरसे देख रहा है; पलकोंपरका अर्बुद, पलकोंका सट जाना, गुहौरी प्रभृति।

कानोंसे गाढ़े, पीले पीबका स्राव होता है; बदबूदार स्राव।

नाक इसका प्रिय स्थान है; गन्धका नष्ट हो जाना, पीली या हरी मोटी पपड़ियोंसे नाक भरी रहती है और नाक छिड़ककर निकाली नहीं जा सकती, गाढ़े, पीले पीबका अदम्य स्राव। "नाकसे बड़ी-बड़ी बदबूदार ठेपियाँ निकलती हैं; ये अकसर इतनी बड़ी रहती हैं, कि उन्हें खींचकर मुँहतक लाना और बलगमके साथ निकाल देना पड़ता है, जिससे वमन हो जाता है। खासकर बायें नथुनेकी सूखी सर्दी। नाक छिड़कनेपर पीले या हरे श्लेष्माके ढेले या ढीलापन लिये हरी पपड़ियाँ रक्तके साथ निकलती हैं।" यह सर्दीके सबसे बदतर आकारका वर्णन है, बहुत कम व्यक्ति इसे इस तरह चलने देंगे, वे इसके लिये स्थानिक औषधिका प्रयोग करते हैं और नाकको आरोग्य करते हैं और इस प्रणालीसे सर्दी तुरन्त वक्षमें चली जाती है, जिससे फेफड़ेका यक्ष्मा हो जाता है।

मसूढ़े दाँतसे अलग हो जाते हैं। सर्दी लगनेके कारण दाँतका दर्द और स्नायु शूल।

कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह अनुभूति (**लैकेसिस**की तरह); पर यह पिछला निगलनेपर अच्छा रहता है (यही यदि क्रिमि-रोगके साथ हो, तो **सिना**को निर्देशित करता है)। **लैकेसिस**की तरह कालर और कचोली (Corsets) का सहन न होना। **लैकेसिस**की तरह प्रथम निन्द्रामें बदतर हो जाता है।

भूख, प्यास, भोजन, पान और पाकाशयके सम्बन्धमें भी सीपिया बहुत-सी बातें प्रकट करती है। सीपियाका रोगी अपने विकृत पाकाशय, खट्टी और तीती खाद्यकी डकारें, आम और पित्त तथा खट्टे और तीता खाद्य और श्लेष्माके वमनसे जानकार रहता है;

एकदम खालीपन, भूखका, खालीपनका पाकाशयका भाव ; कभी-कभी भोजन कर लेनेपर भी दूर नहीं होता। कभी-कभी चबानेकी तरह दर्द, धँसते जाना, चबानेकी तरह भूख रहती है, जो खा लेनेपर भी नहीं जाती। करीब-करीब लगातार मिचली बनी रहती है, खासकर सवेरे, मिचली, डकारें और दूधकी तरह तरलका वमन होता है ; जब पाकाशय खाली रहता है, तो वमन, थूकना और दूधिया तरल डकारोंमें निकलता है। खाद्यसे घृणा, खाद्य-पकनेकी गन्धसे घृणा **कोलचिकम** और **आर्सेनिक**की तरह। रोगी सवेरे एकदम खालीपनके भावके साथ जागता है ; पाकाशयमें कष्ट और पूर्णता रहती है, इसके बाद डकारें आती हैं, श्लेष्मा और दूधकी तरह तरल ऊपर चढ़ता है ; गर्भावस्थाका वमन ; सवेरे दूधकी तरह पानीका वमन ; यह सीपियाका एक चरित्रगत लक्षण है।

कटु, जलती हुई डकारें, कलेजेमें जलन ; तीखी डकारें, कण्ठकी खाल बधेड़ देती हैं ; मुँहमें पानी भर आना, यह भी डकारका ही एक दूसरा रूप है। कटु, खट्टा तरल, ऊपर चढ़नेके समस्त पथमें जलन पैदा कर देता है, सङ्कोचन पैदा कर देता है, झुनझुनी और तीव्र यन्त्रणा।

प्रचण्ड मिचली ; पाकाशयमें एक भयानक घबड़ाहटके साथ मृत्युकी तरह धँसते जानेका भाव।

फास्फोरसमें खास ढङ्गकी एक भूख रहती है, जो खानेपर बन्द हो जाती है। **इग्नेशिया**का रोगी हमेशा ठण्डी साँसें लिया करता है ; इस भावसे "छुटकारा नहीं पा सकता।"

ओलियैण्डरमें भी सब चला गया खालीपनका भाव है, मानो वह कर जायगा ; कभी-कभी यह खा लेनेपर भी नहीं जाता ; खाना पचता नहीं ; बल्कि दूसरे दिन अनपची अवस्थामें निकल जाता है।

लाइकोपोडियममें भी एकदम खालीपनका भाव रहता है, जो भोजन कर लेनेपर भी नहीं जाता और खा लेनेके बाद भी खानेके पहले जैसा ही बढ़ा हुआ मालूम होता है, भोजन कर लेनेके बाद धड़कन पैदा हो जाती है।

केलि-कार्बमें भी ऐसा ही है, भोजन करनेके बाद रोग-ह्रास नहीं होता ; बल्कि यह भोजन करनेके बाद और भी बढ़ जाता है, जिसके बाद पूर्णता और टपक होती है।

यकृत और हृत्पिण्डकी तेज बीमारियोंमें, पाकाशयिक समीकरण जारी नहीं रख सकता कलेजा धड़कना ; बहुत कमजोरी ; यकृतमें रस-सञ्चय ; सफेद दस्त प्रभृति लक्षण रहते हैं। भोजनके बाद अच्छी न होनेवाली मृत्युकी तरह दुर्बलताका भाव **डिजिटेलिस**में है। सीपियामें इस लक्षणके साथ प्रेमका अभाव रहता है, सरलान्त्रमें एक ढेलेकी तरह मालूम होता है, साथ ही कब्ज रहती है।

"सरल-से-सरल भोजन करनेपर भी पाकाशयमें दर्द। पाकाशयमें जलन और सुई गड़नेकी तरह ; वमन होनेपर पाकाशयका दर्द और भी बदतर हो जाता है।" यह एक

अद्भुत लक्षण है ; क्योंकि अमूमन वमन तकलीफको घटा देता है। सीपियाका पाकाशय एक चमड़ेके थैलेकी तरह हो जाता है, इसे भर दीजिये और जैसा खाया गया है, वैसा ही खाद्य निकल आता है या समय-समयपर खट्टा रहता है या पित्त-मिश्रित रहता है।

यकृतका प्रदाह, कामलाके साथ यकृतकी विवृद्धि, दर्द, पूर्णता, तनाव, यकृत-प्रदेशमें तकलीफ।

तलपेट वायुसे तना रहता है, गुड़गुड़ाहट और तनाव। ये तकलीफें अकसर पुरानी रहती हैं, जैसे कि हाँड़ी-जैसी पेटवाली माताको होती है ; तलपेट भूरे धब्बोंसे भरा रहता है।

सीपियाने फीता-क्रिमि आरोग्य की है।

पुराना अतिसार, मल चाशनीकी तरह, लौंदा-लौंदा ; पर्यायक्रमसे होनेवाला अतिसार और कब्ज ; मलके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा ; या तो कब्ज रहता है या अतिसार ; कड़ा मल चाशनीकी तरह श्लेष्मासे ढँका रहता है। कई दिनोंतक पाखाना नहीं होता और तब बैठता और जोर लगता है, यहाँतक कि बहुत-सा पसीना निकल आता है ; पर पाखाना नहीं होता ; पर अङ्गुलीसे सहायता लेनेपर और बहुत देरतक जोर लगानेपर थोड़ा-सा पाखाना होता है, इसके बाद प्यालाभर चाशनीकी तरह श्लेष्मा निकलता है या पीला या पीलापन लिये सफेद और बहुत बदबूदार श्लेष्मा निकलता है।

चाशनीकी तरह मलके साथ नया अतिसार या आमाशय **कैलि-बाइक्रोम** और **कोलचिकम**के बहुत सदृश है ; पर सीपियामें पुराना अतिसार या कब्ज रहना, जिसमें मल चाशनी की तरह श्लेष्मासे ढँका रहता है या उसके बाद चाशनीकी तरह श्लेष्मा निकलता है।

इसे **ग्रैफाइटिस**से न गड़बड़ा दीजिये, जिसमें बहुत कूथन और पसीनेके साथ बहुत ज्यादा पाखाना होता है, उसमें सफेद पकाये हुए अण्डेकी तरह अंश मिला रहता है या उसपर इस तरहका आवरण चढ़ा रहता है, मानो अण्डलालसे ढँका हो।

सीपियामें बहुत बदबू रहती है ; पाखानेकी गन्ध गैरमामूली होती है और बहुत ही बदबूदार ढीला पाखाना होता है ; दुर्गन्धित ; पसीना भी दुर्गन्धित होता है ; पेशाबमें भी बदबू रहती है। "मलमें सड़ी, खट्टी, बदबू रहती है ; एकाएक और सब मल तुरन्त निकल पड़ता है।" कब्जके लिये बँधी गतके अनुसार सीपिया दिया जाता है, जब कि बहुत कम लक्षण रहते हैं। पाखाना हो जानेके बाद हमेशा सरलान्त्रमें पूर्णताका एक भाव बना रहता है ; पाखाना होनेके लिये वृथा ही काँखना पड़ता है और पसीना होता है ; क्योंकि रोगी कमजोर और क्लान्त रहता है। सीपियामें **नक्स-वोमिका**की तरह वृथा वेग रहता है। रोगिनीको कई दिनोंतक पाखाना लगता ही नहीं और फिर उसे ऐसी चेष्टा करनी पड़ती है, मानो प्रसव कर रही हो। सरलान्त्रका अपनी जगहसे हट जाना। मलद्वारमें एक गोला रहनेकी तरह भार, यह पाखाना हो जानेपर भी दूर

नहीं होता। मलद्वारमें यन्त्रणा। कृमि निकलना, सरलान्त्रसे रस चूना, दोनों चूतड़ोंके बीचके स्थानमें यन्त्रणा।

जब सरलान्त्र इस तरह मलसे भरा रहता है, तो बहुत जल्द बवासीर हो जाती है और उनसे एक दूसरी तकलीफ भी होने लगती है।

मूत्र-यन्त्रकी बहुत-सी तकलीफें रहती हैं; ज्योंही बच्चेको रातमें नींद लगती है, त्योंही पेशाब कर देता है। सीपियाकी रोगिनीको बाध्य होकर मूत्राशय ग्रीवापर अपना ध्यान रखना पड़ता है, नहीं तो पेशाब हो जाता है; खाँसने, छींकने, हँसनेपर या दरवाजेकी भड़भड़ाहटसे, किसी आघातसे या मन दूसरे विषयपर चले जानेपर पेशाब निकल जाता है। बार-बार, लगातार पेशाब लगा करता है, जिसमें दूधकी तरह पेशाब होता है, जो आगकी तरह जलता है और थोड़ी देरतक रखे रहनेपर उसमें दूधकी तरह खाकी तलछट जम जाता है, जिसे बर्तनसे धोकर निकाल देना मुश्किल हो जाता है। खून मिला पेशाब थोड़ा और रुका हुआ, बहुत ज्यादा नीचेकी ओर खींचनके साथ मूत्रपिण्ड और मूत्राशयमें तेज दर्द; कूथनके साथ एकाएक इच्छा, मानो जरायु बाहर निकल पड़ेगा। छुरीसे काटनेकी तरह दर्द और समूचे शरीरमें शीत मालूम होनेके साथ एकाएक पेशाब लग आना, यदि पेशाब नहीं कर पाती, जैसे कि कोई स्त्री साथ है; मुझे एक दयनीय रोगी याद है,—एक बेचनेवालीको प्रत्येक कई मिनटोंके लिये बाध्य होकर एकान्त स्थानमें जाना पड़ा; पेशाब करनेकी इच्छाके साथ छुरीसे काटनेकी तरह प्रचण्ड दर्द पैदा हो गया और यदि पेशाब नहीं किया जाता, तो यह दर्द बना ही रहता। इसलिये उसे पेशाबपर ही अपना ध्यान रखना पड़ा, नहीं तो पेशाब हो जाता। यह स्त्री लम्बी, दुबली, मलिन चेहरा और कष्ट-पूर्ण दृष्टिवाली, क्लान्त-श्रान्त थी। सीपियाने उसे आरोग्य कर दिया और फिर कभी यह तकलीफ न हुई।

सीपियाकी रोगिनीको तीसरे महीने गर्भ-स्राव हो जाया करता है। सब तरहके क्षत-कारी उपसर्ग, स्थान-च्युति, नीचेकी ओर खिंचाव और शिथिलता। रुका हुआ फूल। जरायुकी अल्प-विवृद्धि, सभी श्रोणि-यन्त्र श्रान्त और दुर्बल रहते हैं। वयःसन्धि-कालमें या गर्भावस्थामें अविरजः, खासकर पाँचवें और सातवें महीनेमें।

स्त्री-पुरुष दोनोंको ही एक दूसरेके प्रति अनिच्छा हो जाती है। स्त्रियोंमें तो ऐसी दशा रहती है, मानो उसपर ज्यादती हुई है; परन्तु यह बात नहीं रहती। सहन-शक्ति नहीं रहती, सङ्गमके बाद क्लान्ति, रातमें नींद नहीं आती, नींद स्वप्नोंसे भरी रहती है, पेशियाँ फड़कती हैं, ऐंठन, प्रदर स्राव, वस्ति-गह्वरमें रक्त-सञ्चय रहता है। पतिके साथ स्वाभाविक सम्बन्धवाली स्त्रीके सन्तान होती है और इसके बाद, काम-संयोगका विचार भी मिचली और उत्तेजना पैदा करता है।

सभी तरहके रजःस्राव सम्बन्धी उपसर्ग रहते हैं, सीपियाकी कोई खास चरित्रगत विश्रृङ्खलता नहीं है। एक बार ऐसा मालूम हुआ, कि स्वल्परजः इसका आश्चर्यजनक स्वरूप है; पर ऐसा कोई आवश्यक नहीं है। परीक्षा और रोगी-पार्श्वके अनुभवोंसे मालूम

हुआ है, कि इसने बहुत ज्यादा और स्वल्प दोनों ही तरहकी रजःस्राव-सम्बन्धी गड़बड़ी आरोग्य की है।

कोमल मांस-तन्तुओंवाली मलिन लड़कियोंका बहुत ही जोरका कष्ट रजः (ऋतु-शूल)।

सीपिया उस समय काममें आता है, जब स्त्रीको आर्त्तव-स्राव होना चाहिये, जब बच्चा स्तनसे दूध पीना छोड़ता है; कभी-कभी बच्चा मर जाता है ऐसी अवस्थामें रजःस्राव जारी हो जाना चाहिये, पर होता नहीं है और माता दुर्बल होती जाती है; सूख जाती है; सीपिया रजःस्राव जारी कर देगा।

कैल्केरिया इसके विपरीत है। बच्चा स्तनका दूध पीता रहता है; परन्तु रजःस्राव जारी हो जाता है। गाढ़ा, हरा, कटु या दूधकी तरह श्वेत-प्रदर। छोटी बच्चियोंका श्वेत-प्रदर।

पुरुषोंका इन्जेक्शनसे रुका हुआ पुराना प्रमेहका स्राव। मूत्र-नलीसे बहुत ज्यादा, पीला या दूधकी तरह स्राव या "अन्तिम बून्द" दर्द-रहित। नये लक्षण दब जानेके बाद सूजाक। पेशाब मूत्र-क्षारसे लदा रहता है, सब चीजोंपर लाल दाग पड़ता है और अकसर खाल उधेड़ देता है; बहुत दुर्गन्ध-भरा, मूत्राशय-मुखशायी झिल्ली-प्रदाहसे सम्मिलित। "पुराना सूजाकका स्राव, किसी तरहका दर्द न रहना; केवल रातके समय स्राव होता है, एक बूँद या इसी तरह कपड़ेपर पीला दाग लगा देता है; पीली आभा लिये स्राव, न जलन होती है, न पेशाब; दर्द-रहित; एक बरस या डेढ़ बरसका; सवेरे मूत्रनली मुख आपसमें सट जाता है, खासकर बहुत दिनोंतक बीमारी बनी रहनेके कारण या जब बार-बार वीर्य-स्रावके कारण कामेन्द्रिय दुर्बल हो जाती है।

जननेन्द्रियपर मसे; सीपिया उस समय लाभदायक होता है, जब इन यन्त्रोंसे बहुत ज्यादा काम लिया जाता है और उनकी ऐसी शकल हो जाती है। पुरुषोंमें ध्वजभङ्ग, स्त्रियोंमें काम-भावका क्षय।

इस दवासे और **म्यूरेक्ससे** जो निकटस्थ सम्बन्ध है, उसपर भी ध्यान देना चाहिये। मांस पेशियोंकी शिथिलता, तलपेट और वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर खिंचाव, चलने-फिरने और परिश्रम करनेपर रोग-वृद्धि; पैर-पर पैर चढ़ाकर बैठनेपर रोग-ह्रास और जननेन्द्रियपर दबाव डालनेपर रोग-ह्रास, यह दोनों ही दवाओंमें है; पर इसके साथ बहुत ज्यादा मासिक आर्त्तव-स्राव और प्रचण्ड कामेच्छा सम्मिलित कर लीजिये, ऐसी दशामें **म्यूरेक्सपर** अवश्य ध्यान देना चाहिये और सीपियाको परित्याग कर देना चाहिये। दोनोंमें ही पाकाशयमें असीम खालीपनका भाव है। सीपियामें कामेच्छा घट जाती है और अकसर अनिच्छा हो जाती है। **म्यूरेक्समें** बहुत यन्त्रणा और जरायुमें रक्त-सञ्चय रहता है और रोगिनीको लगातार जरायुका ख्याल आ जाता है। **म्यूरेक्समें** जरायुके दाहिनी ओर तेज दर्द होता है, जो संयोजक सरल रेखाके रूपमें धड़को पारकर वक्षके बायीं तरफ ऊपर चला जाता है या बायें वक्षमें

जाता है। यह प्रचण्ड कष्ट-रजःको आरोग्य कर देता है। यह जरायुके कर्कट-रोगमें लाभदायक है। पानीकी तरह, हरा, गाढ़ा, खून-मिला श्वेत-प्रदर, जिससे खुजली पैदा हो जाती है।

सीपियाका बहुत ज्यादा सार्वाङ्गिक चरित्रगत लक्षण है, जोरसे व्यायाम करनेपर रोग-ह्रास; हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर बदतर हो जाता है; पर गरमा जानेपर अच्छा रहता है। इस दशाका पीठके लक्षणोंसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। पीठमें बहुत ज्यादा यन्त्रणा रहती है, मेरुदण्डमें नीचेतक दर्द होता है; मेरुदण्डको दबानेपर यन्त्रणा-पूर्ण स्थानोंका पता लगता है; मेरुदण्डका उपदाह। ज्यादाकर कमरसे लेकर गुदास्थितक पीठमें लगातार बनी रहनेवाली यन्त्रणा; यह अकसर बैठनेपर हो जाती है तथा जोरोंसे व्यायाम करनेपर घट जाती है। इसका एक विचित्र स्वरूप है, जोरसे दबानेपर रोग-ह्रास। रोगी साधारणतः कुर्सीपर नीचेकी ओर एक किताब रख देता है और उसके बल पीठको अड़ा देता है। **नेट्रम-म्यूर**की तरह पीठके बल लेटनेपर सीपियामें रोग-ह्रास होता नहीं दिखाई देता। झुकनेपर पीठका दर्द बढ़ जाता है। "घुटनेके बल बैठनेपर पीठका दर्द बदतर हो जाता है।"

निम्न-शाखा-अङ्गोंके लक्षणोंमें पैरोंमें बहुत अवशता मिलती है। "शामको बिस्तरपर, टांग और पैरोंमें ठण्डक; जब पैर गर्म हो जाते हैं, तो हाथ ठण्डे हो जाते हैं; पैरोंका बरफकी तरह ठण्डापन; पैरोंमें बहुत ज्यादा पसीना या असह्य गन्धवाला पसीना, जिसमें अंगूठोंके बीचमें जखमकी तरह हो जाता है। प्रत्यङ्गोंका फूलना, चलनेके समय अच्छा।"

निद्रा, कष्ट और स्वप्नोंसे भरी होती है; बायीं करवट सो नहीं सकता; क्योंकि कलेजेमें धड़कन होने लगती है। नींदमें, समूचे शरीरमें कम्पन और स्पन्दनके साथ कलेजा धड़कना, अङ्गुलीकी नोकोंमें स्पन्द।

मैलेरियाके रुके हुए पुराने रोगियोंमें सीपिया फिरसे जाड़ा पैदा कर देता है; पर इसका सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र वह है, जब दवाका चुनाव ठीक-ठीक नहीं होता और रोग गड़बड़ा जाता है। जहाँ कोई दवा रोगीके किसी एक अंशके लिये चुनी जाती है, वह रोगीका थोड़ा-सा परिवर्त्तन कर देती है, पर रोगीकी अवस्था सुधरती नहीं है। यह देखनेमें आयगा, कि ज्वर, शीत और पसीना उतने ही अव्यवस्थित हैं, जितने होने चाहिये। **नेट्रम-म्यूर** मैलेरियाका सबसे बड़ी दवा है; पर यह **चायना**के क्रमसे बिलकुल भरी है, सीपिया एकदम विश्रृङ्खलतासे भरी है। दवाओंके कारण गड़बड़ाये हुए रोगीके लिये **कैल्केरिया, आर्सेनिक, सल्फर,** सीपिया तथा **इपिकाक**पर ध्यान दीजिये। अनियमित उपसर्ग और लक्षणोंके लिये कभी भी **चायना** या **नेट्रम-म्यूर** न दीजिये।

सीपिया **नेट्रम-म्यूर**का अनुपूरक है। मनकी जड़वत दशाके अलावा इसमें समस्त स्नायु-संस्थानकी उत्तेजना-पूर्ण दशा रहती है, जो **नेट्रम-म्यूरमें** अकसर स्पष्ट रहते हैं। जैसे, उदाहरणार्थ, शोर-गुल, दरवाजा भड़भड़ानेकी आवाज प्रभृतिसे विचलित हो पड़ना। इससे निद्रामें पेशियोंमें झटका लगता है; खयाली आवाजोंसे बराबर जाग जाया करती है; सोचती है, कि उसे किसीने पुकारा है; घरमें जरा भी गड़बड़ी उसे जगा देती है।

आर्त्तव-स्राव-कालमें तथा उसके पहले बदतर ; गर्भावस्थामें ; भोजनके बाद ; पहली नींदके समय ; ऋतु-परिवर्त्तनसे ; बिजली तूफानके समय बदतर ; अत्यधिक अभिभूत करनेवाला भय।

सिलिका
(Silica)

सिलिकाकी क्रिया बहुत धीमी होती है। परीक्षा करते समय, इसके लक्षण प्रकट होनेमें बहुत देर लगते हैं। इसीलिये यह उन बीमारियोंके लिये उपयोगी है, जो धीरे-धीरे बढ़ती है। वर्षके किसी एक विशेष समयपर और किसी विशेष परिस्थितिमें कुछ विशेष लक्षण प्रकट हो जायेंगे। वे परीक्षामें जीवनभर रह जा सकते हैं। दीर्घ-क्रिय तथा गभीर-क्रिय औषध ऐसे ही होते हैं ; वे जीवनी शक्तिपर इतनी उत्तमतासे जा सकती हैं, कि वंशगत रोग भी जड़से आरोग्य हो जाते हैं। सिलिकाका रोगी सर्दीला होता है, उसके उपसर्ग, सर्द, सीड़वाली ऋतुमें उत्पन्न हो जाते हैं ; यद्यपि वह अकसर सर्दीमें, सूखी मौसममें अच्छा रहता है। स्नान करनेके बाद उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं।

मानसिक दशा भी विचित्र रहती है। रोगीमें ओजकी कमी रहती है। खेतोंमें अन्नके डण्ठलमें जो सिलिका है, वही मानव मनमें भी है। किसी अन्नके डण्ठलका ऊपरी चमकीला, कड़ा वाह्य-आवरण उतार डालिये और तब आप देखेंगे कि दृढ़तासे वह अन्नके ऊपरी झव्वेको पकनेतक पकड़े रहता है, उसमें धीरे धीरे ओज भरनेके लिये सिलिका जमा करता है। ऐसा ही मनके सम्बन्धमें भी है, जब मनको सिलिकाकी जरूरत होती है, तो आपमें दुर्बलताकी दशा, आकुलता, भय और विनम्रावस्था उत्पन्न हो जाती है। यदि किसी प्रधान पादरीसे इस दशाका आप वर्णन सुनें या किसी वकीलसे सुनें या कोई आत्म-निर्भर विचार और शब्दोंका सुदृढ़ व्याख्याता इसका वर्णन आपको सुनाये, तो वह आपसे कहेगा, कि वह एक ऐसी दशामें आ गया है, कि वह सर्व-साधारणमें आनेसे भय खाता है, वह अपनेमें ऐसी कमजोरी अनुभव करता है, वह उस विषयमें प्रवेश नहीं करना चाहता, वह उससे भय खाता है, उसे भय होता है, कि वह असफल हो जायगा, उसका दिमाग काम न करेगा, वह बहुत दिनोंतक मानसिक परिश्रम करता-करता क्लान्त हो पड़ा है ; पर वह यह भी कहेगा, कि जब वह लगाम कस लेता है, तो वह आसानीसे चला जाता है, उसकी मामूली, आत्म-निर्भरता लौट आती है और वह बढ़िया काम करता है, वह अपना काम चतुरतासे, पूर्णतासे और ठीक-ठीक करता है। असफलताके भयमें सिलिकाकी विचित्र मानसिक दशा प्राप्त होती है। यदि उसे कोई गैरमामूली मानसिक कार्य करना रहता है, वह डरता है, कि वह असफल हो जायगा ; इतनेपर भी वह उसे खूबसूरतीसे निबाह देता है। यह आरम्भिक दशा है ; परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि ऐसा भी अवसर आता है, कि जब वह ठीक-ठीक काम नहीं करता और तब भी उसे सिलिकाकी जरूरत रहती है।

दूसरा रोगी-विवरण किसी युवकको बताया गया है, जिसने कई वर्षोंतक खूब अध्ययन किया है और उसका पाठ्य समाप्त होना चाहता है। वह अन्तिम परीक्षासे भय खाता है; पर वह ठीक-ठीक काम करता जाता है, इसके बाद उसपर एक क्लान्ति आती है और बरसों तक वह अपने व्यवसायमें नहीं लग पाता। उसे किसी कार्य-भारको ग्रहण करनेसे भय लगता है।

जागनेपर चिड़चिड़ा और क्रुद्ध हो उठता है; अकेला रहनेपर डरपोक, आलसी और हर चीजको त्याग देना चाहता है; विनम्र, शरीफ और रोनी स्त्रियाँ। सिलिकाका बच्चा रोगी बात करनेपर चिल्लाता और चिढ़ता है। यह **पल्सेटिला**का स्वाभाविक अनुगामी है और जिस बीमारीकी नयी अवस्थामें **पल्सेटिला**का प्रयोग होता है, उसीकी पुरानी दशामें सिलिकाका प्रयोग होता है, क्योंकि इनमें उतना ही अधिक सादृश्य है। यह और भी गमीरक्रिय, अधिक गहरी दवा है। धार्मिक उन्माद, उदासी, चिड़चिड़ापन, निराशा। **लाइकोपोडियम**का रोगी मूर्ख रहता है, वह जानता है, कि इस कामका हाथमें लेनेकी योग्यता उसमें नहीं है, इसीलिये उससे भय खाता है; परन्तु सिलिकामें यह केवल खयाली है।

कारबारकी वजहसे जो मस्तिष्ककी क्लान्ति उत्पन्न होती है, उससे जो चिड़चिड़ापन और स्नायविक श्रान्ति आती है, उसके लिये सिलिका उपयोगी नहीं है; बल्कि उस मस्तिष्क क्लान्तिके लिये उपयोगी है, जो चिकित्सक, विद्यार्थी, वकील, पादड़ी प्रभृतिमें उत्पन्न होती है। एक वकीलका कहना है, कि "जान डूके मुकद्दमेके बादसे मैं कभी अच्छा न रहा।" उसने बहुत दिनोंतक परिश्रम किया और इसके बाद उसे रात रातभर नींद न आयी। सिलिका मस्तिष्कको ठीक कर देता है।

किसी भी तन्तुमय गुच्छके आस-पास यह दवा प्रदाह उत्पन्न कर देती है और उसे पकाकर निकाल देती है। यह शिथिल धातु-प्रकृतिवालोंपर क्रिया करती है और पुराने जड़-प्राप्त यन्त्रोंके आस पासके तन्तुमय सञ्चयोंको प्रादाहित कर देती है। धीमा परिपोषण; यदि किसी व्यक्तिको थोड़ी-सी भी चोट लग जाती है, तो वह पक जाती है और जखमका दाग कड़ा पड़ जाता है, वह कठिन और गांठ-गांठ हो जाता है। छुरीसे कटी जगहपर एक तन्तुमय तलछट निम्न और धीमे परिपोषणके कारण पड़ता है। पुराना जखम, कड़ापनके साथ भरता है। जहाँ क्षत-चिह्नवाले तन्तु बनते हैं, वे कड़े, चमकीले और काँचकी तरह चिकने रहते हैं। यदि ऐसे रोगियोंको सिलिका दिया जाता है, तो यह इन क्षत-चिह्नोंपर फोड़े निकाल देता है और उनका मुँह खोल देता है। यह पुराने जखमोंको खोल देगा और स्वाभाविक क्षत-चिह्नोंके साथ उन्हें भर देगा।

साधारण पुरुषोंमें यदि कोई काँटा तन्तुके भीतर रह जाये, तो पककर वह बाहर निकल जायगा; परन्तु दुर्बल धातुवालोंको एक तरहका लसदार तलछट उसके आस-पास पड़ता है और वह काँटा पड़ा रह जाता है। यह शृङ्खलाकी उच्च दशा नहीं है। कोई गोली

अगर घुस जाती है, तो उसके आस-पास पीव हो जाता है और उसको निकाल देता है, यही सर्वोत्तम अवस्था है, जिसकी जरूरत रहती है।

इसीलिये सिलिका जल्दीसे फोड़े और छोटे फोड़ोंको बनाता है। यह पुराने गूमड़ोंको तथा कड़े अर्बुदोंको पका देता है । इसने बार-बार होनेवाले तन्तुमय अर्बुद और पुराने कड़े अर्बुद आरोग्य किये हैं।

यदि फेफड़ोंमें गुटिका-दोषका सञ्चय है, तो सिलिका प्रदाह पैदाकर उसे बाहर निकाल देता है और यदि समूचा फेफड़ा यक्ष्मा-ग्रस्त हो, तो साधारण पीवके साथ फुसफुस-प्रदाह हो जायगा ; इसीलिये ऐसी दवाएँ देनेमें खतरा है तथा उस बढ़े हुए यक्ष्मामें देना भी खतरेसे खाली नहीं है। केवल सिलिका ही नहीं ; बल्कि कितने ही ऐसी दवाएँ हैं, जिनमें तलछटोंको पका देनेकी शक्ति है, दुःपरिपोषणका परिणाम।

चर्मपर मसेकी तरह प्रवर्द्धन, तर उद्भेद, फुन्सियाँ, पीव-भरी फुन्सियाँ, फोड़े। पीव होनेवाला गह्वर। कड़े किनारेवाले कटे घावोंको यह भर देता है। श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाह-जनित पीव होना ; बहुत ज्यादा श्लेष्मा और पीव-मिला आँख, नाक, कान, वक्ष, योनि प्रभृतिसे स्राव।

स्राव-रोध हो जानेके कारण उत्पन्न रोग ; रुका हुआ पसीना। ये रोध स्वास्थ्य-विधानमें एक ऐसी दशा उत्पन्न करते हैं, जिससे बहुत ही निम्न दशा आ जानेका भय होता है। पैर भींगनेके कारण पैरका बदबूदार पसीना रुक जाता है, इसके बाद जाड़ा मालूम होता है और भयङ्कर उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। लक्षण मिलनेपर सिलिका बहुत दिनोंका पैरका पसीना आरोग्य कर देता है या पैरका पसीना रुक जानेके बाद पैदा हुई बीमारियोंको। गाढ़ा, पीला, सर्दीका स्राव। वे कहते हैं—"मुझे कई बरसोंसे यह स्राव होता आ रहा है।" और जब आप पता लगायेंगे, तो आपको मालूम होगा, कि उसे किसी प्रकारका मानसिक आघात लगा है, सर्दी लगी है, जिसने पैरका पसीना रोक दिया है और तबसे ही यह फिर नहीं हुआ है। सिलिका सर्दीके स्रावको रोकनेके लिये पैरका पसीना जारी कर देगा और कुछ समयमें पैरका पसीना भी बन्द हो जायगा। नाक तथा अन्य स्थानोंसे सर्दीका स्राव, कड़ापन, अर्बुद, पुराना पाकाशय-प्रदाह, मस्तिष्ककी क्लान्ति, ये सभी कानका स्राव या पैरोंका पसीना रुकनेके बाद या भगन्दर बन्द होनेके बाद हो गये हैं।

पुराना स-वमन सर-दर्द, जिसके साथ मिचली, यहाँतक कि वमन भी होता है। सवेरे माथेके पिछले भागसे दर्द उत्पन्न होता है या दोपहरके करीब कपालमें चला जाता है, रात होते-होते और शोर-गुलसे बदतर हो जाता है ; तापसे अच्छा रहता है ; आँखके ऊपरका स्नायु-शूल ; दबाव और तापसे अच्छा रहता है और इसके साथ ही बहुत ज्यादा सरमें पसीना होता है। ललाटपर ठण्डा, लसदार, बदबूदार, पसीना। सिलिकाके रोगीको परिश्रम करनेपर चेहरेपर पसीना होने लगता है और शरीरका निम्न-अंश या तो सूखा रहता है या करीब-करीब ऐसा ही होता है। सारे शरीरमें पसीना लानेके लिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है। इसका एक निर्देशक स्वरूप है,—शरीरके ऊपरी अंशमें

और माथेमें पसीना। सप्ताहमें एक बार सर-दर्द (**जेलसिमियम, लाइकोपोडियम, सैंगुइनेरिया, सलफर**)। गर्दनके पिछले भागसे ऊपरकी ओर सर-दर्द और खासकर माथेके दाहिने पार्श्वमें। **सैंगुइनेरिया**के सदृश है। पश्चात् मस्तकमें ऐसा भार, मानो यह पीछेकी ओर खिंच जायगा, इसके साथ ही **कार्बो वेज** और **सीपिया** की तरह माथेपर रक्तका दौरान हो जाता है। ठण्डी हवासे सर-दर्द बदतर हो जाता है। **सोरिनम**का रोगी गर्मियोंमें भी रोएँदार टोपी पहन लेता है। **मैग्नेशिया-म्यूर**का रोगी सर लपेट रखनेपर अच्छा रहता है; परन्तु इतनेपर भी ठण्डी हवामें रहना चाहता है। **रस-टक्स**का पसीना धड़में होता है; माथा सूखा रहता है। **पलसेटिला**के रोगीको माथेके एक पार्श्वमें पसीना होता है।

मूर्च्छा आ जानेवाला सरका चक्कर, मिचलीके साथ; सरका चक्कर मेरुदण्डकी राहसे माथेमें जाता है।

सिलिकाके रोगीके लिये ठण्डी हवासे बचना खासकर आवश्यक होता है। अच्छी तरह सर लपेटे रहना पड़ता है, खासकर दर्दवाला अंश और इसी अंशमें सबसे ज्यादा पसीना होता है।

"मानसिक परिश्रमसे, बहुत अधिक अध्ययन, शोर-गुल, हिलना-डोलना, यहाँतक कि चलनेके समयके झटकेसे रोशनीसे, झुकनेपर, पाखानेके समय जोर लगानेपर, बोलनेपर, ठण्डी हवा और स्पर्शसे सर-दर्द बदतर हो जाता है।"

मस्तक-त्वचापर तर पपड़ा जमे उद्भेद, मस्तक-त्वचाका अकौता।

उपदंशके गलनेवाले, खानेवाले और मस्तक-त्वचापर फैलनेवाले जखमोंके लिये सिलिका उपयोगी है। मस्तक-त्वचा और करोटीके बीचकी प्रादाहिक दशा, अर्बुद बनाना, जिसमें गाढ़ा, लसदार, तरल भरा रहता है, जैसा कि बचपनमें, यह रक्तार्बुदको दूर कर देगा। सरका रक्तार्बुद; अस्थिका अर्बुद। सिलिका खासकर उपास्थिके रोग, संधियोंके प्रवर्द्धन तथा अङ्गुलियों और अंगूठोंके रोगकी चिकित्साके लिये उपयोगी है।

सिलिकाके उपसर्ग कड़ी ग्रन्थियोंसे सम्मिलित रहते हैं; पर गर्दनके पासकी ग्रन्थियाँ, ग्रैवेयी तथा लाल ग्रन्थियाँ और खासकर कर्णमूल-ग्रन्थि; बढ़ी, कड़ी, कर्णमूल ग्रन्थि। प्रत्येक बार सर्दी लगकर कर्णमूल-ग्रन्थि बढ़ जाती और कड़ी पड़ जाती है (**बैराइटा-कार्ब, कैल्केरिया, सल्फर**)।

कर्णमूल-ग्रन्थिके नये प्रदाहमें **पलसेटिला** उपयोगी होता है; पर सिलिका सोराकी वजहसे उत्पन्न और भी पुराने रूपमें "कण्ठमालाकी ग्रन्थियों" में उपयोगी होता है।

आँखके बहुत-से प्रदाह और दशाएँ। कनीनिकाका जखम, पलकोंपर फुन्सियाँ, बरुनियोंका झड़ जाना, जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द और लालीके साथ पलकोंके किनारोंका पकना। सभी चक्षु रोगोंमें बहुत तेज आलोकातङ्क। आँखके जखमके साथवाले कण्ठमालाके रोगी, बहुत ही जिद्दी और पुरानी बीमारियाँ, पीब होना, पतला पानीकी तरह स्राव या खून-मिला, गाढ़ा और पीला पीबकी तरह स्राव, इसके साथ ही जखम। औपदंशिक चक्षु-ताराका

प्रदाह (Syphilitis iritis), "कनीनिकापर छेद करनेवाले और फुन्सी पड़नेवाले जखम, कनीनिकापर धब्बे और क्षत-चिह्न। छत्राकार रक्तार्बुद। आभिघातिक कारणोंसे आँखें प्रदाहित ; आँखोंमें बाहरी चीजें रह जाती हैं ; फोड़े ; आँखें और पलकोंके चारों ओर छोटे-छोटे फोड़े ; पलकोंका अर्बुद, गुहौरी। आँखोंके कोनोंमें पैदा होनेवाले रोग, अश्रु-स्रावी नासूर ; अश्रु-स्रावी नलीका सङ्कोचन।" सिलिकाके आँखोंके रोगका यह साधारण वर्णन है।

लक्षण मिलनेपर यक्ष्मा-प्रवणता दूर करनेकी, सिलिकासे बढ़कर दूसरी गहरायीतक क्रिया करनेवाली दवा नहीं है, बहुत-से यक्ष्माके रोगी सर्द, तर मौसममें बदतर हो जाते हैं और ठण्डे रूखे मौसममें अच्छे रहते हैं।

कानकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके बहुत ही जिद्दी रोगी पुराना बदबूदार, गाढ़ा, पीला कानसे मवाद ; आरक्त ज्वरके बाद हो जाता है, श्रवण-शक्तिकी सब तरहकी अस्वाभाविकताएँ, यहाँतक कि बहरापन भी हो जाता है। बहुत-से रोग और सुननेकी कठिनाईके साथ कानोंमें गरजकी आवाज ; फुफकारने, भाफ निकलने जैसी गरजकी आवाज ; गाड़ियोंकी लड़ीकी तरह, बहुत बार तो ऐसा यान्त्रिक कारणोंसे होता है और कितनी ही बार स्नायुओंकी दशाके कारण। यह साधारणतः मध्यकर्णके शुष्क श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके कारण होता है ; यह दवा खासकर तब लाभदायक होती है, जब मध्य-कर्ण और कण्ठ-कर्णीनलीकी सर्दी हो जाती है, कुछ समयतक बहरापन बना रहता है और एकत्र हुए तरलके कहीं हट जानेपर ; एकाएक इस आवाजके साथ श्रवण-शक्ति लौट आती है, इसे ही रोगी पटाखेकी आवाज या गरजका वर्णन करते हैं। श्रवण-शक्तिके वापस आ जानेके साथ, तोपकी गरजकी तरह एकाएक आवाज। "कानसे मवाद, बदबूदार, पानीकी तरह, दहीकी तरह ; इसके साथ ही भीतरी नाकमें यन्त्रणा और ऊपरी ओंठपर पपड़ी। दन्त-क्षय-रोगके साथ मर्क्युरीके अपव्यवहारके बाद।" शरीरके किसी भी भागका अस्थि-क्षत रोग ; पर खासकर कानकी, नाककी तथा चुचुकाकार-प्रवर्द्धनोंकी, छोटी हड्डियोंका अस्थि-क्षत। "कानोंके पीछे पपड़ी जमना।" कर्ण पटहका फटना। भीतरी कानकी और कण्ठ-कर्णीनलीकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहवाली दशा, इसके साथ ही ऐसा अनुभव होना, मानो कान एकाएक रुक गये हैं, मुँह फाड़ने या घूंट लेनेपर अच्छा हो जाना।"

खासकर कानकी तकलीफोंके साथ, कड़ी हुई कर्णमूल-ग्रन्थि भी सम्मिलित रहती है।

नाकमें कड़ी पपड़ियाँ एकत्र होना, स्वाद और गन्धका न मिलना ; नाकसे रक्त-स्राव, श्लैष्मिक-झिल्लीका मोटापन ; नाकसे हड्डियोंके टुकड़े निकलनेके साथ बहुत ही लसदार सर्दीका स्राव। भयङ्कर, बदबूदार नकसीर, पुराने उपदंशके रोगी, जिनकी नासास्थि नष्ट हो गयी है और नाक एक थुलथुली थैली हो जाती है, भीतरको धँस जाती है या जखम होकर निकल जाती है, जिससे दरार-सी बन जाती है। इसे सिलिका आरोग्य कर सकता है और पीछे नकली नाक लगा दी जा सकती है।

औपदंशिक नाककी सर्दीमें **हीपर** सिलिकाके सदृश होता है, जहाँ कि रोगी-अंश सड़ने लगते हैं। जब नाकको लगानेवाला जखम हो जाता है, तो **हीपर, मर्क्युरियस-कोर** और **आर्सेनिक** प्रधान उपदंश-विष-नाशक दवाएँ होती हैं। बच्चोंको नाकसे खून-मिले स्रावकी बीमारी हो जाती है। इसमें अकसर **कैल्केरिया-सल्फ** उपयोगी होता है।

सिलिकाके रोगीके चेहरेका दृश्य रोगियल, रक्त-स्वल्प, मोमकी तरह और क्लान्त रहता है। फुन्सियाँ और चकत्तेवाले उद्भेद चेहरेपर फैल जाते हैं, नासा-प्राचीर फट जाती है और ओंठ आसानीसे फट जाते हैं। श्लैष्मिक-झिल्ली और चर्मके मध्यमें किनारेपर पपड़ियाँ जमती हैं; उद्भेद और पपड़ियाँ, इन पपड़ियोंके नीचे कड़ापन पैदा हो जाता है, पपड़ियाँ उघड़ जाती हैं और घाव भरता नहीं है। ये काठिन्य उसी तरहके घटिया मांस-तन्तु हैं, जो अन्वस्त्वकार्वुद और वृक्करोगमें पाये जाते हैं, एक प्रकारका निम्न-श्रेणीका तन्तु-निर्माण, एक निम्न-श्रेणीका अकौता, जिससे रस-स्राव होता है। छोटी-छोटी वहाँ पहुँचनेवाली रक्तवाहिनियाँ मोटी-से-मोटी होती जाती हैं, यहाँतक कि वे कोमलास्थिकी तरह हो जाती हैं। कोमल तन्तुओंको कड़े बनाने और कड़े तन्तुओंको और भी कठिनतर बनानेकी इसमें प्रवणता है।

बचपनमें हड्डियाँ अधिकतर कोमल हो जाती हैं और यहाँतक कि अस्थि-क्षय हो जाता है अथवा अस्थि-आवरकका प्रदाह हो जाता है और इसी वजहसे अस्थि-नाश हो जाता है। लम्बी हड्डियोंके स्तम्भदण्डका अस्थि-क्षत, हड्डियोंके सर और उपास्थिमय अंशका अस्थि-क्षत हो जाता है, उपास्थियोंमें फोड़े, उपास्थ्यर्वुद, हड्डियाँ टूट जाती हैं और नासूर पड़ जाता है। हनुकी अस्थिका नाश, सन्धियोंका, कूल्हेका, जंघास्थिका अस्थि-नाश, मेरुदण्ड तथा कशेरुकाका नाश, जिससे मेरुदण्ड टेढ़ा पड़ जाता है, खासकर पीछे वालोंका। होमियोपैथिक चिकित्सक अस्थियोंके इन रोगोंकी सहायक उपायों अथवा अवलम्बोंके सहारे चिकित्सा कर सकते हैं।

सिलिकाके रोगीके ओंठ रूखे रहते हैं, वे फट जाते हैं और दरार पड़ जाती है; फटे घाव। ओंठोंके किनारोंके पपड़ी-भरे दृश्य, मुँहके कोनेमें फटे घाव, जो कड़े पड़ जाते हैं। पपड़ीके किनारेपर अकसर फटनेकी एक लकीर-सी रहती है। नासा-प्राचीरपर अन्वस्त्वकार्वुदकी तरह छोटी पपड़ियाँ बनती हैं और जब उन्हें उखाड़ दिया जाता है तो खाल उघड़ी सतह निकल आती है, जिसमें आरोग्य-प्रवणता नहीं रहती। कानोंपर पपड़ी जमना।

दाँत टूट जाते हैं, उनका चमकीला पटल हट जाता है; यह दन्तावरण अधिकांश-रूपमें सिलिकेट आफ लाइमसे बनता है और दाँतकी जड़ रूखी पड़ जाती है, उसकी चमकीली शकल गायब हो जाती है और अस्थि-क्षत आरम्भ हो जाता है। यह अकसर मसूढ़ोंके किनारेकी जगहपर होती है; दाँतोंकी नोंकपर जखम हो जाते हैं। जब ठण्ड या सीड़ रहती है, तो दाँतोंमें तकलीफ होती है; तर मौसममें दाँतमें दर्द और दाँत

पीले हो जाते हैं, तेजीसे क्षय हो जाता है और मसूढ़े उनसे अलग हो जाते हैं। सब तरहके स्नायु-शूल और दाँतके दर्द गर्म कमरेमें और गर्म पेयोंसे अच्छे रहते हैं। चेहरा और मसूढ़ोंके फोड़े, तापसे अच्छे रहते हैं। जबड़ेमें तेज दर्द, वेधने और फाड़नेकी तरह रातमें दर्द, यह तापसे उत्तम रहता है, ये दर्द, अकसर दाँतोंके फोड़ेमें अन्त होते हैं; कभी-कभी तो दबानेपर आराम पहुँचता है, जबतक कि वह अंश प्रदाहके कारण बहुत यन्त्रणा-पूर्ण नहीं रहता।

जीभमें भी गठियाकी प्रकृतिका प्रदाह हो जाता है; फोड़े होनेकी सम्भावना बतानेवाला प्रदाह, इससे समूचा मुँह भर जाता है; वेधने, फाड़नेकी तरह दर्द, जो रातमें बदतर हो जाता है और तापसे अच्छा रहता है।

कण्ठ और गर्दनमें भी प्रदाह और सभी ग्रन्थियोंकी सूजन रहती है। भीतरी और बाहरी सभी गांठें या तो एक साथ ही फूल जाती हैं या एक-एककर। तालुमूलमें बहुत दर्दके साथ तालुमूल-प्रदाह, एक या दोनोंका प्रदाह; पीव हो जानेकी सम्भावना, कर्णमूल, जिह्वाधोवर्त्तिनी ग्रन्थिका प्रदाह और इससे कम हनु-निम्नस्थ और ग्रैवेयी ग्रन्थि फूलती है, दर्द-भरी, फूली और कड़ी; इसके साथ ही गर्दन, कन्धा और सरमें दर्द, यहाँतक कि नवीन प्रदाहमें भी हो जाता है; परन्तु इसके बाद इन कामोंकी विपरीत अवस्था प्राप्त होती है। रोगोंके कारण भग्न-स्वास्थ्यवालोंमें बहुत दिनोंकी पुरानी बीमारियोंमें, स्नानके बाद लक्षण बदतर हो जाते हैं; रोगी गर्मी चाहता है, सर्दीसे डरता है, हमेशा सिहरावन लगा करता है; पर जब गर्दनमें नवीन प्रदाह रहता है, तो एकदम विपरीत दशा रहती है; वह तापकी झलकसे तकलीफ उठाता है, एक अनियमित झलक आनेकी तरह बोखार, हाथ पैर ठण्डे; पर शरीरका ऊपरी अंश गर्म रहता है, सर और गर्दनमें पसीना, तापकी झलक और गर्म कमरेमें श्वास-रोधका भाव। यदि नया हो तो तालुमूल-प्रदाह और गर्दनके फोड़ेमें यह मौजूद रहेगा। सिलिकासे **पल्स**का सम्बन्ध यहाँ दिखाई देता है। **पल्सेटिला**में पुराने प्रदर्शनोंमें बहुत ताप रहता है; पर नयी बीमारीमें रोगी सर्दीला रहता है। नयी और पुरानी दशामें एकदम विपरीत लक्षण रहता है। **पल्सेटिला**का रोगी आरम्भमें सर्दीला रहता है और पसीना होता है।

सिलिका कण्ठके लक्षणोंसे भरा है; पर नये रूपमें यह शायद ही कभी दिखाई देता है; क्योंकि इसकी गति बहुत धीमी रहती है, यह कई बार सर्दी हो जानेके बाद होता है, ऐसी सर्दियाँ, जो बहुत बार **बेलेडोना**से या दूसरी नयी बीमारियोंकी दवाओंसे घट जाती हैं; पर इतनेपर भी वे तालुमूल और गर्दनकी गांठोंमें रह जाती हैं। सिलिका यह प्रवणता तोड़ देगा। कण्ठकी एक सर्दीकी दशा बनी रहती है, जो कुछ बढ़कर प्रत्येक सर्दीमें जागरित हो पड़ती है, इसके साथ ही स्वर-भङ्ग हो जाता है, जो फिर पुरानी दशामें चला जाता है; श्वासनलीकी पुरानी सर्दी। यह जिद्दी गल-क्षतमें **नेट्रम-म्यूर**से समता करता है।

सिलिका पाकाशयको बिगाड़ देता है, हिचकी, मिचली और वमन पैदा कर देता है; यकृतको बिगाड़ देता है। ये सभी लक्षण सम्मिलित रहते हैं और उन्हें

अलग करना मुश्किल होता है। गर्म खाद्यकी बिलकुल ही इच्छा नहीं होती, ठण्डी चीजें चाहता है, अपनी चाय भी साधारण ठण्डी चाहता है, अपना भोजन भी ठण्डा ही करना चाहता है, गर्म खाद्य नापसन्द करता है। कभी तो गोश्तसे एकदम निश्चित अनिच्छा रहती है; पर यदि वह खाता भी है, तो ठण्डा, पतला मांस-खण्ड चाहता है। वह कुल्फी बरफ, बरफका पानी पसन्द करता है और इसके पाकाशयमें रहनेपर उसे आराम मिलता है; कभी-कभी उसके लिये गर्म पेय पीना असम्भव हो जाता है; उनसे चेहरे और कपालपर पसीना होने लगता है और तापकी झलक पैदा हो जाती है (**वैराइटा-कार्ब**)।

अत्यधिक ताप और शीत, दोनोंसे ही सिलिकाका रोगी विचलित हो पड़ता है, यहाँतक कि कुछ दर्जेका मौसममें परिवर्त्तन होनेपर उसपर प्रभाव पहुँच जाता है, अत्यधिक उत्तप्त हो जानेके कारण उत्पन्न रोग इसमें हैं; वह सहजमें ही अत्यधिक उत्तप्त हो जाता है; तापमानके थोड़ेसे भी परिवर्त्तन सहजमें ही पसीना होने लगता है और सर्दीसे बीमार हो जाता है।

रोगी विवरण :—एक चिकित्सक प्रसवावस्थाकी एक रोगिनीकी देख रेख कर रहा था; पर अन्तिम अवस्थामें कुछ कठिनायी आ पड़ी और वह बहुत उत्तप्त हो उठा। अपनी टोपी और ओवर-कोट उतारकर, वह बाहर सहनमें जरा ठण्डा होनेके लिये चला गया और उसी समय उसे दमा, प्रचण्ड खाँसी, बहुत ज्यादा-ज्यादा बलगम निकलना साथ ही ओकाई और वमनकी तकलीफ पैदा हो गयी, जो महीनों बनी रही। नयी बीमारियोंकी जो दवाएँ उसने लीं, उनसे केवल कुछ उपशम हुआ; पर सिलिकाकी एक खुराकने उसे उतना ही जल्द आरोग्य कर दिया, जितना जल्द वह बीमार हुआ था, वह गर्म कमरा सहन नहीं कर सकता था। सिलिकाकी नयी बीमारियाँ अकसर गर्म कमरेमें और तापसे बदतर हो जाती हैं।

सिलिकामें दूधसे रोग-वृद्धि होती है। बहुत बार तो बच्चा किसी तरहका भी दूध नहीं पीता और इसीलिये चिकित्सकको बाजारमें मिलनेवाले सभी खाद्य दिलवाने पड़ते हैं; यदि वह ठीक-ठीक दवा नहीं जानता। जब माताके दूधसे अतिसार या वमन होता है, तो **नेट्रम-कार्ब** और सिलिका—दोनों ही लाभ करते हैं। बँधी गतसे काम करनेवाले सिलिकाको एकदम भूलकर **इथूजा** जैसी दवाएँ दे सकते हैं। सिलिका तथा **नेट्रम-कार्ब** दोनोंमें ही खट्टा वमन और खट्टा दहीकी तरह मलमें निकलता है। "माताके दूधसे घृणा और वमन।" "दूध पीनेके कारण अतिसार।" इन दोनोंको मिला दीजिये।

यद्यपि रोगीमें गर्म चीजोंसे अनिच्छा रहती है तथा ठण्डी चीजें खाना चाहता है, इतनेपर भी वक्षकी तकलीफोंमें ठण्डा पानी, मलाईका बरफ तथा साधारणतः अन्य ठण्डी चीजें खाँसीको बढ़ाकर मुँह भर देती हैं और इसके बाद ओकाई बहुत भयङ्कर होती है। प्रचण्ड ओकाई और मुँह बन्द कर देनेवाली खाँसी। बलगम निकालनेकी चेष्टा करनेपर ओकाई अकसर **कार्बो-वेज**से वशमें आ जाती है; पर यह सिलिकामें भी है।

"सर्दी लगनेके साथ और जीभ भूरी रहनेके साथ मुँहमें पानी भर आना ; मिचली और जो कुछ पिया है, उसका वमन ; सवेरे बदतर हो जाना ; पानीका स्वाद तीता रहता है ; पीनेके बाद वमन हो जाता है।"

सिलिकाका पाकाशय कमजोर रहता है ; कुछ नहीं करनेकी एक दशामें ; पुराने मन्दाग्नि ग्रस्त, जिन्हें बहुत दिनोंसे वमन हो रहा है, खासकर वे जिन्हें गर्म खाद्य अच्छा नहीं लगता, जो दूध नहीं पी सकते, मांससे घृणा करते हैं, जहाँ मानसिक और शारीरिक लक्षण मिलते हैं।

हमारे सिविल वार (राजनीतिक लड़ाई) के समयमें पुराने अतिसारकी सिलिका एक सबसे बड़ी दवा थी। तर जमीनपर सोनेवाले, जबतक पाकाशय और आँतें सुस्त न हो पड़ें, तबतक सभी तरहका खाद्य खानेवाले, दूर-दूरतककी सफर करनेवाले, ठण्डे उत्तरसे गर्म दक्षिणमें जानेवाले तथा अत्यधिक उत्तप्त हो जानेवाले और इस तरह बीमार हो जानेवालोंकी काफी संख्यामें आरोग्य किया था। इन लक्षणोंमें यह **सलफर**के सदृश है।

सिलिकामें पाकाशय और आँतोंमें दर्द होता है ; परन्तु दबानेपर अधिक यन्त्रणा होती है, उदर शूल और आध्मान तथा दबानेपर स्पर्श-कातरता ; पाकाशयमें पुरानी यन्त्रणा और यदि यह बहुत दिनोंतक जारी रहती है, तो यक्ष्माकी दशा आ जाती है। तापसे घटनेवाला तलपेटका दर्द ; पेट फूलने और गुड़गुड़ानेके साथ आँतोंमें तनाव। बच्चों और अवस्था-प्राप्तोंका बढ़ा हुआ तलपेट (वेरा-कार्ब) ; तलपेटके चारों तरफ कसावट। वस्त्रके दबावसे विचलित रहता है और भोजनके बाद बदतर हो जाता है ; तापसे घटना यह इसका निश्चित लक्षण है।

मलान्त्रमें मल निकालनेकी शक्ति न रहनेके कारण कब्ज। **पेल्यूमिना**की तरह पाखानेका वेग हुए बिना शायद ही कभी सरलान्त्रमें मल रह जाता हो ; पाखानेका वेग बहुत होता है, पर निकालनेकी शक्ति नहीं रहती। मल छोटी गोली या बड़े गोलेके रूपमें हो, कोमल या बड़ा और कड़ा हो ; परन्तु बहुत काँखना पड़ता है तथा माथेके आस-पास पसीना होता है और काँखनेके समय बहुत तकलीफ होती है, सरलान्त्र एकदम कस जाता है, वह जबतक दुबले और क्लान्त नहीं हो जाता, तबतक काँखता रहता है ; **मल पीछेकी ओर सरक जाता है** और रोगी निराश होकर जोर लगाना छोड़ देता है। यदि किसी तरह वह अपनेको आराम पहुँचा सकता है, तो यह यान्त्रिक तरीकेसे ही। बहुत-सी दवाओंमें पाखानेके समय बहुत जोर लगाना पड़ता है ; पर **पेल्यूमिना, पेल्यूमेन, चायना, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका नक्स-मस्केटा** और सिलिकामें बहुतकर यह लक्षण है।

सिलिकाने फीता-क्रिमि आरोग्य कर दी है, जब लक्षण मिलते हैं (**कैल्के-रिया-सल्फ**)।

इसने नासूरके घाव भी आरोग्य किये हैं। यक्ष्मा-प्रवण रोगियोंके सरलान्त्र-प्रदेशमें फोड़ा हो जानेकी प्रवणता रहती है ; यह भीतर या बाहरकी ओर फूटता है

और पूर्ण या अपूर्ण छेद बना देता है। यह उसके बदलेमें होता है, जो कुछ होना चाहता था और यदि यह नश्तर देकर या किसी बाहरी जरियेसे आरोग्य कर दिया जाता है, तो इस प्रवणताका अन्त वक्षके रोगोंमें होता है या तो स्थायी सर्दी हो जाती है या यक्ष्माका रस-स्राव होने लगता है। सिलिका एक वह दवा है, जो धातु-प्रकृतिको सुश्रृङ्खलित अवस्थामें ला देती है और एक-से-पाँच वर्षके भीतर इस छिद्रकी आवश्यकता नहीं रह जाती और यह आप-से-आप आराम हो जाता है। अस्त्र-चिकित्सक उसे तुरन्त आरोग्य कर देते हैं; कुछ दिनोंतक रोगीको आराम मालूम होता है; पर कुछ ही बरसों बाद उसका स्वास्थ्य भङ्ग होने लगता है।

कास्टिकम, बार्बेरिस, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्के-फास, ग्रैफाइटिस, सलफर प्रभृति ऐसे रोगियोंके लिये उपयोगी है। यहाँ **थूजाके** बाद सिलिका खूब लाभ करता है।

मूत्र-पथकी पीव होनेवाली दशा, श्लैष्मिक-झिल्लीकी सर्दी, पेशावमें पीव और रक्तके साथ मूत्राशयका पुराना जिद्दी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह; पेशावमें बहुत ज्यादा और डोरीकी तरह तलछट। मूत्राशय-मुखशायी-झिल्ली-प्रदाह, पीव होना, मूत्रनलीसे गाढ़ा, बदबूदार पीव। सूजाक, पीव या मूत्रनलीसे पीवकी तरह स्राव, थोड़ा टुकड़ा-टुकड़ा स्राव, खून-मिला, पीव-भरा स्राव। यह कभी गाढ़ा या दहीकी तरह होता है; यह किसी भी श्लैष्मिक-झिल्लीसे हो सकता है।

लिंगेन्द्रिय, अण्डकोष और मलद्वारके बीचका स्थान, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि, अण्ड-कोषके पास फोड़े। बहुत दर्दके साथ अण्डकोषका पुराना प्रदाह और कड़ापन। अण्डकोष दब गये-से, असहिष्णु और दर्द-भरे मालूम होते हैं। लड़के या अवस्था-प्राप्तोंका अण्डकोष-प्रदाह (अण्डकोष फूलना)।

पुरुषोंमें, ध्वजभङ्ग, सङ्गमके बाद लिंगेन्द्रियमें दुर्बलता, सहजमें ही क्लान्त हो जाता है; शक्ति नहीं रहती; साधारण तेजीमें भी यदि सङ्गम किया है, तो क्लान्त हो पड़ता है; उसे एक सप्ताह या दस दिनोंतक विश्राम करना पड़ता है (ऐगरिकस)। क्लान्तिके साथ जननेन्द्रियपर बहुत पसीना, मेरुदण्डमें थकान मालूम होती है, पीठ कमजोर रहती है।

रातमें आप-ही-आप पेशाब हो जाना; छोटे लड़के लड़कियोंकी मूत्रकृच्छ्रता।

रति-सम्बन्धी क्रियाकी सुस्त दशा स्त्रियोंमें भी रहती है। योनिमें रक्ताम्बु-स्रावी कोषार्बुद, भगके पास नासूरके घाव और फोड़े, जो कड़ी गांठें पड़कर आरोग्य होते या बिल्कुल ही आरोग्य नहीं होते हैं, छोटे-छोटे रस-स्रावी नासूर, बदबूदार, पनीरकी तरह स्राव होता है। वे छोटी गांठोंके रूपमें आरोग्य होते हैं और फिर उसी पुरानी जगहपर ही फटते हैं। ऐसे फोड़े होनेवाली स्त्रियाँ।

दो मासिक रजःस्राव-कालोंके बीचमें रक्त-स्राव। सिलिकामें जरायुसे बहुत सहजमें ही रक्त-स्राव होने लगता है; उत्तेजनासे और खासकर स्तनसे दूध पिलानेके समय, एक रक्त-स्रावी धार निकल पड़ती है; जब बच्चेको स्तनपर रखा जाता है, तो रक्त-स्राव जारी हो

जाता है। यहाँ **कैल्केरिया** और सिलिकाका अन्तर देखिये। **कैल्केरियामें** स्तनसे दूध पिलानेके समय स्राव होनेकी प्रवणता रहती है, न कि कच्चेको स्तनपर रखनेपर।

सिलिका डिम्ब-प्रणाली (कालल नल) में जल-सञ्चय (Hydrosal-pinx) और डिम्ब-प्रणालीमें पीब-सञ्चय (Pyosalpinx); जिसमें जरायुसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव होता है आरोग्य करता है। कभी कभी किसी स्त्रीको जरायुके एक या दोनों तरफ एक ढेले-सा हो जाता है, जो बराबर बढ़ता जाता है और एक दिन एकाएक उसमेंसे पानीकी तरह, खून, पीब-मिला तरल बहने लगता है और वह ढेला गायब हो जाता है, यह फिर भरता है और झोंकसे बहकर उसी तरह खाली होता है। डिम्ब-प्रणालीमें जल और पीब-सञ्चय होनेपर ऐसे ही प्रदर्शन होते हैं।

महीनोंतक एकदम ही आर्त्तव स्राव न होना ; अनियमित ऋतु या ऋतु-रोध।

मटर या नारङ्गीके बराबर योनिमें रक्ताम्बु पूर्ण कोषार्बुद ; यह या तो योनिसे बाहर निकला रहता है या ऊपरकी ओर निकला रहता है और उसीके अनुकूल चौड़ा हो जाता है। छोटे बादामके फलकी तरह बहुत से छोटे छोटे कोषार्बुद एक साथ निकलते हैं। अन्य लक्षण न मिलनेपर भी **रोडोडेण्ड्रन** और सिलिकाने इन्हें आरोग्य किया है।

"श्वेत-प्रदर, बहुत ज्यादा, कट्ठ, खाल उधेड़नेवाला, दूधकी तरह, इसके पहले नाभिके चारों तरफ काटनेकी तरह बहुत दर्द होता है, दाँतसे काटनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है, खासकर कट्ठ खाद्यके बाद; पेशाब करनेके समय ; झोंकसे ; जरायुके कर्कटके साथ। स्तनमें कड़े कड़े ढेले।

स्तनमें फोड़े हो जानेकी सम्भावना। यदि समयपर दवा पड़ जाती है, तो यह सब तकलीफोंको दूर कर देगा ; जहाँपर दवा बहुत देरकर पड़ी है और पीब होना निश्चित है, तो सिलिका अपना काम करता है। वहाँ टपक, स्पर्श-कातरता और भार हो जा सकता है, इतनेपर भी दवा दर्दको वशमें ले आती है, जल्दी अन्त ले आती है और स्वाभाविक रूपसे मुँह खुल जाता है ; स्राव थोड़ा होता है और तुरन्त बन्द हो जाता है। वेदना-नाशकके रूपमें निश्चित-रूपसे यदि पोल्टीस दे दी गयी, तो आपकी दवा असफल हो जायगी। उस अंशमें बहुत रक्त है और पोल्टीसका प्रयोग कष्टको बढ़ा देता है ; यह उस अंशमें और भी अधिक रक्त पहुँचा देता है और यदि पकने लगता है, तो यह मांस-तन्तुओंको और भी ज्यादा तोड़ देता है। एक अङ्गुस्तानाभर पीब निकलनेके बदले कई दिनोंतक प्याला-प्यालाभर पीब निकलेगा और आधी स्तन-ग्रन्थि नष्ट हो जायगी।

बहुत कमजोर रहनेवाली स्त्रियोंको गर्भ-स्राव-प्रवणता रहती है या गर्भ रहता ही नहीं। ऐसा मालूम होगा, कि यन्त्र सब क्लान्त हो पड़े हैं और वे अपनी-अपनी क्रिया नहीं करते।

बच्चोंमें सब तरहकी तकलीफें रहती हैं। वह रोगियलके रूपमें ही बढ़ता है, अपनी माताका दूध या वास्तवमें किसी तरहका भी खाद्य सहन नहीं कर सकता ; वमन और अतिसार। स्वस्थ बच्चा अस्वस्थ दूधको भी पचा जायगा।

सिलिकाकी खाँसी एक भयङ्कर खाँसी होती है। यह दवा यक्ष्माकी आरम्भिक दशामें उपयोगी होती है, जब कि फेफड़ा बहुत ज्यादा आक्रान्त नहीं रहता। लक्षण मिलनेपर श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी खाँसीमें यह लाभदायक होता है। यदि फेफड़ेमें छोटा-सा फोड़ा होता है, जिसमें आरोग्य होनेकी प्रवणता नहीं रहती, तो यह सुधार कर देता है और प्राचीरोंमें सङ्कोचन उत्पन्न कर देता है। वक्षकी सर्दीके अदम्य रोगी, जिसमें सीटी बजनेकी-सी दमाकी तरह आवाज आती है; अति परिश्रमसे। बहुत ज्यादा श्रम या अति उत्तप्त हो जानेके बाद, हवामें यदि निकल जाता है या नहानेपर सर्दी लग जाती है, सर्दीला हो जाता है। तर दमा, खड़खड़ी घरघराहट, वक्ष श्लेष्मासे भरा मालूम होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो उसका श्वास-रोध हो जायगा। खासकर पुराने प्रमेह-विष-दूषितोंका दमा या प्रमेह-दूषित माता-पिताकी सन्तानोंका दमा। ऐसे रोगियोंमें यह **नेट्रम-सल्फरिकम**के सदृश है। रोगी पीला, मोमकी तरह, रक्त-स्वल्प रहता है; बहुत सुस्ती और प्यास रहती है।

दबे हुए सूजाकके कारण दमाका आक्रमण, इसके साथ ही अत्यधिक परिश्रम और अति उत्तप्त हो जानेके कारण रोग उत्पन्न होनेकी प्रवणता, जैसी कि बहुत से प्रमेह-ग्रस्तोंको होती है।

स्वर भङ्गके साथ सूखी, तङ्ग करनेवाली खाँसी; स्वर-यन्त्रके यक्ष्माकी सम्भावना, स्वर यन्त्रकी श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी पड़ जानेके कारण विचित्र फटी हुई आवाज या यक्ष्मासे आक्रान्त होना। वक्षकी यन्त्रणा, जिससे क्षुद्र-गुटिका-पूर्ण यक्ष्मा हो जाता है, सर्दीसे रोग वृद्धि होती है और गर्म पेयोंसे रोग-ह्रास। पत्थर काटनेवालोंका फेफड़ेका रोग। महीन चूरोंसे पुराना उपदाह उत्पन्न होता है। सिलिका पीव पैदा कर देता है और इन प्रस्तर-खण्डोंको निकाल बाहर करता है।

बलगम बहुत ज्यादा, बदबूदार, हरा, पीव-भरा होता है; केवल दिनके समय निकलता है, लसदार, दूधकी तरह, कटु श्लेष्मा, कभी-कभी पीला निकलता है। फेन-भरा रक्त।

वक्षमें सर्दी बैठ जानेकी प्राचीन प्रवणता और दमाके लक्षण उत्पन्न कर देनेकी प्रवणता। पुराना वायुनली-भुज-प्रदाह; पीव होनेके साथ फेफड़ेका प्रदाह। सिलिका खासकर फुसफुस-प्रदाह (न्युमोनिया) की अन्तिम दशा और न्युमोनियासे उत्पन्न पुरानी बीमारियोंके लिये उपयोगी होता है। न्युमोनियाके बाद बहुत धीमी गतिसे आरोग्य होना (**लाइकोपोडियम, सल्फर, फास्फोरस,** सिलिका, **कैल्केरिया**) तापकी झलक; वक्षमें घरघराहट। दिनके समय चेहरेपर तापकी झलक (**सलफर, सीपिया, लैकेसिस**)। **ऐण्टिम-टार्ट**की तरह घरघराहट और **सल्फर** तथा **लाइकोपोडियम**की तरह तापकी झलक।

यक्ष्मा—गाढ़ा, पीला, हरा, बदबूदार बलगम, **कैल्केरिया**से अधिक बढ़ी हुई सर्दी और माथेमें पसीना, फेफड़ेमें दर्द यन्त्रणा-पूर्ण फेफड़ा, सुई गड़नेकी तरह दर्द।

हाथ पैरोंमें, अस्थि-आवरकमें प्रदाह रहता है। गट्टे (**ऐण्टिम-क्रूड, ग्रैफाइटिस**), भीतरकी ओर घुसनेवाले नाखून। पैरके तलवोंका वात। चल नहीं सकता (**ऐण्टिम-क्रूड, मेडोरिनम, रूटा,** सिलिका)।

सोनेके साथ ही पसीना होने लगता है (पल्स, कोनियम)।

मृगी:—स्नायु-वर्त्तुल (Solar plexus) में सुरसुरी होकर वक्ष और पाकाशयमें चली जाती है।

कैल्केरिया, पल्सेटिला और **थूजा**का अनुपूरक है।

स्पाइजिलिया ऐन्थेलमिण्टिका
(Spigelia Anthelmintica)

स्पाइजिलियाका ज्ञान इसके दर्दों द्वारा होता है। यह सर्दी लगकर दुर्बल हुए तथा जो वात-रोगी, कमजोरी और दर्दके शिकार हैं, उनके लिये निर्देशित रहता है। मुश्किलसे शरीरका एक भी स्नायु बच जाता है, खोंचा मारनेकी तरह, जलनकी तरह, फाड़नेकी तरह, स्नायु-शूलके दर्द ; वे आँखों और हनुओंमें तथा गर्दन, चेहरा, दाँत, कन्धेमें अधिक स्पष्ट रहते हैं, चेहरे और गर्दनकी राहसे किसी भी दशामें, गर्म सुई घुसनेकी तरह जलन, सुई गड़ने, फाड़नेकी तरह दर्द, यह हिलने-डोलनेपर, कुछ करनेपर, यहाँतक कि कुछ सोचनेपर और मानसिक परिश्रमसे बदतर हो जाता है, भोजनसे भी बदतर। गर्दन और कन्धोंका दर्द तापसे अच्छा रहता है, आँखके पासका दर्द सर्दीसे अच्छा रहता है।

हाथ-पैरोंमें गर्म तारोंकी तरह खोंचा मारने और फाड़नेकी तरह दर्द। कभी-कभी लेट जानेपर दर्द बदतर हो जाता है ; पर बहुतकर चुप रह जानेपर अच्छा रहता है। रोशनीसे, भोजनसे, हिलने-डोलनेपर, झटका लगनेपर बदतर ; दर्दवाला प्रदेश इतना यन्त्रणा-पूर्ण रहता है, कि ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने-जैसा सरल व्यायाम भी या उस गाड़ीमें सवारी करना, जिसमें झटका लगता है, दर्दको असह्य बना देता है।

स्पाइजिलियाके रोगीको सर्दी सहन नहीं होती, वायुमण्डलका परिवर्त्तन सहन नहीं होता, वह वातज रोगी रहता है ; पर स्नायु स्नायु-शूलसे आक्रान्त रहते हैं।

आँखोंके पास प्रचण्ड दर्द। बँधी चिकित्सा इस प्रदेशके लिये यही दवा बताती है। जोरसे दबानेपर बदतर हो जाता है ; यद्यपि कभी-कभी इससे अच्छा रहता है, यदि धीरे-धीरे और देरतक जोरसे दबाव पड़ता है, तो कभी-कभी अच्छा भी होता है ; पर दबानेवाले हाथोंका किसी तरहका हिलना डोलना तकलीफको बढ़ा देता है। वह अंश फूला और प्रादाहित रहता है। आँखें लाल और फूली हुई।

वक्षके पेशियोंका स्नायु-शूल-सम्बन्धी रोग। स्पाइजिलियाके वक्षके बहुतसे दर्दोंका हृत्पिण्डसे सम्बन्ध रहता है ; लेकिन पसलियोंका स्नायु-शूल भी रहता है, फाड़नेकी तरह दर्द कन्धों और गर्दनमें आघात करते हैं, खासकर बायें पार्श्वमें और बाहुमें नीचेकी ओर। यहाँ-वहाँ दर्दका आघात लगता है।

हृत्पिण्डकी अनियमितता। हृत्कपाटकी बीमारियोंके साथ दर्द-भरे उपसर्ग ; खासकर जो वातसे उत्पन्न होते हैं। वात-प्रकृतिका हृदन्तरवेस्ट-प्रदाह और हृद्वेस्ट-प्रदाह (Pericarditis)। छुरी घुसानेकी तरह वक्षमें दर्द और छुरी मारनेकी तरह आँखमें दर्द।

इस दवाकी और भी परीक्षाकी जरूरत है, इसके मानसिक लक्षण बहुत ही कम प्रकट हुए हैं। "कमजोर स्मरण-शक्ति ; काम करनेकी इच्छाका न होना ; बेचैन और चिन्तित, भविष्यके सम्बन्धमें चिन्ता ; विषन्न, आत्मघाती हाव-भाव ; नुकीली चीजें, आलपीन प्रभृतिका भय ; "जरा सेमें चिढ़ उठता है या रञ्ज हो जाता है।" इतना ही गाइडिङ्ग सिम्पटम्समें लिखे जाने योग्य समझा गया है, जिससे पता लगता है, कि मानसिक उपसर्ग अच्छी तरह प्रकट नहीं हुए हैं।

बहुत-से उपसर्ग सवेरेके वक्त प्रकट होते हैं ; सेवेरेके वक्त क्लान्त और फाड़नेकी तरह दर्दोंसे भरा रहता है।

पुराने रक्त-स्वल्प रोगी, जहाँ कि रोग बदलकर स्नायुमें चला जाता है, भग्न-स्वास्थ्य, पीले, स्नायविक रोगी, जिन्हें स्नायु-शूल, कलेजेमें धड़कन होती है तथा नाड़ी अनियमित रहती है। सोकर उठनेपर सरमें चक्कर आना, प्रचण्ड दर्द और सरमें चक्करके साथ सोकर उठता है। इतनी स्नायविक, कि उसे बाध्य होकर 'भागना पड़ता है, उत्तेजनासे भरी शान्त नहीं रह सकती। अपनेको संयमित नहीं रख सकती।

माथेमें स्पन्दन और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; कभी-कभी सर ऊँचा रखकर लेटनेपर अच्छा रहता है ; झुकनेपर, हिलने-डोलनेपर और शोर-गुलसे बदतर हो जाता है। जब आँखोंके पास और सरमें दर्द रहता है, तो कभी-कभी ठण्डे पानीसे धोनेपर अच्छा रहता है, पर धोनेके बाद बदतर, ठण्डा पानी लगनेपर अच्छा रहता है। इन सर-दर्दों और स्नायु-शूलोंके साथ गर्दन और कन्धे अकड़े रहते हैं, इतनी स्पष्ट अकड़न रहती है, कि वह दर्दके कारण हिल-डोल नहीं सकता। वह जड़ दिये रहनेकी तरह कुर्सीपर बैठता है, शोरगुलसे, रोशनीसे, कमरेमें चीजें इधर-उधर हटती हुई देखनेसे, जिनका पीछा उसे अपनी आँखसे करना पड़ता है; उसके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं। "मस्तिष्कमें खूब सूक्ष्म जलन और फाड़नेकी तरह दर्द।" यह मस्तिष्कमें होता मालूम होता है, पर यह ज्यादाकर मस्तक-त्वचाके स्नायुमें होता है। "हिलने-डोलनेपर या चलनेपर या कदम गलत पड़ जानेपर बायीं पार्श्व-कपालास्थिमें दर्द ; शामके बाद—ललाटमें प्रचण्ड दबाव और बाहरकी ओर चाप पड़ना, झुकनेपर बदतर, हाथसे दबानेपर बढ़ना ; ललाटमें तेज फाड़नेकी तरह दर्द, खासकर सम्मुख प्रवर्द्धनके नीचे यह चक्षु-कोटरकी ओर फैल जाता है।" दर्दकी तेजीपर ध्यान दीजिये। पश्चात् मस्तकमें खोदने या फाड़नेकी तरह दर्द। मस्तक-शिखरके बायें भागमें और ललाटमें, हिलने-डोलनेपर बदतर, जोरकी आवाजसे बढ़ता है और जब वह जोरसे बोलता है या धीरेसे अपना मुँह भी खोलता है, तो बढ़ जाता है ; लेटे रहनेपर अच्छा रहता है। ललाटके दाहिनी तरफ दबावकी तरह दर्द ;

जिससे दाहिनी आँख आक्रान्त हो जाती है, सवेरे बिछावनपर ही, पर सोकर उठनेपर और भी ज्यादा बढ़ जाती है। बद्धमूल दर्द, दबानेपर कोई प्रभाव नहीं पहुँचता, हिलने-डोलनेपर या एकाएक सर घुमानेपर बहुत तेज हो जाता है, मस्तिष्क ढीला पड़ गया-सा मालूम होता है; हरेक झटका, कदम या पाखानेके समय काँखनेपर बदतर हो जाता है। चेहरेकी पेशियाँ हिलाते समय ऐसा अनुभव होता है, मानो माथा फट जायगा। ऐसा अनुभव होना, कि सरके पास एक पट्टी कसी है। स्नायु-शूलका दर्द बायीं आँखके भीतर और ऊपर या नीचे बैठ जाता है, सीड़वाली ऋतुमें, ठण्डसे बरसाती ऋतुमें; पञ्चमी नाड़ीकी सौत्रिक-झिल्लीकी अतिरिक्त अनुभूति।

दर्द आरम्भ होनेके प्रथम कालमें इतनी अतिरिक्त अनुभूति नहीं रहती, परन्तु ज्यों-ज्यों यह जारी रहता है, अनुभूति बढ़ती जाती है और आँखें रक्त-पूर्ण हो जाती हैं। मैंने इतना तेज दर्द देखा है, कि उनसे एकदम अवसन्नता आ गयी थी, ठण्डा पसीना और वमन होने लगा था।

हीपरका रोगी इतना वेदना-कातर रहता है, कि वह वेहोश हो जाता है; दर्दसे मूर्च्छित हो पड़ता है।

कैमोमिलामें रोगीको दर्द इतना तेज अनुभव होता है, कि उसमें भयानक पागलपन, चिड़चिड़ापन पैदा हो जाता है और वह क्रोधसे उबल पड़ता है।

स्पाइजिलियाके रोगीको तेज तकलीफ होती है, दर्द अपना चिह्न छोड़ जाता है, वह *अंश लाल हो जाता है और प्रादाहित तथा असहिष्णु हो पड़ता है।* सर-दर्द गर्मीसे बदतर हो जाता है, ठण्डसे कुछ देरके लिये अच्छा रहता है; पर अन्य स्थानोंके दर्द इसके ठीक विपरीत रहते हैं।

फास्फोरसके मस्तक और पाकाशयके लक्षण ठण्डसे अच्छे रहते हैं; वक्ष और शरीर गर्मीसे अच्छे रहते हैं। **आर्सेनिक**में अकसर माथा ठण्डे पानीसे धो देनेपर अच्छा रहता है; पर स्वतः रोगीको ठण्ड सहन नहीं होती और बाकी उपसर्गोंमें गर्मी चाहता है।

स्पाइजिलिया दृष्टि-सम्बन्धी उपसर्गोंसे परिपूर्ण है; दृष्टि-सम्बन्धी लक्षण भी रोग उत्पन्न कर देते हैं; कभी-कभी वह सिवा सामनेकी ओर देखनेके और कुछ नहीं कर सकता; क्योंकि जब दर्द नहीं भी होता, तो उसके सरमें चक्कर आया करता है, नीचेकी ओर देखनेपर, सभी चीजें जोरसे चक्कर खाती हैं। साधारणतः ऐसा बहुत मनुष्योंको होता है, जब वे बहुत ऊँचेसे नीचेकी ओर देखते हैं; पर स्पाइजिलियामें तो नीचे अपनी नाककी ओर देखनेपर भी सरमें चक्कर आता है, इसीलिये रोगी बैठ जाता है और ठीक सामनेकी ओर देखता है।

दृष्टि-रेखाका भीतरकी ओर झुकाव, दृष्टि-रेखाका बाहरकी ओर मोड़, दृष्टि-संस्थापनमें गड़बड़ी; सब तरहकी छोटी अकड़नवाली दशा है; चश्मा ठीक कर देना बहुत ही मुश्किल होता है; न कोई स्थिर रश्मि-केन्द्र रहता है, न स्थिर दृष्टि। स्पाइजिलियामें केवल स्नायु-

शूलकी दशाके कारण जो कुछ होता है, वह रूटामें आँखोंपर जोर पड़ जानेके कारण होता है। दृष्टिका पश्चात् भ्रम।

जो आँखें हमेशा परिवर्त्तित हुआ करती हैं, उनके लिये दवाकी जरूरत है। आँखोंके चारों तरफ तथा आँखके भीतर छुरा मारनेकी तरह दर्द यह अकसर एक बिन्दुसे चारों ओर विकीर्णित होता है। चक्षु-गोलक स्पर्श असहिष्णु रहता है, उनके विषयमें सोचनेपर आँखें बदतर हो जाती हैं। रातमें बदतर। असह्य दबावकी तरह दर्द, आँखें घुमानेपर बदतर, आँखें घुमानेकी चेष्टा करनेपर चकाचौंध लग जाती है, समूचा माथा कुछ देखनेके लिये घुमाना पड़ता है, सम्मुख, सीना और मस्तकमें दर्द विकीर्णित होता है। यह अनुभव होना, कि आँख इतनी बड़ी है, कि चक्षु-गह्वरमें नहीं समाती।

मुझे एक रोगिनी याद है, जो एक चक्षु-चिकित्सकके पाससे दूसरेके पास इस तरह भटका करती थी, जिसे बहुत-से दृष्टि-दोष थे और कोई भी चश्मा उसे ठीक न बैठता था, उसकी बायीं आँखमें रात-दिन बहुत ही तेज डङ्क मारनेकी तरह दर्द हुआ करता था और तभी सो जाती थी, जब एकदम क्लान्त हो पड़ती थी। लैक फेलिनमने उसे आरोग्य कर दिया। बिल्लीके दूधके परीक्षकोंमें सूक्ष्म डङ्क मारनेकी तरह दर्द बायीं आँखपर प्रकट हुआ था।

इस दवाने चक्षु-श्वेत-पटल मोटा पड़ जाना (अनुपक्ष), शायद कृत्रिम अनुपक्ष आरोग्य कर दिया, जो प्रचण्ड स्नायु-शूलसे उत्पन्न हुआ था, बहुत दिनोंतक और कई महीनोंतक होता रहा था।

वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, जरा भी हिलने-डोलनेपर, श्वास लेनेपर बदतर हो जाना ; वक्षके फाड़नेकी तरह दर्दकी अनुभूति ; बाहुको हिलाने या किसी दूसरी तरहसे हिलने-डोलनेपर वक्षमें कम्पनका भाव। सर ऊँचाकर केवल दाहिनी करवट सो सकता है। वातकी तकलीफें खासकर वक्षके बायें पार्श्वमें, ऐसा मालूम होना, मानो हृत्पिण्ड मुट्ठीमें कसकर दबाया जा रहा है। हृत्पिण्ड-प्रदेशके ऊपर फड़फड़ाहटकी अनुभूति, तरङ्गकी तरह गति, यह नाड़ीके अनुपातमें नहीं रहती। नाड़ीके अनुपातमें न रहनेवाला तरङ्गायित हृत्स्पन्दन। हार्दिकी धमनीका कड़ापन। नया हृदावरक-झिल्ली-प्रदाह, इसके साथ ही हृदावरक-झिल्लीमें भार और घबड़ाहट। वातके आक्रमणके बाद ये तकलीफें होती हैं, इसके अन्तमें या बोखार दब जानेके कई महीने बाद। थुलथुले मनुष्योंमें, जिन्हें ज्यादा तकलीफ नहीं अनुभव होती, उनके हृत्पिण्डके वातमें स्पाइजिलिया शायद ही कभी निर्देशित रहता है।

जब वात-रोगका आक्रमण हृत्पिण्डके शैरिक पार्श्व (Venous side) पर होता है और एक तरहका भरापन या पूर्णताका भाव समस्त शरीरमें रहता है, प्रत्यङ्ग फूले रहते हैं ; पर दबानेपर गड़हा नहीं पड़ता, चेहरा दाग-दगीला रहता है, तो समझना चाहिये, कि यह जटिल रोग है और इसका अन्त कोरण्ड-वटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease) और मृत्युमें होगा।

स्पञ्जिया टोस्टा

(Spongia Tosta)

स्पञ्जिया टोस्टाके मानसिक लक्षण यह बताते हैं, कि यह हृद्-रोगकी दवा है। जब किसी दवासे स्पञ्जियामें प्राप्त घबड़ाहट, भय और श्वास-कष्ट प्राप्त होता है, तो बहुतकर वह हृद्-रोगकी औषधिमें परिणत हो सकती है; जबतक कि इन दशाओंके साथ उपदाह और मस्तिष्कके किसी लक्षणके प्रादाहिक रोग न सम्मिलित हों। इस दवामें मस्तिष्कके किसी लक्षणके बिना ही स्पष्ट घबड़ाहट, मृत्यु-भय और श्वास-रोध प्राप्त होता है, इसके साथ ही कलेजा धड़कना और हृत्पिण्ड-प्रदेशमें अस्थिरता भी सम्मिलित रहती है। इसका सम्बन्ध खासकर उन रोगोंसे है, जिसमें दर्द होता है और हृत्पिण्ड-प्रदेशमें, वक्षमें भरापन या पूर्णताका भाव रहता है, साथ ही श्वास-कष्ट, घबड़ाहट, मृत्यु-भय, भविष्यके सम्बन्धमें आशंका और कोई भयङ्कर घटना घटनेकी आशंका सम्मिलित रहती है। रातमें भयङ्कर भयमें जाग पड़ता है और अपनी पारिपार्श्विक स्थिति समझनेमें उसे कुछ समय लगता है (**इस्क्युलस, लाइकोपोडियम, सैम्बुकस, लैकेसिस, फास्फोरस** और **कार्बो-वेजिटेबिलिस**)।

स्पञ्जियाका **पेकोनाइट**से निकटस्थ सम्बन्ध है, यह भी हृत्पिण्डको उत्तेजित करता है, घबड़ाहट पैदा करती है, भय और बेचैनी तथा मृत्यु-भय लाता है, मृत्यु-काल बताता है, पर इसके साथ ही स्पष्ट ज्वरकी उत्तेजना सम्मिलित रहती है। स्पञ्जियामें ज्वरकी उत्तेजना बहुत ही सामान्य दर्जेका है। यह **पेकोनाइट**की अपेक्षा अधिक गम्भीर-क्रिय है। इसकी हृत्पिण्डकी बीमारियोंमें बहुत धीरे-धीरे बढ़नेकी प्रवणता रहती है, साथ ही मांस-तन्तुओंमें वास्तविक परिवर्त्तन आ जाता है, हृत्पिण्डको विवृद्धि हो जाती है, यह दृढ़तासे बढ़ता जाता है और हृत्कपाट भी परिवर्त्तन हो जाते हैं, ठीक नहीं बैठते, इसीलिये भाथी चलने और सीटी बजनेकी तरह आवाजें होती हैं और मानसिक लक्षणोंके साथ हृत्कपाटका उद्गीरण रहता है। क्रूप (काली खाँसी) में ये दोनों ही सदृश हैं; परन्तु स्पञ्जिया अधिक गम्भीर क्रिय है, आरम्भमें धीमा, विकासमें कई दिवस लगते हैं। **पेकोनाइटमें** सूखी ठण्डी हवा लगकर आज सर्दी हो जाती है और रातमें पहली नींदमें ही क्रूपका दौरा हो जाता है। आधी रातके पहले ही सूखी आक्षेपिक खाँसी हो जाती है; रूखी खाँसी; परन्तु स्पञ्जियामें या तो गत काल सर्दी लगी है या गत परसों। पहले एक प्रकारका रूखापन और श्लैष्मिक-झिल्लीका सूखापन रहता है, छींकें आती हैं। दोनों ही दवाओंमें आधी रातके पहले सूखी, रूखी, कुत्ता भूकनेकी तरह खाँसी, आरा चलनेकी तरह श्वास-प्रश्वास और शुष्क वायु-पथके साथ क्रूप खाँसी है। वे इतनी सदृश हैं, कि जब **पेकोनाइट** केवल आंशिक रूपसे लक्षणोंको वशमें लाता है और दूसरी रातमें फिर पैदा हो जाता है या आधी रातके बादतक रहता है, तो स्पञ्जिया इसका स्वाभाविक अनुगामी हो जाता है। स्पञ्जिया आगे आती है; क्योंकि आरम्भमें यही शायद दवा थी। प्रत्येक बादवाली रातमें जो रोग बदतर होते हैं, आधी रातके पहले रूखी कुत्ता

भूकने या कौएके काँव-क्रौंवकी तरह खाँसी ; यद्यपि इसमें भी आधी रातके बाद क्रूपका लक्षण है। यह एक गभीर-क्रिय दवा है, यद्यपि इसके उपसर्ग कभी-कभी आकस्मिक रूपसे उत्पन्न होते हैं।

हीपरका रोगी रातमें और सवेरे बदतर रहता है और जब **ऐकोनाइट** स्पष्ट रूपसे वशमें ले आया है ; परन्तु दूसरे दिन सवेरे क्रूप खाँसीका फिर दौरा हो जाता है, ऐसी अवस्थामें **हीपर** उपयोगी होता है या यदि दूसरी शामको यह फिर घरघराहटके साथ पैदा हो जाती है, तो भी **हीपर** उपयोगी होता है। सूखी, विना घरघराहटके स्पंजिया है। यदि बच्चा ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है और कहता है, कि वह सर्दीला हो रहा है, तो **हीपर** फायदा करता है। यदि वह कहता है, कि कमरा बहुत गर्म है और ओढ़ना उतार फेंकता है, तो उसके लिये **कैल्केरिया-सल्फ**की जरूरत रहती है।

स्पंजियाका रोगी गर्म कमरेमें और तापसे बदतर रहता है। **आयोडिन**की तरह ठण्डा रहना चाहता है ; परन्तु **आर्सेनिक, नक्स-वोमिका** और **लाइकोपोडियम**की तरह गर्म पेयोंसे अच्छा रहता है।

ग्रन्थियोंको आक्रान्त करनेकी प्रवणता आश्चर्यजनक है। एक तरहसे सभी ग्रन्थियाँ आक्रान्त हैं ; वे धीरे-धीरे बढ़ती हैं और बहुत ज्यादा कड़ी हो जाती हैं। जिन ग्रन्थियोंमें प्रदाह हो जाता है या जिनका आकार बढ़ गया है, वे कड़ी हो जाती हैं या उनकी विवृद्धि हो जाती है। हृत्पिण्डकी विवृद्धि (**कैलमिया, सीपिया, नैजा**)। स्पंजियाने हृदावरक-झिल्ली-प्रदाह (Endocarditis), हृद्रोग-जनित क्रूप तथा बहुत-सी वातके परिणाम-स्वरूपमें होनेवाली प्रदाहकी बीमारियाँ आरोग्य कर दी हैं। चुल्लिका-ग्रन्थि (Thyroid) की विवृद्धि, घेघा, जब कि हृत्पिण्ड आक्रान्त रहता है और आँखें बाहर निकली रहती हैं। ग्रैवेयी-ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई, अण्ड-वृद्धिके अदम्य रोगी, दबे हुए सूजाकके कारण या सर्दी अथवा अन्य कारणोंसे अण्डकोष-प्रदाह, धीरे-धीरे बढ़नेवाला कड़ापन।

सम्पूर्ण श्वास-यन्त्रपर क्रिया होती है ; हृत्पिण्ड-जनित श्वास-कष्ट और बहुत ही जटिल प्रकारका दमा। सीटी बजने और भनभनाहटकी आवाजके साथ वायु-पथोंका सूखापन, घरघराहट तो शायद ही कभी रहती है, बैठ जाना और सामनेकी ओर झुक जाना पड़ता है, समय-समयपर बहुत अधिक श्वास-कष्टके बाद, वायु-पथोंमें सफेद लसदार श्लेष्मा बनता है, जिसे निकालना मुश्किल होता है ; यह ऊपर उठता है और अकसर निगल जाना पड़ता है (**आर्निका, कास्टिकम, लैकेसिस, कैलि-कार्ब, कैलि-सल्फ, नक्स-मस, सीपिया, स्टैफिसेग्रिया**)।

लेटे रहनेपर श्वास-कष्ट बदतर हो जाता है। यह लक्षण इसके अन्य रोगोंमें भी दिखाई देता है ; प्रचण्ड, खोपड़ीकी तलीके सर-दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर उठकर बिछावनपर बैठ जाना पड़ता है और चुपचाप रहना पड़ता है। ऊपर उठी हुई स्थितिमें सरको रखनेसे पश्चात् मस्तकके धीमे दबावमें आराम पहुँचता है।

बहुत तरहका सर-दर्द होता है, पश्चात् मस्तकमें, ललाटमें, रक्त सञ्चयी सर-दर्द, पर इनमें अधिकांशके साथ गठिया, हृत्पिण्डके रोग और दमा सम्मिलित रहता है ; ये शायद मस्तिष्कमें रक्तके शिथिल दौरानके कारण होते हैं ।

क्रूपमें चेहरा कष्ट-पूर्ण रहता है ; चिन्तित, मलिन, पीला और भर्राया ; दबी हुई आँखोंके साथ नीला, पीला, घबड़ायी हुई भाव व्यञ्जनाके साथ लाल ; पर्यायक्रमसे लाल और पीला ; ठण्डा पसीना। कष्टकर श्वासके ये साधारण भाव हैं और इसीलिये औषधि निर्वाचनके लिये महत्वपूर्ण नहीं हैं। प्राथमिक लक्षणोंके रूपमें, ये शायद **आर्सेनिक**को निर्देशित करें ; पर जब हृत्पिण्डकी कठिनाइयोंके कारण होते हैं, तो वे महत्वपूर्ण नहीं रहते ।

"मीठा खानेके बाद बदतर हो जानेवाला गल-क्षत। चुल्लिका-ग्रन्थि यहाँतक कि ठुड्डीके साथतक फूली हुई ; रातके समय, श्वास-रोधके दौरे, कुत्ता भूँकनेकी तरह खाँसी, इसके साथ ही कण्ठमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और तलपेटमें यन्त्रणा।" तालुमूलकी विवृद्धि, निगलनेमें कष्ट।

जब गर्म खाद्यसे श्वास-कष्ट और खाँसी घट जाती है, तो स्पञ्जिया ही दवा होती है ; गर्म पेयोंसे भी अच्छा रह सकता है।

स्वर-यन्त्रकी तकलीफें अत्यन्त स्वर-भङ्गके साथ और उन मनुष्योंमें जो यक्ष्माकी ओर झुक रहे हैं, वंशगत यक्ष्माके साथ, रक्त-स्वल्प चेहरा, कमजोर फेफड़े, पर यक्ष्माका सञ्चय नहीं ; पर एकाएक स्वर भंग पैदा हो जाता है। यक्ष्माके उन रोगियोंको, जिन्हें स्पञ्जियाकी जरूरत रहती है, स्वर-यन्त्र आक्रान्त हो जानेकी प्रवणता रहती है। रोगीको नयी सर्दी लग जाती है और यह स्वर भंगके साथ स्वर-यन्त्रमें बैठ जाती है। इस रोगीपर ध्यान दीजिये ; क्योंकि जहाँ प्रदाह है, वहाँ यक्ष्माका तलछट जम सकता है और तन्तुओंका रस-स्राव होनेके बदले यक्ष्माका हो सकता है। यक्ष्माके रोगियोंमें सबसे पहले स्वर-यन्त्र आक्रान्त होनेकी सम्भावना।

स्पञ्जियामें बाहर निकलनेवाले स्रावपर ध्यान मत दीजिये ; पर भीतर रस-स्रावी क्रूपपर।

"आवाज बिगड़ जानेके साथ स्वर-भंग, सर्दीके कारण स्वर-यन्त्रका बहुत सूखापन ; नाककी सर्दी, छींक, समूचे वक्षसे आवाज आती है, सींगकी तरह शुष्क रहता है ; आवाज फुसफुसाहट-सी, क्रूपकी तरह, नाक सूखा। बहुत थोड़ा श्लेष्मा एकत्र होता है ; पर इसके बाद जखम होना आरम्भ हो जाता है और इसके बाद बहुत ज्यादा बलगम निकल सकता है। घरघराहटके अनुपातसे तो यह दवा कम निर्देशित होती है। मोटी घरघराहटके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा **हीपर**में है।

समय-समयपर अवस्था-प्राप्तोंको सर्दी लग जाती है और स्वर-यन्त्र तथा टेंटुआमें खाल उधड़नेका भाव हो जाता है। पलङ्गपर लेटनेपर उसे स्वर-यन्त्रका सङ्कोचन होने लगता है। स्त्रियोंको साधारणतः कण्ठनली-द्वारकी अकड़न हो जाया करती है (Laryngis-

mus stridulus)। **इग्नेशिया, जेलसिमियम, क्लोरोसिरेसस** और स्पञ्जिया। दसमें आठ रोगी—**इग्नेशिया** और **जेलसिमियम** आरोग्य कर देंगे।

क्रूप प्रभृतिमें स्वर-यन्त्र स्पर्श-असहिष्णु रहता है ; **फास**की तरह।

सूखी, आक्षेपिक खाँसी, कष्टकर खाँसी ; पाकाशयमें ठण्डी चीजें जानेपर रोग-वृद्धि हो जाती है (**वेरेट्रम**का रोगी ठण्डा पानीसे अच्छा रहता है ; पर खाँसी बदतर हो जाती है)। यदि कमरा गर्म रहता है, तो सूखी, चुनचुनी-भरी, तङ्ग करनेवाली क्रूपकी तरह आक्षेपिक खाँसी हो जाती है।

हृत्पिण्ड और दमाकी तकलीफोंमें यह **लैकेसिस**के सदृश है, नींदसे जागनेपर दम घुटनेपर ; नींदके बाद श्वास-कष्ट बदतर हो जाता है।

फास्फोरसका श्वास-कष्ट अकसर सोनेपर बढ़ जाता है, साथ ही दम घुटनेका भाव रहता है। **लैकेसिस**में यह बढ़ा हुआ रहता है ; यक्ष्मामें जब रोगी मरने-मरनेको होता है, तो सोनेपर पसीना होने लगता है ; सोनेको जानेपर और जागनेपर श्वास-कष्ट। **लैकेसिस**से उपशम होता है और दुबारा अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

गाढ़े, हरे या पीले पीबकी तरह बलगमके साथ हृत्पिण्डके रोग और नींद आते ही श्वास-कष्ट, जिससे कि जबतक जागा जाता है, रोगीको जागते ही रहना पड़ता है, बढ़ी हुई वक्षका बीमारियोंमें निद्रासे भय। ऐसे रोगियोंको **ग्रिण्डेलिया रोबस्टा** उपशम करेगा और यदि उपसर्ग केवल श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहका है, यक्ष्माका नहीं, तो यह आरोग्य कर देगा।

खासकर हृत्पिण्डके लक्षणोंको अध्ययन कीजिये। "रक्तके दौरानके लक्षण बदतर रहते हैं ; मानसिक आलस्यसे, खाँसनेपर, दाहिनी करवट लेटनेपर, ऋतु-स्रावके पहले लेटनेपर, आगे झुककर बैठनेपर, धूम्रपान करनेपर या सीढ़ी चढ़नेपर। डरसे जाग पड़ता है और ऐसा मालूम होता है, मानो दम घुट रहा है। रातमें जल्द ही सो जाता है, श्वास-रोध जगा देता है।" मैंने ये लक्षण बताये हैं ; पर उन्हें जोर देनेके लिये पढ़िये।

स्फोटन, तनी हुई शिरायें ; शरीरके गह्वरोंमें शोथ। खासकर यह यक्ष्मा ग्रस्त माता-पिताके छोटे बच्चोंके लिये उपयोगी है, जो कमजोर रहते हैं और मलिन रहते हैं तथा बढ़ते नहीं। यक्ष्माका दोष।

खुजलीपर किसी तरहका उद्भेद न होना, हमेशा ऐसा मालूम होता है, कि उद्भेद निकलना ही चाहते हैं। केवल सरल छाजनकी तरह उद्भेद निकलते हैं। सब जगह खुजली होती है, पर उद्भेद नहीं दिखाई देते।

नयी हृदावरक-झिल्ली-प्रदाहकी प्रधान दवाएँ स्पंजिया, **पेट्रोटेनम, सीपिया** और **कैलमिया** हैं। **नैजा** हृत्कपाटकी बीमारियोंमें उपयोगी होता है।

स्क्विला

(Squilla)

पुराने समयमें, प्राचीन चिकित्सकों द्वारा समस्त फेफड़े, वायुनली और मूत्रपिण्डकी बीमारियोंमें स्क्विलाका प्रयोग होता था; फुसफुस-प्रदाह, दमा, थोड़ा पेशाब और शोथ-पूर्ण रोगमें।

खाँसी :—सवेरेके वक्त ढीली खाँसी आती है और शामको सूखी (**पेल्यूमिना, कार्बो-वेजिटेबिलिस, फास्फोरिक एसिड, सीपिया, स्ट्रैमोनियम, पल्सेटिला,** (स्क्विला)। यहाँ **पल्सेटिला** और स्क्विला सुदृढ़ हैं; पर स्क्विलामें कड़ी खाँसी है; खाँसता है, मुँह भर आता है, छींकता है, पेशाब और मल निकल जाता है; रोगीको खाँसते-खाँसते पसीना होने लगता है; वह खखारता और खाँसता है और अन्तमें मुश्किलसे दो या तीन ढेले, सफेद, लसदार श्लेष्माको निकाल सकता है; यह आक्षेपिक खाँसी है, जो टेंटुआमें श्लेष्मा रहने या चुनचुनी और वक्षमें कुछ रेंगनेकी अनुभूतिके कारण आती है।

सवेरेकी ढीली खाँसी शामकी सूखी खाँसीकी अपेक्षा बदतर रहती है। रोगी सर्दीला रहता है, जरा भी हवाका झोंका सहन कर सकता; बहुतसे वस्त्र पहने रहना चाहता है और सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती, **पल्स**में ऐसा नहीं होता। पेशाब अमूमन बहुत ज्यादा होता है, पानीकी तरह, वर्ण-हीन।

सवेरे ११ बजेसे १२ या १ बजे दिनतक, वह श्लेष्मासे भर जानेके कारण बहुत श्वास-कष्ट होता है; यही भाव समयपर लौट आता है; पर यह हृत्पिण्डकी दुर्बलताके कारण होता है। बहुत ज्यादा, वर्ण-हीन पेशाब इसका एक महत्वपूर्ण लक्षण है और यह **इग्नेशिया**के सदृश है; पर स्क्विलाका रोगी **इग्नेशिया**की तरह गुल्म-वायु-ग्रस्त (Hysterical) रोगी नहीं होता; यह मस्तिष्कके रोगोंमें **कैनाबिस इण्डिका** या **जेलसिमियम**के बिलकुल सदृश है; पर स्क्विलामें बहुतसे मस्तिष्क-रोग या बहुतसे ज्वरके लक्षण नहीं हैं। **फास्फोरस**में मस्तिष्कका प्रदाह है और जब खतरनाक समय आता है, तो पेशाबका बढ़ जाना एक बुरा चिह्न है। **पल्सेटिला**की रोगिनी रोती रहती है, इसके बाद बहुत ज्यादा पेशाब होता है। स्क्विलामें बहुत ज्यादा, वर्ण-हीन पेशाब, बहुमूत्र (Diabetes) में होता है; जब यह लक्षण गायब होता मालूम होता है, तो वक्षके उपसर्ग आते हैं, ये तकलीफें जाती हैं और मूत्रपिण्डकी तकलीफें पैदा होती हैं, यह गायब होगी और शोथ आयगा; इसके बाद जब फिर पेशाब ज्यादा होने लगेगा, तो ये शोथके लक्षण गायब हो जायेंगे और स्क्विला बहुत देरतक क्रिया करता है।

नाकसे भी बहुत ज्यादा, वर्ण-हीन स्राव होता है, खासकर सवेरे; खाँसी **टार्टर एमेटिक**की तरह होती है।

अपनी भीतरी प्रकृतिमें स्क्विला बिलकुल **थूजा**की तरह, फड़फड़ाते हुए पेशाब और आक्षेपिक खाँसीके सम्बन्धमें है, पेशाब निकलनेके साथ कुछ-न-कुछ गहरा, भूरा या काला

तरल मल, फेन-फेन बुलबुलोंमें निकलता है। यह बहुत बदबूदार, दर्द-रहित और अनैच्छिक रूपसे हो जाता है।

वक्षमें साँस लेने और खाँसनेके समय सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ कष्टकर श्वास-प्रश्वास। बहुत ज्यादा श्वास-कष्ट, बच्चा पी नहीं सकता ; आग्रहसे प्याला पकड़ तो लेता है, पर सुड़क-सुड़ककर ही पी सकता है ; बाध्य होकर बार-बार गहरी साँस लेनी पड़ती है जिससे खाँसी आने लगती है ; प्रत्येक बार परिश्रम करनेपर लघु-श्वास हो जाता है। वक्षका दर्द, सवेरेके वक्त बढ़ जाता है। धीमा वातका दर्द, व्यायाम करनेपर बढ़ जाता है ; विश्राम करनेपर घटता है। शामको सूखी खाँसी, जिसमें मीठा बलगम निकलता है। शरीरमें बहुत ताप। **ब्रायोनिया**के बाद खूब फायदा करता है। इसका चरित्रगत लक्षण है, पसीना बिलकुल ही न होना।

११ बजे रातके समय सूखी खाँसी, ठण्डे पानी और ठण्डी हवासे बदतर हो जाती है (**रियुमेक्स**)। **बेलेडोना**में भी ११ बजे रातके समय खाँसी आती है, जो ओढ़ना उतारनेपर बदतर हो जाती है ; चेहरा लाल और माथेमें रक्त-सञ्चय रहता है। **लैकेसिस**में सोनेके बाद ही, जो ११ बजे रातमें हो सकती है।

नाकका स्राव कटु, खाल उधेड़नेवाला, सवेरेके वक्त बदतर ; प्रचण्ड छींकें। मल गहरा भूरा या काला।

दिनके समय शायद ही कभी बहुत खाँसी आती है। न्युमोनिया ; साँस लेनेके समय सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, हिला देनेवाला दर्द, हमेशा दाहिनी तरफ होता है ; वक्षकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह और फेफड़ोंसे रक्त स्राव होनेके बाद न्युमोनिया हो जानेकी सम्भावना। वक्षमें यन्त्रणा, हिलने-डोलनेपर बदतर। **ब्रायोनिया** अकसर रोगको उपशम कर देगा और रोग स्किलामें चला जायगा।

स्टैनम मेटालिकम

(Stannum Metallicum)

स्टैनम खासकर उन व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जो बहुत दिनोंसे कमजोर होते आ रहे हैं। यह इतना हृदयग्राही रहता है, कि यह कहा जा सकता है, कि बद्धमूल धातुगत उपसर्ग अवश्य ही वर्त्तमान हैं। बढ़ती हुई दुर्बलता, रक्त-श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह-सम्बन्धी उपसर्ग और वर्षों पहलेके स्नायु-शूलका इतिहास प्राप्त होता है। दर्द सहन नहीं होता और किसी कामके करनेसे अनिच्छा बढ़ती है, किसी पुरुषमें व्यवसायमें संलग्न रहनेकी इच्छाका न होना और स्त्रियोंमें अपनी गृहस्थीके काम देखनेकी इच्छाका न होना ; हमेशा क्लान्त, सभी काम क्लान्तिजनक मालूम होते हैं।

चेहरेकी मलिनता बढ़ती जाती है, यहाँतक कि मोमकी तरह हो जाता है, रोगियल दृश्य। जो धीरे-धीरे कमजोर होते जाते हैं और जिन्हें चेहरा, आँखें, पाकाशय और आँतोंका

स्नायु शूल हो जाता है; अकसर कहा हुआ खोंचा मारने या फाड़नेकी तरह दर्द नहीं; बल्कि एक दर्द, जो धीरे-धीरे आरम्भ होता है और दृढ़तासे वढ़ता है और फिर धीरे-धीरे घटता है। कभी-कभी दर्द सूर्योदयसे आरम्भ होता है, दोपहरतक वढ़ता है और धीरे-धीरे घटता है और सूर्यास्तके समय बन्द हो जाता है। इसके विपरीत, यह किसी भी समय पैदा हो सकता है, जैसे कि अकसर १० बजे सवेरे और दस या वीस मिनटोंतक वढ़ता रहता है, फिर धीरे-धीरे घटकर गायब हो जाता है। और भी कई दवाओंमें यह सूर्यके साथका सर-दर्द है। **कैलमियामें** ऐसा ही सर-दर्द है, ठीक इस तरह नियमित रूपसे नहीं बढ़ता और घटता है; परन्तु खासकर दोपहरके समय वदतर हो जाता है। **कैक्टसमें** भी यह सूर्यके साथका सर-दर्द है। **नेट्रम-म्यूरमें** ऐसा होता कभी नहीं मालूम होता है; पर इसने आरोग्य किया है, खासकर जब यह १० बजे सवेरे शुरू होता है और २ से ३ बजे दिनतक वदतर हो जाता है। **सैंगुइनेरियामें** भी सूर्यके साथ आने-जानेवाला सर-सर्द है।

स्टैनमकी यक्ष्मा-प्रवणता स्नायु-शूलसे बहुत कुछ सम्बन्ध रखती है। यदि ये रोगी स्नायु-शूलकी दशामें रह जाते हैं, तो यक्ष्मा-गुटिका जमना रुक जाता है; परन्तु इनमेंसे अधिकांश इस समय उपशामक दवा खोजते हैं, जिसका निश्चित परिणाम शीघ्रतासे अन्त होता है। यदि स्टैनमका स्नायु-शूल रोक दिया जाता है, तो यक्ष्मा प्रकट होता हुआ दिखाई देता है, खासकर फेफड़ेका यक्ष्मा। मालूम होता है, कि श्लैष्मिक-स्राव द्वारा ही प्रकृति प्रभावोंको निकाल फेंकना चाहती है। यदि स्नायु-शूलको अपना काम नहीं करने दिया जाता, तो रोगी अत्यन्त शीत-असहिष्णु हो जाता है, उसे सहजमें ही सर्दी लग जाती है। जब यों ही छोड़ दिया जाता है, तो स्नायुओंमें प्रत्येक सर्दी बैठ जाती है और प्रत्येक हवाका झोंका आँखोंका स्नायु-शूल उत्पन्न कर देता है, प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन उसे सहन नहीं होता, ग्रावोलकी जलीय धातु-प्रकृति, परन्तु जब यह किसी तरह भी **क्विनाइनसे** उपशम किया जाता है और असदृश होमियोपैथिक दवाओंसे उपशम किया जाता है, जिनमें **फास्फोरसकी** तरह वक्षमें सर्दी पकड़नेकी प्रवणता है, तो कुछ दिनों वाद, वह सर्दीसे छुटकारा नहीं पाता; बल्कि अनवरत वक्षकी श्लैष्मिक झिल्ली-प्रदाह बना रहता है और इसके वाद उसकी मिलियरी टियुवरक्युलोसिस (सूक्ष्म गुटिका-दोष-पूर्ण यक्ष्मा) से मृत्यु होगी। यक्ष्माको हटानेके लिये स्टैनम लाभदायक है और उस रोगका एक आश्चर्यजनक उपशामक है।

डोरीसे खींचनेकी तरह दर्द मालूम होता है, यह धीरे-धीरे वढ़ता और धीरे-धीरे ही छोड़ता है।

पल्सेटिलाका दर्द प्रथम अर्द्ध दशामें बहुत कुछ इसके सदृश है; यह धीरे-धीरे वढ़ता है, पर एकाएक झटकेके साथ छोड़ जाता है; धीरे-धीरे आता है और एकाएक रुकता है।

याद कीजिये, कि **वेलेडोनाके** दर्दके वारेमें क्या कहा गया है। यह एकाएक

होता है और तुरन्त अपनी तेजीकी सीमापर जा पहुँचता है, जहाँ यह घण्टोंतक रह सकता है ; पर एकाएक रुक जाता है।

स्टैनमका दर्द कभी-कभी इतना तीव्र होता है , कि इसके साथ धमक और टपक सम्मिलित रहती है और मन संज्ञा-हीन-सा मालूम होता है।

"रोज सवेरे सर-दर्द, एक या दूसरी आँखपर, ज्यादातर बायीं आँखपर होता है और धीरे-धीरे सम्पूर्ण ललाटतक फैल जाता है और धीरे-धीरे बढ़ता-घटता है ; अकसर इसके साथ वमन भी होता है।" "प्रचण्ड जलनकी तरह, पीटनेकी तरह दर्द।" इसमें कभी कभी जलन भी होती है। "मालूम होता है, कि भीतरी चोटोंसे माथा फट जायगा। बायीं आँखका स्नायु-शूल धीरे धीरे दस बजे दिनसे दोपहरतक बढ़ता है, इसके बाद धीरे धीरे घटता है, दर्दके समय आँखोंसे आँसू बहता है। भौंवोंके ऊपरका सविराम स्नायु-शूल १० बजे सवेरेसे ३ या ४ बजेतक होता है, धीरे-धीरे बढ़कर चरम-सीमापर जा पहुँचता है और फिर धीरे-धीरे घटने लगता है, क्विनाइनके अपव्यवहारके बाद।" यह तब होता है, जब शरीर कमजोर रहता है, चेहरा मलिन रहता है और यक्ष्माप्रवणता रहती है, दर्दसे भरा रहता है और आरम्भिक इतिहाससे पता लगता है, कि वक्ष या नाकमें सर्दी लगनेके बदले, जैसी कि दूसरोंकी सर्दी लगती है, हरेक सर्दी स्नायुओंमें बैठ जाती है। अन्तमें उसका वक्ष सर्दी ग्रहण करने लगता है, इसके साथ ही श्वास कष्ट, प्रचण्ड हिला देनेवाली खाँसी, मुँह भर आना, ओकाई, वमन और बहुत ही ज्यादा कष्ट होता है। बहुत ज्यादा, गाढ़ा, पीलापन लिये हरा, खून-मिला बलगम निकलता है, जिसका स्वाद मीठापन लिये रहता है **(फास्फोरस)**। खाँसनेके समय ओकाई बहुत स्पष्ट रहती है, गाढ़ा, सफेद, पीला या हरा लसदार बलगम निकलता है। चल नहीं सकता, खाँसे बिना कुछ कर नहीं सकता, हमेशा क्लान्त, यह कामकी एक चेष्टा है। सवेरे श्लेष्मासे भरे वक्षकी दशामें नींद खुलती है, खाँसता है और बलगम निकलता है और इतनेपर भी कुछ रह जाता है ; उसका मुँह भर आता है, ओकाई आती है और वमन होता है, यह मुँहसे सूतकी तरह झूला करता है, **स्वाद मीठा रहता है** ; कभी-कभी नमकीन या खट्टा होता है।

यह घोर दुर्बलता आवाजमें भी प्रकट होती है। स्वर-भङ्ग, स्वर-रोध, स्वर-रज्जु क्रिया नहीं करती ; एक पाक्षाघातिक दुर्बलता। बोलनेसे कमजोरी मालूम होती है, खासकर वक्षमें। "स्वर-भङ्ग, कमजोरी, गाना आरम्भ करनेपर वक्षमें खालीपन मालूम होना, जिससे कि गायिकाको लगातार बाध्य होकर रुक जाना और गहरी साँस लेना पड़ता है ; कभी-कभी थोड़ा-सा बलगम निकाल देनेवाली खाँसी कुछ मिनटोंके लिये स्वर-भंगको हटा देती है। स्वर-यन्त्रमें खाल वधड़ जानेका भाव।" टेंटुआमें खाल उधड़नेका भाव और खाँसनेके समय समूची राहमें नीचेकी ओर चुनचुनी होती है। खाँसनेके समय उपदाह, मानो टेंटुआमें श्लेष्मा है या श्वासके साथ, इसके साथ ही सूखी या तर खाँसी, बैठे रहनेपर, चलनेकी अपेक्षा ज्यादा अनुभवमें आती है। "टेंटुआमें बहुत ज्यादा मात्रामें बलगम इकट्ठा होना, खाँसनेपर सहजमें ही निकल जाता है, सीढ़ीपर चढ़नेसे दबा हुआ श्वास, थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर, लेटे

रहनेपर, शामको, खाँसनेसे।" "क्लान्तकारी आवेशोंमें खाँसी ; कुक्षि-देश इस तरह दर्द-पूर्ण, मानो पीटा गया है ; खाँसी, प्रचण्ड, खण्ड-खण्ड कर देनेवाली, गहरी, लघु, समय-समयपर, मानो कमजोर वक्षसे आ रही है, इसके साथ ही स्वर-भंग और कमजोर आवाज। बोलने, गाने, हँसने, करवट लेटने और कोई गर्म चीज पीनेपर खाँसी आने लगना।" "अण्डेके सफेद अंशकी तरह बलगम ; पीला, हरा पीव ; मीठापन लिये, सड़ा, खट्टा या नमकीन, दिनके समय वक्ष इतना दुर्बल रहता है, कि वह बोल नहीं सकता ; वक्षमें खालीपनका भाव।" जहाँ बँधी गवसे दवा देनेवाले **ब्रायोनिया** प्रभृति खाँसी ढीली करनेके लिये निम्न-क्रममें देते हैं, वहाँ यह दवा बहुत बार निर्देशित रहती है। यक्ष्मामें स्टैनम खतरनाक नहीं होता और यदि रोगी असाध्य है, तो रोगको उपशम कर रखेगा। यह **सिलिका**की तरह समस्त स्वास्थ्य-विधानको न जगा देगा ; पर स्नायविक लक्षणोंकी कुछ वृद्धि हो सकती है, यदि कुछ बनाने लायक है, तो यह रोगीको सुधार देगा। यदि यह फिरसे उसका पुराना स्नायु-शूलका दर्द ला दे और आप जानते हों, कि रोगी ज्यादा दिन नहीं जी सकता और उसे बहुत तकलीफ होती मालूम हो, तो **पल्सेटिला** इसका प्रतिविष है।

जब स्टैनमके अधिकारमें रहनेपर ढीली सरल खाँसी प्रचण्ड, सूखी और हिला-देनेवाली खाँसीमें परिणत हो जाये और ज्यादा दिनोंतक रहती मालूम हो, तो **पल्सेटिला** ढीली खाँसीको फिरसे जारी कर देगा। यह दवाकी कोई अच्छा क्रिया नहीं है ; दुःसाध्य रोगियोंमें बहुत ऊँचा क्रम न दिया जाये, तो सर्वोत्तम परिणाम दिखाई देगा।

इसका दूसरा स्वरूप स्त्रियोंमें दिखाई देता है। यदि कोई ऐसी रोगिनी मिले, जिसे भयानक स्नायु-शूल था और वह कहती है, कि जबसे यह दर्द बन्द हुआ, तबसे बहुत ज्यादा, गाढ़ा, पीला, हरा श्वेत-प्रदर जारी हो गया, तो स्टैनमपर ध्यान दीजिये। रोगीमें बहुत कमजोरी है, जो वक्षसे बढ़ती मालूम होती है। श्वेत-प्रदरने उसे यक्ष्मा होनेसे बचा रखा है।

ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा ; गर्भाशय-प्रदेशमें नीचेकी ओर खींचनेका दर्द, जरायुकी और योनि-पथकी स्थान-च्युति।

पाक्षाघातिक लक्षण ; लिखनेवालोंकी ऐंठन ; स्त्रियाँ झाड़ू लेकर नहीं चल सकतीं (**ड्रोसेरा** बहुत-से रोगियोंको आरोग्य कर देता है)।

"कब्ज ; मल कड़ा, सूखा, गांठ-गांठ या अपूर्ण और हरा।" अक्रिय मलान्त्र अर्थात् एक पाक्षाघातिक दशा ; यद्यपि पाखानेका वेग बहुत होता है ; परन्तु पाखाना नहीं होता, जो कभी-कभी कोमल भी रहता है। दबावसे, पाकाशयके बल लेटनेपर, शूलका दर्द (**कोलोसिन्थ, क्यूप्रम**) अच्छा रहता है ; हिलने-डोलनेसे बदतर ; दुहरा जानेसे अच्छा रहता है।

"जोरसे पढ़ने या बात करनेपर बहुत क्लान्त हो जाता है।" चलनेसे बहुत आलस्य ; सम्पूर्ण शरीरकी क्लान्ति, खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय ; स्वरयन्त्र और वक्षमें बहुत कमजोरी मालूम होना, वहाँसे समूचे शरीरमें फैल जाता है ; धीमा व्यायाम करनेपर कम्पन और भी बढ़ जाता है।

स्टैफिसेग्रिया

(Staphisagria)

इसके मानसिक लक्षण बहुत महत्व-पूर्ण हैं और इसका मनपर हुआ प्रभाव और फिर वहाँसे शरीरपर स्टैफिसेग्रियाको दवाके रूपमें परिचालित करता है। उत्तेजनशील, सहजमें ही क्रोध आ जाता है; पर शायद ही कभी क्रोधशील रहता है अर्थात् सहजमें ही विचलित और उत्तेजित होता है; पर शायद ही यह प्रकट होता है। यह उन रोगियोंके लिये उपयोगी है, जिनमें आवद्ध रोष या दवे हुए क्रोध, दवे हुए मनोभावोंके कारण रोग हो जाता है। रोगी दवे हुए विद्वेप या विद्वेष-मिश्रित क्रोधके कारण वाधा-शक्ति-रहित हो जाता है। इन्हीं कारणोंसे उत्पन्न बीमारियाँ; वार-वार पेशाव लगनेके साथ उपदाहित मूत्राशय, दवे हुए क्रोध या अपमानके वाद यह कई दिनोंतक वना रहता है। "उसके अपने या दूसरोंके लिये कामोंपर वहुत ज्यादा विद्वेष; परिणाम सोच-सोचकर रंज करता है।

अपनेसे कम दर्जेके किसी मनुष्यसे किसी शरीफ आदमीका काम पड़ता है और एक वाद-विवाद पैदा हो जाता है और तर्क-वितर्कका अन्त अपमानमें होता है और वह सज्जन दूसरी ओर घूमता है। वह घर जाता और कष्ट भोगता है, वह किसीसे कुछ कहता नहीं है; वल्कि उसपर अधिकार करना चाहता है और कष्ट भोगता है। उसे कई रातोंमें नींद नहीं आती और अनेक दिवस क्लान्तिमें, मस्तिष्क क्लान्तिमें वीतते हैं, कई दिनों और सप्ताहोंतक वह जोड़-घटाव नहीं कर सकता, लिखनेमें और वोलनेमें भूलें करता है, मूत्राशयमें उपदाह और शूलका दर्द रहता है। याददाश्त नष्ट हो जाता है और आँखोंके भीतर भार मालूम होता है; यह वताना मुश्किल है, कि यह मस्तककी अनुभूति है या मनकी सुस्ती वर्णन करनेकी चेष्टा। ऐसा मालूम होता है, मानो ललाटमें एक काठका गोला है या सम्पूर्ण मस्तिष्क ही काठका वना है; वह सुन्न मालूम होता है। यह कहना मुश्किल है, कि यह दशा मनकी है या मस्तककी। ललाटमें एक ढेला रहनेकी अनुभूतिके साथ ऐसा मालूम होता है, कि माथेका समूचा पिछला भाग खोखला हो गया है, रोगी इसे सुन्नपन या अनुभूतिका अभाव वर्णन कर सकता है।

"उदासीन, निराश, रक्तकी तेजीके वाद मनकी सुस्ती।" कामोत्तेजन, हस्त-मैथुन, अतिरिक्त रति-क्रिया या कामुक विषयोंमें बहुत अधिक मन लगा रहनेके परिणाम स्वरूप जव यह दशा आती है, तो स्टैफिसेग्रिया आरोग्य कर देता है। काम-सम्बन्धको सोचते रहना। ये रोगी चिड़चिड़े, सहज क्लान्त, अत्यन्त उत्तेजना प्रवण रहते हैं और जव उन्हें अपने भावोद्रेकोंको वशमें लाना पड़ता है, तो बहुत तकलीफ भोगते हैं। स्वस्थ मनुष्य वाद-विवादको सहज ही हटा सकते हैं, यह समझकर कि उसने ठीक ही किया है; पर स्टैफिसेग्रियाके रोगीको जव अपनेको वशमें लाना पड़ता है, तो खण्ड-खण्ड हो जाता है, सरसे पैरतक काँपता है, आवाज विगड़ जाती है, काम करनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, सो नहीं सकता और इसके वाद ही सर-दर्द होता है।

बहुत बार मेरे आफिसमें ऐसे लोग आये हैं, जिनके ओंठ नीले थे, हाथ काँपते थे, हृत्पिण्ड तथा सारे शरीरमें दर्द होता था, समझते थे, कि मरना ही चाहते हैं। उन्होंने वाद-विवाद और रुद्ध क्रोधकी बात कही, स्टैफिसेग्रियाने उनका कम्पन रोक दिया और शान्त कर दिया। इसके बिना उन्हें अनिद्र-रातें वितानी पड़ती थी, मस्तिष्क क्लान्ति और अवसाद और सर-दर्द रहता था। यह दशा खासकर उनकी होती है, जिन्होंने काम-सम्बन्धी ज्यादतियाँकी हैं।

जब दूसरी सीढ़ी। उसकी इन्द्रियाँ भी उसी उपदाहित दशामें रहती हैं जिससे अङ्गुलियोंके सिरे असहिष्णु रहते हैं, कानोंमें शोर-गुलकी आवाज सहन नहीं होती, जीभमें स्वाद और नाकमें गन्ध सहन नहीं होती है; इतना असहिष्णु रहता है, कि हर चीजोंसे तकलीफ होती है। हरेक छोटे-से प्रादाहिक स्थानके अङ्गमें असहिष्णु विन्दु रहेंगे, छोटे स्नायुओंके थब्बे; जब जखम छू दिया जाता है, तो रोगीको चूर्ण-विचूर्ण कर देता है और टङ्कार हो जानेकी सम्भावना रहती है।

ववासीरके अर्बुद इतने असहिष्णु रहते हैं, कि उन्हें छुआ नहीं जा सकता। छोटे-छोटे स्नायु अर्बुद चर्मपर बन जाते हैं, गेहूँके आकारके छोटे-छोटे गूमड़ और अन्तस्त्वचाके अर्बुद, जो रससे ढँके रहते हैं, लाल, प्रादाहित, नीले रहते हैं, उन्हे जरा छू देनेसे ही रोगीको टङ्कार हो जाता है और दिन-रात उसे तकलीफ होती है। एक अति-असहिष्णु स्नायु-प्रवर्द्धन हाथपर या पीठपर पैदा हो जायगा। कभी-कभी यह काला हो जाता है, इसके अलावा एक छोटा-सा मसा निकलेगा, खासकर जननेन्द्रियपर और मलद्वारपर, मूत्रनली और योनिपर छोटा मांसांकुर निकल पड़ेगा, यह इतना स्पर्श-असहिष्णु रहेगा, कि यदि चुटकीसे दबाया जाय, तो रोगीको अकड़न हो जायगी, खासकर यदि स्त्री हो।

स्टैफिसेग्रिया तीनों ही धातुगत दोषोंके लिये उपयोगी होता है।

सभी रोगोंमें यह स्नायविक दशा रहती है। किसी स्टैफिसेग्रियाके रोगीको देखिये—समस्त मन और स्नायु-संस्थान चञ्चल रहते हैं।

स्टैफिसेग्रियाका सर-दर्द सुन्न, पश्चात् मस्तक और ललाटमें धीमा-धीमा दर्द रहता है; खासकर इन स्नायविक धातु-प्रकृतिवालोंको। "ऐसी अनुभूति मानो ललाटमें एक गोला है, सर हिलानेपर भी वह वहीं बैठा मालूम होता है। विषन्नता और विद्वेषसे उत्पन्न सर दर्द।

मस्तक-त्वचापर पपड़ी जमे, भूसी निकलनेवाले उद्भेद। "मस्तक-त्वचाकी दर्द-भरी असहिष्णुता, चमड़ेकी खाल उधड़ जाती है, उसमें जलन और चुनचुनी होती है, गर्म होनेपर और शामके वक्त बदतर।" जलीय रस-स्रावसे पपड़ियाँ उठ जाती हैं और यह खाल उधड़ी जगह बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती है।

पलकों और आँखके गोलोंमें नये प्रवर्द्धन, इन्हें छूनेपर बहुत दर्द होता है। मिबोमियन अर्बुद (**कोनायम, थूजा**), उपदाह, मस्त वर्चोंको (**क्रियोजोट**)।

ग्रन्थियोंपर इसकी क्रिया स्टैफिसेग्रियाका दूसरा स्वरूप है ; कण्ठमालाकी ग्रन्थियाँ ; गलेकी ग्रन्थियाँ बढ़ जाती हैं ; डिम्बकोष और अण्ड बढ़े हुए और कड़े ; हर जगहकी ग्रन्थियोंमें सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। कड़ापन, और पुराना काठिन्य।

स्नायु-पथमें सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द ; हृत्पिण्डमें और ऐसे स्नायविक रोगियोंमें जिनका मन हृत्पिण्डपर रहता है, पसलियोंका सुई गड़नेकी तरह दर्द हृत्पिण्डका दर्द मान लिया जाता है। सीधा वक्षकी राहसे पीठतक सुई गड़नेकी तरह दर्द।

मर्क्युरी (पारद) के अपव्यवहारके बाद तालुमूलकी सूजन। पुराना तालुमूल प्रदाह, तालुमूल बढ़ा नहीं रहता ; पर पूर्वके नये तालुमूल-प्रदाहके आक्रमणके कारण कड़ा रहता है ; कण्ठमालाकी प्रकृतिका धातु-दोष ; जिद्दी और चिड़चिड़ा। "भोजनके बाद दर्द पैदा हो जाता है।"

स्टैफिसेग्रियाके रोगीको आँतोंकी बहुत गड़बड़ी रहती है। इसे पुराना अतिसार या कब्जकी बीमारी रह सकती है। शूलका दर्द, मरोड़, तलपेटमें फाड़नेकी तरह दर्द। ठण्डे पानीसे, भोजनसे, विद्वेषसे, क्रोधसे अतिसार, आध्मानके साथ और सड़े अण्डेकी तरह भयानक बदबू रहती है। "कमजोर रोगियल बच्चोंको क्रोधके बाद पुराना अतिसार या सजा मिलनेके बाद या भावोद्रेकसे पतले दस्त।" (**कोलोसिन्थ**, **कैमोमिला**)।

स्टैफिसेग्रिया और **कोलोसिन्थ** ये दोनों आपसमें सदृश हैं। इन दोनोंमें ही खान-पानसे पीसनेकी तरह दर्द और पाखाना होता है ; दोनोंमें उदर-शूल है, मानो पत्थरोंसे दबाया जा रहा है। स्टैफिसेग्रियामें यह आँतोंमें मस्तक तथा अण्डोंमें होता है। **कोलोसिन्थ** आँतों और डिम्बाशयोंमें होता है; दोनों ही क्रोधसे बदतर हो जाते हैं। **सलफर कैल्केरिया** और **लाइकोपोडियम**की तरह **कास्टिकम**, **कोलोसिन्थ** और स्टैफिसेग्रिया एकके बाद दूसरे अच्छी क्रिया करते हैं।

ऐसा अकसर होता है, कि विवाहके बाद जल्द ही स्नायविक स्त्रियोंको बारम्बार दर्दके साथ पेशाबका वेग होता है, यह अत्यधिक कष्टकर हो जाता है और बहुत दिनों तक रह सकता है। युवती पत्नीके लिये स्टैफिसेग्रिया बहुत आराम पहुँचानेवाली दवा है। रातभर बहुत टीस मारना और फाड़नेकी तरह दर्द ; खून-मिला पेशाब ; अनैच्छिक रूपसे पेशाब होते जाना, पेशाब कटु और क्षय करनेवाला, इसके साथ ही जलन ; हिलने-डोलनेपर बदतर। जलन और वेगके साथ बहुत ज्यादा पीला पेशाब होना, पेशाब करनेके समय और बाद जलन।

स्टैफिसेग्रियाने बढ़ी हुई मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि आरोग्य कर दी है, जिसमें पेशाबका बहुत वेग होता था, खासकर वृद्ध पुरुषोंमें ; पेशाब टपकते रहनेके साथ लगातार टीस मारना। "बारम्बार पेशाबका वेग, जिसके साथ पतली धारमें या बूंद-बूंद पेशाबके साथ, थोड़ा पेशाब होना।" इसके बाद ऐसा मालूम हो सकता है, कि मूत्राशय पूरी तरह खाली नहीं हुआ।

पुं-जननेन्द्रियका महान कष्टकर लक्षण है—उत्तेजनशीलता ; पर इसमें ध्वजभङ्ग भी है, लिङ्गेन्द्रियकी अत्यन्त दुर्बलता ; कामेच्छा बहुत बढ़ी रहती है, पर ध्वजभंग भी रहता है। गुप्त पाप बहुत दिनोंतक जारी रखनेका दुष्परिणाम। "वीर्य-स्रावके बाद बहुत मर्मान्तिक दुःख और विरक्ति, सुस्ती और श्वास-कष्ट होने लगता है। कामोत्तेजना या काम-सम्बन्धी ज्यादतियोंका परिणाम ; याददाश्तका क्षय हो जाना, व्याधि-शङ्का, मौनावलम्बन, चेहरा धँसा हुआ, लज्जित चेहरा, स्वप्न-दोष, पीठमें दर्द, पैर कमजोर, शिथिल यन्त्र, जैव-तापकी कमी और सर्दी लग जानेकी प्रवणता, गहरी धँसी हुई लाल और ज्योति-हीन आँखें, केश झड़ जाते हैं ; मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव और कामेच्छाकी गड़बड़ी ; अण्डकोषोंमें धीमा और चूरनेकी तरह दर्द ; मुष्कमें लगातार खुजली, अण्डकोषोंकी क्षीणता।" घोर स्नायविक रोगीपर ध्यान दीजिये।

जननेन्द्रियपर प्रमेह-दोषसे या **पारदके** अपव्यवहारसे सूखे, असहिष्णु मसे, जिससे मसे निकलनेकी प्रवणता होती है। तर, लाल, बदबूदार मसे, **थूजामें** होते हैं।

अण्ड क्षय-प्राप्त हो जाते हैं, साथ ही ये प्रादाहित और फूले भी रहते हैं ; लिङ्गेन्द्रिय पतली पड़ जाती है।

ऐसा अनुभव होना, मानो उसपर कीड़े रेंग रहे हैं। रेंगना प्रभृति स्त्री वाह्य-जननेन्द्रियमें **काफिया, प्लैटिनम, पेट्रोलियम, एपिस, टेरेण्टुला, हिस्पानिया** ; पिछलेमें यह लक्षण है। जब कि वाह्य अंशोंमें ऐसा मालूम होता है, मानो कीड़े काट रहे हैं या रेंग रहे हैं, ताप या शीतसे बेहतर रहता है।

स्त्रियोंको प्रचण्ड कामेच्छा होती है ; असीम मानसिक और शारीरिक भावोंके साथ कामोन्माद ; मन ज्यादाकर काम-सम्बन्धी विषयोंपर ही लगा रहता है। "डिम्बाशयमें बहुत ही तेज, खोंचा मारनेकी तरह दर्द, डिम्बाशय स्पर्श करनेपर भी बहुत यन्त्रणा होती है ; दर्द जंघा-प्रदेश और उरुतक फैल जाता है। मासिक रजःस्राव अनियमित, देरसे और बहुत ज्यादा, कभी-कभी होता ही नहीं ; पहले पीला रक्त, फिर काला और थक्का-थक्का। शीताद धातु दोश ; योनि-द्वारका शोथ-ग्रस्त हो जाना ; भगमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और खुजली।"

हृत्पिण्ड-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; स्नायविक उत्तेजनाके साथ शरीरका काँपना, स्टैफिसेग्रियाका एक सर्वोत्तम निदर्शन है।

रक्त-क्षय, आघात, शस्त्रोपचार, तेज धारवाले शस्त्रोंसे घाववाले कटे हुए घावोंका प्रभाव। शस्त्रोपचारके घावोंमें तथा कटे घावोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; पथरी निकलनेके लिये मूत्राशयमें नश्तर लगनेके बाद शूलका दर्द ; पाखाना लगना, मिचली, कुछ पीनेसे बदतर।

हाथोंपर दादकी तरह उद्भेद, शामको खुजलानेके बाद खुजली और जलन होती है ; अङ्गुलियोंकी नोंकमें सुन्नपन, अङ्गुलियोंमें सन्धि-वातकी ग्रन्थियाँ। मुझे एक रोगी

याद है, जिसे गठियाका अस्थि गुल्म था ; उसने विचित्र ढङ्गसे अपना जीवन विताया था ; दुराचारोंका ही विचार किया करता था, शरीर भग्न हो गया था। स्टैफिसेग्रियाने उसकी टांगोंपर, घुटनेतक ऊपर एक प्रकारका उद्भेद उत्पन्न कर दिया, यह ठीक एक जोड़ा मौजे (पैतावा) की तरह दिखाई देता था, उसपर लगातार एक पपड़ी-सी जमी रहती थी। यह एक बरसतक रहनेके बाद छूटा ; पर उसका शरीर बहुत उन्नत हो गया और उसकी बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ भी बहुत कुछ सुधर गयीं। यह उद्भेद पीला था, पपड़ी जमा, कड़ा, चमड़ेकी तरह और जब पपड़ी उठायी जाती थी, तो उसके नीचे तरी थी, इसे पट्टीकी तरह काटना पड़ता था ; वह करीब-करीब लङ्गड़ा हो रहा था ; जिन अंशोंको काट दिया जाता था, वहाँ नयी फसल निकल आती थी। बहुत मुश्किलसे वह चलता था ; पपड़ियाँ उसको काटती थीं।

हड्डियोंकी तकलीफें, अस्थि-क्षत, अस्थि-आवरकका प्रदाह।

तेज या दुर्बल मनुष्योंका, इधर-उधर हटनेवाले दर्दके साथ सन्धि-वात। पारदके कारण अस्थि-रोग, जखम, अस्थि-क्षत, तेज काटनेवाले यन्त्रोंसे लगी चोटें। रातके समयका हड्डियोंका दर्द।

ऐसाफिटिडा, मर्क्युरियस, सिलिका।

स्ट्रैमोनियम
(Stramonium)

स्ट्रैमोनियममें, मनमें प्रचण्डताका ही ख्याल आ जाता है। स्ट्रैमोनियमकी जरूरत रहनेवाले रोगियोंको या जिसमें इसका जहर फैल गया है उसे देखकर, उसके भयंकर कष्ट तथा उसके मन और शरीरकी बहुत बढ़ी हुई उत्तेजनापर ध्यान दिये विना रहा नहीं जा सकता। उत्तेजना, क्रोध, प्रत्येक कष्टोंसे भरा, प्रचण्ड ; चेहरा वहशत, घबड़ाहट-भरा, भय-पूर्ण मालूम होता है ; आँखें किसी विशेष पदार्थपर जमी रहती हैं ; चेहरा तमतमाया रहता है ; जोरोंका गर्म बोखार रहता है, माथा गर्म रहता है और हाथ-पैर ठण्डे, प्रचण्ड प्रलाप। अपनी घबड़ाहटमें वह रोशनीसे मुँह फेर लेता है, अंधेरा चाहता है ; यदि रोशनी चमकीली रहती है, तो रोग वृद्धि हो जाती है। प्रलापके साथ ऊँचा बोखार ; ताप इतना तीव्र रहता है, कि **बेलेडोना**से भ्रम हो जा सकती है ; पर यह अमूमन अविराम ज्वरमें रहता है, कभी-कभी छूटता है ; परन्तु **बेलेडोना**का तीव्र ज्वर सदा सविराम होता है।

प्रचण्डतामें स्ट्रैमोनियम भूकम्पकी तरह होता है। मन घबड़ाया रहता है, शाप देता है, कपड़े फाड़ता है, प्रचण्ड भावसे बोलता है, उन्मत्त, अदम्य कामोन्माद ; अपने गुप्ताङ्ग खोल-खोलकर दिखाता है। अविराम ज्वरमें, उन्मादमें, मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयमें ये लक्षण दिखाई देते हैं। प्रचण्ड सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड) में यह उपयोगी है।

कुछ समयतक बने रहनेवाले उन्मादमें यह उपयोगी है ; आवेशके रूपमें उन्मादका दौरा होता है, यह कुछ-न-कुछ आकस्मिक रूपमें आता है, जिससे कि एक ही आक्रमण बेल्लेडोनाकी तरह दिखाई देता है; पर इतिहास अलग प्राप्त होता है। प्रथम आक्रमणमें बेल्लेडोना एक उपशामकसे शायद ही कुछ अधिक हो और दूसरे आक्रमणमें यह कुछ भी न करेगा।

जब प्रलाप नहीं रहता, तो भी रोगीके चेहरेपर बहुत कष्ट मालूम होता है, उसका ललाट सिकुड़ा रहता है, चेहरा मलिन रहता है, रोगियल, कष्ट-पूर्ण रहता है। सर-दर्दोंसे वह घबड़ाया हुआ रहता है, मस्तिष्क-झिल्ली आक्रान्त होनेके कष्टोंको सूचित करती है।

"प्रलाप धीमा, बुदबुदानेकी तरह, प्रचण्ड, बेवकूफोंकी तरह, प्रसन्नता-पूर्ण ; बकवादसे भरा, असम्बद्ध बातें, साथ ही खुली आँखें, फैली आँखें ; ठहाकाकी हँसी और प्रसन्नतासे पूर्ण ; भयङ्कर, निरर्थक वाक्योंसे पूर्ण, वहशत-भरा ; छुरा मारने और दाँत काटनेकी चेष्टा ; अद्भुत भाव-भङ्गीके साथ, कामोत्तेजनके साथ, भय मानो कुत्ता उसपर हमला करना चाहता है।"

शरीर-निर्माणके सम्बन्धमें अद्भुत विचार ; ऐसा कि यह कदाकार बना है, लम्बा है, कुरूप है ; शारीरिक दशाके सम्बन्धमें अद्भुत भाव। सब तरहके भ्रम-विचार और खाम-खयाल। इन दशाओंसे लोगोंको प्रभेद कर लेना चाहिये। मन या दृष्टि-पथपर किसी चीजका आना भ्रम-विचार है, जिसे रोगी भी जानता है, कि सत्य नहीं है और खाम-खयाल वह दशा है, जो सत्य मालूम होती है और भ्रान्त-विश्वास एक और भी बढ़ी हुई दशा है, जब रोगी यह समझता है, कि यह सत्य है और इस विषयमें उसे समझाया नहीं जा सकता। बहते हुए पानीकी आवाज सुननेपर बहुत भय और घबड़ाहट।

वह जानवर, भूत-प्रेत, देव-दूत, मृत आत्माएँ, भूत देखता है और जानता है, कि ये वास्तविक नहीं हैं ; पर इसके बाद उसे इनपर विश्वास हो जाता है, उसे यह भ्रान्त विश्वास खासकर अन्धेरेमें होता है। समय-समयपर उसे चमकीली रोशनीसे घृणा होती है, इससे उसे तकलीफ होती है और फिर उसे बाध्य होकर बैठ जाना और खुली आँचकी तरफ देखना पड़ता है ; पर इससे खाँसी या दूसरे उपसर्ग पैदा हो जा सकते हैं।

"काम-सम्बन्धी गाने गाता है और अश्लील बातें करता है। तकलीफोंसे क्षिप्त, पलङ्गसे कूद पड़ता है, ऐसे काम करता है, मानो उसके नीचेसे पलङ्ग खींचा जा रहा है, तबतक चीखता-चिल्लाता है, जबतक उसे स्वर-भङ्ग नहीं हो जाता या आवाज निकलना नहीं रुक जाता। ज्वरके साथ, उन्मादके रूपके साथ दिन-रात चीखता-चिल्लाता है। जल्दबाज, यदि किसी दूसरी जगह जाना चाहता है, तो अपनी ताकतभर जल्दी करता है।" चेहरेके विकृत-भावके साथ प्रचण्ड अट्टहास।

"बच्चा डरा हुआ नींदसे जागता है, किसीको नहीं पहचानता, भयसे चीखता है, जो पास रहते हैं उनसे चपक जाता है।"

हायोसायमसमें भी वहशत-भरा, उन्मत्त प्रलाप है ; पर उसमें ज्वर बहुत थोड़ा रहता है। स्ट्रैमोनियममें तेज बोखार रहता है। **बेल्लेडोना**में तीसरे पहर या शामको ज्वर आता है, ६ बजे रातसे ३ बजे सवेरेतक, इसके बाद उतरता है।

समस्त शरीरकी पेशियोंको आक्रान्त करनेवाली प्रचण्ड अकड़न, वहिरायाम टङ्कार, प्रचण्ड भावसे शरीर अङ्गड़ायी लेना, प्रत्यङ्गोंका सङ्कोचन, जीभको दाँतसे काटना और शरीर-द्वारोंसे रक्त-स्राव। आक्षेपके समय, वह ठण्डे पसीनेसे तर रहता है ; कभी-कभी वरफकी तरह ठण्डा रहता है ; उन्मादमें ठण्डा पसीना ; यह स्वरूप केवल **कैम्फर**के सदृश दिखाई देता है।

वहुत दिनोंकी हिस्टीरियाकी अकड़न, जिसके साथ मेरुदण्डकी तकलीफ सम्मिलित रहता है ; भयसे वदतर। स्नायविक उत्तेजनशील व्यक्तियोंमें भयसे उत्पन्न टङ्कार।

सूतिकाकी अकड़न और सूतिकोन्माद। इसकी सड़नेवाली प्रकृति रहती है। वे रोगिनियाँ, जो विषादोन्माद तथा निराश भावसे पूर्ण रहती हैं, उन्हें विश्वास रहता है, कि उन्होंने अपने क्षमाके दिवस पापमें विता दिये हैं, इतनेपर भी उन्होंने ठीक-ठीक उचित जीवन विताया है ; उदास, अद्भुत वातोंको सोचती हैं, अद्भुत काम करती हैं, जबतक कि प्रचण्ड प्रलाप नहीं पैदा हो जाता है, तव जोरसे चिल्लाती हैं ; लोगोंको परिताप करनेके लिये जिद्द करती हैं ; चेहरा लाल और आँखें ऐसी रहती हैं, मानो आगकी लपट निकल रही है ; असम्बद्ध वातें वोलतीं और प्रार्थना करती हैं। ऐसे रोगोंमें स्ट्रैमोनियमकी **वेरेट्रम**से तुलना करनी चाहिये।

मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयमें, अचेतनामें जाकर प्रपाल दव जाता है। रोगीका दृश्य गहरे नशेमें रहनेकी तरह हो जाता है ; पुतलियाँ फैली या सिकुड़ी रहती हैं (**वेलेडोना**में फैली रहती हैं), घोर तन्द्रा। जोर लगाकर श्वास-प्रश्वास, निचला जवड़ा गिरा हुआ। ऐसा ही मियादी वोखार (टायफायड) तथा निम्न-श्रेणीके अन्य ज्वरोंमें होता है, वदवू, मुँह तथा अन्य द्वारोंसे रक्त-स्राव। कण्ठ और मुँह सूखे ; जीभ सूखी, फूली, जिससे कि यह मुँह भर देती है, नुकीली, गो-मांसके टुकड़ेकी तरह लाल, मुँहसे रक्त-स्राव, दाँतोंपर कीट जमी, ओंठ सूखे और फटे ; समय-समयपर प्रचण्ड पिपासा रहती है, इतनेपर भी पानीसे भय होता है। वहुत ज्यादा पतले दस्त आते हैं, अनैच्छिक रूपसे आते हैं ; तलपेट फूला हुआ ; अनैच्छिक रूपसे पेशाव होता है।

कानका स्राव रुक जानेके कारण, मस्तिष्क-तलका श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह, ऐसे रोगियोंके लिये ऐलोपैथीमें कोई दवा नहीं है। ललाट सिकुड़ा, आँखें चमकीली, घूमती हुई, पुतलियाँ फैली और मुश्किलसे किसी तरहका ज्वर ; करोटीके तलदेशमें भयङ्कर दर्द और कानके पास भी हड्डीके सड़ जानेका इतिहास रहता है।

धूपमें चलनेके कारण प्रचण्ड सर-दर्द तथा सूर्य तापके कारण दिन-रात यह दर्द वढ़ा रहता है और लेटनेपर दर्द वढ़ जानेके कारण रोगीको वैठे रहना पड़ता है ; प्रत्येक वार हिलने-डोलने या झटका लगनेसे रोगीकी दशा वदतर हो जाती है, आँखें स्थिर और चमकीली रहती हैं, चेहरा तमतमाया रहता है ; परन्तु इसके वाद यह पीला हो जाता है, आँखें कमरेके एक कोनेपर स्थिर रहती हैं, गति-हीन रहती है ; प्रलाप, अद्भुत वातें कहता है। पश्चात् मस्तकमें दर्द।

बहुत जोरोंका प्रदाह, जो उसे अन्ततक पहुँचा देता है। पीब बनता है, असह्य वेदनाके साथ फोड़े (**हीपर, मर्क्युरियस, सिलिका, सल्फर**); प्रचण्ड सर्दीका प्रदाह, लसदार, सड़नेवाली दशा। पुराने फोड़े, कार्बङ्कल, छोटे फोड़े, सन्धियोंमें फोड़े, बायीं उरुकी अस्थि इसकी एक खास जगह है। उरु-सन्धि रोगके रोगीको आप अकसर आरोग्य कर सकते हैं और यहाँतक कि यदि पीब भी मौजूद हो या नासूर भी पड़ गया हो, तो भी यह उपयोगी होता है। भरापन, पीब होना और उपास्थियोंमें दर्द।

मानसिक लक्षणोंकी प्रचण्डतामें, गभीर-क्रिय औषधियोंमें स्ट्रैमोनियम एक ही है।

स्ट्रैमोनियम आँखकी तकलीफें और अत्यधिक अध्ययनके कारण उत्पन्न मस्तिष्कका उपदाह आरोग्य करता है। दिनका वक्तृताके लिये जिन विद्यार्थियोंको बाध्य होकर रातमें कार्य करना पड़ता है, उनके लिये उपयोगी है। रोगी एकदम अन्धेकी तरह मालूम होता है; धुँधली रोशनीमें आँखोंमें बहुत दर्द होता है, यह तेज रोशनीमें आराम हो जाता है। मानसिक लक्षण, खाँसी, सर-दर्द प्रभृति रोशनीसे बदतर हो जाते हैं।

"कण्ठ तथा गलकोषका सूखापन, किसी तरहके पेयसे भी इसमें लाभ नहीं होता, निगलनेमें तकलीफ होती है और कण्ठमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है, इसके साथ ही हनु-निम्नस्थ ग्रन्थिमें टङ्कारके साथ दर्द होता है; खासकर कण्ठके संकोचनके कारण तरलोंसे।" पानी निगलनेकी चेष्टा करनेपर दम घुटना। इसने जलातङ्क रोगमें कुछ फायदा दिखाया है। (**हायोसायमस, बेलेडोना, कैन्थरिस, हाइड्रोफोबिनम**)।

फेफड़ेमें पीब होनेके पुराने रोगियोंमें, जिनमें, रोशनीकी तरफ देखनेपर खाँसी बदतर हो जाती है, उनमें अकसर स्ट्रैमोनियम वृहत् उपशामकके रूपमें कार्य करता है और इससे रोग वृद्धि नहीं होती।

पेशाबका रुकना, यदि जोर नहीं लगाता, तो पेशाब नहीं होता; वृद्ध मनुष्य, जिनको मूत्राशयकी शक्ति घट गयी है, उन्हें धीमी धारमें पेशाब होता है, जल्दी पेशाब नहीं कर सकते।

वक्षमें अत्यन्त सङ्कोचनके साथ हृत्पिण्डके रोग, मानसिक उपदाहिता, नीजी पहचानमें भ्रम, अन्धेरेमें सोनेकी शक्तिका न रहना, किसी गुहाके भीतरसे रेलके जानेपर बहुत घबड़ाहट, नाड़ी अनियमित, हृत्पिण्ड कमजोर।

नींद हलचल और स्वप्नोंसे भरी।

सल्फर
(Sulphur)

सल्फर एक ऐसी परिपूर्ण औषधि है, कि यह कहना कुछ मुश्किल है, कि कहाँसे आरम्भ किया जाय। इसमें मनुष्यकी सभी बीमारियोंका सादृश्य दिखाई देता है और

सल्फरकी परीक्षाका अध्ययन करनेपर प्राथमिक विद्यार्थी स्वभावतः सोच सकता है, कि उसे किसी दूसरी दवाकी जरूरत नहीं है; क्योंकि सभी रोगोंकी प्रतिमूर्त्ति इसमें तैयार मालूम होती है। इतनेपर भी आप देखेंगे कि मनुष्यकी सभी बीमारियाँ यह आरोग्य न करेगा और इसका अन्य दवाओंकी तरह ही लगातार व्यवहार करना अच्छा नहीं है। ऐसा मालूम होता है, कि कोई चिकित्सक जितना ही कम मेटिरिया-मेडिका जानता है, उतना ही ज्यादा अकसर वह सल्फरका प्रयोग करता है और इतनेपर भी, अच्छे नुस्खा लिखनेवालों द्वारा भी इसका बारम्बार प्रयोग हो जाता है; इसलिये चिकित्सकके अज्ञान और ज्ञानकी मध्य-रेखा उनके द्वारा सल्फरके बहु-प्रयोगपर नहीं निर्धारित की जा सकती।

सल्फरका **रोगी** दुबला, कृश, झुका, भूखा, मन्दाग्नि-पूर्ण व्यक्ति रहता है। उसके कन्धे झुके रहते हैं, इतनेपर भी कितनी ही बार इसका मोटे-ताजे, बलिष्ठ, खूब खाये-पिये व्यक्तियोंके लिये प्रयोग करना पड़ता है। उग्र, कृश, झुके कन्धेवाले रोगी, यद्यपि इसके बँधे रोगी हैं और खासकर बहुत दिनोंकी मन्दाग्निके कारण तथा बुरे समीकरण और दुर्बल परिपोषणके कारण ऐसे हो गये हैं। बहुत दिनोंतक घरमें पड़े रहने और भरपेट खाते रहनेपर कभी-कभी सल्फरकी दशा आ जाती है। बैठे-बैठे जीवन व्यतीत करनेवाले व्यक्ति, जो अपने कमरेमें बैठे हुए अध्ययन किया करते हैं, ध्यान-मग्न रहते हैं, दार्शनिक खोजोंमें लगे रहते हैं, जो बिलकुल ही व्यायाम नहीं करते, उन्हें जल्द ही पता लग जाता है, कि उन्हें केवल सरल-से-सरल भोजन करना चाहिये, शरीरके परिपोषणके लिये जो खाद्य काफी नहीं है और उनका अन्त दार्शनिक उन्मादमें परिणत होकर होता है।

एक तरहके रोगी और भी होते हैं, जिनके चेहरोंमें सल्फरका दृश्य दिखाई देता है; मैले, झुरियाँ-भरे, लाल चेहरेवाले मनुष्य। वायु मण्डलका प्रभाव सरलता-पूर्वक चर्मपर पड़ता मालूम होता है। हवामें सवारी करनेपर, तर तथा सीड़वाली, दोनों ही ऋतुओंमें उसका चेहरा लाल हो जाता है। उनका चर्म नर्म, पतला रहता है, जरा भी अवसर मिलनेपर तमतमा उठता है। **हमेशा लाल और मैला दिखायी देता है**, चाहे वह कितना भी धोता रहे। यदि यह रोगी बच्चा है, तो माता अकसर उसका चेहरा धो देगी; पर यह ठीक ऐसा ही मालूम होता है, कि शायद ही कभी धोया गया है।

सल्फरके रोगियोंको हेरिङ्ग **"जीर्ण दार्शनिक"** कहा करते थे। सल्फरके विद्यार्थी, आविष्कारक, सूत निकले वस्त्र और फटी-चिटी टोपी लेकर दिन-रात काम किया करते हैं; उनके केश लम्बे और बिना कटे रहते हैं और चेहरा मैला रहता है, उनका अध्ययन स्वच्छता-रहित रहता है, वे अपरिणामी होते हैं; पुस्तकें और पुस्तकोंके पन्ने विशृङ्खलतासे ढेर लगे रहते हैं, उनमें शृङ्खला नहीं रहती। ऐसा मालूम होता है, कि सल्फर विशृङ्खलाकी यह दशा उत्पन्न करता है, अपरिच्छन्नताकी एक दशा, गन्दगीकी दशा—लापरवाही-जैसा है, चलनेकी दशा और स्वार्थपरताकी एक दशा उत्पन्न करता है। वह एक **मिथ्या-दार्शनिक** रहता है और जितना ही वह इस दशामें अग्रसर होता जाता है, उतना ही वह

निराश होता जाता है ; क्योंकि संसार उसे पृथ्वीका सर्व-श्रेष्ठ मनुष्य नहीं समझता। वृद्ध आविष्कारक काम-पर-काम किये जाते हैं और असफल होते हैं। इस तरहके रोगियोंको जो उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, यहाँतक कि नयी बीमारियोंमें भी वह सल्फरकी ओर बढ़ जायेंगे। आप किसी ऐसे रोगीको लीजिये और आप देखेंगे, कि उसके शरीरपर कई सप्ताहोंकी कमीज पड़ी है और यदि उसकी देख-रेख करनेवाली स्त्री नहीं है, तो वह तबतक वही कमीज पहने रहेगा, जबतक कि वह उसपरसे गिर न पड़ेगी।

सल्फरके रोगीके लिये सफाई एक बहुत बड़ी बात नहीं है। वह सोचता है, कि यह बहुत जरूरी नहीं है, वह **मैला रहता** है, वह साफ-सुथरा कालर और कफ तथा साफ-सुथरी कमीज पहननेकी आवश्यकता नहीं समझता ; इससे उसे तकलीफ नहीं होती। साफ-सुथरे व्यक्तियोंके लिये शायद ही कभी सल्फर निर्देशित होता है ; पर यह खासकर उनके लिये ही निर्देशित रहता है, जो गन्दगीसे विचलित नहीं होते। सार्वजनिक चिकित्सालयमें चिकित्सा करते समय मैंने बहुत बार देखा है, कि सल्फरका प्रयोग करनेके बाद रोगी अपनी खबर लेने लगता है और साफ-सुथरी कमीज पहनता है ; पर इसके पहले वह वही एक पुरानी कमीज पहने रहता था और यह भी आश्चर्यकी बात है, कि किस तरह सल्फरके रोगी, खासकर छोटे बच्चे, इतनी जल्दी अपने वस्त्र मैले कर लेते हैं। बच्चोंमें गन्दे हो जानेकी एक अत्यन्त आश्चर्यजनक प्रवणता रहती है। माता आपसे उनके गन्दे कामोंका वर्णन करती है ; यदि वे सल्फरके रोगी रहते हैं। बच्चोंकी नाकसे, आँखों तथा अन्य भागोंसे सर्दीका स्राव हो सकता है और वह अकसर नाकसे बहनेवाला स्राव खाया करता है। अब यह अद्भुत है ; क्योंकि बदबू घ्राण ऐसी चीजें हैं, जिनसे सल्फरका रोगी घृणा करता है। उसे **गन्दी बू एकदम असह्य होती** है ; परन्तु गन्दे पदार्थ, वह खा जायगा और निगल जायगा। उसे अपने शरीरकी गन्धसे और अपने श्वासकी गन्धसे भी मिचली आने लगती है। उसके मलकी गन्ध इतनी बदबूदार रहती है, कि दिनभर उसका पीछा किये रहती है। वह सोचता है, कि वह इसे सूँघ सकता है। गन्धकी असहिष्णुता रहनेके कारण वह अपनी आँतें साफ रखनेके लिये किसी दूसरी बातसे अधिक सावधान रहता है। यह घ्राणेन्द्रियकी अति वर्द्धित दशा है, वह हमेशा बदबूकी खोज और खयाल किया करता है, उसे साधारणतः ऐसी सुदृढ़ धारण रहती. है कि वह उन चीजोंको सूँघा करता है, जो उसकी याददाश्तमें है।

सल्फरके रोगीमें हर जगह **गन्दगी** रहती है। वह **गन्दगी** और **दुर्गन्ध**का शिकार रहता है। उसकी श्वास बदबू-भरी रहती है, उसे बहुत ही बदबूदार पाखाना होता है ; उसकी जननेन्द्रियसे गन्दी बू आती है, जो उसके कपड़ेके अलावा कमरेमें सूँघी जा सकती है और वह स्वयं उन्हें सूँघता है। स्राव कुछ-न-कुछ बदबूदार होता है, जिसमें कड़ी दुर्गन्ध रहती है। लगातार धोते रहनेपर भी बगलसे सड़ी बू आती है और समय-समयपर समूचे शरीरसे बगल-जैसी गन्ध ही आने लगती है।

शरीरके सभी भागोंसे **सल्फरका स्राव**, बदबूदार रहनेके अलावा **खाल उधड़नेवाला** भी रहता है ; सल्फरके रोगीको सभी **श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रदाह** रह सकता

है और सभी जगहोंका यह सर्दीका स्राव खाल उधेड़ देता है, अकसर नाककी सर्दीमें ; स्राव ओंठकी और नाककी खाल उधेड़ देता है। समय-समयपर नाकमें जो तरल रहता है, वह आगकी तरह जलता है और जब यह बच्चेके ओंठमें लगता है, तो यह जलता है, यह इतना ही कटु होता है। करीव-करीव **सल्फरिक एसिड**की दशाकी तरह, इससे स्पर्श हुए स्थान बहुत ही लाल हो जायेंगे। बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव होता है, जो जननेन्द्रियकी खाल उधेड़ देता है। पतले मलसे मलद्वारकी खाल उधड़ जाती है और जलन होती है। स्त्रियोंमें यदि जननेन्द्रियके पास एक बून्द भी पेशाव रह जाता है, तो जलन होने लगती है ; अकसर उसका पोछ देना भी पर्याप्त नहीं होता, ज्वाला दूर करनेके लिये उसे धोना ही पड़ता है, बच्चोंमें चूतड़ोंके बीचमें मलद्वारके पास खाल उधड़ी पायी जाती है ; सम्पूर्ण फटा घाव, लाल, कच्चा और मलसे प्रादाहित रहता है। इस प्रवणतासे एक कुञ्जी तैयार की गयी है और यह बुरी भी नहीं है, "सभी तरल जिस अंशसे जाते हैं, उनमें जलन होने लगती है," जो वैसा ही है, जैसा कहा जाता है, कि तरल कटु और जलन पैदा करनेवाले होते हैं। सल्फरमें यह हर जगह सत्य है।

सल्फरके रोगीमें सब तरहके **उद्भेद** निकलते हैं। चकत्ते, फुंसियाँ, विस्फोटक, रूसीवाले उद्भेद, सबमें ही **खूब खुजली** होती है और उनमेंसे कुछमें स्राव भी होता है और पीब भी। विना उद्भेदके भी चर्ममें बहुत खुजली होती है, विछावनकी गर्मीसे खुजलाता है तथा ऊनी वस्त्र पहननेपर बहुत खुजलाने लगता है। बहुत बार तो रोगी सूती या रेशमी वस्त्रके सिवा और कुछ पहन ही नहीं सकता। कमरेकी गर्मी उसे निराश बना देती है, यदि वह खुजलानेवाले स्थानोंको खखोड़ नही सकता। खखोड़नेके बाद, खुजलीमें आराम पहुँचनेके साथ जलन होने लगती है। खुजलानेके बाद या विछावनमें गर्म होनेके बाद, बड़ी सफेद लकीरें समूचे शरीरमें निकल पड़ती हैं, इनमें बहुत खुजली होती है और इन्हें वह तबतक खुजलाता रहता है, जबतक चमड़ेकी खाल उधड़ नहीं जाती है या जबतक वह जलने न लगता है और इसके बाद खुजली शान्त होती है। यह लगातार हुआ करता है, रातमें विछावनपर भयङ्कर खुजली तथा जब सवेरे उसकी नींद खुलती है, तो उद्भेद खुजलाते हैं और उनसे रस चूता है। फोड़ोंकी फसल और छोटे-छोटे फोड़ेकी तरह उद्भेद निकलते हैं और इसी वजहसे पीली फुन्सियोंमें यह उपयोगी होता है।

पीव होनेपर भी यह दवा लाभ करती है। यह सब तरह पीव-भरे गह्वर स्थापित करता है, छोटे और बड़े फोड़े होते हैं ; चर्मके नीचे फोड़े, कौपिक तन्तु तथा भीतरी यन्त्रोंमें फोड़े। सल्फरमें पीव पैदा होनेकी प्रवृत्ति बहुत स्पष्ट है। ग्रन्थियाँ प्रदाहित हो जाती हैं और प्रदाह फिर पक जानेमें परिवर्त्तित हो जाता है।

जहाँ कहीं भी सल्फरका रोग है, वहीं आपको **जलन** प्राप्त होगी ; हर जगह जलन होती है ; जहाँ रक्त-सञ्चय रहता है, वहीं जलन होती है ; चर्मकी जलन या चर्ममें तापकी अनुभूति ; यहाँ-वहाँ धब्बेके रूपमें जलन ; ग्रन्थियोंमें, पाकाशयमें, फेफड़ोंमें जलन ;

आँतोंमें और सरलान्त्रमें जलन ; बवासीरमें जलन और चुनचुनी ; पेशाब करनेके समय जलन या मूत्राशयमें तापकी अनुभूति। यहाँ वहाँ ताप मालूम होता है ; पर जब रोगिनी सल्फरके किसी खास ढङ्गका वर्णन करती है, तो वह कहती है—"पैरके तलवोंमें जलन, हाथकी तलहत्थियोंमें जलन और मस्तक-शिखरमें जलन मालूम होती है।" रोगी जब बिछावनमें गर्म हो जाता है, अकसर पैरके तलवोंमें जलन देखनेमें आती है। सल्फरके रोगीमें इतना ताप रहता है और रातमें बिछावनपर रहनेपर उसके तलवोंमें इतनी जलन होती है, कि वह ओढ़नेके भीतरसे पैर बाहर निकाल रखता है, ओढ़नेके भीतरसे पैर बाहर निकालकर सोता है। सल्फरके रोगीके तलवों और तलहत्थियोंकी जब परीक्षा की जाती है, तो चमड़ा मोटा मालूम होता है, जिसमें बिछावनमें गर्म हो जानेपर जलन होती है।

बिछावनमें गर्म हो जानेके कारण बहुतसे **उपसर्ग** उत्पन्न हो जाते हैं। सल्फरका रोगी ताप नहीं सहन कर सकता और न सर्दी ही सहन कर सकता है ; यद्यपि खुली हवा प्राप्त करनेकी उसे बहुत इच्छा होती है। वह सम-तापमान चाहता है ; यदि तापमानमें बहुत परिवर्त्तन होता है, तो वह बहुत विचलित हो पड़ता है। जहाँतक उसकी श्वास-क्रियासे सम्बन्ध है, जब उसे बहुत तकलीफ होती है, तो वह खिड़की, दरवाजे खोल रखना चाहता है। यद्यपि उसका शरीर बार बार जबर्दस्ती ढँक दिया जाता है, पर वह गर्म कपड़े पहने रहता है, तो खुजली और चर्मकी जलनसे घबड़ा उठता है।

रोग-वृद्धिके समयके सम्बन्धमें, इसका स्वरूप है, **रात्रिकालके उपसर्ग**। शामके भोजनके बाद सर-दर्द होता है और रातमें बढ़ जाता है ; वह दर्दके कारण सो नहीं सकता ; रातमें खुजली और रातमें ही प्यास रहती है ; रातमें कष्ट और रातमें बिछावनमें गर्म हो जानेपर चर्मके उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। "सविराम सामयिक स्नायु-शूल, हर २४ घण्टोंपर यह बदतर हो जाता है, अमूमन दिनके या रातके बारह बजे।" **दोपहर** सल्फरकी बीमारियोंकी वृद्धिका एक दूसरा समय है। इसमें दोपहरको जाड़ा मालूम होता है, ज्वर दोपहरके समय बढ़ता है, दोपहरमें मानसिक उपसर्गोंकी वृद्धि होती है, सर-दर्द दोपहरमें बदतर हो जाता है। जो **उपसर्ग सप्ताहमें एक बार** उत्पन्न होते हैं, सातवें दिन रोग-वृद्धि होती है, यह सल्फरका दूसरा अद्भुत लक्षण है।

सल्फरके रोगीके लिये एक विचित्र ढङ्गका अतिसार होना एक साधारण बात है। यह बहुत दिनोंसे "सल्फरके अतिसार" के नामसे विख्यात है। यद्यपि कितनी ही अन्य दवाओंमें यह एक लक्षण है अर्थात् **खूब सवेरे पतले दस्त आते हैं**। आधी रात और सवेरेके बीचका समय सल्फरके अतिसारका समय है ; पर साधारणतः समय वह है, जब रोगी सोकर उठनेकी बात सोचता है। **दस्त उसे बिछावनसे भगा देते हैं**। मल अकसर पतला, पानीकी तरह होता है, बहुत झोंकसे नहीं निकलता, यह बहुत ज्यादा भी नहीं होता ; कभी-कभी बिलकुल थोड़ा होता है, कभी पीला मल होता है। यह सवेरेका दस्त हो जानेके बाद बहुतसे रोगियोंको फिर दूसरे दिन सवेरेतक दस्त नहीं आते। बहुतसे मनुष्य

ऐसे हैं, जिन्हें वर्षोंतक इस तरह सवेरे दस्त लगा करते हैं, उन्हें बिछावन छोड़कर पाखाने भागना पड़ता है। रोगीको दर्द होता है, पीसनेकी तरह दर्द बेचैनी और सम्पूर्ण आँतोंमें जलन करनेवाली यन्त्रणा। पाखाना होनेके समय मल मानो जलता है और वह जिस अंशोंमें लगता है, वे सभी खाल उघड़े और यन्त्रणा-पूर्ण हो जाते हैं और वहाँ अत्यन्त अधिक भूसी निकलती है।

सल्फरका रोगी बहुत **प्यासा** रहता है, वह हमेशा पानी पिया करता है, वह बहुत पानी चाहता है।

वह **भूखापन**के विषयमें भी कहता है। खाद्यकी इच्छा, पर जब वह **खाने** बैठता है, तो उसे खाद्यसे अनिच्छा हो जाती है, उससे मुँह फेर लेता है, उसे नहीं चाहता। वह करीब-करीब कुछ नहीं खाता, सरल-से-सरल और हलके पदार्थ खाता है। ताकत देनेवाली चीजें, अलकोहलकी इच्छा होती है तथा दूध और मांस नहीं खाना चाहता; दूध और मांससे वह बीमार हो जाता है और इसीलिये उनसे घृणा करता है। इन बातोंके बीचसे एक वृद्ध मनुष्यने एक कुञ्जी खोज निकाली है—"पीता बहुत और खाता कम है।" सल्फरके सम्बन्धमें यह सत्य है; पर बहुत-सी दूसरी दवाओंमें भी ऐसी ही बात है। इस कुञ्जीके प्रयोगके सम्बन्धमें मैं आपको बता देना चाहता हूँ, कि सब लक्षणोंको सम्मिलित रूपसे संग्रह कर लेना अच्छा है। एक छोटेसे लक्षणपर निर्भर रहना अच्छा नहीं है अथवा दो या तीन क्षुद्र लक्षणोंपर भी निर्भर रहना उचित नहीं है। सम्पूर्ण रोगीका लक्षण ग्रहण करना चाहिये और इसके बाद यदि कुञ्जियाँ, चरित्रगत लक्षण और प्रत्येक दूसरी बात दवासे मिलती हो और पूर्ण हो और सम्पूर्ण रोगीकी तरह दिखाई देती हो; केवल तभी यह उपयोगी होता है।

दोपहरके पहले ११ बजे खालीपन मालूम होता है। चौबीस घण्टोंके भीतर यदि कोई ऐसा समय है, जब उसे भूख मालूम होती है, तो यह ११ बजे दिनका समय है। ऐसा मालूम होता है, मानो वह अपने भोजनके लिये जरा भी ठहर नहीं सकता। ऐसा ही सल्फरके रोगीमें भी होता है; उसे अपने अभ्यासगत भोजन-कालमें बहुत भूख मालूम होती है और यदि भोजनमें देर हो जाती है, तो वह कमजोर हो जाता है और जी मिचलाने लगता है। जिन्हें बारह बजे दिनमें भोजन करनेका अभ्यास है, उन्हें ११ बजे ही एकदम खालीपनका भाव मालूम होगा। जिन्हें १ बजे या १॥ बजे खानेका अभ्यास है, उन्हें १२ बजे ही खालीपनका भाव मालूम होगा। बहुतसे मनुष्योंको अभ्यासगत भोजन-कालके एक घण्टा पहले यह खालीपनका भाव मालूम होता है।

संक्षिप्त रूपमें सल्फरके लक्षण-समूह ये हैं :— ११ बजे दिनके समय पाकाशयमें एकदम खालीपनका भाव, तलवेमें जलन और मस्तक-शिखरमें ताप; ये तीनों बातें सल्फरके **स्पष्ट लक्षण** माने जाते हैं; पर ये मुश्किलसे सल्फरके आरम्भिक लक्षण हैं।

उद्भेदोंके अलावा, **चमकी एक अस्वस्थ** दशा रहती है। चर्म आरोग्य नहीं होता; छोटे-छोटे घावोंमें पीब होने लगता है; चर्मके नीचे फोड़े बनते हैं, छोटे-छोटे स्राव करनेवाले

गह्वर तैयार होते हैं, जिसमें नासूरका मुँह बनता है और बहुत दिनोंतक इनसे रस चूता और स्राव हुआ करता है।

सल्फर प्रादाहित स्थानोंमें **रस स्राव** करता है, जिससे कि वे कड़े पड़ जाते हैं और ये काठिन्य वर्षोंतक रहते हैं। जब किसी मार्मिक यन्त्रमें फेफड़ोंकी तरह प्रदाह करता है, तो यह रस-स्राव हमेशा सहन नहीं किया जा सकता; न्युमोनियाके बाद यह रस-स्राव छोड़ जाता है, जिसे फेफड़ेकी यकृद्-भाव-प्राप्ति कहते हैं। शरीरके सभी प्रादाहित स्थानोंमें सल्फर यही प्रवणता उत्पन्न करता है और इसीलिये यकृद्-भाव-प्राप्तिमें इसका इतना व्यवहार होता है।

लम्बी बीमारीके बाद जब **रोगीमें प्रतिक्रिया नहीं होती**; क्योंकि सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानकी एक दशा—सोर-दोषकी दशा हो जाती है, तो सल्फर बहुत लाभदायक दवा होती है। जब रोगी किसी नयी बीमारीके अन्तवाली दशाके पास पहुँचता जाता है, तो वह दुर्बल और सुस्त पड़ता है। प्रादाहिक दशाका अन्त पीव होने और रस-स्रावमें होता है; रोगी दुर्बलताकी दशामें रहता है, बहुत क्लान्त और सुस्त और उसे रातके समय पसीना होता है। टाइफायड (मियादी बोखार) या अन्य तेज रोगके बाद वह रोगारोग्य काल नहीं पाता। सुधार बहुत धीमा होता है तथा स्वास्थ्य विधान सुस्त, क्लान्त रहता है तथा तेज नयी बीमारीके बाद श्रृङ्खला स्थापित नहीं होती। ऐसी दशाओंमें सल्फर बहुत लाभ करता है। पुराने शराबी कमजोर हो जाते हैं और अलकोहल पीनेकी प्रचण्ड लालसा होता है; वे शराब छोड़ नहीं सकते। वे तेज और तीखी चीजें चाहते हैं, कुछ भी खाना नहीं चाहते; पर ठण्डा पानी और अलकोहल मिला पेय चाहते हैं। वे तबतक पीते रहते हैं, जबतक क्लान्त नहीं हो पड़ते और इसके बाद उनके रोग पैदा हो जाते हैं। कुछ समयके लिये सल्फर यह पेयोंकी लालसा हरण कर लेगा और उसका स्वास्थ्य सुधार देगा।

मांस तन्तुओंमें भी कमजोरी आती मालूम होती है, जिससे कि थोड़ा-सा भी दबाव यन्त्रणा पैदा कर देता है; कभी-कभी प्रदाह और पीव भी हो जाता है। सल्फरके रोगीको शय्या-क्षत सहजमें ही पैदा हो जाते हैं; क्योंकि उनका रक्तका दौरान कमजोर रहता है। **दबावसे कड़ापन** भी इसका एक सुदृढ़ स्वरूप है। दबावसे सल्फरके रोगीमें गट्ठे पड़ जाते हैं और दबावसे ही चर्ममें काठिन्य पैदा हो जाता है। ये रोग सहजमें ही उत्पन्न हो जाते हैं। यदि चर्मपर कहीं जूतेका दबाव पड़ता है, तो एक बड़ा-सा गट्टा या बतोड़ी पैदा हो जायगी। जहाँ जीभ और दाँतोंका संयोग होता है या गल-गह्वर और दाँतोंका संयोग होता है, वहाँ गांठें पड़ जाती हैं और ये छोटी-छोटी गांठें समय पाकर जखम होने लगती हैं। यह जलन और डंक मारनेकी तरह दर्दके साथ धीमी अग्र-गति है। ये कर्कटिया रोगोंमें भी परिणत हो सकते हैं। ये बहुत दिनोंतक रोक दिये जा सकते हैं और इसके बाद सांघातिकताका रूप धारण कर लेते हैं। शरीरकी एक दशाका विकास कर्कट (केन्सर) है और यह दशा लगातार कितनी ही दशाएँ होनेपर आ सकती है। यह एक ही

अविराम अवस्था नहीं है ; पर स्वास्थ्यकर दशाके बाद सांघातिक दशा आ सकती है। सल्फर इन दशाओंको दूर कर देता है, जब लक्षण सदृश रहते हैं।

सल्फरमें शिराओंकी स्पष्ट गड़बड़ी दिखाई देती है ; यह एक **शैरिक औषध है,** इसमें शिराओंकी बहुत-सी तकलीफें हैं। शिराएँ शिथिल मालूम होती हैं और खूनका दौरान धीमा होता है। थोड़े भी उपदाहसे, ऋतु-परिवर्त्तनसे, पोशाकके उपदाहसे चेहरा यहाँ-वहाँ तमतमाया रहता है। चेहरा फूला हुआ। सल्फरमें शिरा-स्फीति रोग है ; इनमें सबसे अधिक स्पष्ट बवासीरकी शिराएँ हैं, जो बढ़ जाती हैं, जिनमें जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। हाथ-पैरोंकी शिराओंका फूलना। यहाँतक कि शिराओंमें जखम हो जाता है, फटती हैं और उनसे रक्त-स्राव होता है। ठण्डेसे किसी गर्म वायु-मण्डलमें जानेपर रोगीको शिरा-स्फीतिकी, हाथ-पैर फूल जानेकी और समूचे शरीरमें पूर्णता अनुभव होनेकी तकलीफ होती है।

सल्फरका रोगी दुबला होता जाता है और इसका एक विचित्र स्वरूप है **तने हुए तलपेटके साथ अङ्गोंका दुबला होते जाना।** तलपेट स्पर्श कातर रहता है, साथ ही गुड़गुड़ाहट होती है, जलन और यन्त्रणा होती है और इस तने हुए फैले तलपेटके साथ सभी अन्य अंशोंकी क्षीणता रहती है। गर्दन, पीठ, वक्षकी पेशियाँ क्षीण होती हैं और उदरकी पेशियोंका भी क्षय हो जाता है ; पर उदर बहुत प्रसारित और तना रहता है। ऐसी दशा सुखण्डी रोगमें प्राप्त होती है। ऐसी ही दशा आपको **कैल्केरिया**में भी दिखाई देगी और जिन स्त्रियोंको **कैल्केरिया**की आवश्यकता होती है, उनमें आपको तलपेटका बहुत बढ़ जाना, तनाव और कड़ापन शरीरके अन्य अंशोंके दुबलापनके साथ दिखाई देगा।

सल्फरमें चेहरा और मस्तकमें **तापकी झलक** मालूम होती है, जैसी उन रोगियोंमें रहती है, जिनका वयः-सन्धि-काल रहता है। सल्फरमें तापकी झलक किसी जगह हृत्पिण्ड-प्रदेशमें आरम्भ होती है ; अमूमन यह वक्षमें कही जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरके भीतर हो रहा है, तापकी झलक चेहरेपर ऊपर चढ़ती है। चेहरा लाल रहता है, गर्म और तमतमाया और अन्तमें रस तापका अन्त पसीनेमें होता है। लाल चेहरा, पसीनेसे भरा, तापकी झलक ; माथा तापसे भरा हुआ। कभी-कभी रोगिनी यह वर्णन करेगी, कि शरीरके भीतर गर्म वाष्प है और धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा है और तब उसे पसीना होने लगता है। समय-समयपर आप किसी स्त्रीको थोड़ेसे कम्पके बाद तापकी झलक और चेहरेपर लाल आभा आती हुई देखेंगे ; उस समय वह जोर-जोरसे पंखा झलती है ; वह पूरी तेजीसे पंखा नहीं झल सकती और इसीलिये खिड़की, किवाड़ खोल देना चाहती है। ऐसा ही सल्फर तथा **लैकेसिस** और कुछ अन्य दवाओंमें है। जब वक्षमें हृत्पिण्डके पास ताप मालूम होता है, तो यह विशेषकर सलफरके सदृश है ; पर जब पीठ या पाकाशयमें रहता है, तो यह अधिककर **फास्फोरस** रहता है।

अन्य सार्वाङ्गिक रोग-वृद्धियोंमें **सल्फरमें खड़े रहनेपर** रोग-वृद्धि होती है ; कुछ समयतक खड़े रहनेपर सभी रोग बदतर हो जाते हैं। सल्फरके रोगीके लिये खड़े रहना

एक अत्यन्त कष्टकर स्थिति है और इससे चित्त-विभ्रम, सरका चक्कर तथा पाकाशय और उदरके लक्षण बढ़ जाया करते हैं तथा एक तरहकी शिराओंकी विवृद्धि और पूर्णताका भाव पैदा हो जाता है तथा स्त्रियोंमें खड़े होनेपर वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर खींचनका भाव पैदा हो जाता है। या तो रोगिनीको बैठ जाना पड़ता है अथवा पैरोंके बल रहनेपर चलते रहना पड़ता है। वह मजेमें चल-फिर सकती है ; पर जब चुपचाप खड़ी रहती है, तो उसकी अवस्था बदतर हो जाती है।

निद्राके बाद रोग वृद्धि सल्फरके बहुत-से रोगोंमें ठीक होती है ; पर खासकर मन और ज्ञानेन्द्रियके रोगोंमें। सल्फरके बहुत से उपसर्ग **भोजनके बाद भी बदतर** हो जाते हैं।

नहानेसे सल्फरके रोगीकी रोग-वृद्धि हो जाती है, वह नहानेसे भय खाता है। वह स्वयं नहीं स्नान करता और उसकी सार्वाङ्गिक दशा देखनेपर वह एकदम बिना "नहाया-धोया-सा" मालूम होता है ; बिना "सर्दी लगे" वह स्नान नहीं कर सकता।

बच्चोंके उपसर्ग। मैले चेहरेवाला, गन्दे शरीरवाला छोटा लड़का, जिनको रातमें प्रलापका आक्रमण हुआ करता है, जिन्हें बहुत ज्यादा सर-दर्द हुआ करता है, जिन्हें मस्तिष्ककी तकलीफें रहती हैं और जिन्हें मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोग हो जानेकी सम्भावना रहती है, जिन्हें मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह हो चुका है, उन्हें सल्फरकी जरूरत रहती है। खूब गभीर-क्रिय न रहनेके कारण जब दवाएँ सम्पूर्ण रोगीको आरोग्य नहीं कर सकतीं, तब सल्फर उनकी धातु-प्रकृतिकी सफाई कर देगा। यदि बच्चेका पूरा-पूरा विकास नहीं होता, यदि हड्डियाँ नहीं पैदा होतीं तथा ब्रह्मरन्ध्रमें जोड़ लगनेमें देर होती है, तो **कैल्केरिया-कार्बोनिका** उसकी दवा हो सकती है और ऐसे धीमें विकासके लिये उसके बाद सल्फर अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।

आप नहीं सोचेंगे, कि सल्फरका रोगी इतना **स्नायविक** है, जैसा वह है ; पर वह उत्तेजनासे भरा रहता है, आवाजोंसे सहजमें ही चौंक पड़ता है और नींदसे इस तरह चौंककर जागता है, मानो उसने तोपकी गरज सुनी है या कोई "भूत" देखा है। सल्फरका रोगी नींदमें बहुत-से कष्टोंका शिकार बना रहता है, रात्रिके अग्र-भागमें तो उसे बहुत नींद आती है, समय-समयपर ३ बजे सबेरेतक सोता है ; पर उस समयके बादसे ही उसे अशान्त निद्रा आती है या बिलकुल ही नींद नहीं आती। उसे दिनकी रोशनीका भय होता है, फिर सो जाना चाहता है ; पर जब वह सोया करता है, तो मुश्किलसे ज ।।या जा सकता है और सबेरेतक देरतक सोया रहना चाहता है। वही वह समय है, जब उसे सर्वोत्तम विश्राम प्राप्त होता है और सबसे गहरी नींद आती है। वह भयावने सपने और गला घोंटनेके स्वप्नोंसे बहुत विचलित रहता है।

लक्षण मिलनेपर सल्फर विसर्पकी भी एक आरोग्यदायक दवा हो सकती है ; क्योंकि विसर्प नामके अनुसार हमारे पास कोई दवा नहीं है ; पर जब रोगीको विसप हो जाता है और उसके लक्षण सल्फरके सदृश रहते हैं, तो आप उसे सल्फरसे आरोग्य कर सकते हैं। यदि

यह प्रभेद अपने ध्यानमें रखेंगे, तो आप देख सकेंगे, कि होमियोपैथीका क्या मतलब है; यह रोगीकी चिकित्सा करता है और उस नामकी किसी बीमारीकी नहीं।

यहाँ-वहाँ खूनका दौरान तरङ्गोंकी तरह होनेके कारण समस्त स्वास्थ्य-विधान गड़बड़ाया रहता है, साथ ही माथेमें पूर्णता रहती है, जिसको अभी हम तापकी झलकके रूपमें वर्णन कर चुके हैं। इसमें बढ़ी हुई ज्वरकी दशा रहती है और नयी बीमारियोंमें इसका व्यवहार हो सकता है। यह **पेक्कोनाइट**का एक स्वाभाविक अनुपूरक है और जब **पेक्कोनाइट** नये रोगोंके लिये उपयोगी होता है और उन्हें हटा देता है, तो बहुतकर रोगीकी धातुगत प्रकृतिका सादृश्य सल्फरसे रहता है।

सल्फर भग्न धातु-प्रकृति और दोष वह समीकरणवालोंके लिये बहुतसे कष्टदायक **"गण्डमाला" के उपसर्गोंमें** उपयोगी है। इसमें बद्धमूल, फटे जखम निम्न शाखा-अंगोंपर होते हैं; अलस प्रकृतिके जखम, जखममें अङ्कुर नहीं भरते उनमें जलन होती है और थोड़ा-सा रस जो निकलता है, वह चारों तरफके अंशोंको जला देता है। यह अकसर शिराओंके उन जखमोंमें भी निर्देशित रहता है, जिनसे सहजमें ही रक्त स्राव होता है और जिनमें बहुत जलन होती है।

गठियाके पुराने रोगियोंमें सल्फर एक लाभदायक दवा है। यह एक गम्भीर-क्रिय औषध है और बहुतसे अवसरोंपर यह शाखा-अंगोंपर ही गठियाको रोक रखेगा; क्योंकि इसकी प्रवणता बाहरकी ओर रहती है, केन्द्रसे परिधिकी ओर। **लाइकोपोडियम** और **कैल्केरिया**की तरह, जब पुराने गठियावाले रोगियोंपर इसका ठीक-ठीक प्रयोग होता है, उसमें नहीं, जिसमें बहुत ज्यादा यान्त्रिक परिवर्त्तन मौजूद है, तो यह ग्रन्थियों और शाखा-अंगोंमें ही वात-रोगको रोक रखेगा।

जहाँ कहीं मर्म-स्थानिक यन्त्रोंमें **यन्त्र-निर्माण-सम्बन्धी रोग** (Structural disease) हैं, खासकर फेफड़ोंमें तो सल्फर भी **साइलिसिया**की तरह ही एक भयङ्कर दवा होती है। जब कि लक्षणोंके अनुसार यह निर्देशित होता है, तो सल्फर पुराने नासूरकी तलीको अकसर आरोग्य कर देगा तथा पुराने फोड़ोंको स्वाभाविक अवस्थामें ला देगा, जिससे कि स्वस्थ पीब बनने लगेगा। बहुत ही सुस्त रहनेवाले जखमोंको यह खोल देगा, जो कुछ भी नहीं करते, ज्यों-के-त्यों पड़े रहते हैं। यह प्रादाहिक ग्रन्थियोंको जो कड़ी पड़ गयी हैं और जिनमें पीब होना चाहता है, लक्षण मिलनेपर घटा देगा; पर यक्ष्माके बढ़े हुए रोगियोंके लिये इस दवाका प्रयोग करना खतरनाक है और यदि दिया भी जाये, तो सर्वोच्च क्रममें कदापि न देना चाहिये। यदि बहुत ही कष्टदायक लक्षण है, आप सोचते हैं, कि सल्फरका प्रयोग अवश्य ही होना चाहिये, तो ३० या २०० शक्तिका प्रयोग कीजिये। यक्ष्मामें जो सवेरे पतले दस्त आते हैं, उन्हें सल्फर देकर रोकनेकी चेष्टा न कीजिये। रातको होनेवाला पसीना रोकनेका भार न लीजिये, जो यक्ष्माकी बढ़ी हुई अवस्थामें होते हैं, यहाँतक कि यदि लक्षणोंके अनुसार सल्फर निर्देशित भी हो तो न दीजिये; बात यह है, कि यह निर्देशित नहीं रहता। यहाँतक कि यदि लक्षण सादृश्य भी हो तो जो दवा किसी रोगके लिये खतरनाक हो, उसे निर्देशित न समझना चाहिये।

उपदंशके पुराने रोगियोंके लिये, जब सोराकी दशा बहुत प्रधान रहती है, तो सल्फरकी जरूरत पड़ सकती है, जब औपदंशिक लक्षणोंकी प्रधानता रहती है, तो सल्फर मुश्किलसे निर्देशित रहता है ; परन्तु जब ये पारद (Mercury) से दबा दिये जाते हैं और रोग तद्वद्वस्थामें छिपा पड़ा है, तो सल्फर मर्क्युरीके प्रतिविषका काम करेगा, लक्षणोंको विकसित होने देगा तथा स्पष्ट देखनेके लिये मूल अवस्थाको सामने ला देगा। ऐलोपैथी द्वारा जो सबसे बड़ी बुराई की जाती है, वह यह है, कि स्वास्थ्य-विधानमें जो कुछ है, उसे वे छिपा देना चाहते हैं, मानो मानव-जातिमें जो कुछ है, उससे उन्हें लज्जा प्राप्त होती है ; परन्तु होमियोपैथी यह चेष्टा करती है, कि मानव-जातिमें जो कुछ है, उसे प्रकट कर देती हैं और छिपानेवाली दवाओंका प्रतिविष देती है और जो रोग रोक दिये गये हैं, उनसे मुक्त कर देना चाहती है। यह सत्य है, कि बहुतसे रोगी होमियोपैथीको नहीं पसन्द करते ; क्योंकि वे अपने औपदंशिक उद्भेदोंको दृष्टिके सामने नहीं आने देना चाहते ; वे अपने दुराचारोंका सबूत प्रकाशमें नहीं आने देना चाहते ; परन्तु होमियोपैथी यही करनेकी चेष्टा करती है। ठीक ठीक होमियोपैथी चिकित्सा होनेपर स्वास्थ्य-विधानमें जो उपसर्ग हैं, वे बाहर निकलेंगे। सल्फर बाह्य-पटलपर रोगको ला देता है, जिससे कि वे दिखाई दे सकते हैं। यह एक सार्वाङ्गिक स्पष्ट प्रतिविष है। यह वह दवा है, जिसकी सर्दीसे या भेषजोंसे, यहाँतक कि सल्फरसे भी दवे हुए उद्भेदोंके लिये पुकार पड़ती है जो छिपा दी गयी है, उन चीजोंको बाहर लानेकी यह एक बहुत बड़ी दवा है, इसीलिये दवे हुए उद्भेदोंके लिये या भेषजोंसे दबायी हुई किसी भी बातके लिये काममें आनेवाली दवाओंकी सूचीमें आप सल्फरको अवश्य देखेंगे, यहाँतक कि जब नये उद्भेद भी दवा दिये जाते हैं, तो सल्फर एक बहुत ही बहुमूल्य औषधि हो जाती है। रुके हुए सूजाकमें फिरसे स्राव जारी कर देनेके लिये और गायब हुए उपसर्गको फिरसे लानेके लिये अक्सर सल्फर ही दवा होती है। दवे हुए लक्षण अवश्य सामने आने चाहिये, नहीं तो कभी भी आरोग्य सम्भव नहीं है।

अपने इतिहासके आरम्भ कालसे, हैनिमैनके समयसे सल्फर दवा हो रहा है और उनके मतानुसार जब दवा देने योग्य लक्षणकी कमी हो, सोराकी वजहसे लक्षणोंकी एक दबी हुई दशा हो, सल्फरपर ध्यान देना चाहिये। इस दशामें इतने फायदेके साथ इसका प्रयोग हुआ है, कि बँधी गतके अनुसार दवा देनेवाले इस विषयको सीख गये हैं। जब स्पष्ट रूपसे (बाह्य-भावसे) सुनिर्वाचित औषध भी रोगीको लाभ दिखानेमें असफल हो जाता है और उससे अच्छी दवाके लक्षण नहीं प्राप्त होते, तो यह सत्य है, कि सल्फर स्वास्थ्यपर गहरा प्रभाव पहुँचा देता है और इसके बाद अन्य औषध और भी उत्तम कार्य करते हैं। तजुर्बेसे यह बिलकुल स्थिर हो गया है। आपको ऐसे अवसर प्राप्त होंगे, जब आपने कोई ऐसी दवा दी है, जो सुनिर्देशित मालूम होती है ; पर यह रोगको पकड़ नहीं सकी और इसके बाद आप दूसरी सर्वोत्तम निर्देशित औषधि देते हैं, इसके बाद तीसरी देते हैं ; पर परिणाम एक ही होता है। आपको ताज्जुब होता है, कि ऐसा क्यों हो रहा है ; पर आप देखेंगे कि यद्यपि रोगी ठीक-ठीक सल्फर नहीं मांग रहा है ; पर इसका प्रयोग करनेपर

यह इस तरह भीतरी दशापर सठीक बैठता है (और अकसर सोरा ही यह छिपी भीतरी दशा है), कि दवाओंको और भी उत्तम लाभदायक बना देता है। यह वह अनुभव है, जो हैनिमैनके समयसे सभी वृद्ध पुरुषों द्वारा स्थिर सिद्धान्त मान लिया गया है। ऐसी चीजोंकी तभी जरूरत पड़ती है, जब लक्षणोंकी न्यूनता रहती है, जहाँ बहुत कुछ अध्ययनके बाद सबसे उत्तम तरीकेको काममें लानेकी जरूरत दिखाई देती है, वह तरीका जो बहुत अंशोंमें न्यायानुमोदित है, जो समस्त जातिकी भीतरी धातु प्रकृतिके ज्ञान और अनुभवोंपर आधारित है। हम जानते हैं, कि कुछ लक्षणोंके साथ इन रोगियोंके भीतर एक गुप्त दशा है और यह या तो सोरा है, उपदंश है या प्रमेह-विष है। यदि यह मालूम होता है, कि यह उपदंश है, तो हम उपदंशकी तरह दिखाई देनेवाली दवाओंमेंसे श्रेष्ठ दवा चुनेंगे। यदि प्रमेह-विष (Sycosis) मालूम हो, तो साइकोसिसके सदृश दवाओंमेंसे श्रेष्ठ दवा चुनेंगे। गुप्त सोराकी तरह दिखाई देनेवाली औषधियोंका शिरमोर सल्फर है और इसलिये, भीतरी धातु-प्रकृति सोरा विष-दूषित मालूम हो और यह प्रच्छन्न रोगी हो, तो गुप्त कारणको सल्फर खोल देगा और यहाँतक कि यदि आरोग्यदायक आधारपर कार्य नहीं करेगा, तो भी यह सत्य है, कि लक्षणोंका एक और भी उत्तम प्रदर्शन सामने आ जायगा और जैसा कि सल्फर सोराके लिये है, वैसा ही **मर्क्युरियस** उपदंश-विषके लिये और **थूजा** प्रमेह विष (Sycosis) के लिये।

पनसिलवेनियाके कोयलेके प्रदेशोंमें, जो खानोंमें काम करते हैं और खानोंके पास रहते हैं, उनके लिये सल्फरकी जरूरत पड़ती है। हम जानते हैं, कि कोयला सल्फरसे नहीं बना है, इसके अलावा उसमें बहुत कुछ है; परन्तु जो कोयलेको हाथसे इधर-उधर करते हैं, उनके लिये अकसर सल्फरकी जरूरत रहती है। जो व्यक्ति हमेशा केओलिन तथा अन्य दूसरे उत्पन्न चीज जो चाइनाके शिल्पमें आवश्यक होते हैं, पीसा करते हैं तथा पत्थरका काम करनेवालेको, खासकर **कैल्केरिया** और **साइलिसिया**की जरूरत रहती है; पर जो कोयलेकी खानोंमें काम करते हैं, अकसर उन्हें सल्फरकी जरूरत पड़ती है। रोगी सल्फरके रोगीकी तरह दिखाई भी देता है, उनका ऐसा ही चेहरा रहता है और यहाँतक कि जब उनके उपसर्ग किसी स्थानपर आवद्ध रहते हैं और दूसरी दवाएँ चाहते हैं, तो आप जबतक उन्हें सल्फरकी एक खुराक न दे देंगे, तबतक किसी दूसरी दवासे फायदा न दिखाई देगा, इसके बाद उनकी उन्नति होती जायगी। कितनों ही का ऐसा विश्वास है, कि यह इस कारणसे होता है, कि कोयलेमें बहुत ज्यादा गन्धक रहता है। हमलोगोंको जितनी इच्छा हो, उतना इस विषयपर सिद्धान्त बनाया करें; परन्तु हम यह अभ्यास नहीं करना चाहते, कि निम्न-क्रमको उच्च-क्रमसे काटा करें। डरनियर प्रणाली (Dernier resort) के अनुसार ही इसको काममें लायें, जब दवा बतानेवाला **कोई भी लक्षण न रहे,** तभी हमलोगोंके लिये परीक्षाका काल आता है और तभी यह न्यायानुमोदित होता है, जब ठीक-ठीक मनुष्यपर यह परीक्षा की जाती है; क्योंकि ऐसा मनुष्य सीमाके भीतर रहता है। वह जानता है, कि अपनी दवा कैसी देनी चाहिये, ऐसा मनुष्य हर रोगमें लक्षणोंके अनुसार ही परिचालित होता है।

प्रादाहित उपसर्गोंमें, प्रादाहिक अंशोंका **बैंगनीपन** लिये रङ्ग रहता है, शैरिक-स्फीति सल्फरमें दिखाई देती है। **खसड़ा**, जब बैंगनी रङ्ग लिये निकलता है, तो बहुतकर सल्फरकी जरूरत रहती है। सल्फर खसड़ाकी एक बहुत बड़ी दवा है। बँधी गतसे दवा देनेवाले **पल्सेटिला** और सल्फरसे बहुत काम कर सकते हैं। खासकर **ऐकोनाइट** और **इयुफ्रेशिया**की जरूरत रहती है। खासकर जब चमड़ा धुमैला रहता है और खसड़ाके दाने नहीं निकलते, तो सल्फर रोगको सुधार देता है। किसी भी जगह **बैंगनी रङ्ग** दिखाई दे सकता है, विसर्पमें, गलक्षतमें ; अकसर अग्रबाहु, पैर और चेहरेमें।

टीका लेनेका भयङ्कर दुष्परिणाम, अकसर सल्फरसे आरोग्य हो जाता है। इसमें यह **थूजा** और **मैलेण्ड्रिनम**के सदृश रहता है।

मानसिक दशामें, जो वास्तविक मनुष्यको बताती है, वास्तविक भीतरी प्रकृति प्रकट होती है। हम देखते हैं, कि सल्फर उसके स्नेहको हटा देता है और उसे बढ़ी हुई स्वार्थपरताकी दशामें खींच लाता है। उसे किसी दूसरेकी इच्छा या वासनाका खयाल नहीं रहता ; बल्कि सिर्फ अपना इच्छाका। जो कुछ वह करता है, वह अपने ही फायदेके लिये। सल्फरके रोगीमें सर्वत्र स्वार्थपरता भरी रहती है। कृतज्ञताका एकदम अभाव रहता है।

दार्शनिक उन्माद इसका एक प्रधान स्वरूप है। अद्भुत और दुरूह बातोंका अध्ययन, गुप्त बातोंके अध्ययनपर एकतरफा पागलपन ; ज्ञानके बाहरकी बातें ; प्रकट करनेका आधार रहे बिना ही विभिन्न विषयोंका अध्ययन। सल्फरने लगातार एक चीजसे दूसरी चीजोंका प्रथम कारणके रूपमें खोज निकालनेकी चेष्टा आरोग्य कर दी है। इसने एक रोगी आरोग्य कर दिया है, जो यह विचारनेके सिवा और कुछ न करता था, कि यह वह तथा दूसरी बातें किस कारणसे होती है,—अन्तमें चीजोंको ईश्वरसे आती हुई पता लगाता था और फिर पूछता था,—"ईश्वरको किसने बनाया ?" वह एक कोनेमें बैठ जाती और आल्पीन गिना करती थी और ताज्जुब करती थी ; न सुलझनेवाले प्रश्नोंपर विचार किया करती थी—"ईश्वरको किसने बनाया ?" कोई भी स्त्री किसी पुरुषके हाथकी बनी चीज देखकर यह पूछे बिना नहीं रह सकती, कि इसे किसने बनाया ? वह तबतक कभी भी सन्तुष्ट न होगी, जबतक वह बतानेवालेको न पा लेगी और तब वह यह जानना चाहती है, कि उसका बाप कौन था ; वह बैठ जायगी और ताज्जुब करेगी, कि वह कौन था, वह आयरलेण्डका निवासी था या और कहींका। यही सल्फरका स्वरूप है। यह बिना आविष्कारकी आशाके, बिना किसी सम्भवपर उत्तरका तर्क-वितर्क है। यह उस ढङ्गके दार्शनिक विचार नहीं हैं, जिनका कोई आधार रहता है और जिसके सहारे आगे बढ़ा जा सकता है, श्रेणीबद्ध रूपमें तर्क, अन्य बातोंपर विचार, पर एक उन्माद-पूर्ण विचार, जिसका न तो कोई आधार है, अपनेको सिर्फ तङ्ग करता है। शृङ्खलाबद्ध-भावसे किसी चीजका अनुगमन करनेको सल्फरके रोगियोंकी इच्छा नहीं रहती, वास्तविक कार्यसे अनिच्छा,

क्रमवद्ध कार्यसे अनिच्छा। सल्फरका रोगी एक तरहका **उद्भावक जीव** रहता है। उसके मनमें जब कोई विचार समा जाता है, तो उससे छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। वह लगातार उसके पीछे पड़ा रहता है और अन्तमें आकस्मिक रूपसे किसी बातपर रुक जाता है और बहुत बार तो इसी तरह चीजोंका आविष्कार हो जाता है। सल्फरका रोगी ऐसा ही रहता है। वह अकसर अज्ञान रहता है; पर अपनेको बहुत बड़ा आदमी समझता है; वह शिक्षासे नफरत करता है; साहित्यिक पुरुषोंसे और उनके कार्यसे घृणा करता है और वह आश्चर्य करता है, कि ऐसा सब कोई क्यों नहीं समझ लेते, कि वह शिक्षासे भी ऊपर है।

इसके अलावा उस रोगीमें **धर्मोन्माद** भी हो जाता है। वैज्ञानिक धर्मपर ध्यान नहीं लगाता; पर अपने विषयमें मूर्खतापूर्ण विचार। वह लगातार और निर्बोध रूपसे प्रार्थना किया करता है, हमेशा अपने कमरेमें रहता है और निराशासे कराहा करता है; वह समझता है, कि उसने धर्मके दिवस पापमें विताये हैं।

सल्फरकी आवश्यकता रहनेवाले रोगी अकसर **मनकी सुस्ती और विभ्रम**की अवस्थामें रहते हैं; उनमें विचार और चिन्ता-धाराके संग्रह करनेकी योग्यता नहीं रहती; उनका मनः—संयोग नहीं होता। वह बैठकर केवल एक ही चीजपर मनः—संयोग न करेगा, किसी एक ही चीजपर मन लगानेकी चेष्टा न करेगा। वह सवेरे सुस्वपन और सरमें पूर्णता तथा सरमें चक्कर लिये नींदसे उठेगा। खुली हवामें सरमें चक्कर, खुली हवामें सरमें पूर्णता और सुस्तीके साथ नाककी सर्दी हो जाती है, जिससे चित्त-विभ्रमित रहता है।

पुस्तकोंमें एक प्रकारका वर्णन है, जिसका बहुत ज्यादा व्यवहार होता है। "मूर्खता-पूर्ण सुखका अहङ्कार; समझता है, कि मेरे पास खूबसूरत चीजें हैं, यहाँतक कि कम्बल भी उसे खूबसूरत मालूम होता है।" ऐसी दशा पागलोंमें वर्त्तमान रहती है या उन मनुष्योंमें जो किसी दूसरी तरहके पागल नहीं थे, सिवा एक ही विचारके।

सल्फरके रोगीको **काम-काजकी इच्छा नहीं रहती।** वह इधर-उधर बैठा रहेगा; पर कुछ न करेगा और अपनी स्त्रीसे धोने-धोने और अङ्गुलियोंका नख काटनेका खयाल करनेको कहेगा; वह सोचता है, कि वह इसी कामके लिये है। सल्फरके रोगीसे सफाईकी दशा तो मानो चली गयी-सी मालूम होती है। सल्फर सभी दुस्तोषणीय पदार्थोंके विरुद्ध रहता है। **आर्सेनिक**का रोगी एकदम दुस्तोषणीय (नकचढ़ा) रहता है और ये दोनों दवाएँ एकदम दो सीमाओंपर हैं। **आर्सेनिक**का रोगी अपने कपड़े-लत्ते साफ सुथरे रखना चाहता है; सभी चीजें ठीक-ठीकाने खूँटियोंपर टँगी रखना चाहता है, सभी तस्वीरें दीवारपर ठीकसे लटकी देखना चाहता है और सभी चीजें साफ और सुन्दर चाहता है और इसीलिये **आर्सेनिक**का रोगी "सुनहरी मूठवाली बेंत जैसा रोगी" कहलाता है; क्योंकि उसमें बहुत स्वच्छता, नकचढ़ापन और सफाई रहती है और इन सबके ठीक विपरीत सल्फरका रोगी रहता है।

"सब चीजोंसे, काम-काज, आनन्द, बोलचाल या हिलना-डोलना, सबसे अनिच्छा, शरीर और मनकी जड़ता।" "जीवनसे तुष्ट ; मन और शरीरकी जड़ताकी इच्छा", "जीवनसे तुष्ट ; मृत्युकी इच्छा।" इतना आलसी कि अपनेको उठाना नहीं चाहता और जीवनसे एकदम असुखी।" "नहानेसे भय (बच्चोंमें)।" हाँ, यदि उन्हें नहलाया जायगा, तो बेतरह रोयेंगे। सल्फरका रोगी पानीसे डरता है और नहानेपर उसे सर्दी लगती है।

इसके **सम्बन्धके** विषयमें **लाइकोपोडियम**के बाद तुरन्त ही सल्फरका प्रयोग न करना चाहिये। यह एक चक्करदार समूहके रूपमें है,—सल्फर, **कैल्केरिया**, **लाइकोपोडियम**। पहले सल्फर तब **कैल्केरिया** और बादमें **लाइकोपोडियम** और इसके बाद फिर सल्फर ; क्योंकि **लाइकोपोडियम**के बाद यह उत्तम क्रिया करता है। सल्फर और **आर्सेनिकम**का भी सम्बन्ध है ; अकसर आपको किसी रोगीको कुछ दिनोंतक सल्फर देकर चिकित्सा करनी पड़ेगी ; फिर कुछ समयतक **आर्सेनिकम** देनेकी जरूरत होगी और इसके बाद फिर सल्फरकी। कितनी ही नयी बीमारियोंमें सल्फर बादमें बहुत फायदा करता है।

सल्फरके रोगीको **सरमें चक्कर** बहुत आता है। जब वह खुली हवामें जाता है या जब वह कुछ समयतक खड़ा रहता है, तो उसके सरमें चक्कर आने लगता है। सवेरे सोकर उठनेपर उसका माथा जड़-सा मालूम होता है और पैरोंके बल रहनेपर उसके सरमें चक्कर आने लगता है। वह जड़वत् और क्लान्ति अनुभव करता है, नींदसे मानो उसे विश्राम नहीं मिलता और "चीजें चक्कर खाती हैं", उसे ठीक समतामें लानेके लिये कुछ समय लगता है। नींदके बाद बहुत धीरे-धीरे वह अपनेको ठिकाने ला सकता है। यहाँ निद्रा और खड़े होनेपर रोग-वृद्धि दिखाई देती है।

माथेके भी बहुत-से लक्षण प्रकट होते हैं। सल्फरके रोगीको समय बाँधकर सवमन सर-दर्द होता है ; रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, बेहोशीके साथ रक्त-सञ्चयकी एक अनुभूति, इसके साथ ही मिचली और वमन रहता है। सप्ताहमें एकवार या हर दो सप्ताहपर सवमन सर-दर्द, इसके चरित्रगत लक्षण सातवें दिनकी रोग-वृद्धि है। श्रमिक-श्रेणीके मनुष्योंको रविवारके दिन पैदा होनेवाला सर-दर्द सल्फरसे आरोग्य कर दिया जाता है। आप इसको छांट ले सकते हैं। रविवार ही एक ऐसा दिवस है, जिस दिन वह काम नहीं करता, वह सवेरे देरतक सोता है और सर-दर्दके साथ ही जागता है, जो समूचे माथेको आक्रान्त किये रहता है, इसके साथ ही सुस्ती और रक्त-सञ्चय रहता है। काममें व्यस्त और सक्रिय रहना, सप्ताहभर सर-दर्दको रोके रहता है। दूसरोंको सामयिक सर-दर्द प्रत्येक सातवें दिनके भीतर होता है, इसके साथ ही मिचली और पित्तका वमन होता है। इसके अलावा उसे दो-तीन दिन रहनेवाला सर-दर्द हो सकता है ; एक तरहका रक्त-सञ्चयी सर-दर्द। मिचलीके साथ सर-दर्द और वमनका होना या पित्तके वमनके साथ सर-दर्द। झुकनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है और आम-तौरसे यह गर्म कमरेमें और गर्म प्रयोगोंसे घट जाता है ; रोशनीसे बढ़ जाता है, इसीलिये आँखें बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है और अन्धेरे कमरेमें चले जानेकी ;

हिलनेसे और भोजनके बाद रोग-वृद्धि। समूचा माथा असहनशील रहता है और आँखें लाल रहती हैं और अकसर आँखसे आँसू बहा करता है, साथ ही मिचली और वमन होता है। मस्तक-शिखरमें अत्यन्त ताप मालूम होनेवालोंको समय समयपर सर-दर्द; मस्तक-शिखर गर्म रहता है और जलन होती है और वह माथेपर ठण्डा वस्त्र रखना चाहता है। ताप-सम्मिलित यह सर-दर्द अकसर सर्दीसे घट जाता है, नहीं तो गर्म कमरेमें सरको आराम मिलता है। मस्तक जड़ बना रहता है और कभी-कभी वह सोच नहीं सकता। हरेक गति रोग बढ़ा देता है और खान-पानके बाद वह बदतर हो जाता है, पाकाशय ठण्डी चीजें पीनेपर बदतर हो जाता है और गर्म पेयोंसे अच्छा रहता है। सर-दर्द मौजूद रहनेपर चेहरा फूला फूला रहता है; चमकीला लाल चेहरा। लाल चेहरा, मैला या मलिन चेहरा तथा चेहरेकी शिरा-रोधवालोंका सर-दर्द; आँखें और चर्म फूला-फूला रहता है; चेहरा फूला रहता है और नसें दिखाई देती हैं। सल्फर उन व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जो सवेरे सर-दर्दके साथ सोकर उठते हैं, सरमें चक्कर आना और लाल चेहरा; उन मनुष्योंको जो कहते हैं, कि वे जानते हैं, कि दिनमें किसी-न-किसी समय सर दर्द होगा; क्योंकि चेहरा बहुत भरा मालूम होता है और सवेरे लाल रहता है और आँखें भी लाल रहती हैं। सर-दर्द पैदा होनेके पहले आँखोंके सामने आगकी चिनगारियाँ मालूम होती हैं, कितने ही रङ्गोंकी चिनगारियाँ। आगकी चिनगारियाँ, तारे, आरेके दाँत, झिलमिलाहट सर-दर्द पैदा होनेकी पूर्व-सूचना रहती है। सल्फरके कुछ सर-दर्द, जिनके बारेमें मुझे मालूम है, आँखोंके सामने एक विचित्र दृश्य उत्पन्न कर देते हैं; चौकोर मूर्त्ति, टेढ़ी होकर रखी, जिसके ऊपरकी तरफ आरेकी तरह दाँत रहते हैं और समूचा शरीर धब्बोंसे भरा रहता है; कभी-कभी तो यह मूर्त्ति देखी जानेवाली चीजके एक तरफ दिखाई देती है। कभी दूसरे पार्श्वमें, पर यह समान-भावसे दोनों ही आँखोंसे स्पष्ट दिखाई देती है। ये आरेके दाँत रोशनीकी झलक हैं और मूर्त्तिकी तली धीरे-धीरे बढ़कर काली होती जाती है, यहाँतक कि इन्द्रधनुषकी तरह रंग दिखाई देने लगते हैं। जब कभी उसका पाकाशय गड़बड़ा जाता है, उसकी ऐसी विचित्र दृष्टि हो जाती है। कभी यह सवेरे भोजनके बाद पैदा होती है और कभी दोपहरको भोजनके बाद। शामको भूखे रहनेपर या भोजनमें विलम्ब हो जानेपर भी यह पैदा हो जाती है। पाकाशयमें भूख, एकदम खालीपनका भाव रहनेपर भी यह झिलमिलाहट दिखाई देती है। **नेट्रम म्युरियेटिकम** और **सोरिनम**में भी हमें ऐसा ही कार्य, इसी तरहकी झिलमिलाहट और चिनगारियाँ सर-दर्दके पहले दिखाई देती हैं। ये सर-दर्दकी पूर्व सूचना हैं। ये झिलमिलाहट, चिनगारियाँ, स्फुलिङ्ग, तारे तथा टेढ़ी-मेढ़ी झलक सामयिक रूपसे आँखोंके सामने आती है और एक घण्टेतक याइससे कुछ कम-वेशी समयतक रह सकती हैं। माथेमें बहुत धमक होती है, सवेरे सर-दर्द और दोपहरके समय होनेवाला सर-दर्द। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है सर-दर्द, जो शामको भोजनके बाद पैदा होता है और रातमें बढ़ता है, निद्रा नहीं आने देता।

बाह्य मस्तकमें इतनी खुजली होती है, कि वर्णन नहीं किया जा सकता। लगातार खुजली, बिछावनमें गर्म होनेपर खुजली। यह बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाता है और

सर्दीसे भी वदतर हो जाता है। खुजलानेवाले उद्भेद; पपड़ी जमे, तर और सूखे उद्भेद; चकत्ते, फुन्सियाँ, फुन्सियाँ और फोड़े; समूची मस्तक-त्वचापर उद्भेद। माथेमें रूसी, केशोंका क्षय हो जाना। ब्रह्म-रन्ध्र वहुत धीरे-धीरे वन्द होता है। "मस्तक-शिखरपर तर, वदबूदार उद्भेद पीवसे भरे रहते हैं, शहदकी तरह पपड़ी, ऊपर सूखती है कप्पटत्वक् दद्रु (Tinea capitis), गाढ़े पीवके साथ तर वदबूदार उद्भेद, पीले खरोंट, इनसे रक्त बहता है और जलन होती है।" केश सूखे, झड़ जाते हैं प्रभृति।

इसमें ऐसे वहुत-से लक्षण हैं, जिन्हें पुराने समयमें कण्ठमाला कहा जाता था; पर जिसे हम सोरासे उत्पन्न जानते हैं। प्रत्येक "सर्दी" आँखमें वैठ जानेकी प्रवणता रहती है; आँखसे श्लेष्मा और पीव वहना। पलकोंमें जखम और पलकोंका मोटा पड़ जाना, पलकें वाहर या भीतरकी ओर पलट जाती हैं, वरुनियाँ झड़ जाती हैं, लाल और विशृङ्खलित दशा। अव अगर यह कहें—"सल्फरके रोगीकी आँखकी शिकायतें, तो इसमें आँखके सभी लक्षण आ जायेंगे। सल्फरमें वहुत ज्यादा आँखोंके लक्षण हैं, चेहरे तथा मस्तक-त्वचामें उद्भेदके साथ आँखके लक्षण, साथ ही चर्ममें खुजली; खासकर जव विछावनमें गरमा जाता है। आँखकी सर्दीके लक्षण, जो धोनेपर और भी बदतर हो जाते हैं, जब केवल आँखकी ही रोग-वृद्धि स्नानसे नहीं होती, वल्कि स्वतः रोगीकी तकलीफ स्नानसे वढ़ जाती है और वह नहानेसे डरता है और उसको खुजली होती है, जो विछावनकी गर्मीसे वदतर हो जाती है, पुराना सवमन सर-दर्द हुआ करता है, मस्तक-शिखरमें ताप अनुभव होता है, इन लक्षणोंके साथ उसकी आँखके उपसर्ग भी रहते हैं, वे भले ही चाहे जो हों, सल्फरसे आरोग्य हो जायेंगे। सल्फरने मोतियाविन्द (Cataract) और चक्षु-उपतारा-प्रदाह, प्रादाहिक दशाएँ और धुन्ध रोग और सब तरहका "दृष्टिका भ्रम" (जो सर दर्दके साथ होता है), आराम किया है। "आँखके सामने झिलमिलाहट" (जैसा वर्णन किया जा चुका है), "छोटे-छोटे काले धव्वे; काले विन्दु और दाग; काली मक्खियाँ आँखसे थोड़ी ही दूरपर उड़ती दिखाई देती हैं गैस या लैम्पकी रोशनीके चारों तरफ आगका घेरा दिखाई देता है" प्रभृति। "आँखके सामने कितनी तरहकी विचित्र प्रतिमूर्त्तियाँ, पर सवकी सल्फरकी प्रकृति है। "आँखोंमें जलनकी तरह ताप, दर्द-भरी ज्वाला", हरेक "सर्दी" आँखोंमें वैठ जाती है अर्थात् आँखके उपसर्ग, जव मौजूद रहते हैं, तो वढ़ जाते हैं और जव रोगीमें आँखका कोई भी उपसर्ग नहीं रहता, तो हरेक "सर्दी" से वह उत्पन्न हो जाता है।

कानमें भी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह हो जाता है। आपको सार्वाङ्गिक लक्षणों मालूम हो चुका है, कि श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके उपसर्ग सल्फरका एक जवर्दस्त लक्षण है। इससे शरीरकी कोई भी श्लैष्मिक-झिल्ली नहीं वचने पाती, सवसे ही सर्दीका स्राव होता है, वहुत ज्यादा, कभी-कभी पीव-मिला और कभी खून-मिला। इससे आँखें और कान भी नहीं वच पाते। यह श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा रोगीके वहरे हो जानेतक जारी रहती है। कर्ण-पटह और श्लैष्मिक-झिल्लीका मोटापन। श्रवण-शक्ति गायव हो जानेके पहलेतक सव तरहकी आवाजें—शोरगुलके शब्द कानमें आते हैं। यान्त्रिक परिवर्त्तन हो जानेके बाद

बहरापन आ जाता है; यद्यपि बहरापन आरोग्य नहीं किया जा सकता, तो भी आप रोगीको आरोग्य कर सकते हैं। जब आपका रोगी यह जानना चाहे, कि क्या उसका बहरापन आप आरोग्य कर सकते हैं, तो आप उसे इसका वादा नहीं कर सकते। बहुत-से-उपसर्ग मध्य-कर्णमें रहते हैं और उसकी परीक्षा न कर सकनेके कारण आप नहीं जान सकते, कि उसकी बनावट-सम्बन्धी कितनी गड़बड़ी पैदा हो गयी है। आप इतना ही कह सकते हैं, कि यदि रोगी काफी तरीकेसे आरोग्य हो गया, तो इसपर भी विश्वास किया जा सकता है। यदि बनावट-सम्बन्धी परिवर्त्तन ज्यादा नहीं हैं, तो रोगीके आरोग्य होनेपर वह दोष आप-से-आप आरोग्य हो जायगा। यदि आभ्यान्तरिक अंश नष्ट हो गये हैं, यदि मध्य-कर्णका शुष्क, क्षीणकर श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह है, तो आप मुश्किलसे मध्य कर्णको आरोग्य करनेकी आशा कर सकते हैं। यह नष्ट हो चुका है, अनुभूतिके लिये जिन अंशोंकी जरूरत है, वे अब अनुभूति ग्रहण नहीं करते; क्योंकि वे क्षीण हो गये हैं। आप केवल रोगीसे उसके आरोग्यके सम्बन्धमें बातचीत कर सकते हैं। किसी भी यन्त्रको आरोग्य करनेकी बात भी कभी मनमें न लाइये। जहाँतक सम्भव हो, इस विचारको ही अपने दिमागसे हटाये रहिये और जब लोग यन्त्रमें ही रोगको स्थानिक बना देनेके सम्बन्धमें कहें, तो आप चुप रहें; क्योंकि केवल वह रोगी बीमार है; जहाँतक सम्भव हो बीमार रोगीके विषयमें ही सोचिये और जितना सम्भव हो, उतना कम रोगका नाम और उसके नैदानिक दशाके सम्बन्धमें विचार कीजिये। इसलिये जब रोगी ऐसा कहे—"डाक्टर! क्या आप मेरे कान अच्छे कर सकते हैं?" तो उनसे कहिये—"पहले, आपको आरोग्य होना चाहिये। सबसे पहली और आवश्यक चीज है, आपको आरोग्य करना।" पहले रोगीको आरोग्य कीजिये, इसके बाद देखा जायगा, कि आप कान और श्रवण शक्तिके लिये क्या कर सकते हैं। इससे आपका मन मुनासिब तरीकेसे ठीक रहेगा और रोगीसे भी आपका सम्बन्ध ठीक रखेगा। यदि आप कानके सम्बन्धमें ही सदा जिक्र करते रहेंगे, तो अपने कानको लेकर ही रोगी आपके जीवनको भार-स्वरूप बना देगा। "आप मेरे जानके सम्बन्धमें कब कुछ करेंगे? मैं कब सुन सकूँगा।" इस समझसे काम आरम्भ करें, कि सम्पूर्ण रोगीकी चिकित्सा होनी चाहिये। पहले रोगीको याद कीजिये और उसे भी यह समझा दीजिये। जबतक कोई होमियोपैथ प्राप्त हो, तबतक रोगीको किसी कान-रोगके विशेषज्ञके पास जानेसे हतोत्साह करते रहिये। यह समूचे शरीरकी बीमारी है, जिसकी चिकित्सा होनी चाहिये। स्वतः रोगीकी धातुगत दशासे भिन्न कानकी तकलीफ-जैसी कोई तकलीफ नहीं है। सल्फरमें "बारम्बार नाक छिड़कने या खानेके समय कान बन्द हो जानेका लक्षण है"। "कानमें आवाजें" बहुत तरहके प्रदाह। सल्फरके रोगियोंके कानसे मवाद जाना। आप देखेंगे, कि सल्फर कानके बीमारियोंकी दवा है, यह कहनेसे मैं बचना चाहता था। यदि आप रोगीके लिये दवा चुनेंगे, तो अनेक बार आप इन "स्थानिक रोगों" को इस तरह आरोग्य कर देंगे, जो कि स्थानिक लक्षण आपको कभी भी उस रोगतक पहुँचने न देते। आपने अकेले कानके लिये कभी सल्फरका ख़याल भी न किया होगा या जरायुकी स्थान-च्युतिके लिये कभी सोचा होगा, इतनेपर भी रोगीको सल्फरकी जरूरत है और इसका प्रयोग करने-

पर आपको यह **देखकर आश्चर्य** होगा, कि किस तरह यन्त्र सब भी कायदेपर आ जाते हैं, जब कि रोगीकी धातुगत प्रकृति सुशृङ्खलित कर दी जाती है। शरीरमें इधर-उधर जब दर्द होता है, तो चिकित्सक उसके लिये दवा दिया करते हैं और वे बराबर असफल रहते हैं। किसी खास तरहका दर्द, जो रोगीको होनेवाले दर्दके सदृश है, उसके लिये वह दवा खोजा करता है; पर आपको रोगीकी चिकित्सा करनी चाहिये तथा छोटे-मोटे और दर्दोंके लिये माथा न लड़ाना चाहिये। उसे छोड़ दीजिये और सम्पूर्ण रोगीके लिये कोई दवा खोजिये। यदि उस दवामें वह दर्द है, तो और भी अच्छा है; पर यदि नहीं है, तो उसके लिये झंझट न कीजिये। छोटे-छोटे लक्षणोंके लिये झंझटमें न पड़िये। समस्त **रोगी**की चिकित्सा करते समय कोई प्रधान **कुञ्जी** भी आप छोड़ दे सकते हैं। कभी-कभी तो वह खासा दर्द ही एक ऐसा लक्षण होता है, जिसे रोगी आरोग्य करना चाहता है; पर यदि यह कोई पुराना लक्षण है, तो यह शायद ही कभी जाये। ऐसी दशामें वह रोगी यह जाननेकी चेष्टामें रहता है, कि वह दर्द कब आयगा—आपको तङ्ग कर डालेगा; परन्तु यदि आपको तत्त्वोंका ज्ञान है, तो पहले ही आप उस दर्दमें आराम न पहुँचाना चाहेंगे; यदि आप उसमें आराम पहुँचायेंगे, तो आपको जानना चाहिये, कि आपने गलती की है; क्योंकि **पिछले** उपसर्ग सब **पहले** दूर होने चाहिये। किसी रोगीको पकड़े रहनेके लिये, कभी-कभी यह कहना आवश्यक होता है, कि "यह उपसर्ग पहले कभी न आरोग्य करना चाहिये; बल्कि वे छोटे-छोटे लक्षण, जिनपर आप कभी ध्यान भी नहीं देते, पहले दूर होंगे।" आपने सच्ची बात कही है, इसलिये जीवनभर वह रोगी आपके हाथमें रहेगा, केवल इसलिये, कि आपने उसे दिखा दिया है, कि आप **जानते** हैं। ऐसा व्यवसाय सत्यता-पूर्वक अर्जित-व्यवसाय है।

सल्फरके **नाककी** श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह-सम्बन्धी रोग भी बहुत कष्टदायक होते हैं। पुरानी सर्दीकी तरह नाकके आगे गन्ध और सल्फरकी नाक इतनी कष्टदायक होती है, उसकी सर्दीकी दशा इतनी कष्ट-पूर्ण होती है, कि गन्धोंसे ही वह बीमार पड़ जाता है। वह सोचता है, कि वह अपनी ही सर्दी सूँघ रहा है या गन्दी चीजें सूँघ रहा है; इस पुरानी सर्दीकी गन्धसे या गन्दी चीजोंकी गन्धसे मिचली आया करती है। यह नाककी सर्दीका रोगी रहता है; लगातार छींकें आती हैं और नाक बन्द हुआ करती है। नाककी सर्दीके विषयमें हमने पढ़ा है—"पानीकी तरह पतली, नाकसे चूती रहती है।" नाकके सभी स्राव कटु और जलन करनेवाले होते हैं।

सल्फरकी यही दशा है। जब-जब उसे "सर्दी" लगती है, उसे नाककी सर्दी हो जाती है। वह स्नान नहीं कर सकता, वह ज्यादा उत्तप्त नहीं हो सकता, वह ठण्डी जगहमें जा नहीं सकता और "नाककी सर्दी हुए बिना" ज्यादा परिश्रम नहीं कर सकता। ऋतु-परिवर्त्तनसे नया आक्रमण हो जाता है। मैंने बहुत-से उन मनुष्योंको ध्यानसे देखा है, जो वसन्त-ऋतुमें फोड़ोंके भयसे अधिक मात्रामें गन्धक खाया करते हैं तथा वसन्त ऋतुका रक्त-शोधक समझते हैं, उन्हें वर्षके बाकी दिनोंमें नाककी सर्दी तथा सल्फरकी बीमारियोंके शिकार बने रहना पड़ता है। यदि आप ऐसे ही कुछ सल्फर खानेवालोंकी खोज निकालें, तो आपको

सल्फरकी एक अति सुन्दर प्रतिमूर्त्ति प्राप्त हो जायेगी, जिसको देखना होमियोपैथिक चिकित्सकके लिये अतीव मनोरञ्जक होगा। इसके रोगीकी नाकसे खून भी जा सकता है, सूखे जखम तथा नाकमें खरौंट होना।

सल्फरके चेहरेका साधारण दृश्य मैं काफी तौरसे वर्णन कर चुका हूँ; पर हमें खासकर शिरा-रोध (Venous stasis) को याद रखना चाहिये, मैला चेहरा लाल धब्बे, रोगियल दृष्टि और मिथ्या रक्त पूर्णताका प्रदर्शन। यह एक ऐसा चेहरा होता है, जो पीलेसे लालमें परिवर्त्तित हो जाता है; एक पीला चेहरा, जो सहजमें ही विचलित हो जाता है, गर्म कमरेमें तमतमा उठता है, उत्तेजनासे तमतमा उठता है तथा साधारण स्फूर्तिदायकोंसे तमतमा जाता है; खासकर यह सवेरेके वक्त तमतमाया रहता है। चेहरेपर उद्भेद।

समय बाँधकर होनेवाला प्रचण्ड प्रकृतिका स्नायु शूल, खासकर चेहरेमें दाहिनी ओरका स्नायु-शूल। दीर्घ तथा जटिल दक्षिण पार्श्वका स्नायु-शूल। मलेरियाकी आबहवामें रहनेवालोंका लगातार बना रहनेवाला स्नायु-शूल, जब कि **बेलेडोना** और **नक्स-वोमिका**की तरह लघु-क्रिय औषधियाँ स्नायु-शूलके लिये दी जाती हैं, बहुत थोड़े समयके लिये दर्द घटाती हैं। यदि सम्पूर्ण रोगीका अध्ययन करनेपर आपको यह मालूम हो, कि यह सल्फरका रोगी है, तो सल्फर हमेशाके लिए स्नायु-शूल आरोग्य कर देगा।

चेहरेका विसर्पका प्रदाह सल्फर आरोग्य कर देता है। सल्फरका विसर्प चेहरेके दाहिनी तरफ होता है तथा दाहिने कानके पास, दाहिना कान बहुत फूला रहता है, यह धीरे धीरे फैलता है, अलस-भावसे इधर-उधर रहता है और साधारण रूपसे बैंगनी होता है। सम्पूर्ण रोगीसे बदबू निकलती है, गन्दा रोगी, धोनेपर भी उसका चमड़ा झुर्री-भरा, सिकुड़ा और सूखे हुए गो-मांसकी तरह दिखाई देता है। जो बीमारी बहुत तेजी और प्रचण्डतासे तथा चकत्ते और बहुत ज्यादा छालोंके साथ पैदा होती है, उनमें सल्फर उपयोगी नहीं होती; बल्कि यह उन रोगियोंके लिये उपयोगी होता है, जिनमें पहले एक चितकबरा धुमैला लाल दाग चेहरेपर निकलता है और इससे थोड़ी दूरपर दूसरा धब्बा होता है और फिर तीसरा और ये मानो एक साथ चलते हैं और एक सप्ताह या इसी तरह यह एक धीमी विसर्पकी दशामें बढ़कर हो जाता है और शिराएँ तनी हुई मालूम होती हैं और वह अचेतनताकी ओरकी दशामें चला जा रहा है। ऐसे रोगियोंमें जो सल्फर करेगा, उसे देखकर आप चकित हो जायेंगे, जो धीरे-धीरे पैदा हो जाते हैं, मानो उन्हें विकसित करनेके लिये जीवनी-शक्तिका अभाव हो, एक धीमा जड़त्व-पूर्ण विसर्पका प्रदाह। पर यदि यह **आर्सेनिक**, **एपिस** या **रस-टक्स** होगा, तो विसर्प तेजीसे फैल जायगा। **आर्सेनिक** और **एपिस**के विसर्पमें आगकी तरह जलन होती है तथा विसर्पके धब्बोंपर **रस-टक्स**में छाले होते हैं।

समय-समयपर तो सल्फरके रोगीका समूचा चेहरा तर; पपड़ी जमे, खुजलानेवाले, विसर्पके उद्भेदोंसे ढँका रहता है। क्रस्टा लैक्टिया, जो मस्तक-त्वचा और कानोंमें

होता है, जिसमें तर, मोटी पीली पपड़ी जमती हैं, ढेर-का-ढेर होता है, बहुत खुजली होती है और जो बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाता है। बच्चा ओढ़ना उतारकर सोता है; यदि ढँके हुए अंशोंमें खुजली होती है, तो वे अंश जब गर्म हो जाते हैं, तो खुजली बढ़ जाती है। इन उद्भेदोंके साथ चक्षु रोग, आँख और नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके उपसर्ग सम्मिलित रहते हैं।

सल्फरके रोगियोंको ओंठोंपर भी मोटी पपड़ी पड़ती है, पपड़ी जमे ओंठ, फटे ओंठ तथा ओंठ और मुँहके कोने फटे रहते हैं, मुँहसे लार चूती है, जिसको लाल धारियाँ पड़ती हैं। चेहरेके निम्न-भागके पास खुजलाहट और जलनके साथ उद्भेद। मुँहके पास भैंसिया दादकी तरह उद्भेद। इन सबमें ही जलन होती है तथा मुँहसे निकला तरल लगकर इन सबकी खाल उघड़ जाती है। भीतरवाले जबड़ेके चारों तरफकी ग्रन्थियाँ फूली रहती हैं। निम्न-हनुस्थ-ग्रन्थि तथा कर्णमूल-ग्रन्थिकी सूजन। गर्दनकी गांठें बढ़ी हुई रहती हैं।

सल्फरकी धातुगत प्रकृतिमें दाँत ढीले हो जाते हैं; मसूढ़े दाँतसे अलग हो जाते हैं, उनसे खून बहता है और जलन होती है। दाँत क्षय हो जाता है। मुँह और जीभकी अस्वस्थ दशा रहती है। बुरा स्वाद तथा गन्दी जीभ। मुँहमें घाव और उन घावोंमें जलन रहती है। मुँहके छालोंमें भी जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहता है। मुँहके भीतर सफेद धब्बे। दूध पीनेवाले बच्चोंके मुख-क्षतकी सल्फर बहुत ही लाभदायक दवा है या उन माताओंकी, जिन्हें बच्चेको दूध पिलाते समय ये छाले निकल आते हैं, इसमें बद्धमूल सड़नेवाले जखम भी होते हैं, जो गालका आभ्यन्तरिक पटल खा जाते हैं। जीभपर तथा मुँहके पार्श्व भागमें जहाँ अस्वस्थ दाँतोंका दबाव पड़ता है विचित्र ढङ्गकी छोटी-छोटी ग्रन्थियाँ बनती हैं। जब ये गांठें जीभके किनारे आ पहुँचती हैं, तो इतनी तकलीफ होती है, कि रोगी न तो बात कर सकता है और न कुछ निगल सकता है। उसको ऐसे ही पदार्थोंपर जीवन धारण करना पड़ता है, जिनसे कि उसे जीभको हिलाना-डुलाना न पड़े। कभी-कभी तो ये सम्पूर्ण जिह्वा आक्रान्त कर डालते हैं और न रहनेपर भी कैंसर-रोग कहे जाते हैं।

पुराने गलक्षतकी लक्षण मिलनेपर, सल्फर एक आश्चर्यजनक औषध है। पुराने सल्फरके रोगियोंकी एक सार्वाङ्गिक श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा रहती है जैसा कि बताया जा चुका है और कण्ठके लक्षण भी उसी ढङ्गके होते हैं। श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा ऐसी रहती है, कि जो जखमतकमें परिणत हो जा सकती है। तालुमूल बढ़ा रहता है; बैंगनी दिखाई देता है और हफ्तों या महीनों ऐसा ही बना रहता है; एक साधारण यन्त्रणा-पूर्ण और दर्दसे असहिष्णु कण्ठकी दशा; पर इसमें नया गल-क्षत भी है। यह पीब होनेके साथ होनेवाले तालुमूल-प्रदाहमें खासकर उपयोगी है, जब कि वह बैंगनी, शिरा-पूर्ण दिखाई देता है और चमकीला लाल प्रदाह नहीं रहता। बैंगनी, धुमैला रङ्ग, खासकर सल्फरका रङ्ग है। कण्ठमें अकसर जलन, सुई गड़नेकी तरह दर्द, खाल

उधड़ना, टपक, प्रदाह और निगलनेमें कण्टका लक्षण रहता है। इसने डिफ्थीरिया आरोग्य किया है।

सार्वाङ्गिक लक्षणोंमें हम भूख, इच्छाएँ तथा अनिच्छाओंके विषयमें बहुत कुछ बता चुके हैं। सल्फरके रोगी साधारणतः अजीर्ण-रोग-ग्रस्त (Dyspeptics) रोगी रहते हैं, जो कुछ भी पचा नहीं सकते। कुछ भी आराम मिलनेके लिये उन्हें सरल-से सरल भोजन करना पड़ता है, साधारण खाद्यकी तरहकी कोई चीज भी पचा नहीं सकता। **पाकाशय** एकदम खालीपनके भावके साथ स्पर्श-असहिष्णु रहता है, भोजनके वक्तके पहले भूखका भाव रहता है। सल्फरका रोगी विना खाये नहीं रह सकता, वह कमजोर और मूर्च्छित हो जाता है। भोजनके वाद पाकाशयमें वहुत भार हो जाता है; पर मांस खानेके वाद या स्वस्थ पाकाशयमें ही पचनेवाली चीजें खानेके वाद थोड़ा भार होता है। इसके बाद वह दर्दका शिकार हो जाता है। वह अपने पाकाशयके दर्दको जलनकी तरह दर्द और बहुत यन्त्रणा वर्णन करेगा; उसके पाकाशयमें एक अस्वाभाविक भाव रहता है; पाकाशयमें यन्त्रणा और खाल उधड़नेका भाव। इस अनुभूतिको वह "भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द" कहेगा; पाकाशयमें भोजनके वाद भार प्रभृतिकी अनुभूति। सल्फरका पाकाशय एक दुर्वल पाकाशय रहता और पाचन वहुत धीमा रहता है। विकृत पाकाशयके कारण कटु और पित्तज वमन होता है। पाकाशयसे अम्ल उठनेके कारण मुँहका खट्टा स्वाद।

यकृत वहुत ही कष्टदायक यन्त्र रहता है। यकृतकी विवृद्धि और काठिन्य हो जाता है, जिसमें वहुत दर्द, दवाव और तकलीफ रहती है। यकृतमें रक्त-सञ्चय हो जानेके साथ, पाकाशय भी अपना मामूली लक्षण धारणा करता है या यदि वह लक्षण मौजूद रहता है, तो उसकी अभिवृद्धि हो जाती है। रोगी कामला-रोग-ग्रस्त हो जाता है, इसके साथ यकृतमें भरापन या फूलनेकी अनुभूति रहती है, यकृतमें धीमा-धीमा दर्द। उसे पित्त-पथरी भी हो सकती है; पित्त-प्रणालीके प्रदेशमें फाड़नेकी तरह दर्द, यह समय बाँधकर होता है और इसके साथ ही उसका पीलापन और भी वढ़ जाती है। सल्फरके यकृतके रोगीको पुराना पीलापन रहता है, जो घटता-वढ़ता रहता है। इस रोगीको जव "सर्दी" लग जाती है, तो यह यकृतमें घर वना लेती है; हरेक "सर्दी", हरेक वारका स्नान, प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन, उसके यकृतके उपसर्ग वढ़ा देता है और जव ये वदतर रहते हैं, तो अन्य तकलीफें कम रहती है। यह पित्तज वमनका आक्रमण, पित्तज "सर-दर्दका आक्रमण", जैसा कि वह इन्हें कहता है, उसमें ही स्थान ग्रहण कर लेता है। कभी-कभी तो पाखाना अलकतरेकी तरह काला होता है, दूसरे समय यह हरा और गाढ़ा होता है और ऐसा ही अवसर आता है, जव पाखाना सफेद होता है। ऐसे मल पर्यायक्रमसे होते हैं तथा यकृतकी सूजनके साथ उनमें परिवर्त्तन हुआ करता है और फिर रोगीको पित्त-पथरी हो जाती है।

सल्फरके रोगीके **पाकाशयमें** तननेकी वहुत तकलीफ रहती है; तलपेटमें चक्कर, तलपेटमें यन्त्रणा। वह खड़ा नहीं रह सकता; क्योंकि तलपेटके यन्त्र इस तरह लटके

रहते हैं ; ऐसा मालूम होता है, कि वे गिर जायेंगे। उनमें अतिसार और संग्रहणीके साथ कच्चापन, यन्त्रणा, तनाव और जलन रहती है और इसके बाद इससे भी जटिल रोग पैदा हो जाते हैं ; उदरके यक्ष्मा रोगकी ओर यह अग्रसर हो पड़ता है। औदरिक ग्रन्थियाँ यक्ष्माकी गुटिकाओंसे सछिद्र हो जाती हैं। तलपेटपर उद्भेद निकलनेके साथ रातमें खुजलाहट होती है, बिछावनकी गर्मीसे यह खुजली और भी बदतर हो जाती है। पार्श्व भागमें चक्राकार दाद निकलती है और ऐसा मालूम होता है, कि यह समूचे शरीरको घेर लेगी।

इस रोगीको **आध्मान वायु** भी होता है। बहुत डकारें आती हैं, पाकाशय बहुत तनता है, बहुत गुड़गुड़ाहट और अधो-वायु निकलती है। बिना वायु बढ़े ही उसे शूलका दौरा होता है ; वायु रुका रहता है। उदर शूलके भयानक दौरे, काटने, फाड़नेकी तरह दर्द, किसी भी स्थितिमें रहनेपर आराम नहीं मिलता, सम्पूर्ण उदरमें जलन और यन्त्रणा तथा आँतोंमें यन्त्रणा, समस्त अन्न-पथकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह ; वह जो कुछ वमन करता है, वह कटु होता है और उससे समूचे मुख-गह्वरमें ज्वाला-यन्त्रणा हो जाती है और जो कुछ उसके मलद्वारसे निकलता है, वह भी कटु होता है और उस अंशकी खाल उधेड़ देता है। पतला दस्त होते समय जलन होती है तथा तर आधो-वायु जब निकलती है, तब भी बहुत जलन होती है। उसे बारम्बार पाखाना लगता है ; पर पाखाना बैठनेके समय या तो जरा-सा तरल निकल जाता है या अधो-वायुके साथ थोड़ी तरी और यह आगकी तरह जलता है और मलद्वारकी खाल उधड़ जाती है।

दस्त पतले मलके रूपमें, पीला, पानीकी तरह, श्लेष्मा, हरा, खून-मिला और खाल उधेड़नेवाला हो सकता है। दस्त **बदबूदार** होता है ; अकसर बीमार बना देनेवाली बेधक गन्ध रहती है, जो कमरेभरमें घुस जाती है और "मलकी गन्ध उसके चारों तरफ पीछा किये रहती है, मानो उसने स्वयं मल लपेट लिया है।

पतले दस्त खासकर सवेरे आते हैं और साधारणतः दोपहरके पहलेतक ही होते हैं। सवेरे ही बिछावन छोड़कर भागना पड़ता है, ज्योंही वह जागता और बिस्तरपर इधर-उधर हटता है, उसे पाखाना लग आता है, उसे दौड़कर जल्दीसे जाना पड़ता है, नहीं तो मल निकल जाता है ; पाखानेतक पहुँचनेके लिये मुश्किलसे वह उसे रोके रहता है। सवेरेका अतिसार तो एक बँधी बात है ; परन्तु आधी रातके बाद होनेवाले पतले दस्त, आधी रातसे लेकर दोपहरतक होनेवाले दस्त भी सल्फरका अतिसार हो सकता है। तीसरे पहर आनेवाले पतले दस्तोंको सल्फरसे आरोग्य करनेका खयाल भी शायद ही कभी आप कर सकते हैं। सल्फरमें शामके वक्त अतिसारके बढ़नेका कुछ लक्षण है ; परन्तु ये अपवाद हैं। यह सवेरेका ही अतिसार है, जिसे हम सल्फरसे आरोग्य करनेकी ओर देखते हैं।

हैजा तथा अतिसारोंको जो हैजाके दिनोंमें होते हैं—उनकी भी सल्फर तब एक आश्चर्यजनक दवा होती है, जब कि दस्त सवेरे जारी होते हैं। यह रक्तामाशयकी भी एक

बहुमूल्य दवा है, जब लगातार कूथनके साथ मल रक्त-मिला होता है। ठीक **मर्क्युरियस**की तरह, उसे बहुत देरतक पाखानेमें बैठना पड़ता है; क्योंकि उसे ऐसा अनुभव होता रहता है, कि अभी और भी होगा। ऐसा ही **मर्क्युरियस**की बँधी दशा है—अभी और भी होगा—इस भावके साथ चिकना लसदार पाखाना। **मर्क्युरियस**से आरोग्य न होनेपर अकसर सल्फर इसे आरोग्य कर देगा। यह **मर्क्युरियस**का स्वाभाविक अनुगामी है, जब कि **मर्क्युरियस** गलतीसे समझ लिया और प्रयोग कर दिया जाता है। रक्तामाशयमें जब कूथन बहुत ही बढ़ी हुई प्रचण्ड प्रकृतिकी होती है, जब केवल रक्तके दस्त आते हैं, जब इसके साथ पेशाबका भी बहुत वेग रहता है, तो **मर्क्युरिस कोरोसाइवस**से बहुत जल्द आराम पहुँचता है। जब यह कूथन कम तेज रहती है तथा पेशाबका भी इतना वेग नहीं रहता या एकदम पेशाब लगता ही नहीं तो **मर्क्युरियस सोल्यूबिलिस** अधिक स्वाभाविक दवा होती है। रक्तामाशयमें सल्फरसे इन दवाओंमें बहुत ही निकटस्थ सम्बन्ध है; परन्तु सल्फरकी अपेक्षा साधारणतः इनका अधिक व्यवहार होता है। इसमें सन्देह नहीं, कि सल्फरके **रोगियों**के लिये रक्तामाशयकी सल्फर ही उपयोगिनी दवा होगी।

उसे भीतरी या बाहरी मसेवाली **बवासीर** हो सकती है। बहुत बड़े झब्बे, जिनमें यन्त्रणा और खाल उधड़नेकी तरह रहता है; जलन और स्पर्श-कातरता और जिनमें पतले मलके साथ रक्त-स्राव और ज्वाला-यन्त्रणा होती है।

मूत्रके लक्षण तथा **मूत्राशय** और **पुं-जननेन्द्रिय**के लक्षण सम्मिलित रूपसे सल्फरका एक अत्यन्त महत्व-पूर्ण समूह बताते हैं। मूत्राशयकी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहकी दशा रहती है, लगातार पेशाबका वेग बना रहता है तथा पेशाब करनेके समय जलन और यन्त्रणा होती है। पेशाब करनेके समय पेशाब मूत्रनलीको खुरच देता है और इतनी अधिक ज्वाला-यन्त्रणा होती है, कि यह पेशाब हो जानेके बाद भी बहुत देरतक बनी रहती है। यह भग्न-स्वास्थ्य धातु-प्रकृतिके लिये निर्देशित है तथा पुराने आविष्कारक और वृद्ध दार्शनिकोंके लिये, जो बहुत दिनोंसे व्यायाम-रहित जीवन बिता रहे हैं, जिन्हें मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिकी विवृद्धिकी तकलीफ रहती है, पेशाब होते रहनेके समय और बाद मूत्रनलीमें जलन तथा सूजाककी तरह मूत्रनलीसे स्राव होता है; पर यह वास्तवमें श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी पुरानी दशा रहती है। पेशाबमें श्लेष्मा और कभी-कभी पीब भी आता है। पुराने सूजाक (ग्लीट) के पुराने रोगियोंमें तथा भग्न-स्वास्थ्य रोगियोंमें, जब कि सूजाककी साधारण दवाएँ तथा खासकर मवादकी दवाएँ केवल उपशामकका कार्य करती हैं और यह रोगी स्वतः एक सल्फरका रोगी रहता है। ऐसे रोगीको सूजाक हुआ था और उसकी चिकित्सा नवीन प्रदर्शन मवादके लिये हुई थी; पर इसके बाद ही मूत्रनलीकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशा आती है, जिसके साथ मूत्रनलीमें जलन होती है, मूत्र-द्वार सूजा रहता है, लाल, फूला और मूत्र-द्वारकी विकृत दशा रहती है और केवल एक बूंद जमा होता है, जो वस्त्र भिगा देनेके लिये काफी होता है और यह हफ्तोंतक जारी रहता है और कभी-कभी वर्षों तक। इस मवादके आनेसे तो शक्तिकृत सल्फरके प्रयोगसे ही आरोग्य हो सकता है, जो बहुत दिनोंतक क्रिया करता रहेगा।

बहुमूत्रकी आरम्भिक अवस्थामें, पेशाबमें चीनीवाले रोगियोंको सल्फरने आरोग्य किया है। नींदमें आप ही-आप पेशाब हो जानेकी बीमारी सल्फर आरोग्य करता है। "सर्दी" लग जानेके कारण उत्पन्न रोग सल्फर आरोग्य करता है। कुछ रोगियोंमें तो हरेक "सर्दी" मूत्राशयमें घर बना लेती है यह **डलकामारा**की तरह और जब **डलकामारा**की क्रिया होना बन्द हो जाता है या जब आरम्भिक दशामें यह उपयोगी था तो अनुपूरक रूपमें सल्फर बढ़िया काम करता है। लगातार पेशाबके समय चुनचुनी और बारम्बार वेग, जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द, मूत्रनलीमें पेशाव कर लेनेके बाद भी बहुत देरतक ज्वाला-यन्त्रणा।

जननेन्द्रियपर भी बहुतसे उद्भेद होते हैं। जननेन्द्रियकी खुजली, जो बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाती है ; जननेन्द्रियके पास बहुत पसीना होना ; जननेन्द्रियकी ठण्डक। पुरुषोंमें—ध्वजभङ्ग ; कामेच्छा तो खाँसी जबर्दस्त रहती है ; पर भरपूरक कड़ापन नहीं आता या प्रवेशके पहले ही या प्रवेश करते ही बहुत जल्द वीर्य-स्राव हो जाता है। लिङ्ग-मुण्ड तथा लिङ्गाग्र-चर्मके चारों तरफ प्रदाहकी दशा रहती है, अग्र-चर्मके नीचे दादकी तरह उद्भेद, खुजली और जलन। इस तरहके रोगियोंको जननेन्द्रियपर खुजलानेवाले उद्भेद रहनेके कारण बहुत तकलीफ होती है। लिङ्गाग्र-चर्म संकरा पड़ जाता है और पीछेकी ओर खींचा नहीं जाता ; प्रादाहिक चमड़ी रोग (Phimosis) ; लिङ्गाग्र चर्मका मोटा पड़ जाना या उसमें रुकावट। दवाओंसे प्रादाहिक चमड़ी रोग आरोग्य किया जा सकता है ; अगर चमड़ी किसी ऐसी बीमारीपर निर्भर कर रहा है, जो आरोग्य हो सकती है। दवाओंसे जन्मगत चमड़ी रोग आरोग्य नहीं किया जा सकता। जननेन्द्रियसे रोगी तथा परीक्षक चिकित्सक दोनोंको ही बहुत बदबू आती है। रोगी भी स्वयं बहुत गन्दा रह सकता है ; वह अपने तईं स्नान नहीं करता और जननेन्द्रियमें निकलनेवाला स्वाभाविक मल जमा रहता है। पाखानेके समय मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थिसे रस-स्राव।

स्त्री जननेन्द्रिय यन्त्रोंमें वन्ध्यत्व प्राप्त होता है। मासिक रजः-स्रावमें गड़बड़ी—अनियम रहता है, जरा भी गड़बड़ी हुई, कि रजः स्राव रुक जाता है। मासिक रजः-स्रावके सम्बन्धमें रक्त-स्राव, जरायुसे रक्त-स्राव, बहुत दिनोंतक होनेवाला रजः-स्राव।

गर्भ-स्रावमें आपने **बेलेडोना** चुना होगा, जो उस समय उपयोगी था, जब कि स्त्रीको गर्भ-स्राव हो रहा था ; इसने वर्त्तमान दशाको पार कर दिया होगा या आपने **एपिस** अथवा **सैबाइना** चुना होगा, जो आरम्भिक अवस्थाके लिये उपयोगी था और यह या तो रक्त-स्रावको कुछ दिनोंके लिये रोक देता या बन्द कर देता है अथवा भ्रूणको जल्दी निकाल देनेमें सहायता पहुँचा देता है ; पर फिर रक्त-स्राव जारी हो जाता है और दुबारा रक्त-स्राव जारी होनेपर बहुत समयतक कष्ट बना रहता है। ऐसे बहुत-से रोगियोंको हमलोग तबतक कुछ भी नहीं कर पाते, जबतक सल्फरका प्रयोग नहीं करते। यदि सल्फरके लक्षण छिपे रहते हैं, तो सल्फर बहुत अधिक कार्य करता है। जब **बेलेडोना**का प्रयोग हो चुका है, तो आपको अकसर उसके बाद सल्फर देना होगा। **सैबाइना** जिसमें गर्भ-स्रावमें भयङ्कर वेगसे रक्त-

स्राव होता है, उसमें भी साधारणतः उसके बाद सल्फरका प्रयोग करना पड़ता है। ऐसे रक्त-स्रावी रोगोंमें अर्थात् बारम्बार बहुत दिनोंतक होनेवाले रक्त-स्रावमें एक पुरानी दशा, आरम्भिक या बहुत उत्तेजित दशामें नहीं; सबसे पहली बार झोंकसे निकलनेके समय नहीं; दो बहुत ही निर्देशित औषध रहते हैं अर्थात् सल्फर और **सोरिनम**। साधारण दवाओंका प्रयोग करनेपर भी तथा वस्ति गह्वर-सम्बन्धीय उपसर्ग-समूहोंके अनुसार चुनी हुई दवाएँ देनेपर भी स्रावका वेग जारी ही रहता है। बहुत से अवसरोंपर हमें रक्त-स्रावके रोगी मिलते हैं और वस्ति-गह्वरके लक्षण उनमें प्रधानतया दिखाई देते हैं तथा दूसरे लक्षण छिपे रहते हैं; झोंकसे रक्त-स्राव होता है, रक्त गरम रहता है प्रभृति और बहुत कम लक्षण दिखाई देते हैं; पर दूसरी बार जब उस स्त्रीको आप देखेंगे, तो वह दूसरे लक्षण भरपूर आपको बता सकेगी और कुछ ही दिनके बाद और भी कितने ही लक्षण प्रकट हो जायेंगे; क्योंकि यह रक्त-स्रावकी दशा, पुरानी दशाके कारण ही आयी है। यह छोटी माता या खसड़ाकी तरह नहीं है। जबतक खसड़ा या आरक्त ज्वर या चेचककी समाप्ति नहीं हुई है, तबतक आपको पुरानी दशाकी ओर ध्यान न देना होगा, ये नये विष दोष हैं। पर रक्त-स्राव उस स्त्रीकी एक धातुगत प्रकृतिकी दशा है; यह विष दोष नहीं है और इसीलिये यह जब प्रचण्ड भावसे बढ़ा रहता है, दवा मांगता है, तो शायद सबसे अच्छी दवा लघु-क्रिय होगी; जैसे **बेलेडोना**, यहाँतक कि **एकोनाइट** भी; पर इसके बाद धातुगत दशाकी ओर देखिये; क्योंकि **एकोनाइट** या **बेलेडोना**के बाद प्रयोग होनेवाली किसी दवाकी जरूरत पड़ेगी और यह दवा साधारणतः सल्फर ही होती है; प्रचण्ड क्रियाके लिये नयी बीमारीकी दवा ही उपयोगी होती है और उसके बाद अनुपूरक दवा देनी चाहिये।

सल्फरकी आवश्यकता रहनेवाली स्त्रियोंको **गर्म झोंके** आते हैं, जैसा कि उन्हें वयःसन्धि-कालमें होना चाहता था; यहाँ यह **लैकेसिस और सीपिया**से समता करता है। लड़कियोंके भयङ्कर कष्ट-रजः तथा ज्यादा उमरवाली स्त्रियोंके कष्टरजःमें भी सल्फर और **सीपिया** बहुत लाभदायक होते हैं। बहुत दिनोंतक रहनेवाले बहुत ही प्रचण्ड कष्टसे पूर्ण रोगिनियाँ, जबसे ऋतु आरम्भ हुआ है, तभीसे बहुत तकलीफ है तथा उन स्त्रियोंके लिये, जिन्हें सर्वदा सल्फरकी जरूरत रहती है। यदि आप केवल दर्दके प्रकारके अनुसार दवा चुनेंगे या जरायुकी स्पर्श-असहिष्णुताके अनुसार या स्रावकी शकलके अनुसार अर्थात् वस्ति-गह्वरके लक्षणोंके अनुसार तो आप असफल हो जायेंगे। सार्वाङ्गिक रूपसे वस्ति-गह्वरके लक्षण न आनेपर भी आप **रोगी**की चिकित्सा कीजिये। जब सार्वाङ्गिक लक्षण मिले, तो वस्ति-गह्वरके लक्षणसे ठीक न बैठनेपर भी सल्फर कष्ट-रजःको भी आरोग्य कर देगा। हरेक रोगमें **सार्वाङ्गिक** लक्षण ही सबके आगे रहते और शासन किया करते हैं।

सल्फरमें योनिमें भयङ्कर जलन होती है, भगकी कष्टदायक खुजली, जननेन्द्रियसे बहुत बदबू आती है, बहुत ज्यादा और बदबूदार पसीना होता है, तो जननेन्द्रियके आस-पाससे निकलता है तथा नीचे जंघाके भीतरकी तरफसे और तलपेटमें ऊपरकी ओर निकलता है। उस स्त्रीको इतनी बदबू आती है, कि उसे मिचली आने लगती है, यह खयाली बात नहीं है यह सार्वाङ्गिक अवस्था बिलकुल ही सत्य है। गन्धोंकी स्पर्श-असहिष्णुताको याद कीजिये;

श्वेत-प्रदरका स्राव बहुत ज्यादा होता है, बदबूदार, जलन करनेवाला और लसदार होता है, यह सफेद या पीला हो सकता है ; यह दुर्गन्धित कटु होता है तथा उस अंशके आस-पास खुजली पैदा कर देता और खाल उधेड़ देता है।

गर्भावस्थामें बहुत मिचली रहती है अथवा गर्भकी प्रारम्भिक अवस्थामें, सल्फरकी जरूरत रहनेवाली स्त्रियोंको यह मिचली रोक देगी और प्रसव भी सहज साध्य होगा, बाहर निकलनेका थोड़ा दर्द, उन्हें प्रसव केवल सङ्कोचनके साथ होगा और तुलनामें यह भी दर्द-रहित भावसे होगा। ऐसी रोगिनियोंको बच्चेके माथेके दबावसे ही कुछ तकलीफ होती है। हमलोग जानते हैं, कि प्रसवमें दर्द होता है, किन्तु जब कोई स्त्री उपयुक्त औषधि खाती रहती है, तो तुलनामें यह बहुत आसान हो जाता है। सल्फर उन स्त्रियोंके लिये तब निर्देशित रहता है, जिन्हें प्रसवका भयङ्कर कष्ट होता है ; बहुत देरतक प्रसव-वेदना। प्रसवके बादका दर्द भी बहुत कष्टदायक होता है। यह स्तन-ग्रन्थिकी सूजनके लिये भी उपयोगी है।

इसके बाद हमें **सड़नके उपसर्ग** (Septicæmic condition) प्राप्त होते हैं, जिसमें पीब-मिला प्रसवान्तिक स्राव होता है या प्रसवका स्राव ही बन्द हो जाता है। आपको ऐसी रोगिनी प्राप्त हो सकती है, जिसे तीसरे दिन थोड़ा जाड़ा मालूम हुआ, प्रसवके बादका स्राव रुक गया, उसका तापमान ऊँचा चढ़ गया और सिरसे पैरतक पसीनेसे भर गयी। ओढ़नेके भीतर हाथ रखेंगे, तो आपको ऐसा मालूम होगा कि शरीरसे गर्म भाफ निकल रही है, जिससे आप अपना हाथ हटा लेना चाहेंगे, यह इतना ही गर्म रहता है। वह चकरायी रहती है और उसका समूचा तलपेट असहिष्णु रहती है। अब आप प्रसवके बादका स्राव (परिस्रव) रुकनेका अर्थ समझ गये होंगे। आपके हाथमें इस समय **सूतिका ज्वर** (Puerperal fever) की रोगिनी है। **ऐकोनाइट ब्रायोनिया, बेलेडोना, ओपियम** प्रभृतिकी खोजमें माथा लड़ानेके बदले सल्फरको **ध्यानसे अध्ययन** कीजिये। बहुतसे अवसरोंपर इनसे आपको सम्पूर्ण असफलता प्राप्त होगी ; पर सलफर ठीक ऐसी ही दशाके रोगियोंके लिये उपयोगी होता है तथा इसने सूतिका ज्वरके बहुतसे रोगी आरोग्य किये हैं। यदि यह केवल दुग्ध-ज्वर या स्तन-ग्रन्थिकी गड़बड़ी है और जाड़ा केवल नया है, तो आपकी लघु-क्रिय दवाएँ बहुत अच्छा काम कर देंगी, यहाँतक कि **ऐकोनाइट** भी लाभ करेगा ; पर यदि पीब-ज्वर है, तो सल्फर इसको जड़तक हिला देता है। जब पञ्जोंमें जलन होती है, जब पाकाशयमें भूखका भाव रहता है तथा धँसते जाना और क्लान्तिके साथ रात्रि-कालमें रोग-वृद्धि होती है और जब समूचे शरीरमें भाफ उठने या गर्म झोंकेकी तरह अनुभव होता है, एकके बाद दूसरा, तो आपको सल्फर ही देना चाहिये। अब इसके विपरीत, अगर ऐसी रोगिनीको जिसे गर्म पसीना आता हो तथा अन्य सार्वाङ्गिक लक्षण हों तथा तेजीसे एकके बाद दूसरा शीतका दौरा होता हो और इसका किसी तरह विराम ही न होता हो, तो आप उसे **लाइकोपोडियम**के बिना आरोग्य नहीं कर सकते, जो सल्फरकी तरह ही रोगको जड़तक अपनी क्रिया करता है। जब थोड़ा सिहरावन और थोड़ा कम्पन लगातार मिश्रित भावसे समूचे शरीरमें मालूम होता हो तथा तापसे नाड़ीका सुनःसिव सम्बन्ध छूट गया हो, तो

पाइरोजेनका अवश्य प्रयोग करना चाहिये। यदि शरीरपर बैंगनीपन दिखाई देता हो, समूचे शरीरमें ठण्डा पसीना होता हो, यदि सविराम अथवा स्वल्प-विराम रूपसे जाड़ा मालूम होता हो, जाड़ेके समय प्यास हो तथा दूसरे समय प्यास न रहती हो तथा शीतावस्थामें चेहरा लाल रहता हो, तो आपको अवश्य **फेरम** देना चाहिये; क्योंकि कोई दूसरी दवा इसके जैसी नहीं दिखाई देती। जब शरीरका एक पार्श्व गर्म हो, दूसरा पार्श्व ठण्डा हो तथा वह स्त्री आँसू-भरी अवस्थामें दिखाई देती हो, भयसे काँपती हो, स्नायविक उत्तेजना और बेचैनी हो, तो **पल्सेटिला** दीजिये, इसमें भी पीव-जनित रोगकी दशा है तथा यह पचनशील दशाको विजय करनेकी काफी शक्ति रखती है।

नश्तर वगैरह लगवानेके बाद जो ज्वर आता है, उसमें भी सल्फर उपयोगी है, यदि तापके झोंके आते हों और भाफकी तरह पसीना होता हो।

इन बद्धमूल पचन दशाओंमें, कभी आरम्भसे अन्ततक सल्फरकी जरूरत पड़ सकती है। इन सेप्टिक दशाओंके आरम्भमें आपको **ब्रायोनिया**के कुछ लक्षण दिखाई दे सकते हैं; पर **ब्रायोनिया** इस रोगीपर अधिकार नहीं कर सकता। याद रखिये, कि सेप्टिक रोगमें आपको चौबीस घण्टोंके भीतर ही रोगको पकड़ना है; आप इसे चालू नहीं रहने देना चाहते हैं और यदि **ब्रायोनिया**ने आरम्भमें केवल इसको गड़बड़ा दिया है, तो सल्फरके प्रयोगका समय निकल जायगा। तुरन्त सल्फरका प्रयोग कीजिये। अब एक बात और भी यदि आपने सल्फर देकर भूल भी की है और आप देखते हैं, कि इसने रोगको नहीं पकड़ा है, तो यह हमेशा रोगको सरल कर देता है, यह कुछ-न-कुछ अच्छा ही करता है और उसे कभी नष्ट नहीं करता। यह चिकित्सा आरम्भ करनेका एक उत्तम आधार प्रदान करता है। यह जड़तक पहुँच जाता है और बातको सरल बना देता है और यदि आपको मानसिक और स्नायविक लक्षण अबतक बचे हुए दिखाई देते हैं, तो आपने प्रचण्ड सड़नेवाली दशा तो दूर ही कर दी है, जिसका तुरन्त प्रतिकार होना चाहता था और बहुतसे अवसरोंपर बाकी बचे लक्षण तो बहुत ही सरल होते हैं। ऐसे रोगोंके लिये जहाँ दूसरी दवाके लिये खूब स्पष्ट लक्षण नहीं मिलते हैं सल्फर चिकित्सा आरम्भ करनेकी एक सर्वाङ्गिक दवा होती है।

इस दवामें **श्वासकष्ट** भरा हुआ है, जरा भी परिश्रम करनेपर श्वासकी लघुता, बहुत ज्यादा पसीना, बहुत अधिक क्लान्ति; दमाकी तरह श्वास और वक्षमें बहुत अधिक घरघराहट। जितनी ही बार उसे "सर्दी" लगती है, यह वक्ष या नाकमें बैठ जाती है। इन दोनों ही अवसरोंपर श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह (सर्दी) की दशा रहती है और बहुत दिनोंतक बनी रहती है, ऐसा मालूम होता है कि इसका शेष ही नहीं होगा, सर्दीकी दशा जैसी हमेशा बनी रहती है। "जितनी ही बार सर्दी लगती है, उसका अन्त दमामें होता है;"—**डल्कामारा** माँगता है; पर बहुत बार इस आक्रमणका क्षीण प्रभाव रह जायगा और चिकित्सकको गभीर-क्रिय दवा देनी पड़ेगी। **डल्कामारा** जो कुछ कर सकता है, उसके कर लेनेके बाद सल्फर ही उसकी क्रियाके अनुपूरकके रूपमें आता है। **कैल्केरिया-कार्ब**का भी **डल्कामारा**से ऐसा ही सदृश सम्बन्ध है।

नाक, भीतर वक्ष और फेफड़े बहुत-सी तकलीफोंके स्थान प्रदर्शन करते हैं। रोगीको न्युमोनिया हो गया है और अब वह रस-स्राव-कालमें आ पहुँचा है। आपके हाथमें रोगी अढ़ी हुई अवस्थामें आया है, जब कि **ब्रायोनिया**, डरावना स्वरूप दूर कर दिया है और अब, जब कि रोगीको सुधारना चाहिये, तो वह सुधरता नहीं है; उसके समूचे शरीरमें पसीना होता है, क्लान्त हो रहा है, अद्भुत और विचित्र बातें ध्यानमें अर्थात् "कुछ गड़बड़ी हो रही है; भीतर कुछ भार-सा है," श्वासमें कष्ट, तापके झोंके आते हैं और इतनेपर भी बोखार ज्यादा नहीं रहता; कभी-कभी पर्यायक्रमसे ताप और ठण्डके झोंके आते हैं। मैंने अकसर उनको कहते सुना है,—"डाक्टर साहब! यहाँ बहुत भार मालूम होता है मैं उससे छुटकारा नहीं पा सकता।" खूब अच्छी तरह परीक्षा करनेपर आपको मालूम होता है, कि वहाँ यकृद् भाव-प्राप्ति है और अब **फास्फोरस, लाइकोपोडियम** और सल्फर जैसी दवाओंके प्रयोगका समय आता है; सल्फर इन सबमें प्रधान है। जब आरम्भिक लक्षणोंके लिये **ब्रायोनिया** काफी होता है या जब **ऐकोनाइटने** उन्हें साफ कर दिया है, तो भी इन दवाओंके लिये आराम पहुँचानेका बहुत कुछ अवसर रहता है, इसके बाद यकृद्-भाव-प्राप्तिका अवसर आता है। यदि यह एक क्षुद्र स्थानको ही घेरे है, यह एकदम पुरानी बीमारीका पथ ग्रहण करेगा; पर सल्फर इस अवस्थाको दूर कर देगा। अगर यह डबल न्युमोनिया (दोनों ओरके फेफड़ोंका प्रदाह) है या यकृद्-भाव-प्राप्तिने फेफड़ेकी बहुत-सी जगह घेर ली है और दी हुई दवाने काफी क्रिया नहीं की है और रोग मारात्मक हुआ जाता है, तो यह हो सकता है, कि एकाएक एक, दो या तीन बजे सवेरे उसका ठण्डा पड़ना आरम्भ हो जाता है, उसकी नाक सिकुड़ जाती है, उसके ओंठ खिंच जाते हैं, उसका चेहरा मुर्देकी तरह हो जाता है, वह ठण्डे पसीनेसे भर जाता है, उसके शरीरके सभी अंश इतने कमजोर पड़ जाते हैं, जिन्हें वह हिला-डुला नहीं सकता, वह बेचैन-भावसे केवल अपना माथा कुछ हिलाता है। यदि आपको तुरन्त बुलाहट न आयी और आपने उसे एक खुराक **आर्सेनिक** न दिया, तो वह मर जायगा। आपने **आर्सेनिक** दिया है और आपने अच्छा ही किया है; परन्तु **आर्सेनिकमें** प्रदाहका परिणाम दूर करनेकी शक्ति नहीं है; पर यद्यपि यह यकृद्-भाव-प्राप्ति फेफड़ेको **आरोग्य** नहीं कर सकता, यह जीवनी-शक्तिके बलवर्द्धकके रूपमें क्रिया करता है, यह रोगीको गरम कर देता है और उसके मनमें ऐसा भाव भर देता है, कि वह आरोग्य हो रहा है; पर इसपर ध्यान दीजिये, कि यदि आप **आर्सेनिकमके** बाद कोई मुनासिब दवा न देंगे, तो चौबीस घण्टोंमें ही वह मर जायगा। ऐसे रोगियोंके लिये अपनी दवाकी क्रियाकी बहुत देरतक अपेक्षा न करनी चाहिये। ज्योंही वह कुछ सम्हले और ऊँचे दर्जेकी प्रतिक्रिया आये, उसे प्रतिविष और **आर्सेनिकमका** स्वाभाविक अनुगामी सल्फर दीजिये और चौबीस घण्टोंमें ही वह रोगी कहेगा—"मैं अच्छा हो रहा हूँ।" ठीक आप आज जिस तरह जीवित हैं, वह भी ठीक वैसा ही काम करेगा। ऐसा भी समय आता है, जब आप स्पष्ट रूपसे देखेंगे, कि **फास्फोरस** ही सल्फरकी ठीक अनुपूरक दवा है। यदि **आर्सेनिकमकी** क्रियासे सुधरते हुए रोगीको ज्वर आ जाये; यदि तेज प्यासके साथ तेज बोखार हो और उसे इतनी प्यास हो, कि बरफकी तरह ठण्डा पानी

चाहता हो, तो आपको **आर्सेनिकम**के बाद. **फास्फोरस** ही देना चाहिये और यह उस रोगीके लिये वही काम करेगा, जो अन्य रोगियोंमें सल्फर करेगा। आप अपने चिकित्सा-कालमें इन रोगियोंको न देखेंगे ; क्योंकि आप अपने रोगियोंको इस अवस्थामें जाने ही न देंगे ; यदि ऐसे रोगियोंमें जीवित रहनेकी उस अवस्थामें मुनासिव दवा देनेपर काफी शक्ति रहेगी, तो आरम्भ ही में रोगीकी समस्त प्रकृतिको छिन्न-भिन्न कर देनेकी भी काफी शक्ति रहेगी ; पर उस रोगीके प्रति लौट जाइये, जिसे केवल एक चकत्ताकार फेफड़ेकी यकृद्-भाव-प्राप्ति है तथा उठने और इधर-उधर घूमनेपर उसे अच्छी तरह अनुभव होता है। उसे लँझड़ानेवाली खाँसी है और अब आक्रमणके छः महीने या सालभर वाद वह कहता है,—"डाक्टर ! मुझे जबसे वक्षकी बीमारी हुई, तबसे कभी अच्छा न रहा, डाक्टर उसे न्युमोनिया कहते थे।" वह आपकी जङ्गकी तरह वलगमके विषयमें कह सकता है तथा न्युमोनियामें जो अन्य छोटी-छोटी वातें हैं, बता सकता है ; बस इतना ही जाननेकी आपको आवश्यकता है। उस आक्रमणके बादसे ही उसे पुरानी खाँसी आ रही है और तब उसे जाड़ा भी लगा करता है। तन्तुओंसे रस-स्राव होता है, यह यक्ष्माकी दशा नहीं है ; पर यकृद्-भाव-प्राप्ति (Hepatization) का वह बचा हुआ अंश है, जिसे प्रकृति आरोग्य नहीं कर सकी है। यदि यही जारी रहने दिया जाता है, तो उसे श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह-जनित यक्ष्मा (Catarrhal phthisis) पुरानी ब्राङ्काइटिसकी दमावाली दशा तथा अन्य विभिन्न प्रकारकी तकलीफें पैदा हो जायँगी और अन्तमें वह इन्हीं रोगोंसे मरेगा। सल्फर बहुतकर अकसर उसके समस्त लक्षणोंके सदृश होगा ; इसमें खासकर रोगके समय फेफड़ेका जो अंश साफ नहीं हुआ है, उसे साफ कर देनेकी शक्ति है।

सल्फर ब्राङ्काइटिस आरोग्य करता है, यह दमाकी तरह ब्रांकाइटिस लक्षण मिलनेपर आरोग्य करता है। सल्फरमें ऐसी प्रचण्ड खाँसी है, जो समूचे शरीरको हिला देती है ; ऐसा मलूम होता है, कि सर उड़ जायगा ; खाँसनेके समय सरमें दर्द, खाँसीसे सरमें झटके लगते हैं, इसके बाद उसके बलगममें खून आने लगता है, फेफड़ेसे खून आता है ; ये सभी यक्ष्मा होनेकी सम्भावनावाले रोगी हैं ; यद्यपि यक्ष्मा गुटिकाका बहुत अधिक सञ्चय नहीं है, केवल यक्ष्मा-गुटिकाओंका जमा होना आरम्भ हुआ है। निम्न-भग्न-स्वास्थ्यवाले व्यक्ति, वंश-गत-पथसे यक्ष्मा अर्जन करनेवाले क्षीण हुए रोगी, जिनके पेटमें एकदम खालीपनका भाव, माथेके शिखर देशमें ताप और विछावनकी गर्मीसे वेचैनी रहती है। इन रोगियोंके शरीरपर यदि बहुत-से उद्भेद निकल आयें, तो वे अच्छे रहेंगे ; पर बात यह होती है, कि चर्मपर कोई उद्भेद नहीं होते ; उन्हें आराम नहीं मिलती। यह सब आभ्यान्तरिक रूपसे होता रहता है और वह क्रमशः भग्न होता जाता है ; ऐसे अवसरोंपर सल्फर रोगीको यक्ष्माकी दशासे ऊपर उठा देगा और वह स्वास्थ्यकी दशामें लौट आयगा या यदि उसकी अवस्था बहुत खराब हो गयी है, तो वह कई वर्षोंतक तकलीफोंसे अलग रखा जा सकता है। यक्ष्माकी बढ़ी हुई दशामें इसपर ध्यान दीजिये। ऐसी अवस्थामें इसके प्रयोगके सम्बन्धमें काफी कहा जा चुका है। यह पीब पैदा होना बढ़ा देता है, छोटी-छोटी न्युमोनिया उस स्थानपर पैदा करता है, जहाँ

यक्ष्मा-गुटिका है ; यह उन्हें पैदाकर बाहर निकाल देना चाहता है। इसकी क्रियाको न सहन करनेवाले सभी कोष सल्फरसे साफकर गिरा दिये जायेंगे।

पीठके सम्बन्धमें सल्फरकी आश्चर्यजनक चीज है, अपनी जगहसे उठनेपर पीठमें दर्द, जिससे रोगीको झुककर चलना पड़ता है और कुछ चलने फिरनेपर वह धीरे-धीरे सीधा हो सकता है। दर्द खासकर त्रिक-प्रदेशमें (Lumbago sacral region) में हुआ करता है।

शाखा-अङ्ग उद्भेदोंसे परिपूर्ण रहते हैं। हाथके पिछले भागपर और अङ्गुलियोंके बीचमें उद्भेद, कभी-कभी तो तलहत्थीमें भी होते हैं ; खुजलीके साथ चुभनेकी तरह और पपड़ी जमे उद्भेद ; फुंसियाँ, फोड़े और छोटे-छोटे फोड़े ; असम विसर्पके यहाँ-वहाँ धब्बे हाथ-पैरोंपर होते हैं और चर्मका रङ्ग मलिन रहता है। बिछावनकी गर्मीसे चर्मका खुजलाना। सन्धियोंकी वृद्धि। वातज-रोग, सन्धियोंमें बहुत ज्यादा कड़ापन, घुटनेके खोखले स्थानमें कसावट ; कण्डराओंमें वात और गठियाकी प्रकृतिकी कसावट। पैरके तलवे और टांगोंमें मरोड़का दर्द ; बिछावनमें, पैरके तलवेमें जलन, उन्हें ठण्डा रखनेके लिये बिछावनसे बाहर निकाल रखता है। तलवोंमें ऐंठन, जलन और खुजली होती है। समय-समयपर आपको तलवा ठण्डा मालूम होगा और इसके बाद फिर जलन होगी और ये दवाएँ पर्यायक्रमसे हुआ करती हैं। प्रत्यङ्गोंके ठण्डापनके साथ शरीरका कष्ट, पर बिछावनमें जानेपर उनमें इतनी जलन होती है, कि उन्हें बाहर निकाल रखना पड़ता है। गट्टे, जिनका वह शिकार बना रहता है और प्रायः हमेशा ही उनकी तकलीफ उठाया करता है, बिछावनकी गर्मीसे उनमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है।

सल्फरके रोगीके **चर्म**में सहजमें ही जखम और पीब हो जाता है ; अगर चर्ममें कांटा गड़ जायगा, तो जखम हो जायगा ; घाव बहुत धीरे-धीरे भरते और आरोग्य होते हैं। **हीपर**की तरह ही जरा भी आल्पीन गड़नेपर पक जाता है।

सल्फरके उद्भेद इतने ज्यादा होते हैं ; कि उनका वर्णन नहीं हो सकता। ये सब तरहके होते हैं ; पर इन सबके ही कुछ चरित्रगत लक्षण हैं, जैसे कि जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द और खुजली तथा बिछावनकी गर्मीसे रोग-वृद्धि। चर्म रूखा और अस्वस्थ रहता है। चेहरेपर बहुत-से "काले सिरेवाले" मुँहसे, फुन्सियाँ और पीब-भरे दाने होते हैं। सल्फर शरीरके सभी भागोंमें फोड़े और अर्बुदोंसे भरा है, पपड़ीवाले उद्भेद, फुन्सियोंवाले उद्भेद प्रभृति। सल्फरमें ये सभी मौजूद रहते हैं और उनमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है।

सल्फरिक एसिड

(Sulphuric Acid)

समूचे शरीर और प्रत्यङ्गोंमें दृश्य कम्पनके बिना ही एक तरहके काँपनेका भाव, सल्फरिक एसिडका एक सुदृढ़ स्वरूप है और खासकर इसके साथ कमजोरी सम्मिलित रहती है, जो बहुत दिनोंकी रहती है। क्लान्ति, उत्तेजना और जल्दबाजीका भाव इसके बराबर बने रहनेवाले विषय हैं। बहुत-से उपसर्गोंके साथ रक्त-स्रावी प्रकृति। शरीरके सभी द्वारोंसे काला तरल रक्त निकलता है। छोटे लाल धब्बे तेजीसे बढ़कर पर्पुरा हेमोरेजिका (श्लैष्मिक-पटलसे रक्त-स्राव) के सदृश हो जाते हैं। जरा भी चोट लगनेपर चर्मपर नीले, काले दाग पड़ते हैं, चर्मपर खूनकी तरह लाल दाग कभी-कभी आघातके बाद, छोटी एक तरहकी लाल मछलीकी तरह पड़ते हैं। इनसे सहजमें भी भूँसी उतरती है और उसके बाद जखम हो जाता है। फोड़े तथा शय्या-क्षत। वृद्ध मनुष्योंको होनेवाले बहुत-से उपसर्ग। सवेरेके वक्त रोगका बढ़ना भी इसका एक सुदृढ़ स्वरूप है। सर्दी और क्षीणता सहन नहीं होती। दर्द कुचल जानेकी तरह, जलनकी तरह, फाड़ने, सुई गड़ने, खोंचा मारने और झटका खानेकी तरह होता है। दर्द धीरे-धीरे पैदा होता है और एकाएक गायब हो जाता है। स्राव सब काले, पतला रक्त या रक्तकी रेखाएँ पड़े होते हैं या पतले, पीले और खून-मिले होते हैं ; स्राव खाल उधेड़ देनेवाले होते हैं। भोजनके बाद सारे शरीरमें पसीना होता है। लक्षण प्रधानतया दाहिने पार्श्वमें होते हैं। यह अकसर **हीपर**की तरह खट्टी गन्ध आनेवाले चर्चोंको निर्देशित रहती है, यह जैसा स्पर्श-असहिष्णु रहता है, करीब-करीब वैसा ही शीत-असहिष्णु भी रहता है। जब यह शीत-असहिष्णुता आरोग्य कर देता है, तो अकसर रोगी और भी बदतर हो जाता है और उसके लिये **पल्सेटिला**की जरूरत होती है, जो इसका अनुपूरक तथा प्रतिविष दोनों ही है।

मन और शरीरकी अवसन्नता, इसके साथ ही बहुत उदासी, लगातार रोता रहता है किसी तरह भी प्रसन्न नहीं होता, जरा भी कारण मिलनेपर जिद्दी और चिड़चिड़ा हो जाता है ; वह तेजीसे भोजन या काम नहीं कर सकता। कोई भी ऐसा काम नहीं करता, जिससे वह प्रसन्न हो ; इतनी जल्दीमें यदि कुछ कर रहा है या कहीं जा रहा है। सभी काम तुरन्त होना चाहिये, सवालका जवाब नहीं देता। अस्थिर-चित्त।

बन्द कमरेमें सरमें चक्कर आना। खुली हवामें टहलनेपर अच्छा रहता है। लेटे रहनेपर अच्छा रहता है, इसीलिये कभी-कभी बाध्य होकर उसे बिस्तरपर पड़े रहना पड़ता है।

नाककी सर्दीके कारण ललाटमें खिंचाव।

मस्तिष्क ढीला मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, कि जिस करवट लेटा है, उसी तरफ लटक पड़ा है, चुपचाप बैठे रहनेपर अच्छा रहता है, चलनेपर बदतर हो जाता है। रक्त तेजीसे माथेपर चढ़ता है और पैर ठण्डे हो जाते हैं। ललाटमें और

कनपटीमें दोपहरके पहले और फिर शामके वक्त बिजलीके झटके। ऐसा मालूम होता है, मानो जोर-जोरसे खूँटी खोपड़ीमें ठोकी जा रही है। माथेका दर्द धीरे-धीरे पैदा होता और एकाएक रुक जाता है। कमजोर मनुष्योंका प्रचण्ड सर-दर्द। उपदंश रोगमें प्राप्त होनेकी तरह अस्थि-आवरकमें असीम यन्त्रणा। केश या तो झड़ जाते हैं या भूरे हो जाते हैं ; मस्तक त्वचामें जखम होना ; अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णु उद्भेद। पढ़नेके समय आँखसे आँसू बहना ; आँखोंका पुराना प्रदाह, जिसके साथ ही बढ़ी हुई शिराएँ और जखम रहता है। दाहिने वाह्य चक्षु-कोणोंमें बाहरी पदार्थ रहनेकी अनुभव होना। नाककी सर्दीके साथ आँखोंमें यन्त्रणा।

कानमें तेज दर्द, जो धीरे-धीरे बढ़ता है ; पर एकाएक रुक जाता है। धीरे-धीरे श्रवण-शक्ति घटती जाती है ; कानसे खूनका स्राव ; कानमें भनभनाहट।

शामको धीरे-धीरे नाकसे, काला पतला रक्त चूता है। यह कमजोर मनुष्योंकी नाकसे होनेवाला, कटु खूनका स्राव आरोग्य करता है, जब सार्वाङ्गिक लक्षण इसके सदृश होते हैं। नाककी सर्दी सूखी या तरल होती है, साथ ही स्वाद और गन्ध नष्ट हो जाती है।

सल्फरिक एसिडके रोगीका चेहरा अधिककर रोगियल रहता है, पीला, रोगियल और कभी-कभी कामला-ग्रस्त चेहरा। बहुत दिनोंकी बीमारीका भाव स्पष्ट दिखाई देता है। दर्द, रक्तकी कमी और क्षीणताकी गहरी रेखाएँ स्पष्ट रहती हैं। चेहरेमें तनाव या ऐसा अनुभव होना, मानो अण्डेकी सफेदी चेहरेपर सुखी हुई है। चेररेका प्रचण्ड स्नायु-शूलका दर्द, जो धीरे-धीरे पैदा होता और एकाएक रुक जाता है, दर्दवाली करवट लेटनेपर और गर्मीसे घटता है। चेहरेपर छोटे छोटे दाग या धब्बे रहते हैं, जो आकारमें क्रमशः बढ़ते जाते हैं। निम्न-हन्वस्थि-ग्रन्थिका प्रदाह।

जल्द ही दाँतोंका क्षय हो जाता है ; दाँतोंका प्रचण्ड स्नायु-शूल, जो धीरे-धीरे बढ़ता है और एकाएक रुक जाता है। यह ठण्डेसे बदतर रहता है तथा तापसे अच्छा रहता है। शामको बिछावनमें बदतर हो जाता है। दाँत उठे रहते हैं, नाककी सर्दी होनेपर, स्वाद नष्ट हो जाता है। घाव-पूर्ण मुँह इसका एक महत्व-पूर्ण लक्षण है। **दूध पिलानेवालियोंके मुँहके घाव**की यह अत्यधिक निर्देशित दवा है। **शिशु या माताका छाले-भरा मुँह**, साथ ही सफेद या पीलापन लिये जखम। मुँहसे खून-मिली लार ; मुँहमें चकत्ते या छाले। बहुत बदबूदार श्वास ; मुँहके तथा मसूढ़ोंके श्लैष्मिक-पटलोंसे प्रचण्ड श्लैष्मिक-झिल्लीका रक्त-स्राव (Purpura hæmorrhagica)। मुँहके घाव तेजीसे फैलते जाते हैं।

कण्ठका प्रदाह, जो मुँहके घाव या कौषिक-तन्तु-प्रदाहके कारण होते हैं। श्लैष्मिक-झिल्लीकी खाल उघड़ी। डिफ्थीरियाका निःस्राव **पीला** या सफेद, इसके साथ ही नाक, मसूढ़े या अन्य अंशोंसे रक्त-स्राव और मुख-क्षत घेरे रहते हैं। साधारण प्रकृतिकी क्लान्तिसे अधिक क्लान्तिके साथ डिफ्थीरिया। शुण्डिका फूली रहती है। फैलनेवाले

जखमोंसे कण्ठ भरा रहता है। दर्द-भरे यन्त्रणा-पूर्ण गल-क्षत, साथ ही निगलनेमें दर्द और तकलीफ। कण्ठकी तकलीफोंमें पिये हुए तरल नाकसे निकल पड़ते हैं। लार बहना, कण्ठकी ग्रन्थियाँ फूली तथा तालुमूल भी बहुत फूला रहता है तथा कोमल तालु और साधारणतः कण्ठ भी फूला रहता है। कण्ठ और मुँहसे काला तरल रक्त बहता है।

ब्राण्डी और फल खानेकी रोगीकी इच्छा रहती है, भूख न लगना और बढ़ती हुई कमजोरी इसके जबर्दस्त स्वरूप हैं। काफीकी गन्धसे घृणा, वह ठण्डा पानी नहीं पी सकता ; क्योंकि उसके पाकाशयमें इतना ठण्डा मालूम होता है, कि उसे जाड़ा लगने लगता है। प्रचण्ड, आक्षेपिक हिचकी, जैसी कि शराबियोंको आती है। **कलेजेकी जलनकी पुरानी बीमारी, खट्टी डकारें। खट्टे वमन।** खट्टी डकारोंके कारण दाँत हमेशा उठे रहते हैं ; गर्भावस्थाके समय खट्टा वमन। सवेरेके वक्तका शराबियोंका वमन। (**आर्सेनिकम**से तुलना कीजिये)। खट्टा और बहुत बदबूदार ; मिचली और सिहरावन। खाँसी और खट्टे तरलोंकी डकार। पाकाशय **शिथिल हुए रहनेकी तरह झूलता हुआ मालूम होता है।** ठण्डा पानीके बाद वमन। पाकाशयमें प्रचण्ड आक्षेपिक दर्द। दर्द धीरे-धीरे आता है और एकाएक रुक जाता है। **रोबिनिया**की तरह खट्टा वमन।

उसे खाद्यका वमन नहीं होता है, पर खा नहीं सकती ; क्योंकि इससे उसके पाकाशयमें दर्द हो जाता है और उसे श्लेष्माका वमन होता है।

सविराम ज्वर कुछ समयतक होनेके बाद प्लीहा बढ़ जाती है और खाँसनेपर दर्द होता है तथा छूनेपर यन्त्रणा होती है। प्लीहा और यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। इसने कितनी ही बार सीसाका जहर और सीसाके कारण उत्पन्न शूलका दर्द आरोग्य किया है। पाखाना हो जानेके बाद पाकाशयमें धँसते जानेका और कमजोरीका भाव। तलपेटमें कमजोरीका भाव, मानो ऋतु स्राव होगा। तलपेटमें प्रसवकी तरह दर्द, जो कूल्हा और पीठतक फैल जाता है।

बहुत ज्यादा सार्वाङ्गिक दुर्बलता और कम्पनकी अनुभूतिके साथ अतिसार, इसके साथ ही कमजोरी और **पाखाना होनेके बाद तलपेटमें धँसते जानेका भाव।** बहुत तकलीफके साथ पुराना अतिसार। खाल उधेड़ देनेवाला पाखाना ; पाखाना होनेके समय मलान्त्रमें जलन ; जरा भी खानेमें गड़बड़ी या फल खानेके बाद, खासकर कच्चे फल और सीपी खानेके बाद अतिसार पैदा हो जाता है। मल पानीकी तरह, नारङ्गी रङ्गका पीला, डोरीकी तरह श्लेष्मा, खून-मिला, हरापन लिये, काला, अनपचका, जिससे सड़े अण्डेकी तरह गन्ध आती है। शराबियोंके बवासीरके मसेमें बहुत यन्त्रणा, खुजली, पाखानेके समय दर्द होता है। कब्ज रहनेपर छोटी-छोटी गोलियोंकी तरह दस्त होता है।

यदि पेशाबका वेग रोका जाता है, तो मूत्राशयमें दर्द हो जाता है। इसने बहुमूत्र आरोग्य किया है। थोड़ा पेशाब। खून-मिला पेशाब ; पेशाबमें त्वचाके टुकड़े।

ऋतु-स्राव बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत ज्यादा होता है और स्राव काला तथा पहली धारमें होता है। बहुत-से उपसर्ग ऋतु-स्रावके पहले आते हैं। ऋतु-स्रावके पहले

रातमें डरावने सपने। ऋतु-स्रावके अन्तमें रातमें डरावने स्वप्न दिखाई देते हैं। योनि स्थानच्युत रहती है और सड़ने लगती है। श्वेत-प्रदरका स्राव खून-मिला, कटु, दूधकी तरह या अण्डलाल-मिला, पीला। रजोरोधके कालके समय स्त्रियोंमें सल्फरिक एसिडके बहुत-से लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। तापके झोंके, कमजोरी कम्पनकी अनुभूति, कार्यों और भावोंमें स्नायविक जल्दबाजी; जरायुसे रक्त-स्राव तथा अन्य अंशोंसे रक्त स्राव, जो रक्त जमता नहीं है और कब्जियत, जिसमें छोटी-छोटी भेंड़की कड़ी मींगीकी तरह पाखाना होनेका लक्षण रहता है, यह सङ्कटमयी अवस्थामें साधारणतः होता है। इससे प्रायः गर्भावस्थाके समय वमन उत्पन्न हो जाता है। **खाँसी आकर** वमन होता है।

इसने बाँझपन आरोग्य किया है, जो बहुत ज्यादा और बारम्बार रजःस्राव होनेके कारण होनेवाला माना जाता है। योनिमें प्रचण्ड खुजली।

स्वर यन्त्रमें दर्द और यन्त्रणा। निगलनेपर स्वर-यन्त्रमें दर्द, शुष्कताका भाव और स्वर-यन्त्रमें रूखापनके भावके साथ स्वर-भङ्ग।

वक्ष कमजोर और बहुत ज्यादा श्वास-कष्ट। **लाइकोपोडियम**की तरह नासा-प्राचीरोंका तेजीसे हिलना। श्वास-कष्टके समय स्वर-यन्त्रका तेजीसे ऊपर-नीचे होना; लघु-श्वास-क्रिया।

सवेरेके सिवा अन्य समय सूखी और खुसखुसी खाँसी, कभी-कभी दो बार खाँसी आती है। वह खुली हवामें खाँसता है, या तो टहलनेके समय या घुड़सवारी करते समय, ठण्डे पेयोंसे और काफीकी गन्धसे यह खाँसी बदतर हो जाती है। खुजली और वमनके साथ खाँसी। वक्षमें उपदाह मालूम होता है, सवेरे जो बलगम निकलता है, उसमें पतला रक्त या पतला पीलापन लिये खूनकी धारियाँ पड़ा श्लेष्मा निकलता है, जिसका स्वाद खट्टा रहता है।

जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ वक्षमें दुर्बलता। वक्षके बायें पार्श्वमें दबाव। फेफड़ोंसे बहुत ज्यादा काले तरल रक्तका स्राव, न्युमोनियाके बाद तथा वयः-सन्धि-कालके समय होता है। फेफड़ोंका जखम **कैलि-कार्ब**से तुलना कीजिये। जबतक वह फेफड़ेको लटकने नहीं देता, तबतक वक्षमें दबाव और श्वास-रोधका भाव बना रहता है। बहुत ज्यादा पसीना, बहुत अधिक कमजोरीके लक्षणवाले यक्ष्माकी पहली अवस्थाकी यह बहुत ही उपयोगी दवा है; परन्तु यही जब यक्ष्माकी अन्तिम अवस्थामें दी जाती है, तो यह फेफड़ेसे रक्त-स्राव और फेफड़ेकी प्रादाहिक दशा उत्पन्न कर देता है। हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कलेजा धड़कना, वक्षावरक-झिल्ली-प्रदाहमें रक्त-स्रावके समय (Pleuritic exudation) में यह बहुत लाभदायक हुआ है।

मेरुदण्डमें बहुत ज्यादा कमजोरी, बैठनेके समय और खड़े रहनेपर यह ज्यादा अनुभवमें आती है। त्रिक-प्रदेशमें दर्द। स्कन्ध-फलकोंके मध्यमें खाँसनेके समय यन्त्रणा, सवेरे सोकर उठनेपर पीठमें कड़ापन। गर्दनके दक्षिण पार्श्वमें वृहत् फोड़ा।

प्रत्यङ्गोंपर काले और पीले दाग। बाहु उठानेपर स्कन्ध-सन्धिमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, अङ्गुलि-सन्धियोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। उठनेके बाद जांघोंका अकड़ना। घुटने और गुल्फोंमें स्पष्ट दुर्बलता। पैरकी शिराएँ फूली हुईं। बरफ लगे अंशोंमें बिवाईका फटना; निद्रा-कालमें अङ्गुलियोंका ऐंठना।

देरसे सोता है और बहुत सवेरे ही नींद खुल जाती है; ऋतु-स्रावके पहले गला दबानेके स्वप्न।

बहुत सर्दीला रहता है, पसीनेके साथ तापकी झलक। बहुत ज्यादा पसीना, बहुतकर शरीरके ऊपरी भागमें, हिलने-डोलनेपर, खट्टा, ठण्डा, गर्म भोजन कर लेनेपर होता है। सवेरे होनेवाला पसीना। रातके समय पसीना, बहुत सुस्तीके साथ सान्निपातिक ज्वर। केशिकाओंसे रक्त-स्राव होना। काला, पतला रक्त।

आँतोंसे काले, पतले रक्तका रक्त-स्राव होता है। अविराम ज्वरका बिगड़ा हुआ रूप। मुर्देकी तरह चेहरा।

शरीरपर काली लकीरोंकी तरह दाग, श्लैष्मिक-पटलसे रक्त-स्राव। पुराने जखमके दाग लाल और दर्द-भरे हो जाते हैं। उद्भेदोंके साथ खुजली और चुनचुनी, पीव-भरी फुन्सियाँ। चर्मपर लाल खुजलानेवाले धब्बे, नीले रङ्गके धब्बे। कुचले घाव, शय्या-क्षत। बड़े और छोटे फोड़े। गांठ-गांठ जुलपित्ती। इन पुराने जल्द न भरनेवाले जखमको यह आरोग्य करता है, जिनसे सहजमें ही काला रक्त-स्राव होता है। स्पर्श-असहिष्णु, दर्द-भरे फैलनेवाले जखम। जखमोंमें डङ्क मारने, जलनकी तरह दर्द। इसने पैरके सड़नेवाले जखम आरोग्य किये हैं। यह शराबियोंके जखमोंमें तथा निम्न-श्रेणीके ज्वरके बाद होनेवाले जखमोंमें फायदा पहुँचाता है। पतला, पीला या खून-मिला स्राव।

सिफिलिनम
(Syphilinum)

जब उपदंशके किसी भी रोगीके स्वतः प्रदर्शन करनेवाले लक्षण दबा दिये जाते हैं और उस तूफानके परिणाम-स्वरूप जो बहुत दिन हुए या हालमें आया, कमजोरी और कुछ चिह्नके सिवा और कुछ नहीं रह जाता, उस समय यह रोग-विषज औषध (Nosode) प्रतिक्रिया पैदा कर देगा और शृङ्खला ला देगा और कभी-कभी बहुत आरोग्यकर कार्य करेगा और वे लक्षण जो हमेशा मौजूद रहने चाहिये, जो स्वास्थ्य-विधानकी विशृङ्खलतावाली दशा प्रकट करते हैं, पैदा होकर स्वास्थ्य-प्राप्तिका पथ-प्रदर्शन करेंगे। जब उपदंशके रोगीको टाइफायड (सान्निपात) हो जाता है, तो आरोग्य-काल आनेमें बहुत देर लगती है; पर यदि ऊँची शक्तिका एक खुराक सिफिलिनम दे दिया जाता है, तो वह खाने भी लगेगा, अपनेमें ताकत अनुभव करेगा और बहुत तेजीसे स्वास्थ्य प्राप्त कर लेगा; फिर किस तरह ऐलोपैथीवालोंकी उपदंश चिकित्सा गँवारपनसे अलग है। यह कोई भी स्वच्छन्दता-

पूर्वक पूछ सकता है। **मर्क्युरियस,** और आयोडाइडकी तरह कड़े भेषज इस तरह दुर्बल करते हैं, कि जिन्हें इनका प्रयोग किया जाता है, वे रोगी और कमजोर ही बने रहते हैं; इतनेपर भी उनका उपदंश आरोग्य नहीं होता—यदि वे आरोग्य हो गये हों, तो हमलोग उन उपसर्गोंको नहीं ला सकते, जो दूर कर दिये गये हैं। सिफिलिनम अकसर कण्ठके जखमोंको और उद्भेदोंको वापस ला देता है। जब मस्तकका, मस्तक-पार्श्व-भागका और आँखोंपरका प्रचण्ड स्नायु-शूल रहता है, माथे तथा पैरकी अस्थियोंमें बहुत यन्त्रणा रहती है और स्नायु-उपदंशके सभी लक्षण-समूह प्रच्छन्न रहते हैं, उस समय यदि इसका प्रयोग होता है, तो उसके कष्ट दूर हो जाते हैं, नींद आने लगती है, ताकत तथा भूख मालूम होता है; परन्तु कुछ रोगियोंको जखम और उद्भेद भी निकल आयेंगे और इनका निकल आना अच्छा भी है। यह केवल उपदंश ग्रस्तोंके लिये ही सीमित नहीं है। परीक्षामें प्राप्त लक्षणोंके अनुसार या साधारणतया रोगमें प्राप्त लक्षणोंके अनुसार इसका प्रयोग हो सकता है या उन लक्षणोंके अनुसार जिनका रोगके लक्षणसे सामञ्जस्य है या उन लक्षणोंके विरुद्ध जो परीक्षित औषधके लक्षणके समान हैं। बहुत-से उपसर्ग रातमें बिछावनमें बदतर हो जाते हैं, बहुत-से शामको पैदा होते हैं और सवेरेतक बने रहते हैं, बहुत से प्रचण्ड कष्ट और यातनाओंका बँधा समय **सूर्यास्तसे सूर्योदयतक** रहता है। कुछ ताप-प्रयोगसे अच्छे रहते हैं और कुछ ठण्डी हवा और ठण्डे प्रयोगसे अच्छे रहते हैं। सवेरे जागनेपर बहुत सुस्ती मालूम होती है। इसने मृगीके बहुतसे रोगी आरोग्य किये हैं। ऋतु-स्रावके बाद मृगीकी तरह ऐंठन। **अनिद्रा,** कभी-कभी तो केवल आधी राततक नींद नहीं आती और फिर सारी रात जागते रहना पड़ता है। रातके समय ऐसा मालूम होता है, कि धमनियोंमें गर्म रक्तका प्रवाह हो रहा है, *यहाँ-वहाँ भ्रमण करनेवाला दर्द समूचे शरीरमें होता है।* अस्थि-आवरकमें तथा स्नायुओं और सन्धियोंमें दर्द। कभी-कभी धीरे-धीरे बढ़ता है और धीरे-धीरे ही घटता है। यहाँ-वहाँ तेज दर्द। जाड़ेके मौसममें और ग्रीष्मके तापमें रोग-लक्षण बदतर हो जाते हैं। बहुत ज्यादा क्षीणता। फोड़े। प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात। हड्डियोंका क्षय रोग। मेरुदण्डका टेढ़ापन। बतौड़ी। **बौनेकी तरह बच्चे।** हड्डियोंका टेढ़ा पड़ जाना; ग्रन्थियाँ बढ़ी हुईं। शरीरकी बदबूदार गन्ध। बहुतसे स्थान, खासकर अस्थियाँ छूनेपर यन्त्रणा। यह अकसर देखा गया है, कि उपदंश-विष-ग्रस्त रोगियोंमें दवाएँ क्रिया तो करती हैं; पर कुछ ही दिनोंतक और फिर बाध्य होकर दवा बदल देनी पड़ती है। यह हमेशा रोग-विषज औषधिकी खोज करता है। जब केवल बहुत कमजोरी रहती है और कुछ थोड़े अन्य लक्षण रहते हैं, तो यह उत्तम क्रिया करता है। जब पैरोंमें जखम होता है या कण्ठ, मुँह या अन्य भागोंमें ऐसा जखम होता है, जो आरोग्य नहीं होता। नासूरके घाव, बेतरह हड्डी बढ़ना, फटे घाव, गुटिका और मसे, तुरन्त आरोग्य कर दिये गये हैं। जब रोगके आरम्भिक प्रदर्शनके समय तथा आरम्भिक कालमें इसका प्रयोग हुआ है, तो साधारणतः असफलता ही इसका परिणाम हुआ है। यह नये उपदंशकी शायद ही कभी दवा हुई है; बल्कि यह बढ़ी हुई और दबी हुई उपदंशकी बीमारीमें शृङ्खला और उत्तम प्रतिक्रिया लाती मालूम होती है। लेखकने बहुत बार देखा है, कि कण्ठका और मलद्वारका

गुमड़ ; **सल्फर**का प्रयोग करनेके बाद भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तियोंमें क्षय करनेवाला जखम पैदा कर देगा ; पर सिफिलिनम उसको रोकेगा और सुधार कर देगा। बढ़े हुए उपदंशमें, जब बहुत-से तन्तुओंमें परिवर्त्तन आ जाता है, उस समय **सल्फर**से अकसर बहुत लम्बी रोग-वृद्धि होती है। ऐसे परिवर्त्तन अकसर गुमड़में परिणत होते हैं। **सल्फर**की यह चेष्टा रहती है, कि रोगका परिणाम दूर कर दे, जिसको रोगी सहन नहीं कर सकता। यह अकसर छिपे हुए उपदंशका सन्देह पैदा कर देता है, जब कि उच्च क्रमका **सल्फर** प्रयोग करनेपर यह रोग-वृद्धि अत्यन्त तीव्र होती है। निम्न-क्रमका **सल्फर** प्रयोग करनेपर ऐसा परिणाम न होगा। ऐसी दीर्घ रोग-वृद्धि होनेपर सिफिलिनमपर ध्यान न देना चाहिये। जहाँ जरा भी सन्देह नहीं होता, वहाँ गुप्त उपदंश छिपा रह सकता है। ऐसे रोगके औषध हमेशा केवल उच्च-क्रममें प्रयोग करने चाहियें।

भुलक्कड़, दुर्बलमना, बिना कारण ही हँसता और रोता है। वह चेहरा, नाम, तारीख, घटनाएँ, किताब या स्थानोंको याद नहीं रख सकता। वह हिसाब नहीं लगा सकता। आरोग्यसे निराश। उदासी। डरता है कि वह पागल हुआ जाता है। **जड़त्व**। अपने मित्रोंसे उदासीन और किसी भी बातमें आनन्द नहीं मिलता, रातसे भय खाता है और सवेरेसे भी डरता है ; क्योंकि जागनेपर कमजोरी और यन्त्रणा बढ़ जाती है। वह हमेशा यही कहता रहता है, कि वह आपेमें नहीं है और वह स्वतःकी तरह अनुभव नहीं कर सकता। एक मध्य वयसका मनुष्य, जो छिपा हुआ उपदंश बहुत दिनोंसे भोग रहा था, अपना कारबार छोड़ बैठा तथा अफसोस और उदास बना घरपर बैठा रहा। उसकी स्त्री किसी तरह होटल खोलकर खर्च चलाती थी। सिफिलिनमकी कई खुराकें खानेके बाद उसमें नयी उक्ति आ गयी तथा वह फिर शिल्पी और उन्नत हो गया। सरमें बहुत चक्कर आता है। बोलनेकी ताकत नहीं रहती। मस्तिष्कके उपदंशके कुछ रोगियोंको **सल्फर** और **कास्टिकमने** बहुत कष्ट पहुँचाया है और कमजोरी ला दी है। इनका सिफिलिनम उपकार करेगा।

उपदंश-विषवाले रोगियोंको अकसर प्रचण्ड स्नायु-शूलका सर-दर्द हुआ करता है। मस्तक पार्श्व-भागमें, ललाटमें या कनपटीमें प्रचण्ड दर्द, एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक दर्द, एक कानसे दूसरे कानतक दर्द, एक आँखसे पश्चात्-मस्तकतक दर्द ; चक्षु-गह्वरके ऊपरी भागमें दर्द। कभी-कभी दर्द तापसे घट जाता है। फाड़नेकी तरह दर्द ; माथेका भरापन मालूम होना। रातभर पागल बना देनेवाला दर्द, जिससे नींद नहीं आती। सर-दर्द और प्रलाप। सरका स्नायु-शूल ४ बजे सवेरे आरम्भ होता है और धीरे-धीरे आधी राततक बदतर होता है और इसके बाद धीरे-धीरे अच्छा होता-होता दिन निकलनेपर बन्द हो जाता है। करोटीकी अस्थि-आवरक-झिल्लीमें अत्यधिक यन्त्रणा। बहुत-से दर्द सीधी रेखामें होते हैं और **लिनियर हेडेक** (लकीरदार सर-दर्द) कहलाते हैं। पश्चात्-मस्तकमें कुचल जानेकी तरह प्रचण्ड दर्द, ललाट या पश्चात्-मस्तकमें बेहोश कर देनेवाला दर्द। पश्चात् मस्तकमें काटनेकी तरह दर्द। कनपटीके भीतरसे दर्द, वहाँसे लम्ब रूपकी तरल, अङ्गरेजीके इनवर्टेडयुक्त "T" की तरह चलता है। सम्पूर्ण मस्तक-शिखर कुचल जानेकी तरह दर्दके साथ

तेज सर-दर्द रहता है, लाल चेहरेके साथ सम्पूर्ण मस्तकमें प्रचण्ड दर्द, चेहरेकी शिराएँ बढ़ी हुई' बेचैनी और रात्रिमें नींद नहीं आती, रातमें रोग-वृद्धि हो जाती है। समूची मस्तक-त्वचामें गुटिकाएँ निकलती हैं। करोटीमें अस्थि वृद्धि, बहुत यन्त्रणा और दर्द होता है; केश झड़ जाते हैं।

आँखकी पेशियोंका पक्षाघात एक साधारण बात है। डेरा देखना। वक्र-दृष्टि, द्वित्व-दृष्टि—दो दिखाई देना, चाक्षुष स्नायुओंका क्षीण पड़ जाना, चक्षु-चित्रपत्र पीला, खाकी और दाग-दगीला रहता है, धुन्ध-दृष्टि, चक्षु-तारा-प्रदाह। पक्षाघातके कारण पलकका गिर जाना (Ptosis) अर्द्ध-वक्र-दृष्टिका पक्षाघात। कनीनिकाकी पुराना दोहरा-दोहराकर होनेवाला फुन्सी। जखमके साथ चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह, कनीनिकाका जखम; उपदंश-सम्भूत कनीनिका-प्रदाह (Interstitial keratitis) कनीनिकामें धब्बे। छत्रकके आकारके प्रवर्द्धनोंसे ढँकी हुई बायीं आँख, बहुत तेज दर्द, रातके समय रोग-वृद्धि हो जाती है। नये जनमे हुए बच्चेका नया पीब-संयुक्त चक्षु-प्रदाह, जब माता-पितामें किसी एकको उपदंश रहता है। आँखोंसे बहुत ज्यादा पीब-भरा स्राव। पलकें बहुत फूली रहती हैं। सूजनके कारण आँखें खोली नहीं जा सकतीं। रातके समय तीव्र वेदनाके साथ चक्षु-ताराका प्रदाह और रोशनीका सहन न होना। सूर्यास्तसे सूर्योदयतक आँखमें दर्द। दाग पड़ जानेवाले आँसू।

कानमें तेज दर्द; कानसे पीब-मरा पानीकी तरह स्राव; चुचुकास्थिका अस्थि-क्षत श्रवण-स्नायुका पक्षाघात। कर्ण-पटहमें चनेकी तरह पदार्थ इकट्ठा होना।

इस दवाने बच्चोंकी नाकसे होनेवाला बदबूदार हरा या पीला स्राव आरोग्य किया है, जब कोई विशेष इतिहास प्राप्त हुआ है। नाकका सूखापन, रातमें नाक रुकी। नाककी सर्दीका बारम्बार आक्रमण हो जाना। नाकमें हमेशा सर्दी लग जाती है। उपदंश-जनित पूतिनस्य रोग। अस्थिके जखमके कारण नाककी हड्डीका क्षय हो जाना और नाक दबी रहती है। जखमके कारण सारी नाक नष्ट हो जाती है, जखमोंके कारण नाकसे रक्त-स्राव, नाकमें कड़ी खरोंट।

चेहरेका स्नायु-शूल, चेहरेके एक पार्श्वका पक्षाघात, चेहरेपर गुटिकाएँ और ताँबेके रंगके उद्भेद। इसने चेहरेका कर्कटिया जखम दवा दिया है। चेहरेका पपड़ी जमा उद्भेद। इसने गालका रूपिया रोग (कक्षिका) आरोग्य किया है। कड़ी फुन्सियाँ और दाने। ओंठ फटे और जखम-भरे रहते हैं। ठुड्डी, ओंठ और नासा-प्राचीरपर जखम। जखमसे नाकका पार्श्व-भाग और नासा-प्राचीर क्षय हो जाती है। इसने चेहरेके गूमड़ रोगके बहुतसे रोगी आरोग्य किये हैं।

दाँत बदशकल, बिगड़े और दाग-दगीले रहते हैं; समयके पहले ही उनका क्षय हो जाता है। प्यालेकी तरह खोखले बच्चोंके दाँत, दाँतोंमें प्रचण्ड दर्द; कीड़े चलनेकी तरह दाँतकी जड़में रेंगनेका अनुभव होना।

मुख-गह्वर और जीभ जखम-भरी। बदबूदार श्वास। जीभ कोमल, छेद-छेद, जिन्होंने बहुत दिनोंतक मर्क्युरी खाया है, उन्हें सहजमें ही ऐसी हो जाती है। जीभका

एक पार्श्वका पक्षाघात, जीभ लाल, खाल उधड़ी, फटी और घाव-भरी। जीभपर धब्बे, आवरक-हीन धब्बे, लाल धब्बे। मुँहमें बहुत ज्यादा लसदार लार भरी रहती है। कोमल तालुमें जखम ; कठिन तालुमें अस्थि-क्षत। कोमल तालु तो एकदम नष्ट हो जाता है, जखमोंसे खून बहता है।

कण्ठ जखमोंसे भरा रहता है। कण्ठ तथा तालुमूलका प्रदाह। कोमल तालु फूला और गांठ गांठ। नाकके पिछले छेदसे बलगम निकलता है और जखम हो जाता है ; नाकका अगला छिद्र खरोंटोंसे बन्द-सा रहता है।

भूख भी परिवर्त्तित रहती है। कड़े पेयोंकी इच्छा करता है, प्यास। खाद्य या गोश्त खानेकी इच्छा नहीं होती। खानेकी तो इच्छा ही नहीं होती। सभी खाद्य अरुचिकर हो जाते हैं ; पेट फूलना, कलेजेमें जलन, मिचली, वमन। पाकाशयका जखम।

बहुत-से उपसर्ग और दशाओंका आगार सरलान्त्र (Rectum) रहता है। जखम होना, फटे घाव, बवासीर, गांठें, बतौड़ी होती है ; बहुत ज्यादा रक्त स्राव होता है ; काटने और जलनकी तरह दर्द होता है। फूलगोबीकी तरह मसे। कब्ज। सरलान्त्रका पक्षाघात ; मलद्वारका अपनी जगहसे हट जाना। शिथिल और बाहर निकला मलद्वार।

अण्डकोषमें, शुक्र-रज्जुमें तथा मुष्कमें गांठें पड़ना ; इस रोग-विषज औषधने आरोग्य किया है। इसने लिङ्गाग्र चर्म और मुष्कमें भैंसिया दादकी तरह उद्भेद आरोग्य किये हैं। अण्डकोषोंका और शुक्र-रज्जुका कड़ा पड़ जाना।

योनि और भगोष्ठोंमें गांठें पड़ना। जरायु-मुखका जखम, जरायु-ग्रीवाका कड़ा पड़ जाना। बहुत ज्यादा पीलापन लिये हरा श्वेत प्रदर। छोटी बच्चियोंका श्वेत-प्रदर, एक उपदंशके इतिहासका, कटु पानीका, श्वेत-प्रदरका स्राव बिछावनकी गर्मीसे रातके समय बढ़ जाता है। रातमें डिम्बाशयमें दर्द। भगमें खुजली, जरायुमें तेज दर्द, कोषार्बुद-पूर्ण डिम्बकोष। डिम्बकोषका अर्बुद, सङ्गमके समय डिम्बाशयमें, कामोत्तेजन-कालमें काटनेकी तरह दर्द ; जरायु और डिम्बाशयके रोग यदि कोई उपदंश रोगका इतिहास प्राप्त होता है।

स्वर-यन्त्रमें जखम और आवाजका बैठ जाना। ऋतु-स्रावके पहले स्वर-भङ्ग। शामसे लेकर सूर्योदयतक, हर रातमें स्वर-यन्त्रमें लगातार काटनेकी तरह दर्द बना रहता है, जिससे कि रोगीको बाध्य होकर रात-रातभर सहनपर टहलते रहना पड़ता है। यह केवल एक ही खुराक उच्च क्रमके सिफिलिनमसे आरोग्य हो गया।

गर्म तर ऋतुमें रातके समय दमा। श्वास-कष्ट। पच्चीस वर्षोंसे आक्षेपिक श्वासोपनली-जनित दमा ; रातके समय बिछावनपर या बिजली कड़कनेवाले तूफानके समय, जिससे कि कितनी रातोंमें नींद नहीं आती। रातमें १ बजेसे ४ बजेतक श्वास-कष्ट।

रातके समय खाँसी, रातके समय सूखी तङ्ग करनेवाली खाँसी ; वक्षमें खाल उधड़नेका भाव ; गाढ़ा पीब-मिला बलगम ; दाहिनी करवट लेटनेपर सूखी खाँसी।

श्लेष्मा पीव-मिला बलगम, खाकी, हरा, हरापन लिये पीला, स्वाद-रहित। सफेद-सफेद श्लेष्माका बलगम, वक्षमें घरघराहट। वक्षोस्थिके पिछले भागमें दर्द और दबाव। वक्षपर उद्भेद।

वातज अकड़न और पीठमें खञ्जता। समूचे मेरुदण्डमें धीमा-धीमा दर्द। मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें दर्द, यह पेशाब करनेके बाद बढ़ जाता है। त्रिकास्थिमें दर्द, बैठनेके समय बढ़ जाता है। ग्रैवेयी तथा कटि-कशेरुकाओंका अस्थि-क्षत। गर्दनकी ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई। इसने कठिनता-प्राप्त ग्रैवेयी-ग्रन्थि आरोग्यकी है। पीठ, कूल्हा और जांघोंमें रातके समय दर्द। इसने हाजकिन्स डिजिज (रक्त-हीनताके साथ लसिका-ग्रन्थियोंकी अभिवृद्धि) की बीकारी आरोग्य की है।

सन्धियोंका प्रदाह। वात, पेशियोंमें कड़ी-कड़ी गांठ और ढेले पड़ जाते हैं। प्रत्यङ्गोंमें दर्द, जो तापसे घट जाता है और सूर्यास्तसे सूर्योदयतक बढ़ जाता है, सभी सन्धियोंमें अकड़न। ऊर्द्ध अङ्गोंकी सन्धियोंमें सूजन और वातका दर्द, त्रिकोण-पेशीका वात, बाहु उठानेपर दर्द होता है। हिलाने-डुलानेपर बाहुओंमें दर्द। पीठके पिछले भाग (करभ) में दर्द, पैरोंमें सूजन और रातके समय दर्द, निम्न-शाखा-अंगोंमें दर्द, जिससे नींद नहीं आती। गर्म प्रयोगसे बढ़ जाता है और उनपर ठण्डा पानी डालनेसे घटता है। घुटना तथा कूल्होंमें कमजोरी। रातमें बिछावनपर पैरकी हड्डियोंमें तेज दर्द; पैरके पिछले भागमें और अंगूठोंमें, रातमें बिछावनपर रहनेपर दर्द, दर्द अकसर रातके समय गर्म बिछावनमें बढ़ जाता है। दर्दके कारण रातमें उसे पलङ्गसे उतर पड़ना पड़ता है। कूल्हा और जांघमें फाड़नेकी तरह दर्द, यह रातके समय बढ़ जाता है और सवेरा होनेपर घट जाता है, चलनेसे घटता है, इसपर मौसमका प्रभाव नहीं पहुँचता (सिफिलिनमसे बहुत फायदा हुआ है)। पैरोंपर जखम। पैरोंपर बड़ी-बड़ी पपड़ियाँ। निम्न-प्रत्यङ्गोंपर गुटिकाएँ, पैर और तलवेकी कण्डराओंमें तनाव। इन पुराने रोगियोंमें शीत और तापकी अधिकता उपसर्ग पैदा कर देते हैं। प्रत्यङ्गोंका स्नायु शूल, जो धीरे-धीरे बढ़ता है और ज्यों-ज्यों रात बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों यह भी बढ़ता जाता है। जंघास्थिमें अत्यधिक असहिष्णुता।

ज्वर, सर्दी भी रहती है; पर रातके समय होनेवाला पसीना और बहुत कमजोरी इसके आश्चर्यजनक स्वरूप हैं।

बहुत तरहके उद्भेद निकलते हैं; परन्तु उपदंशपर जो बहुतसे ग्रन्थ हैं, उनका अध्ययन करना चाहिये; क्योंकि यह रोगका अध्ययन नहीं है; बल्कि रोग-विषज-औषधिका।

टैरेण्टुला हिस्पानिका
(Tarentula Hispanica)

क्रम-रूपके सिवा इस भयङ्कर विषका कभी प्रयोग न करना चाहिये। इस दवाके स्नायविक प्रदर्शन करीव-करीव अवर्णनीय हैं और इतने ज्यादा है, कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसकी सभी दशाओंमें वेचैनी और घवड़ाहट वनी रहती है। यह बहुत कुछ **आर्सेनिककी** तरह है। कभी-कभी तो यह घवड़ाहट दिमागमें अनुभव आती है, कभी समूचे शरीरमें, कभी प्रत्यङ्गों और पाकाशयमें मालूम होती है। हृत्पिण्डमें घवड़ाहट इसका एक सुदृढ़ स्वरूप है। हरा, लाल और काले रंगोंकी सुदृढ़ अनिच्छा। सभी परीक्षाओंमें निम्नगामी हुआ विचार वना रहता है; सव तरहकी लज्जाशीलताका न रहना। भाग जाने, नाचने, ऊपर और नीचे कूदनेकी वासना। पागलोंकी तरह वृहद नर्त्तन। कभी-कभी सङ्गीत सब उपसर्गोंको घटा देता है और दूसरे समय वढ़ा देता है; कभी-कभी तो सङ्गीतसे वह भयानक उत्तेजित हो पड़ता है।

क्षीणता और दुवलापन इतना ज्यादा रहता है, कि कभी-कभी यह कहा जा सकता है, कि उससे मांस गिर पड़ता है। समूचे शरीरके चर्ममें रेंगना और सुरसुरी मालूम होना। शरीरके किसी भी अंशका पक्षाघात या सभी प्रत्यंगोंका। काँपना और झटका खाता हुआ टङ्कार। इसका वहुत कुछ रूप सेण्ट वाइटस डेन्स (नर्त्तन रोग) की तरह होता है और इसीलिये इसने वह नर्त्तन रोग आरोग्य किया है, जिसमें सङ्गीतसे अच्छा रहनेका लक्षण था; परन्तु सङ्गीतसे वदतर हो जानेपर भी यह आरोग्य करेगा। इसमें **आर्सेनिक**की तरह प्रत्यंगोंको असीम अस्थिरता है और यह **आर्सेनिक**की तरह ही गम्भीर-क्रिय औषधि है और इसने कभी कभी उस समय आरोग्य किया है, जव **आर्सेनिक** असफल हो गया था; यद्यपि वह खूव चुनी हुई दवा मालूम होती थी। घवड़ाहट, वेचैनी, लगातार बाहु, पैर, धड़ और माथा हिलाते रहना। शामको प्रत्यङ्गोंमें वेचैनी, निद्रामें जानेके पहले विछावनपर **आर्सेनिक** और **लाइकोपोडियम**की तरह, यह शरीर और प्रत्यंगोंके दर्दोंसे भरा है, अस्थियोंमें दर्द; वाहुओं और सन्धियोंमें दर्द; सामयिकता इसका इतना स्पष्ट रूप है, कि स्वल्प-विराम ज्वरोंकी स्पष्ट आरोग्यदायक दवा हो गयी है। साथ ही प्रत्यंगोंमें वेचैनी, हड्डियोंमें दर्द, सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ, घवड़ाहटके साथ, खासकर जव ये शामको उत्पन्न होते हैं और ज्वर रातभर वना रहता है। ज्वरके वाद शामको जाड़ा, पसीना न होना, इसका एक स्पष्ट स्वरूप है।

रोगी हमेशा शीत-असहिष्णु रहता है, इसलिये प्रत्यङ्गोंका दर्द, ठण्डी हवामें और ठण्डे होनेपर वदतर हो जाता है। ठण्डी तर मौसम सव उपसर्गोंको बढ़ा देते हैं। खुली हवामें चलना, जव सर्दी उसके सव उपसर्गोंको नहीं घटाती। खुली हवासे उपसर्ग घटते हैं, मालिशसे उपसर्ग घटते हैं। सभी प्रत्यंगोंमें कमजोरी रहती है, आँतें और मूत्राशयमें प्रचण्ड वेदना। बहुत-से अंशोंमें और खासकर सरलान्त्रमें जलन, तलहत्थी और तलवा तथा जरायुमें

जलन, इसका सुदृढ़ लक्षण है। यह हिस्टीरिया-ग्रस्त स्त्रियोंकी बहुत ऊँचे दर्जेकी दवा है। वह नींदमें चला करती है, अत्यधिक चेतनता, रञ्ज या उत्तेजनासे सभी उपसर्ग बदतर हो जाते हैं। जब नर्त्तन रोगके लक्षण मौजूद रहते हैं, तो वह चलनेकी अपेक्षा उत्तमतासे दौड़ लगा सकता है।

याददाश्तमें गड़बड़ी, बहुत चिड़चिड़ापन। जब हिस्टीरियाके लक्षण रहते हैं, तो संगीतसे रोगिनी अच्छी रहती है। उसकी चाल ढाल हास्यकर रहती है, बल्कि वह अपने व्यवहारमें कामुक दिखाई देती है। सङ्गीतसे बहुत उत्तेजना आ जाती है; वह तबतक गाती रहती है, जबतक वह क्लान्त होकर गिर नहीं पड़ती। वह लोमड़ीकी तरह धूर्त्त और नाशकारिणी रहती है। पैरोंमें अस्थिरताके साथ उन्मादका आवेश और धमकानेवाली बातें कहना। जब उससे कोई पूछता है, तो वह जवाब नहीं देती; बार-बार यही सोचा करती है, कि उसका अपमान किया गया है। अत्यन्त उदासीके साथ उन्माद। गाने, नाचने और रोनेके साथ उत्तेजना। वह विकटाकार जीव, जानवर, चेहरे और भूत देखती है, वह अपने कमरेमें अपरिचित पुरुषोंको देखती है। टैरेण्टुलाके रोगी सब तरहकी बीमारियोंका बहाना करते हैं, खासकर मूर्च्छाका। वे केवल अपनेको बीमार ही नहीं समझते, बल्कि जब वे बीमार नहीं भी रहते, तब भी बीमार रहनेका बहाना करते हैं। लाल, हरा और काला और सभी तेज रंगोंसे घृणा रहती है। यह स्वयं अपने केश खींचती और अपने माथेको अपने हाथसे दबाती है। लगातार शिकायत किया करती और धमकाया करती है। अपने सुश्रूषाकारी और धात्रीको धमकाती है; अपने हाथोंसे अपना माथा ठोकती है, अपने जिगरी दोस्त तथा सेवा करनेवालोंको पीटती है, हिंसा इस दवाका सुदृढ़ स्वरूप है। क्रोधसे हिंसा करना। अपने कपड़े फाड़ती है। समझाने-पर रोती है।

मानसिक लक्षण शामको भोजनके बाद अच्छे रहते हैं, बहुतसे शारीरिक लक्षण शामको बदतर हो जाते हैं, खासकर ज्वरावस्थामें।

अन्धेरेमें पड़े रहने और किसीसे बात न करनेकी इच्छा, उसमें बहुतसे बुद्धि-दोषके विचार उठते हैं, इनमेंसे एक यह है, कि वह अपनेको छिपाना चाहती है; क्योंकि वह समझती है, कि कोई उसे मारेगा। बात काटनेपर क्रोधित हो उठती है।

बार-बार सरमें चक्करका आक्रमण, यह इतने जोरोंका होता है, कि वह जमीनपर गिर जाती है। रातमें सरका चक्कर पैदा होता है, जब वह सीढ़ीसे उतरती है। सरपर खूनका वेग होनेके साथ सरमें चक्कर तथा किसी चीजपर दृष्टि जमानेके कारण शिरोघूर्णन।

माथेके लक्षण भी बहुत-से हैं। माथेमें झटका और ऐंठन। लगातार किसी चीजसे सर रगड़ा करती है, जब पलंगपर रहती है, तो तकियेसे सर रगड़ती है। यहाँ-वहाँ, इधर-से-उधर, अपना सर फेंकती है। माथेमें हथौड़ीसे मारनेकी तरह अनुभूति होती है। माथेमें जलनकी तरह ताप। शामको सर-दर्द तथा सवेरे सोकर उठनेपर। आँखें नहीं खोल

सकती, सामनेकी ओर सर झुकानेपर रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं। दर्द दबावकी तरह और अकसर माथेमें इधर-से-उधर भ्रमण किया करता है। पश्चात् मस्तकमें और कनपटीमें एक साथ ही प्रचण्ड दर्द होता है।

आँखें घूरती रहती हैं, आक्षेपिक भावसे थोड़ी खुली रहती हैं। धुँधली दृष्टि, अमूमन दाहिनी आँखकी ओर भी बदतर हो जाती है। दाहिनी आँखमें तेज दर्द। आँखोंमें बालू या कांटा रहनेकी तरह अनुभव होना। आँखोंमें खुजली, जलन, दाहिनी आँखमें बहुत ज्यादा रहती है। आलोकातङ्क बढ़ा हुआ रहता है। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है, कि दाहिनी आँख ही विशेष आक्रान्त होती है। शरीरके बहुत-से लक्षण दाहिनी आँखमें ही घर बनाये रहते हैं।

कानसे बहुत ज्यादा स्राव होता है, कानमें प्रचण्ड दर्द। कर्ण-कुहरमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। श्रवण-शक्तिकी कमी। दाहिनी कानमें धीमा-धीमा दर्द; दाहिने कानमें फाड़नेकी तरह दर्द, भनभनाहट, सीटी बजनेकी तरह आवाज और सरमें चक्कर। सवेरे जागनेपर कानमें घण्टी बजनेकी तरह आवाज; दाहिना कान ही विशेष आक्रान्त रहता है।

इसमें नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके बहुतसे लक्षण हैं सूखापन और जलन, नाककी सर्दी और नाकसे रक्त स्रावके साथ छींकें आना। नाकके नये और पुराने उपसर्ग, दाहिने पार्श्वमें बदतर रहते हैं।

चेहरा रोगियल दिखाई देता है और उसपर भयका दृश्य छाया रहता है।

दाँतोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। निम्न-हन्वस्थिके कोनेमें इस तरहका दर्द, मानो दाँत गिर जायँगे।

कण्ठ और तालुमूल-ग्रन्थि प्रादाहित रहती है, दाहिनी ओर बदतर रहती है। दाहिने तालुमूलका दर्द कानतक फैल जाता है। कण्ठमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द। निगलने-पर दर्द और सङ्कोचन मालूम होना। इसने डिफ्थीरिया आरोग्य किया है। कण्ठ बाहरसे बहुत फूला रहता है और जोरका बोखार रहता है।

खायकी इच्छा नहीं रहती, खासकर मांस खानेकी तो इच्छा ही नहीं रहती; यद्यपि कच्चे खाद्य खाना चाहता है। ठण्डे पानीकी प्यास, मिचली और वमन; खट्टी डकारें आती हैं। पाकाशयमें एकदम खालीपनका भाव रहता है, पाकाशयमें एक घबड़ाहटका भाव। जो कुछ खाद्य खाया-पिया रहता है, वमन कर देता है; पाकाशयमें जलनका दर्द।

तलपेटमें जो जलन होती है, वह आँतोंतक नीचेकी ओर फैल जाती है। सरलान्त्रमें जलन। प्लीहामें तेज दर्द। यकृतमें छूनेपर दर्द होता है और फूला रहता है। तलपेटके दोनों तरफ दर्द। तलपेट तना रहता है, शूलका बहुत दर्द हुआ करता है। तलपेटमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द और उसी एक ही समय मलद्वार तथा योनिमें भी होता है। टैरेण्टुलाका विष जिन स्त्रियोंमें फैल गया था, उनके उदर और जरायुमें तन्तुमय अर्बुद होता देखा गया है। निम्न-उदरमें तेज दर्द।

इसने बहुतसे भयंकर और कष्टदायक कब्जको आरोग्य किया है, जो शलाका या इन्जेक्शन देनेपर भी गति न पैदा कर सका था। जो लक्षण इसका परिचालन करते हैं, वे हैं; लगातार कष्ट, घबड़ाहट, बेचैनी, एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व लुढ़कते रहना तथा तकियेपर सर रगड़ते रहना। पाखाना लगता ही नहीं। मलके साथ बहुत रक्त निकलता है। मलान्त्रमें दर्द होता है, यन्त्रणा और कूथन होती है और तलपेटमें शूलका दर्द होता है। पाखाना बड़ी तकलीफसे होता है। इसमें मिलची और वमनके साथ अतिसार है, केश धोनेपर पतले दस्त आने लगते हैं। जिसमें काला बदबूदार दस्त होता है।

बहुत-से विष-क्रियाके लक्षण प्राप्त होते हैं। पेशाबमें चीनी और इसने बहुमूत्र आरोग्य किया है। रज्ज, घबड़ाहट, कमजोरी और समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्दके साथ बहुमूत्र। खाँसते समय अनैच्छिक रूपसे पेशाब होता है। गुर्देमें बहुत तरहके दर्द, बहुत ही कष्टकर पेशाब और इसने दर्द-गुर्दा (Renal colic) आरोग्य किया है। निदान-तत्वमें बहुतसे लक्षण कोषार्बुदकी तरह प्राप्त होते हैं और इसने मूत्राशयका प्रदाह आरोग्य किया है। इन सार्वाङ्गिक लक्षणोंके साथ मूत्राशयकी आक्षेपिक क्रिया होती है; मूत्रका आक्षेपिक रोध ; पेशाब बहुत ज्यादा होता है, इसके साथ ही क्षीणता और पेशाबमें चीनी रहती है। मूत्र-पथमें दर्द, पेशाब करनेके बाद खोंचन। पेशाबमें बहुत ज्यादा बालू रहता है और पेशाब बदबूदार रहता है।

अदम्य कामेच्छा रहती है और वह मनकी एक ऐसी दशामें रहता है, जिसमें उसे अपनेपर अधिकार रखनेकी वासना नहीं रहती और न अपने कामोत्तेजनपर ; करीब-करीब उन्मादके रूपकी कामुकता। मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी तकलीफोंके साथ कामोत्तेजन। वीर्य-स्राव ; वीर्य स्राव रक्त-स्रावी होता है, जननेन्द्रियमें दर्द। अण्डकोष शिथिल और दर्दसे भरा ; वंक्षणमें दर्द , लिंगेन्द्रिय फूली रहती है ; दोनों ही अण्डकोषोंमें अर्बुद। शुक्र-रज्जु और अण्डकोषमें सूजनके साथ दर्द , शुक्र-रज्जुमें खोंचनकी तरह दर्द।

स्त्रियोंमें भी प्रचण्ड, अदम्य कामोत्तेजना रहती है। मासिक रजः-स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा। जननेन्द्रियमें प्रचण्ड खुजली, यह योनितक फैल जाती है, रातमें बदतर हो जाती है। जरायुमें दर्द और प्रचण्ड मरोड़। इस दवासे कामोन्माद आरोग्य किया गया है। सङ्गमसे कामेच्छा और भी तीव्र हो जाती है और सङ्गमके बाद किसी तरहका आराम नहीं मिलता। जननेन्द्रियकी अत्यधिक स्पर्श-चेतनता। इससे तन्तुमय अर्बुद आरोग्य किये गये हैं। पेशियोंकी अत्यधिक शिथिलता और जरायुकी स्थान-च्युति ; वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर बहुत जबर्दस्त खिचावका भाव। जरायुमें जलन ; जरायुमें सूजन और कड़ापन। जरायुमें जलन, मिचली और वमनके साथ प्रचण्ड मरोड़। जरायुपर दबाव बिलकुल ही सहन नहीं होता। प्रसवकी तरह जरायुमें संकोचक वेदना होती है और ठीक वैसा ही जैसा कि अकसर गर्भ-स्रावमें प्राप्त होता है। जननेन्द्रियमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द।

वायु-पथोंकी बीमारियोंकी यह बहुत ही लाभदायक दवा है। स्वर-यन्त्र और टेंटुआको साफ करनेके लिये बराबर खखारते रहना पड़ता है। स्वर-भङ्ग और आवाजका

बैठ जाना ; बोलनेके समय फुसफुसाहट-भरी बोली ; स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें सूखापन, कण्ठसे लेकर नीचे वक्षतक जलन।

खाँसीके उपसर्गोंकी यह बहुत लाभदायक दवा है। सूखी बार-बार आनेवाली खाँसी, शामको बदतर ; ओकाईके साथ सूखी आक्षेपिक खाँसी बलगमको निकालनेकी चेष्टा करनेपर हर बार मुँह भर आता है ; अनैच्छिक रूपसे पेशाब होनेके साथ खाँसी ; स्वर यन्त्रमें और श्वास-नलियोंमें चुनचुनीके साथ खाँसी ; रातके समय खाँसी। इसके बाद फिर सबेरे सूखी खाँसी। इसमें सबेरे ढीली खाँसीके साथ पीला बलगम निकलता है।

इसमें बहुत अधिक श्वास-कष्ट रहता है, बहुत-कुछ उसी तरह जैसा कि हृत्पिण्डके रोगोंमें हो जाता है। श्वास लेनेमें कष्टके साथ वक्षपर दबाव और श्वास-रोधक सर्दी। बाहु उठानेके समय और बायीं करवट लेटनेके समय वक्षमें दबाव। वातका दर्द। वक्षके भीतर और उसके भीतरसे बहुत तरहका दर्द।

इसमें बहुत-से हृत्पिण्डके उपसर्ग हैं ; द्विकपाटका मरमर शब्दके साथ होनेवाली कलेजेकी धड़कन तथा अनियमित नाड़ीके साथ वक्षमें कम्पनका भाव मालूम होना ; हृत्पिण्डमें असीम घबड़ाहट ; हृत्पिण्डकी शृङ्खला-रहित धड़कन ; भय पानेकी तरह एकाएक हृत्पिण्डमें हो जाता है ; जब कि डर नहीं रहता है, इसने आरोग्य किया है। लगातार हवा प्राप्त करनेकी इच्छा बनी रहती है तथा ताजी हवाकी इच्छा होती है और एक ऐसी अनुभूति होती है, मानो कलेजा उलट गया है ; ऐसा मालूम होता है, मानो कलेजा निचोड़ा और दबाया जा रहा है। इसने हृत्शूल (Angina pectoris) आरोग्य किया है और इसमें हृत्शूलकी तरह ही बहुतसे हृत्पिण्डके लक्षण हैं।

इसमें पीठपर फोड़े, अर्बुद और कार्बंकल निकलते हैं, खासकर गर्दनकी पीठपर तथा स्कन्ध-फलकोंके मध्यमें। कटि-प्रदेशमें प्रचण्ड वेदना। स्कन्धास्थियोंके नीचे प्रचण्ड दर्द, हिलने-डोलनेपर यह बदतर हो जाता है। समूची पीठमें वातका दर्द। स्कन्ध फलकोंमें दर्द। गर्दन अकड़ी रहती है और हिलने-डोलनेपर दर्द होता है। वह मेरुदण्डकी यन्त्रनाकी बहुत बड़ी दवा है अथवा मेरुदण्डके उपदाहकी, दबाव रोगको बढ़ा देता है और स्पर्शसे रोग वृद्धि हो जाती है।

प्रत्यङ्गोंके लक्षण भी इतने ज्यादा रहते हैं, कि वर्णन नहीं किये जा सकते ; कुछ ही बताये जा सकते हैं। हमेशा ही कमजोरी, सुन्नपन और बेचैनी मौजूद रहती है, वातज-वेदना भी बहुत ज्यादा रहती है। प्रत्यंगोंका दर्द, इतना ज्यादा रहता है, कि वह कपड़ेका भार भी सहन नहीं कर सकता। उर्द्धांगोंमें भार और सुन्नपन। बाहुओंमें इतना दर्द, मानो कसकर ऐंठ दिये गए हैं। हृत्पिण्डमें दर्द होता है। और कन्धोंमें बहुत दर्द होता है। जलनकी तरह दर्द भी बहुत ज्यादा है ; वातज फाड़नेकी तरह दर्द ; लगातार हाथ हिलाते रहना तथा स्नायविकताके कारण अङ्गुलियाँ चटकाना पड़ता है। बायें उर्द्ध शाखा-अंग तथा दाहिने निम्न शाखा-अंगमें सुन्नपन। निम्नांगोंका पक्षाघात, जिसके साथ ही हिलने-डोलनेपर पीठमें दर्द होता है। बराबर चिल्लाते रहनेकी इच्छाके साथ निम्न-प्रत्यंगोंको बेचैनी (**आर्सेनिक**)।

शामके वक्त क्लान्ति और दर्द ; निम्न-प्रत्यङ्गोंमें सुन्नपन रहता है, जो बदलकर पेशियोंकी खींचन हो जाता है। सविराम ज्वरमें शीतके समय निम्न-प्रत्यङ्गोंमें धीमे दर्दके साथ अस्थिरता। रातके समय कूल्होंमें कड़ी दर्द ; शामको बैठनेके समय कूल्हा और गुदास्थिमें दर्द ; कूदने-उछलनेकी जबर्दस्त इच्छा। ६ बजे सवेरे चूतड़ और गुदास्थिमें बैठनेके समय दर्द आरम्भ होता है, जो शामतक बना रहता है। चलनेके समय जांघोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो कसकर पट्टी बँधी है ; जांघोंमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द। रोगी बराबर पैर हिलाया करता है ; पैरोंमें भार, पैरोंमें कुचल जानेकी तरह दर्द ; दाहिनी गुल्फ-कण्डरा (Tendo-achilles) में दर्द ; शामको उसे **आर्सेनिक**के रोगीकी तरह सहनपर टहलना पड़ता है। यह बहुत कुछ **आर्सेनिक**की तरह है, एक कुर्सीसे दूसरी कुर्सीपर जाना और एक बिछावनसे दूसरे बिछावनपर जाना ; सहनपर टहलना।

आधी रातके पहले नींद न आना बहुत ही बढ़ा रहता है।

खुजली, काटनेकी तरह दर्द और समूचे शरीरमें रेंगनेका भाव प्रत्यङ्गोंमें बढ़ा हुआ रहता है। खुजली और जलन। इसने **आर्सेनिक** और **सल्फर**से लाभ न होनेपर हाथ-पैरोंकी तथा चर्मके अन्य अंशोंकी सूखी खुजली और अकौता आरोग्य कर दिया है। यह एक अत्यन्त गभीर-क्रिय औषधि है, बहुत दिनोंतक क्रिया करते रहनेवाली दवा है तथा चर्म-रोगका एक अत्यन्त लाभदायक महौषध है।

थेरिडियन
(Theridion)

आवाज, हिलने तथा परिश्रमसे अत्यधिक बढ़ जानेवाली हिस्टीरियाकी तरह असहिष्णुता इस दवाका एक अद्वितीय चिह्न है। आवाज तथा हिलने-डोलनेपर दर्द बढ़ जाता है और स्नायु असहिष्णुताकी एक ऐसी दशामें रहते हैं, कि समूचे शरीरपर तरङ्गोंके रूपमें एक दर्द-भरा कम्पन चला जाता है, इसके बाद मिचली पैदा हो जाती है। और भी अद्भुत है—आवाजोंसे मिचली। लक्षण मिलनेपर मेरुदण्डके उपदाहके कष्टसाध्य रोगियोंको यह आरोग्य कर देता है। नाककी पुरानी सर्दी, हड्डियोंका अस्थि क्षय रोग, जल्दीसे बढ़ जानेवाला यक्ष्मा, दुबलापन, ग्रन्थियोंका बढ़ना, लगातार भूख और प्यास बनी रहना, पुराने लोगोंकी यह कण्ठमालाके उपसर्गोंकी एक बँधी दवा थी। बहुत आलस्य। गर्मीसे रोग दब जाते हैं और आराम करनेके समय। जरा भी परिश्रम करनेपर मूर्च्छा आ जाती है। सर्दीलापन, कम्पन और घबड़ाहट। वह इतनी बेचैन रहती है, कि उसे लगातार कुछ-न-कुछ करते रहना पड़ता है, यद्यपि वह कोई भी काम पूरा नहीं करती ; हड्डियोंमें यन्त्रणा रहती है।

उदासी और मानसिक सुस्ती। हिस्टीरियाकी तरह व्यवहार, उल्लास। काम करने और अपने व्यवसायकी इच्छा न रहना, सर-दर्दके साथ आनन्द और गाना।

आँखें वन्द करनेपर, हिलने डोलनेपर, झुकनेपर, किसी जहाजकी सवारी करनेपर, **प्रत्येक प्रकारकी आवाजोंसे,** मिचली, वमन और ठण्डे पसीनेके साथ सरमें चक्कर आता है। सुस्त नाड़ी और सरमें चक्करके साथ ११ बजे रातमें जाग पड़ता है, धुँधली दृष्टि और आँखोंमें दर्दके साथ सरमें चक्कर आना। गिर्जेमें घुटनेके वल बैठनेके समय आँखें वन्द करनेपर सरमें चक्कर और मिचली। सामुद्रिक रोग (समुद्र यात्राके समय वमन) के साथ सरमें चक्कर।

बड़ा ही तेज सर-दर्द होता है, यह हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है, बातचीतसे बढ़ता है, गर्म पेयोंके पीनेपर बढ़ता है, इसके साथ ही मिचली और वमन भी रहता है। रोशनी और आवाजोंका सहन न होना। ललाटमें दर्द, जो माथेके पिछले भागतक फैल जाता है, यह आवाज हिलने-डोलने और ठण्डी हवासे बढ़ जाता है। चलना-फिरना आरम्भ करते ही सरमें दर्द होने लगता है, ऐसा मालूम होना, मानो मस्तक-शिखर रोगिनीका नहीं है मानो वह उसे उतार फेंक सकती है। आँखोंमें गहराईतक दर्द। लू लग जानेके कारण पैदा हुए उपसर्ग। कनपटीमें दबावकी तरह दर्द। बायीं आँखपर तथा ललाटके आर-पार धमककी तरह दर्द। सर-दर्दके कारण लेट नहीं सकती, मस्तक-त्वचामें खुजली शामको ग्रीवा-सन्धिमें खुजली।

यह दवा आँखके बहुतसे स्नायविक लक्षणोंको आरोग्य कर देती है। आँखें वन्द रहनेपर भी आँखोंके आगे झिलमिलाहट मालूम होना, मानो आँखोंके सामने एक पर्दा पड़ गया है। सब चीजोंका दो दिखाई देना। रोशनी सहन नहीं होती। द्वित्व-दृष्टि। फड़कना। मिचली और हाथ ठण्डे। आँखोंके पीछे दवावकी तरह दर्द। आँखें बन्द करनेपर मिचली और वमन।

श्रवण शक्ति बहुत ही तीव्र रहती है। थोड़ी-सी हल्की आवाज भी मानो समूचा शरीर छेदकर घुस जाती है। खासकर दाँतोंमें ; यह सरका चक्कर बढ़ा देती है और मिचली पैदा कर देती है। पानीकी धार गिरनेकी तरह कानोंमें जोरकी तरह आवाज। कानोंके पास दवाव। कानोंके पीछे पूर्णता।

इसने नाककी जल्द आरोग्य न होनेवाली जिद्दी सर्दी आरोग्य कर दी है, जिसमें बदबूदार, गाढ़ा, पीला या हरापन लिये वलगम निकलता था। नाककी जड़में दवावकी तरह दर्द। नाकमें सूखापन। प्रचण्ड छींकें आवेशके रूपमें आना।

चेहरा पीला और रोगियोंकी तरह रहता है। सवेरे जागनेपर जवड़े अटक जाना (दाँतो लग जाना)। सर्दीके लगनेके साथ मुँहसे फेन निकलना, ठण्डा पानी तथा तीखी आवाजें दाँतोंको सहन नहीं होती। दाँतके दर्दसे रुलाई आने लगती है। दाँतोंमें जलन। मुँहका नमकीन स्वाद। जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो जल गई है। मुँह सुन्न मालूम होता है। स्वाद बिगड़ा रहता है।

शराब तथा खट्टे पेय पीना चाहता है। तेज प्यास रहती है। भोजन मांगता है। पर स्वयं ही नहीं जानता, कि क्या चाहता है।

बहुतसे उपसर्गों और बहुत-से कारणोंसे मिचली। सवेरे सोकर उठनेपर, शोर-गुलसे या आँखें बन्द करनेपर अथवा खूब दूरकी चीज ध्यान लगाकर देखनेपर, हिलने-डोलनेपर, बातचीतसे, किसी तेज जानेवाली सवारीमें सवारी करनेपर, गाड़ीकी सवारी करनेपर या जहाजमें रहनेपर मिचली पैदा हो जाती है। सर-दर्द और सरमें चक्करके साथ मिचली, गर्म-पेयोंसे मिचली बढ़ जाती है। स्नायविक स्त्रियोंके सामुद्रिक वमनमें, जब वे आँखें बन्द करती है, जिसमें उन्हें जहाजकी गतिका पता न लगे, तो वे मृत्यु हो जानेकी तरह बीमार हो जाती हैं, पाकाशयकी स्पर्श-असहिष्णुता।

बहुत-सी यकृतकी बीमारियोंकी यह एक लाभदायक दवा है, जिसमें जलनका दर्द रहता है, स्पर्शसे बढ़ जाता है तथा हिलने-डोलने और शोर-गुलसे बढ़ता है और पित्तज वमन।

सङ्गमके बाद किसी मनुष्यके वंक्षण-देशमें दर्द तथा हिलने-डोलनेपर और प्रत्यङ्गोंको खींचनेपर दर्द होने लगना। कठिन या कोमल पाखाना होनेके साथ कब्जकी बीमारी। मलद्वारका सङ्कोचन। मूत्राशय सुखशायी-ग्रन्थि बढ़ी हुई, जिसके साथ ही मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानमें एक ढेला रहनेकी तरह अनुभूति होती है।

रातमें कितनी ही बार पेशाब करनेके लिये अवश्य उठना पड़ता है। रातके समय बहुत ज्यादा पेशाब होता है।

लिंगका उत्थान कमजोर होता है और कामेच्छा भी घटी रहती है। तीसरे पहर निद्राके समय वीर्य-स्राव हो जाना।

डिम्बाशय-प्रदेशमें यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेकी तरह दर्द, यह हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। ऋतु-स्राव रुका रहता है।

सीढ़ी चढ़नेपर ठण्डी साँस लेना और लघु-श्वास हो जाना।

बायें कन्धेसे नीचे कण्ठतक वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। तेजीसे बढ़नेवाला यक्ष्मा। हृत्पिण्डमें घबड़ाहट।

मेरुदण्ड बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु' यह हिलने-डोलनेपर, आवाजसे, झटकेसे, सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ जाता है। स्कन्धास्थियोंके बीचमें दर्द। मेरुदण्डकी रक्त-हीनता। पीठ तथा ग्रीवा-पृष्ठकी खुजली।

सर्दीकी भावके साथ जांघोंमें खिंचाव, यह गर्मीसे घट जाता है। पैरकी पिण्डलियोंमें प्रचण्ड खुजली। पैरका फूलना। प्रत्यंगोंमें भार रहना। हड्डियोंमें इस तरहका दर्द मानो टूट गयी हैं।

हिला देनेवाला जाड़ा। सहजमें ही पसीना होने लगता है। मूर्च्छा, सरमें चक्कर और रातके समय वमनके साथ बरफकी तरह ठण्डा पसीना।

चर्मकी प्रचण्ड खुजली।

थूजा आक्सिडेण्टेलिस
(Thuja Occidentalis)

थूजाके रोगियोंका सार्वांगिक दृश्य, यदि उसका चरित्रगत चित्र मौजूद है, तो वह मोमकी तरह, चमकीला चेहरावाला रहता है, ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर चर्बी लपेट दी गयी है, यह अक्सर पारदर्शक रहता है, वह रोगी दिखाई देनेवाला व्यक्ति रहता है, ऐसा दिखाई देता है, मानो किसी धातु-विकारमें प्रवेश कर रहा है। ऐसा अकसर प्रमेह विष-दूषित धातु (Sycotic constitution) और कर्कटीया धातु-विकार (Cancerous cachexia), कमजोर, धातु-विकार-ग्रस्त मनुष्य, पीले और अकसर बहुत ही कमजोर हो गये हुए मनुष्योंमें दिखाई देता है।

चर्मके बहुतसे उपसर्ग प्रकट होते हैं। इसका पसीना भी विचित्र ही ढङ्गका होता है, इसकी गन्ध मिठास लिये होती है और शहदकी तरह उसमेंसे गन्ध आती है, कभी-कभी प्याजकी तरह तेज और वेधक गन्ध रहती है। जननेन्द्रियसे भी वेधक गन्ध निकलती है, जननेन्द्रियसे निकलनेवाले पसीनेकी मीठी शहदकी तरह गन्ध रहती है, रोगी अपनी जननेन्द्रिय सूँघता है। इसमें जली हुई सींगकी भी गन्ध आती है, जले हुए पैरोंकी या जले हुए स्पञ्जकी गन्ध रहती है। ये विचित्र ढङ्गकी गन्ध तभी निकलती हैं, जब जननेन्द्रियपर अञ्जीरकी तरह मसे रहते हैं, जिन्हें थूजा आरोग्य करता है।

शरीरका सभी स्थान अस्वस्थ मालूम होता है और नींद लगते ही **आर्सेनिक**की तरह बहुत ज्यादा पसीना होने लगता है, यदि आपको केवल वह मोमीपन ही मिले, जैसा कि **आर्सेनिक** और थूजा उत्पन्न करते हैं, तो आपको **आर्सेनिक**का प्रयोग करना चाहिए। **आर्सेनिक** अकसर जिस बीमारीकी नयी अवस्थामें प्रयोग किया जाता है, थूजा उसकी पुरानी अवस्थामें। आपको यह याद रखना होगा, कि अमूमन **आर्सेनिक** पुरानी बीमारीकी दवा होती है।

प्रमेह-विष (Sycosis) में एक विचित्र प्रकारकी दमावाली अवस्था प्राप्त होती है और लक्षणोंके अनुसार **आर्सेनिक** निर्देशित मालूम होता है ; परन्तु इससे केवल आराम पहुँच जाता है, यह प्रकृतिपर अधिकार नहीं जमता, यह नयी बीमारियोंमें **ऐकोनाइट**की तरह क्रिया करता है और क्षणभरके लिये रोगका ह्रास कर देता है। दमाके तथा अन्य बहुतसे प्रमेह-विषयके उपसर्ग **आर्सेनिक** मांगते हुए मालूम होते हैं ; पर यह उपशामक होनेके सिवा और कुछ न करेगा ; धातु प्रकृतितक **आर्सेनिक** नहीं पहुँचता, इसके मूल लक्षण सदृश नहीं होते। उपदंश और सोरामें बहुत दिनोंतक **आर्सेनिक** क्रिया किया करता है तथा रोगको लक्षण मिटनेपर उभारा करता है ; परन्तु यह प्रमेह-विषके सदृश नहीं होता। **आर्सेनिक** रोगकी तबतक नहीं पहुँचता ; पर थूजा और **नेट्रम-सल्फ** इस कामको सम्हाल लेंगे और आरोग्य कर देंगे। **नेट्रम सल्फ** और थूजा उन प्रारम्भिक लक्षणोंको वापस ला देंगे, जो बरसोंसे दबा दिये गये हैं।

थूजाके रोगियोंमें एक यह प्रवणता रहती है, कि वे मसेकी तरह उद्भेद बाहर निकालते हैं, जो कोमल और थुलथुले होते हैं और बहुत ही स्पर्श असहिष्णु रहते हैं, उनमें जलन और खुजली होती है और उनसे सहज ही कपड़ेतकको रगड़ खानेपर रक्त स्राव होने लगता है। हाथोंपर जो नुकीले उद्भेद निकलते हैं, वे खल जाते हैं, उनपर एक वृन्त-सा बनता है और तलदेशमें वे फट जाते हैं। जरायु-ग्रीवापर, मलद्वारके पास (नाइट्रिक एसिडकी तरह), वृहत् भगोष्ठके पास तथा श्लैष्मिक-झिल्लीपर साधारणतः फूलगोबीकी तरह मसे निकलते हैं। नुकीले मसे ज्यादातर चर्मपर निकलते हैं, भूरे रंगका मसा निकलता है, खासकर यह यदि तलपेटपर होता है ; बड़े बड़े भूरे चकत्ते, यकृतके दागकी तरह, तलपेटपर निकलते हैं।

वक्षके चारों पार्श्वमें कमरबन्दकी तरह दाद, हर जगह यहाँ वहाँ भैंसिया दादकी तरह उद्भेद ; **सीपिया**की तरह, भगोष्ठ तथा लिंगाग्र-चर्मपर भैंसिया दादकी तरह उद्भेद। कमरबन्दकी तरह दाद, एक तरहका भैंसिया दादकी तरह उद्भेद होता है, बड़े-बड़े चकत्तेके आकारके धब्बे शरीरपर निकल आते हैं, जो "शिंगलस—वर्त्तुलाकार विसर्पिका या कटि-दर्द" कहलाते हैं, इस अवस्थामें हमें थूजा, **रस टक्स**, **ग्रैफाइटिस**, **कैलि-हाइड्रेट** और **मेजेरियम**से तुलना करनी चाहिये।

इस दशाके साथ बहुत ज्यादा कष्ट और स्नायु-शूलका दर्द रहता है। प्रमेह-विष-दूषित रोगी रहनेपर, इसमें सन्देह नहीं कि थूजा एक बहुत बड़ी दवा होती है। आपको एक तरहके रोगी मिलेंगे, जहाँ कि रस-कपूरका (Calomel) प्रयोगकर रोगको छिपा दिया गया है, जिससे कि वे फट जाते और गिर जाते हैं, ऐलोपैथी चिकित्सा ऐसी ही है। कभी-कभी कोई रोगी आपके पास भ्रमणशील उपसर्गोंके साथ आयगा और आपको उसके लक्षणोंको घण्टोंतक अध्ययन करना पड़ेगा, आप देखेंगे, कि उनमें बहुत कम श्रृङ्खला है, आपको अनुभव हो जायगा, कि परिचालक लक्षण छोड़ दिये गये हैं और किसी चीजका अभाव है। किसीने **नाइट्रिक एसिड**का प्रयोग किया है, किसीने **कैलोमेल** या किसी दूसरी चीजका और इन मसोंको हटा दिया है। ये मसे बिना कोई धातुगत-विकार रहे, निकल नहीं सकते ; इन मसोंका भी कारण है और यदि मसे निकल आते हैं, तो रोगीको बीमार बनानेकी इन कारणोंको शक्ति घटी रहती है, मसे निकले रहनेपर उसको अच्छा मालूम होता है। यह एक आश्चर्यकी बात है, कि जब ये मसे दवा दिये गये, तो हमें थूजा, **नाइट्रिक एसिड**, **मर्क्युरियस** और **स्टैफिसेग्रिया**के लक्षण प्राप्त होते हैं।

थूजा इन दबे हुए मसोंके कारण उपसर्गोंकी सबसे प्रधान दवा है।

जब जैव-जहरका इतिहास प्राप्त हो, जैसे कि साँप काटना, छोटी माता या टीका लेना, तो थूजा ही उसकी सबसे पहली प्रधान दवा होती है।

शायद मूत्रनलीसे बहुत तरहका स्राव होता है ; पर इनमेंसे एक ऐसा है, जो प्रमेहज है और जब यह प्रमेहज-स्राव दबा दिया जाता है, तो यह एक प्रकारका ऐसा दोष उत्पन्न करता है, जिसमें पैरके तलवेमें और ठुटनेमें एक प्रकारकी यन्त्रणा होती है और

खासकर यह यन्त्रणा पीठ, कमर और गृध्रसी स्नायुओंकी राहसे घुटने और गुल्फ-सन्धियोंमें होती है, कभी-कभी यह ऊपरी शाखा-अंगोंपर प्रभाव करती है ; पर खासकर निम्न-शाखा-अंगोंमें। चुपचाप शान्त रहनेपर **रस टक्स**की तरह घोर रोग वृद्धि होती है, बहुत ज्यादा दर्द होता है और यह तबतक बढ़ता जाता है, जबतक वह चुपचाप बैठा रहता है, उसे अकसर बिछावन छोड़ देना पड़ता है और इसके बाद वह लगातार हिला-डोला और करवट बदला करता है। इसके लिये कोई सोरा-विष-नाशक अवश्य चुनना चाहिये। जब कि रोगी प्रमेह-विष-दूषित नहीं रहता और ये लक्षण-समूह **रस-टक्स** द्वारा आरोग्य कर दिये जाते हैं ; पर जब ये ही लक्षण दवा दिये गये तो सूजाकके लक्षण उत्पन्न होते हैं, तब **मेडोरिनम** या थूजा आरोग्य कर देगा।

थूजा विशेष क्षेत्रमें प्रवेश कर जाता है और इसके खास रोगीको उस समय वशीभूत कर लेता है, जहाँ जड़में प्रमेह-विष रहता है।

कभी-कभी जब कि स्राव रोध कर दिया जाता है, तो अण्डकोषका प्रदाह पैदा हो जाता है, उस समय **पल्सेटिला** ही इसकी दवा होगी और थूजा शायद ही कभी याद करेगा।

थूजाका प्रभाव बायें अण्डकोषपर होता है जब कि खूब तेज निचोड़नेकी तरह दर्द होता है, पर खासकर आप **पल्सेटिला**को ही इसके लिये सर्वश्रेष्ठ औषध पायेंगे।

जब थूजाका हम अध्ययन करते हैं तो देखते हैं, कि ग्रन्थियोंपर इसकी बहुत गहरी क्रिया होती है, ग्रन्थियोंमें सुई गड़ने या फाड़नेकी तरह दर्द और यह दर्द इस तरहका होता है, मानो ग्रन्थियाँ फाड़कर टुकड़े टुकड़े की जा रही हैं। यह सार्वांगिक ग्रन्थियोंके विषयमें सत्य हो सकता है ; पर खासकर एक ग्रन्थिके विषयमें, डिम्बाशयपर किसी दूसरी ग्रन्थिसे ज्यादा आक्रमण होता है और खासकर बायें डिम्बाशयपर। यह इतना सत्य है, कि यदि बायें डिम्बाशयमें आपको तेज दर्द होता दिखाई दे और यदि मासिक रजःस्राव कालमें यह उत्पन्न होता हो और तबतक बना रहता हो, जबतक स्राव जारी रहे तथा जांघोंतक फैल जाता हो ; पर सभी दिशाओंमें होता हो, तो आप इसका प्रयोग कीजिये। ज्योंही स्राव जारी होता है, यह दर्द बढ़ जाता है। डङ्क मारने, फाड़ने, जलन, फट-पड़नेकी तरह दर्द मानो वे अंश फाड़े जा रहे हैं, रोगिनीको बाध्य होकर जोरसे चिल्लाना पड़ता है, वह हिस्टीरियाकी दशामें चली जाती है। यह थूजाका जबर्दस्त लक्षण-समूह है। यह **जिङ्कम** और **लैकेसिस**के विपरीत है ; क्योंकि इनमें स्राव आरम्भ होनेपर आराम पहुँचता है।

बहुत-सी स्त्रियोंको सभी समय डिम्बकोषमें धीमा-धीमा पीसनेकी तरहकी दर्द होता है, उन्हें अपने इस यन्त्रका ज्ञान होता रहता है, जो उन्हें अनुभव न होना चाहिये ; सर्दी लग जानेके कारण या ऋतु-परिवर्त्तनके कारण दर्द ; बायें डिम्बाशयमें दर्द होना पहला चिह्न है ; कभी-कभी तो दर्द इतना प्रचण्ड होता है, कि सहानुभूति रूपसे दाहिनेमें भी दर्द होने लगता है। जब कुछ समयसे डिम्बकोष आक्रान्त रहता है, मानसिक लक्षण

भी उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत ज्यादा चिड़चिड़ापन, ईर्षा, झगड़ालूपन, वेहूदापन प्रभृति आ जाते हैं। यह चिड़चिड़ापन खासकर घरके मनुष्योंके प्रति दिखाई देता है; पतिके प्रति या माताके प्रति; अपरिचितोंके सामने तो वह अपनेको वशमें रख सकती है और चिकित्सकको इसका पता नहीं लग सकता है; क्योंकि उसकी प्रकृतिमें धोखा देनेका एक भाव रहता है; वह अकेली रखना चाहती है और उसमें यह एक बँधा विचार हो जाता है, कि वह गर्भवती है या उसके उदरमें कोई जानवर है, वह बच्चेके बाहुका हिलना अनुभव करती है, सोचती है, कि उसका कोई पीछा कर रहा है या उसके अगल-बगल कोई टहल रहा है; सोचती है, कि शरीर और आत्मा अलग अलग हैं।

ये सब बँधे विचार हैं और तर्क द्वारा उसके मनसे निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करना वृथा है। उसे ऐसा अनुभव होता है, कि वह बहुत ही दुर्बल हो गई है, वह काँचकी बनी हुई है और वह टूट जायगी; खयाल यह होता है, कि वह टूट जायगी, न कि वह पारदर्शक है। इस दशाके साथ, हमें बहुत जोरोंका तेज और फाड़नेकी तरह दर्द प्राप्त होता है, आँखोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द तापसे घटता है। चक्षु-गोलकका दर्द तापसे अच्छा रहता है और बाकी ठण्डी हवामें अच्छे रहते हैं।

छोटी-छोटी जगहोंपर दर्द स्थान बना लेता है। **इग्नेशिया** और **ऐनाकार्डियम**की तरह सरमें या मस्तक-पार्श्वमें या ललाटमें एक कांटी घुसायी जा रही है, ऐसा दर्द। ये दर्द बढ़कर फाड़नेकी तरह दर्दमें चले जाते हैं तथा चक्षु-गोलकको आक्रान्त करते हैं, उसमें इतनी ज्यादा यन्त्रणा होती है, कि उसे मुश्किलसे स्पर्श किया जा सकता है; तापसे तथा लेटनेपर बदतर हो जाता है; गर्म कमरेमें बदतर रहता है और खुली हवामें अच्छा रहता है।

सरके वातज लक्षण तर हवामें बदतर रहते हैं, खट्टी चीजोंसे बदतर हो जाते हैं और बलवर्द्धक तथा उत्तेजक पदार्थोंसे भी।

इस तरह स्थायी भावसे मूल भेषज जीवनी शक्तिपर कभी प्रभाव नहीं जमा सकते; पर एक मनुष्य, जो एकदम असहिष्णु और ठीक-ठीक असहिष्णु है, संक्रामक रोगकी तरह असहिष्णु है, इस अवस्थामें यदि सवेरे-शाम इस दवाका प्रयोग करें, तो आप उसमें जीवनव्यापी धातु-दोष भर देंगे।

यदि आपने कोई दवा दी है, तो लक्षण उत्पन्न होनेकी राहसे देखिये और प्रकृतिके अनुकूल भावसे अग्रसर होइये। साइकोसिस (प्रमेह-विष) में यही प्रवणता बहुत कुछ है और यह प्रवणता बाहरकी ओर रहती है।

भेषजोंकी परीक्षामें हम जो प्राप्त करते हैं, वही हम रोगमें भी देखते हैं। जब सूजाकका विष संक्रमण करता है, तो वह पूर्वाभास कालके भीतरसे जाता है और इसके बाद रोग उत्पन्न होता है, जो अगर योंही छोड़ दिया जाता है, तो स्वास्थ्य-विधानसे निकल जानेकी इसमें आप ही प्रवणता रहती है और फिर स्थायी उपसर्गोंसे रोगी कष्ट नहीं पाता।

ऐलोपैथिक चिकित्सामें, वे हमेशा स्रावको रोक या दवा देते हैं और नयी चिकित्सा-प्रणाली अर्थात् होमियोपैथी कुछ अच्छा काम करती है।

वार-वार दुहरानेके कारण, जो किसीको हुआ करता है, वह स्वतः सूजाकको नहीं बढ़ा देगा ; क्योंकि रोग-प्रवणता सन्तुष्ट हो रही है।

किसी दवाकी परीक्षा करनेके लिये ज्यादा मात्रामें दवा खाना, उतना नुकसान नहीं करता, जब कि परीक्षाका परिचालन जो कर रहा है, वह अनुमव करता है, जब लक्षण पैदा होना आरम्भ होता है और फिर भेषज बन्द कर देता है। अब यदि मात्राको तब भी दुहराते जायें, जब लक्षण उत्पन्न हो गये हैं, तो हम स्वास्थ्य-विधानमें उस समय भी भेषजको ठूँसते जा रहे हैं, जब कि वह स्वतः विष पूरित हो गया है और इस तरह हमें लक्षणोंमें गड़बड़ी प्राप्त होती है। उस व्यक्तिको जीवनभर भेषज-रोग भोगना पड़ता है।

थूजाकी बहुत-सी परीक्षाओंमें इसी ढङ्गकी गड़बड़ी हमें प्राप्त होती है, जिससे कि समय-समयपर आश्चर्यजनक लक्षणोंकी फसल पैदा होती दिखाई देती हैं। वास्तवमें थूजाकी परीक्षाका अधिकांश भाग नष्ट हो गया है ; क्योंकि बहुत बड़ी संख्यामें लक्षणोंकी बहुत ज्यादा गड़बड़ी है, जब कि आरम्भिक परीक्षामें बहुत-से चरित्रगत लक्षण पैदा हुए हैं। **चायना**की परीक्षाने थूजाकी प्रतिमूर्त्तिको बहुत-कुछ गड़बड़ा दिया। इस तरह केवल रोगी शय्या पार्श्वकी अभिज्ञताओंसे ही हमलोग थूजाका उत्तम स्वरूप प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये स्कूली लड़केसे कुछ अधिक होनेकी ही जरूरत है।

नयी परीक्षा एक दूसरे ही प्रकारसे होनी चाहिये।

थूजाके कुछ आश्चर्यजनक औदरिक लक्षण हैं। झोंकेसे पानीकी तरह सवेरेके पतले दस्त, मानो किसी पीपेके खोलसे पानी गिर रहा है।

इसमें सार्वाङ्गिक श्लैष्मिक-झिल्ली-स्रावकी भी दशा है, जो समस्त शरीरमें रहती है। नाक, कान और वक्षकी सर्दी। वक्षकी सर्दीमें यह तीव्र खुसखुसी खाँसी पैदा करती है, सवेरे हरापन लिये श्लेष्मा निकलता है ; कभी-कभी बहुत ज्यादा बलगम रहता है।

यह अकसर न्युमोनियाके पुराने रोगियोंके लिये उपयोगी होता है, ऐसे व्यक्तियोंका, जिसका सूजाक दवाया गया है, सूजाकका मसा रोक दिया गया है।

गुर्दा और पेशावके उपसर्ग भी आश्चर्यजनक हैं, गुर्देका प्रदाह और रक्त-सञ्चय, गुर्दोंमें तेज दर्द ; पेशावमें जलन ; मूत्राशय और मूत्रनलीका प्रदाह, जो प्रमेह-जनित नहीं होता ; मूत्राशयसे पीबका स्राव ; मूत्राशयका पक्षाघात ; पेशाब निकालनेके लिये बहुत देरतक बैठे रहना पड़ता है ; पेशाबका रुक जाना, लगातार पेशाब लगा रहना, मूत्रनलीमें फाड़नेकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो पेशाब बराबर मूत्रनलीमें **कैलि-बाइक्रोम** और **पेट्रोसेलिनम**की तरह आ रहा है।

प्रमेह-विषकी प्रकृतिके मूत्रनलीके रोगमें थूजा सब दवाओंसे प्रधान है; परन्तु जिन्हें प्रमेह-विषवाली प्रकृतिकी बीमारी नहीं है, उनके लिये **कैनाबिस सैटाइवा** काफी है; परन्तु वे रोगी, जिनकी परीक्षामें यह प्रमाणित हो चुका है, कि वे प्रमेह विषज हैं **कैनाबिस सैटाइवा**से आरोग्य न होंगे, पेशाब होनेके समय और बाद, जो जलन होती है, उसको यह घटा देता है और गाढ़ा पीलापन लिये हरा स्राव रोक देता है; पर कुछ दूसरी दवा भी इसके बाद देनी पड़ती है, जब मालूम होता है, कि यह प्रमेह-विषके कारण है। थूजामें ऐसा नहीं है; क्योंकि यह रोगको आरोग्य ही कर देता है।

बहुत ही तेज बीमारियोंमें, जिनमें पेशावके साथ रक्त आता है, लिङ्गमें बहुत ज्यादा कड़ापन रहता है, बहुत कष्ट रहता है, मूत्रपथ और मूत्राशयसे रक्तकी तरह, पानीकी तरह, स्राव होता है, दिन-रात आराम नहीं मिलता, तो **कैन्थरिस**का समय आ जाता है, कुछ ही दिनोंमें यह रोगको आरोग्य कर दे सकता है। ऐसा रोगी खूब उत्तम स्वास्थ्य-पूर्ण दशामें रहना चाहिये, जो अमूमन नहीं होता। ये धूम्रपान करनेवाले और शराबी होते हैं। इनके लिये तम्बाकू एक बहुत ही कष्टदायक चीज है; यदि वे तम्बाकू पीते हैं और तम्बाकूका व्यवहार करते हैं; शराब पीते हैं या स्फूर्ति करनेवाले मनुष्य हैं, तो वे आरोग्य न होंगे। इनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ जाता है, इनका यकृत बढ़ा रहता है और ऐसे रोगी धीरे-धीरे आरोग्य होनेवाले होते हैं।

ऊँची रहन-सहनके कारण इस तरह भग्न-स्वास्थ्यवाले व्यक्तियोंके लिये, आपको निश्चित आरोग्यदायक क्रिया तबतक न प्राप्त होगी, जबतक अपने रहन सहन ढङ्ग वे न बदल देंगे। उन्हें हलके खाद्य खानेको दीजिये, धूम्रपान घटा दीजिये, शराब पीना एकदम बन्द करा दीजिये और उन्हें एकदम सीधे-सादे जीवनपर रखिये। यह पहली बात है। यदि वह पारिवारिक मनुष्य है, तो हमें बहुत-से मानसिक कष्टोंसे सामना करना पड़ता है और अगर स्त्री रहती है, तो बहुत गड़बड़ी रहती है। इस तरह यह कहा जा सकता है, कि प्रमेह-विष-दोषकी चिकित्सा आरम्भमें कठिन होती हैं और नये चिकित्सकको तो बहुत तंग करती है।

गलतके बदलेमें आप ठीक चीज कभी नहीं रख सकते, यह उसे जीवन-भरके लिये खञ्ज व्यक्ति बना देगा।

जैसी कि हमेशा चेष्टा की जाती है, रोगको दवा देना; ठीक-ठीक और सच्चे होमियोपैथ द्वारा कभी न किया जायगा।

यदि वह इसे एकाएक रोक देना चाहता है, तो उसे दूसरी जगह जाने दीजिये; पर उसे सावधान कर दीजिये, कि क्या होनेवाला है और उसे अव्यक्त रोग और कष्ट हो जायगा।

टियुबक्युलिनम बोविनम
(Tuberculinum Bovinum)

अब टियुबरक्युलिनमका अध्ययन आरम्भ करता हूँ। बाजारोंमें जो साधारणतः तैयार दवा मिलती है, उससे मेरा तैयार किया हुआ कुछ भिन्न है। यह दवा मुझे वेटरिनरी सर्जरीके एक प्रोफेसरकी मार्फत प्राप्त हुई है। पेन्सिलवेनियाँमें एक ऐसा समय आ गया, जब टियुबरक्युलोसिसके कारण खूबसूरत गो-जातिका एक दल मारा जानेवाला था। पेन्सिलवेनियाँ युनिवर्सिटीके वेटरिनरी सर्जनकी मार्फत मुझे इन हत्या हुई गायोंकी कुछ टियुबरक्युलर ग्रन्थियाँ मिल गयीं। मैंने उनमेंसे अच्छी जातिकी चुन लीं। ६ठीं शक्तितक बोरिक एण्ड टैफेलने इन्हें शक्तिकृत कर दिया और इसके बाद स्किनरकी मेशीनमें ३० वीं, २०० वीं, १००० वीं तथा और भी उच्च शक्तियाँ तैयार की गयीं। मैं पन्द्रह वर्षोंसे इस दवाका व्यवहार कर रहा हूँ। मेरे बहुत-से मित्र भी इसका ही व्यवहार कर रहे हैं, उन्होंने मुझसे ही ले लिया है।

इस तैयार की हुई दवाका प्रभाव देखकर, हेरिङ्गस गाइडिङ्ग सिम्पटम्सके बीचमें अपने पन्ने लगाकर मैं नोट तैयार कर रहा हूँ और वे ही अब मुझे टियुबरक्युलिनमके प्रयोगमें परिचालित करते हैं। नोसोड (रोग-विषज औषध) समझकर या इन नोसोडोंके प्रयोगके साथ जो विचार सम्मिलित रहते हैं, उन विचारोंके अनुसार मैं टियुबरक्युलिनमका व्यवहार नहीं करता ; वह रोगके लिये एक रोगोत्पन्न पदार्थ है और रोगका परिणाम है। नोसोडोंके व्यवहारमें जो यह विचार फैला हुआ है, उससे मैं बहुत भय खाता हूँ। कितने ही स्थानोंमें यह फैल रहा है और यह सिखलाया जाता है, कि जिस किसी विषयका उपदंशसे सम्बन्ध है, उसका इलाज **सिफिलिनम**से होना चाहिये ; जिसका सम्बन्ध सूजाकसे है, उसकी चिकित्सा **मेडोरिनम**से और सोरा-दोषसे जिसका सम्बन्ध है, उसकी **सोरिनम**से चिकित्सा होनी चाहिये तथा जिसका सम्बन्ध **टियुबरक्युलोसिस**से है, इसका इलाज टियुबरक्युलिनमसे ही। किसी दिन यह बात प्रयोगके बाहर हो जायगी, यह केवल भ्रम-चिकित्सा है और एक बेबुनियाद सिद्धान्त है। होमियोपैथीके लिये यह अच्छा विचार नहीं है। यह सुदृढ़ सिद्धान्तके आधारपर नहीं है। यह एक हिस्टीरिया-ग्रस्त होमियोपैथी है, जो इस शताब्दीमें प्रचलित हो रही है। इतनेपर भी इससे बहुत कुछ उपकार हुआ है।

ऐसी आशा की गयी है, कि परीक्षा इस तरह होनी चाहिये, कि हमलोग **टियुबरक्युलोसिस**के लक्षणोंपर टियुबरक्युलिनमका प्रयोग कर सकें, जिस तरह कि हमलोग अन्य औषधियाँ व्यवहार करते हैं। यह गभीर-क्रिय है, धातु-प्रकृतिगत रूपसे गभीर-क्रिय है, क्योंकि यह **सिलिका** और **सल्फर**की तरह अत्यन्त बद्धमूल धातु-प्रकृति-जनित रोगसे उत्पन्न पदार्थसे उत्पन्न है। यह जीवनमें गहराईतक क्रिया करता है, यह दीर्घ-क्रिय औषधि है तथा अन्य बहुत-सी दवाओंकी अपेक्षा यह धातु-प्रकृतिपर और भी गहराई-

तक क्रिया करता है और जब हमारी सबसे गभीर-क्रिय दवाएँ कुछ ही सप्ताहोंतक अपनी क्रिया करती हैं और उन्हें बदल देना पड़ता है, उस समय यह दवा एक ऐसी दवाके रूपमें आती है—जब लक्षण सादृश्य रहता है—और एक उत्तम प्रतिक्रियाकी अवस्था उत्पन्न करती है, जिससे कि दवाओंकी क्रिया अधिक दिनोंतक होती हैं। इसे भी **सोरिनमकी** ही एक जाति अच्छी तरह मान लिया जा सकता है।

स्वल्प-विराम ज्वरोंमें इस दवाका एक प्रधानतम व्यवहार होता है। कितने जिद्दी स्वल्प-विराम ज्वर दुहराते और बारम्बार लौट-लौटकर आते हैं, यहाँतक कि जब **सिलिका और कैल्केरिया** तथा गभीर-क्रिय औषधियाँ निर्देशित रहती हैं, वे अच्छी तरह क्रिया भी करती हैं, ज्वरको तोड़ भी देती हैं और कुछ ही सप्ताहोंमें, सर्दी लग जानेके कारण, झोंककी हवामें बैठनेके कारण, थक जानेके कारण या मानसिक परिश्रमसे, बहुत ज्यादा खा लेनेपर और पाकाशयको बिगाड़ लेनेके कारण यह शीत-ज्वर फिर लौट आता है। जब टियुबरक्युलिनमकी जरूरत होगी, तब ऊपर बताये किसी भी कारणोंसे, वह जिद्दी स्वल्प-विराम ज्वर फिर दुहरा जायगा। जब कोई रोगी यक्ष्माकी ओर अग्रसर होता जाता है और हवा लग जानेपर उसे स्वल्प-विराम ज्वर हो जाता है। वह कमजोर धातु-प्रकृतिका है और उसके रोगोंकी दुहरानेकी प्रवणता है। खूब चुनी हुई दवा भी ज्यादा दिनोंतक क्रिया नहीं करती ; यद्यपि वे पहले फायदा दिखाती हैं—उन्हें बहुत जल्द बदल देना पड़ता है—लक्षण बदला करते हैं।

यदि खूब चुनी हुई दवा भी क्रिया न करे, तो यह टियुबरक्युलिनमके प्रयोगका निदर्शन नहीं है। खूब चुनी हुई एक सम्बन्ध-सूचक वाक्य है तथा मानव-सम्मतिसे बहुत ज्यादा सम्बन्ध रखता है। रोगसे पूरा सादृश्य न रहनेपर भी यह खूब चुनी हुई दवा कही जा सकती है। जब इस खूब चुनी हुई दवाने क्रिया की है और धातु-प्रकृति भग्न होनेकी ही प्रवणता दिखाती है और खूब चुनी हुई दवा भी प्रकट नहीं हो सकती ; क्योंकि जीवनी-शक्ति कमजोर है और बद्धमूल प्रवृत्तियाँ हैं ; यही अवसर है, कि यह दवा कभी-कभी ठीक बैठती है। ऐसे रोगी अकसर टियुबरक्युलोसिस (यक्ष्मा) की ओर अग्रसर होते जाते हैं, यहाँतक कि जब नैदानिक ढंगका कोई सबूत मौजूद नहीं रहता, तब भी ये यक्ष्मा-प्रवण ही रहते हैं।

बर्नेटने एक ऐसा विचार प्रदर्शन किया, जो बहुत बार स्वीकृत हुआ है। जिन रोगियोंने वंशगत-रूपसे यक्ष्मा प्राप्त किया है अथवा जिन रोगियोंके माता-पिता यक्ष्मासे मरे हैं, वे अकसर कमजोर जीवनी-शक्तिवाले होते हैं। अपनी वंशानुक्रमिक रूपसे प्राप्त प्रवणताएँ हटा नहीं सकते। वे हमेशा क्लान्त रहते हैं। वे सहजमें ही बीमार हो जाते हैं। वे रक्त-स्वल्प हो पड़ते हैं। स्नायविक और मोमकी तरह या पीले। जब और भी सूक्ष्म लक्षण सदृश रहते हैं, तो ये लक्षण कभी-कभी मिलते हैं। यद्यपि बर्नेटने यह दवा बँधी गतसे, इस ढंगकी धातु-प्रकृतिके लिये व्यवहृत की है, जिन्हें हमलोग "यक्ष्मा-ग्रस्त" प्रकृति कहते हैं। जिन पुरुषोंने यक्ष्मा वंशगत-रूपसे प्राप्त किया है, जो कमजोर और रक्त स्वल्प हो रहे थे।

बहुत-से आरोग्योंके इतिहासको देखनेसे मालूम होता है, यह दवा इसी ढंगके लक्षणवाली दशापर प्रयोग की गयी है और यदि इन इतिहासोंपर विश्वास किया जाये, तो कितनी ही वार यह रक्त-स्वल्प दशाकी उस प्रकृतिकी तुलनामें रखी गयी है, जहाँ कि **वंशगत-रूपसे यक्ष्मा ही प्राप्त हुआ था।** यह टियुबरक्युलोसिसका सर्वोत्तम निदर्शन नहीं है; परन्तु जहाँ वंशानुगत-रूपसे प्राप्तिके सिवा लक्षण भी सदृश रहते हैं, वहीं इस दवाके प्रयोगका निदर्शन प्राप्त होता है।

यदि टियुबरक्युलिनम बोविनम १० एम, ५० एम और सी० एम शक्तियोंमें दो-दो मात्राएँ करके अधिक समयका अन्तर देकर प्रयोग की जाये, तो सभी बच्चे और नवयुवक, इस वंशगत-रूपसे प्राप्त यक्ष्मासे अपने बीरियाससे बच सकते हैं और उनका स्वास्थ्य सुधर जायगा। यह ऐडेनायड (नाकके पीछेवाले तन्तुओंका सूजन) और गलेकी टियुबरक्यु-लोसिस ग्रन्थियोंके बहुतसे रोगियोंको आरोग्य करता है।

इसका प्रयोग करनेके सम्बन्धमें परिचालन करनेके लिये जो कुछ हमने लिख रखा है, वह समझानेकी मैं चेष्टा करूँगा। मेरे इलाजमें रोगी रहनेके समय जो मानसिक लक्षण प्रकट हुए थे तथा जो मानसिक लक्षण इसकी परीक्षाके समय प्रकट होते मैंने देखे हैं तथा वे मानसिक लक्षण, जो मैंने अकसर टियुबरक्युलर विषसे दूषित रोगियोंमें पैदा होते देखे हैं, वे टियुबरक्युलिनमसे आरोग्य कर दिये गये हैं। बहुत-सी बीमारियोंमें निराशा। मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छाका न होना। शामसे आधी राततक घबड़ाहट। ज्वर-कालमें घबड़ाहट। ज्वरके समय बकवादीपन; जीवनसे ऊब जाना। विश्व-चिन्ताशील। कष्ट-पूर्ण। रातके समय लगातार विचारोंका उत्पन्न होना; रातके समय एकसे दूसरे विचार पैदा होते और एकत्र होते हैं। मैं कहूँगा, कि ये साधारण मानसिक स्वरूप हैं और अकसर यह दवा देनेपर दूर हो गये हैं। जिस किसीने वंशगत-रूपसे यक्ष्मा प्राप्त किया है, जो दुर्बलताकी दशामें है, जिन्हें दुहराकर स्वल्प-विराम ज्वर होता है और ये मानसिक लक्षण मौजूद रहते हैं, तो आप टियुबरक्युलिनमको उनके विषयमें सोचिये। जब कोई रोगी निश्चित रूपसे टियुबरक्युलोसिसके विषसे आक्रान्त रहता है, तो क्षय ज्वरके समय बकवादीपन एक साधारण है। जो मनुष्य धीरे-धीरे कमजोर होते जाते हैं, कभी ठीक दवा नहीं प्राप्त होती या क्षणिक आराम मिलता है; बराबर यात्रा करने, आबहवा बदलने और कहीं जानेकी इच्छा होती है या कोई दूसरा काम करनेकी इच्छा होती या नया डाक्टर खोजते हैं। यात्रा करनेकी इच्छा, मनकी विश्व-व्यापी स्थिति, टियुबरक्युलिनमकी आवश्यकता रखनेवालोंका एक सुदृढ़ लक्षण है। रोगी शय्या-पार्श्वकी अभिज्ञताओंसे अकसर यह प्रमाणित होता है, कि **कैल्केरियामें** भी ऐसा ही प्राप्त होता है और खासकर **कैल्केरिया-फासमें** भी ऐसा ही मिलता है, कि रोगी हमेशा किसी दूसरी जगह जानेकी इच्छा प्रकट करता रहता है। ऐसी ही दशा उनकी रहती है, जिन्हें उन्माद होना चाहता है या कोई लँझड़ानेवाले बीमारी होना चाहती है। उन्मादकी सीमापर पहुँचे हुए मनुष्य। यह सत्य है, कि यक्ष्मा और उन्माद परिवर्त्तनशील दशाएँ हैं एकका रोगी दूसरेमें जा सकता है। बहुत-से चिकित्सित और आरोग्यता-प्राप्त रोगी, जिनका फेफड़ेका यक्ष्मा निकाल

बाहर किया है, अन्तमें उन्माद ग्रस्त हो जाते हैं। जिन मनुष्योंका उन्माद आरोग्य किया गया है, यक्ष्मा होकर वे मर जाते हैं, जिनसे मालूम होता है, कि कितनी बद्धमूल प्रकृतिकी ये बीमारियाँ हैं। बुद्धिके लक्षण और फेफड़ेके लक्षण परिवर्त्तनशील रहते हैं।

टियुबरक्युलिनम—बहुत ही तेज और एकदम पुराना समय बाँधकर होनेवाला सवमन सर-दर्द, सामयिक स्नायविक सर-दर्द आरोग्य करता है। प्रत्येक सप्ताह या दो सप्ताहोंपर होता है और अनियमित सामयिकता, जो कितनी ही दशाओंमें होती है, तर ऋतुमें, बहुत परिश्रम करनेके बाद, मानसिक उत्तेजनासे, बहुत खा लेनेपर, विकृत पाकाशयके कारण होता है—टियुबरक्युलिनम इस पुराने समय बाँधकर होनेपर सर-दर्दकी प्रवणता ही उस अवस्थामें तोड़ देता है, यदि लक्षण सदृश रहते हैं।

अच्छे दवा चुननेवालोंके हाथोंसे यह देखा गया है, कि जब पुराना धातुगत सर-दर्द रोक दिया गया है, तो कभी-कभी रोगी दुबला और कमजोर होने लगता है। एकदम परिवर्त्तनका एक दृश्य दिखाई देने लगता है। खाँसी पैदा हो जाती है ; सर-दर्द तो दूर कर दिया गया है ; पर रोगी कमजोर है। जब कभी ऐसा होता है, तो टियुबरक्युलिनम बहुत ही फायदे-मन्द दवा होती है। एक नया प्रदर्श पैदा हो जाता है और एक नवीन यन्त्र आक्रान्त हो जाता है।

समूचे शरीरमें यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेकी तरह दर्द। हड्डियोंमें धीमा-धीमा दर्द। चक्षुओंमें यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेकी तरह दर्द स्पर्श सहन नहीं होता तथा आँख बगलकी ओर घूमानेपर दर्द होता है। जिन व्यक्तियोंको बहुत दिनोंसे टियुबरक्युलोसिसकी कमजोरी, टियुबरक्युलर उपसर्ग मालूम होते हैं और माथेमें ठण्डा पसीना होता है। यह **कैल्केरिया**की परीक्षामें प्रकट हुआ था और ऐसे व्यक्ति जिन्हें यक्ष्मा होना ही चाहता था, बहुत बार **कैल्केरिया**से आरोग्य हुए हैं। **कैल्केरिया** और टियुबरक्युलिनममें बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है। ये एकके बदले दूसरी प्रयोग की जा सकती हैं अर्थात्—कुछ समयतक एकका प्रयोग होनेके बाद दूसरीका प्रयोग हो सकता है। ये दोनों ही गभीर-क्रिय औषधियाँ हैं—इसके अलावा **सिलिका**का भी क्रिया-पटलपर निकटस्थ सम्बन्ध है, उसी ढङ्गसे गहराईतक यह भी जीवनी शक्तिपर क्रिया करती है ; **कैल्केरिया**, टियुबरक्युलिनम, **सिलिका** और **सिलिकेट्स**।

गाइडिङ्ग सिम्पटम्समें एक बात लिखी है—"सरमें दर्द, मानो सरके चारों तरफ एक लोहेकी पट्टी बँधी है," एक लोहेका बन्द।

बार-बार काटनेकी तरह तेज दर्दके साथ सर-दर्द। सर-दर्द हिलने-डोलनेपर बदतर। गाइडिङ्ग सिम्पटम्समें—"विषन्न, अल्पभाषी, चिड़चिड़ा" मनकी दशा बताया है। "निद्रामें चीख उठता है। रातमें बहुत ही बेचैन रहता है। बहन टियुबरक्युलर मेनिञ्जाइटिसमें मरी है।" यह लक्षण बर्नेटने भी बताया है। इसने मस्तिष्कोदक रोग आरोग्य किया है।

बहुत वर्ष हुए डाकर बिगलाडने टियुबरक्युलर मेनिञ्जाइटिसका एक रोगी टियुबरक्युलिनमसे आरोग्य किया था। इसने अनेक अवसरोंपर टियुबरक्युलर मेनिञ्जाइटिस और आरम्भिक अवस्थाकी मस्तिष्ककी टियुबरक्युलर बीमारियाँ आरोग्य की है।

चेहरा लाल हो जाता है, यहाँतक कि बैंगनी, शीतावस्थाके समय और उत्तापके कालमें। सब तरहके खाद्योंसे अनिच्छा। मांससे इतनी अनिच्छा रहती है, कि मांस खाना असम्भव हो जाता है। शीतावस्था तथा तापके समय प्यास; बहुत-बहुत सा ठण्डा पानी पीना चाहता है। इसने माथा बहुत बड़ा होनेके साथ होनेवाले टियुबरक्युलर मेनिञ्जाइटिसको आरोग्य किया है। ठण्डा दूध पीनेकी इच्छा। पाकाशयमें खालीपन, साथ ही मूर्च्छाका भाव। तलपेट और पाकाशयमें घबड़ाहट, बहुत कुछ जैसा कि **सल्फर**का लक्षण बताया गया है और एक एकदम खालीपन, भूखका भाव, जिससे उसे बाध्य होकर खाना पड़ता है। यह **सल्फर**से फायदा न होनेपर टियुबरक्युलिनमसे आरोग्य किया गया था।

सभी जानते हैं, कि जो यक्ष्माकी ओर अग्रसर होते जाते हैं, उनमें क्षीणता कैसी जबर्दस्त दिखाई देती है। यक्ष्माका कोई चिह्न प्रकट होनेके पहले ही अकसर क्षीणता आरम्भ हो जाती है, क्रमशः मांस-क्षय हुआ जाता है। क्रमशः बढ़ती हुई एक कमजोरी, क्रमशः बढ़ती हुई एक क्लान्ति। टियुबरक्युलिनमका एक प्रधान क्षेत्र है—यदि लक्षण सादृश्य है। हमेशा उसे ही अकेले काम करने दीजिये, **यदि लक्षण सादृश्य हो, जब लक्षण सदृश हों।** इसमें सन्देह नहीं कि यह कहा जायगा, कि टियुबरक्युलिनम उस समय भी आरोग्य करता है, जब थोड़े लक्षण मिलते हैं। यह मान लिया जाता है; पर रोगी-पार्श्व चिकित्सामें इसका प्रयोग न करना चाहिये।

मस्तिष्कके टियुबरक्युलर रोग और मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाहका यह एक साधारण लक्षण है, कि कब्ज बना रहता है। मल बड़ा और कड़ा रहता है या पर्यायक्रमसे दस्त और कब्ज रहता है। यह एक खूब परिचित रोगी शय्या-पार्श्वमें परीक्षित विषय है। टियुबरक्युलिनमका एक जबर्दस्त लक्षण कब्ज है—"कब्ज, मल बड़ा और कड़ा; इसके बाद पतले दस्त। मलद्वारकी खुजली। जलपानके बाद, मिचलीके साथ एकाएक पतले दस्त होने लगना। वंक्षण-ग्रन्थि कड़ी रहती है और स्पष्ट दिखाई देती है। पुराने अतिसारमें बहुत ज्यादा पसीना होता है। यह लक्षण बर्नेटने उद्भावन किया था। यह एकदम रोगी शय्या-पार्श्वका लक्षण था। बर्नेट इस विषयमें कहते हैं— "टैबेस मेसेण्टरिका"—"बायीं तरफ सूजन, दाहिनी तरफ भी; दौड़नेके बाद सुई गड़नेकी तरह दर्दकी शिकायत करता है; सुस्त और बातचीतकी इच्छा न होना; स्नायविक और चिड़चिड़ा, निद्रामें बातचीत करता है; दाँत पीसता है; भूख घटी रहती है। हाथ नीले रहते हैं, हर जगहकी गांठ कड़ी और अनुभवमें आनेवाली रहती है; पाकाशय ढोलकी तरह फूला रहता है। प्लीहा-प्रदेश बाहर उठा रहता है।" यह बर्नेटका ही एक रोगी था। यह बर्नेटके **बैसिलिनम**से आरोग्य किया गया

था। मुझे पता लगा है, कि अधिकांश अवसरोंपर यह **वैसिलिनम** २००वीं शक्तिका प्रयोग करते थे।

सल्फरका यह एक साधारण लक्षण है, सवेरे बिछावन छोड़कर दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है। यक्ष्माके रोगियोंका भी यह एक साधारण लक्षण है तथा उनका जिन्हें यक्ष्मा होना चाहता है। यक्ष्माकी बढ़ी हुई अवस्थामें, पतले दस्त लगनेके कारण बिछावन छोड़ना पड़ता है अथवा २४ घण्टोंके किसी अन्य समयकी अपेक्षा सवेरेके वक्त अतिसारका बदतर हो जाना। यक्ष्माका एक साधारण लक्षण यह है, जिसे टियुबरक्युलिनमने आरोग्य किया है और इसका बहुत बार समर्थन भी हुआ है, यद्यपि यह खास रोगी शय्या-पार्श्वका लक्षण था।

सार्वाङ्गिक शिथिलता, जननेन्द्रियमें कमजोरी और झूल पड़ना। मुष्क शिथिल।

ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले, बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक बना रहता है। **अतिरजः कष्टरजः।**

शीतावस्थाके पहले और समय खाँसी आती है।

श्वास-रोध; गर्म कमरेमें यह बदतर हो जाती है; फुसफुस शिखरोंमें टियुबरक्युलर तलछट (बायें)।

गर्भाशय नीचे लटक पड़ता है और भारी रहता है। रजः-स्राव-कालमें एक तरह ढीलापन आ जाता है, मानो भीतरी अंश बाहर निकल पड़ेंगे।

सूखी खुसखुसी खाँसी, शामको शीतावस्थाके पहले (रस-टक्स) और यह सूखी खुसखुसी खाँसी शीतावस्थामें कुछ समयतक रहती है और कुछ समयतक ज्वरावस्थामें; पर खाँसी आनेसे ही वह समझ जात है, कि शीत आ रहा है। दवाओंसे कितनी ही बार यह रोगी आरोग्य किया गया है; खूब चुनी हुई दवासे अनगिनती बार स्वल्प-विराम ज्वरसे रोगी आरोग्य किया गया है। इसकी क्रियासे रोगीका ज्वर तुरन्त चला जाता है; पर जरा भी हवा लगनेपर जैसा कि ऊपर बताया गया है, फिर ज्वर आ जाता है। अब तीन चार या पाँच सप्ताहोंके बाद,—अकसर दो या तीन ही—वह कहता है—"मैं जानता हूँ, कि मेरा पुराना जाड़ा फिरसे आ रहा है; क्योंकि फिर खाँसी आने लगी है।" पूर्वकी दवाएँ सफल नहीं हुई हैं, वे काफी गम्भीर-क्रिय नहीं हैं, वे काफी दिनोंतक क्रिया करनेवाला भी नहीं हैं। जब होमियोपैथिक दवा वास्तवमें और सत्यता-पूर्वक रोगी दशाको आरोग्य करनेवाली होती है, तो वे रोगको पकड़ लेती हैं, जिससे कि उपसर्ग जब दुबारा पलटा खाते हैं, तो वही दवा निर्देशित रहती है और शायद केवल परिवर्त्तित शक्तिसे ही काम हो जाता है। उसी दवाकी फिरसे जरूरत पड़ी है; यह टियुबक्र्युलिनमका निदर्शन है। जहाँ रोगके प्रत्येक पुनरावर्त्तनपर वह नयी दवा मांगता है। एक बार तो **कैल्केरिया** रोगको तोड़ देता है और दूसरी बार जब यह पल्टा खाता है, तो यह कोई दूसरी ही दवा मांगता है और इसी तरह यह चक्कर काटा करता है; शायद बहुत बार यह वही दवा फिर

मांगता है, परिवर्त्तन होता जाता है। वही परिवर्त्तन और अतृप्त लक्षण-मूर्त्ति इस दवाका सुदृढ़ निदर्शन है।

गर्म कमरेमें श्वास-रोध, केवल ठण्डी हवामें घुड़सवारी करनेके समय ही सरलता-पूर्वक श्वास ले सकता है। जब ठण्डी हवामें घुड़सवारी करनेके सिवा यक्ष्माके रोगीको और कहीं आराम नहीं मिलता, यह मुश्किलसे प्राप्त होनेवाला लक्षण है ; पर यह देखा गया है। वफेलोके रहनेवाले उदासीनता रोगमें यह लक्षण खासकर देखा गया था। वह घण्टों झीलके किनारे ठण्डी हवामें घुड़सवारी किया करता था। **आर्जेण्टम नाइट्रिकमने** बहुत बार देरमें आराम पहुँचाया ; पर यह वास्तवमें टियुबरक्युलिनमका एक जबर्दस्त लक्षण है। अन्तमें वह यक्ष्मामें ही मरा।

गहरी श्वास लेनेकी इच्छा। खुली हवाकी इच्छा करता है। खिड़की, दरवाजे खुले रखना चाहता है। पसीनेसे भरा कमरेमें बैठा रहता है ; पर हवाकी इच्छा करता है, ताजी हवा चाहता है। जब वह पसीनेसे भरा रहता है, तो अपने ऊपर झोंककी हवा नहीं लगने देना चाहता ; क्योंकि उसे सर्दी लगती है, उसे यह सहन नहीं होती ; पर वह ताजी हवाकी इच्छा करता है, वह खुली हवा चाहता है ; खासकर जब बायें फेफड़ेके शिखर-देशमें यक्ष्माका तलछट जमा होना आरम्भ होता है, इसका तब निदर्शन है, जिसका बहुत-से देखनेवालोंने अनुमोदन किया है।

"कड़ी, सूखी खाँसी ; कड़ी, सूखी, हिला देनेवाली खाँसी"—ये लक्षण यक्ष्मापर ख्याल न करते हुए भी वोर्डमैनने देखे,—बलगम गाढ़ा, पीला, अकसर पीलापन लिये हरा, श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहकी दशामें रहता है। जवान लड़कियोंकी खुसखुसी खाँसी ; जब प्रथम ऋतुका मासिक रजः-स्राव रुका रहता है। वे एक, दो या तीन बार होते हैं और रोगिनी पीली, दुबली, क्लान्त रहती है, खुसखुसी खाँसी आती है और सन्देह-पूर्ण वक्ष रहता है। यदि टियुबरक्युलर तलछट बहुत ज्यादा नहीं बढ़ गया है, तो टियुबरक्युलिनम रोगका बढ़ना रोक देगा। यदि टियुबरक्युलोसिस आरम्भ होनेके पहले उनको जिन्होंने वंशगत रूपसे इसे प्राप्त किया है, टियुबरक्युलिनमका प्रयोग कर दिया जाय, तो यह उनका बल बढ़ा देगा। यह स्वास्थ्य-विधानको बलवान बनाता है।

वर्नेटका लिखा दूसरा स्पष्ट लक्षण है—दाद। वर्नेटकी राय थी, कि साधारणतः दादकी बीमारी उन्हें ही होती है, जिन्होंने वंशगत रूपसे यक्ष्मा प्राप्त किया है। उसने इसे यक्ष्मा हो जानेका एक चिह्न माना है, कहा है, कि जिन्होंने वंशगत रूपसे उपदंश रोग प्राप्त किया है, उनका यह साधारण लक्षण है और इसके लिये वह **वैसिलिनम** २०० शक्ति देता था। दादके प्रत्येक बालक रोगीको वह इसे बँधे रूपमें देता था।

शामके वक्त जिन रोगियोंको कमजोरीकी तकलीफ होती है। शामको तेज नाड़ी। बरसोंसे रोज शामको उसे नाड़ी तेज मालूम होती है। शामको भोजनके बाद कलेजा धड़कना।

नींद आनेके समय और निद्रा-कालमें पेशियोंमें झटका, दाहिनी कोहनीमें वातका दर्द, हड्डियों और अस्थि-आवरककी यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेकी दशा। दर्द, विश्रामके समय

प्रत्यंगोंमें खोंचनकी तरह दर्द, चलनेके समय उपशम हो जाता है। इन दवाका एक सुदृढ़ स्वरूप यह है, कि हिलने-डोलनेपर इसका दर्द और यन्त्रणा अच्छी रहती है। मैंने प्रत्यङ्गोंमें यह तकलीफ बहुत बार होती देखी है, जहाँ **रस-टक्सने** या तो क्षणिक रूपसे अपनी क्रिया दिखाई है या असफल ही हो गया है; जहाँ दवा तो **रस-टक्स** मालूम होती थी; परन्तु क्रियाको पकड़ रखनेके लिये काफी नहीं हुई। जहाँ **रस-टक्स** कृत्रिम-रूपसे प्रयोग हुआ था या कष्टकी गभीर-क्रिया, गभीर वंशगत-प्राप्ति, क्लान्त धातु-प्रकृति, बीमारीकी पुरानी प्रकृतिने **रस टक्सकी** क्रिया न होने दी और टियुबरक्युलिनम ऐसे रोगियोंको आरोग्य करता है। खासकर वे लड़कियाँ, जो हिसाब-किताब लिखती हैं, दूकानदारी करती हैं, जिन्होंने वंशगत रूपसे यक्ष्माकी धातु-प्रकृति प्राप्त की है, जिन्हें तर ऋतुमें कष्ट और दर्द होता है तथा बरसाती मौसममें, तूफानके समय, ऋतु-परिवर्त्तनके कालमें और जब मौसम ठण्डा रहता है, तब दर्दकी तकलीफ हो जाती है, तभी टियुबरक्युलिनम आरोग्य करता है, जब कि **रस टक्स** तथा इसी ढङ्गकी दवाएँ असफल हो जाती हैं। ये रोगी हिलते डोलते रहनेपर, चलते रहनेपर अच्छे रहते हैं; विश्राम कालमें बदतर हो जाते हैं। बैठे रहनेके समय दर्द इतना तेज हो जाता है, कि उसे बाध्य होकर चलना-फिरना पड़ता है, टहलना पड़ता है। विश्राम-कालमें प्रत्यंगोंमें ऐंठन, खोंचनकी तरह दर्द, चलने-फिरनेपर उत्तम। बायें पैर और टांगोंमें ठण्डापन, शामको बिछावनमें। विश्राम-कालमें प्रत्यंगोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। प्रत्यंगोंमें भ्रमणकारी वेदना—सन्धियोंमें। समूचे शरीरमें दर्द, पर खासकर निम्न-प्रत्यङ्गोंमें। यन्त्रणा, खोंचनकी तरह दर्द, मानो यह दर्द हड्डियोंमें और स्नायुओंमें विश्राम-कालमें होता है, चलने-फिरनेपर अच्छा रहता है। निम्न-प्रत्यङ्गोंकी हड्डियोंमें दर्द। चलना-फिरना आरम्भ करनेपर आरम्भमें अकड़न। यन्त्रणा-पूर्ण कुचल जानेकी तरह सन्धियाँ। ये सभी दर्द तापसे घटते हैं। जांघोंमें खोंचनकी तरह दर्द। प्रत्यङ्गोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। बेचैन। निम्न-प्रत्यङ्गोंकी शामको अकड़न। शारीरिक परिश्रमसे रोग-वृद्धि हो जाती है।

खड़े होनेपर रोग बढ़ जाता है; जरूर ही चलना-फिरना पड़ता है। यह लक्षण **सल्फरकी** तरह ही इसमें भी बढ़ा हुआ है।

स्वल्प-विराम ज्वर, साथ ही विश्राम-कालमें-प्रत्यङ्गोंमें खोंचन। जाड़ा ७ बजे रातमें, शामको हल्की सर्दी मालूम होना; बिछावनमें अच्छा रहता है। शीतावस्था ५ बजे शामको, साथ ही प्यास। शीतावस्था आरम्भ होनेके पहले खाँसी, शीतावस्था रहनेपर खाँसी और ज्वर रहनेके समय वमन। सभी दशाओंमें ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है। सर्दीलापनके साथ बहुत ही तेज ताप; बार-बार दुहरानेवाला सविराम ज्वर।

शामको जाड़ा आनेके पहले प्रत्यङ्गोंमें खोंचन और शीतावस्थामें। प्रत्यङ्गोंमें खोंचन होनेके कारण वह जान जाता है, कि शीत आ रहा है, रातके ११ बजे शीतका दौरा। सभी दशाओंमें ओढ़ना ओढ़े रहना पड़ता है—शीतावस्थामें, ज्वर-कालमें और

पसीना होनेके समय। शीत बढ़कर ज्वर आता है और पसीना होता है, यदि कोई जगह खुली है।

माथेकी हड्डीमें दर्द तथा साथ ही अस्थि-आवरकमें यन्त्रणा– ये सभी **रस टक्सकी** तरह चलने-फिरनेपर अच्छे हो जाते हैं। हिलने-डोलनेपर उपशम और चुपचाप पड़े रहनेपर रोग बढ़ जाता है।

मानसिक परिश्रमसे पसीना होता है। कपड़ेपर पसीनेका पीला दाग पड़ता है। निन्द्राकालमें ताप और पसीना। हम जानते हैं, कि यक्ष्मामें रात्रि-कालमें पसीना होना, इसका एक कैसा साधारण स्वरूप है।

चर्मपर सुरसुरी। इस दवाने चर्मपरके यक्ष्मा-रोग-जनित उद्भेद आरोग्य किया है। इस दवाने लाल बैंगनीपन लिये उद्भेद आरोग्य किया है, जो गांठोंकी प्रकृतिके होते हैं, रोगी सभी समय आगके पास बैठा रहना चाहता है– ठण्डी हवामें खुजली, आगके पास जानेपर अच्छा रहता है, खुजलानेपर बदतर हो जाता है। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन, खासकर ठण्डा और तर मौसम और कभी-कभी गर्म तर मौसम और बरसाती ऋतु सहन नहीं होता। तूफान आनेके पहले हमेशा उसकी हालत खराब हो जाती है। आबहवामें जरा भी वैद्युतिक परिवर्त्तन हुआ, कि उसे मालूम हो गया। दर्द होते ही सभी उपसर्ग दर्द, यन्त्रणा, कष्ट और तकलीफें पैदा हो जाती हैं। गाइडिङ्ग सिम्पटम्स देखनेपर इससे आरोग्य हुए रोगियोंको एक बहुत बड़ी सूची प्राप्त हो सकती है।

सामयिकता इस दवाका एक सुदृढ़ स्वरूप है और ऋतु-परिवर्त्तनका सहन न होना।

मूर्च्छाके दौरे ; थोड़ा भी चलनेपर कमजोरी।

इसने धातुगत सर-दर्द, समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द, जो पैंतालिस वर्षोंसे था, आरोग्य किया है। इन समय बाँधकर होनेवाली बीमारियोंसे यह वृद्धोंको भी आरोग्य करता है।

कभी-कभी दर्द हटा करता है। सुई गड़नेकी तरह, चिकोटी काटनेकी तरह, मरोड़की तरह और भ्रमणकारी वेदना और ये सभी सर्दीसे और सर्द तर ऋतुसे बदतर हो जाते हैं।

वैलेरियन
(Valerian)

यह दवा उत्तेजनशील स्त्रियों, बच्चों तथा व्याधि-शङ्कावाले रोगियोंके, बहुत से स्नायविक और मूर्च्छा-वायुके उपसर्ग आरोग्य करती है। बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना, उत्तेजनशीलता, मूर्च्छा-वायुकी खींचन, कम्पन, कलेजा धड़कना, लघु हो जानेका ज्ञान,

आवेशिक श्वास-प्रश्वास, सुई गड़नेकी तरह दर्द, प्रत्यङ्गोंमें तनाव, झटका, ऐंठन, वायु-गोलेके साथ मूर्च्छा। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयसे कोई गर्म चीज ऊपर उठ रही है, जिससे आवेशिक रूपसे श्वास-कष्ट होता है ; सभी स्नायु चल-विचल रहते हैं ; सभी इन्द्रियोंकी अत्यधिक स्पर्श चेतना, बहुत ज्यादा स्नायविक अस्थिरता। ये सभी सार्वाङ्गिक लक्षण **विश्राम कालमें** उत्पन्न होते हैं तथा हिलते-डोलते और इधर-उधर चलते-फिरते रहनेपर घट जाते हैं। सहजमें ही मूर्च्छा आ जाती है। थोड़ा-सा भी परिश्रम उपसर्ग उत्पन्न कर देता है। उपसर्ग सब परिवर्त्तित हुआ करते हैं और दर्द जगह-ब-जगह घूमा करता है। यह बहुत-से अवर्णनीय स्नायविक प्रदर्शनोंकी बहुत बड़ी दवा है, जो मेरुदण्डके उपदाहमें आते हैं, जब कि हिलने-डोलनेपर रोग ह्रास होता है और बहुत परिश्रम करनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है। परिश्रम ऐसे रोगियोंको सर-दर्द पैदा कर देता है। विश्राम-कालमें समूचे शरीरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

मानसिक दशा अकसर अत्यानन्द-पूर्ण या मूर्च्छा वायुकी तरह रहती है। प्रकृति और विचारोंके सम्बन्धमें मनमें तेज परिवर्त्तन हुआ करते हैं। मानसिक उपसर्ग रातमें पैदा होते हैं ; मूर्त्तियाँ, जानवर और मनुष्य देखता है ; मानसिक दशा असीम तीव्र रहती है—तनाव, उत्तेजना, एक विषयसे दूसरेपर चला जाता है। गलत-फहमीके खयाल ; सोचती है, कि वह कोई दूसरी है ; जगह खाली करनेके इरादेसे पलङ्गकी पाटीके पास चली जाती है। सोचती है, कि उसकी बगलमें जानवर लेटे हैं, जिससे वह डरती है, उसे चोट पहुँचा सकती है। रातमें अन्धकारमें भय। अन्धेरेमें उपसर्गोंकी अभिवृद्धि हो जाती है। बहुत उदासी और उत्तेजनशीलता। विषन्न, सहज ही चिढ़ उठती है। विश्राम-कालमें मानसिक उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, जब कि वह बैठी या लेटी रहती है और उसे बाहर निकलकर टहलना पड़ता है।

झुकनेके समय सरमें चक्कर, इतनी हलकी अपनेको अनुभव करती है, मानो हवामें तैर रही है।

शामको विश्राम-कालमें प्रचण्ड स्नायविक सर-दर्द, जो चलने-फिरनेपर घट जाता है। माथेमें हतचेतन कर देनेवाला दर्द। सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। माथेमें बहुत अधिक ठण्डक मालूम होना। ताप और सूर्यकी किरणें लगनेके कारण सर-दर्द। यह खुली हवामें और झोंककी हवा लगनेपर बढ़ जाती है। ललाटमें तथा आँखोंके भीतरसे दर्द। मस्तक-त्वचामें खींचन और तनाव। खोपड़ीमें बरफकी तरह ठण्डक।

आँखोंमें वहशत-भरी दृष्टि। अन्धेरेमें आँखोंके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं। सवेरे आँखोंमें दबाव। आँखोंमें यन्त्रणा। दृष्टि-शक्ति बहुत तेज।

तीव्र स्मरण-शक्ति। झटका देनेवाला दर्द। कानोंमें भनभनाहट और घण्टी बजनेकी-सी आवाज।

चेहरा लाल और खुली-हवामें गर्म। चेहरा और दाँतोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। चेहरेमें एकाएक झटका लगनेकी तरह दर्द। पेशियोंमें ऐंठन तथा चेहरेमें खींचनकी तरह दर्द। चेहरेका स्नायु-शूल, जो विश्राम-कालमें बढ़ जाता है।

जीभपर मैल चढ़ी रहती है ; स्वाद बिगड़ा रहता है। जागनेपर मुँह बेस्वाद रहता है।

ऐसा मालूम होना, वमन और लार बहनेके साथ कण्ठसे एक सूता लटक रहा है।

मिचलीके साथ राक्षसी भूख। पाकाशय खाली रहनेपर रोग-लक्षणोंकी अभिवृद्धि हो जाती है, जलपान करनेपर घट जाते हैं। उपवास करनेके कारण उत्पन्न उपसर्ग। सड़े अण्डेकी गन्धकी तरह सवेरेके वक्त डकारें आती हैं। बदबूदार तरलोंकी डकार। मिचली, मूर्च्छा, शरीर बरफकी तरह ठण्डा। माताके क्रोधित हो जानेके बाद बच्चा स्तनका दूध पीते ही वमन कर देता है। बच्चा ढेला-ढेला दहीकी तरह जमा हुआ दूध वमन करता है।

उदर तना हुआ। तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द। शूलका दर्द। मूर्च्छा-वायु-ग्रस्ता स्त्रियोंको शामके वक्त, बिछावनमें और भोजनके बाद मरोड़का दर्द।

बच्चोंको दहीकी तरह पदार्थ-मिला पानीकी तरह दस्त। हरापन लिये पित्त-मिश्रित मल और रक्त, साथ ही तलपेटमें मरोड़ और कूथन, बच्चोंको। पाखानेमें क्रिमि। पेशाब करनेके समय जोर लगानेपर मलद्वारका अपने स्थानसे हट जाना।

स्नायविक स्त्रियोंको बहुत ज्यादा और बार-बार पेशाब होना। पेशाबकी तली लाल और सफेद।

ऋतु-स्राव देरसे और थोड़ा।

सो जानेपर कण्ठ-गह्वरमें दम घुटनेका भाव ; श्वास-रोध होनेके साथ जाग उठती है। श्वास कम गहरा होता है और ज्यादा तीव्र होता जाता है, जबतक वह रुक नहीं जाता ; तब वह ठण्डी साँसें लेकर श्वास रोकती है, दौराके रूपमें ऐसा होता है (**इग्नेशिया, आकजेलिक एसिडसे** तुलना कीजिये)। मूर्च्छा-वायु-ग्रस्त तथा बहुत ही स्नायविक स्त्रियोंका आवेशिक श्वास प्रश्वास गोला ऊपर उठनेके साथ मूर्च्छा-वायु रोग (Globus hystericus)।

वक्षमें झटका देने और सुई गड़नेकी तरह दर्द। कण्ठमें एक ढेला रहनेके साथ वक्षमें दबाव। वक्षके दाहिने पार्श्वमें और यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। नाड़ी तेज, क्षुद्र और दुर्बल रहनेके साथ वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

विश्राम करनेके समय पीठके कमरवाले भागमें दर्द, यह चलने-फिरनेपर घटता है। स्कन्धास्थिमें वातज-वेदना।

प्रत्यङ्गोंमें वातका दर्द, पहले परिश्रम करनेके कारण विश्राम करनेपर बढ़ जाता है ; चलने-फिरनेपर घट जाता है। खोंचन, प्रत्यंगोंमें झटका लगना और विश्राम-कालमें पेशियोंमें ऐंठन। प्रत्यङ्गोंमें भार, खोंचन, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो प्रयङ्गोंको हटाना ही चाहिये ; पर हटा नहीं सकता। बाहुओं और कन्धोंमें झटका देनेकी तरह दर्द, बाहुओंमें

सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ पेशियोंमें खींचन। हाथों और बाहुओंमें मृच्छी-वायुग्रस्त (Hysterical) खींचन। मरोड़की तरह झोंकका दर्द, फाड़नेकी तरह दर्द, मानो बिजलीका झटका लग गया है; यह बारम्बार प्रगण्डास्थिके भीतरसे होता है, बहुत ही तीव्र कष्टदायक होता है। लिखनेके समय द्विमूल पेशियोंमें मरोड़। खड़े होनेके समय गृधसी स्नायुकी राहसे दर्द, चलनेपर घट जाता है। जंघामें, ऊपर कूल्हेतक फाड़नेकी तरह दर्द। पैर-पर-पैर चढ़ानेपर पैरकी पोटलीमें फाड़नेकी तरह दर्द। जांघकी मांस-पेशियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, यह विश्राम-कालमें होता है। विश्रामके समय निम्न-प्रत्यङ्गोंमें प्रचण्ड खींचन और झटका लगनेकी तरह दर्द, जंघाओंमें, पैरोंमें और गुल्फ-सन्धिमें बैठनेपर खींचन, चलनेपर घट जाता है। परिश्रमके बाद, सीढ़ी चढ़नेपर घुट्ठीमें दर्द, चलने फिरनेपर घटता है। बैठे रहनेके समय गुल्फ-सन्धिमें खींचन-विश्रामके समय एँड़ीमें दर्द। निम्न-प्रत्यङ्ग और कूल्हेमें प्रचण्ड खींचन और झटका देनेकी तरह दर्द, खड़े होनेपर बढ़ जाता है। निम्न-प्रत्यङ्गोंमें पैरकी पोटलियोंमें और पञ्जोंमें मृच्छी-वायु (हिस्टीरिया) की ऐंठन।

आधी रातके पहले नींद नहीं आती। हाथ-पैरोंकी ऐंठन नींद नहीं आने देती। बहुत-से विस्तृत स्वप्न दिखाई देते हैं। चलने-फिरनेपर उपसर्ग बढ़ जाते हैं।

वेरेट्रम एल्बम
(Veratrum Album)

इस दवामें जो आश्चर्यजनक ठण्डक दिखाई देती है, वह बहुत ही चकित कर देनेवाली है। इसके साथमें रहनेवाली ठण्डक हुए बिना मुश्किलसे कोई लक्षण-समूह प्राप्त होते हैं। स्रावोंकी ठण्डक, शरीरकी ठण्डक। बहुत-से लक्षणोंके साथ जो ध्यान देने योग्य अवसन्नता रहती है, उसपर भी आपको ताज्जुब होगा, एकदम शिथिलता और क्लान्ति तथा ठण्डापन। बहुत ज्यादा पसीना, वमन और अतिसार।

बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव होता है। बिना किसी प्रकारकी दृश्य उत्तेजनाके ही ये दशाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। हैजा या मारात्मक हैजामें ऐसा मालूम होता है, कि ये तरल शरीरसे निकल जाते हैं। बिछावनपर पड़ा रहता है, शिथिल, अवसन्न दशामें, अङ्गुलियोंकी नोंकतक ठण्डी हो जाती है, इसके साथ ही नीलापन शामिल रहता है; खासा बैंगनीपन; ओंठ ठण्डे और नीले; चेहरा सिकुड़ा, झुर्री-भरा और दबा; बहुत ज्यादा ठण्डकका भाव, मानो रक्त बरफका पानी हो गया है, मस्तक-त्वचा ठण्डी, ललाट ठण्डे पसीनेसे भरा रहता है; सर-दर्द और क्लान्ति; समूचे शरीरपर जगह-जगहपर ठण्डक; मृत्युकी तरह हाथ-पैर ठण्डे। मरोड़ोंसे भरा रहता है; ऐसा मालूम होता है, मानो मर जायगा। यह दशा ऋतु-स्रावके समय पैदा हो जाती है, मिचलीके साथ शूल होनेपर, उन्मादके साथ और प्रचण्ड प्रलाप, सर-दर्दके साथ और भयानक प्रदाह होनेपर।

फिर इसमें आश्चर्यका कौन-सी बात है, यदि हैनिमैनने यह भविष्यवाणी की, कि

वेरेट्रम, **कैम्फर और क्यूप्रम** हैजा आरोग्य करनेवाली दवाएँ होंगी। इनमें उन्होंने आरोग्य करनेकी क्षमता देखी थी। इनमें उन्होंने सादृश्य देखा था।

मरोड़—ऐंठन की तरह बहुलता दिखाई देनेवाले, इस ढङ्गके चरित्रगत लक्षण रहनेवाले रोगोंमें **क्यूप्रम** सदृश दवा होती है ; परन्तु जिन रोगोंमें ठण्डक, नीलापन और थोड़ा पसीना होता है, वमन और पतले दस्त आते हैं - उनकी दवा **कैम्फर** ही है। ये शुष्क हैजा कहलाते हैं। बिना क्लान्त करनेवाले स्रावोंके ही वे डूबते जाते और मर जाते हैं। ठण्डक, नीलापन और अल्प-स्रावके तारतम्यके अनुसार **कैम्फर** निर्देशित रहता है। बहुत ज्यादापन, नीलापन और ठण्डकके तारतम्यके अनुसार वेरेट्रम निर्देशित रहता है **सिकेलिमें** भी हैजाके कुछ लक्षण हैं। **पोडोफाइलममें** क्लान्त करनेवाले दस्त आते हैं। **आर्सेनिकममें** घबड़ा देनेवाली बेचैनी रहती है।

मानसिक लक्षणोंमें प्रचण्डता और ध्वंसकारी भाव रहता है। वह नष्ट कर देना चाहता, किसी चीजको फाड़ना चाहता है, अपने शरीरपरके वस्त्र फाड़ डालना चाहता है। हमेशा किसी काममें लगा रहना चाहता है, अपने दैनिक कार्य करते रहना चाहता है। एक पीपा बनानेवालेको वेरेट्रमका उन्माद हो गया था। वह एकके ऊपर एक रखकर कुर्सियोंका ढेर लगा देता था। जब उससे पूछा जाता, कि यह क्या कर रहे हो? तो कहता, कि यह पीपा बनानेकी लकड़ीका ढेर लगा रहा हूँ। जब इस काममें वह नहीं लगा रहता, तो वह कपड़े फाड़ा करता था या घुटनेके बल बैठकर घण्टों प्रार्थना किया करता था और वह भी इतनी जोरसे, कि कई मकानोंके बादसे भी आवाज सुनाई पड़ती थी।

धार्मिक उन्मादकी बढ़ी हुई अवस्था ; उसे विश्वास रहता है, कि वही क्राइस्ट हैं ; तबतक चीखता चिल्लाता है, जबतक उसका चेहरा नीला नहीं हो जाता। माथा बरफकी तरह ठण्डा, ठण्डा पसीना। बाहर पहुँचता है और परिताप करने लगता है।

परिताप करता है, उपदेश देता है, गुर्राता है, अश्लील गाने गाता है, लिङ्गेन्द्रिय खोलकर दिखाता है, भय तथा भयका दुष्परिणाम, मृत्यु तथा बेवकूफ बननेका भय ; सोचता है, कि सम्पूर्ण विश्वमें आग लग गया।

हरेक चीज, खासकर वस्त्र काटने फाड़नेका उन्माद, इसके साथ कामुकता और काम-भाव-पूर्ण अश्लील बातें करता है। सूतिकोन्माद और अकड़न, जिसमें भयानक मस्तिष्कका रक्त सञ्चय रहता है। चेहरा नीला और चित्ती-चित्ती रहता है। आँखें बाहर निकली रहती हैं, दाँतसे काटने और फाड़नेकी प्रकृति रहनेके साथ तीखी आवाजसे चीखता है। बकवादीपन, बहुत तेजीसे बातें करता है। उसके खाम-खयाली दुर्भाग्यपर समझा-बुझाकर उसे सान्त्वना नहीं दी जा सकती ; "या तो कमरेमें चीखती, चिल्लाती, गुर्राती हुई चारों तरफ घूमती है या रोती, भनभनाती और कुछ मन ही-मन विचारती निश्चेष्ट बैठी रहती है।" निश्चेष्ट, चीखना और चिल्लाना— यह पर्यायक्रमसे होता है। कुछ ऐसी दवाएँ हैं, जो हमारा पागलखाना खाली करा देंगी, खासकर नये

रोगीसे। उन्माद उस अवस्थामें आरोग्य हो सकता है, यदि रोगका परिणाम दुरारोग्य न हो।

आते हुए उन्मादके साथ निराशा तथा हतोत्साहसे भरा रहता है। "अपने आरोग्यसे निराशा, आत्महत्या कर लेनेकी चेष्टा करता है।" उन्मत्त, बुद्धिहीन मनुष्य दुरारोग्य नहीं हैं—जिन्हें उन्मत्तता आ रही है; पर जब वे पागल हो जाते हैं, तो वे समझने लगते हैं, कि उनके सिवा सभी विकृत-मस्तिष्कवाले हैं। अत्यन्त दुःख या निराशामें जा पड़नेवालोंको प्रचण्ड पागलपन हो जा सकता है। वेरेट्रम उनको निराशा-वाली दशासे निकाल लाता है। "विषन्नता, सर लटक जाता है; चुपचाप निश्चेष्ट-भावसे बैठा रहता है।"

युवतियोंको वर्षोंतक रजः-स्रावकी तकलीफ जारी रहती है और ऋतु-कालके पहले एक निराशाकी दशा आ जाती है। वह कभी हँसती नहीं है। संसार अन्धेरा दिखाई देता है; सभी पदार्थ अन्धकारमय है; ये सब उन्मादकी एक बढ़ी हुई दशाकी ओर अग्रसर हो रही हैं। वेरेट्रम एक ऐसी दवा है, जो बहुत-सी स्त्रियोंको पागलखानेसे हटा देगी; खासकर जिन्हें जरायुकी तकलीफें लगी रहती हैं। पूरी जवानी आनेके समय उन्हें कष्ट-रजःकी तकलीफ झेलनी पड़ती है, उनकी मानसिक दशा गुल्म-वायु-ग्रस्तकी तरह रहती है और अतिसार तथा वमन होता है। रजः-स्राव-कालमें वे मुर्देकी तरह ठण्डी हो जाती हैं; ओंठ नीले हो जाते हैं, हाथ पैर ठण्डे और नीले रहते हैं, भयङ्कर दर्द होता है, एकदम धँसते जानेका भाव हो जाता है, चुम्बन करनेका उन्माद होता है, मासिक रजः स्राव-कालमें शरीरकी ठण्डकके साथ हिस्टीरिया, बहुत ज्यादा पसीना होता है, वमन होता और पतले दस्त प्रभृति आते हैं।

वेरेट्रममें कष्टदायक सर-दर्द होता है, स्नायु-शूलका दर्द, बड़ा ही तेज दर्द, इसके साथ ही शीतलता, पित्त और रक्तका वमन, बहुत क्लान्ति और बहुत ही ज्यादा पसीनेका भी लक्षण रहता है। पाकाशय खाली होनेके बाद वमन और ओकाई; आक्षेपिक ओकाई तथा पाकाशयमें मरोड़। आप पाकाशय खाली करनेकी चेष्टाको देख सकते हैं और थोड़ी-थोड़ी देरतक मुँह भर पित्त चढ़ आता है।

मस्तकपर रक्तका भयङ्कर दौरा हो जाता है; हाथ-पैरोंकी ठण्डकके साथ मस्तकमें रक्त-सञ्चय। ऐसा मालूम होता है, कि मानो माथेपर बरफ बाँधा हुआ है। ऐसा अनुभव करता है, मानो मस्तक-शिखर और पश्चात्-मस्तिष्कपर (कैल्केरिया) बरफ रखा हुआ है, माथेमें इस तरहका तनाव, मानो मस्तिष्कके पास झिल्लियाँ कसकर बँधी हुई हैं; तनावका दर्द।

मुझे एक कृषककी बात याद है, वह गर्मीके दिनोंमें मेरे पास आया था। पानी पीनेपर उसे एक विचित्र अनुभूति होती थी अर्थात् मानो पानी बाहरकी तरफ चला जाता था और कण्ठनलीमें नहीं जाता। यह इतना बढ़ा हुआ था, कि वह अपने दोस्तोंसे कहता था, कि देखो पानी बाहर तो नहीं निकल जाता है। वेरेट्रम २ एम' ने उसे आरोग्य कर

दिया। किसी भी दवाने यह अनुभूति नहीं उत्पन्न की है; पर मैंने अपने सादृश्य-विचारसे इसे खोज निकाला है।

"ठण्डा पानी और बरफ पीनेकी प्रचण्ड प्यास, सब तरहके फलोंसे पाकाशयका दर्द-पूर्ण तनाव पैदा हो जाता है।"

"बड़े झोंकसे और बहुत ज्यादा मात्रामें वमन होता है। कमजोरीके साथ मिचली, बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है; पाकाशयमें गुल्म-वायुका मरोड़; उदर-शूलकी तरह तल-पेटकी पेशियोंमें मरोड़। पाकाशयिक सर्दी, बहुत कमजोरी, ठण्डा और एकाएक अवसन्न हो जाना।"

हाथ-पैरोंमें वात और स्नायु-शूलका दर्द भरा रहता है; यह बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाता है; उनकी वजहसे उसे रातमें बिछावन छोड़कर ठण्डे कमरेमें जाना और आराम मिलनेके लिये सहनपर टहलते रहना पड़ता है। आपने स्वभावतः यही अनुमान किया होगा, कि गर्मीसे आराम मिलता होगा, समय-समयपर तलपेटके सम्बन्धमें और अन्य अंशोंमें ऐसा ही होता भी है, जब शीतलता रहती है; पर यह दर्दोंको बढ़ा देती है (मर्क्युरियस)।

"प्रत्यंगोंमें दर्द-भरी पाक्षाघातिक दुर्बलता।

"पर्यायक्रमसे शीत और ताप होता है; कभी यहाँ, कभी वहाँ केवल एक अंशमें। कुछ पीनेके समय शीतकी भीतरी अनुभूति सरसे लेकर अंगूठेतक हो जाती है।" पीनेके समय वेरेट्रमके बहुत-से उपसर्गोंकी वृद्धि हो जाती है।

ठण्डा पसीना होते रहनेके समय जलन। पुरानी मानसिक बीमारियोंमें शरीरका चमड़ा धुमैला रहता है और सूखा रहता है; परन्तु ललाटमें ऐसा नहीं होता—यही एक अप-वाद है। पर नयी बीमारियोंमें, जिनमें शारीरिक लक्षणोंकी ही प्रधानता रहती है,—जैसे कि कष्टरजः, तीव्र नया उन्माद; उनमें बहुत पसीना होता है।

मिचली और वमन होते रहनेपर भी चबानेकी तरह भूख। पाखाना हो जानेके बाद उदरमें खालीपन, एकदम कुछ न रहनेका भाव रहता है।

जिङ्कम मेटालिकम
(Zincum Metallicum)

जिङ्कमकी पूरी और वास्तविक परीक्षा हुई है, जिसमें शरीरके सभी भागोंके लक्षण आ गये हैं। यह एक सोरा-नाशक दवा है, यह भग्न धातु-प्रकृतिवालोंके लिये उपयोगी है तथा उनके लिये जिनकी प्रकृति कमजोर है। सम्पूर्ण परीक्षामें कमजोरी इसका चरित्रगत लक्षण प्राप्त हुआ है।

जिङ्कमकी रोगी स्नायविक और बहुत ज्यादा असहिष्णु रहता है। उत्तेजनशील, कम्पनशील, कम्पन, पेशियोंकी ऐंठन, सम्पूर्ण स्नायु पथमें फाड़नेकी तरह दर्द सुरसुरी और

जरा-सी उत्तेजनाका कोई कारण मिलते ही चमक उठता है ; अत्यधिक असहिष्णुता एक अंशमें तथा दूसरेमें अनुभूतिका अभाव रहता है। यह अत्यधिक असहिष्णुता **नक्स-वोमिका** की तरह रहती है ; परन्तु यह इसका शत्रुभावापन्न है। बहुत अधिक कामके कारण क्लान्त और उत्तेजनाशील व्यक्ति **नक्स** और जिङ्कमके रोगी होते हैं। **नक्स**के रोगीको उच्च-क्रम सहन नहीं होते। इसके अलावा पाक्षाघातिक दुर्बलता, क्षीणता और अवसन्नता रहती है ; उसमें मस्तिष्क और मेरुदण्डके उपसर्ग भरे रहते हैं।

सभी शारीरिक क्रियाएँ धीमी होती हैं, उद्भेद धीरे-धीरे निकलते हैं ; सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधान क्लान्त और कमजोर दिखाई देता है, जिससे कि जब कोई लड़की पूरी जवानीमें आती है और ऋतु-स्राव होनेका समय आ जाता है, तो रजः-स्राव नहीं होता, वह दुर्बल—क्षीण होती जाती है ; उसमें नर्त्तन-रोगके लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं ; झटका लगना और फड़कना, गर्दनके पिछले भागमें यन्त्रणा, सम्पूर्ण मेरुदण्डमें जलन, हाथ पैरोंमें सुरसुरी और कुछ रेंगनेका भाव हो जाता है और सब तरहके ही मूर्च्छा-वायु (Hysteria) के प्रदर्शन प्रकट होते हैं। जरा भी शोर-गुल सहन नहीं होता, कमरेमें बैठे हुए आदमियोंकी बातें सहन नहीं होती, कागजकी खड़खड़ाहट बर्दाश्त नहीं होती। "बातचीत या सुनना कष्टकर होता है ; दूसरोंका बहुत बातें करना, यहाँतक कि जिनका वह प्रेमी है, उनकी बातें भी उसके स्नायुओंपर प्रभाव जमाती और उसे विषन्न कर देती हैं।"

कमजोर बच्चे, कमजोर लड़कियाँ, मन कमजोर, याददाश्त कमजोर। सहजमें ही दमनीय प्रकृति तो रहती है ; पर जब नींदसे जगाया जाता है, तो चिड़चिड़ा क्रोधी हो जाता है। यदि बालकको आरक्त ज्वर या खसड़ा हो जाता है, तो वह बेहोश हो जाता है। उद्भेद बाहर नहीं निकलते, अकड़न हो जानेकी प्रवणता हो जाती है, हाथ-पैरोंमें खींचन होती है, पेशाब रुक जाता है, माथा एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें लुढ़काता है तथा तन्द्रासे एकदम बेहोशीमें जा पहुँचता है। वाह्य-पटलपर उद्भेद निकाल फेंकनेकी शक्तिका न रहना।

पाकाशय धीमी गतिसे पचाता भी है ; खट्टा वमन होता है। आँतें शिथिल रहती हैं। सरलान्त्र धँस जाती है। पेशाब मुश्किलसे बाहर निकलता है ; मूत्राशयका पक्षाघात हो जाता है तथा मेरुदण्डके उपसर्गोंके साथ कष्टप्रद कब्ज रहती है ; पेशाब धीमें भावसे आरम्भ होता है, रोगी केवल बैठकर ही पेशाब कर सकता है और कुछ रोगी तो बैठनेकी जगहमें, उठँगकर जोरका दबाव दिये बिना पेशाब कर नहीं सकते। कमर, कटि-प्रदेश और त्रिक-प्रदेशमें धीमा-धीमा दर्द ; चलनेके समय वह अच्छा रहता है और अपनी जगहसे उठनेपर बदतर हो जाता है। **रस-टक्स**में त्रिक-प्रदेशमें दर्द होता है और चलते-फिरते रहनेपर अच्छा रहता है तथा बैठे रहनेपर दर्द हो जाता है। **कैल्केरिया, रस-टक्स, फास्फोरस, सल्फर** और **सीपिया**में यह बहुत ऊँचे दर्जेका है। जिङ्कममें अपनी जगहसे उठनेपर निम्न-श्रेणीकी हल्की रोग-वृद्धि होती है, जैसी कि **पेट्रोलियम** और **जीडम**में होती है।

पैरके तलवोंका सुन्न हो जाना, साथ ही चलनेके समय एँड़ीमें काटनेकी तरह दर्द और यन्त्रणा; इधर-उधर हटनेवाला दर्द, सुई गड़नेकी तरह, छुरी मारनेकी तरह और फाड़नेकी तरह दर्द; टैवेस डोर्सैलिस (कशेरुका-मज्जाका क्षय रोग)।

प्रत्यङ्ग पक्षाघात-ग्रस्त रहते हैं; अर्द्ध-पक्षाघात और अन्तमें एक या दोनों पार्श्वोंका पूर्ण पक्षाघात; फड़कन, कम्पन और अवसाद। निद्रा-कालमें झटके और अंगोंका फड़क उठना।

रक्त-हीनताकी दशामें परिपोषण बिगड़ जाता है; समूचा शरीर दुबला हो जाता है; चमड़ा फटा दिखाई देता है, चेहरा पीला, झुर्रियाँ-भरा, अस्वस्थ, रोगियल रहता है। हमेशा सर्दीला रहता है; सर्दी सहन नहीं होती। स्नायु-शूलके दर्दोंसे भरा, झोंककी हवा लगनेपर समूचे शरीरमें फाड़नेकी तरह दर्द; बहुत-से स्थानोंमें खींचन और तनाव। आँखोंमें इस तरहका अद्भुत तनाव या खींचन होता है, मानो वक्र-दृष्टि हो जायगी। पेशियोंमें खींचन; गर्दन पीछे खिंची रहती है; हर जगह तनाव और खींचन रहती है। जब वह विश्राम करना चाहता है, तो प्रत्यङ्गोंमें खींचन होने लगती हैं, इसीलिये यह हिस्टीरियाकी खींचन कही जाती है। अंगुलियाँ खिचकर कुरूप हो जाती है।

मन भी धीमा रहता है और रोगी दुर्बल तथा क्लान्त रहता है; याददाश्त कमजोर; भूलक्कड़। "जवाब देनेके पहले सब सवालोंको दुहराता है," जब कोई व्यक्ति ऐसा करता है, तो इसका मतलब मनको सावधान करना है। पहले वह समझता है, कि इसका क्या मतलब है, इसके बाद उत्तर देता है। यह लक्षण मियादी बोखार (टाइफायड) में दिखाई देता है, जब रोगी सुधरता नहीं है और बच्चोंको मस्तिष्ककी बीमारी हो जानेपर। स्नायविक अवसन्नता; क्षणभर ठहर जाता है, मानो एकदम खाली-सा दिखाई देता है, इसके बाद चेहरा चमक उठता है और वह उत्तर देता है। यदि आप जिङ्कमके रोगीकी ओर देखें और उससे कुछ कहें नहीं, तो आपको यह पता न लगेगा, कि वह इतना ज्यादा कमजोर है; पर उससे कुछ पूछिये और वह एकदम आश्चर्यसे आपको घूरता रहेगा, इसके बाद कहेगा—"ओह" और आपको उत्तर दे देगा।

जिङ्कम उन व्यक्तियोंके लिये उपयोगी नहीं है, जो स्वभावतः दुर्बलमना हैं, जब कि बच्चा जड़त्वकी सीमापरकी दशामें जा पहुँचता है। **बैराइटा-कार्ब** ऐसे रोगियोंका परिपोषण करता है। वह अर्द्ध-निद्रासे जाग उठता है और बिना कोई उत्तर दिये क्षणभर देखता रहता है।

तन्द्रा; बहुत हलके शोर-गुलसे भी जाग पड़ता है, चौंक उठता है और समूचे शरीरमें ऐंठन हो जाती है; पर बहुत जल्द वह इससे परे चला जाता है, कम तथा और भी कम उत्तेजनशील होता जाता है और क्रमशः अचेतनतामें जा पहुँचता है और जगाया नहीं जा सकता।

आपको कुछ बद्धमूल मस्तिष्क-रोग देखनेमें आयँगे, जिनमें आपको बहुत सन्तोषसे काम लेना होगा। कुछ रोगी धीरे-धीरे और क्रमशः अचेतनताकी ओर अग्रसर होते हैं;

कई दिनोंतक माथा इधर-से-उधर लुढ़काया करते हैं; आँखें ज्योति-हीन रहती हैं; शरीर दुबला हो जाता है, बिछावनपर अज्ञानमें पाखाना, पेशाब होता रहता है; जीभ सूखी और मुरझायी रहती है। इतनी सलवटें रहती हैं, कि यह चनड़ेकी तरह मालूम होती है; ओंठोंकी भी यही दशा रहती है; चेहरा सिकुड़ा और प्रत्येक दिवस वह अधिकतर वृद्ध दिखाई देता है; एक हाथ या एक पैरका पक्षाघात या ऐसा मालूम होता है, कि समूचा मांस पैशिक-संस्थान पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ा है। दर्दसे चिल्ला उठता है, पर यह चीख इतनी वेधक नहीं होती, जितनी **एपिस**की। कभी कभी इस दवाकी एक खुराक रोगीमें जीवन डाल देगी। यह दवा देनेके कुछ दिन बाद, गतिहीन अंशोंमें फड़कन और कम्पन या बहुत ज्यादा पसीना, बहुत ज्यादा वमनके रूपमें इसकी क्रिया देखनेमें आयगी; एकाएक जगा देना बहुत ही भयदायक है; क्योंकि इससे ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी डूबता जा रहा है; पर यह प्रतिक्रियाका आरम्भ है। अब कुछ दिनों और रातोंतक जब बच्चा होशमें आ रहा है, तो उन अंशोंमें चेतना आनेके साथ-ही-साथ बहुत ही कष्टदायक सुरसुरी, कुटकुटी, चुनचुनी, रेंगने और कुछ चलनेका लक्षण रहता है। माता-पिता या पड़ोसी इसके लिये कुछ उपाय होना चाहेंगे; पर यदि आप इसकी क्रिया-नाशक दवाका प्रयोग करेंगे, तो रोगी जहाँ-का-तहाँ लौट जायगा। जैसा पहले था, वैसा ही हो जायगा। यह कष्ट, जीवन जागरित होनेका लक्षण है। यह एक या दो सप्ताहतक इसी तरह जारी रह सकता है और इसके बाद इसके घटनेका लक्षण दिखाई देने लगेगा। इसमें दूसरी खुराक जिङ्कमकी जरूरत है, जिससे फिर पसीना, वमन प्रभृति होगा। ऐसा आपको मेरुदण्ड मस्तिष्क-प्रदाह (Spinal meningitis) में दिखाई देगा। आरम्भिक दशामें रक्त-सञ्चय होगा और **बेलेडोना**से उपशम हो सकता है; पर ऊपर बताये लक्षण यदि आ जायें, तो केवल जिङ्कम ही ऐसी दवा है, जो आरोग्य कर सकती है। **बेलेडोना**के रोगीका चेहरा तमतमाया और माथा गर्म रहेगा, माथा इधर-उधर लुढ़कायगा, आँखें चमकीली रहेंगी और कपालकी धमनियाँ फड़कती रहेंगी। **ब्रायोनिया**का रोगी निश्चेष्ट, जड़ बगनी और ऊँघनेवाला होगा; चुपचाप रहनेसे इसके रोग-लक्षण घटेंगे। **हेलिबोरस**के रोगीमें बहुत थोड़ा ज्वर रहेगा; हाथ-पैर ठण्डे होंगे, माथा लुढ़कायगा, आँखकी पुतलियाँ फैली, अचेतन रहेगा; मुश्किलसे जगाया जा सकेगा; एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक माथा लुढ़कायगा; पर जब परिवर्त्तित क्रिया नष्ट हो जाती है, जिङ्कमका समय आता है।

जेल्सीमियम, लेबेडोना या ब्रायोनियासे आराम पहुँचनेके बाद जिङ्कमका प्रयोग कीजिये। भग्न-स्वास्थ्य बच्चे, जो इस दशामें हफ्तोंतक पड़े रहते हैं, दुबलाते जाते हैं और अचेतन रहते हैं।

आपको रोगीकी माताको अलग ले जाकर उसे बता देना चाहिये, कि यदि बच्चा होशमें आयगा, तो क्या होगा। यदि आप ऐसा न करेंगे, तो घरसे निकाल दिये जायँगे। कोई अवस्था-प्राप्त मनुष्य ऐसे कष्टोंको बर्दाश्त नहीं कर सकता; पर यह आश्चर्यकी बात है, कि किस तरह छोटे बच्चे यह बहुत दिनोंतक रक्तसञ्चय और प्रदाह सहन कर

सकते हैं। आरक्त ज्वरके वाद तथा कुचिकित्सित मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाहके वाद अथवा यक्ष्मा-जनित मस्तिष्ककी झिल्ली-प्रदाहके वाद। मैंने **फास्फोरस** द्वारा इन जटिल मस्तिष्क-रोगोंका इलाज किया है, जिसका रूप भी बहुत कुछ जिङ्कमकी तरह ही होता है। यक्ष्मा-जनित मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाहकी बीमारीसे आरोग्य होनेका कोई इतिहास नहीं मिलता ; पर कोई होमियोपैथ इन रोगियोंसे कुछको आरोग्य कर सकता है ; यद्यपि इस रोगके उतार चढ़ाव तथा दो-तीन वार दुहरानेमें दो या तीन महीने लग सकते हैं।

आँखके लक्षणोंमें एक प्रकारका विचित्र मोटापन और धुँधलापन चक्षु-श्वेत-पटलमें प्राप्त होता है, जिसमें रस-स्राव होता है, चमड़ेकी तरह हो जाता है, उसपर पीले दाग पड़ते हैं और कानमें अनुपक्ष रोग (Pterygium—इसमें आँखके भीतरी भागमें एक तिकोनिया मोटा दाग-सा पड़ जाता है और वहाँसे यह समूची आँखमें फैल जाता है) हो जाता है। डनहमने अनुपक्ष रोगका एक ध्यान देने योग्य आरोग्य किया था। गाइडिङ्ग सिम्पटम्समें उसका इतिहास इस तरह लिखा है—"दाहिनी आँखमें अनुपक्ष—यह ठीक कनीनिकाको ढँक लेना चाहता था। बायीं आँखमें भीतरी चक्षु-कोणसे चक्षु-तारातक फैला हुआ था।"

खुजली तथा डङ्क मारनेकी तरह दर्द आँखके भीतरी कोणमें होता है, इसके साथ ही दृष्टिका धुँधलापन भी रहता है। आँखोंमें और पलकोंमें सवेरेके वक्त और सन्ध्यामें बहुत जलन होती है, इसके साथ ही उनमें सूखापन और दवाव मालूम होता है।"

जिङ्कमने पलकोंका कष्टदायक मोटापन आरोग्य किया है, पलकोंका भीतरकी ओर या वाहरकी ओर उलट जाना ; पलकोंका दानेदार मोटापन। पलक भीतरकी ओर उलट जानेके कठिन रोगी, जिनमें वरुनियाँ चक्षुगोलकके ऊपर और नीचे पड़ती थीं, बहुत आँसू बहता था, बहुत प्रदाह और लाली थी ; ये सब तकलीफें जिङ्कमसे आरोग्य कर दी गयी थीं। भयङ्कर आलोकातङ्क। ऐसा मालूम होता है, मानो रोशनी उसे अन्धा बना देगी। जिङ्कम और **इयुफ्रेशिया**का आँखकी बीमारियोंमें निकटस्थ सम्बन्ध है।

मस्तिष्क रोगके वाद वक्र-दृष्टि, आरक्त ज्वर होनेके वादसे उसे वक्र-दृष्टिकी बीमारी हो गयी। उसे ऋतु-स्रावके साथ बहुत-सी तकलीफें थीं ; कष्टरजः। परन्तु यहाँ एक आश्चर्यजनक लक्षण प्राप्त होता है ; चाहे कितने भी भयङ्कर लक्षण क्यों न हों ; डिम्बाशयमें दर्द, जरायुमें दर्द ; हिस्टीरियाकी उत्तेजना ; ज्योंही रजः-स्राव आरम्भ हुआ, कि उसे आराम मिलने लगा। डिम्बाशयमें प्रचण्ड दर्द, जो स्राव होनेपर आरोग्य हो जाता है। यहाँ **सिमिसिफ्यूगा**से महान अन्तर दिखाई देता है, जिसमें रजः-स्राव होते रहनेके समय स्नायविक उत्तेजना और हिस्टीरियाके लक्षण रहते हैं और जितना ही ज्यादा स्राव होता है, दर्द भी उतना ही भयङ्कर होता जाता है। **लैकेसिस** और जिङ्कमके लक्षण रजः-स्राव होनेके पहले वदतर रहते हैं और स्राव जारी होनेपर अच्छे हो जाते हैं ; पर **लैकेसिस**का स्राव बन्द होते ही फिर सब तरहका दर्द लौट आता है। **सिमिसिफ्यूगा**में समय-समयपर रुक-रुककर स्राव होता है, प्रत्येक वार रुकनेके साथ दर्द भी बन्द हो जाता है और जब फिर स्राव होने लगता है, तो दर्द भी पैदा हो जाता है।

जिङ्कमकी बढ़ी हुई स्नायविकता पैरोंमें ही दिखाई देती है। आप किसी बालक या स्त्रीको एक पैर बराबर हिलाते रहते देखेंगे, उसे शान्त रख ही नहीं सकते। बहुत-सी दवाओंमें यह पैरका लक्षण स्नायविक है और बहुत-सी दवाओंमें पर हिलाते रहनेपर आराम मिलता है ; परन्तु यह जिङ्कममें विशेष बढ़ा हुआ है। बारह बरसकी एक लड़कीमें कोई भी लक्षण सादृश्य नहीं प्राप्त होता था और मैं दवा नहीं खोज पाता था। माताने कहा, कि लड़की गिर्जेमें बराबर अपना एक पैर हिलाती रहती है। उससे यह पूछनेपर कि वह ऐसा क्यों करती है, उसने कहा, कि यदि ऐसा करना बन्द कर दे, तो उसे पेशाब हो जाय। जिङ्कमने सम्पूर्ण तकलीफोंको आरोग्य कर दिया। मूल-ग्रन्थमें हमें "पैरोंकी चञ्चलता" पर दुहरा निशान लगा प्राप्त होता है।

जिङ्कमके कुछ आश्चर्यजनक हृत्पिण्डके लक्षण भी हैं। कमजोर रोगियोंका समूचा वक्ष सङ्कुचित हो जाता है।

औषध-सूची

(प्रथम खण्डकी संख्या मोटे अक्षरोंमें और द्वितीय खण्डकी छोटे अक्षरोंमें)